असली प्राचीन हस्त लिखित

श्री भृगु संहिता कुण्डली रहस्यम्

अथ श्री भृगु संहिता कुण्डली रहस्यम्

आरम्भः

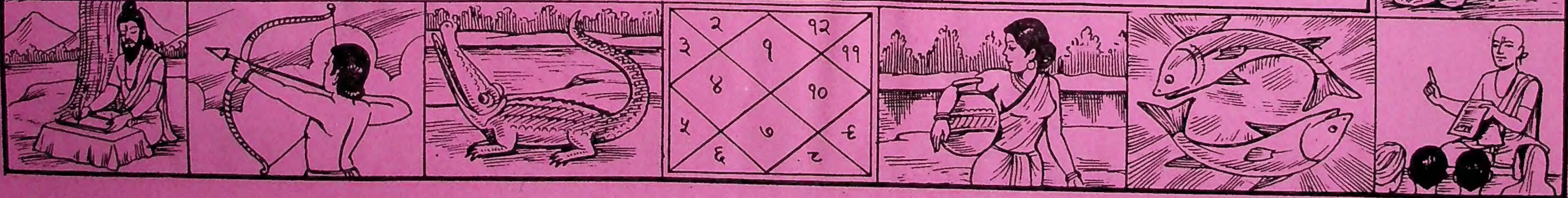

अथ श्री भृगु संहिता कुण्डली रहस्यम्

ज्ञातव्य विषयाः

प्रथम खण्डः

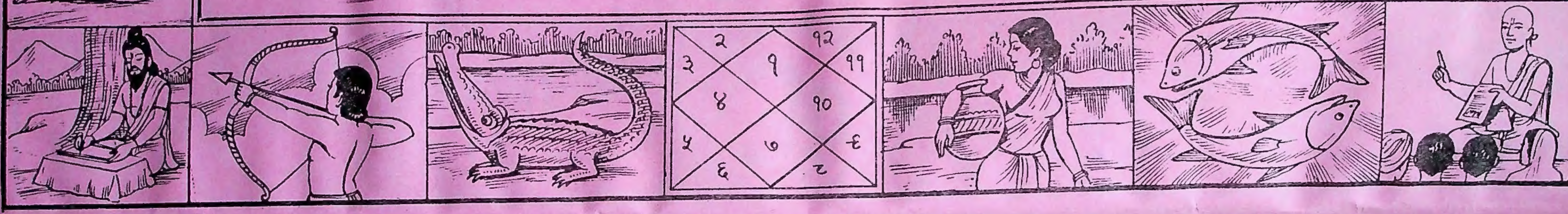

भृ० सं० ८

असली प्राचीन हस्तलिखित

श्री भृगुसंहिता कुण्डली रहस्यम्

विक्रम सम्वत् १९४२ से सम्वत् २१०० तक की सूर्य-कुण्डलियाँ, सम्वत् १९६७ वि० से २०४४ तक की सूर्य-कुण्डलियों का फलादेश, किसी भी जन्म कुण्डली का फलादेश जानने के सिद्धान्त, ज्योतिष तथा ग्रह विषयक ज्ञातव्य-विषयों से परिपूर्ण, प्रत्येक घर में पूजा-स्थान पर रखने योग्य अभिनव फलदायक महाग्रंथ।

प्राप्तिस्थान

क्रियेटिव पब्लिकेशन

4422, नई सड़क, दिल्ली-110006
फोन, : 23261030, 23985175
मोबाईल-9899470459,

कु० र०

भू०
सं०
८

प्रकाशक:
© देहाती पुस्तक भण्डार

सम्पादक
विद्या-वारिधि
पं. राजेश दीक्षित

आस्तिक श्रद्धालुजन
इस ग्रन्थ कोस्वच्छ
वस्त्र में लपेटकर
पूजा-स्थल में रखें
तथा अनधिकारी के
हाथों में न जाने दें।

सर्वाधिकार: प्रकाशकाधीन

फोटोस्टेट वाले ग्रंथ नकली हैं। असली ग्रंथ ऑफसेट द्वारा छापे गये हैं।

मूल्य: 3100/- (तीन हजार एक सौ रुपये)

E-mail : hcb60@hotmail.com

कु०
र०

भृ०
सं०
३

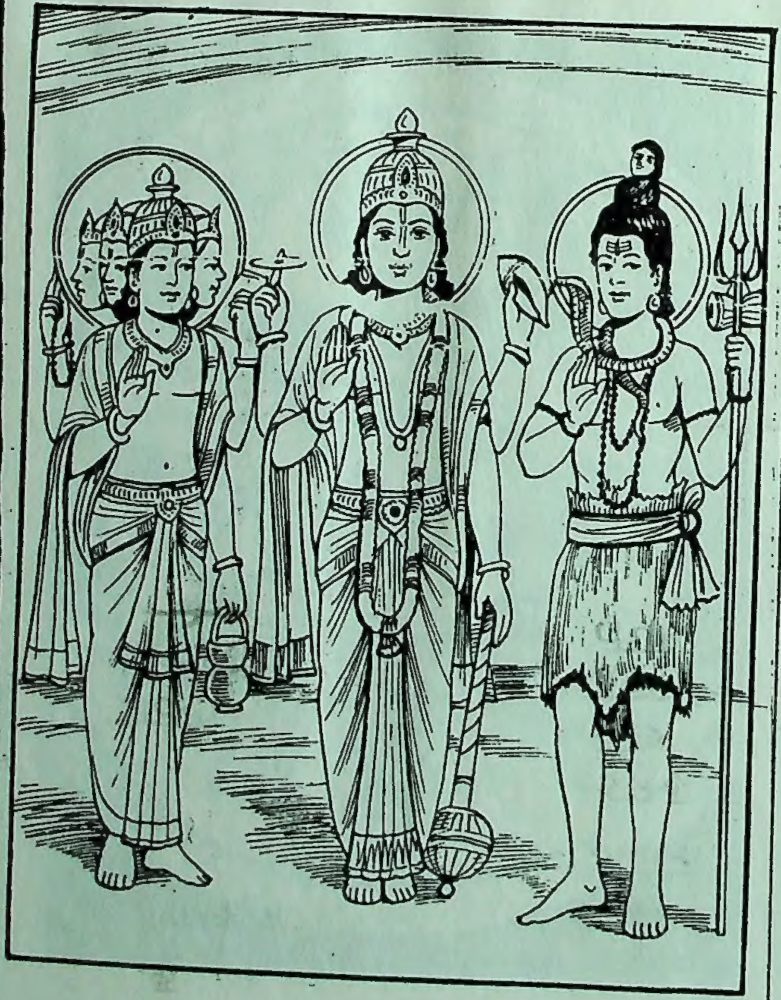

विश्व-नियन्ता, ब्रह्माण्ड और ज्योतिषशास्त्र

कु०
र०

यह संसार, जिसमें कि हम सब निवास कर रहे हैं, ब्रह्माण्ड का एक लघुतम भाग है। शास्त्रों में ऐसे कोटि-कोटि ब्रह्माण्डों की विद्यमानता पर प्रकाश डाला है। आधुनिक वैज्ञानिकों ने भी अपनी खोजों द्वारा यह जान लिया है कि जिस पृथ्वी पर कोटानुकोटि प्राणी निवास कर रहे हैं, वह सूर्य का एक छोटा सा उपग्रह है तथा जिस नीलाकाश को हम देखते रहते हैं उसमें सूर्य से सैकड़ों गुणा बड़े असंख्य तारे विद्यमान हैं, जिनके आकार, दूरी तथा अन्य विषयों के सम्बन्ध में कोई कल्पना तक नहीं की जा सकती।

आकाश में रात्रि के समय दिखाई देने वाली मंदाकिनी में अरबों तारे हैं और उनमें से सबसे छोटा तारा भी हमारे सूर्य से सैकड़ों गुणा बड़ा है। फिर खमण्डल में ऐसी मंदाकिनियाँ भी अनेक हैं, जो लाखों किलोमीटर प्रति सैकेण्ड की गति से, हमारी पृथ्वी से दूर, अति दूर होती चली जा रही हैं। वे कहाँ जा रही हैं और यह आकाश कितना गहरा है, जिसमें कि वे अधिकाधिक भीतर समाती चली जा रही हैं, इसे कोई नहीं जानता।

हिन्दू धर्मग्रंथों के अनुसार इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का जनक परमपिता परमेश्वर निराकार रहते हुए भी स्वयं को तीन रूपों में विभक्त किए हुए हैं, उनके उन स्वरूपों को ब्रह्मा, विष्णु और शिव के नाम से सम्बोधित किया जाता है। ब्रह्मा सृष्टि को उत्पन्न करते, विष्णु पालन करते तथा शिव संहार करने का कार्य करते हैं। महाप्रलय में इन सबका भी तिरोभाव हो जाता है। फिर निराकार परमेश्वर नवीन सृष्टि सृजन की इच्छा से इन्हें पुनः उत्पन्न करता है। इस प्रकार उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय का क्रम निरन्तर चलता रहता है।

शास्त्रों की मान्यता है कि जिस प्रकार ईश्वर का कभी विनाश नहीं होता, उसी प्रकार ज्ञान भी कभी विलुप्त अथवा नष्ट नहीं होता है। कल्पान्त के समय भी यह अलक्ष्य रूप में विद्यमान रहता है तथा सृष्टि के नव-सृजन के समय सृजनकर्ता ब्रह्मा द्वारा इसका पुनरुद्धार एवं प्रचार-प्रसार किया जाता है।

ग्रहों की उत्पत्ति भी सृष्टि-सृजन के समय ही होती है। अपितु यह कहना कहीं अधिक समीचीन रहेगा कि मनुष्य के जन्म लेने से पूर्व ही ग्रह-नक्षत्रों का जन्म हो चुका होता है, अतः जब बाद में मनुष्य तथा अन्य जीव-जन्तु, वनस्पतियाँ

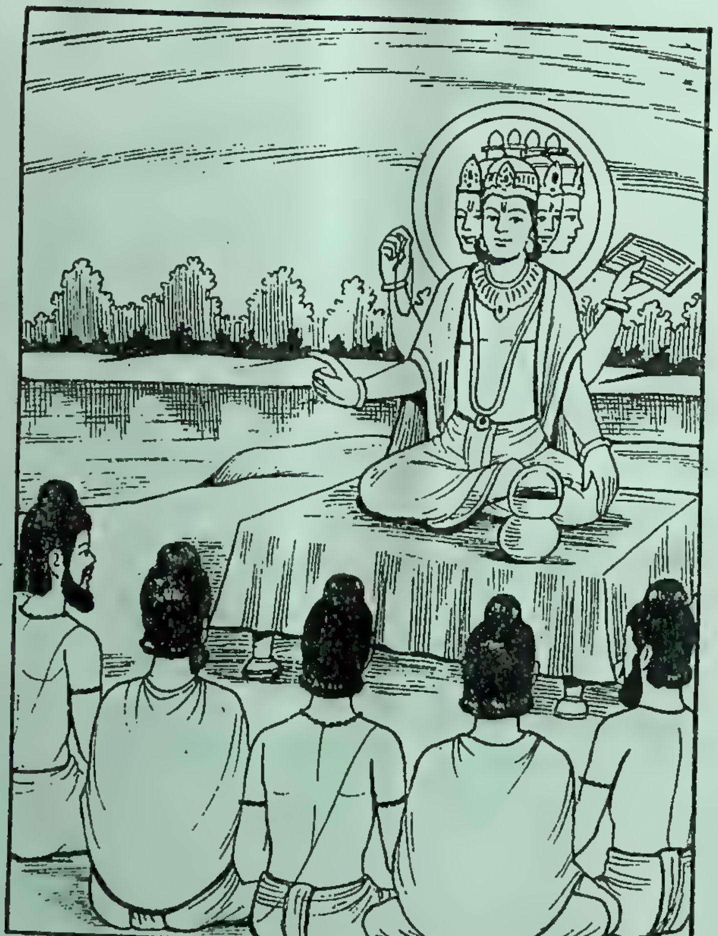

आदि उत्पन्न होते हैं, तब पहले से ही विद्यमान ग्रह-नक्षत्र उनपर अपना आधिपत्य स्थापित कर लेते हैं, फलतः सचराचर-जगत का प्रत्येक प्राणी ग्रह-नक्षत्रों के अधीन बना रहता है। अपने जन्म-जन्मान्तर के संचित कर्मों के फलस्वरूप वह सुख-दुःख, हानि-लाभ, जीवन-मरण, उत्थान-पतन, रोग-आरोग्य आदि को प्राप्त करता रहता है। ईश्वरीय आज्ञा से ग्रह-नक्षत्र जीव के उनके कर्मों के साक्षी एवं नियामक बन जाते हैं।

सृष्टि के प्रारंभ में अन्य विद्याओं की भाँति ज्योतिषशास्त्र के ज्ञान का प्राकट्य भी प्रजापति ब्रह्मा के द्वारा किया गया। उन्होंने तत्कालीन ऋषि-मुनियों को इस ज्ञान का उपदेश किया, तदुपरान्त उन महर्षियों द्वारा ही यह ज्ञान भूमण्डल के सभी कोनों में विकीर्ण किया गया।

संसार की सबसे प्राचीन पुस्तक 'वेद' अपौरुषेय माने जाते हैं। सृष्टि-सृजनोपरान्त इन वेदों का प्राकट्य ब्रह्माजी द्वारा ही किया जाता है। वेदों पर आधारित छः शास्त्रों में ज्योतिषशास्त्र का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। यही एक ऐसा शास्त्र है, जो न केवल ग्रह-नक्षत्रों से सम्बन्धित गतिविधियों की सूचना देता है, अपितु सचराचर जगत और उसमें रहने वाले प्रत्येक

प्राणी के भूत, वर्तमान तथा भविष्य का ज्ञान भी प्राप्त करता है। यह दृष्टि से ओझल अतीत तथा अकल्पनीय अनागत अर्थात् भविष्य का ज्ञान देकर आश्चर्य चकित कर देने की क्षमता रखता है। इस दिव्य ज्ञान के आलोक में मनुष्य न केवल अपना, अपितु संसार के किसी भी प्राणी का भूत, वर्तमान तथा भविष्य जान सकता है और उसे दूसरे लोगों को बता भी सकता है।

त्रिकालीय फलादेश को ज्ञात करने का साधन जन्मकुण्डली मानी गई है। मनुष्य के अतिरिक्त पशु-पक्षी, पेड़-पौधे यहाँ तक कि वाक्य एवं घटनाओं के जन्म-समय की भी जन्मकुण्डली तय्यार की जा सकती है। किसी प्राणी के जन्म लेने के समय अथवा किसी घटना के घटने के समय अथवा किसी शब्द या वाक्य समूह के मुँह से निकलते समय आकाश में कौन सा ग्रह किस स्थान पर, कितनी दूरी पर तथा किस ग्रह के साथ अथवा उससे कितना आगे-पीछे था, इसका पता जन्म कुण्डली से लगता है।

आकाश में कौन सा ग्रह कब कहाँ होगा, इसका ज्ञान पञ्चाङ्ग द्वारा होता है। पञ्चाङ्ग खगोलीय तथा भेदिनीय गणित के आधार पर तय्यार किये जाते हैं। पञ्चाङ्ग ही जन्म कुण्डली निर्माण में सहायक बनते हैं। जब जन्म कुण्डली तय्यार

हो जाती हैं, तब उनके आधार पर फलादेश-कथन किया जाता है।

फलादेश-कथन के कुछ निश्चित सिद्धान्त हैं, जिनका उल्लेख विभिन्न ज्योतिषीय ग्रंथों में किया गया है। ज्योतिष-ग्रंथों में उल्लिखित फलादेश के सिद्धान्त ऋषि-मुनि तथा विद्वानों के अनुभवों पर आधारित हैं। ये अनुभव हजारों वर्ष की दीर्घकालीन खोज के परिणाम भी कहे जा सकते हैं। कहीं-कहीं इन फलादेशों में न्यूनाधिक अन्तर भी पाया जाता है, उसका कारण विभिन्न मनीषियों द्वारा भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में प्राप्त अनुभवों का अन्तर होता है। सुयोग्य ज्योतिषी का कर्तव्य है कि वह फलादेश पर विचार करते समय प्राचीन मनीषियों के वचनों का तो लाभ उठाये ही, यदि उसका स्वयं का भी कोई अनुभव हो तो उसे भी अवश्य उपयोग में ले। जिस प्रकार चिकित्सा-कार्य में शास्त्र-कथन के अतिरिक्त चिकित्सक का स्वानुभव भी महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है, ठीक वही बात ज्योतिष-विज्ञान पर भी लागू होती है। सफल फलादेशकर्ता वही ज्योतिषी हो सकता है, जो शास्त्र-वचनों के अतिरिक्त स्वानुभव पर भी ध्यान देता हो। शास्त्र, अनुभव तथा देश-कालीन परिस्थितियों को ध्यान में रख कर किए गए फलादेश ही सफल सिद्ध होते हैं।

'भृगुसंहिता' को फलित-ज्योतिष का महान ग्रंथ माना जाता है। इसके जन्म के सम्बन्ध में एक सुप्रचलित-कथा इस प्रकार है-

एक समय महर्षि भृगु भगवान् विष्णु से भेंट करने हेतु क्षीर-सागर में गए। भगवान् उस समय शेष शय्या पर शयन कर रहे थे तथा लक्ष्मी उनके चरण-कमलों को दबा रही थीं। बाहर दरवाजे पर 'जय'-'विजय' नामक दो द्वारपाल पहरा दे रहे थे। महर्षि भृगु जब विष्णु-सदन के द्वार पर पहुँचे तो जय-विजय ने उन्हें भीतर प्रवेश करने से यह कह कर रोका कि इस समय भगवान शयन कर रहे हैं; अतः उनके पास जाना उचित नहीं है।

महर्षि भृगु क्रोधी स्वभाव के थे। जय-विजय के मुख से निकले इन शब्दों को सुन कर वे आग-बबूला हो गए और बोले-'अरे दुष्टो! ब्राह्मण को सभी समय सर्वत्र प्रवेश करने का अधिकार है। इस सृष्टि में ब्राह्मण से बड़ा कोई नहीं है। वह सदैव विश्व के हित-चिन्तन में लगा रहता है। अपने विषय में वह कभी चिन्ता नहीं करता, इसी कारण उसे सर्वोपरि स्वीकार किया गया है। मैं इस समय यहाँ अपने किसी निजी

स्वार्थ के लिए नहीं आया हूँ, अपितु लोक-हित की कामना से उनके दर्शन तथा वार्तालाप हेतु आया हूँ। तुम लोगों ने मेरा मार्ग अवरुद्ध करके जो मेरा अपमान एवं तिरस्कार किया है, उसके फलस्वरूप तुम्हें वैकुण्ठधाम से पतित होकर तीन जन्मों तक राक्षस की योनि में रहना पड़ेगा।

महर्षि भृगु के इस शाप को सुनकर जय-विजय विलाप करते हुए उनके चरणों में गिर पड़े तथा अपने अपराध की क्षमा माँगने लगे, तब महर्षि ने प्रसन्न होकर इस प्रकार कहा - 'हे जय, विजय! मेरा शाप तो अन्यथा नहीं हो सकता, परन्तु मैं तुम्हें अब यह वरदान देता हूँ कि तीनों जन्मों में राक्षस योनि से उद्धार दिलाने के लिए स्वयं विष्णु भगवान् ही भूलोक पर अवतीर्ण होकर तुम्हारा वध करेंगे। फिर शाप की अवधि समाप्त होने पर तुम दोनों पुनः यहीं आकर भगवान् की सेवा करोगे।'

यह सुनकर जय-विजय ने तनिक सन्तोष की साँस ली। तत्पश्चात् महर्षि भृगु जब विष्णु-सदन में पहुँचे तो उन्होंने यह देखा कि श्री विष्णु अपनी आँखें बन्द किये हुए शेष-शय्या पर लेटे हैं।

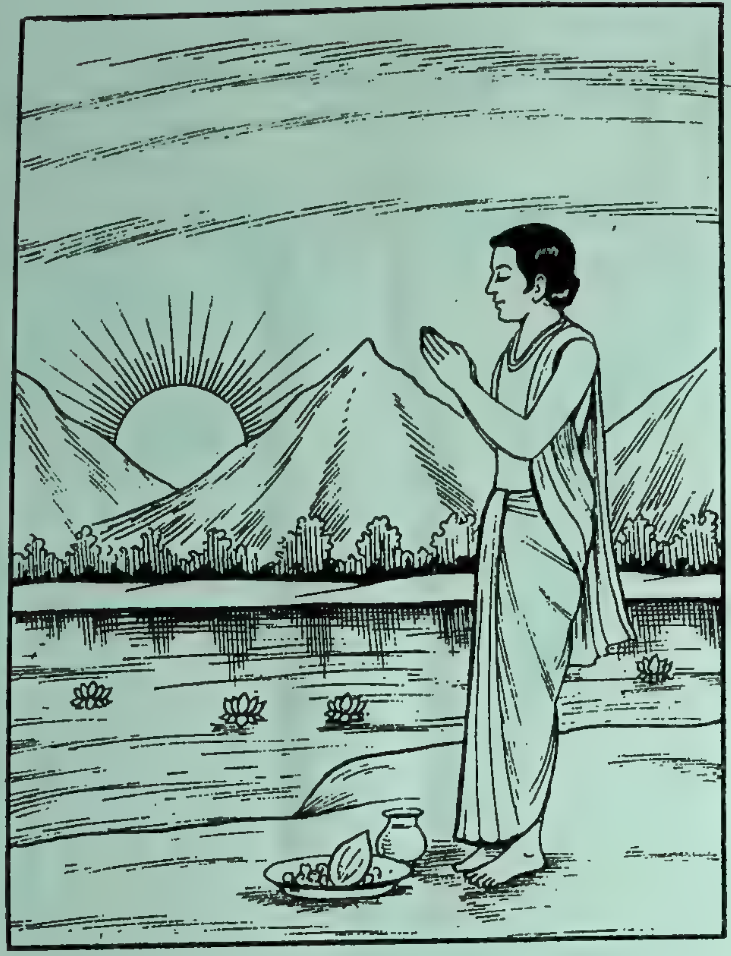

विष्णुजी को आँखें बन्द कर लेटे हुए देख कर महर्षि का क्रोध पुनः भड़क उठा। उन्होंने समझा कि श्रीविष्णु संभवतः उनका अनादर करने के उद्देश्य से ही इस प्रकार आँखें बन्दकर लेटे हुए हैं।

महर्षि ने आव देखा न ताव क्रोध में भर कर श्रीविष्णु के वक्षःस्थल पर अपने पाद-तल का प्रहार कर दिया। पाँव की चोट लगते ही श्रीविष्णु हड़बड़ा कर उठ बैठे। आँखें खोल कर देखा तो पाया कि महर्षि भृगु क्रोध में भरे खड़े हैं। श्रीविष्णु ने तुरन्त ही उनके चरण को अपने दोनों हाथों में लेते हुए कहा— 'हे मुने! मैं शयन कर रहा था, अतः आपके आगमन के विषय में नहीं जान पाया। अस्तु सर्वप्रथम तो आप मुझे इसलिए क्षमा प्रदान करें कि मैं आपको यथोचित सम्मान देने में असमर्थ रहा, फिर मेरे वक्षःस्थल पर प्रहार करने से आपके चरण को जो पीड़ा हुई उसके लिए भी मैं क्षमाप्रार्थी हूँ। मेरा वक्षःस्थल तो वज्र की भाँति कठोर है, अतः उस पर किसी भी आघात का कोई प्रभाव नहीं पड़ता, परन्तु आपके चरण कमल की भाँति कोमल हैं, वे मेरे वक्षःस्थल से लगकर अवश्य पीड़ित हुए होंगे, इस हेतु आप मुझे बारम्बार क्षमा प्रदान करने की कृपा करें।'

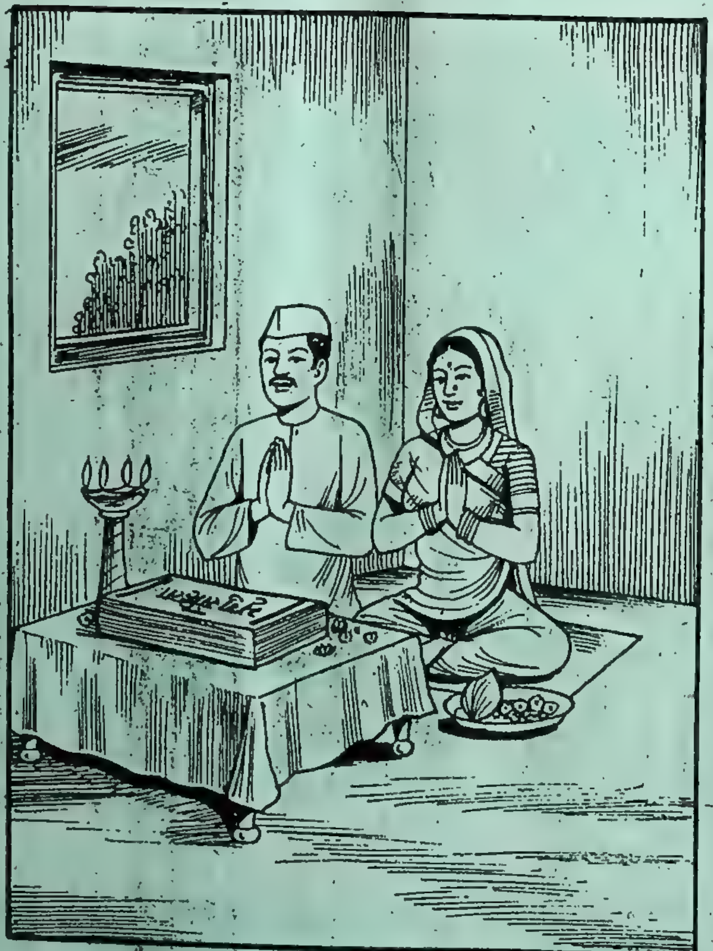

श्रीविष्णु के मुख से निःसृत इन विनम्र-वचनों को सुन कर महर्षि भृगु का न केवल क्रोध शान्त हो गया, अपितु उन्हें अपने व्यवहार पर बड़ी लज्जा और ग्लानि का अनुभव भी हुआ। तब वे स्वयं श्री विष्णु की स्तुति करते हुए अपने दुष्कृत्य की क्षमा माँगने लगे।

महर्षि को ग्लानियुक्त देख कर श्रीविष्णु ने प्रेम पूर्वक उनका हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहा– "हे विप्रश्रेष्ठ! मैं ब्राह्मणों की कृपा से ही पृथ्वी को धारण किए हुए हूँ और उन्हीं के आशीर्वाद से ही अन्य सामर्थ्यों को भी प्राप्त कर पाया हूँ। आप अपने व्यवहार पर क्षुब्ध न हों। आपका चरण-चिह्न मेरे वक्षः स्थल पर आज से सदैव के लिए विद्यमान रहेगा और उसे 'भृगुलता' के रूप में ख्याति प्राप्त होगी। आपने जय-विजय को जो शाप दिया है, उसके अनुसार वे तीन जन्मों तक राक्षस के रूप में पृथ्वी पर प्रकट होंगे। तब मैं स्वयं अवतार लेकर उनका संहार करूँगा। पहले जन्म में, सत्ययुग के समय वे दोनों हिरण्याक्ष एवं हिरण्यकशिपु के रूप में जन्म लेंगे तब मैं वाराह अवतार लेकर हिरण्याक्ष का तथा नृसिंह अवतार लेकर हिरण्यकशिपु का वध करूँगा। दूसरे जन्म में, त्रेतायुग में वे दोनों रावण तथा कुम्भकर्ण बन कर जन्म लेंगे,

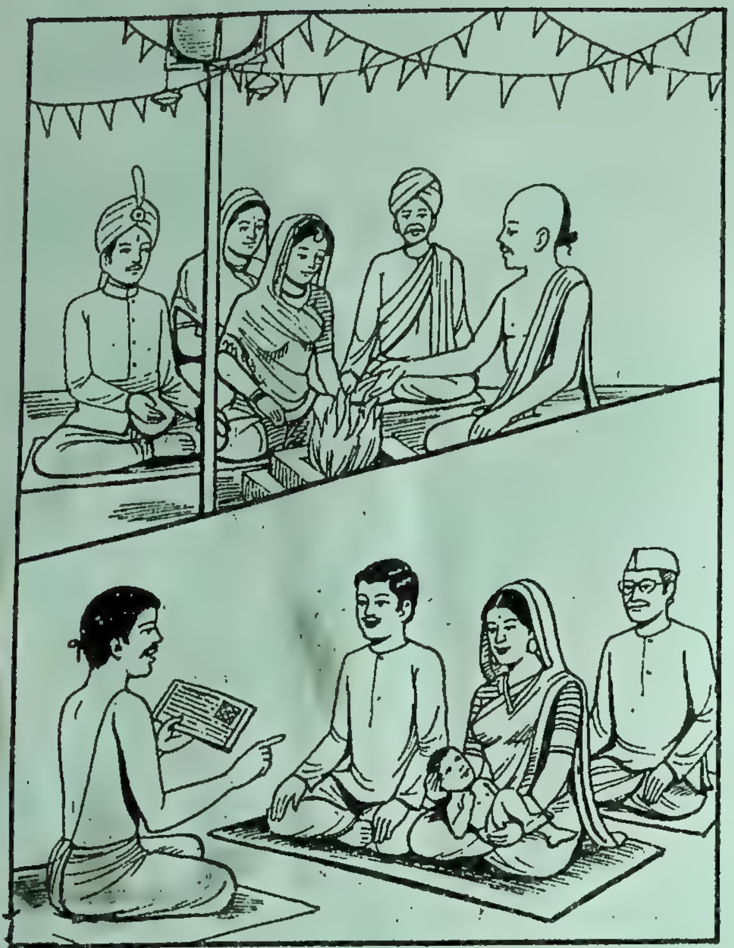

तब मैं 'राम' का अवतार लेकर उनका संहार करूँगा। तीसरे जन्म में, द्वापरयुग में वे दोनों कंस तथा शिशुपाल के रूप में जन्म लेंगे, तब मैं 'कृष्ण' का अवतार लेकर उन्हें मुक्ति प्रदान करूँगा। इसके बाद वे दोनों पुनः बैकुण्ठ धाम में आकर मेरे द्वारपाल जय-विजय के रूप में प्रतिष्ठित होंगे। हे मुने! यह सब घटनाएँ मेरी इच्छा से ही घटी हैं। भविष्य में लीलाएँ करने के लिए ही मैंने जय विजय की बुद्धि कुण्ठित कर दी थी, जिसके कारण उन्होंने आप को भीतर आने से रोका तथा मैंने ही आपके हृदय में क्रोध की भावना भर दी थी, जिसके कारण आपने उन्हें शाप दिया तथा यहाँ आकर मुझे लात भी मारी। हे मुनिनाथ! आप प्रकृतिस्थ हों। मैंने अपनी माया को समेट लिया है। ब्राह्मणत्व की गरिमा को प्रतिष्ठित बनाये रखने हेतु ही मैंने अपने वक्षःस्थल पर 'भृगुलता' को सदैव धारण किए रहने का निश्चय किया है। आप इन सब घटनाओं के लिए अपने मन में तनिक भी दुःख न करें।

भगवान् विष्णु के इन प्रिय तथा मधुर वचनों को सुनकर महर्षि भृगु का क्रोध तो शान्त हुआ ही, वे भक्ति भाव से भर कर श्री विष्णु की स्तुति करने लगे, परन्तु तभी एक घटना

और घट गई। जिसने एक महान ग्रंथ को जन्म दे दिया। वह इस प्रकार थी—

भगवती लक्ष्मी ने जब यह देखा कि महर्षि भृगु ने उनके पति श्री विष्णु के वक्षस्थल पर लात मारी है तो वे आग-बबूला हो उठीं। श्रीविष्णु ने महर्षि के प्रति जो विनम्र वचन कहे, उनसे उनका नारी-सुलभ हृदय और अधिक उद्विग्न हो उठा। वे अधिक समय तक अपने को संयत नहीं रख पाईं। अस्तु, ज्योंही श्रीविष्णु मौन हुए, त्योंही उन्होंने महर्षि भृगु को सम्बोधित करते हुए यह कहा—'हे मुनिराज! आपने मेरे समक्ष ही मेरे पूज्य पति का अपमान किया है। अतः मैं यह घोषणा करती हूँ कि आज से मैं अपने पति का अपमान करने वाले ब्राह्मणों के घर में नहीं रहूँगी। मेरे अभाव में वे दरिद्र ही बने रहेंगे।"

भगवती लक्ष्मी के मुख से निःसृत इन शब्दों को सुनकर महर्षि भृगु का क्रोध पुनः जाग्रत हो उठा। उन्होंने लक्ष्मी को सम्बोधित करते हुए उच्च स्वर में कहा—'हे लक्ष्मी! तुम्हारे पति ने तो ब्रह्मण्यदेव बन कर अपनी महानता का परिचय दिया, परन्तु तुमने यह बात कह कर अपनी तुच्छता को ही प्रकट किया है। तुम्हें सम्भवतः यह भ्रम हो गया है कि यदि तुम ब्राह्मणों के घर रहना बन्द कर दोगी तो आजीवन पीड़ादायी दुःख भोगते रहेंगे। अस्तु, तुम्हारे इस अहंकारपूर्ण कथन की चुनौती स्वीकार करते हुए मैं यह घोषणा करता हूँ कि अब मैं एक ऐसे ग्रंथ का निर्माण करूँगा, जो भूत, भविष्य तथा वर्तमान – तीनों कालों का वृत्तान्त बताने में सफल होगा तथा उस ग्रंथ के बल पर ब्राह्मण न केवल सर्वत्र यश, सम्मान एवं प्रतिष्ठा ही प्राप्त करेंगे, अपितु तुम स्वयं भी उनके चरणों में लोटी-लोटी फिरोगी।'

महर्षि भृगु के मुख से निकले इन शब्दों को सुन कर भगवती लक्ष्मी स्तब्ध तथा मौन रह गईं। उन्होंने आगे कुछ और बोलना उचित नहीं समझा। उन्हें भय लगा कि इस बार बोलने पर मुनिवर उन्हें कोई शाप न दे बैठें। तब श्रीविष्णु बोले – हे मुनिश्रेष्ठ! यह घटना भी मेरी इच्छा से ही घटी है। मैं

चाहता था कि आप अपने विलक्षण ज्ञान के आधार पर ऐसे महान् ग्रंथ की रचना करें, जो समस्त ब्राह्मणों के सम्मान को बढ़ाने वाला सिद्ध हो। भगवती लक्ष्मी के अविवेकपूर्ण कार्य का शुभ फल यह निकला कि आपने ऐसे ग्रंथ की रचना की घोषणा कर दी है। अब आप 'भृगुसंहिता' नामक उस महान ज्योतिष ग्रंथ की रचना कीजिए, जो संसार के सब प्राणियों के लिए उपयोगी हो, जो ब्राह्मणों के सुयश को बढ़ाने वाला तथा भूत, भविष्य एवं वर्तमान कालीन घटनाओं की जानकारी देने वाला है और जिसे अपने पास रखने वाला ब्राह्मण कभी भी दरिद्रता का कष्ट न भोगे। लक्ष्मी ने जो अपराध किया, उसके लिए मैं क्षमा माँगता हूँ।" यह कह कर श्रीविष्णु ने पुनः भृगु ऋषि के चरणों में अपना मस्तक रख दिया। लक्ष्मीजी ने भी उन्हीं का अनुसरण किया। तब भृगुजी दोनों को आशीर्वाद देकर वहाँ से अपने आश्रम को लौट आये तथा ज्योतिष के उस महान ग्रंथ की रचना में संलग्न हो गए, जो पूर्ण हो जाने पर 'भृगु संहिता' के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

'भृगु संहिता' के जन्म की यही कथा प्रचलित है। महर्षि भृगु ने ऐसी संहिता लिखी, यह प्राचीनकाल से श्रवणगोचर होता चला आ रहा है, परन्तु वर्तमान युग में, विगत सैकड़ों वर्षों से उक्त ग्रंथ कहीं उपलब्ध नहीं होता। अलबत्ता "भृगुसंहिता" नामक ग्रंथ के अंश कहे जानेवाले कुछ पृष्ठ यत्र-तत्र उपलब्ध होते हैं, परन्तु उनकी प्रामाणिकता संदिग्ध ही है। हाँ, ज्योतिषशास्त्र के आधार पर भूत, वर्तमान तथा भविष्य कथन की जो प्रणाली सर्वमान्य तथा सुप्रचलित है, उसी के आधार पर प्रस्तुत ग्रंथ का संकलन एवं सम्पादन किया गया है।

विषयानुक्रमणिका प्रारम्भः

क्रमाङ्क	पृष्ठाङ्क
१ प्रथम खण्ड :	
१ ज्ञातव्य विषया :, जन्माङ्क फलादेश सिद्धान्त प्रकरण	१९
२ सम्वत्सरादि का प्रभाव	२१
३ सम्वत्सर फलम्	२१
४ अयन फलम्	२५
५ ऋतु फलम्	२५
६ मास फलम्	२६
७ पक्ष फलम्	२७
८ तिथि फलम्	२७
९ वार फलम्	२८
१० तिथि-क्षय एवं तिथि-मल फलम्	२८
११ नन्दादि संज्ञक तिथि फलम्	२९
१२ दिवा-रात्रि फलम्	२९
१३ जन्मनक्षत्र फलम्	२९
१४ नक्षत्र-चरण फलम्	३१
१५ नक्षत्रांश फलम्	३३
१६ योग फलम्	३३
१७ करण फलम्	३५
१८ योनि फलम्	३६
१९ आवश्यक टिप्पणी	३७
२० लग्न फलम्	३८
२१ लग्न होरा फलम्	३९
२२ द्रेष्काण फलम्	४१
२३ टिप्पणी	४४
२४ चन्द्र राशि फलम्	४५
२५ ग्रह भाव फलम् (सूर्य, चन्द्र, मङ्गल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, केतु)	४८
२६ द्वादश भाव गत राशि फलम् (प्रथम भाव, द्वितीय भाव, तृतीय भाव, चतुर्थ भाव, पञ्चम भाव, षष्ठ भाव, सप्तम भाव, अष्टम भाव	५७

क्रमाङ्क	पृष्ठाङ्क
नवम भाव, दशम भाव, एकादश भाव, द्वादश भाव)	
२७ भावेश फलम्	६९
(लग्नेश फल, धनेश फल, सहजेश फल, सुखेश फल, पुत्रेश फल, षष्ठेश फल, जायेश फल, अष्टमेश फल, भाग्येश फल, राज्येश फल, लाभेश फल, व्ययेश फल)	
२८ चन्द्र कुण्डली भाव फलम्	८२
(सूर्य फल, भौम फल, बुध फल, गुरु फल, शुक्र फल शनि फल, राहु फल, केतु फल)	
२९ चन्द्र निर्याण फलम्	८७
(मेष राशिफल, वृष राशिफल, मिथुन राशिफल, कर्क राशिफल, सिंह राशिफल, कन्या राशिफल, तुला राशिफल, वृश्चिक राशिफल, धनु राशिफल, मकर राशिफल, कुम्भ राशिफल, मीन राशिफल)	
३० गोल फलम्	९१
३१ राशि ध्रुवाङ्क के अनुसार आयुर्दाय ज्ञान	९२
३२ द्वादश भावों से विचारणीय विषय	९२
३३ विभिन्न भावों पर ग्रहों की दृष्टि का नियम	९३
३४ ग्रहों के स्वरूप	९४
३५ ग्रहों का राशि-भोग काल	९५
३६ ग्रहों के फल देने का समय	९५
३७ ग्रहों का दशा-फल	९६
२ द्वितीय खण्ड :	
१ सूर्य कुण्डलीयम्, सं. १९४२ वि० से सं. २१० वि०	
२ तक की सूर्य कुण्डलियाँ	९७
३ आवश्यक टिप्पणी	९८
४ सूर्य-कुण्डली प्रारम्भ	१००
३ तृतीय खण्ड :	
१ सूर्य कुण्डली फलम्, फलादेश खण्ड,	४८१
२ माघ सं. १९६७ वि० से सं. २०४४ वि. तक की सूर्य कुण्डलियों का संक्षिप्त फलादेश, टिप्पणी	४८२
३ सूर्यकुण्डली को लग्न कुण्डली में बदलने की विधि	१८३४

भू० सं० ७७

क्रमाङ्क पृष्ठाङ्क

४ चतुर्थ खण्ड

१ नवग्रह फलम्, ग्रह फलादेश प्रकरण १८३७
२ सूर्य फलम् १८३७
३ चन्द्र फलम् १८५२
४ मंगलफलम् १८६९
५ बुध फलम् १८९३
६ गुरु फलम् १९१५
७ शुक्र फलम् १९४१
८ शनि फलम् १९६३
९ राहु फलम् १९९१
१० केतु फलम् २०१२

५ पञ्चम खण्ड

१ प्रकीर्ण विषय: २०३५
२ राशि २०३५
३ ग्रह २०३५
(सूर्य, चन्द्रमा, मङ्गल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु)

क्रमाङ्क पृष्ठाङ्क

४ राशियों से विचारणीय विषय २०३८
५ राशि स्वामी २०३९
६ ग्रहों की नैसर्गिक मैत्री २०३९
७ ग्रहों की अवस्थाएं २०४०
८ जन्मकुण्डली के द्वादश भावों से विचारणीय विषय २०४०
९ भावों की संज्ञाएँ २०४२
१० मूल त्रिकोण २०४२
११ ग्रहों की उच्च स्थिति २०४३
१२ ग्रहों की नीच स्थिति २०४३
१३ ग्रहों के बलाबल २०४४
(स्थान बल, दिग्बल, काल बल, नैसर्गिक बल, चेष्टा बल, दृग्बल)
१४ ग्रहों की दृष्टि २०४५
१५ ग्रहों के दृष्टि तथा स्थान सम्बन्ध २०४६
१६ स्थानाधिपति अथवा आवेश २०४६
१७ उच्चराशिगत ग्रहों का फल २०४७
१८ मूल त्रिकोणस्थ ग्रहों का फल २०४७
१९ स्वक्षेत्री ग्रहों का फल २०४८

कु० र०

क्रमाङ्क		पृष्ठाङ्क
२०	मित्र क्षेत्री ग्रहों का फल	२०४९
२१	शत्रु क्षेत्री ग्रहों का फल	२०४९
२२	नीच राशिस्थ ग्रहों का फल	२०५०
२३	विशिष्ट ज्ञातव्य	२०५१
२४	ग्रहों की युति का फल	२०५४
२५	तीन ग्रहों की युति का फल	२०५६
२६	चार ग्रहों की युति का फल	२०६०
२७	पाँच ग्रहों की युति का फल	२०६३
२८	छः ग्रहों की युति का फल	२०६५
२९	सात ग्रहों की युति का फल	२०६६
30	स्त्री-जातक	२०६६
३१	राजयोग	२०७०

सम्पूर्णम्

जब तक

भारतवर्ष में गीता, गायत्री, गङ्गा, गाय, गोपाल, गुरु, गोवर्द्धन, गणेश, गौरी, गिरिजापति, गिरा, गरुड़ और गोविन्द की अभ्यर्थना होती रहेगी, तब तक इसके महत्व पर कोई आँच नहीं आ सकती।

यह ग्रंथ

केवल अध्ययन करने के लिए ही नहीं है। इसे अपने पूजा-गृह में पवित्र चौकी पर स्थापित करें तथा धूप-दीप देते रहें। इसकी उपस्थिति सुख, शान्ति एवं धन, यश, सम्मान की वृद्धि करती रहेगी।

अथ श्री भृगु-संहिता कुण्डली-रहस्य (प्रथम खण्ड)

जन्माङ्क फलादेश-कथन-सिद्धान्त प्रकरण

इस ग्रंथ के द्वितीय खण्ड में जिन सूर्य-कुण्डलियों को प्रदर्शित किया गया है, उनका संक्षिप्त-फलादेश अगले-तृतीय खण्ड में वर्णित है। प्रस्तुत खण्ड में किसी भी जन्मकुण्डली के विस्तृत-फलादेश का प्रतिपादन करने वाले शास्त्रीय-सिद्धान्तों का उल्लेख किया जा रहा है। इनके आधार पर प्रत्येक जन्म कुण्डली के फलादेश का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। स्मरणीय है कि द्वितीय खण्ड में जो सूर्य-कुण्डलियाँ प्रदर्शित की गई हैं, उनमें से प्रत्येक के लग्न-परिवर्तन के आधार पर १२ स्वरूप बनेंगे और जब उनमें चन्द्रमा की विभिन्न स्थितियों को भी सम्मिलित किया जाएगा, तब उनमें से प्रत्येक की संख्या १०० से भी अधिक हो जाएगी। इस नियमानुसार यदि केवल १०० वर्ष की जन्मकुण्डलियों का स्वरूप ही प्रदर्शित किया जाए तो उनकी संख्या करोड़ों में बैठेगी। इससे अधिक वर्षों की कुण्डलियों के स्वरूप की संख्या का अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। अस्तु, इतनी विपुल संख्या वाली कुण्डलियों का अलग-अलग विस्तृत फलादेश-कथन न तो किसी एक व्यक्ति द्वारा अपने सम्पूर्ण जीवन-काल में भी संभव है और न उसके अरबों पृष्ठ वाले ग्रंथ के रूप में प्रकाशन की कल्पना ही की जा सकती है। यही कारण है कि 'पारस' पत्थर की भाँति जिस 'भृगु संहिता' नामक ग्रंथ की कल्पना की जाती है, वह कहीं भी उपलब्ध नहीं है। कुछ ज्योतिषी-परिवारों में पीढ़ी-दर-पीढ़ी द्वारा किए गए कतिपय जन्मकुण्डलियों के फलादेश ही 'भृगुसंहिता' के नाम से उपलब्ध होते हैं, उनमें जिनकी कुण्डली मिल जाती है, वे तो उनके फल-कथन को ज्ञात कर लेते हैं; शेष लोगों

को निराशा ही हाथ लगती है। ऐसी 'भृगु संहिता' नामक अनेक प्राचीन तथा हस्तलिखित पाण्डुलिपियों को हमने वर्षों की खोज तथा प्रचुर धन व्यय करके विभिन्न स्थानों से उपलब्ध किया था, जिन्हें संकलित रूप में हिन्दी भाषा-टीका सहित सुसम्पादित 'भृगु संहिता महाशास्त्र' के नाम से पूर्व में प्रकाशित किया जा चुका है।

यथार्थ में, प्रत्येक जन्मकुण्डली का सम्यक्-फलादेश ज्ञात करने हेतु विभिन्न भावों तथा विभिन्न राशियों में स्थित विभिन्न ग्रह, उनकी युति, दृष्टि, सम्बन्ध तथा अन्य विषयों पर प्राचीन ज्योतिष शास्त्र के सिद्धान्तों का अध्ययन तथा स्वानुभव का निष्कर्ष आवश्यक है। ग्रहों की महादशा, अन्तरदशा, सूक्ष्म दशा, तत्कालीन गोचर स्थिति एवं अन्य विषय भी विचारणीय होते हैं। 'भृगु संहिता कुण्डली-रहस्य' के प्रस्तुत खण्ड में उन शास्त्रीय सिद्धान्तों को प्रस्तुत किया जा रहा है, जिनके आधार पर प्रत्येक जन्म कुण्डली का फलादेश ज्ञात किया जा सकता है। यह सामग्री विभिन्न प्राचीन तथा प्रामाणिक माने जाने वाले ग्रंथों से संकलित की गई है। इसके समुचित अध्ययन के आधार पर सामान्य ज्योतिषी भी चमत्कृत कर देने वाले फलादेश-कथन में सक्षम सिद्ध हो सकता है। इस खण्ड के अध्ययनोपरान्त उसे फलादेश-कथन हेतु किसी अन्य ग्रंथ के अवलोकन की आवश्यकता भी अनुभव नहीं होगी। तृतीय खण्ड में वर्णित विभिन्न कुण्डलियों के फलादेश में जो कमी अनुभव हो, उसकी पूर्ति इस खण्ड में वर्णित फल-प्रतिपादन के सिद्धान्तों के आधार पर की जा सकती है। आवश्यक है कि सर्वप्रथम द्वितीय खण्ड में प्रदर्शित सूर्य-कुण्डलियों में से अपनी सूर्य-कुण्डली को ढूँढा जाय, तदुपरान्त उसका फलादेश तृतीय खण्ड में देखा जाय, उसके बाद जिस विषय की जानकारी प्राप्त करनी हो, उसे ४, ५, ६ खण्ड में वर्णित नियमों के आधार पर ज्ञात करके जिज्ञासा को शान्त कर लिया जाय। इस प्रकार भृगु-ज्योतिष के आधार पर संसार के किसी भी प्राणी की जन्मकुण्डली का भूत, भविष्य एवं वर्तमानकालीन विस्तृत फलादेश सरलता पूर्वक ज्ञात किया जा सकेगा। और वही यथार्थ कुण्डली-रहस्य होगा।

<u>सम्वत्सरादि का प्रभाव</u> – यों तो जन्मकालीन ग्रह-स्थिति ही जातक के जीवन को मुख्यरूप से प्रभावित करती है, तथापि विभिन्न संवत्सर, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण, योनि, गण, एवं दिन अथवा रात्रि के समय जन्म लेने का प्रभाव भी जातक के स्वभाव एवं चरित्र पर कुछ-न-कुछ अवश्य पड़ता है; अस्तु सर्वप्रथम क्रमशः इन्ही के प्रभाव का उल्लेख किया जाता है।

<u>अथ सम्वत्सर फलम्</u> – १ प्रभव, २ विभव, ३ शुक्ल, ४ प्रमोद, ५ प्रजापति, ६ अङ्गिरा, ७ श्रीमुख, ८ भाव, ९ युवा, १० धाता, ११ ईश्वर, १२ बहुधान्य, १३ प्रमाथी, १४ विक्रम, १५ वृष, १६ चित्रभानु, १७ सुभानु, १८ तारण, १९ पार्थिव, २० व्यय, २१ सर्वजित्, २२ सर्वधारी, २३ विरोधी, २४ विकृति, २५ खर, २६ नन्दन, २७ विजय, २८ जय, २९ मन्मथ, ३० दुर्मुख, ३१ हेमलम्ब, ३२ विलम्ब, ३३ विकारी, ३४ शार्वरी, ३५ प्लव, ३६ शुभकृत्, ३७ शोभन, ३८ क्रोधी, ३९ विश्वावसु, ४० पराभव, ४१ प्लवङ्ग, ४२ कीलक, ४३ सौम्य, ४४ साधारण, ४५ विरोधकृत्, ४६ परिधावी, ४७ प्रमादी, ४८ आनन्द, ४९ राक्षस, ५० नल, ५१ पिङ्गल, ५२ कालयुक्त, ५३ सिद्धार्थी, ५४ रौद्र, ५५ दुर्मति, ५६ दुन्दुभी, ५७ रुधिरोद्गारी, ५८ रक्ताक्ष, ५९ क्रोधन तथा ६० क्षय। इन साठ सम्वत्सरों की पुनरावृत्ति होती रहती है। इनमें पहले २० 'ब्रह्मविंशतिका', दूसरे २० 'विष्णु विंशतिका' तथा तीसरे अर्थात् अन्तिम २० 'रुद्रविंशतिका' के अन्तर्गत आते हैं। इन सम्वत्सरों में जन्म लेने का फल क्रमशः इस प्रकार कहा गया है – '<u>प्रभव</u>' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला व्यक्ति अनेक पुत्रों वाला, सम्पत्तिशाली, दीर्घायु, समस्त पदार्थों को प्राप्त करने वाला तथा अनेक भोगों का उपभोग करने वाला होता है। '<u>विभव</u>' नामक सम्वत्सर मे जन्म लेने वाला लालिमा युक्त कृष्ण नेत्रों वाला, विद्वान्, राज-पूजित तथा विभिन्न प्रकार के भोगों का उपभोक्ता होता है। '<u>शुक्ल</u>' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला सुन्दर, भोगी, शान्त-स्वभाव, पुत्रवान्, विद्वान् तथा सर्वगुण-सम्पन्न होता है। '<u>प्रमोद</u>' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला सत्यवादी, पण्डित, सुखी, मानी, आनन्दित रहने वाला तथा स्वर्ण जैसे कान्तिमान् शरीर वाला होता है। '<u>प्रजापति</u>' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला प्रजा-पालक, कृपालु, धर्मात्मा, सत्यवादी, गुणी तथा देव-भक्त होता है।

'अङ्गिरा' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला कामी, भोगी, मानी, सुखी, मित्र-प्रिय, दीर्घायु तथा अनेक पुत्रों वाला होता है। 'श्रीमुख' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला श्रीमान, श्रेष्ठ बुद्धि, शांत-स्वभाव, प्रीतियुक्त, शुभकर्मकर्ता, दीर्घायु तथा अनेक पुत्रों वाला होता है। 'भाव' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला यशस्वी, दानी, शुभलक्षण युक्त तथा बहुत सुख भोगने वाला होता है। 'युवा' नामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला गुणी, कीर्तिवान्, दीर्घायु, दानी, पवित्र, शान्त तथा श्रेष्ठ बुद्धि वाला होता है। 'धाता' नामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला दीर्घायु, चतुर, वेदाध्ययन में तत्पर एवं सुन्दर स्वरूप वाला होता है। 'ईश्वर' नामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला सर्वज्ञ, गुरुभक्त, अत्यन्त सुन्दर, परन्तु सदैव क्रोधयुक्त रहने वाला होता है। 'बहुधान्य' नामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला कूप-वापी आदि का निर्माण कराने वाला, यज्ञादि शुभ-कर्म करने वाला, दानी तथा धन की वृद्धि करने वाला होता है। 'प्रमाथी' नामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला सेनापति, मन्त्री, शिवजी से वर प्राप्त करने वाला अर्थात् शिव-भक्त, शास्त्रज्ञ तथा धन-संग्रही होता है। 'विक्रम' नामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला उग्र प्रतापी, दूसरों को सलाह देने वाला, पाप-कर्म-निरत तथा शूर-वीर होता है। 'वृष' नामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला मन्द-बुद्धि, आलसी, महामूर्ख, भार-वाहक तथा पाप-कर्म-निरत होता है। 'चित्रभानु' सम्वत्सर में जन्म लेने वाला परम विद्वान्, नीतिमान्, बुद्धिमान्, श्रीमान्, स्वामि-भक्त तथा प्रियवादी होता है। 'सुभानु' नामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला पिङ्गल-वर्ण नेत्रों का, पिंगल-वर्ण केशों वाला, गौर-वर्ण शरीर, कान्तिमान्, स्वामी, न्यायकर्ता, परन्तु अत्यन्त दुष्ट-स्वभाव का होता है। 'तारण' नामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला चंचल, चपल, धृष्ट, पापी, शूर, दरिद्र तथा निष्ठुर स्वभाव वाला होता है। 'पार्थिव' नामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला मृदुभाषी, राजमान्य, रजोगुणी, कान्तिमान्, शुभ-लक्षण-सम्पन्न तथा धन की वृद्धि करने वाला होता है। 'व्यय' नामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला जुआरी, मद्यपी, पर-स्त्रियों के लिये धन नष्ट करने वाला, चोर तथा पाप-बुद्धि वाला होता है। 'ब्रह्म विंशतिका' के अन्तर्गत आनेवाले सम्वत्सरों में जन्म लेने वाले व्यक्ति के चरित्र तथा स्वभाव में उक्त लक्षण पाये जाते हैं।

भृ० सं० २३

'सर्वजित्' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला अपने कार्य में दत्तचित्त, शास्त्रपाठी, रोग-ज्ञाता (वैद्य), श्याम वर्ण, छोटे क़द तथा स्थूल शरीर वाला होता है। 'सर्वधारी' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला धनी, अनेक सेवकों से युक्त, कामी, सबका आश्रय, स्वामी तथा मिष्ठान्न-प्रिय होता है। 'विरोधी' नामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला कुटुम्बियों से कलहकर्त्ता, पर-स्त्रीगामी तथा सबका विरोधी होता है। 'विकृति' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला कृष्ण-वर्ण, गुणहीन, रूक्ष-शरीर वाला तथा कलान्यास में चंचल होता है। 'खर' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला धूलि-धूसरित जैसे अङ्गों वाला, दीर्घायु, अत्यन्त कामी तथा निर्लज्ज होता है। 'नन्दन' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला सदैव आनन्दित, सन्तुष्ट, वापी-कूपादि का निर्माता, शीलवान् तथा दीनों के प्रति दयालु होता है। 'विजय' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला शूर-वीर, युद्धक्षेत्र में तेजस्वी, यशस्वी, कीर्तिमान्, पृथ्वीपति, विजयी तथा भोगी होता है। 'जय' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला विद्वान्, मानी, यशस्वी, शास्त्रज्ञ, अनुयाइयों से युक्त तथा विजय पाने वाला होता है। 'मन्मथ' नामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला भोगी, कामी, प्रियवादी तथा सब प्रकार के सुखों से युक्त होता है। 'दुर्मुख' नामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला शठ, क्रूर-बुद्धि, दुष्ट, हिंसक, वृषली-पति, उग्र-स्वभाव तथा टेढ़े मुख एवं हाथ-पाँवों वाला होता है। 'हेमलम्ब' सम्वत्सर में जन्म लेने वाला स्वर्ण, धन-धान्य, पशु तथा वस्त्र आदि से समृद्ध एवं स्त्री-पुत्रादि के सुख से युक्त होता है। 'विलम्ब' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मन्दभागी, आलसी, लोभी, कफ-रोगी, ठग, पापी तथा स्वकार्य में जुटा रहने वाला होता है। 'विकारी' नामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला अविवेकी, अहंकारी, खल, विवादी तथा ठग होता है। 'शार्वरी' नामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला व्यापार-कुशल, लम्बे तथा पतले शरीर वाला, निद्रालु जैसे झुके नेत्रों वाला तथा मित्र-द्वेषी होता है। 'प्लव' नामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला चंचल, कामी, पर-सेवक, कृषि-कर्मकर्ता एवं छोटे क़द वाला होता है। 'शुभकृत्' नामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला सुन्दर, शुभ-कर्मकर्ता, विद्या-धर्म-परायण, दीर्घायु तथा धन-पुत्रादि से सम्पन्न होता है। 'शोभन' नामक

कु० २०

सम्वत्सर में जन्म लेने वाला सर्वत्र विजयी, कामी, सुन्दर, गुणी तथा दयालु होता है। 'क्रोधी' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला पिंगल-वर्ण नेत्र, मंदमति, कामी, स्त्री-लोलुप, पराये कामों को बिगाड़ने वाला तथा राज-कोप पाने वाला होता है। 'विभावसु' नामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला शान्त-स्वभाव, सद्‌गुणी, दानी, पवित्रात्मा, सन्ततिवान्, सुखी तथा मिष्ठान्न-प्रिय होता है। 'पराभव' नामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला पर-स्त्रीगामी, शठ, स्वजनों से शत्रुता तथा पराये लोगों से मित्रता रखने वाला एवं धन-धान्य-हीन होता है। 'विष्णु विंशतिका' के अन्तर्गत आने वाले सम्वत्सरों में जन्म लेने वाले व्यक्ति के स्वभाव तथा चरित्र में उक्त लक्षण पाये जाते हैं।

'प्लवङ्ग' नामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला दुष्ट, पापी, आचार-हीन तथा अपवित्र होता है। 'कीलक' नामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला कामी, क्षुधा-पिपासाकुल, स्थूल शरीर वाला तथा सामान्य सुन्दर होता है। 'सौम्य' नामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला विद्वान्, धनी, तपस्वी, सौम्य तथा ब्राह्मण, देवता एवं अतिथि पूजक होता है। 'साधारण' नामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला नीचवृत्ति, काम-रहित, पवित्र, परदेशवासी तथा देव-दर्शन के समय क्रोध करने वाला होता है। 'विरोधकृत' नामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला पितृ-भक्ति-रहित, लोक-विरोधी, परन्तु सजातीयों की सेवा करने वाला होता है। 'परिधावी' नामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला विद्वान्, कला-कुशल, व्यवसाय-कुशल, बुद्धिमान्, राज्य द्वारा सम्मानित एवं दानी होता है। 'प्रमादी' नामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला लोभी, कुटुम्बघाती, पर-कर्म करने वाला, बन्धु-विरोधी तथा दुष्ट स्वभाव का होता है। 'आनन्द' नामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला अनेक स्त्रियों से युक्त, परम चतुर, समस्त आनन्दों का उपभोग करने वाला, क्षमाशील तथा पुत्र एवं मित्र युक्त होता है। 'राक्षस' नामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला सर्वभक्षी, कृतघ्न, धर्माधर्म-रहित, हिंसक तथा पर-पीड़क होता है। 'नल' नामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला वैश्य-वृत्ति, धनी, बहु-कुटुम्बी, पवित्र तथा जलाशयों का निर्माण कराने वाला होता है। 'पिङ्गल' नामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला टेढ़ी-दृष्टि वाला, अल्प रोमों वाला, महाउद्यमी तथा कार्य-सिद्धि के कर्म-फल का

त्याग करने वाला होता है। 'कालयुक्त' नामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला परोपकारी, रोगी तथा भक्ष्याभक्ष्य का विचार न करने वाला होता है। 'सिद्धार्थी' नामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला ऋद्धि-सिद्धि युक्त, नित्य भोगी, सङ्गीत-विशारद, मन्त्री, यशस्वी तथा उदासीन वृत्ति का होता है। 'रौद्र' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला भयानक स्त्री वाला, पापी, चुगुलखोर, घात करने वाला तथा अल्पायु होता है। 'दुर्मति' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मूर्ख, क्रूर, कामी, वचन-पालक, दान न करने वाला तथा धनी होता है। 'दुन्दुभी' नामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला सदैव उत्साही, पृथ्वीपति, हाथी-घोड़ा, धन-धान्य तथा सुख से सम्पन्न होता है। 'रुधिरोद्गारी' नामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला कामी, लोभी, महादोषी, शस्त्र-पीड़ा से पीड़ित, दुष्कर्मकर्त्ता तथा बुरे नखों वाला होता है। 'रक्ताक्षी' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला नेत्र-रोगी, मन्द-दृष्टि घमण्डी, दुर्जन तथा अत्यन्त कामी होता है। 'क्रोधन' नामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला तपस्वी, धातुवादी, निर्गुण, भयंकर रूप वाला, ठग तथा पापबुद्धि होता है। 'क्षय' नामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला आजन्म-रोगी, पर-सेवक, दुष्ट तथा अधर्मी होता है। 'रुद्र विंशतिका' के अन्तर्गत आने वाले सम्वत्सरों में जन्म लेने वाले व्यक्ति के चरित्र तथा स्वभाव में उक्त लक्षण पाये जाते हैं।

अथ अयन फलम् - अयन २ होते हैं— उत्तरायण और दक्षिणायन। 'उत्तरायण' में जन्म लेने वाला सुखी, गुणी, आचारवान्, बुद्धि-कुशल, स्त्री युक्त, दीर्घायु, यशस्वी तथा देव-ब्राह्मण एवं आचार्य-चरणों में भक्ति रखने वाला होता है। 'दक्षिणायन' में जन्म लेने वाला क्रूर, शठ, रोगी, पापी, चोर, कृश-शरीर, पर-स्त्री-गामी तथा अधिक सोने वाला होता है।

अथ ऋतु फलम् - ऋतुऐं ६ होती हैं— १ शिशिर, २ वसन्त, ३ ग्रीष्म, ४ वर्षा, ५ शरद् और ६ हेमन्त। 'शिशिर ऋतु' में जन्म लेने वाला बलवान्, सुखी, दीर्घायु, शुभ आचरणों वाला, दन्त-रोगी तथा मिष्ठान्न भोजी होता है। 'वसन्त ऋतु' में जन्म लेने वाला सुखी, भोगी, गुणी, श्रेष्ठ स्वामी, सत्यवादी, दानी तथा यशस्वी होता है।

'ग्रीष्म ऋतु' में जन्म लेने वाला जलाशयों का निर्माता, शास्त्र-वेत्ता एवं ज्ञानोपदेशक होता है। 'वर्षा ऋतु' में जन्म लेने वाला देश-ग्राम-पुरादि का अध्यक्ष, कृषि-कर्म-कर्त्ता एवं शास्त्र-संग्रह में प्रवीण होता है। 'शरद ऋतु' में जन्म लेने वाला व्यापार-कुशल, मन्त्री, ज्वरादि से मुक्त, पण्डित, गुणी तथा धैर्यवान् होता है। 'हेमन्त ऋतु' में जन्म लेने वाला महलों में निवास करने वाला, धर्मात्मा, सत्यवादी, पवित्र तथा मिष्ठान्नभोजी होता है।

अथ मास फलम् – महीने १२ होते हैं – १ चैत्र, २ वैशाख, ३ ज्येष्ठ, ४ आषाढ़, ५ श्रावण, ६ भाद्रपद, ७ आश्विन, ८ कार्तिक, ९ मार्गशीर्ष, १० पौष, ११ माघ तथा १२ फाल्गुन। 'चैत्रमास' में जन्म लेने वाला ब्रह्मचारी, वेदाभ्यासी, गुरु, ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त एवं सद्गुणी होता है। 'वैशाख मास' में जन्म लेने वाला सर्वलक्षण सम्पन्न, दीर्घ-दर्शी, कलाओं का ज्ञाता, सात्विक स्वभाव वाला तथा दीर्घजीवी होता है। 'ज्येष्ठ मास' में जन्म लेने वाला सब कार्यों में चतुर, बुद्धिमान्, परीक्षक तथा दैनिक क्रय-विक्रय करने वाला होता है। 'आषाढ़ मास' में जन्म लेने वाला बहुभोजी, कुष्ठरोगी, निर्धन, कृषि-कर्म करने वाला, मूर्ख तथा व्याधियुक्त होता है। 'श्रावण मास' में जन्म लेने वाला पुत्र, स्त्री एवं धन सम्पन्न, वेद-कर्म में प्रवीण तथा लोक-पूज्य होता है। 'भाद्रपद मास' में जन्म लेने वाला भोगी, दाता, कृश एवं दीर्घ शरीर वाला, गौर-वर्ण, कामी, पुत्रवान्, बन्धु-बान्धव युक्त, धीमान् तथा अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध रखने वाला होता है। 'आश्विन मास' में जन्म लेने वाला ऐश्वर्यशाली, राजा को प्रिय, अनेक सेवक तथा स्त्रियों वाला, पुत्रवान् परन्तु अल्पजीवी होता है। 'कार्तिकमास' में जन्म लेने वाला वक्रबुद्धि, वाचाल, आलसी, ब्रह्मचारी तथा कुंचित केशों वाला होता है। 'मार्गशीर्ष मास' में जन्म लेने वाला तीर्थयात्री, मन्त्र-दीक्षा में तत्पर तथा शास्त्रार्थ-संचयी होता है। 'पौष मास' में जन्म लेने वाला दुःख-दायक, रोगी तथा पाप-मार्ग पर चलने वाला होता है। 'माघ मास' में जन्म लेने वाला योगी, तपोनिष्ठ, वेदज्ञ, चतुर, शान्त तथा दयालु स्वभाव का होता है। 'फाल्गुन मास' में जन्म लेने वाला सुकुमार, भोगी, कामी, स्त्रियों को प्रिय, सुखी तथा हाथी, घोड़ा एवं आभूषणादि से सम्पन्न होता है।

<u>अथ पक्ष फलम्</u> – पक्ष २ होते हैं – शुक्ल और कृष्ण। '<u>शुक्ल पक्ष</u>' में जन्म लेने वाला दीर्घायु, पुत्रवान्, दानी, अनेक व्यक्तियों का पालन करने वाला, स्त्री-वशी तथा मित्रों का सम्मान करने वाला होता है। '<u>कृष्ण पक्ष</u>' में जन्म लेने वाला आलसी, मलिन, द्वेषी, निन्दक, ग्राम्य-भाषा बोलने वाला तथा धर्म-बहिष्कृत होता है।

<u>अथ तिथि फलम्</u> – प्रत्येक पक्ष में पन्द्रह-पन्द्रह तिथियाँ होती हैं। शुक्ल पक्ष की अन्तिम तिथि को 'पूर्णिमा' तथा कृष्णपक्ष की अन्तिम तिथि को 'अमावास्या' कहा जाता है। अन्य तिथियों के नाम दोनों पक्षों में क्रमशः इस प्रकार होते हैं – १ प्रतिपदा, २ द्वितीया, ३ तृतीया, ४ चतुर्थी, ५ पञ्चमी, ६ षष्ठी, ७ सप्तमी, ८ अष्टमी, ९ नवमी, १० दशमी, ११ एकादशी, १२ द्वादशी, १३ त्रयोदशी और १४ चतुर्दशी। '<u>प्रतिपदा</u>' को जन्म लेने वाला प्रायः अल्पायु होता है, परन्तु यदि तीन मास तक जीवित बना रहे तो फिर अस्सी वर्ष की आयु प्राप्त करने वाला एवं परमतेजस्वी होता है। '<u>द्वितीया</u>' को जन्म लेने वाला सत्यवादी, लोकानन्द-दायक, स्तुति-योग्य तथा स्व-कर्म-निरत होता है। '<u>तृतीया</u>' को जन्म लेने वाला स्त्री-लम्पट, कृपण, चंचल-चित्त, व्रत-उपवास रखने वाला, मूर्ख, विवादी तथा बलवान् होता है। '<u>चतुर्थी</u>' को जन्म लेने वाला लोभी, चुगलखोर, प्रचण्ड-साहसी, शूर-वीर सुखी तथा चंचल-चित्त वाला होता है। '<u>पञ्चमी</u>' को जन्म लेने वाला दीर्घायु, महामति, स्थिर स्वभाव वाला, शूर-वीर, सत्यवादी मानी तथा जितेन्द्रिय होता है। '<u>षष्ठी</u>' को जन्म लेने वाला व्रण-चिह्न युक्त, स्थिर-स्वभाव, स्त्री-लोलुप, सुन्दर तथा विद्या एवं कीर्ति अर्जित करने वाला होता है। '<u>सप्तमी</u>' को जन्म लेने वाला धनी, गुणी, सदाचारी, गुरु-देव-भक्त तथा दृढ़-व्रती होता है। '<u>अष्टमी</u>' को जन्म लेने वाला स्व-स्त्री में आसक्त, चंचल, चपल-चित्त, बहुभाषी तथा निष्ठुर-स्वभाव का होता है। '<u>नवमी</u>' को जन्म लेने वाला कामी, महाबलशाली, गीत-नृत्य-प्रिय, शत्रुहन्ता तथा परम क्रोधी होता है। '<u>दशमी</u>' को जन्म लेने वाला शरीर पर शस्त्र अथवा व्रण-चिह्न युक्त, स्त्री-जित्, अत्यन्त सुन्दर, पवित्र, चंचल-चित्त तथा परम बुद्धिमान् होता है। '<u>एकादशी</u>' को जन्म लेने वाला

लोक-व्यवहार में कुशल, कला-शास्त्र विद्, दृढ़व्रती तथा सत्यवादी होता है। 'द्वादशी' को जन्म लेने वाला महा क्रोधी, रति-लोलुप, श्रेष्ठ आभरणों वाला, सुन्दर तथा वस्त्र-भोजनादि की प्राप्ति में तत्पर बना रहने वाला होता है। 'त्रयोदशी' को जन्म लेने वाला व्रतोपवास-निरत, ज्ञानी, बुद्धिमान् गुणी तथा स्त्री-जित् होता है। 'चतुर्दशी' को जन्म लेने वाला सभी कर्मों में शुद्ध, व्याधि-रहित, बुद्धिमान् तथा बन्धु-बान्धवों से युक्त होता है। 'पूर्णिमा' को जन्म लेने वाला सुन्दर, पूर्णाङ्ग, सुस्थिर-चित्त वाला तथा सदैव प्रसन्न बना रहने वाला होता है। 'अमावास्या' को जन्म लेने वाला इन्द्रियों से दुःखी, सुख-हीन, बल-हीन तथा अत्यधिक व्याकुल चित्त वाला होता है।

अथ वार फलम् – वार अर्थात् दिन ७ होते हैं– रवि, चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र और शनि। 'रविवार' को जन्म लेने वाला स्थिर-स्वभाव, शूर-वीर, पवित्र, अत्यन्त चतुर, रक्त-श्याम वर्ण तथा पित्त प्रकृति का होता है। 'चन्द्रवार' (सोमवार) को जन्म लेने वाला सात्विक-स्वभाव, क्षय-वृद्धि-सम्पन्न, गौर-वर्ण, छोटे क़द का, चौड़ी छाती वाला एवं श्रेष्ठ बुद्धिमान होता है। 'भौमवार' (मङ्गलवार) को जन्म लेने वाला रक्त-वर्ण नेत्र, क्षत्रियोचित-कर्म करने वाला, अल्पभाषी, मधुर-स्वभाव तथा क्षमाशील होता है। 'बुधवार' को जन्म लेने वाला गोल सिर तथा गोल पाँवों वाला, चपल-बुद्धि, अत्यन्त चतुर, रूपवान् तथा कवि होता है। 'गुरुवार' (बृहस्पतिवार) को जन्म लेने वाला श्रेष्ठ बुद्धिमान्, लोक-प्रसिद्ध, कला-शास्त्र विद्, प्रगल्भ, कुशल, पवित्र तथा धीर-स्वभाव का होता है। 'शुक्रवार' को जन्म लेने वाला गुप्त-कर्म करने वाला, श्रेष्ठ बुद्धिमान्, सुन्दर मुख वाला, विद्वान्, प्रसिद्ध, कला-मर्मज्ञ, शास्त्रज्ञ तथा पवित्र होता है। 'शनिवार' को जन्म लेने वाला मनुष्य रुक्ष एवं दुर्बल शरीर वाला, मलिन, अत्यन्त चंचल-चित्त वाला, दुष्ट, भयानक तथा सदैव क्रोधोन्मत्त रहने वाला होता है।

अथ तिथि-क्षय एवं तिथि-मल फलम् – जिस तिथि में सूर्योदय न हो, उसे 'तिथि-क्षय' तथा जिस तिथि में दो बार सूर्योदय हो, उसमें अग्रिम उदय वाली तिथि को 'तिथि-मल' कहा जाता है। ('तिथि-क्षय' अथवा 'तिथि-मल'

में जन्म लेने वाला गुण-हीन, धन-हीन, कुटिल तथा पर-वञ्चक होता है।

अथ नन्दादि संज्ञक तिथि फलम् – प्रतिपदा, षष्ठी तथा एकादशी – ये तिथियाँ 'नन्दा' संज्ञक; द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी – ये तिथियाँ 'भद्रा' संज्ञक; तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी – ये तिथियाँ 'जया' संज्ञक; चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी – ये तिथियाँ 'रिक्ता' संज्ञक एवं पंचमी, दशमी और पूर्णिमा (अथवा अमावास्या) – ये तिथियाँ 'पूर्णा' संज्ञक होती हैं। 'नन्दा' तिथि में जन्म लेने वाला विद्वान्, महामानी, देव-भक्त, ज्ञानी तथा प्रिय-वत्सल होता है। 'भद्रा' तिथि में जन्म लेने वाला बन्धु-बान्धवों में सम्मानित, राज-सेवक, धनी, सांसारिक-बन्धनों से डरने वाला तथा परोपकारी होता है। 'जया' तिथि में जन्म लेने वाला राज्य द्वारा सम्मानित, पुत्र-पौत्रादि से युक्त, शूर-वीर, शान्त स्वभाव वाला, दीर्घायु तथा मनस्वी होता है। 'रिक्ता' तिथि में जन्म लेने वाला शास्त्रज्ञ, परन्तु कुतर्की, प्रमादी, गुरु-निन्दक, कामी तथा दूसरों का घमंड चूर करने वाला होता है। 'पूर्णा' तिथि में जन्म लेने वाला सत्यवादी, वेद-शास्त्रों के तत्त्वार्थ का जानकार, अनेक विषयों का ज्ञाता, शुद्ध चित्त वाला तथा सत्यवादी होता है।

अथ दिवा-रात्रि फलम् – 'दिन' में जन्म लेने वाला अनेक पुत्रों तथा अधिक मित्रों वाला, बुद्धिमान्, सुन्दर, सद्धर्म युक्त, कामातुर, भोगी तथा वस्त्रादि से परिपूर्ण होता है। 'रात्रि' में जन्म लेने वाला मितभाषी, अति-कामी, क्षय-रोगी, मलिन, क्रूर तथा गुप्त-पापी होता है।

अथ जन्म-नक्षत्र फलम् – नक्षत्र २७ होते हैं – १ अश्विनी, २ भरणी, ३ कृत्तिका, ४ रोहिणी, ५ मृगशिरा, ६ आर्द्रा, ७ पुनर्वसु, ८ पुष्य, ९ आश्लेषा, १० मघा, ११ पूर्वा फाल्गुनी, १२ उत्तरा फाल्गुनी, १३ हस्त, १४ चित्रा, १५ स्वाति, १६ विशाखा, १७ अनुराधा, १८ ज्येष्ठा, १९ मूल, २० पूर्वाषाढा, २१ उत्तराषाढा, २२ श्रवण, २३ धनिष्ठा, २४ शतभिषा, २५ पूर्वाभाद्रपदा, २६ उत्तरा भाद्रपदा और २७ रेवती। 'अश्विनी' नक्षत्र में जन्म लेने वाला सुन्दर, भाग्यशाली, चतुर, स्थूल-काय, महाधनी तथा लोकप्रिय होता है। 'भरणी' नक्षत्र में जन्म लेने वाला रोग-रहित, सत्य-प्रतिज्ञ, सत्यवादी,

दृढ़व्रती, सुखी तथा धनी होता है। 'कृत्तिका' नक्षत्र में जन्म लेने वाला कृपण, पाप-कर्म करने वाला, क्षुधा-पीड़ित, नित्यदुःखी, तथा प्रतिदिन अकर्म करने वाला होता है। 'रोहिणी' नक्षत्र में जन्म लेने वाला धनी, कृतघ्न, मेधावी, राजमान्य, प्रियभाषी, सत्यवादी तथा सुन्दर स्वरूपवान् होता है। 'मृगशिरा' नक्षत्र में जन्म लेने वाला चपल, चतुर, धैर्यवान्, अहंकारी, स्वार्थी, पर-द्वेषी तथा नकली-वस्तुऐं बनाने वाला होता है। 'आर्द्रा' नक्षत्र में जन्म लेने वाला कृतघ्न, घमण्डी, पापी, शठ, धन-धान्य-हीन तथा नीच-स्वभाव का होता है। 'पुनर्वसु' नक्षत्र में जन्म लेने वाला शान्त, सुखी, संभोग-प्रिय, सुन्दर, लोक-प्रिय तथा पुत्र-मित्रादि से युक्त होता है। 'पुष्य' नक्षत्र में जन्म लेने वाला देव-धर्म-उपासक, शान्त, सुखी, धनी, पुत्रवान्, विद्वान् तथा सुन्दर होता है। 'आश्लेषा' नक्षत्र में जन्म लेने वाला सर्वभक्षी, क्रूर-स्वभाव का, कृतघ्न, धूर्त, दुष्ट तथा स्वार्थी होता है। 'मघा' नक्षत्र में जन्म लेने वाला धनी, मानी, भोगी, अनेक सेवकों वाला, सेनापति, राज-सेवक, महान् उद्यमी तथा पितृ-भक्त होता है। 'पूर्वा फाल्गुनी' नक्षत्र में जन्म लेने वाला विद्यावान्, धनवान्, पशुओं से युक्त, गंभीर स्वभाव का, स्त्रियों को प्रिय, सुखी तथा विद्वानों द्वारा सम्मानित होता है। 'उत्तराफाल्गुनी' नक्षत्र में जन्म लेने वाला विद्या एवं धन-सम्पन्न, सुख-भोगी तथा सौभाग्यशाली होता है। 'हस्त' नक्षत्र में जन्म लेने वाला निर्लज्ज, पापी, धूर्त तथा उत्साही होता है। 'चित्रा' नक्षत्र में जन्म लेने वाला सुन्दर नेत्र तथा अङ्गों वाला एवं विचित्र वस्त्र तथा पुष्पमालादि धारण करने वाला होता है। 'स्वाति' नक्षत्र में जन्म लेने वाला दयालु, मधुर-भाषी, धनी तथा धर्मात्मा होता है। 'विशाखा' नक्षत्र में जन्म लेने वाला ईर्ष्यालु, कृपण, वाणी का चतुर तथा शोभायुक्त होता है। 'अनुराधा' नक्षत्र में जन्म लेने वाला विदेशवासी, धनी तथा क्षुधातुर होता है। 'ज्येष्ठा' नक्षत्र में जन्म लेने वाला धर्मात्मा, संतोषी, अल्प मित्रवान्, परन्तु महाक्रोधी होता है। 'मूल' नक्षत्र में जन्म लेने वाला सुख-हीन, हिंसक, धनी, मानी, भोगी तथा स्थिर-स्वभाव वाला होता है। 'पूर्वाषाढ़ा' नक्षत्र में जन्म लेने वाला सुखी, मानी, स्त्री-युक्त, दृढ़-मित्रों वाला तथा आनन्दित रहने वाला होता है। 'उत्तराषाढ़ा' नक्षत्र में जन्म लेने वाला

बहुसंख्यक श्रेष्ठ मित्रों वाला, धर्मात्मा, कृतज्ञ तथा सौभाग्यशाली होता है। 'श्रवण' नक्षत्र में जन्म लेने वाला बड़ा उदार, कृतज्ञ, महाधनी तथा प्रसिद्धि पाने वाला होता है। 'धनिष्ठा' नक्षत्र में जन्म लेने वाला दानी, धनी, शूर-वीर, स्वस्थ एवं पुष्ट शरीर वाला तथा रति-प्रेमी होता है। 'शतभिषा' नक्षत्र में जन्म लेने वाला स्पष्टवादी, रसिक, दुर्ग्राह्य, व्यसनी तथा शत्रुजयी होता है। 'पूर्वाभाद्रपदा' नक्षत्र में जन्म लेने वाला सुखी, सन्तातिवान्, सुवक्ता, व्यर्थ समय गँवाने वाला तथा अधिक सोने वाला होता है। 'उत्तरा भाद्रपदा' नक्षत्र में जन्म लेने वाला गौर-वर्ण, सत्यवान्, धर्मात्मा, देव-तुल्य साहसी तथा शत्रुजयी होता है। 'रेवती' नक्षत्र में जन्म लेने वाला शूर, सज्जन, विचक्षण, सर्वाङ्गपूर्ण तथा धन-धान्य-सम्पन्न होता है।

<u>अथ नक्षत्र-चरण फलम्</u> — प्रत्येक नक्षत्र के चार-चार चरण होते हैं। किस नक्षत्र के प्रथम, द्वितीय, तृतीय अथवा चतुर्थ चरण में जन्म लेने का क्या प्रभाव होता है, इसे आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए। 'अश्विनी' नक्षत्र के 'प्रथम' चरण में जन्म लेने वाला चोर, 'द्वितीय' चरण वाला अल्प-कर्मी, 'तृतीय' चरण वाला श्रेष्ठ भाग्यशाली तथा 'चतुर्थ' चरण वाला दीर्घायु होता है। 'भरणी' के 'प्रथम'-चरण वाला त्यागी, 'द्वितीय'-चरण वाला धनी-सुखी, 'तृतीय' चरण वाला क्रूरकर्मी तथा 'चतुर्थ'-चरण वाला दरिद्र होता है। 'कृत्तिका' के 'प्रथम'-चरण वाला तेजस्वी, 'द्वितीय'-चरण वाला शास्त्रज्ञ, 'तृतीय' चरण वाला ऐश्वर्यशाली तथा 'चतुर्थ'-चरण वाला बहुपुत्रवान् एवं दीर्घायु होता है। 'रोहिणी' के 'प्रथम'-चरण वाला सौभाग्यशाली, 'द्वितीय'-चरण वाला पीड़ायुक्त, 'तृतीय'-चरण वाला डरपोक तथा 'चतुर्थ'-चरण वाला सत्यवादी होता है। 'मृगशिरा' के 'प्रथम' चरणवाला राजा, 'द्वितीय' चरणवाला चोर, 'तृतीय'-चरणवाला भोगी तथा 'चतुर्थ'-चरणवाला धन-धान्य-सम्पन्न होता है। 'आर्द्रा' के 'प्रथम' चरणवाला अधिक खर्च करने वाला, 'द्वितीय'-चरण वाला दरिद्र, 'तृतीय'-चरणवाला अल्पायु तथा चतुर्थ-चरण वाला चोर होता है। 'पुनर्वसु' के 'प्रथम'-चरण वाला सुखी, द्वितीय चरण वाला विद्वान्, 'तृतीय'-चरण वाला रोगी तथा 'चतुर्थ' चरणवाला मृदुभाषी होता है। 'पुष्य' के 'प्रथम'-चरण वाला दीर्घायु, 'द्वितीय'

चरण वाला चोर, 'तृतीय' चरण वाला भोगी तथा 'चतुर्थ' चरण वाला बुद्धिमान् होता है। 'आश्लेषा' के 'प्रथम' चरण वाला सन्तान-रहित, 'द्वितीय'-चरण वाला पराया-काम करने वाला, तृतीय चरण वाला रोगी तथा 'चतुर्थ' चरण वाला सौभाग्यशाली होता है। 'आश्लेषा' के गण्डान्तों में जन्म लेने वाला अल्पायु होता है। 'मघा' के 'प्रथम' चरण वाला सन्तान-हीन, 'द्वितीय' चरण वाला पुत्रवान्, 'तृतीय' चरण वाला कठिन रोगयुक्त तथा 'चतुर्थ' चरण वाला विद्वान् होता है। 'पूर्वाफाल्गुनी' के 'प्रथम' चरण वाला सामर्थ्यवान्, 'द्वितीय' चरण वाला धर्मात्मा, 'तृतीय' चरण वाला राजा तथा चतुर्थ चरण वाला क्रूर एवं अल्पायु होता है। 'उत्तराफाल्गुनी' के 'प्रथम' चरण वाला पण्डित, 'द्वितीय' 'द्वितीय' चरण वाला 'राजा', 'तृतीय' चरण वाला विजयी तथा 'चतुर्थ' चरण वाला धर्मात्मा होता है। 'हस्त' के 'प्रथम' चरण वाला शूर-वीर, 'द्वितीय' चरण वाला विवादी, 'तृतीय' चरण वाला धन-धान्य सम्पन्न तथा 'चतुर्थ' चरण वाला श्रीमान् होता है। 'चित्रा' के 'प्रथम' चरण वाला चोर, द्वितीय चरण वाला चित्रकार, 'तृतीय' चरण वाला पर-स्त्रीगामी तथा 'चतुर्थ' चरण वाला पण्डित होता है। 'स्वाति' के 'प्रथम' चरण वाला चोर, 'द्वितीय' चरण वाला अल्पायु, 'तृतीय' चरण वाला धर्मात्मा तथा 'चतुर्थ' चरण वाला राजा होता है। 'विशाखा' के 'प्रथम' चरण वाला नीतिज्ञ, 'द्वितीय' चरण वाला शास्त्रज्ञ, 'तृतीय' चरण वाला विवादी तथा 'चतुर्थ' चरण वाला दीर्घायु होता है। 'अनुराधा' के 'प्रथम' चरण वाला तेजस्वी, 'द्वितीय' चरण वाला धर्मात्मा, 'तृतीय' चरण वाला दीर्घायु तथा 'चतुर्थ' चरण वाला व्यभिचारी होता है। 'ज्येष्ठा' के प्रथम चरण वाला क्रूर, 'द्वितीय' चरण वाला भोगी, 'तृतीय' चरण वाला विद्वान् तथा 'चतुर्थ' चरण वाला पुत्रवान् होता है। 'मूल' के 'प्रथम' चरण वाला भोगी, 'द्वितीय' चरण वाला त्यागी, 'तृतीय' चरण वाला श्रेष्ठ मित्रों वाला तथा 'चतुर्थ' चरण वाला राजा होता है। 'पूर्वाषाढ़ा' के 'प्रथम' चरण वाला श्रेष्ठ-पुरुष, 'द्वितीय' चरण वाला राजा का प्रिय, 'तृतीय' चरण वाला विवादी तथा 'चतुर्थ' चरण वाला धनी होता है। 'उत्तराषाढ़ा' के प्रथम चरण वाला राजा, 'द्वितीय' चरण वाला मित्र-विरोधी, 'तृतीय' चरण वाला मानी तथा 'चतुर्थ' चरण वाला

धर्मात्मा होता है। 'श्रवण' के 'प्रथम' चरण वाला श्रेष्ठमानी, 'द्वितीय' चरण वाला श्रेष्ठगुणी, 'तृतीय' चरण वाला विद्वान् तथा 'चतुर्थ' चरण वाला धर्मात्मा होता है। 'धनिष्ठा' के 'प्रथम' चरण वाला दीर्घायु, 'द्वितीय' चरण वाला पीड़ायुक्त, 'तृतीय' चरण वाला डरपोक तथा 'चतुर्थ' चरण वाला श्रेष्ठ-स्त्री वाला होता है। 'शतभिषा' के 'प्रथम' चरण वाला मधुरभाषी, 'द्वितीय' चरणवाला लक्ष्मीवान्, 'तृतीय' चरण वाला सुखी तथा 'चतुर्थ' चरण वाला पुत्रवान् होता है। 'पूर्वाभाद्रपदा' के 'प्रथम' चरण वाला शूर-वीर, 'द्वितीय' चरण वाला चोर, 'तृतीय' चरण वाला बुद्धिमान् तथा 'चतुर्थ' चरण वाला भोगी एवं भू-स्वामी अथवा पुर (नगर आदि) का स्वामी होता है। 'उत्तराभाद्रपदा' के 'प्रथम' चरण वाला राजा, 'द्वितीय' चरण वाला चोर, 'तृतीय' चरण वाला पुत्रवान् तथा 'चतुर्थ' चरण वाला सुखी होता है। 'रेवती' के 'प्रथम' चरण वाला ज्ञानी, 'द्वितीय' चरण वाला चोर, 'तृतीय' चरणवाला युद्ध में नष्ट होने वाला तथा 'चतुर्थ' चरण वाला क्लेश-युक्त होता है। (विशेष- नक्षत्र तथा नक्षत्र-चरणों में जन्म का फल तभी घटित होता है, जबकि नक्षत्र ग्रहण, युद्ध, भूकम्प आदि दोषों से रहित हो तथा चन्द्रमा बलवान् हो)।

अथ नक्षत्रांश फलम्- नक्षत्र 'पहले' अंश में जन्म लेने वाला चतुर, धर्मात्मा, सत्यवादी, इन्द्रियजित तथा विद्वान् होता है। 'दूसरे' अंश में जन्म लेने वाला धनी, भोगी, युद्धजयी, नीतिज्ञ तथा स्त्री-आसक्त होता है। 'तीसरे' अंश में जन्म लेने वाला भोगों को भोगने वाला, शास्त्रज्ञ, स्वधर्म-पालक तथा स्व-पत्नी में आसक्त होता है। 'चौथे' अंश में जन्म लेने वाला स्त्री-जित, माया-लिप्त, सन्तति-विहीन, नपुंसक तथा वीर-विद्या का ज्ञाता होता है।

अथ योग फलम्- योग २७ होते हैं- १ विष्कुम्भ, २ प्रीति, ३ आयुष्य, ४ सौभाग्य, ५ शोभन, ६ अतिगण्ड, ७ सुकर्मा, ८ धृति, ९ शूल, १० गण्ड, ११ वृद्धि, १२ ध्रुव, १३, व्याघात, १४, हर्षण, १५, वज्र, १६, सिद्ध, १७ व्यतीपात, १८, वरीयान्, १९ परिघ, २० शिव, २१ सिद्धि, २२ साध्य, २३ शुभ, २४ शुक्ल, २५ ब्रह्म, २६ ऐन्द्र तथा २७ वैधृति। इन योगों में जन्म लेने का फल क्रमशः आगे लिखे अनुसार होता है-

'विष्कुम्भ' योग में जन्म लेने वाला अपने साले से प्रेम रखने वाला, स्व-पत्नी के अतिरिक्त पर-स्त्रियों से भी प्रीति करने वाला तथा सब कार्यों में चतुर होता है। 'प्रीति' योग वाला स्त्री-प्रिय, अत्यन्त उत्साही, कुतहल तथा परमार्थ-बुद्धि वाला होता है। 'आयुष्य' योग वाला नीतिज्ञ, स्थिर-चित्त, परम दानी, सब कार्यों में तत्पर तथा सब भोगों से युक्त होता है। 'सौभाग्य' योग वाला अधिक बोलने वाला, शुभगुण सम्पन्न, धनी, प्रियवादी, बुद्धिमान्, सुगंध-प्रिय, सुन्दर तथा भाग्यशाली होता है। 'शोभन' योग वाला बुद्धिमान्, गुणी, अकस्मात् शोकाकुल हो जाने वाला, सुन्दर, स्वच्छ-हृदय एवं निर्मल-स्वभाव वाला होता है। 'अतिगण्ड' योग वाला दूसरों पर दोषारोपण करने वाला, शूर-वीर, सत्यवादी, धर्मज्ञ, परन्तु कामी एवं पर-स्त्री-गामी होता है। 'सुकर्म' योग वाला सब कार्यों में दक्ष, धन-धान्य एवं गुण-सम्पन्न तथा व्यवसाय-कुशल होता है। 'धृति' योग वाला सुगन्ध-प्रिय, विवाद-रत, धनी, आलसी तथा नित्य पर-स्त्री-प्रेमी होता है। 'शूल' योग वाला पराक्रमी, सत्कर्मकर्त्ता, गुणी, भाग्यवान् तथा शूल-रोगी होता है। 'गण्ड' योग वाला वाचाल, गंभीर, महापराक्रमी, गंभीर, गर्वित, श्रेष्ठ तथा शुभ-लक्षण-सम्पन्न होता है। 'वृद्धि' योग वाला महाबुद्धिमान्, स्थिर-स्वभाव, शूर-वीर, सत्यवादी, जितेन्द्रिय, स्व-वचन-पालक एवं परम यशस्वी होता है। 'ध्रुव' योग वाला स्थिर-कर्मकर्त्ता, दृढ़शक्ति-सम्पन्न, दीर्घायु, प्रियदर्शी एवं सदैव कर्म-रत होता है। 'व्याघात' योग वाला मूर्ख, मलिन, चित्रकार, निष्ठुर तथा परम अभिमानी होता है। 'हर्षण' योग वाला कुटिल, सुख-सम्पन्न, कृषि-कर्मकर्त्ता, महाबली तथा मधुरभाषी होता है। 'वज्र' योग वाला दान न करने वाला, कृपण, धनी, ग्राम्य-भाषा बोलने वाला, क्रूर तथा सन्तान-हीन होता है। 'सिद्ध' योग वाला भोगी, धनी, मितभाषी, सुखी, सिद्धकर्मा तथा सत्यवादी होता है। 'व्यतीपात' योग वाला अस्थिर-स्वभाव का, सत्व-रहित, कुमन्त्री, बहुभोजी, कला-हीन तथा मूर्ख होता है। 'वरीयान्' योग वाला लोकपूज्य, धनी, स्वकर्म कर्त्ता, आनन्दप्रद तथा प्रशंसित होता है। 'परिघ' योग वाला दानी, दुराचारी, लोभी, साहसी, हठी तथा अपने कुल में बुद्धिमान् होता है। 'शिव' योग वाला धनी,

पुत्रवान्, ब्रह्मचर्य-पालक (संयमी), तीर्थ-यात्रा करने वाला तथा धर्मात्मा होता है। 'सिद्धि' योग वाला गुप्त-मन्त्रणा में कुशल, पण्डित, सब व्यवसायों का ज्ञाता, श्रेष्ठ चित्त वाला तथा नीतिमान् होता है। 'साध्य' योग वाला विभिन्न प्रकार के व्यवसाय करने वाला, बड़ा बुद्धिमान्, स्वामि-भक्त, सुसाध्य, सुगन्ध-प्रिय तथा परम उदार होता है। 'शुभ' योग वाला शुभ-कर्म करने वाला, अक्रोधी, सत्यवादी, निर्मल-हृदय तथा शरणागत-वत्सल होता है। 'शुक्ल' योग वाला सुन्दर, यशस्वी, वेदज्ञ, कला-शास्त्र-प्रवीण तथा सत्यवादी होता है। 'ब्रह्म' योग वाला परम पराक्रमी, प्रियवादी, विप्र-प्रिय, धीर, प्रगल्भ तथा निर्मल स्वभाव का होता है। 'ऐन्द्र' योग वाला विजयी, धावक, सब कार्यों में कुशल, धनी, प्रसिद्ध तथा प्रियवादी होता है। 'वैधृति' योग वाला कृपण, चुगुलखोर, बहुभाषी तथा प्रारंभिक-अवस्था में चंचल-चित्त वाला होता है।

अथ करण फलम् - करण ११ होते हैं— १ बव, २ बालव, ३, कौलव, ४ तैतिल, ५ गर, ६ वणिज, ७ भद्रा, ८ शकुनि, ९ चतुष्पद, १० नाग और ११ किंस्तुघ्न। विभिन्न करणों में जन्म लेने का फल क्रमशः आगे लिखे अनुसार होता है— 'बव' करण में जन्म लेने वाला अत्यन्त अभिमानी, उदार, सुखी, धन-हीन तथा सेना-नायक होता है। 'बालव' करण वाला धैर्यवान्, त्यागी वृत्ति का, सुन्दर, बाल-क्रीड़ाओं से प्रसन्न होने वाला तथा स्वयं भी बालकों जैसे काम करने वाला एवं सुख-सम्पन्न होता है। 'कौलव' करण वाला कौतुकों से आनन्दित होने वाला, पाप-कर्म-रत, प्रच्छन्न रूप से कौलव-धर्म-पालक तथा सुखी होता है। 'तैतिल' करण वाला सत्य-सम्पन्न, स्थिर-स्वभाव, साधक, महाप्रतापी, तामसी-वृत्ति का, मलिन तथा स्वयं में सन्तुष्ट बना रहने वाला होता है। 'गर' करण वाला मन्त्रज्ञ, नीतिमान्, चतुर, दुर्बल-शरीर वाला, अतिभाषी, चपल तथा झगड़ालू-प्रकृति का होता है। 'वणिज' करण वाला वैश्य-वृत्ति करने वाला, अनेक प्रकार के क्रय-विक्रय-व्यवहारों का ज्ञाता तथा वैश्य वृत्ति से ही जीविकोपार्जन करने वाला होता है। 'भद्रा' करण वाला क्रूर, साहसी, प्रचण्ड, पाप-कर्म करने वाला, चंचल

भू० सं० ३३ कु० र०

स्वभाव का तथा सब कार्यों का ज्ञाता होता है ('भद्रा करण' को 'विष्टि करण' भी कहते हैं)। 'शकुनि' करण वाला पक्षी-विद्या का ज्ञाता, निरन्तर उद्योगी, सदैव भ्रमण करने वाला, शान्त-स्वभाव तथा परम बुद्धिमान होता है। 'चतुष्पद' करण वाला कृषि एवं व्यवसाय करने वाला, उद्योगी, पराक्रमी, आलस्य-रहित तथा खेद-रहित होता है। 'नाग' करण वाला धनी, धातु-विशेषज्ञ, अपने परिश्रम से गुणवान् बनने वाला तथा हाथियों का पालक होता है। 'किंस्तुघ्न' करण वाला किंचित् धर्म तथा किंचित् पाप-कर्म करने वाला एवं किंचित् रोग के कारण शारीरिक-पीड़ा पाने वाला होता है।

अथ योनि फलम् - अश्विनी और शतभिषा नक्षत्रों की 'अश्व'; रेवती तथा भरणी नक्षत्रों की 'गज', पुष्य तथा कृत्तिका नक्षत्रों की 'छाग'; रोहिणी तथा मृगशिरा नक्षत्रों की 'सर्प'; आर्द्रा तथा मूल नक्षत्रों की श्वान, मघा तथा पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रों की 'मूषक', पुनर्वसु तथा आश्लेषा नक्षत्रों की 'मार्जार', उत्तराभाद्रपदा तथा उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रों की गौ, स्वाति तथा हस्त नक्षत्रों की 'महिष'; ज्येष्ठा तथा अनुराधा नक्षत्रों की 'मृग', चित्रा तथा विशाखा नक्षत्रों की 'व्याघ्र'; पूर्वाषाढ़ा तथा श्रवण नक्षत्रों की 'वानर', धनिष्ठा तथा पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्रों की 'सिंह' तथा उत्तराषाढ़ा एवं अभिजित् नक्षत्रों की 'नकुल' योनि है। इस प्रकार १४ प्रकार की योनियाँ होती हैं। किस योनि में जन्म लेने का क्या फल होता है, इसे क्रमशः आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए - 'अश्व' योनि में जन्म लेने वाला चपल, चंचल दृष्टि वाला, शीघ्रगामी, युद्ध-प्रिय, बलवान् तथा अपने स्वामी का प्रिय होता है। 'गज' योनि में जन्म लेने वाला मन्दगामी, बहुभोजी, राजा को प्रिय, सत्यवादी तथा ज्ञानी होता है। 'छाग' योनि वाला दुर्घट, दुर्लभ एवं कठिन स्थानों का भेद पाने वाला, निःशङ्क तथा बड़ा बुद्धिमान् होता है। 'सर्प' योनि वाला अपने स्वरूप से दूसरों के हृदय में भय उत्पन्न करने वाला, प्रपंची, तथा पर-धनहारी होता है। 'श्वान' योनि वाला सर्वभक्षी, बकवादी, दूत-कर्म करने वाला, अपने स्वामी का हित-

साधन करने में तत्पर, वन में कष्ट पाने वाला तथा शूर-वीर होता है। 'मार्जार' योनि वाला पिंगल-वर्ण नेत्रों का, सर्वभक्षी, चपल, द्वेषी, अकारण क्रोधी, परन्तु डरपोक-स्वभाव का होता है। 'मूषक' योनि वाला धूर्त, अपने काम में लगा रहने वाला, पराये कामों को बिगाड़ने वाला तथा शत्रुओं का समूल-नाश करने वाला होता है। 'गौ' योनि वाला अनेक पशु रखने वाला, दूध-दही का भोजन करने वाला, परोपकारी तथा अत्यन्त सुन्दर होता है। 'महिष' योनि वाला मन्दगामी, स्थूल-शरीर, बलवान, धनी एवं घृत-दुग्ध आदि का अधिक सेवन करने वाला होता है। 'व्याघ्र' योनि वाला हिंसक, सर्वभक्षी, कुशल, विद्वान तथा दूसरों को भयभीत करने वाला होता है। 'मृग' योनि वाला गीति-वाद्य-प्रिय, सुन्दर, धर्मात्मा तथा युद्ध-भीरु होता है। 'वानर' योनि वाला पिंगल-नेत्र, वन में भ्रमण करने वाला, फलभक्षी तथा अविश्वासी-प्रकृति का होता है। 'नकुल' योनि वाला सुन्दर, स्व-कार्य में लगा रहने वाला तथा पराये काम भी करने वाला, गहरे स्थान में रहने वाला तथा दीर्घजीवी होता है। 'सिंह' योनिवाला महाबली, पिंगल नेत्र, क्षीण कटि, सर्वभक्षी तथा अन्यों को भयोत्पादक होता है।

आवश्यक टिप्पणी- संवत्सरादि के जो फल कहे गए हैं, वे आगे लिखे अनुसार प्रभावी होते हैं— 'संवत्सर' का फल सावन वर्षपति की दशा में तथा 'अयन' और 'ऋतु' का फल सूर्य की दशा में प्राप्त होता है। 'महीने' का फल मास-पति दशा में तथा 'गण', 'पक्ष' और 'नक्षत्र' का फल चन्द्रमा की दशा में मिलता है। चन्द्रमा की दशा में जब सूर्य की अन्तर्दशा आती है, तब 'तिथि' और 'करण' का फल मिलता है। 'वार' का फल उस वार के स्वामी की दशा में प्राप्त होता है। चन्द्रमा तथा सूर्य में जो बलवान हो, उसकी दशा में 'योग' का फल प्राप्त होता है। 'लग्न' का फल लग्नेश की दशा में मिलता है। इसी प्रकार दृष्टि-फल, भाव-फल तथा युति-फल के सम्बन्ध में भी विचार किया जाता है। जो ग्रह जिस ग्रह को देखता है वह अपना दृष्टि-फल उस ग्रह की दशा के अन्तर्गत अपनी अन्तर्दशा में देता है। जो ग्रह जिस भाव में स्थित होता है तथा जो ग्रह जिस राशि में स्थित होता है, वह उस भाव या राशि के

स्वामी की अन्तर्दशा में अपना फल प्रकट करता है। लग्न, राशि, ग्रहों की स्थिति, दृष्टि, युति तथा दशा-अन्तर्दशा आदि के विषय में आगे लिखा जायेगा।

<u>अथ लग्न फलम्</u> - जातक के जन्म के समय पूर्वी-क्षितिज पर जिस राशि की स्थिति होती है, वही जातक की 'जन्म-लग्न' होती है। राशियों की कुल संख्या १२ है, अतः जन्म-लग्न भी १२ ही होती हैं, जो इस प्रकार हैं— १ मेष, २ वृष, ३ मिथुन, ४ कर्क, ५ सिंह, ६ कन्या, ७ तुला, ८ वृश्चिक, ९ धनु, १० मकर, ११ कुम्भ और १२ मीन। किस लग्न का जातक के चरित्र और स्वभाव पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसे आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए - '<u>मेष</u>' लग्न में जन्म लेने वाला चण्डाभिमानी, गुणी, क्रोधी, स्वजन-विरोधी, परन्तु परायों से मैत्री रखने वाला, पराक्रम द्वारा यश पाने वाला तथा रोषपूर्ण स्वभाव का होता है। '<u>वृष</u>' लग्न वाला शूर, वीर, युद्ध-प्रिय, धैर्यवान्, परन्तु प्रशान्त-हृदय, प्रियवादी, गुरुजनों का भक्त, गुणियों में अग्रगण्य तथा धन-सम्पन्न होता है। '<u>मिथुन</u>' लग्न वाला भोगी, दानी, अनेक पुत्र एवं मित्रों वाला, धनी, सुशील तथा राजा से सम्पर्क रखने वाला होता है। '<u>कर्क</u>' लग्न वाला सज्जनों की स्तुति करने वाला, मिष्ठान्न भोजी, जलक्रीड़ा-प्रेमी, तत्त्वज्ञ, विनम्र तथा चंचल-बुद्धि वाला होता है। '<u>सिंह</u>' लग्न वाला कृशोदर, सुन्दर, पराक्रमी, भोगी, अल्प सन्ततिवान्, अल्पभोजी तथा अपनी बुद्धि पर घमण्ड करने वाला होता है। '<u>कन्या</u>' लग्न वाला काम-क्रीड़ा में कुशल, सद्गुणी, ज्ञानी, कार्य-कुशल, सदैव प्रसन्न रहने वाला तथा धनी होता है। '<u>तुला</u>' लग्न वाला अत्यन्त गुणी, व्यवसाय-कुशल तथा बहुत धन कमाने वाला होता है। वह स्थिर-लक्ष्मी-सम्पन्न तथा स्व-कुल में श्रेष्ठ होता है। '<u>वृश्चिक</u>' लग्न वाला शूर-वीर, तत्त्वज्ञ, परन्तु अपने विचारों को कुमार्ग में प्रवृत्त करने वाला तथा सदैव झगड़े-टण्टे में प्रवृत्त रहने वाला होता है। '<u>धनु</u>' लग्न वाला विद्वान्, नीतिज्ञ, दृढ़-प्रतिज्ञ, कलाविद्, सुन्दर तथा शास्त्र-विद्या में निपुण होता है। '<u>मकर</u>' लग्न वाला अत्यन्त शठ, कुरूप, मनमानी करने वाला,

बहुसन्ततिवान्, अत्यन्त चतुर तथा कृपण होता है। 'कुम्भ' लग्न वाला चञ्चल, कामी, सुन्दर, मित्र-स्नेही, अभिमानी तथा धान्यादि का उपार्जन करने वाला होता है। 'मीन' लग्न वाला चञ्चल, सुन्दर, कला-कुशल, अल्पभोजी, कामासक्त, परम धूर्त, रत्न-स्वर्णादि से सम्पन्न तथा अनेक प्रकार की वस्तुओं के निर्माण में दक्ष होता है।

टिप्पणी - यदि लग्न बलवान् हो तो उक्त फल पूर्णरूपेण घटित होता है, अन्यथा अल्प फल होता है।

अथ लग्न होरा फलम् - 'होरा चक्र' के आधार पर जातक के रूप तथा सौहार्द्र का विचार किया जाता है। यदि जातक का 'जन्म 'चन्द्रमा' की होरा से हुआ हो तथा अधिकांश ग्रह अन्य स्थानों में स्थित हों तो वह अत्यन्त सुन्दर, महाधनी तथा श्रेष्ठ होता है। यदि 'सूर्य' की होरा में जन्म हुआ हो तथा अधिकांश ग्रह अन्य स्थानों में स्थित हों तो जातक मध्यम रूप, धन एवं मित्रों वाला होता है। अब विभिन्न लग्नों की प्रथम तथा द्वितीय होरा में जन्म लेने का फल लिखा जाता है— 'मेष' लग्न की प्रथम होरा में जन्म लेने वाला रक्तवर्ण नेत्र, तीक्ष्ण-दृष्टि, तोते जैसी नाक, शूर-वीर, पुष्ट तथा ऊँचे शरीर वाला, श्रेष्ठ स्त्रियों से प्रेम करने वाला, धनवान् तथा चोरों का सरदार होता है। 'द्वितीय' होरा वाला कठोर पाँव तथा अँगुलियों वाला, स्निग्ध एवं विशाल नेत्रों वाला, पुष्ट-शरीर तथा श्रेष्ठबुद्धि वाला, प्रमादी, चतुर तथा चोर होता है। 'वृष' लग्न की प्रथम होरा में जन्म लेने वाला विशाल वक्षःस्थल, ललाट एवं नेत्रों वाला, स्थूल-शरीर, अत्यन्त क्रोधी, बरप तथा वाहन-प्रेमी होता है। 'द्वितीय' होरा वाला भारी एवं पुष्ट शरीर, सुन्दर केश, टेढ़ी कमर, बैल के समान मुखवाला तथा बड़ा पराक्रमी होता है। 'मिथुन' लग्न की प्रथम होरा में जन्म लेने वाला विशाल नेत्र, छोटे क़द, दृढ़ शिर एवं पाँवों वाला, मध्यम रूप, कामचेष्टा युक्त, शूर-वीर, सुवक्ता तथा बुद्धिमान् होता है। 'द्वितीय' होरा वाला सुन्दर नेत्र, होठ तथा दाँतों वाला, मधुरभाषी, मनस्वी, कामी तथा शूर-वीर होता है। 'कर्क' लग्न की प्रथम होरा में जन्म लेने वाला वर्तुलाकार शरीर, श्रेष्ठ शिर, सुन्दर शरीर, अगले दाँत टूटे हुए, कृतघ्न, शठ, चंचल तथा मन्द स्वर वाला होता है। 'द्वितीय' होरा वाला मोटे मुखवाला,

निरन्तर यात्राएँ करने वाला, सम शरीर, कठोर देह, क्रोधी स्वभाव का तथा जुआरी होता है। 'सिंह' लग्न की प्रथम होरा में जन्म लेने वाला रक्त-वर्ण कोने वाले विशाल नेत्रों वाला, बड़े शरीर तथा कपटी स्वभाव का, स्थिर पराक्रमी, स्थिर कर्म करने वाला, प्रगल्भ तथा अन्तिम-अवस्था में सुखोपभोग प्राप्त करने वाला होता है। 'द्वितीय' होरा वाला कठोर अंगों वाला, श्रेष्ठ वस्त्रों का इच्छुक, अनेक प्रकार की चेष्टाओं वाला, स्त्री-रत, मिष्ठान्न-प्रेमी, यात्राएँ करने वाला, स्थिर-मैत्री वाला, दानी तथा भोगी होता है। 'कन्या' लग्न की प्रथम होरा में जन्म लेने वाला अल्पज्ञ कोमल तथा कान्तिमान् शरीर वाला, सुभाषी, मधुर चितवन पूर्ण नेत्रों वाला, सुन्दर स्वरूप, श्रेष्ठ संगीतज्ञ, श्रेष्ठ संगीतज्ञा-नारियों के सम्पर्क में रहने वाला तथा विनम्र स्वभाव का होता है। 'द्वितीय' होरा वाला छोटे शरीर तथा स्थूल सिर वाला, विषाद युक्त, पाप-कर्म द्वारा धनोपार्जन कर सुखोपभोग एवं श्रेष्ठ तीर्थों की यात्रा करने वाला, लिपिशास्त्र एवं संगीत का ज्ञाता तथा सेवाभावी होता है। 'तुला' लग्न की प्रथम होरा में जन्म लेने वाला गोल मुख तथा ऊँची नाक वाला, पुष्ट एवं विशाल शरीर वाला, अस्थिर-सार युक्त, चतुर, विलासी, धनी, मन्त्री, श्रेष्ठ-बुद्धि तथा सच्चे मित्रों वाला होता है। 'द्वितीय' होरा वाला सुन्दर शरीर कुंचित केश तथा गोल आँखों वाला, अत्यधिक यात्रा करने के कारण पाँवों में फटी बिवाइयों वाला, स्थिर धनी तथा शठ स्वभाव का होता है। 'वृश्चिक' लग्न की प्रथम होरा में जन्म लेने वाला लाल कोने के पिंगल-वर्ण नेत्रों वाला, दुष्ट-स्वभाव, शूर-वीर, युद्धोत्साही तथा मित्रों के धन का अपहरण करने वाला होता है। 'द्वितीय' होरा वाला विशाल तथा पुष्ट शरीर का, बड़े नेत्रों वाला, राजा का सेवक, अधिक ऋणी तथा मित्रों से युक्त होता है। 'धनु' लग्न की प्रथम होरा में जन्म लेने वाला दबी हुई पीठ, मुख तथा वक्षःस्थल वाला, हाथी जैसे निमीलित-नेत्रों वाला, पुष्ट कपोलों वाला तथा बाल्यावस्था में ही गुरुजनों तथा परिवारीजनों का त्याग कर तपस्वी बन जाने वाला होता है। 'द्वितीय' होरा वाला कमल-दल से विस्तृत नेत्र, लम्बी भुजाओं वाला, सुन्दर, सुभाषी, शास्त्रज्ञ, नीतिज्ञ, धर्मात्मा तथा पूर्ण यशस्वी होता है। 'मकर' लग्न

की प्रथम होरा में जन्म लेने वाला सुन्दर, काले तथा हरिण जैसे नेत्रों वाला, सौम्य-मूर्ति, ऊँची नाक वाला, अत्यधिक भ्रमणशील, धन्य भाग्य, प्रथमावस्था में शठ और मूढ़ तथा अत्यन्त क्रोधी स्वभाव का होता है। 'द्वितीय' होरा वाला रक्तवर्ण कोने वाले नेत्रों का, पतले शरीर तथा लम्बे अङ्गों वाला, अपनी वास्तविक आयु से छोटा दिखाई देने वाला, अधिक रोमों वाला, आलसी, मूर्ख तथा जान-बूझ कर कुकर्म करने वाला होता है। 'कुम्भ' लग्न की प्रथम होरा में जन्म लेने वाला ताँबे जैसे रक्तवर्णी शरीर एवं नेत्रों वाला, कोमल, स्थिर-मैत्री युक्त, थोड़े पुत्रों वाला, शूर-वीर गुणवान्, परन्तु पाप-कर्म में रत रहने वाला होता है। 'द्वितीय' होरा वाला कृष्णवर्ण, कृश-शरीर, टेढ़े अङ्गों वाला, शठ, आलसी, किसी की बात न मानने वाला तथा अपने रहस्य को प्रकट न होने देने वाला होता है। 'मीन' लग्न की प्रथम होरा में जन्म लेने वाला छोटे कद तथा सुन्दर और बड़े नेत्रों वाला, विशाल वक्षःस्थल तथा चौड़े मस्तक वाला, शूर-वीर, क्रिया-कुशल, सुन्दर, स्त्रियों को प्रिय तथा यशस्वी होता है। 'द्वितीय' होरा वाला श्रेष्ठ तथा स्थिर-स्वभाव का, बुद्धिमान्, ऊँची नाक वाला, सुन्दर, मधुरभाषी, राजा का प्रिय तथा उदार-स्त्री वाला होता है।

अथ द्रेष्काण फलम् - प्रत्येक राशि के पूर्व, मध्य तथा अन्तिम - ये तीन द्रेष्काण होते हैं। द्रेष्काण-चक्र में उच्च-ग्रह की स्थिति होने पर जातक राजा होता है। स्वक्षेत्री-ग्रह हो तो सेनापति एवं मित्र-क्षेत्री ग्रह हो तो सुवक्ता होता है। प्रत्येक राशि के विभिन्न द्रेष्काणों में जन्म लेने का फल आगे लिखे अनुसार होता है - 'मेष' के पूर्व द्रेष्काण में जन्म लेने वाला दीर्घ-शरीर, युद्धक्षेत्र में प्रचण्ड पराक्रम दिखाने वाला, हिंसक, दानी, मित्र-विरोधी तथा बन्धु-बान्धवों को उग्र-दण्ड देने वाला होता है। 'मध्य द्रेष्काण' में जन्म लेने वाला स्त्री, मित्र तथा धन का उपभोग करने वाला, स्त्री-प्रिय, सुभाषी, सुन्दर, सङ्गीत-प्रिय तथा मनस्वी होता है। 'अन्तिम द्रेष्काण' वाला गुणी, दूसरों के दोष निकालने वाला, बल एवं पराक्रम से युक्त, स्वजनों का प्रिय, राज-सेवक, धर्म-बुद्धि तथा प्रियजनों का आदर करने वाला होता है। 'वृष' के

'पूर्व द्रेष्काण' वाला श्रेष्ठ मित्रों वाला, श्रेष्ठ भोजन करने वाला, स्त्री-वियोग से संतप्त, वस्त्रालङ्कार युक्त तथा स्त्री की इच्छानुसार चलने वाला होता है। 'मध्य द्रेष्काण' वाला सौम्य-शरीर, महाधनी, स्वरूपवान्, बलवान्, भोगी, स्त्री-सौभाग्यवान्, स्नान तथा आभूषणों का प्रेमी, स्थिर एवं मनस्वी स्वभाव का होता है। 'अन्तिम द्रेष्काण' वाला चतुर, यात्रा-प्रेमी, स्थिर, लोकमान्य, डरपोक, धन-हीन, गौर-वर्ण तथा खोटे-चरित्र के कारण संताप पाने वाला होता है। 'मिथुन' के 'पूर्व द्रेष्काण' वाला बड़े सिर तथा लम्बे शरीर का, राज्य द्वारा सम्मानित, स्व-वचन-पालक, धूर्त, गुणी, विलासी तथा धनी होता है। 'मध्य द्रेष्काण' वाला कोमल तथा सौम्य स्वरूप वाला, छोटे शरीर, मुँह तथा सूक्ष्म केशों वाला, पतली आँखों वाला, कोमल स्वभाव, प्रतापी, यशस्वी, धनी तथा बड़े शत्रुओं वाला होता है। 'अन्तिम द्रेष्काण' वाला स्निग्ध-नेत्र, सुन्दर शरीर, बड़े सिर, लम्बा कद, रूक्ष नख, कठोर पाँव तथा धन सम्पत्ति को पाने वाला, भ्रमणशील एवं शत्रुओं से युक्त होता है। 'कर्क' के 'पूर्व द्रेष्काण' वाला देव-ब्राह्मण-भक्त, गौर वर्ण, बन्धु-बान्धव युक्त, बुद्धिमान्, पराया काम करने वाला, सुन्दर एवं श्रेष्ठ स्त्री-पुत्र का सुख पाने वाला होता है। 'मध्य द्रेष्काण' वाला धन-लोलुप, दानी, अधिक स्वप्न देखने वाला, स्त्री-जित्, अभिमानी, विलासी, बन्धु-युक्त, चपल तथा अनेक रोगों से ग्रस्त होता है। 'अन्तिम द्रेष्काण' वाला गर्व प्रकट करने वाला, वन तथा जल में भ्रमण करने वाला, विदेशगामी, धनी, साधु एवं सुगन्धित-पदार्थों में रुचि रखने वाला होता है। 'सिंह' के 'पूर्व द्रेष्काण' वाला हिंसक-स्वभाव का, दानी, अनेक स्त्रियों तथा अनेक शत्रुओं वाला, शत्रुजयी, राज-सेवक, पराक्रमी तथा स्थिर-मैत्री का निर्वाह करने वाला, महाधनी होता है। 'मध्य द्रेष्काण' वाला कामी, दानी, स्थिर-स्वभाव, सुरुचि-सम्पन्न, सुन्दर, सुखोपभोगी, वेद तथा धर्म में रुचि रखने वाला, परम बुद्धिमान् तथा आभूषण-प्रेमी होता है। 'अन्तिम द्रेष्काण' वाला बड़े शरीर का, स्थिर-स्वभाव, कृपण, स्तब्ध, परधनापहारी, बुद्धिमान्, धूर्त, प्रगल्भ, अनेक पुत्रों वाला तथा स्त्रियों का अहित करने वाला होता है। 'कन्या' के 'पूर्व द्रेष्काण' वाला सुन्दर तथा कोमल शरीर वाला, मधु-

मय नेत्रों वाला, मधुरभाषी, श्रेष्ठ बुद्धिमान्, नीतिज्ञ, प्रगल्भ तथा स्त्रियों को अनिष्ट-फल कारक होता है। 'मध्य द्रेष्काण' वाला युद्ध में विशेष पराक्रमी, धैर्यवान्, परदेशवासी, विलासी, पुत्रवान्, मुनि तुल्य गति वाला, अधिक खर्चीला, अल्पभाषी तथा अल्प कला-विज्ञ होता है। 'अन्तिम द्रेष्काण' वाला छोटे क़द का, सुन्दर, बड़े नेत्रों वाला, तीव्र-स्वभाव, संगीत-प्रिय, राजाज्ञा-पालक, स्थिर तथा त्यागी वृत्ति का होता है। 'तुला' के 'पूर्व द्रेष्काण' वाला अपनी आयु से अधिक युवा दिखाई देने वाला, कला-मर्मज्ञ, व्यवसाय-कुशल, मन्त्रज्ञ, बुद्धिमान् तथा कामदेव तुल्य सुन्दर स्वरूप वाला होता है। 'मध्य द्रेष्काण' वाला कमल-दल जैसे बड़े नेत्रों वाला, सुन्दर, बहुभाषी, वंश-वृद्धि कर्ता, चतुर, विख्यात, राजा का मित्र तथा अनेक सेवकों वाला होता है। 'अन्तिम द्रेष्काण' वाला छोटे क़द का, अल्प-बुद्धि, भ्रमणशील, कुरूप, बकवादी, कृतघ्न, शठ, चपल तथा मित्र, धन एवं यश को नष्ट करने वाला होता है। 'वृश्चिक' के 'पूर्व द्रेष्काण' वाला गौर-वर्ण, स्थिर-स्वभाव, विशाल नेत्रों वाला, प्रचण्ड-रणोत्कट, स्थूल तथा लम्बे शरीर वाला एवं कलह-प्रिय होता है। 'मध्य द्रेष्काण' वाला स्वर्ण तुल्य गौर वर्ण, सुन्दर, सरलक्रिया वाला, चंचल, मिष्ठान्न-भोजी, पेय-कुशल एवं पराये-धन से युक्त होता है। 'अन्तिम द्रेष्काण' वाला श्रेष्ठ भुजा, बड़ा पेट, दाढ़ी-मूँछ रहित चेहरा, मधु-पिंगल-नेत्र, कृष्ण वर्ण, बन्धु-विहीन तथा अपहरणकर्त्ता होता है। 'धनु' के 'पूर्व द्रेष्काण' वाला गोल आँखों तथा गोल वक्षःस्थल वाला, कोमल हृदय, धनी, मन्त्रियों में श्रेष्ठ, साधु-आचार में प्रवृत्त तथा गुणवान् होता है। 'मध्य द्रेष्काण' वाला सैकड़ों यज्ञ करने वाला, शास्त्रार्थ-ज्ञाता, तीर्थ-यात्री, मन्त्रियों में श्रेष्ठ तथा ऐश्वर्यशाली होता है। 'अन्तिम द्रेष्काण' वाला स्व-बन्धुओं में प्रधान, चतुर, श्रेष्ठ जनों की संगति करने वाला, धर्मात्मा, मानी, यशस्वी, स्वरूपवान्, परमश्रेष्ठ तथा पर-स्त्रियों से दूर रहने वाला होता है। 'मकर' के 'पूर्व द्रेष्काण' वाला लम्बी भुजाओं, बड़े नेत्र और उरु, कोमल शरीर, सुन्दर कान्ति उत्तम चेष्टाओं वाला तथा स्त्रियों द्वारा अविजित, शठ, मितभाषी, धनी तथा स्वरूपवान् होता है। 'मध्य द्रेष्काण' वाला चंचल-चित्त, कोमल शरीर, आँखों में बंधन वाला, मितभाषी, शठ, चुगुलखोर, प्रवासी, दुष्ट तथा पर-स्त्री

एवं पराये धन का अपहरण करने वाला होता है। 'अन्तिम द्रेष्काण' वाला सुन्दर नासिका एवं मस्तक वाला, पतले और लम्बे शरीर वाला, प्राय: विदेशों की यात्रा करने वाला, पितृ-वियोगी, पापी तथा व्यसनी होता है। 'कुम्भ' के 'पूर्व द्रेष्काण' वाला लम्बे शरीर का, रक्त-वर्ण, स्त्री के मान में रत, स्थिर-कर्म करने वाला, अधम, शत्रु-सम्पन्न तथा सुखी होता है। 'मध्य द्रेष्काण' वाला मधु-श्वेत-पिङ्गल नेत्रों वाला, सामर्थ्यवान्, संगीत-प्रिय, श्रेष्ठ-चरित्र वाला, उत्कृष्ट वाणी बोलने वाला, अत्यधिक हास्य-क्रीड़ा-प्रिय तथा कृपण स्वभाव का होता है। 'अन्तिम द्रेष्काण' वाला लम्बे शरीर तथा कृश एवं छोटी बाँहों वाला, बड़े नेत्रों वाला, शठ, प्रलापी, श्रेष्ठ धनी, विनम्रता-रहित, अत्यधिक मिथ्यावादी, कपटी तथा रति-पण्डित होता है। 'मीन' के 'पूर्व द्रेष्काण' वाला मधु-नेत्र, गौर-वर्ण, सुभाषी, सुखी, विनम्र, कृतज्ञ, ज्ञानवान् तथा लोकप्रसिद्ध होता है। 'मध्य द्रेष्काण' वाला धनिकों के उपचार का ज्ञाता, पराये-धन का उपभोग करने वाला, सम्बन्धियों की सम्मति का आदर करने वाला, ज्ञानी, सुस्वर तथा मिष्ठान्न-प्रिय होता है। 'अन्तिम द्रेष्काण' वाला बड़े हाथ-पाँवों तथा कोमल शरीर वाला, हास्य-कला-प्रिय, श्रेष्ठ अन्न-भोगी तथा मित्रों में श्रेष्ठ होता है।

टिप्पणी-(1) लग्न के 'सप्तांश' से भाई के सम्बन्ध में विचार किया जाता है। सप्तांश लग्न से तृतीय भाव का स्वामी क्रूर अथवा शुभग्रह हो और वह शुभ अथवा पापग्रहों से दृष्ट-युक्त हो तो पापग्रहों से दृष्ट-युक्त होने पर जातक भ्रातृ-हीन होता है तथा शुभ ग्रहों से दृष्ट-युक्त होने पर भाई से युक्त होता है। (2) यदि चन्द्रमा बली हो तो 'चन्द्र राशिगत नवांश' का फल द्वारा जातक के वर्ण, स्वभाव स्वरूप आदि का ज्ञान प्राप्त किया जाता है। ऐसा फल चन्द्रमा के पूर्ण बली होने अथवा नवांशपति के बली होने पर ही घटित होता है। (3) द्वादशांश: कुण्डली द्वारा स्त्री का विचार किया जाता है। यदि जातक के जन्म काल में द्वादशांश लग्न में सप्तमभाव का स्वामी शुभ अथवा अशुभ हो, क्रूर-दृष्ट अथवा शुभ-दृष्ट हो तो जातक स्त्री-पुत्रों से युक्त होता है। शुभग्रह से

युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक की एक ही स्त्री होती है और क्रूर-ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो तो स्त्री सम्बन्धी दुःख बना रहता है। द्वादशांश में चन्द्रमा की राशि जैसा फल होता है। स्वभाव तथा अङ्गों के लक्षण सप्तांश की भाँति समझने चाहिए। (४) 'त्रिंशांश' कुण्डली से शुभाशुभ मृत्यु के लक्षण के सम्बन्ध में विचार किया जाता है। त्रिंशांश लग्न से अष्टम गृह का स्वामी शुभ ग्रह हो तथा शुभ ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो तो तीर्थ-स्थान अथवा शुभ-स्थान में दान-धर्मादि करते हुए मृत्यु होती है। यदि त्रिंशांश लग्न से अष्टमभाव का स्वामी क्रूर ग्रह हो और वह पाप ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो अग्नि, जल आदि के द्वारा अपमृत्यु होती है। उक्त लग्न-सप्तांश, चन्द्र राशिगत नवांश, द्वादशांश एवं त्रिंशांश कुण्डलियों के विस्तृत फलादेश हेतु हमारे द्वारा सम्पादित 'भृगुसंहिता महाशास्त्र' अथवा अन्य ज्योतिष-ग्रंथों का अध्ययन करना चाहिए। विस्तार-भय से उन्हें यहाँ उद्धृत नहीं किया गया है।

अथ चन्द्र राशि फलम् – जातक के जन्म के समय चन्द्रमा जिस नक्षत्र-राशि में भ्रमण कर रहा होता है, वही जातक की जन्म-कालीन 'चन्द्र-राशि' होती है। अर्थात् जन्म कुण्डली में चन्द्रमा जिस राशि पर स्थित हो, वह जातक की 'जन्म-राशि' होगी। 'जन्म-लग्न' तथा 'जन्म-राशि' के अन्तर को ध्यान में रखना आवश्यक है। जातक के जन्म के समय पृथ्वी-क्षितिज पर, जिस राशि का उदय हो रहा होता है, वह जातक की 'जन्म-लग्न' होती है। जन्म-लग्न का अङ्क जन्म-कुण्डली के प्रथम भाव में लिखा जाता है अर्थात् जन्म-कुण्डली के प्रथम भाव में जो अङ्क लिखा हो, उस अङ्क वाली राशि ही जातक की 'जन्म लग्न' होती है। जैसे– जन्म-कुण्डली के प्रथम भाव में ५ का अङ्क लिखा है तो जातक की जन्म लग्न 'सिंह' होगी और यदि ११ का अङ्क लिखा है तो 'कुम्भ' होगी इत्यादि। परन्तु जन्म कुण्डली के जिस भाव में चन्द्रमा स्थित हो, उस भाव में स्थित अङ्क की राशि ही जातक की 'जन्म-राशि' होती है। यथा – जन्म कुण्डली में चन्द्रमा

तृतीय भाव में हो और वहाँ ७ का अङ्क लिखा हो तो जातक की जन्म राशि 'तुला' होगी और यदि १२ का अंक लिखा हो तो 'मीन' राशि होगी इत्यादि। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि जातक के जन्म के समय पूर्वी क्षितिज पर जिस राशि का उदय होरहा हो, चन्द्रमा भी उसी राशि में उस समय भ्रमण कर रहा होता है। ऐसी स्थिति में जातक की 'जन्म-लग्न' तथा 'जन्म-राशि' दोनों एक ही हो जाती हैं। यथा जन्म कुण्डली के प्रथमभाव में २ का अङ्क हो तो जातक की जन्म-लग्न 'वृष' होगी तथा उसी भाव में यदि चन्द्रमा भी लिखा हो तो उसकी जन्म राशि भी वृष ही रहेगी। कहने का तात्पर्य यह कि जब जन्म कुण्डली में चन्द्रमा प्रथम भाव में ही स्थित होता है तो जातक की 'जन्म-लग्न' तथा 'जन्म-राशि' एक ही होती है, परन्तु जब चन्द्रमा प्रथमभाव से भिन्न किसी अन्य भाव में स्थित होता है, तब 'जन्म-लग्न' और 'जन्म-राशि' पृथक्-पृथक् हो जाती हैं। जन्म-लग्न के फलादेश का उल्लेख पहले किया जा चुका है, अब यहाँ जन्म-राशि के फलादेश का उल्लेख किया जारहा है, जो निम्नानुसार है। यदि जन्म-लग्न तथा जन्म-राशि एक ही हो तो इन दोनों का फलादेश उस जातक पर सम्मिलित रूप से घटित होगा - यह समझना चाहिए। सामान्यतः जन्म-लग्न एवं जन्म राशि के फलादेश में बहुत कुछ साम्य पाया जाता है।

'मेष' राशि में जन्म लेने वाला जातक स्थूल जाँघों तथा चंचल नेत्रों वाला, स्त्रियों को आनन्द-दायक, धर्म तथा धन का उपार्जन करने वाला, पाप-रहित, परन्तु कृतघ्न, राज्य द्वारा सम्मानित, दानी, पानी से डरने वाला तथा प्रचण्ड-कर्म करने के पश्चात् अन्त में नम्र होने वाला होता है। 'वृष' राशि वाला भोगी, दानी, पवित्र, दक्ष, महाबली, परम बुद्धिमान, धनी, विलासी, तेजस्वी तथा श्रेष्ठ मित्रों वाला होता है। 'मिथुन' राशिवाला सुन्दर, चंचल दृष्टि वाला, लम्बे शरीर वाला, गौर-वर्ण, प्रियवादी, दयालु, मैथुन-प्रेमी, संगीतज्ञ, कास-रोगी, धनी, कीर्तिमान, गुणी, कुशल-वक्ता, मेधावी, दृढव्रती, समर्थ तथा न्यायवादी होता है। 'कर्क' राशिवाला

कार्य-पटु, धनी, शूर, धर्मात्मा, गुरु-भक्त, मस्तक-रोगी, दुर्बल-शरीर, परम बुद्धिमान्, कार्य-कुशल, प्रवासी, दुःखी, अपने घर से अनासक्त, कुटिल-स्वभाव तथा अच्छे मित्रों वाला होता है। 'सिंह' राशिवाला मद्य-मांस-सेवी, शीघ्र क्रुद्ध हो जाने वाला, भ्रमणशील, क्रियासक्त, क्षमाशील, मातृ-पितृ-भक्त, श्रेष्ठ मित्रों वाला, दण्ड से डरने वाला, व्यसनी, विनम्र तथा लोक-प्रसिद्ध होता है। 'कन्या' राशिवाला मित्रों को आनन्दप्रद, सर्व-प्रिय, वेद-शास्त्र-परायण, नाट्य-सङ्गीत में निरत, वृद्ध-तुल्य, सुन्दर, धर्मात्मा, दक्ष, दानी, विलासी, कवि, प्रवासी तथा दुःखी होता है। 'तुला' राशि वाला अकारण तथा असमय क्रोध करने वाला, दुःखी, अस्थिर-धनी, चंचल-नेत्रों वाला, कृपालु, मृदुभाषी, घर में पराक्रम दिखाने वाला, देव-पूजक, व्यवसाय-कुशल, मित्र-वत्सल, प्रवासी तथा बन्धु-प्रिय होता है। 'वृश्चिक' राशिवाला बाल्यावस्था से ही परदेश में रहने वाला, पिंगल-वर्ण नेत्रों वाला, क्रूरात्मा, शूर, मानी, निष्ठुर, पर-स्त्रीगामी, साहसी, धनी, अपनी माता के प्रति भी दुर्बुद्धि रखने वाला, चोर, धूर्त तथा अपने लोगों के प्रति कठोर-व्यवहार करने वाला होता है। 'धनु' राशि वाला शूर, सात्विक, धनी, सद्बुद्धि, शिल्पज्ञ, मानी, सच्चरित्र, सुन्दर, प्रियभाषी, तेजस्वी, स्थूल शरीर वाला, लोगों को आनन्द-दायक तथा सुन्दर-पत्नी वाला होता है। 'मकर' राशि वाला स्वकुल में हीन, स्त्री-वशी, पण्डितों से विवाद करने वाला, स्त्रियों को प्रिय, माता को प्रिय, पुत्रवान्, श्रेष्ठ सेवकों वाला, अनेक मित्रों तथा बन्धु-बान्धवों से युक्त, दूसरों से सुख पाने वाला, धनी, त्यागी, दयालु, परन्तु पर-निन्दक होता है। 'कुम्भ' राशि वाला शुभ-दृष्टि वाला, मेढ़क जैसे पेट वाला, सौम्य-स्वभाव का, आलसी, दानी, धनी, कृतज्ञ, हाथी-घोड़ा सम्पन्न, धन तथा विद्या-लाभ हेतु निरन्तर प्रयत्नशील, पुण्यात्मा, स्नेह युक्त, पुण्यात्मा तथा निर्भीक-स्वभाव का होता है। 'मीन' राशिवाला शूर-वीर, शीघ्रगामी, संगीत-प्रवीण, बन्धु-वत्सल, शुभ-चरित्र वाला, गंभीर-चेष्टा वाला, वाक्पटु, मनुष्यों में श्रेष्ठ, क्रोधी, कृपण, ज्ञानी, गुणों के कारण पूज्य, स्व-कुल में प्रिय, देवाराधक, बन्धु-वत्सल तथा शुभ-आचरणों वाला होता है।

अथ ग्रह भाव फलम् - जन्म कुण्डली में द्वादश भाव होते हैं। किस भाव में स्थित कौन सा ग्रह क्या प्रभाव करता है, इसे क्रमशः निम्नानुसार समझना चाहिए-

सूर्य- यदि जन्मकुण्डली के 'प्रथम भाव' अर्थात् लग्न में 'सूर्य' स्थित हो तो जातक अल्पकेशी, कठोर शरीर एवं निर्लज्ज स्वभाव का, आलसी, प्रचण्ड-क्रोधी, लम्बा, कण्डु-रोग युक्त, नेत्र-रोगी, शूर-वीर तथा क्षमाशील होता है। यदि लग्न में 'कर्क' राशि हो और उसमें सूर्य स्थित हो तो जातक कमल जैसे नेत्रों वाला होता है, यदि 'मेष' राशि हो तो स्थिति-हारी होता है; यदि 'सिंह' राशि हो तो 'रतौंधी' रोग वाला होता है और यदि 'तुला' राशि हो तो दरिद्र एवं नष्ट पुत्रों वाला होता है। यदि सूर्य 'द्वितीय भाव' में स्थित हो तो जातक धन-पुत्र एवं श्रेष्ठ वाहनों से रहित, बुद्धि-हीन, मित्रभाव से रहित तथा पराये घर में रहने वाला होता है। यदि 'तृतीय भाव' में हो तो जातक मधुर-भाषी, धन तथा वाहन सम्पन्न, श्रेष्ठ कर्मों में मन लगाने वाला, सेवकों से युक्त, थोड़े भाइयों वाला तथा बलवान् होता है। यदि 'चतुर्थ भाव' में हो तो जातक सुख, वाहन तथा धन से रहित, पितृ-विरोधी एवं अपने घर में न टिकने वाला होता है। यदि 'पंचम भाव' में हो तो जातक अल्प-सन्तातिवान्, वनदुर्गा एवं शिव का भक्त, सुख-हीन, श्रेष्ठ कर्म तथा धन हीन तथा भ्रान्त-चित्त वाला होता है। यदि 'षष्ठ भाव' में हो तो जातक निरन्तर सुखी, शत्रु-नाशक, पराक्रमी, परम तेजस्वी, राजमन्त्री तथा सुन्दर वाहनों वाला होता है। यदि 'सप्तम भाव' में हो तो जातक लक्ष्मी तथा शोभा से हीन, भय तथा रोगों से पीड़ित, दुष्ट-स्वभाव का एवं राज्यकोप द्वारा दुःख पाने वाला होता है। यदि 'अष्टम भाव' में हो तो जातक मन्द-दृष्टि, बुद्धि-हीन, महाक्रोधी, अल्प-धनी, अनेक शत्रुओं वाला तथा कृश-अङ्गों वाला होता है। यदि 'नवम भाव' में हो तो धर्म-कर्म-रत, श्रेष्ठ बुद्धिमान्, पुत्र-मित्रादि से सुखी तथा मातृ-विरोधी होता है। यदि 'दशम भाव' में हो तो जातक श्रेष्ठ बुद्धि वाला, धन-वाहन-सम्पन्न, राजा का कृपापात्र, पुत्र-सुखी एवं साधुजनों का उपकार करने वाला होता है। यदि 'एकादश भाव' में हो तो जातक संगीत-प्रेमी, श्रेष्ठ कर्म करने वाला, महाधनी, परमयशस्वी तथा राज्य से

नित्य लाभ पाने वाला होता है। यदि 'द्वादश भाव' में हो तो जातक निस्तेज-नेत्रों वाला अर्थात् मन्द-दृष्टि, लोक-विरोधी तथा पिता से विरोध-बुद्धि रखने वाला होता है।

चन्द्र - यदि जन्मकुण्डली के 'प्रथमभाव' अर्थात् लग्न में चन्द्रमा वृष अथवा कर्क राशि का हो तो ऐसा जातक सुन्दर, धनी, भोगी तथा श्रेष्ठ गुणी होता है, परन्तु यदि प्रथमभाव में इनके अतिरिक्त किसी अन्य राशि पर चन्द्रमा की स्थिति हो तो जातक मूक, बधिर, उन्मत्त अथवा नीच-स्वभाव का होता है। यदि चन्द्रमा 'द्वितीय भाव' में हो और वह पूर्ण-चन्द्र हो तो जातक सुख, धन तथा पुत्रों से युक्त श्रेष्ठ स्वभाव का होता है, परन्तु यदि द्वितीयभावस्थ चन्द्रमा 'क्षीणचन्द्र' हो तो जातक हकला, धन-हीन तथा बुद्धि-हीन होता है। ऐसा चन्द्रमा अपनी कला की न्यूनाधिकता के अनु-रूप ही न्यूनाधिक भला-बुरा फल करता है। यदि चन्द्रमा 'तृतीयभाव' में हो तो जातक हिंसक, कृपण, घमण्डी, अल्प-बुद्धि, बन्धुजनों का आश्रित तथा दया एवं भय-रहित होता है। यदि 'चतुर्थभाव' में हो तो जातक जलाशय अथवा समुद्री-व्यवसाय से धनोपार्जन करने वाला, कृषि-कर्म-कर्त्ता, स्त्री तथा वाहन-सुख से सम्पन्न होता है। यदि 'पञ्चमभाव' में हो तो जातक जितेन्द्रिय, सत्यवादी, प्रसन्नचित्त, धनी, पुत्रवान् तथा श्रेष्ठ सुख पाने वाला संग्रही व्यक्ति होता है। यदि 'षष्ठभाव' में हो तो जातक दयाहीन, क्रूर, महाआलसी, कठोर, दुष्ट स्वभाव का, क्रोधी, अनेक शत्रुओं वाला तथा मंदाग्नि-पीड़ित होता है। यदि 'सप्तमभाव' में हो तो जातक महाअभिमानी, कामातुर, निर्धन, नम्रता-रहित तथा कृश-शरीर वाला होता है। यदि 'अष्टम भाव' में हो तो जातक अनेक रोगों के कारण कृश-देह वाला, निर्धन, चित्त के उद्वेग से व्याकुल, शत्रु एवं राजा द्वारा संतापित होता है। यदि 'नवमभाव' में हो तो जातक पुराण-प्रेमी, श्रेष्ठ कर्म करने वाला, तीर्थयात्री एवं स्त्री-पुत्र-धनादि से युक्त होता है। यदि 'दशमभाव' में हो तो जातक राजा से धन पाने वाला, सुन्दर, यशस्वी, पराक्रमी, सन्तोषी तथा स्थिर-लक्ष्मी प्राप्त करने वाला होता है। यदि 'एकादशभाव' में हो तो जातक उच्च सम्मान पाने वाला, अनेक प्रकार के वाहनों वाला, प्रसन्नता पाने वाला, यशस्वी तथा श्रेष्ठ गुणी होता है।

यदि 'द्वादश भाव' में हो तो जातक दुष्ट स्वभाव का, मित्र-हीन, महाक्रोधी, अनेक शत्रुओं वाला तथा विकल नेत्रों वाला होता है।

मङ्गल- यदि जन्म कुण्डली के 'प्रथम भाव' (लग्न) में मंगल स्थित हो तो जातक अमित-बुद्धि, शरीर में व्रण अथवा चोट के चिह्न वाला, उग्र-हठी, निरन्तर भ्रमण करने वाला तथा अत्यन्त साहसी होता है। यदि मङ्गल 'द्वितीय भाव' में हो तो जातक निर्धन, दुष्ट-बुद्धि, दया-हीन एवं बुरे लोगों से सम्पर्क रखने वाला होता है। यदि 'तृतीय भाव' में हो तो जातक राजा की कृपा एवं सुखों को प्राप्त करने वाला, श्रेष्ठ पराक्रमी, अति उदार, धनी, परन्तु भ्रातृ-सुख से रहित होता है। यदि 'चतुर्थ भाव' में हो तो जातक मित्रों तथा वाहनों से कष्ट पाने वाला, प्रबल रोगी, परदेशवासी तथा दुर्बल होता है। यदि 'पंचम भाव' में हो तो जातक कफ-वात से व्याकुल शरीर वाला, अस्थिर-बुद्धि तथा स्त्री, पुत्र एवं मित्रादि के सुख की हानि पाने वाला होता है। यदि 'षष्ठ भाव' में हो तो जातक क्रोधी, शत्रु-नाशक, श्रेष्ठजनों की संगति करने वाला, कामी तथा प्रबल जठराग्नि वाला अर्थात् बहुभोजी होता है। यदि 'सप्तम भाव' में हो तो जातक अनेक अनर्थ तथा अर्थ की चिन्ताओं से क्षीण, शत्रुओं से पीड़ित तथा स्त्री के कारण प्राप्त होने वाले दुःख से संतप्त बना रहता है। यदि 'अष्टम भाव' में हो तो जातक नेत्रों की विकलता, दुर्भाग्य, रक्त-पीड़ा से पीड़ित तथा नीच-कर्मों में प्रवृत्त एवं दुर्बुद्धि होने के कारण सज्जनों की निन्दा करने वाला होता है। यदि 'नवमभाव' में हो तो जातक हिंसक-प्रवृत्ति का, राज्य से अल्प सम्मान पाने वाला, क्षीण-पुण्य तथा धन-हानि पाने वाला होता है। यदि 'दशम भाव' में हो तो जातक राजतुल्य प्रसन्नता पाने वाला, परोपकार करने में उत्साही, दो प्रकार के धर्मों द्वारा लाभ पाने वाला, एवं सुन्दर मणि-आभूषणादि से युक्त होता है। यदि 'एकादश भाव' में हो तो जातक राजा की कृपा, सुन्दर वाहन, परम कौतुक, मङ्गल तथा ताँबा, मूँगा, स्वर्ण एवं वस्त्रादि का लाभ पाने वाला होता है। यदि मङ्गल 'द्वादश भाव' में हो तो जातक नेत्रों में पीड़ा तथा मित्रों से विरोध पाने वाला, दुर्बल अङ्गों वाला, धन-हानि तथा बन्धन पाने वाला, अल्पतेजस्वी तथा क्रोधी-स्वभाव का होता है।

बुध- यदि जन्म कुण्डली के 'प्रथमभाव' अर्थात् लग्न मे 'बुध' की स्थिति हो तो जातक अत्यन्त शान्त स्वभाव का, आचार-विचार प्रिय, उदार-हृदय, विनम्र, पण्डित, विद्वान्, कला-मर्मज्ञ तथा बहुत पुत्रों वाला होता है। यदि बुध 'द्वितीय भाव' में हो तो जातक निर्मल स्वभाव का, गुरु-वत्सल, अत्यन्त सुखी, कुशल, शोभावान् तथा उच्चपद पाने वाला होता है। यदि 'तृतीय भाव' में हो तो जातक स्वजनों से युक्त, चित्त-शुद्धि एवं सुख रहित, साहसी तथा स्वेच्छा से शुभ-कर्म करने वाला होता है। यदि 'चतुर्थ भाव' मे हो तो जातक श्रेष्ठ वाहन तथा धन-धान्य सम्पन्न, संगीत एवं नृत्य में रुचि रखने वाला तथा विद्या एवं आभूषणों को प्राप्त करने वाला होता है। यदि 'पञ्चम भाव' में हो तो जातक पुत्र एवं मित्रों के सुख से युक्त, मन्त्रवाद में कुशल, श्रेष्ठ स्वभाव वाला तथा अनेक लीलाएँ करने वाला होता है। यदि 'षष्ठभाव' में हो तो जातक मुकद्दमे बाजी में रुचि रखने वाला, रोगी, कठोर हृदय, अनेक उपद्रवों से पीड़ित, महा आलसी तथा व्याकुल चित्त वाला होता है। यदि 'सप्तम भाव' मे हो तो जातक श्रेष्ठ स्वभाव का, ऐश्वर्यवान्, सत्यवादी, स्त्री-पुत्रादि से युक्त तथा स्वर्ण लाभ प्राप्त करने वाला होता है। यदि 'अष्टम भाव' में हो तो जातक नृपों की कृपा से समस्त सम्पत्तियों को पाने वाला, विरोधी स्वभाव का, महाअभिमानी तथा अनेक प्रयत्नों द्वारा पराये कृत्यों का अपहरण करने वाला होता है। यदि 'नवम भाव' में हो तो जातक परोपकारी, अन्यों का आदर करने वाला, श्रेष्ठ विद्वान्, संसार से मुक्त होने की इच्छा रखने वाला तथा धन-पुत्र-सेवकादि के सुख से युक्त होता है। यदि 'दशम भाव' मे हो तो जातक ज्ञानी, बुद्धिमान्, श्रेष्ठ कर्म करने वाला, राजमान्य, अनेक सम्पत्तियों से युक्त तथा सुन्दर लीलाओं सहित वाग्विलास करने वाला होता है। यदि 'एकादश भाव' मे हो तो जातक महाधनी, भोगी, विनम्र, नित्य आनन्द पाने वाला, श्रेष्ठ स्वभाव का, महाबली तथा अनेक विद्याओं का अभ्यासी होता है। यदि 'द्वादश भाव' मे हो तो जातक दयाहीन, मित्रहीन, धूर्त, मलीन, स्व-पक्ष-विजयी तथा अपने काम में चतुर होता है।

गुरु – यदि जन्मकुण्डली के 'प्रथमभाव' अर्थात् लग्न में 'गुरु' (बृहस्पति) की स्थिति हो तो जातक विद्वान, राजाज्ञा-पालक, चतुर, कृतज्ञ, उदार-हृदय तथा सुन्दर शरीर वाला होता है। यदि गुरु 'द्वितीय भाव' में हो तो जातक सुन्दर स्वरूपवान्, विद्या-गुण तथा यश सम्पन्न, वैर-भाव-रहित, त्यागी, श्रेष्ठ स्वभाव का एवं पूर्ण धनी होता है। यदि 'तृतीय भाव' में हो तो जातक सुहृद्-भाव-रहित, कृपण, कृतघ्न, स्त्री-पुत्रों से प्रेम न करने वाला तथा मंदाग्नि के कारण अशक्त होता है। यदि 'चतुर्थ भाव' में हो तो जातक अनेक प्रकार के वाहन तथा धन से सम्पन्न, सम्मान पाने वाला एवं राजा की कृपा से सम्पत्ति का लाभ पाने वाला होता है। यदि 'पञ्चम भाव' में हो तो जातक श्रेष्ठ मित्र एवं पुत्रों वाला, श्रेष्ठ मन्त्रज्ञ, अनेक प्रकार के श्रेष्ठ वाहन तथा धन प्राप्त करने वाला एवं कोमल-वाग्विलासी होता है। यदि 'षष्ठ भाव' में हो तो जातक तो जातक उत्तम संगीत एवं विद्या में रुचि न रखने वाला, यश-प्राप्ति का इच्छुक, शत्रु-नाशक तथा सौभाग्य-वर्द्धक कार्यों में आलस्य करने वाला होता है। यदि 'सप्तमभाव' में हो तो जातक शास्त्राभ्यासी, विनम्र, स्त्री एवं धन का परम सुख पाने वाला, राजमन्त्री तथा कवि होता है। यदि 'अष्टम भाव' में हो तो जातक दूत-कर्म-कर्त्ता, मलिन, दीन, अविवेकी, नम्रता-रहित, आलसी तथा कृश-शरीर वाला होता है। यदि 'नवम भाव' में हो तो जातक राजमन्त्री, धर्मात्मा, यज्ञकर्त्ता, सम्पूर्ण शास्त्रों का ज्ञाता, व्रती तथा ब्राह्मण-सेवक होता है। यदि 'दशम भाव' में हो तो जातक राज-चिह्नों को धारण करने वाला, श्रेष्ठ वाहन सम्पन्न, अनेक प्रकार से यश पाने वाला तथा स्त्री, पुत्र, मित्र एवं धन के सुख से सुखी रहता है। यदि 'एकादश भाव' में हो तो जातक अत्यन्त समर्थ, धन-लाभ पाने वाला, राजा का कृपापात्र तथा श्रेष्ठ वस्त्र एवं वाहनों से सम्पन्न, यशस्वी होता है। यदि 'द्वादश भाव' में हो तो जातक अनेक प्रकार के चित्तोद्वेगों के कारण क्रोध करने वाला, पापी, आलसी, निर्लज्ज, बुद्धि-हीन तथा मान-रहित होता है।

शुक्र – यदि जन्म कुण्डली के 'प्रथमभाव' अर्थात् लग्न में 'शुक्र' की स्थिति हो तो जातक श्रेष्ठ

स्वभाव का, मधुरभाषी, अनेक कलाओं का ज्ञाता, राजमान्य, धनी तथा श्रेष्ठ स्त्री के साथ काम-क्रीड़ायें करनेवाला होता है। यदि शुक्र 'द्वितीय भाव' में हो तो जातक श्रेष्ठ अन्न-पानादि का प्रेमी, श्रेष्ठ वस्त्र-आभूषण-धन-वाहनादि से सम्पन्न तथा विचित्र-विद्याओं का ज्ञाता होता है। यदि 'तृतीय भाव' में हो तो जातक कृश-अङ्गों वाला, कृपण, दुष्ट-चित्त, धनहीन, काम-पीड़ित, श्रेष्ठजनों को क्लेशदायक तथा अत्यन्त खोटा व्यवहार करने वाला होता है। यदि 'चतुर्थभाव' में हो तो जातक देव-पूजक, नित्य आनन्द मनाने वाला तथा मित्र, ग्राम, भूमि, श्रेष्ठ वाहन तथा अन्य अनेक प्रकार के सुख प्राप्त करने वाला होता है। यदि 'पञ्चम भाव' में हो तो जातक समस्त काव्य-कलाओं से अलंकृत, उच्च राज्य-सम्मान पाने वाला तथा पुत्र, वाहन एवं धन-धान्य से युक्त होता है। यदि 'षष्ठभाव' में हो तो जातक स्त्रियों को अप्रिय, काम-हीन, निर्बल तथा शत्रुओं से भयभीत रहने वाला है। यदि 'सप्तमभाव' में हो तो जातक अनेक कलाओं में कुशल, जल-क्रीड़ा-प्रेमी, रति-विलास में अत्यन्त प्रवीण तथा परम चञ्चल स्वभाव वाली स्त्री के साथ प्रेम करने वाला होता है। यदि 'अष्टम भाव' में हो तो जातक प्रसन्न-मुख, राजा द्वारा सम्मानित, शठ, घमण्डी, निःशङ्क, बहुभाषी तथा कदाचित् स्त्री-पुत्र की चिन्ता से युक्त होता है। यदि 'नवम भाव' में हो तो जातक अतिथि, गुरु एवं देव-पूजक, तीर्थाटन में धन व्यय करने वाला, नित्य धन तथा वाहन का सुख पाने वाला, क्रोध-रहित तथा मुनियों जैसा वेष धारण करने वाला होता है। यदि 'दशम भाव' में हो तो जातक सुख, सौभाग्य एवं सम्मान से युक्त, सुन्दर, स्नान-पूजन-ध्यानादि में चित्त लगाने वाला तथा स्त्री-पुत्र से नित्य विशेष स्नेह करने वाला होता है। यदि 'एकादश भाव' में हो तो जातक सुन्दर गीत-नृत्यादि में रुचि रखने वाला, नित्य यात्रा की चिन्ता करने वाला, श्रेष्ठ कर्म, धर्म तथा वेदाध्ययन में चित्तवृत्तियों को लगाने वाला होता है। यदि 'द्वादश भाव' में हो तो जातक श्रेष्ठ कर्मों का त्यागी तथा उनका विरोधी, कामी एवं दया तथा सत्य से विमुख होता है।

<u>शनि</u> - यदि जन्म कुण्डली के '<u>प्रथम भाव</u>' अर्थात् लग्न में 'शनि' की स्थिति हो तो जातक नीच, रोगी तथा दरिद्र होता है, परन्तु यदि लग्न में तुला, मकर अथवा कुंभ राशि हो तो जातक पुर अथवा देश का स्वामी, होता है। यदि शनि '<u>द्वितीय भाव</u>' में हो, परन्तु वह स्वक्षेत्री अथवा उच्च राशि का न हो तो जातक व्यसनी, स्वजनों से परित्यक्त तथा विदेश में राज-सम्मान एवं वाहन पाने वाला होता है, इसके विपरीत हानिकर सिद्ध होता है। यदि '<u>तृतीय भाव</u>' में हो तो जातक ग्राम का स्वामी, अत्यन्त पराक्रमी, श्रेष्ठ वाहन सम्पन्न, राज्य द्वारा सम्मानित तथा अनेक लोगों का पालन करने वाला होता है। यदि 'चतुर्थ भाव' में हो तो जातक वात-पित्त के कारण क्षीण-बली, खोटे स्वभाव का, आलसी, लड़ाई के कारण दुर्बल अङ्गों वाला तथा धनहीन होता है। यदि 'पंचम भाव' में हो तो जातक वात-पित्तादि के कारण नित्य रोगी तथा क्षीण शरीर वाला, धनहीन, काम-शक्ति-हीन तथा पुत्र को पीड़ा-कारक होता है। यदि '<u>षष्ठ भाव</u>' में हो तो जातक शत्रु-समूह पर विजय पाने वाला, गुणज्ञ, श्रेष्ठ कर्मों का ज्ञाता, प्रबल जठराग्नि वाला, महाबली, पुष्ट-शरीर तथा अनेक लोगों का पालक होता है। यदि '<u>सप्तम भाव</u>' में हो तो जातक रोग के कारण दुर्बल; स्त्री, घर तथा अन्न की चिन्ता से दुःखी, उपजीविका-रहित तथा लोगों से मेल-मिलाप-रहित होता है। यदि '<u>अष्टम भाव</u>' में हो तो जातक कृश-शरीर, त्वचा-रोगों से पीड़ित, असन्तोषी एवं आलसी होता है। यदि '<u>नवम भाव</u>' में हो तो जातक धर्म-कर्म-युक्त, व्याकुल-अङ्गों वाला, दुर्बुद्धि, अत्यधिक तर्क करने वाला तथा मनमानी करने वाला होता है। यदि '<u>दशम भाव</u>' में हो तो जातक राजमन्त्री, नीतिज्ञ, विनम्र, चतुर, धनी तथा ग्राम एवं नगरों का शासन-अधिकारी होता है। यदि '<u>एकादश भाव</u>' में हो तो जातक कृष्ण-वर्णी; अश्व, नीलमणि, ऊर्ण-वस्त्र तथा हाथियों का लाभ पाने वाला होता है, परन्तु यह तभी संभव है, जबकि शनि बलवान् हो, अन्यथा सामान्य-लाभ प्राप्त होते हैं। यदि '<u>द्वादश भाव</u>' में हो तो जातक दयाहीन, धनहीन, अङ्गहीन, सुखहीन, नीचों की संगति करने वाला तथा आलसी और व्यय के कारण निरन्तर पीड़ित बना रहने वाला होता है।

राहु - यदि जन्मकुण्डली के 'प्रथम भाव' अर्थात् लग्न में राहु की स्थिति हो तो जातक दुष्ट-स्वभाव का, दुष्ट-बुद्धि, सम्बन्धियों को ठगने वाला, शिर-पीड़ा युक्त, रोगी तथा विवाद में विजय पाने वाला होता है। यदि राहु 'द्वितीयभाव' में हो तो जातक कठोर-कर्मा, धन-नाशक, दरिद्र तथा निश्चित रूप से भ्रमणशील होता है। यदि 'तृतीयभाव' में हो तो जातक शत्रुओं के ऐश्वर्य को नष्ट करने वाला, लोक में यशस्वी, सुख एवं विलास का नाशक, कल्याण तथा ऐश्वर्य को प्राप्त करने वाला, भाइयों को मृत्युकारक, पशु-नाशक, दरिद्र, नित्य सुख पाने वाला तथा श्रेष्ठ पराक्रमी होता है। यदि 'चतुर्थ भाव' में हो तो जातक को स्वयं तथा उसके पुत्र एवं मित्रों को सुख नहीं मिलता, साथ ही वह निरन्तर भ्रमण भी करता रहता है। यदि 'पञ्चम भाव' में हो तो जातक सुख-हीन, मित्र-हीन, उदर-शूल-रोगी, विलास में पीड़ा पाने वाला तथा भ्रमित-मति वाला होता है। यदि 'षष्ठ भाव' में हो तो जातक शत्रु-नाशक, अत्यन्त बलवान्, धन-लाभ पाने वाला, कमर में दर्द पाने वाला, पशुओं के लिए पीड़ाकारक तथा म्लेच्छों की संगति करने वाला होता है। यदि 'सप्तम भाव' में हो तो जातक स्त्री-विरोधी अथवा स्त्री-नाशक, प्रचण्ड क्रोधवाली स्त्री का पति अथवा स्त्री से विवाद करने वाला अथवा रुग्णा-स्त्री को पाने वाला होता है। यदि 'अष्टम भाव' में हो तो जातक को गुदा-पीड़ा, प्रमेह अथवा अण्ड-वृद्धि रोग होते हैं, वह शत्रुओं से व्याकुल बना रहता है अथवा नाश को प्राप्त होता है। यदि 'नवम भाव' में हो तो जातक धर्म तथा धन नाशक, भ्रमणशील, दरिद्र, सम्बन्धियों का अल्प सुख पाने वाला, पीड़ायुक्त एवं अल्प-सुखी होता है। यदि 'दशम भाव' में हो तो जातक पितृ-सुख-हीन, दुर्भाग्यशाली, रोगी, वात-पीड़ित, वाहन-हीन तथा शत्रु-नाशक होता है। यदि दशमभाव में मीन राशिस्थ राहु हो तो जातक कष्ट भोगने वाला होता है। यदि 'एकादश भाव' में हो तो जातक को धन तथा सुख का विशेष लाभ होता है, राजकुल से सुख, वस्त्र, स्वर्ण, धन एवं चतुष्पदों की प्राप्ति होती है। सर्वत्र मनोरथ-सिद्धि एवं विजय मिलती है। यदि 'द्वादशभाव' में हो तो जातक नेत्र-रोगी, पाँव में आघात पाने वाला, बड़ा प्रपंची, दृढ़ प्रेम करने वाला, दुष्टों का स्नेही तथा मध्यम लोगों का सेवक होता है।

केतु- यदि जन्म कुण्डली के 'प्रथम भाव' अर्थात् 'लग्न' में केतु की स्थिति हो तो जातक सूत्रकर्त्ता, रोगादि से भय-प्राप्त, व्यग्र, स्त्री-पुत्र की चिन्ता से युक्त, महान् उद्वेग पाने वाला तथा शरीर में वात-पीड़ा से दुःखी होता है। यदि केतु 'द्वितीय भाव' में हो तो जातक का धन-धान्य नष्ट होता है तथा कुटुम्बियों से विरोध मिलता है। राजा के द्वारा धन की चिन्ता होती है तथा सदैव रोगी बना रहता है। परन्तु द्वितीयस्थ-केतु यदि स्वक्षेत्री अथवा शुभग्रह के क्षेत्र में हो तो सब प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं। यदि 'तृतीय भाव' में हो तो जातक शत्रु-नाशक, शत्रुओं से विवाद करने वाला, भ्रातृ-नाशक, बाहु-पीड़ा युक्त तथा धन, भोग, ऐश्वर्य एवं तेज सम्पन्न होता है; परन्तु यदि तृतीयस्थ-केतु उच्चराशि का हो तो जातक सुखी एवं संसार से उदासीन रहता है। यदि 'चतुर्थभाव' में हो तो जातक को माता का सुख प्राप्त नहीं मिलता तथा उसके मित्र, पिता एवं भाइयों का भी नाश होता है; परन्तु यदि चतुर्थस्थ-केतु अपनी उच्चराशि वृश्चिक अथवा सिंह राशि का हो तो जातक को माता-पिता-मित्रादि का सुख तो मिलता है, परन्तु वह चिरस्थायी नहीं होता, साथ ही जातक का चित्त भी सदैव उदास बना रहता है। यदि 'पंचम भाव' में हो तो जातक पेट में आघात आदि लगने के कारण कष्ट पाता है। वह स्व-सम्बन्धियों से प्रेम रखने वाला, अल्प पुत्रवान्, सदैव कल्याणयुक्त तथा बलवान् होता है। यदि 'षष्ठभाव' में हो तो जातक शत्रु-नाशक, मामा के पक्ष से मान-भंग पाने वाला अर्थात् अपमानित, चतुष्पदों का सुख एवं धन पाने वाला, व्याधि-रहित, आरोग्यवान् तथा दृढ़ शरीर वाला होता है। यदि 'सप्तम भाव' में हो तो जातक निरन्तर यात्राएं करता रहता है तथा शत्रुओं के कारण उसके धन का नाश होता रहता है। परन्तु यदि सप्तमस्थ-केतु 'वृश्चिक' राशि का हो तो वह सदैव लाभ देता है, साथ ही स्त्री-चिन्ता से चित्त को चिन्तित भी बनाये रखता है। यदि केतु 'अष्टम भाव' में हो तो जातक गुदा-रोगी होता है, परन्तु यदि अष्टमस्थ-केतु वृश्चिक, कन्या, मिथुन, मेष अथवा वृष राशि का हो तो बहुत धन का लाभ होता है। यदि 'नवमभाव' में हो तो जातक के क्लेश दूर होते हैं, वह पुत्रेच्छुक तथा म्लेच्छ-सहयोग से भाग्य-वृद्धि कारक होता है। उसे किसी

प्रकार की पीड़ा तथा वायु-रोग भी होता है। यदि 'दशम भाव' में हो तो जातक पितृ-सुख-हीन, खोटे भाग्य वाला, रोगी वाहन-पीड़ित, वात-विकारी तथा अनेक शत्रुओं का नाशक होता है। परन्तु यदि दशमस्थ-केतु कन्या राशि का हो तो जातक को सुख-दुःख-दोनों की प्राप्ति होती है। यदि 'एकादश भाव' में हो तो जातक सुभाषी, श्रेष्ठ विद्वान्, सुदर्शन, श्रेष्ठ भोग प्राप्त करने वाला, श्रेष्ठ वस्त्र धारण करने वाला, गुदा-रोगी, तेजस्वी तथा खोटी सन्तान वाला होता है। यदि द्वादश भाव में हो तो जातक के पाँव तथा नेत्रों में पीड़ा रहती है। वह राजा के समान खर्चीला, शत्रु-नाशक, अशान्त-चित्त तथा वस्ति अथवा गुदा सम्बन्धी रोग से पीड़ित रहता है।

टिप्पणी- (१) विद्वानों का कथन है कि 'राहु' का फल 'शनि' जैसा ही होता है। (२) जो ग्रह अपनी उच्चराशि में होता है, वह पूर्ण फल देता है। जो ग्रह स्वराशि अथवा मित्र-राशि में हो, वह भाव का आधा फल देता है। जो ग्रह शत्रु-राशि में हो वह चतुर्थांश फल देता है और जो ग्रह अस्त होता है अर्थात् सूर्य के समान अंशों पर होता है अथवा नीच-राशिस्थ होता है, वह किंचिन्मात्र भी भाव-फल नहीं देता (परन्तु मंगल आदि ग्रह इसके अपवाद भी हैं)।

अथ द्वादश भाव गत राशि फलम्- जन्म कुण्डली के द्वादश भावों में स्थित विभिन्न राशियों का प्रभाव निम्नानुसार समझना चाहिए-

'प्रथम भाव'- अर्थात् 'लग्न' में द्वादश-राशियों की स्थिति का प्रभाव इस प्रकार होता है- यदि लग्न में 'मेष' राशि हो तो जातक रक्त-गौर-वर्ण, कफ-प्रकृति, क्रोधी-स्वभाव का, कृतघ्न, मृदु-बुद्धि, स्थिर-प्रकृति वाला तथा स्त्री एवं सेवकों के समक्ष पराजय स्वीकार करने वाला होता है। यदि 'वृष' राशि हो तो जातक मानसिक-रोग ग्रस्त, स्वजनों से अपमानित, मित्रों का वियोग पाने वाला तथा कलह, दुःख, शस्त्राघात एवं धन-हानि के कारण दुःख पाने वाला होता है। यदि 'मिथुन' राशि हो तो जातक गौर-वर्ण, स्त्री-आसक्त, राजा से पीड़ित, दूत-कर्म करने वाला,

प्रसन्न-चित्त, प्रियवादी, विनम्र, सुन्दर केशों वाला तथा संगीतज्ञ होता है। यदि 'कर्क' राशि हो तो जातक गौर-वर्ण, पित्त-प्रकृति, प्रौढ़, जल-क्रीड़ा-प्रेमी, अत्यन्त बुद्धिमान्, दानी, प्रेमी, पवित्र, क्षमाशील, धर्मात्मा तथा सेवकों द्वारा सुसेवित होता है। यदि 'सिंह' राशि हो तो जातक पाण्डु-वर्ण, पित्त तथा वात प्रकृति, पीड़ित-अङ्ग, मांस-प्रेमी, रम्य-रसिक, तीक्ष्ण-स्वभाव, शूर, प्रगल्भ तथा भ्रमणशील होता है। यदि 'कन्या' राशि हो तो जातक कफ-पित्त प्रकृति, सुशील, धनी, डरपोक, मायावी, काम-पीड़ित, स्त्री-वशी तथा स्त्रियों जैसे स्वभाव वाला होता है। यदि 'तुला' राशि हो तो जातक कफ-प्रकृति, राजमान्य, देवाराधक, सत्यवादी तथा पर-स्त्री-प्रेमी होता है। यदि 'वृश्चिक' राशि हो तो जातक वृद्ध-तुल्य दीखने वाला, क्रोधी, राजमान्य, गुणी, शास्त्र में रुचि रखने वाला तथा शत्रु-मर्दक होता है। यदि 'धनु' राशि हो तो जातक राजा का प्रिय, अश्वारोही, घोड़े जैसी जाँघों वाला, ब्राह्मण एवं देवताओं का भक्त तथा कार्य-कुशल होता है। यदि 'मकर' राशि हो तो जातक कफ-वात-पीड़ित अङ्गों वाला, लम्बे शरीर का, धूर्त, ठग, जल-प्रेमी, तीव्र-स्वभाव का, डरपोक तथा पापाचारी होता है। यदि 'कुम्भ' राशि हो तो जातक स्थिर-स्वभाव, वात-प्रकृति, छोटे क़द का, जल-क्रीड़ा-प्रेमी, शिष्ट, लोकप्रिय तथा स्त्रियों को प्रिय होता है। यदि 'मीन' राशि हो तो जातक जल-प्रेमी, सुरत-प्रेमी, पित्ताधिक्य-प्रकृति का, कृश-शरीर, विनम्र, विद्वान् तथा कीर्तिमान् होता है।

'द्वितीय भाव' अर्थात् 'धन' भाव में द्वादश राशियों की स्थिति का प्रभाव इस प्रकार होता है—

यदि द्वितीय भाव में 'मेष' राशि हो तो जातक अनेक प्रकार के धर्म-कर्म करने वाला, नीतिपूर्वक धनोपार्जन करने वाला तथा श्रेष्ठ स्वभाव का होता है। उसके पुत्र भी नीति-निपुण, धन-वाहनादि से युक्त तथा विद्वान् होते हैं। यदि 'वृष' राशि हो तो जातक कृषि-कर्म से धनोपार्जन करने वाला, गाय-भैंस तथा अन्य चतुष्पदों एवं स्वर्ण, रत्नादि का निर्विघ्न लाभ प्राप्त करने वाला होता है। यदि 'मिथुन' राशि हो तो जातक स्त्रियों की सहायता से स्वर्ण,

चाँदी एवं चतुष्पदादि का लाभ पाने वाला साधुजनों की संगति पाने वाला होता है। यदि 'कर्क' राशि हो तो जातक को जल में डूबने का भय रहता है तथा लकड़ी के व्यवसाय से लाभ कमाता है। उसके द्वारा नीतिपूर्वक उपार्जित द्रव्य का उपभोग उसके मित्रगण करते हैं तथा पुत्र भी उस धन से सुख प्राप्त करते हैं, परन्तु वह स्वयं स्वोपार्जित धन का उपभोग नहीं कर पाता। यदि 'सिंह' राशि हो तो जातक वनोत्पन्न-वस्तुओं तथा वन्य-जन्तुओं द्वारा धनोपार्जन करता है तथा स्व-पराक्रम से लाभ उठाता है। उसका धन परोपकार में व्यय होता है। यदि 'कन्या' राशि हो तो जातक राजा द्वारा स्वर्ण, रौप्य, हीरा-मोती, अश्व-गज आदि का लाभ प्राप्त करता है। यदि 'तुला' राशि हो तो जातक पुण्यात्मा होता है तथा अपने पुण्य-प्रताप से ही प्रचुर धनोपार्जन करता है। उसे पत्थर, मिट्टी तथा धान्य आदि के व्यवसाय से भी पर्याप्त लाभ होता है। यदि 'वृश्चिक' राशि हो तो जातक स्व-धर्म निष्ठ, स्त्री-प्रेमी, विचित्र-विनोद युक्त वार्तालाप करने वाला तथा देव-ब्राह्मण-भक्त होता है। यदि 'धनु' राशि हो तो जातक स्थिर कार्यों, अनेक प्रकार के चतुष्पदों तथा रसोद्भूत वस्तुओं द्वारा धन एवं यश का लाभ पाने वाला होता है। वह धर्म-कर्म हेतु धन का संचय भी करता है। यदि 'मकर' राशि हो तो जातक अनेक प्रकार के प्रपंचों, राजा की सेवा, कृषि-कर्म तथा विदेश-यात्रा द्वारा धनोपार्जन एवं संग्रह करने वाला होता है। यदि 'कुम्भ' राशि हो तो जातक फल-फूल एवं जलोत्पन्न वस्तुओं द्वारा धनोपार्जन कर, साधुओं को खिलाने वाला तथा परोपकारी होता है। यदि 'मीन' राशि हो तो जातक व्रत-उपवास तथा विद्या आदि के प्रभाव से, भूमिगत-द्रव्य की खोज से अथवा माता-पिता द्वारा उपार्जित धन का लाभ पाने वाला होता है।

'तृतीय भाव' अर्थात् 'सहज' भाव में द्वादश राशियों की स्थिति का प्रभाव इस प्रकार होता है—
यदि तृतीय भाव में 'मेष' राशि हो तो जातक ब्राह्मणों का हितैषी, पुराण-श्रवण में रुचि रखने वाला, पवित्र, परोपकारी, राजमान्य तथा अनेक विद्याओं का ज्ञाता होता है। यदि 'वृष' राशि हो तो जातक अत्यन्त प्रतापी,

राजा का मित्र, ब्राह्मणों का भक्त, दानी, यशस्वी, पण्डित तथा कवि होता है। यदि 'मिथुन' राशि हो तो जातक उदार, उत्तम वाहन सम्पन्न, स्त्रियों को प्रिय, सत्यवादी, लोकपूज्य तथा स्व-कुल में श्रेष्ठ होता है। यदि 'कर्क' राशि हो तो जातक व्यापारियों का मित्र, कृषि-कर्म-कर्ता, धर्मात्मा, सुशील तथा लोकप्रिय होता है। यदि 'सिंह' राशि हो तो जातक शूर-वीर, कुत्सित मित्रों वाला, हिंसक, धन-लोलुप, कठोर भाषी, पाप-कर्मों में रुचि रखने वाला, गौरवशाली तथा अहंकारी होता है। यदि 'कन्या' राशि हो तो जातक अनेक मित्रों वाला, मित्रों की सहायता से धन-संग्रह करने वाला, ब्राह्मणों का प्रिय, शास्त्राभ्यासी, सुशील तथा देव-गुरु-भक्त होता है। यदि 'तुला' राशि हो तो जातक चंचल-चित्त, पापियों का मित्र तथा अपने छोटे बच्चों के साथ भी हास-परिहास की बातें करने वाला होता है। यदि 'वृश्चिक' राशि हो तो जातक पापी तथा दरिद्रों का मित्र, कृतघ्न, कलही, अल्पकल्पित एवं लोक-विरोधियों से प्रेम-सम्बन्ध रखने वाला होता है। यदि 'धनु' राशि हो तो जातक राजमन्त्री, राजसेवक, शूर-वीर, धर्माचरणकर्त्ता, हृदयाकर्षक-वाक्य बोलने वाला, युद्ध-कुशल, दयालु तथा सदैव प्रसन्न रहने वाला होता है। यदि 'मकर' राशि हो तो जातक सदैव प्रसन्न-मुख, अद्वितीय विद्वान्, देव-गुरु-भक्त, पुत्रवान् तथा महाधनी होता है। यदि 'कुम्भ' राशि हो तो जातक व्रती, यशस्वी, सुशील, क्षमाशील, संगीत-प्रिय, सत्यवादी तथा दुष्टजनों से भी मित्रता रखने वाला होता है। यदि 'मीन' राशि हो तो जातक पुण्यवान्, पुत्रवान्, धनवान्, अतिथि-भक्त तथा सर्वप्रिय होता है।

'चतुर्थ भाव' अर्थात् 'सुख' भाव में द्वादश राशियों की स्थिति का प्रभाव इस प्रकार होता है—

यदि चतुर्थभाव में 'मेष' राशि हो तो जातक चतुष्पदों, स्त्रियों तथा स्वोपार्जित धन द्वारा अनेक प्रकार के अन्न-पानादि भोगों का सुख प्राप्त करता है। यदि 'वृष' राशि हो तो जातक सम्मान्य तथा अन्य लोगों से भी सुख प्राप्त करता है, साथ ही वह स्व-पराक्रम तथा राज-सेवा आदि अन्य उपचारों से भी सुख पाता है।

यदि 'मिथुन' राशि हो तो जातक जल-क्रीड़ा, वन-भ्रमण, पुष्प-वस्त्रादि एवं स्त्रियों से अनेक प्रकार के सुख-लाभ प्राप्त करता है। यदि 'कर्क' राशि हो तो जातक सुन्दर, सौभाग्यशाली, स्त्रियों को प्रिय, सुशील, सर्व गुण सम्पन्न, तथा विद्वान् होता है। यदि 'सिंह' राशि हो तो जातक कन्या-सन्तानवान्, दरिद्रों के साथ रहने वाला, शील-रहित तथा अत्यन्त क्रोध करने के कारण कभी सुखी न रहने वाला होता है। यदि 'कन्या' राशि हो तो जातक धन पाकर दुष्टों का साथ करने वाला, चुगलखोरों का मित्र तथा चोरी एवं मारण-मोहन आदि क्रियाओं के कारण दुःख पाने वाला होता है। यदि 'तुला' राशि हो तो जातक सरल-स्वभाव, सत्कर्म-कुशल, विद्या-विनीत, सदा सुखी, प्रसन्न-चित्त तथा धनी होता है। यदि 'वृश्चिक' राशि हो तो जातक तीक्ष्ण-स्वभाव का, विपत्ति युक्त, दूसरों से डरने वाला, अनेक लोगों का सेवक, शत्रुओं द्वारा प्रताड़ित, कार्य-कुशल तथा बुद्धिमानों से दूर रहने वाला होता है। यदि 'धनु' राशि हो तो जातक युद्ध-कार्य, युद्ध-चिन्तन, घोड़ों की देखभाल तथा स्वप्रयत्नों द्वारा सुख पाने वाला होता है। यदि 'मकर' राशि हो तो जातक जल-विहार, वन-उपवनादि में भ्रमण, मित्रों के उपचार तथा सुरत-क्रिया आदि से सुख पाता है। यदि 'कुम्भ' राशि हो तो जातक फल-शाक आदि से, स्त्रियों के आश्रय से तथा उत्साह-वर्द्धक वाक्य-चातुर्य से सुख पाने वाला होता है। यदि 'मीन' राशि हो तो जातक सुखी, मन्दगामी तथा स्व-पराक्रम एवं देवताओं की कृपा से अनेक प्रकार के ऐश्वर्य पाने वाला होता है।

'पञ्चम भाव' अर्थात् 'सुत-भाव' में द्वादश राशियों की स्थिति का प्रभाव इस प्रकार होता है-

यदि 'पञ्चम भाव' में 'मेष' राशि हो तो जातक मित्रों, पुत्रों, प्रियजनों एवं देवताओं की सेवा से सुख पाता है तथा पाप-कर्म में पड़ कर व्याकुल-चित्त भी बना रहता है। यदि 'वृष' राशि हो तो जातक को सुन्दरी, सौभाग्यवती, लावण्य-वती, पति-परायणा, परन्तु सन्तानहीना कन्या की प्राप्ति होती है। यदि 'मिथुन' राशि हो तो जातक को प्रसन्न, सुखी, सुशील, गुणीजनों से प्रेम रखने वाले तथा बलवान् पुत्र प्राप्त होते हैं। यदि 'कर्क' राशि हो तो

जातक के पुत्र प्रसिद्ध, यशस्वी, उदार, धनी, विनम्र तथा पिता को सुख देने वाले होते हैं। यदि '<u>सिंह</u>' राशि हो तो जातक के पुत्र क्रूर-स्वभाव वाले, सुन्दर नेत्रों वाले, मत्स्य-मांस-प्रिय, कन्या-सन्तति वाले, तीव्र-स्वभाव वाले, विदेश-वासी तथा क्षुधातुर होते हैं। यदि '<u>कन्या</u>' राशि हो तो जातक के कन्यायें अधिक होती हैं और वे पुत्रहीना, पतिव्रता कार्य-कुशला, निष्पाप तथा आभूषण-प्रेमी होती हैं। यदि '<u>तुला</u>' राशि हो तो जातक के पुत्रादि सुन्दर, सुशील, सुन्दर नेत्रों वाले तथा कार्यदक्ष होते हैं। यदि '<u>वृश्चिक</u>' राशि हो तो जातक के पुत्र भाग्यवान, सुशील, निर्दोष, विनीत तथा स्व-धर्म-पालक होते हैं। यदि '<u>धनु</u>' राशि हो तो जातक के पुत्र अश्व-वाहनादि रखने वाले, शत्रुजयी, शास्त्र-विद्या में निपुण, राजा से सम्मान पाने वाले, सेवा-कर्म के अनुभवी तथा अनेक गुणयुक्त होते हैं। यदि '<u>मकर</u>' राशि हो तो जातक के पापी, कुरूप, नपुंसक, दुष्ट, प्रभावहीन, निष्ठुर तथा प्रेम-रहित होते हैं। यदि '<u>कुम्भ</u>' राशि हो तो जातक के पुत्र स्थिर-स्वभाव, सत्यवादी, सुप्रसिद्ध, यशस्वी, पुण्यवान तथा कष्ट-सहिष्णु होते हैं। यदि '<u>मीन</u>' राशि हो तो जातक के पुत्र सुन्दर स्वाँपितृ-भक्त होते हैं, परन्तु यदि पंचमभाव में कोई पाप-ग्रह बैठा हो तो वे रोगी, कुरूप तथा स्त्री सहित पापी होते हैं।

'<u>षष्ठ भाव</u>' अर्थात् 'रिपु' भाव में द्वादश राशियों की स्थिति का प्रभाव इस प्रकार होता है—
यदि षष्ठभाव में '<u>मेष</u>' राशि हो तो जातक लोगों से स्वयं शत्रुता करने वाला होता है। यदि '<u>वृष</u>' राशि हो तो जातक की अपनी सन्तान, स्त्री अथवा बन्धु-वर्ग से शत्रुता होती है। यदि '<u>मिथुन</u>' राशि हो तो जातक की अपनी पत्नी, पापी लोग, वैश्य तथा नीचों से शत्रुता होती है। यदि '<u>कर्क</u>' राशि हो तो जातक की अपने पुत्र तथा अन्य लोगों के आग्रह के कारण ब्राह्मण, राजा तथा बड़े लोगों से शत्रुता होती है यदि '<u>सिंह</u>' राशि हो तो जातक की अपने पुत्रों तथा बन्धुजनों से शत्रुता होती है अथवा पर-स्त्रियों के संग के कारण उसकी समस्त सम्पत्ति नष्ट हो जाती है। यदि '<u>कन्या</u>' राशि हो तो जातक जातक की

किसी से शत्रुता तो नहीं होती, परन्तु दुराचारिणी, नीच अथवा वेश्या स्त्री के संसर्ग के कारण उसका धन नष्ट होता है। यदि तुला राशि हो तो जातक धन को पृथ्वी में गाड़ कर रखने वाला अथवा धर्म-कर्म, साधु-सेवा या परोपकार में खर्च करने वाला होता है, जिसके कारण घर वाले ही उससे शत्रुता रखते हैं। यदि 'वृश्चिक' राशि हो तो जातक को सर्प-बिच्छू, सरीसृप, व्याघ्र, सिंह आदि वन्य-जन्तुओं, चुगलखोरों तथा चोरों से भय होता है तथा प्रतिष्ठित एवं विलासी मनुष्यों से शत्रुता होती है। यदि 'धनु' राशि हो तो जातक की घोड़ा, हाथी, शस्त्रधारी, रागी तथा पुण्यात्मा लोगों से शत्रुता होती है। यदि 'मकर' राशि हो तो जातक की धन के कारण अपने हितू लोगों से भी शत्रुता होती है और कभी किसी सज्जन-पुरुष की सहायता करने के कारण से भी अपने घर के लोगों से ही शत्रुता हो जाती है। यदि 'कुम्भ' राशि हो तो जातक की जल-जन्तुओं, राजा तथा बड़े लोगों से शत्रुता होती है और उसे वापी-कूप जलाशय आदि से भय भी प्राप्त होता है। यदि 'मीन' राशि हो तो जातक की अपने स्वार्थ के कारण अपने ही पुत्रों, स्त्री तथा अन्य हितू लोगों से शत्रुता होती है।

'सप्तम भाव' अर्थात् 'जाया' भाव में द्वादश राशियों की स्थिति का प्रभाव इस प्रकार होता है— यदि सप्तम भाव में 'मेष' राशि हो तो जातक की स्त्री दुष्टा, क्रूर, पापिनी, कठोर स्वभाव की निर्दय तथा धन-लोलुप होती है। यदि 'वृष' राशि हो तो जातक की पत्नी सुन्दर, मधुरभाषिणी, गृह-कार्य-चतुर शान्त-स्वभाव, पतिव्रता, कलाओं की जानकार तथा देव-ब्राह्मण-भक्त होती है। यदि 'मिथुन' राशि हो तो जातक की पत्नी धनवती, रूपवती, सदाचारिणी, सर्वगुण सम्पन्ना, कोमल-स्वभाव तथा गण अर्जिता होती है। यदि 'कर्क' राशि हो तो जातक की पत्नी सुन्दरी, सौभाग्यवती, प्रसन्न-हृदय, झगड़े से डरने वाली तथा पति की आह्लादकारिणी होती है। यदि 'सिंह' राशि हो तो जातक की स्त्री तीव्र-स्वभाव की, क्रूर, दुष्ट, श्रृंगार-विहीना, धन-लोलुप, थोड़ा काम करने वाली तथा दुर्बल-शरीर की होती है। यदि 'कन्या' राशि हो तो जातक की

पत्नी परम सुन्दरी, कन्या-सन्तति वाली, भोगवती, सौभाग्यवती, धनवती, प्रियवादिनी, सत्यवादिनी, प्रगल्भा तथा कार्य-कुशला होती है। यदि 'तुला' राशि हो तो जातक की पत्नी गुण-गौरव मण्डिता, पुण्य-कर्म करने वाली, धर्म-परायणा, गुणवती, पुत्रवती, पृथ्वी-तुल्य क्षमावान् तथा विनम्र होती है। यदि 'वृश्चिक' राशि हो तो जातक की पत्नी कलाओं की ज्ञाता, कृपण, सुशिक्षिता होने पर भी विनय-रहित तथा दुर्भाग्य-दोनों से युक्त होती है। यदि 'धनु' राशि हो तो जातक की पत्नी दुष्टा, कुशीला, निर्लज्ज, पराये-दोष देखने वाली, झगड़ालू तथा दम्भ-ईर्ष्या आदि दुर्गुणों से युक्त होती है। यदि 'मकर' राशि हो तो जातक की पत्नी अभिमानिनी, अधम प्रकृति की, निर्लज्ज, कृपण, दुष्ट-स्वभाव की एवं सदैव दुःख भोगने वाली होती है। यदि 'कुम्भ' राशि हो तो जातक की पत्नी दुष्ट-स्वभाव की, परन्तु देव-ब्राह्मण-भक्त, दया-धर्म का पालन करने वाली तथा सदैव प्रसन्न रहने वाली होती है। यदि 'मीन' राशि हो तो जातक की पत्नी पति से भिन्न-मत रखने वाली, विकार-युक्त, कुत्सित-पुत्रों वाली, स्व-धर्म में निष्ठा रखती हुई विनय-हीन तथा सदैव धन की इच्छा रखने वाली होती है।

'अष्टम भाव' अर्थात् 'रन्ध्र भाव' में द्वादश राशियों की स्थिति का प्रभाव इस प्रकार होता है— यदि 'अष्टम भाव' में 'मेष' राशि हो तो जातक रोगी, परदेशवासी, बीती बातों को याद कर बेहोश हो जाने वाला, धनवान् तथा दुःखी होता है। यदि 'वृष' राशि हो तो जातक कफ-विकार, अधिक भोजन, चतुष्पदों के प्रहार अथवा दुष्टों के सम्पर्क के कारण अपने ही घर में मृत्यु को प्राप्त होता है। यदि 'मिथुन' राशि हो तो जातक की मृत्यु शत्रु के हाथ से, लोभवश, किसी रस-पदार्थ के सेवन के कारण, गुदा-रोग अथवा प्रमेह-रोग से होती है। यदि 'कर्क' राशि हो तो जातक की मृत्यु पानी में डूबने, कृमि-दंश अथवा परदेश में किसी अन्य मनुष्य के हाथों होती है। यदि 'सिंह' राशि हो तो जातक की मृत्यु किसी विषैले

जन्तु के दंश के कारण, सर्प-दंश, वन में, चतुष्पद द्वारा अथवा चोर के द्वारा होती है। यदि 'कन्या' राशि हो तो जातक की मृत्यु अधिक भोग-विलास, अपनी मनमानी, स्त्री की हिंसा के कारण, विषम-भोजन अथवा अपनी स्त्री के कारण अपने ही घर में होती है। यदि 'तुला' राशि हो तो जातक की मृत्यु अधिक उपवास के कारण रात्रि के समय अथवा शत्रु के क्रोध, सन्ताप अथवा किसी मनुष्य द्वारा होती है। यदि 'वृश्चिक' राशि हो तो जातक की मृत्यु रक्त-विकार, कृमि अथवा विष के कारण अपने ही स्थान में होती है। यदि 'धनु' राशि हो तो जातक की मृत्यु शस्त्राघात, गुप्तेन्द्रिय में रोग, किसी चतुष्पद अथवा पानी में डूबने आदि कारणों से होती है। यदि 'मकर' राशि हो तो जातक ~~विद्वान~~, गुणी, कामी, शूर-वीर, मानी, विशाल वक्षःस्थल वाला, शास्त्रज्ञ तथा समस्त कलाओं में निपुण होता है। यदि 'कुम्भ' राशि हो तो जातक की सम्पूर्ण सम्पत्ति अग्नि से नष्ट हो जाती है तथा अनेक प्रकार के व्रण, वायु-विकार, अधिक परिश्रम अथवा पराये घर में उसकी मृत्यु होती है। यदि 'मीन' राशि हो तो जातक की मृत्यु अतिसार, पित्त-ज्वर, जल, रक्त-विकार अथवा शस्त्राघात से होती है।

'नवम भाव' अर्थात् 'धर्म-भाव' में द्वादश राशियों की स्थिति का प्रभाव इस प्रकार होता है— यदि 'नवमभाव' में 'मेष' राशि हो तो जातक पशु-पालक एवं पशुओं के प्रति दयालु तथा पशु-दान रूपी धर्म करने वाला होता है। यदि 'वृष' राशि हो तो स्वोपार्जित-धन से अनेक प्रकार के दान-धर्म करने वाला होता है। यदि 'मिथुन' राशि हो तो जातक सद्भाव पूर्वक धर्माचरण करने वाला, अतिथि-सत्कारी, ब्राह्मणों को भोजन कराने वाला तथा दीनों को अनुकम्पा एवं आश्रय देने वाला होता है। यदि 'कर्क' राशि हो तो जातक अनेक व्रत, उपवास, तीर्थ यात्रा एवं वन में रहकर तप आदि करने वाला होता है। यदि 'सिंह' राशि हो तो जातक स्वधर्म त्याग कर पर-धर्म अपनाने वाला, अकारण ही तीर्थों में घूमने वाला, विप्र

एवं धर्म-रहित होता है। यदि 'कन्या' राशि हो तो जातक स्त्रियों जैसे काम करने वाला अथवा स्त्री की सेवा करने वाला, भक्ति-हीन, पाखण्डी अथवा अन्य मतावलम्बी होता है। यदि 'तुला' राशि हो तो जातक स्वधर्म-पालक, देव-ब्राह्मण भक्त एवं लोकानुरागी अद्भुत-धर्म करने वाला होता है। यदि 'वृश्चिक' राशि हो तो जातक पाखण्डधर्मी, अन्यों के लिए क्लेश-कारक, भक्ति-हीन, परन्तु कभी-कभी दूसरों का पालन करने वाला भी होता है। यदि 'धनु' राशि हो तो जातक ब्राह्मण एवं देव-पूजक, पूजनादि करने वाला, शास्त्र-विहित धर्म का पालक, प्रतिष्ठ धर्मात्मा होता है। यदि 'मकर' राशि हो तो जातक अपने प्रताप की वृद्धि के लिए अधर्म करता है, फिर अत्यधिक विडम्बना के कारण विरक्त होकर कुल-धर्म का आश्रय लेता है। यदि 'कुम्भ' राशि हो तो जातक देव-भक्त, जलाशय, उपवन आदि का निर्माता तथा धार्मिक-कृत्य-करने वाला होता है। यदि 'मीन' राशि हो तो जातक सज्जनों का सेवक, तीर्थाटन आदि धार्मिक-कृत्य करने वाला तथा लोकोपकारार्थ जलाशयादि का निर्माण कराने वाला होता है।

'दशमभाव' अर्थात् 'कर्म-भाव' में द्वादश राशियों की स्थिति का प्रभाव इस प्रकार होता है — यदि 'दशमभाव' में 'मेष' राशि हो तो जातक विनय-हीन, चुगलखोर तथा निन्दित-कर्म करने वाला होता है। यदि 'वृष' राशि हो तो जातक साधु-जनों के उपकारार्थ धन व्यय करने वाला, देव-ब्राह्मण एवं अतिथियों का सम्मान करने वाला तथा प्रिय-कर्म करने वाला होता है। यदि 'मिथुन' राशि हो तो जातक गुरुजनों के निर्देशानुसार कार्य करने वाला, प्रिय तथा यशदायक काम तथा कृषि-कर्म करने वाला होता है। यदि 'कर्क' राशि हो तो जातक उपवन-जलाशय आदि का निर्माता एवं परोपकारार्थ निष्पाप-कर्म करने वाला होता है। यदि 'सिंह' राशि हो तो जातक रौद्र, पापी, विकृत, पराक्रमी, हिंसक तथा निन्दित क्रूर-कर्म करने वाला होता है। यदि 'कन्या' राशि हो तो

जातक मूर्खों जैसे काम करने वाला, स्त्री तथा राजा के समक्ष अपमानित, अल्पकामी तथा निर्धन होता है। यदि 'तुला' राशि हो तो जातक यत्नपूर्वक व्यवसाय करने वाला, धर्म तथा नीतिपूर्वक द्रव्योपार्जन करने वाला, सज्जनों का प्रिय एवं पराये धन की वृद्धि करने वाला होता है। यदि 'वृश्चिक' राशि हो तो जातक शास्त्र एवं लोक-सम्मत कार्य करने वाला, गुरु तथा ब्राह्मणों के लिए धन खर्च करने वाला, परन्तु निंद्य एवं अनीतिपूर्ण कार्य करने वाला भी होता है। यदि 'धनु' राशि हो तो जातक सब कार्यों में दक्ष, नित्य लाभ पाने वाला, परोपकारी, राजकर्मचारी तथा भूमि एवं पशु सम्पन्न होता है। यदि 'मकर' राशि हो तो जातक उग्र प्रतापी, दयाहीन, बन्धु-बान्धव युक्त, दुष्टों को प्रिय तथा धर्म-हीन होता है। यदि 'कुम्भ' राशि हो तो जातक कर्म-कुशल, दूसरों को ठगने वाला, पाखण्डी, लोभी, अविश्वस्त एवं जन-विरोधी होता है। यदि 'मीन' राशि हो तो जातक धर्म एवं कुलपरम्परा-विहित कर्मों को करने वाला, ब्राह्मणों का सेवक, यशस्वी तथा कीर्तिवान् होता है।

'एकादश भाव' अर्थात् 'लाभ भाव' में द्वादश राशियों की स्थिति का प्रभाव इस प्रकार होता है — यदि एकादशभाव में 'मेष' राशि हो तो जातक को पशु, राज-सेवा एवं देशान्तर से विशेष लाभ होता है। यदि 'वृष' राशि हो तो जातक को स्त्रियों, साधु जनों तथा ब्याज एवं गो-सेवा से भी विशेष लाभ होता है। यदि 'मिथुन' राशि हो तो जातक को सभी कामों से लाभ होता है, साथ ही वह स्त्रियों को प्रिय, पण्डितों में प्रसिद्ध तथा उत्तम भोजन एवं पेय पाने वाला होता है। यदि 'कर्क' राशि हो तो जातक को सेवा, कृषि, शास्त्र एवं साधुजनों से लाभ प्राप्त होता है। यदि 'सिंह' राशि हो तो जातक को जीव-हिंसा, निन्द्य-कर्म, व्यापार तथा देशान्तर की यात्राओं से लाभ होता है। यदि 'कन्या' राशि हो तो जातक को अनेक प्रकारों से लाभ होता है, साथ ही वह शास्त्र-पुराणादि के अभ्यास एवं विनय-विवेक के कारण सर्वत्र पूज्य

भी होता है। यदि 'तुला' राशि हो तो जातक अनेक व्यवसायों से लाभ पाता है तथा साधु-सेवा एवं विनम्रता के कारण सुखी तथा लोक-प्रशंसित होता है। यदि 'वृश्चिक' राशि हो तो जातक छल-कपट, मिथ्या-भाषण एवं चुगुलखोरी से लाभ उठाता है। यदि 'धनु' राशि हो तो जातक राजा के साथ विलास करने वाला, साधु-सेवी तथा स्व-पुरुषार्थ से विशेष लाभ पाने वाला होता है। यदि 'मकर' राशि हो तो जातक जल-यान, विदेश-यात्रा एवं राज-सेवा द्वारा धनोपार्जन करता है तथा उसे शीघ्र ही व्यय भी कर देता है। यदि 'कुम्भ' राशि हो तो जातक कुत्सित-कर्म, त्याग, चौर्य, पराक्रम एवं विद्या के प्रभाव से लाभ उठाता है। यदि 'मीन' राशि हो तो जातक विविध कथा-पुराणों, विचित्र-वार्त्ताओं एवं मित्रों से लाभ उठाता है। राजा द्वारा प्रदत्त सम्मान तथा अन्य अनेकों प्रकारों से लाभ प्राप्त करता है। वह विनम्रता पूर्वक लाभ कमाता है।

'द्वादशभाव' अर्थात् 'व्यय भाव' में द्वादश राशियों की स्थिति का प्रभाव इस प्रकार होता है— यदि द्वादशभाव में 'मेष' राशि हो तो जातक उत्तम भोजन-वस्त्र के सेवन एवं गाय आदि पशुओं के पालन में उपार्जित धन को व्यय करता है। यदि 'वृष' राशि हो तो जातक अनेक प्रकार के वस्त्रों तथा स्त्रियों के साथ प्रेम-लीला में धन व्यय करता है। यदि 'मिथुन' राशि हो तो जातक स्त्रियों के साथ प्रेम-क्रीड़ा, नौकरों के वेतन, दुष्ट-संगति एवं कुकर्मों में धन खर्च करता है। यदि 'कर्क' राशि हो तो जातक ब्राह्मण-सेवा, देवाराधन, यज्ञ, साधु-संगति एवं श्रेष्ठ कर्मों में धन खर्च करता है। यदि 'सिंह' राशि हो तो जातक स्वरूप, जन्म एवं क्रिया से निन्दनीय, तमोगुणी तथा चोर एवं राजा द्वारा धन-हानि पाने वाला होता है। यदि 'कन्या' राशि हो तो जातक स्त्रियों, विवाहादि मंगल कार्यों अथवा साधु-संगति में अपना धन खर्च करता है। यदि 'तुला' राशि हो तो जातक देव-ब्राह्मण, बन्धु-वर्ग, व्रत-पालन एवं वेद-शास्त्र-विहित कर्मों में तथा साधुजनों की संगति में धन खर्च करता है।

यदि 'वृश्चिक' राशि हो तो जातक अनेक विडम्बनाओं सहित दान करने में, कपटी-मित्रों की सहायता से, दुर्बुद्धि पूर्वक चोरों को अधिकार देने में धन खर्च करता तथा लोक-निन्दित होता है। यदि 'धनु' राशि हो तो जातक पापियों की संगति में, सजातीय अधिकारों की खुशामद में, कृषि-कर्म में तथा पराधीनता में धन खर्च करता है। यदि 'मकर' राशि हो तो जातक निन्द्य-भोजन एवं स्व-वर्ग के मनुष्यों के सत्कार में धन खर्च करता है। वह कृषि-कर्म कर्ता, धन-हीन तथा लोक-निन्दित भी होता है। यदि 'कुम्भ' राशि हो तो जातक देव, ब्राह्मण एवं तपस्वियों की सेवा में अपना धन खर्च करता है। यदि 'मीन' राशि हो तो जातक नाव आदि बनवाने, विदेश-यात्रा तथा मुकद्दमा आदि में अपना धन खर्च करता है।

अथ भावेश फलम् - जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों के स्वामी (भावेश) की विभिन्न भावों में स्थिति का फल निम्नानुसार समझना चाहिए।

लग्नेश फल - 'लग्नेश' अर्थात् प्रथम भाव का स्वामी यदि 'लग्न' अर्थात् 'प्रथमभाव' में स्थित हो तो जातक स्वस्थ, दीर्घायु, बलवान्, भू-स्वामी अथवा राजा होता है। यदि लग्नेश 'द्वितीयभाव' में स्थित हो तो जातक स्थूलशरीर, दीर्घजीवी, बलवान्, धनी, भू-स्वामी, राजा अथवा धर्मात्मा होता है। यदि लग्नेश 'तृतीयभाव' में स्थित हो तो जातक बन्धु-बान्धवों से युक्त, धर्मात्मा, दानी, शूरवीर, बलवान्, यशस्वी तथा चिरजीवी होता है। यदि लग्नेश 'चतुर्थभाव' में स्थित हो तो जातक पिता से धन पाने वाला, माता-पिता का भक्त, अधिक भोजन करनेवाला, राजा का प्रिय तथा दीर्घजीवी होता है। यदि लग्नेश 'पंचम भाव' में हो तो जातक राजा, दानी, दीर्घायु, सुकर्मी, सुप्रसिद्ध एवं सुपुत्रवान् होता है। यदि लग्नेश 'षष्ठभाव' में हो तो जातक नीरोग, बलवान्, शत्रुजयी, सत्कर्मकरनेवाला, धनी तथा भू-स्वामी होता है। यदि लग्नेश 'सप्तमभाव' में हो तो जातक सुशीला, सुन्दरी एवं तेजस्विनी पत्नीवाला, स्वयं भी तेजस्वी;

परन्तु शोकग्रस्त होता है। यदि लग्नेश 'अष्टम भाव' में हो तो जातक दीर्घायु, कृपण तथा धन-संग्रही होता है। यदि लग्नेश 'नवम भाव' में हो तो जातक सबका मित्र, बुद्धिमान्, सुशील, विख्यात, तेजस्वी पुण्यात्मा तथा धर्म-परायण होता है। यदि लग्नेश 'दशम भाव' में हो तो जातक राजा द्वारा सम्मानित, माता-पिता का भक्त, पण्डित, सुशील तथा यशस्वी होता है। यदि लग्नेश 'एकादश भाव' में हो तो जातक पुत्रवान्, बलवान्, तेजस्वी, सुखी, यशस्वी, दीर्घायु तथा धन-वाहन सम्पन्न होता है। यदि लग्नेश 'द्वादश भाव' में हो तो जातक बन्धुओं में मानी, परद्वेषी, नीच, कुकर्मी, परदेशवासी तथा पराया अन्न खाने वाला होता है।

धनेश फल — 'धनेश' अर्थात् द्वितीय भाव का स्वामी यदि 'लग्न' अर्थात् 'प्रथम भाव' में हो तो जातक सत्कर्म कर्त्ता, व्यवसाय से लाभ पाने वाला, प्रसिद्ध धनी, विपुल सुख भोगी तथा कृपण स्वभाव का होता है। यदि धनेश 'द्वितीय भाव' में हो तो जातक व्यवसाय से धन कमाने वाला, बाँध बनाने वाला, सत्य को छिपाने वाला, उद्वेगी तथा नीच-प्रकृति का होता है। यदि धनेश 'तृतीय भाव' में हो और शुभग्रह हो तो जातक राजा से विरोध रखता है और यदि पापग्रह हो तो भाइयों से शत्रुता रखता है। यदि मंगल धनेश होकर तृतीय भाव में बैठा हो तो जातक चोर होता है। यदि धनेश 'चतुर्थ भाव' में हो तो जातक अपने पिता से धन पाने वाला, सत्यवादी तथा दीर्घायु होता है, परन्तु यदि धनेश पापग्रह होकर चतुर्थ भाव में बैठा हो तो वह मृत्युकारक भी हो सकता है। यदि धनेश 'पंचम भाव' में हो तो जातक पुत्रों से सुखी, कठिन-कर्म करने वाला, कृपण तथा दुःखी होता है। यदि धनेश 'षष्ठ भाव' में हो तो जातक धन-संग्रही तथा शत्रुजयी होता है। यदि शुभ ग्रह हो तो भूमि-लाभ होता है और यदि पापग्रह हो तो जातक धनहीन होता है। यदि धनेश 'सप्तम भाव' में हो तो

जातक की पत्नी सुशीला, सौभाग्यवती, विलासिनी एवं धन-संग्रह करने वाली होती है। यदि पापग्रह हो तो पत्नी वन्ध्या होती है। यदि धनेश '<u>अष्टमभाव</u>' में हो तो जातक को प्रत्येक कार्य में असफलता मिलती है और वह आत्मघाती, परधनापहारी, विलासी तथा भाग्यवादी होता है। यदि धनेश '<u>नवमभाव</u>' में हो और वह शुभग्रह हो तो जातक स्व-वचन-पालक तथा दानी होता है, परन्तु यदि पापग्रह हो तो दरिद्र, भिक्षुक एवं विडम्बनायुक्त होता है। यदि धनेश '<u>दशमभाव</u>' में हो तो जातक राजमान्य एवं राजा से धन पाने वाला होता है। यदि वह शुभग्रह की राशि में स्थित हो तो जातक माता-पिता का भक्त होता है। यदि धनेश '<u>एकादश भाव</u>' में हो तो जातक अनेक लोगों का पालन करने वाला, सुप्रसिद्ध तथा ज्योतिष विद्या द्वारा धनोपार्जन करने वाला होता है। यदि धनेश '<u>द्वादशभाव</u>' में हो तो जातक, पापग्रह होने पर, कृपण और निर्धन तथा शुभग्रह होने पर हानि-लाभ को समान रूप से प्राप्त करने वाला होता है।

<u>सहजेश फल</u> - 'सहजेश' अर्थात् 'तृतीय भाव का स्वामी' यदि 'लग्न' अर्थात् '<u>प्रथमभाव</u>' में बैठा हो तो जातक अपने परिवार में भेद रखने वाला, कुमित्रवान्, सेवा-कर्म करने वाला, बकवादी, लम्पट तथा नकली वस्तुएँ बनाने वाला होता है। यदि सहजेश '<u>द्वितीयभाव</u>' में हो तो जातक, पापग्रह के होने पर निर्धन, अल्पायु, लम्पट तथा बन्धु-विरोधी होता है एवं शुभग्रह हो तो धनवान् होता है। यदि सहजेश '<u>तृतीय भाव</u>' में हो तो जातक देव-गुरु भक्त, बलवान्, राजा से धन पाने वाला तथा अच्छे मित्रों वाला होता है। यदि सहजेश '<u>चतुर्थभाव</u>' में हो तो जातक पिता, बन्धु एवं सहोदरों से सुख पाने वाला, परन्तु माता से शत्रुता रखने वाला एवं पिता के धन का उपभोग करने वाला होता है। यदि सहजेश '<u>पंचम भाव</u>' में हो तो जातक पुत्र एवं बन्धु-बान्धवों से पालित, दीर्घायु तथा परोपकारी होता है। यदि सहजेश '<u>षष्ठभाव</u>' में हो तो जातक यदा-कदा रोग-पीड़ित रहने वाला, नेत्र-रोगी, बन्धु-विरोधी

तथा भूमि का उपार्जन करने वाला होता है। यदि सहजेश '**सप्तम भाव**' में हो तो जातक की पत्नी, यदि शुभग्रह हो तो सौभाग्यवती एवं सुशीला होती है और यदि क्रूर ग्रह हो तो वह पति को छोड़कर देवर के साथ रहती है। यदि सहजेश '**अष्टम भाव**' में हो तो जातक, यदि शुभग्रह हो तो भाई-बहिनों से रहित होता है और यदि पापग्रह हो तो अंग-हीन अथवा केवल ८ वर्ष की आयु पाने वाला होता है। यदि सहजेश '**नवमभाव**' में हो तो जातक, पापग्रह होने पर बन्धु-हीन होता है तथा शुभग्रह होने पर सद्बन्धु युक्त, पुण्यात्मा एवं भाई-बहिनों से प्रेम करने वाला होता है। यदि सहजेश '**दशम भाव**' में हो तो जातक माता-पिता तथा बन्धुओं से स्नेह करने वाला और उनको प्रिय, राजा का स्नेहपात्र तथा भोगी होता है। यदि सहजेश '**एकादश भाव**' में हो तो जातक भाई-बन्धुओं से प्रेम करने वाला, राज-सम्मान पाने वाला तथा सुखी होता है। यदि सहजेश '**द्वादशभाव**' में हो तो जातक मित्र-विरोधी, बन्धु-सन्तापी तथा परदेशवासी होता है।

सुखेश फल- 'सुखेश' अर्थात 'चतुर्थ भाव का स्वामी' यदि 'लग्न' अर्थात '**प्रथमभाव**' में बैठा हो तो जातक अपने पिता से प्रेम रखने वाला, अपने पिता के नाम से प्रसिद्ध, स्वयं भी यशस्वी तथा पितृकुल में श्रेष्ठ होता है। सुखेश '**द्वितीयभाव**' में हो तो जातक, यदि पापग्रह हो तो पिता का विरोधी होता है और यदि शुभ ग्रह हो तो पिता का भक्त होता है एवं स्वोपार्जित-सम्पत्ति से पिता को सुखी रखता है। सुखेश '**तृतीय भाव**' में हो तो जातक पिता-माता से मतभेद रखने वाला, पिता से कलह करने वाला तथा पिता के भाइयों के लिए घातक होता है। सुखेश '**चतुर्थभाव**' में हो तो जातक का पिता राज-सम्मानित होता है तथा जातक स्वयं पिता के लिए लाभप्रद, अत्यन्त धनी, धर्मात्मा, सुखी तथा यशस्वी होता है। यदि सुखेश '**पंचम भाव**' में हो तो जातक पितृ-धन का भागी, सन्ततिवान्, पुत्र-पालक, दीर्घायु तथा क्रिया-प्रसिद्ध होता है। सुखेश '**षष्ठ भाव**' में हो तो जातक माता के धन को नष्ट करता है। यदि शुभ-ग्रह हो तो जातक

धन-संचयी तथा पापग्रह हो तो पितृ-धन-नाशक होता है। यदि सुखेश 'सप्तम भाव' में हो तो जातक की पत्नी श्वसुर की सेवा करती है, परन्तु यदि पापग्रह हो तो श्वसुर को कष्ट देती है। यदि सप्तम भावस्थ सुखेश मंगल अथवा शुक्र हो तो जातक की पत्नी कुलीना होती है। यदि सुखेश 'अष्टम भाव' में हो तो जातक क्रूर, रोगी, कुकर्मी, दरिद्र तथा आत्महत्या-प्रिय होता है। यदि सुखेश 'नवम भाव' में हो तो जातक सब विद्याओं का ज्ञाता, पिता से अलग रहने वाला तथा उसकी अपेक्षा न करने वाला, परन्तु पितृ-धर्म का पालन करने वाला होता है। यदि सुखेश 'दशम भाव' में हो तो जातक का पिता (यदि सुखेश पापग्रह हो तो) उसकी माता को त्याग कर दूसरा विवाह कर लेता है, परन्तु यदि सुखेश शुभग्रह हो तो जातक परोपकारी होता है। यदि सुखेश 'एकादश भाव' में हो तो जातक परिजन-पालक, सुकर्मी, धर्मात्मा, स्वस्थ, दीर्घायु तथा पितृ-भक्त होता है। यदि सुखेश 'द्वादश भाव' में हो तो जातक (यदि शुभग्रह हो तो) का जन्म पिता के परोक्ष में अथवा पिता की मृत्यु के बाद हुआ समझना चाहिए। यदि पापग्रह हो तो जातक को पर-पुरुष से उत्पन्न (जारज-सन्तान) समझना चाहिए।

<u>पुत्रेश फल</u> - पुत्रेश 'अर्थात् 'पञ्चम भाव का स्वामी' यदि लग्न अर्थात् 'प्रथम भाव' में बैठा हो तो जातक थोड़े पुत्रों वाला, शास्त्रज्ञ, सुकर्मी तथा लोक-प्रसिद्ध होता है। यदि पुत्रेश 'द्वितीय भाव' में हो तो जातक, यदि पापग्रह हो तो निर्धन, संगीतज्ञ एवं कष्ट से अर्थोपार्जन कर पेट भरने वाला होता है। यदि शुभग्रह हो तो जातक सुखी रहता है। यदि पुत्रेश 'तृतीयभाव' में हो तो जातक लोक-प्रसिद्ध तथा मधुर-भाषी होता है। उसके पुत्र भी सुयोग्य तथा पिता के परिवार की रक्षा करने वाले होते हैं। यदि पुत्रेश 'चतुर्थ भाव' में हो तो जातक अपने पैतृक-व्यवसाय को करने वाला, पिता द्वारा पालित एवं माता का भक्त होता है। यदि पापग्रह हो तो माता-पिता का विरोधी होता है। यदि पुत्रेश 'पञ्चम भाव' में हो

तो जातक पुत्रवान्, बुद्धिमान्, मानी, लोक-विख्यात तथा समाज में अग्रगण्य होता है। यदि पुत्रेश '<u>षष्ठ भाव</u>' में हो तो जातक, शुभ ग्रह होने पर, अनेक शत्रुओं वाला तथा मानहीन होता है और यदि पापग्रह हो तो रोगी तथा निर्धन भी होता है। यदि पुत्रेश '<u>सप्तम भाव</u>' में हो तो जातक के पुत्र सुन्दर तथा देव-गुरु-भक्त होते हैं और उसकी पत्नी प्रियवादिनी तथा सुशीला होती है। यदि पुत्रेश '<u>अष्टम भाव</u>' में हो तो स्त्री-विहीन होता है। यदि पत्नी जीवित रहे तो वह कटु-भाषिणी एवं अङ्गहीना होती है। उसके भाई तथा पुत्र भी अङ्गहीन एवं क्रोधी स्वभाव के होते हैं। यदि पुत्रेश '<u>नवमभाव</u>' में हो तो जातक सुन्दर, राजमान्य, विद्वान्, बुद्धिमान्, कवि तथा संगीत-नाटक-प्रिय होता है। यदि पुत्रेश '<u>दशम भाव</u>' में हो तो जातक राज-मान्य, राजकर्मचारी, श्रेष्ठ, सत्कर्मकर्त्ता तथा माता को सुख देने वाला होता है। यदि पुत्रेश '<u>एकादश भाव</u>' में हो तो जातक सत्यवादी, पुत्रवान्, शूर-वीर, राज-सम्मानित तथा संगीत आदि कलाओं का जानकार होता है। यदि पुत्रेश द्वादश भाव में हो तो जातक पुत्रवान् तो होता है, परन्तु उसे पुत्र द्वारा सन्ताप मिलता है। यदि पुत्रेश अशुभ-ग्रह हो तो पुत्र-हीन भी होता है।

<u>षष्ठेश फल</u> — 'षष्ठेश' अर्थात् 'छठे भाव का स्वामी' यदि 'लग्न' अर्थात् '<u>प्रथमभाव</u>' में स्थित हो तो जातक वाक्पटु, धन कमाने में स्वच्छन्द प्रकृति का, कुटुम्बियों को कष्ट देने वाला, अनेक लोगों को अपने पक्ष में रखने वाला, शत्रुजयी, बलवान् तथा नीरोग होता है। यदि षष्ठेश '<u>द्वितीय भाव</u>' में हो तो जातक दुष्ट, चतुर, रोगी, मित्र-हीन, धन-संग्रही तथा उत्तम स्थान में रहने वाला होता है। यदि षष्ठेश '<u>तृतीय भाव</u>' में हो तो तो जातक लोगों को कष्टदायक, नीच आचरण वाला एवं झगड़े-टण्टों से निरन्तर कष्ट पाने वाला होता है। यदि षष्ठेश '<u>चतुर्थ भाव</u>' में हो तो जातक अपने पिता से शत्रुता रखता है, उसका पिता रोगी होता है और वह स्वयं चिरकाल तक अपने पुत्र सहित सम्पत्तिशाली भी बना रहता है। यदि षष्ठेश '<u>पञ्चम भाव</u>' में हो

तो जातक की अपने पुत्र से शत्रुता होती है तथा उसी के कारण मृत्यु भी होती है। यदि षष्ठेश शुभग्रह हो तो जातक निर्धन, दुष्ट तथा कपटी होता है। यदि षष्ठेश 'षष्ठभाव' में हो तो जातक नीरोग, लोगों से अकारण शत्रुता रखने वाला, कभी खिन्न न होने वाला, बुरी जगह में रहनेवाला, सुखी तथा कृपण होता है। यदि षष्ठेश 'सप्तमभाव' में हो और वह पापग्रह हो तो जातक की पत्नी विरुद्ध आचरण करने वाली, सन्ताप देने वाली, क्रूर तथा चण्डीरूपा होती है। यदि शुभग्रह हो तो वन्ध्या अथवा नष्टगर्भा होती है। यदि षष्ठेश 'अष्टमभाव' में हो तो जातक को इस प्रकार फल मिलता है - यदि षष्ठेश 'शनि' हो तो जातक की मृत्यु संग्रहणी रोग से होती है। यदि 'मंगल' हो तो सर्पादि विषधर जीव से होती है। यदि 'बुध' हो तो विष से, 'चन्द्रमा' हो तो आकस्मिक रूप से एवं 'सूर्य' हो तो सिंह-व्याघ्रादि से मृत्यु होती है। यदि 'गुरु' हो तो जातक दुष्ट-बुद्धि होता है। यदि 'शुक्र' हो तो नेत्र-दोष युक्त होता है। यदि षष्ठेश 'नवम भाव' में हो तो जातक भिक्षुक होता है। यदि वह पापग्रह हो तो लँगड़ा, बन्धु-विरोधी एवं शास्त्र को न मानने वाला होता है। यदि षष्ठेश 'दशम भाव' में हो तो जातक धर्म एवं सन्तति का पालन करनेवाला, परन्तु मातृ-दोष युक्त होता है। यदि षष्ठेश पापग्रह हो तो जातक पशुओं से लाभ पाने वाला, दुष्ट-स्वभाव का एवं अपनी माता का शत्रु होता है। यदि षष्ठेश 'एकादश भाव' में हो तो जातक शत्रु तथा चोरों को नष्ट करने वाला होता है। यदि षष्ठेश पापग्रह हो तो उसकी मृत्यु शत्रु द्वारा होती है। यदि षष्ठेश 'द्वादश भाव' में हो तो जातक के धन की हानि होती है, परन्तु यात्रा से धन-लाभ भी होता है। ऐसा व्यक्ति भाग्यवादी भी होता है।

जायेश फल - 'जायेश' अर्थात् सप्तम भाव का स्वामी यदि लग्न अर्थात् 'प्रथम भाव' में बैठा हो तो जातक अपनी पत्नी से विशेष प्रेम रखने वाला तथा पर-स्त्रियों से भी कुछ प्रेम करने वाला, भोगी तथा सुन्दर स्वरूपवान् होता है। यदि जायेश 'द्वितीयभाव' में हो तो जातक की पत्नी

दुष्ट-स्वभाव की एवं पुत्र की इच्छा रखने वाली होती है। उसे स्त्री द्वारा धन-लाभ भी होता है, साथ ही वह स्त्री-सङ्ग से रहित भी होता है। यदि जायेश '<u>तृतीय भाव</u>' में हो और वह शुभग्रह हो तो जातक आत्मबली एवं बन्धुजनों से प्रेम रखने वाला होता है। यदि पापग्रह हो तो उसकी स्त्री सुन्दरी होती है और वह देवर अथवा पति के मित्रों से सम्बन्ध रखती है। यदि जायेश '<u>चतुर्थ भाव</u>' में हो तो जातक चञ्चल स्वभाववाला तथा अपने पिता के शत्रुओं से प्रेम रखने वाला होता है। यदि जायेश '<u>पञ्चम भाव</u>' में हो तो जातक सुख, सौभाग्य एवं पुत्रवान्, साहसी तथा दुष्ट-बुद्धि होता है। उसकी पत्नी का पालन उसके पुत्र करते हैं। यदि जायेश '<u>षष्ठ भाव</u>' में हो तो जातक पत्नी-विरोधी, रुग्ण-पत्नी वाला अथवा स्त्री-रहित होता है। यदि जायेश पापग्रह हो तो उसकी मृत्यु भी हो जाती है। यदि जायेश '<u>सप्तम भाव</u>' में हो तो जातक दीर्घायु, सुशील, तेजस्वी तथा स्त्री-प्रेमी होता है। यदि जायेश '<u>अष्टम भाव</u>' में हो तो जातक का विवाह नहीं होता। वह दुःखी रहने वाला, चिन्तित तथा वेश्यागामी होता है। यदि जायेश '<u>नवमभाव</u>' में हो तो जातक सुशील एवं तेजस्वी होता है तथा उसकी पत्नी भी सुशीला होती है। परन्तु नवमस्थ जायेश यदि पापग्रह हो तो जातक कुरूप तथा नपुंसक होता है। यदि जायेश '<u>दशमभाव</u>' में हो तो जातक राजदोषी, लम्पट तथा कामी होता है। यदि जायेश पापग्रह हो तो जातक दुःखी एवं शत्रु से पराजित होता है। यदि जायेश '<u>एकादश भाव</u>' में हो तो जातक की पत्नी रूपवती, सुशीला, स्नेहमयी एवं पतिव्रता होती है। यदि जायेश '<u>द्वादश भाव</u>' में हो तो जातक घर तथा बन्धु-बान्धवों के कामों में व्यस्त रहता है तथा उसकी पत्नी नवीना, चंचला तथा दुष्ट लोगों से प्रेम-सम्बन्ध रखने वाली होती है तथा अपने पति को छोड़कर दूसरे पुरुष के साथ चली जाती है।

<u>अष्टमेश फल</u> — यदि 'अष्टमेश' अर्थात् 'आठवें' भाव का स्वामी 'लग्न' अर्थात् '<u>प्रथम</u>

भाव में हो तो अनेक विघ्न-बाधाओं से युक्त, विवादी, चोर, दीर्घरोगी, परन्तु राजकृपा से धन-लाभ पाने वाला होता है। यदि अष्टमेश 'द्वितीय भाव' में हो तो जातक शुभ फल प्राप्त करता है, परन्तु उसकी मृत्यु राजा के द्वारा होती है। यदि द्वितीय भावस्थ अष्टमेश पापग्रह हो तो जातक शत्रुयुक्त, चोर तथा अल्पायु होता है। यदि अष्टमेश 'तृतीय भाव' में हो तो जातक बन्धु-विरोधी, कटुभाषी, सहोदर-हीन, चंचल, अंग-हीन तथा मित्र-विरोधी होता है। यदि अष्टमेश 'चतुर्थ भाव' में हो तो जातक पिता से कलह एवं शत्रुता रखने वाला व उसका धन छीन लेने वाला होता है, साथ ही उसका पिता रोगी भी बना रहता है। यदि अष्टमेश 'पंचम भाव' में हो तो अशुभ ग्रह होने पर जातक पुत्रहीन होता है और शुभग्रह होने पर पुत्र जीवित नहीं रहता, यदि जीवित रहे तो वह धूर्त होता है। यदि अष्टमेश 'षष्ठ भाव' में हो और वह 'सूर्य' हो तो जातक राजा का विरोधी; 'गुरु' हो तो रोगी; 'शुक्र' हो तो नेत्र-रोगी; 'चन्द्रमा' हो तो रोगी; 'मंगल' हो तो क्रोधी; 'बुध' हो तो कायर एवं मुख-रोगी एवं 'शनि' हो तो कष्ट पाने वाला होता है। यदि अष्टमेश पर चन्द्रमा तथा बुध की दृष्टि हो तो विशेष अनिष्ट फल होता है। यदि अष्टमेश 'सप्तम भाव' में हो तो जातक उदर-रोगी, दुष्ट-स्वभाव का तथा दुःशीला-पत्नी वाला होता है। यदि अष्टमेश पापग्रह हो तो जातक की मृत्यु उसकी स्त्री के द्वारा ही होती है। यदि अष्टमेश 'अष्टम भाव' में हो तो जातक नीरोग, उद्योगी, धूर्त एवं धूर्तों के घर जन्म लेने वाला होता है। यदि अष्टमेश 'नवम भाव' में हो तो जातक पापी, जीवघाती, अज्ञ तथा सङ्गहीन, बन्धु-हीन, प्रेम तथा दयाहीन एवं शत्रुओं से मान्य होता है। यदि अष्टमेश 'दशम भाव' में हो और वह शुभग्रह हो तो जातक आलसी, क्रूर, राजकर्मचारी तथा नीच कर्म करने वाला होता है। यदि पापग्रह हो तो उसकी माता या पुत्र में से किसी एक की मृत्यु हो जाती है। यदि अष्टमेश 'एकादश भाव' में हो और वह सौम्य ग्रह हो तो जातक बाल्यावस्था में दुःखी तथा

बाद में सुखी होता है। यदि शुभ ग्रह हो तो दीर्घायु एवं पापग्रह हो तो अल्पायु होता है। यदि अष्टमेश 'द्वादश भाव' में हो तो जातक स्वेच्छाचारी, शठ, निर्दय, कटुभाषी तथा तस्कर होता है, मृत्यु के बाद उसके शरीर की दुर्गति भी होती है।

भाग्येश फल - 'भाग्येश' अर्थात 'नवम भाव का स्वामी' यदि लग्न' अर्थात 'नवमभाव' में हो तो जातक गुरु-देव-भक्त, राजकर्मचारी, बुद्धिमान, महाबली, अल्पाहारी तथा कृपण होता है। यदि भाग्येश 'द्वितीय भाव' में हो तो जातक मुख-रोगी, पशुओं से पीड़ा पाने वाला, धर्मात्मा, सुशील, पुण्यवान, प्रियवत्सल तथा यशस्वी होता है। यदि भाग्येश 'तृतीय भाव' में हो तो जातक श्रेष्ठ पत्नी एवं बन्धुओं वाला, उनकी रक्षा करने वाला और यदि जीवित रहे तो बन्धु-बान्धवों के साथ रहनेवाला होता है। यदि भाग्येश 'चतुर्थ भाव' में हो तो जातक सुन्दर, पुण्यात्मा पुत्रों वाला एवं देव-गुरु-भक्त होता है। यदि भाग्येश 'पंचम भाव' में हो तो जातक श्रेष्ठ पुत्रों वाला तथा यशस्वी होता है। यदि भाग्येश 'षष्ठ भाव' में हो तो जातक काम को अधूरा छोड़ देने वाला, दर्शन-शास्त्र का निन्दक एवं शत्रुओं के समक्ष झुक जाने वाला होता है। यदि भाग्येश 'सप्तमभाव' में हो तो जातक की पत्नी सुन्दरी, सुशीला, पुण्यवती, सत्यवादिनी, पतिव्रता एवं सम्पत्तिशालिनी होती है। यदि भाग्येश 'अष्टमभाव' में हो तो जातक दुष्ट, हिंसक स्वभाव का, गृह तथा बन्धुओं से रहित एवं पुण्यहीन होता है। यदि नवमेश पाप-ग्रह हो तो नपुंसक होता है। यदि भाग्येश 'नवम भाव' में हो तो जातक बन्धु-प्रेमी, दानी, देव-गुरु, स्वजन एवं स्त्री से प्रेम रखने वाला होता है. यदि भाग्येश 'दशम भाव' में हो तो जातक माता-पिता का भक्त, धर्मात्मा, शूर-वीर एवं राजकर्मचारी होता है। यदि भाग्येश 'एकादश भाव' में हो तो जातक दीर्घायु, धर्मात्मा, प्रसिद्ध, श्रेष्ठ पुत्रवाला, राजा से धन पानेवाला तथा लोक-स्नेही होता है

यदि भाग्येश 'द्वादश भाव' में हो तो जातक सुन्दर तथा देशान्तर में सम्मान पाने वाला होता है। यदि द्वादशेश शुभग्रह हो तो जातक विद्वान् और पापग्रह हो तो धूर्त होता है।

राज्येश फल – यदि 'राज्येश' अर्थात् 'दशमभाव का स्वामी' 'लग्न' अर्थात् 'प्रथम भाव' में हो तो जातक अपनी माता का शत्रु तथा पिता का भक्त होता है। उसकी माता पिता की मृत्यु के बाद पर-पुरुष के साथ रहने लगती है। यदि राज्येश 'द्वितीय भाव' में हो तो जातक माता द्वारा पालित होने पर भी मातृ-द्वेषी, अल्पाहारी तथा वेदोक्त सुकर्मों का ज्ञाता होते हुए भी कृपण होता है। यदि राज्येश 'तृतीय भाव' में हो तो जातक माता-पिता, स्वजन आदि का विरोधी, निरुद्योगी, सेवा-कार्य करने वाला तथा मामा द्वारा पालित होता है। यदि राज्येश 'चतुर्थ भाव' में हो तो जातक माता-पिता का भक्त, राजमान्य, सुखी तथा सदाचारी होता है। यदि राज्येश 'पंचम भाव' में हो तो जातक राजा से धन पाने वाला, सुकर्मों से उदासीन, संगीत-प्रेमी तथा अपनी माता द्वारा पालित होता है। यदि राज्येश 'षष्ठ भाव' में हो तो जातक कलह-प्रेमी, शत्रुओं से भीत, दयाहीन, कृपण तथा कलह-प्रेमी होता है। यदि राज्येश 'सप्तम भाव' में हो तो जातक की पत्नी सुन्दरी, सुशीला, शुभ कर्म करने वाली, पुत्रवती तथा पति-सेवा-परायणा होती है। यदि राज्येश 'अष्टम भाव' में हो तो जातक मिथ्यावादी, दुष्ट, शूर-वीर, धूर्त, मिथ्यावादी, माता को कष्ट देने वाला तथा अल्पायु होता है। यदि राज्येश 'नवम भाव' में हो तो जातक सद्बन्धु एवं सम्मानवान् तथा सुशील होता है। उसकी माता भी सत्यवादिनी, पुण्यात्मा एवं सुशीला होती है। यदि राज्येश 'दशम भाव' में हो तो जातक माता को सुख देने वाला, माता से सुख पाने वाला तथा अत्यन्त चतुर होता है। यदि राज्येश 'एकादश भाव' में हो तो जातक मानी तथा धनी होता है। उसकी माता भी सुखी एवं रक्षा करने वाली होती है। यदि राज्येश 'द्वादश भाव' मे हो तो जातक राज्यकर्मचारी, सुकर्मी तथा बाल्यावस्था से ही माता द्वारा परित्यक्त होता है। यदि दशमेश पापग्रह हो तो परदेशवासी होता है।

लाभेश फल – 'लाभेश' अर्थात 'एकादशभाव का स्वामी' यदि 'लग्न' अर्थात 'प्रथमभाव' मे बैठा हो तो जातक शूर-वीर, सुन्दर, लोक-प्रिय, दानी, परन्तु अल्पायु होता है। उसकी मृत्यु तृष्णा-दोष से होती है। यदि लाभेश 'द्वितीयभाव' में हो तो जातक स्वल्पाहारी एवं अल्पायु होता है। यदि लाभेश पापग्रह हो तो अष्ट-कपाली एवं रोगी होता है। यदि लाभेश 'तृतीय भाव' में हो तो जातक बन्धु तथा स्त्री का पालक, श्रेष्ठ भाइयों वाला एवं शत्रु-कुल-नाशक होता है। यदि लाभेश 'चतुर्थ भाव' में हो तो जातक पितृ-भक्त, दीर्घायु, स्व-धर्म-निरत, एक समय में एक ही काम करने वाला तथा लाभ पाने वाला होता है। यदि लाभेश 'पंचमभाव' में हो तो जातक पिता तुल्य रूप-गुण-सम्पन्न, पुत्र एवं पिता से प्रेम रखने वाला तथा अल्पायु होता है। यदि लाभेश 'षष्ठ भाव' में हो तो जातक दीर्घ-रोगी एवं शत्रु-सम्पन्न होता है। यदि लाभेश पापग्रह हो तो परदेश में किसी तस्कर के द्वारा उसकी मृत्यु होती है। यदि लाभेश 'सप्तम भाव' में हो तो जातक तेजस्वी, दीर्घायु, सम्पत्तिशाली, सुशील, उच्च पदाधिकारी एवं एक पत्नी वाला होता है। यदि लाभेश 'अष्टम भाव' में हो तो जातक अल्पायु एवं रोगी होता है। यदि लाभेश पापग्रह हो तो जीवित रहते हुए भी मृत-तुल्य दुःखी बना रहता है। यदि लाभेश 'नवमभाव' में हो तो जातक देव-गुरु भक्त, धर्मात्मा, शास्त्रज्ञ एवं अनेक विषयों का जानकार होता है। यदि लाभेश पापग्रह हो तो व्रत-नियम एवं बन्धु-विरोधी होता है। यदि लाभेश 'दशम भाव' में हो तो जातक मातृ-भक्त, परन्तु पिता से द्वेष रखने वाला, धनी तथा दीर्घजीवी होता है। यदि लाभेश 'एकादश भाव' में हो तो जातक दीर्घायु, अधिक पुत्र-पौत्रवान्, सुकर्मी, सुन्दर, सुशील, लोक-प्रसिद्ध तथा प्रधान पुरुष होता है। यदि लाभेश 'द्वादशभाव' में हो तो जातक रोगी, उत्पात-निरत, मानी, दानी, स्थिर-चित्त तथा सदा सुखी रहनेवाला होता है।

व्ययेश फल – यदि 'व्ययेश' अर्थात 'द्वादशभाव का स्वामी' 'लग्न' अर्थात 'प्रथम भाव' में बैठा हो तो जातक सुन्दर, अविवाहित अथवा नपुंसक नीचों के संग के कारण दोष पाने वाला, परदेशवासी तथा

प्रियवादी होता है। यदि व्ययेश 'द्वितीय भाव' में हो तो जातक कृपण और कटुभाषी होता है। यदि व्ययेश शुभग्रह हो तो राजा, चोर अथवा अग्नि द्वारा उसकी मृत्यु होती है। यदि व्ययेश 'तृतीय भाव' में हो तो जातक बन्धु-विहीन होता है। यदि तृतीयभावस्थ व्ययेश शुभ ग्रह हो तो जातक धनी, थोड़े भाइयों वाला तथा कुटुम्बियों से दूर रहने वाला होता है। यदि व्ययेश 'चतुर्थ भाव' में हो तो जातक सुकर्मी, परन्तु सदा दुःखी रहने वाला, रोगी, कृपण एवं पुत्र के द्वारा मृत्यु पाने वाला होता है। यदि व्ययेश 'पञ्चम भाव' में हो तो जातक, पापग्रह तो सन्तान-हीन एवं शुभग्रह हो तो पुत्रवान्, पिता के धन का उपभोग करने वाला, परन्तु सामर्थ्यहीन होता है। यदि व्ययेश 'षष्ठ भाव' मे हो तो जातक, पापग्रह होने पर, कृपण, नेत्र-रोगी अथवा नेत्र-हीन अथवा बाल्यावस्था में ही मृत्यु पाने वाला होता है। यदि शुभग्रह हो तो दुःखी एवं रोगी रहता है। यदि व्ययेश 'सप्तम भाव' में हो तो जातक दुष्ट, दुश्चरित्र एवं वाक्पटु होता है। यदि व्ययेश पापग्रह हो तो जातक की मृत्यु अपनी पत्नी के द्वारा और यदि पापग्रह हो तो वेश्या के द्वारा होती है। यदि व्ययेश 'अष्टम भाव' में हो तो जातक पापग्रह के होने से लोक द्रोही, अष्ट-कपाली तथा कार्य-साधन-हीन होता है एवं शुभग्रह के होने से धन-संग्रही होता है। यदि व्ययेश नवमभाव में हो तो जातक तीर्थाटन करने वाला होता है। यदि व्ययेश पाप ग्रह हो तो धन को व्यर्थ खर्च करता रहता है। यदि व्ययेश 'दशम भाव' में हो तो जातक पर-स्त्री से विमुख, पुत्रवान्, पवित्र-हृदय एवं धन-संग्रही होता है, परन्तु उसकी माता कटु वादिनी होती है। यदि व्ययेश 'एकादश भाव' में हो तो जातक उत्तम स्थान में रहने वाला, चिरजीवी, सम्पत्तिशाली, उदार, दानी, सत्यवादी तथा लोक-प्रसिद्ध होता है। यदि व्ययेश द्वादशभाव में हो तो जातक ग्रामवास से सुखी, पशुओं का संग्रह करने वाला, कृपण तथा सम्पत्तिशाली होता है, परन्तु उसके जीवित रहने की आशा कम ही होती है। यदि वह जीवित रह जाय तो ग्राम का स्वामी, लोक-प्रसिद्ध एवं सम्मानित होता है।

<u>चन्द्र कुण्डली भाव फलम्</u>- चन्द्र कुण्डली में, चन्द्रमा से विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का फल निम्नानुसार समझना चाहिए-

<u>सूर्य फल</u> - चन्द्रमा के साथ सूर्य हो अर्थात् जन्म काल में चन्द्रमा और सूर्य '<u>एक ही भाव</u>' में स्थित हों तो जातक सुखभोगी, परदेशवासी एवं कलह-प्रिय होता है। यदि सूर्य चन्द्रमा से '<u>द्वितीय भाव</u>' में हो तो जातक यशस्वी, राजमान्य तथा अनेक सेवकों वाला होता है। यदि सूर्य चन्द्रमा से '<u>तृतीयभाव</u>' में हो तो जातक राजतुल्य, स्वर्ण-संग्रही तथा पवित्र-हृदय होता है। यदि सूर्य चन्द्रमा से '<u>चतुर्थ भाव</u>' में हो तो जातक माता-पिता का भक्त अथवा उनका विनाश होता है। यदि सूर्य चन्द्रमा से '<u>पञ्चम भाव</u>' में हो तो जातक अनेक पुत्रों वाला तथा कन्याओं के कारण दुःखी रहता है। यदि सूर्य चन्द्रमा से '<u>षष्ठभाव</u>' में हो तो जातक शत्रुजयी, वीर तथा क्षत्रियोचित-कर्म करने वाला होता है। यदि सूर्य चन्द्रमा से '<u>सप्तम भाव</u>' में हो तो जातक की पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है और वह स्वयं भी शीलवान् तथा राजमान्य होता है। यदि सूर्य चन्द्रमा से '<u>अष्टम भाव</u>' में हो तो जातक अनेक रोगों से पीड़ित तथा सदैव क्लेश युक्त रहता है। यदि सूर्य चन्द्रमा से '<u>नवमभाव</u>' में हो तो जातक धर्मात्मा, सत्यवादी, परन्तु बन्धुओं को क्लेश देने वाला होता है। यदि सूर्य चन्द्रमा से '<u>दशम भाव</u>' में हो तो जातक के द्वार पर धनी व्यापारी सदैव उपस्थित बने रहते हैं। यदि सूर्य चन्द्रमा से '<u>एकादशभाव</u>' में हो तो जातक अनेक विषयों का ज्ञाता, कुलनायक, सुप्रसिद्ध तथा राज-सम्मान पाने वाला होता है। यदि सूर्य चन्द्रमा से '<u>द्वादश भाव</u>' में हो तो जातक क्षीण-दृष्टि वाला अथवा एकाक्षी होता है।

<u>भौम फल</u> - यदि चन्द्रमा के साथ मङ्गल <u>एक ही भाव</u> में हो तो जातक रक्तवर्ण, लाल नेत्रों वाला तथा रक्तार्श-रोगी होता है। यदि मङ्गल चन्द्रमा से '<u>द्वितीय भाव</u>' में हो तो जातक भू-स्वामी, कृषि-कर्म करने वाला होता है। विशेषतः उसके पुत्र कृषि-कर्म करते हैं। यदि मङ्गल चन्द्रमा से '<u>तृतीयभाव</u>'

भृ॰ सं॰ ८३

में हो तो जातक के चार भाई होते हैं और वह सुखी जीवन बिताता है। यदि मङ्गल चन्द्रमा से 'चतुर्थभाव' में हो तो जातक सुख-हीन एवं दारिद्र होता है तथा उसकी पत्नी की मृत्यु उसके सामने ही हो जाती है। यदि मङ्गल चन्द्रमा से 'पञ्चम भाव' में हो तो जातक पुत्र-हीन होता है। यदि किसी स्त्री की जन्म कुण्डली में ऐसा योग हो तो इसे निश्चित समझना चाहिए। यदि चन्द्रमा से 'षष्ठ भाव' में मङ्गल हो तो जातक रक्त-रोग से पीड़ित तथा अधर्म से विमुख होता है। यदि चन्द्रमा से 'सप्तम भाव' में मङ्गल हो तो जातक की पत्नी कटुभाषिणी तथा कुशीला होती है। यदि चन्द्रमा से 'अष्टम भाव' में मङ्गल हो तो जातक जीव-हिंसक, महापापी तथा सत्य एवं शील से रहित होता है। यदि चन्द्रमा से 'नवम भाव' में मङ्गल हो तो जातक सम्पत्तिशाली होता है तथा वृद्धावस्था में उसे अपने पुत्रों द्वारा सुख प्राप्त होता है। यदि चन्द्रमा से 'दशम भाव' में मङ्गल हो तो जातक को वाहनादि का सुख प्राप्त होता है। यदि चन्द्रमा से 'एकादश भाव' में मङ्गल हो तो जातक राजसम्मान पाने वाला, यशस्वी तथा स्वरूपवान् होता है। यदि चन्द्रमा से 'द्वादश भाव' में मङ्गल हो तो जातक सबको पीड़ादायक तथा माता को दुःखी रखने वाला होता है।

बुध फल- यदि चन्द्रमा के साथ बुध एक ही भाव में हो तो जातक सुन्दर, सुखी, मिथ्यावादी परदेशी तथा अपने कुटुम्बियों को प्रिय होता है। यदि चन्द्रमा से 'द्वितीय भाव' में बुध हो तो जातक धन-धान्यादि से युक्त, गृह तथा बन्धुजनों का लाभ पाने वाला होता है। उसकी मृत्यु शीत-रोग से होती है। यदि चन्द्रमा से 'तृतीय भाव' में बुध हो तो जातक महापुरुषों की संगति करने वाला एवं धन-सम्पत्ति तथा राज्य का लाभ पाने वाला होता है। यदि चन्द्रमा से 'चतुर्थभाव' में बुध हो तो जातक सदा सुखी रहता है और उसे मातृपक्ष से विशेष लाभ होता है। यदि चन्द्रमा से 'पञ्चम भाव' में बुध हो तो जातक रूपवान्, महाकामी, विलक्षण बुद्धिमान् परन्तु कुवाक्य बोलने वाला होता है। यदि चन्द्रमा से 'षष्ठ भाव' में बुध हो तो जातक बड़े नेत्र तथा अधिक रोमों वाला, कृपण, कातर तथा विवादों से डरने वाला होता है। यदि चन्द्रमा से 'सप्तम भाव' में बुध हो तो जातक

कु॰ ६॰

स्त्री के वश में रहने वाला, धनी, कृपण तथा दीर्घायु होता है। यदि चन्द्रमा से 'अष्टम भाव' में बुध हो तो जातक शत्रुओं के लिए भयंकर, विख्यात राजा तथा शीत से कष्ट पाने वाला होता है। यदि चन्द्रमा से 'नवमभाव' में बुध हो तो जातक स्व-धर्म-विरोधी, पराया-धर्म अपनाने वाला, दारुण स्वभाव का तथा लोक-विरोधी होता है। यदि चन्द्रमा से 'दशम भाव' में बुध हो तो जातक राजयोगी होता है। यदि चन्द्रमा कर्कस्थ हो तो स्वकुल में श्रेष्ठ होता है। यदि चन्द्रमा से 'एकादश भाव' में बुध हो तो जातक का भाग्योदय विवाहोपरान्त होता है तथा उसे प्रत्येक कार्य में लाभ होता है। यदि चन्द्रमा से 'द्वादश भाव' में बुध हो तो जातक कृपण होता है तथा उसके पुत्रों को सदैव पराजय प्राप्त होती है।

<u>गुरु फल</u> - यदि चन्द्रमा और गुरु (बृहस्पति) 'एक ही भाव' में बैठे हों तो जातक रोग-हीन, वीर, दीर्घजीवी तथा धन-सम्पन्न होता है। यदि चन्द्रमा से 'द्वितीय भाव' में गुरु हो तो जातक शतायु, प्रतापी, धर्मात्मा, निष्पाप, उग्र स्वभाव का तथा राजमान्य होता है। यदि चन्द्रमा से 'तृतीय भाव' में गुरु हो तो जातक जनप्रिय होता है तथा उसकी सत्रह वर्ष की आयु से पिता के घर में धन की वृद्धि होती है। यदि चन्द्रमा से 'चतुर्थ भाव' में गुरु हो तो जातक मातृ-पक्ष के लिए कष्टकारक, पराये घरों का काम करने वाला, सुखहीन होता है। यदि चन्द्रमा से 'पञ्चम भाव' में गुरु हो तो जातक पुत्रवान, तेजस्वी, उग्र स्वभाव का, महाधनी तथा दूरदृष्टि सम्पन्न होता है। यदि चन्द्रमा से 'षष्ठ भाव' में गुरु हो तो जातक दीर्घायु, उदासीन, गृहहीन तथा भिक्षावृत्ति आदि से जीवन-यापन करने वाला होता है। यदि चन्द्रमा से 'सप्तम भाव' में गुरु हो तो जातक स्थूल-शरीर, मितव्ययी, दीर्घजीवी, नपुंसक, पाण्डुरोगी तथा अपने घर का मुखिया होता है। यदि चन्द्रमा से 'अष्टम भाव' में गुरु हो तो जातक श्रेष्ठ पिता की सन्तति होते हुए भी महापापी होता है, सदैव रोगी बना रहता है तथा स्वप्न में भी सुखी नहीं रह पाता। यदि चन्द्रमा से 'नवमभाव'

में गुरु हो तो जातक धनी, धर्मात्मा, देव-गुरु-सेवक तथा सुमार्गगामी होता है। यदि चन्द्रमा से 'दशम भाव' में गुरु हो तो जातक स्त्री-पुत्रादि को त्याग कर तपस्वी हो जाता है। यदि चन्द्रमा से 'एकादश भाव' में गुरु हो तो जातक वाहनादि-सुख-सम्पन्न एवं राजतुल्य ऐश्वर्यशाली होता है। यदि चन्द्रमा से 'द्वादश भाव' में गुरु हो तो जातक स्व-कुटुम्ब विरोधी एवं शत्रुओं को सुख देने वाला होता है।

शुक्र फल — यदि चन्द्रमा और शुक्र 'एक ही भाव' में बैठे हों तो जातक की मृत्यु जल, हिंसा अथवा सन्निपात से होती है। यदि चन्द्रमा से 'द्वितीय भाव' में शुक्र हो तो जातक धर्मात्मा, बुद्धिमान्, महाधनी एवं राजतुल्य ऐश्वर्यशाली होता है। यदि चन्द्रमा से 'तृतीय भाव' में शुक्र हो तो जातक धर्मात्मा, बुद्धिमान् एवं म्लेच्छ जातियों से धन प्राप्त करने वाला होता है। यदि चन्द्रमा से 'चतुर्थ भाव' में शुक्र हो तो जातक दुर्बल-शरीर, कफ-प्रकृति एवं वृद्धावस्था में धन-सम्पन्न होता है। यदि चन्द्रमा से 'पञ्चम भाव' में शुक्र हो तो जातक अनेक कन्याओं वाला तथा धनी होते हुए भी अपयशी होता है। यदि चन्द्रमा से 'षष्ठ भाव' में शुक्र हो तो जातक अपकारी, युद्ध में पराजित तथा निन्द्य-कर्मों में धन खर्च करने वाला होता है। यदि चन्द्रमा से 'सप्तम भाव' में शुक्र हो तो जातक महान् योद्धा, महाधनी, दानी, भोगी तथा लोक-प्रसिद्ध होता है। यदि चन्द्रमा से 'अष्टम भाव' में शुक्र हो तो जातक पुरुषार्थ-हीन एवं शोकालु-स्वभाव का होता है। यदि चन्द्रमा से 'नवम भाव' में शुक्र हो तो जातक अनेक भाई-बहिन तथा मित्रों वाला होता है। यदि चन्द्रमा से 'दशम भाव' में शुक्र हो तो जातक दीर्घायु एवं माता-पिता से सुख पाने वाला होता है। यदि चन्द्रमा से 'एकादश भाव' में शुक्र हो तो जातक दीर्घायु एवं शत्रु तथा रोग से रहित होता है। यदि चन्द्रमा से 'द्वादश भाव' में शुक्र हो तो जातक ज्ञानहीन तथा पर-स्त्री-गामी होता है।

<u>शनि फल</u> - यदि चन्द्रमा और शनि '<u>एक ही भाव</u>' में बैठे हों तो जातक रोगी, धनहीन तथा बन्धु-हीन होता है। यदि चन्द्रमा से '<u>द्वितीय भाव</u>' में शनि हो तो जातक की माता को कष्ट होता है और वह शैशवावस्था में माता का दूध पीने की बजाय बकरी का दूध पीकर जीवित रहता है। यदि चन्द्रमा से <u>तृतीयभाव</u> में शनि हो तो जातक की अनेक कन्याएँ होती हैं और वे मर भी जाती हैं। यदि चन्द्रमा से '<u>चतुर्थ भाव</u>' में शनि हो तो जातक शत्रु-हन्ता एवं बड़ा पराक्रमी होता है। यदि चन्द्रमा से '<u>पञ्चम भाव</u>' में शनि हो तो जातक की स्त्री प्रियवादिनी तथा श्यामवर्णा होती है। यदि चन्द्रमा से '<u>षष्ठ भाव</u>' में शनि हो तो जातक अल्पायु, कष्टी तथा महाक्लेशी होता है। यदि चन्द्रमा से '<u>सप्तम भाव</u>' में शनि हो तो जातक महादानी, धर्मात्मा तथा अनेक स्त्रियों के साथ रमण अथवा विवाह करने वाला होता है। यदि चन्द्रमा से '<u>अष्टम भाव</u>' में शनि हो तो जातक पिता को कष्ट देता है तथा बहुत दान करने पर ही उसका कल्याण होता है। यदि चन्द्रमा से '<u>नवमभाव</u>' में शनि हो तो जातक के जीवन में जब भी शनि की अन्तर्दशा आयेगी, तब-तब उसकी धर्म-हानि होती रहेगी। यदि चन्द्रमा से '<u>दशम भाव</u>' में शनि हो तो जातक राजतुल्य धनी होते हुए भी कृपण स्वभाव का होता है। यदि चन्द्रमा से '<u>एकादश भाव</u>' में शनि हो तो जातक दीर्घायु, सुखी तथा पशु-धन से युक्त होता है। यदि चन्द्रमा से '<u>द्वादश भाव</u>' में शनि हो तो जातक धनहीन, पापी तथा भिक्षुक होता है।

<u>राहु फल</u> - यदि चन्द्रमा और राहु '<u>एक ही भाव</u>' में बैठे हों अथवा चन्द्रमा से '<u>दशम</u>' अथवा '<u>नवम भाव</u>' में राहु हो तो जातक बाल्यावस्था में सुखी तथा वृद्धावस्था में महाधनी होता है। यदि चन्द्रमा से '<u>तृतीय</u>', '<u>षष्ठ</u>' अथवा '<u>एकादश भाव</u>' में राहु हो तो जातक राजा अथवा राजमन्त्री एवं धन-धान्य से पूर्ण होता है। यदि चन्द्रमा से '<u>चतुर्थ</u>' अथवा '<u>सप्तम भाव</u>' में राहु हो तो जातक के माता-पिता एवं पत्नी को कष्ट होता है। यदि चन्द्रमा से '<u>द्वितीय</u>', '<u>अष्टम</u>' अथवा '<u>द्वादश भाव</u>' में राहु हो तो जातक

धन-धान्य से सम्पन्न होने पर भी कभी सुखी नहीं रह पाता। यदि चन्द्रमा से 'पञ्चम भाव' में राहु हो तो जातक की मृत्यु पानी में डूब कर होने की संभावना रहती है तथा उसके जीवन में पग-पग पर विपत्तियाँ आती रहती हैं।

<u>केतु फल</u> - जैमिनि आदि के मतानुसार केतु का फल भी राहु के समान ही होता है।

<u>चन्द्र निर्याण फलम्</u>- अब यवनाचार्य के मतानुसार चन्द्र निर्याण का फल कहा जाता है।

<u>मेष राशिस्थ चन्द्र निर्याण फल</u>- यदि चन्द्रमा 'मेष' राशि में हो तो जातक पुत्रवान्, धनी, उग्रस्वभावी, कार्य-कुशल, राज-प्रिय, देव-ब्राह्मण-भक्त, गुणी, परोपकारी, शाकादि का स्वल्प आहार करनेवाला एवं ताम्रवर्ण बड़े-बड़े नेत्रों वाला होता है। ऐसा जातक दुर्बल घुटनों, खराब नख तथा सिर पर व्रण वाला, चपल स्वभाव, दो स्त्रियों वाला, प्रमादी, कामी, शूर तथा सेवक पर स्नेह रखने वाला होता है। वह युद्ध से डरता है। उसे १६ तथा १८ वें वर्ष में विशूचिका, तीसरे एवं १२ वें वर्ष में जल से भय होता है। २५ वें वर्ष में सन्तान-लाभ होता है तथा इसी वर्ष उसे रतौंधी की बीमारी भी हो सकती है। ३२ वें वर्ष में शस्त्राघात का भय भी उपस्थित होता है। ऐसा जातक शीघ्र गामी, कृशाङ्ग, मानी, शुभ लक्षण सम्पन्न, अपने कार्यों की स्वयं प्रशंसा करने वाला एवं विदेश-यात्राएं करने वाला होता है। उसमें वायु की अधिकता होती है। यदि चन्द्रमा शुभग्रह से दृष्ट हो तो ६० वर्ष की आयु प्राप्त करता है। कार्तिक कृष्णा नवमी, बुधवार को मध्यरात्रि में मस्तक-रोग से उसकी मृत्यु होना संभव है।

<u>वृष राशिस्थ चन्द्र निर्याण फल</u> - यदि चन्द्रमा 'वृष' राशि में हो तो जातक अल्प तेजस्वी, स्तब्ध, कर्म-शुद्धि-रहित, स्त्री-वशी, दीर्घायु, अल्पकेशी, माता-पिता-गुरु-भक्त, सभा-चतुर, थोड़े में सन्तोष करने वाला, सत्यवादी, धनी, कामी, परोपकारी, राजा का प्रिय, कफ-प्रकृति, शान्त, शूर, सहिष्णु

तथा बुद्धिमान् होता है। उसे जन्म के पहले वर्ष में कष्ट, तीसरे में अग्नि-भय, सातवें में विशूचिका, नवें में बाधा, दसवें में रक्त-वमन, बारहवें में ऊँचाई से गिरने का भय, सोलहवें में सर्प-भय, उन्नीसवें में पीड़ा, पच्चीसवें में जल-भय एवं तीसवें तथा बत्तीसवें वर्ष में पीड़ा होती है। यदि चन्द्रमा पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो वह ८६ वर्ष की आयु पाता है तथा माघ शुक्ला नवमी, शुक्रवार, रोहिणी नक्षत्र में उसकी मृत्यु होना संभव है।

<u>मिथुन राशिस्थ चन्द्र निर्णय फल</u>- यदि चन्द्रमा 'मिथुन' राशि में हो तो जातक चतुर, विद्वान्, दृढ़ मैत्री वाला, सुशील, अल्पभाषी, कुटुम्ब-पालक, कामी, कौतूहल-प्रिय, मिष्ठान्न प्रिय, बाल्यावस्था में सुखी, मध्यमावस्था में अल्प अथवा मध्यम सुखी तथा वृद्धावस्था में दुःखी रहता है। ऐसा व्यक्ति कर्ण-रोग से पीड़ित, धर्म-परायण, सुन्दर, सत्यवादी, संगीत-प्रिय, बुद्धिमान्, शास्त्रज्ञ तथा प्रियवादी होता है। वह दो स्त्रियों वाला, गुरुजनों का भक्त, अल्प सन्ततिवान् तथा गुणवान् होता है। उसे अपनी आयु के ५ वें वर्ष में वृक्ष से भय, १६ वें में शत्रु से भय, १८ वें में कान की पीड़ा, २० वें में कष्ट तथा ३८ वें में मृत्यु तुल्य कष्ट होता है। वह अस्सी वर्ष की आयु पाता है तथा वैशाख शुक्ला द्वादशी, बुधवार, मध्याह्न काल, हस्त नक्षत्र में उसकी मृत्यु होना संभव रहता है।

<u>कर्क राशिस्थ चन्द्र निर्णय फल</u>- यदि चन्द्रमा 'कर्क' राशि में हो तो जातक पुत्रवान्, गुणवान्, सज्जन, मातृ-पितृ-भक्त, स्त्री-वशी, सब वस्तुओं का संग्रह करने वाला, परोपकारी, अनेक बन्धु-बान्धवों तथा अनेक स्त्रियों से युक्त, ज्योतिषी, मित्रवान् तथा प्रियवादी होता है। वह बाल्यावस्था में निर्धन, मध्यमायु में सुखी तथा वृद्धावस्था में धर्म-तत्पर होकर तीर्थयात्री होता है। उसके ललाट के मध्यभाग में एक छोटी सी रेखा होती है। उसे जन्म के पहले वर्ष में रोग, तीसरे में लिङ्ग-पीड़ा, ३१ वें में सर्प-भय तथा ३२ वें वर्ष में अनेक कष्ट होते हैं। उसकी आयु ८५ अथवा ८६ वर्ष की होती है। माघ शुक्ला नवमी, शुक्रवार, रोहिणी नक्षत्र में उसकी मृत्यु होना संभव होता है।

<u>सिंह राशिस्थ चन्द्र निर्याण फल</u> - यदि चन्द्रमा 'सिंह' राशि में हो तो जातक धनी, विद्वान्, कला-मर्मज्ञ, विदेश यात्रा प्रेमी, युद्ध-प्रिय, बड़े डीलडौल का, पिङ्गलवर्ण नेत्रों वाला, क्रोधी, अल्प पुत्रवान्, सर्वत्र गमन करने वाला, शत्रु-नाशक, परम निष्ठुर, शिरोरोगी, सत्यवादी, विचक्षण-बुद्धि वाला, सुशील तथा कृपण होता है। उसे अपनी आयु के पहले वर्ष में भूत-बाधा, ५ वें में अग्नि-भय, ७ वें में ज्वर तथा विशूचिका, बीसवें में सर्प-दंश एवं २१ वें में पीड़ा का भय होता है। २८ वें वर्ष में लोकापवाद तथा ३२ वें में उदर के वामभाग में वातगुल्म रोग होने की संभावना रहती है। यदि चन्द्रमा पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो जातक १०० वर्ष की आयु प्राप्त करता है। फाल्गुन कृष्णा पंचमी, मंगलवार को मध्याह्न में जल अथवा जल के समीप उसकी मृत्यु होना संभव है।

<u>कन्या राशिस्थ चन्द्र निर्याण फल</u> - यदि चन्द्रमा 'कन्या' राशि में हो तो जातक स्वजनों को आनन्द देने वाला, अनेक सेवकों वाला, देव-ब्राह्मण-भक्त, कलाविज्ञ, धनी, प्रियवादी, प्रवासी, धर्मात्मा, मनुष्यों में श्रेष्ठ, अल्प कन्या-सन्तति एवं बहुत पुत्रों वाला होता है। उसके कण्ठ-प्रदेश तथा शिश्न में कोई चिह्न होता है। वह अपनी आयु के तीसरे वर्ष में अग्नि-पीड़ा, ५ वें में नेत्र-पीड़ा, ८ वें अथवा १३ वें में गुदा-कष्ट, १५ वें में सर्प-भय, इक्कीसवें में किसी ऊँची जगह से गिरने का कष्ट तथा ३० वें वर्ष में शस्त्राघात का भय प्राप्त करता है। यदि चन्द्रमा पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो वह ८० वर्ष की आयु पाता है तथा चैत्र कृष्णा त्रयोदशी, रविवार को उसकी मृत्यु होना संभव है।

<u>तुला राशिस्थ चन्द्र निर्याण फल</u> - यदि चन्द्रमा 'तुला' राशि में हो तो जातक सर्वमान्य, वस्तु-संग्रही, धर्म परायण, भोगी, अनेक सेवकों वाला, पण्डित, धनी, जलाशयादि का निर्माण कराने वाला, प्राज्ञ, कला-मर्मज्ञ, राजाओं को प्रिय, मिष्ठान्न प्रेमी, पितृ-भक्त, दो नामों वाला, अल्प सन्तति एवं अल्प बन्धुवान्, कृषि-कर्म-निपुण, क्रय-विक्रय-कुशल, देव-ब्राह्मण-पूजक, स्त्री के कहे अनुसार चलने

वाला तथा विपुल सम्पत्ति अर्जित करने वाला होता है। उसे अपनी आयु के ७वें वर्ष में अग्नि-भय, ८वें में ज्वर-पीड़ा, १२वें में जल-भय, २०वें में ऊँचाई से गिरने अथवा सर्प-दंश का भय तथा २१वें वर्ष में अनेक प्रकार के कष्ट होने संभव हैं। यदि चन्द्रमा शुभग्रह से दृष्ट हो तो पूर्णायु ८५ वर्ष होती है तथा वैशाख शुक्ला, अष्टमी, शुक्रवार के प्रथम प्रहर आश्लेषा नक्षत्र में मृत्यु होना संभव है।

<u>वृश्चिक राशिस्थ चन्द्र निर्याण फल</u> - यदि चन्द्रमा 'वृश्चिक' राशि में हो तो जातक पर-सन्तापी, विद्वेषी, क्रोधी, कलही, विश्वासघाती, मित्रद्रोही, असन्तोषी, दूसरों के काम में विघ्न उपस्थित करने वाला, पराक्रमी, अनेक नौकरों वाला, गुप्त-पापी, शुभ-लक्षणों वाला, विलक्षण बुद्धि वाला तथा राजा द्वारा सम्मानित होता है। उसे जन्म के पहले वर्ष में ज्वर, तीसरे में अग्नि-भय, पाँचवें तथा पन्द्रहवें में ज्वर तथा २५वें में विशेष पीड़ा होती है। वह चार भाई तथा दो स्त्रियों वाला होता है। यदि चन्द्रमा पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो पूर्णायु ८० वर्ष की होती है। ज्येष्ठ शुक्ला दशमी, बुधवार, हस्त नक्षत्र, मध्यरात्रि में उसकी मृत्यु होना संभव है।

<u>धनु राशिस्थ चन्द्र निर्याण फल</u> - यदि चन्द्रमा 'धनु' राशि में हो तो जातक विद्वान्, सुपुत्रवान्, धर्मात्मा, राजमान्य, लोकप्रिय, देव-ब्राह्मण-भक्त, वस्तु-संग्रही, सभा-वक्ता, सुनखी, दृढ़ मैत्री वाला, सौभाग्यशाली, गहरे पदतल वाला, साहसी, विनम्र, शान्त, क्लेशमुक्त, शीघ्र क्रुद्ध हो जाने वाला, अल्प सन्तातिवान्, अच्छे भाइयों वाला, स्वल्पाहारी तथा तपस्वी होता है। वह पूर्वावस्था में धनी रहता है। उसे जन्म से पहले वर्ष में बाधा तथा तेरहवें वर्ष में विशेष कष्ट होता है। किसी आचार्य ने पूर्णायु ६८ तथा किसी ने ७५ वर्ष कही है। यदि चन्द्रमा पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो पूर्णायु १०० वर्ष हो सकती है। आषाढ़ कृष्णा पंचमी, शुक्रवार, हस्तनक्षत्र में रात्रि के समय उसकी मृत्यु होना संभव है।

<u>मकर राशिस्थ चन्द्र निर्णय फल</u> – यदि चन्द्रमा 'मकर' राशि में हो तो जातक धीर, गंभीर, विचक्षण बुद्धि, सत्यवादी, कृपालु, दानी, सुन्दर, आलसी, क्लेशयुक्त, कृष्णवर्ण तालु एवं विस्तीर्ण कटि वाला होता है। उसे अपनी आयु के ५ वें वर्ष में पीड़ा, ७ वें में जल-भय, १० वें में वृक्ष से गिरने का भय, १२ वें में शस्त्र-पीड़ा, बीसवें में ज्वर-बाधा, २५ वें में अत्रु-पीड़ा तथा पैंतीसवें में बाँये अंग में अग्नि-पीड़ा का भय होता है। पूर्णायु ६० वर्ष होती है। श्रावण शुक्ला दशमी, मंगलवार को ज्येष्ठा नक्षत्र में उसकी मृत्यु होना संभव रहता है।

<u>कुम्भ राशिस्थ चन्द्र निर्णय फल</u> – यदि चन्द्रमा 'कुम्भ' राशि में हो तो जातक दानी, प्रियवक्ता, धर्मकर्म में शीघ्रता करने वाला, कामी, दो पत्नियों वाला, अल्प सन्ततिवान्, क्षीण शरीर तथा धन-हीन होता है। उसे आयु के पहले वर्ष में पीड़ा, ५ वें में अग्नि-भय, १२ वें में सर्प अथवा जल से भय तथा २८ वें में चोरों से हानि का भय होता है। पूर्णायु ६० वर्ष मानी गई है। उसके बाँये हाथ में कोई चिह्न भी होता है। भाद्रपद कृष्णा चतुर्थी, शनिवार को भरणी नक्षत्र में उसकी मृत्यु होना संभव है।

<u>मीन राशिस्थ चन्द्र निर्णय फल</u> – यदि चन्द्रमा 'मीन' राशि में हो तो जातक धनी, मानी, विनयी, भोगी, प्रसन्न चित्त, माता-पिता-देव-आचार्य-गुरु-भक्त, सुन्दर, श्रेष्ठ, उदार एवं गंध-माला आदि से विभूषित होता है। उसे जल से ५ वें वर्ष में जल-भय, ८ वें में ज्वर तथा बाईसवें वर्ष में महान् पीड़ा होना संभव है। चौबीस वर्ष की आयु में पूर्व दिशा की यात्रा करने का योग भी बनता है। पूर्णायु ६० वर्ष की होती है। आश्विन मास के कृष्ण पक्ष की द्वितीया तिथि को, गुरुवार के दिन, कृत्तिका नक्षत्र में उसकी मृत्यु होना संभव कहा गया है।

<u>गोल कलम</u> – मेषादि ६ राशियों (मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह और कन्या) में

भू० सं० ८३ कु० १०

जब सूर्य रहता है, तब उस अवधि को 'सौम्य' अथवा 'उत्तर' गोल कहा जाता है एवं तुला आदि ६ राशियों (तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ तथा मीन) में जब सूर्य रहता है, तब उस अवधि को 'याम्य' अथवा 'दक्षिण' गोल कहा जाता है। सौम्य अर्थात् उत्तर गोल में जन्म लेने वाला धनी, विद्वान्, पुत्र, पौत्रादि से युक्त तथा राजमान्य होता है एवं याम्य अर्थात् दक्षिण गोल में जन्म लेने वाला सुख-हीन, दुराचारी, मिथ्यावादी, निर्धन तथा हीनायु होता है।

राशि ध्रुवाङ्क के अनुसार आयुर्दाय ज्ञान - मेष के १०, वृष के ६, मिथुन के २०, कर्क के ५, सिंह के ८, कन्या के २, तुला के २०, वृश्चिक के ६, धनु के १०, मकर के १४, कुम्भ के ३ तथा मीन के ४ ध्रुवाङ्क माने गये हैं। जन्म कुण्डली में सूर्यादि ग्रह जिन राशियों में हों, उन सबके ध्रुवाङ्कों को जोड़ कर जातक की आयु के वर्षों का ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

द्वादश भावों से विचारणीय विषय - जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों से विभिन्न विषयों का विचार किया जाता है। किस भाव से किन-किन विषयों का मुख्य रूप से विचार करना चाहिए, इसे निम्नानुसार समझ लें - भावों की गणना 'लग्न' से आरंभ की जाती है।

'लग्न' अर्थात् 'प्रथम भाव' जातक अथवा किसी पदार्थादि के रूप, रंग, चिह्न, जाति, आयु का प्रमाण, सुख-दुःख तथा साहस आदि के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए। 'द्वितीय भाव' से स्वर्ण-रौप्य आदि धातु, रत्न, भाण्डार, क्रय-विक्रय, धन-सम्पत्ति, कोष आदि के संग्रह के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए। 'तृतीय भाव' से सहोदर-सहोदरा (भाई-बहिन), पराक्रम, सेवक तथा अनुजीवी आदि का विचार करना चाहिए। 'चतुर्थ भाव' से मित्र, गृह, ग्राम, भूमि, कृषि, चतुष्पद, वाहन, मातृ-सुख आदि का विचार करना चाहिए। इस भाव पर शुभ ग्रहों की दृष्टि अथवा युति से इन सब वस्तुओं की वृद्धि होती है। 'पंचम भाव'

से बुद्धि, विद्या, प्रबन्ध-क्षमता, सन्तान, मन्त्र, न्याय, नीति तथा गर्भ-स्थिति आदि के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए। '<u>षष्ठ भाव</u>' से शत्रु-समूह, क्रूर-कर्म, फोड़ा-फुंसी, व्रण, रोग, चिन्ता, शङ्का, मामला-मुकद्दमा, झगड़ा-झंझट तथा मामा के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए। '<u>सप्तम भाव</u>' से दैनिक आय, वाणिज्य, युद्ध, पत्नी, स्त्री, प्रणय, यात्रा तथा शरीर के गुह्य-स्थान आदि के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए। '<u>अष्टम भाव</u>' से नदी, मार्ग-वैषम्य, शस्त्राघात, गुप्त-धन, आकस्मिक-लाभ, आयु, मृत्यु तथा सङ्कट आदि के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए। '<u>नवमभाव</u>' से धर्म, भाग्योदय, तीर्थाटन, दान, पुण्य, पवित्रता एवं मनोवृत्ति आदि के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए। '<u>दशम भाव</u>' से पिता, राज्य-सम्बन्ध, उच्च पद, व्यवसाय, मुद्रा आदि के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए। '<u>एकादश भाव</u>' से सब प्रकार के लाभ, आमदनी, स्वर्ण, वस्त्र, वाहन आदि के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए। '<u>द्वादश भाव</u>' से हानि, व्यय, दण्ड, बन्धन आदि के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए।

जन्म कुण्डली अथवा प्रश्न कुण्डली का अवलोकन करते समय यह नियम ध्यान में रखना चाहिए कि जिस भाव पर अपने स्वामी की अथवा शुभग्रह की दृष्टि हो अथवा युति हो, उस भाव की वृद्धि होती है अर्थात् उसका उत्तम फल प्राप्त होता है, और जिस भाव पर पापग्रह की अथवा शत्रुग्रह की दृष्टि हो, उसके शुभ-फल की हानि तथा अशुभ-फल की वृद्धि होती है।

<u>विभिन्न भावों पर ग्रहों की दृष्टि का नियम</u> – प्रत्येक ग्रह जिस भाव में बैठा हो, वहाँ से तीसरे तथा दशम भाव को '<u>एकपाद</u>' दृष्टि से, पाँचवें तथा नवें भाव को '<u>द्विपाद दृष्टि</u>' से, चौथे तथा आठवें भाव को '<u>त्रिपाद</u>' दृष्टि से एवं सप्तभाव को '<u>चतुष्पाद</u>' <u>अर्थात्</u> '<u>पूर्ण</u>' दृष्टि से देखता है। इसके अतिरिक्त शनि सप्तमभाव के अतिरिक्त 'तृतीय' तथा 'दशम भाव' को भी पूर्ण दृष्टि से देखता है अर्थात् शनि

तृतीय, सप्तम तथा दशम – इन तीनों भावों को पूर्ण दृष्टि से देखता है। गुरु सप्तम भाव के अतिरिक्त 'पंचम' तथा 'नवम भाव' को भी पूर्ण दृष्टि से देखता है अर्थात् गुरु पंचम, सप्तम एवं नवम – इन तीनों भावों को पूर्ण दृष्टि से देखता है। इसी प्रकार मङ्गल सप्तमभाव के अतिरिक्त चतुर्थ तथा अष्टम भाव को भी पूर्ण दृष्टि से देखता है अर्थात् मंगल जिस भाव में बैठा हो, वहाँ से चतुर्थ, सप्तम तथा अष्टम भाव पर पूर्ण दृष्टि डालता है। शनि, गुरु तथा मंगल के अतिरिक्त अन्य सभी ग्रह केवल सप्तम भाव को ही पूर्ण दृष्टि से देखते हैं। राहु तथा केतु की विपरीत दृष्टि मानी गई है। फलादेश के समय ग्रह-दृष्टि का विचार आवश्यक है।

ग्रहों के स्वरूप – सूर्यादि ग्रहों के गुण, वर्ण, आकार आदि निम्नानुसार कहे गए हैं। ग्रहों के फलादेश पर विचार करते समय उनके स्वरूपादि पर विचार करना उचित है।

'सूर्य' – शूर, गंभीर, सुन्दर, श्यामाभा युक्त रक्त वर्ण, अल्पकेशी, चतुरस्र अर्थात् लंबाई-चौड़ाई में समान, मधु-नेत्र, पित्त-प्रकृति, बलवान, नाटे क़द वाला तथा कुशल एवं गंभीर स्वभाव का है।

'चन्द्र' – सुन्दर शरीर, रक्त की अधिकता वाला, कृष्णवर्ण घुँघराले केशों वाला, कमल-पत्र तुल्य नेत्रों वाला, अत्यन्त गौर वर्ण, कफ-वात-प्रकृति, निर्मल बुद्धि वाला तथा श्रेष्ठ वक्ता है।

'मङ्गल' – रक्त-गौर वर्ण, पीतवर्ण नेत्रों वाला, युवावस्था वाला, अग्नि तुल्य कान्ति वाला, पित्त-प्रकृति का, मज्जासार युक्त, हिंसक-स्वभाव, परन्तु अत्यन्त उदार प्रकृति का, महा अभिमानी तथा शूर है।

'बुध' – श्याम वर्ण, ताँबे जैसे नेत्रों वाला, त्रिदोष-प्रकृति, रजोगुणी, कोमल वाणी वाला, नसों में ऐंठन वाला, उत्कण्ठित, कला-निपुण तथा बुद्धिमान् है।

'गुरु' – स्वर्ण वर्ण, लम्बे क़द का, पीतवर्ण नेत्रों वाला, कफ-प्रकृति, मज्जासारयुक्त, उदार बुद्धि, कोमल वाणी वाला, चतुर, ज्ञानी तथा पण्डित है।

'शुक्र' - जलयुक्त मेघ वर्ण, कफ-वात-प्रकृति, कमलपत्र जैसे नेत्रों वाला, घुँघराले केशों वाला, बलिष्ठ भुजाओं वाला, मदमत्त हाथी जैसी चालवाला, सुन्दर, रजोगुणी तथा कामातुर है।

'शनि' - अधिक कृष्ण वर्ण, नसों में बलवाला, जटायुक्त केशों वाला, मोटे दाँत तथा नखों वाला, पीतवर्ण-नेत्र, वात-प्रकृति, कृश-शरीर, दुष्ट-स्वभाव तथा मलिन-बुद्धि है।

टिप्पणी - जन्म लग्न भाव में जो नवांश हो उसके स्वामी-ग्रह के आकार के अनुसार जातक का आकार तथा चन्द्रमा जिस राशि के नवांश में हो उसके स्वामी-ग्रह के वर्ण के अनुरूप जातक का वर्ण कहना चाहिए। यदि कहीं संशय उत्पन्न हो तो कुल, जाति अथवा देशानुसार जातक के वर्ण का निर्णय करना चाहिए। सूर्य, चन्द्र तथा गुरु — ये तीनों ग्रह सत्वगुण प्रधान हैं; मङ्गल तथा शनि तमोगुण प्रधान हैं तथा बुध और शुक्र — रजोगुण प्रधान हैं। जिस के त्रिंशांश में सूर्य हो, उसी के अनुसार जातक का गुण अर्थात् स्वभाव समझना चाहिए।

ग्रहों का राशि-भोग काल - सूर्य, बुध तथा शुक्र एक राशि पर लगभग एक-एक मास तक रहते हैं। गुरु एक वर्ष, मंगल डेढ़ मास, शनि ढाई वर्ष तथा चन्द्रमा लगभग सवा दो दिन तक एक-एक राशि में संचरण करते हैं।

ग्रहों के फल देने का समय - सूर्य तथा मङ्गल राशि के अग्रिम भाग में, गुरु तथा शुक्र मध्य भाग में, बुध सम्पूर्ण राशि-भोग-काल में तथा शनि और चन्द्रमा राशि के अन्तिम भाग में विशेष रूप से अपना शुभ अथवा अशुभ-फल प्रदर्शित करते हैं। मंगल आदि पाँच ग्रह यदि अतिचार से अग्रिम राशि में अथवा वक्रगति से पृष्ठ राशि में भी चले जाँय तो भी वे पूर्व राशि का ही फल देते हैं। गुरु में यह विशेषता है कि वह यदि अतिचारी होकर अग्रिम राशि में चला जाय तो गोचर-फल उसी राशि का

देता है, परन्तु लुप्तवर्षजन्य दोष पूर्वराशि सम्बन्धी संवत्सर में ही देता है, क्योंकि पूर्वराशि सम्बन्धी सम्वत्सर ही लुप्त होता है। जो ग्रह नीचराशि अथवा शत्रुराशि में हो अथवा सूर्य के सान्निध्य से अस्त हो, वह अपना शुभ अथवा अशुभ फल नहीं देता। यदि शुभग्रह पापग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो तो वह शुभ फल नहीं देता, इसी प्रकार यदि पापग्रह शुभ ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो तो वह पाप-फल नहीं देता। जन्म कुण्डली स्थित ग्रहों के विशिष्ट फलादेश की जानकारी के लिए अन्तिम खण्ड को ध्यान से पढ़ें।

'सूर्य' एक राशि पर एक महीने तक रहता है, वह प्रारंभ के पाँच दिन तक ही फल देता है। 'चन्द्रमा' एक राशि पर सवा दो दिन तक रहता है और अन्त की तीन घड़ी में फल देता है। 'मंगल' एक राशि पर डेढ़ मास तक रहता है तथा प्रारंभ के आठ दिनों तक विशेष फल देता है। 'बुध' एक राशि पर एक मास तक रहता है और अन्त के तीन दिनों में फल देता है। 'गुरु' एक राशि पर तेरह मास तक रहता है तथा मध्यभाग के दो महीनों में विशेष फल देता है। 'शनि' एक राशि पर तीस मास तक रहता है और अन्त के छै महीनों में विशेष फल देता है। 'शुक्र' एक राशि पर एक महीने तक रहता है और वह मध्यभाग में सात दिनों तक विशेष फल देता है। 'राहु' तथा 'केतु' एक राशि पर अठारह-अठारह मास तक रहते हैं तथा अन्त के दो-दो महीनों में विशेष फल देते हैं।

ग्रहों का दशा-फल - प्रत्येक ग्रह अपनी दशा तथा अन्तर्दशा में अपना विशेष फल देता है। ग्रहों की दृष्टि तथा ग्रहों की दशा एवं अन्तर्दशा फल का विस्तृत विवेचन 'चतुर्थ खण्ड' में किया जायगा। अगले 'द्वितीय खण्ड' में सं. १९४२ वि. से सं. २००० वि. तक की सूर्य कुण्डलियाँ प्रदर्शित हैं तथा तृतीय खण्ड में सं. १९७१ वि. से सं. २०५० वि. तक की सूर्य-कुण्डलियों का संक्षिप्त फलादेश वर्णित है। अपनी जन्म कुण्डली का फलादेश इनके आधार पर फल प्रतिपादन के सिद्धान्तानुसार समझ लेना चाहिए।

इति श्री भृगु संहिता कुण्डली रहस्यम्

प्रथम खण्डः समाप्तम्

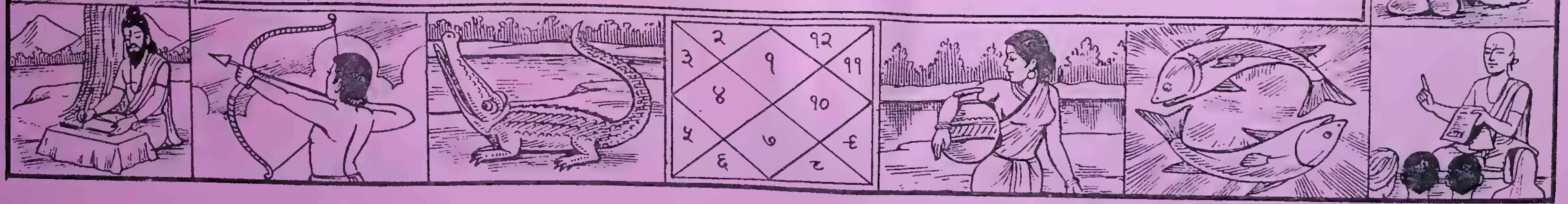

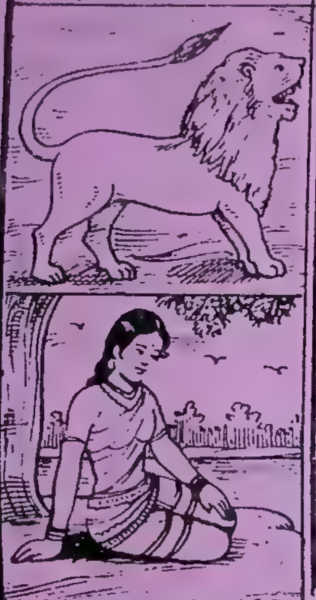

अथ श्री भृगु संहिता कुण्डलीरहस्यम्

सूर्य कुण्डलीयम्

द्वितीय खण्डः

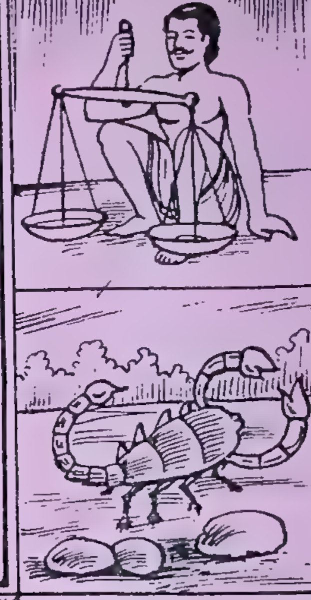

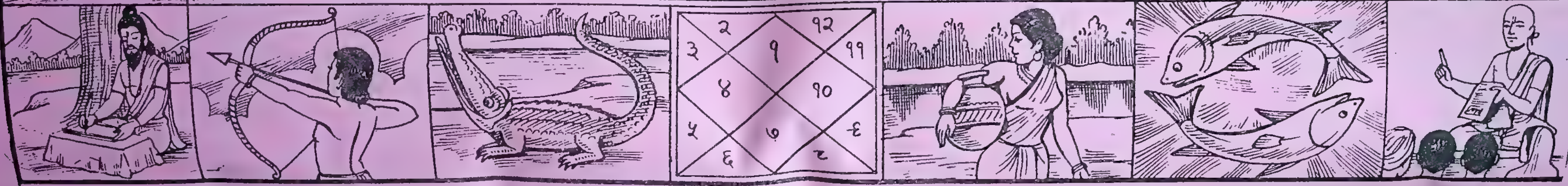

ॐ

श्री भृगु संहिता कुण्डली-रहस्य

द्वितीय खण्ड

(सं० १९४२ वि० से सं० २१०० वि० तक की सूर्य-कुण्डली)

आवश्यक-टिप्पणी

कुण्डली-रहस्य के इस द्वितीयखण्डमें सं. १९४२ वि. से लेकर सं. २१०० वि. तक की सूर्य कुण्डलियाँ दी गई हैं। ये कुण्डलियाँ पृष्ठ संख्या १०० से पृष्ठ संख्या ४८० तक में हैं। किस सम्वत् की सूर्य-कुण्डली किस पृष्ठ पर मिलेगी, इसकी जानकारी के लिए पृष्ठ संख्या २३७ से २४६ तक दी गई 'जन्म कुण्डली सारिणी' का अवलोकन करना चाहिए। सूर्य-कुण्डली के आधार पर अपनी लग्न कुण्डली तय्यार करने की विधि पृष्ठ संख्या २४७ से २५० तक में दी गई है। उसके अनुसार अपनी लग्न कुण्डली अर्थात् जन्म कुण्डली तय्यार कर लेनी चाहिए। आपका जन्म किस लग्न में हुआ। या यह जानकारी आवश्यक है।

पृष्ठ संख्या १६८ से पृष्ठ संख्या ३६५ तक प्रदर्शित की गई अर्थात् सं. १९६७ वि. से सं. २०४५ वि० संवत् तक की सूर्य कुण्डलियों का भाव फलादेश 'तृतीय खण्ड' में वर्णित है। इससे पूर्व तथा बाद की सूर्य कुण्डलियों का फलादेश ग्रंथ-विस्तार भय से छोड़ दिया गया है। अपनी सूर्य कुण्डली का फलादेश जानने के उपरान्त लग्न कुण्डली के विस्तृत फलादेश सम्बन्धी नियमों की जानकारी के लिए खण्ड एक, चार तथा पाँच का अध्ययन करना चाहिए। फलादेश सम्बन्धी नियमों के आधार पर किसी भी जन्म कुण्डली का फलादेश सहज में ज्ञात किया जा सकता है। कुण्डली खण्ड में जिन सूर्य-कुण्डलियों के नीचे क्रम संख्या अंकित है, उनका 'फलादेश प्रकरण' में उसी क्रम संख्या पर फलादेश वर्णित है। जिन सूर्य-कुण्डलियों के नीचे कोई क्रमांक नहीं दिया गया है, उनका फलादेश तृतीय खण्ड में नहीं मिलेगा। उनके फलादेश की जानकारी के लिए खण्ड १, ४ तथा ५ के फलादेश कथन सिद्धान्तों का आश्रय लेना चाहिए।

श्री भृगु संहिता महाशास्त्र कुण्डली-रहस्य

कुण्डली-खण्ड

विक्रम सम्वत् १९४२ से २१०० वि॰ तक की कुण्डलियाँ

आगे पृष्ठ संख्या १०० से पृष्ठ संख्या २३६ तक विक्रम सम्वत् १९४२ से २००० वि॰ तक की सूर्य-कुण्डलियां प्रदर्शित हैं। तत्पश्चात् पृष्ठ संख्या २३७ से २५० तक विभिन्न सम्वत्सरों के जन्म कुण्डलियों की सारिणी तथा आवश्यक टिप्पणियाँ दी गई हैं, जिनके आधार पर सूर्य-कुण्डली द्वारा लग्न कुण्डली तय्यार करने की विधि तथा किस पृष्ठ पर किस सम्वत् की कुण्डलियां देखनी चाहिए, यह ज्ञान प्राप्त होगा। तत्पश्चात् पृष्ठ संख्या २५१ से पृष्ठ संख्या ४८० तक विक्रम-सम्वत् २००१ से संवत् २१०० तक की सूर्य-कुण्डलियाँ प्रदर्शित हैं।

पाठकों को चाहिए कि वे सर्वप्रथम कुण्डलियों की सारिणी के आधार पर अपनी जन्म कालीन सूर्य-कुण्डली को ढूँढें, तदुपरान्त टिप्पणी में दिए गए निर्देशानुसार सूर्य-कुण्डली को लग्न-कुण्डली में परिवर्तित करलें। उक्त १५९ वर्ष की अवधि में जन्म लेने वाले सभी जातकों की सूर्य-कुण्डलियां इस खण्ड में अवश्य मिल जाँयेगी। तत्पश्चात् जन्म कुण्डली के फलादेश, भूत तथा भविष्यत्-जीवन तथा महादशा आदि विषयों की जानकारी के लिए अगले प्रकरणों (खण्डों) का अध्ययन करना चाहिए। फलादेश सं॰ १९६७ वि॰ से २०४४ वि॰ तक की कुण्डलियों का मिलेगा

मृ० सं० १००

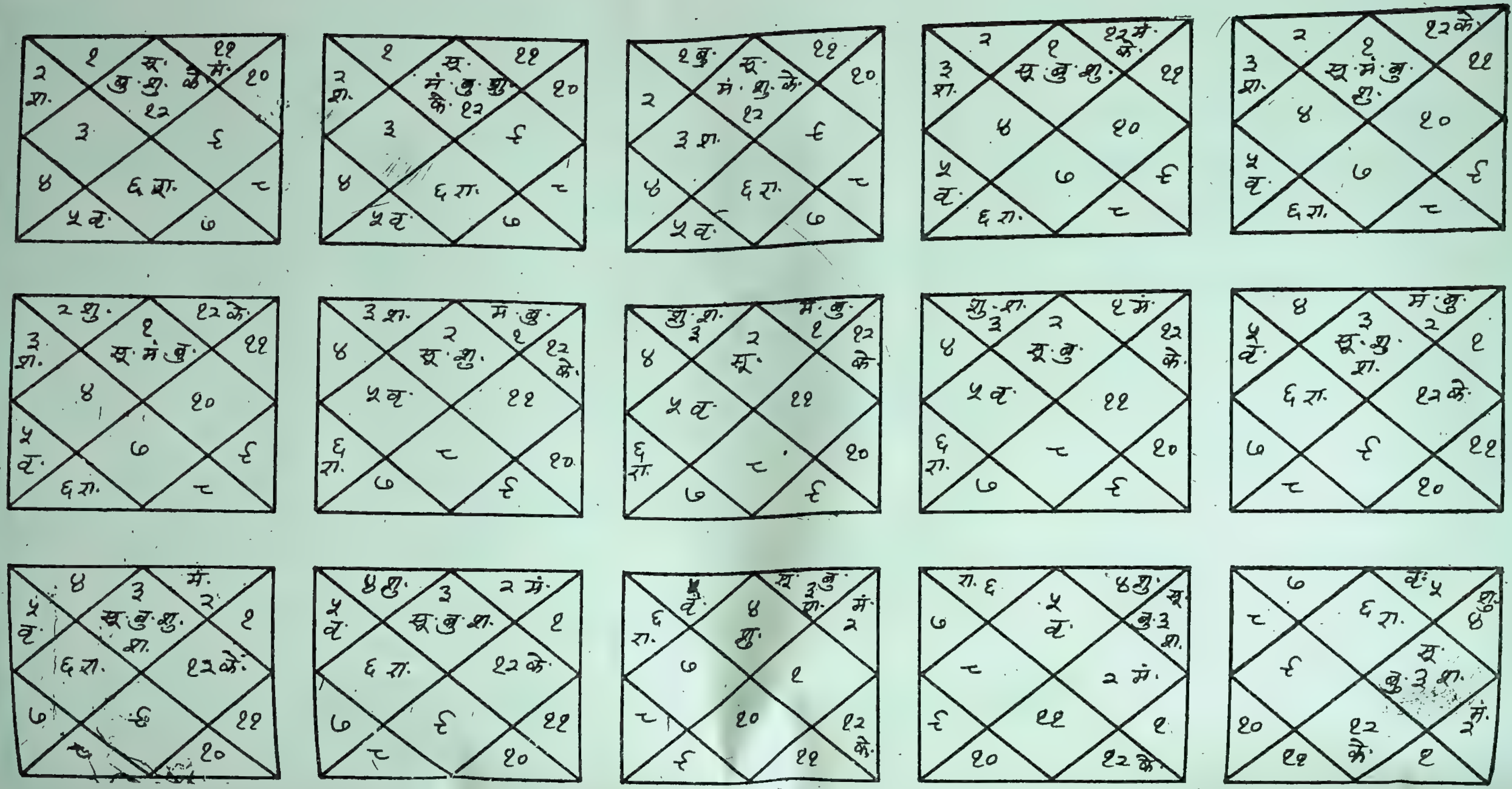

कु० प०

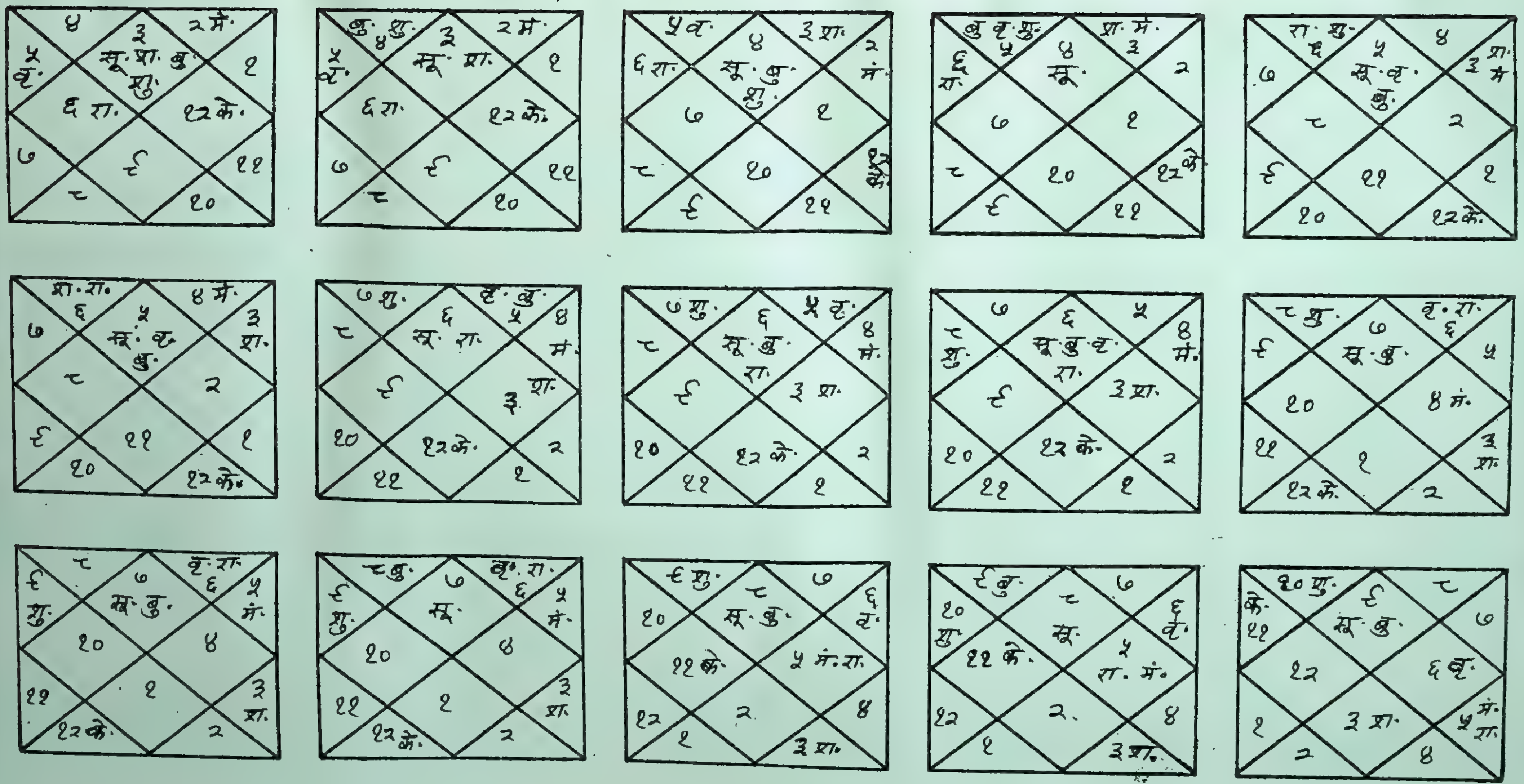

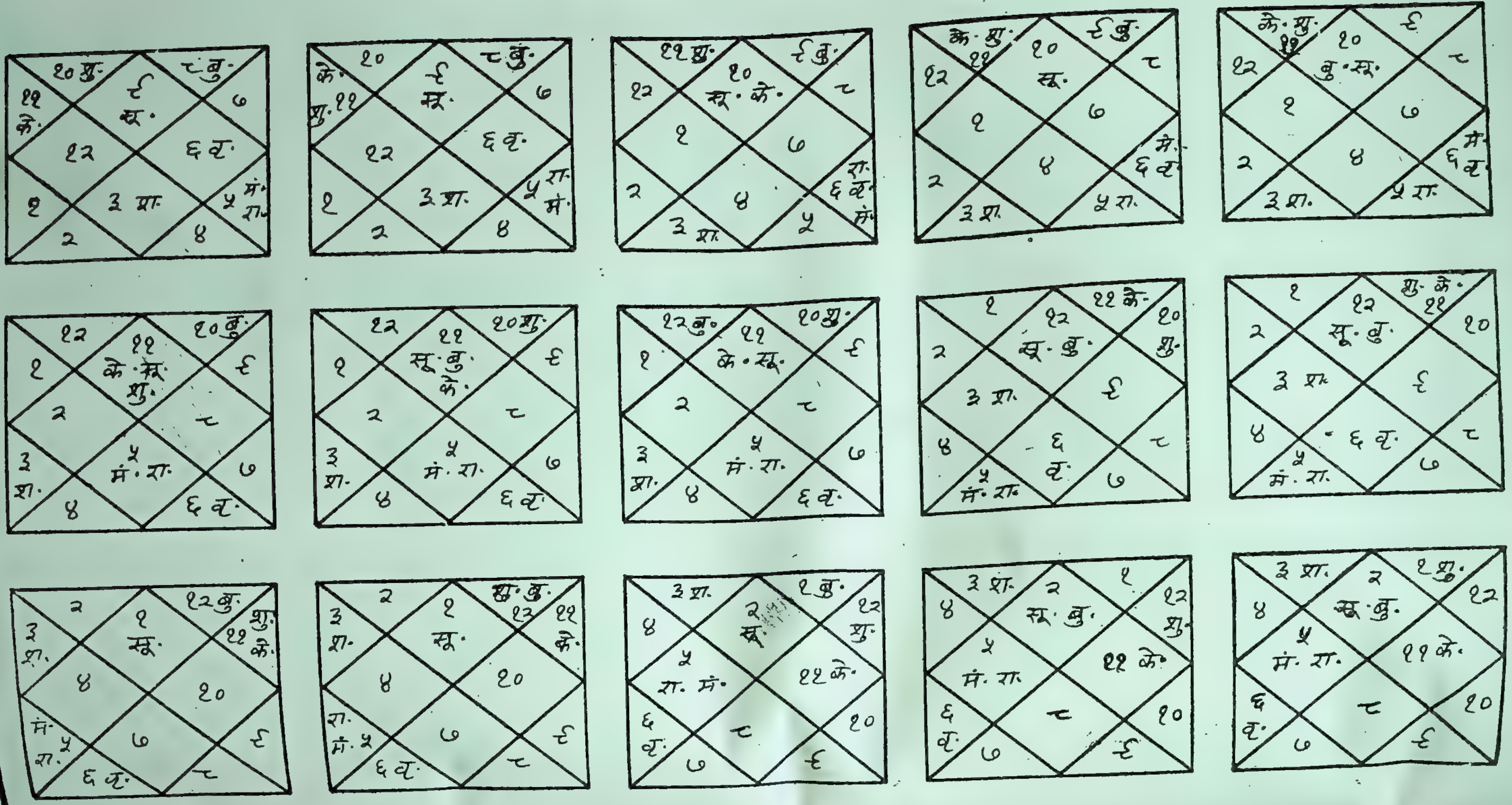

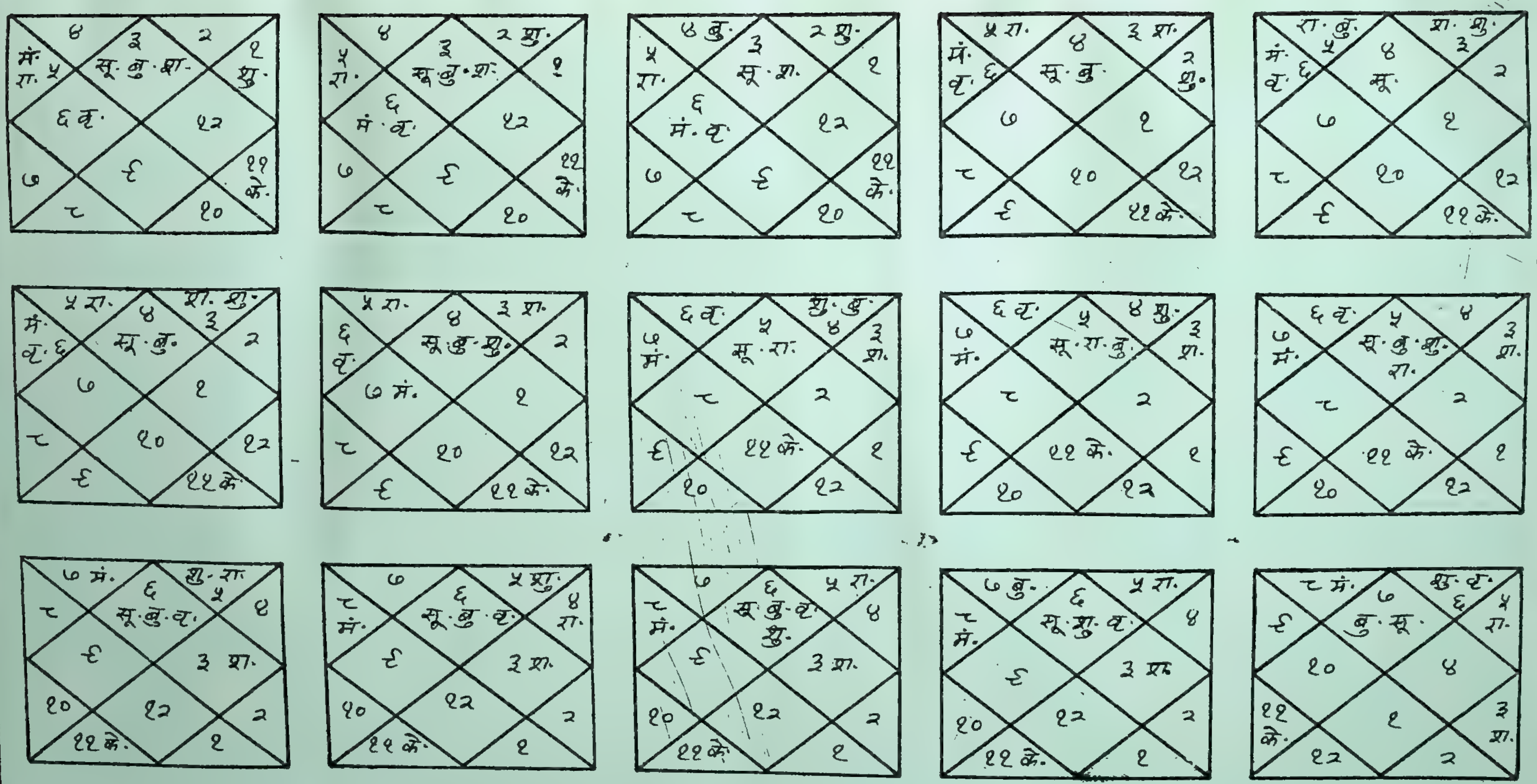

कु० प०

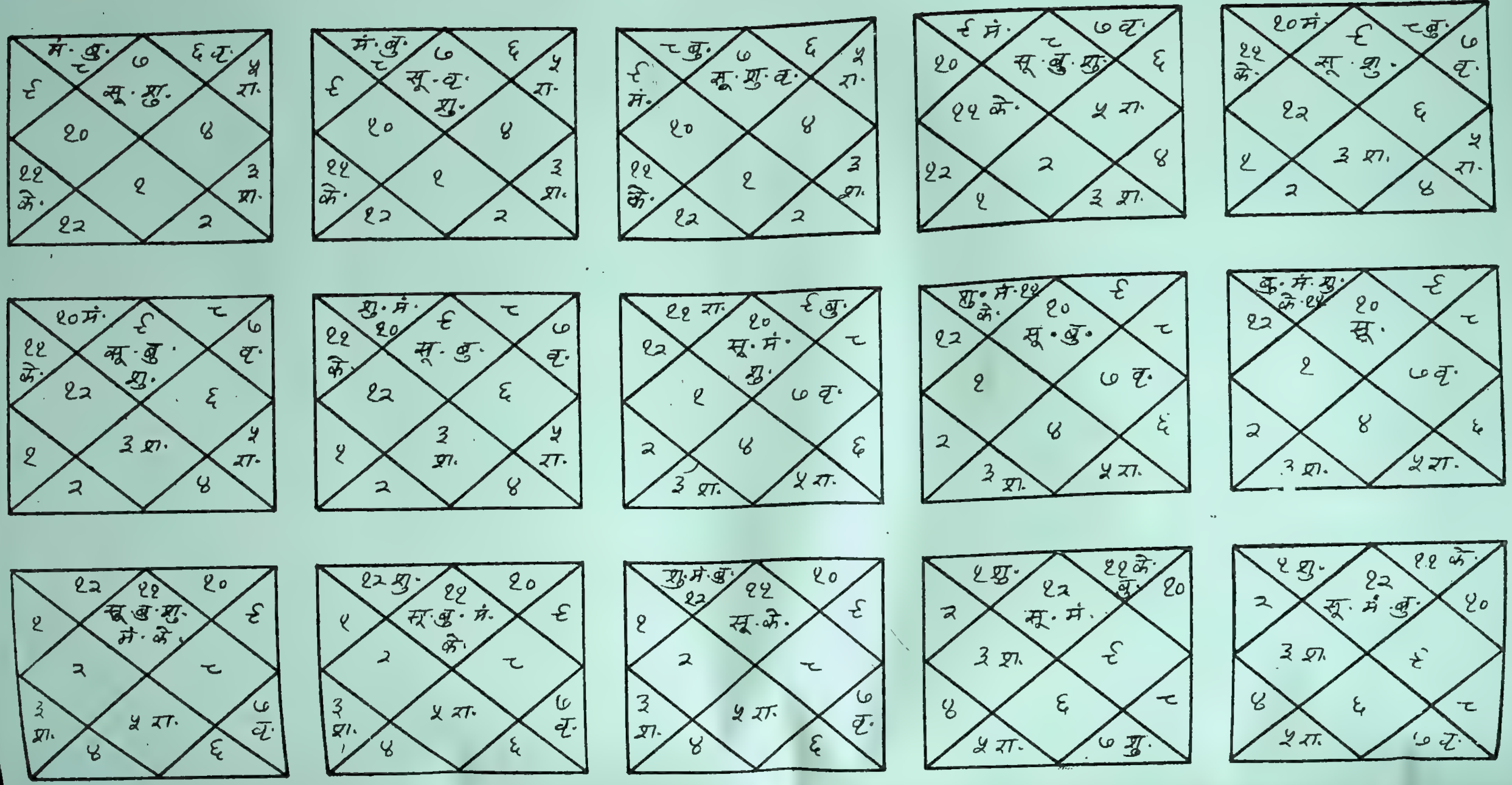

भू० सं० ८०३

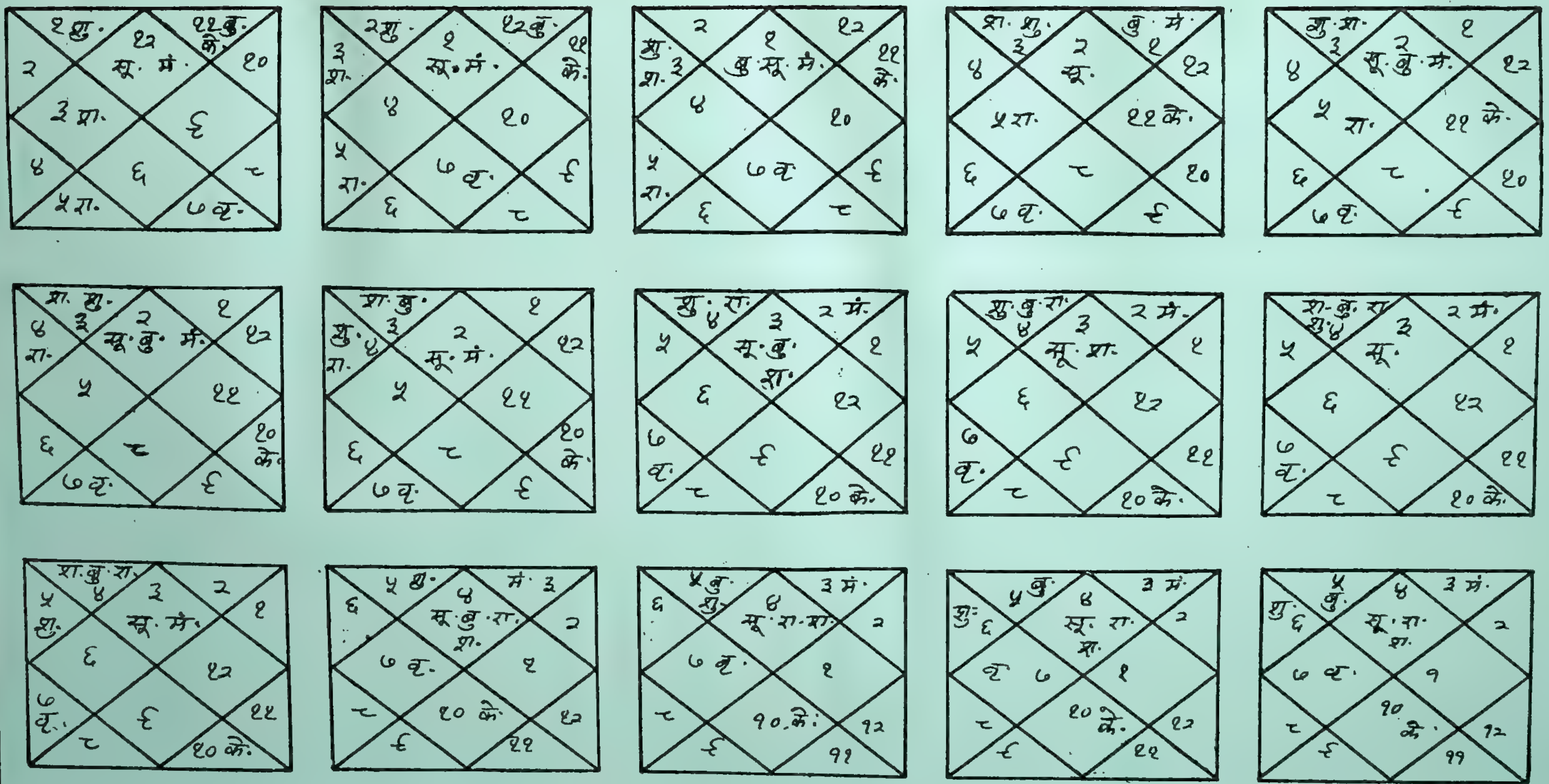

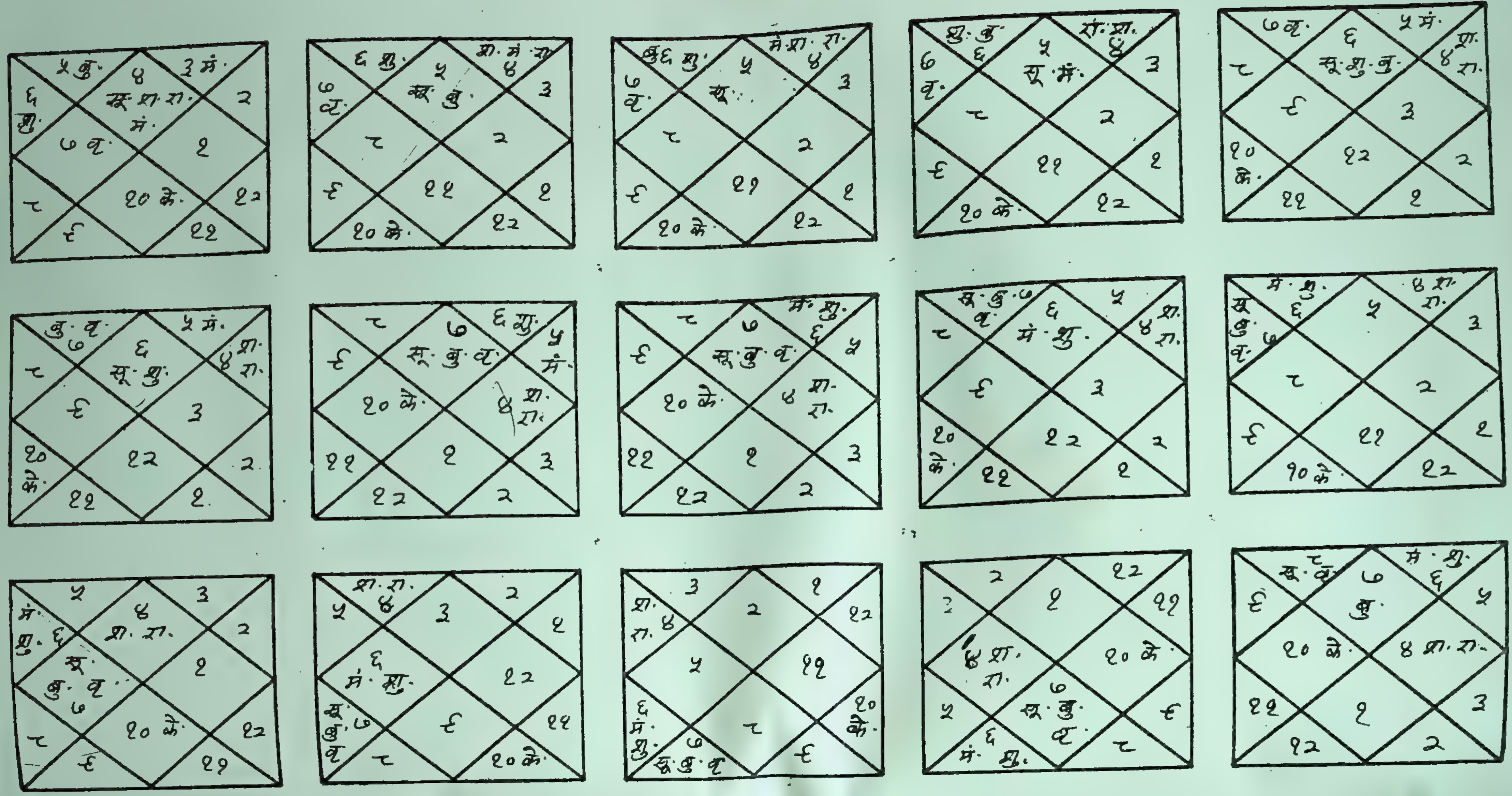

भू० सं०

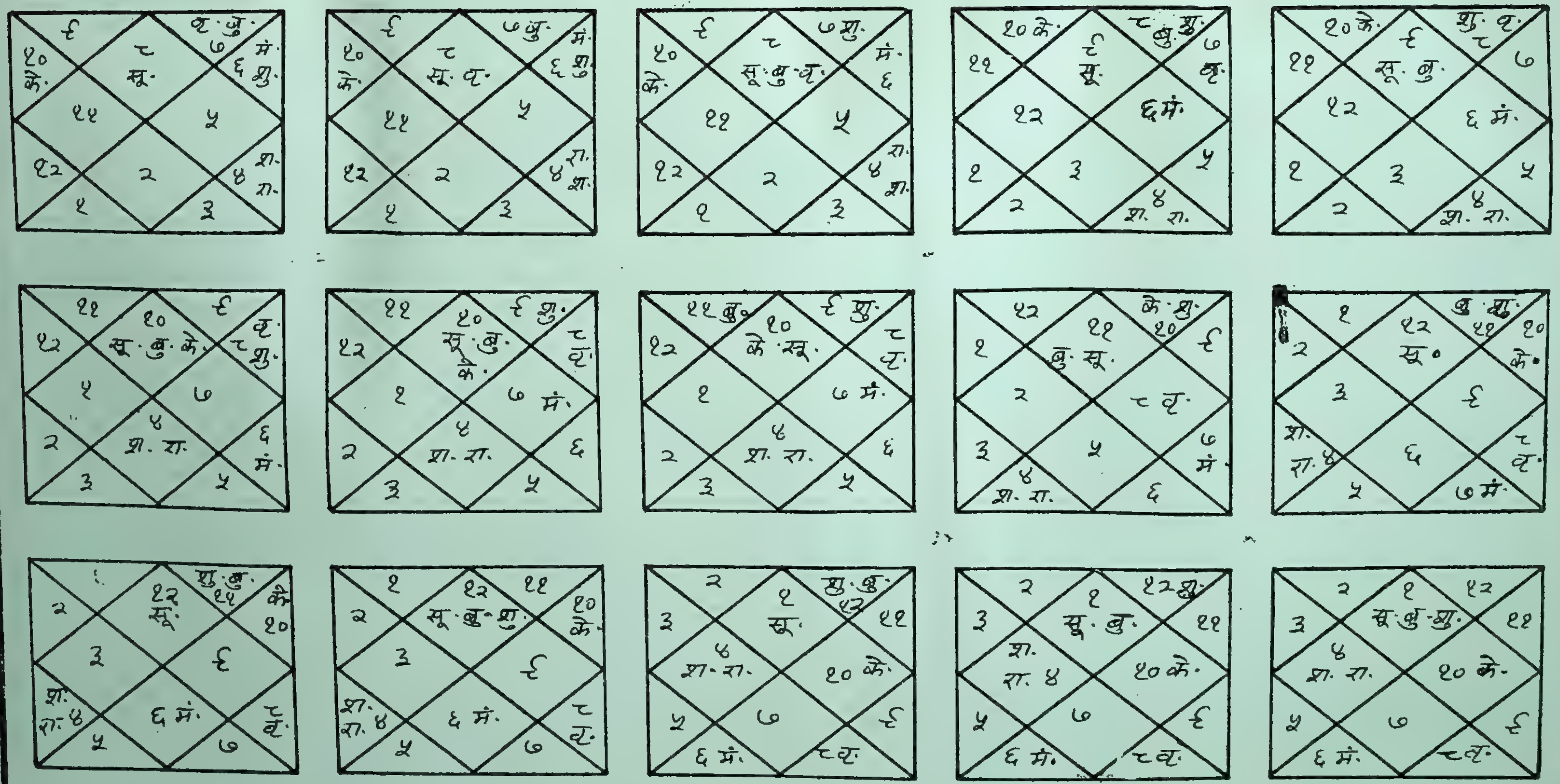

कु० प०

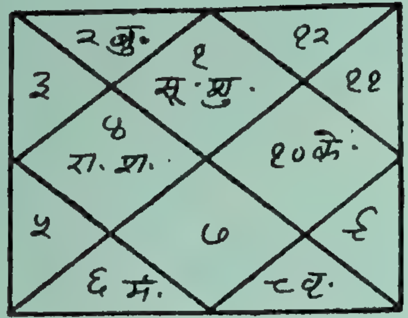
२ बु·
१ सू·शु·
१२
३
११
४ रा·श·
१० के·
५
७
९
६ मं·
८ वृ·

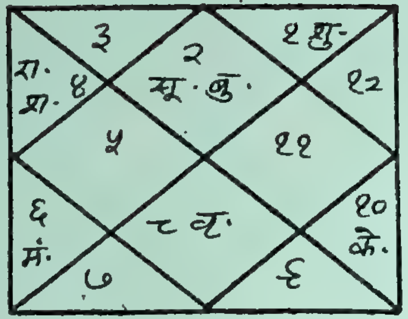
३
२ सू·बु·
१ शु·
रा·श· ४
१२
५
११
६ मं·
८ वृ·
१० के·
७
९

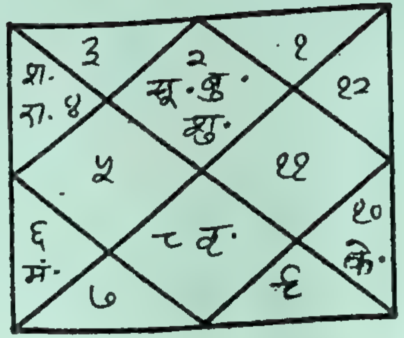
श· ३
२ सू·बु·शु·
१
१२
रा· ४
५
११
६ मं·
८ वृ·
१० के·
७
९

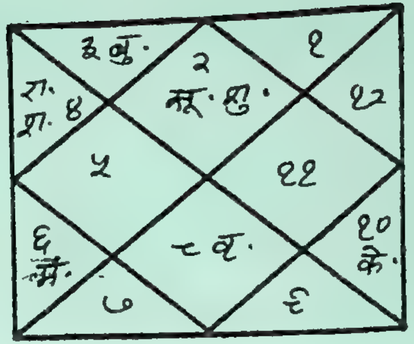
३ बु·
२ सू·शु·
१
१२
रा·श· ४
५
११
६ मं·
८ वृ·
१० के·
७
९

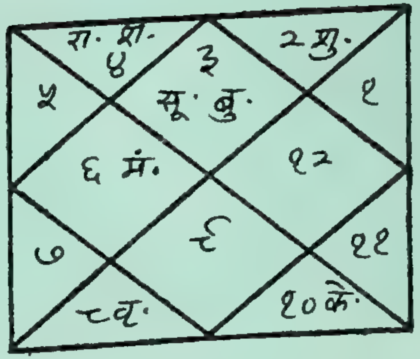
रा·श· ४
३ सू·बु·
२ शु·
५
१
६ मं·
१२
९
७
११
८ वृ·
१० के·

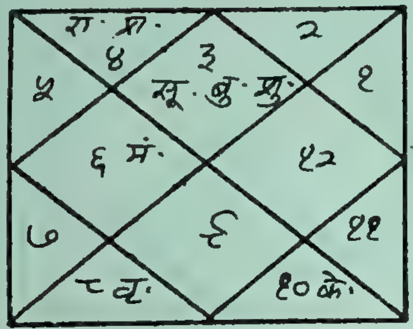
रा·श· ४
३ सू·बु·शु·
२
५
१
६ मं·
१२
७
९
११
८ वृ·
१० के·

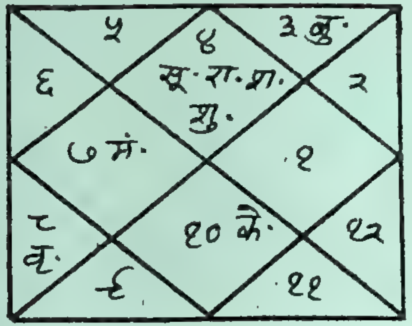
५
४ सू·रा·श· शु·
३ बु·
६
२
७ मं·
१
८ वृ·
१० के·
१२
९
११

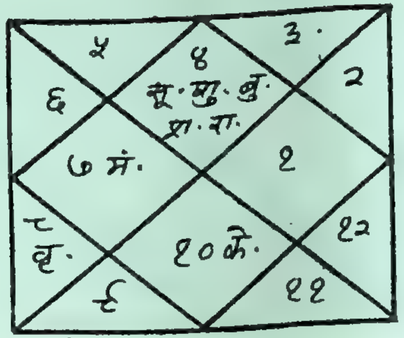
५
४ सू·शु·बु· श·रा·
३
६
२
७ मं·
१
८ वृ·
१० के·
१२
९
११

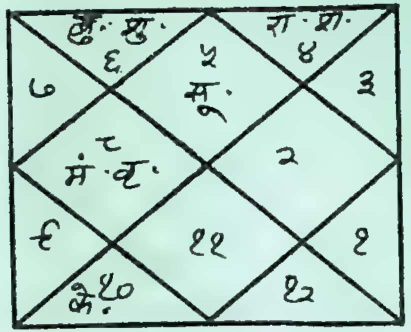
बु·शु· ६
५ सू·
रा·श· ४
७
३
८ मं·वृ·
२
९
११
१
के·१०
१२

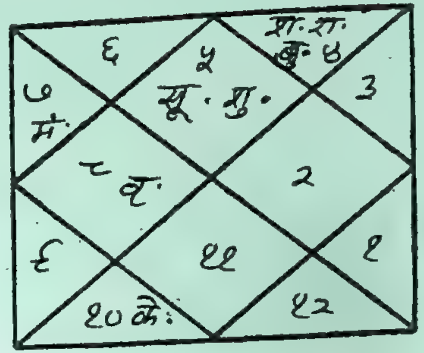
६
५ सू·शु·
श·रा· बु·४
७ मं·
३
८ वृ·
२
९
११
१
१० के·
१२

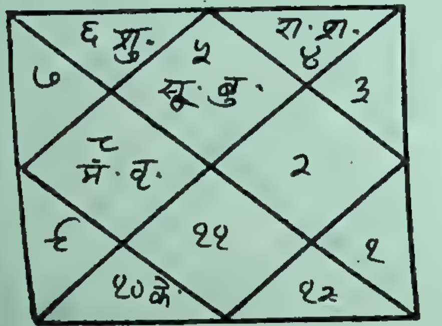
६ शु·
५ सू·बु·
रा·श· ४
७
३
८ मं·वृ·
२
९
११
१
१० के·
१२

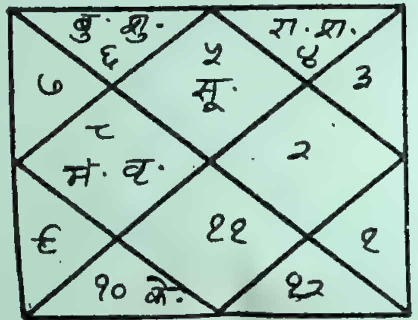
बु·शु· ६
५ सू·
रा·श· ४
७
३
८ मं·वृ·
२
९
११
१
१० के·
१२

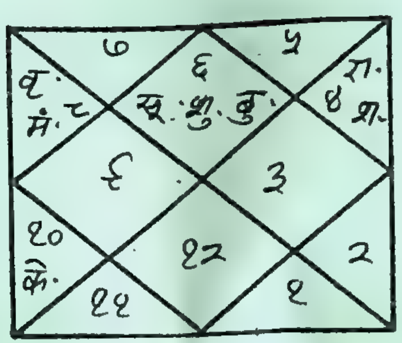
७
६ सू·शु·बु·
५
वृ· मं· ८
४ रा· श·
९
३
१० के·
१२
२
११
१

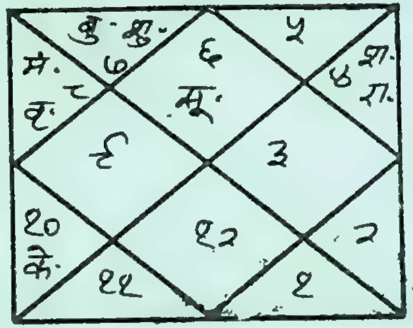
बु·शु· ७
६ सू·
५
मं· वृ· ८
४ श· रा·
९
३
१० के·
१२
२
११
१

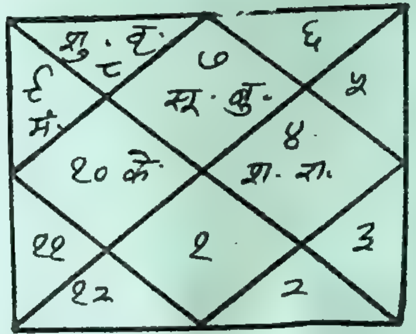
शु·वृ· ८
७ सू·बु·
६
९ मं·
५
१० के·
४ श·रा·
११
१
३
१२
२

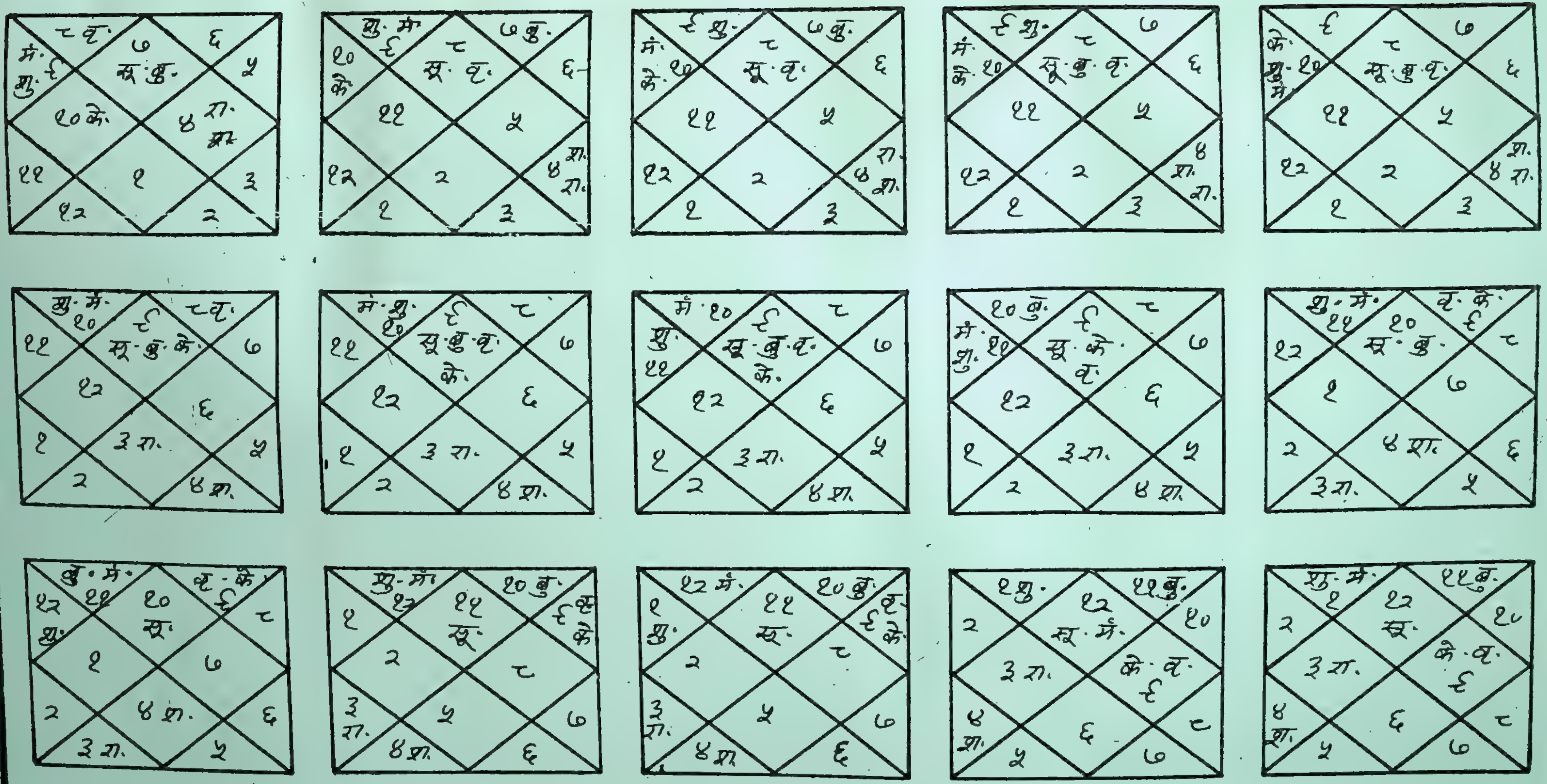

भू० सं०

कु० प०

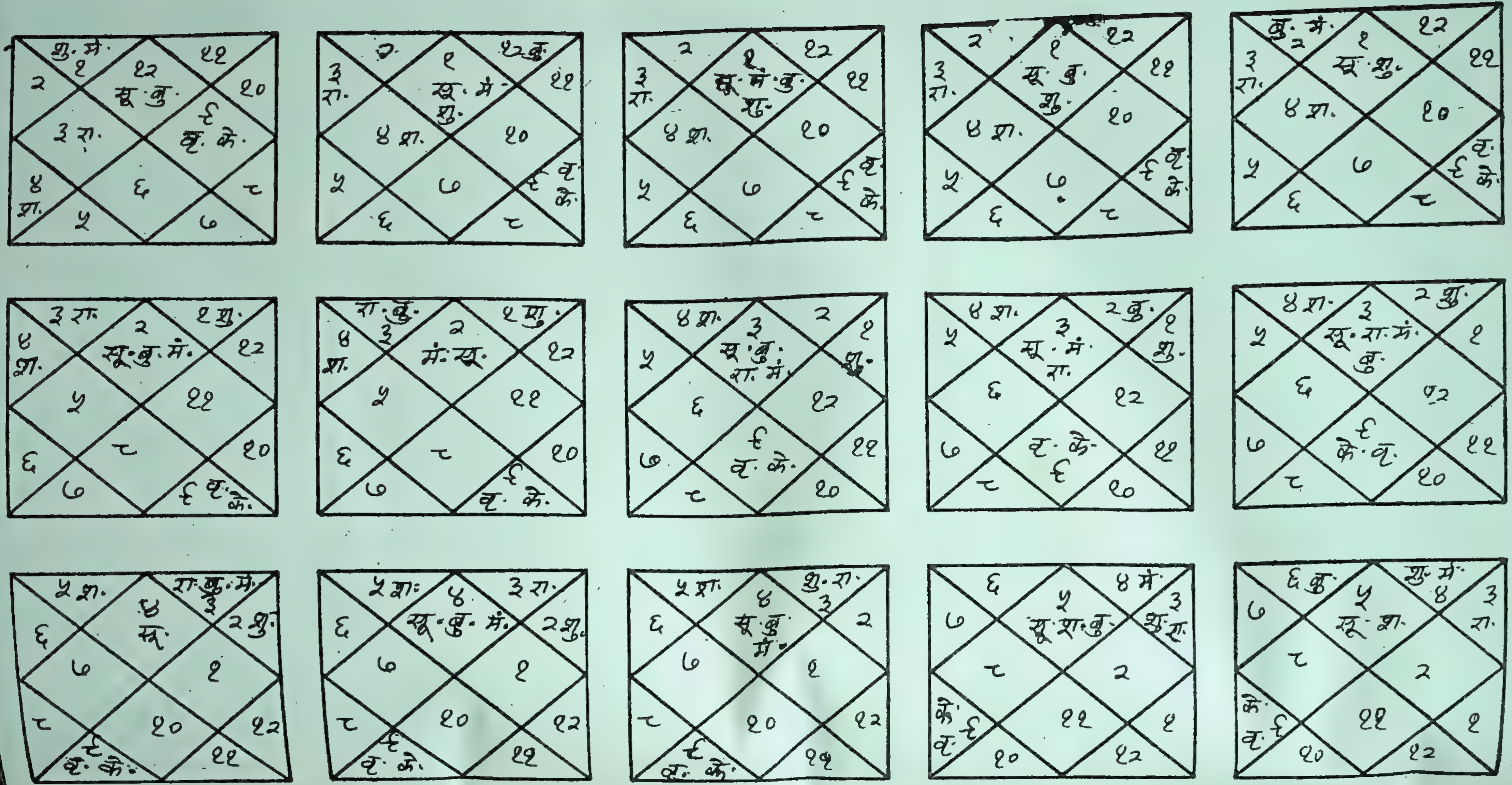

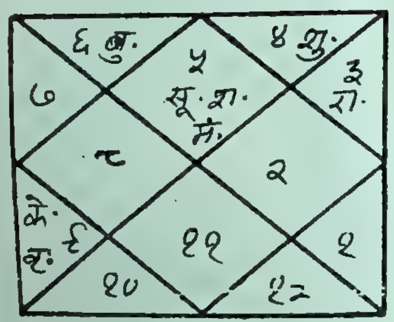
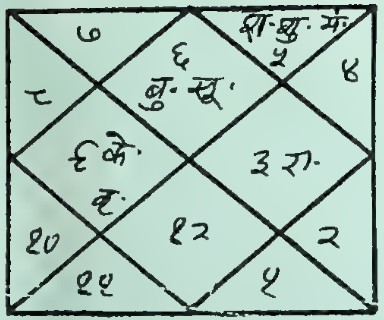
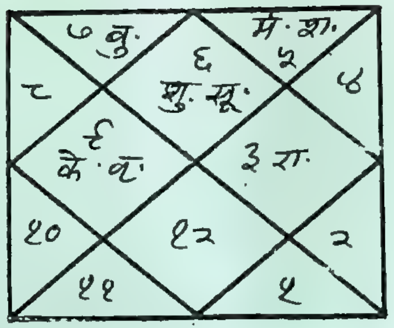
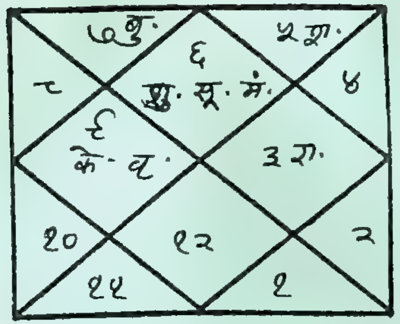
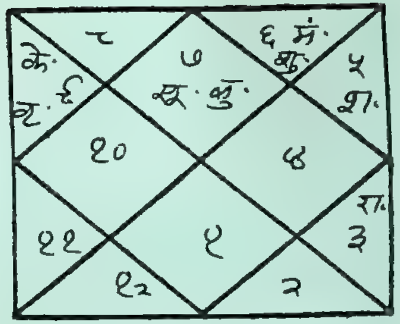

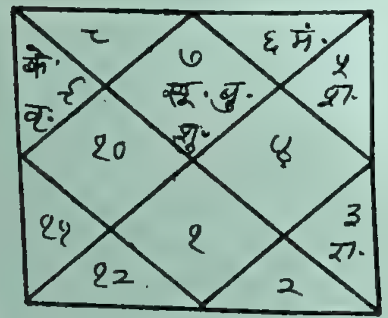
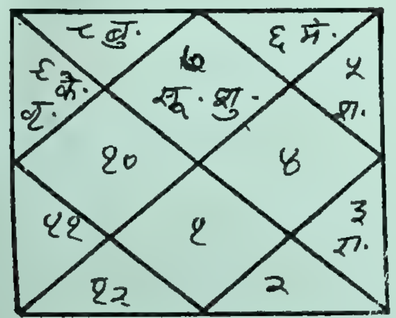
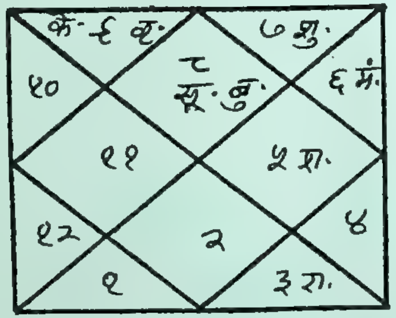
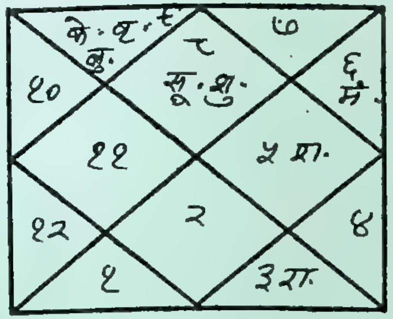
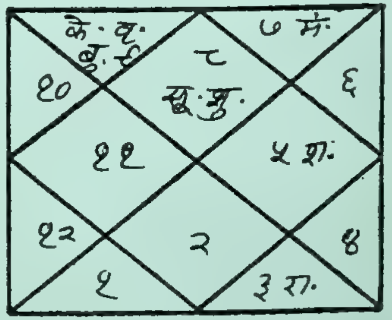

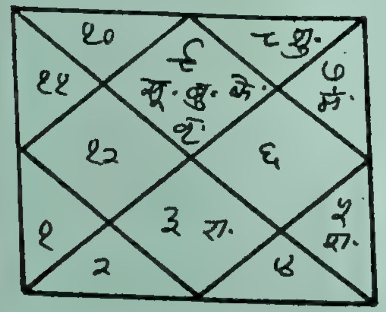
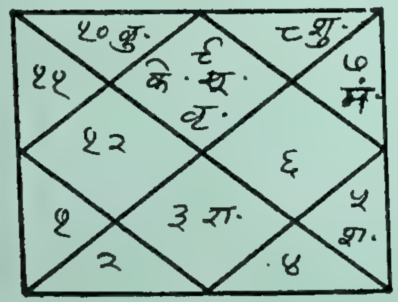
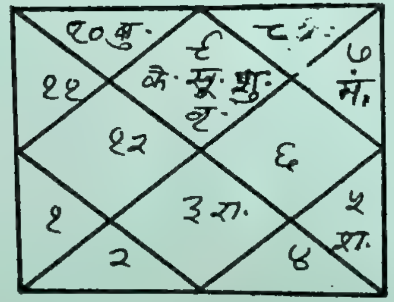
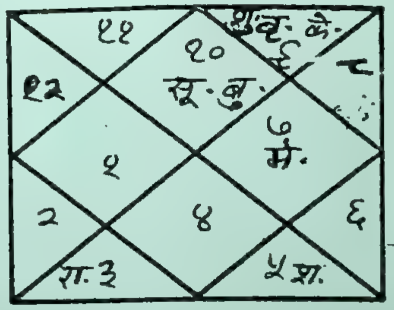
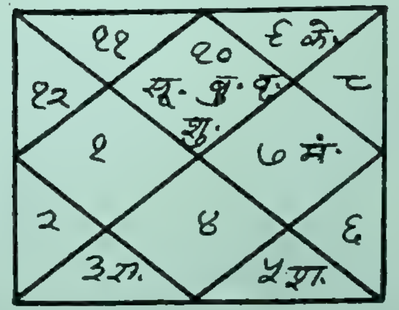

भू० सं० ८४३

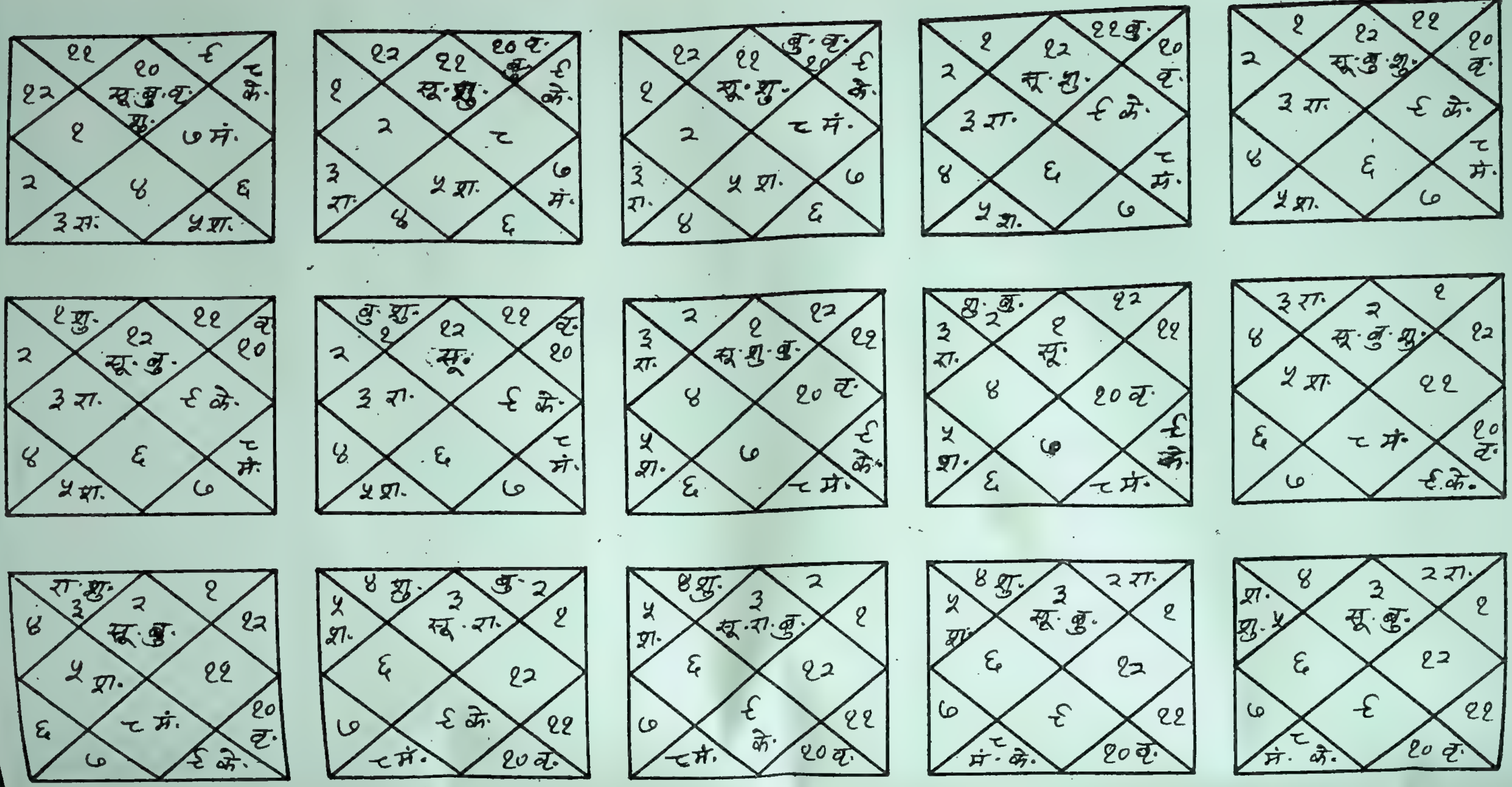

कु० प०

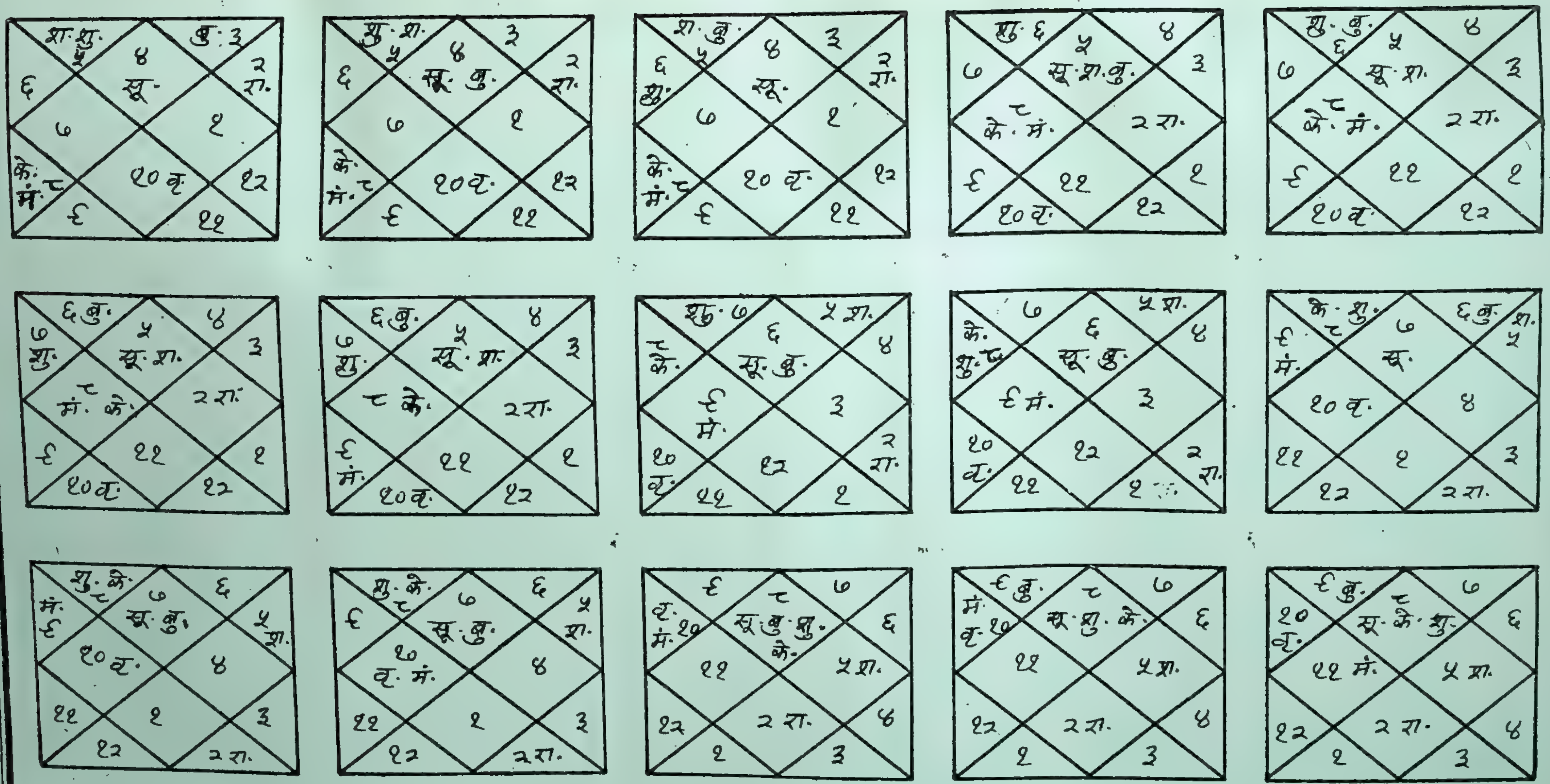

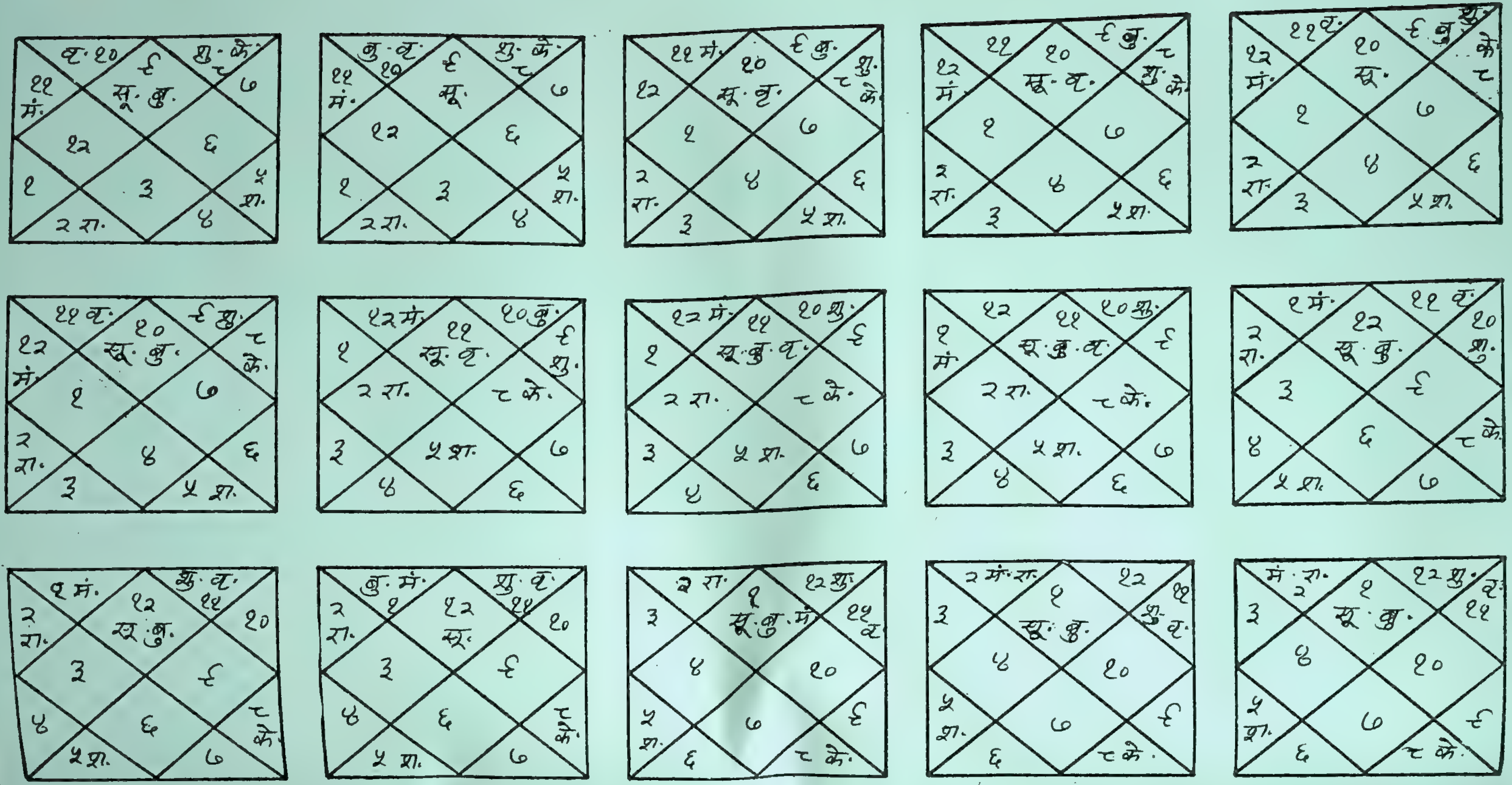

मू० सं० ११५

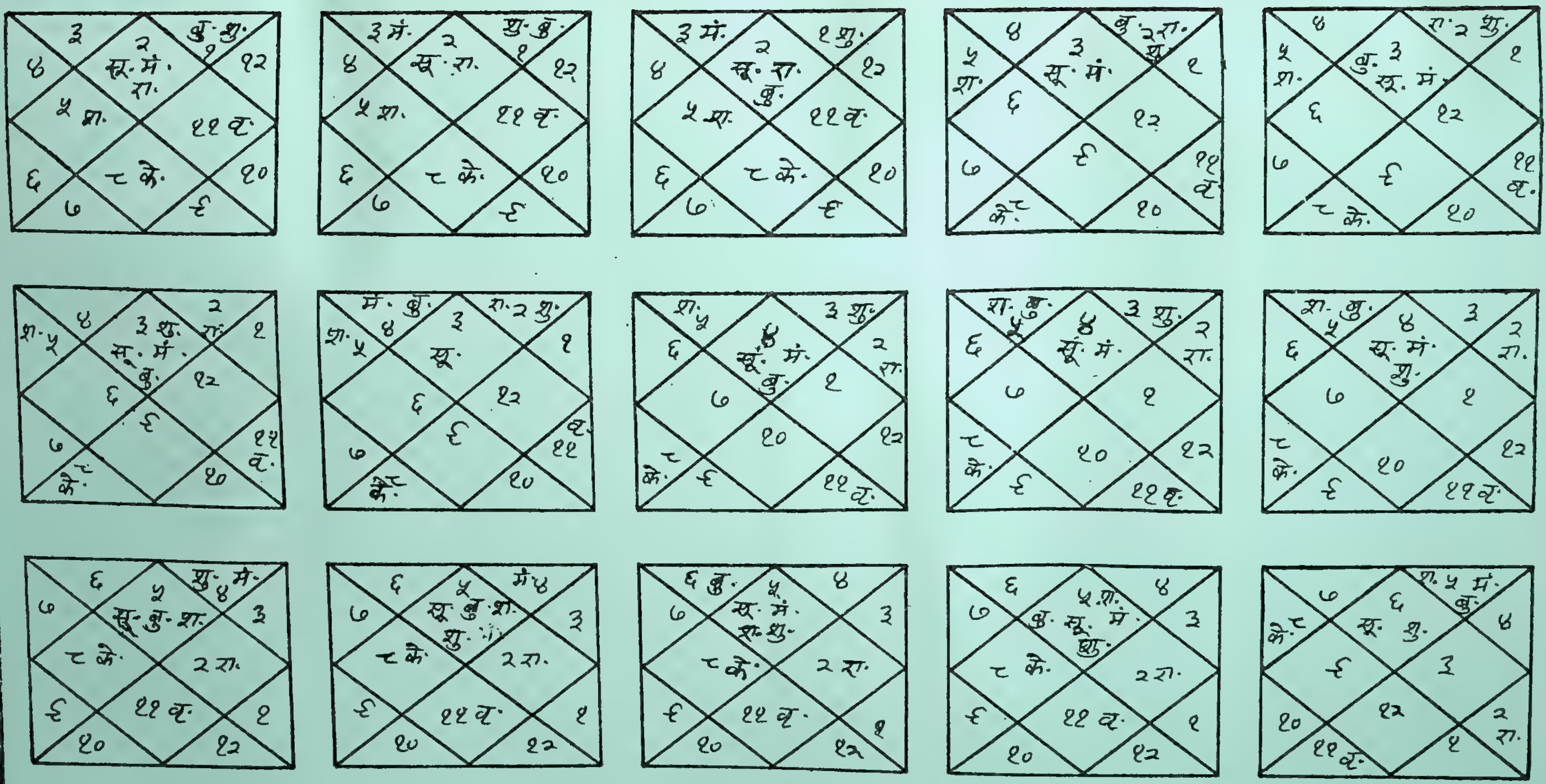

कु० प०

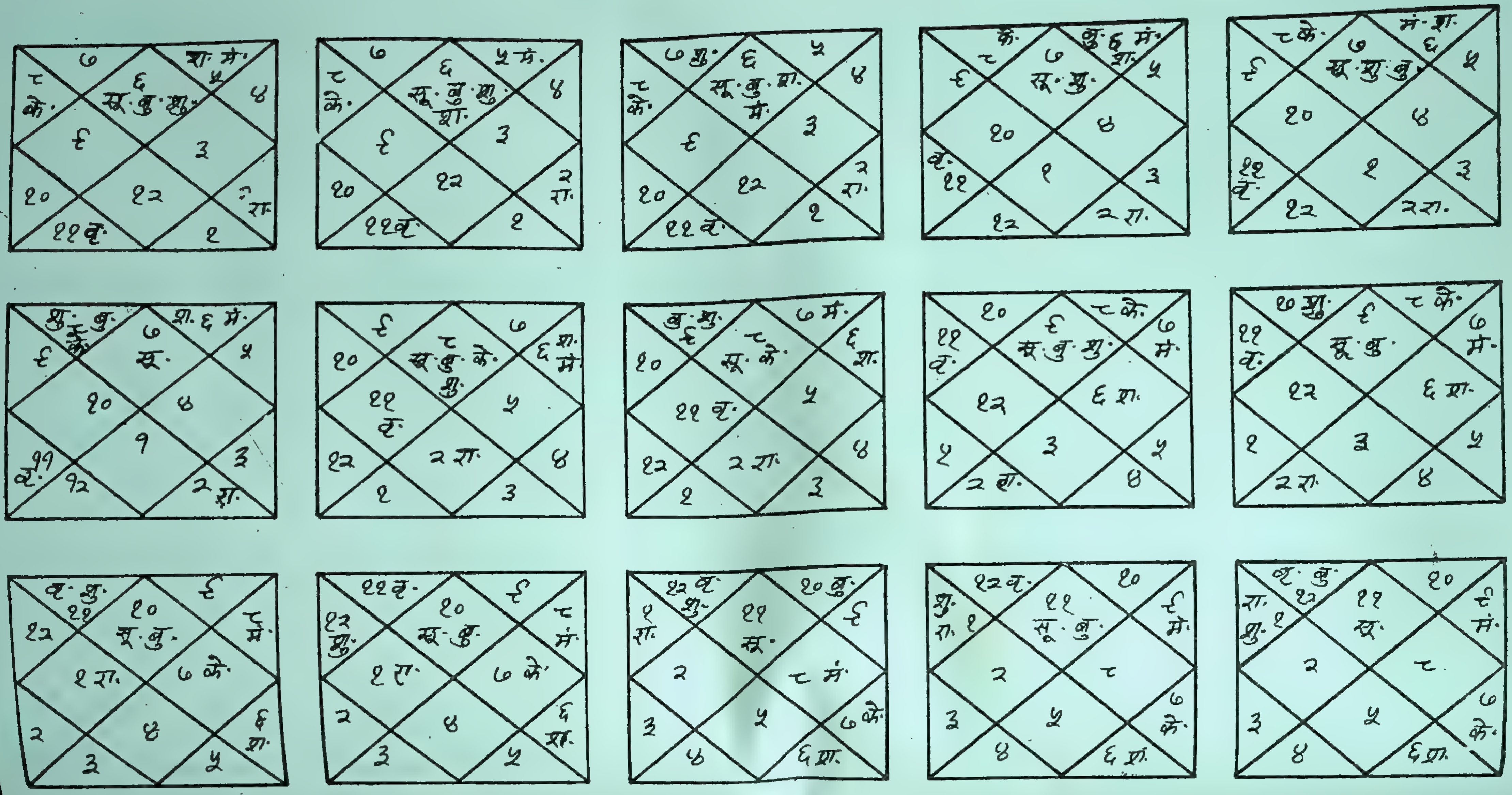

मृ० सं०

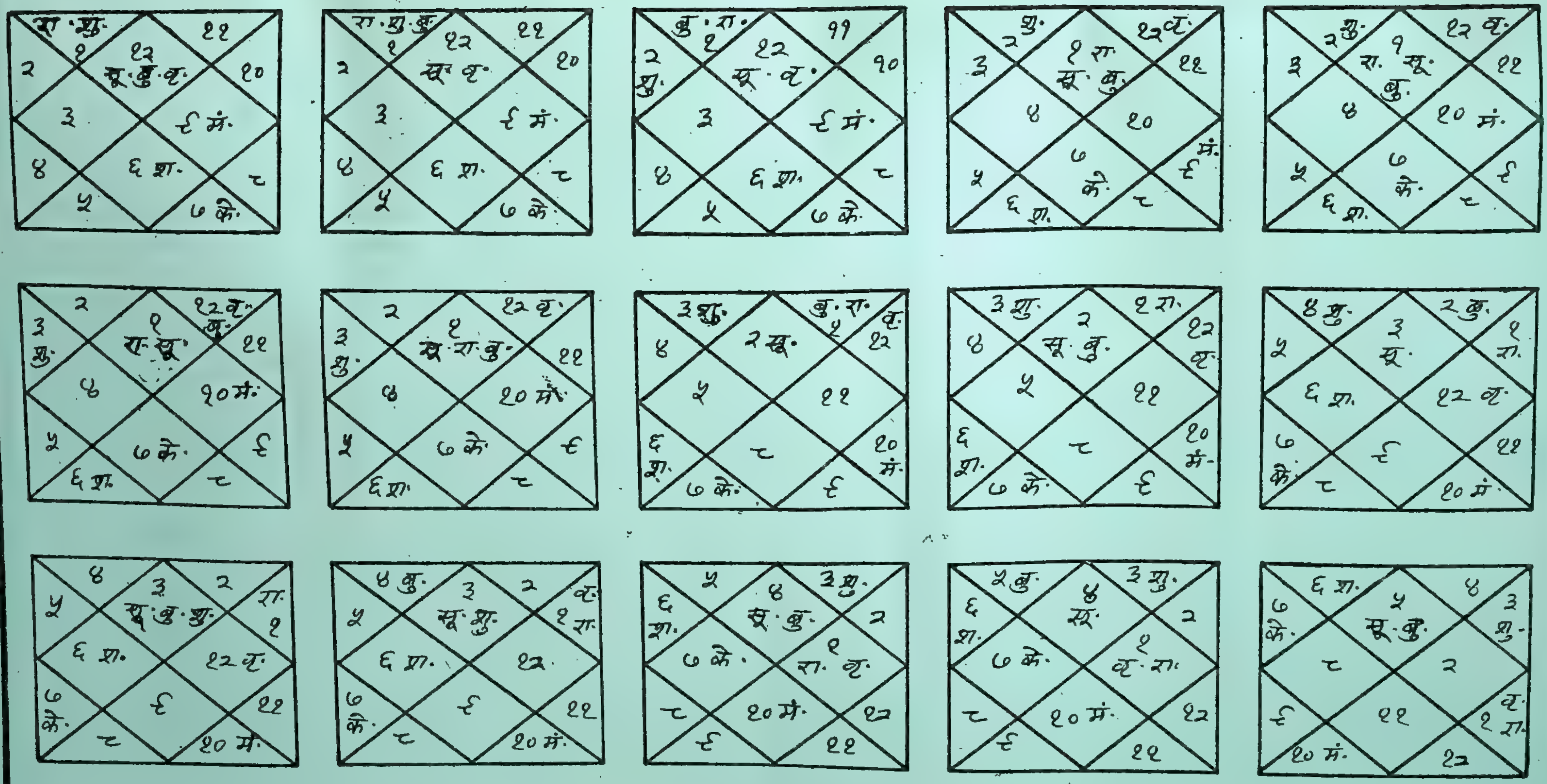

कु० प०

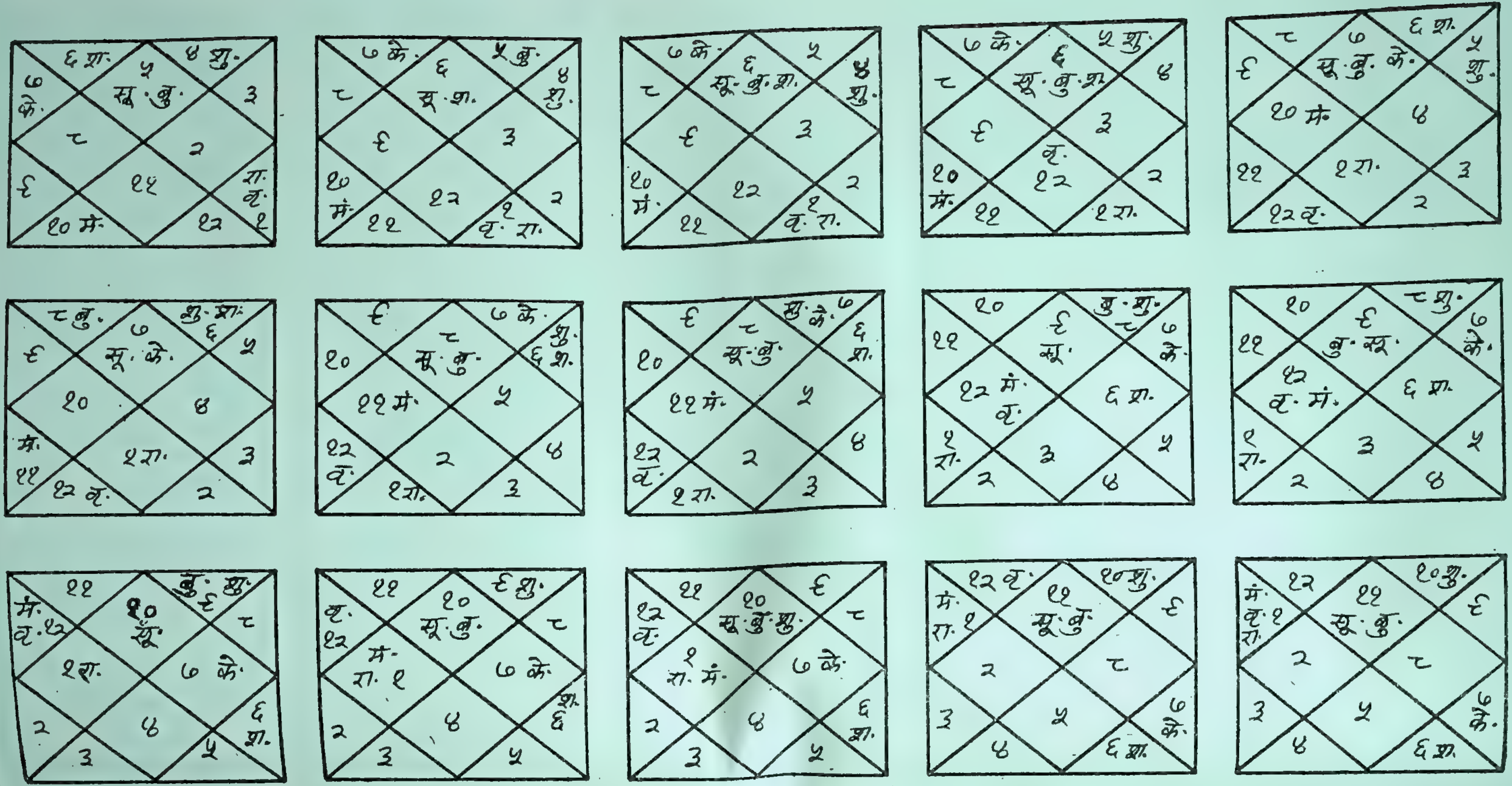

शु० सं० ३३३

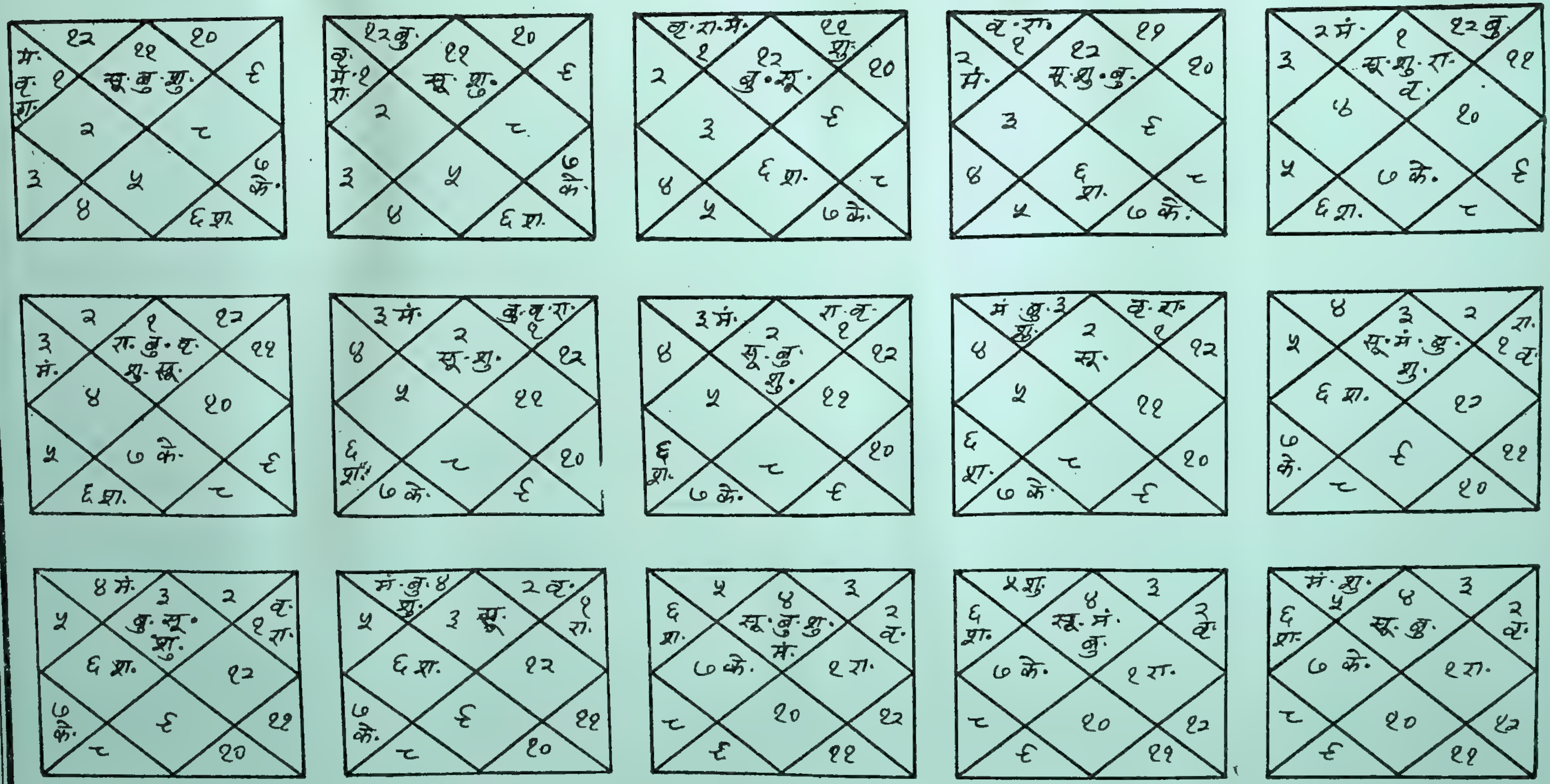

कु० प०

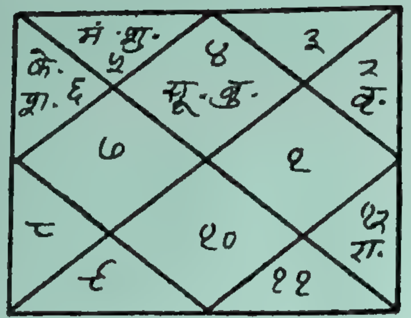
मं. शु.
५
४
३
के. श. ६
सू. बु.
२ वृ.
७
१
८
१०
१२ रा.
९
११

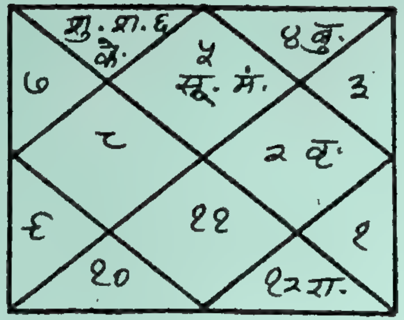
शु. श. ६ के.
५ सू. मं.
४ बु.
७
३
८
२ वृ.
९
११
१
१०
१२ रा.

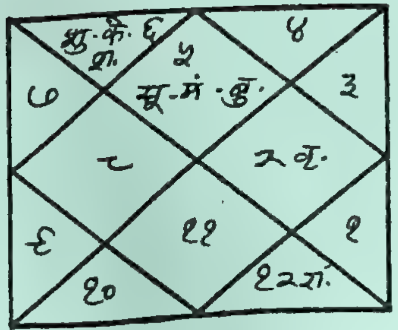
शु. के. ६ श.
५ सू. मं. बु.
४
७
३
८
२ वृ.
९
११
१
१०
१२ रा.

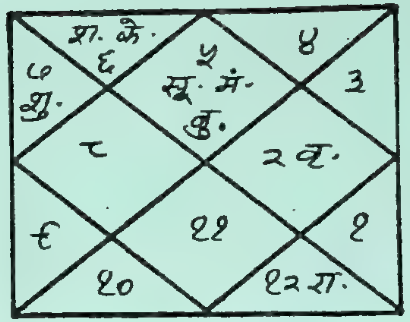
श. के. ६
५ सू. मं. बु.
४
७ शु.
३
८
२ वृ.
९
११
१
१०
१२ रा.

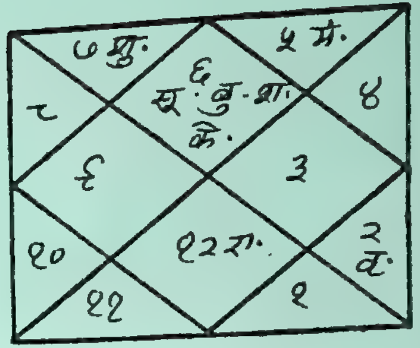
७ शु.
५ मं.
६ सू. बु. श. के.
४
८
९
३
१०
१२ रा.
२ वृ.
११
१

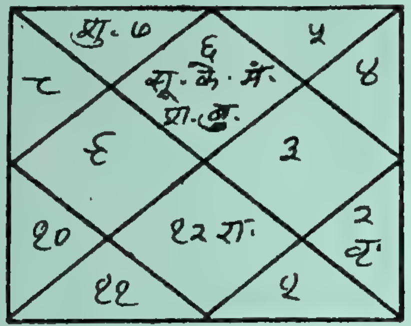
शु. ७
६ सू. के. मं. श. बु.
५
८
४
९
३
१०
१२ रा.
२ वृ.
११
१

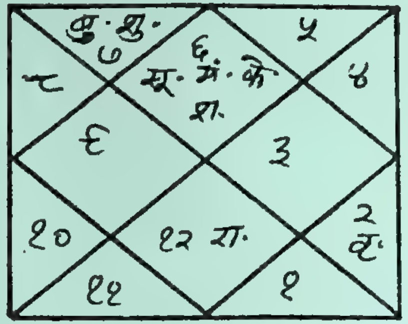
बु. शु. ७
६ सू. मं. के. श.
५
८
४
९
३
१०
१२ रा.
२ वृ.
११
१

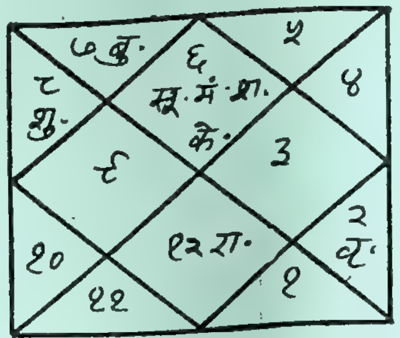
७ बु.
६ सू. मं. श. के.
५
८ शु.
४
९
३
१०
१२ रा.
२ वृ.
११
१

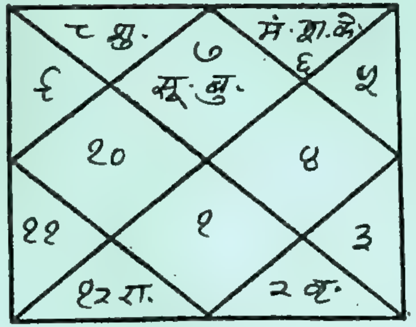
८ शु.
७ सू. बु.
मं. श. के. ६
९
५
१०
४
११
१
३
१२ रा.
२ वृ.

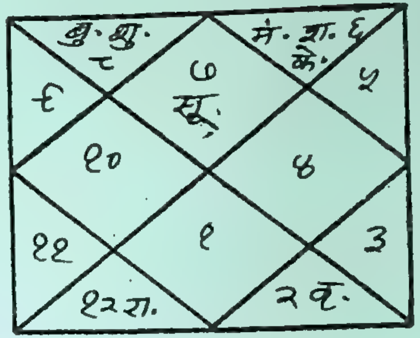
बु. शु. ८
७ सू.
मं. श. के. ६
९
५
१०
४
११
१
३
१२ रा.
२ वृ.

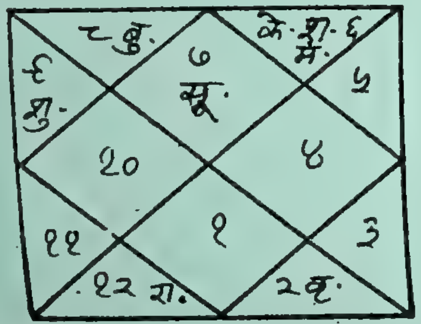
८ बु.
७ सू.
के. श. ६ मं.
९ शु.
५
१०
४
११
१
३
१२ रा.
२ वृ.

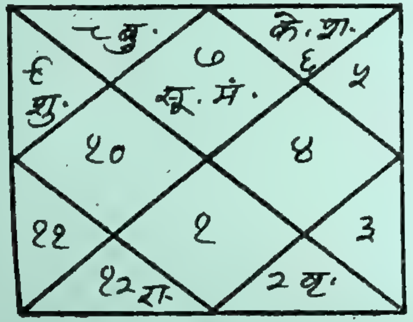
८ बु.
७ सू. मं.
के. श. ६
९ शु.
५
१०
४
११
१
३
१२ रा.
२ वृ.

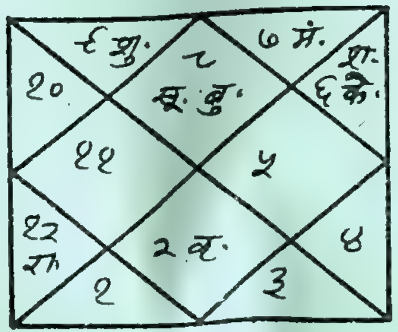
९ शु.
८ सू. बु.
७ मं.
१०
श. ६ के.
११
५
१२ रा.
२ वृ.
४
१
३

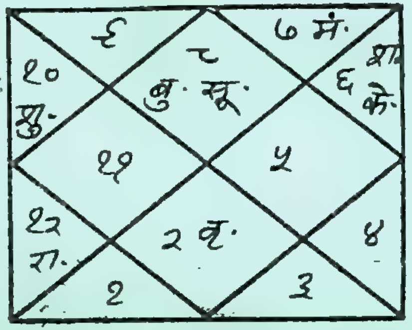
९
८ बु. सू.
७ मं.
१० शु.
श. ६ के.
११
५
१२ रा.
२ वृ.
४
१
३

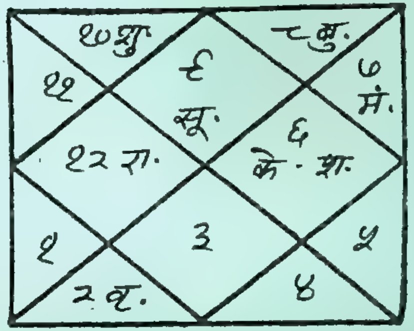
१० शु.
९ सू.
८ बु.
११
७ मं.
१२ रा.
६ के. श.
१
३
५
२ वृ.
४

कु० प०

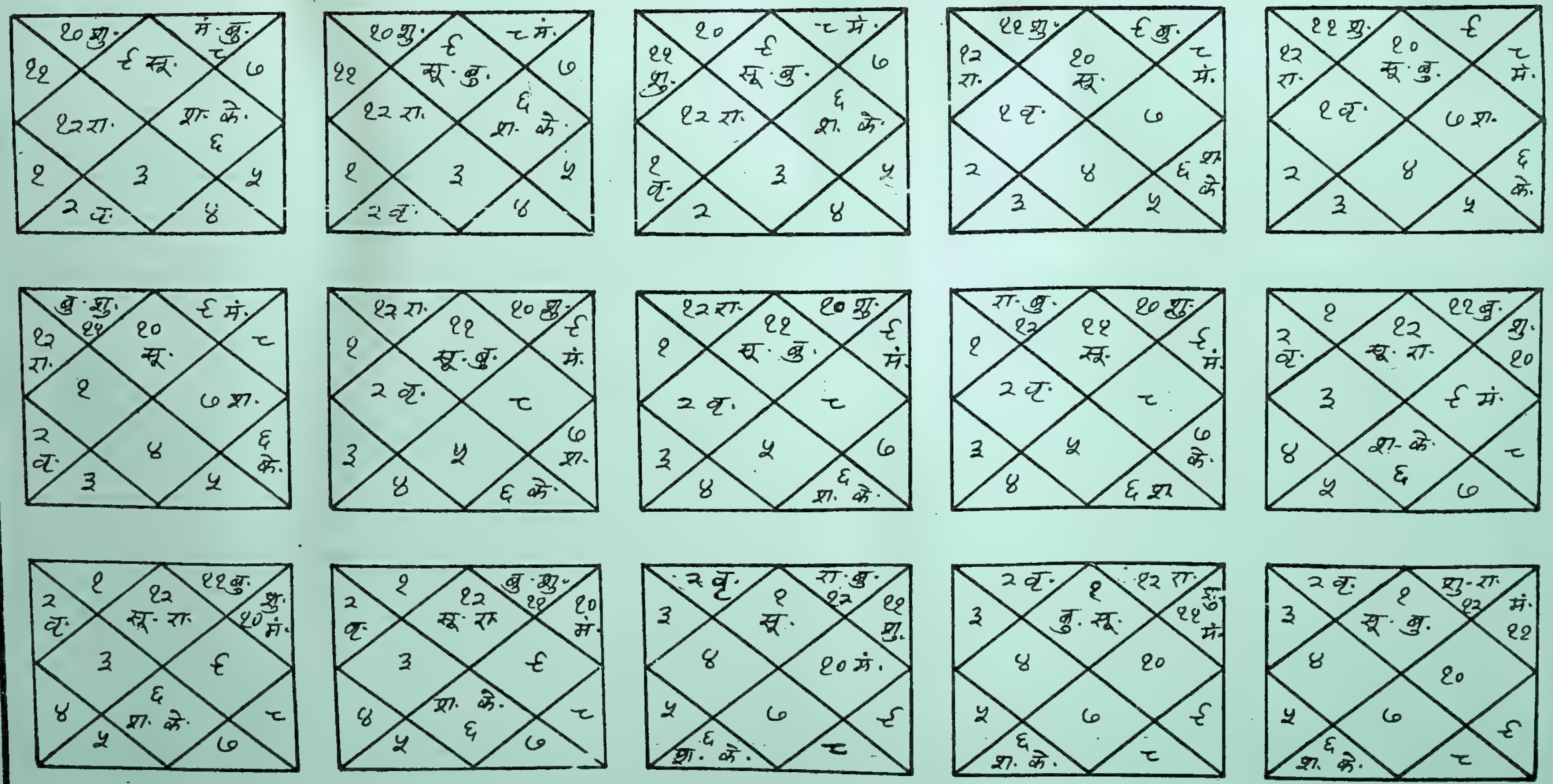

भृ० सं० ११२

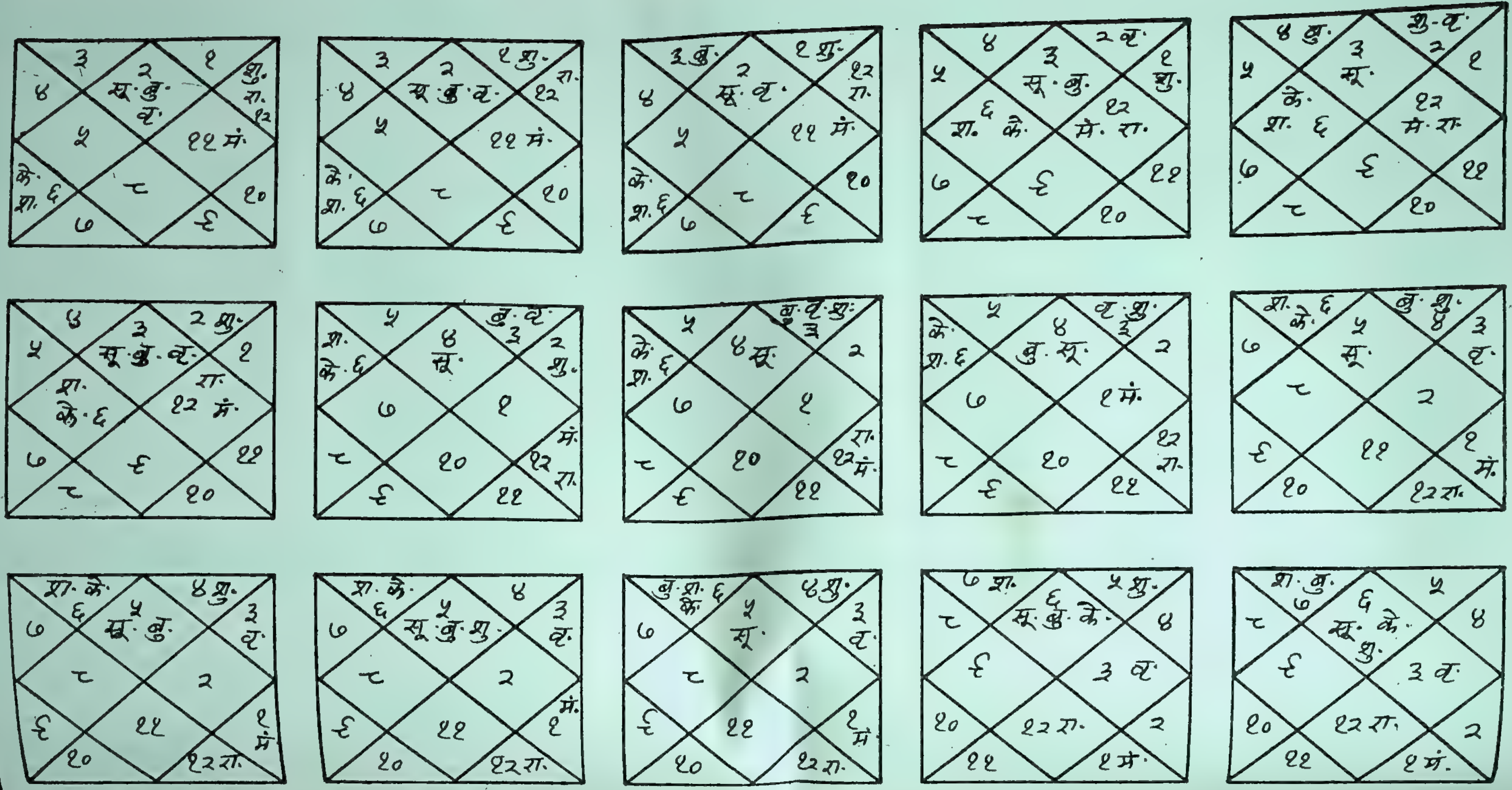

कु० प०

भ० सं० १२३

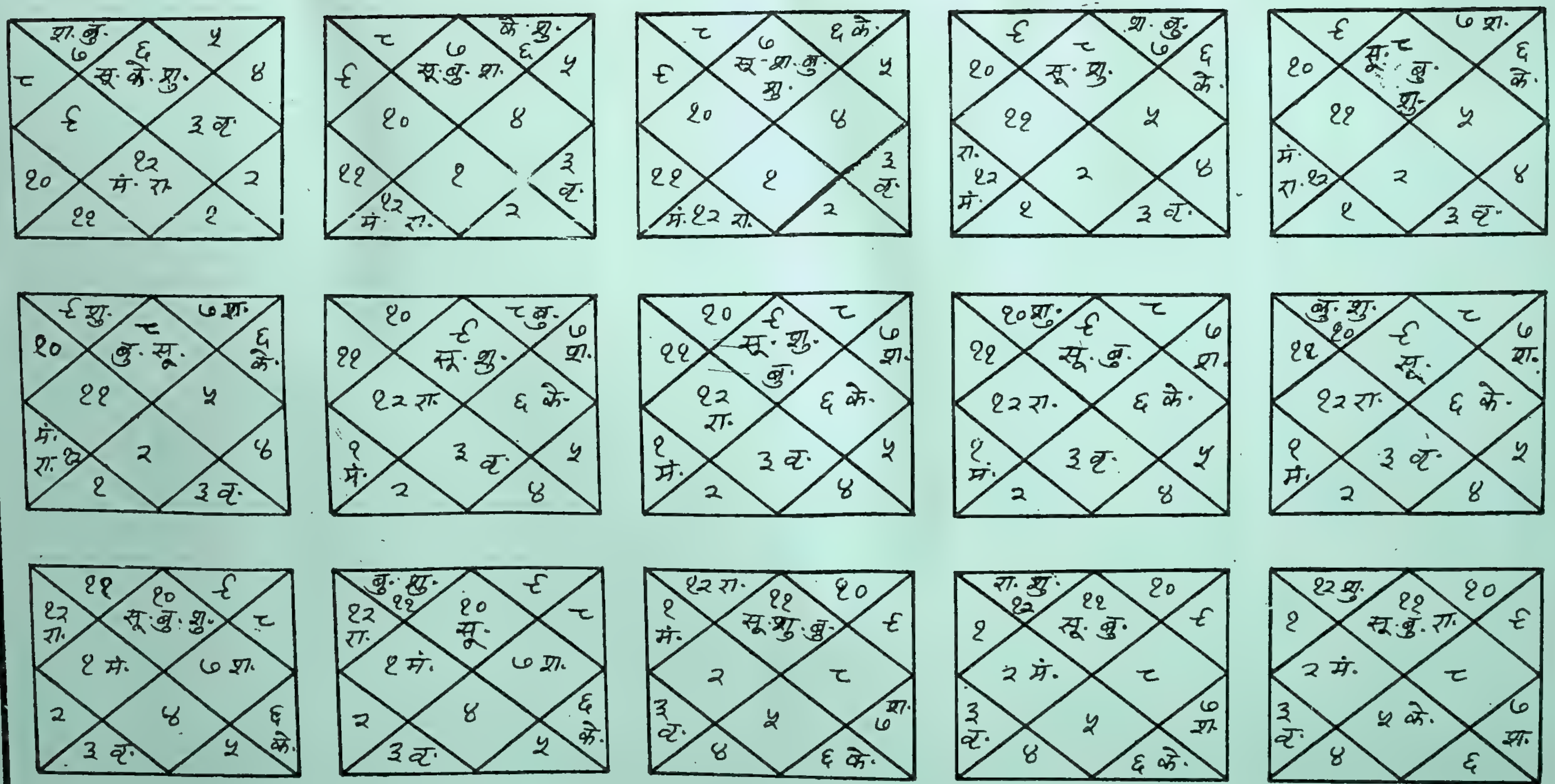

कु० प०

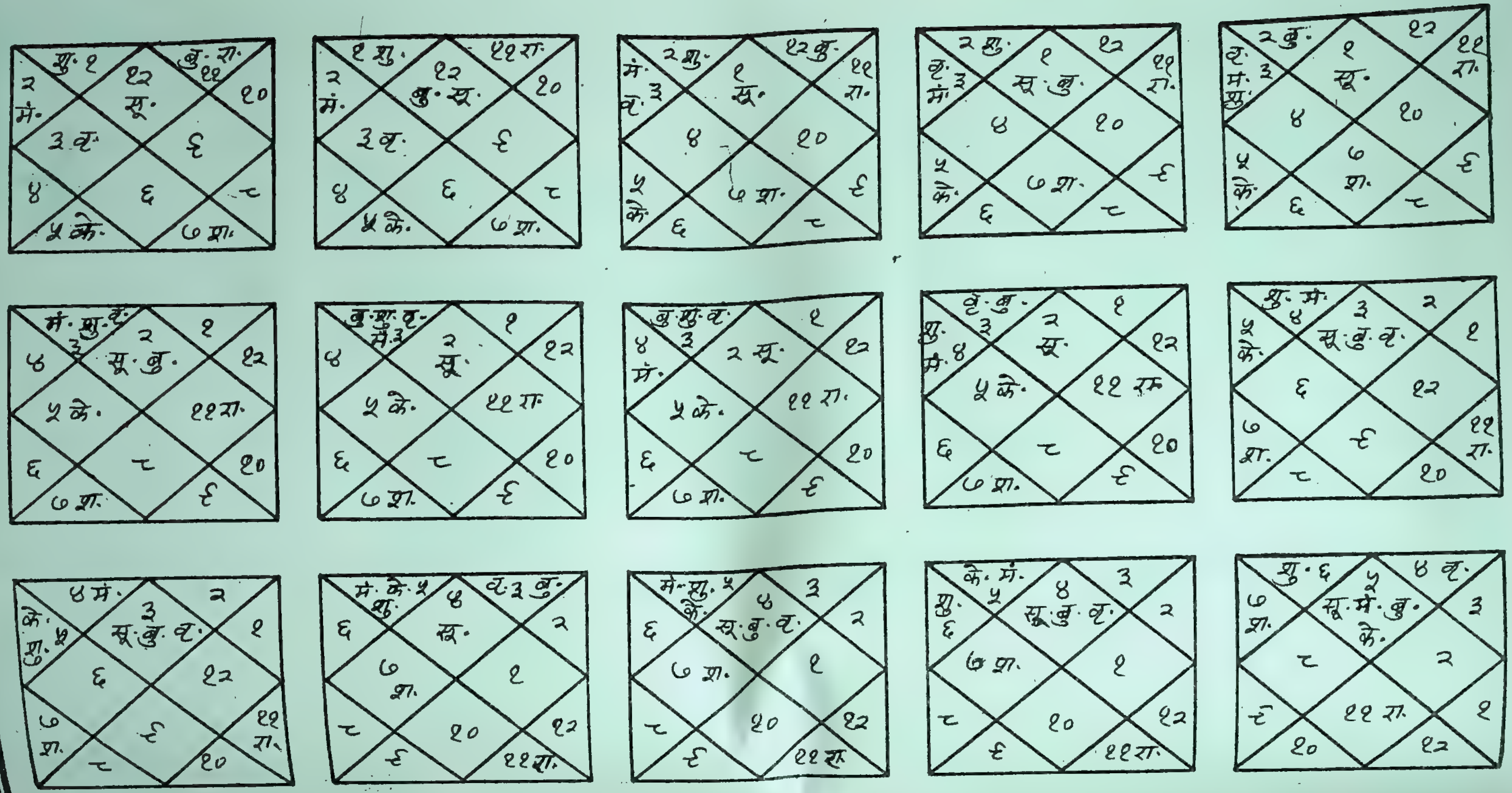

मू० सं० १२५

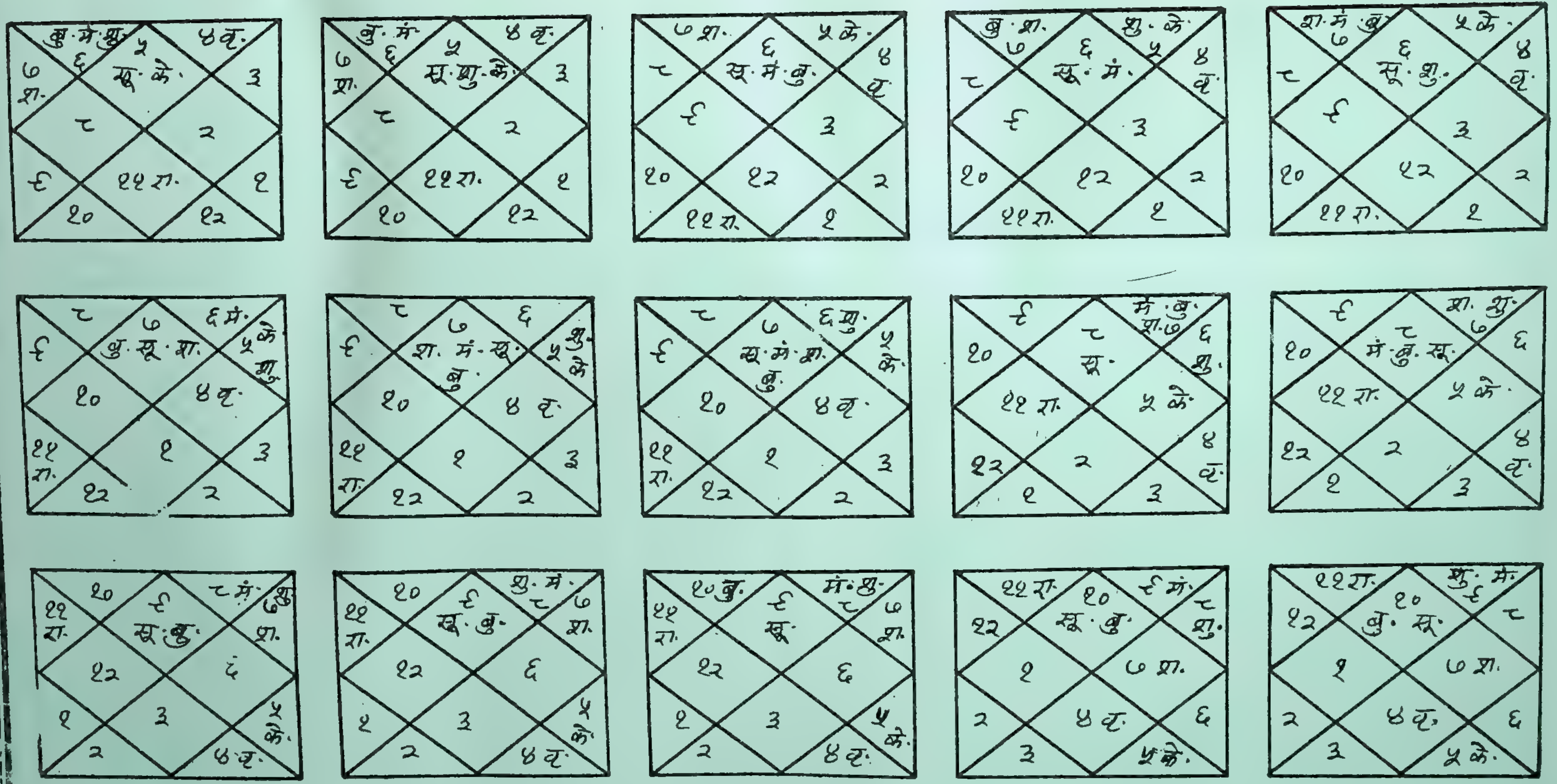

कु० प०

भू० सं० 328

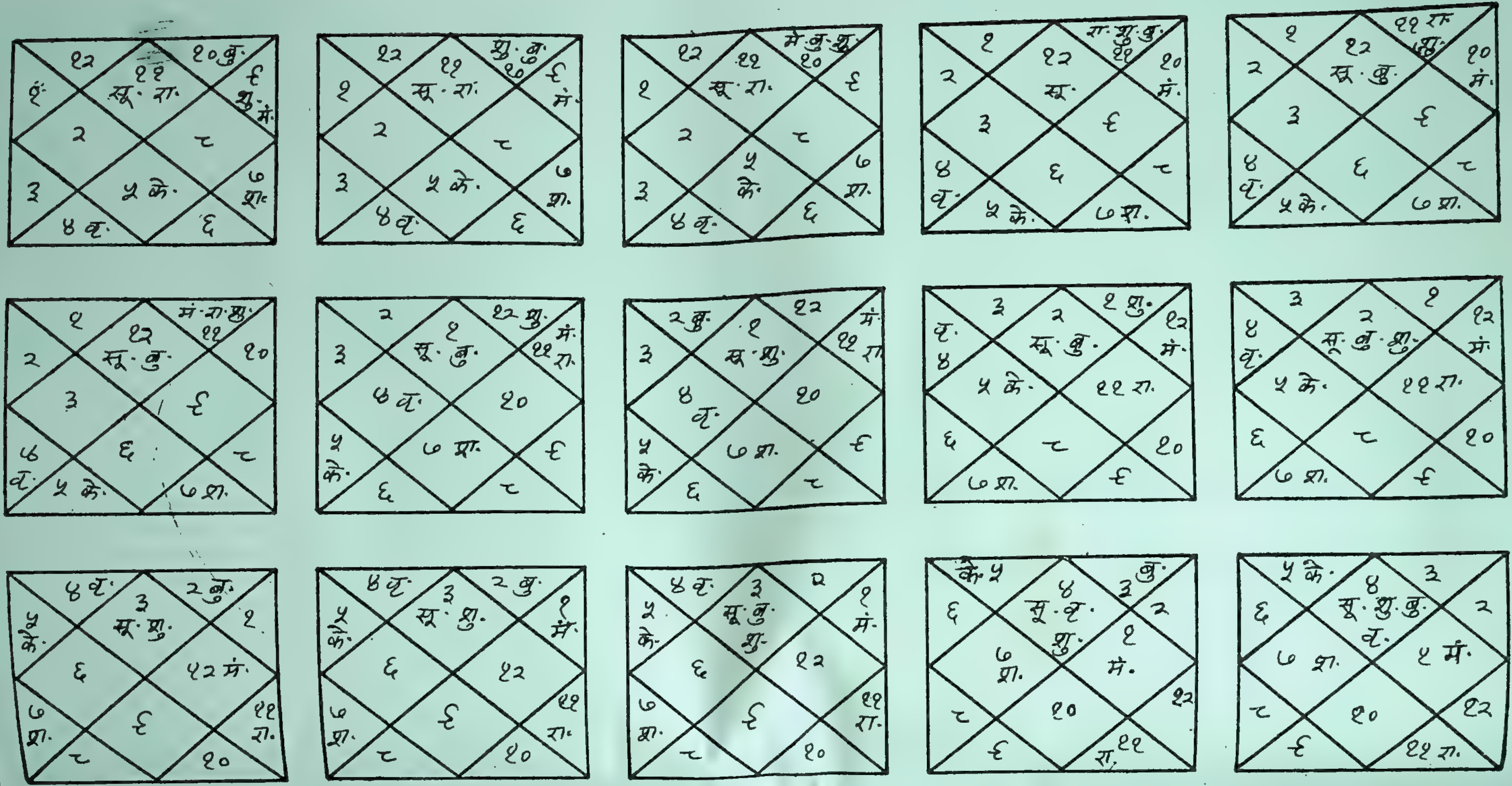

कु० प०

भ० सं० ७८७

कु० प०

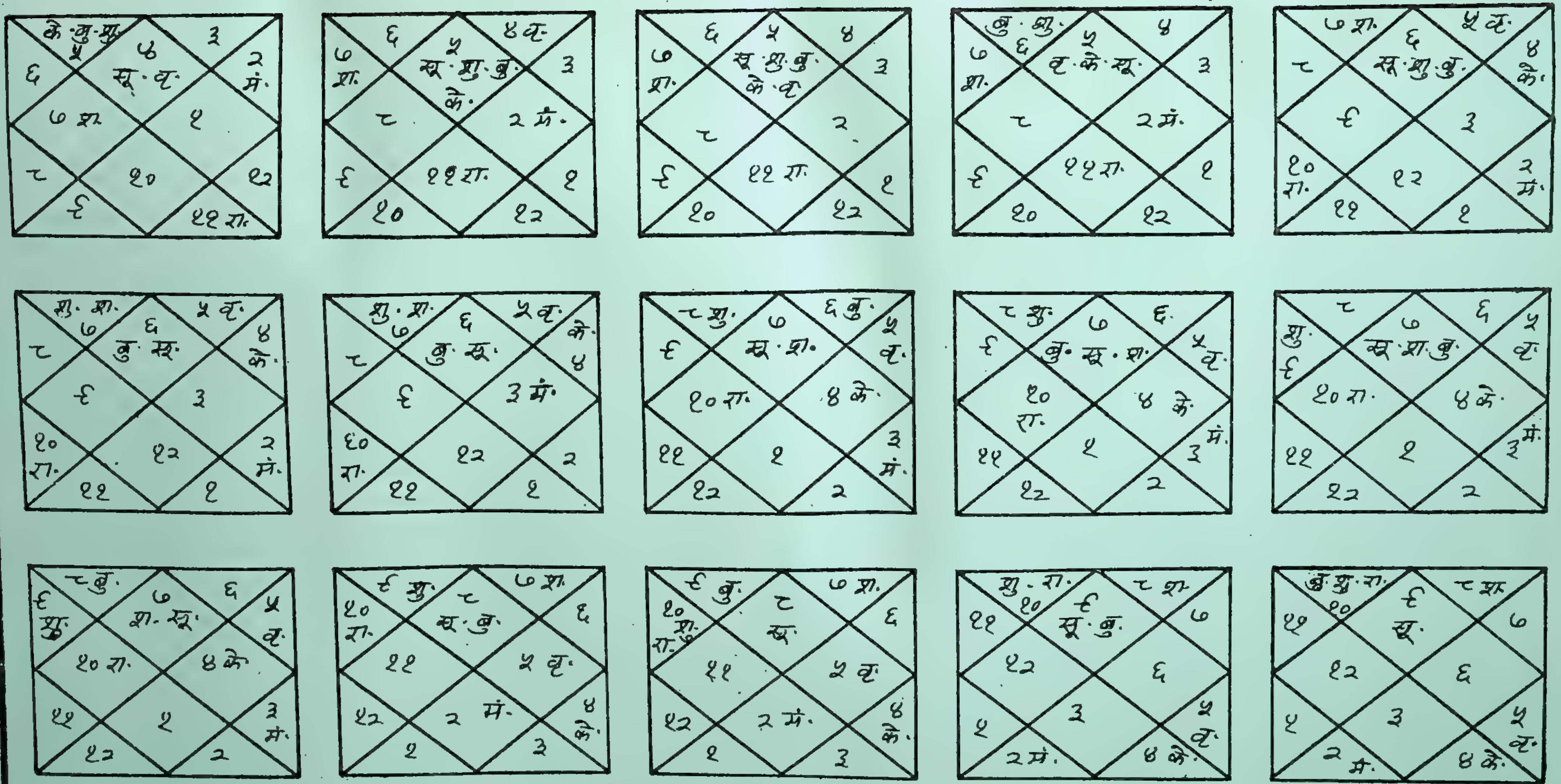

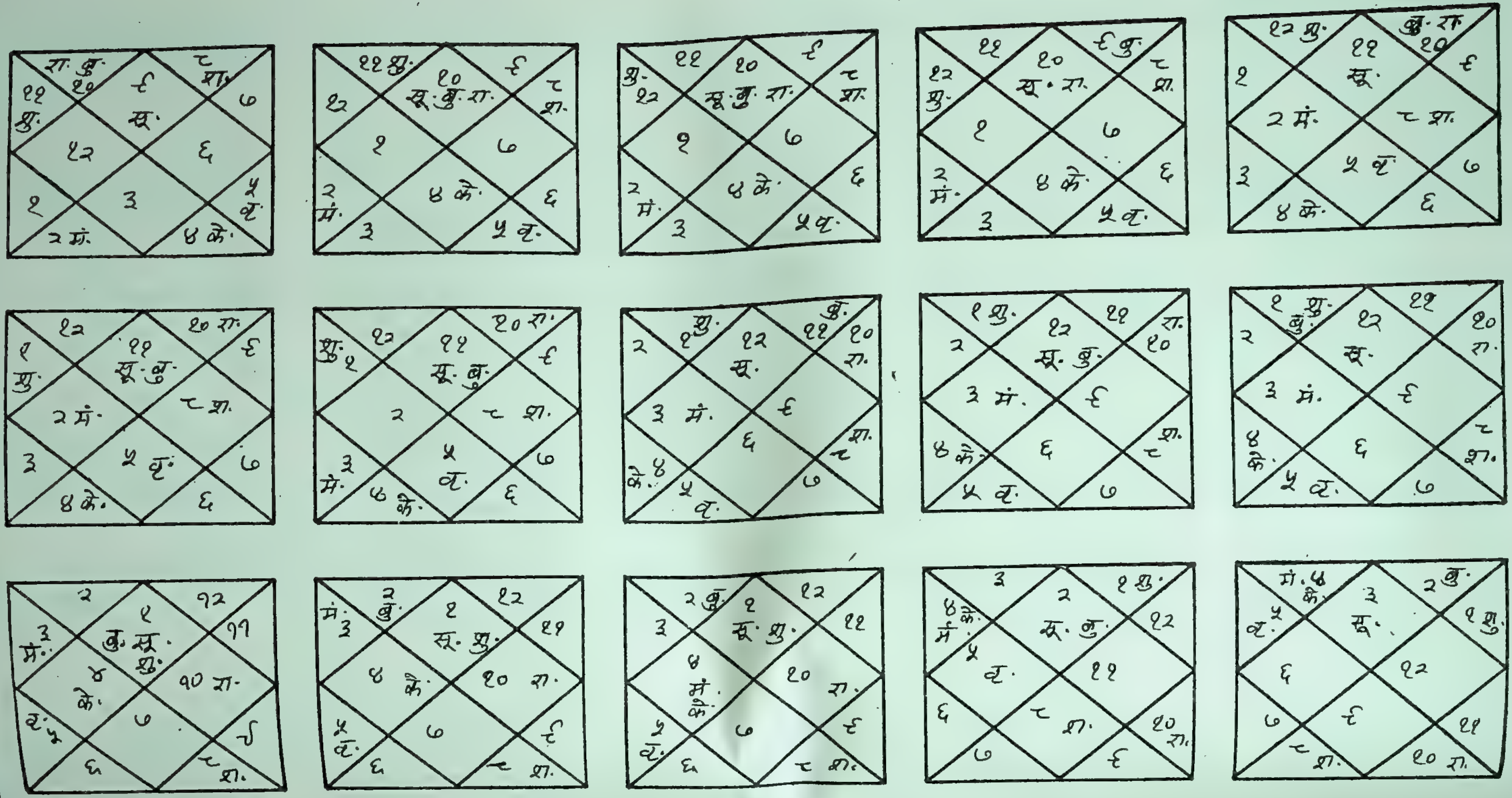

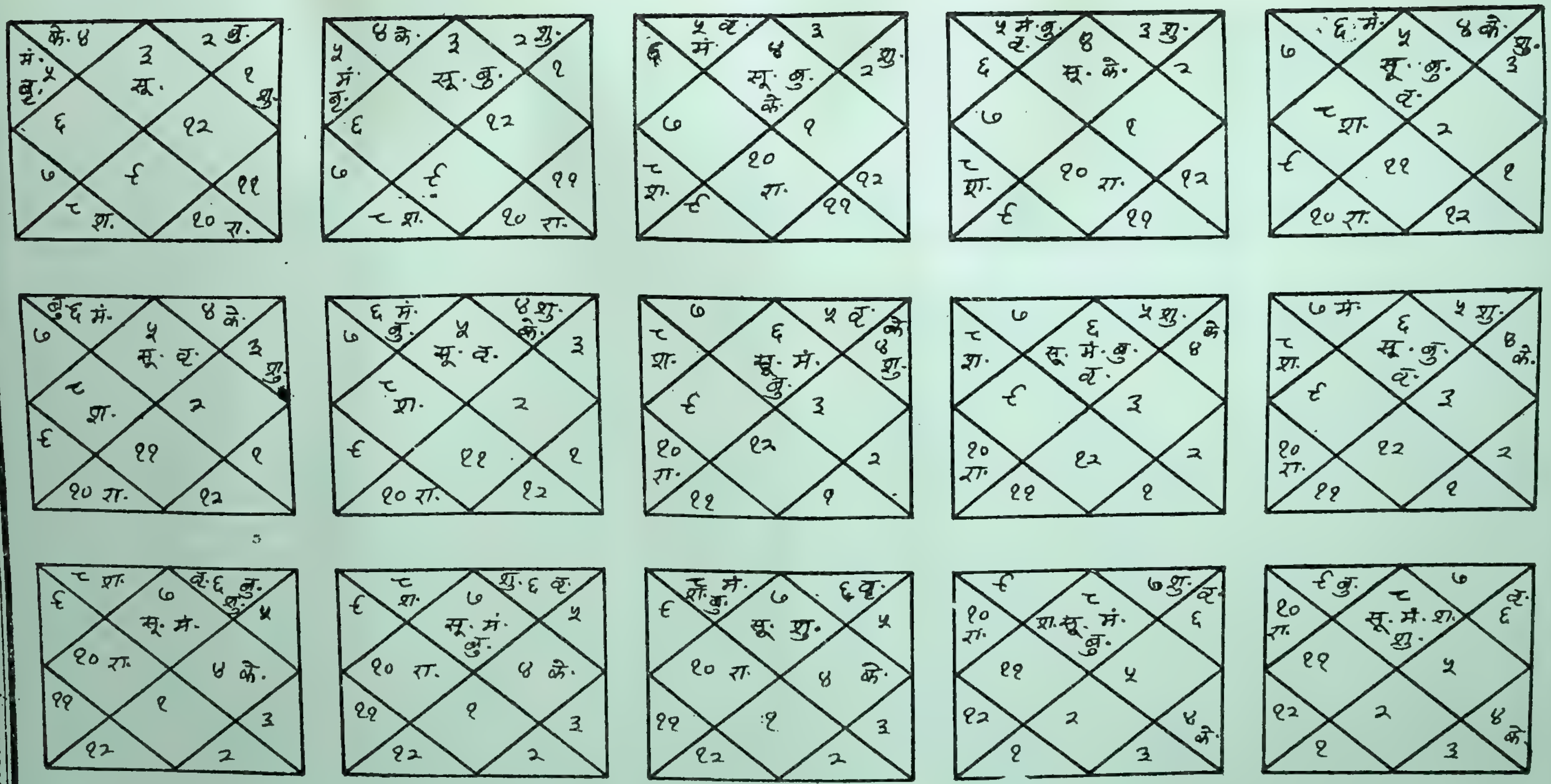

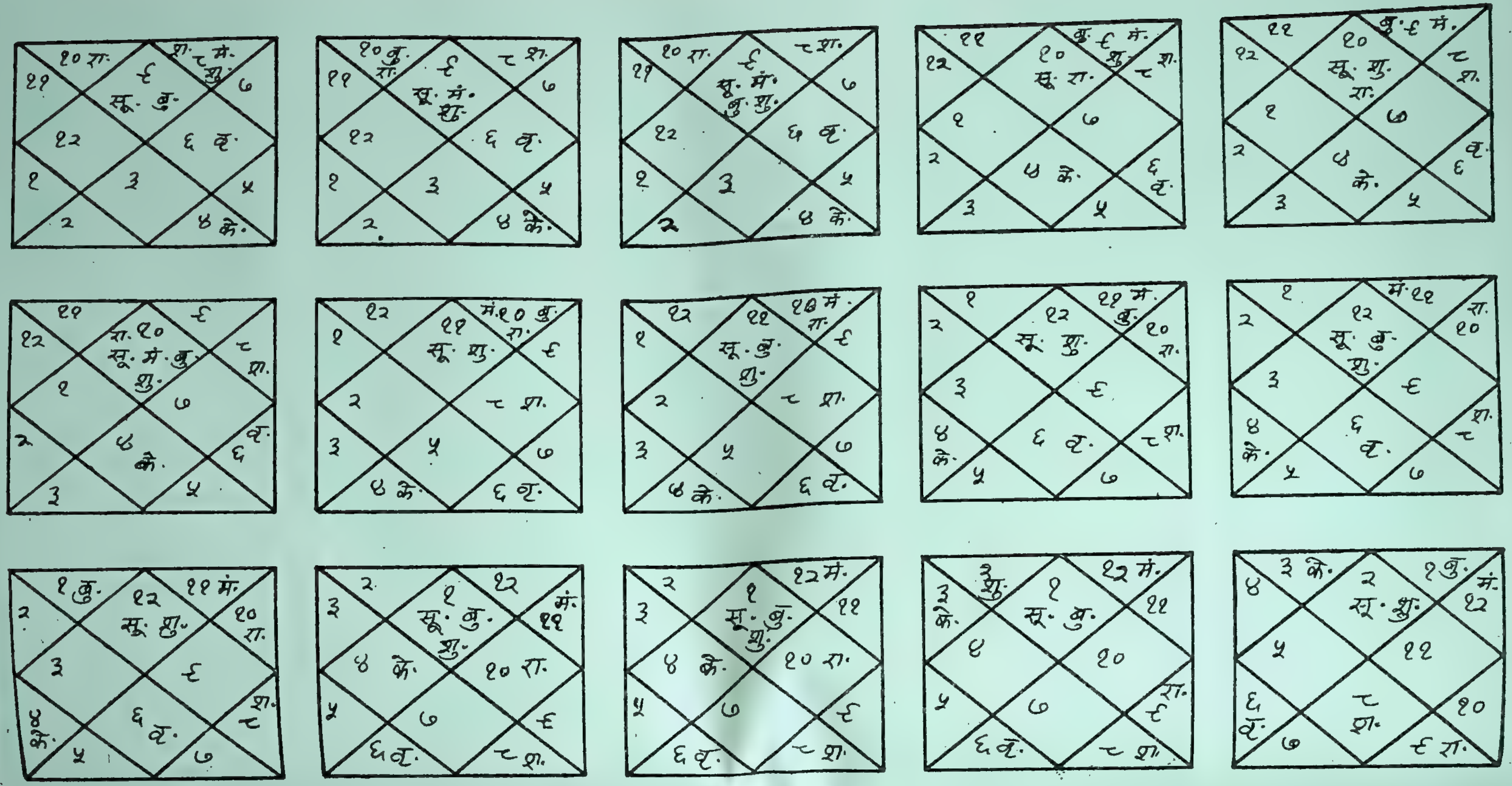

भृ० सं० १३१

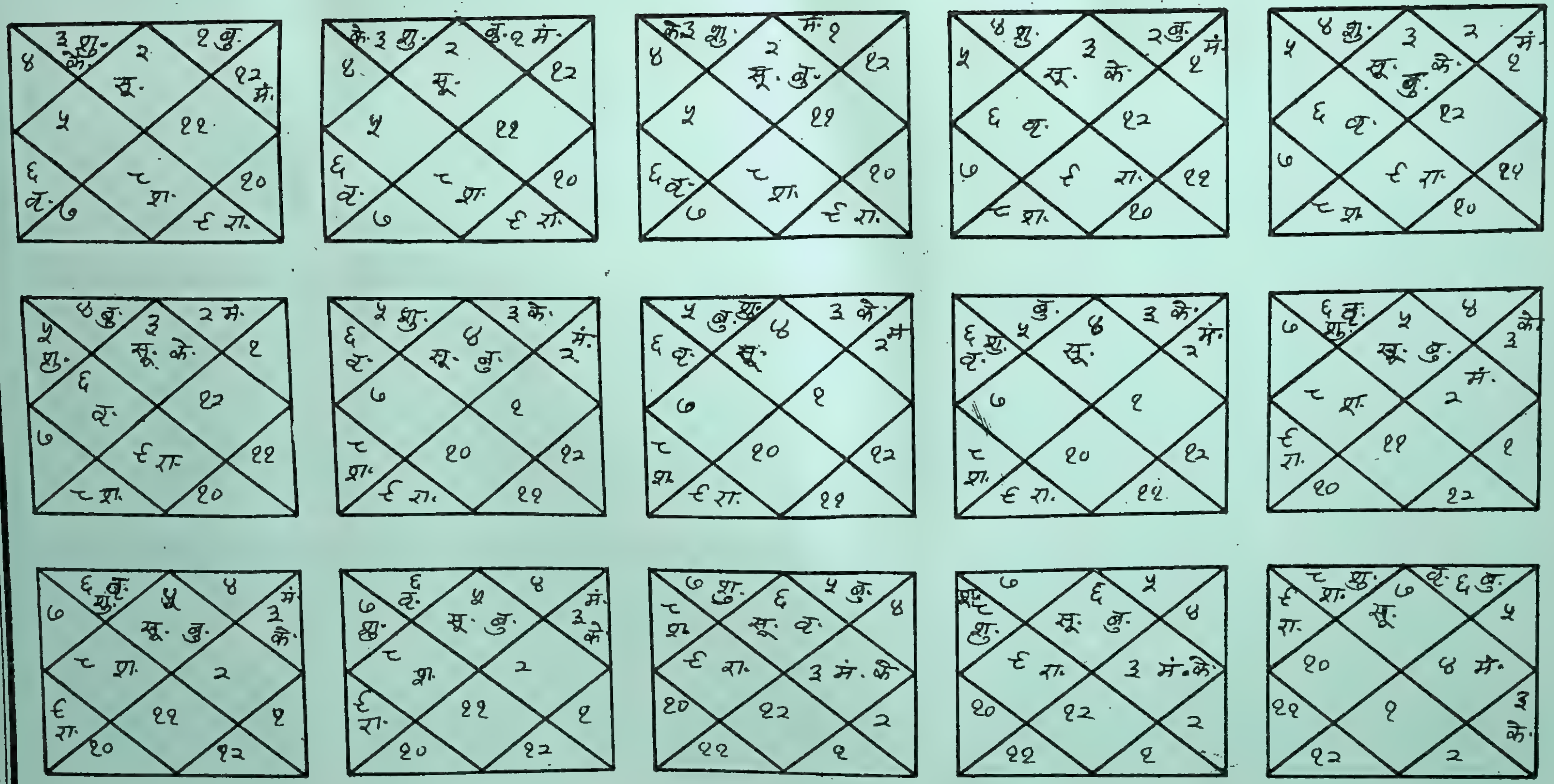

कु० प०

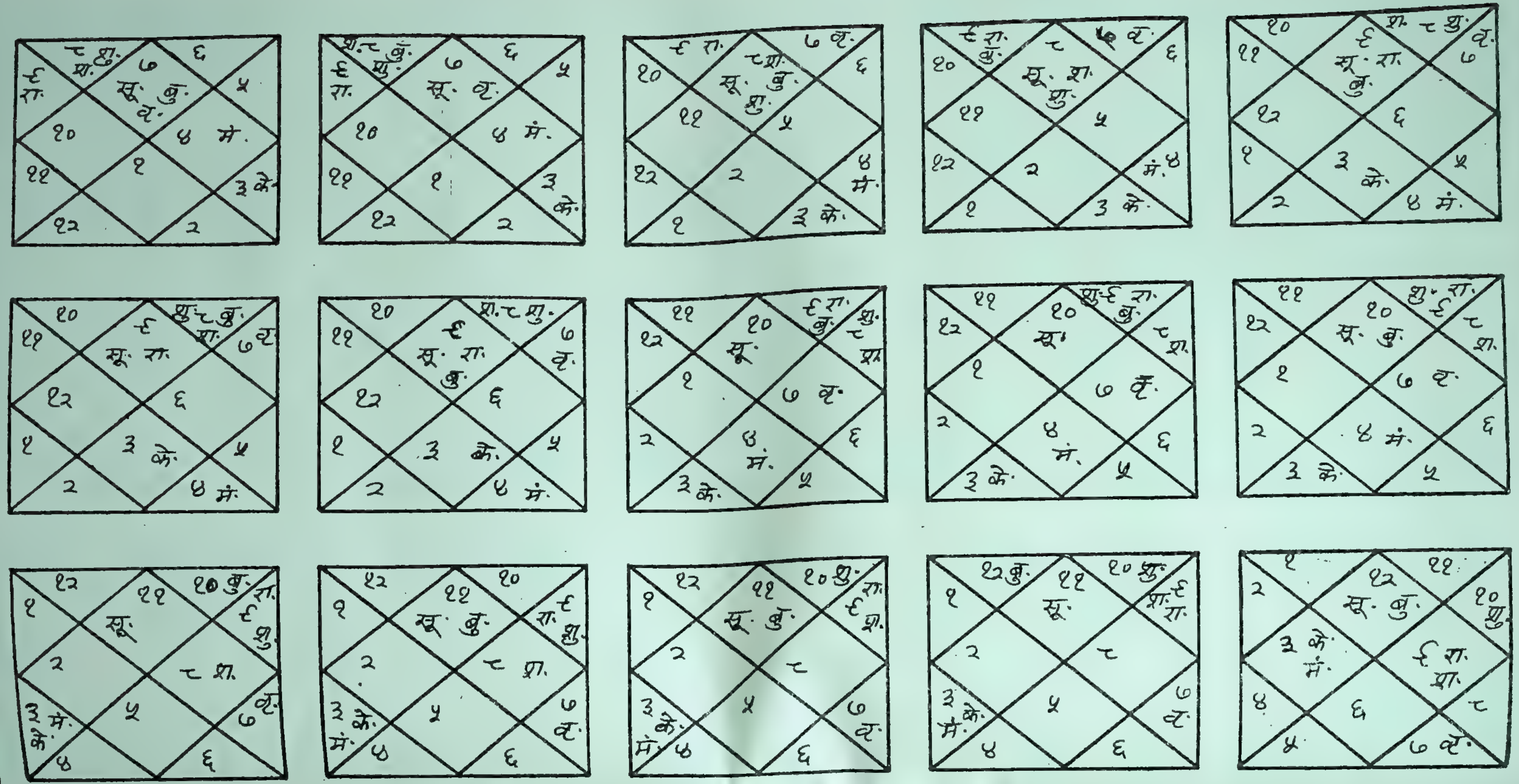

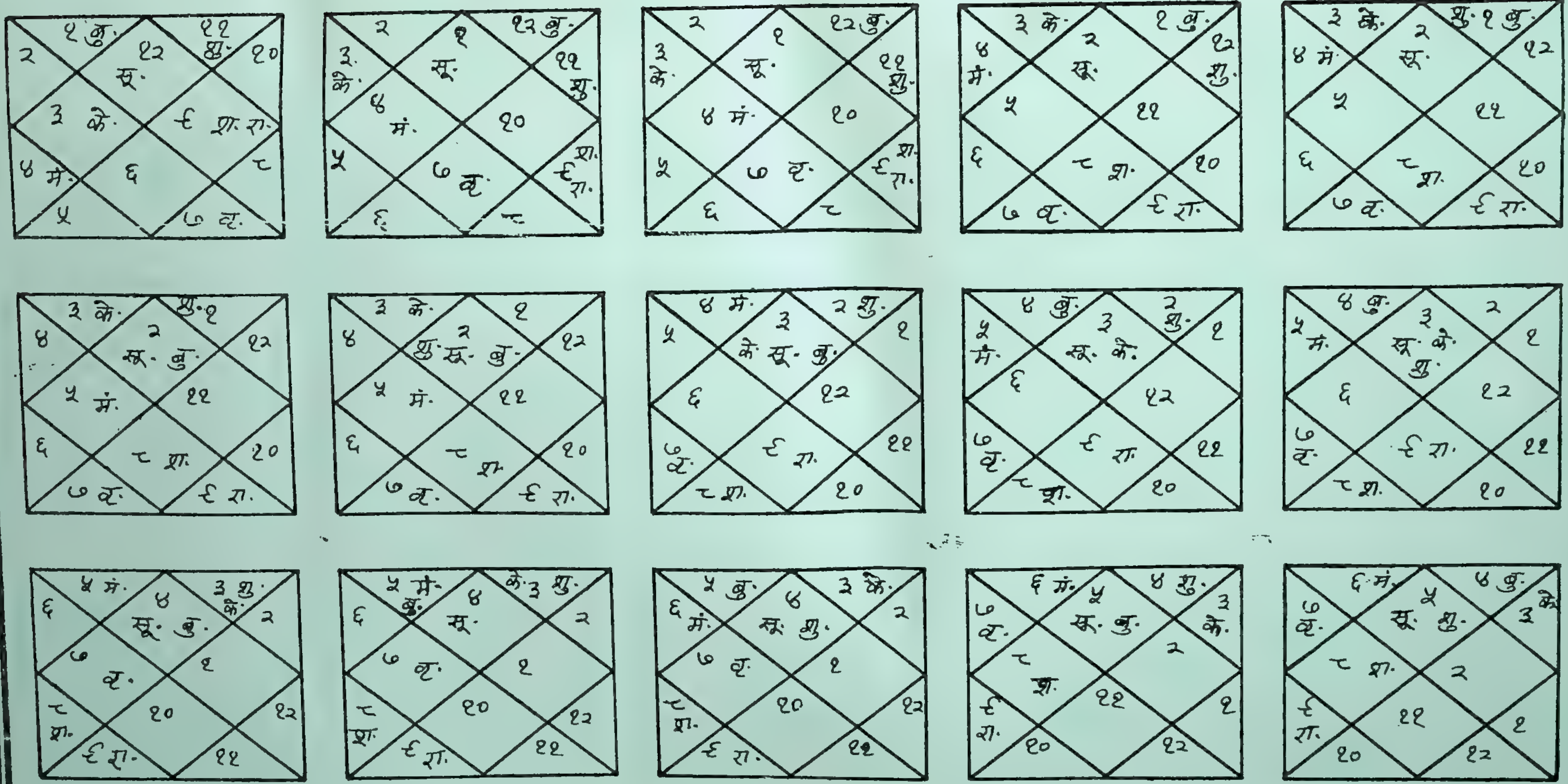

भू० सं० ९३८

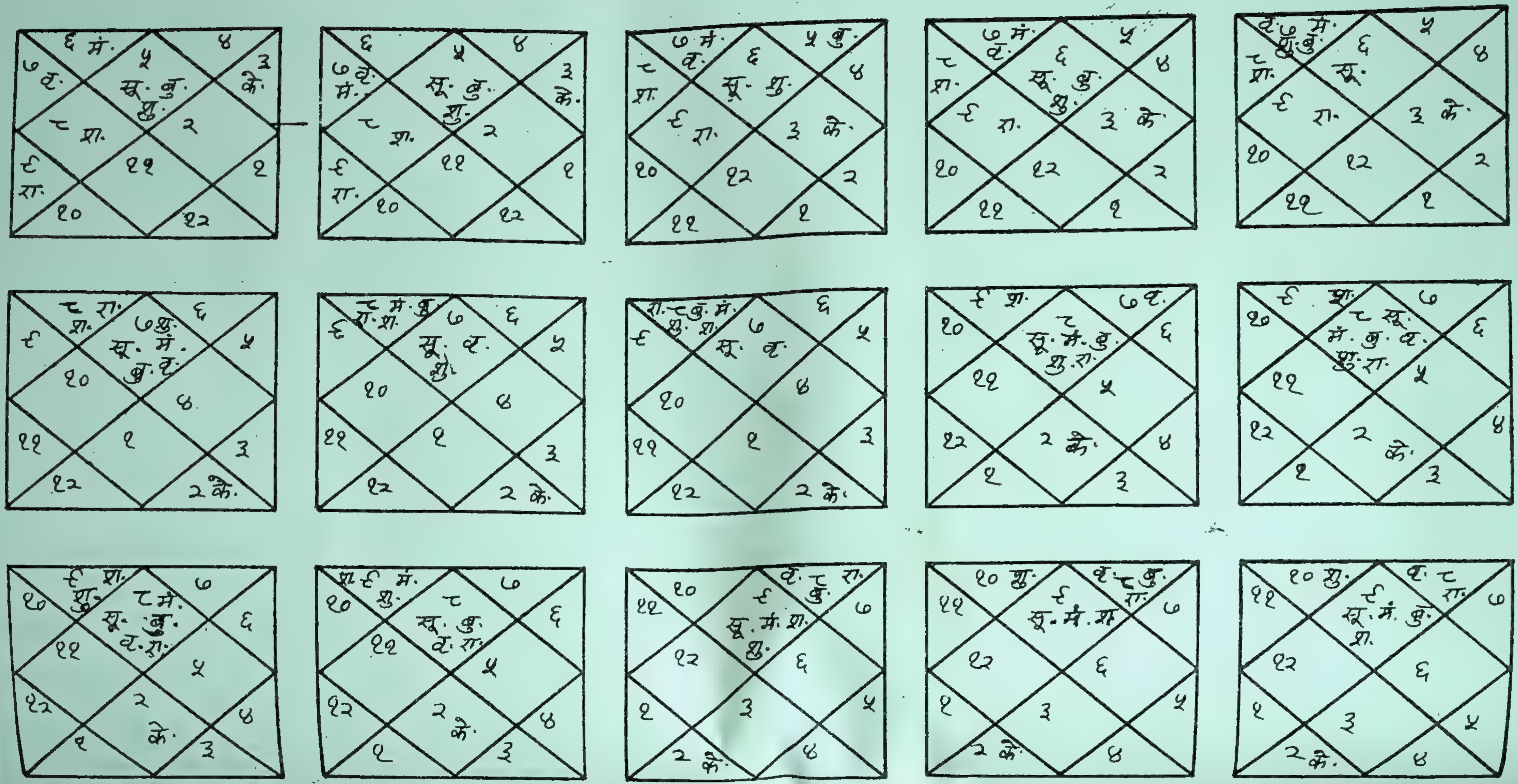

कु० प०

भू० सं०

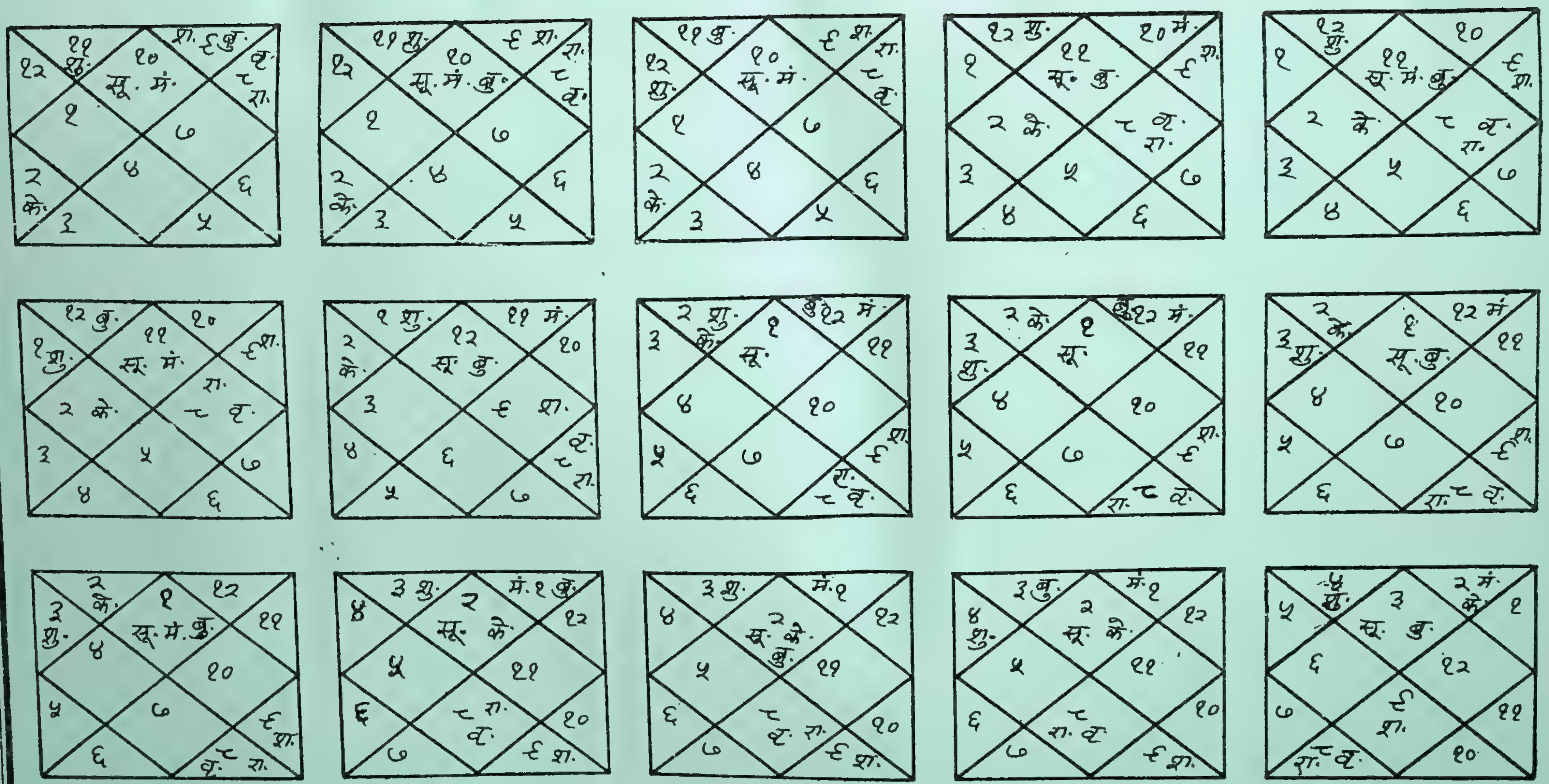

कु० प०

कु० प०

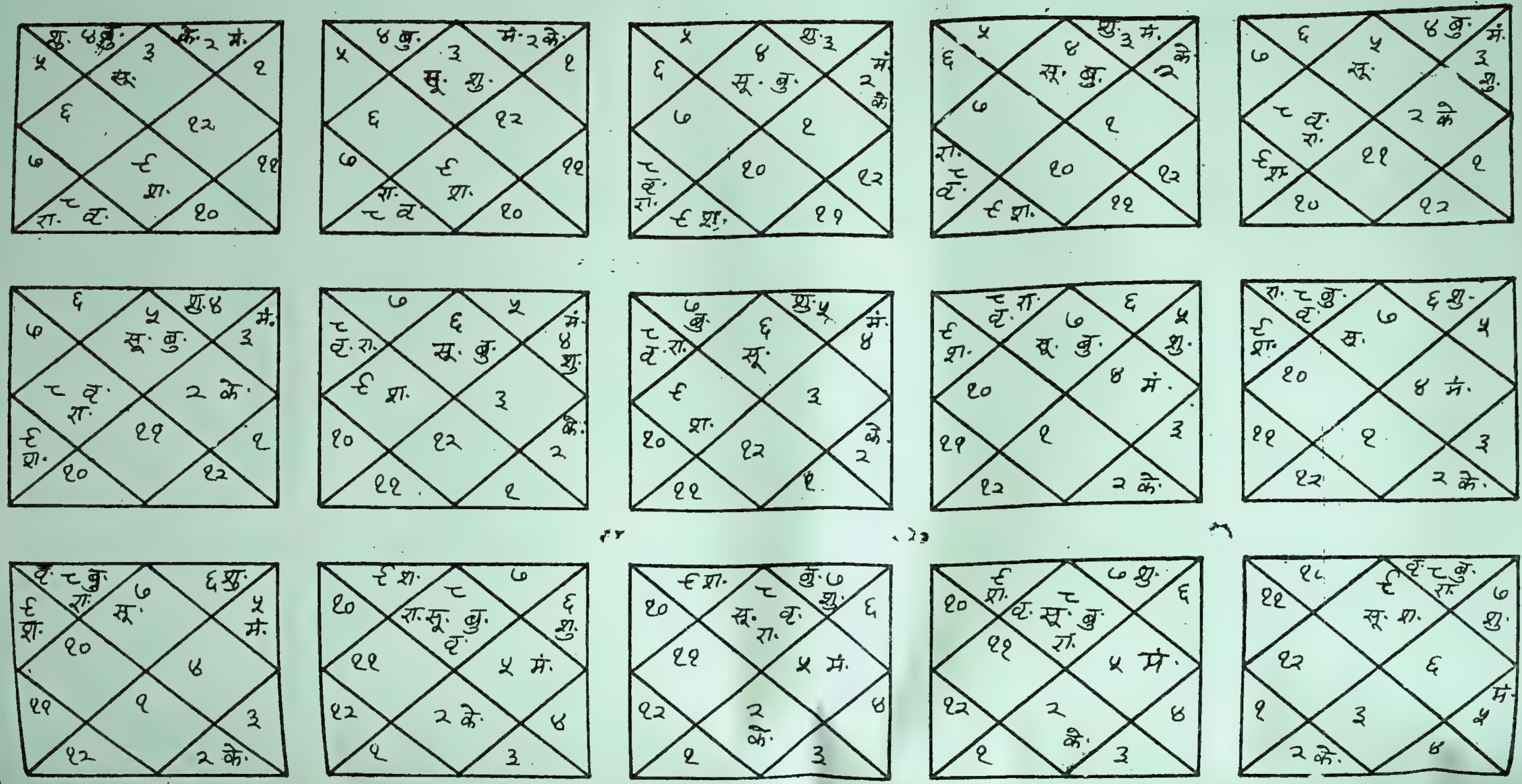

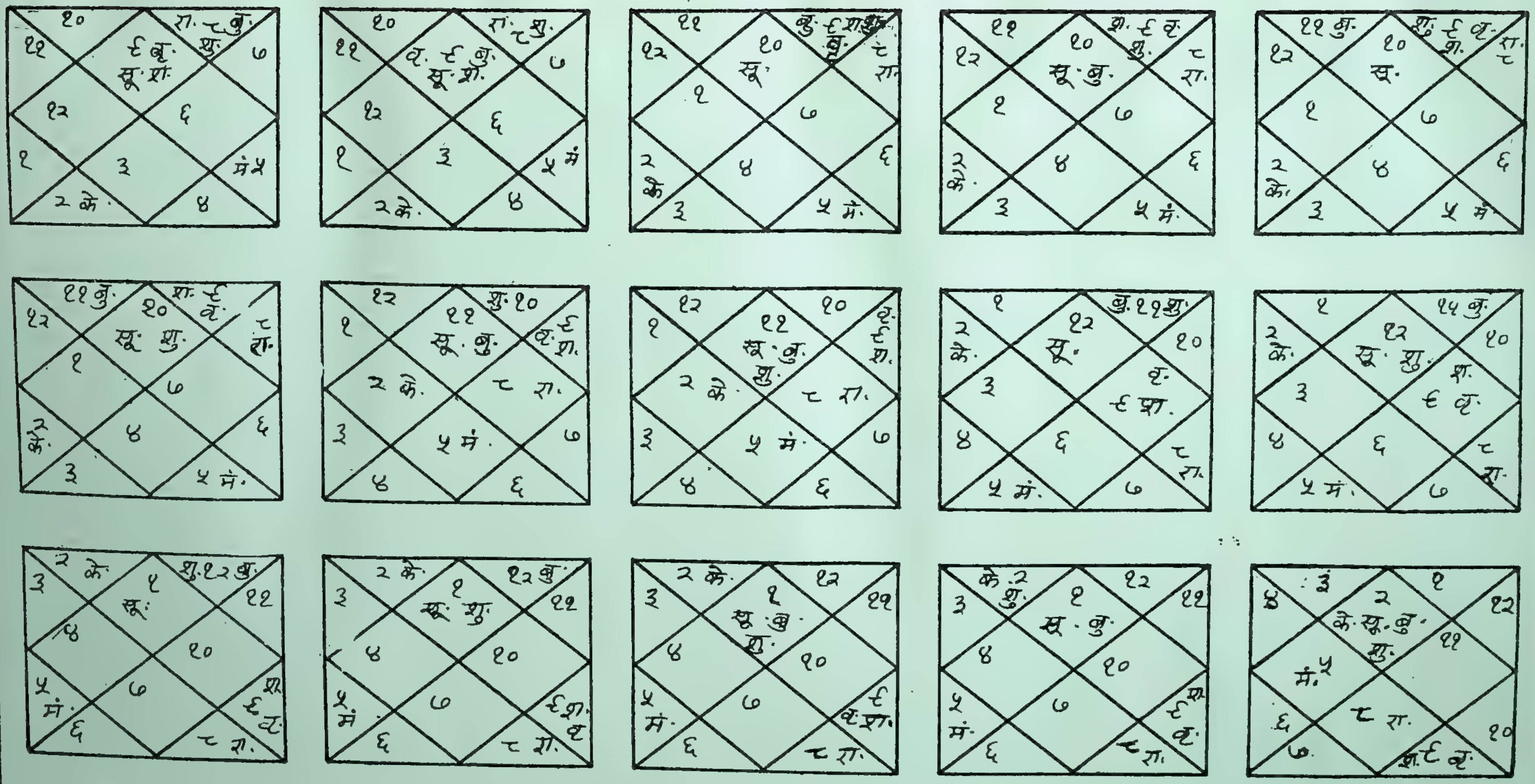

कु० प०

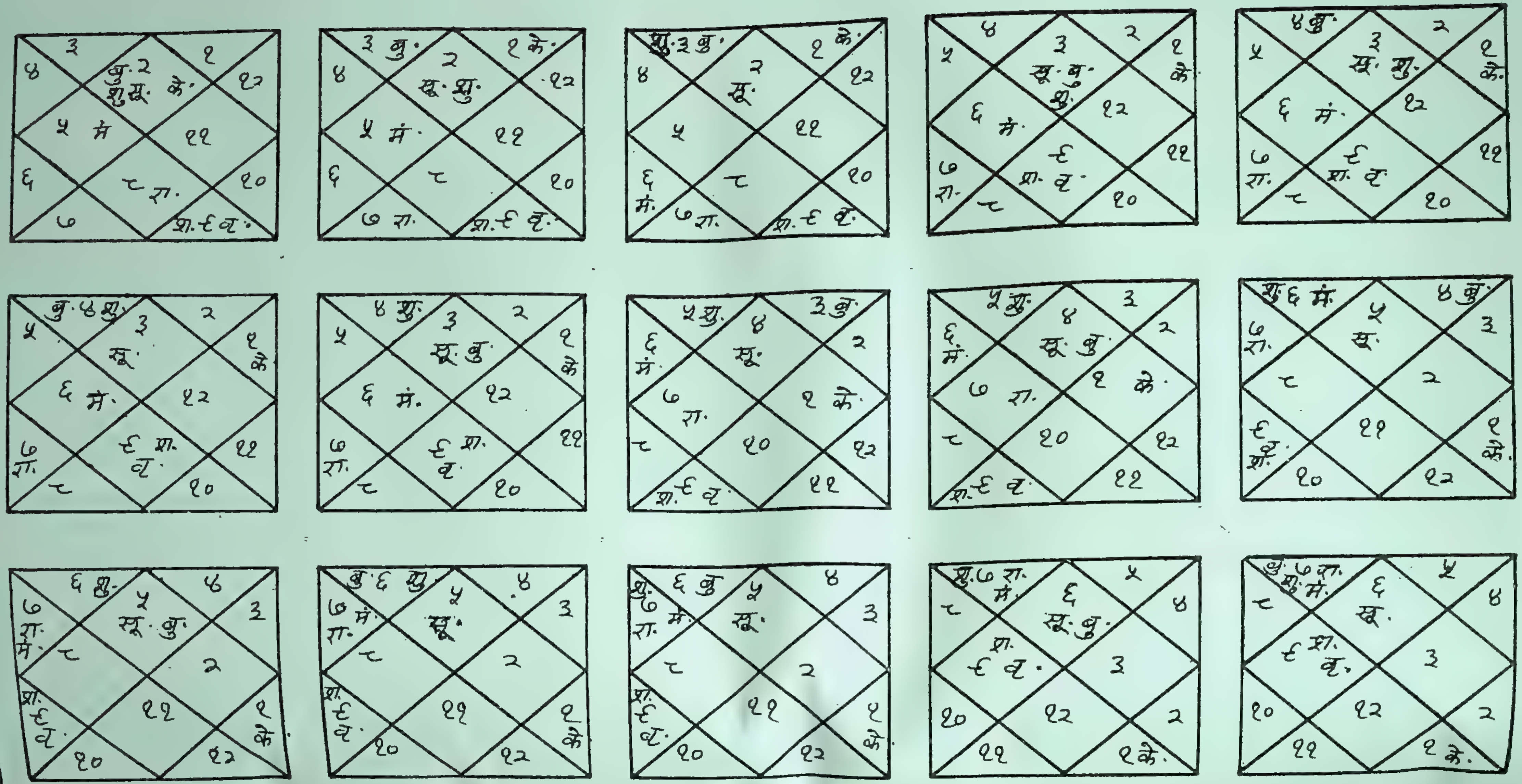

भू० सं० २८३८

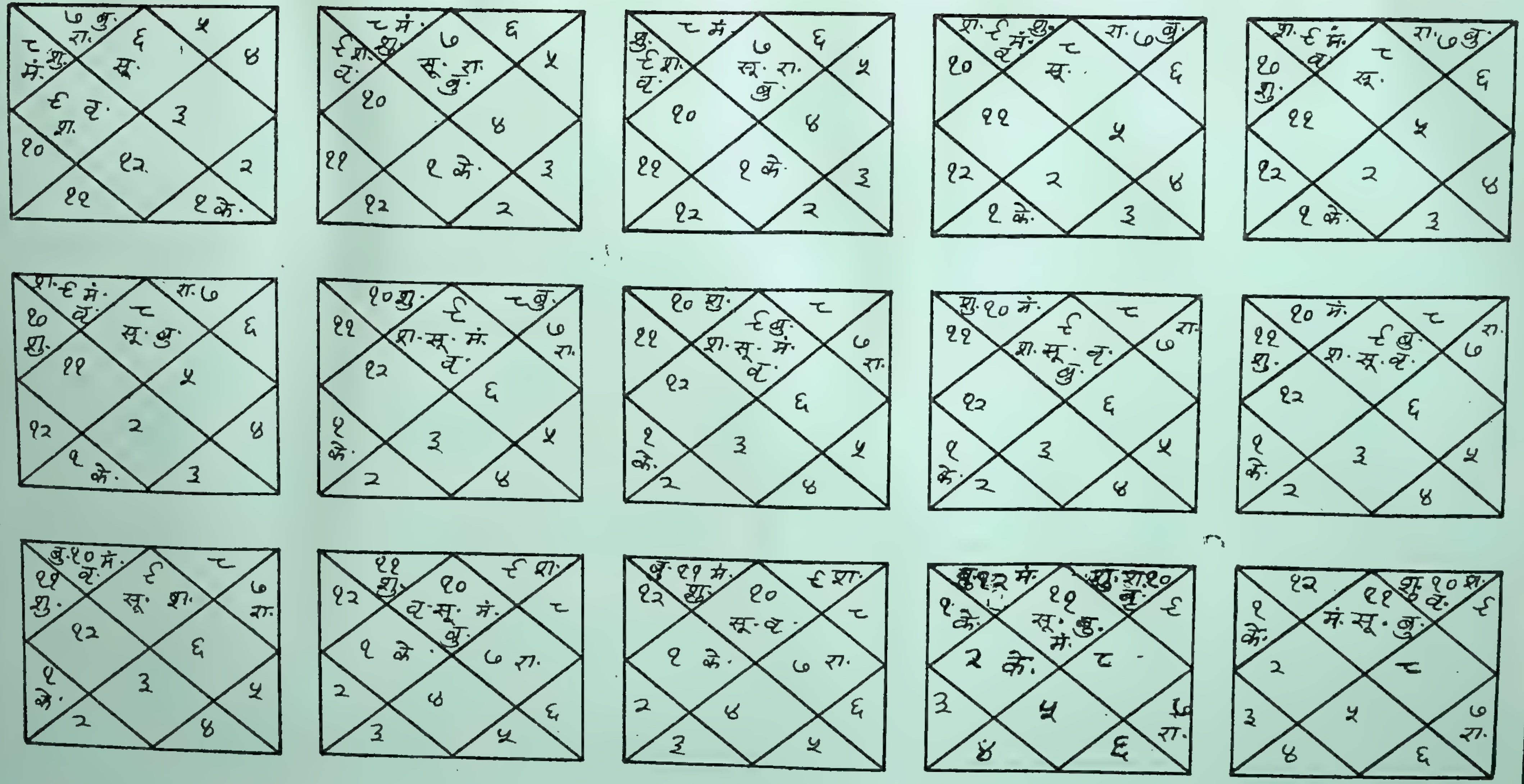

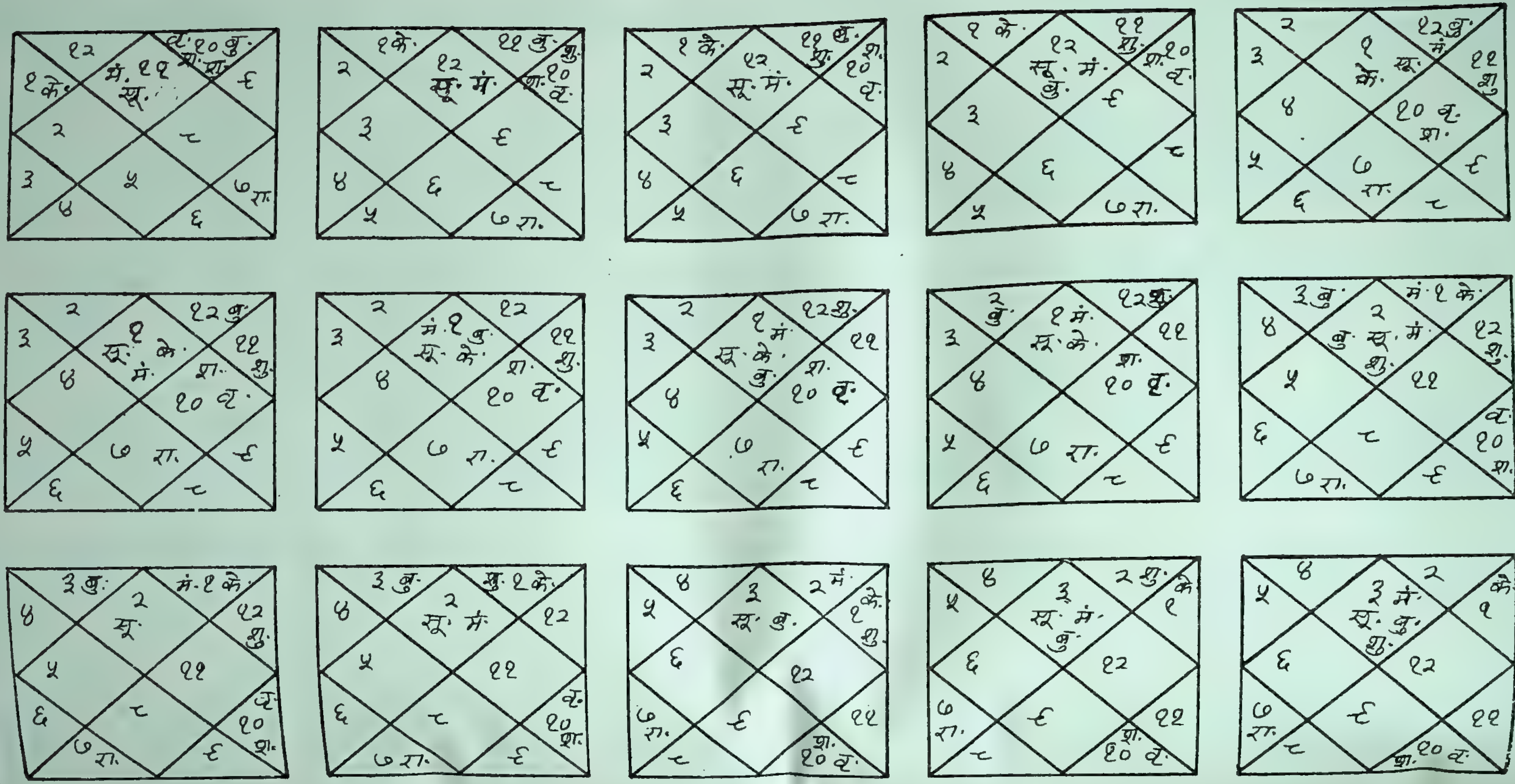

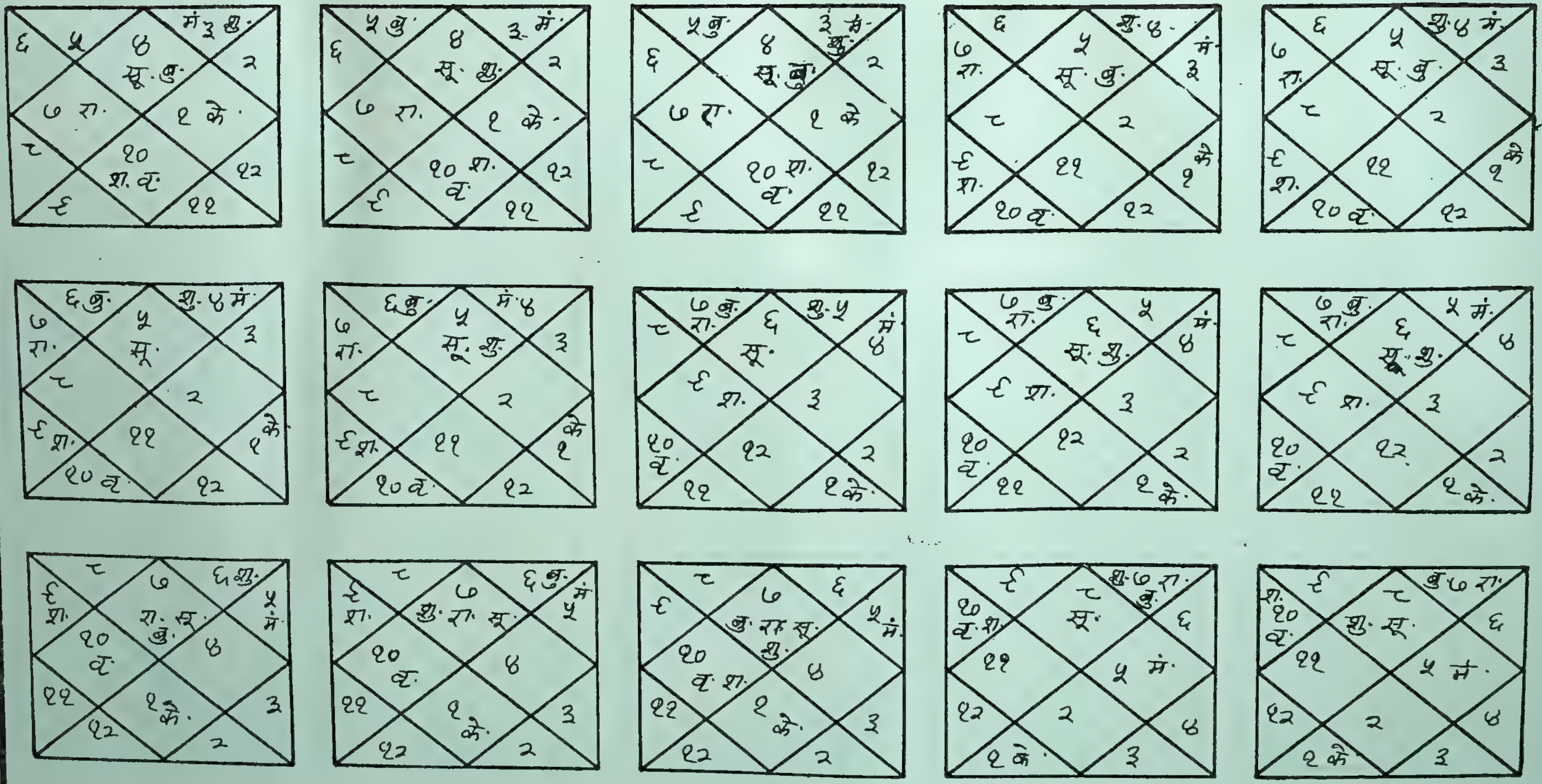

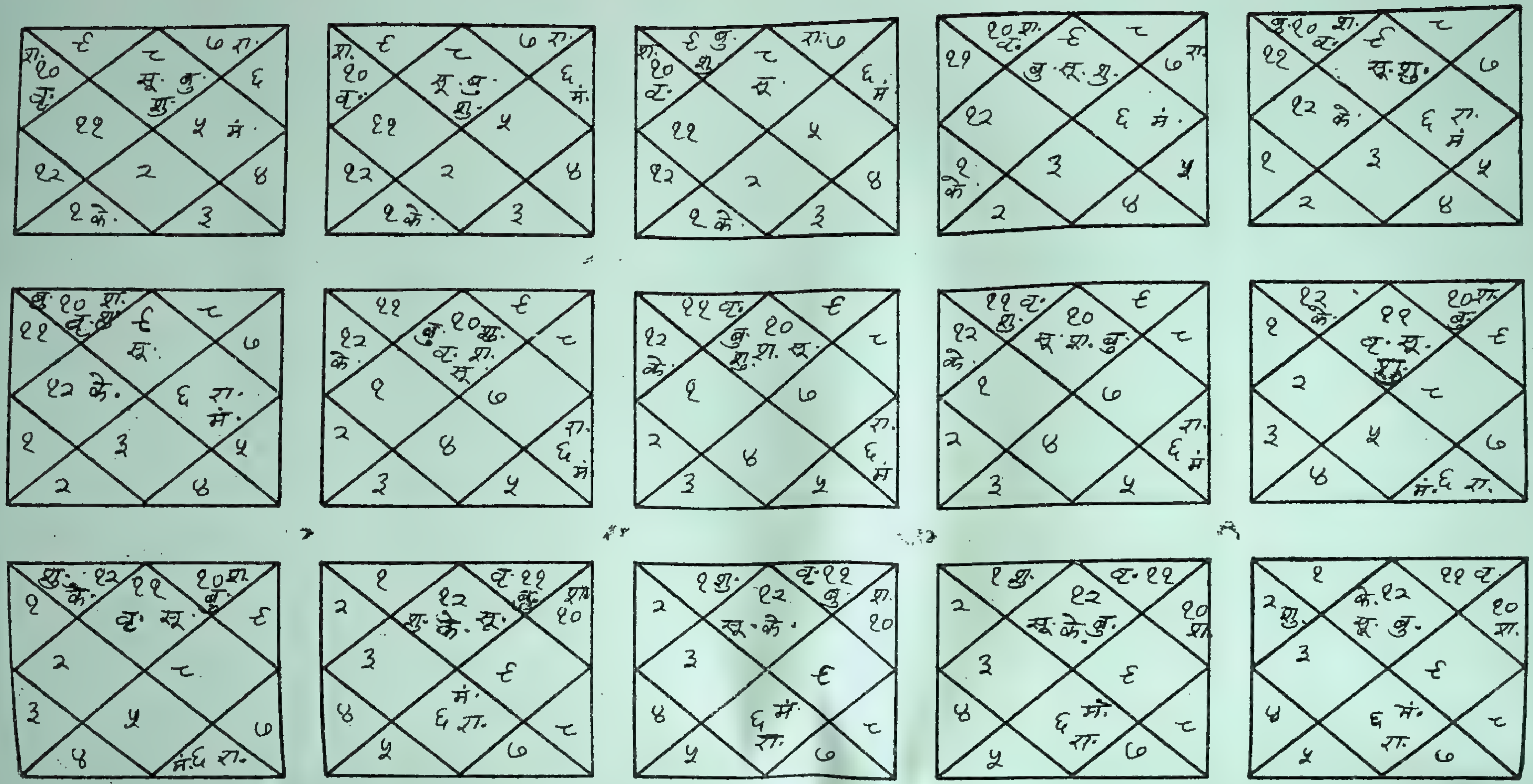

पृ० सं० २४३

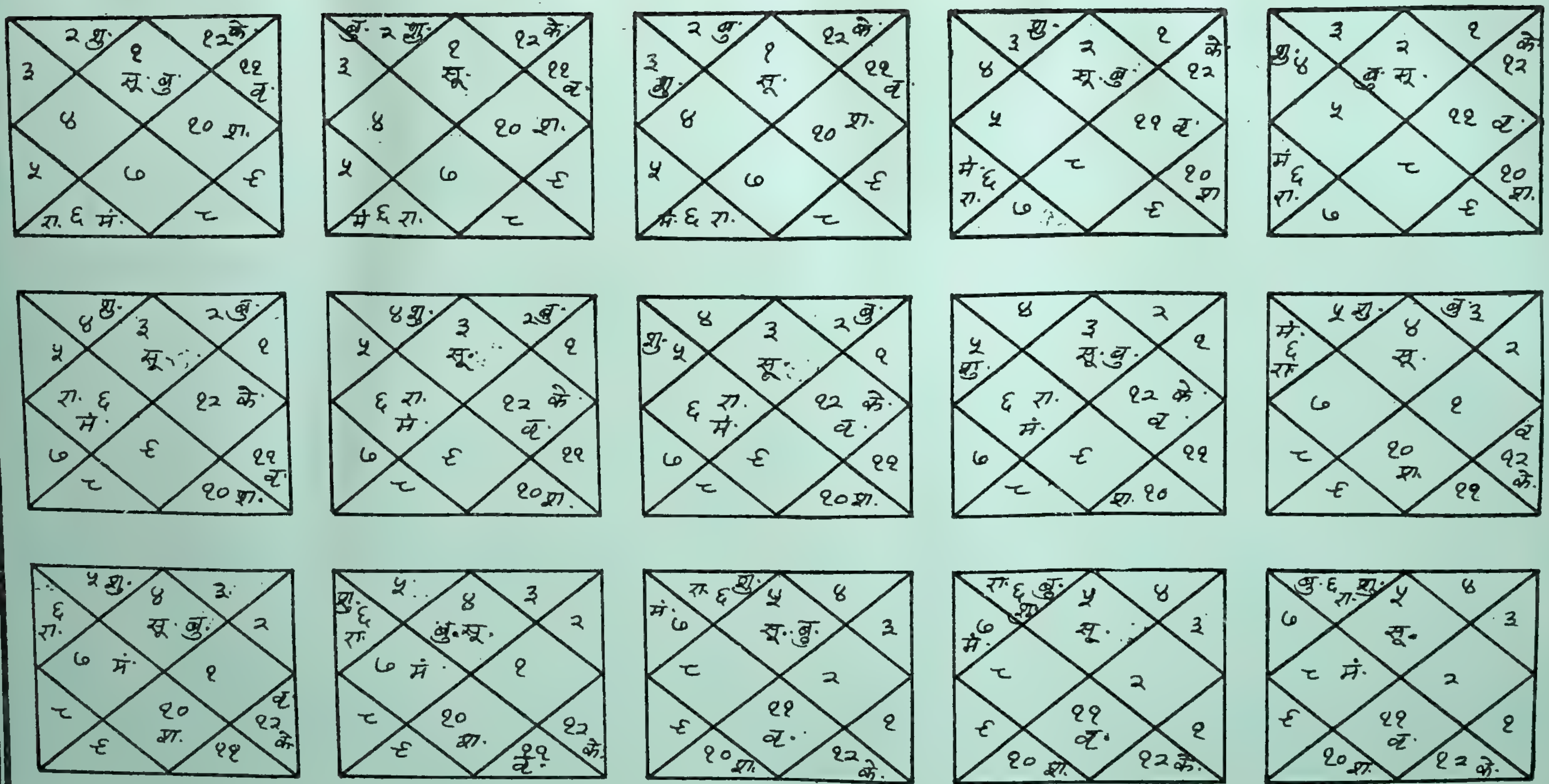

कु० प०

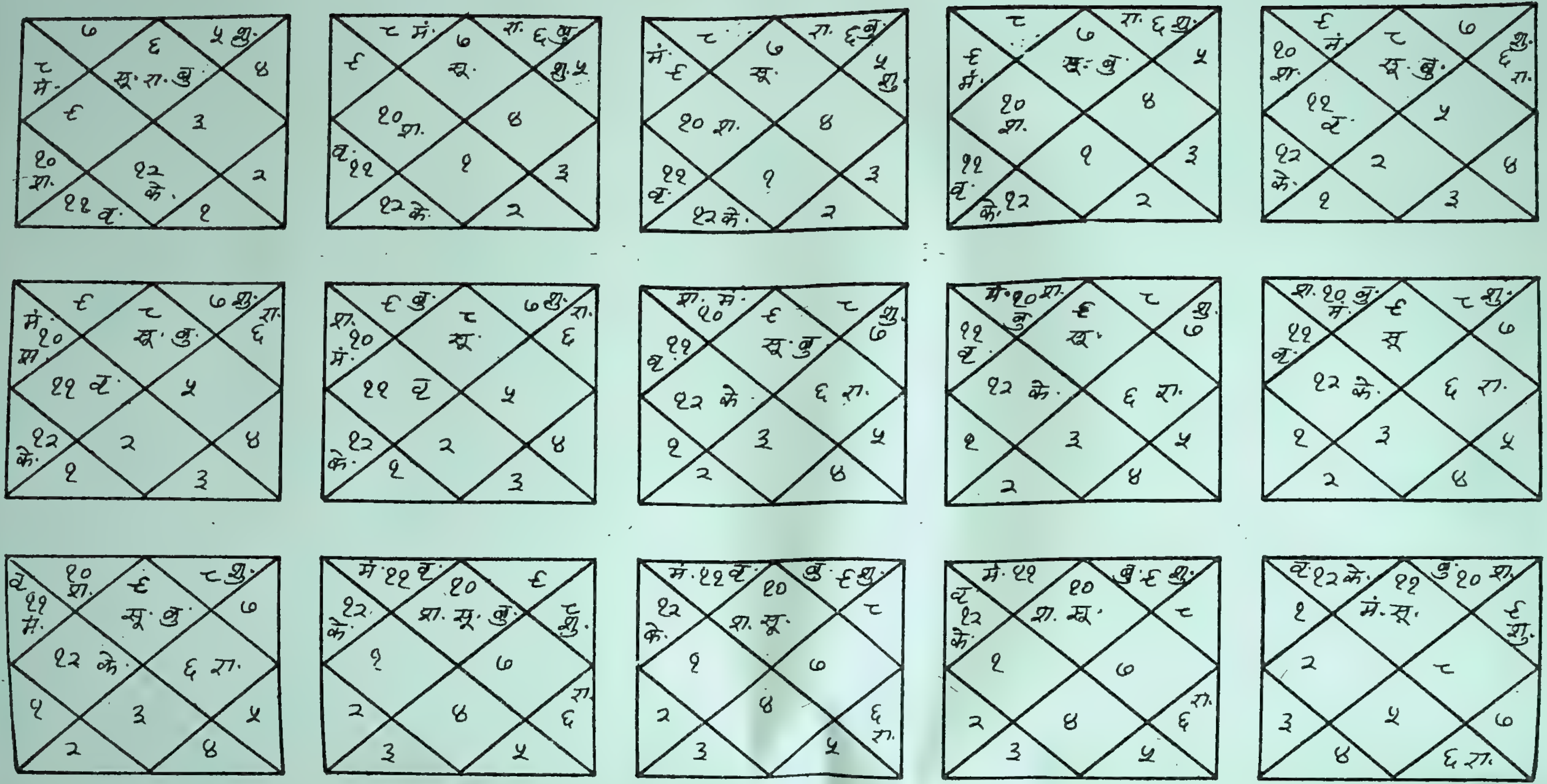

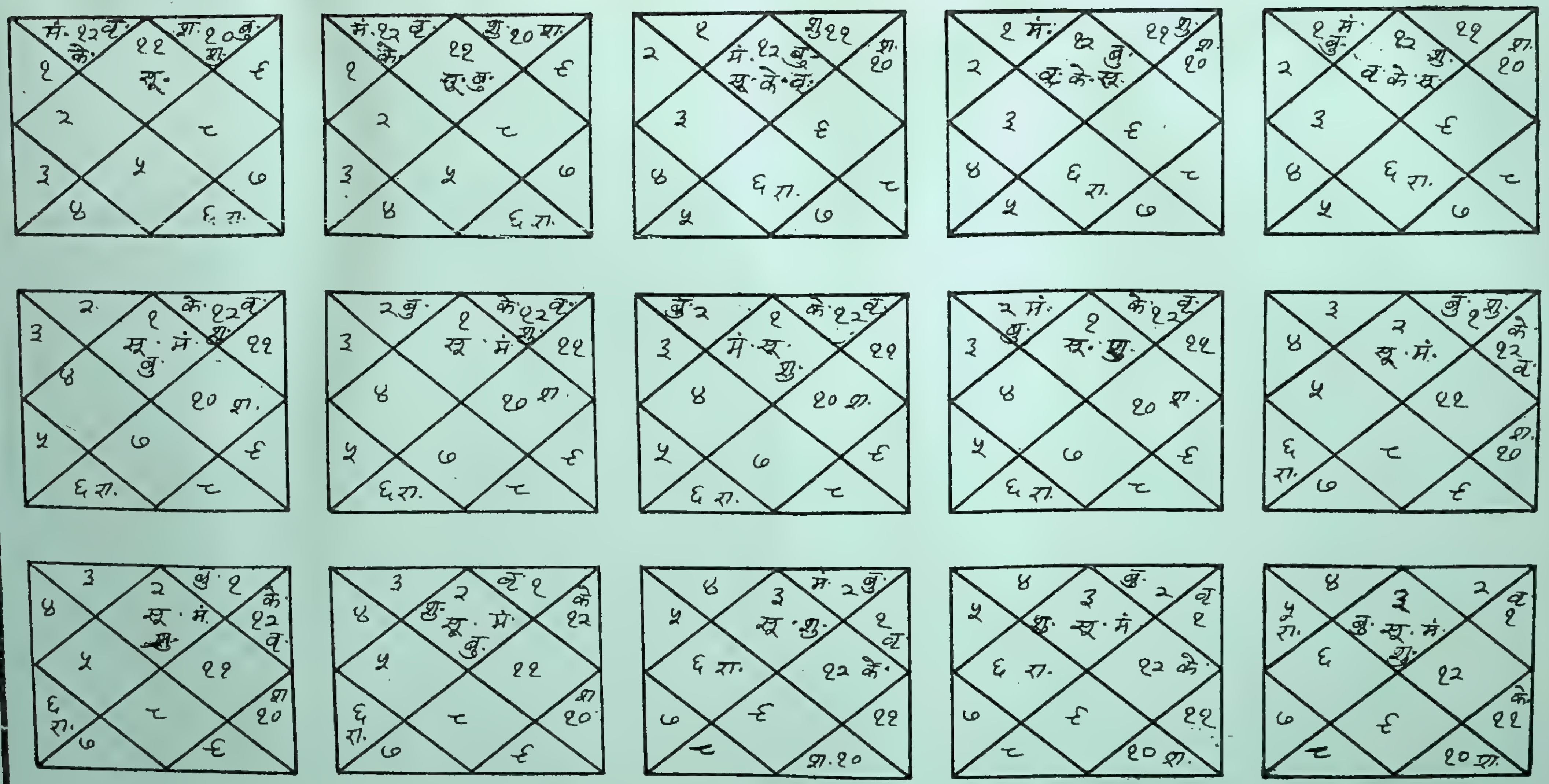
मं. १२ वे. के. ११ सू. शु. १० बु. श. ९ १ २ ८ ३ ५ ७ ४ ६ रा.
मं. १२ वृ. के. ११ सू. बु. शु. १० श. ९ १ २ ८ ३ ५ ७ ४ ६ रा.
१ २ मं. १२ बु. सू. के. वृ. शु. ११ श. १० ३ ९ ४ ६ रा. ८ ५ ७
१ मं. २ १२ बु. वृ. के. सू. ११ शु. श. १० ३ ९ ४ ६ रा. ८ ५ ७
१ मं. बु. २ १२ शु. वृ. के. सू. ११ श. १० ३ ९ ४ ६ रा. ८ ५ ७
२ ३ १ सू. मं. बु. के. १२ वृ. शु. ११ ४ १० श. ५ ७ ९ ६ रा. ८
२ बु. ३ १ सू. मं. के. १२ वृ. शु. ११ ४ १० श. ५ ७ ९ ६ रा. ८
बु. २ ३ १ मं. सू. शु. के. १२ वृ. ११ ४ १० श. ५ ७ ९ ६ रा. ८
२ मं. बु. ३ १ सू. शु. के. १२ वृ. ११ ४ १० श. ५ ७ ९ ६ रा. ८
३ ४ २ सू. मं. बु. १ शु. के. १२ वृ. ५ ११ ६ रा. ८ श. १० ७ ९
३ ४ २ सू. मं. शु. बु. १ के. १२ वृ. ५ ११ ६ रा. ८ श. १० ७ ९
३ ४ २ सू. मं. शु. वे. १ के. १२ ५ ११ ६ रा. ८ श. १० ७ ९
४ ५ मं. २ बु. ३ सू. शु. १ वृ. ६ रा. १२ के. ७ ९ ११ ८ श. १०
४ ५ बु. २ ३ शु. सू. मं. वृ. १ ६ रा. १२ के. ७ ९ ११ ८ १० श.
४ ५ रा. ३ बु. सू. मं. शु. २ वृ. १ ६ १२ के. ११ ७ ९ ८ १० श.

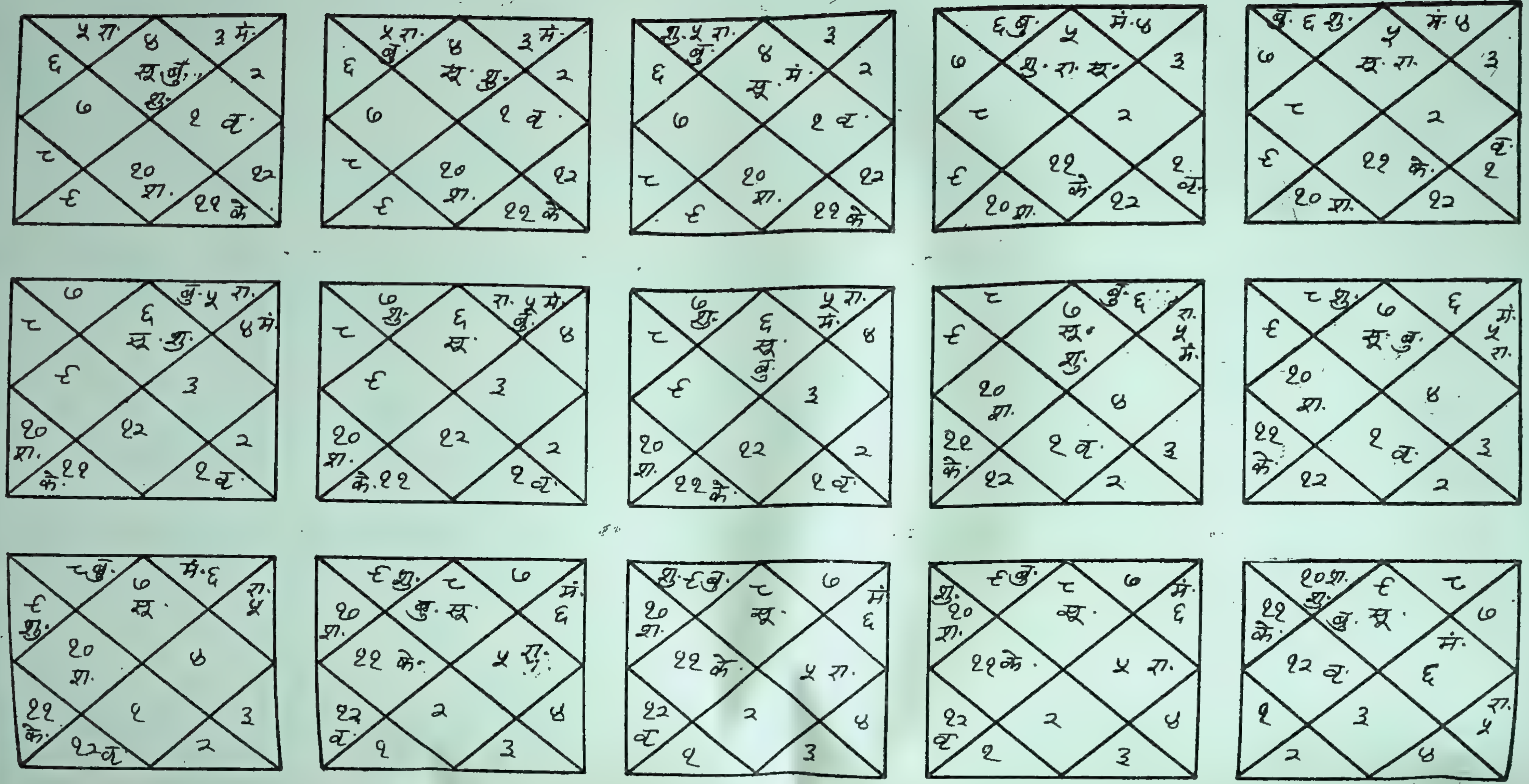

कु० प०

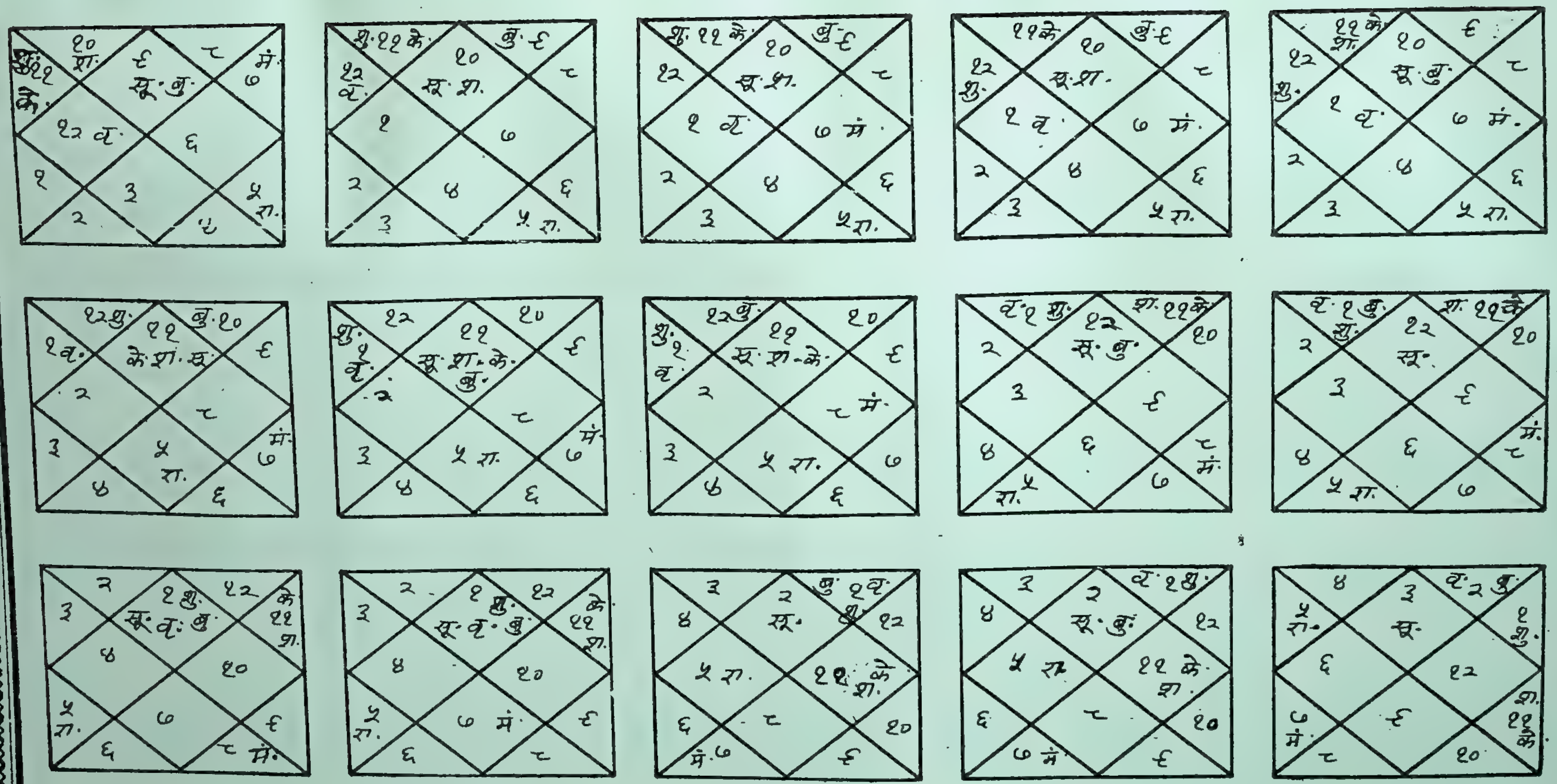

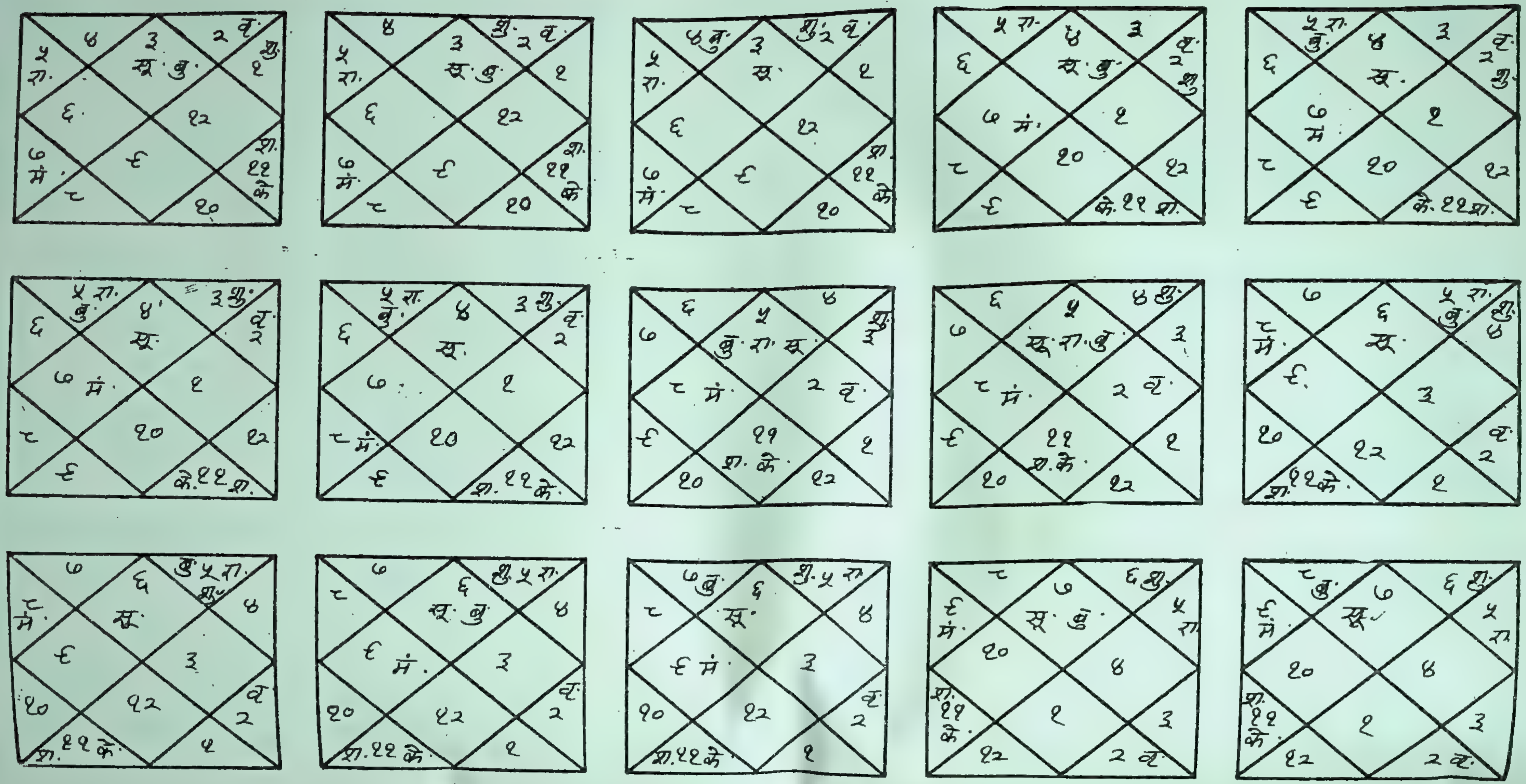

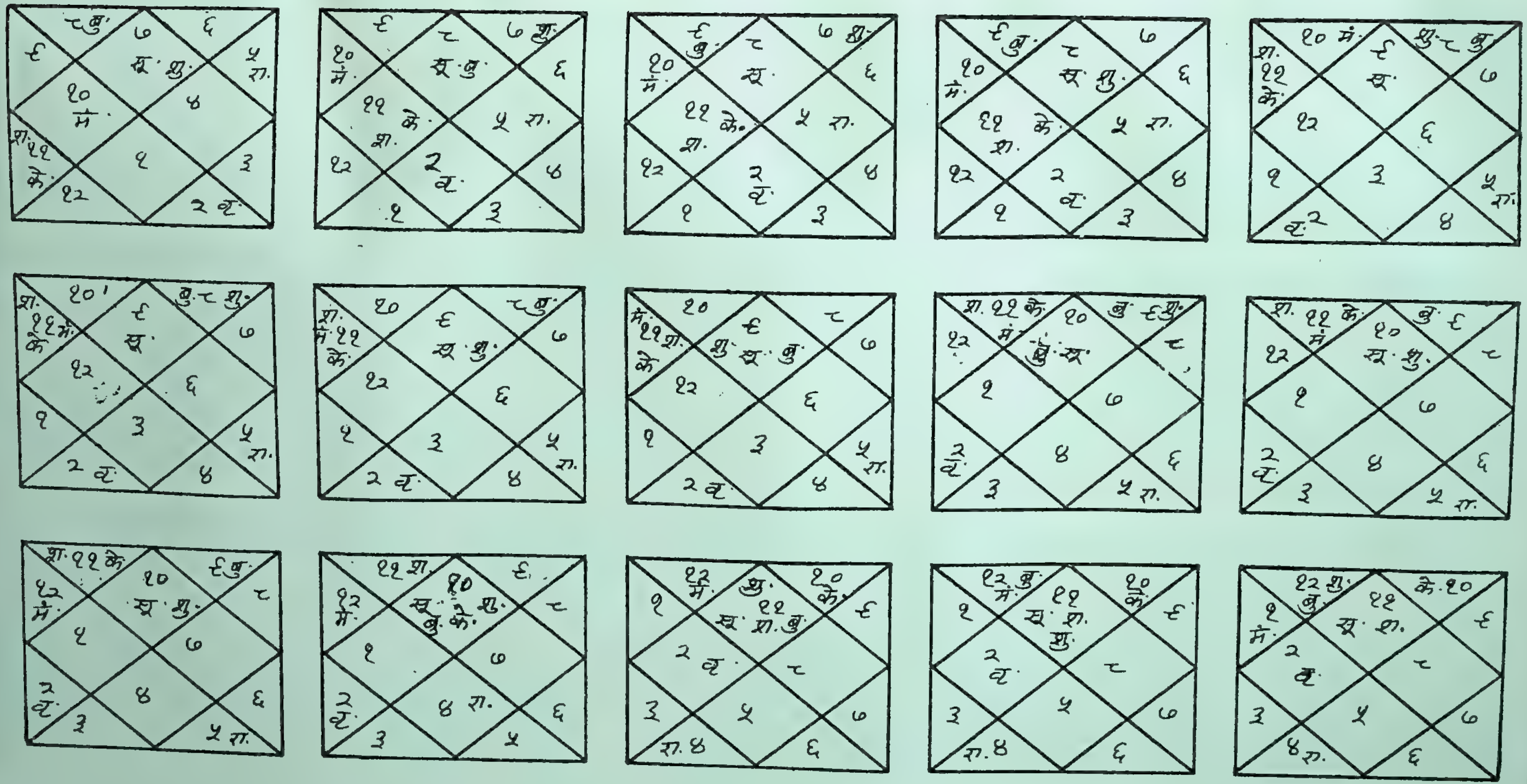

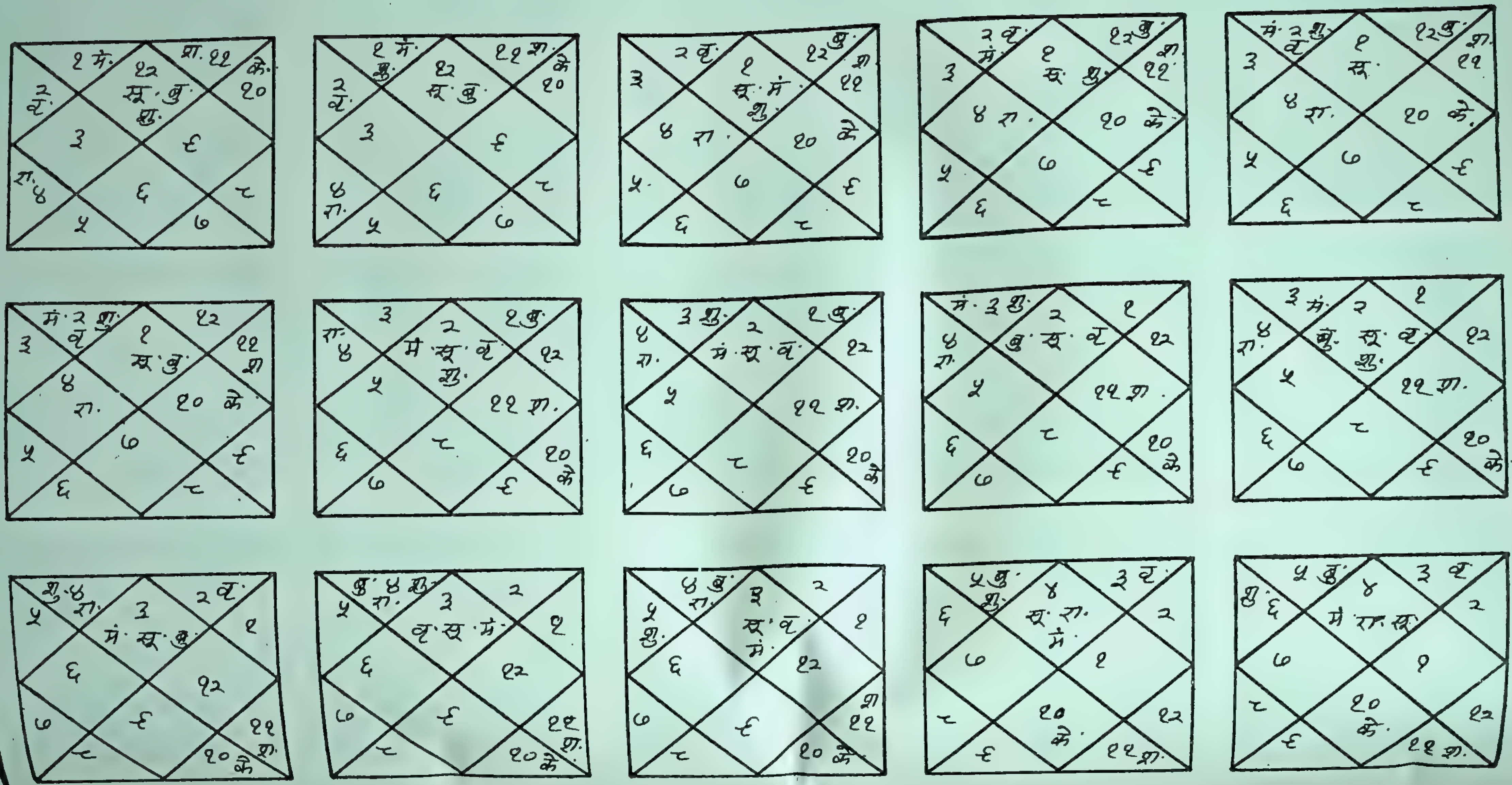

भृ० सं० ३२४

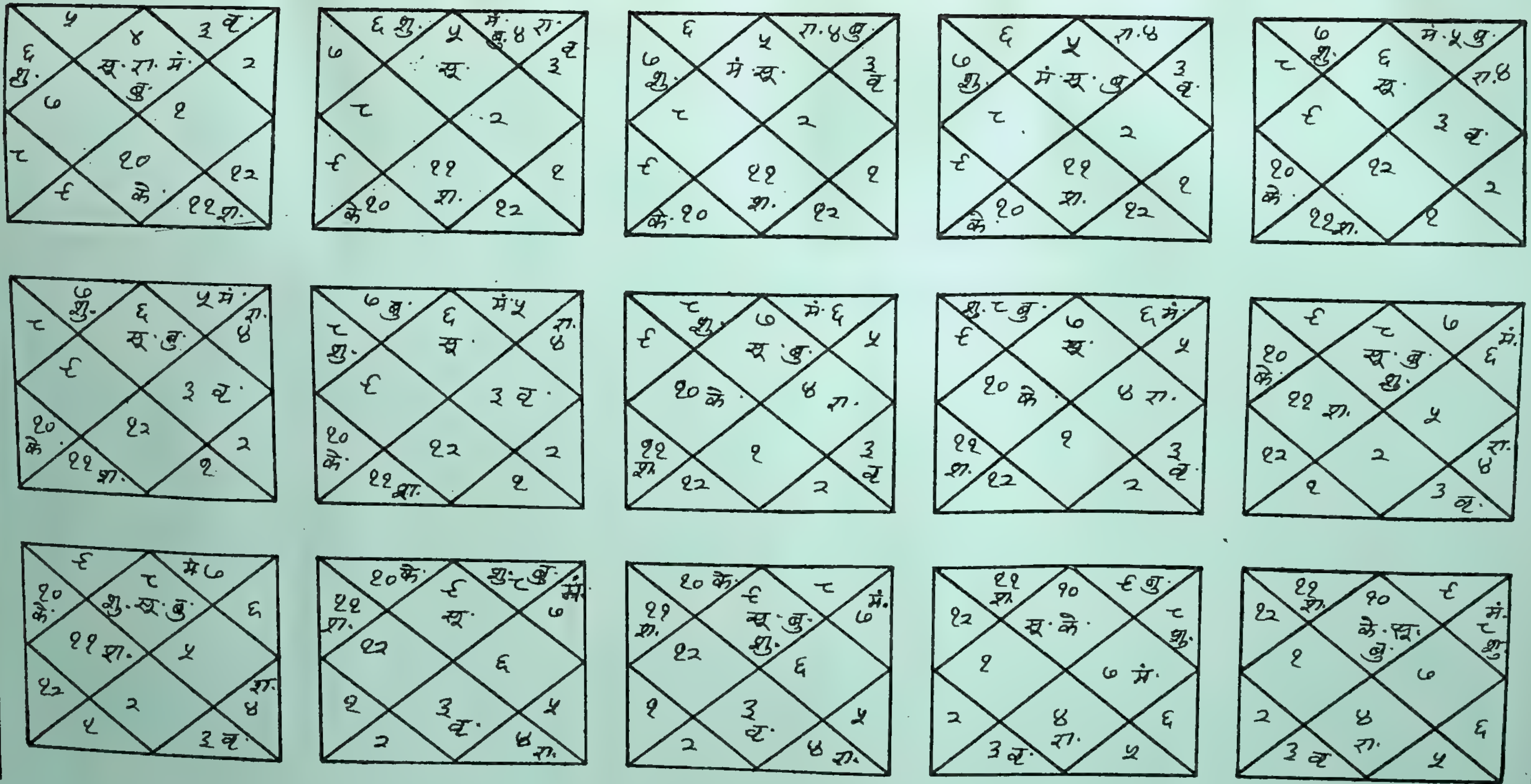

कु० प०

कु० प०

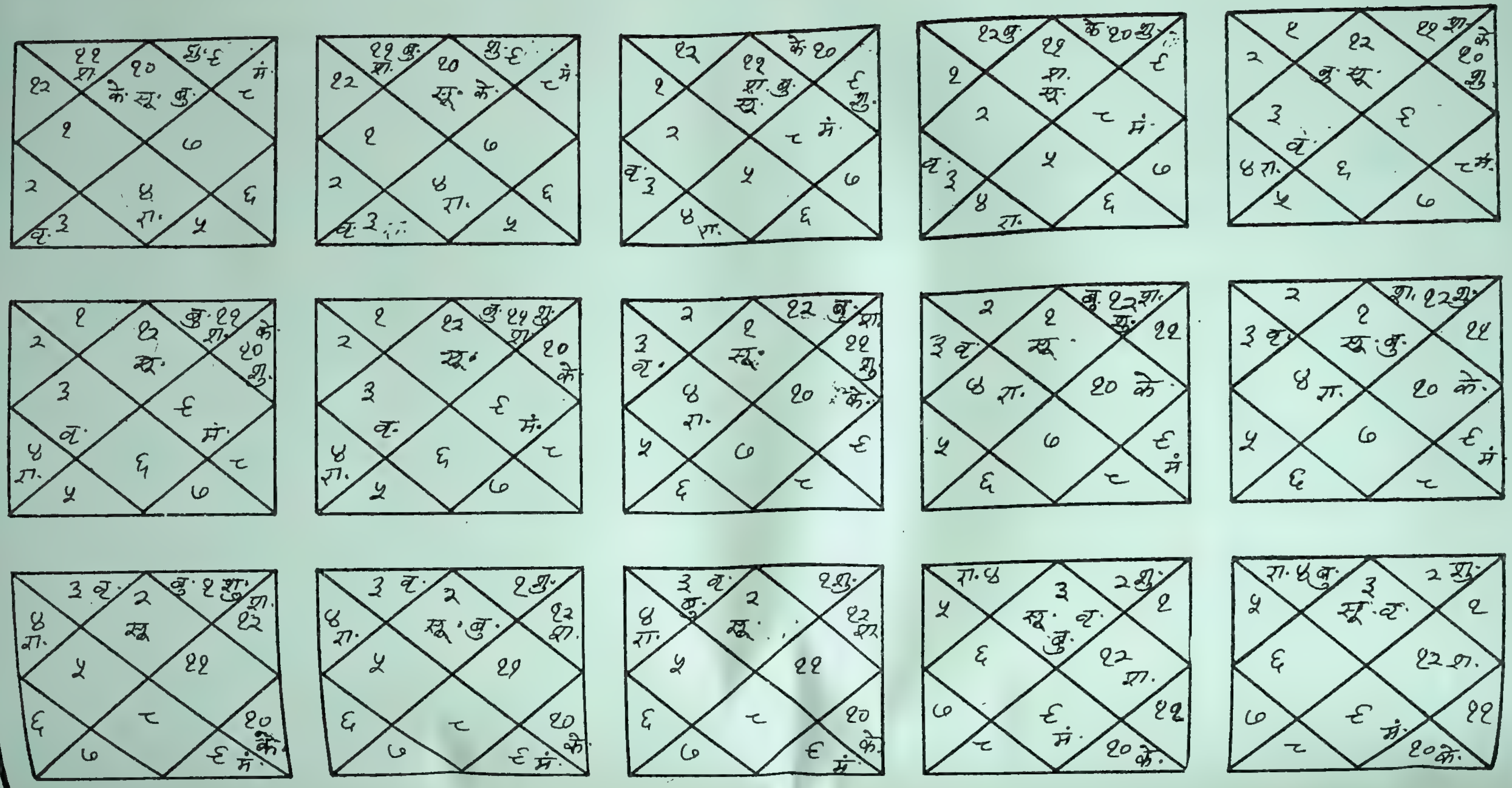

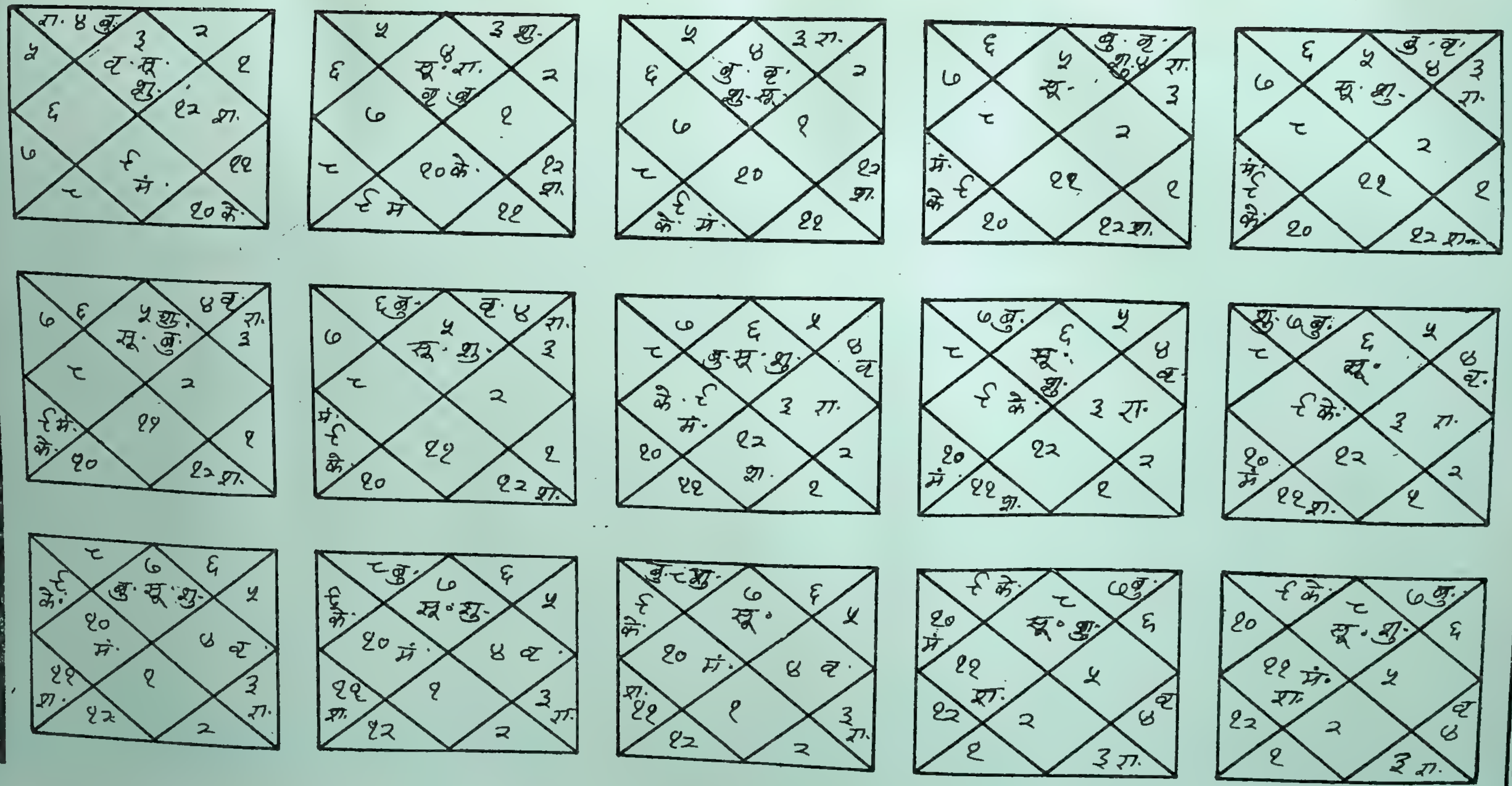

कु० प०

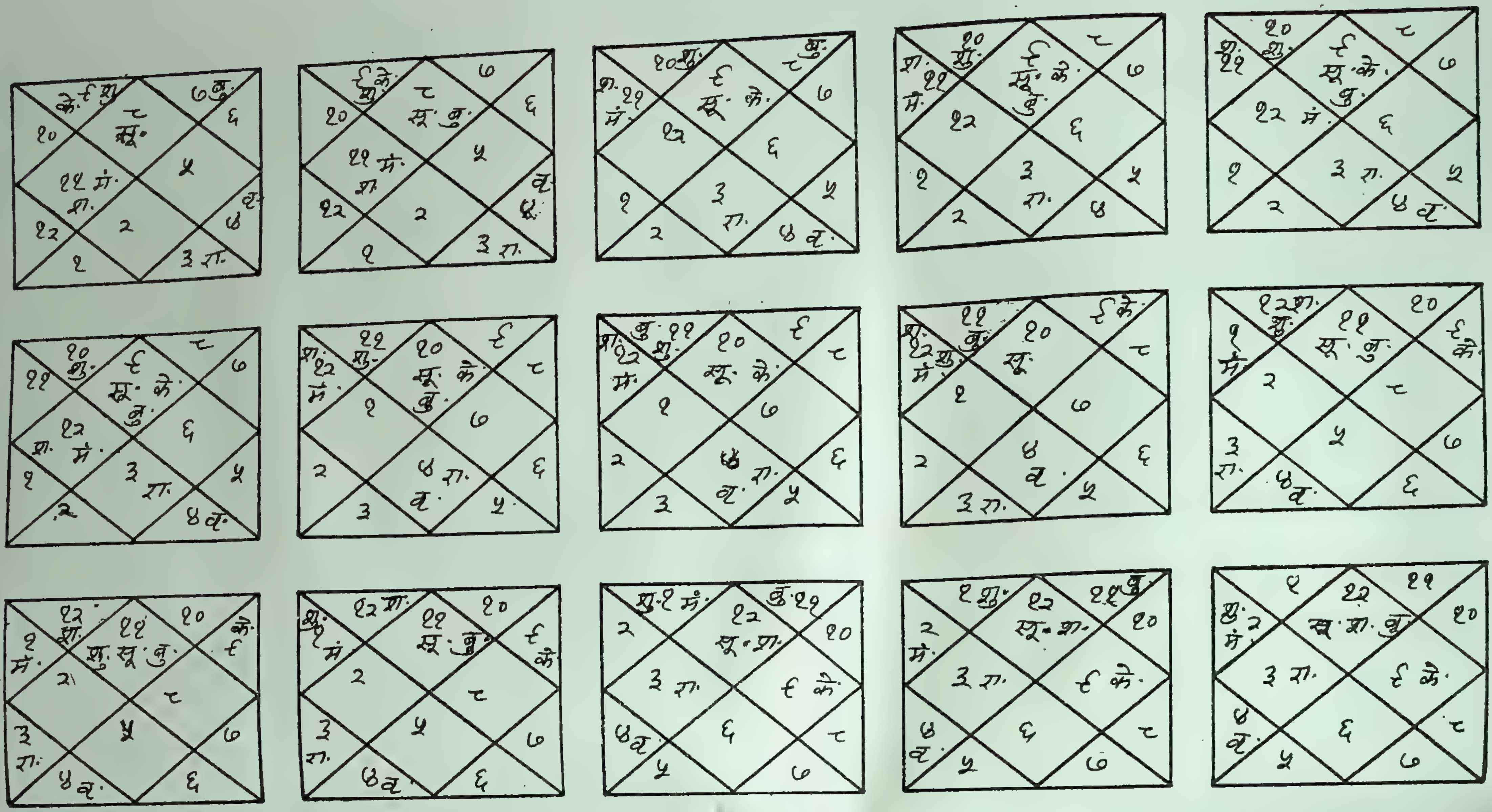

मृ० सं० ८८७

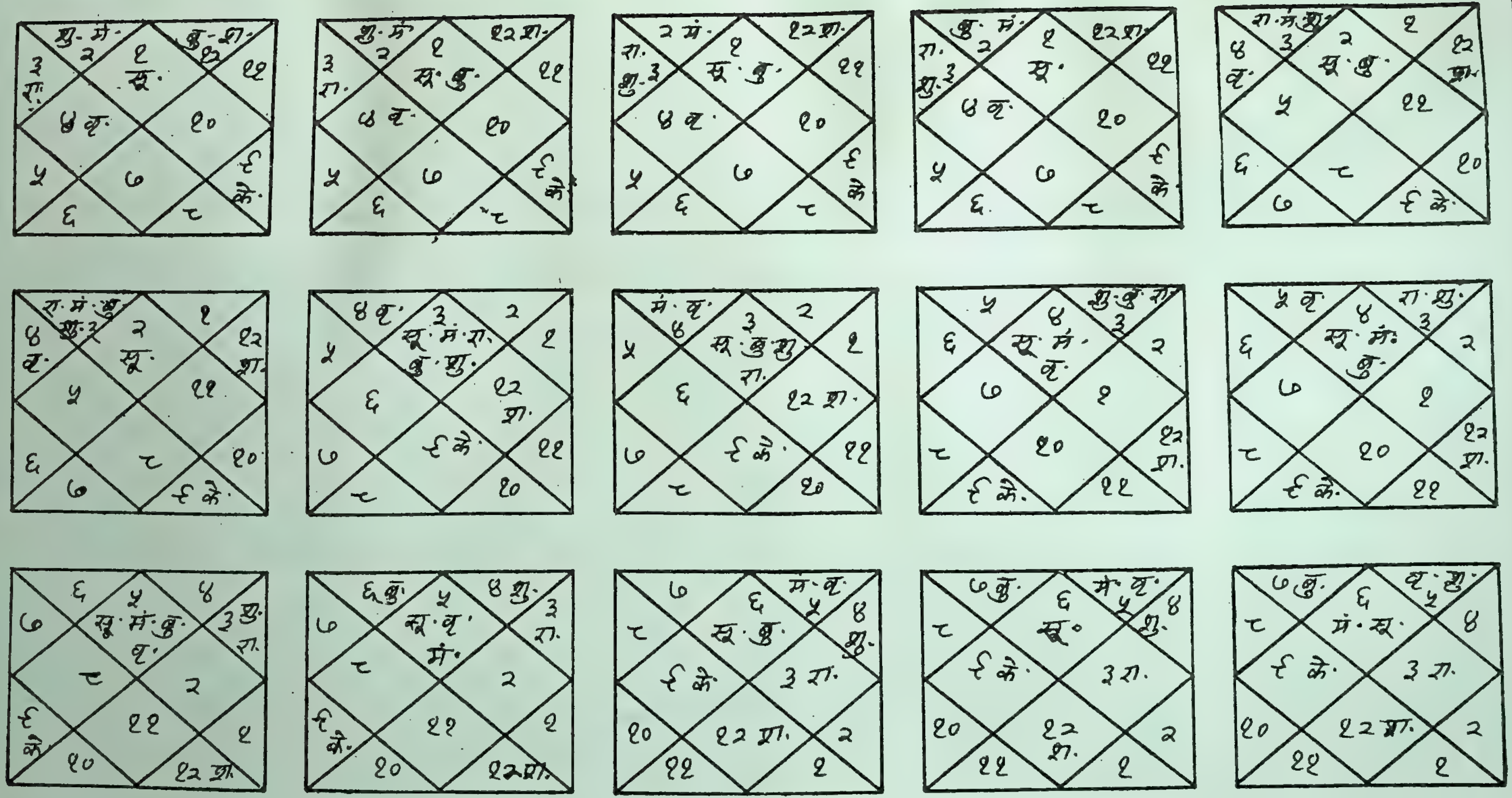

कु० प०

कु० प०

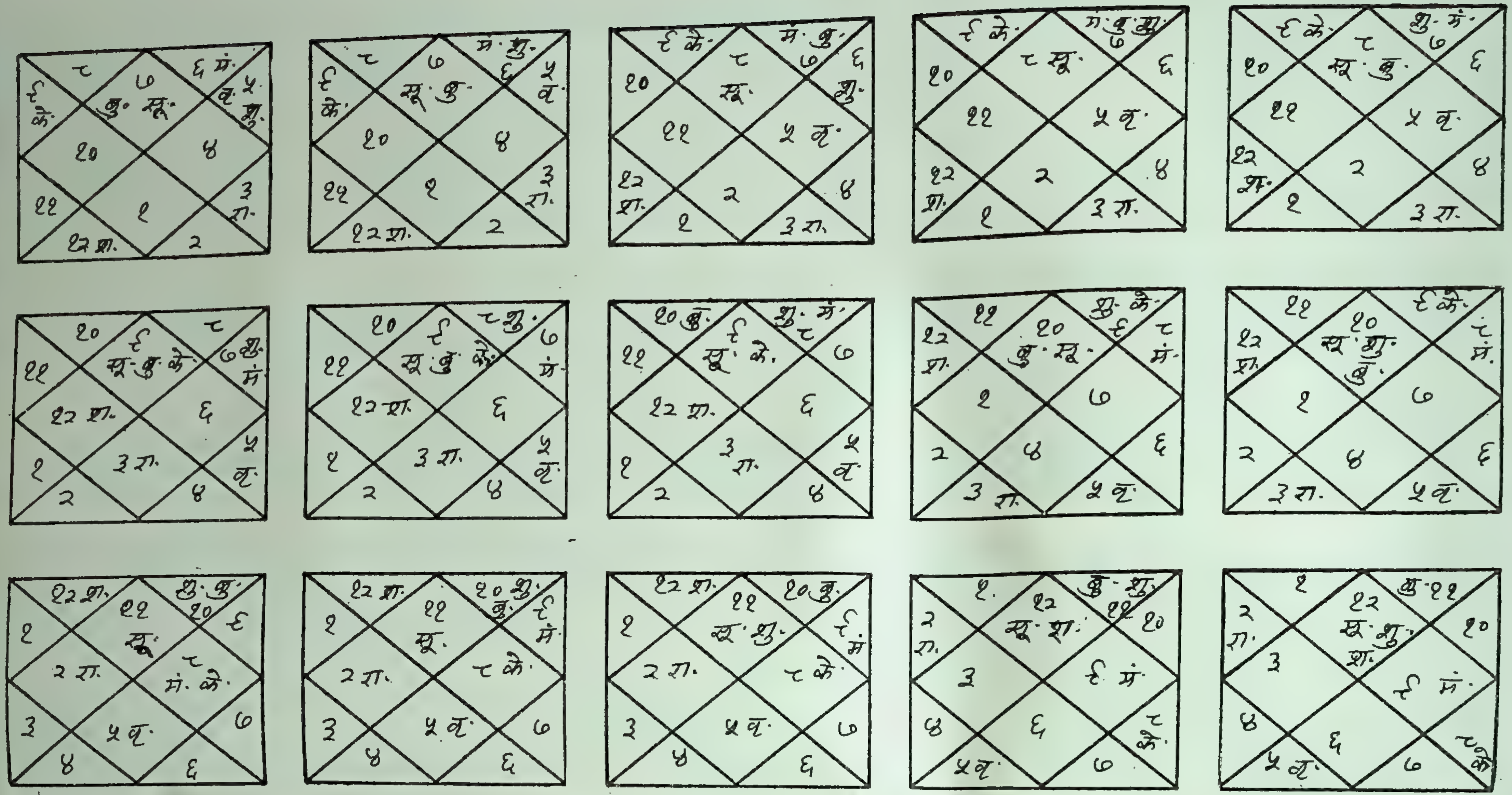

भू० सं० ४५७

कु० प०

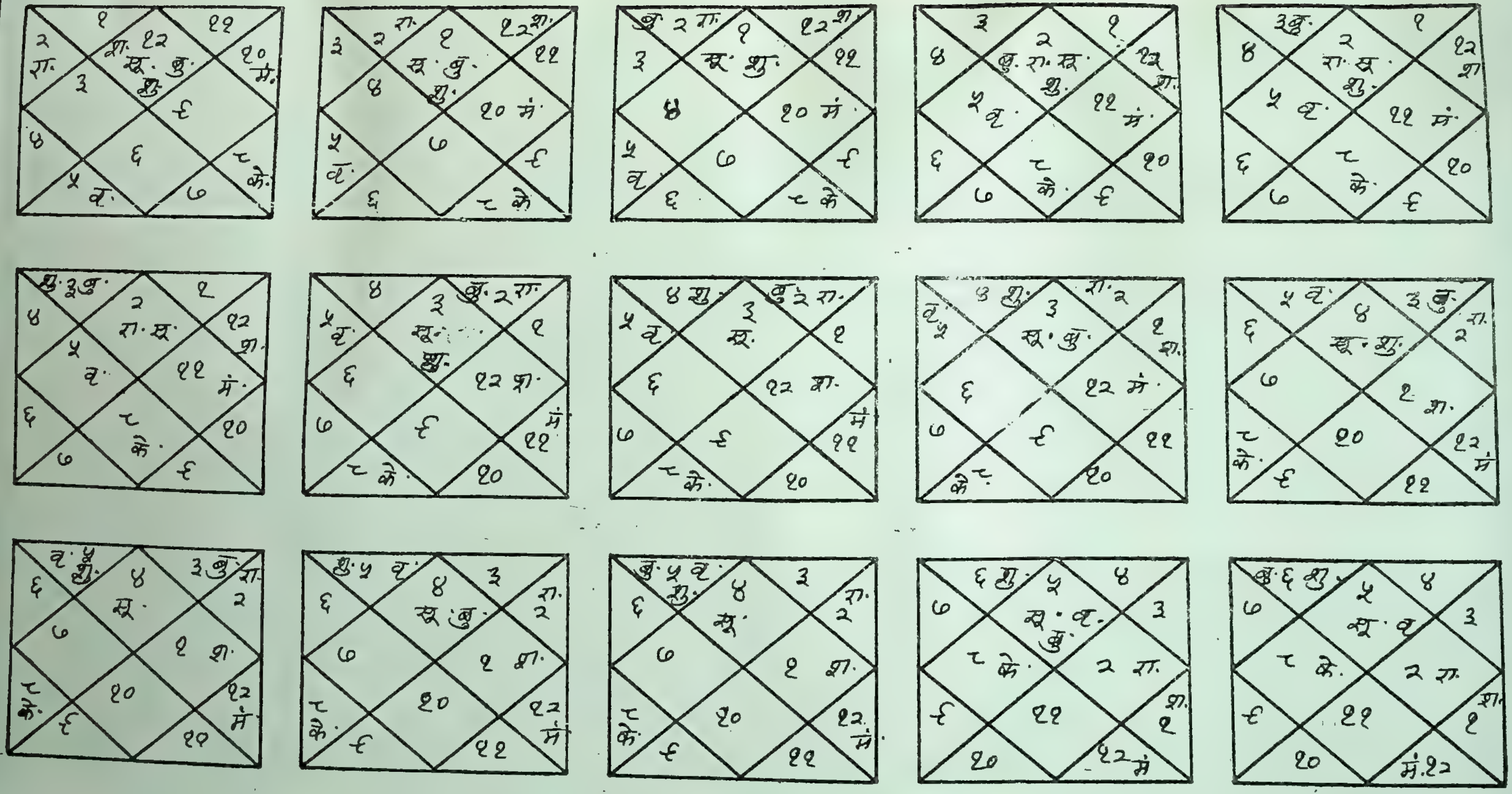

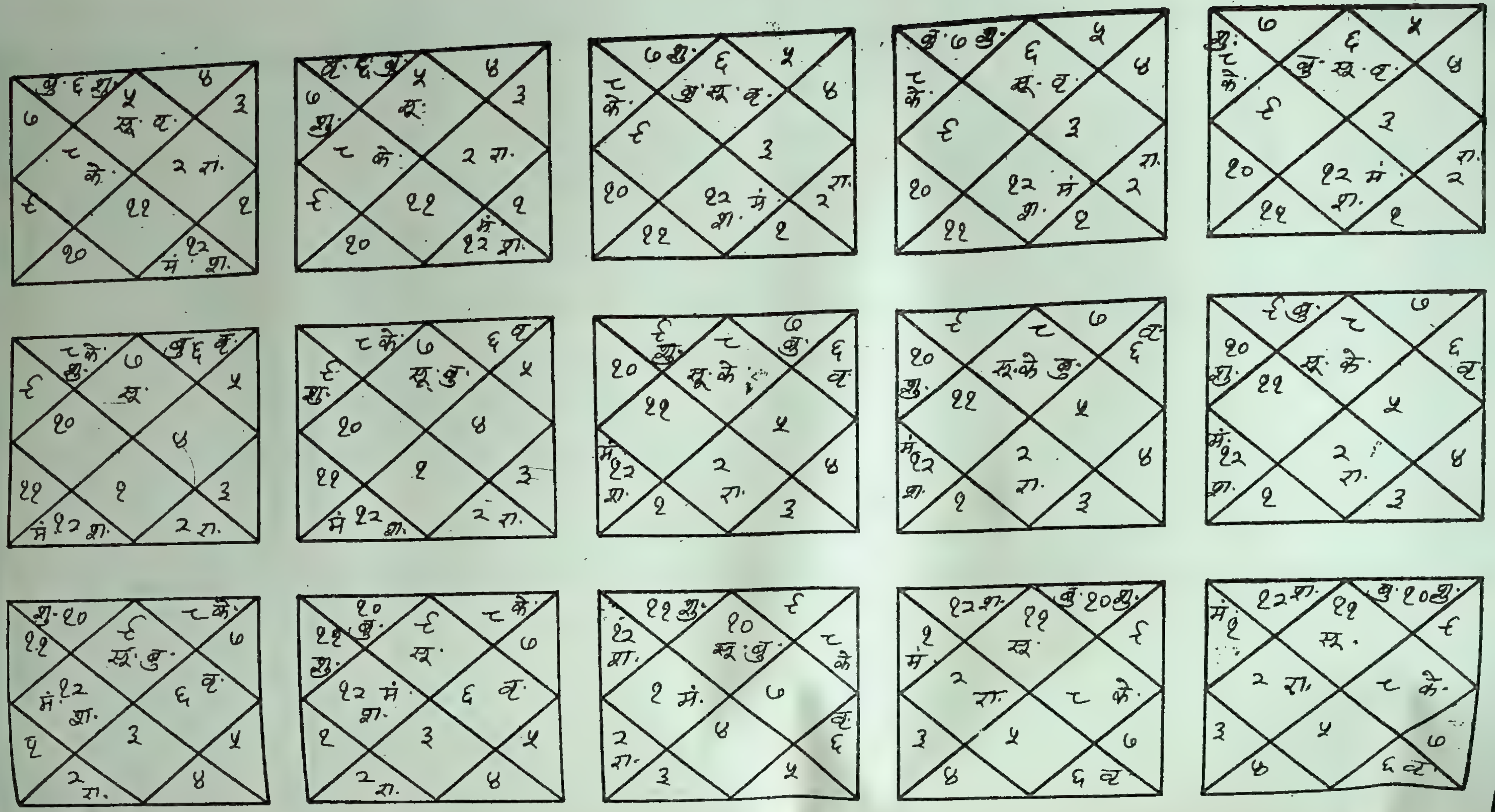

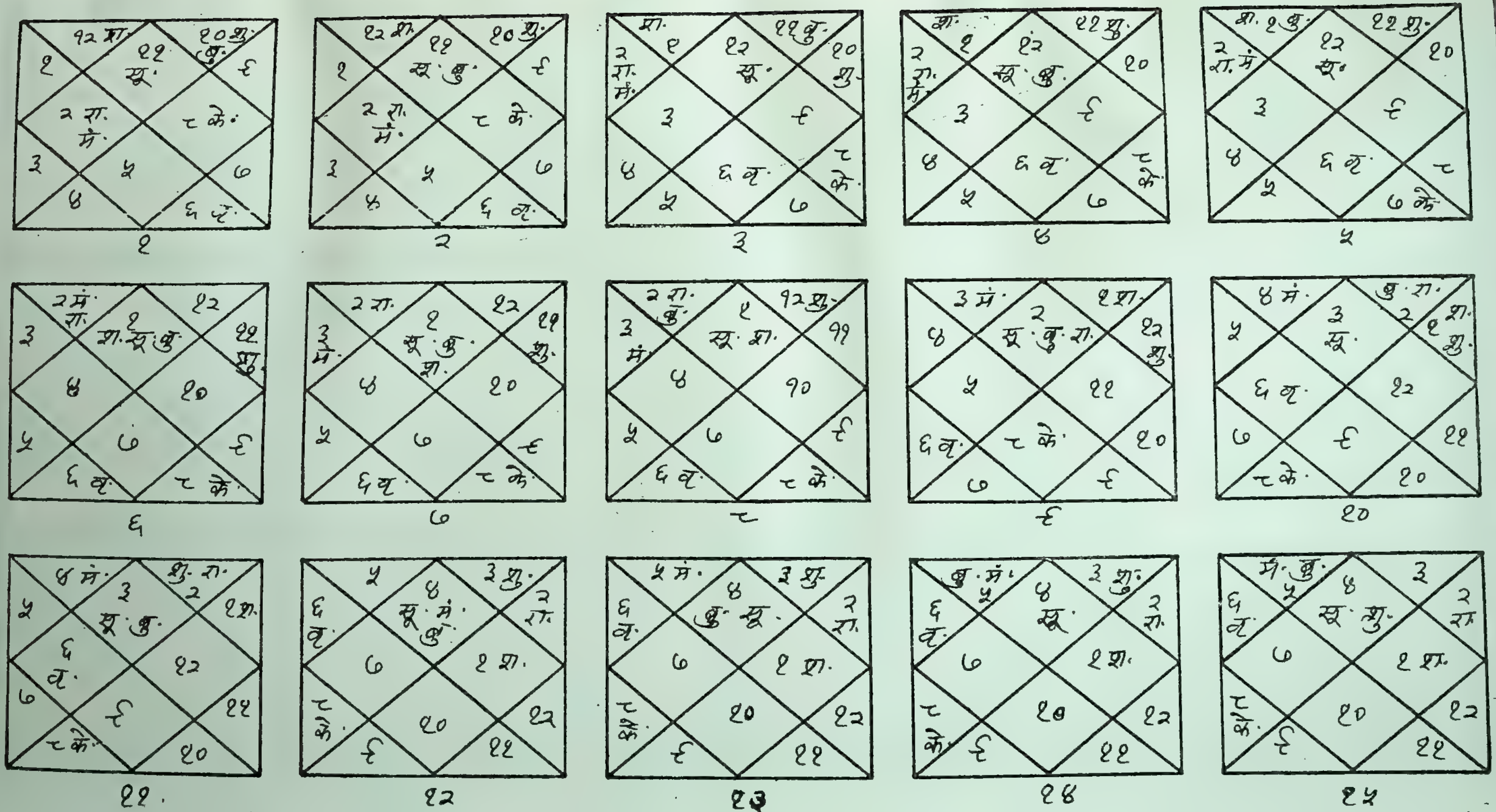
१
२
३
४
५
६
७
८
९
१०
११
१२
१३
१४
१५

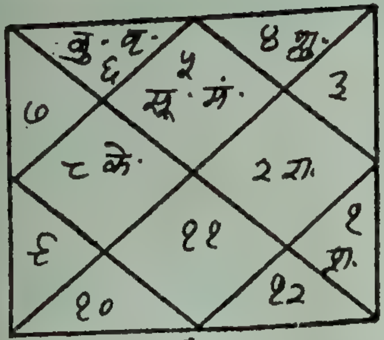
१६

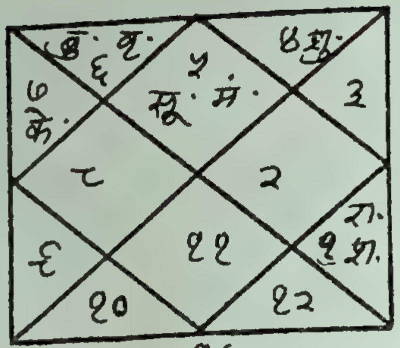
१७

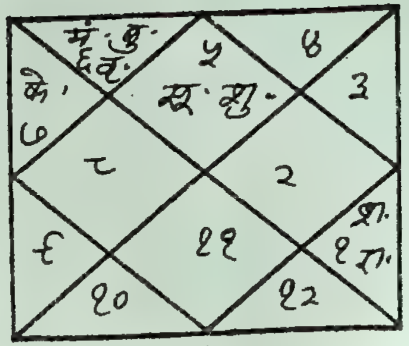
१८

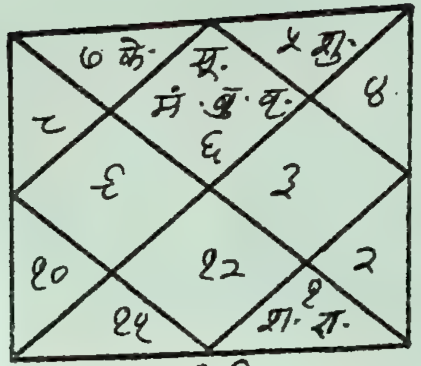
१९

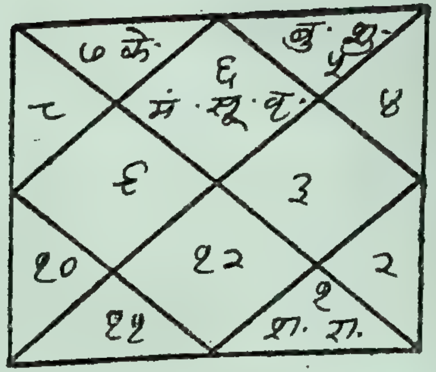
२०

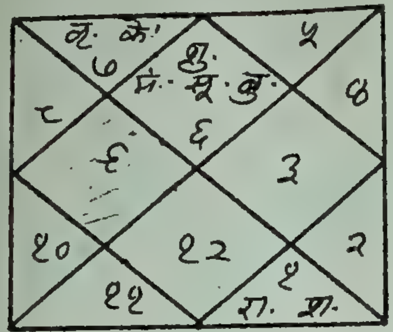
२१

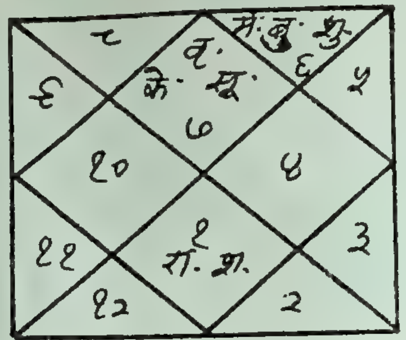
२२

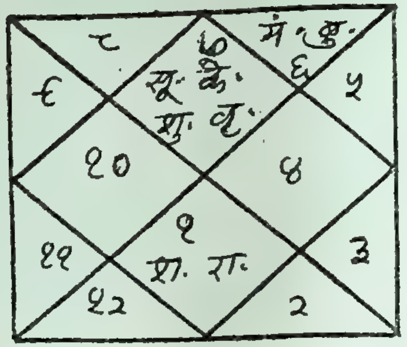
२३

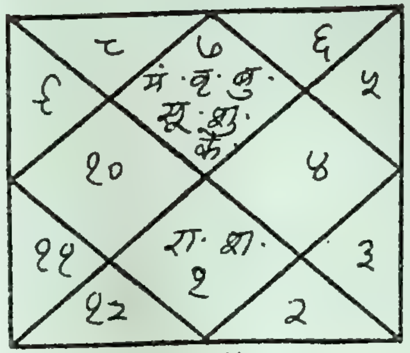
२४

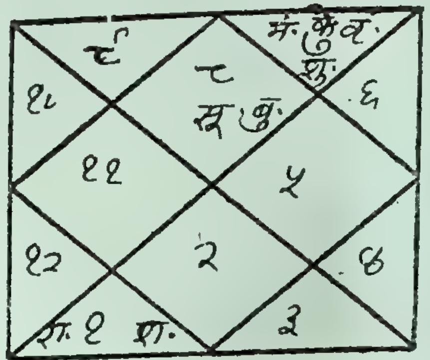
२५

२६

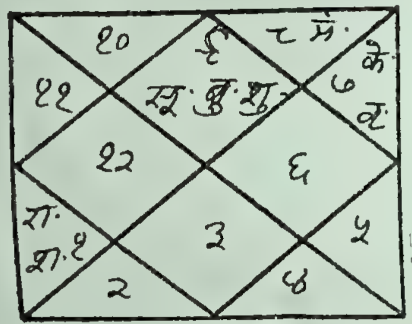
२७

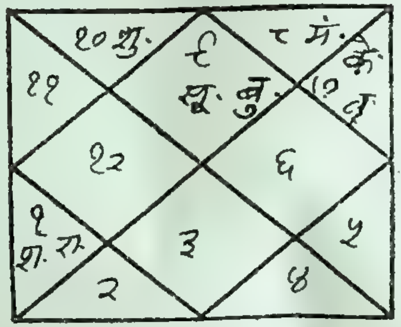
२८

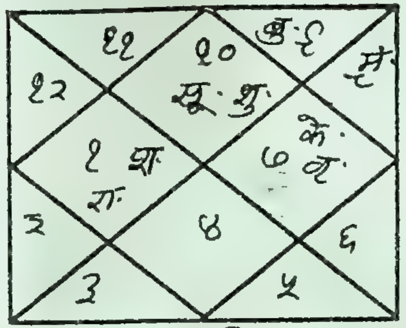
२९

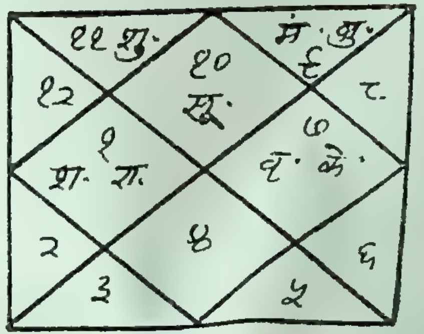
३०

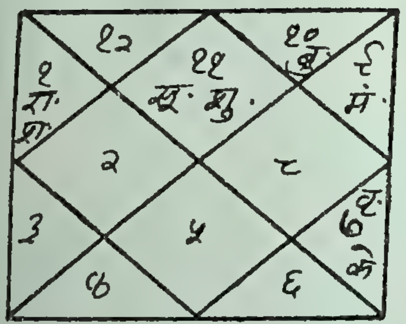
३१

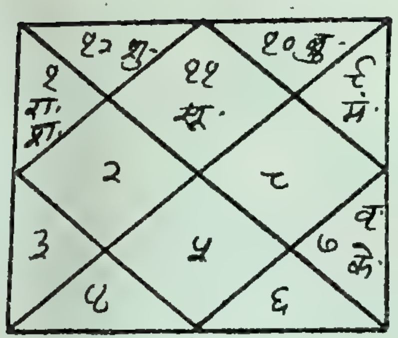
३२

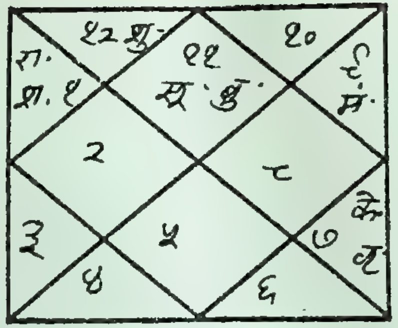
३३

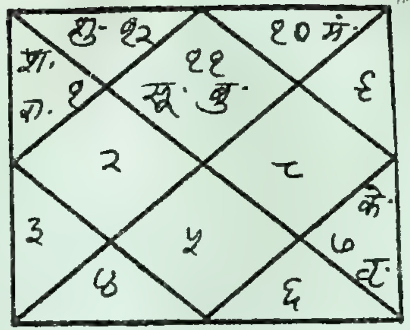
३४

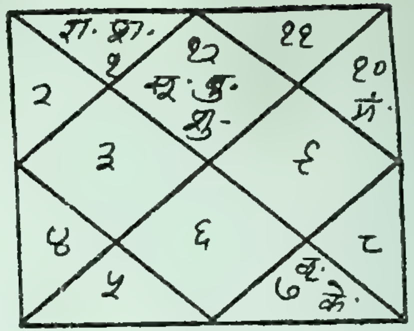
३५

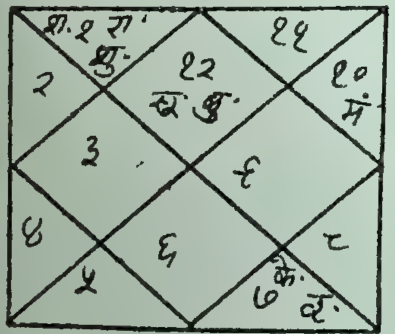
३६

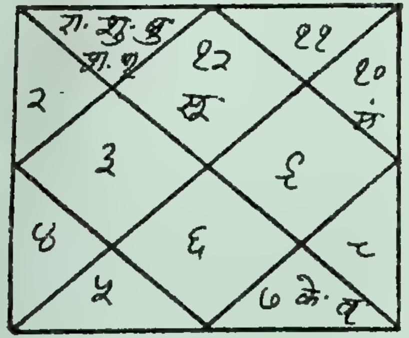
३७

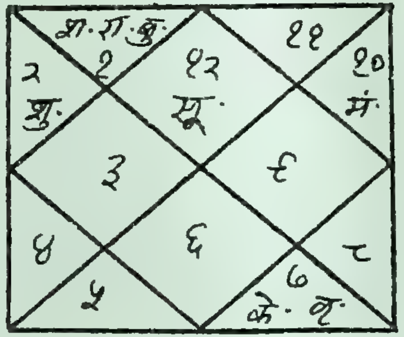
३८

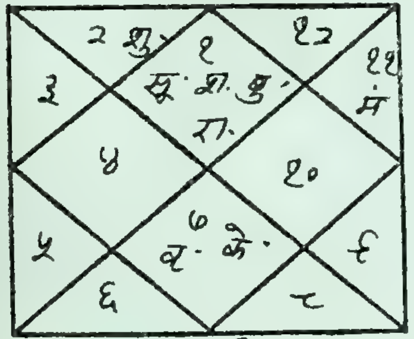
३९

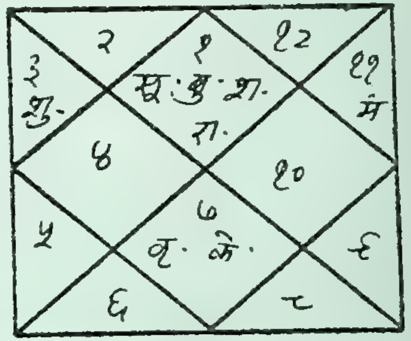
४०

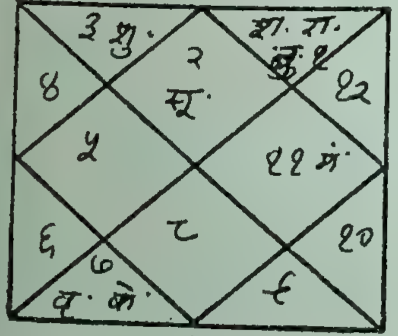
४१

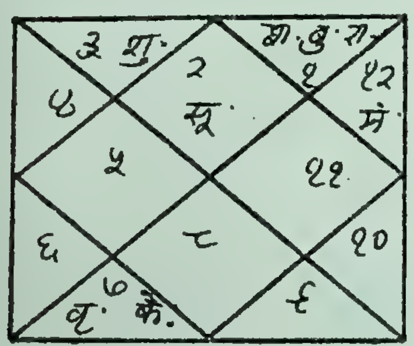
४२

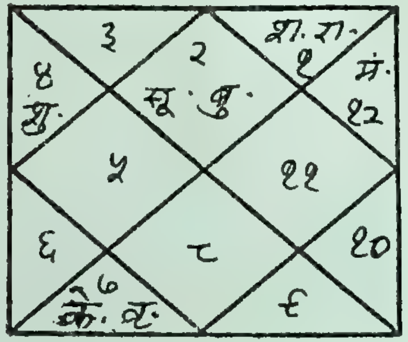
४३

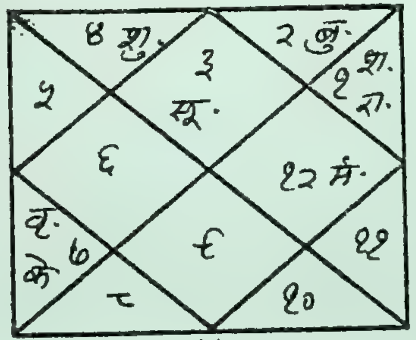
४४

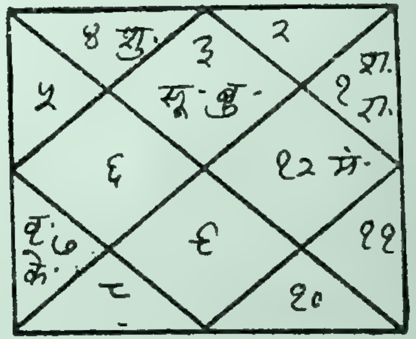
४५

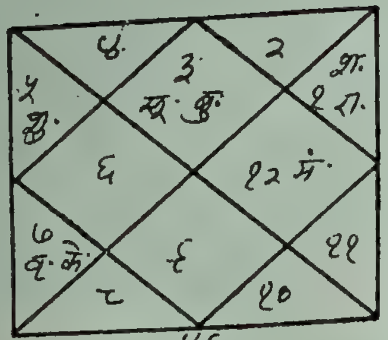
४६

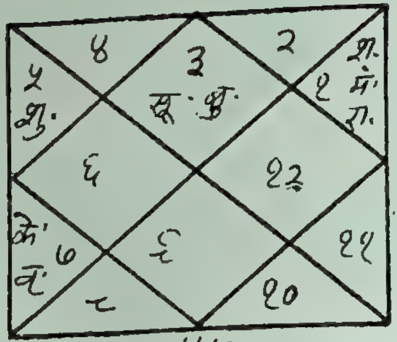
४७

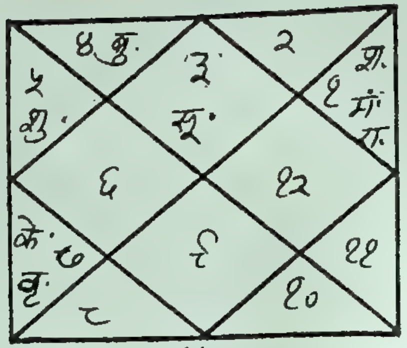
४८

४९

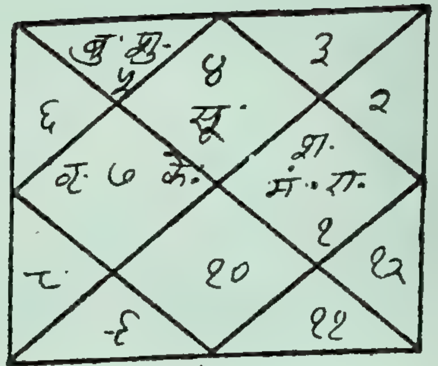
५०

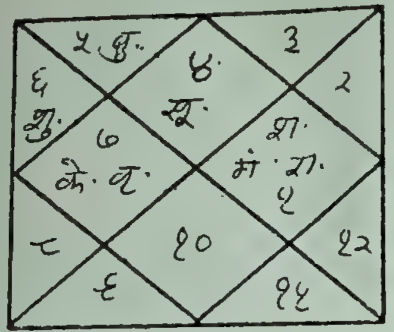
५१

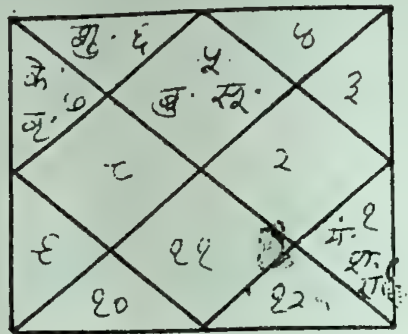
५२

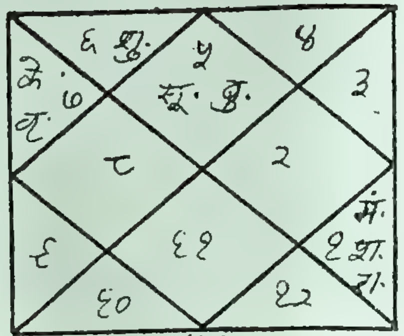
५३

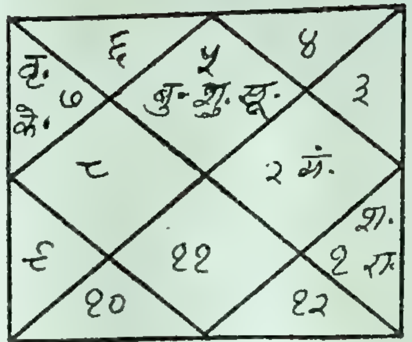
५४

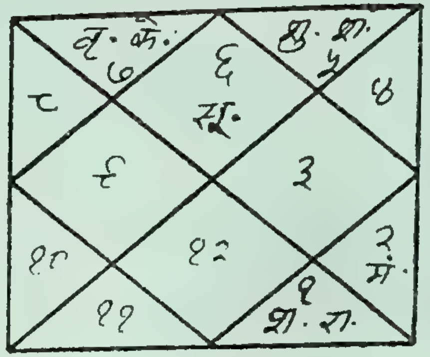
५५

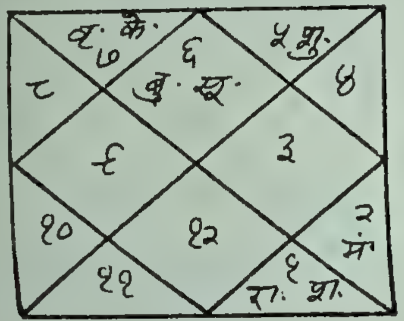
५६

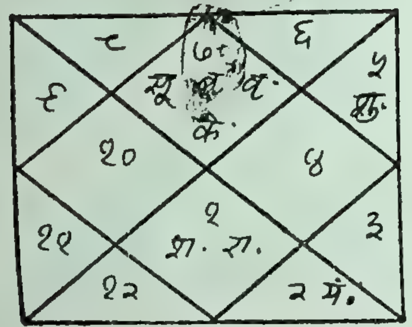
५७

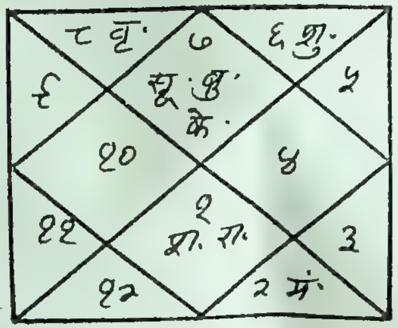
५८

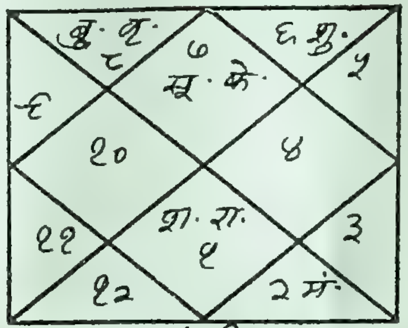
५९

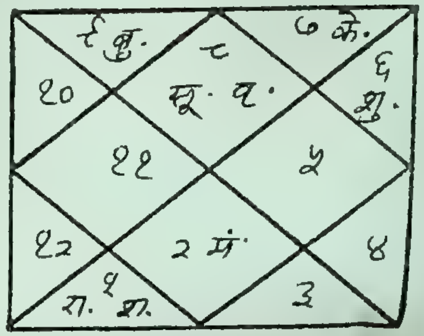
६०

६१

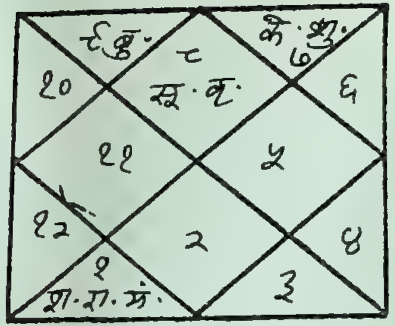

६२

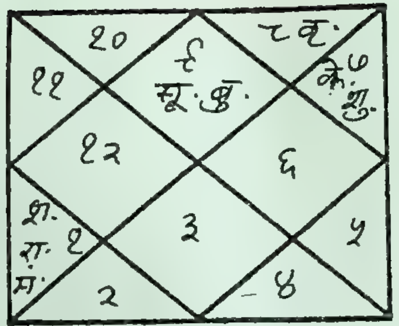

६३

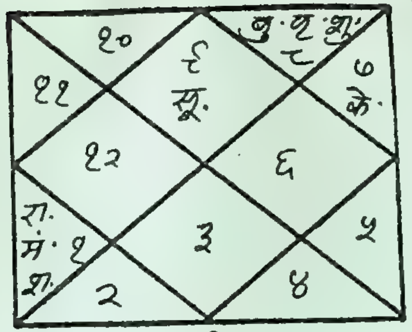

६४

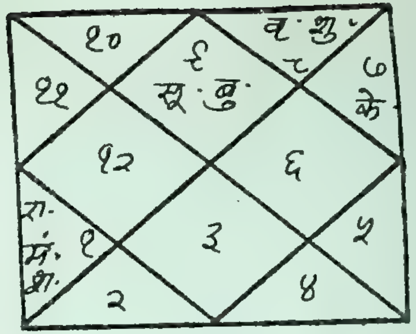

६५

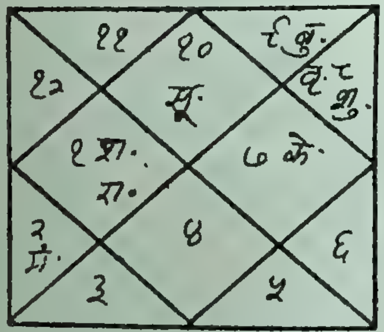

६६

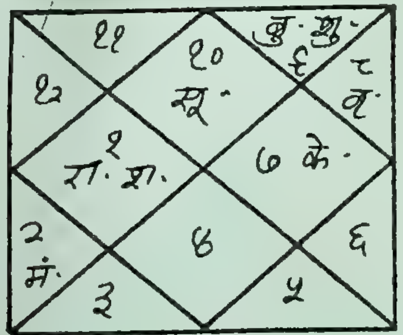

६७

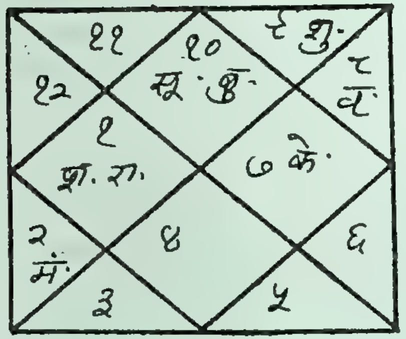

६८

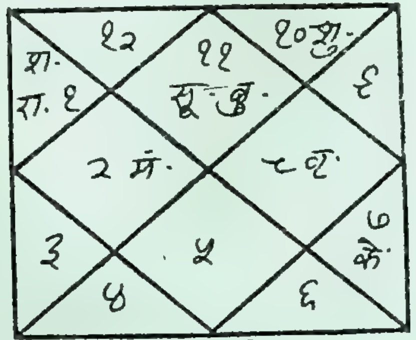

६९

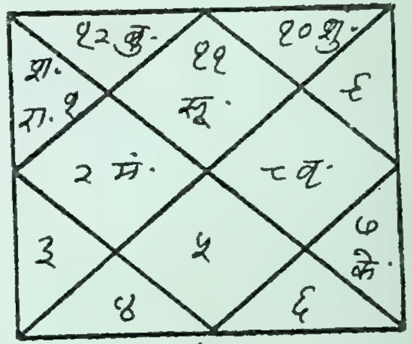

७०

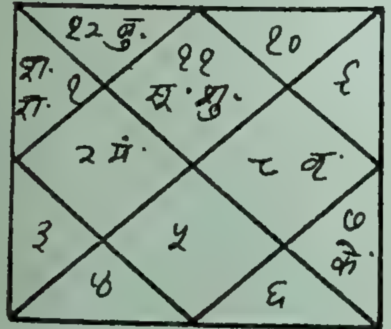

७१

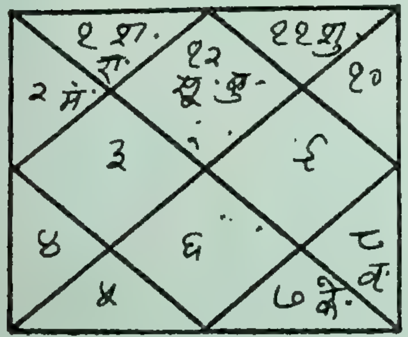

७२

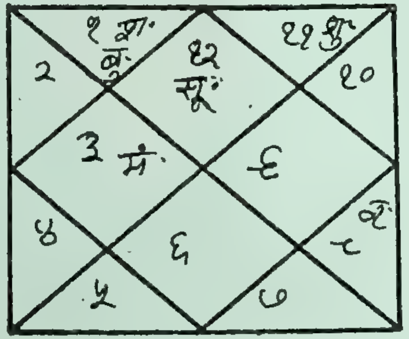

७३

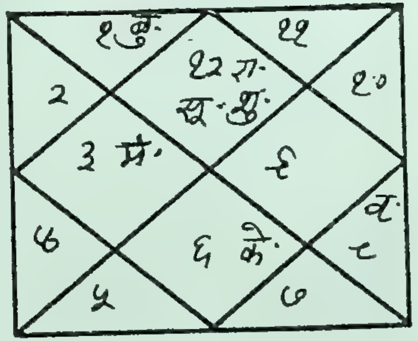

७४

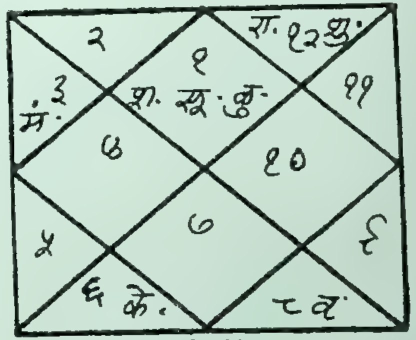

७५

७६

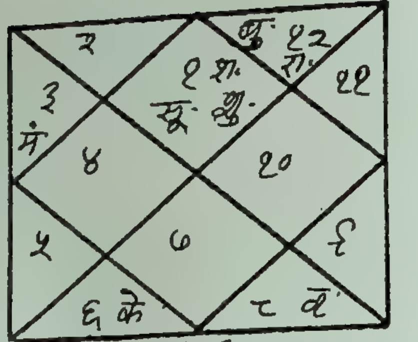
७७

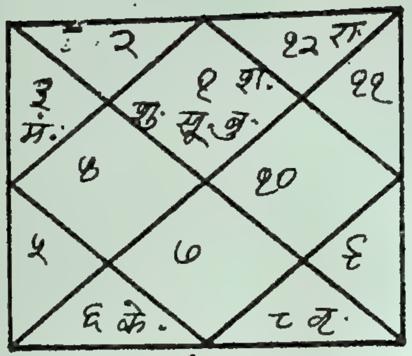
७८

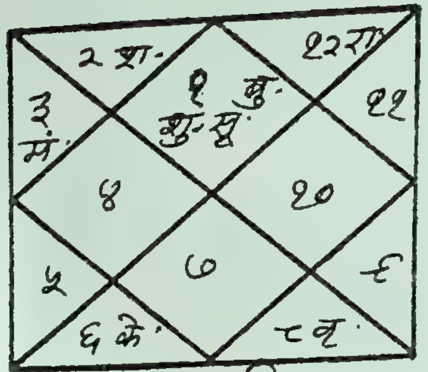
७९

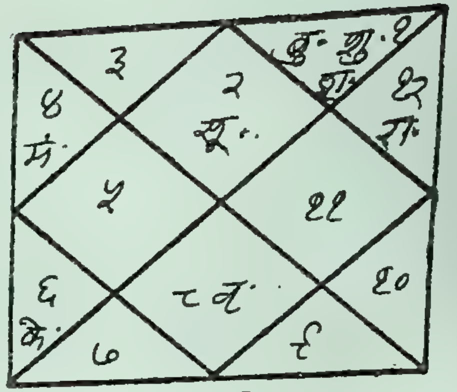
८०

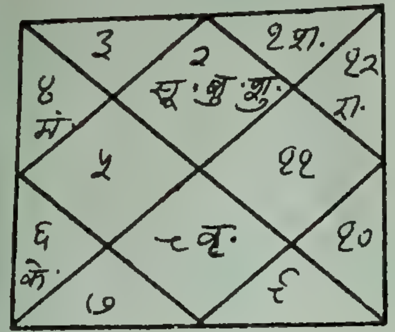
८१

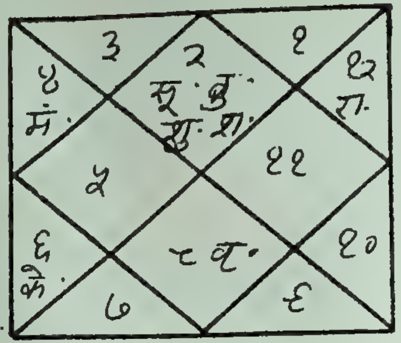
८२

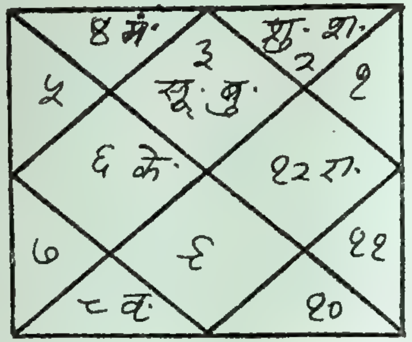
८३

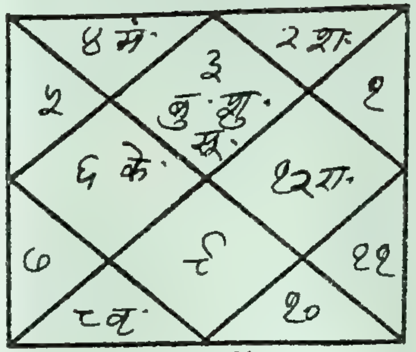
८४

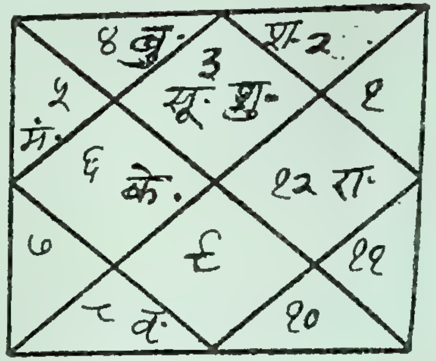
८५

८६

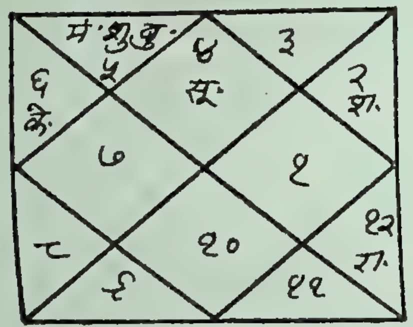
८७

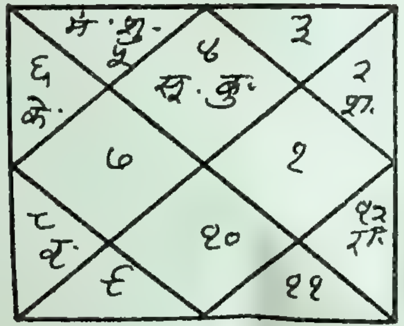
८८

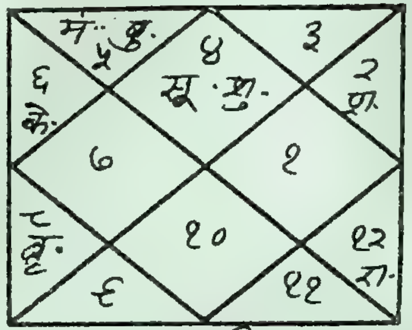
८९

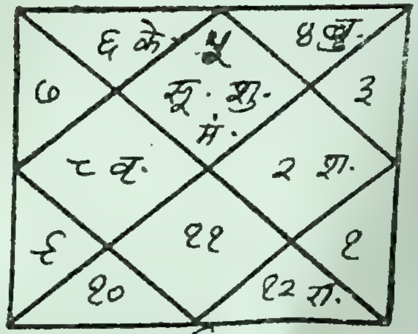
९०

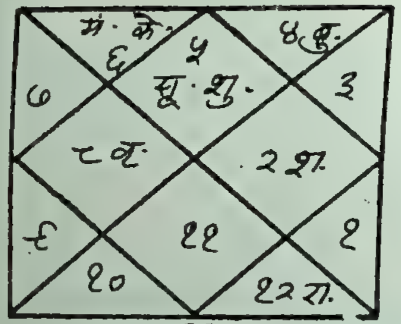

९१

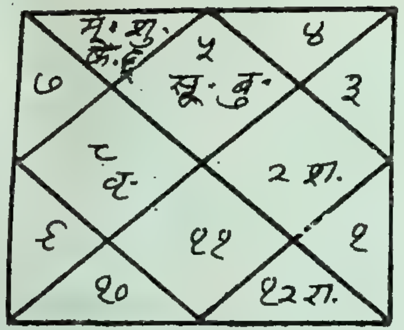

९२

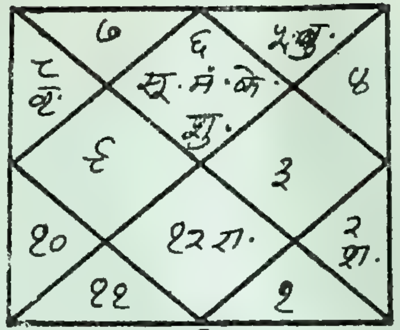

९३

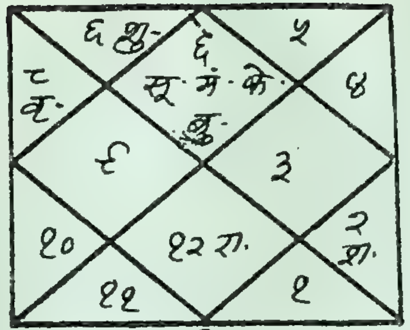

९४

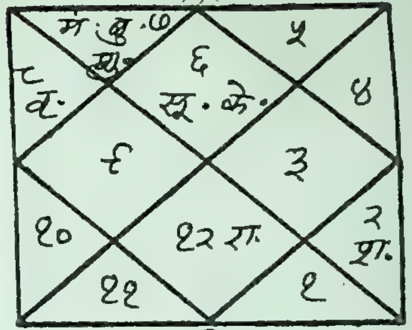

९५

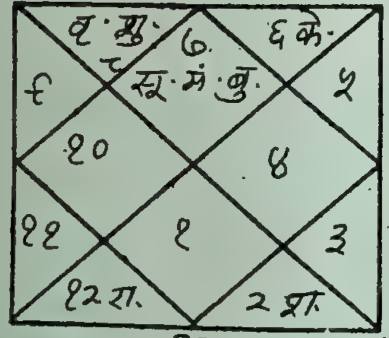

९६

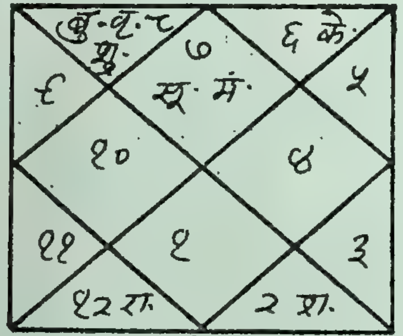

९७

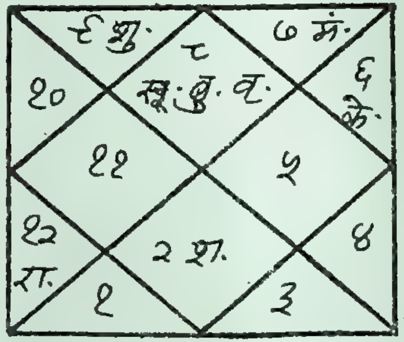

९८

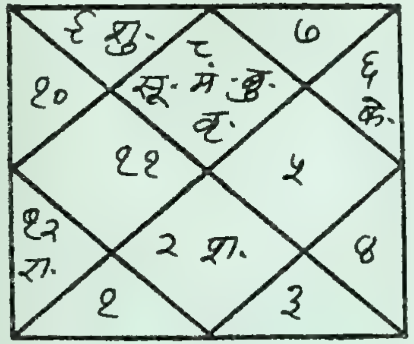

९९

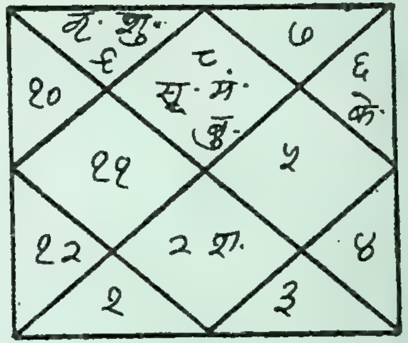

१००

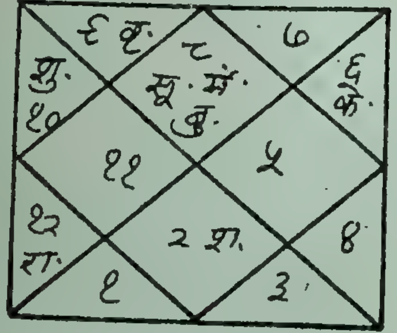

१०१

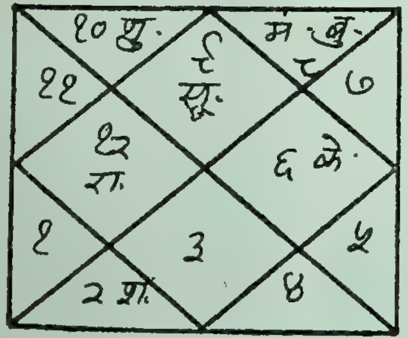

१०२

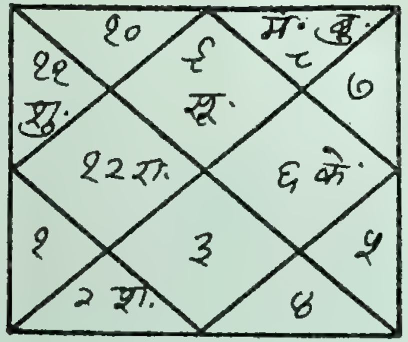

१०३

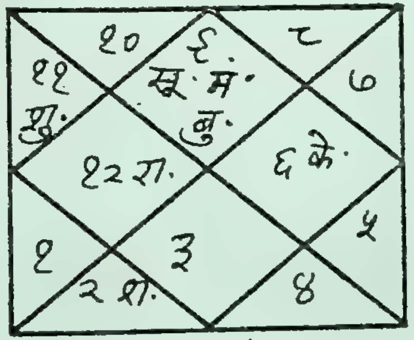

१०४

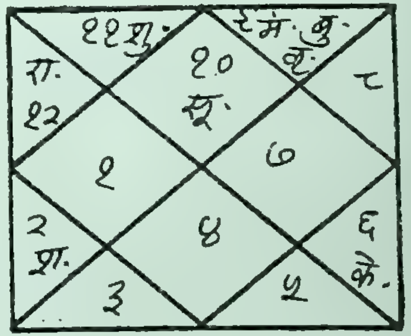

१०५

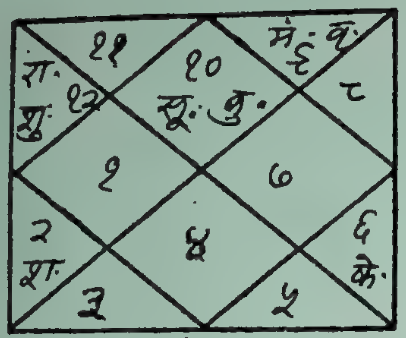

२०६

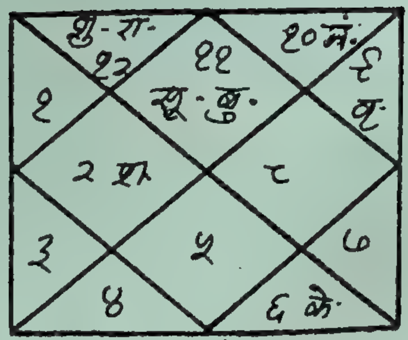

२०७

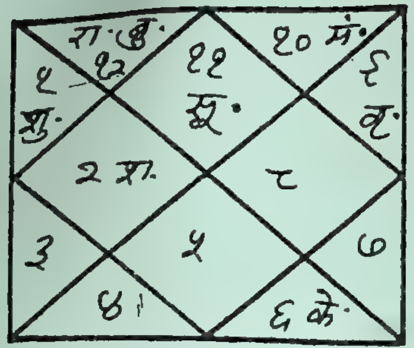

२०८

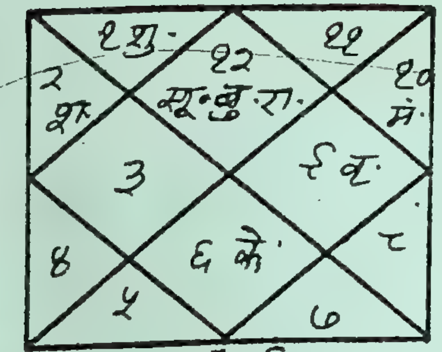

२०९

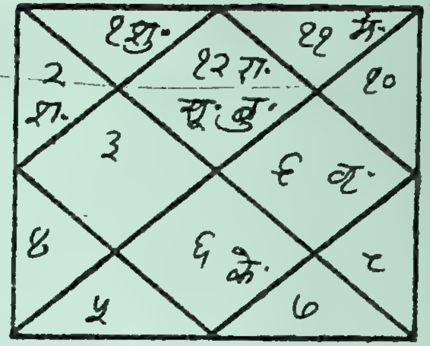

२१०

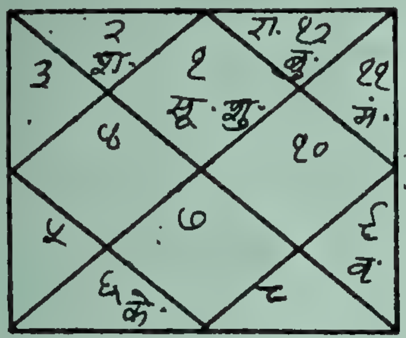

२११

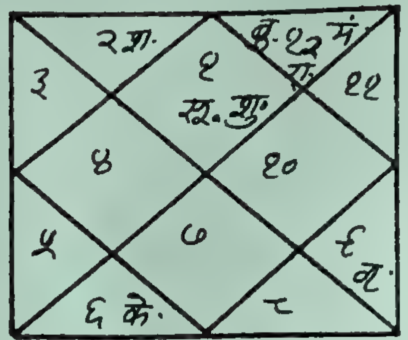

२१२

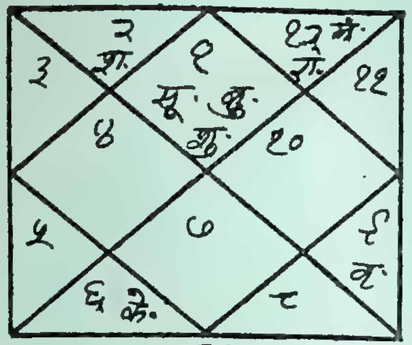

२१३

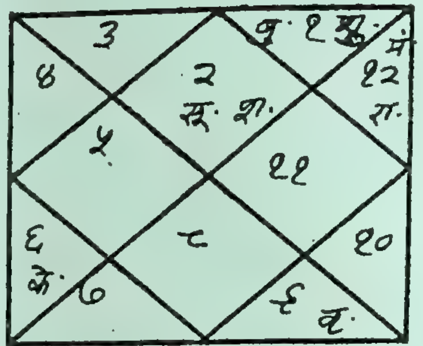

२१४

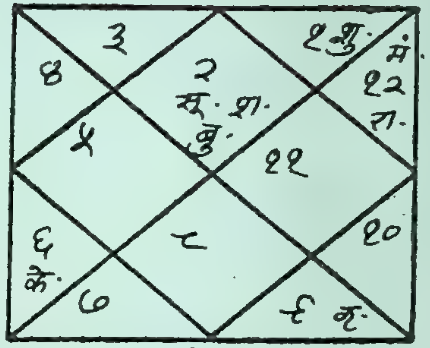

२१५

२१६

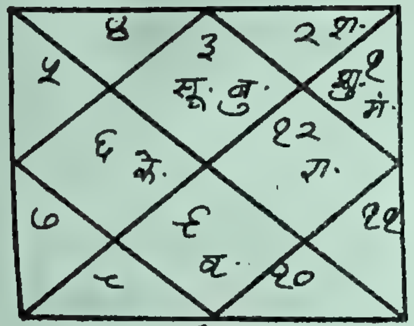

२१७

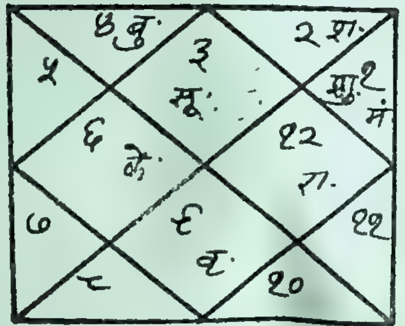

२१८

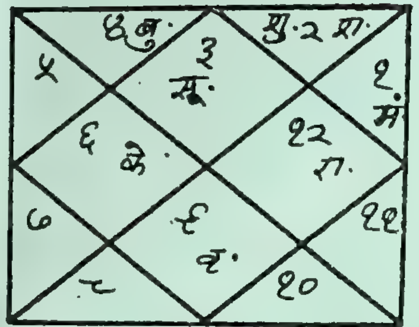

२१९

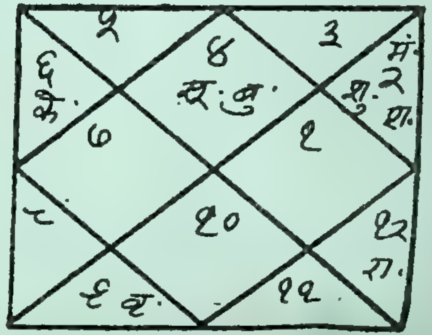

२२०

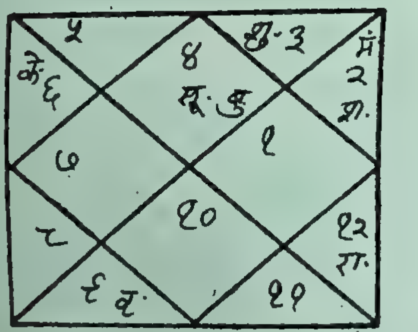
१२१

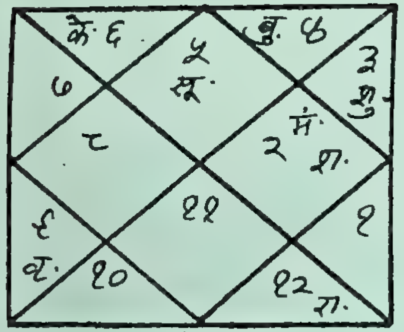
१२२

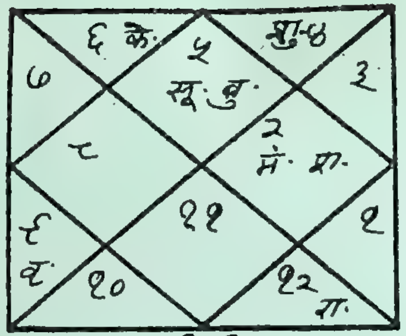
१२३

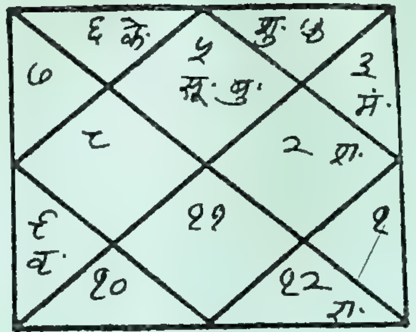
१२४

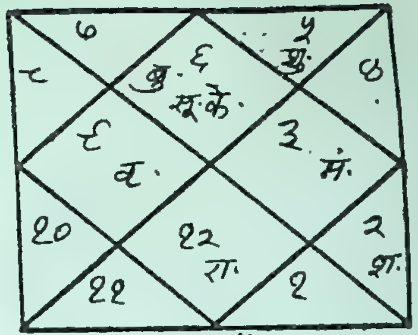
१२५

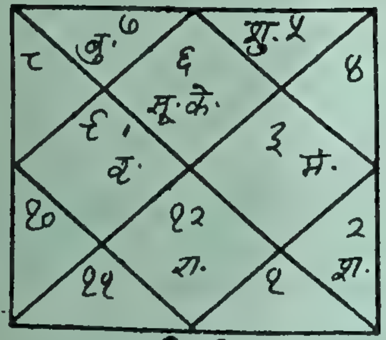
१२६

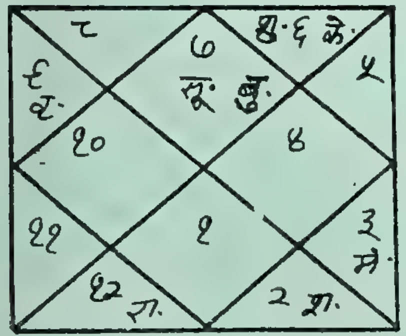
१२७

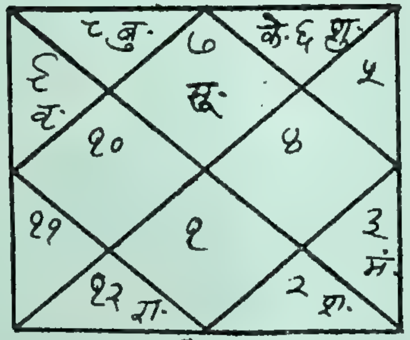
१२८

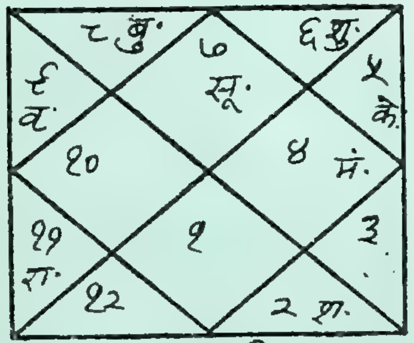
१२९

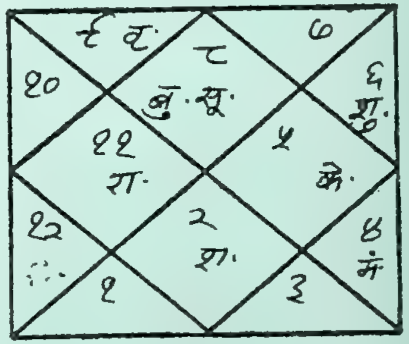
१३०

१३१

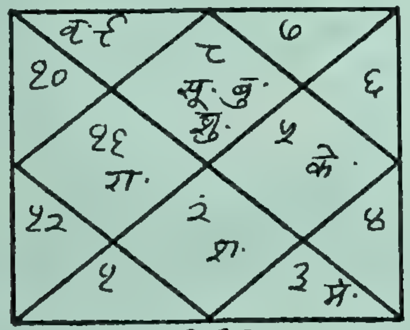
१३२

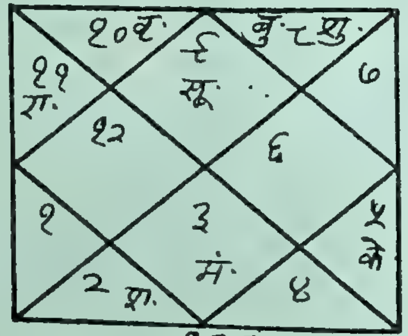
१३३

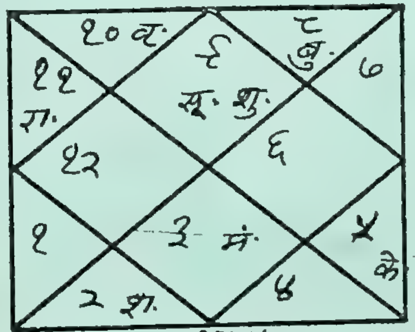
१३४

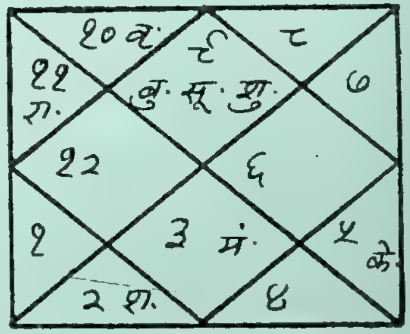
१३५

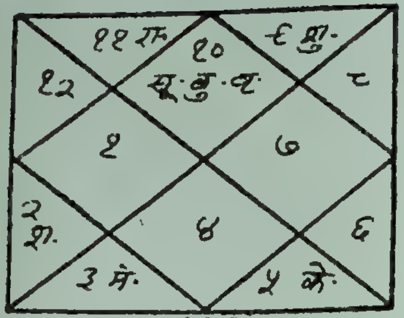

२३६

२३७

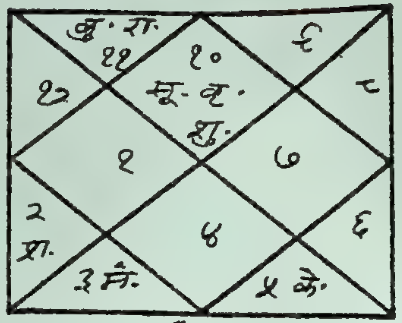

२३८

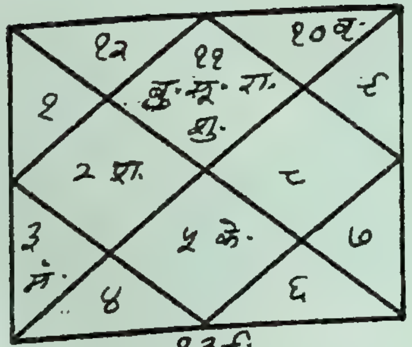

२३९

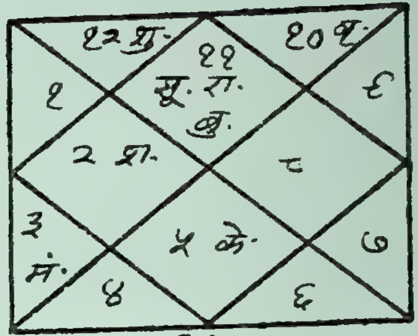

२४०

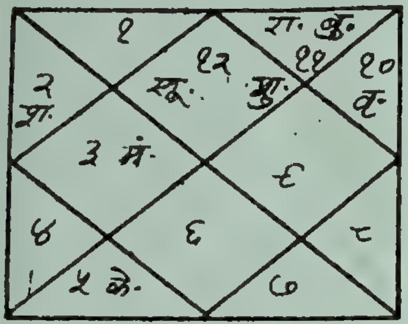

२४१

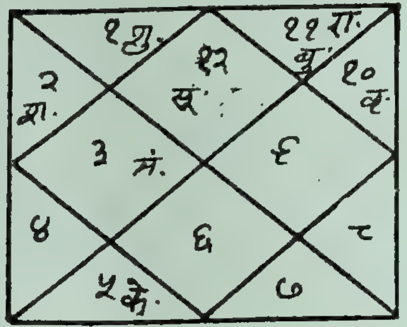

२४२

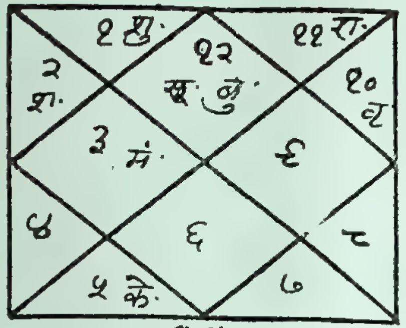

२४३

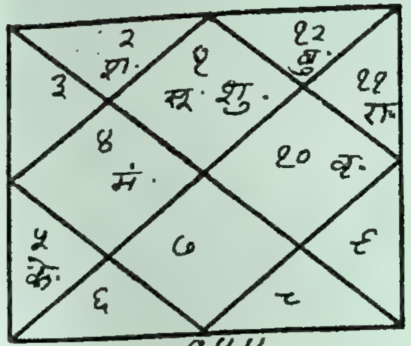

२४४

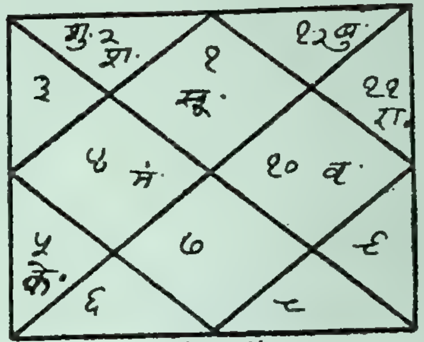

२४५

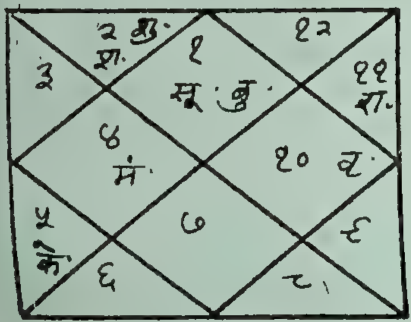

२४६

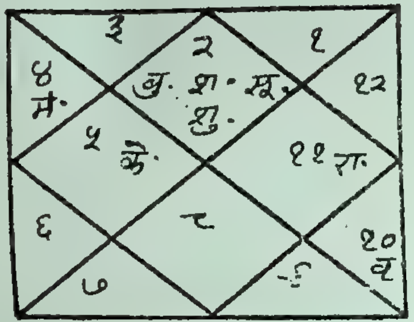

२४७

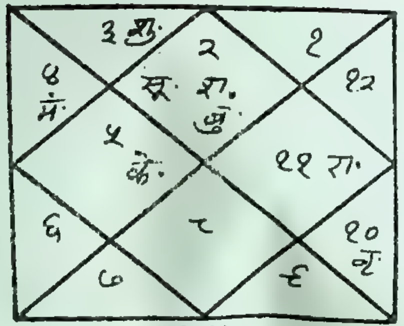

२४८

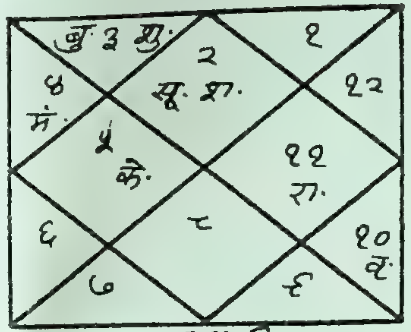

२४९

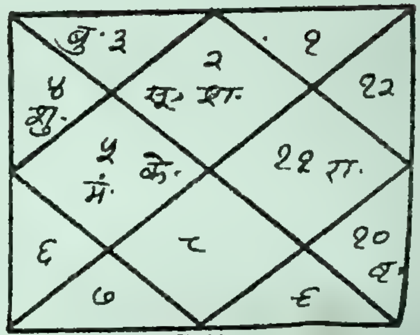

२५०

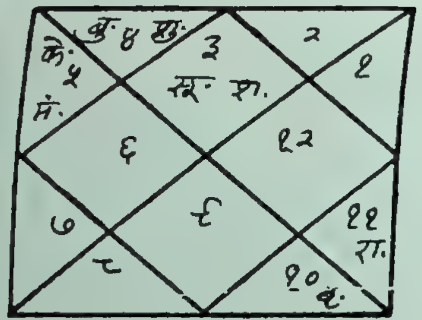
१५१

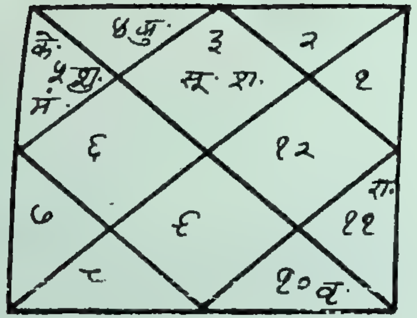
१५२

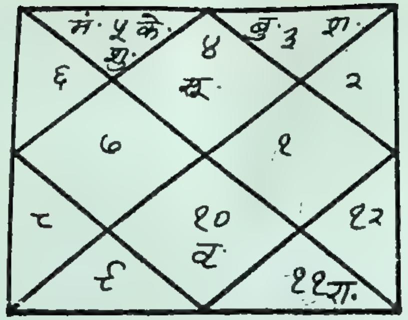
१५३

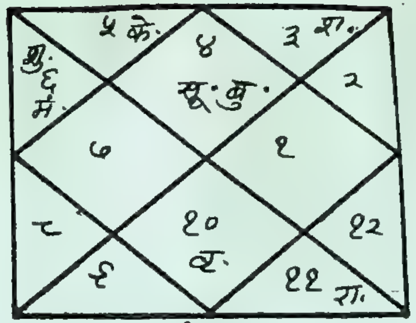
१५४

१५५

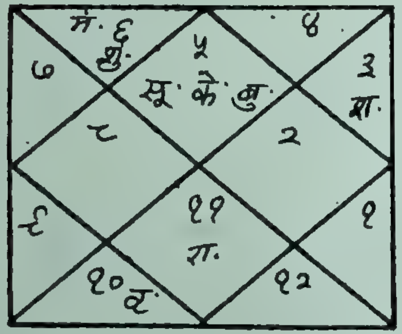
१५६

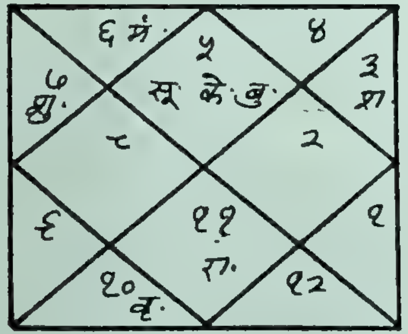
१५७

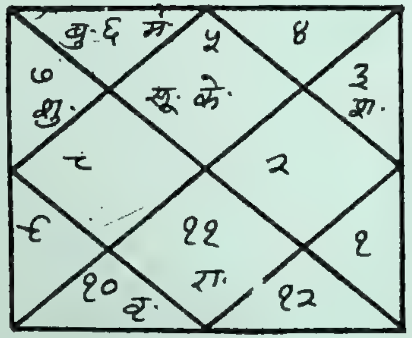
१५८

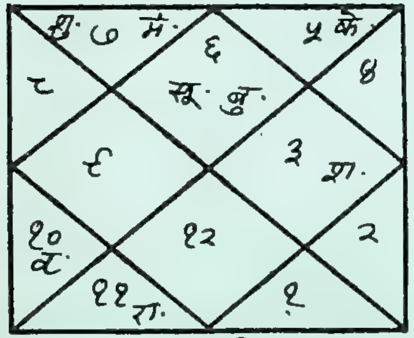
१५९

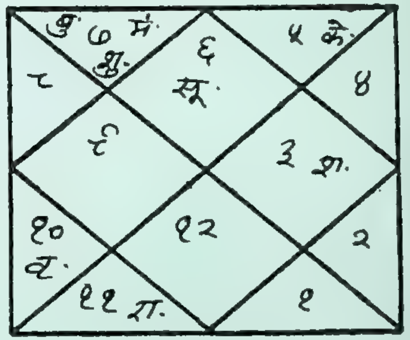
१६०

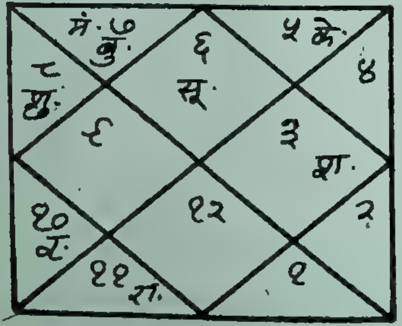
१६१

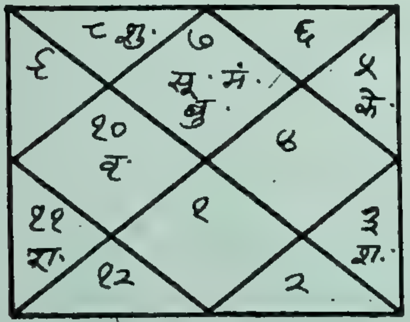
१६२

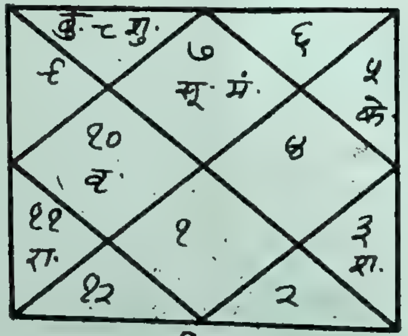
१६३

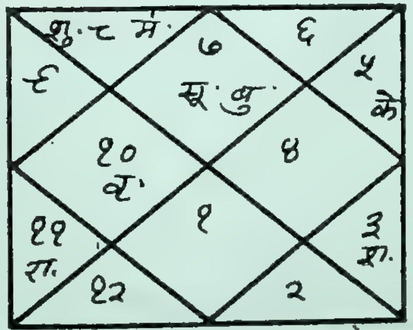
१६४

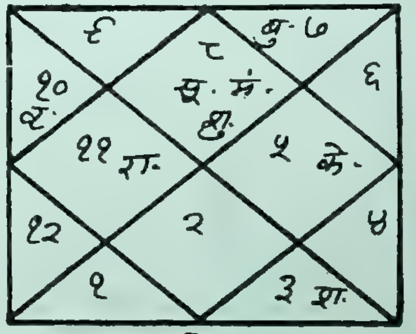
१६५

१६६

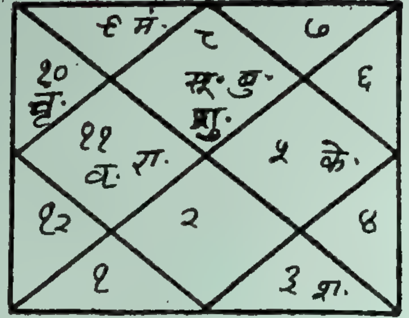
१६७

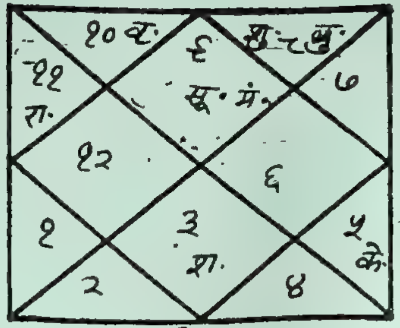
१६८

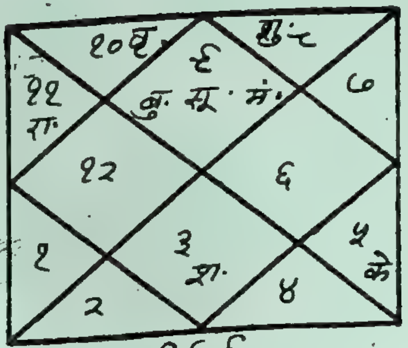
१६९

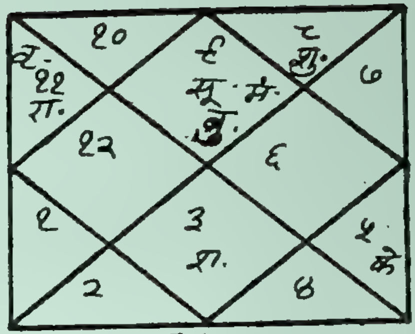
१७०

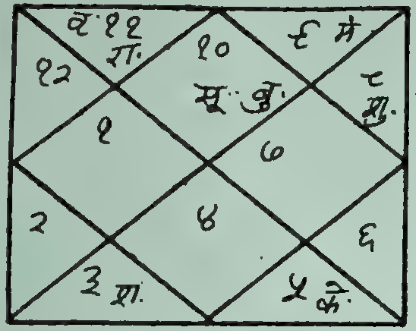
१७१

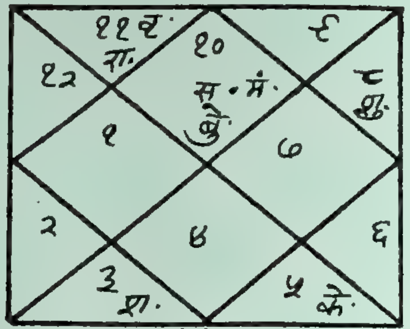
१७२

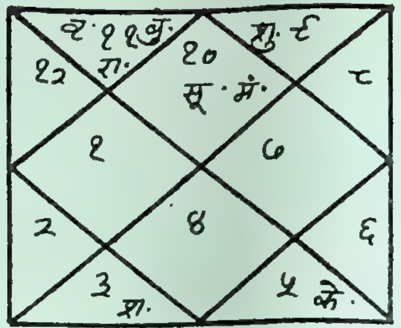
१७३

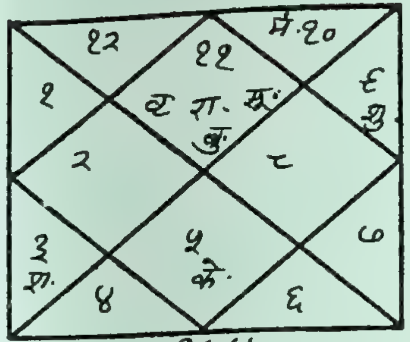
१७४

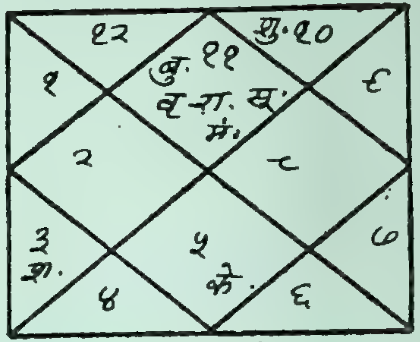
१७५

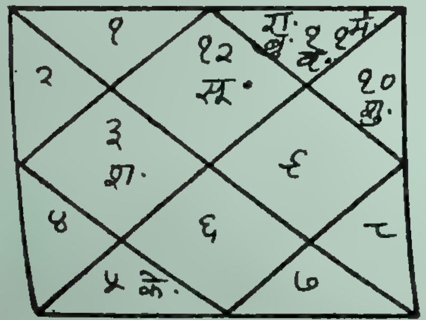
१७६

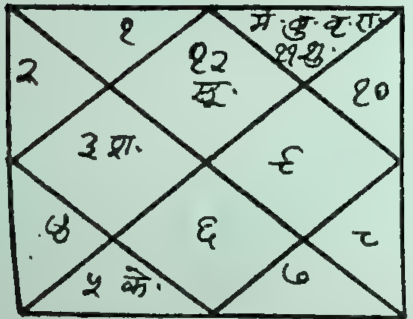
१७७

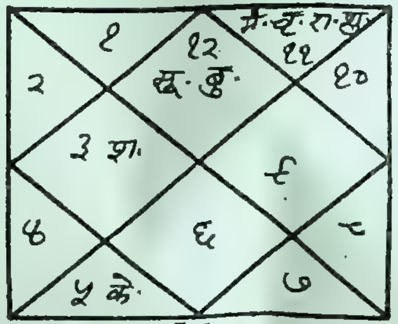
१७८

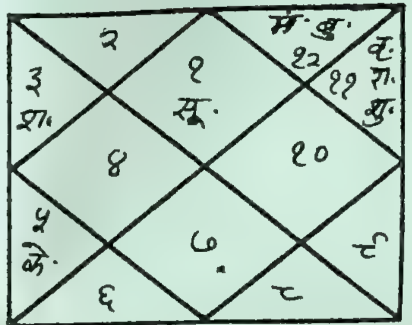
१७९

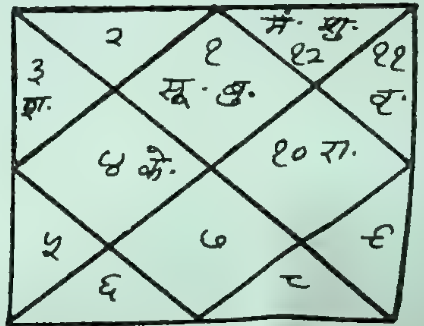
१८०

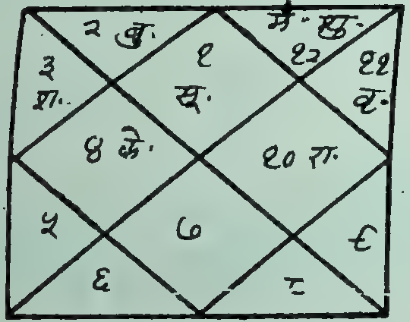

१८१

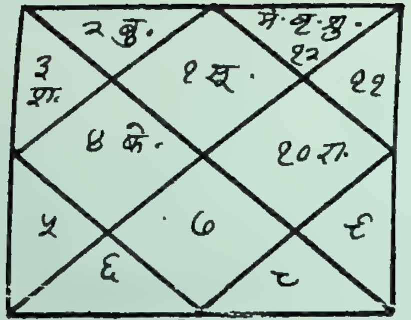

१८२

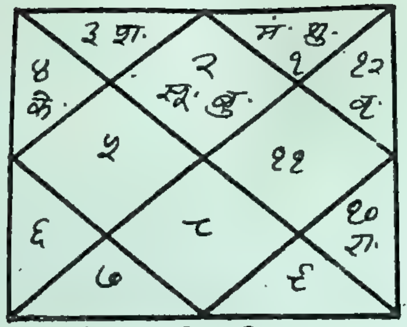

१८३

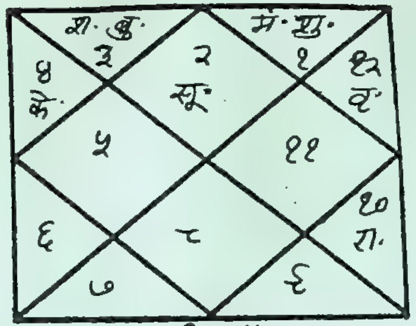

१८४

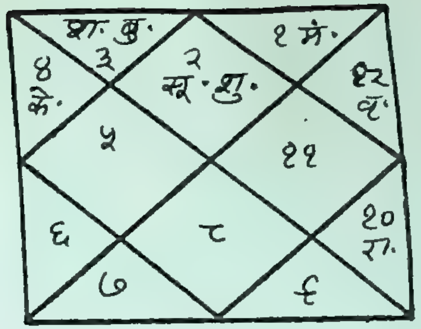

१८५

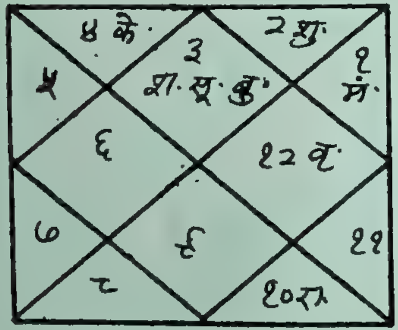

१८६

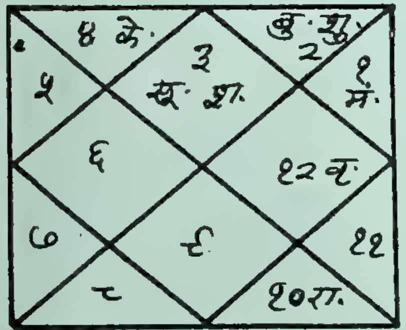

१८७

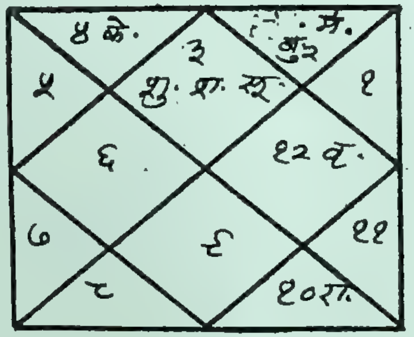

१८८

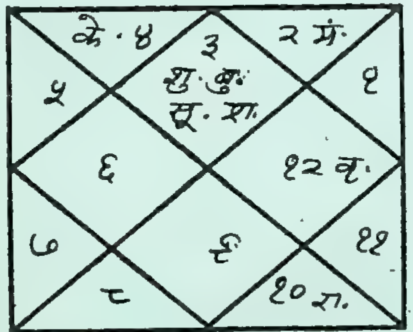

१८९

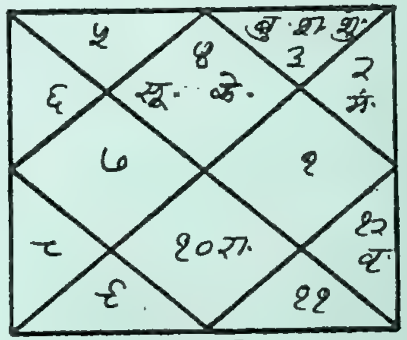

१९०

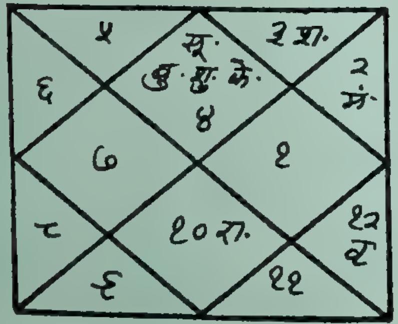

१९१

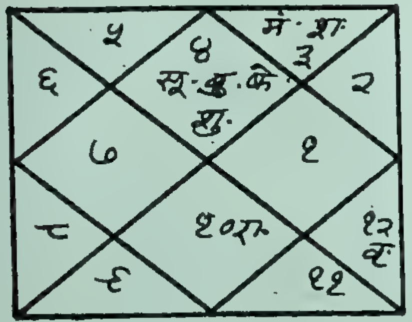

१९२

१९३

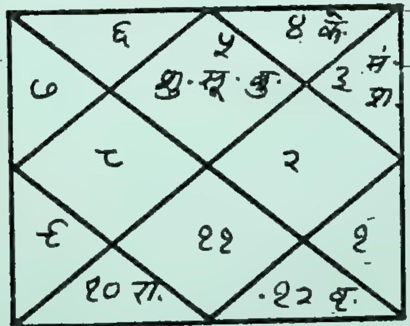

१९४

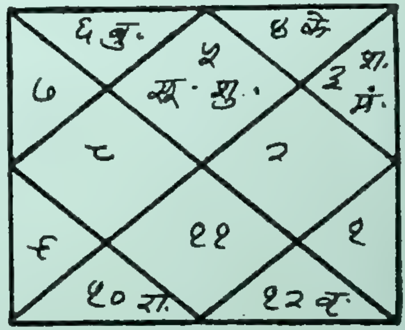

१९५

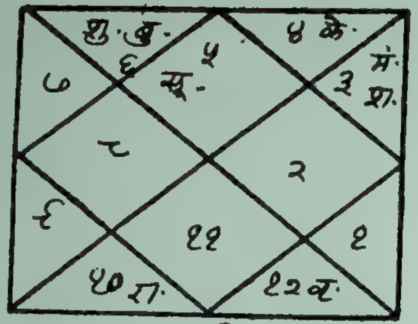
१९६

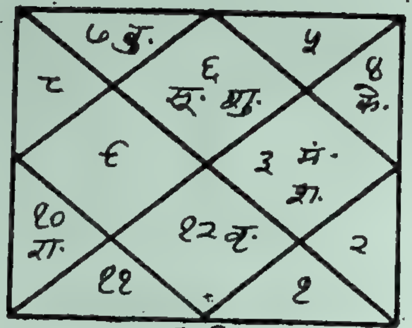
१९७

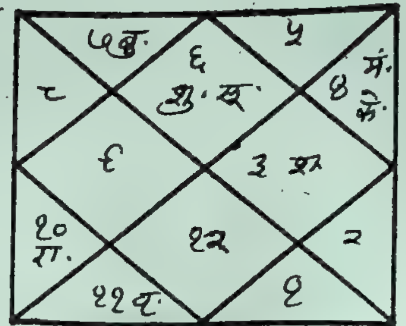
१९८

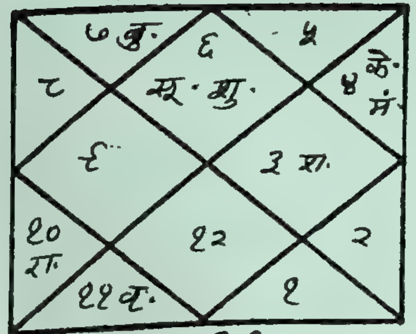
१९९

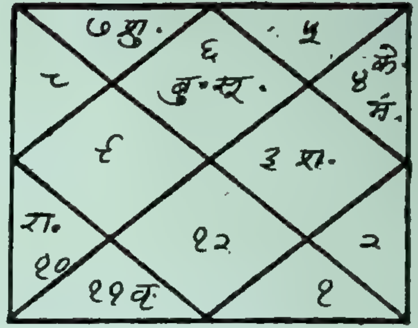
२००

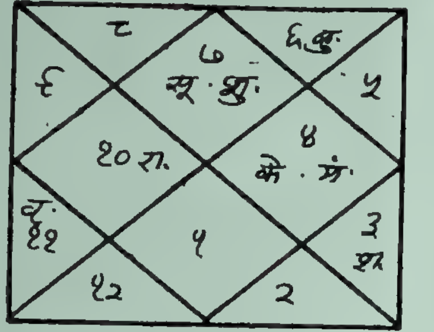
२०१

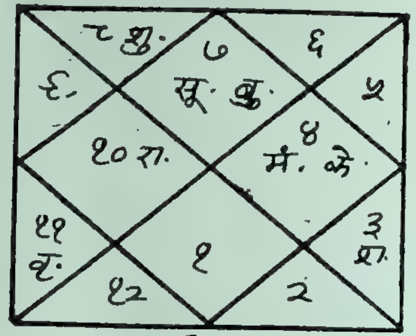
२०२

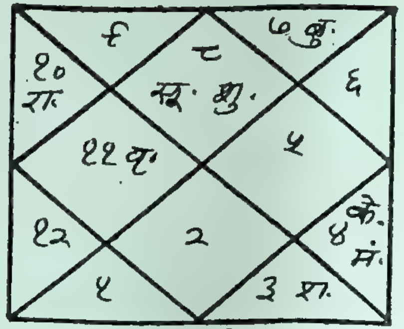
२०३

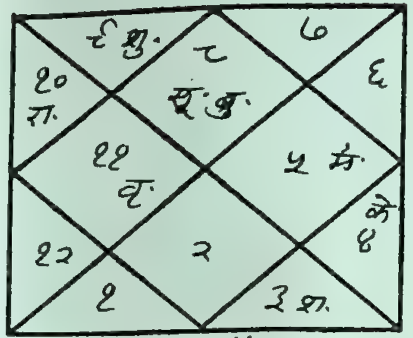
२०४

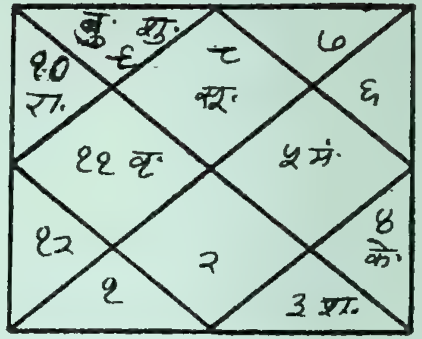
२०५

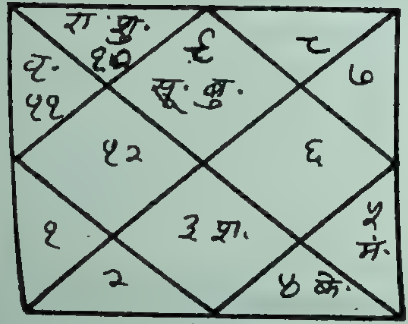
२०६

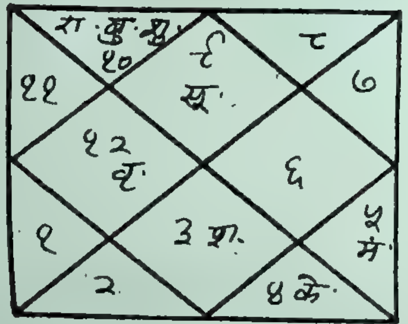
२०७

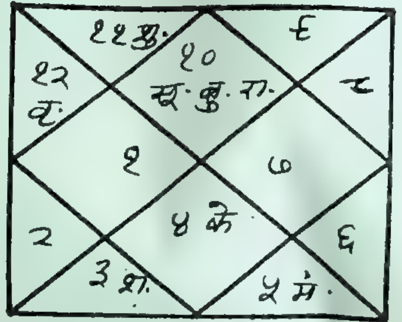
२०८

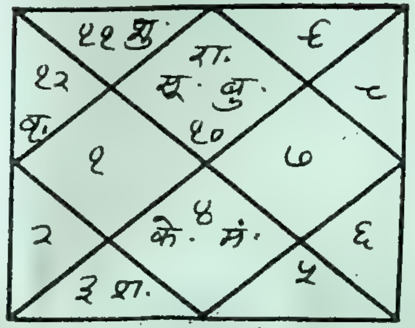
२०९

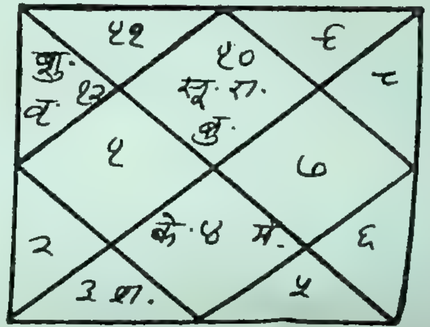
२१०

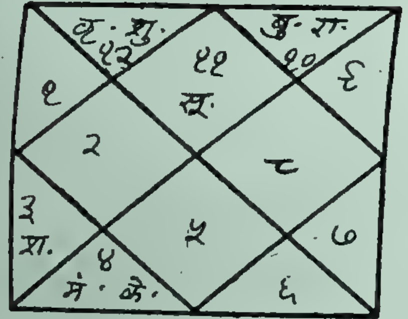

२११

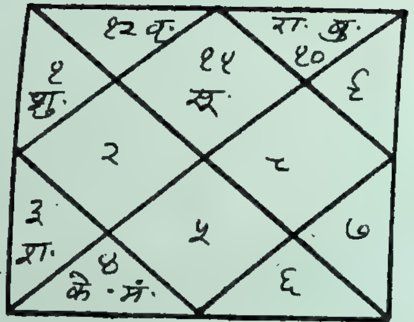

२१२

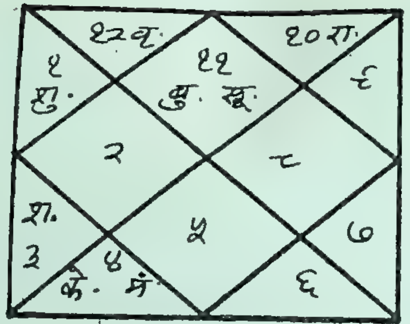

२१३

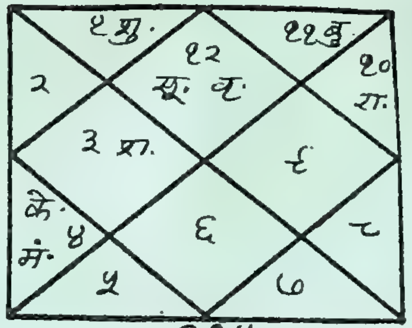

२१४

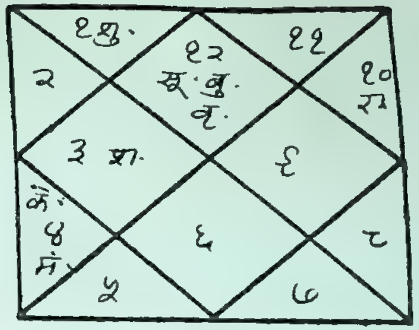

२१५

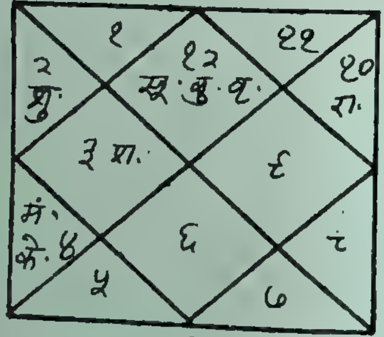

२१६

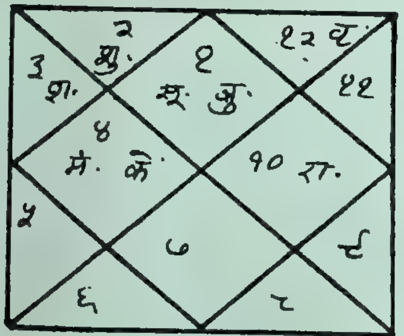

२१७

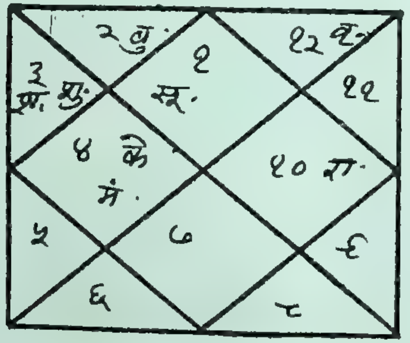

२१८

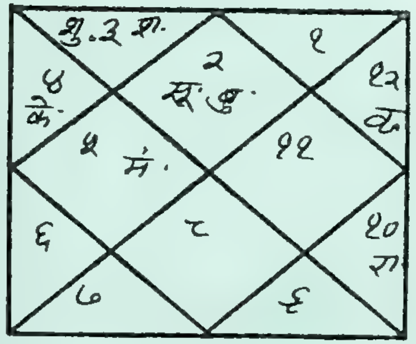

२१९

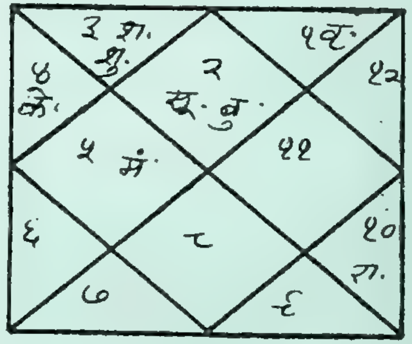

२२०

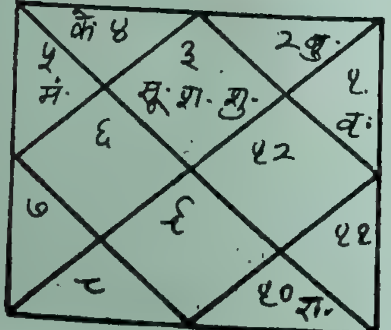

२२१

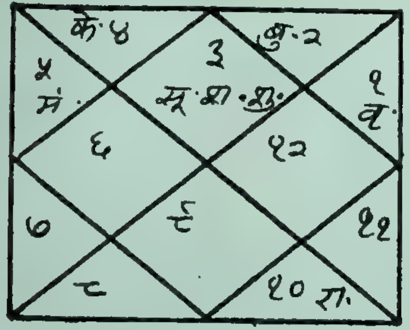

२२२

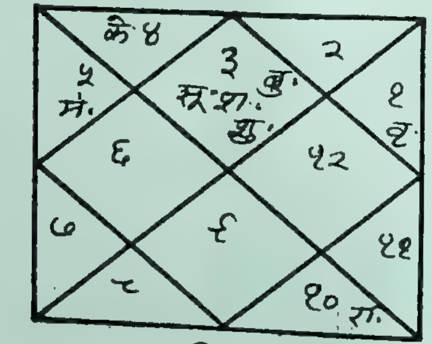

२२३

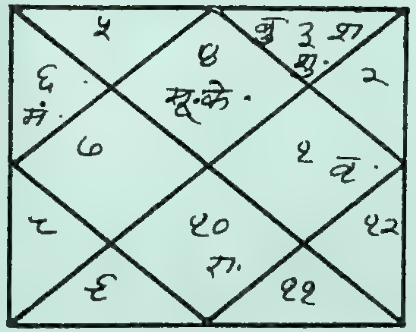

२२४

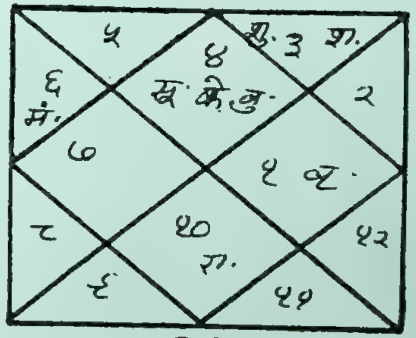

२२५

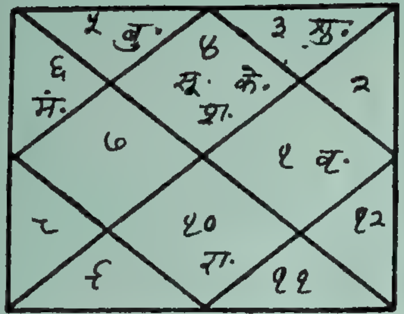

२२६

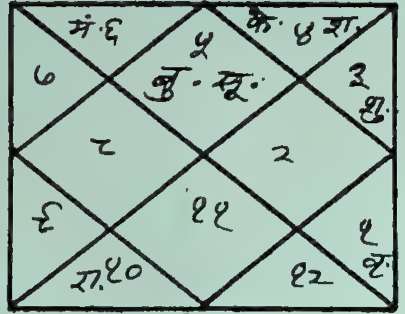

२२७

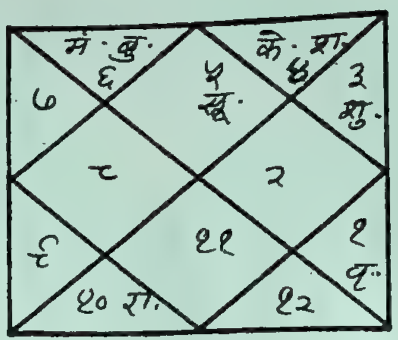

२२८

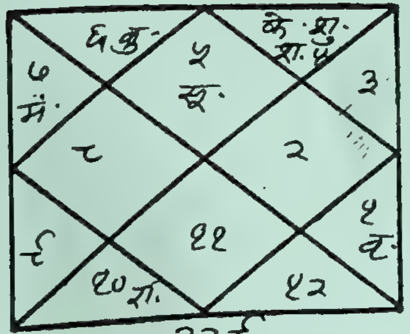

२२९

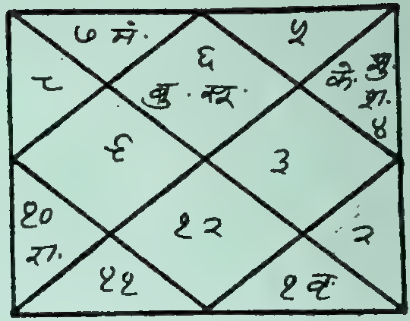

२३०

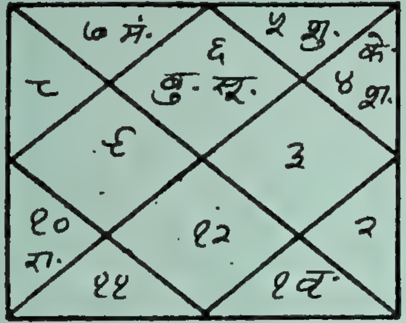

२३१

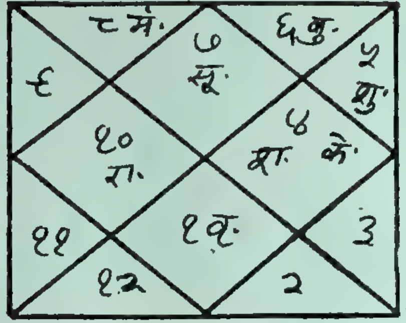

२३२

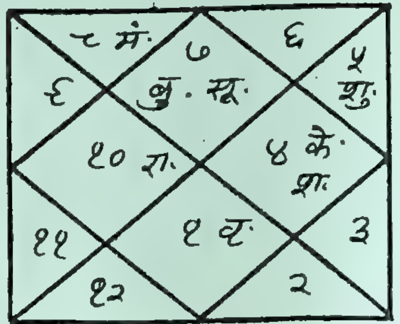

२३३

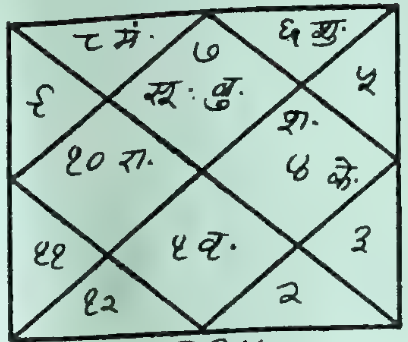

२३४

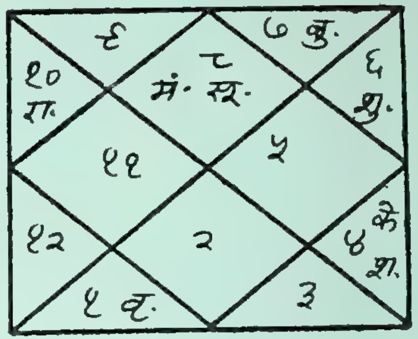

२३५

२३६

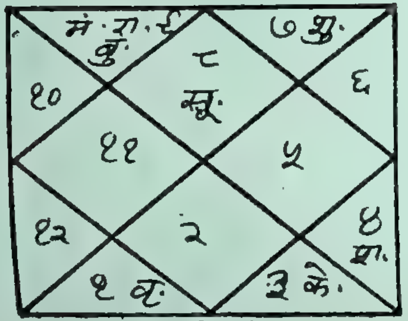

२३७

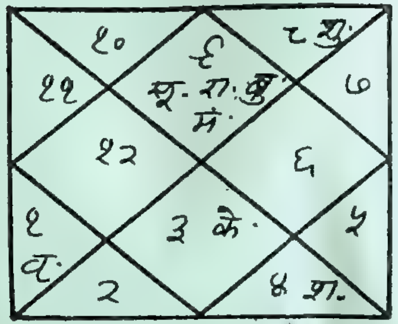

२३८

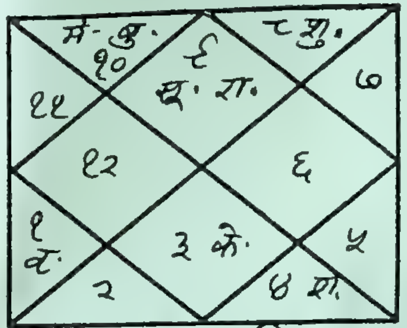

२३९

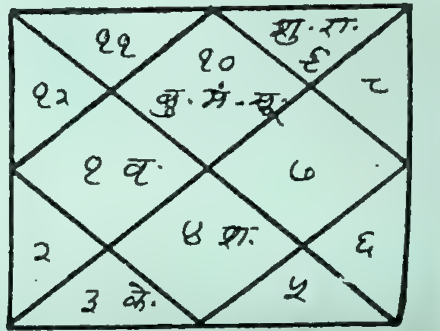

२४०

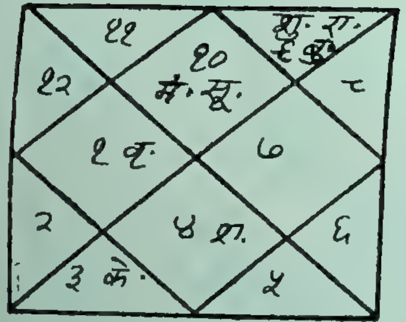

२४१

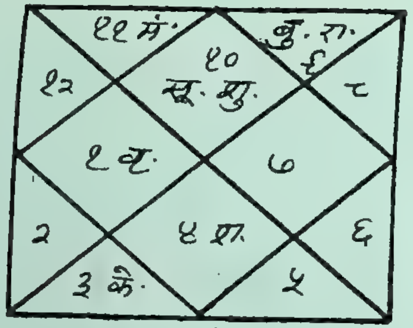

२४२

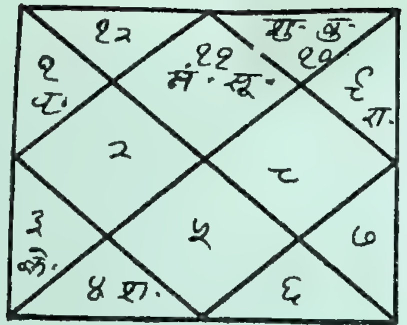

२४३

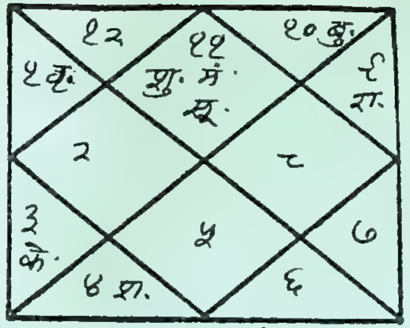

२४४

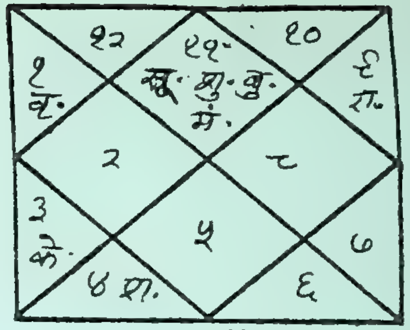

२४५

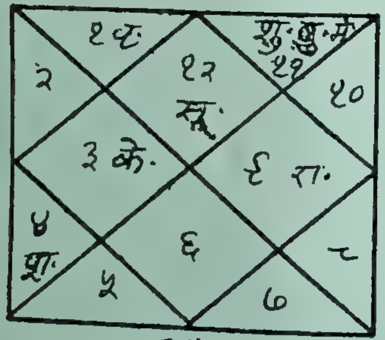

२४६

२४७

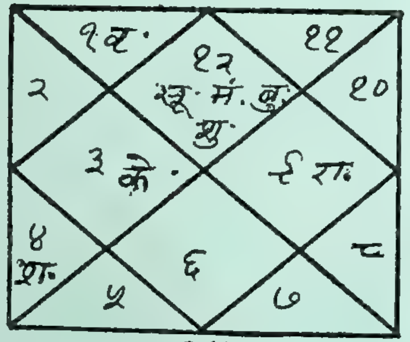

२४८

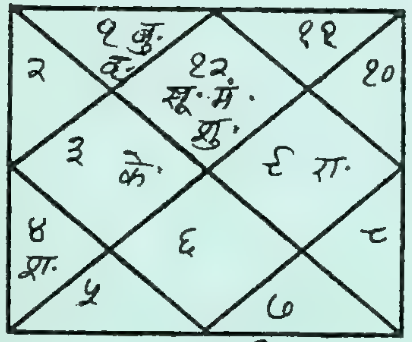

२४९

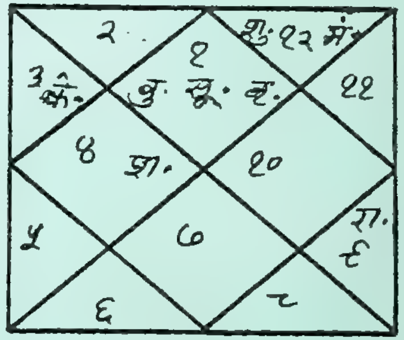

२५०

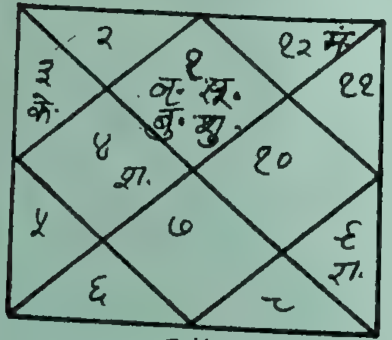

२५१

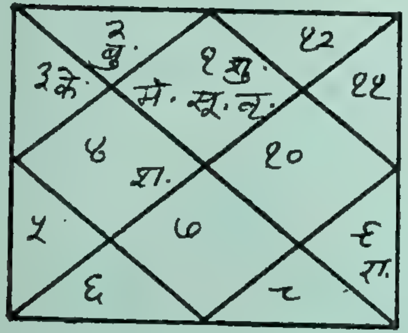

२५२

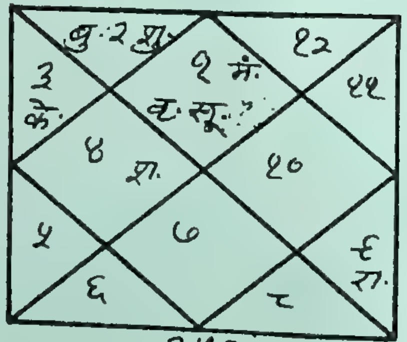

२५३

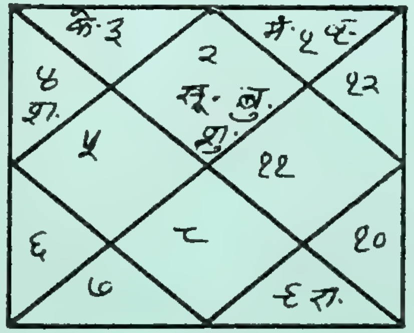

२५४

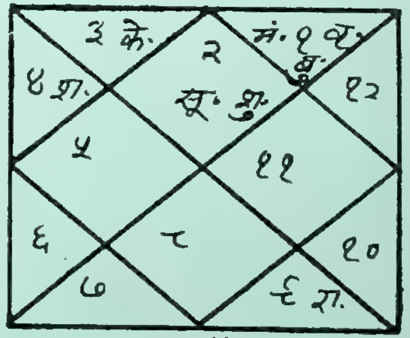

२५५

२५६

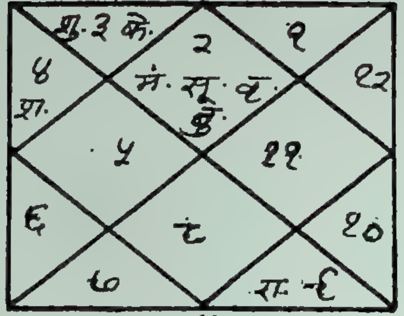

२५७

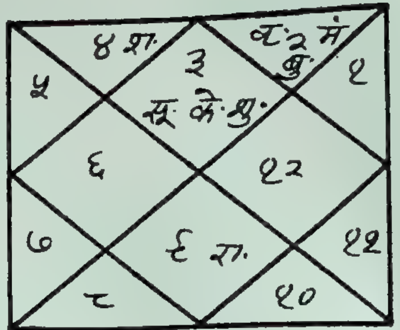

२५८

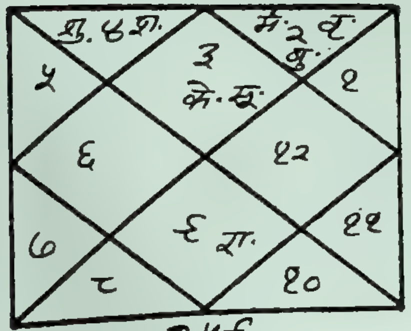

२५९

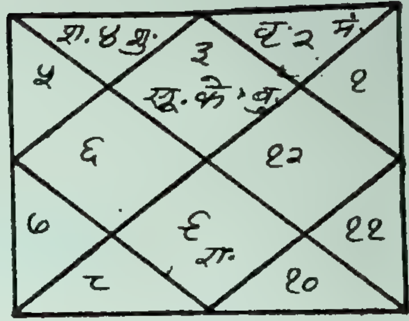

२६०

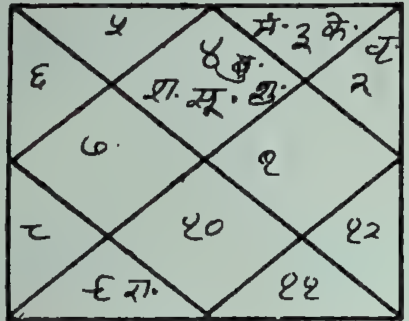

२६१

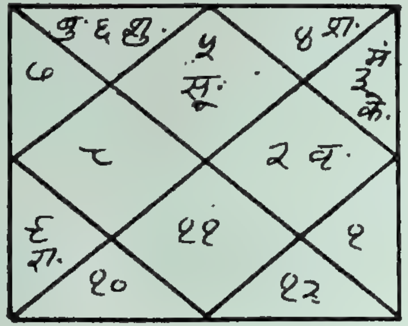

२६२

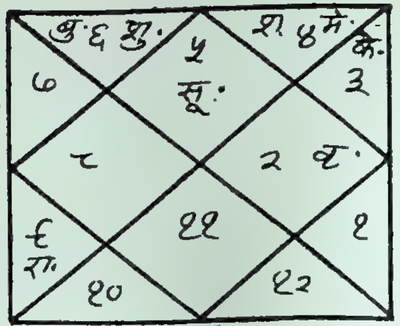

२६३

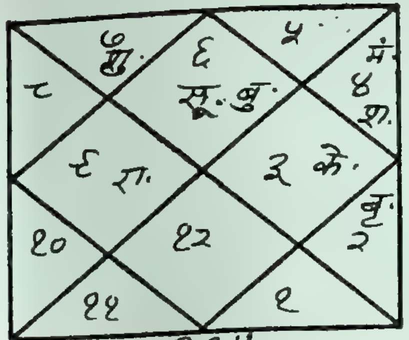

२६४

२६५

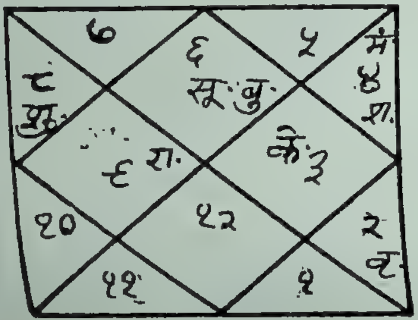

२६६

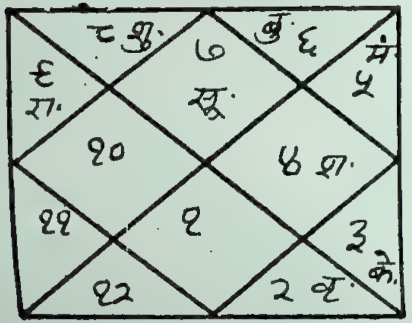

२६७

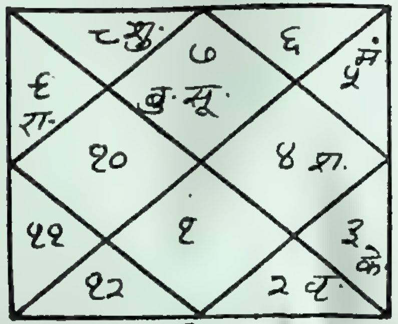

२६८

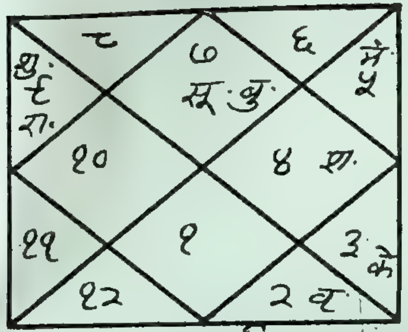

२६९

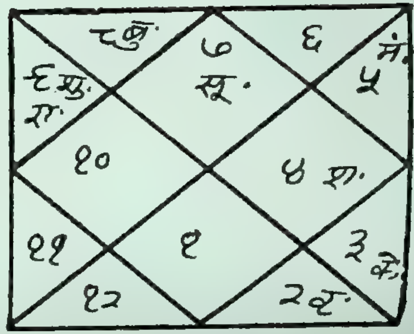

२७०

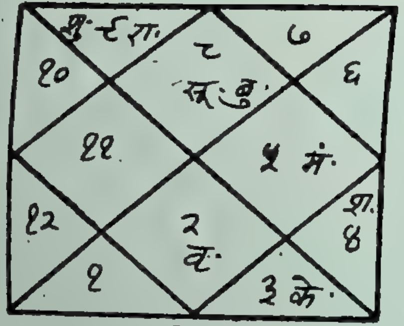
२७१

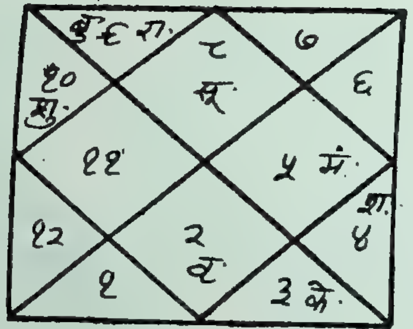
२७२

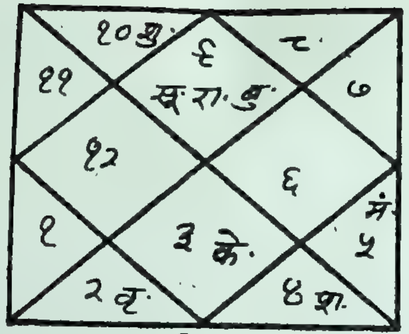
२७३

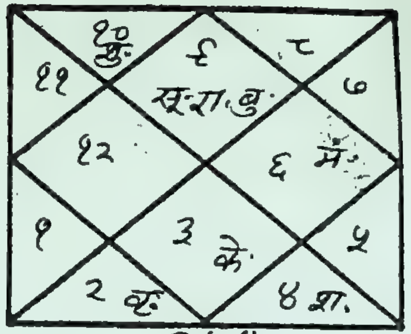
२७४

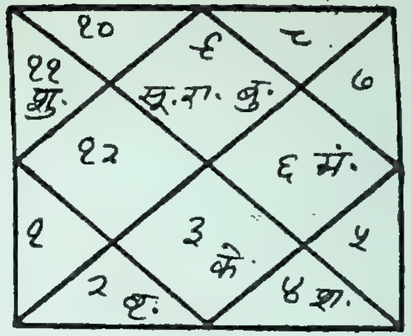
२७५

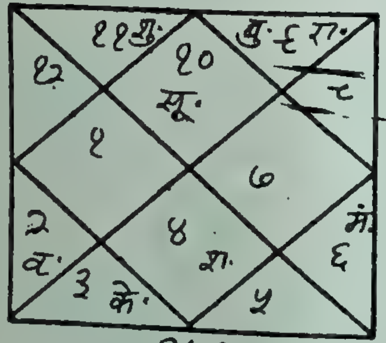
२७६

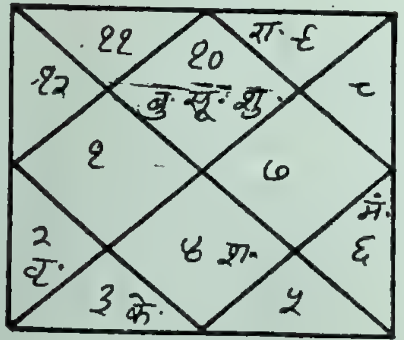
२७७

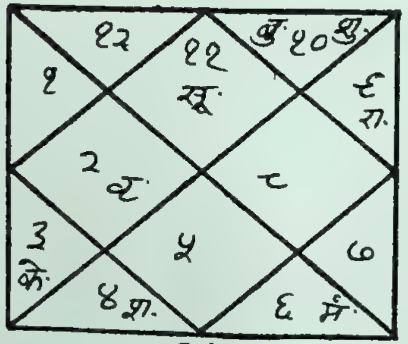
२७८

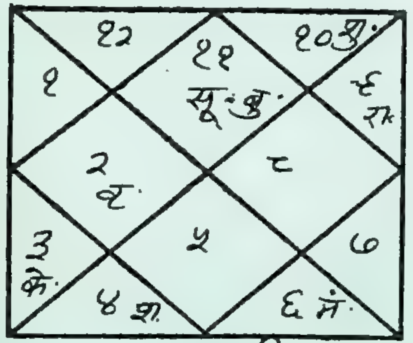
२७९

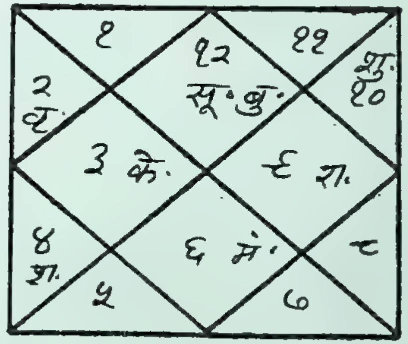
२८०

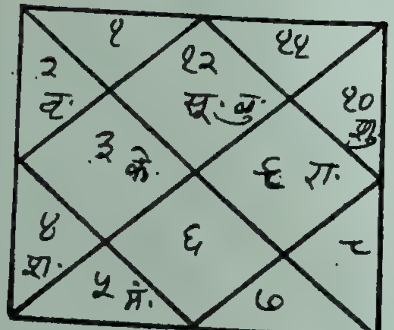
२८१

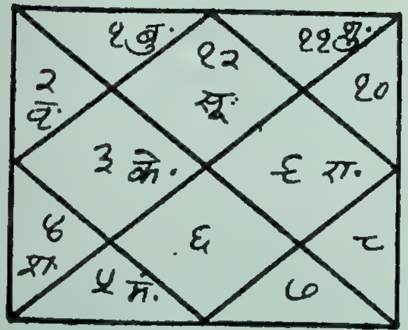
२८२

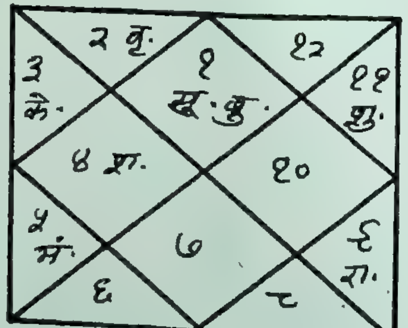
२८३

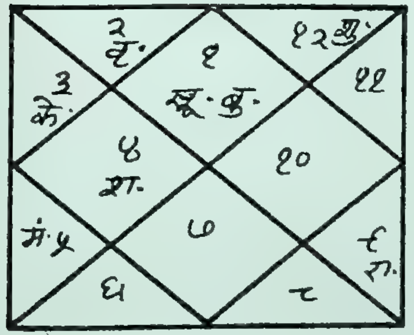
२८४

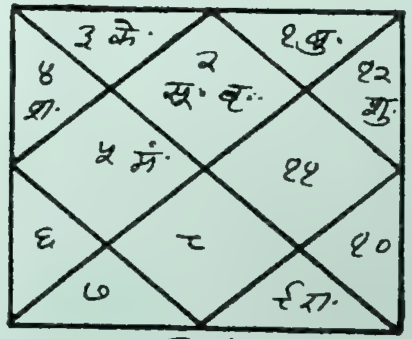
२८५

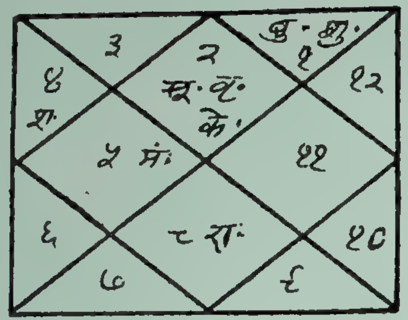

२८६

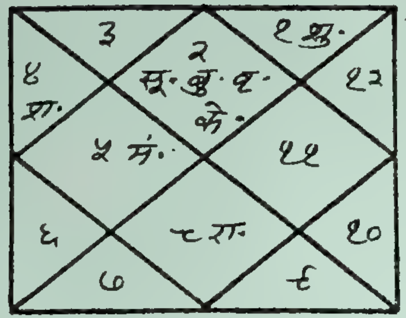

२८७

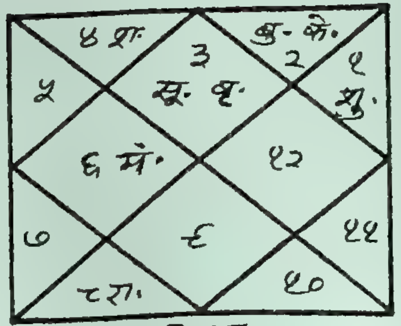

२८८

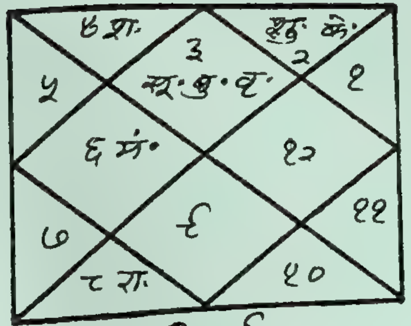

२८९

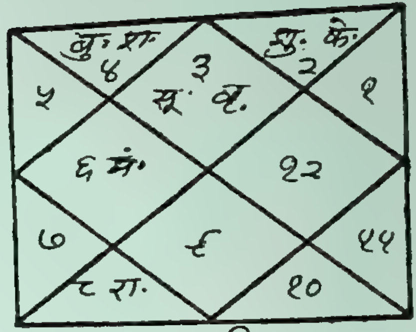

२९०

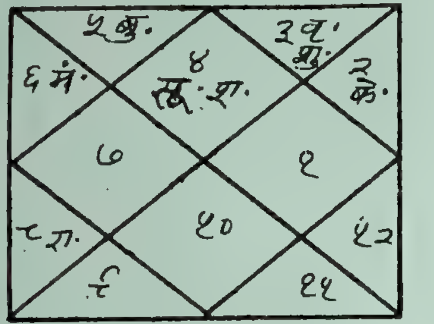

२९१

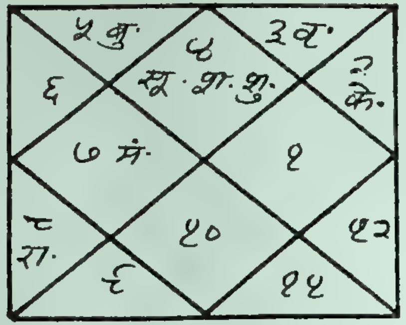

२९२

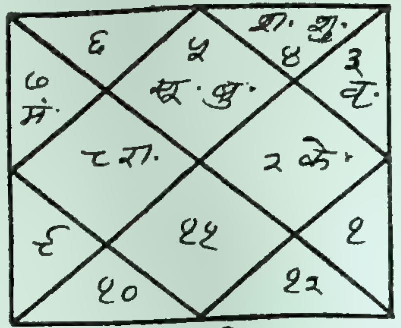

२९३

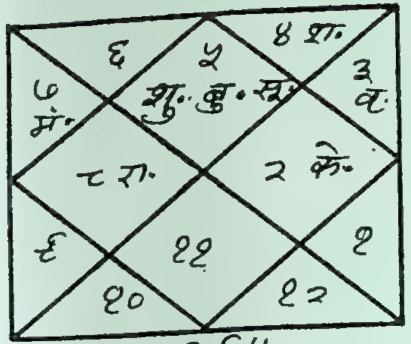

२९४

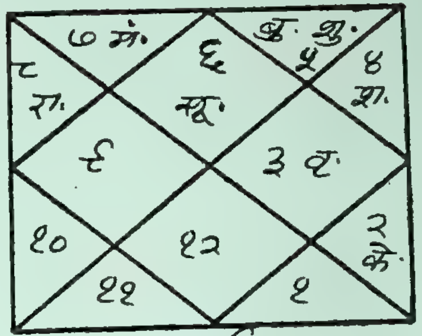

२९५

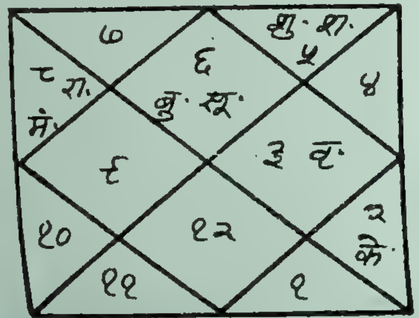

२९६

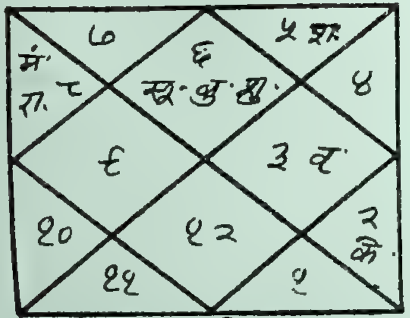

२९७

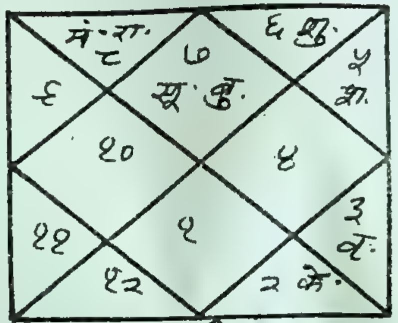

२९८

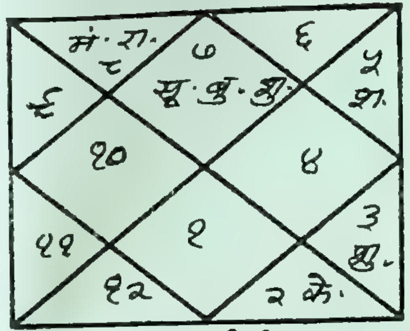

२९९

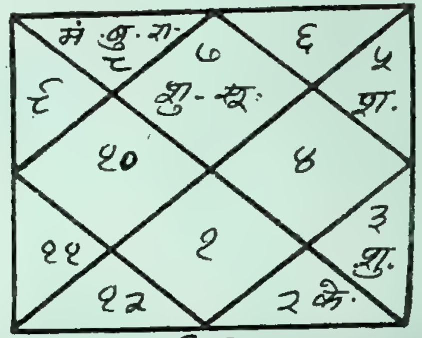

३००

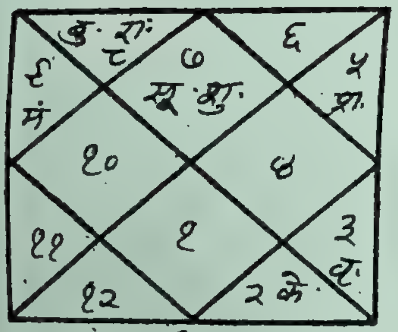

३०१

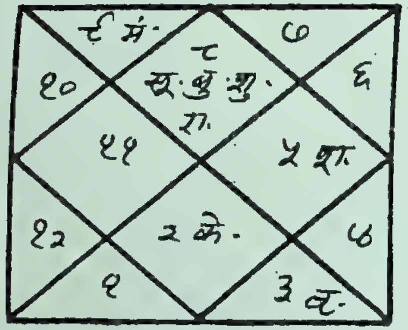

३०२

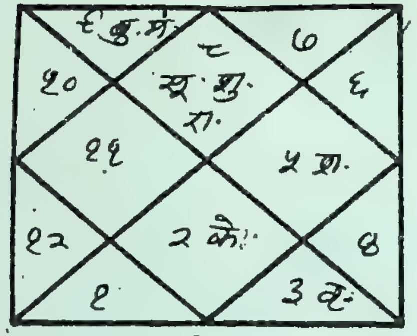

३०३

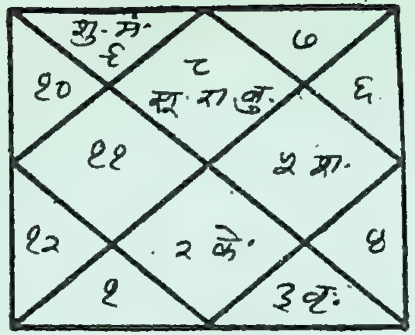

३०४

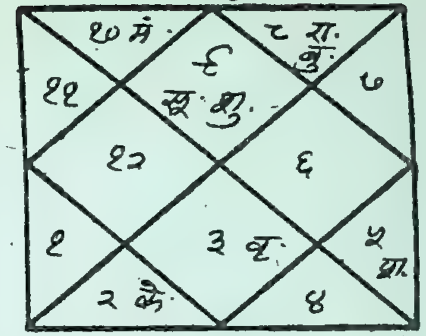

३०५

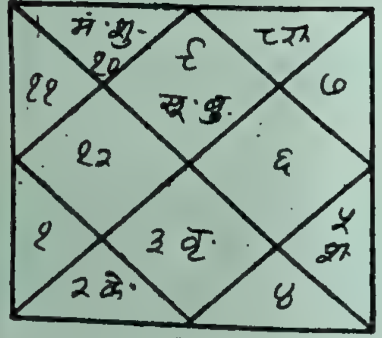

३०६

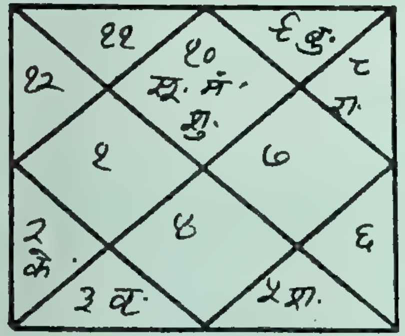

३०७

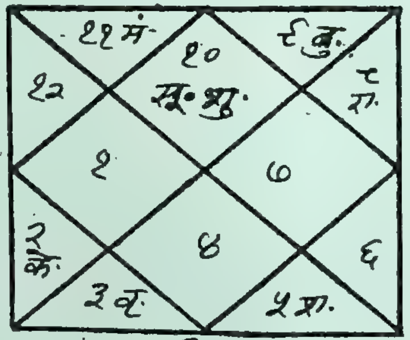

३०८

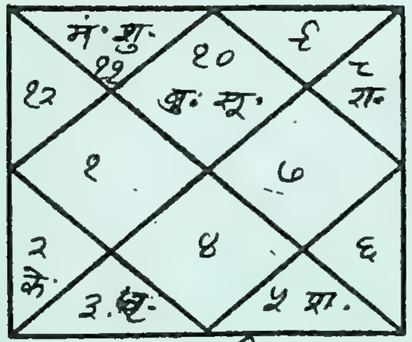

३०९

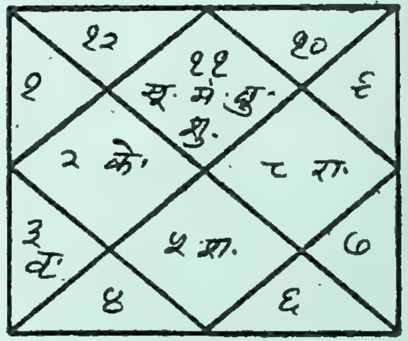

३१०

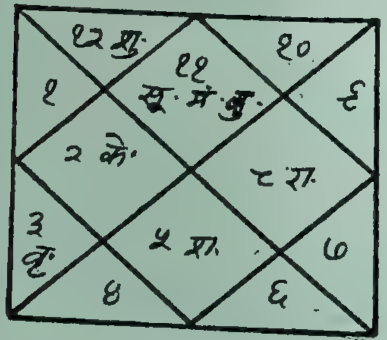

३११

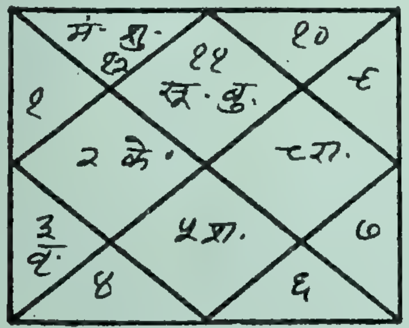

३१२

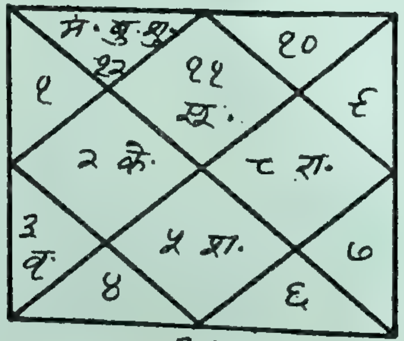

३१३

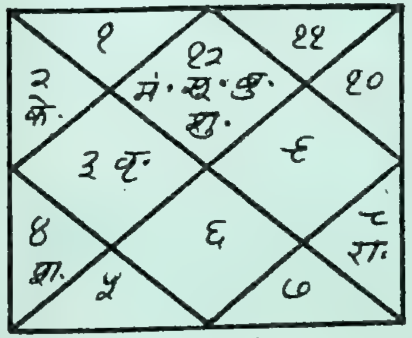

३१४

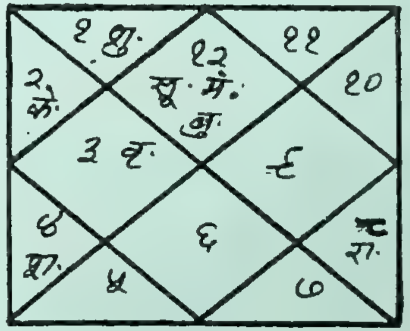

३१५

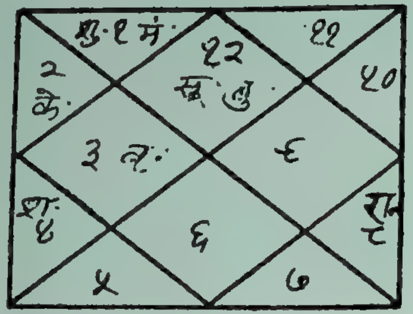

३१६

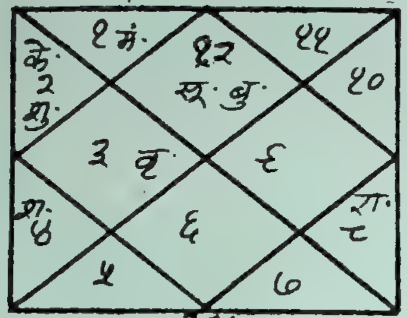

३१७

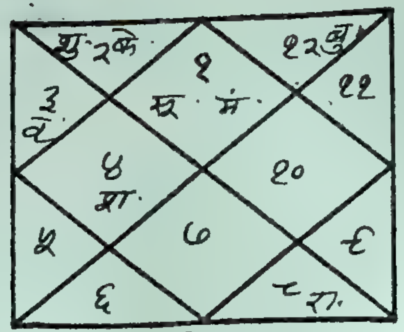

३१८

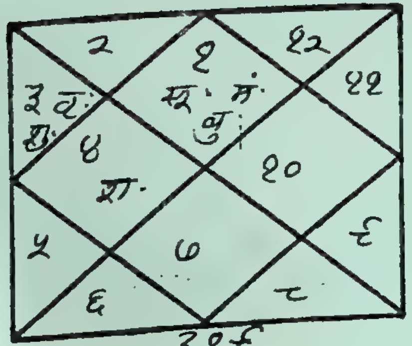

३१९

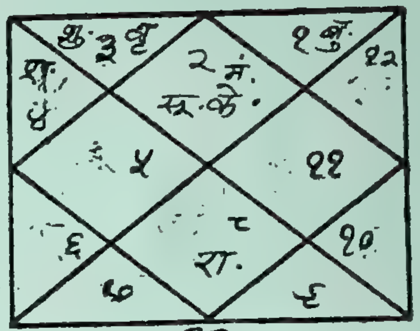

३२०

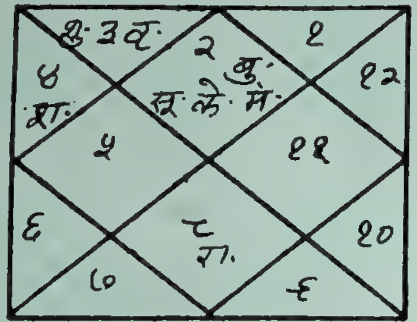

३२१

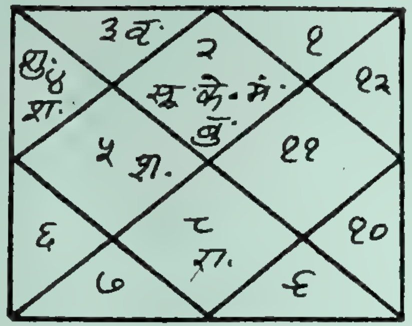

३२२

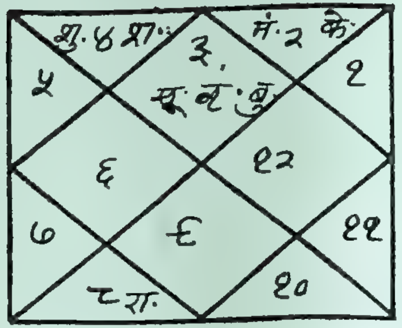

३२३

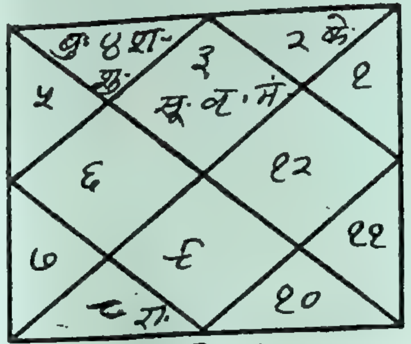

३२४

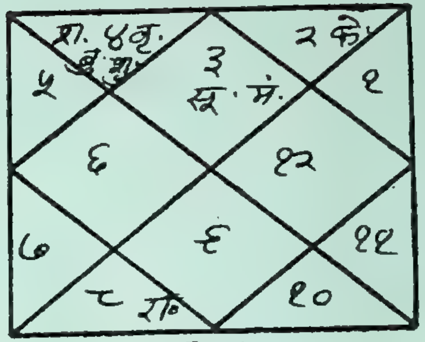

३२५

३२६

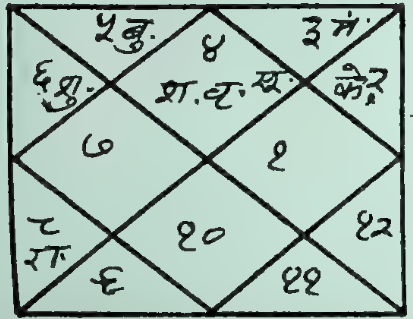

३२७

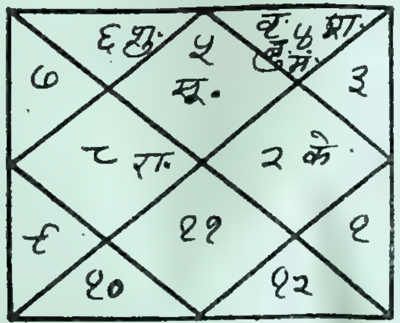

३२८

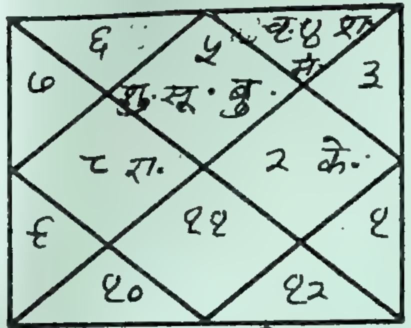

३२९

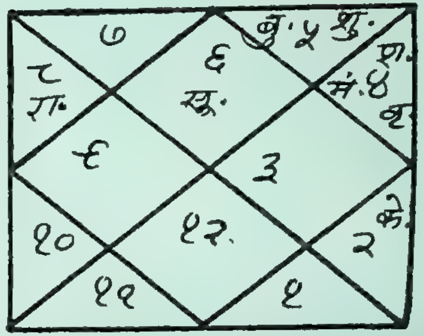

३३०

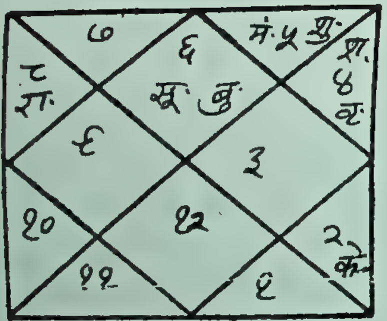
३३१

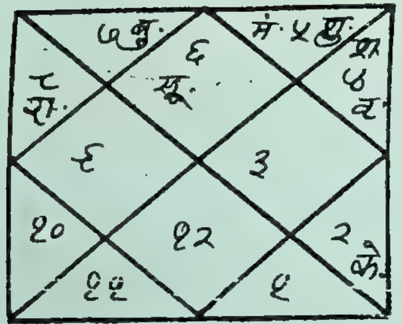
३३२

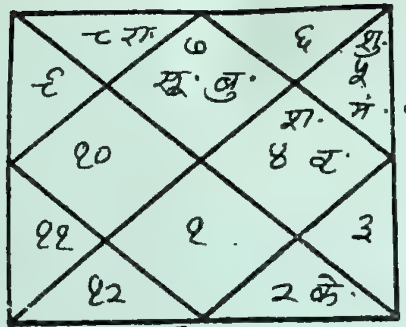
३३३

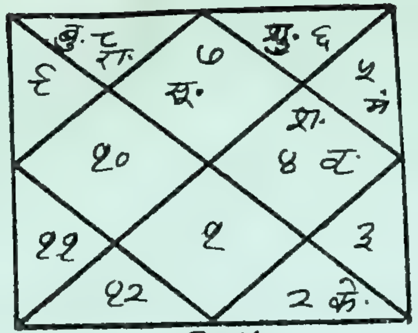
३३४

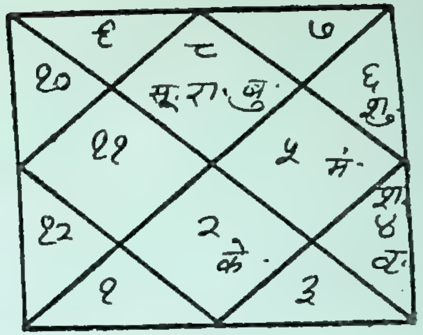
३३५

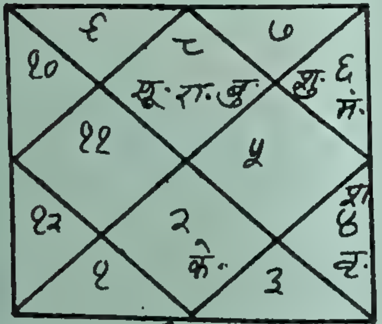
३३६

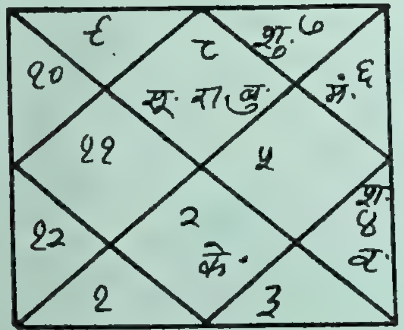
३३७

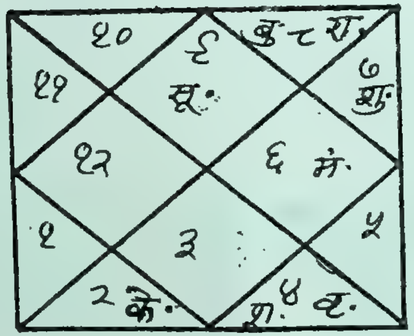
३३८

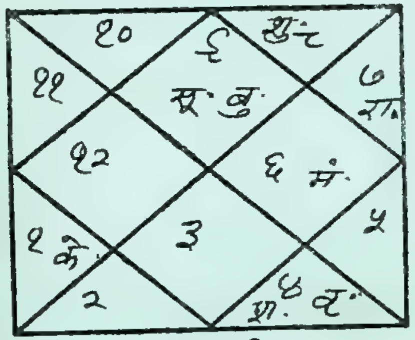
३३९

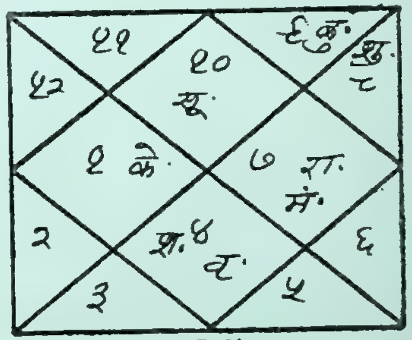
३४०

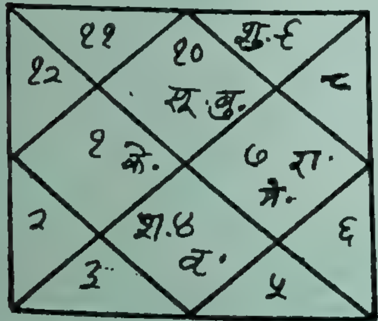
३४१

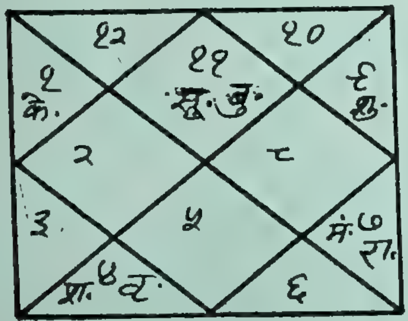
३४२

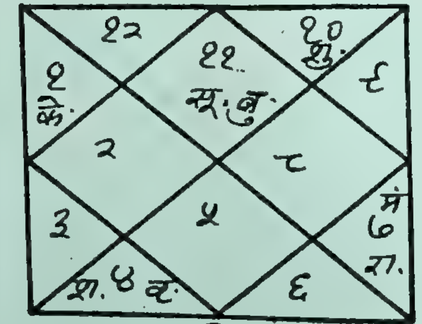
३४३

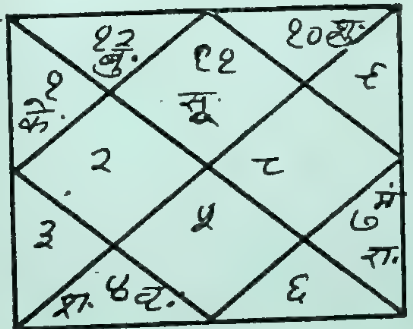
३४४

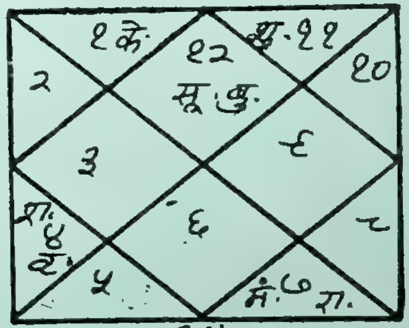
३४५

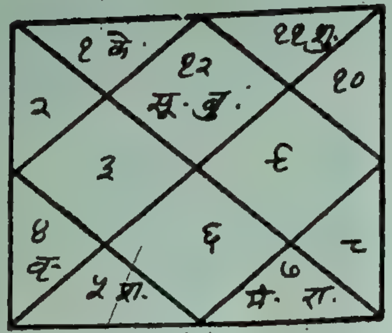

३४६

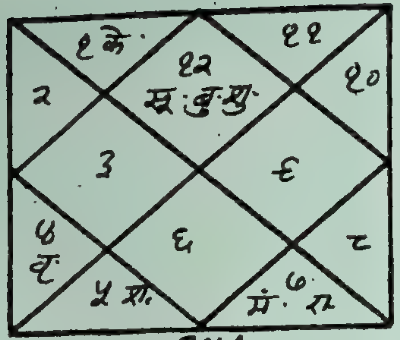

३४७

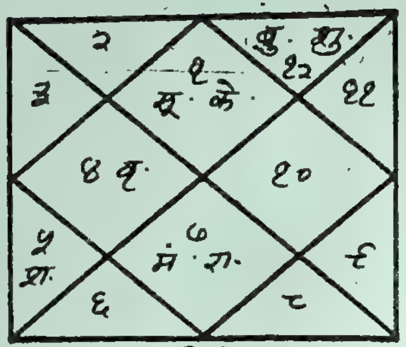

३४८

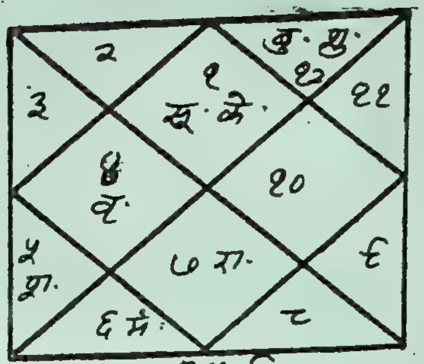

३४९

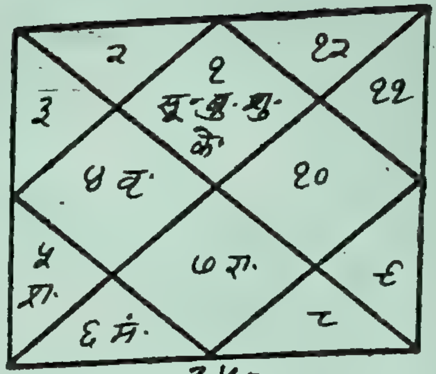

३५०

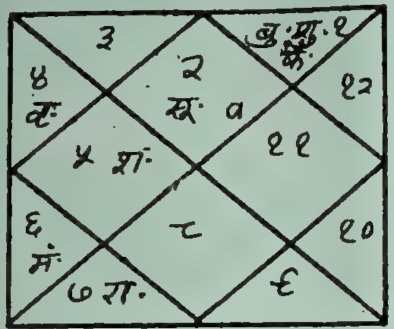

३५१

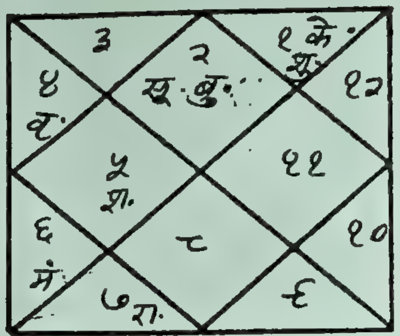

३५२

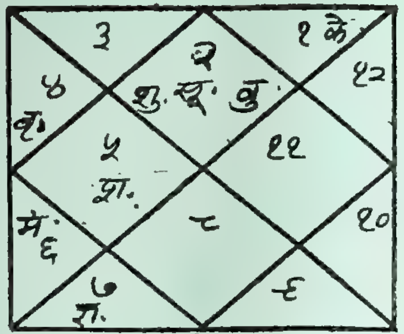

३५३

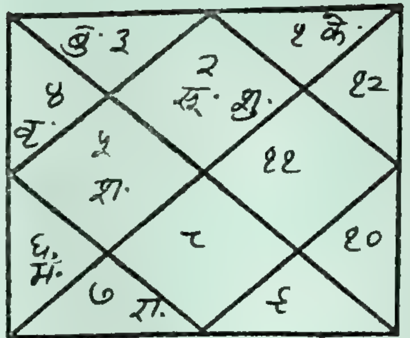

३५४

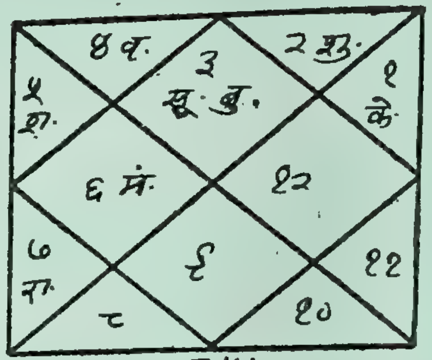

३५५

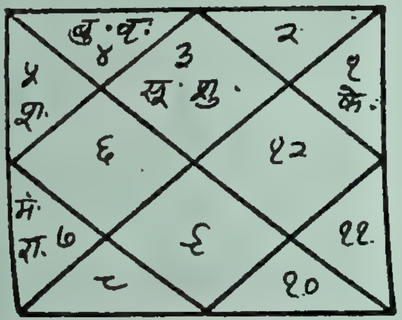

३५६

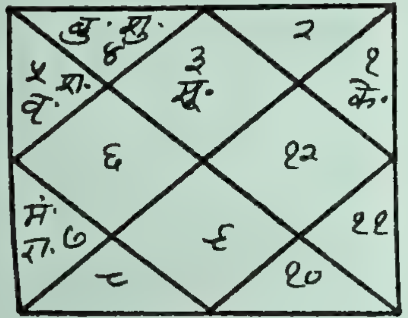

३५७

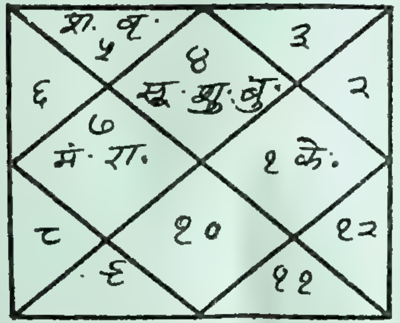

३५८

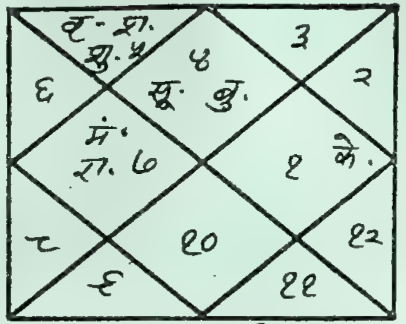

३५९

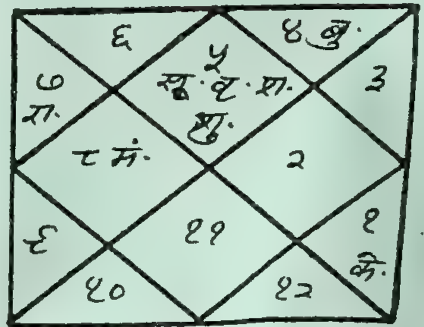

३६०

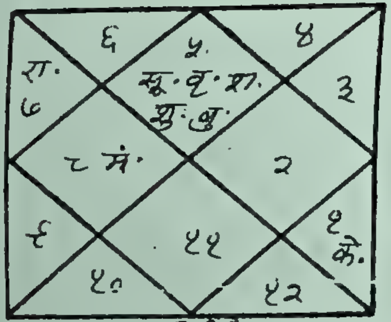

३६१

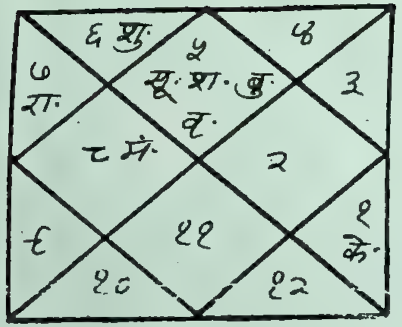

३६२

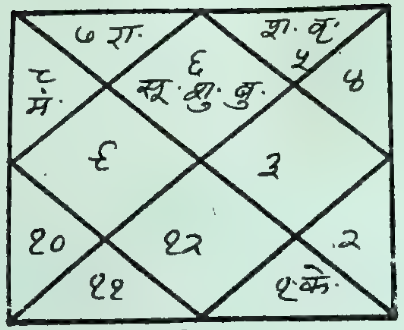

३६३

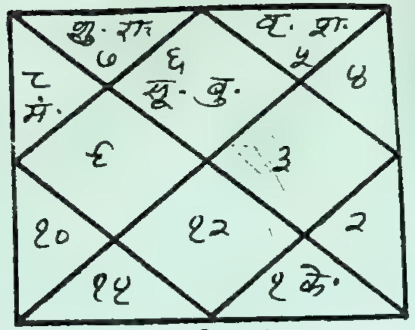

३६४

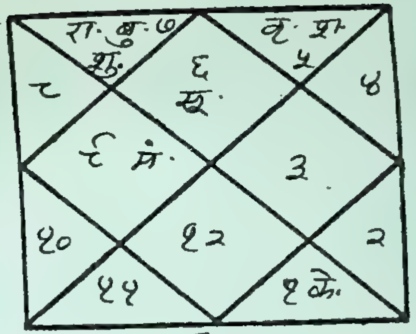

३६५

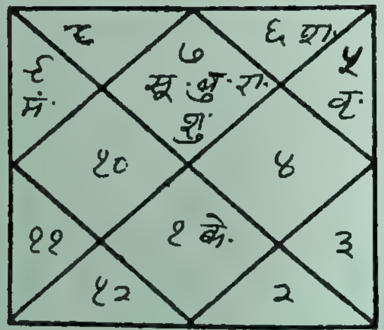

३६६

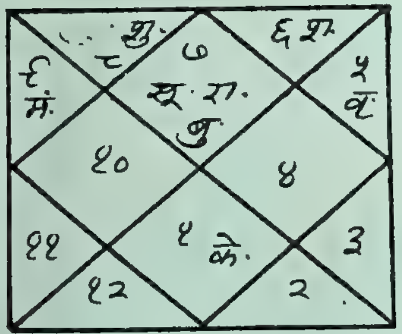

३६७

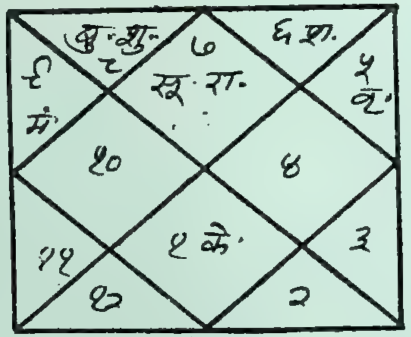

३६८

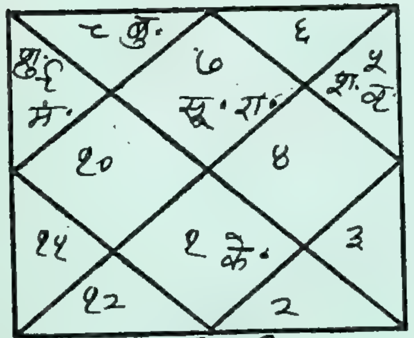

३६९

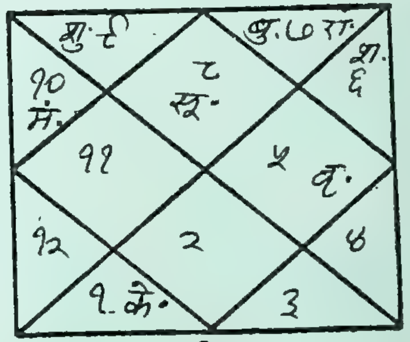

३७०

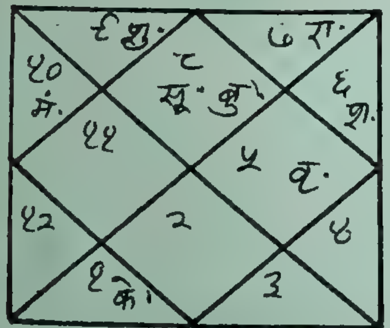

३७१

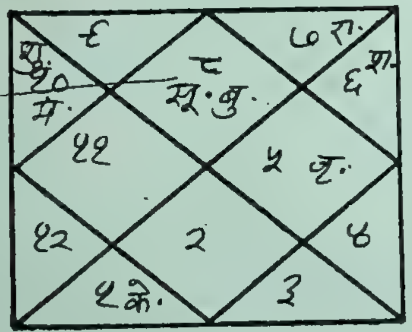

३७२

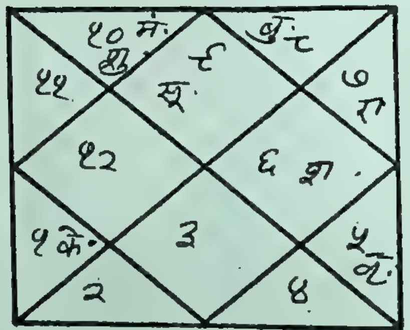

३७३

३७४

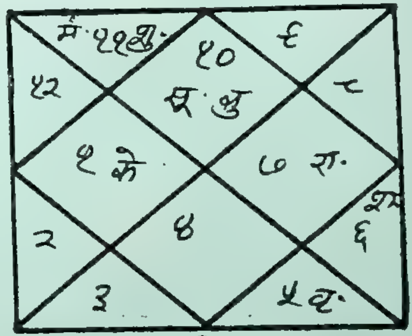

३७५

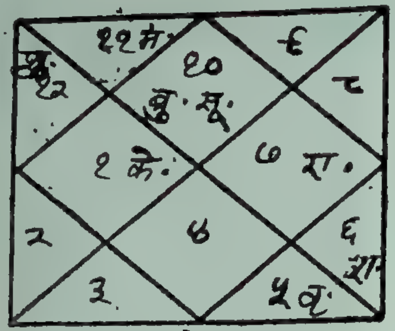

३७६

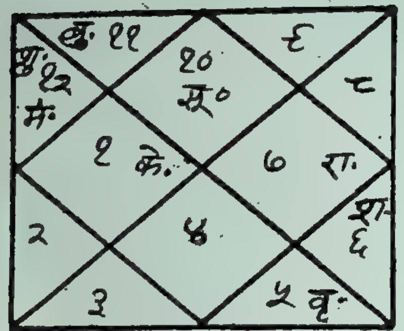

३७७

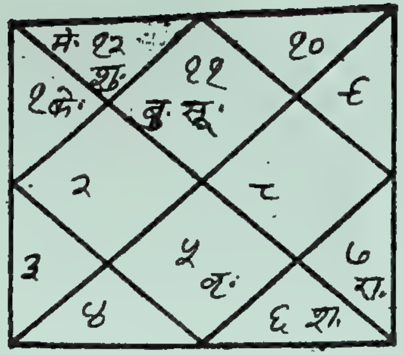

३७८

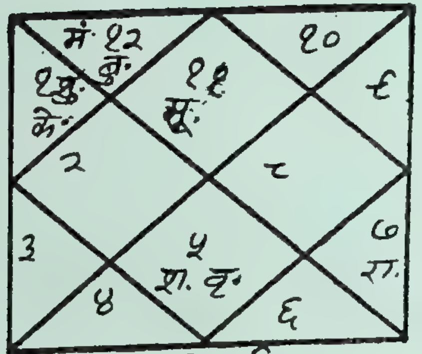

३७९

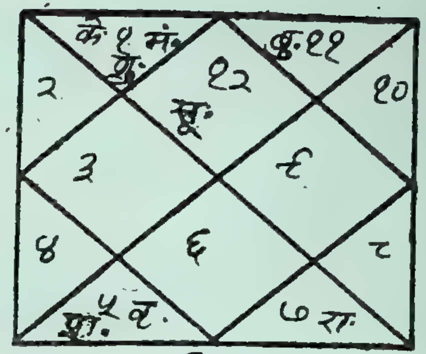

३८०

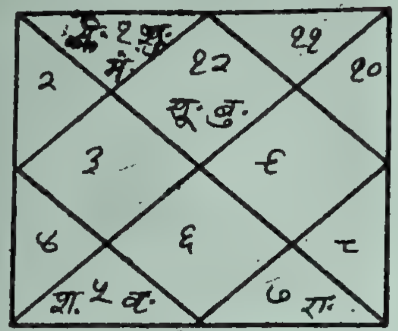

३८१

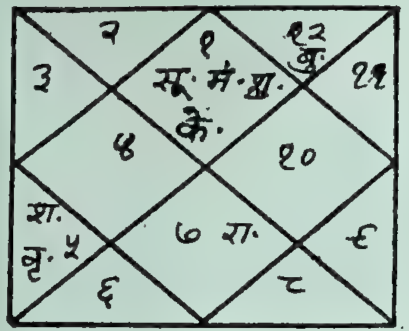

३८२

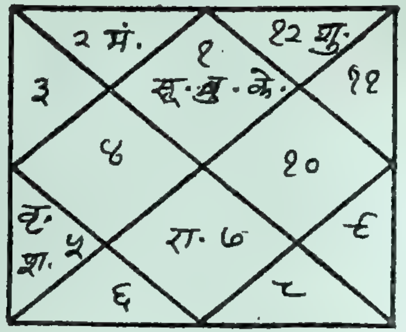

३८३

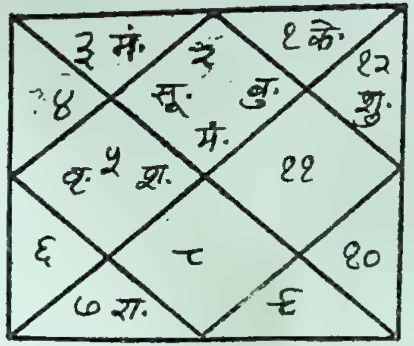

३८४

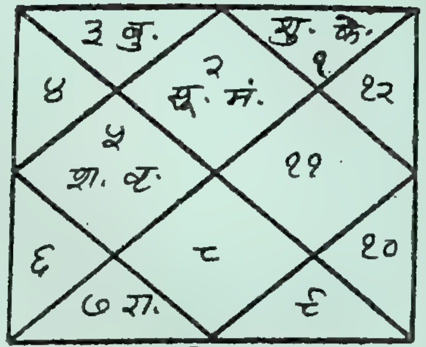

३८५

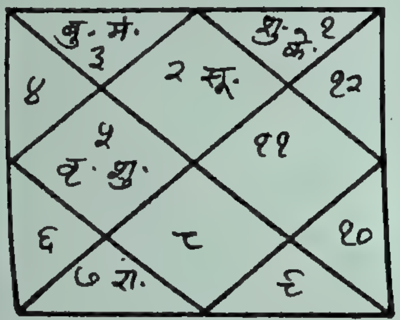

३८६

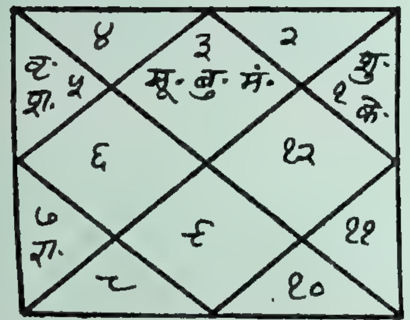

३८७

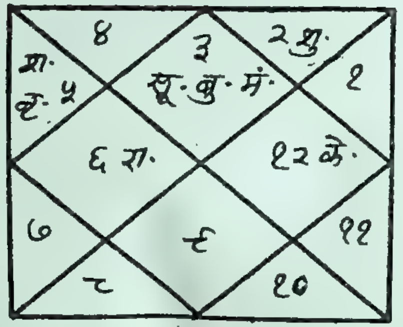

३८८

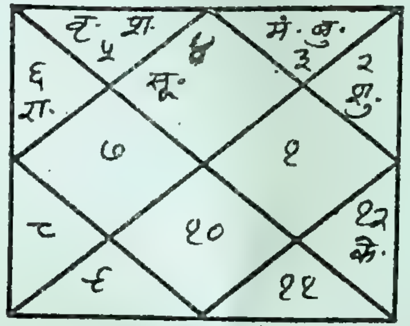

३८९

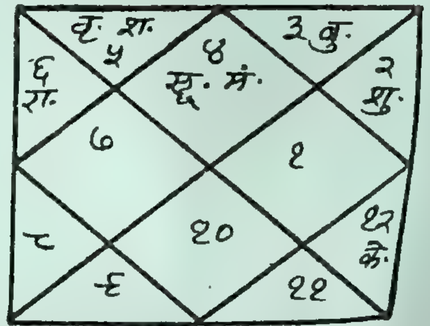

३९०

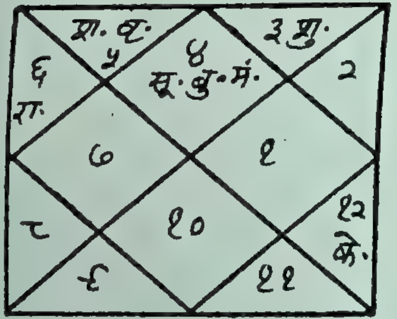

३९१

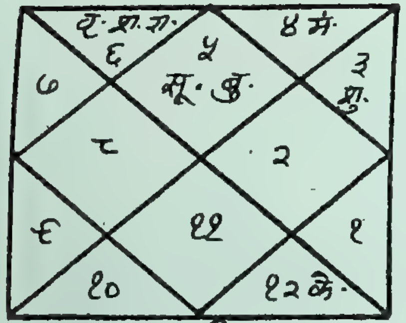

३९२

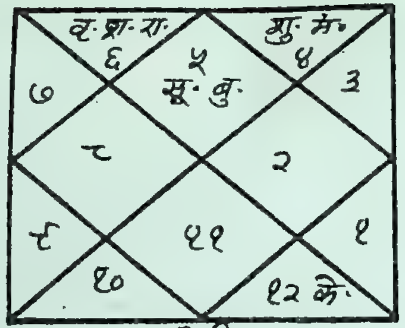

३९३

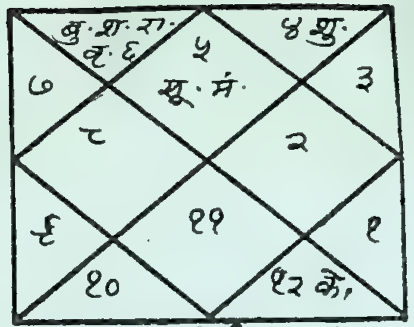

३९४

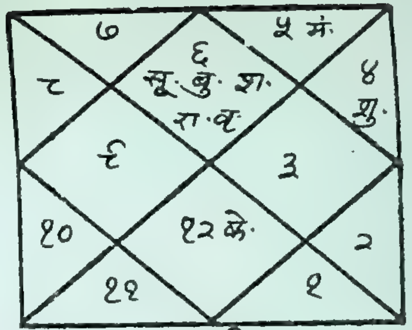

३९५

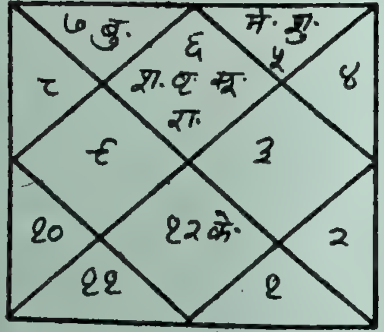

३९६

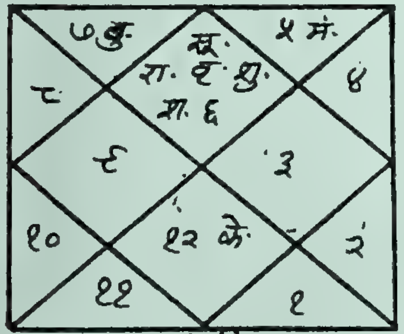

३९७

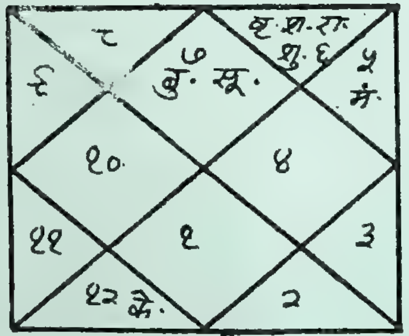

३९८

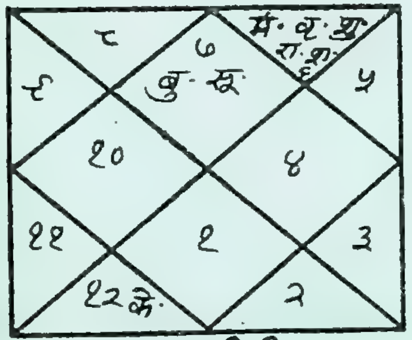

३९९

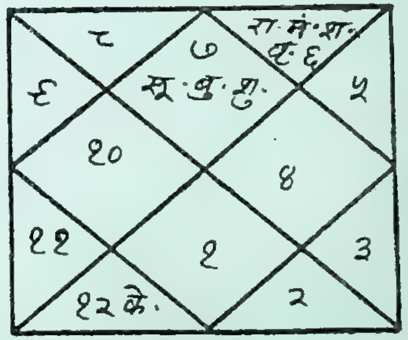

४००

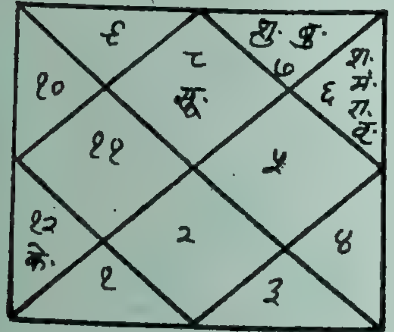

४०१

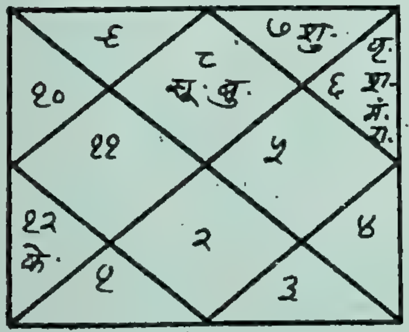

४०२

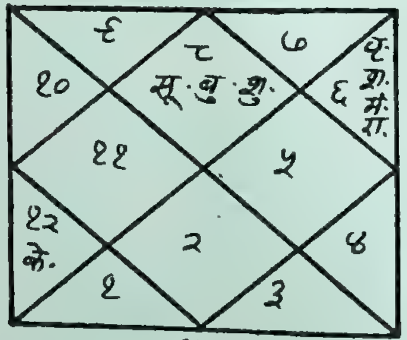

४०३

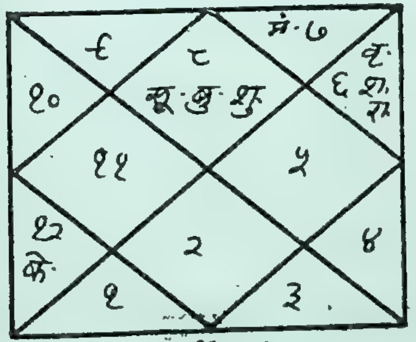

४०४

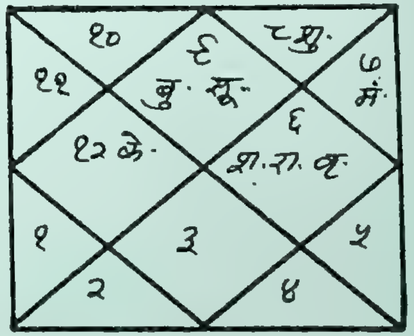

४०५

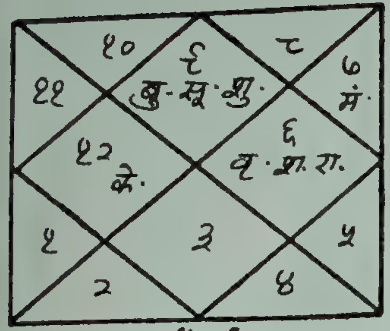

४०६

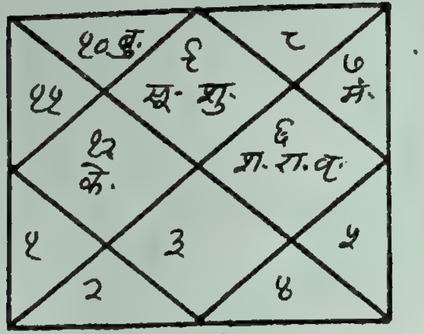

४०७

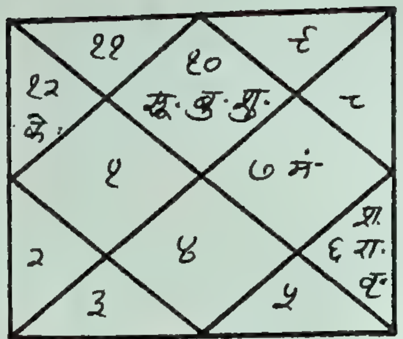

४०८

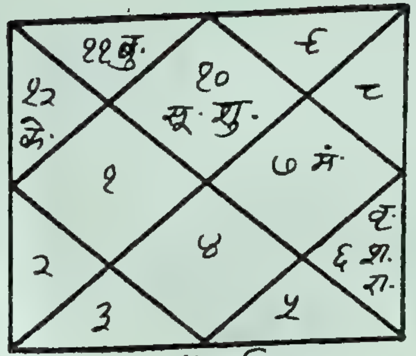

४०९

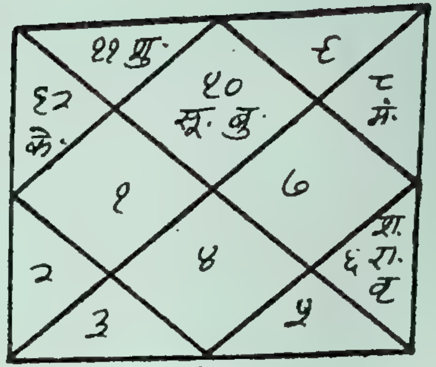

४१०

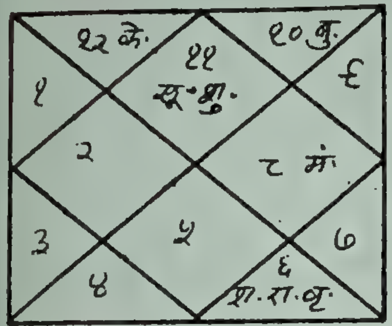

४११

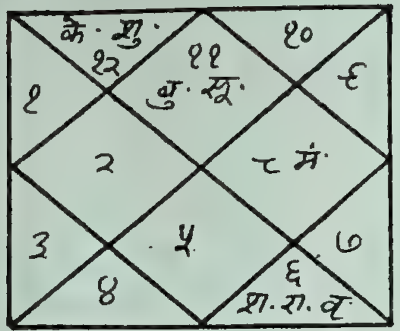

४१२

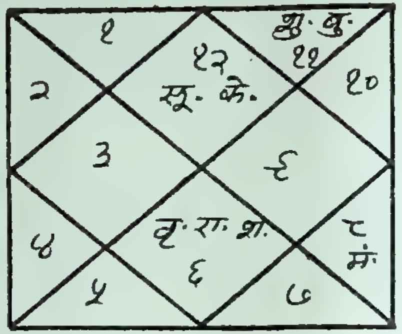

४१३

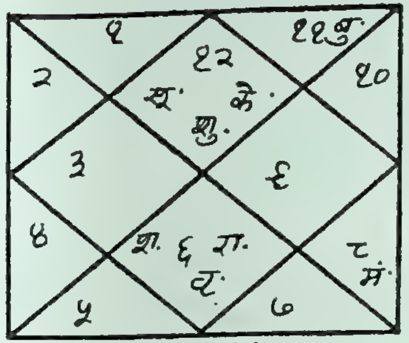

४१४

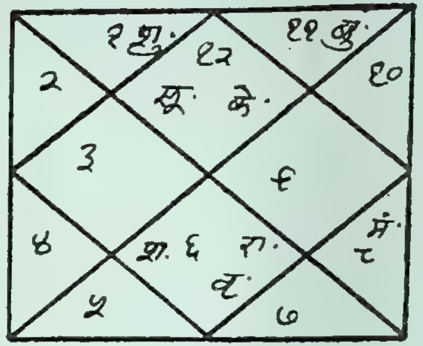

४१५

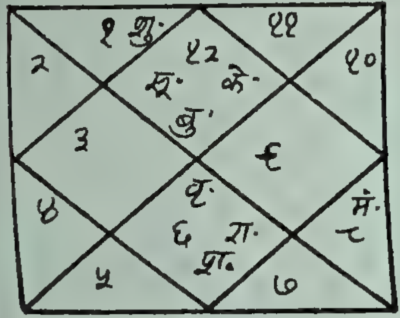

४१६

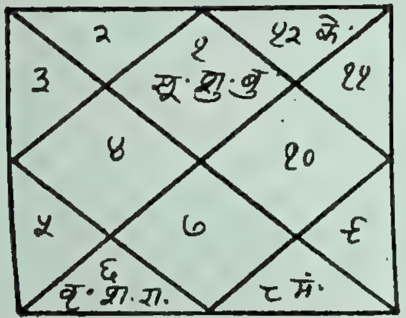

४१७

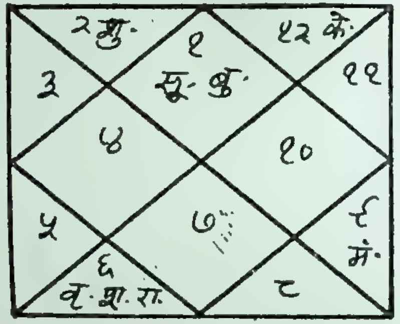

४१८

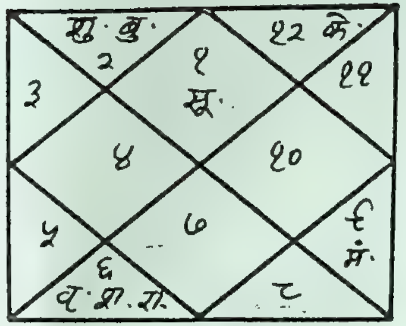

४१९

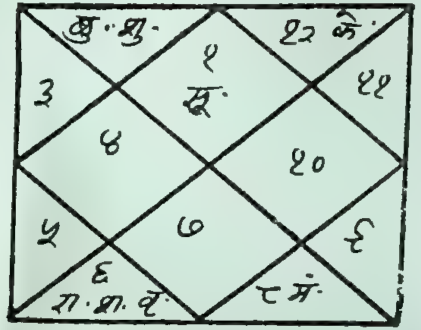

४२०

भू० सं०

कु० प०

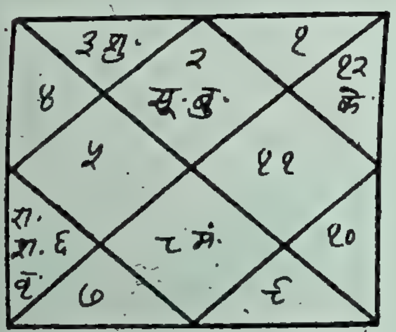

४२१

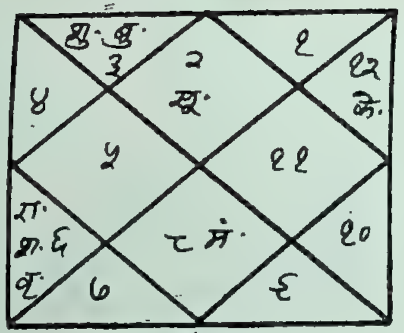

४२२

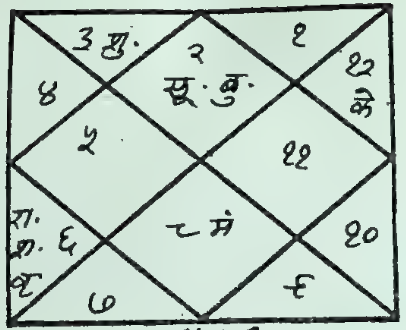

४२३

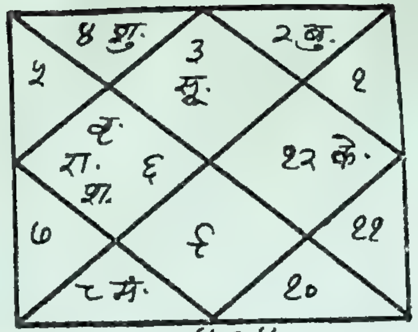

४२४

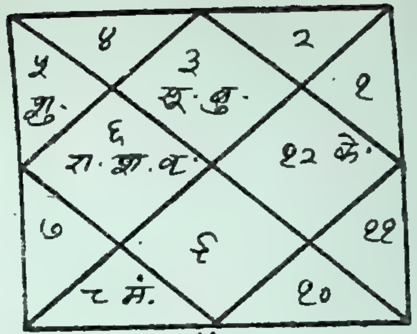

४२५

४२६

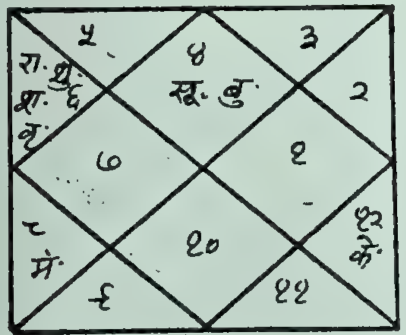

४२७

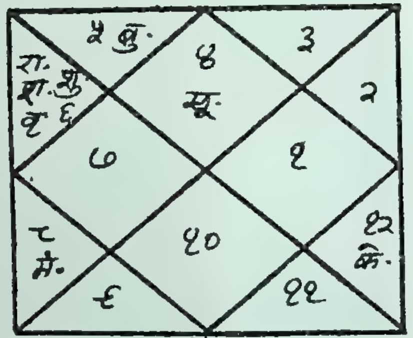

४२८

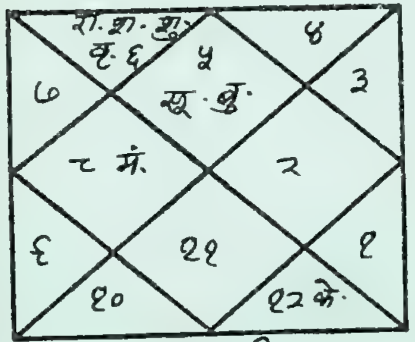

४२९

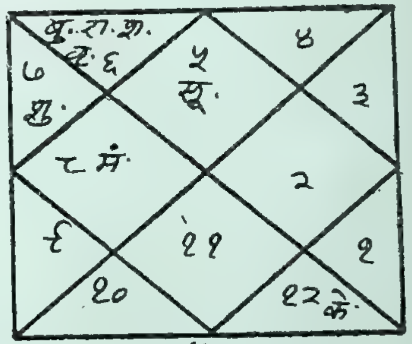

४३०

४३१

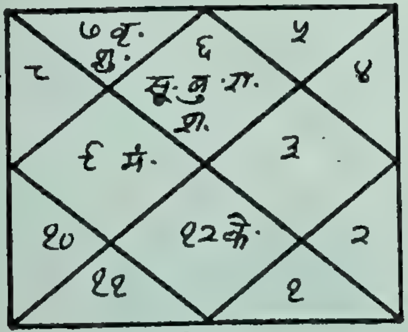

४३२

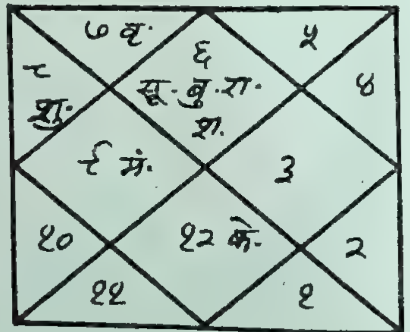

४३३

४३४

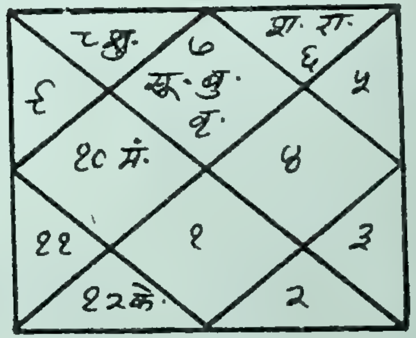

४३५

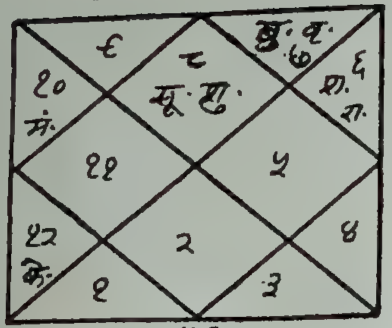

४३६

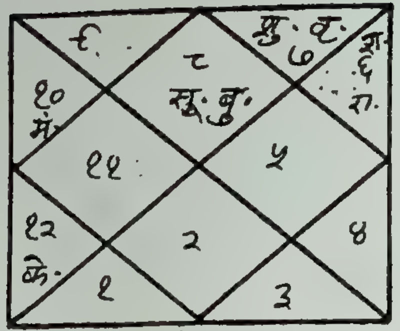

४३७

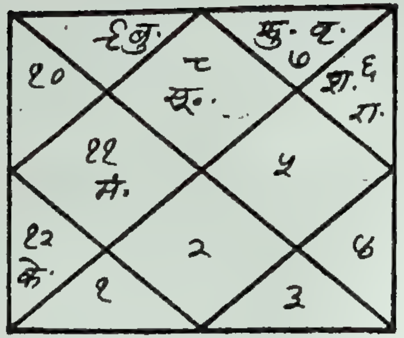

४३८

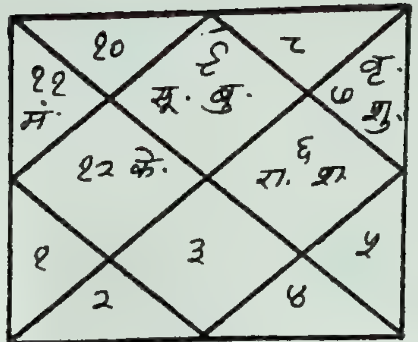

४३९

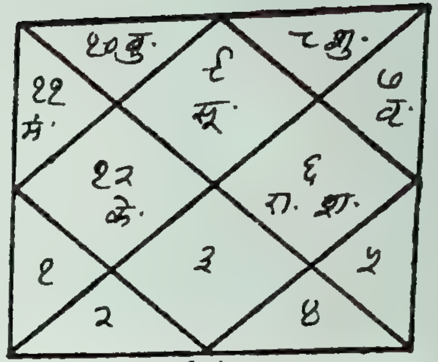

४४०

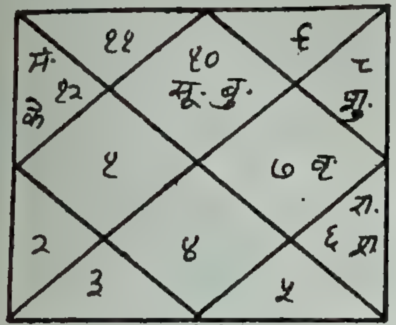

४४१

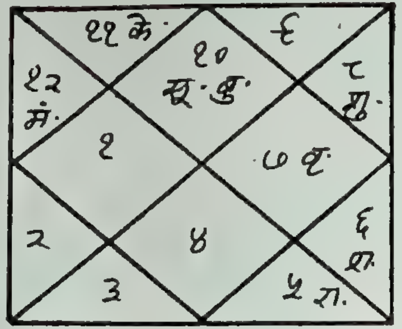

४४२

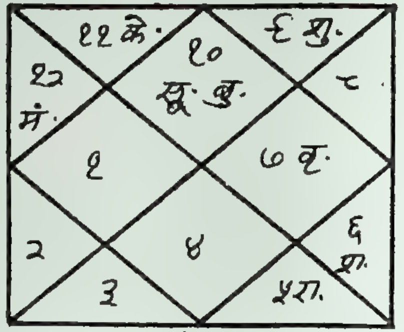

४४३

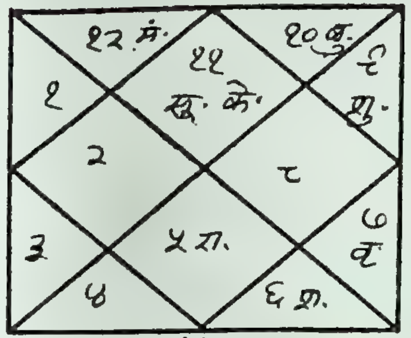

४४४

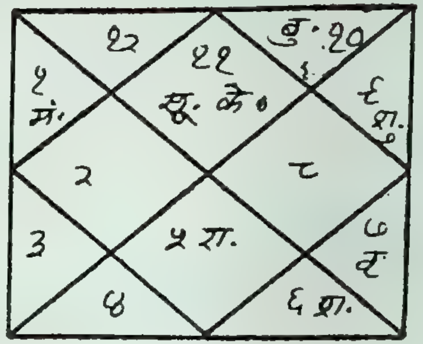

४४५

४४६

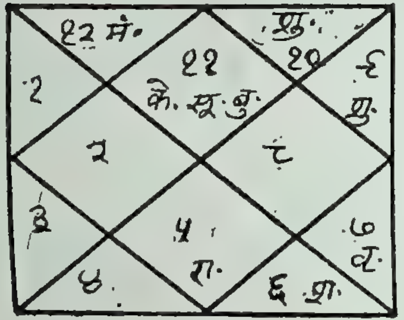

४४७

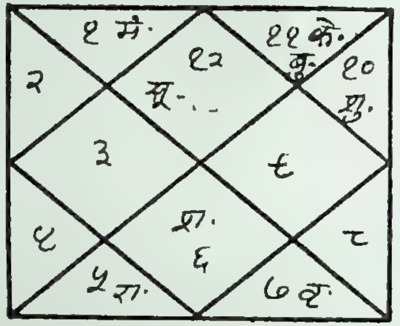

४४८

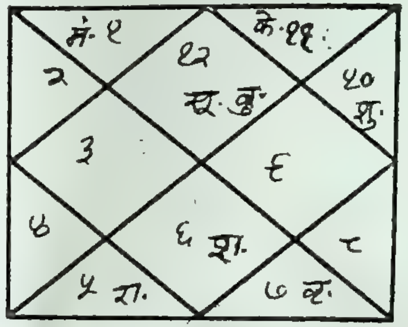

४४९

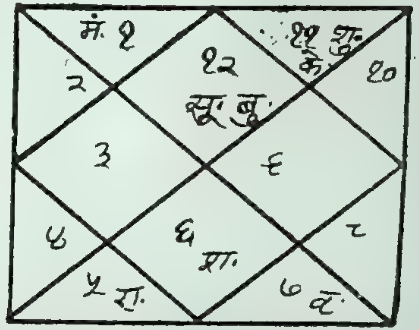

४५०

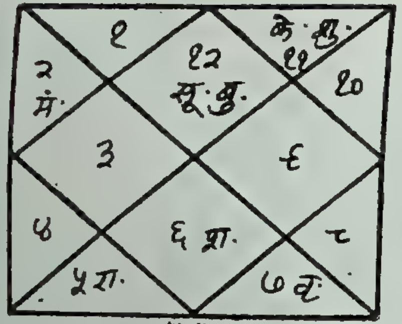

४५१

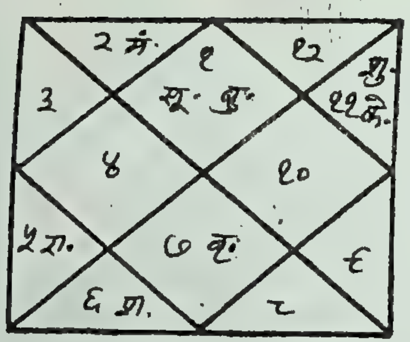

४५२

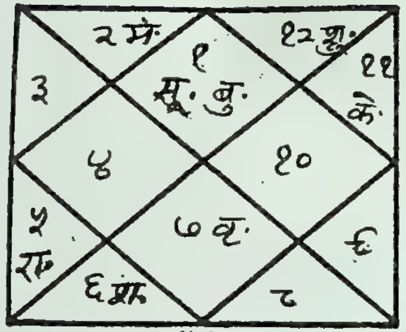

४५३

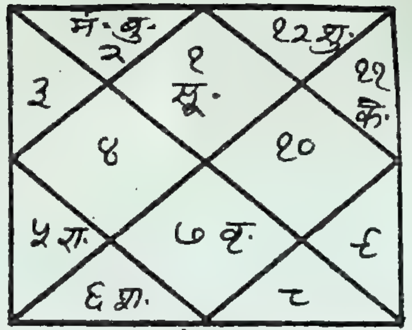

४५४

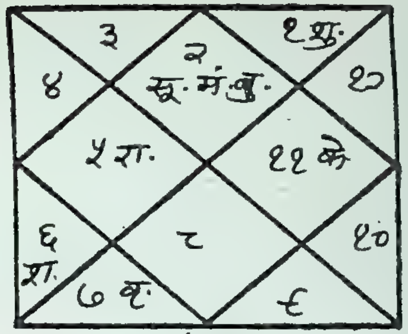

४५५

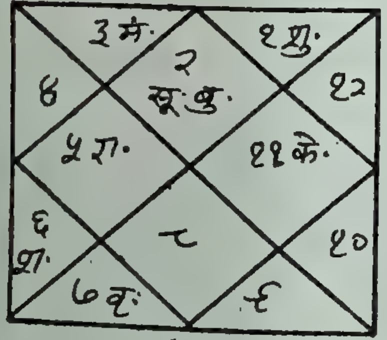

४५६

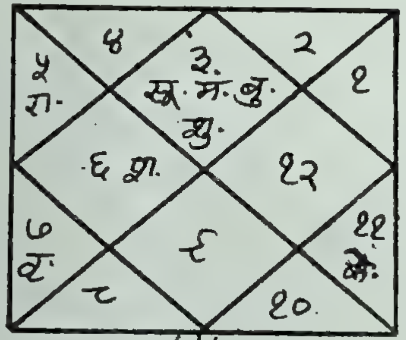

४५७

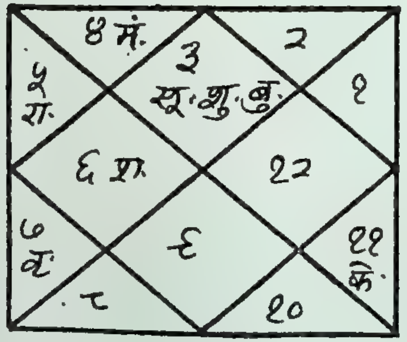

४५८

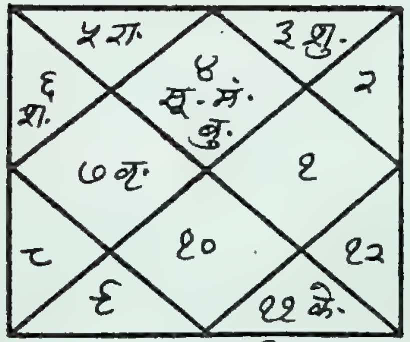

४५९

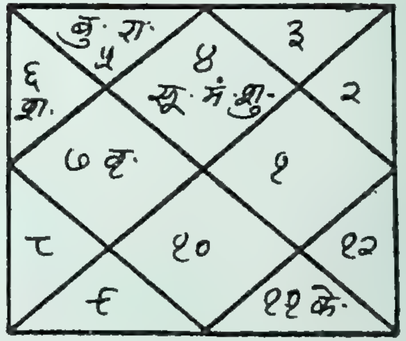

४६०

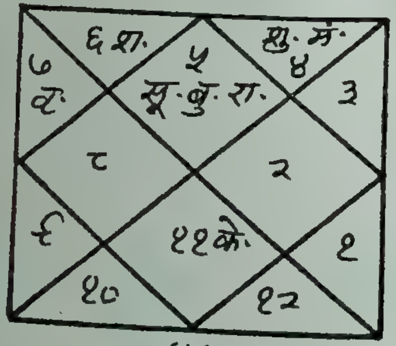

४६१

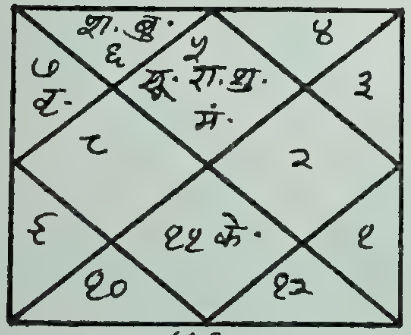

४६२

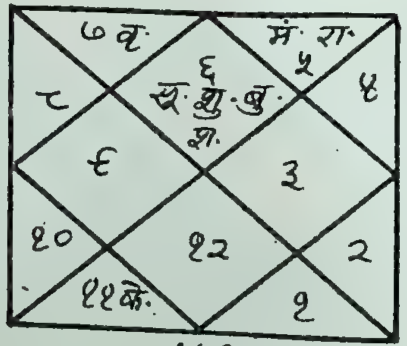

४६३

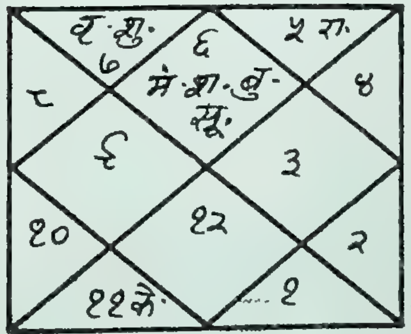

४६४

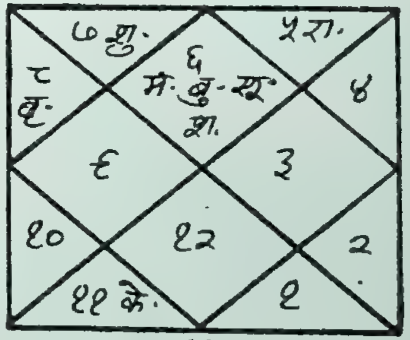

४६५

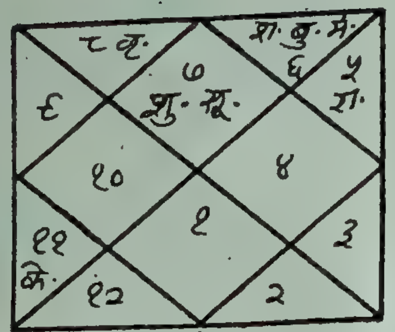

४६६

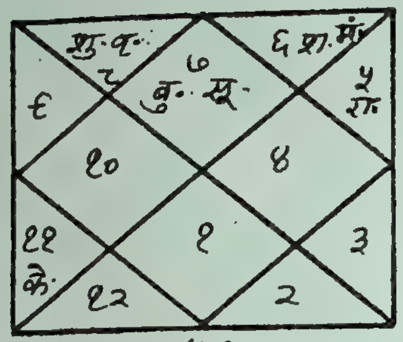

४६७

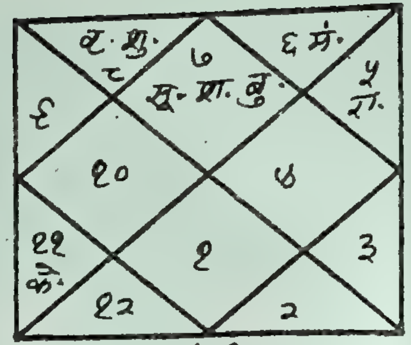

४६८

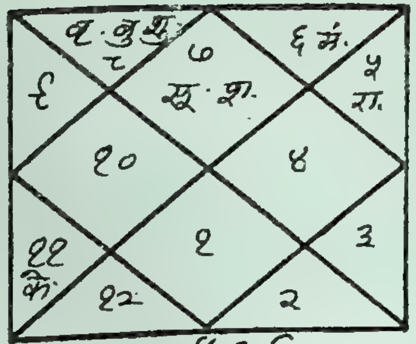

४६९

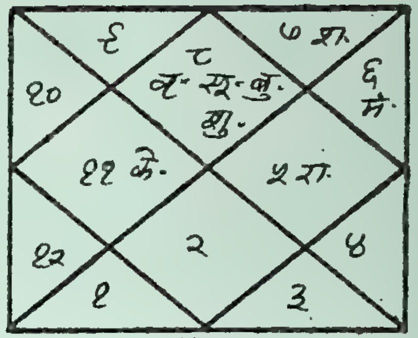

४७०

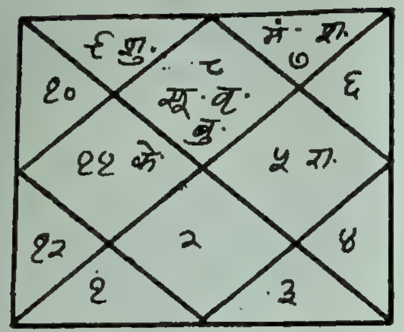

४७१

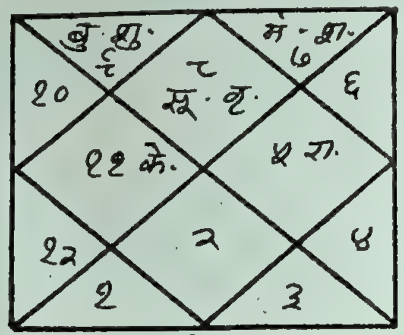

४७२

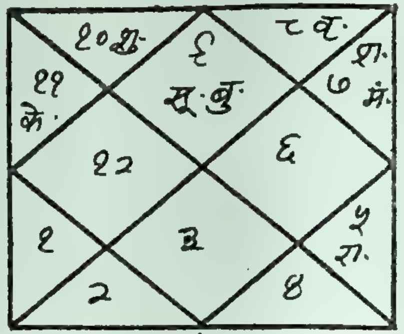

४७३

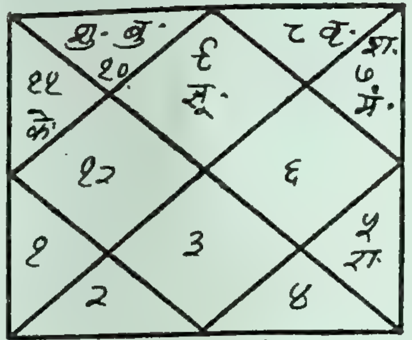

४७४

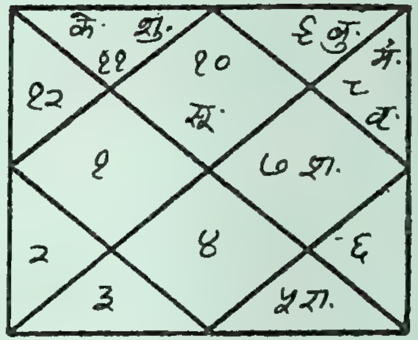

४७५

४७६

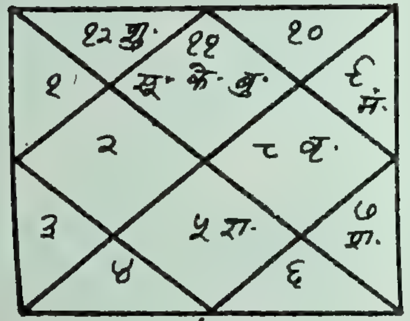

४७७

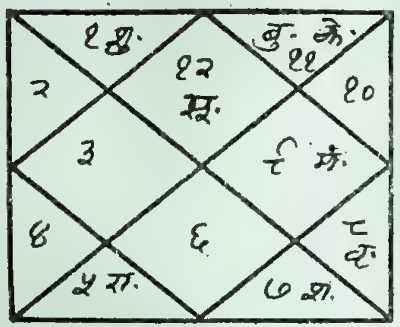

४७८

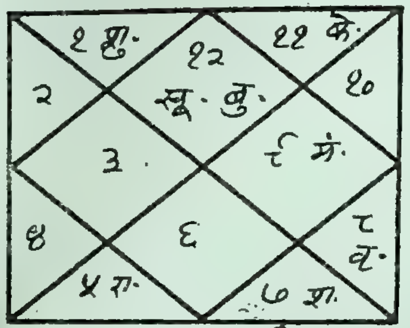

४७९

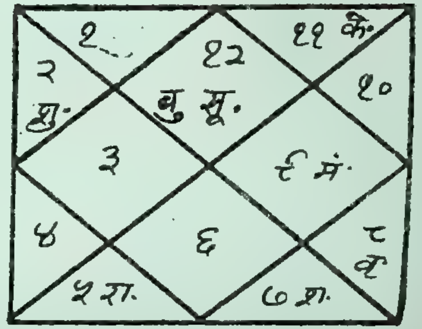

४८०

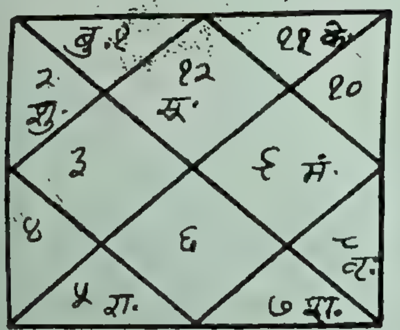
४८१

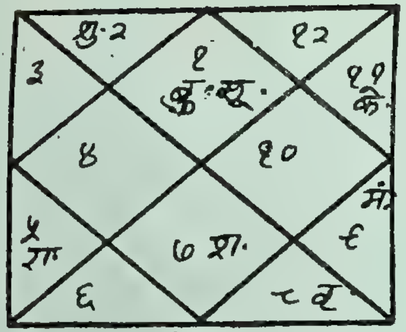
४८२

४८३

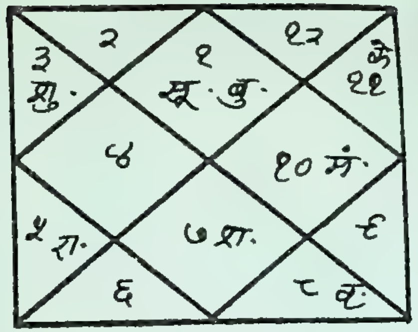
४८४

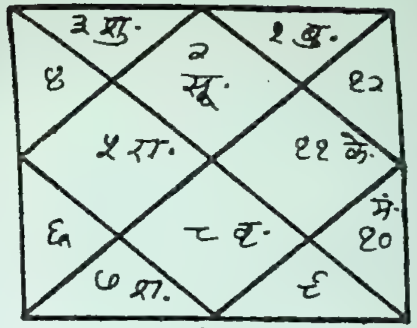
४८५

४८६

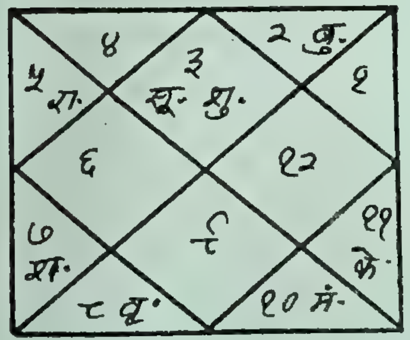
४८७

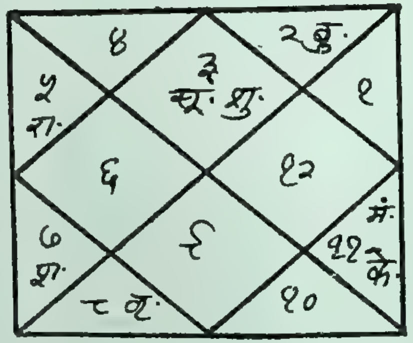
४८८

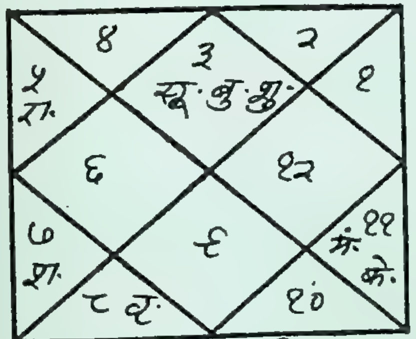
४८९

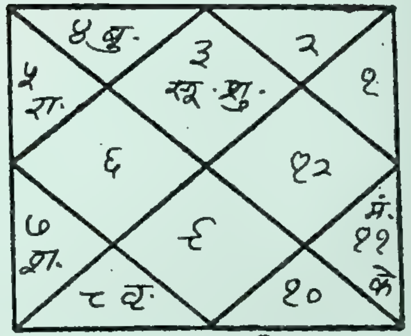
४९०

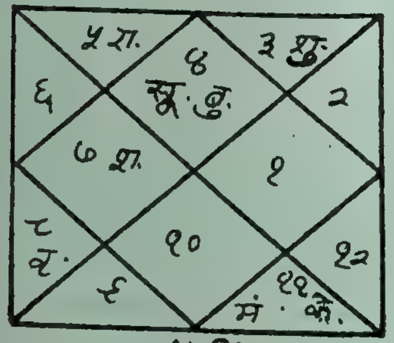
४९१

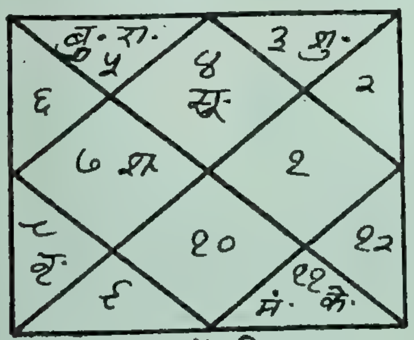
४९२

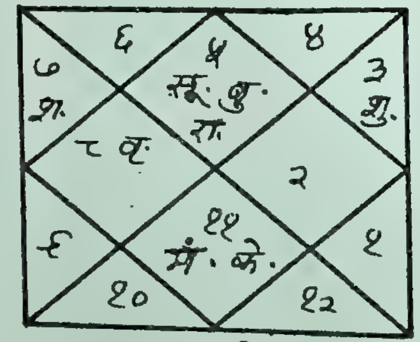
४९३

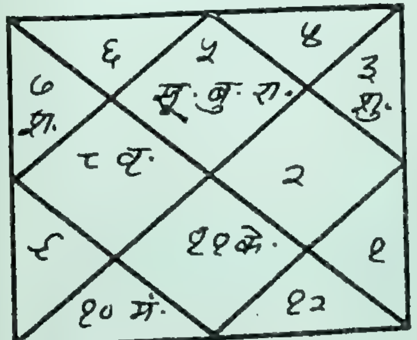
४९४

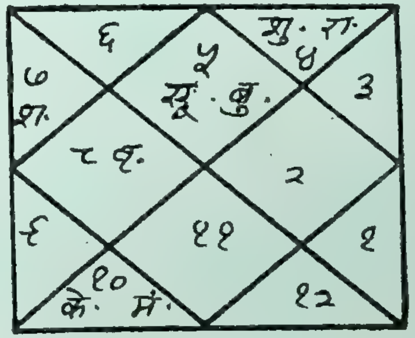
४९५

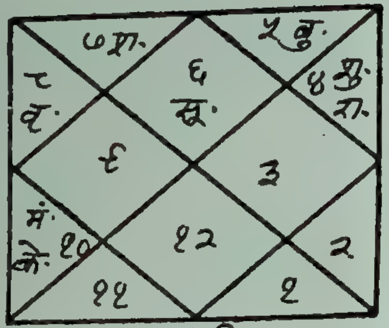

४९६

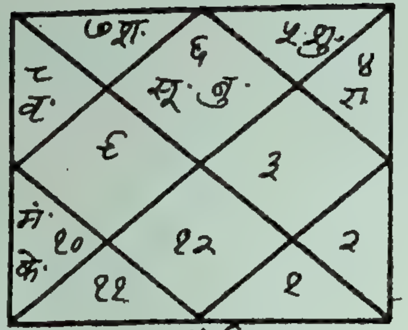

४९७

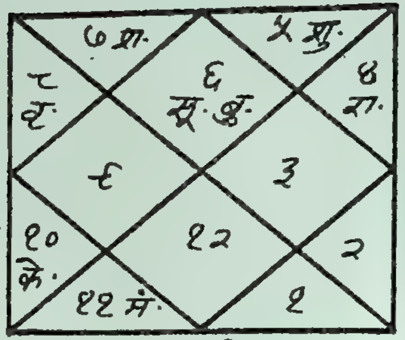

४९८

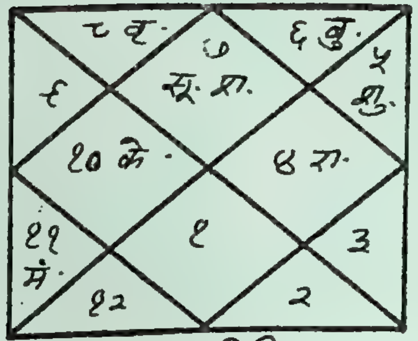

४९९

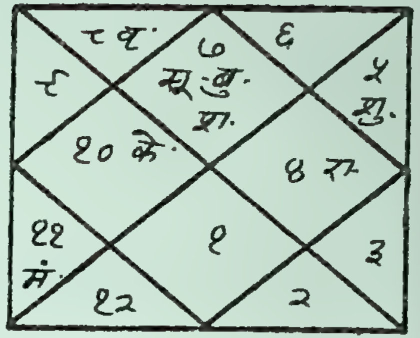

५००

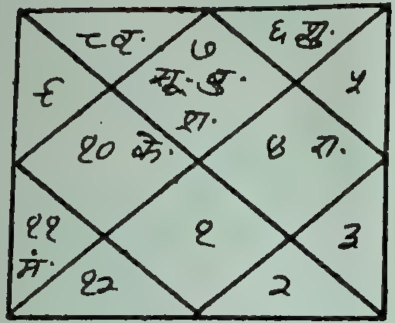

५०१

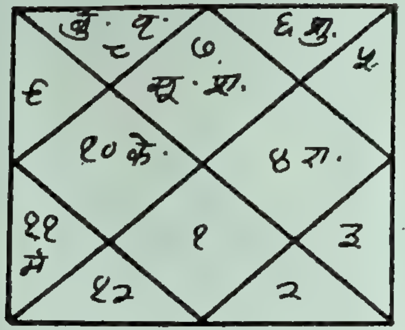

५०२

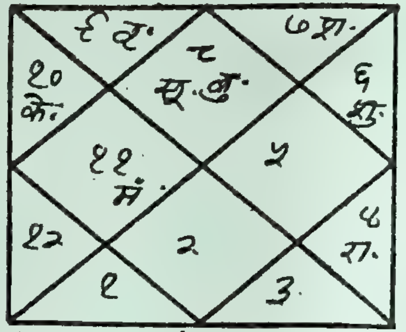

५०३

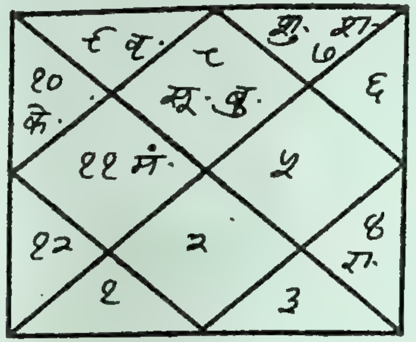

५०४

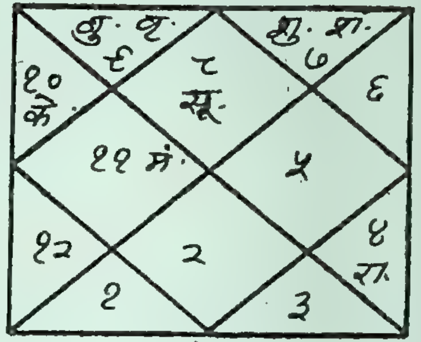

५०५

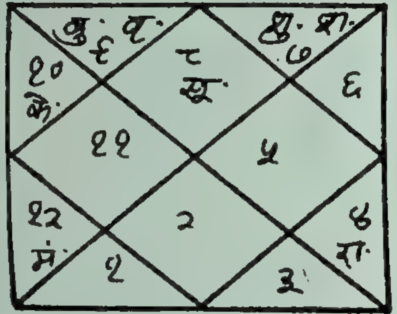

५०६

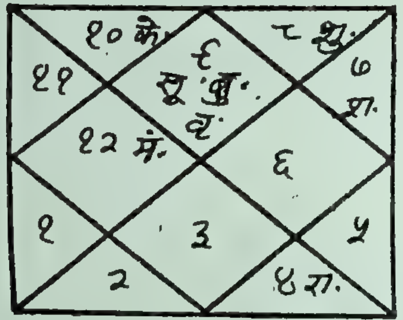

५०७

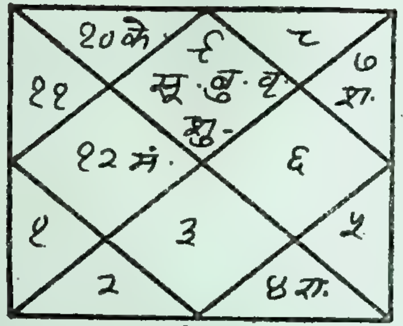

५०८

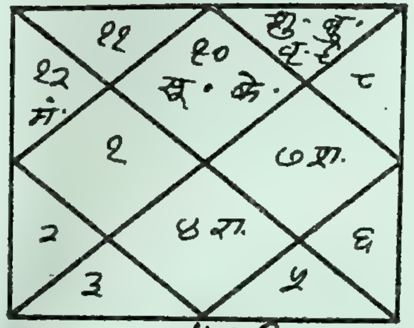

५०९

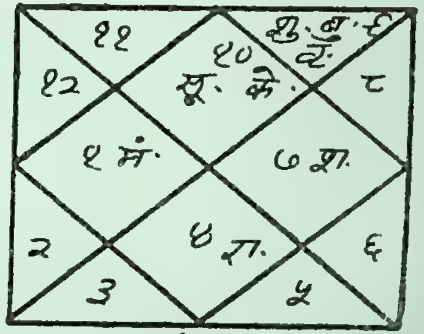

५१०

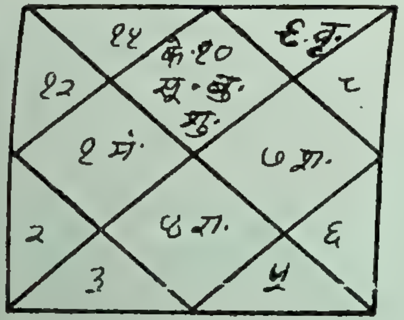
५११

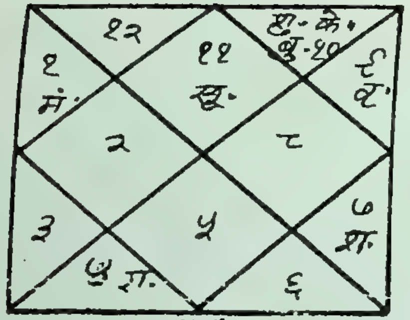
५१२

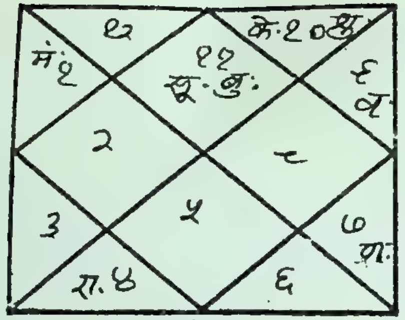
५१३

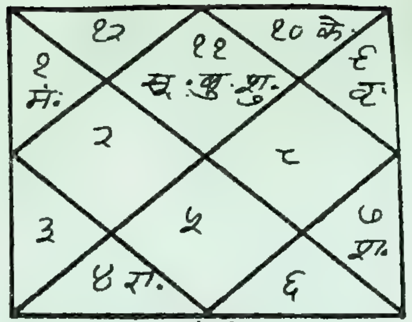
५१४

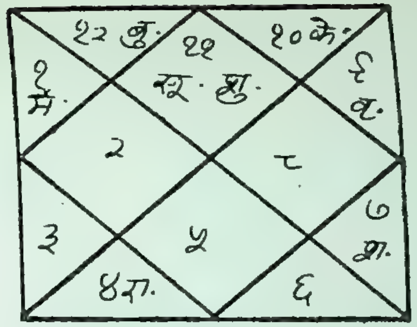
५१५

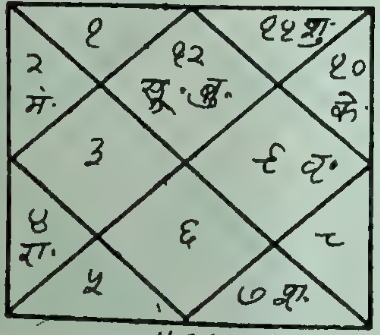
५१६

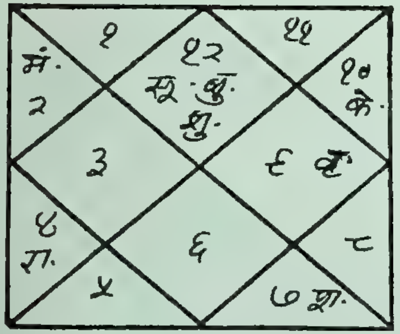
५१७

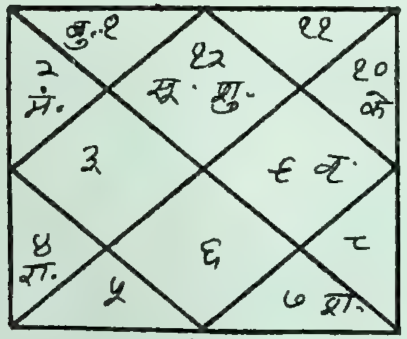
५१८

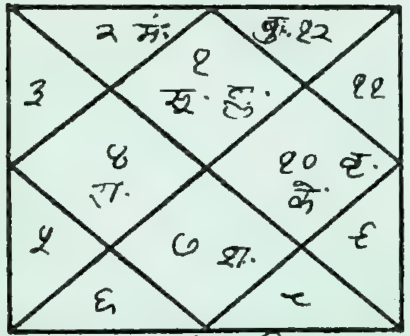
५१९

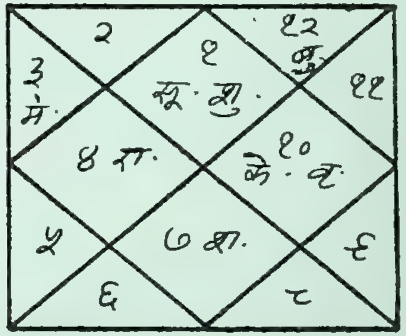
५२०

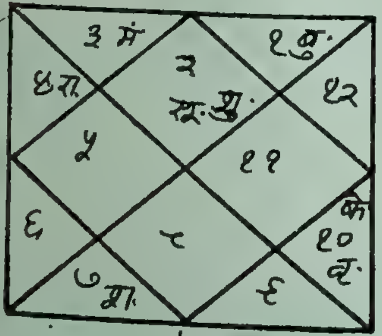
५२१

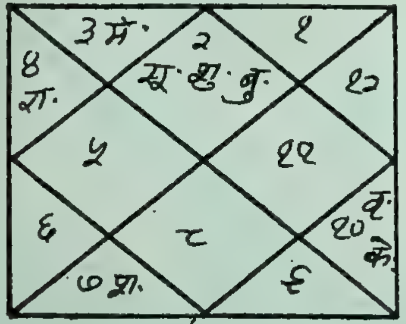
५२२

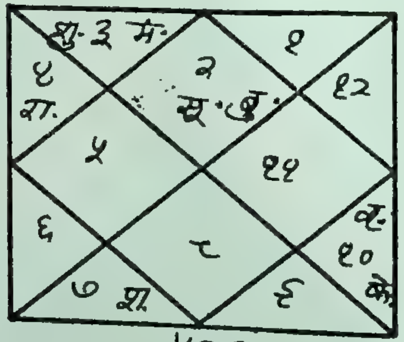
५२३

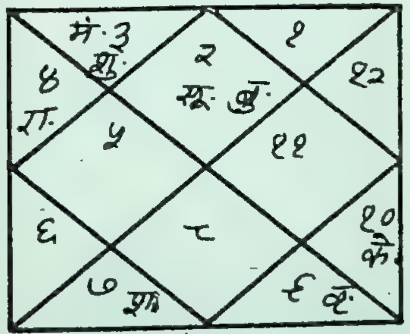
५२४

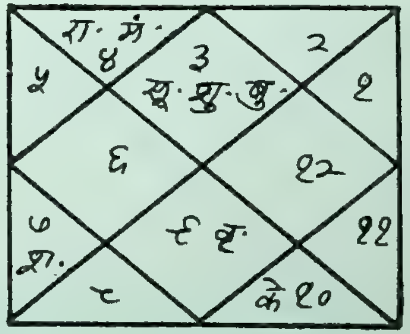
५२५

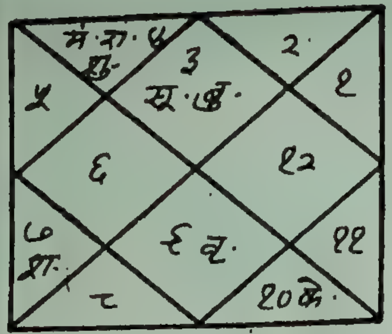

५२६

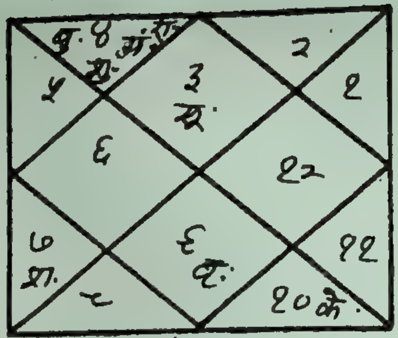

५२७

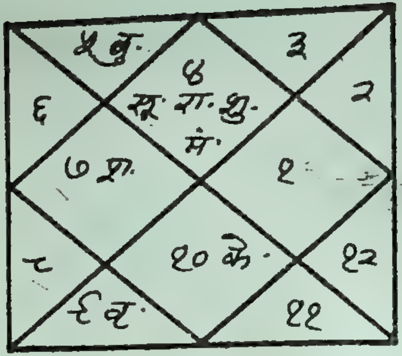

५२८

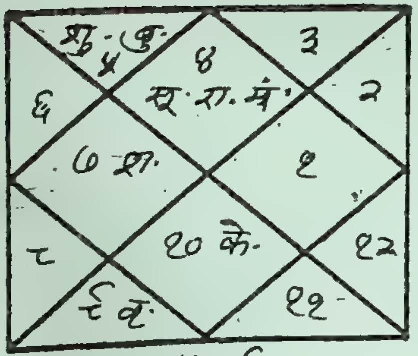

५२९

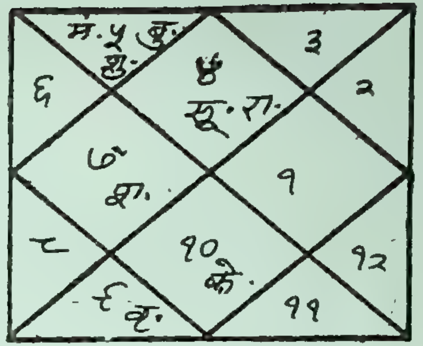

५३०

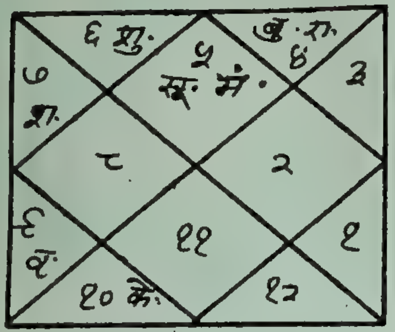

५३१

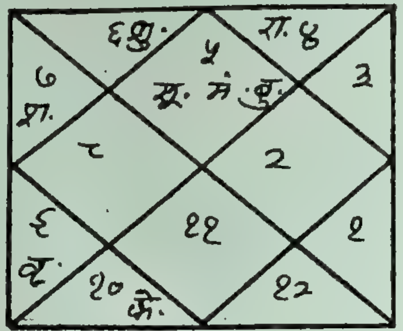

५३२

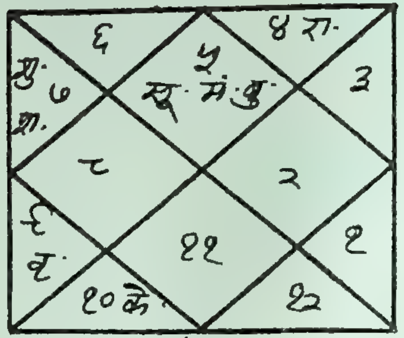

५३३

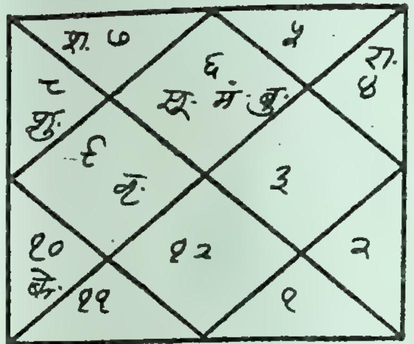

५३४

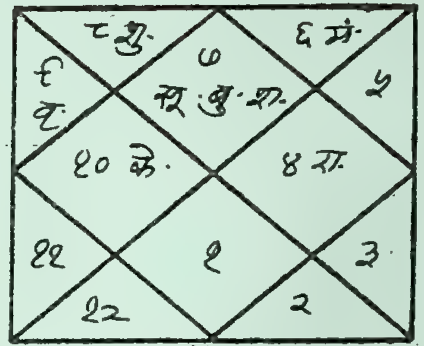

५३५

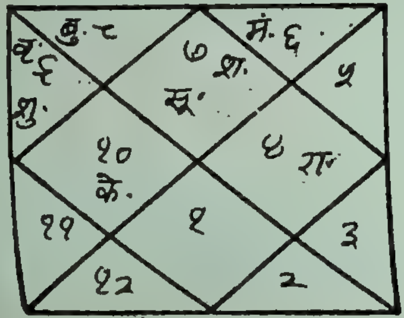

५३६

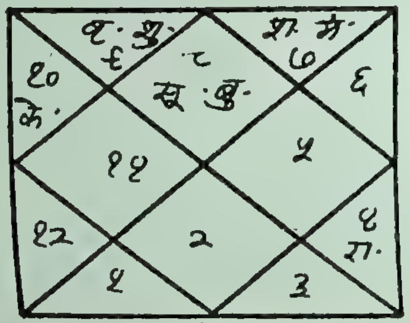

५३७

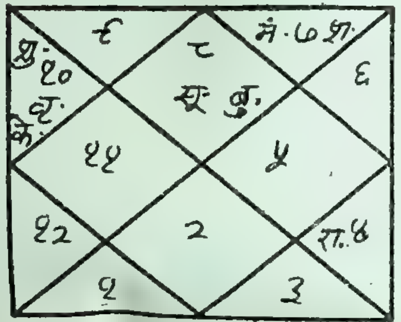

५३८

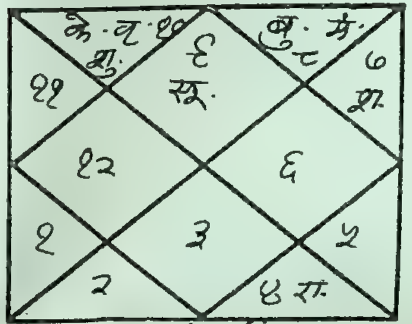

५३९

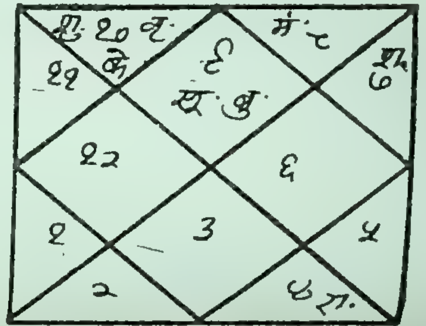

५४०

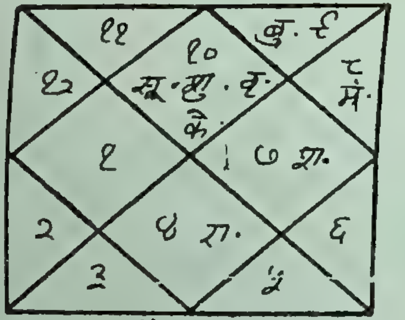

५४१

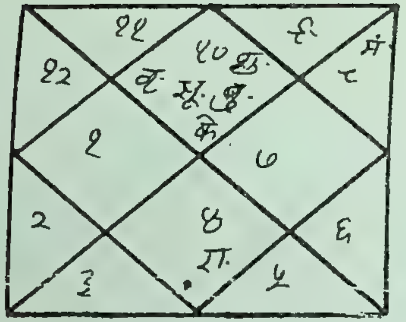

५४२

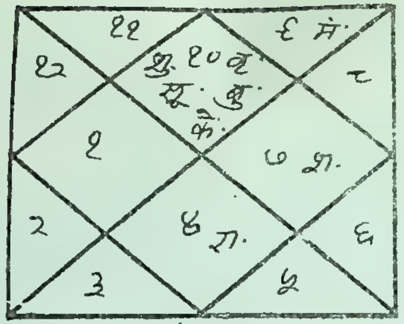

५४३

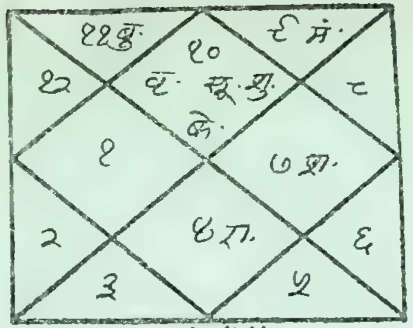

५४४

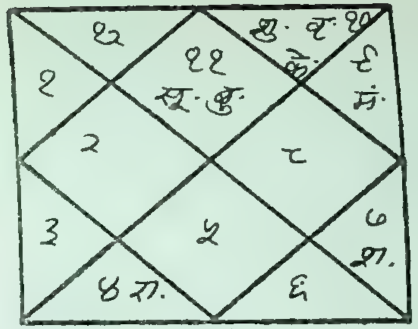

५४५

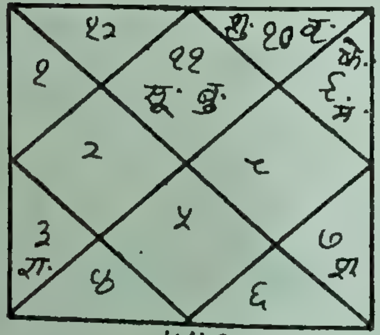

५४६

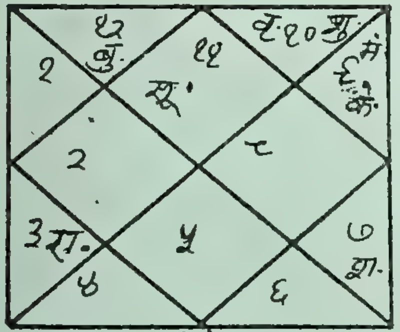

५४७

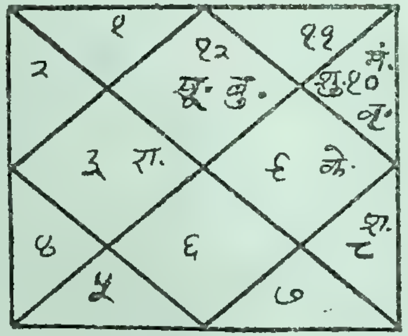

५४८

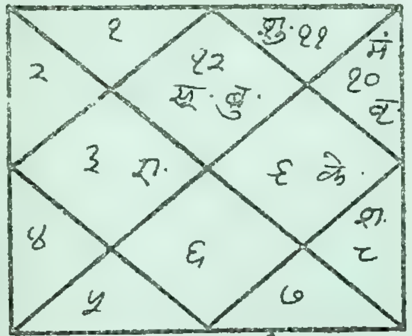

५४९

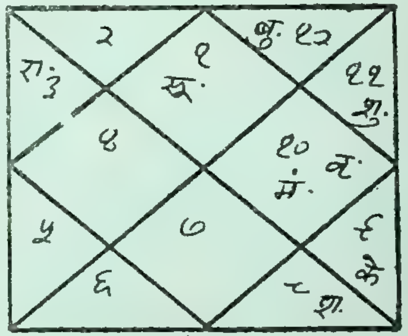

५५०

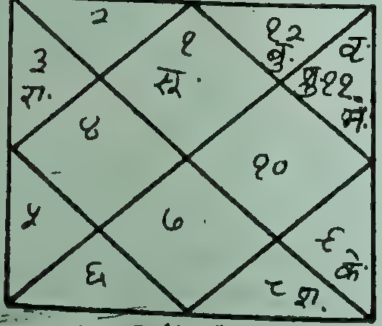

५५१

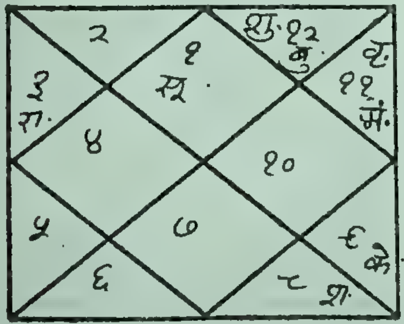

५५२

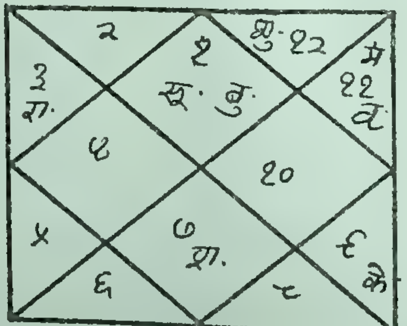

५५३

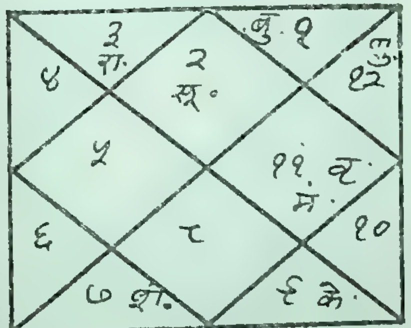

५५४

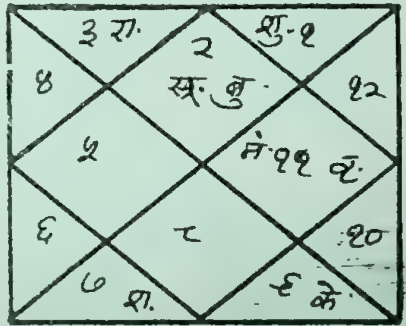

५५५

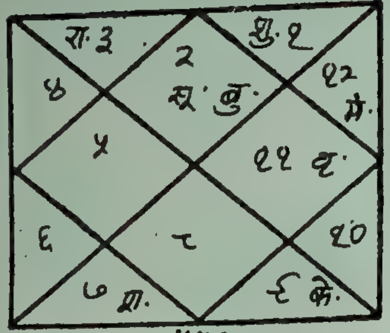

५५६

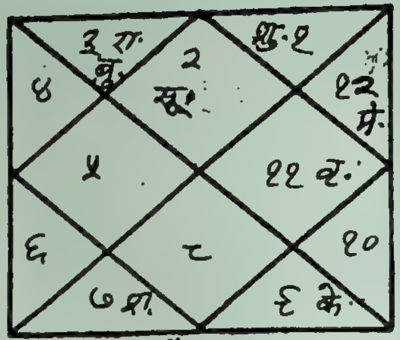

५५७

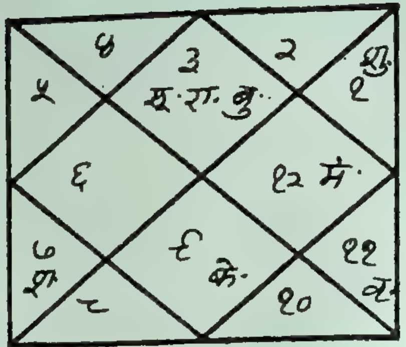

५५८

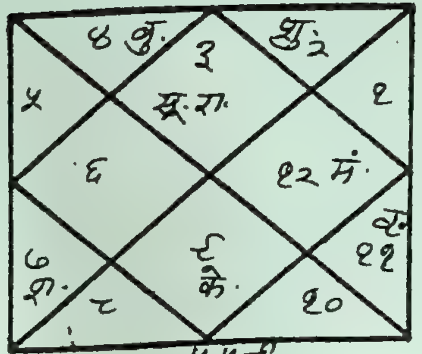

५५९

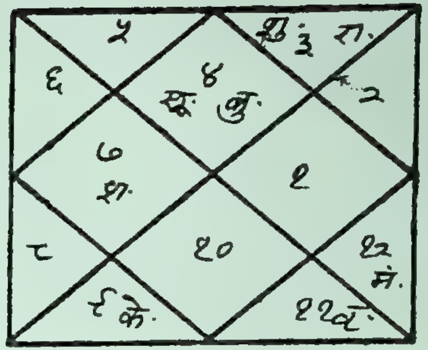

५६०

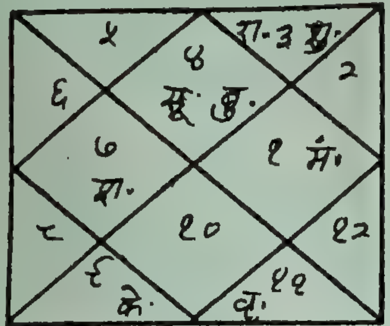

५६१

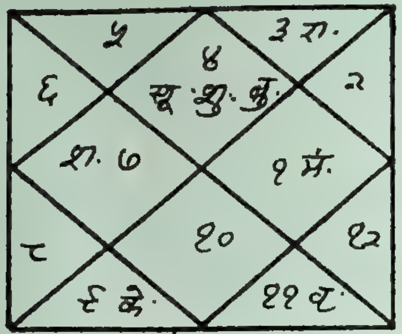

५६२

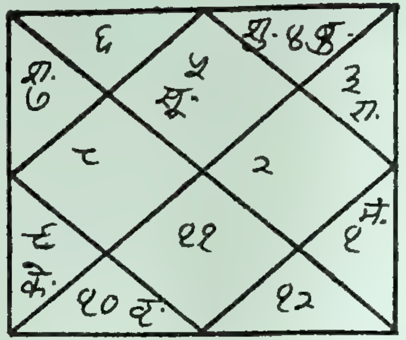

५६३

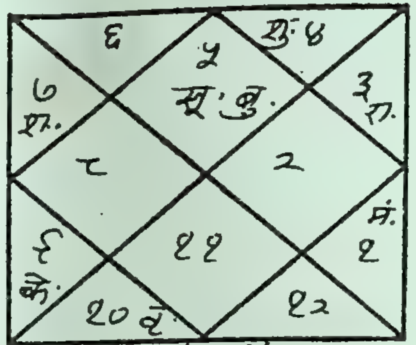

५६४

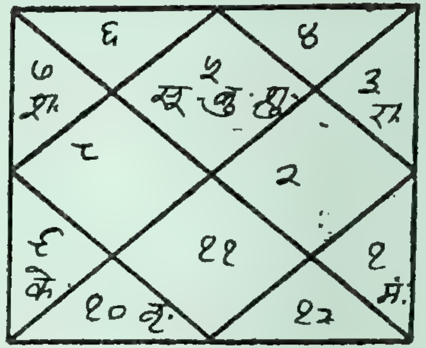

५६५

५६६

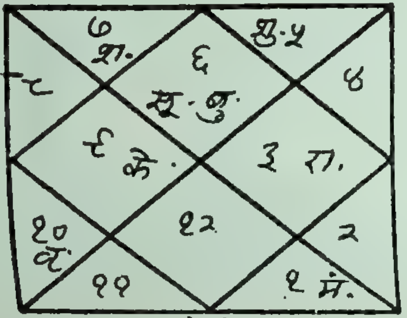

५६७

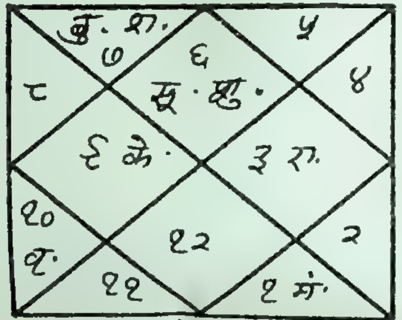

५६८

५६९

५७०

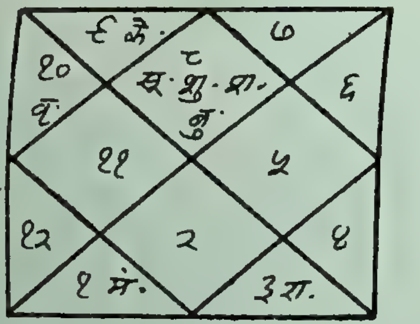

५७१

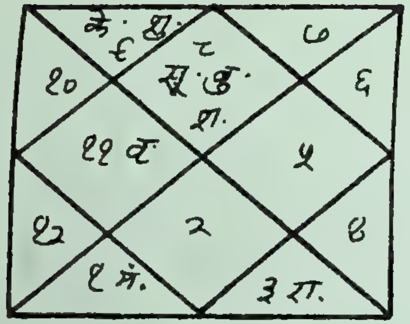

५७२

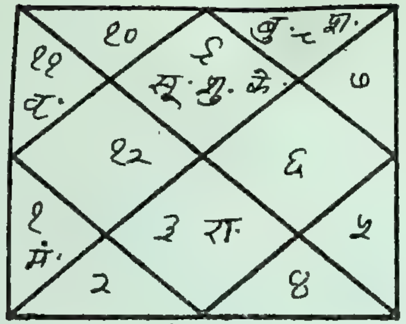

५७३

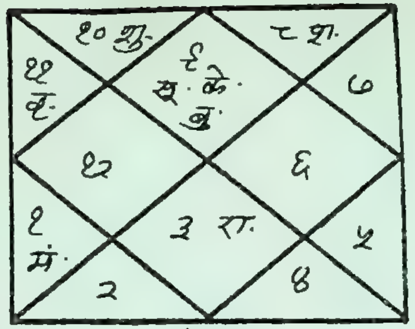

५७४

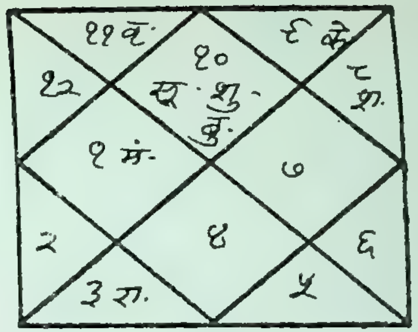

५७५

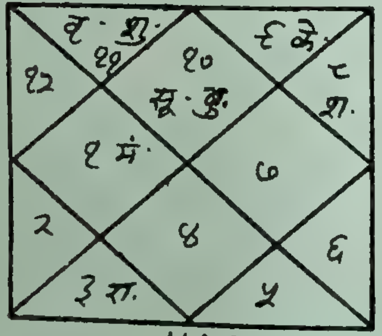

५७६

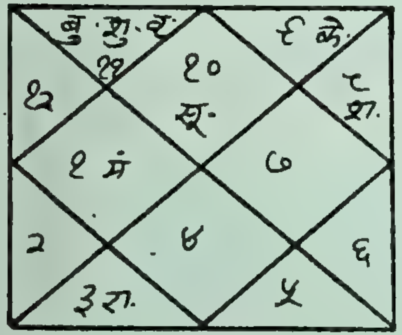

५७७

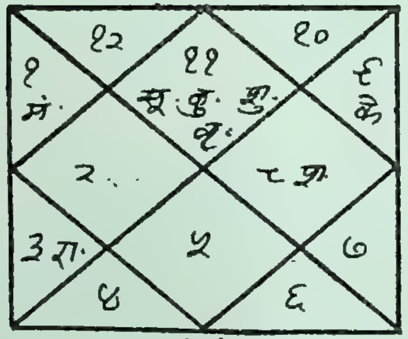

५७८

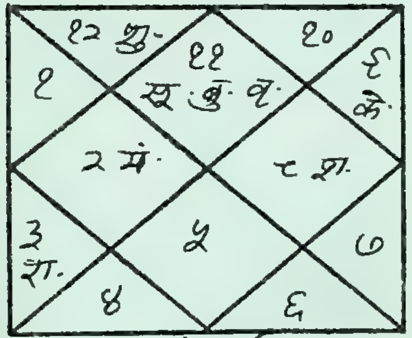

५७९

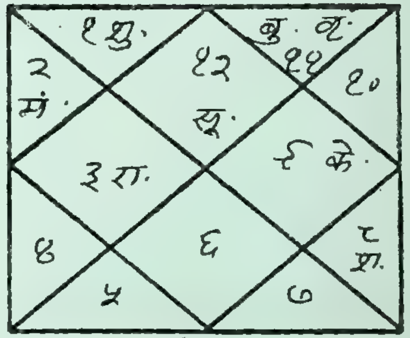

५८०

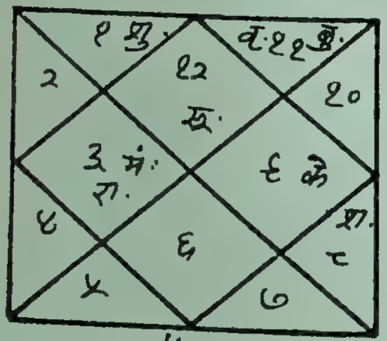

५८१

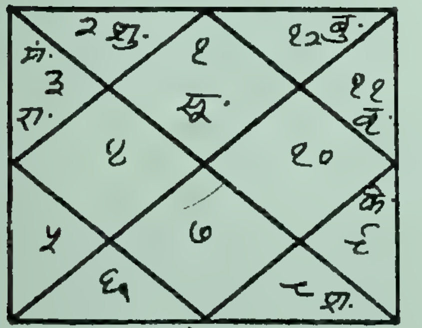

५८२

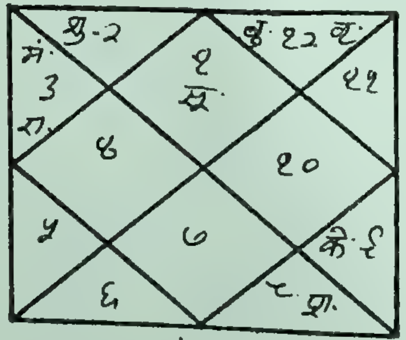

५८३

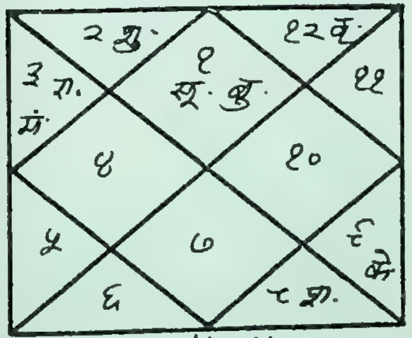

५८४

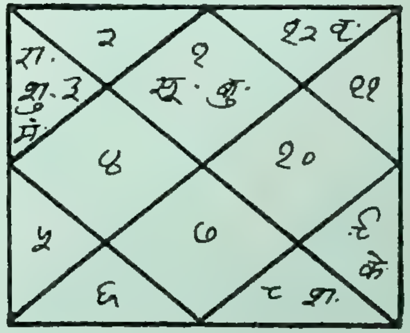

५८५

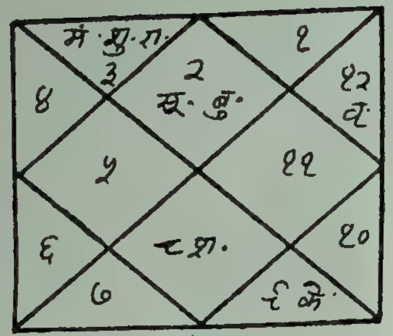

५८६

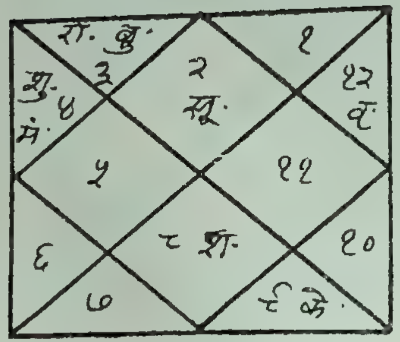

५८७

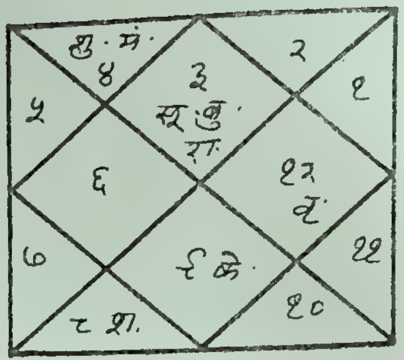

५८८

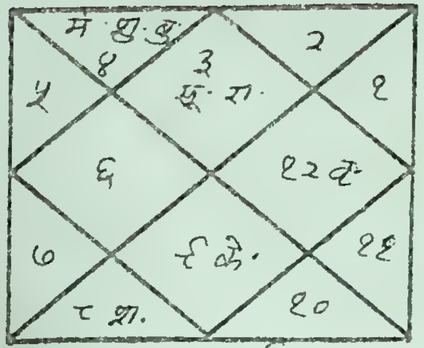

५८९

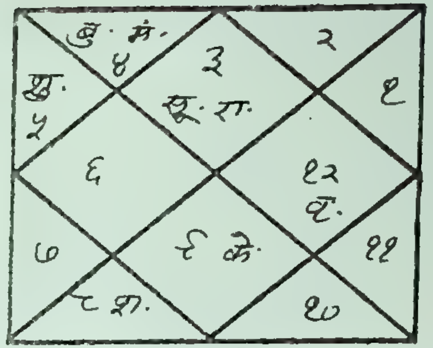

५९०

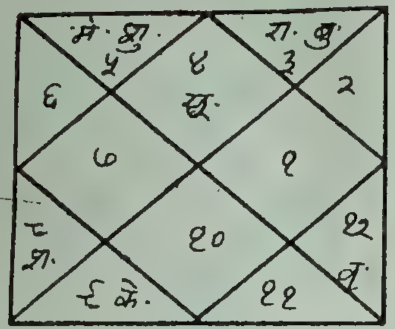

५९१

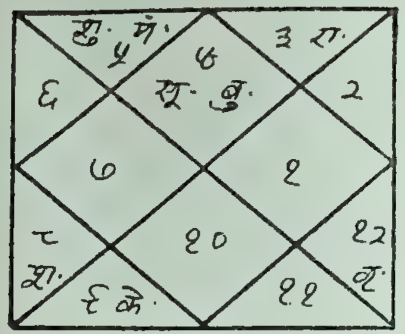

५९२

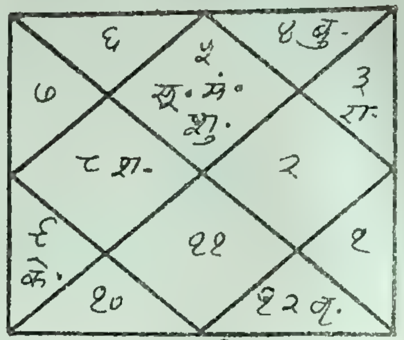

५९३

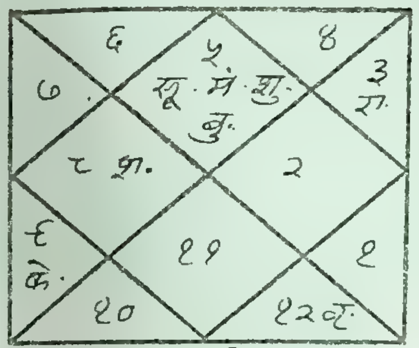

५९४

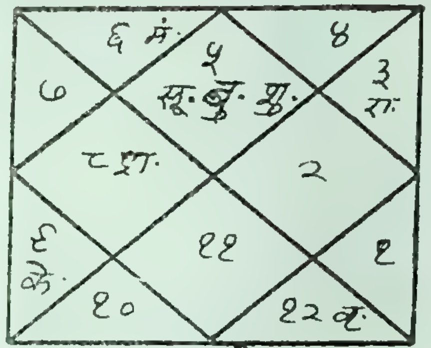

५९५

५९६

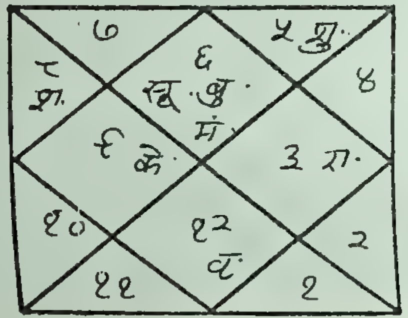

५९७

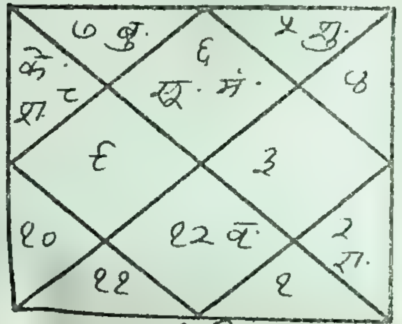

५९८

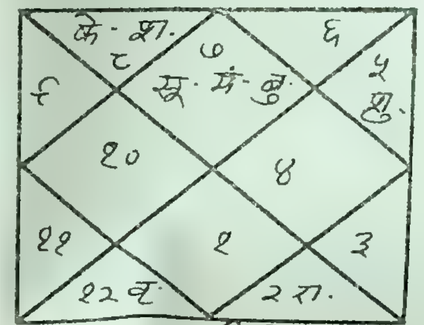

५९९

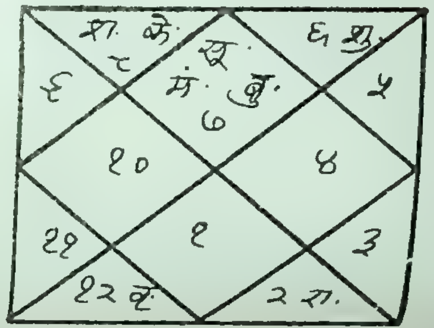

६००

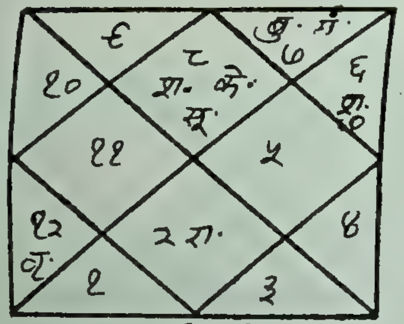
६०१

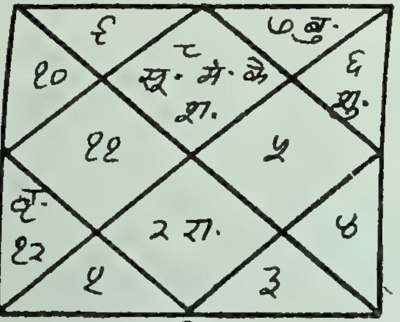
६०२

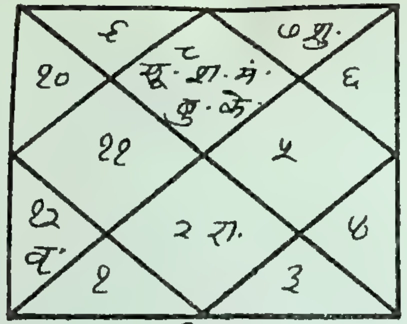
६०३

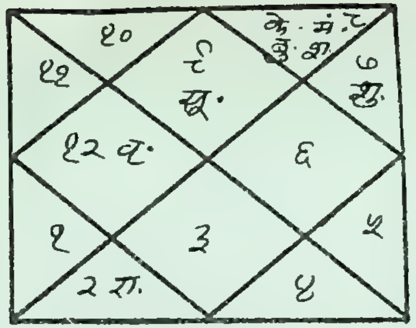
६०४

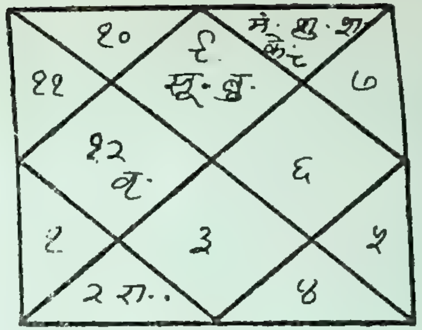
६०५

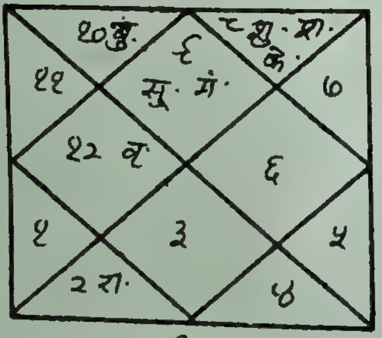
६०६

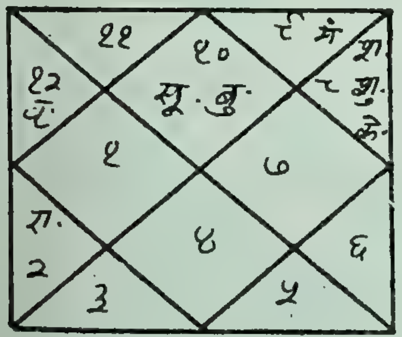
६०७

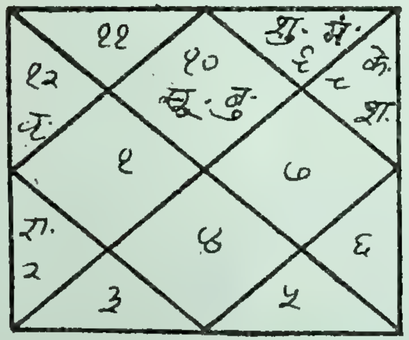
६०८

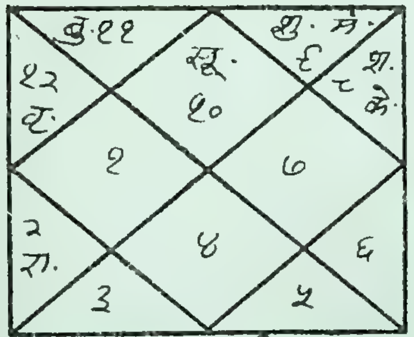
६०९

६१०

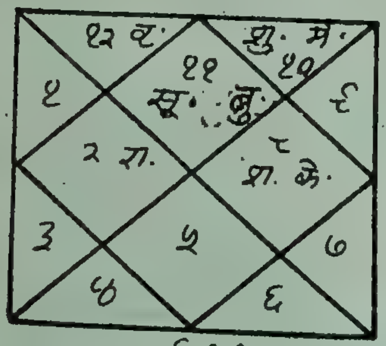
६११

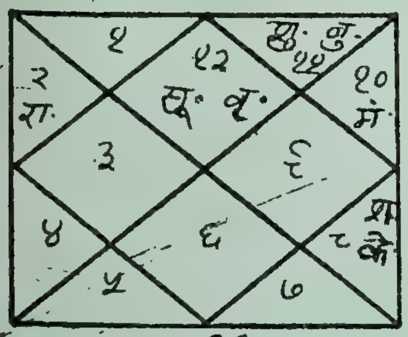
६१२

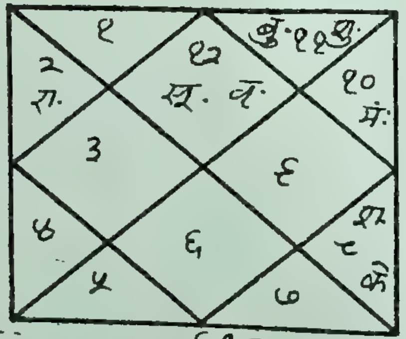
६१३

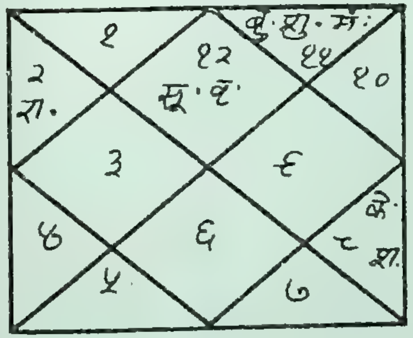
६१४

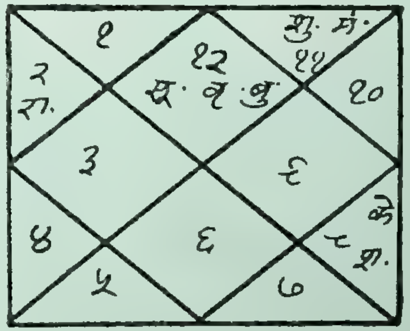
६१५

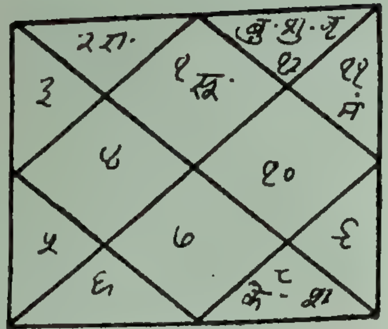
६१६

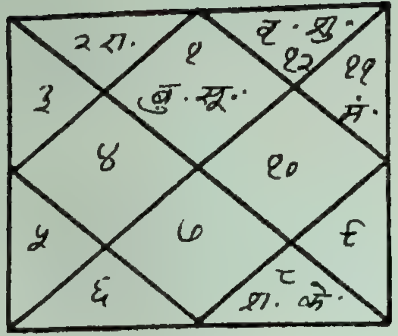
६१७

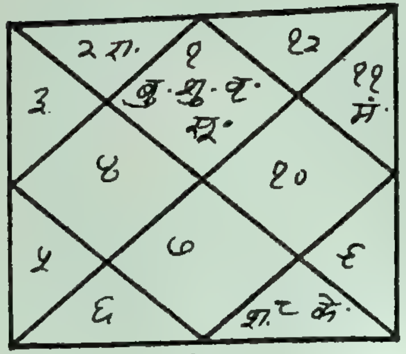
६१८

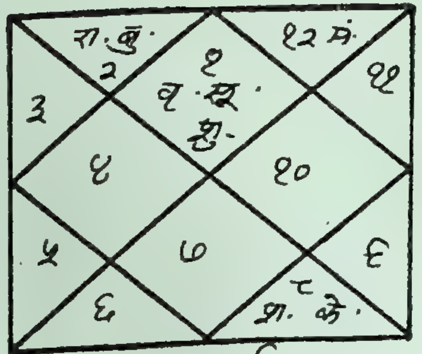
६१९

६२०

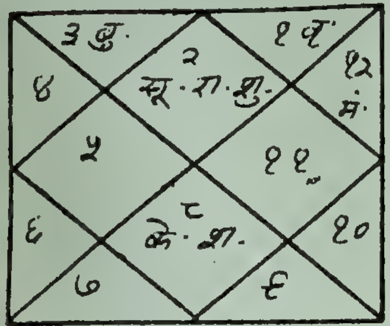
६२१

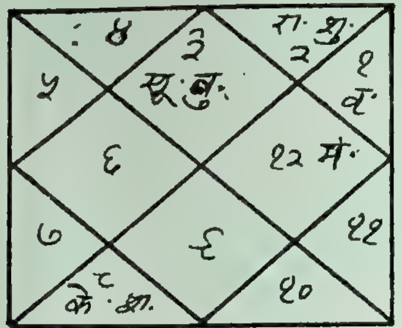
६२२

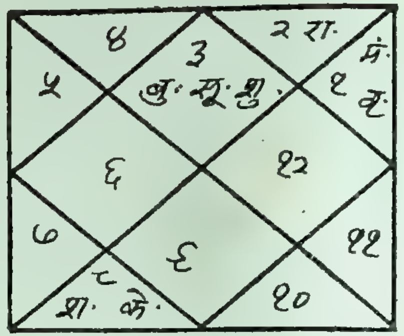
६२३

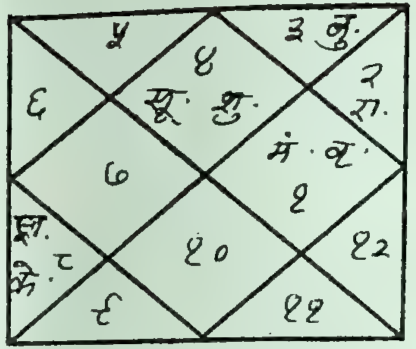
६२४

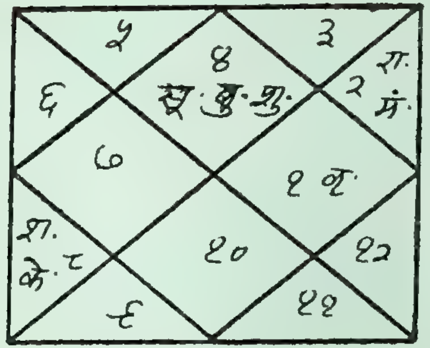
६२५

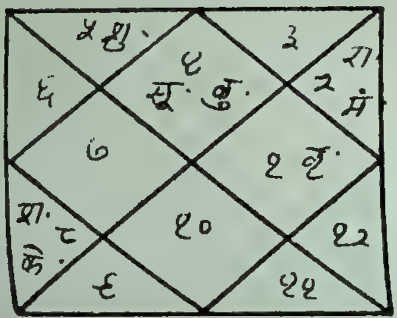
६२६

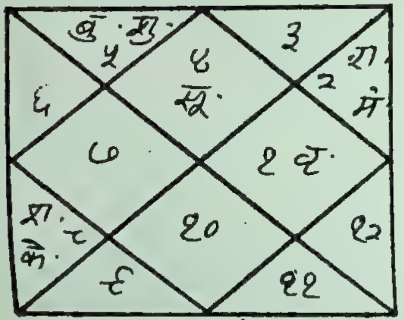
६२७

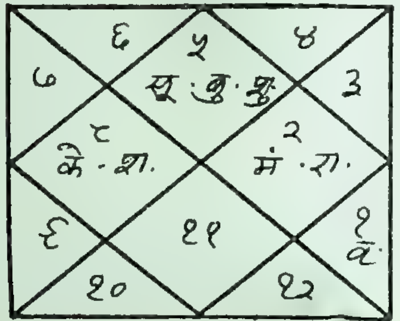
६२८

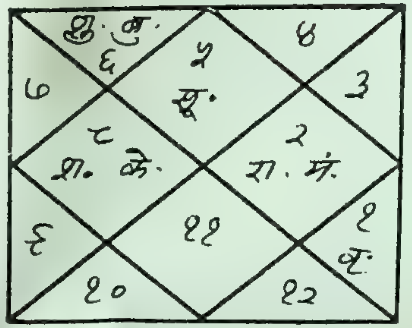
६२९

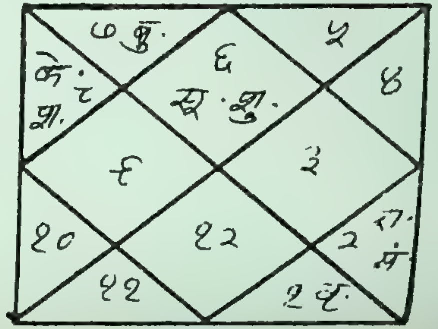
६३०

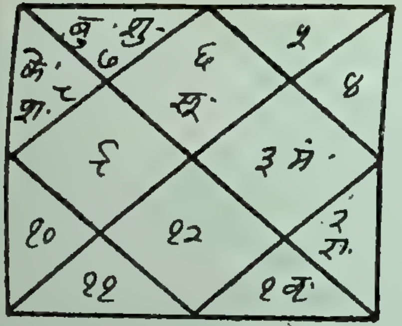
६३१

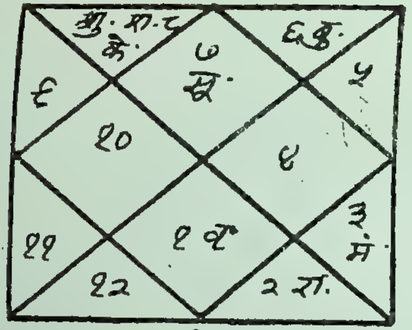
६३२

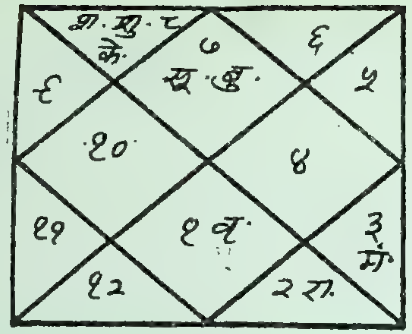
६३३

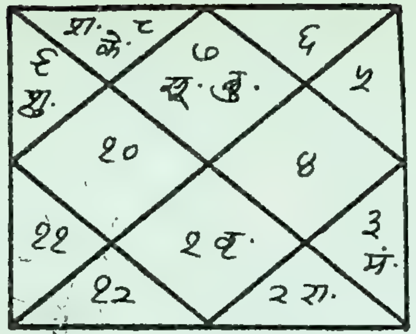
६३४

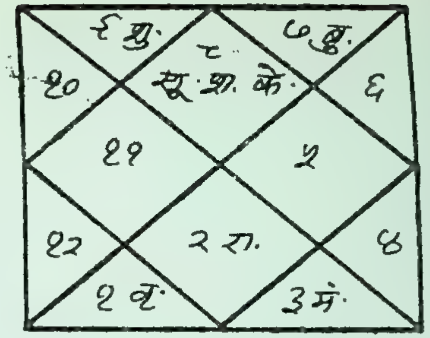
६३५

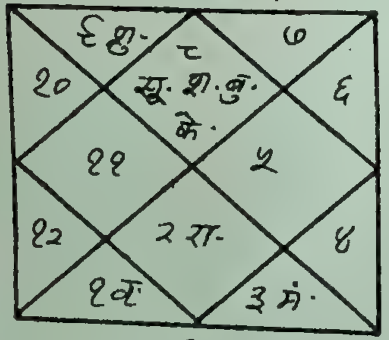
६३६

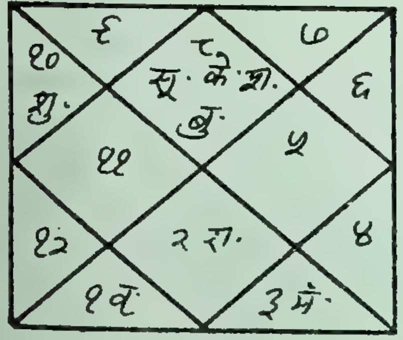
६३७

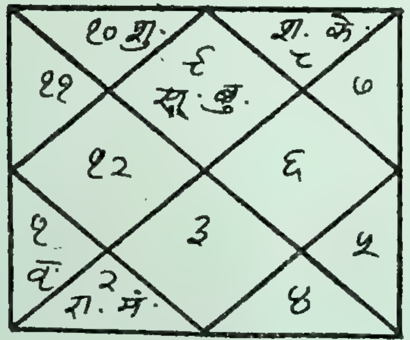
६३८

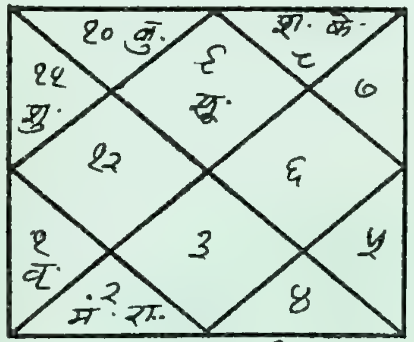
६३९

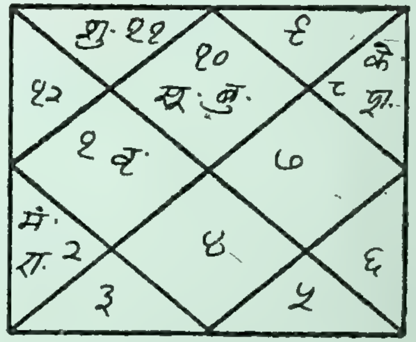
६४०

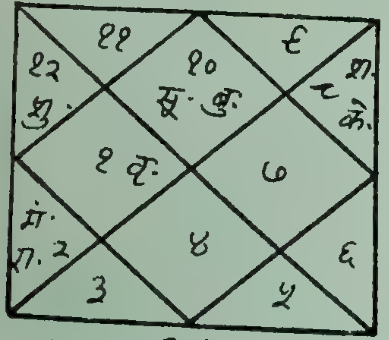
६४१

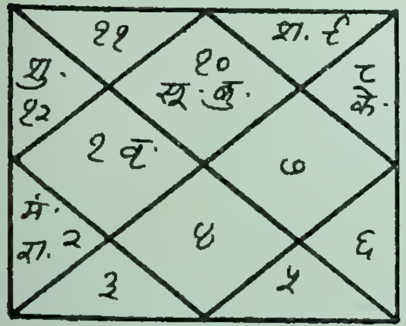
६४२

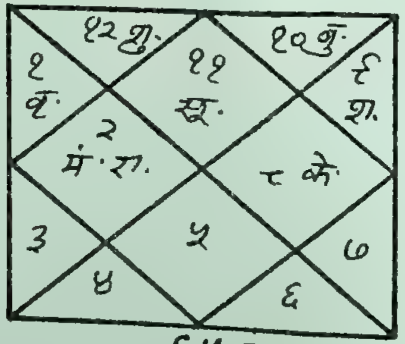
६४३

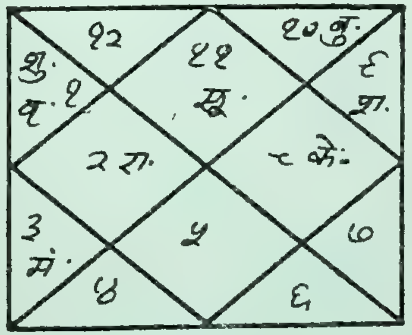
६४४

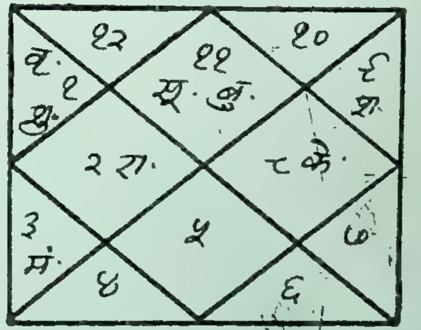
६४५

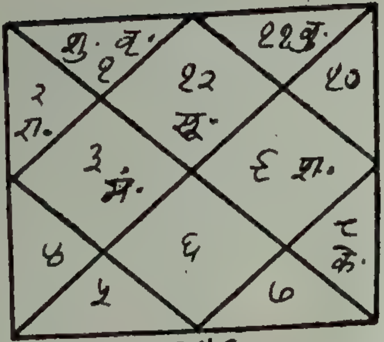
६४६

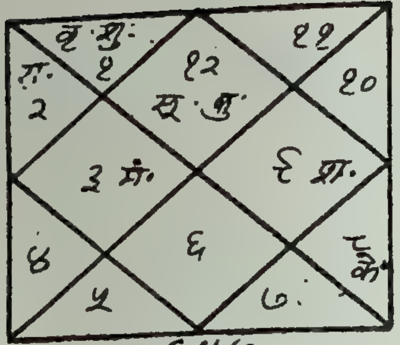
६४७

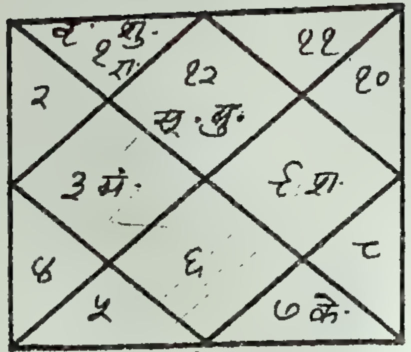
६४८

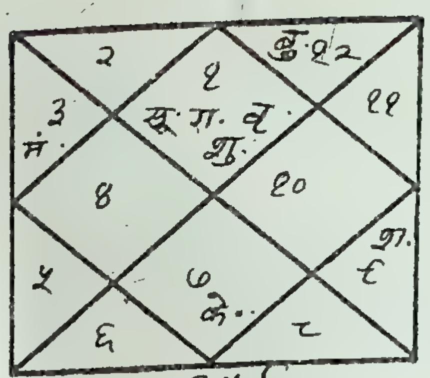
६४९

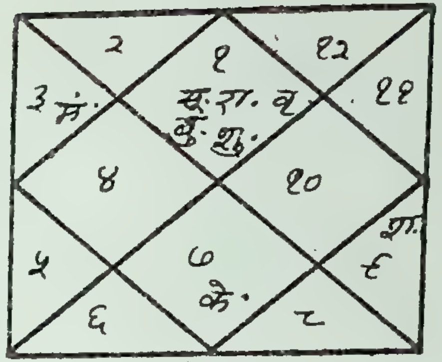
६५०

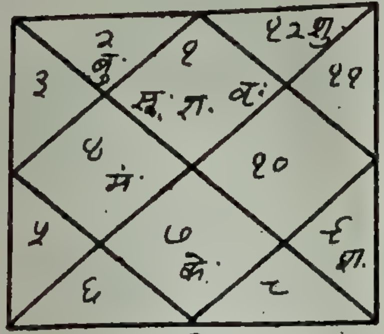
६५१

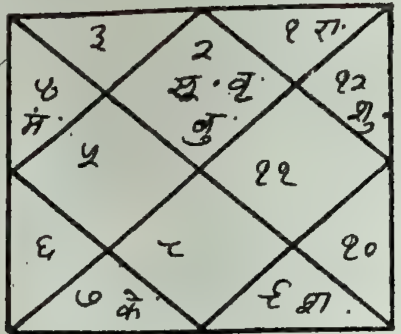
६५२

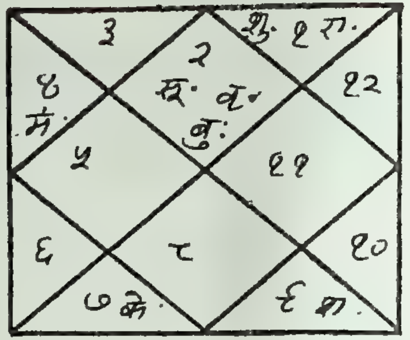
६५३

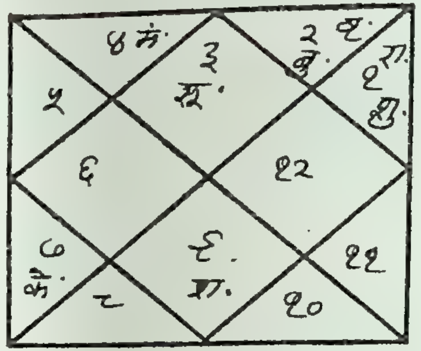
६५४

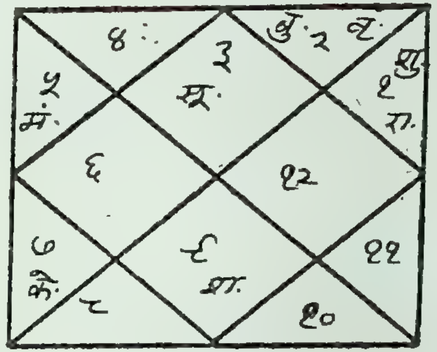
६५५

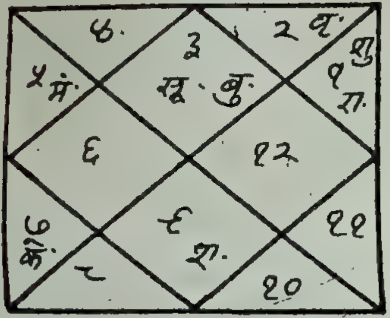
६५६

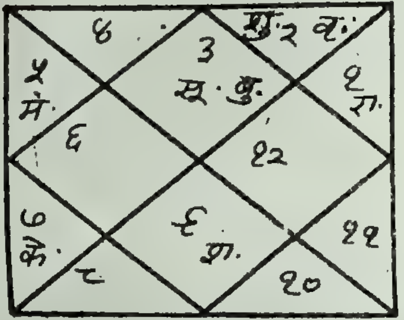
६५७

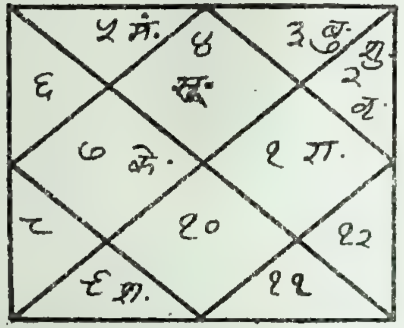
६५८

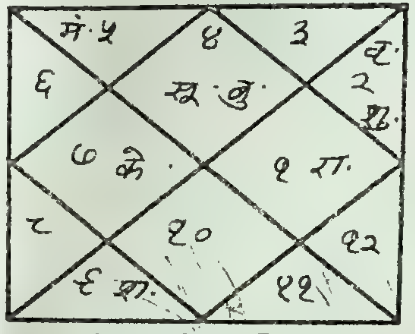
६५९

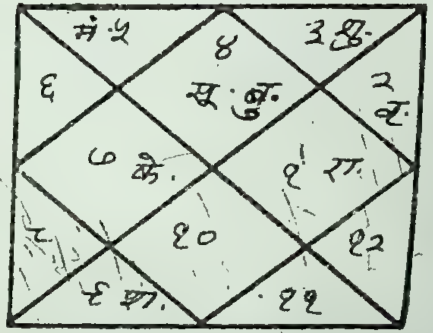
६६०

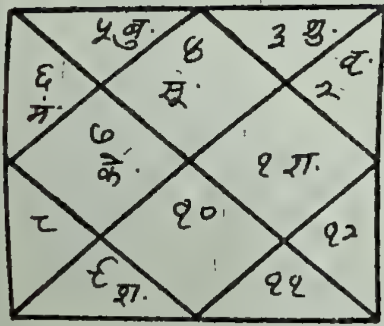

६६१

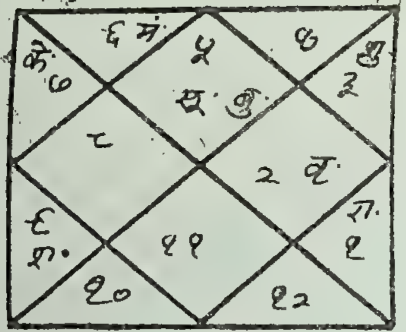

६६२

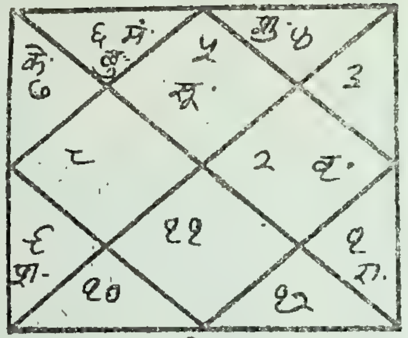

६६३

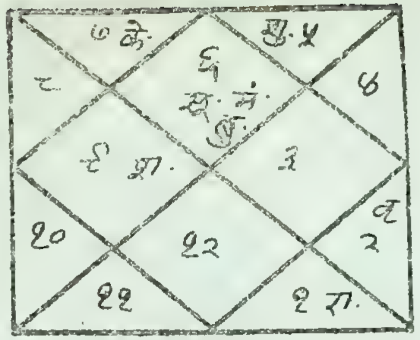

६६४

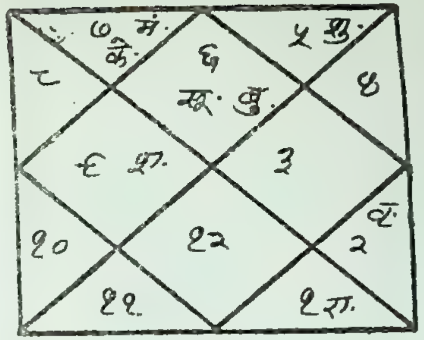

६६५

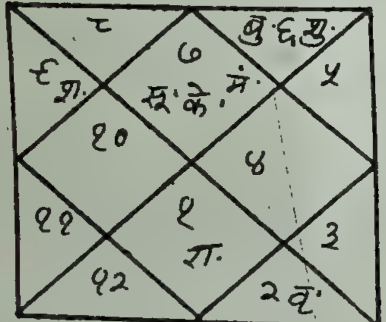

६६६

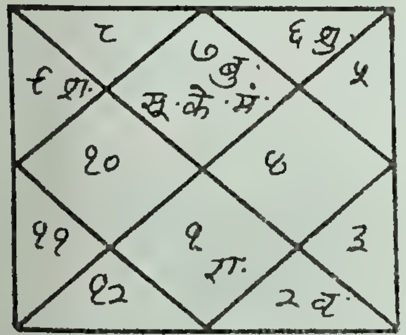

६६७

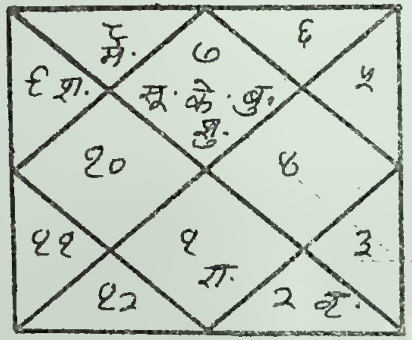

६६८

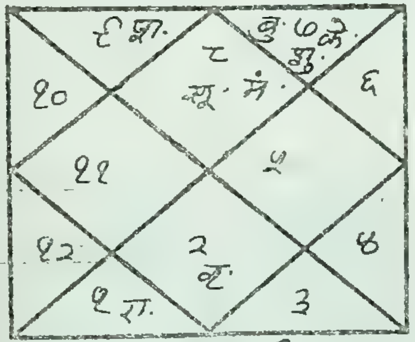

६६९

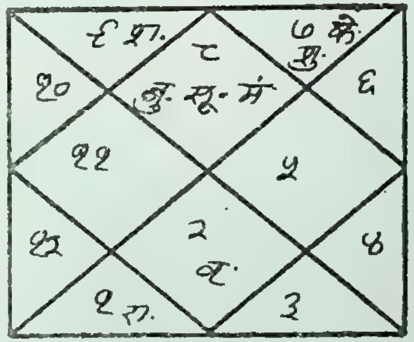

६७०

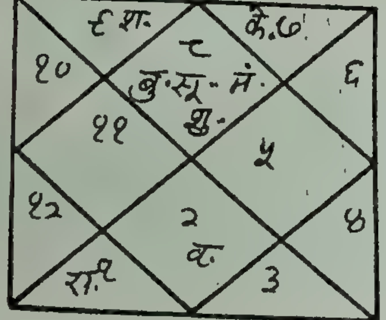

६७१

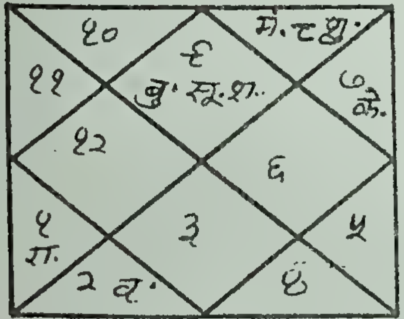

६७२

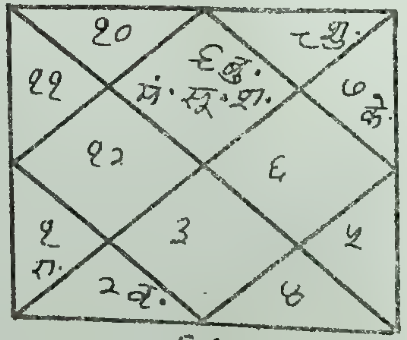

६७३

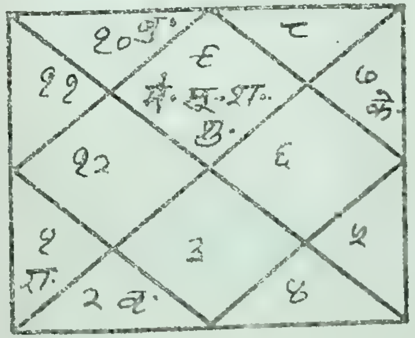

६७४

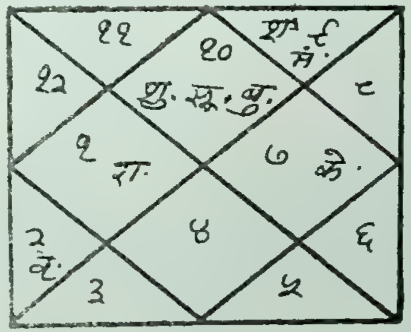

६७५

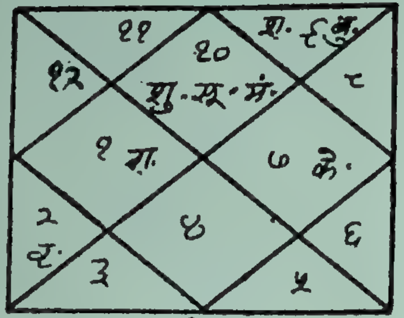

६७६

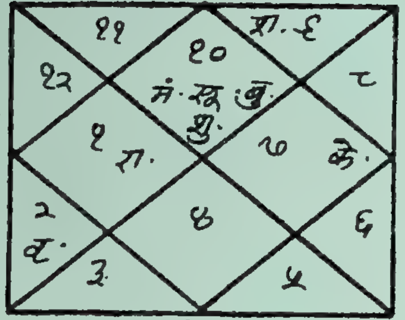

६७७

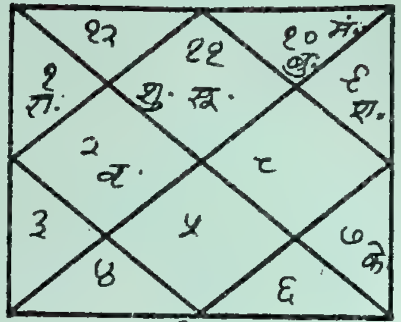

६७८

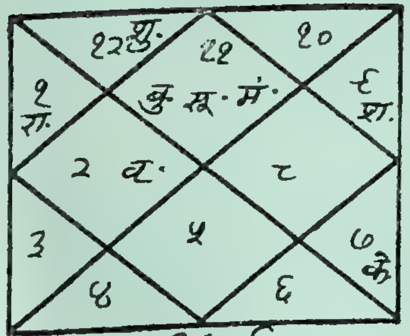

६७९

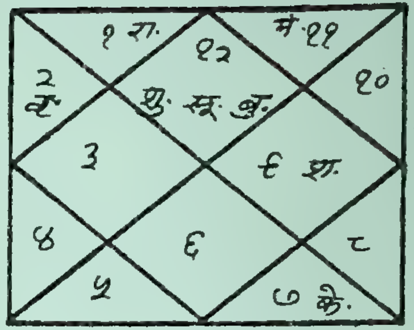

६८०

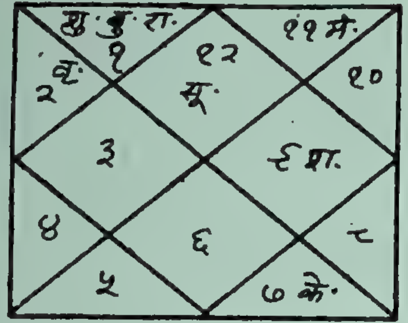

६८१

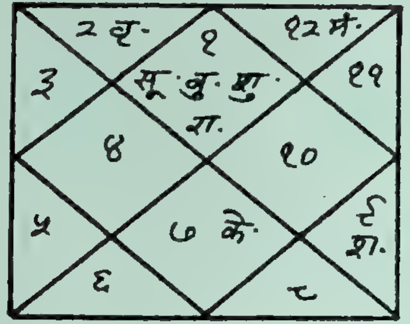

६८२

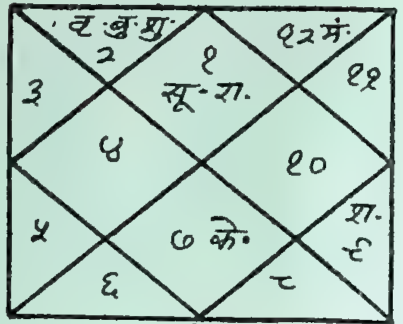

६८३

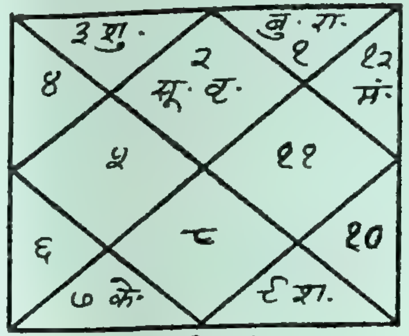

६८४

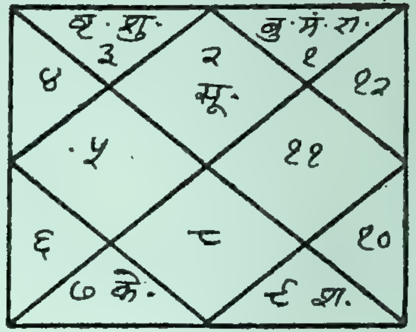

६८५

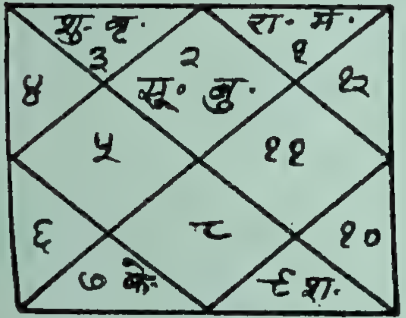

६८६

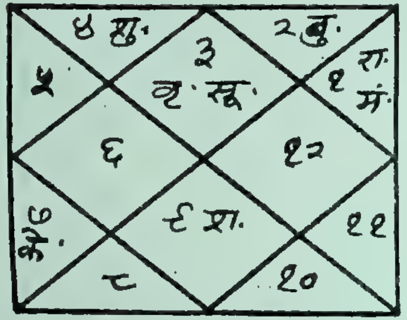

६८७

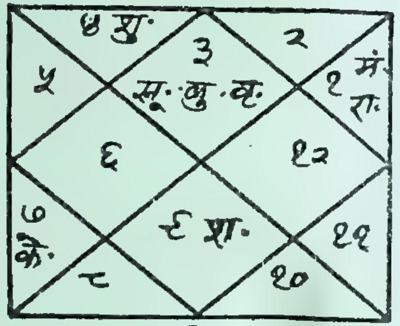

६८८

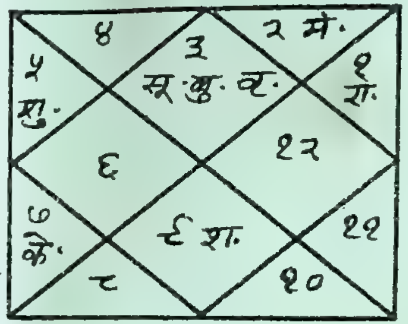

६८९

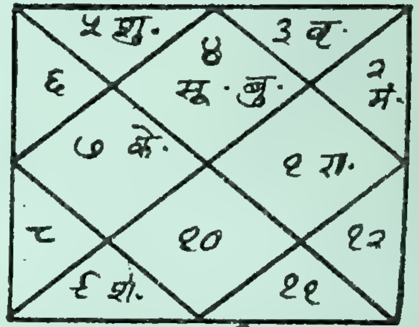

६९०

भू० सं० २०५८

कु० प०

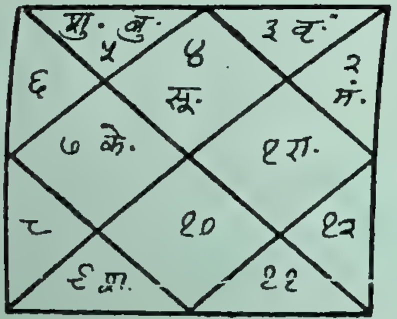
६९१

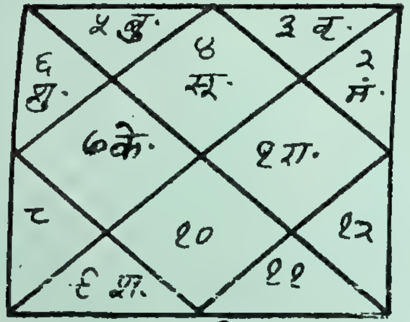
६९२

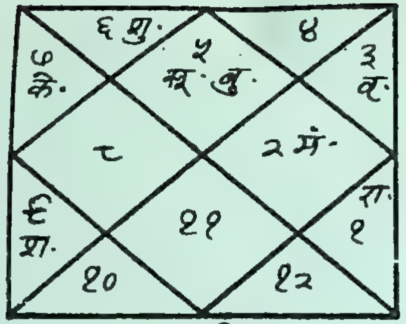
६९३

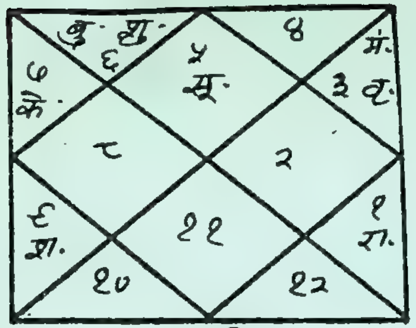
६९४

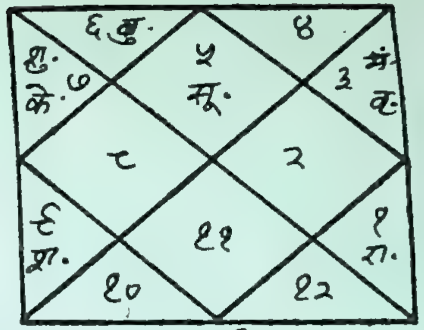
६९५

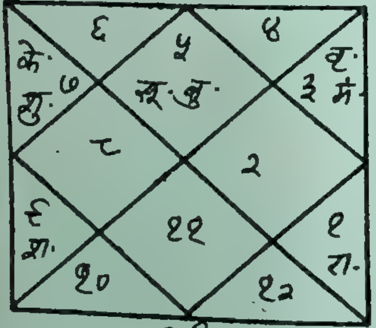
६९६

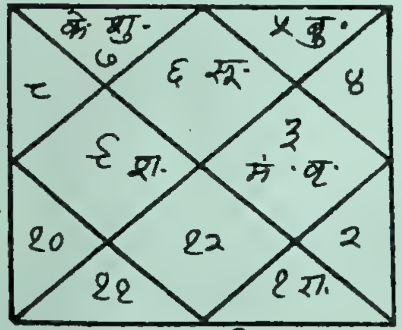
६९७

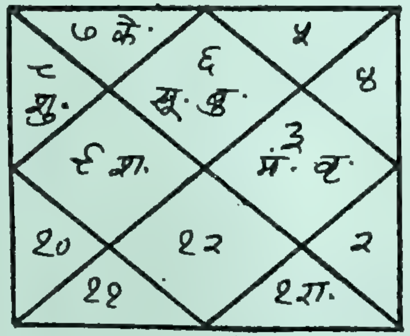
६९८

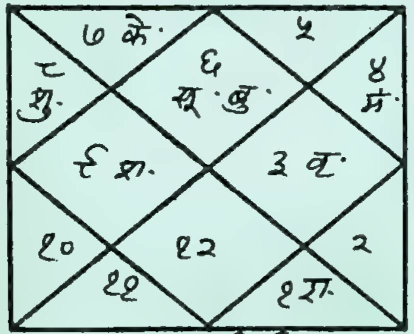
६९९

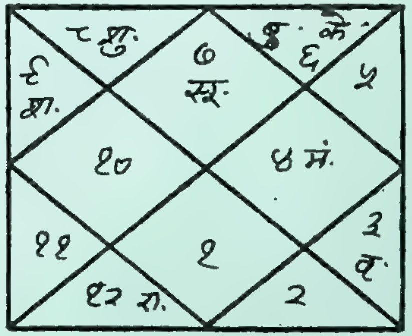
७००

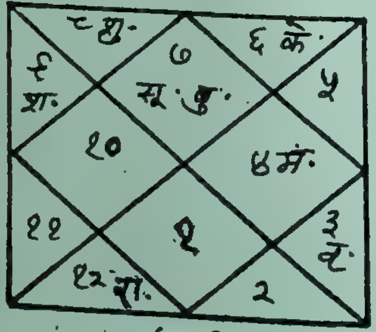
७०१

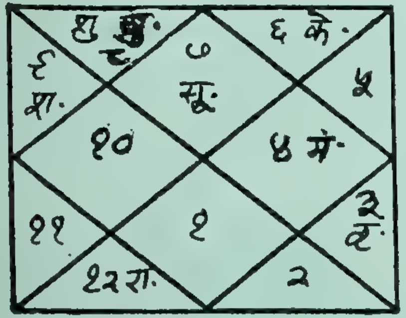
७०२

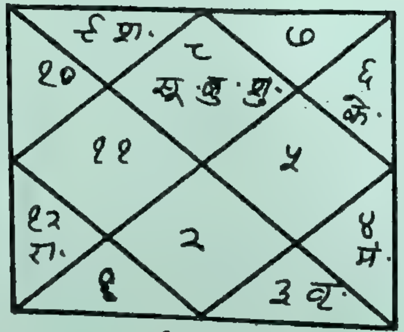
७०३

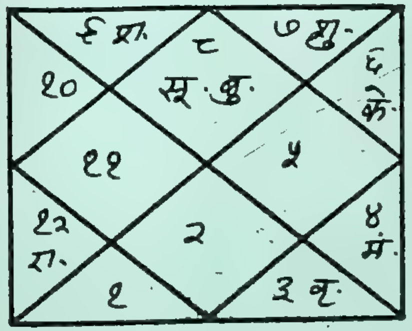
७०४

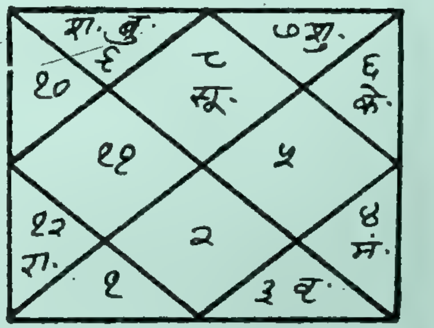
७०५

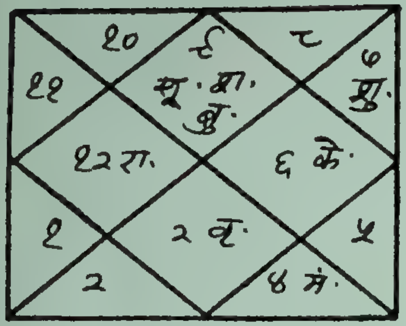

७०६

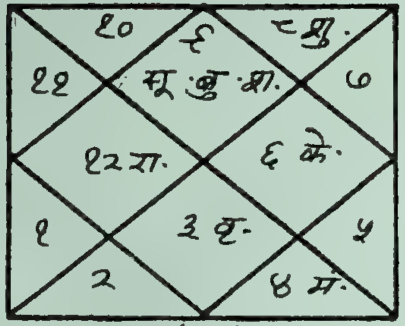

७०७

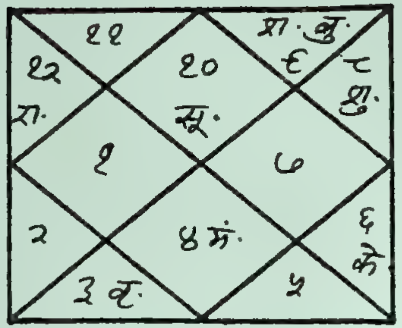

७०८

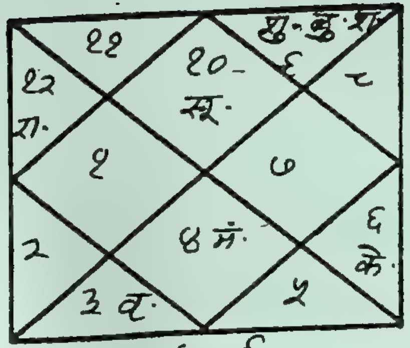

७०९

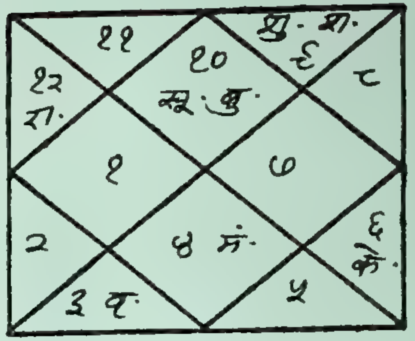

७१०

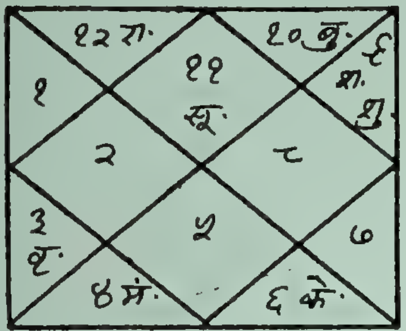

७११

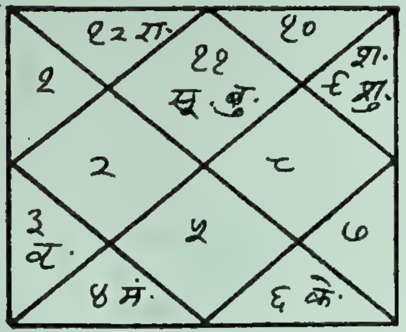

७१२

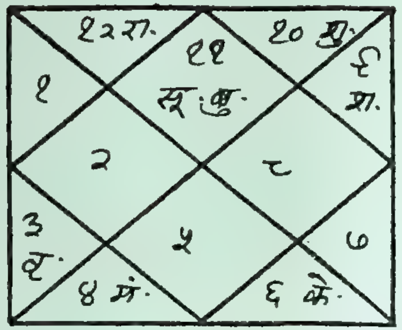

७१३

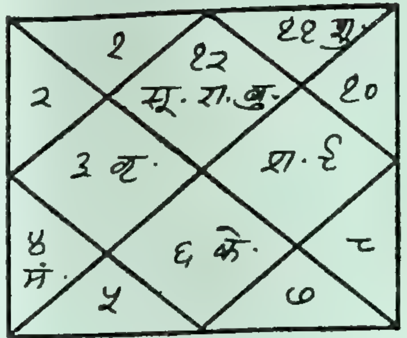

७१४

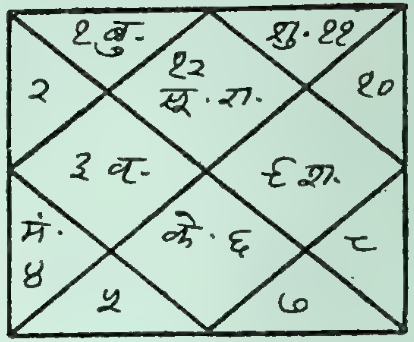

७१५

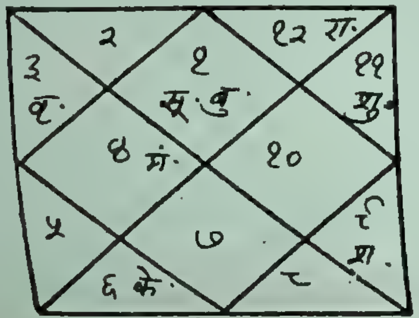

७१६

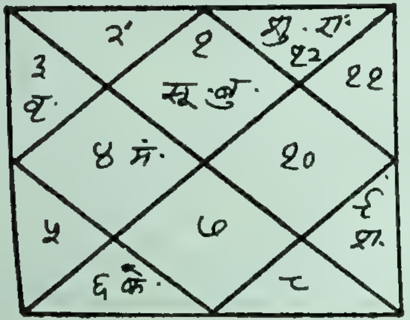

७१७

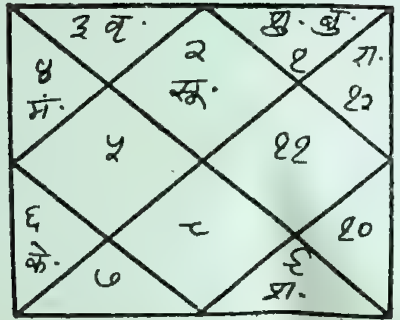

७१८

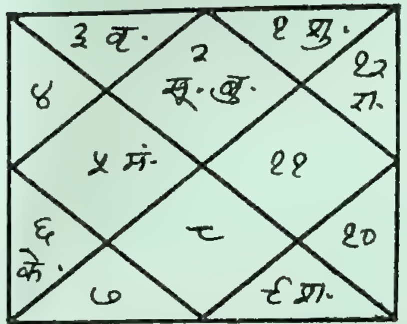

७१९

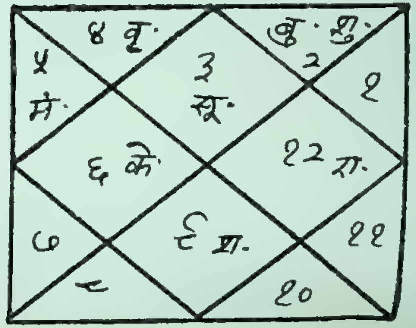

७२०

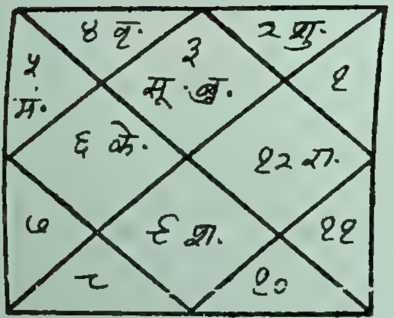

७२१

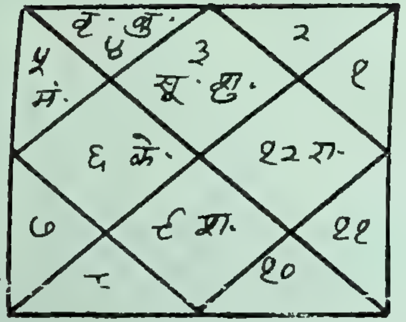

७२२

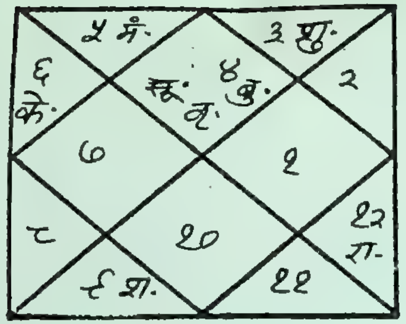

७२३

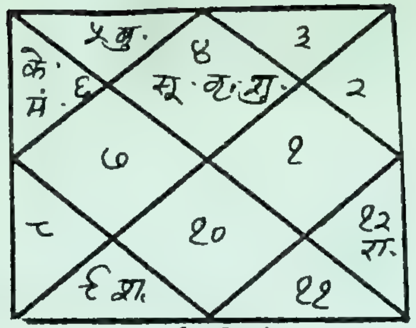

७२४

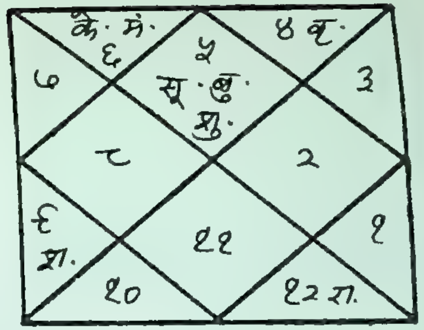

७२५

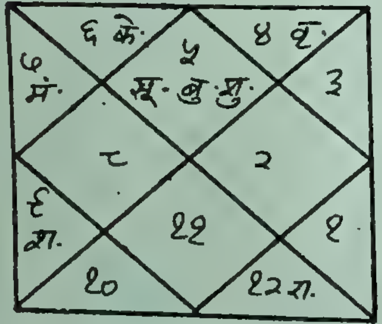

७२६

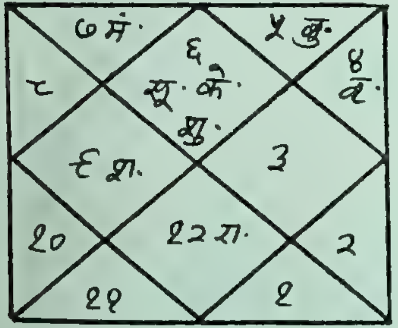

७२७

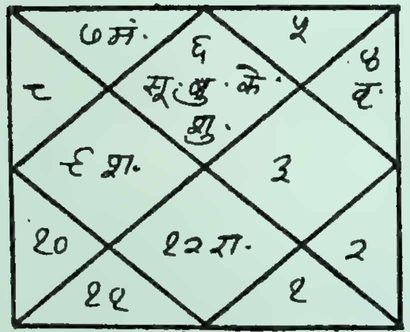

७२८

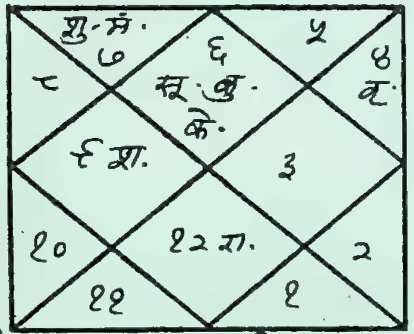

७२९

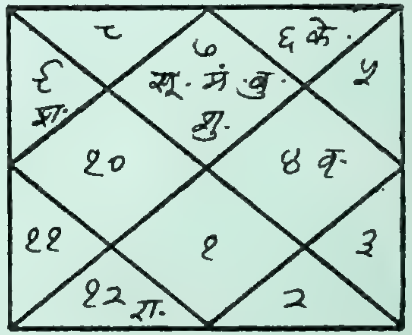

७३०

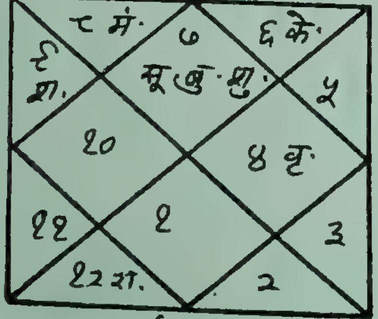

७३१

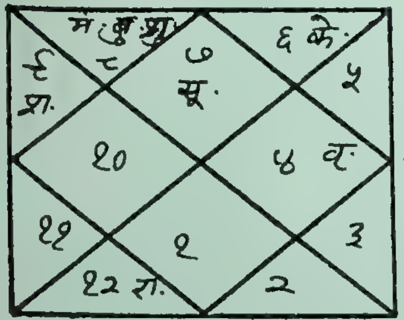

७३२

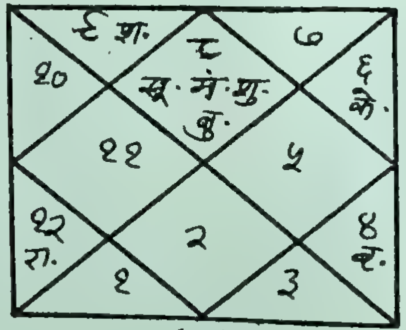

७३३

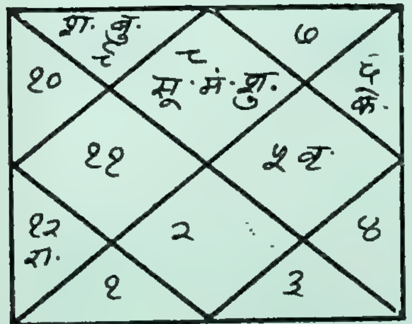

७३४

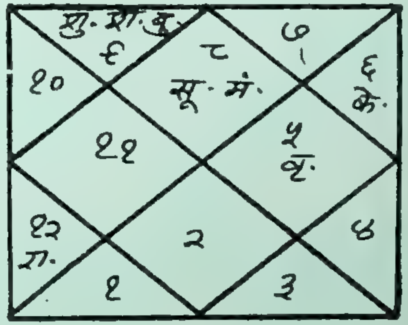

७३५

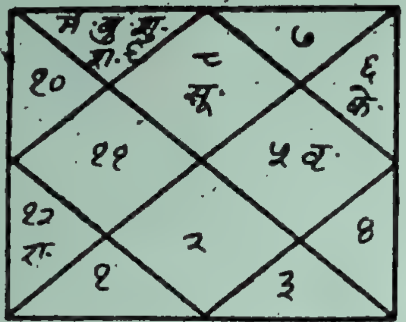
७३६

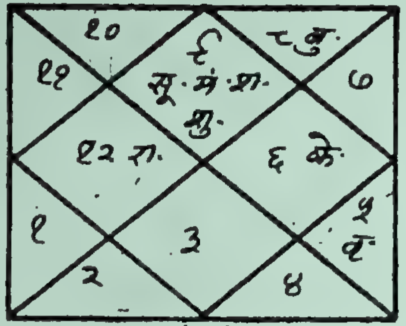
७३७

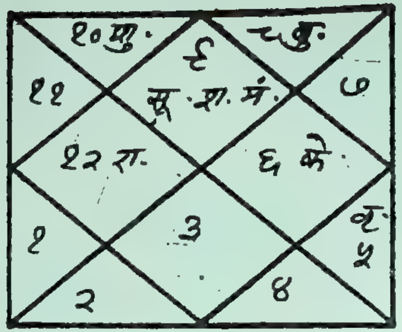
७३८

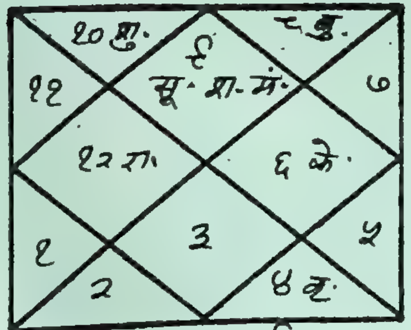
७३९

७४०

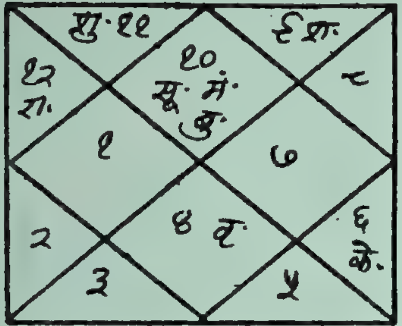
७४१

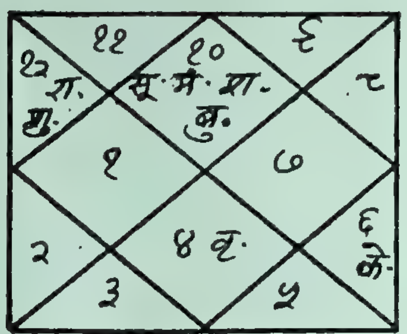
७४२

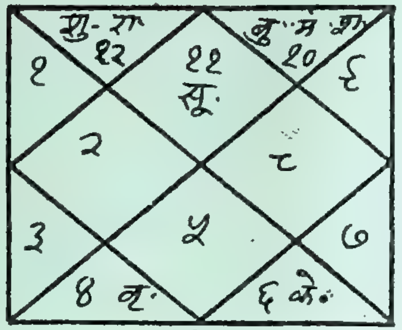
७४३

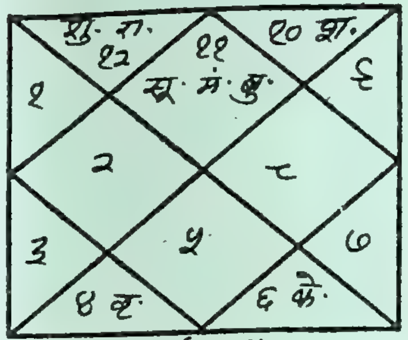
७४४

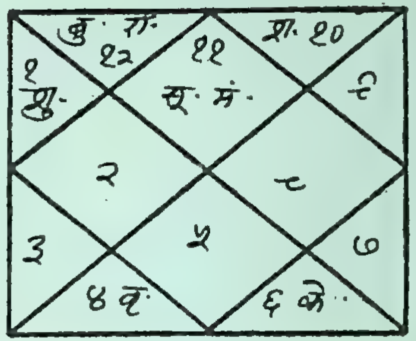
७४५

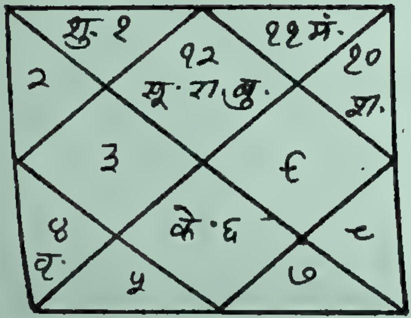
७४६

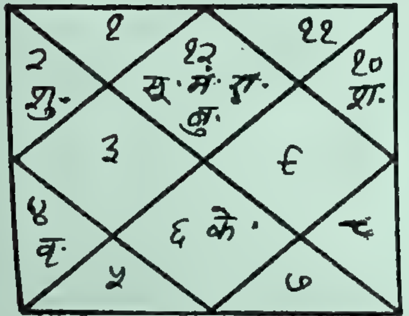
७४७

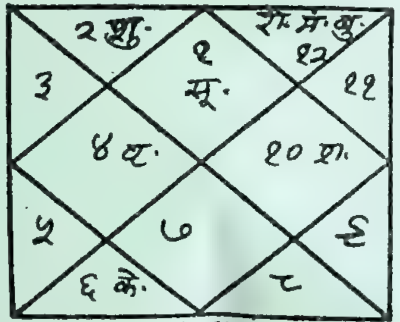
७४८

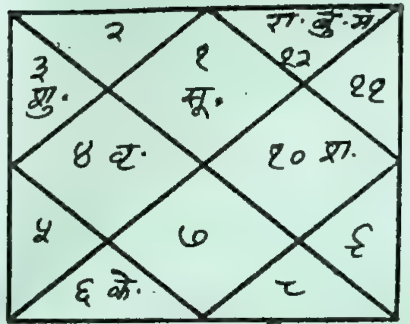
७४९

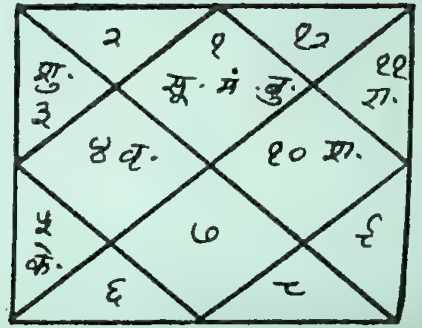
७५०

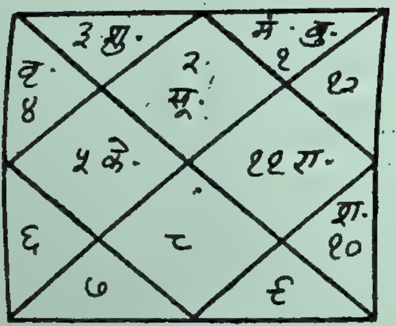

७५१

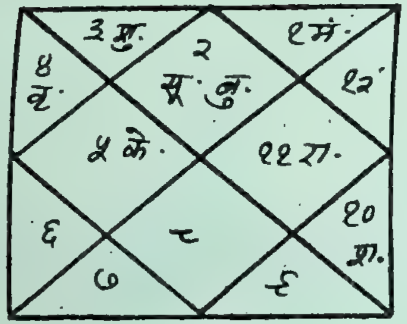

७५२

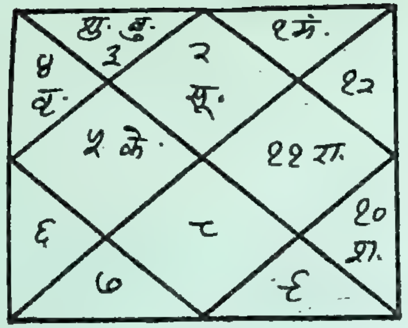

७५३

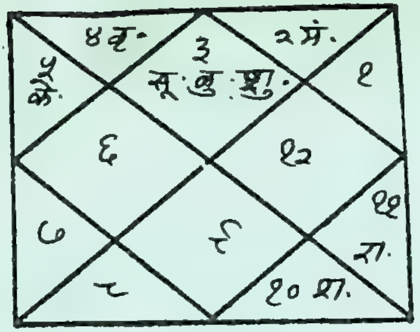

७५४

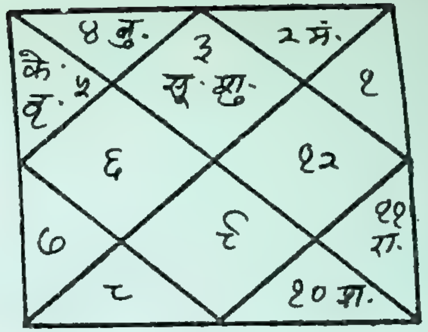

७५५

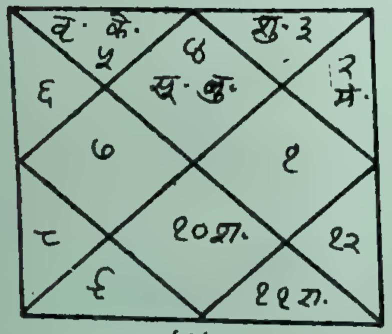

७५६

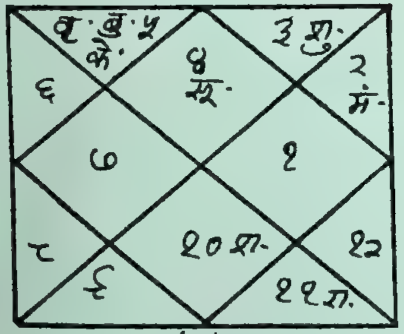

७५७

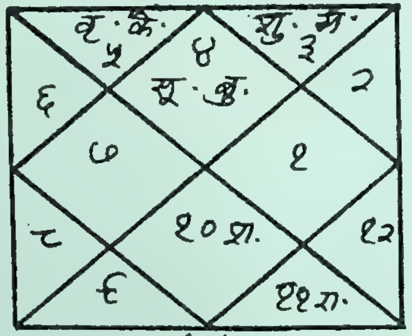

७५८

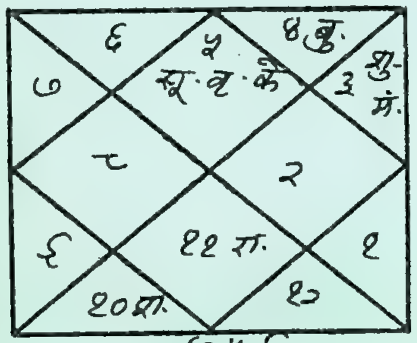

७५९

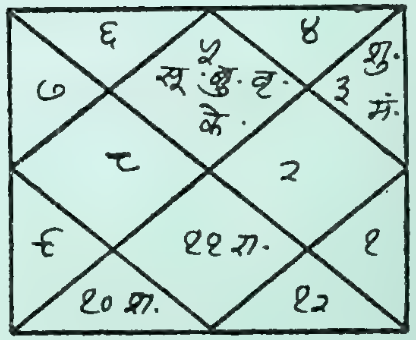

७६०

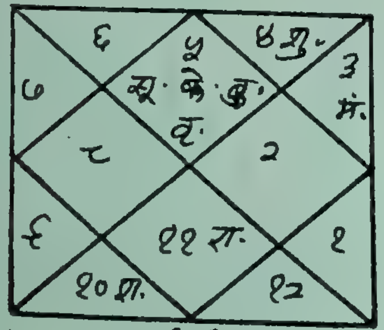

७६१

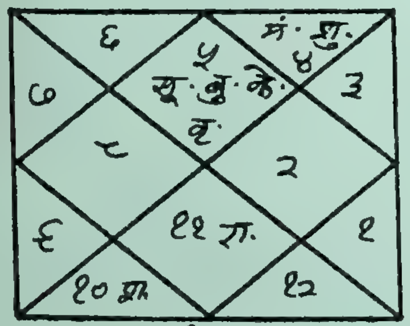

७६२

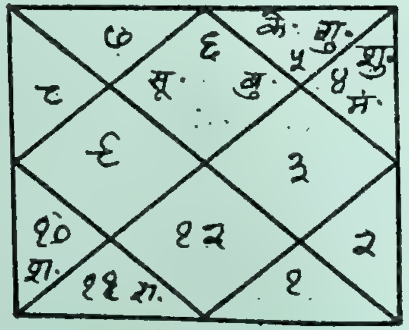

७६३

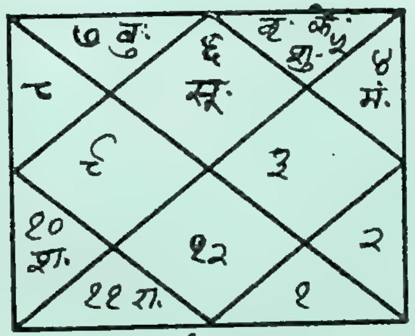

७६४

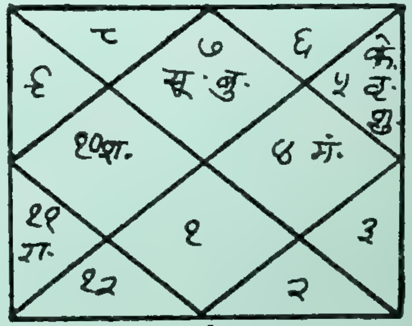

७६५

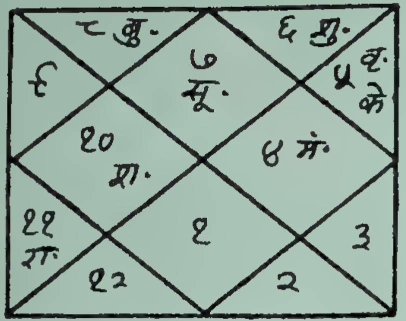
७६६

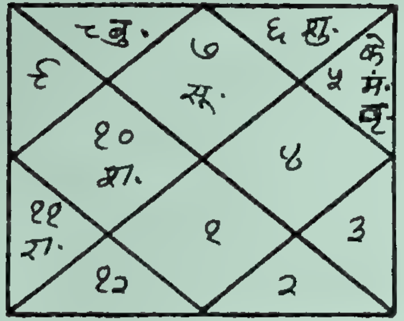
७६७

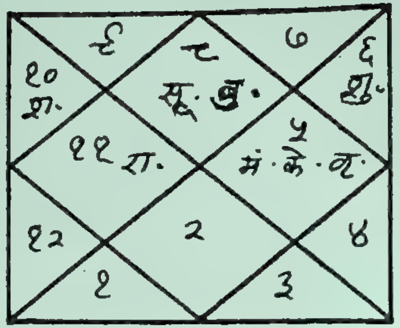
७६८

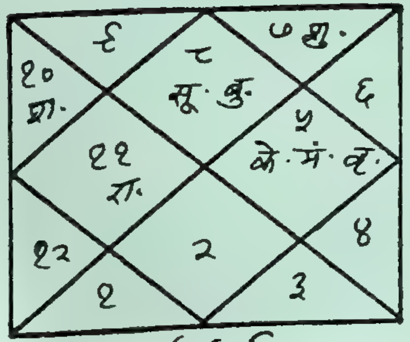
७६९

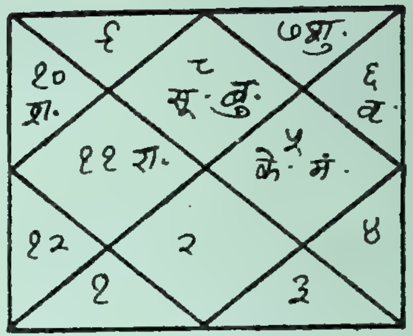
७७०

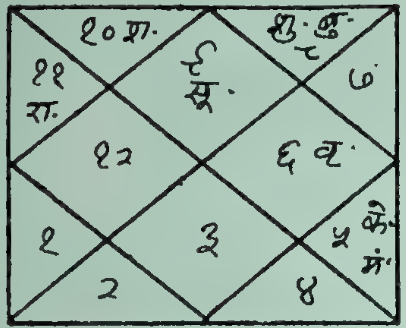
७७१

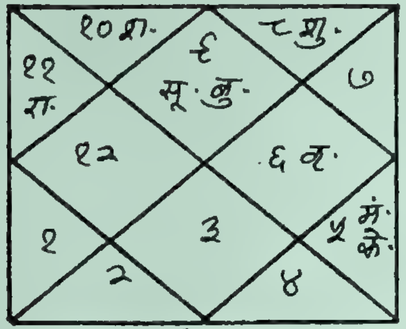
७७२

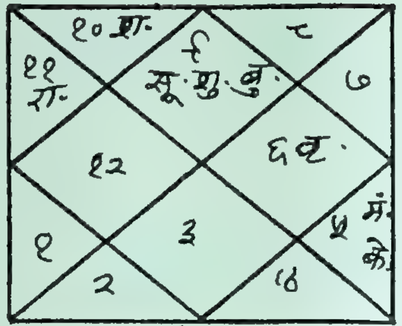
७७३

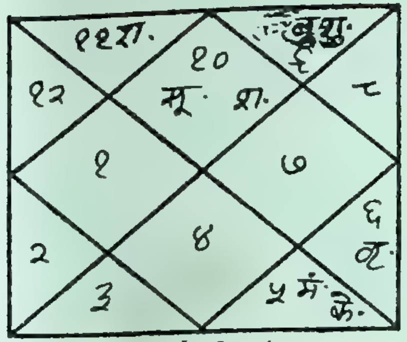
७७४

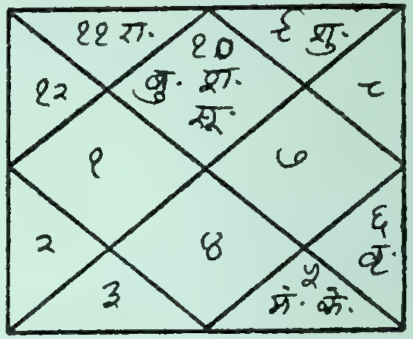
७७५

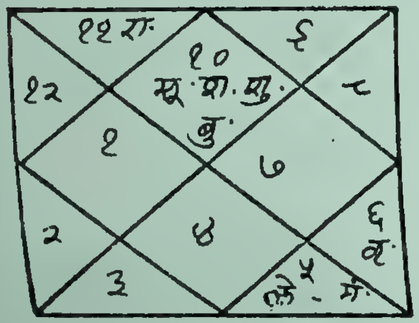
७७६

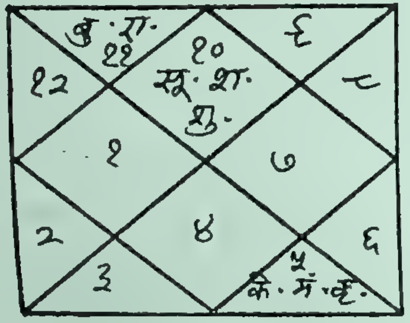
७७७

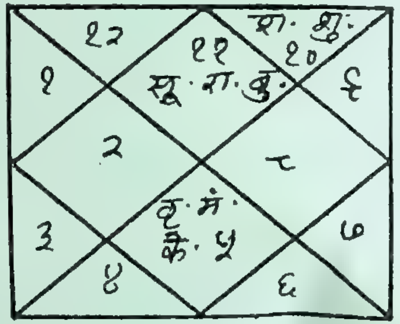
७७८

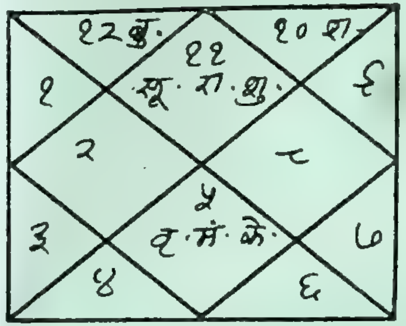
७७९

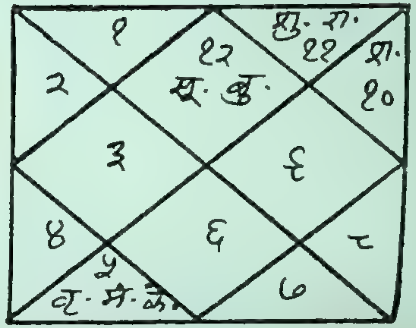
७८०

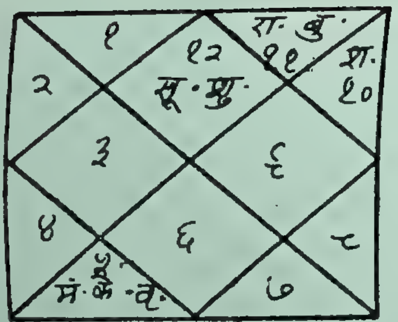

७८१

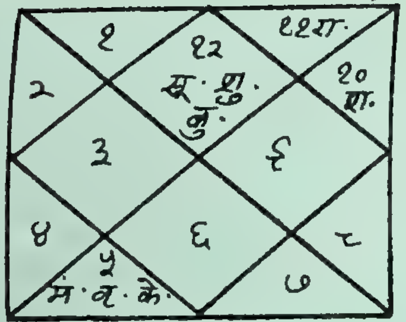

७८२

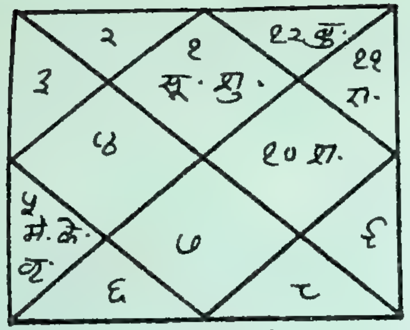

७८३

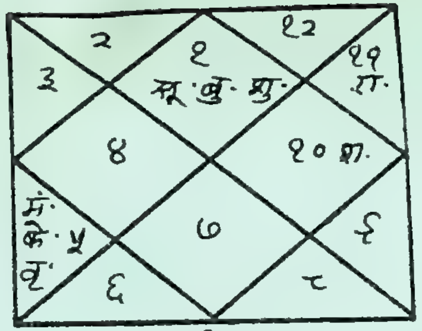

७८४

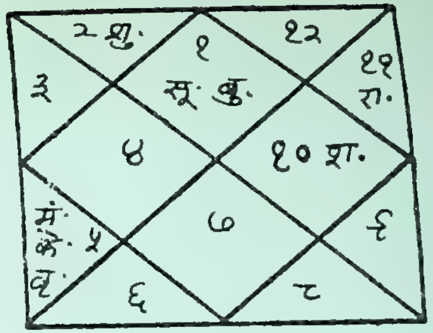

७८५

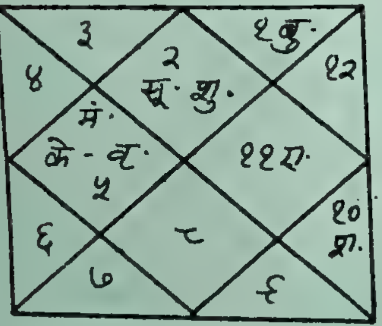

७८६

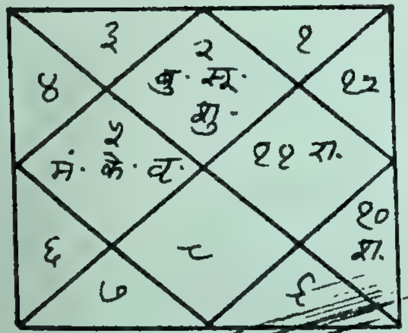

७८७

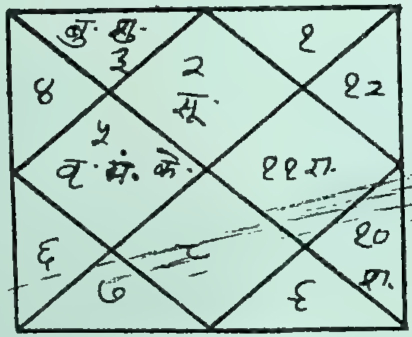

७८८

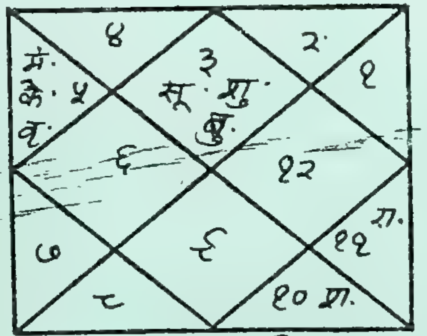

७८९

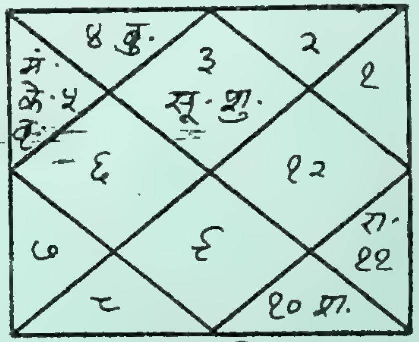

७९०

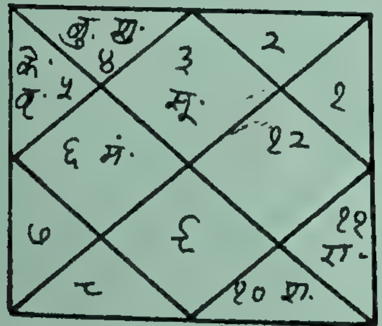

७९१

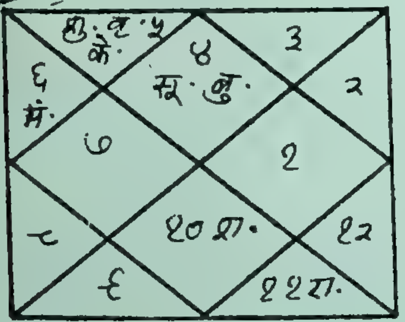

७९२

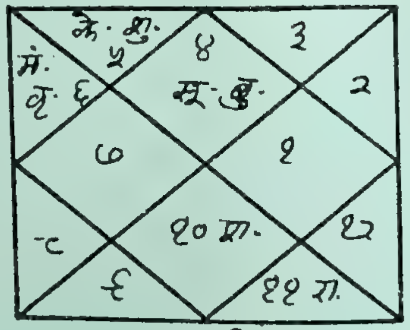

७९३

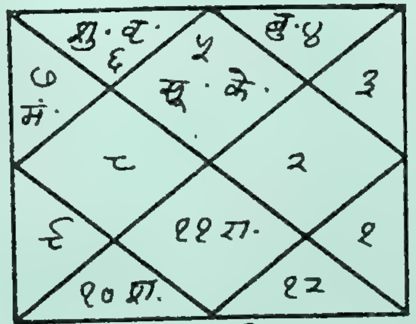

७९४

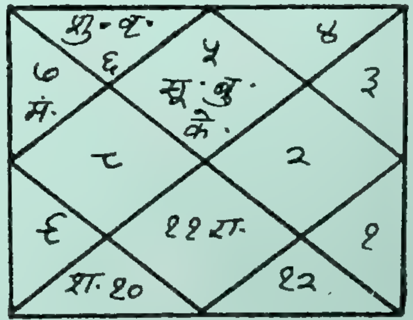

७९५

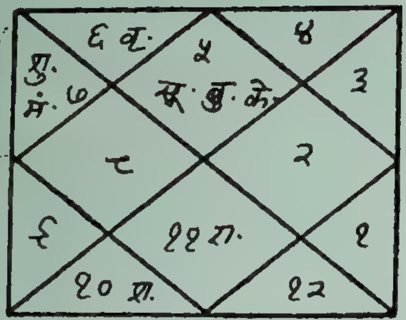

७९६

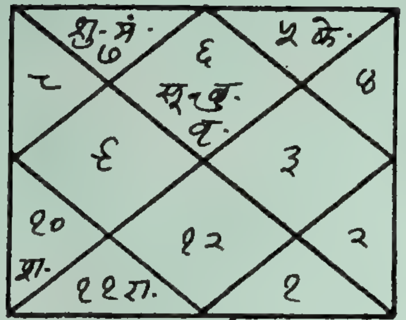

७९७

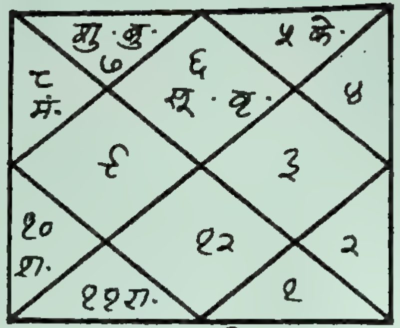

७९८

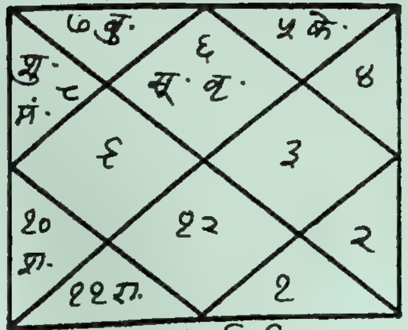

७९९

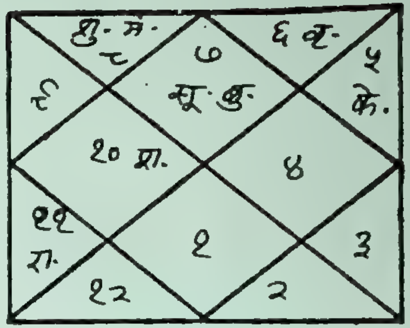

८००

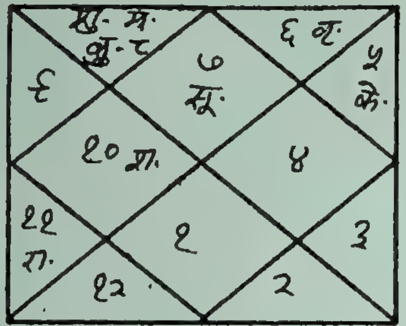

८०१

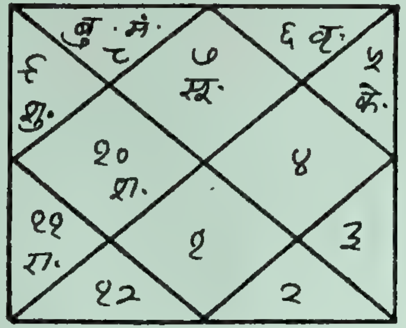

८०२

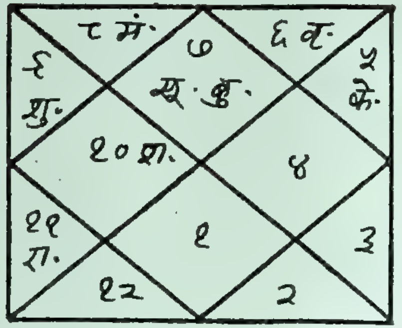

८०३

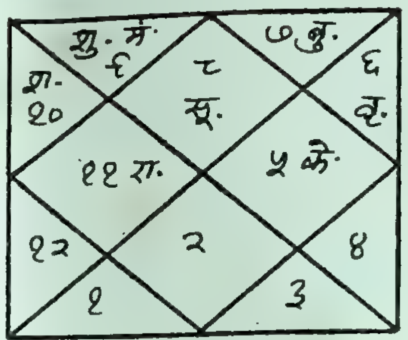

८०४

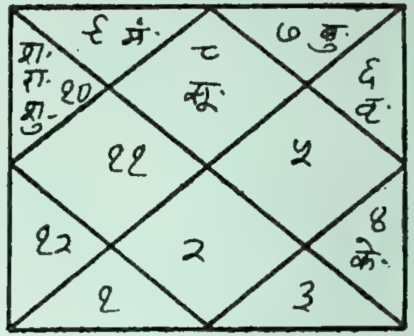

८०५

८०६

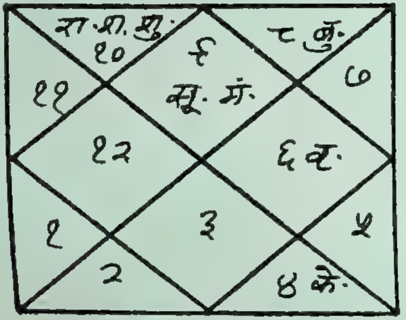

८०७

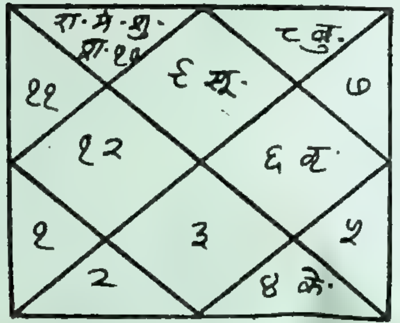

८०८

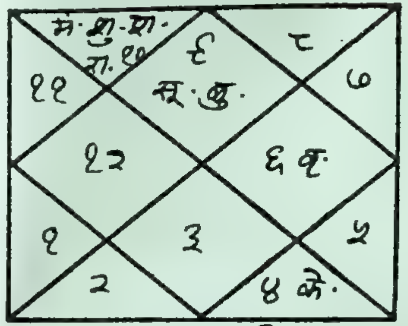

८०९

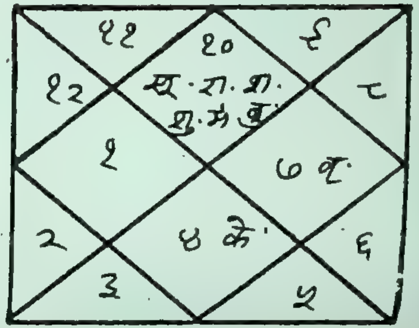

८१०

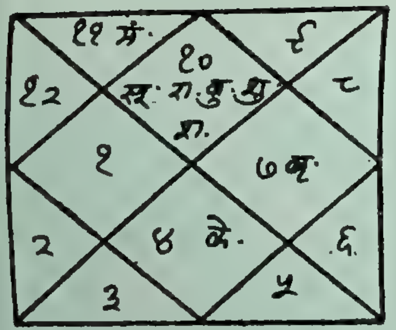

८११

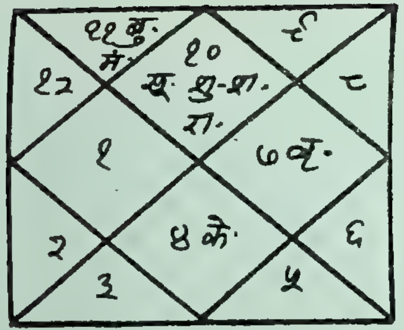

८१२

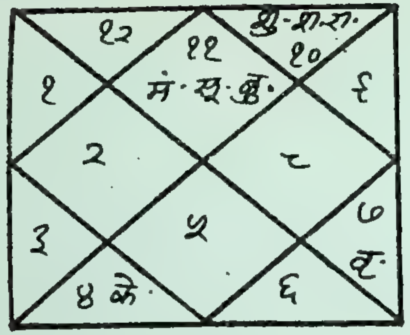

८१३

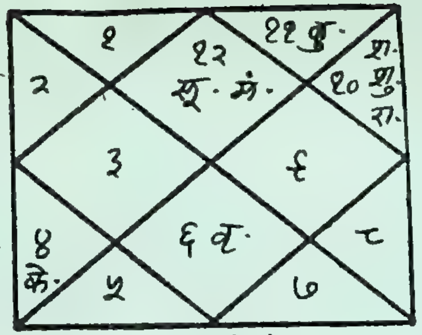

८१४

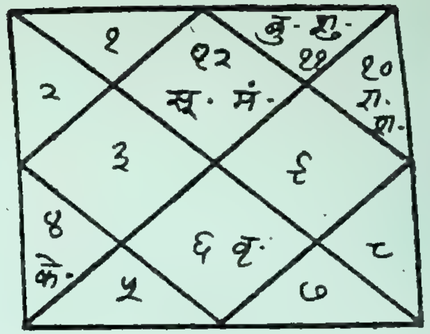

८१५

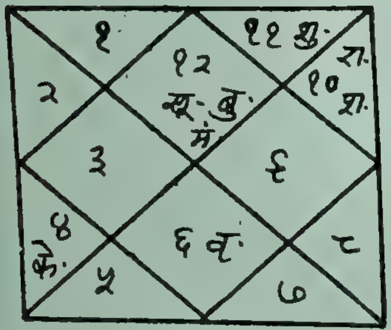

८१६

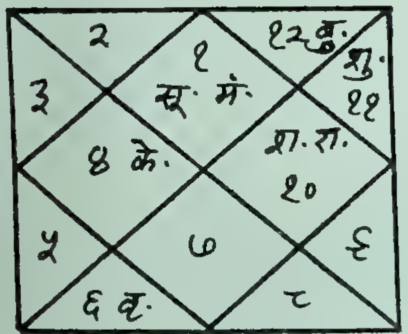

८१७

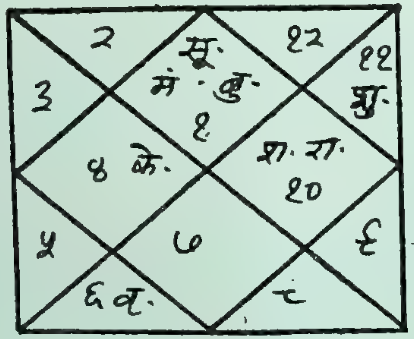

८१८

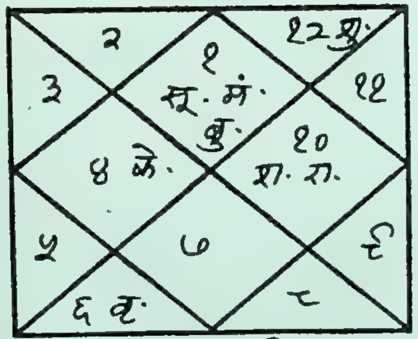

८१९

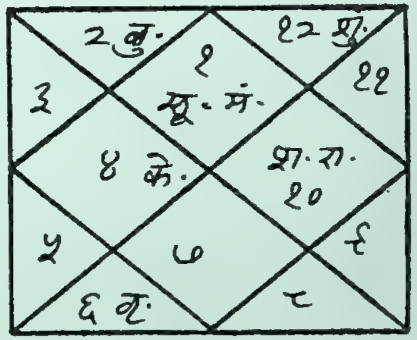

८२०

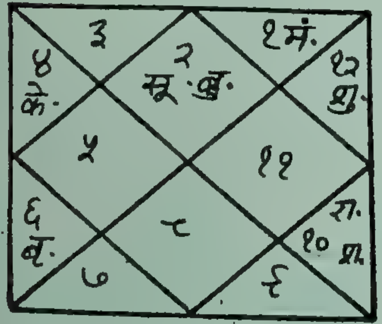

८२१

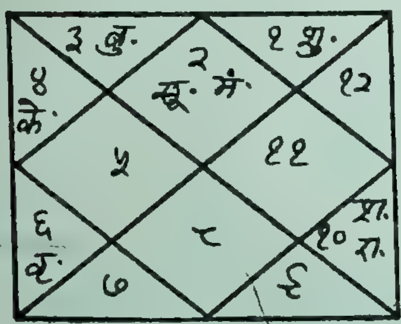

८२२

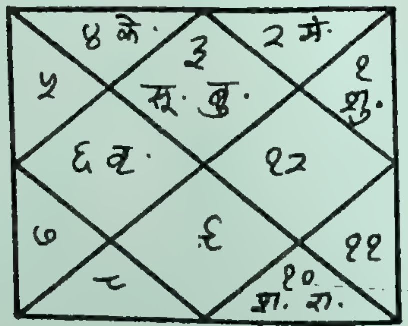

८२३

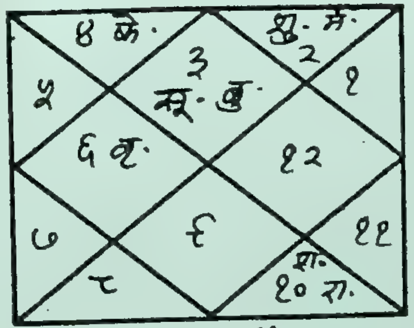

८२४

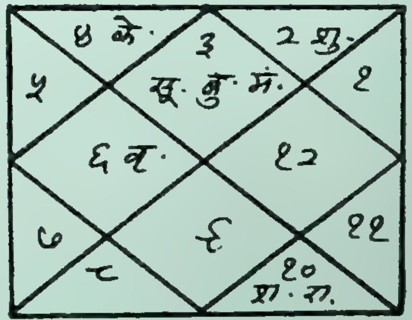

८२५

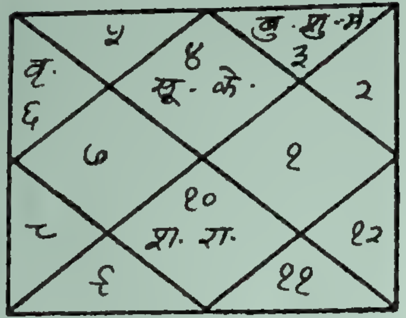
८२६

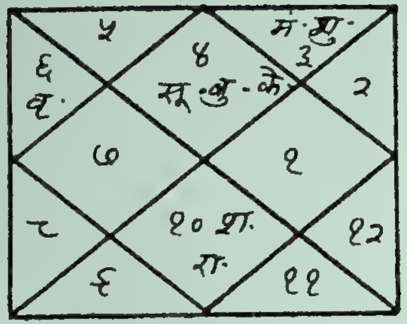
८२७

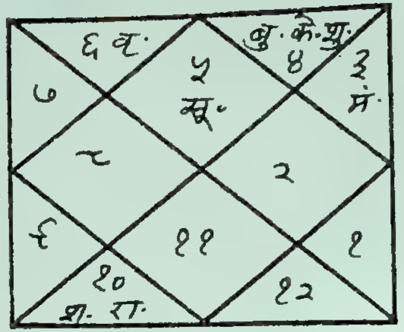
८२८

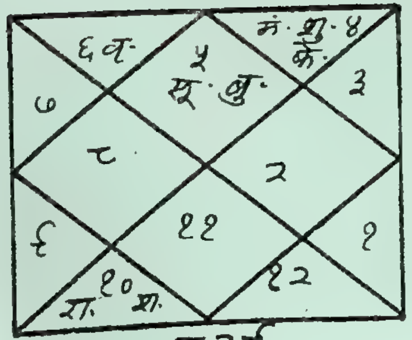
८२९

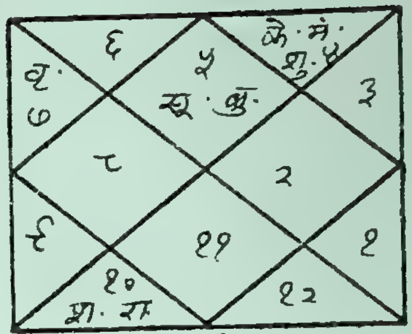
८३०

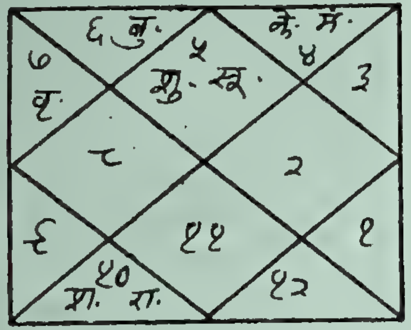
८३१

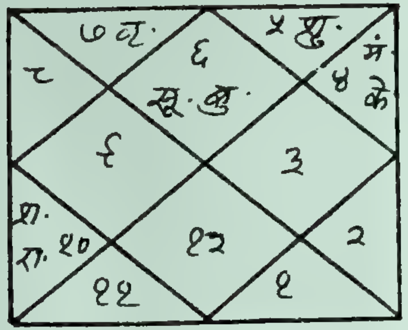
८३२

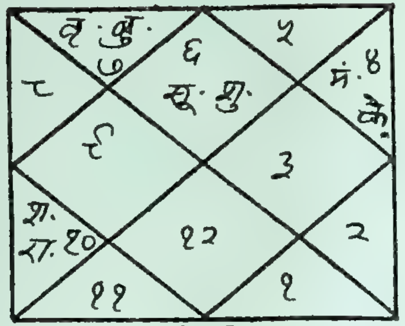
८३३

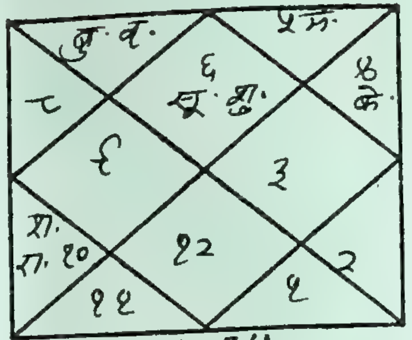
८३४

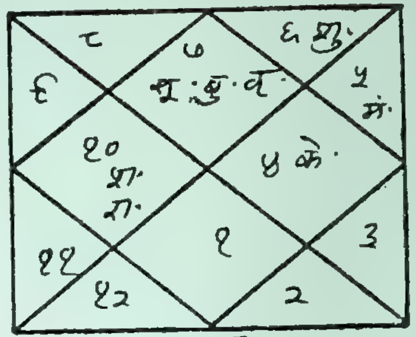
८३५

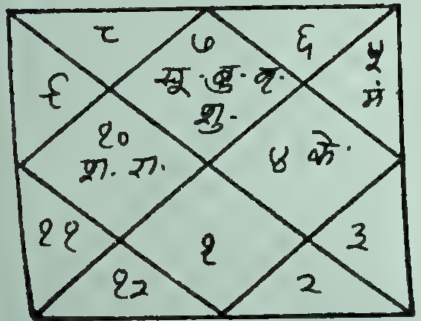
८३६

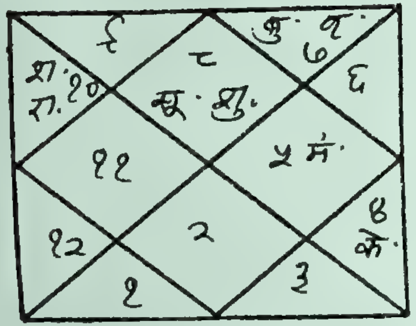
८३७

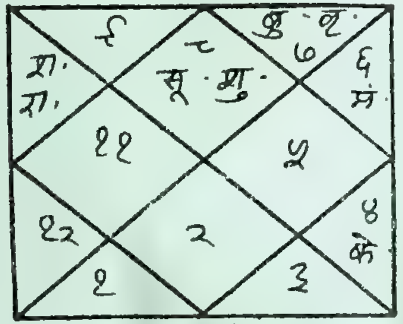
८३८

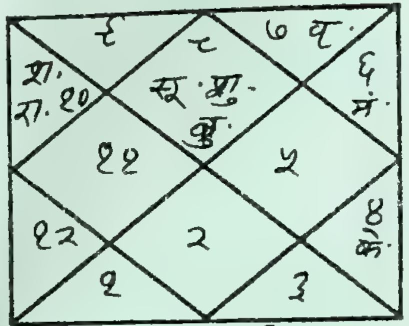
८३९

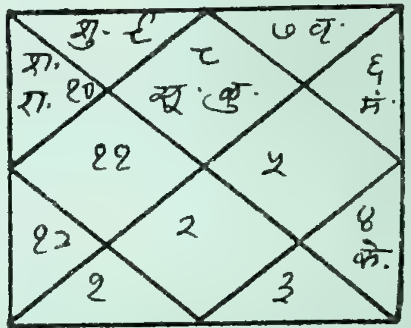
८४०

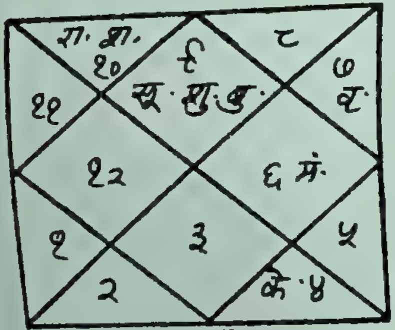
८४१

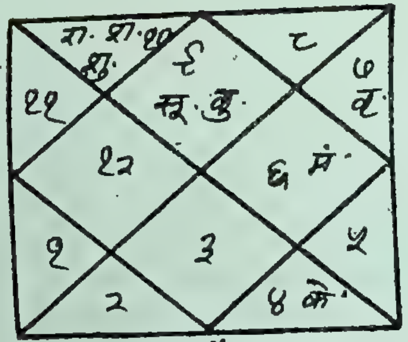
८४२

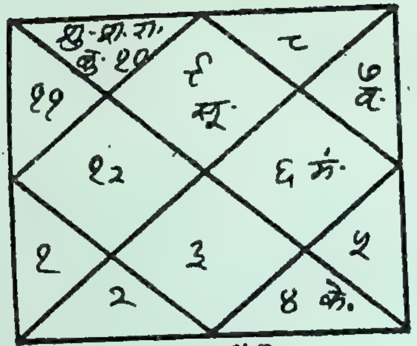
८४३

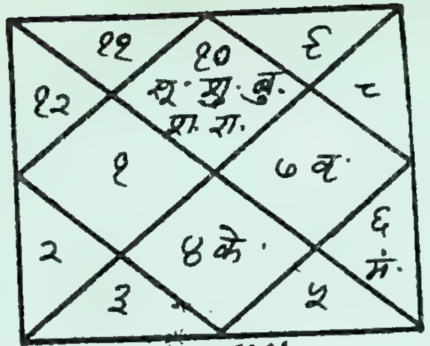
८४४

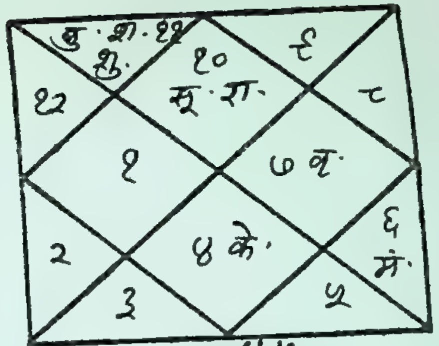
८४५

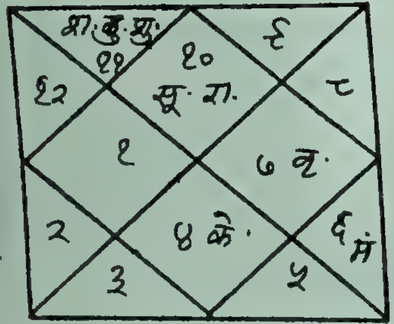
८४६

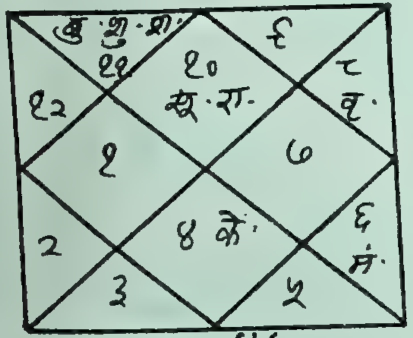
८४७

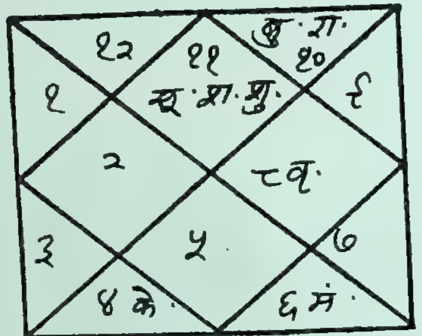
८४८

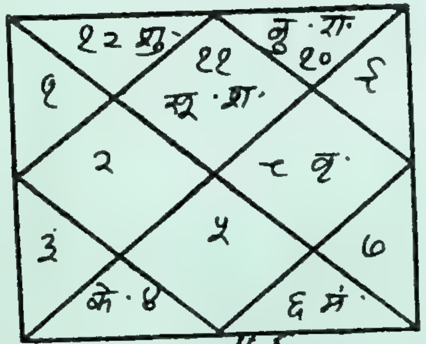
८४९

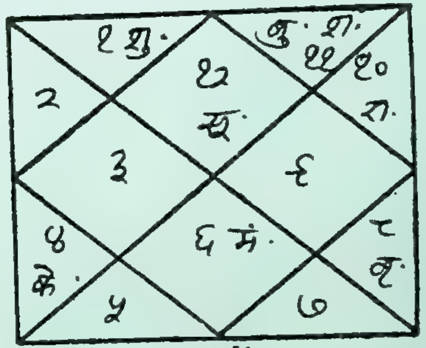
८५०

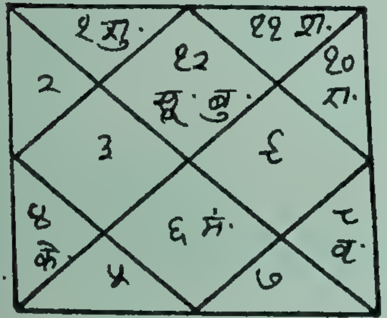
८५१

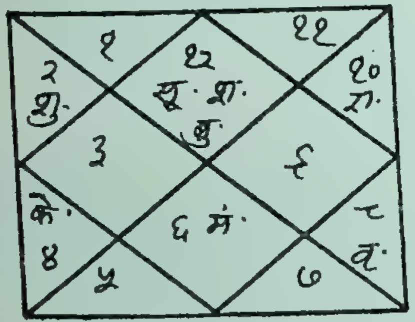
८५२

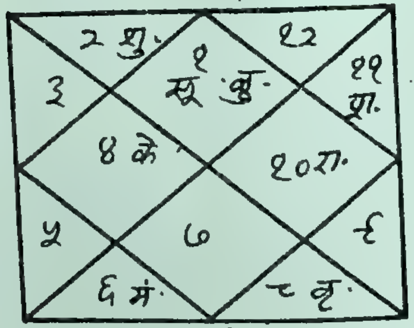
८५३

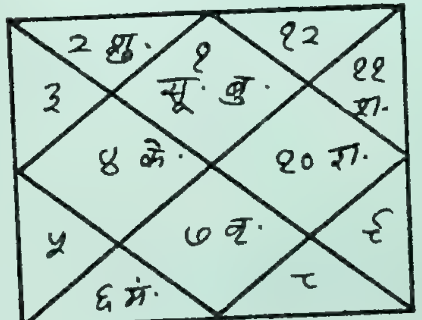
८५४

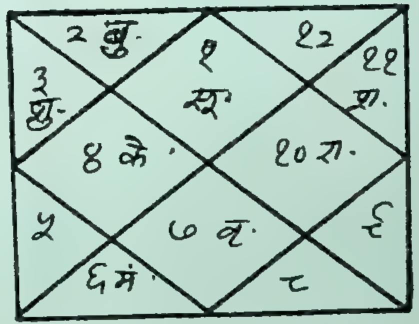
८५५

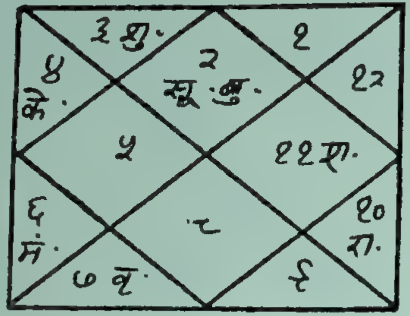
८५६

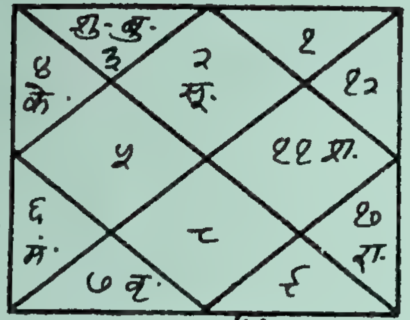
८५७

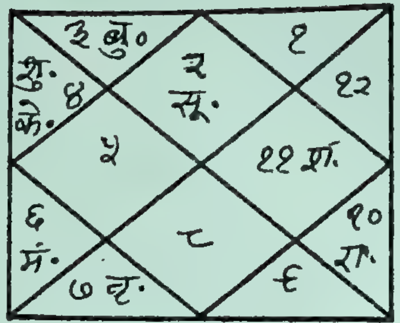
८५८

८५९

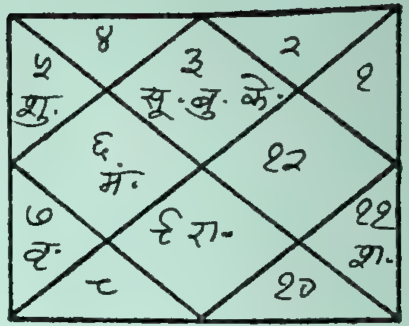
८६०

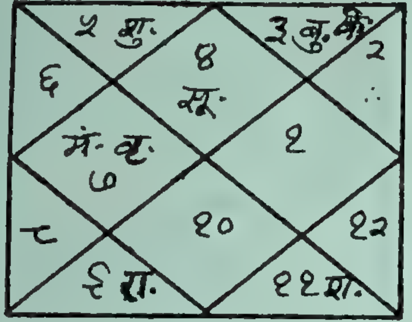
८६१

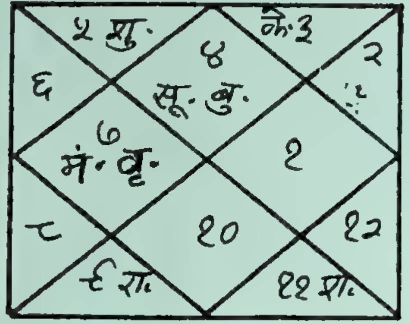
८६२

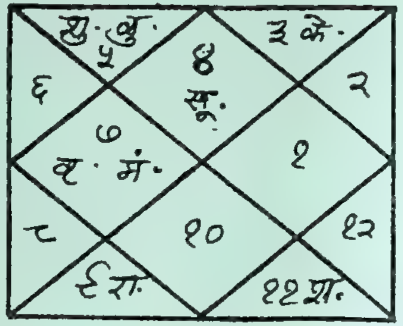
८६३

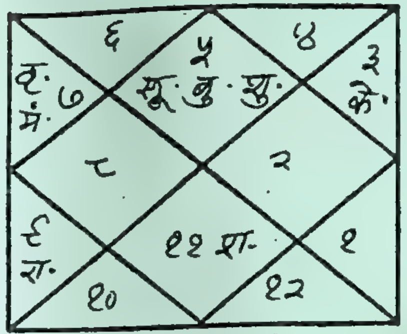
८६४

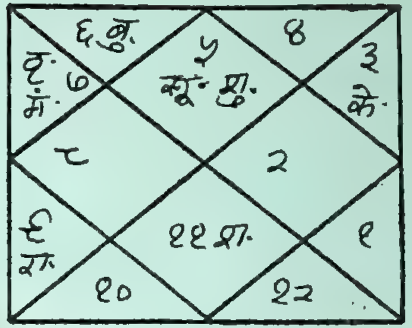
८६५

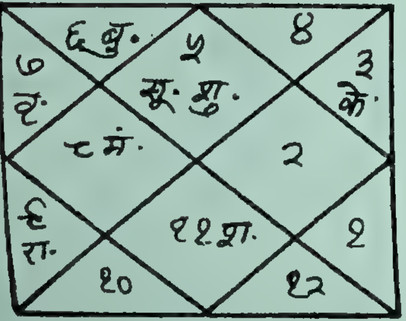
८६६

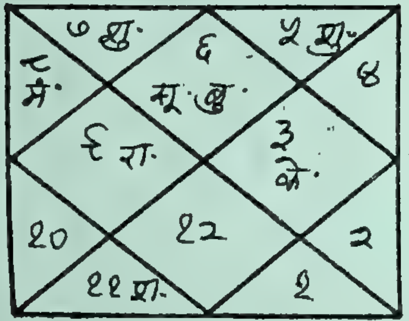
८६७

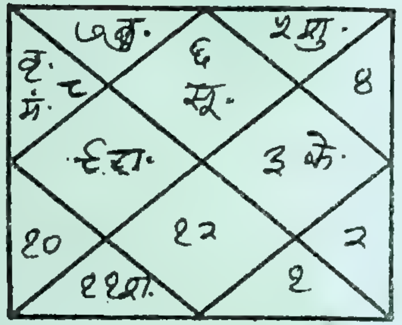
८६८

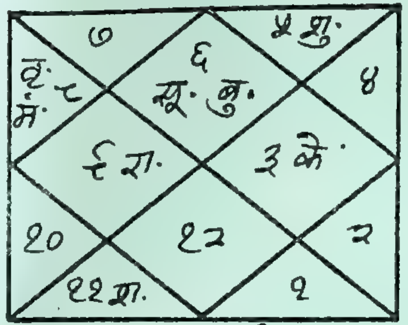
८६९

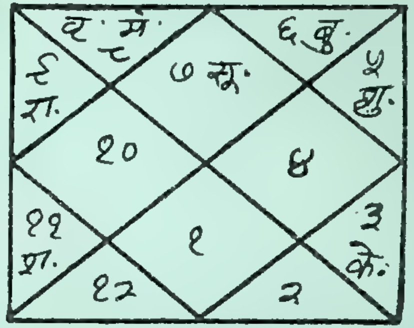
८७०

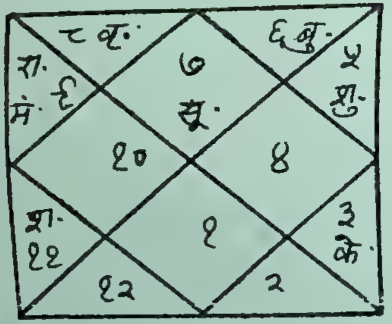

८७१

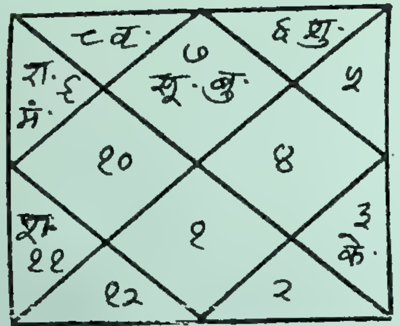

८७२

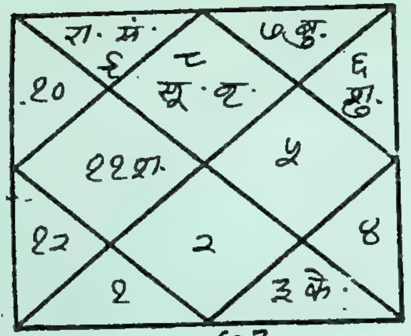

८७३

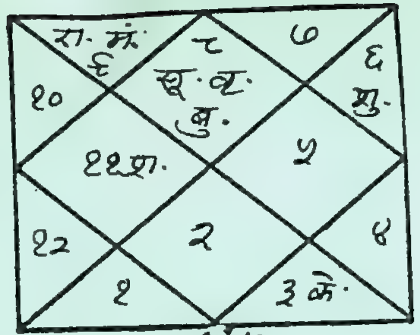

८७४

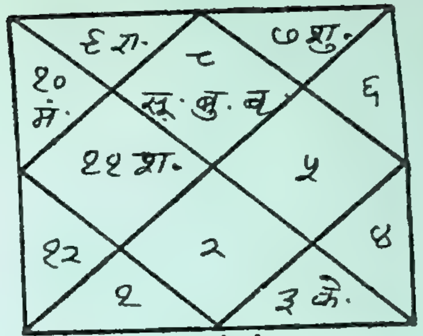

८७५

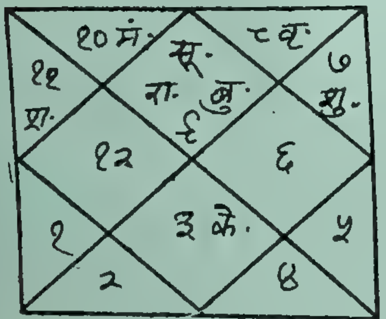

८७६

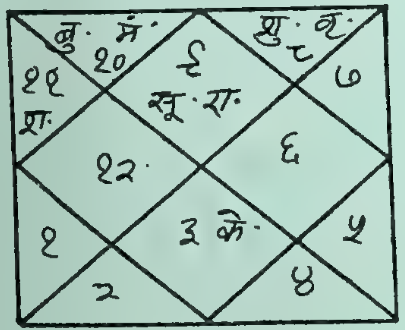

८७७

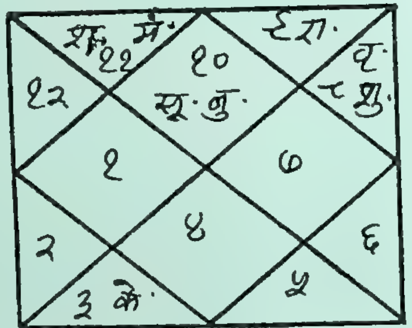

८७८

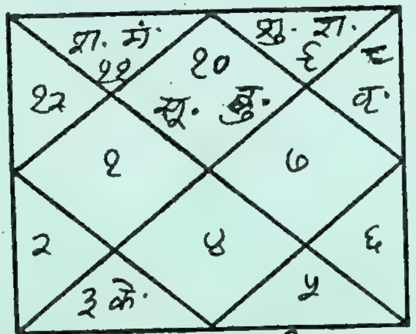

८७९

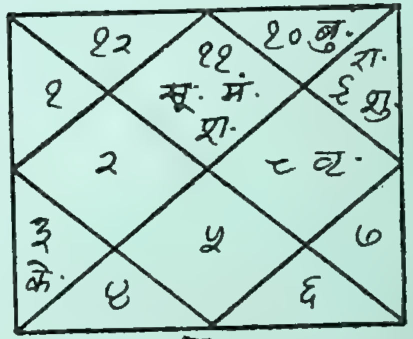

८८०

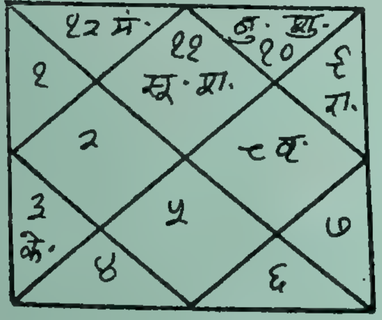

८८१

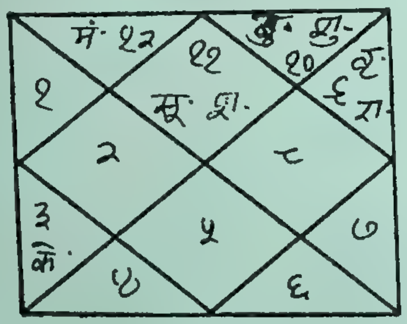

८८२

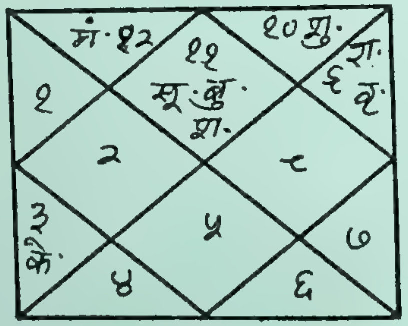

८८३

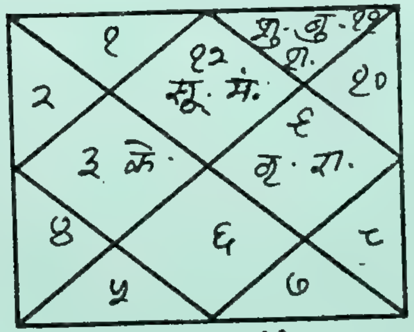

८८४

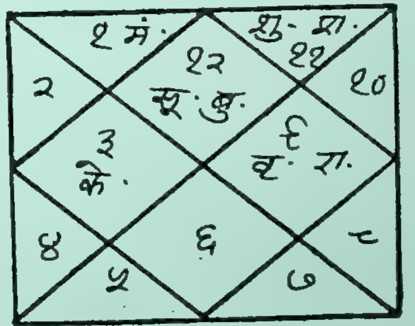

८८५

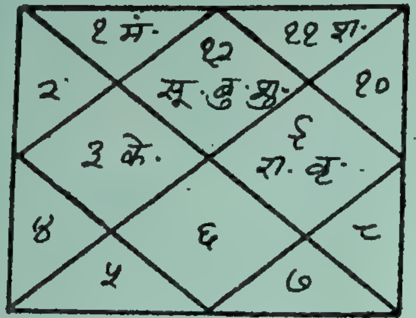

८८६

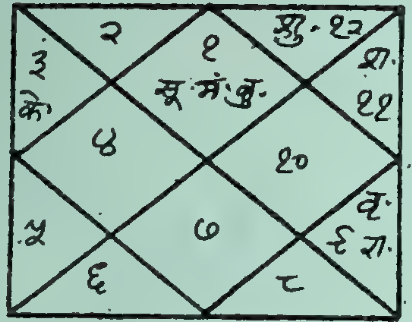

८८७

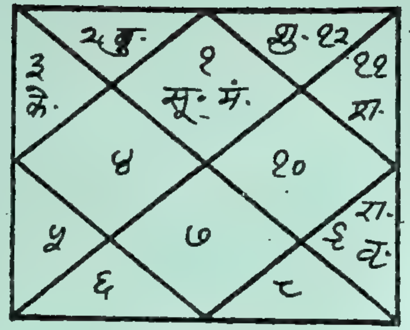

८८८

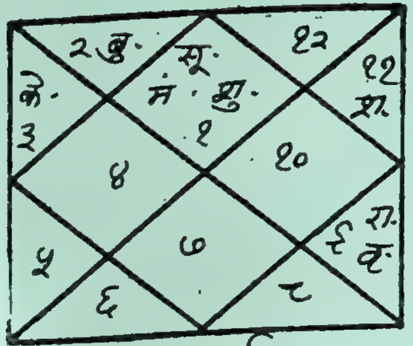

८८९

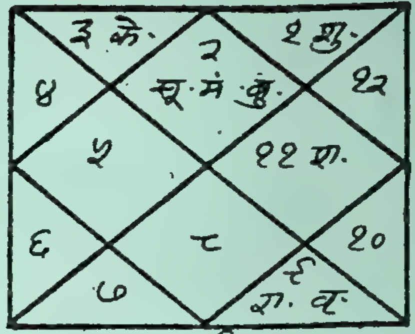

८९०

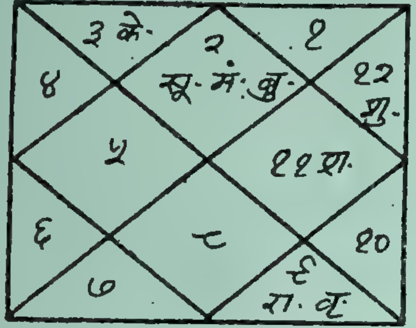

८९१

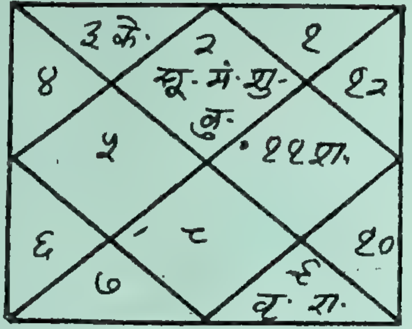

८९२

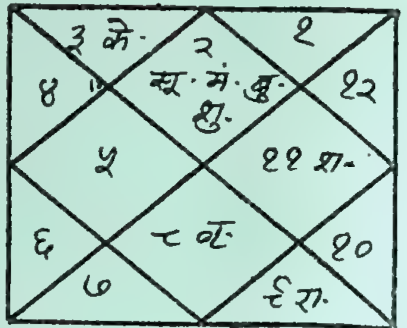

८९३

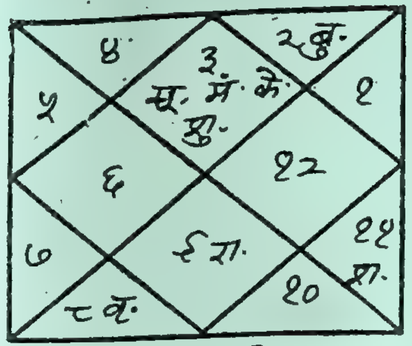

८९४

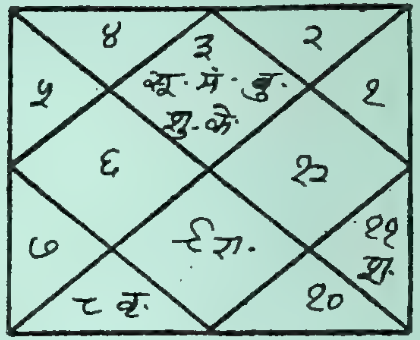

८९५

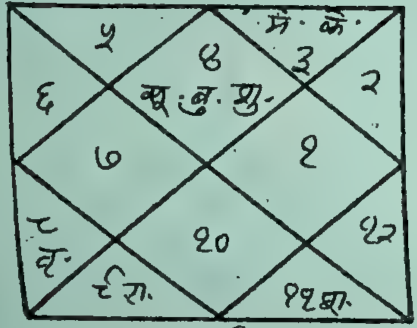

८९६

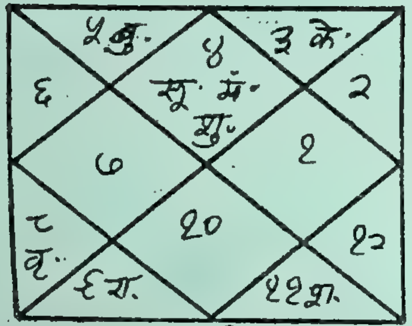

८९७

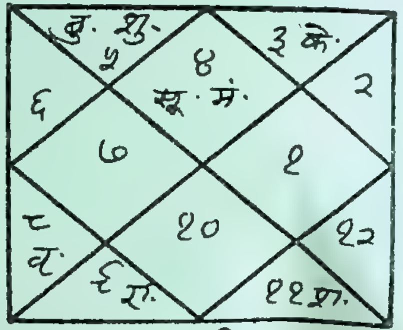

८९८

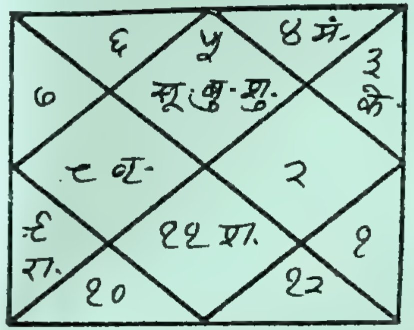

८९९

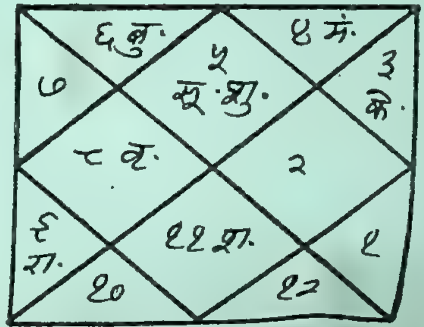

९००

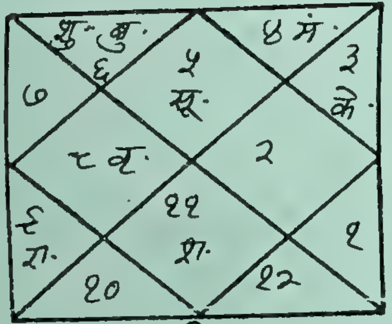

९०१

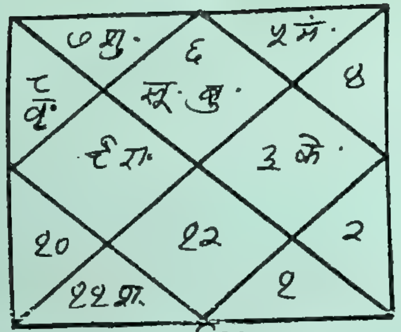

९०२

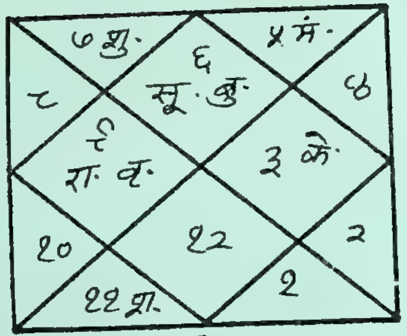

९०३

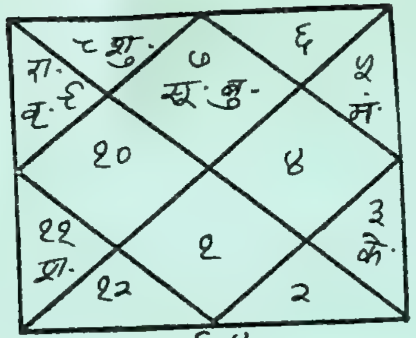

९०४

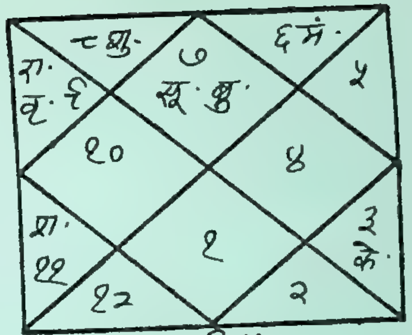

९०५

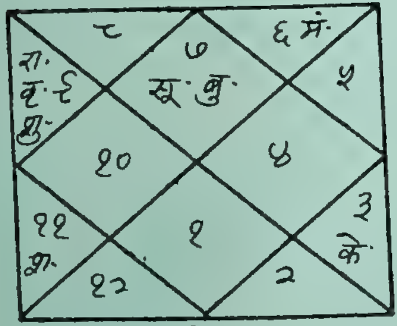

९०६

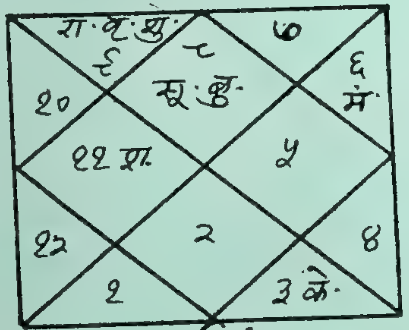

९०७

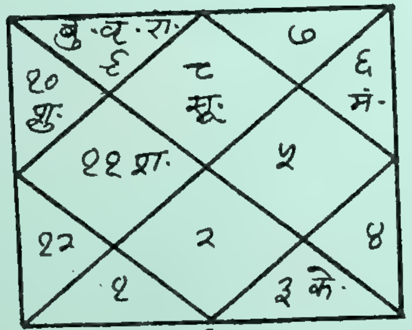

९०८

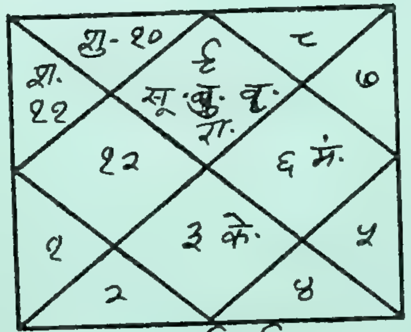

९०९

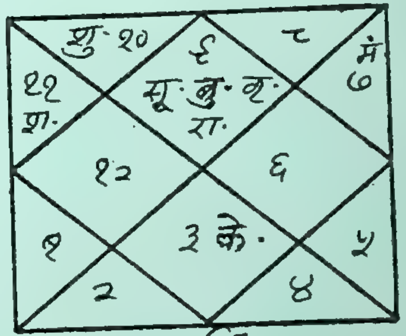

९१०

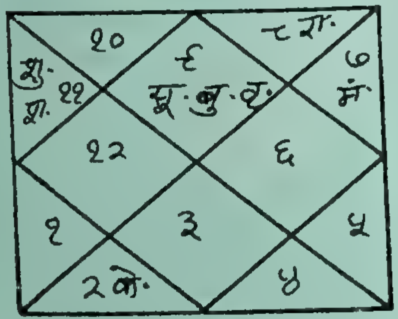

९११

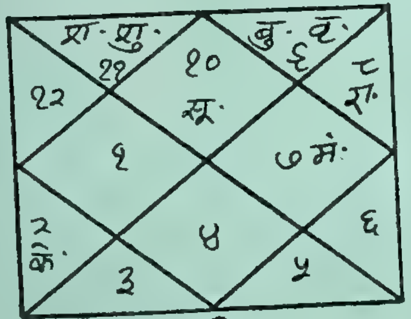

९१२

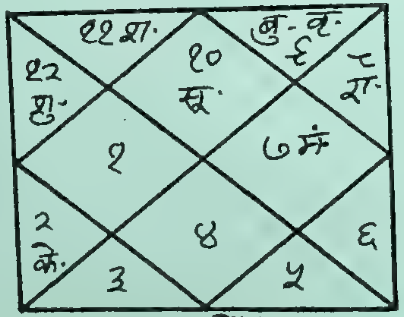

९१३

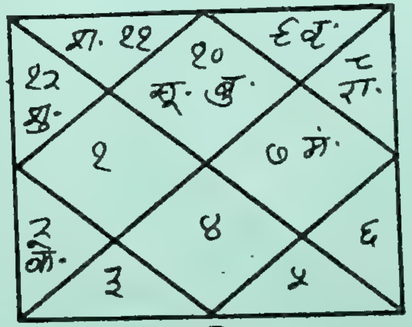

९१४

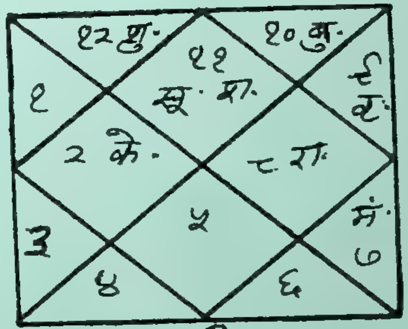

९१५

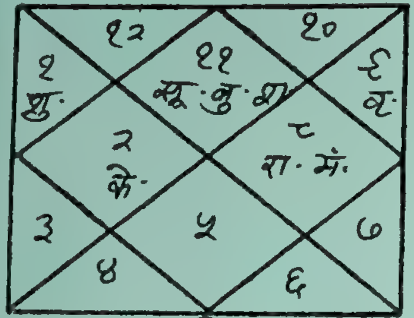

९१६

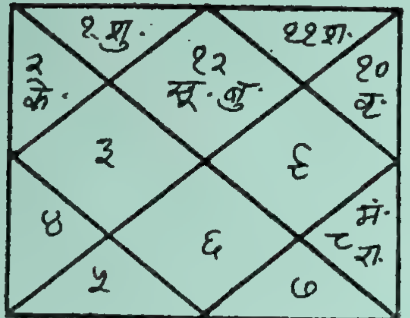

९१७

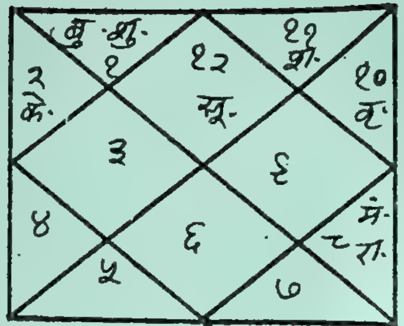

९१८

९१९

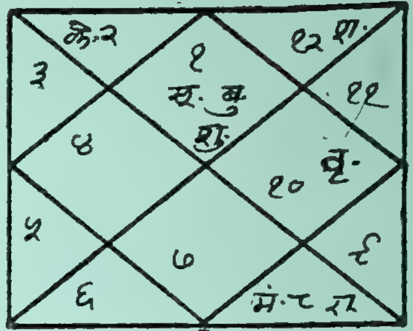

९२०

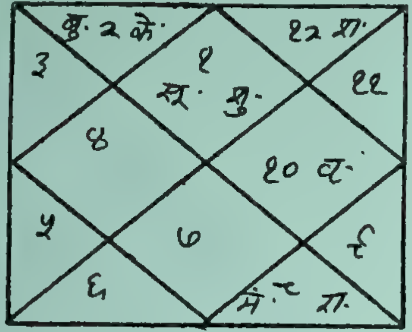

९२१

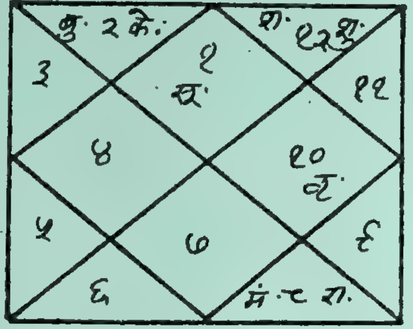

९२२

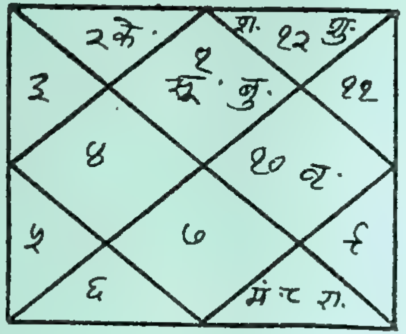

९२३

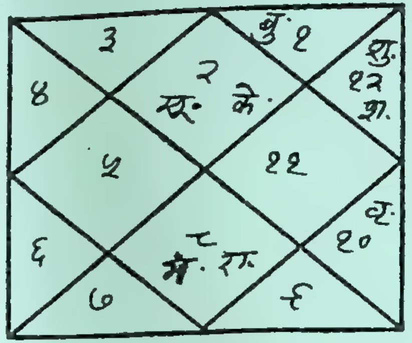

९२४

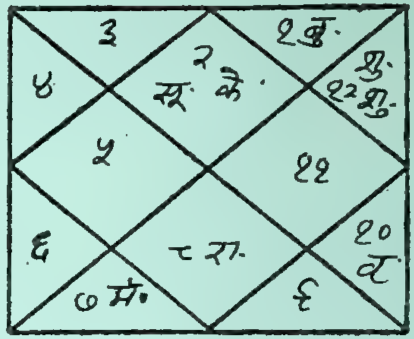

९२५

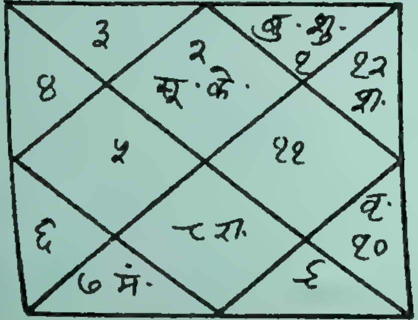

९२६

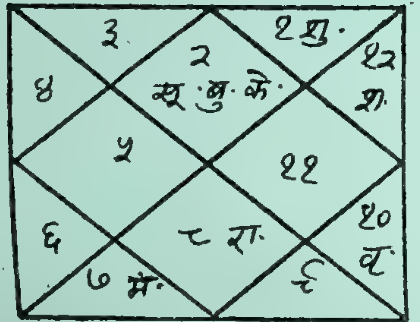

९२७

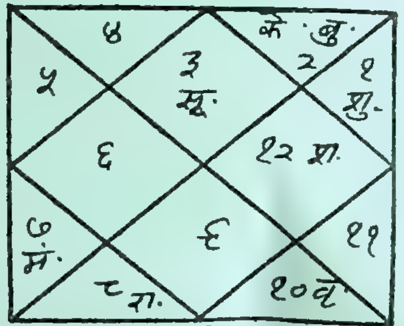

९२८

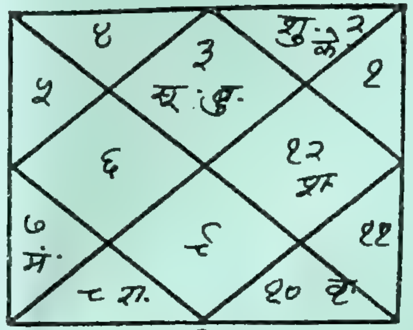

९२९

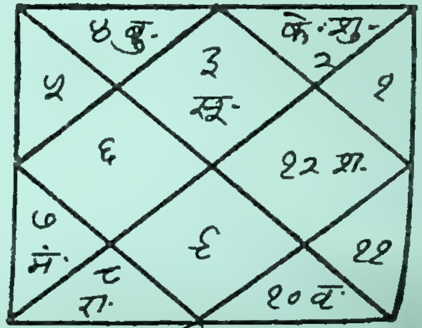

९३०

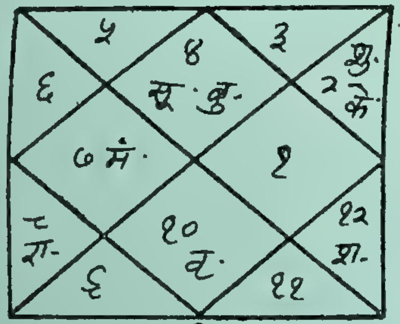

६३१

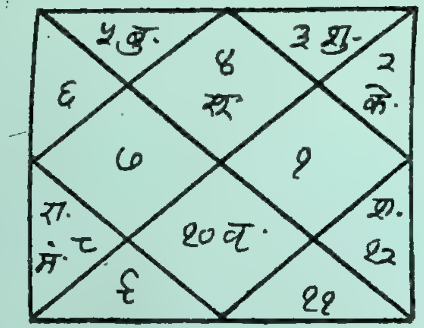

६३२

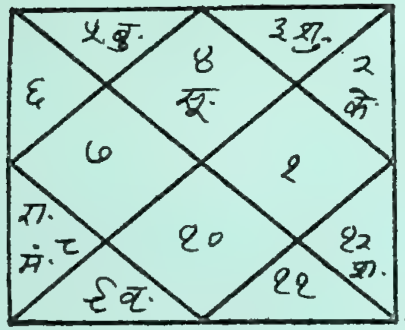

६३३

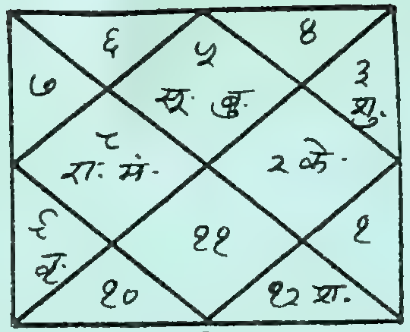

६३४

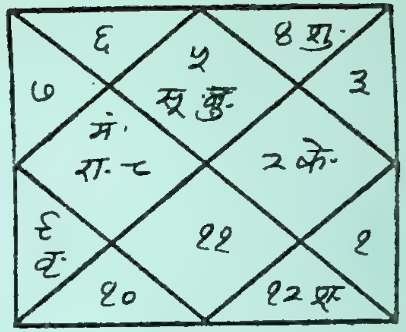

६३५

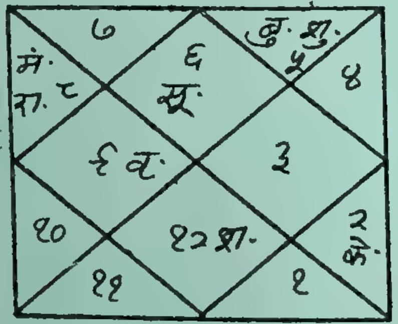

६३६

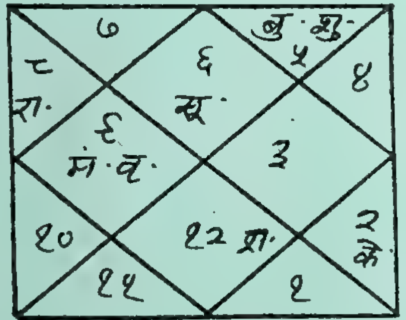

६३७

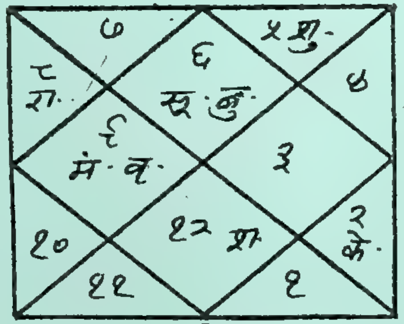

६३८

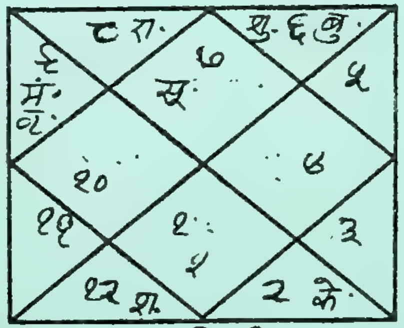

६३९

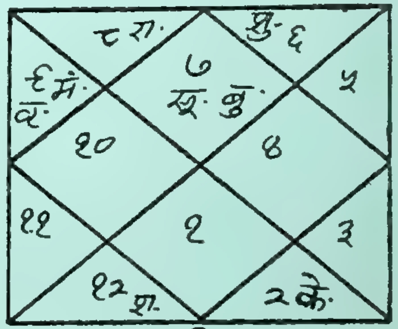

६४०

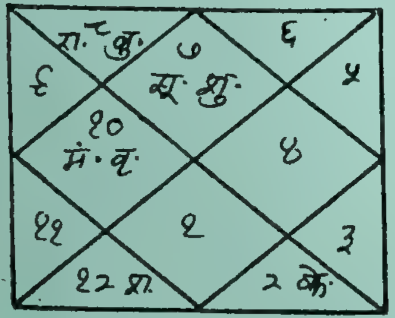

६४१

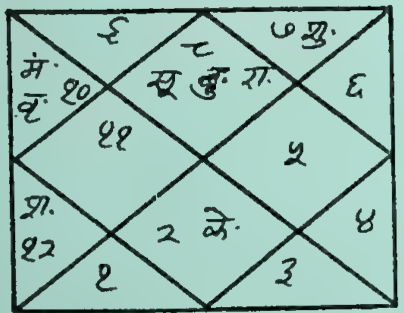

६४२

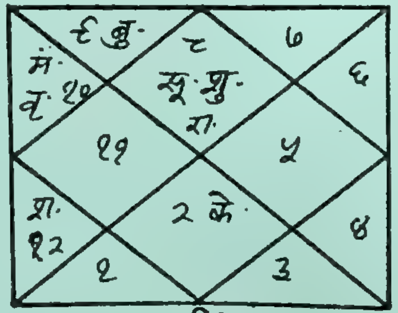

६४३

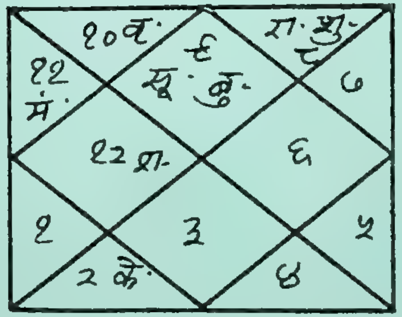

६४४

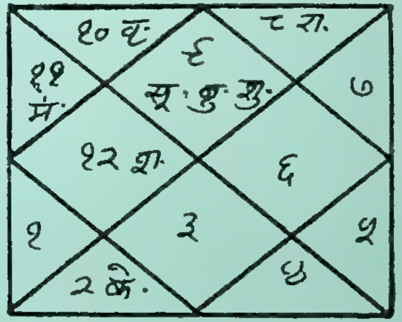

६४५

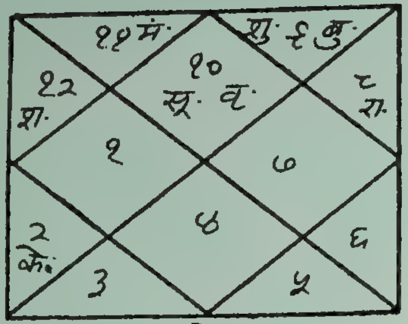

९४६

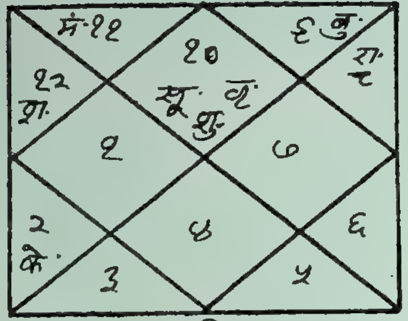

९४७

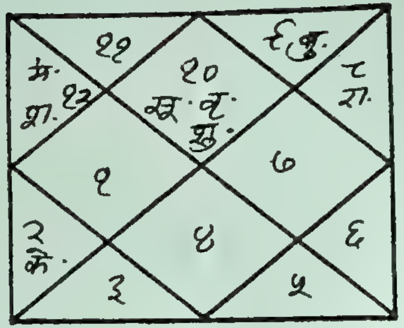

९४८

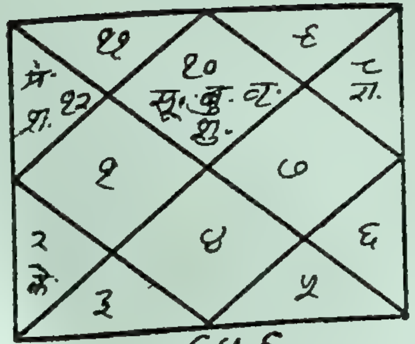

९४९

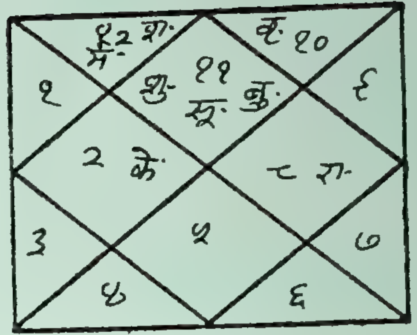

९५०

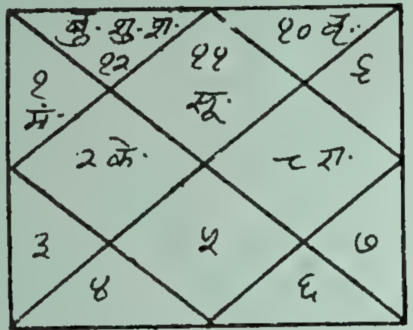

९५१

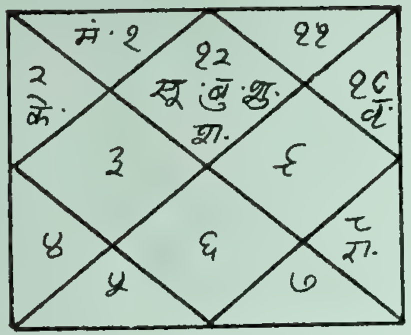

९५२

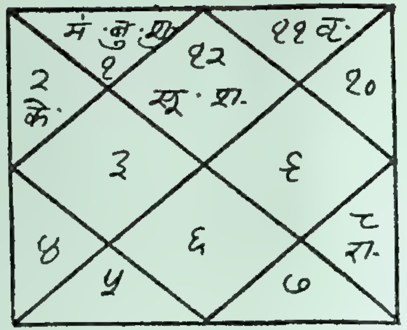

९५३

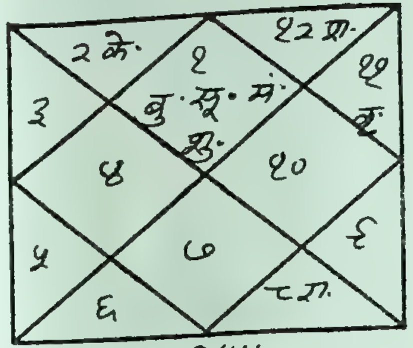

९५४

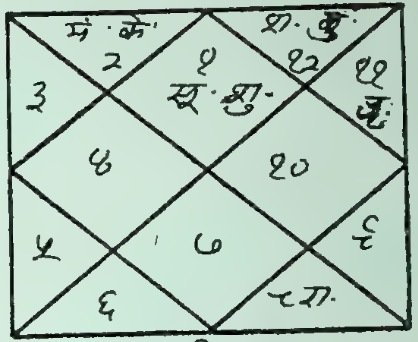

९५५

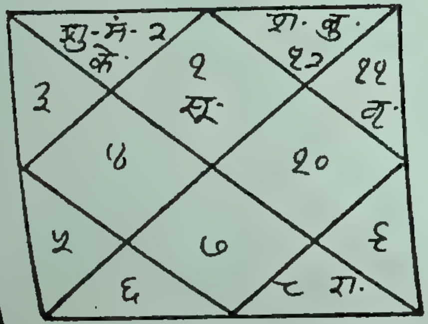

९५६

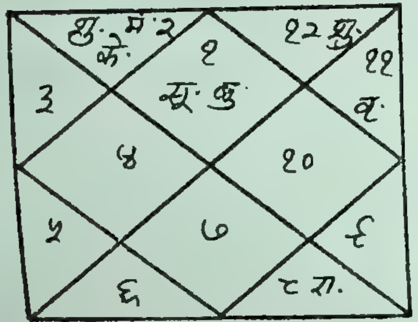

९५७

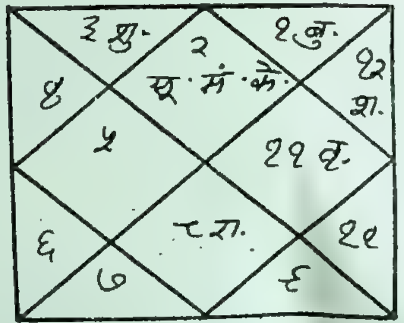

९५८

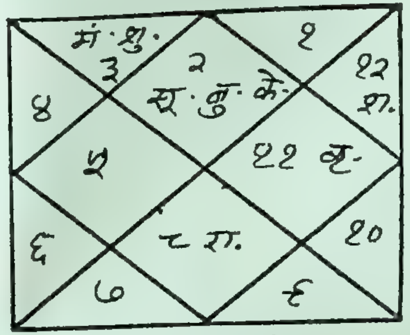

९५९

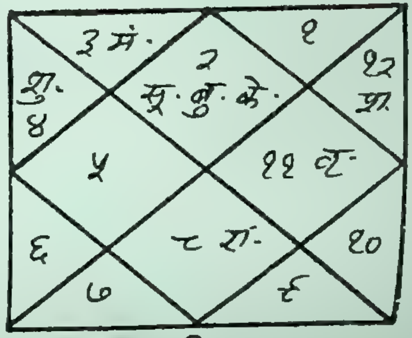

९६०

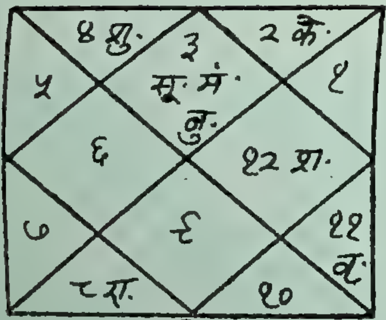

९६१

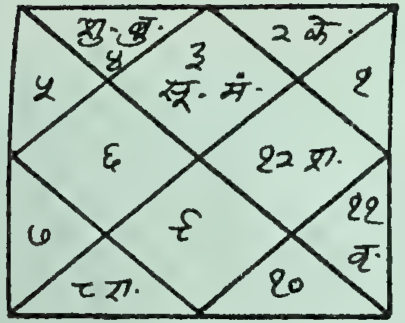

९६२

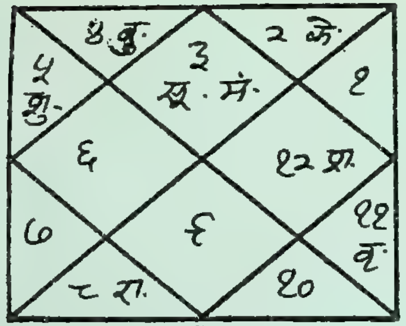

९६३

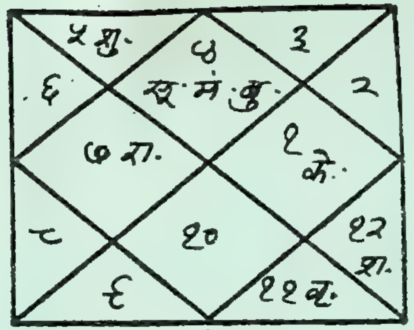

९६४

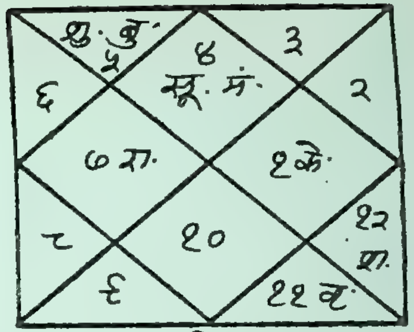

९६५

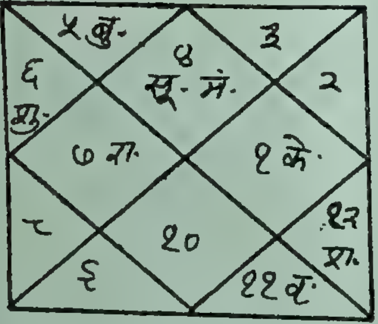

९६६

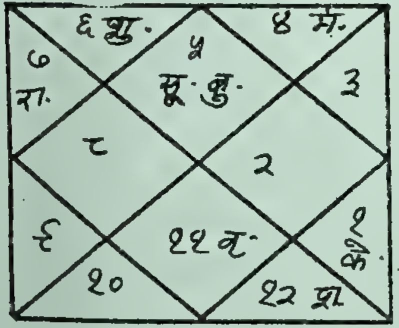

९६७

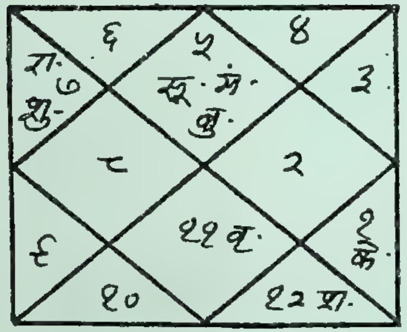

९६८

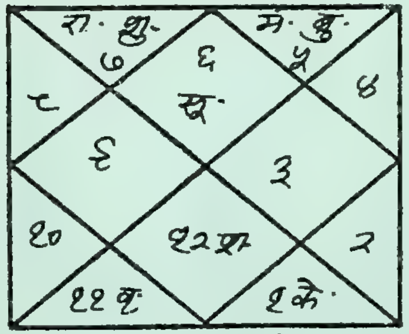

९६९

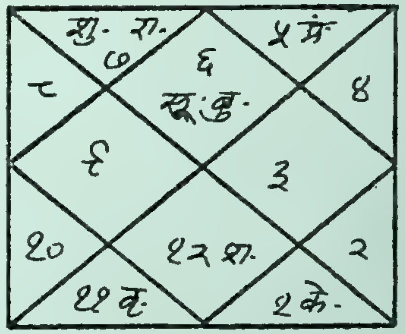

९७०

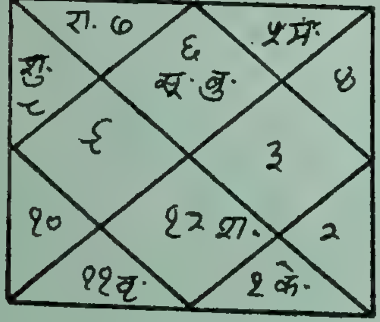

९७१

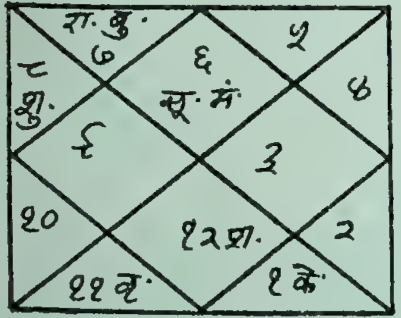

९७२

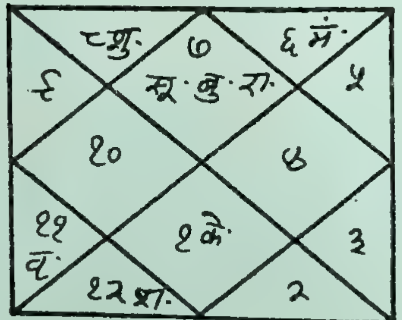

९७३

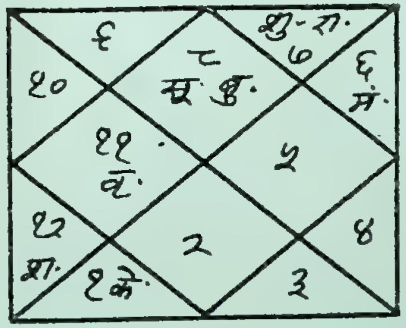

९७४

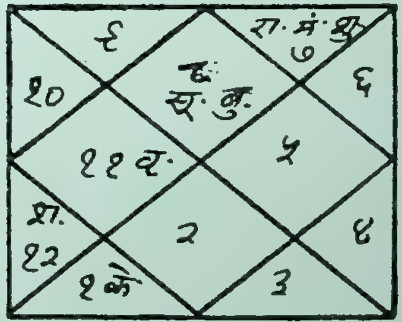

९७५

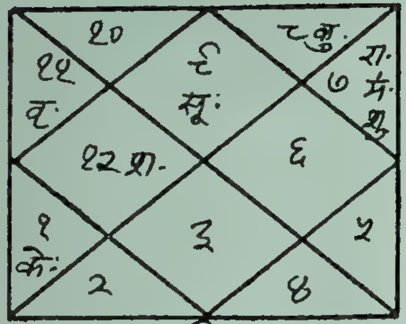

९७६

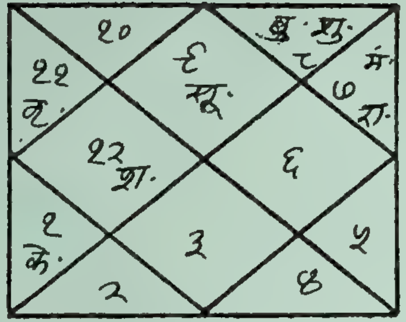

९७७

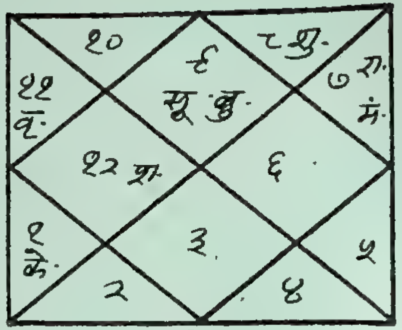

९७८

९७९

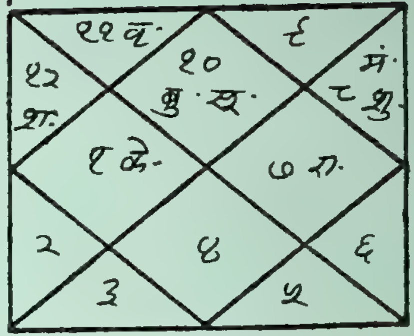

९८०

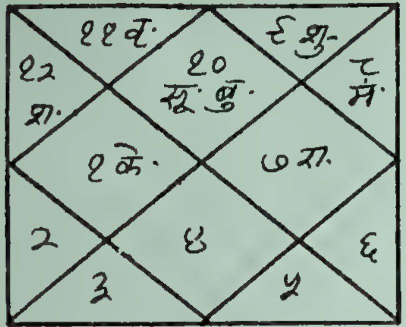

९८१

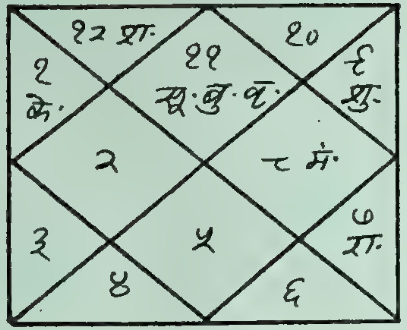

९८२

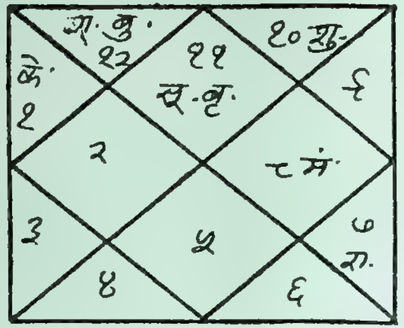

९८३

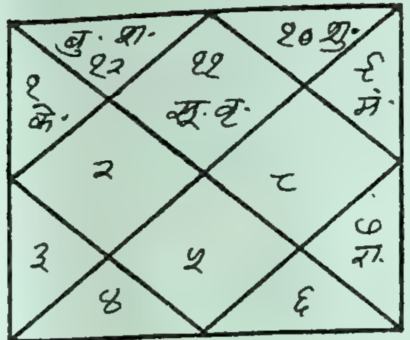

९८४

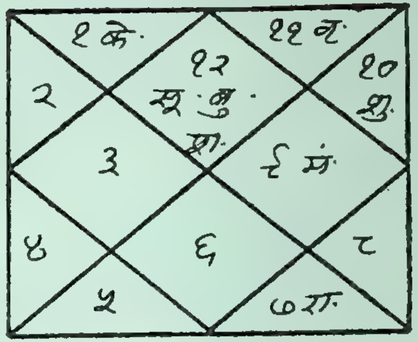

९८५

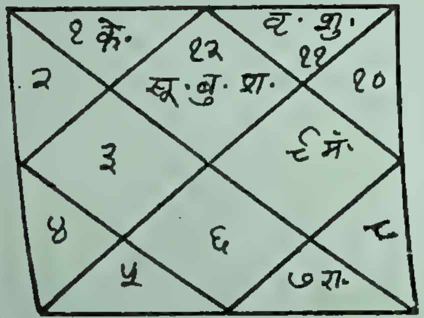

९८६

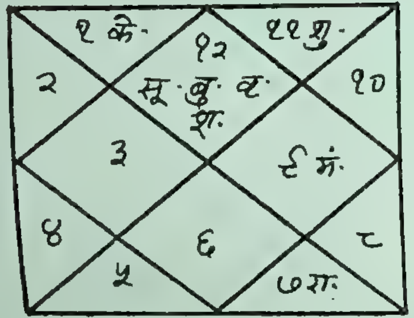

९८७

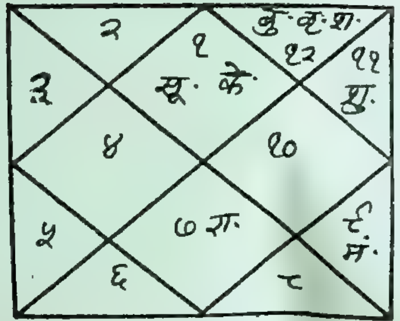

९८८

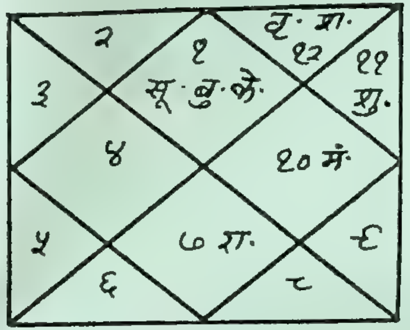

९८९

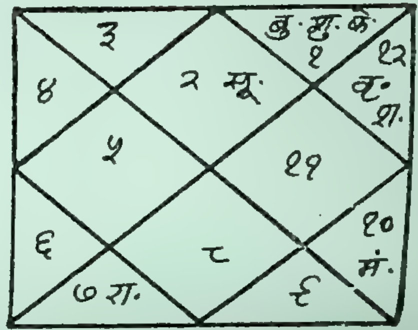

९९०

भू० सं०

कु० प०

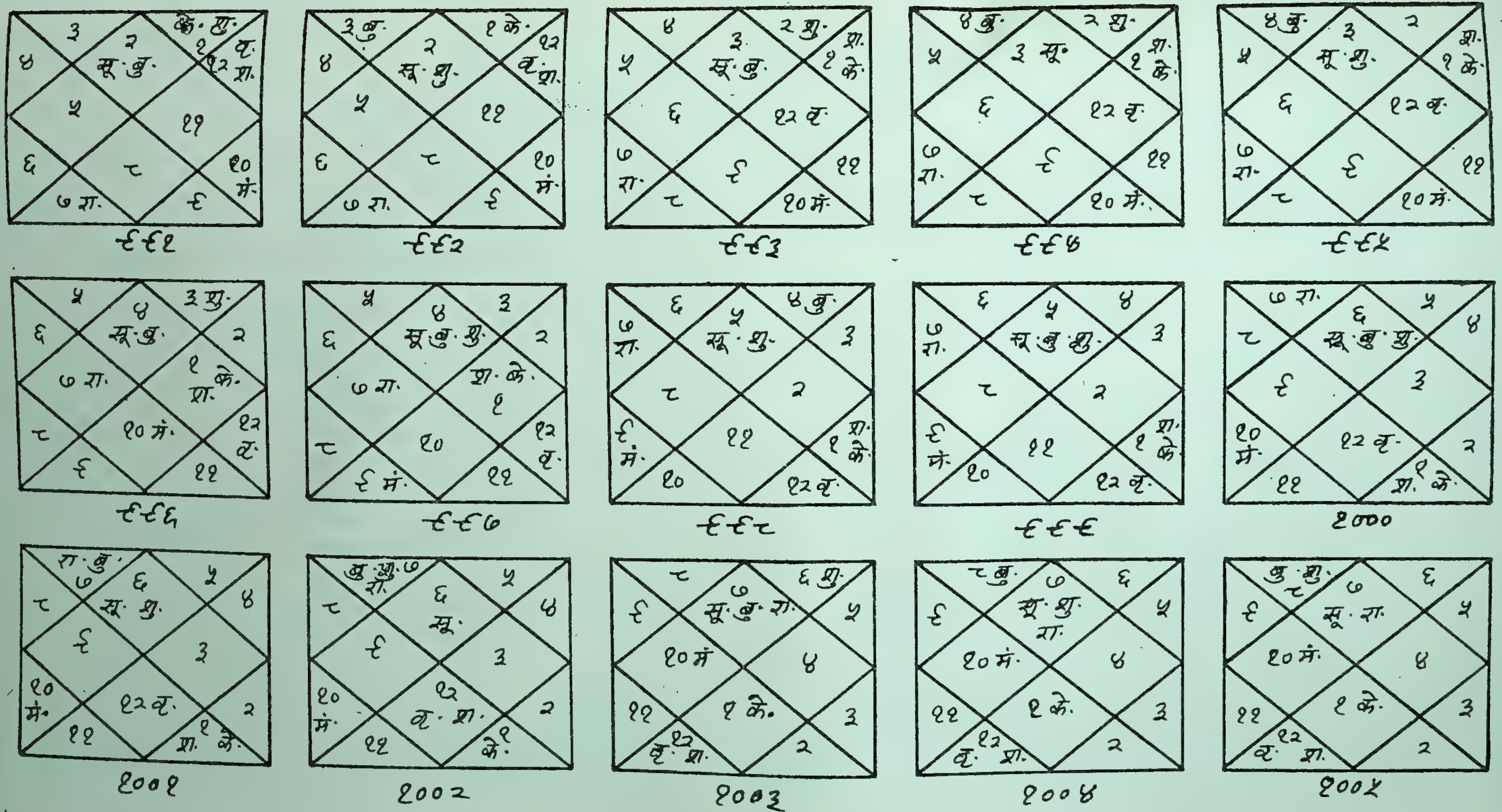

९९१
९९२
९९३
९९४
९९५
९९६
९९७
९९८
९९९
२०००
२००१
२००२
२००३
२००४
२००५

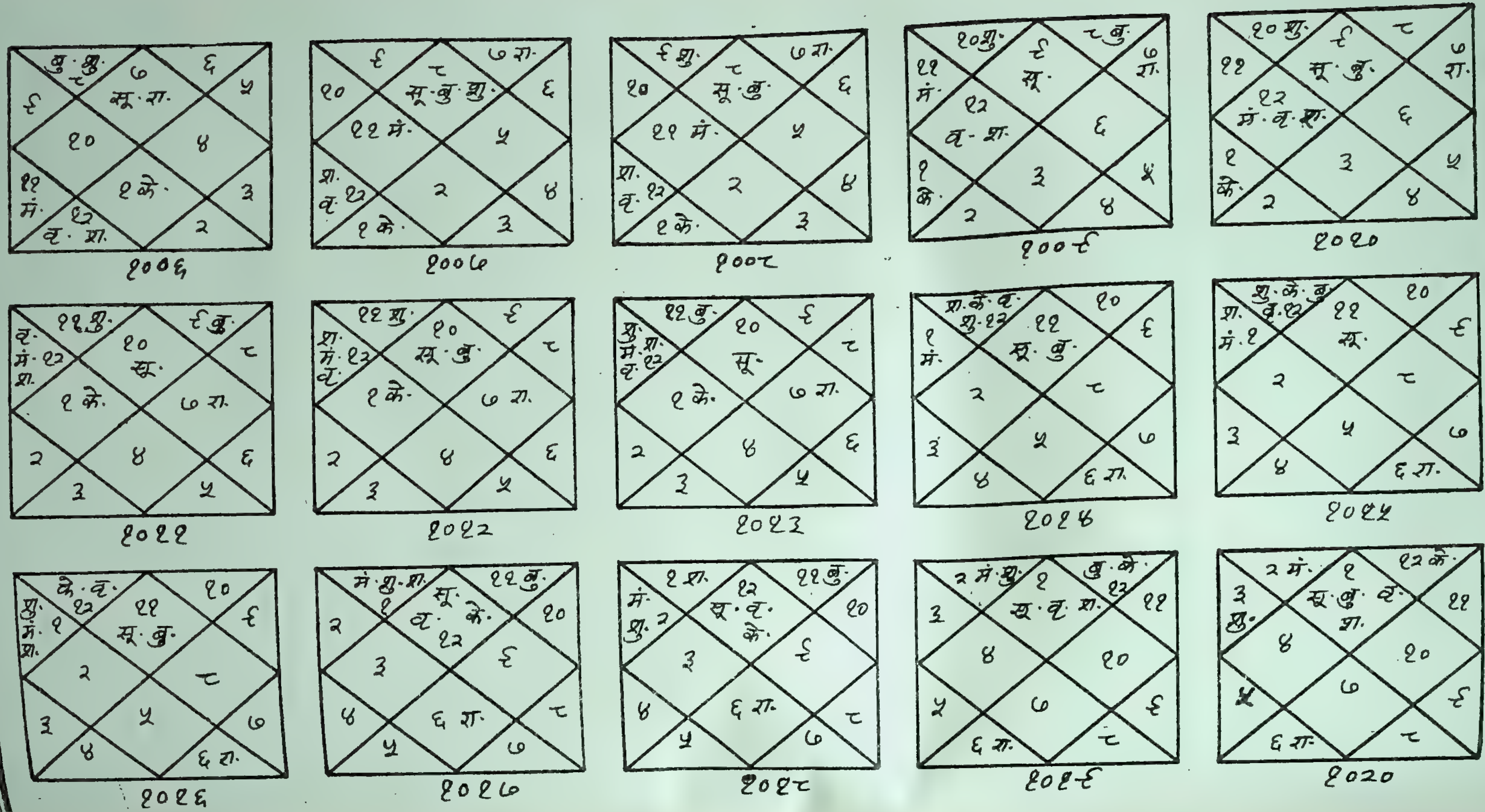

१००६
१००७
१००८
१००९
१०१०
१०११
१०१२
१०१३
१०१४
१०१५
१०१६
१०१७
१०१८
१०१९
१०२०

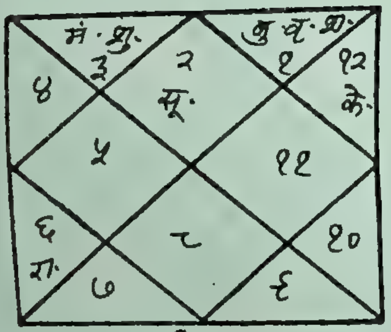

२०२१

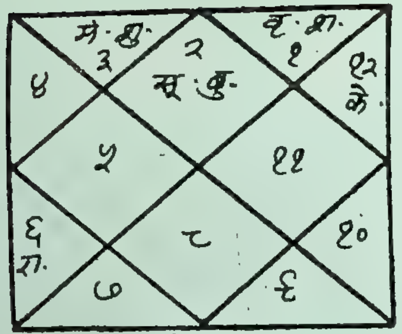

२०२२

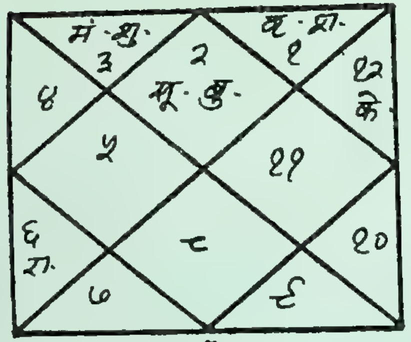

२०२३

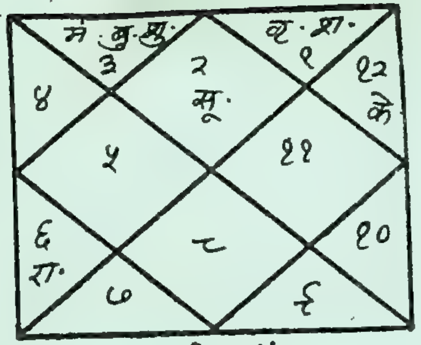

२०२४

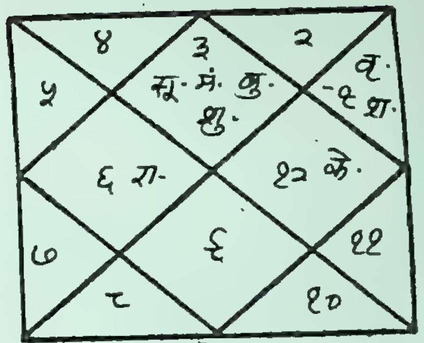

२०२५

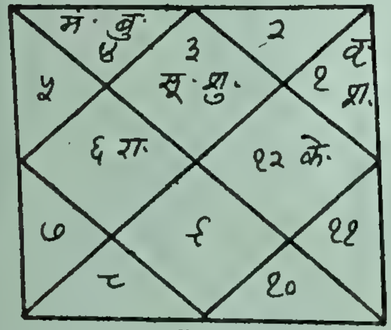

२०२६

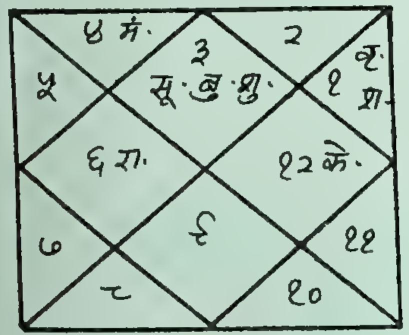

२०२७

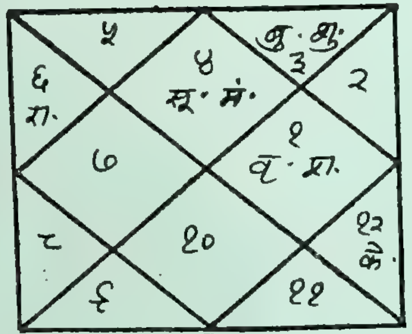

२०२८

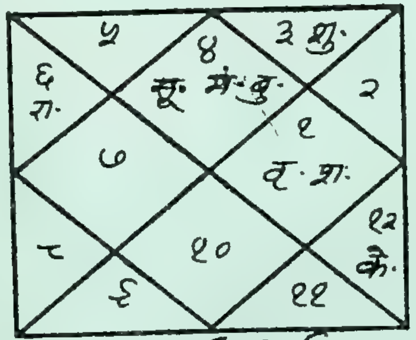

२०२९

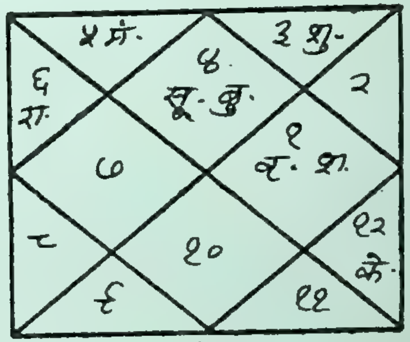

२०३०

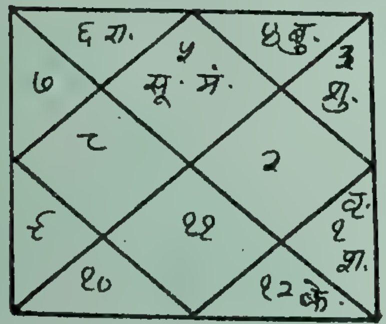

२०३१

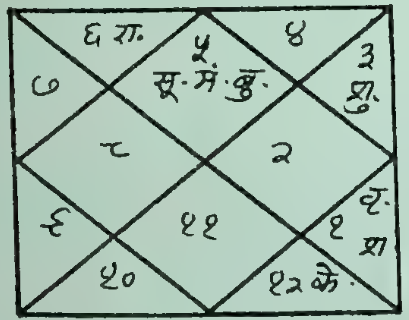

२०३२

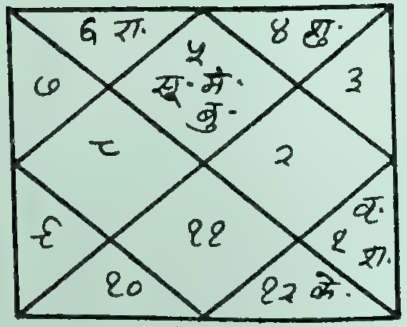

२०३३

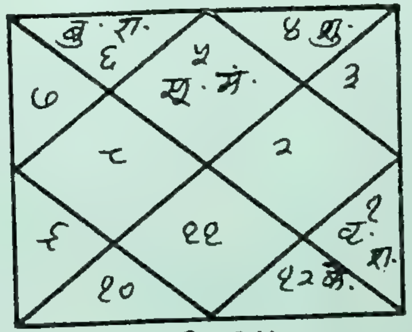

२०३४

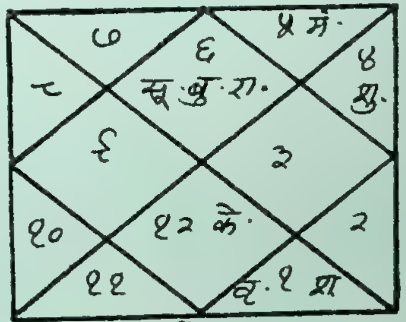

२०३५

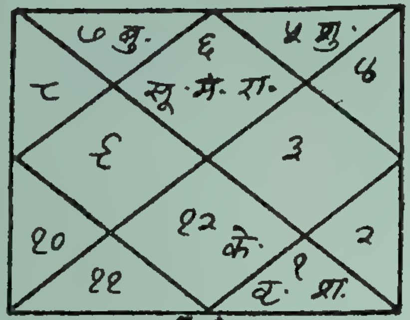
१०३६

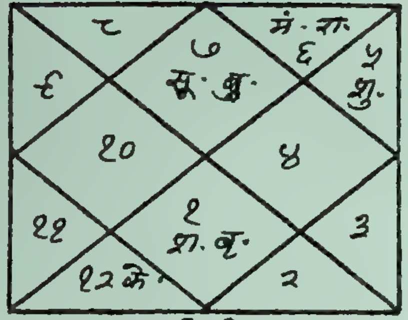
१०३७

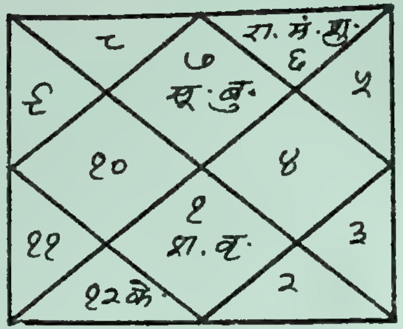
१०३८

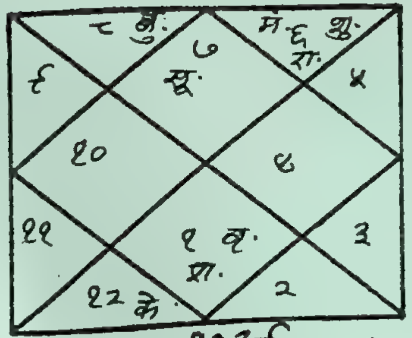
१०३९

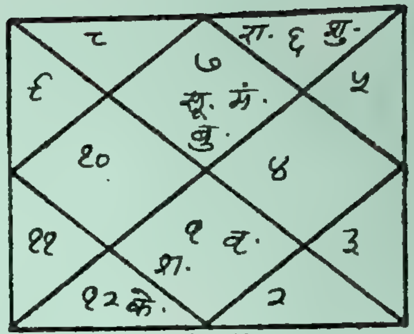
१०४०

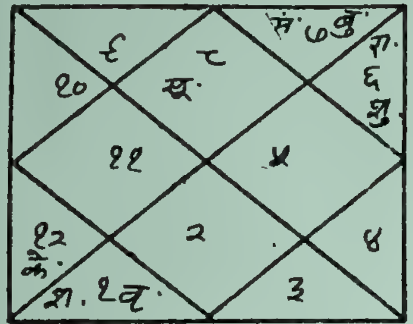
१०४१

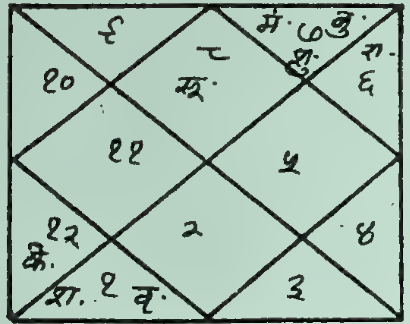
१०४२

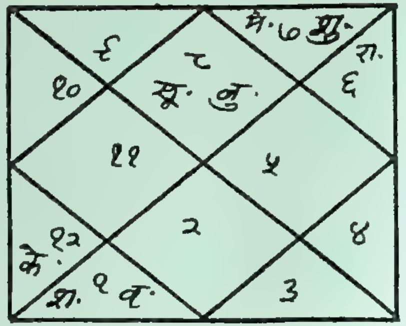
१०४३

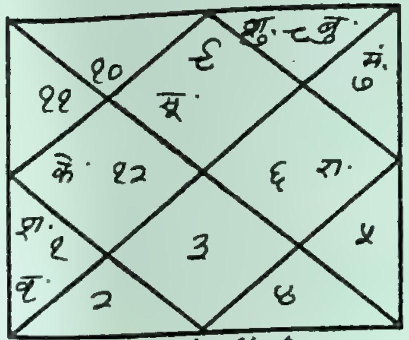
१०४४

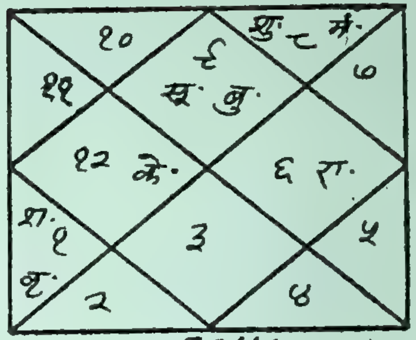
१०४५

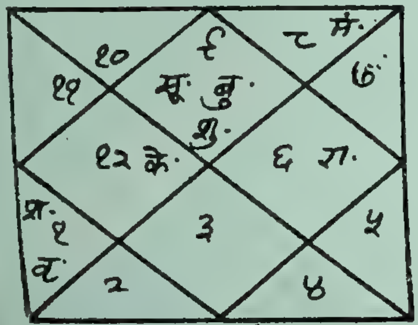
१०४६

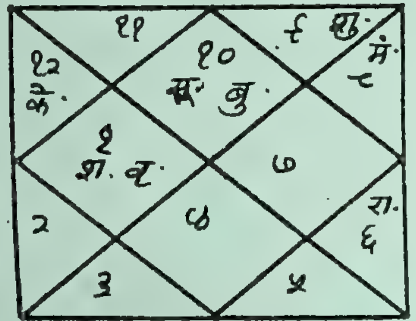
१०४७

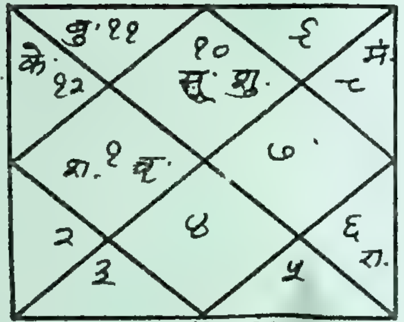
१०४८

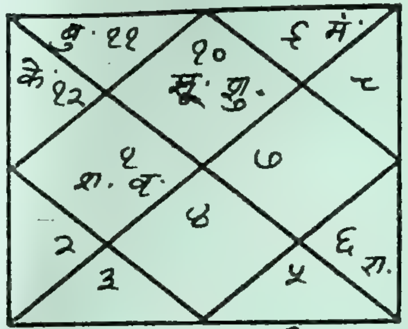
१०४९

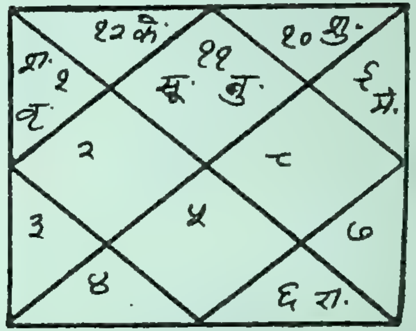
१०५०

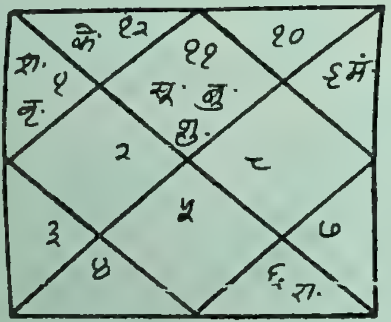

२०५१

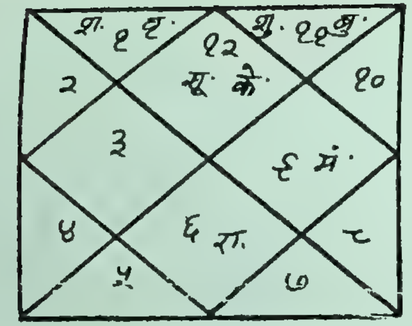

२०५२

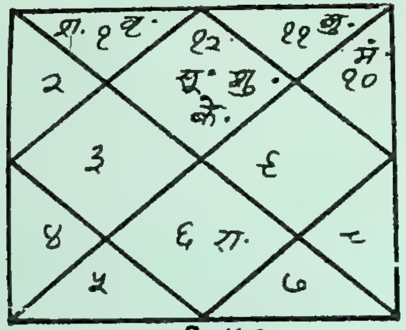

२०५३

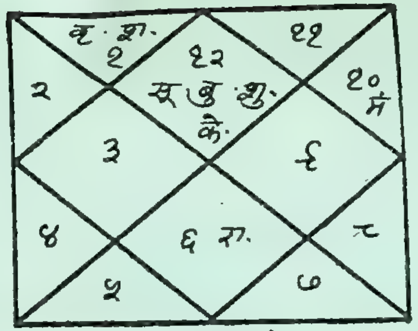

२०५४

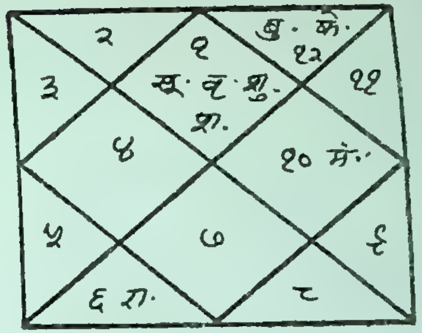

२०५५

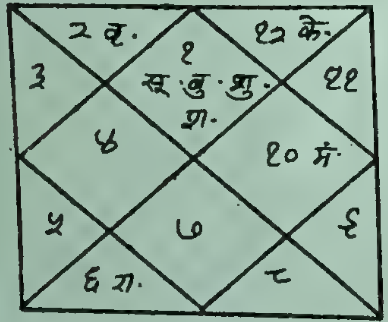

२०५६

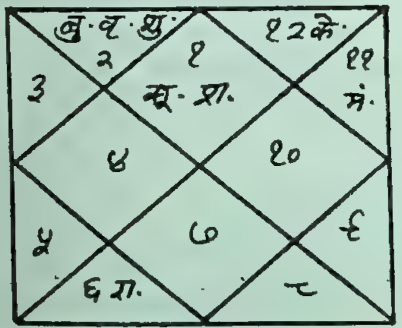

२०५७

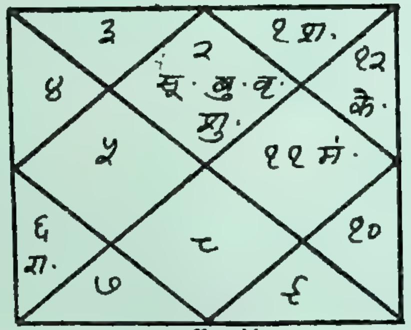

२०५८

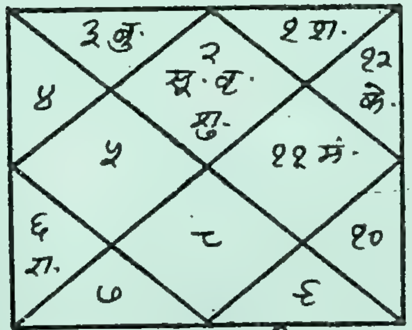

२०५९

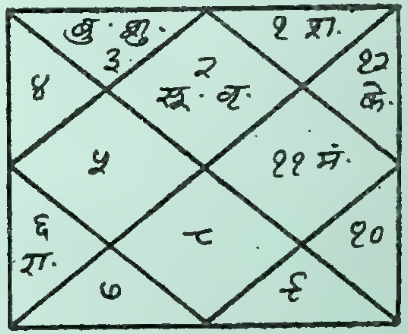

२०६०

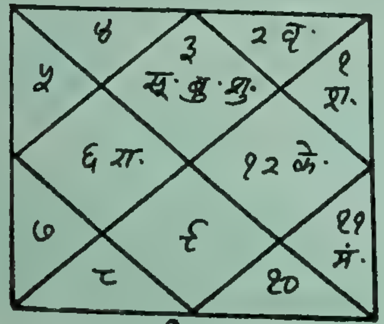

२०६१

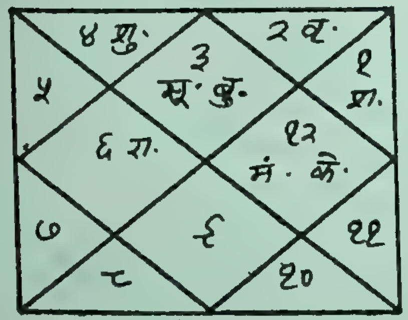

२०६२

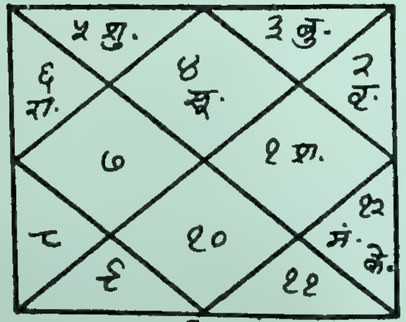

२०६३

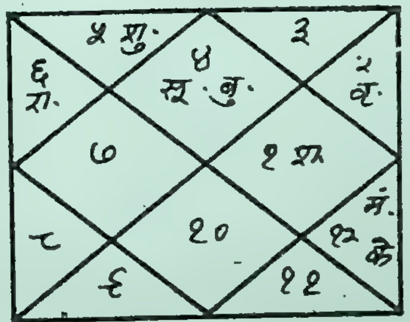

२०६४

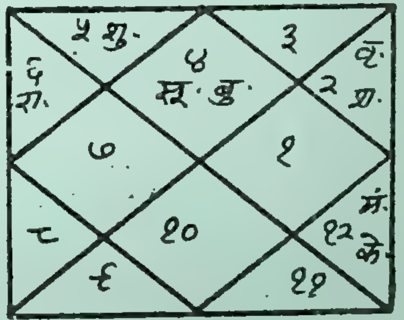

२०६५

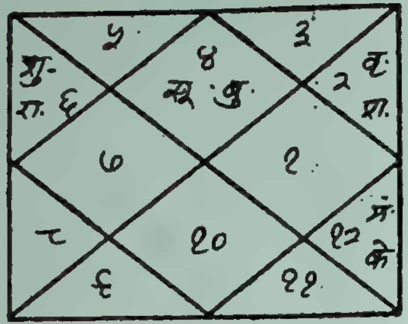
१०६६

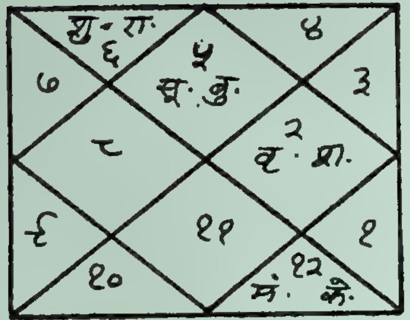
१०६७

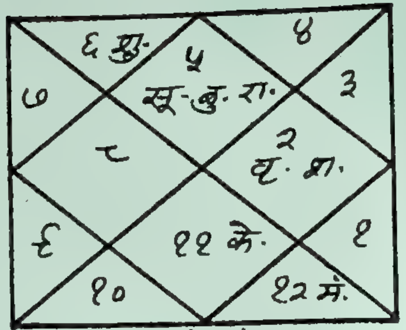
१०६८

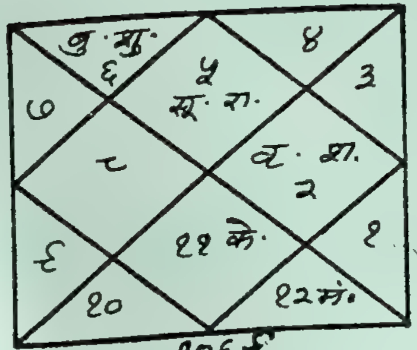
१०६९

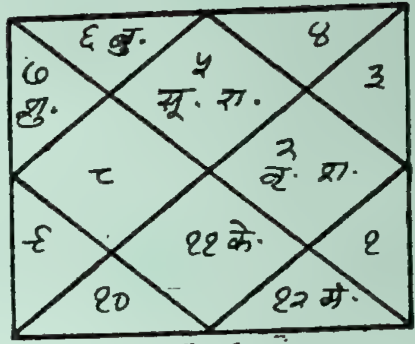
१०७००

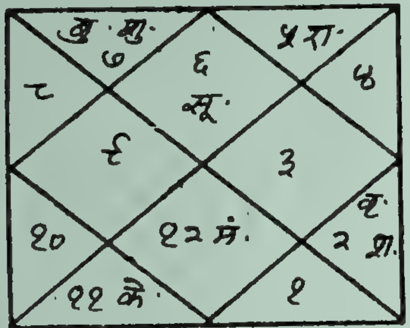
१०७१

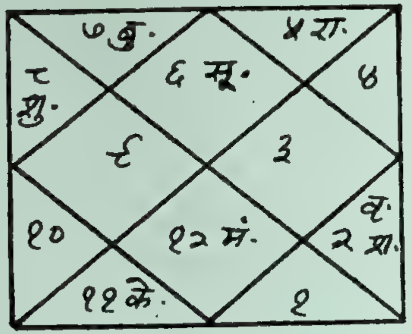
१०७२

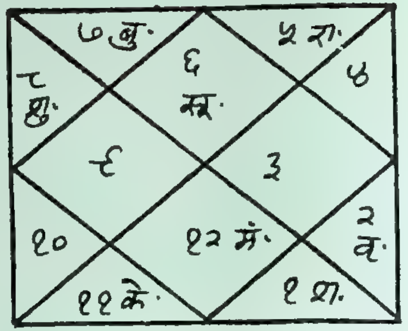
१०७३

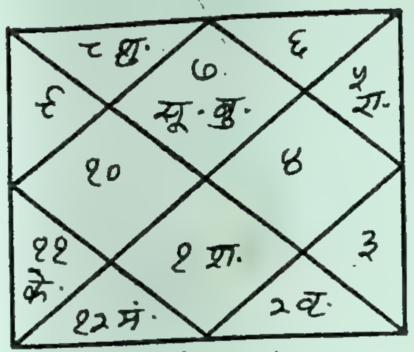
१०७४

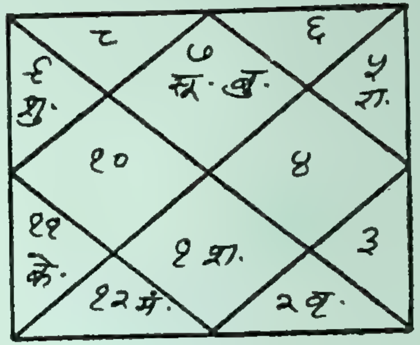
१०७५

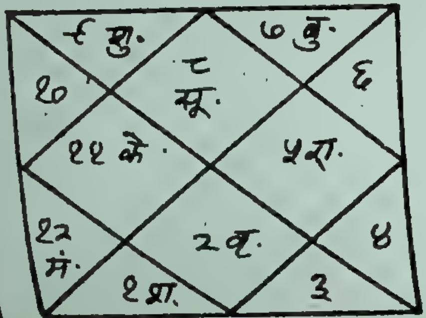
१०७६

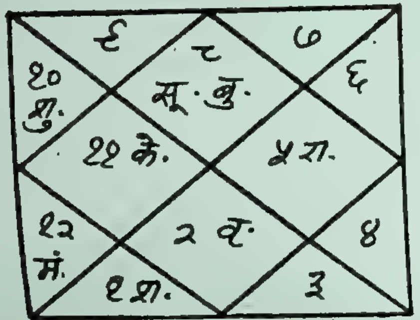
१०७७

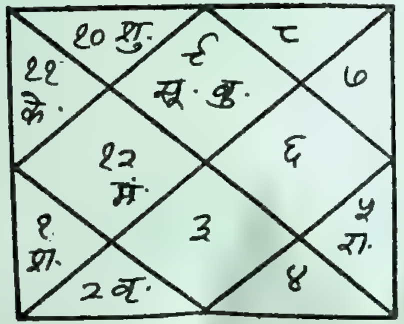
१०७८

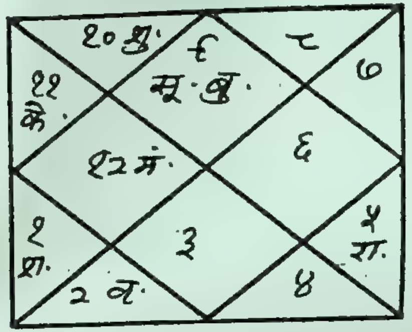
१०७९

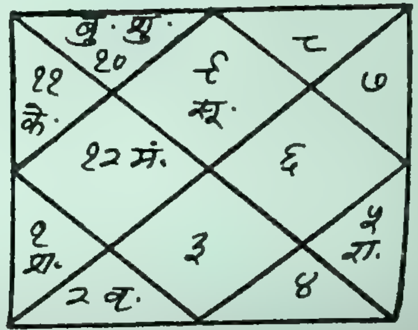
१०८०

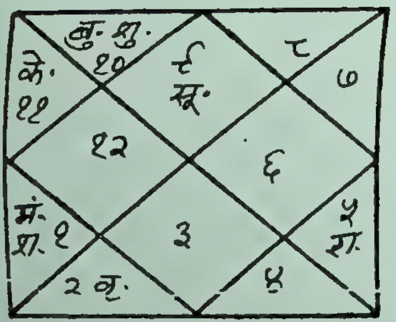
१०८१

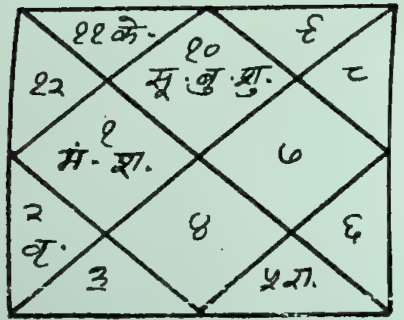
१०८२

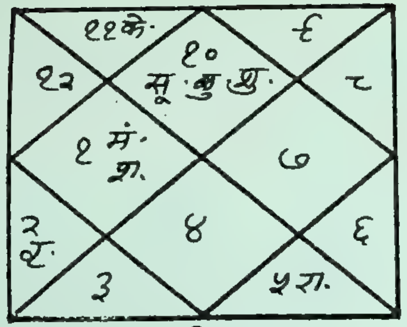
१०८३

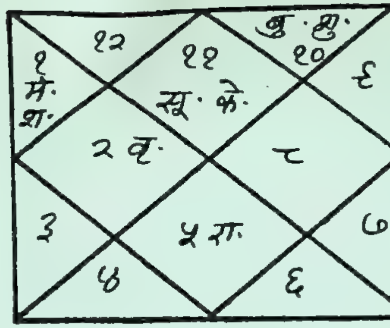
१०८४

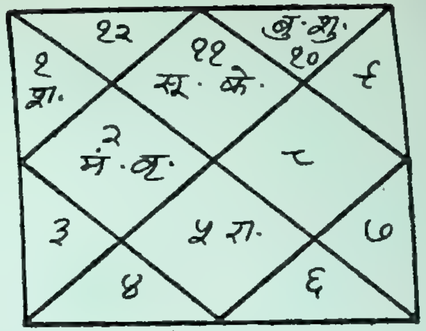
१०८५

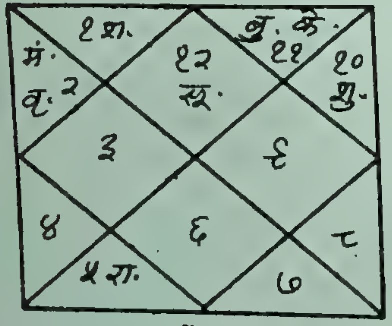
१०८६

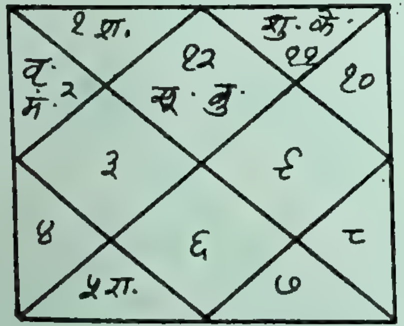
१०८७

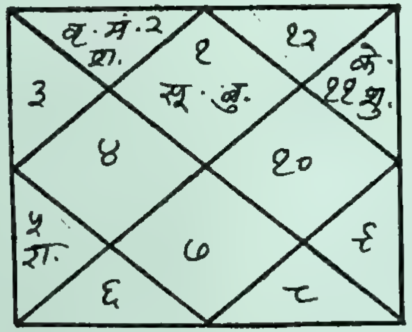
१०८८

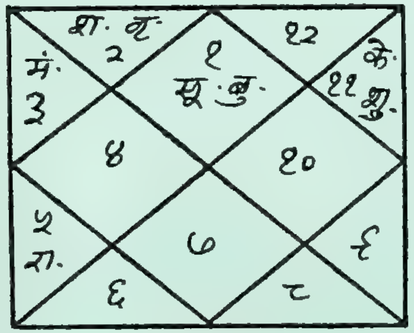
१०८९

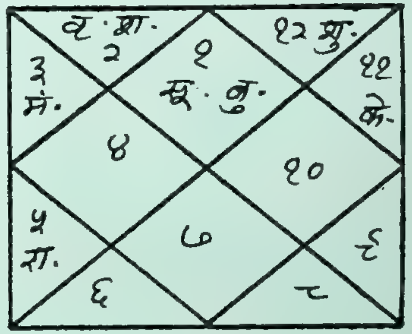
१०९०

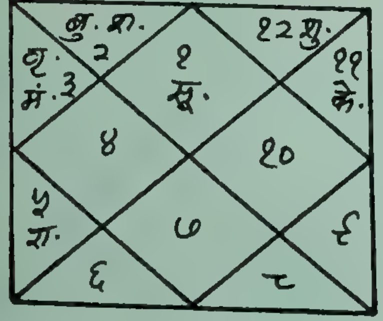
१०९१

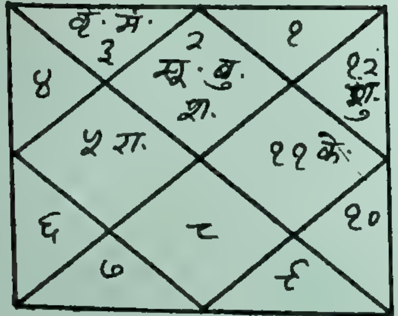
१०९२

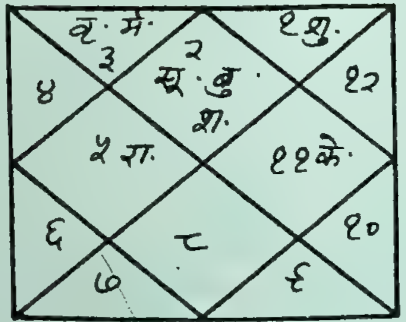
१०९३

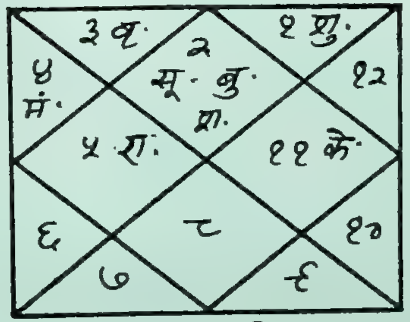
१०९४

१०९५

कु० प०

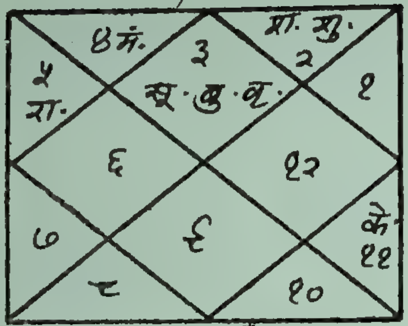

१०९६

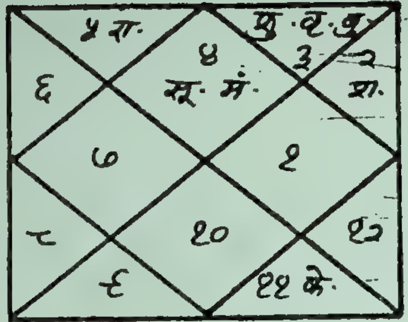

१०९७

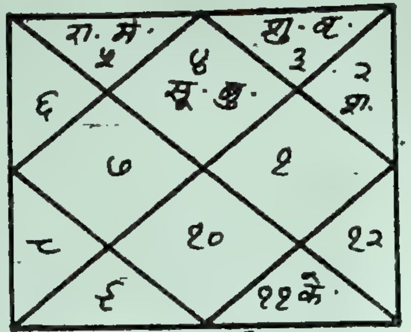

१०९८

१०९९

११००

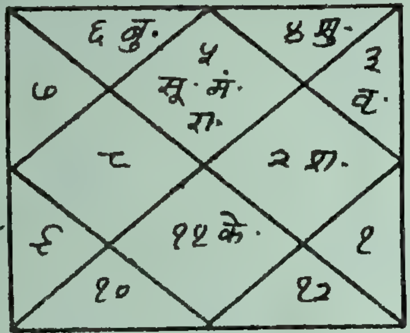

११०१

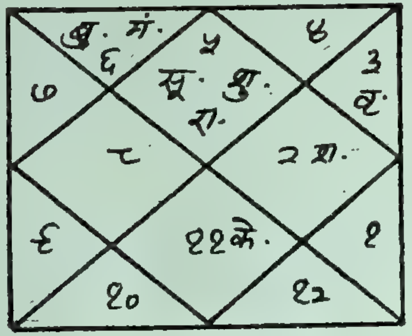

११०२

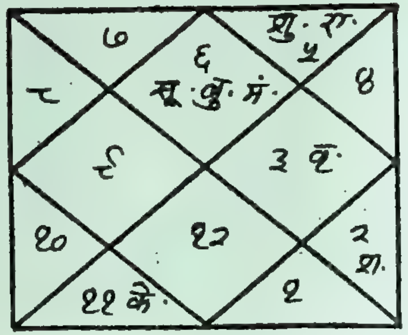

११०३

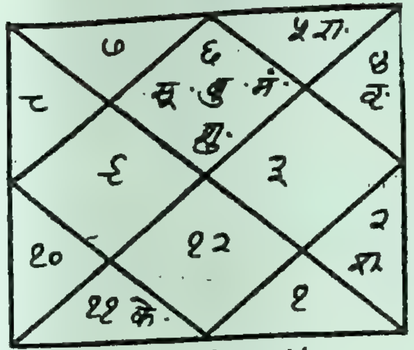

११०४

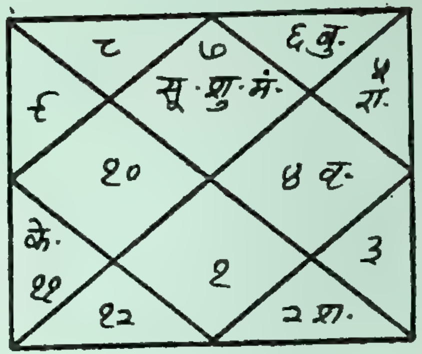

११०५

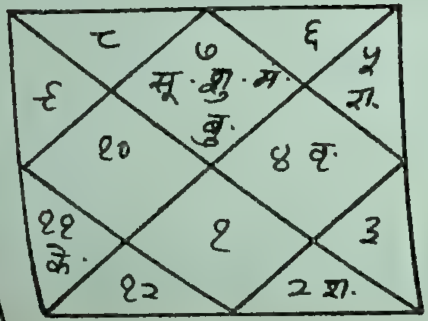

११०६

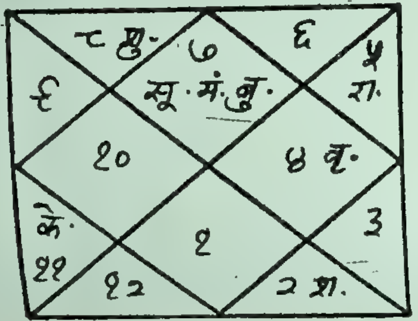

११०७

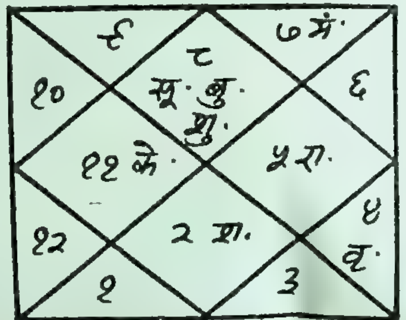

११०८

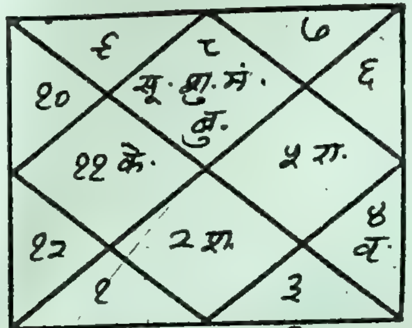

११०९

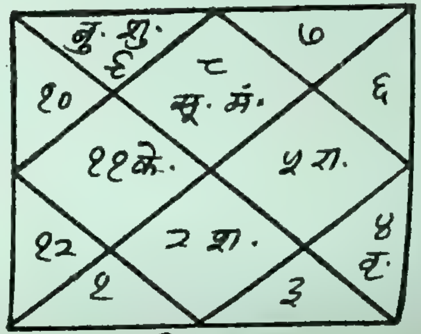

१११०

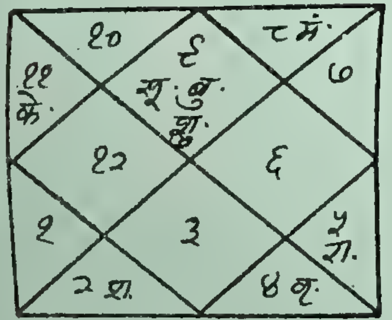
११११

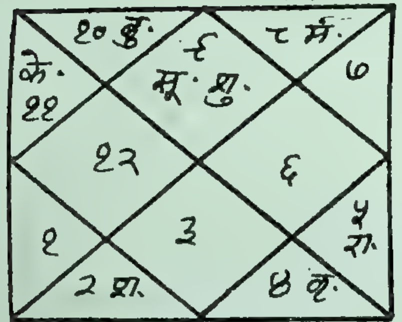
१११२

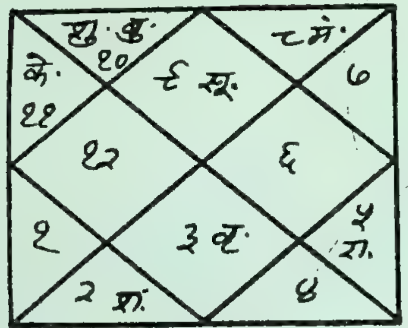
१११३

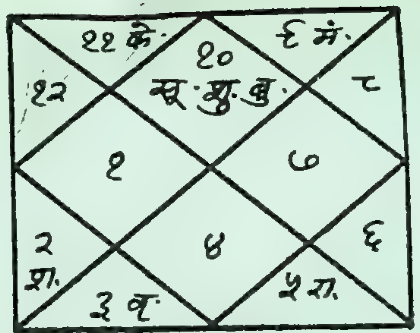
१११४

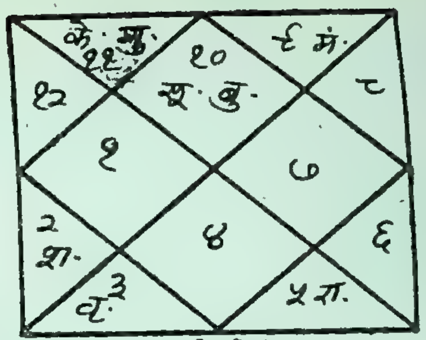
१११५

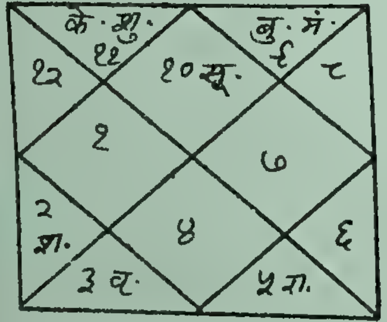
१११६

१११७

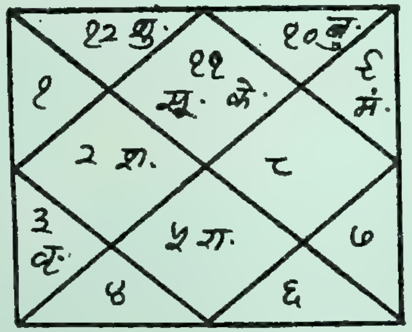
१११८

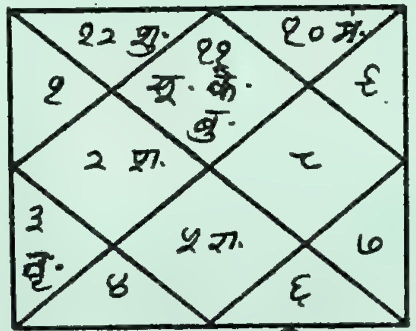
१११९

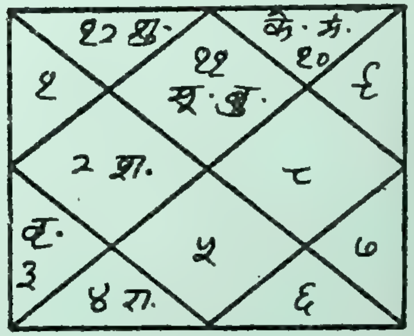
११२०

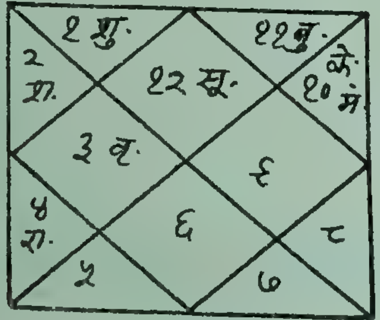
११२१

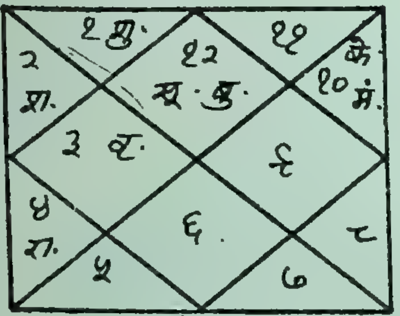
११२२

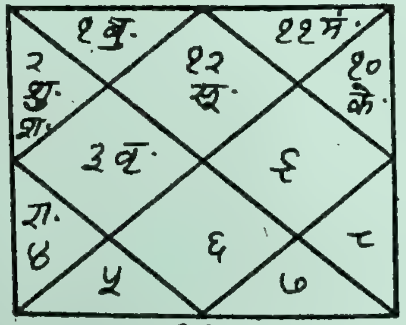
११२३

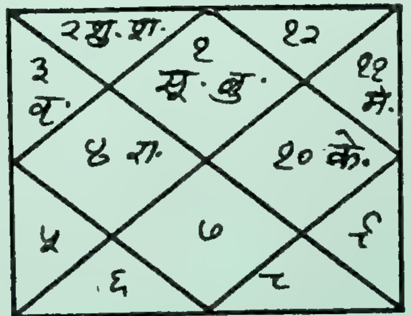
११२४

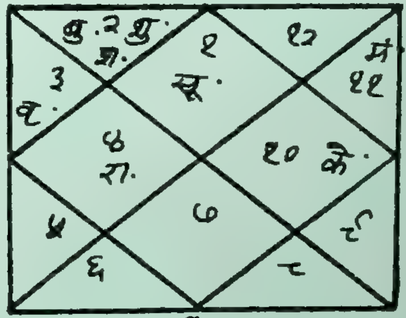
११२५

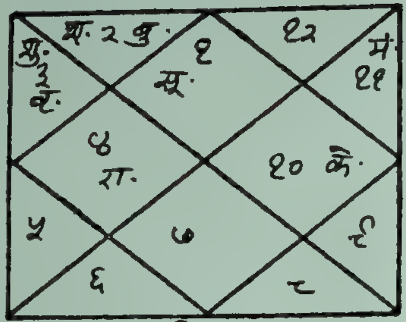
१२२६

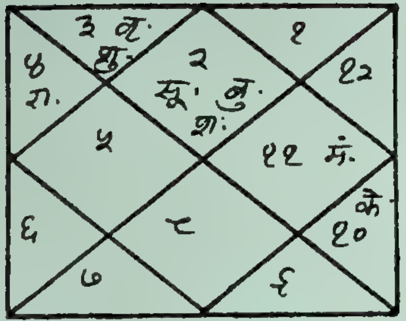
१२२७

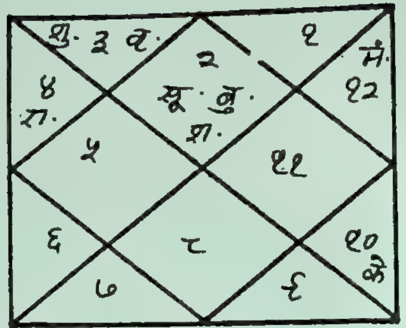
१२२८

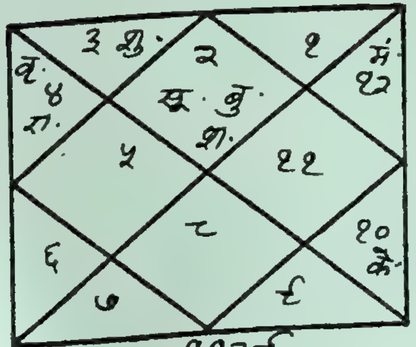
१२२९

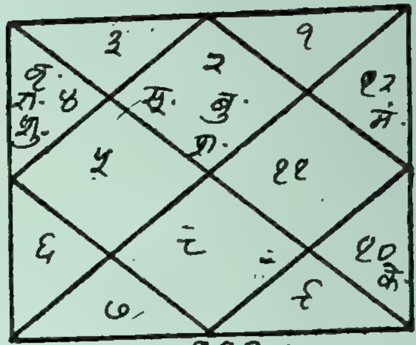
१२३०

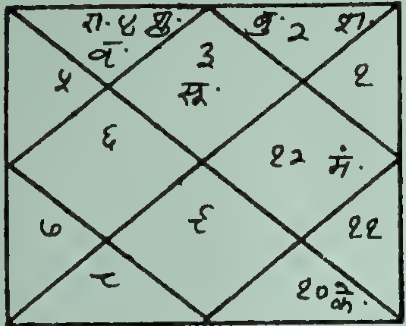
१२३१

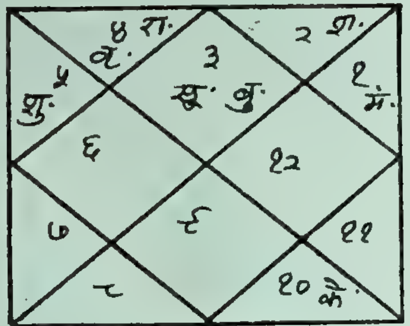
१२३२

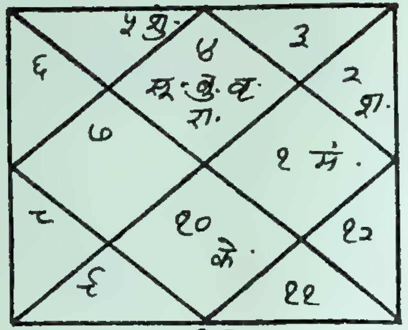
१२३३

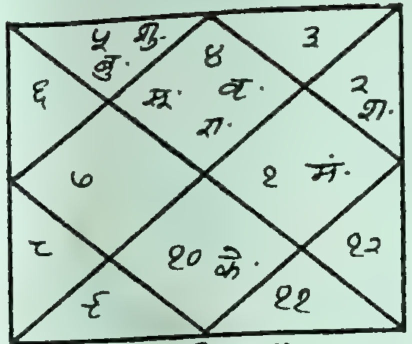
१२३४

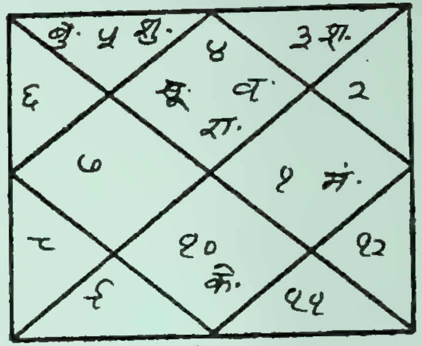
१२३५

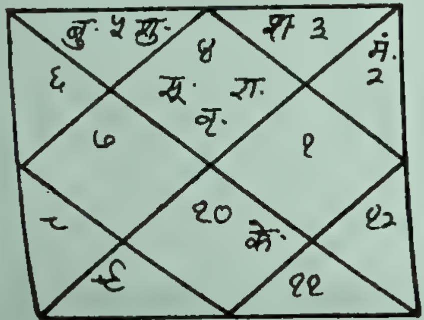
१२३६

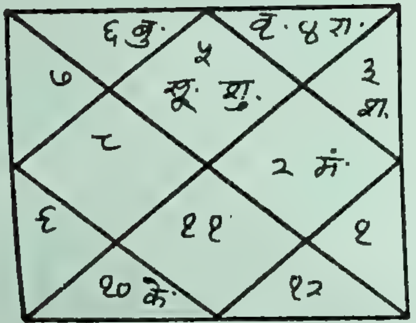
१२३७

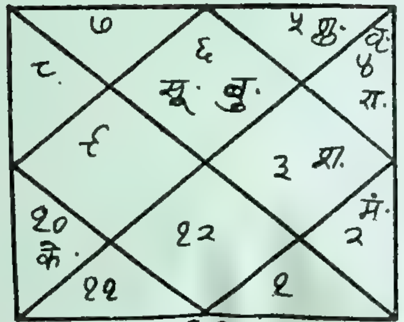
१२३८

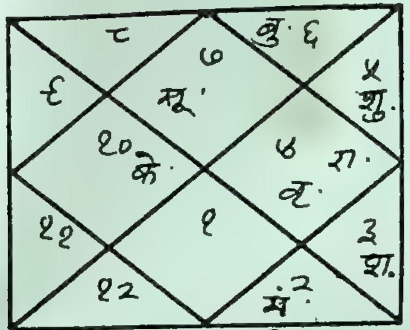
१२३९

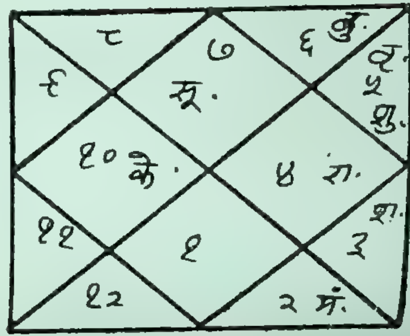
१२४०

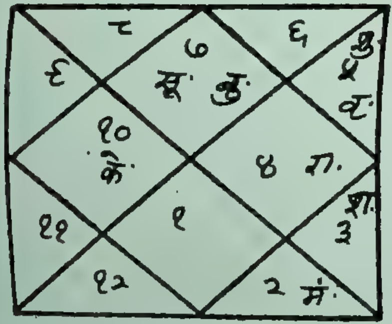
११५४१

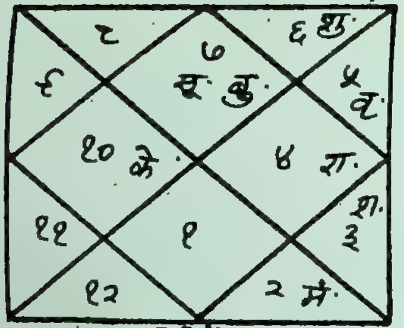
११५४२

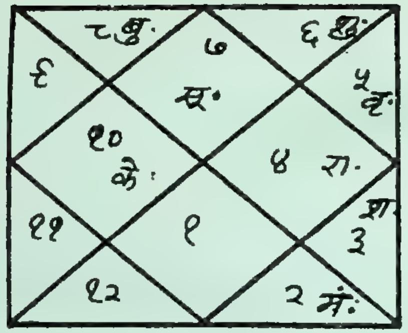
११५४३

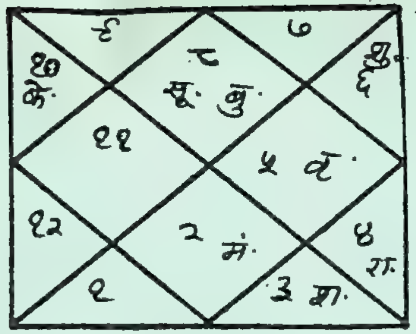
११५४४

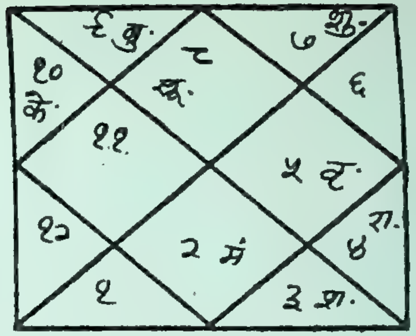
११५४५

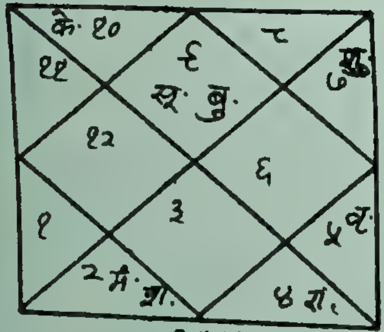
११५४६

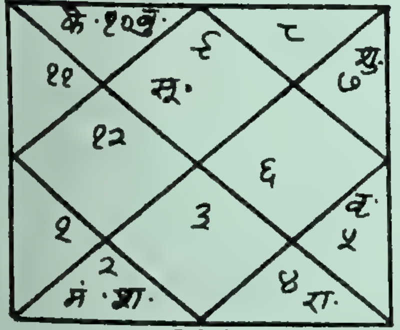
११५४७

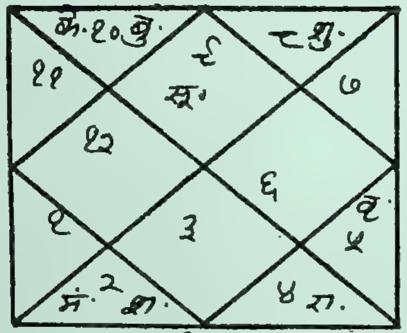
११५४८

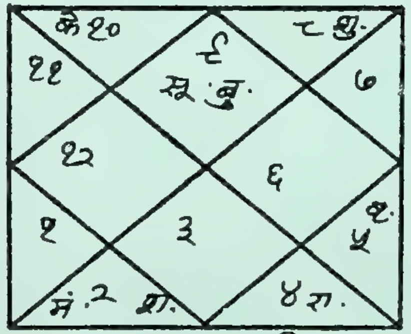
११५४९

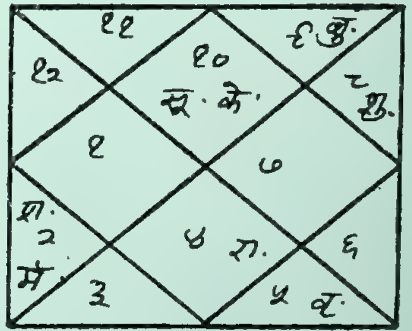
११५५०

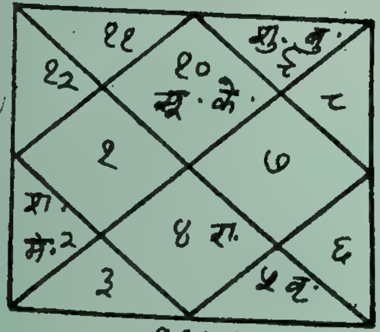
११५५१

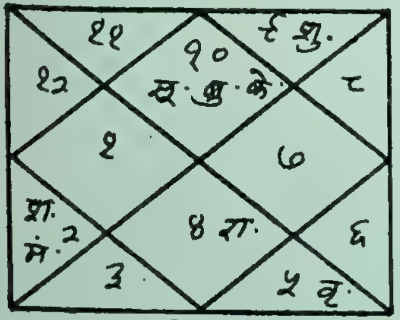
११५५२

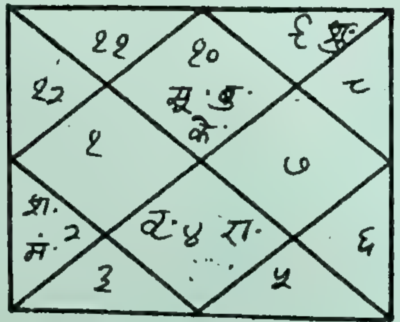
११५५३

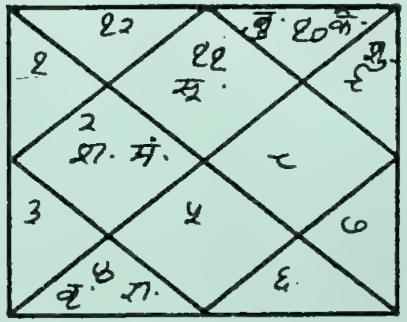
११५५४

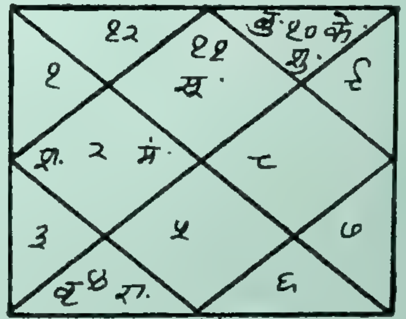
११५५५

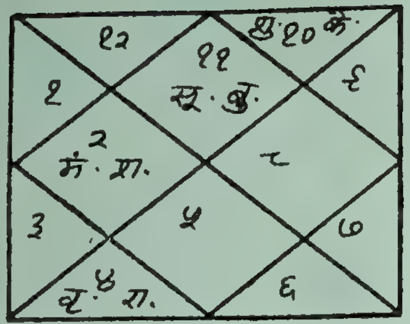
११५६

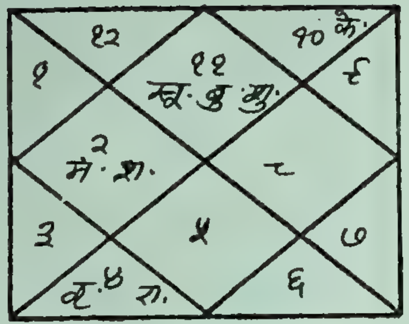
११५७

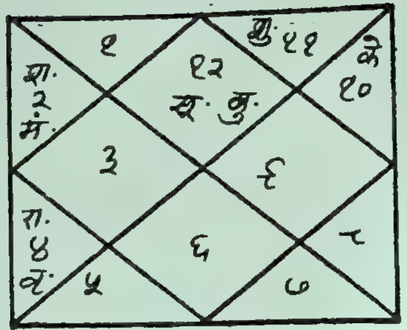
११५८

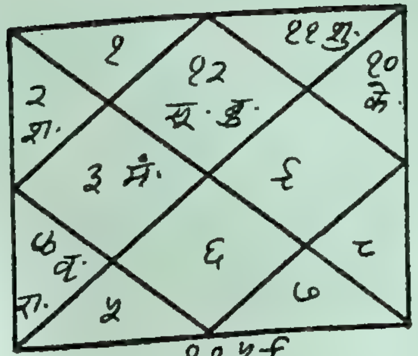
११५९

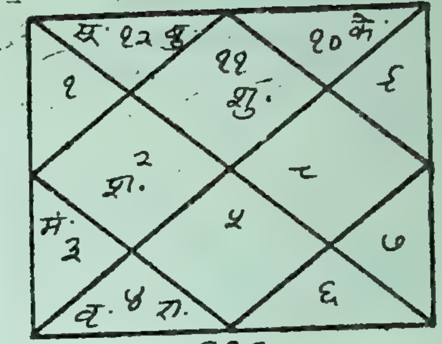
११६०

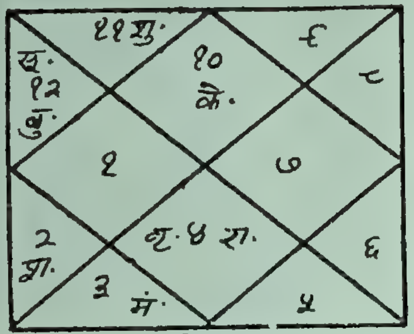
११६१

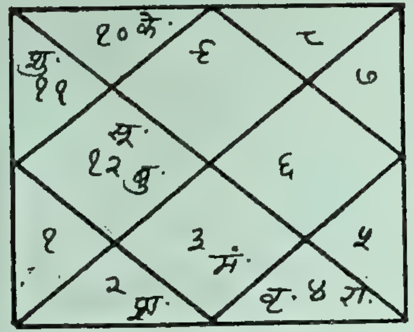
११६२

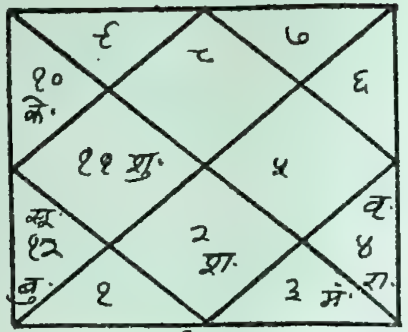
११६३

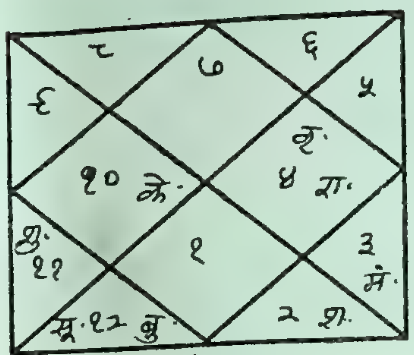
११६४

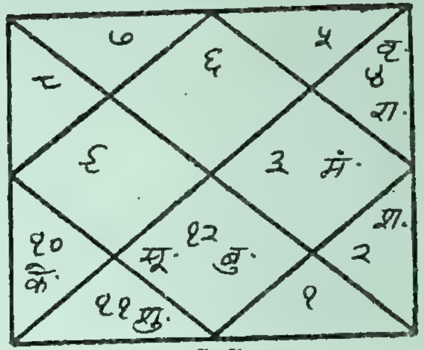
११६५

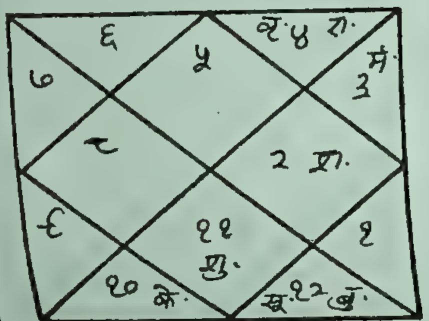
११६६

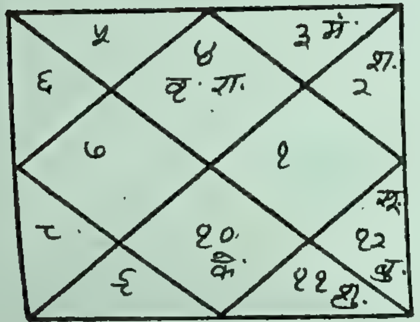
११६७

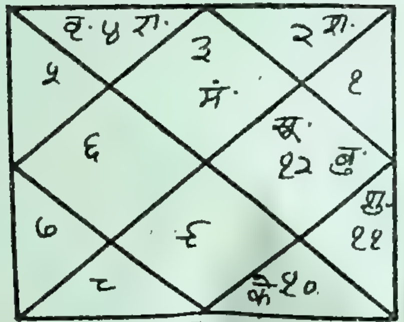
११६८

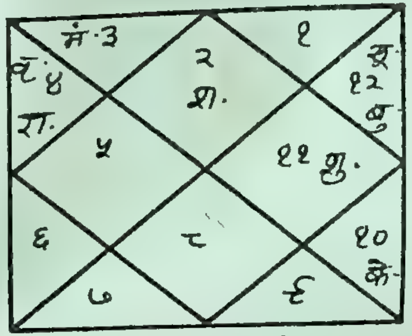
११६९

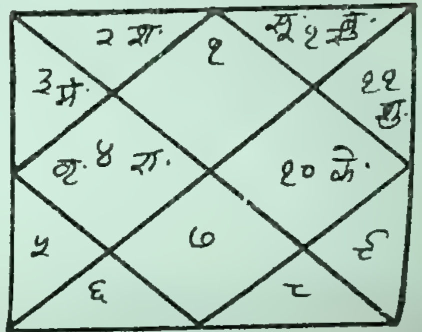
११७०

सम्वत्सरानुसार सूर्य-कुण्डली सारिणी

इस ग्रंथ के पृष्ठ संख्या १०० से पृष्ठ संख्या ४८० तक सम्वत् १९४२ वि० से सम्वत् २१०० वि० तक की सूर्यकुण्डलियाँ प्रदर्शित हैं। आपका जन्म जिस विक्रम सम्वत् में हुआ हो, उसके अनुसार अपनी जन्मकालीन सूर्य-कुण्डली को किस पृष्ठ पर देखें, इसे आगे दी गई सारिणी में बताया गया है।

सूर्य-कुण्डली के आधार पर लग्नकुण्डली जानने की विधि इस सारिणी के अन्त में दी गई टिप्पणी में वर्णित है। उसके अनुसार अपनी जन्मकुण्डली का ज्ञान प्राप्त करने के उपरान्त, उस सूर्य-कुण्डली के नीचे दी गई क्रम संख्या के आधार पर अगले फलादेश प्रकरण में उसी क्रम-संख्या पर अपनी सूर्य-कुण्डली का फलादेश देख लें। विस्तृत फलादेश की जानकारी के लिए प्रथम तथा अन्तिम खण्ड में वर्णित फलादेश ज्ञात करने के सिद्धान्तों का उपयोग करें।

विक्रम सम्वत्	किस पृष्ठ से किस पृष्ठ तक देखें
१९४२ वि०	पृष्ठ १०० की पहली कुण्डली से पृष्ठ १०२ की दसवीं कुण्डली तक
१९४३ वि०	पृष्ठ १०२ की ग्यारहवीं कुण्डली से पृष्ठ १०४ की पन्द्रहवीं कुण्डली तक
१९४४ वि०	पृष्ठ १०५ की पहली कुण्डली से पृष्ठ १०६ की नवीं कुण्डली तक

मु०
सं०
२३८

१९४५ वि०	पृष्ठ १०७ की दसवीं कुण्डली से पृष्ठ ११० की पहली कुण्डली तक
१९४६ वि०	पृष्ठ ११० की दूसरी कुण्डली से पृष्ठ ११२ की चौथी कुण्डली तक
१९४७ वि०	पृष्ठ ११२ की पाँचवीं कुण्डली से पृष्ठ ११४ की बारहवीं कुण्डली तक
१९४८ वि०	पृष्ठ ११४ की तेरहवीं कुण्डली से पृष्ठ ११७ की दूसरी कुण्डली तक
१९४९ वि०	पृष्ठ ११७ की तीसरी कुण्डली से पृष्ठ ११९ की तीसरी कुण्डली तक
१९५० वि०	पृष्ठ ११९ की चौथी कुण्डली से पृष्ठ १२१ की बारहवीं कुण्डली तक
१९५१ वि०	पृष्ठ १२१ की तेरहवीं कुण्डली से पृष्ठ १२४ की पहली कुण्डली तक
१९५२ वि०	पृष्ठ १२४ की दूसरी कुण्डली से पृष्ठ १२६ की चौथी कुण्डली तक
१९५३ वि०	पृष्ठ १२६ की पाँचवीं कुण्डली से पृष्ठ १२८ की नवीं कुण्डली तक
१९५४ वि०	पृष्ठ १२८ की दसवीं कुण्डली से पृष्ठ १३० की दसवीं कुण्डली तक
१९५५ वि०	पृष्ठ १३० की ग्यारहवीं कुण्डली से पृष्ठ १३३ की पहली कुण्डली तक
१९५६ वि०	पृष्ठ १३३ की दूसरी कुण्डली से पृष्ठ १३५ की सातवीं कुण्डली तक
१९५७ वि०	पृष्ठ १३५ की आठवीं कुण्डली से पृष्ठ १३७ की नवीं कुण्डली तक
१९५८ वि०	पृष्ठ १३७ की दसवीं कुण्डली से पृष्ठ १४० की चौथी कुण्डली तक
१९५९ वि०	पृष्ठ १४० की पाँचवीं कुण्डली से पृष्ठ १४२ की चौदहवीं कुण्डली तक
१९६० वि०	पृष्ठ १४२ की पन्द्रहवीं कुण्डली से पृष्ठ १४५ की दूसरी कुण्डली तक
१९६१ वि०	पृष्ठ १४५ की तीसरी कुण्डली से पृष्ठ १४७ की दसवीं कुण्डली तक
१९६२ वि०	पृष्ठ १४७ की ग्यारहवीं कुण्डली से पृष्ठ १५० की पहली कुण्डली तक

कु०
पृ०

१९६३ वि०	पृष्ठ २५० की दूसरी कुण्डली से पृष्ठ २५२ की चौथी कुण्डली तक
१९६४ वि०	पृष्ठ २५२ की पाँचवीं कुण्डली से पृष्ठ २५४ की चौदहवीं कुण्डली तक
१९६५ वि०	पृष्ठ २५४ की पन्द्रहवीं कुण्डली से पृष्ठ २५६ की चौदहवीं कुण्डली तक
१९६६ वि०	पृष्ठ २५६ की पन्द्रहवीं कुण्डली से पृष्ठ २५९ की चौथी कुण्डली तक
१९६७ वि०	पृष्ठ २५९ की पाँचवीं कुण्डली से पृष्ठ २६१ की छठी कुण्डली तक
१९६८ वि०	पृष्ठ २६१ की सातवीं कुण्डली से पृष्ठ २६३ की बारहवीं कुण्डली तक
१९६९ वि०	पृष्ठ २६३ की तेरहवीं कुण्डली से पृष्ठ २६६ की पाँचवीं कुण्डली तक
१९७० वि०	पृष्ठ २६६ की छठी कुण्डली से पृष्ठ २६८ की छठी कुण्डली तक
१९७१ वि०	पृष्ठ २६८ की सातवीं कुण्डली से पृष्ठ २७० की ग्यारहवीं कुण्डली तक
१९७२ वि०	पृष्ठ २७० की बारहवीं कुण्डली से पृष्ठ २७३ की छठी कुण्डली तक
१९७३ वि०	पृष्ठ २७३ की सातवीं कुण्डली से पृष्ठ २७५ की आठवीं कुण्डली तक
१९७४ वि०	पृष्ठ २७५ की नवीं कुण्डली से पृष्ठ २७७ की बारहवीं कुण्डली तक
१९७५ वि०	पृष्ठ २७७ की तेरहवीं कुण्डली से पृष्ठ २७९ की पन्द्रहवीं कुण्डली तक
१९७६ वि०	पृष्ठ २८० की पहली कुण्डली से पृष्ठ २८१ की पन्द्रहवीं कुण्डली तक
१९७७ वि०	पृष्ठ २८२ की पहली कुण्डली से पृष्ठ २८४ की पाँचवीं कुण्डली तक
१९७८ वि०	पृष्ठ २८४ की छठी कुण्डली से पृष्ठ २८६ की दसवीं कुण्डली तक
१९७९ वि०	पृष्ठ २८६ की ग्यारहवीं कुण्डली से पृष्ठ २८८ की तेरहवीं कुण्डली तक
१९८० वि०	पृष्ठ २८८ की चौदहवीं कुण्डली से पृष्ठ २९० की पन्द्रहवीं कुण्डली तक

१९८१ वि०	पृष्ठ १९१ की पहली कुण्डली से पृष्ठ १९३ की सातवीं कुण्डली तक
१९८२ वि०	पृष्ठ १९३ की आठवीं कुण्डली से पृष्ठ १९५ की आठवीं कुण्डली तक
१९८३ वि०	पृष्ठ १९५ की नवीं कुण्डली से पृष्ठ १९७ की दसवीं कुण्डली तक
१९८४ वि०	पृष्ठ १९७ की ग्यारहवीं कुण्डली से पृष्ठ १९९ की ग्यारहवीं कुण्डली तक
१९८५ वि०	पृष्ठ १९९ की बारहवीं कुण्डली से पृष्ठ २०२ की तीसरी कुण्डली तक
१९८६ वि०	पृष्ठ २०२ की चौथी कुण्डली से पृष्ठ २०४ की पाँचवीं कुण्डली तक
१९८७ वि०	पृष्ठ २०४ की छठी कुण्डली से पृष्ठ २०६ की आठवीं कुण्डली तक
१९८८ वि०	पृष्ठ २०६ की नवीं कुण्डली से पृष्ठ २०८ की बारहवीं कुण्डली तक
१९८९ वि०	पृष्ठ २०८ की तेरहवीं कुण्डली से पृष्ठ २११ की पहली कुण्डली तक
१९९० वि०	पृष्ठ २११ की दूसरी कुण्डली से पृष्ठ २१३ की चौथी कुण्डली तक
१९९१ वि०	पृष्ठ २१३ की पाँचवीं कुण्डली से पृष्ठ २१५ की ग्यारहवीं कुण्डली तक
१९९२ वि०	पृष्ठ २१५ की बारहवीं कुण्डली से पृष्ठ २१७ की चौदहवीं कुण्डली तक
१९९३ वि०	पृष्ठ २१७ की पन्द्रहवीं कुण्डली से पृष्ठ २१९ की चौथी कुण्डली तक
१९९४ वि०	पृष्ठ २२० की पाँचवीं कुण्डली से पृष्ठ २२२ की आठवीं कुण्डली तक
१९९५ वि०	पृष्ठ २२२ की नवीं कुण्डली से पृष्ठ २२४ की दसवीं कुण्डली तक
१९९६ वि०	पृष्ठ २२४ की ग्यारहवीं कुण्डली से पृष्ठ २२६ की तेरहवीं कुण्डली तक
१९९७ वि०	पृष्ठ २२६ की चौदहवीं कुण्डली से पृष्ठ २२९ की तीसरी कुण्डली तक
१९९८ वि०	पृष्ठ २२९ की चौथी कुण्डली से पृष्ठ २३१ की छठी कुण्डली तक

१९९९ वि०	पृष्ठ २३१ की सातवीं कुण्डली से पृष्ठ २३३ की बारहवीं कुण्डली तक
२००० वि०	पृष्ठ २३३ की तेरहवीं कुण्डली से पृष्ठ २३६ की पन्द्रहवीं कुण्डली तक
२००१ वि०	पृष्ठ २५१ की पहली कुण्डली से पृष्ठ २५३ की नवीं कुण्डली तक
२००२ वि०	पृष्ठ २५३ की दसवीं कुण्डली से पृष्ठ २५५ की तेरहवीं कुण्डली तक
२००३ वि०	पृष्ठ २५५ की चौदहवीं कुण्डली से पृष्ठ २५८ की दूसरी कुण्डली तक
२००४ वि०	पृष्ठ २५८ की तीसरी कुण्डली से पृष्ठ २६० की तेरहवीं कुण्डली तक
२००५ वि०	पृष्ठ २६० की चौदहवीं कुण्डली से पृष्ठ २६३ की तीसरी कुण्डली तक
२००६ वि०	पृष्ठ २६३ की चौथी कुण्डली से पृष्ठ २६५ की दसवीं कुण्डली तक
२००७ वि०	पृष्ठ २६५ की ग्यारहवीं कुण्डली से पृष्ठ २६८ की दूसरी कुण्डली तक
२००८ वि०	पृष्ठ २६८ की तीसरी कुण्डली से पृष्ठ २७० की तीसरी कुण्डली तक
२००९ वि०	पृष्ठ २७० की चौथी कुण्डली से पृष्ठ २७२ की पाँचवीं कुण्डली तक
२०१० वि०	पृष्ठ २७२ की छठी कुण्डली से पृष्ठ २७४ की दसवीं कुण्डली तक
२०११ वि०	पृष्ठ २७४ की ग्यारहवीं कुण्डली से पृष्ठ २७६ की ग्यारहवीं कुण्डली तक
२०१२ वि०	पृष्ठ २७६ की बारहवीं कुण्डली से पृष्ठ २७९ की दूसरी कुण्डली तक
२०१३ वि०	पृष्ठ २७९ की तीसरी कुण्डली से पृष्ठ २८१ की तीसरी कुण्डली तक
२०१४ वि०	पृष्ठ २८१ की चौथी कुण्डली से पृष्ठ २८३ की आठवीं कुण्डली तक
२०१५ वि०	पृष्ठ २८३ की नवीं कुण्डली से पृष्ठ २८६ की दूसरी कुण्डली तक
२०१६ वि०	पृष्ठ २८६ की तीसरी कुण्डली से पृष्ठ २८८ की पाँचवीं कुण्डली तक

२०१७ वि०	पृष्ठ २८८ की छठी कुण्डली से पृष्ठ २९० की नवीं कुण्डली तक
२०१८ वि०	पृष्ठ २९० की दसवीं कुण्डली से पृष्ठ २९२ की तेरहवीं कुण्डली तक
२०१९ वि०	पृष्ठ २९२ की चौदहवीं कुण्डली से पृष्ठ २९५ की चौथी कुण्डली तक
२०२० वि०	पृष्ठ २९५ की पाँचवीं कुण्डली से पृष्ठ २९७ की नवीं कुण्डली तक
२०२१ वि०	पृष्ठ २९७ की दसवीं कुण्डली से पृष्ठ ३०० की दूसरी कुण्डली तक
२०२२ वि०	पृष्ठ ३०० की तीसरी कुण्डली से पृष्ठ ३०२ की पहली कुण्डली तक
२०२३ वि०	पृष्ठ ३०२ की दूसरी कुण्डली से पृष्ठ ३०४ की आठवीं कुण्डली तक
२०२४ वि०	पृष्ठ ३०४ की नवीं कुण्डली से पृष्ठ ३०६ की दसवीं कुण्डली तक
२०२५ वि०	पृष्ठ ३०६ की ग्यारहवीं कुण्डली से पृष्ठ ३०८ की पन्द्रहवीं कुण्डली तक
२०२६ वि०	पृष्ठ ३०९ की पहली कुण्डली से पृष्ठ ३११ की दूसरी कुण्डली तक
२०२७ वि०	पृष्ठ ३११ की तीसरी कुण्डली से पृष्ठ ३१३ की छठी कुण्डली तक
२०२८ वि०	पृष्ठ ३१३ की सातवीं कुण्डली से पृष्ठ ३१५ की आठवीं कुण्डली तक
२०२९ वि०	पृष्ठ ३१५ की नवीं कुण्डली से पृष्ठ ३१७ की चौदहवीं कुण्डली तक
२०३० वि०	पृष्ठ ३१७ की पन्द्रहवीं कुण्डली से पृष्ठ ३१९ की तेरहवीं कुण्डली तक
२०३१ वि०	पृष्ठ ३१९ की चौदहवीं कुण्डली से पृष्ठ ३२२ की पहली कुण्डली तक
२०३२ वि०	पृष्ठ ३२२ की दूसरी कुण्डली से पृष्ठ ३२४ की दसवीं कुण्डली तक
२०३३ वि०	पृष्ठ ३२४ की ग्यारहवीं कुण्डली से पृष्ठ ३२६ की ग्यारहवीं कुण्डली तक
२०३४ वि०	पृष्ठ ३२६ की बारहवीं कुण्डली से पृष्ठ ३२९ की पहली कुण्डली तक

पृ० सं० ५४३

२०३५ वि०	पृष्ठ ३२९ की दूसरी कुण्डली से पृष्ठ ३३१ की पाँचवीं कुण्डली तक
२०३६ वि०	पृष्ठ ३३१ की छठी कुण्डली से पृष्ठ ३३३ की दसवीं कुण्डली तक
२०३७ वि०	पृष्ठ ३३३ की ग्यारहवीं कुण्डली से पृष्ठ ३३६ की दूसरी कुण्डली तक
२०३८ वि०	पृष्ठ ३३६ की तीसरी कुण्डली से पृष्ठ ३३८ की छठी कुण्डली तक
२०३९ वि०	पृष्ठ ३३८ की सातवीं कुण्डली से पृष्ठ ३४० की पन्द्रहवीं कुण्डली तक
२०४० वि०	पृष्ठ ३४१ की पहली कुण्डली से पृष्ठ ३४३ की पन्द्रहवीं कुण्डली तक
२०४१ वि०	पृष्ठ ३४४ की पहली कुण्डली से पृष्ठ ३४६ की सातवीं कुण्डली तक
२०४२ वि०	पृष्ठ ३४६ की आठवीं कुण्डली से पृष्ठ ३४८ की ग्यारहवीं कुण्डली तक
२०४३ वि०	पृष्ठ ३४८ की बारहवीं कुण्डली से पृष्ठ ३५० की बारहवीं कुण्डली तक
२०४४ वि०	पृष्ठ ३५० की तेरहवीं कुण्डली से पृष्ठ ३५३ की दूसरी कुण्डली तक
२०४५ वि०	पृष्ठ ३५३ की तीसरी कुण्डली से पृष्ठ ३५५ की नवीं कुण्डली तक
२०४६ वि०	पृष्ठ ३५५ की दसवीं कुण्डली से पृष्ठ ३५८ की पहली कुण्डली तक
२०४७ वि०	पृष्ठ ३५८ की दूसरी कुण्डली से पृष्ठ ३६० की सातवीं कुण्डली तक
२०४८ वि०	पृष्ठ ३६० की आठवीं कुण्डली से पृष्ठ ३६२ की दसवीं कुण्डली तक
२०४९ वि०	पृष्ठ ३६२ की ग्यारहवीं कुण्डली से पृष्ठ ३६४ की पन्द्रहवीं कुण्डली तक
२०५० वि०	पृष्ठ ३६५ की पहली कुण्डली से पृष्ठ ३६७ की सातवीं कुण्डली तक
२०५१ वि०	पृष्ठ ३६७ की आठवीं कुण्डली से पृष्ठ ३६९ की तीसरी कुण्डली तक
२०५२ वि०	पृष्ठ ३६९ की चौथी कुण्डली से पृष्ठ ३७१ की आठवीं कुण्डली तक

कु० प०

२०५३ वि०	पृष्ठ ३७१ की नवीं कुण्डली से पृष्ठ ३७३ की चौदहवीं कुण्डली तक
२०५४ वि०	पृष्ठ ३७३ की पन्द्रहवीं कुण्डली से पृष्ठ ३७६ की तीसरी कुण्डली तक
२०५५ वि०	पृष्ठ ३७६ की चौथी कुण्डली से पृष्ठ ३७८ की पाँचवीं कुण्डली तक
२०५६ वि०	पृष्ठ ३७८ की छठी कुण्डली से पृष्ठ ३८० की दसवीं कुण्डली तक
२०५७ वि०	पृष्ठ ३८० की ग्यारहवीं कुण्डली से पृष्ठ ३८२ की पन्द्रहवीं कुण्डली तक
२०५८ वि०	पृष्ठ ३८३ की पहली कुण्डली से पृष्ठ ३८५ की दूसरी कुण्डली तक
२०५९ वि०	पृष्ठ ३८५ की तीसरी कुण्डली से पृष्ठ ३८७ की पहली कुण्डली तक
२०६० वि०	पृष्ठ ३८७ की दूसरी कुण्डली से पृष्ठ ३८९ की चौथी कुण्डली तक
२०६१ वि०	पृष्ठ ३८९ की पाँचवीं कुण्डली से पृष्ठ ३९१ की ग्यारहवीं कुण्डली तक
२०६२ वि०	पृष्ठ ३९१ की बारहवीं कुण्डली से पृष्ठ ३९३ की आठवीं कुण्डली तक
२०६३ वि०	पृष्ठ ३९३ की नवीं कुण्डली से पृष्ठ ३९५ की सातवीं कुण्डली तक
२०६४ वि०	पृष्ठ ३९५ की आठवीं कुण्डली से पृष्ठ ३९७ की ग्यारहवीं कुण्डली तक
२०६५ वि०	पृष्ठ ३९७ की बारहवीं कुण्डली से पृष्ठ ३९९ की चौदहवीं कुण्डली तक
२०६६ वि०	पृष्ठ ३९९ की पन्द्रहवीं कुण्डली से पृष्ठ ४०२ की चौथी कुण्डली तक
२०६७ वि०	पृष्ठ ४०२ की पाँचवीं कुण्डली से पृष्ठ ४०४ की ग्यारहवीं कुण्डली तक
२०६८ वि०	पृष्ठ ४०४ की बारहवीं कुण्डली से पृष्ठ ४०६ की चौदहवीं कुण्डली तक
२०६९ वि०	पृष्ठ ४०६ की पन्द्रहवीं कुण्डली से पृष्ठ ४०९ की तीसरी कुण्डली तक
२०७० वि०	पृष्ठ ४०९ की चौथी कुण्डली से पृष्ठ ४११ की दूसरी कुण्डली तक

मृ० सं० २९८

२०७१ वि०	पृष्ठ ४११ की तीसरी कुण्डली से पृष्ठ ४१३ की दूसरी कुण्डली तक
२०७२ वि०	पृष्ठ ४१३ की तीसरी कुण्डली से पृष्ठ ४१५ की चौथी कुण्डली तक
२०७३ वि०	पृष्ठ ४१५ की पाँचवीं कुण्डली से पृष्ठ ४१७ की नवीं कुण्डली तक
२०७४ वि०	पृष्ठ ४१७ की दसवीं कुण्डली से पृष्ठ ४१९ की ग्यारहवीं कुण्डली तक
२०७५ वि०	पृष्ठ ४१९ की बारहवीं कुण्डली से पृष्ठ ४२१ की पन्द्रहवीं कुण्डली तक
२०७६ वि०	पृष्ठ ४२२ की पहली कुण्डली से पृष्ठ ४२४ की पाँचवीं कुण्डली तक
२०७७ वि०	पृष्ठ ४२४ की छठी कुण्डली से पृष्ठ ४२६ की बारहवीं कुण्डली तक
२०७८ वि०	पृष्ठ ४२६ की तेरहवीं कुण्डली से पृष्ठ ४२८ की पन्द्रहवीं कुण्डली तक
२०७९ वि०	पृष्ठ ४२९ की पहली कुण्डली से पृष्ठ ४३१ की तीसरी कुण्डली तक
२०८० वि०	पृष्ठ ४३१ की चौथी कुण्डली से पृष्ठ ४३३ की सातवीं कुण्डली तक
२०८१ वि०	पृष्ठ ४३३ की आठवीं कुण्डली से पृष्ठ ४३५ की नवीं कुण्डली तक
२०८२ वि०	पृष्ठ ४३५ की दसवीं कुण्डली से पृष्ठ ४३७ की तेरहवीं कुण्डली तक
२०८३ वि०	पृष्ठ ४३७ की चौदहवीं कुण्डली से पृष्ठ ४४० की पहली कुण्डली तक
२०८४ वि०	पृष्ठ ४४० की दूसरी कुण्डली से पृष्ठ ४४२ की सातवीं कुण्डली तक
२०८५ वि०	पृष्ठ ४४२ की आठवीं कुण्डली से पृष्ठ ४४४ की ग्यारहवीं कुण्डली तक
२०८६ वि०	पृष्ठ ४४४ की बारहवीं कुण्डली से पृष्ठ ४४७ की पाँचवीं कुण्डली तक
२०८७ वि०	पृष्ठ ४४७ की छठी कुण्डली से पृष्ठ ४४९ की तेरहवीं कुण्डली तक
२०८८ वि०	पृष्ठ ४४९ की चौदहवीं कुण्डली से पृष्ठ ४५२ की पहली कुण्डली तक

कु० प०

मू० सं०

		कु० प०
२०८९ वि०	पृष्ठ ४५२ की दूसरी कुण्डली से पृष्ठ ४५४ की पाँचवीं कुण्डली तक	
२०९० वि०	पृष्ठ ४५४ की छठी कुण्डली से पृष्ठ ४५६ की आठवीं कुण्डली तक	
२०९१ वि०	पृष्ठ ४५६ की नवीं कुण्डली से पृष्ठ ४५९ की दूसरी कुण्डली तक	
२०९२ वि०	पृष्ठ ४५९ की तीसरी कुण्डली से पृष्ठ ४६१ की दसवीं कुण्डली तक	
२०९३ वि०	पृष्ठ ४६१ की नवीं कुण्डली से पृष्ठ ४६३ की चौदहवीं कुण्डली तक	
२०९४ वि०	पृष्ठ ४६३ की पन्द्रहवीं कुण्डली से पृष्ठ ४६६ की छठी कुण्डली तक	
२०९५ वि०	पृष्ठ ४६६ की सातवीं कुण्डली से पृष्ठ ४६८ की बारहवीं कुण्डली तक	
२०९६ वि०	पृष्ठ ४६८ की तेरहवीं कुण्डली से पृष्ठ ४७० की तेरहवीं कुण्डली तक	
२०९७ वि०	पृष्ठ ४७० की चौदहवीं कुण्डली से पृष्ठ ४७३ की पन्द्रहवीं कुण्डली तक	
२०९८ वि०	पृष्ठ ४७४ की पहली कुण्डली से पृष्ठ ४७५ की आठवीं कुण्डली तक	
२०९९ वि०	पृष्ठ ४७५ की नवीं कुण्डली से पृष्ठ ४७७ की ग्यारहवीं कुण्डली तक	
२१०० वि०	पृष्ठ ४७७ की बारहवीं कुण्डली से पृष्ठ ४८० की अन्तिम कुण्डली तक	

<u>टिप्पणी</u>: (१) विक्रम सम्वत् १९४२ से २००० वि. तक की सूर्य-कुण्डलियां पृष्ठ संख्या १०० से पृष्ठ संख्या २३६ तक दी गई हैं तथा विक्रम सम्वत् २००१ से २१०० तक की सूर्य-कुण्डलियां पृष्ठ संख्या २४१ से पृष्ठ संख्या ४८० तक प्रदर्शित हैं। उपर्युक्त सारिणी के आधार पर आप अपने जन्म-सम्वत् की सूर्य कुण्डली को सम्बन्धित पृष्ठ पर ढूँढ सकते हैं।

टिप्पणी (२) - एक दिन में बारहों लग्न बदलती हैं। एक लग्न लगभग २ घंटे की होती है, अत: प्रतिदिन की लग्न-कुण्डली एवं सूर्य-कुण्डली में लग्न राशि का अन्तर पड़ना स्वाभाविक है। सूर्य-राशि कुण्डली से लग्न-राशि कुण्डली जानने के लिए निम्नलिखित प्रक्रिया पर ध्यान देना चाहिए -

यदि किसी दिन की सूर्य-राशि-कुण्डली 'कर्क-लग्न' की है (उदाहरणार्थ- पृष्ठ संख्या २०३ की पहली कुण्डली) तो उस दिन की अन्य कुण्डलियां निम्नानुसार तय्यार होंगी -

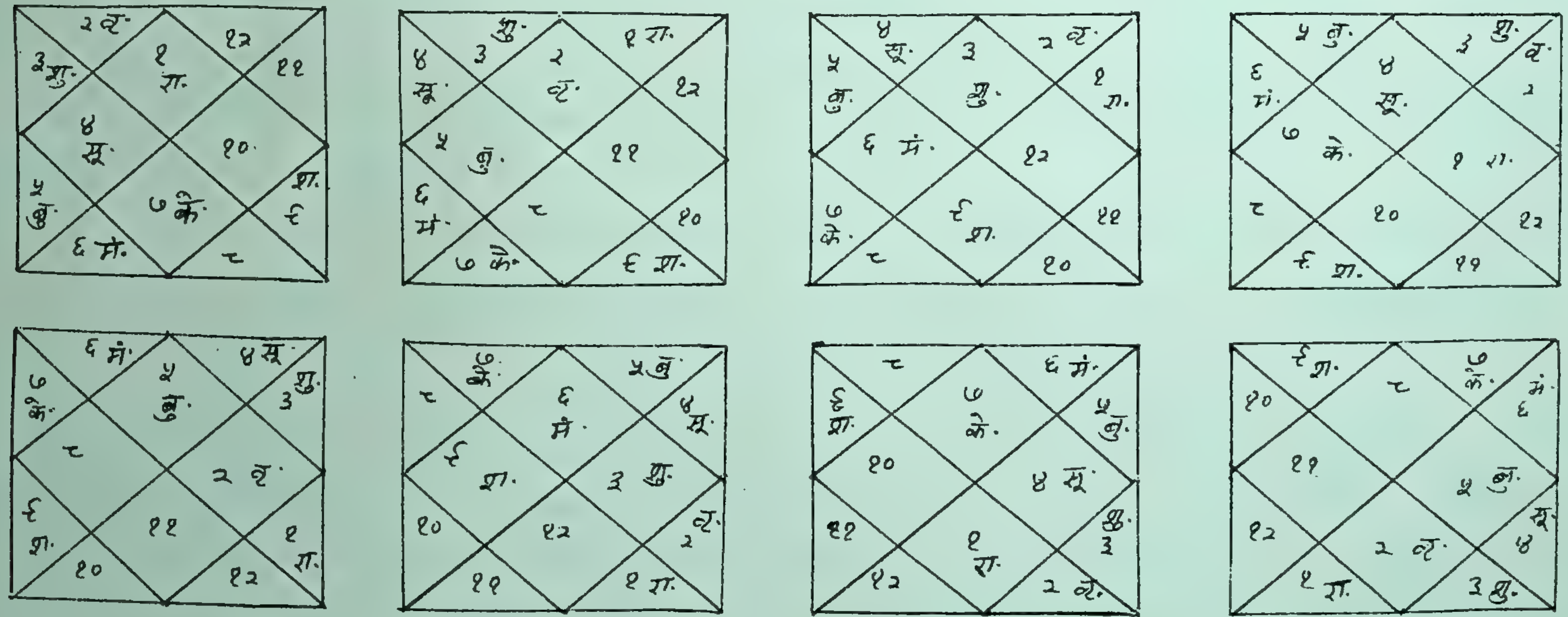

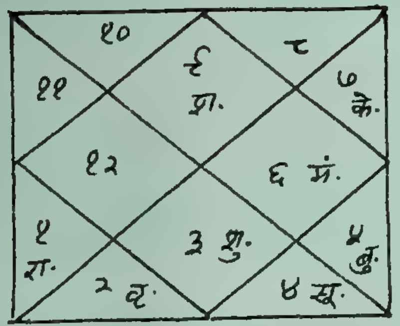 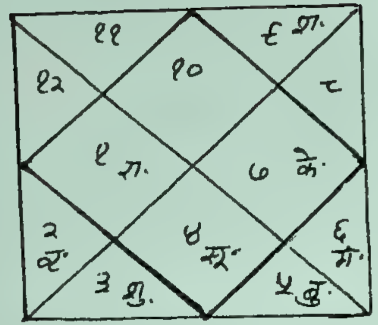 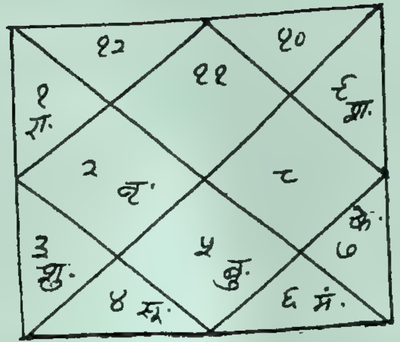 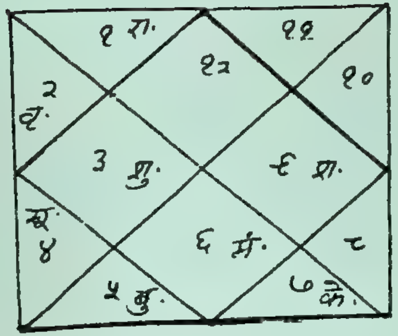

उक्त नियमानुसार आप सूर्य-कुण्डली के आधार पर साथ वास्तविक जन्मकुण्डली का ज्ञान तुरन्त प्राप्त कर सकते हैं।

<u>टिप्पणी (३)</u> - 'चन्द्रमा' एक राशि पर लगभग २¼ दिन विचरण करता है, तदुपरान्त अगली राशि पर चला जाता है, अतः एक चन्द्रमा के कारण जन्म कुण्डली की ग्रह-स्थिति अति शीघ्र बदल जाती है। यदि प्रत्येक सूर्य-कुण्डली के साथ चन्द्रमा के राशि-परिवर्तन को भी प्रदर्शित किया जाय, तो इस ग्रंथ में जितनी सूर्य-कुण्डलियां प्रदर्शित हैं, उनकी संख्या बढ़कर लगभग ६ गुनी हो जाती और यदि चन्द्रमा सहित प्रत्येक दिन की लग्नकुण्डलियों को प्रदर्शित किया जाता तो उस संख्या में १२ गुणा वृद्धि और हो जाती। प्रस्तुत ग्रंथ में विक्रम सम्वत् १९४२ से २१०० वि० तक अर्थात् १५८ वर्ष की सूर्य-कुण्डलियां प्रदर्शित हैं, जो संख्या में ६००० के लगभग हैं। इन्ही वर्षों की चन्द्रमा सहित सभी लग्न कुण्डलियां यदि प्रदर्शित की जाती तो वे साठ हजार से भी अधिक बैठती। इतनी अधिक संख्या में कुण्डलियां प्रदर्शित करने पर ग्रंथ का आकार तथा मूल्य इतना अधिक बढ़ जाता कि उसे खरीद पाना सर्वसाधारण के लिए असंभव सिद्ध होता। इसी कारण इस ग्रंथ में उक्त १५८ वर्ष की केवल सूर्य-कुण्डलियों को ही प्रदर्शित किया गया है। इनके आधार पर लग्न कुण्डलियां तय्यार करने की विधि

उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। रही चन्द्र-स्थिति की बात, सो उसे अपनी जन्म कुण्डली के अनुसार अथवा सम्बन्धित वर्ष, मास, तिथि के पञ्चाङ्गानुसार जान लेना चाहिए। इस ग्रंथ में एक-दो स्थानों पर सूर्य-कुण्डली के साथ ही उस ग्रहस्थिति की लग्न कुण्डलियां भी दे दी गई हैं, परन्तु ऐसा उदाहरण प्रदर्शित करने की दृष्टि से ही किया गया है, सर्वत्र नहीं है।

<u>टिप्पणी (४)</u> - चन्द्र युक्त दैनिक लग्नकुण्डली के आधार पर फलादेश-कथन का नियम रखने पर, ग्रंथ की पृष्ठ संख्या करोड़ों में पहुँच जाना स्वाभाविक होता। उतने बड़े ग्रंथ का न तो लेखन ही संभव हो पाता और न प्रकाशन ही। वैसा ग्रंथ आज तक किसी ने देखा-सुना भी नहीं है। 'भृगु संहिता' नामक प्राचीन ग्रंथों के जो सीमित संख्या वाले पृष्ठ यत्र-तत्र उपलब्ध होते हैं, उनमें भी कुछेक जन्मकुण्डलियों का फलादेश ही देखने को मिलता है। उपलब्ध प्राचीन पृष्ठों में से किसी में ५० वर्ष की अवधि वाली समस्त जन्म कुण्डलियों का फलादेश भी उपलब्ध नहीं होता। ऐसे 'भृगुसंहिता' नामक प्राचीन ग्रंथ के जो पृष्ठ हमें वर्षों की खोज तथा परिश्रम के बाद उपलब्ध हो सके थे, उन्हें हमने अन्य ज्योतिषीय ग्रंथों से उपयोगी सामग्री के चयन के साथ अपने द्वारा सम्पादित 'भृगु संहिता महाशास्त्र' नामक ग्रंथ में संकलित किया है, जो "देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली ६" ने प्रकाशित किया है, परन्तु उक्त ग्रंथ में कुण्डलियों की संख्या लगभग ५०० ही थी, जिसके कारण अनेक पाठकों की यह मांग बनी रही कि उन्हें ऐसे ग्रंथ की आवश्यकता है, जिसमें उनकी जन्मकुण्डली भी अवश्य मिल जाय। ऐसे पाठकों की आकांक्षा पूर्ति के हेतु ही इस "भृगु संहिता महाशास्त्र कुण्डली-रहस्य" नामक ग्रंथ का सम्पादन किया गया है। इसमें सम्वत् १९४२ वि० से सं० २१०० वि० की अवधि में जन्म लेने वाले सभी जातकों की जन्मकालीन सूर्य-कुण्डलियां संकलित हैं। इन कुण्डलियों के आधार पर लग्न-कुण्डलियों को तय्यार किया जा सकता है, जिसकी विधि का उल्लेख ऊपर किया जा

चुका है। इस प्रकार आठ ग्रहों की स्थिति वाली सूर्य-कुण्डलियाँ इस ग्रंथ में संकलित हैं। चन्द्रमा की स्थिति सम्बन्धी जानकारी अपनी जन्मकुण्डली अथवा जन्मकालीन पञ्चाङ्ग के आधार पर प्राप्त करनी चाहिए।

इस ग्रंथ में प्रस्तुत सभी सूर्य-कुण्डलियों के फलादेश का वर्णन नहीं किया गया है। विक्रम सम्वत् १९६७ से २०४८ वि० तक की सूर्य कुण्डलियों का संक्षिप्त फलादेश ही उद्धृत किया गया है। इस अवधि वाली सूर्य-कुण्डलियों के नीचे जो क्रम-संख्या अंकित है, अगले प्रकरण में उसी क्रम संख्या पर उस कुण्डली का संक्षिप्त फलादेश वर्णित है।

किसी भी कुण्डली के फलादेश की विस्तृत जानकारी के लिए इस ग्रंथ के खण्ड १, ४ तथा ५ में वर्णित सिद्धान्तों का आश्रय लेना चाहिए। प्रकरण १, ४, ५ में जन्मकुण्डली विवेचक फलादेश के शास्त्रीय-सिद्धान्तों का उल्लेख किया गया है। इन नियमों के आधार पर किसी भी जन्मकुण्डली का यथोचित फलादेश ज्ञात किया जा सकता है।

पिछले पृष्ठ संख्या १०० से २३६ तक विक्रम सम्वत् १९५२ से २००० वि० तक की सूर्य कुण्डलियाँ प्रदर्शित की जा चुकी हैं। अगले पृष्ठ संख्या २४१ से ४८० तक में विक्रम सम्वत् २००१ से २१०० वि० तक की सूर्य कुण्डलियाँ प्रदर्शित हैं।

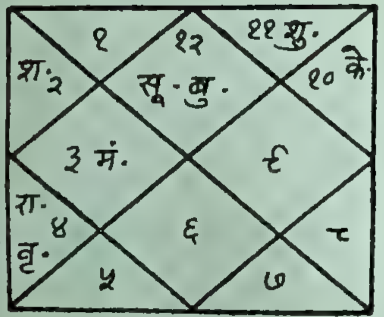

११७१

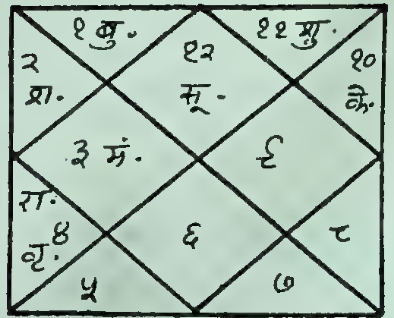

११७२

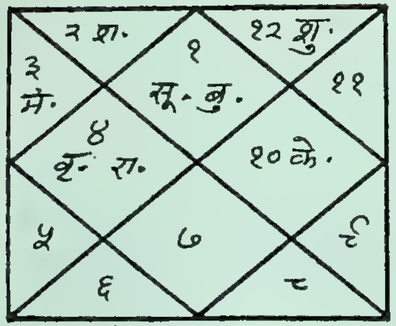

११७३

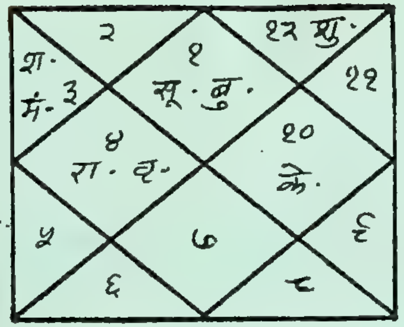

११७४

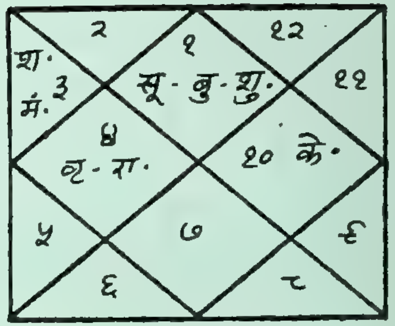

११७५

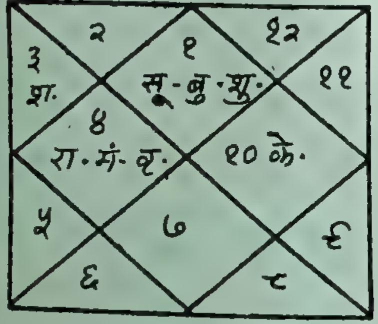

११७६

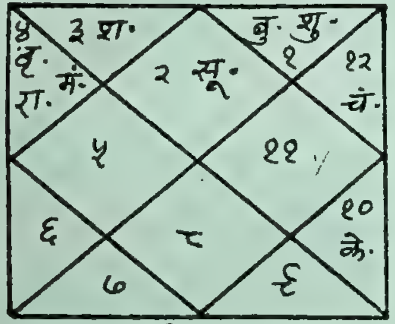

११७७

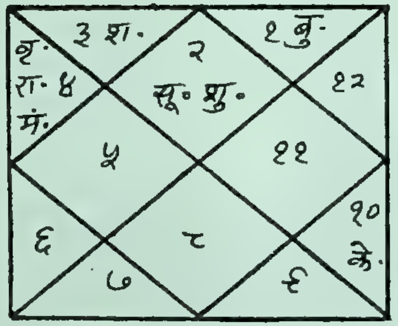

११७८

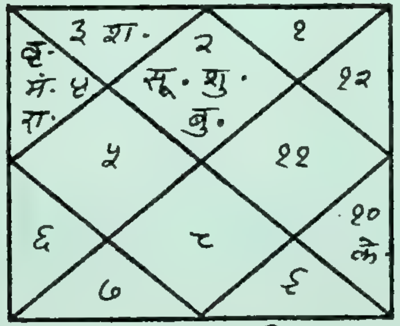

११७९

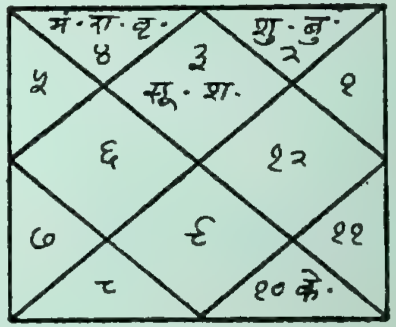

११८०

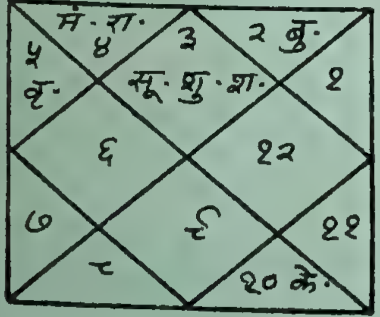

११८१

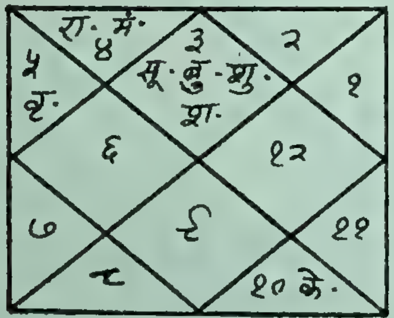

११८२

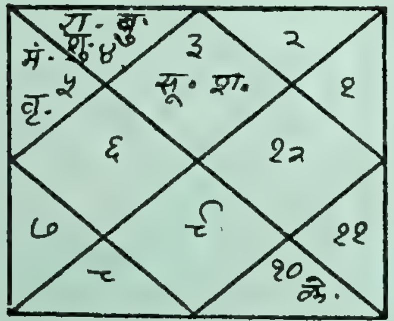

११८३

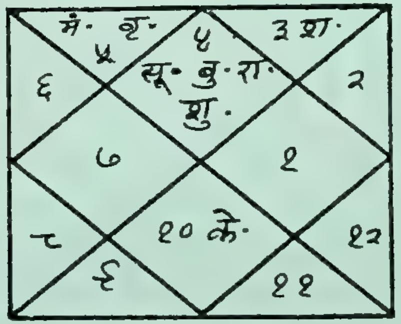

११८४

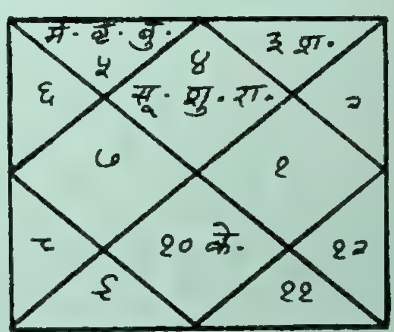

११८५

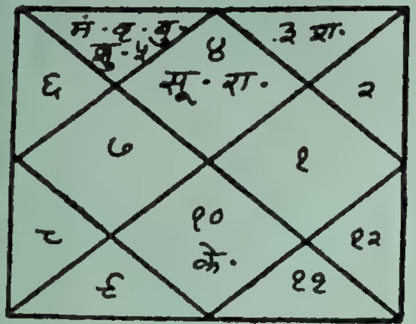

११८६

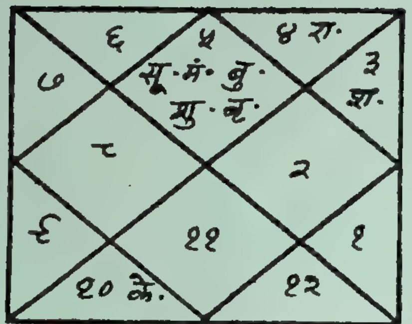

११८७

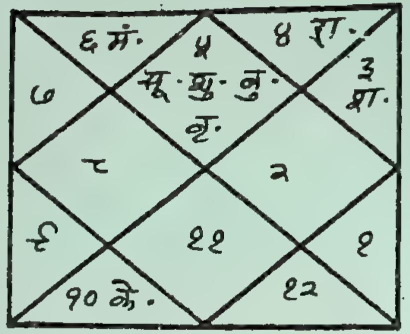

११८८

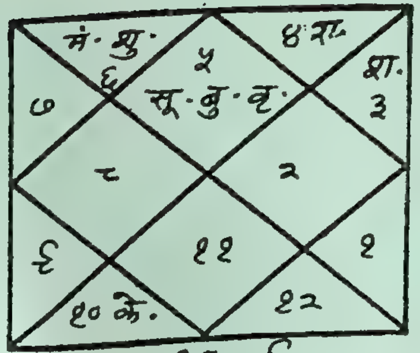

११८९

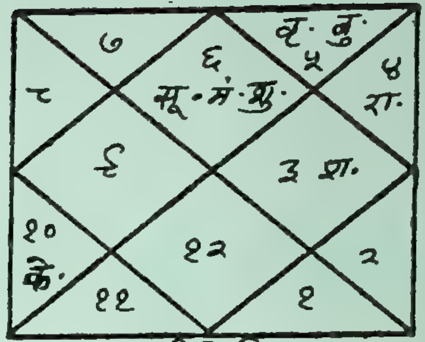

११९०

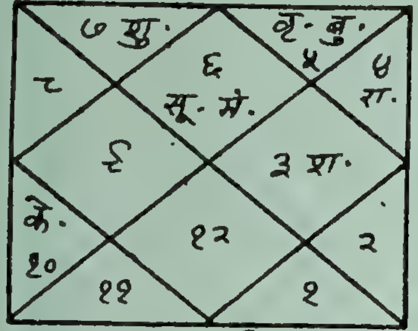

११९१

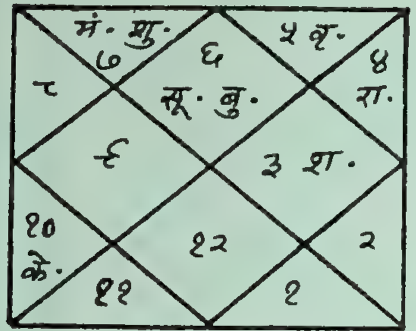

११९२

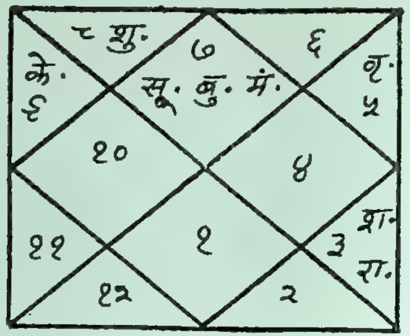

११९३

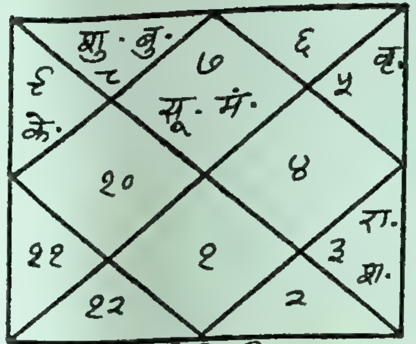

११९४

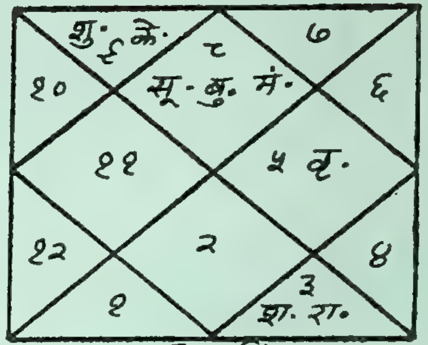

११९५

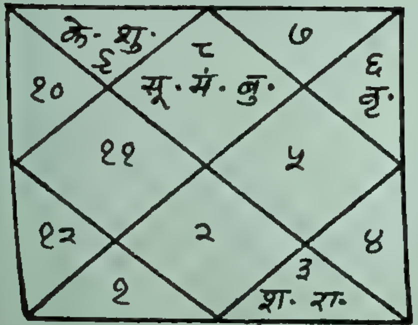

११९६

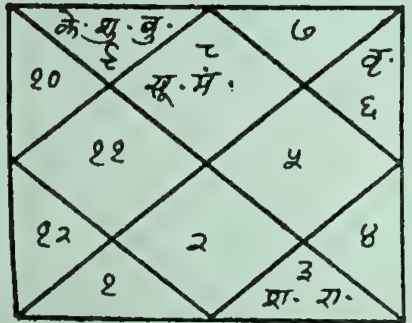

११९७

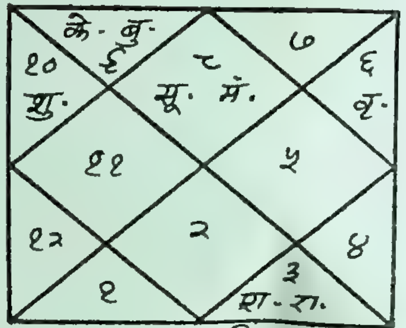

११९८

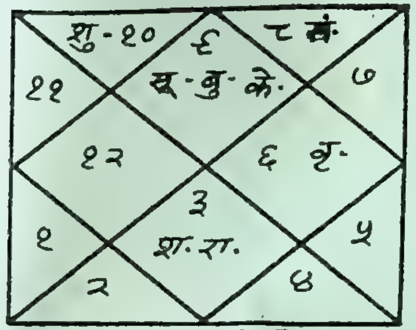

११९९

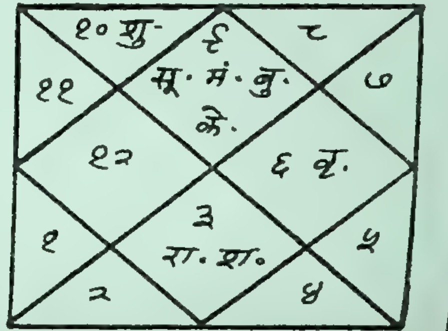

१२००

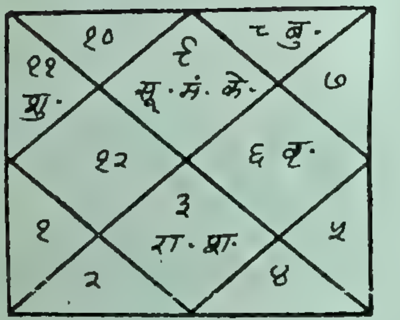

१२०१

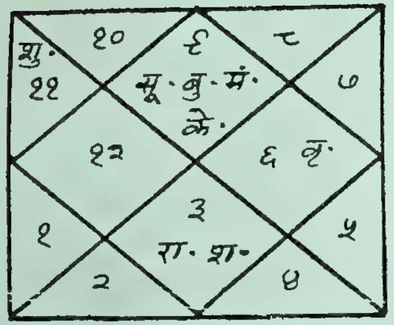

१२०२

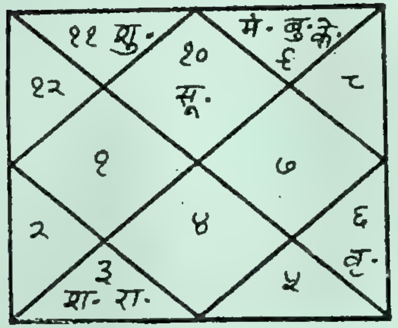

१२०३

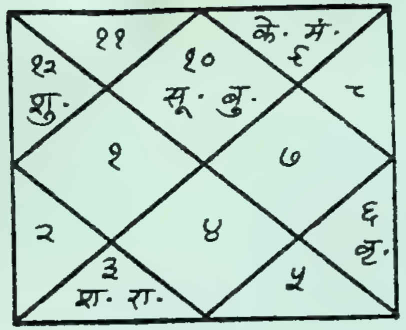

१२०४

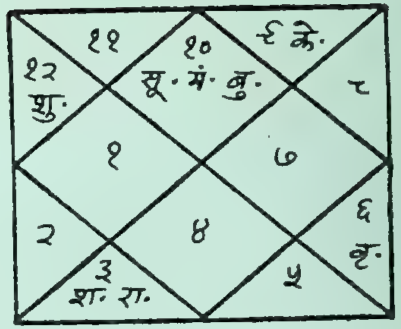

१२०५

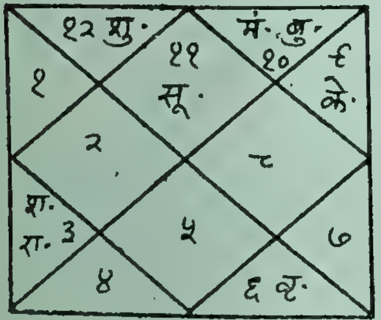

१२०६

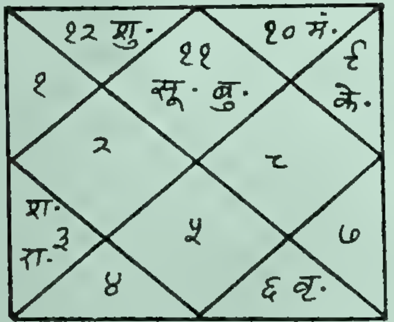

१२०७

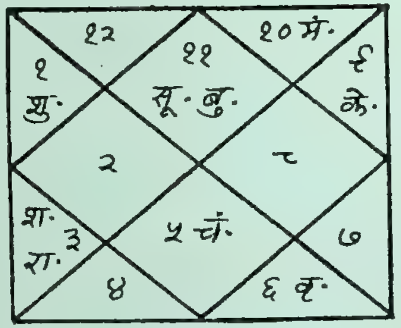

१२०८

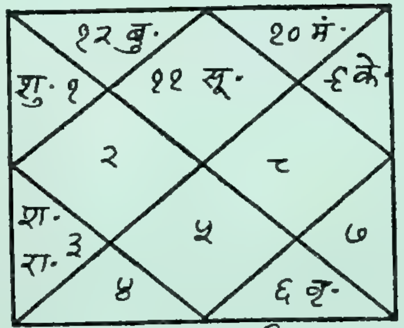

१२०९

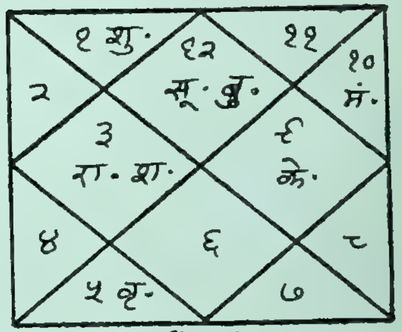

१२१०

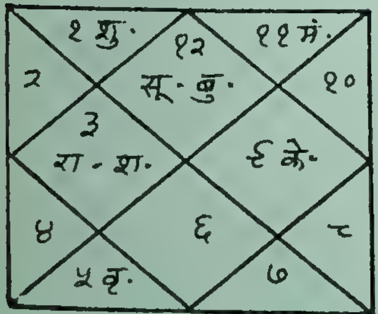

१२११

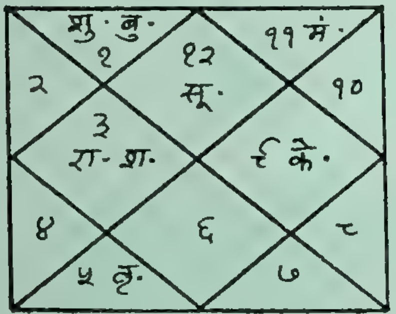

१२१२

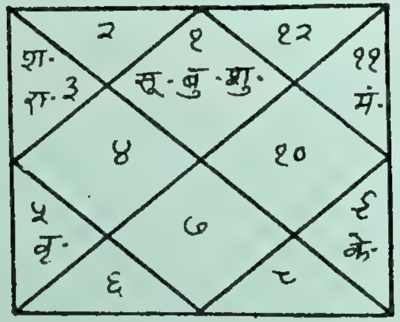

१२१३

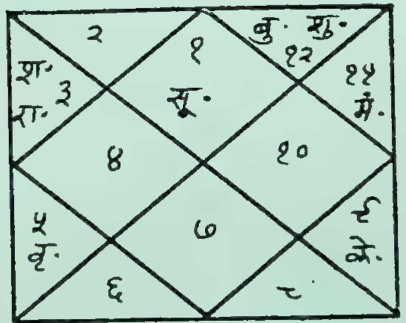

१२१४

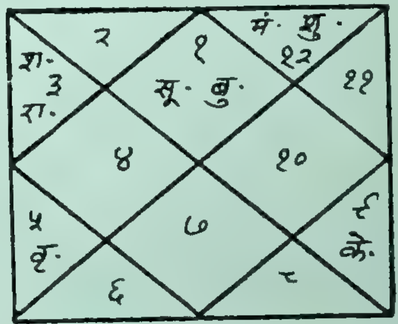

१२१५

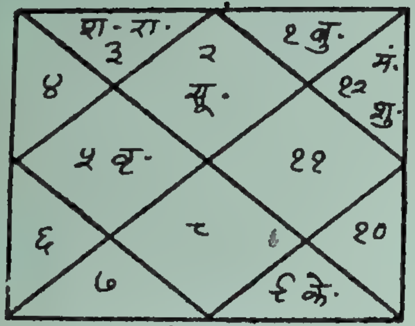

१२१६

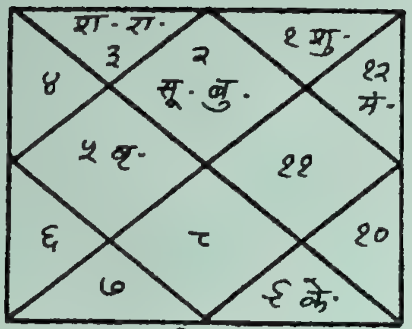

१२१७

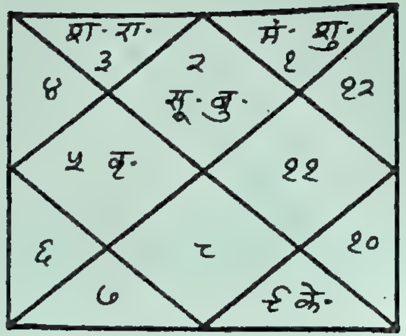

१२१८

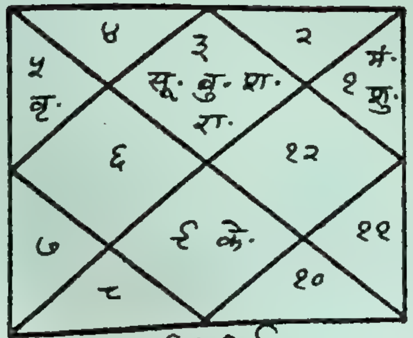

१२१९

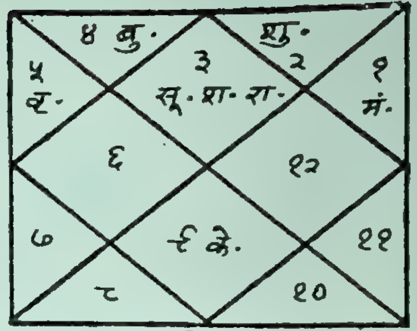

१२२०

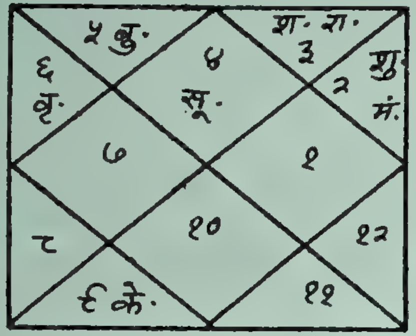

१२२१

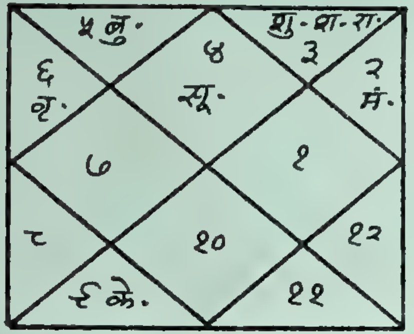

१२२२

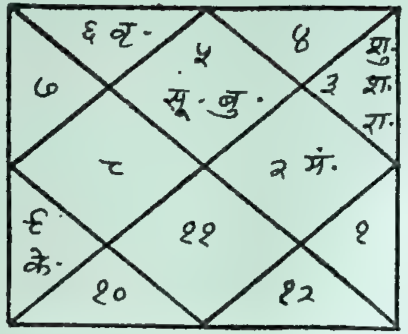

१२२३

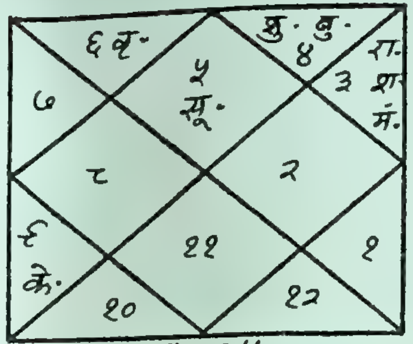

१२२४

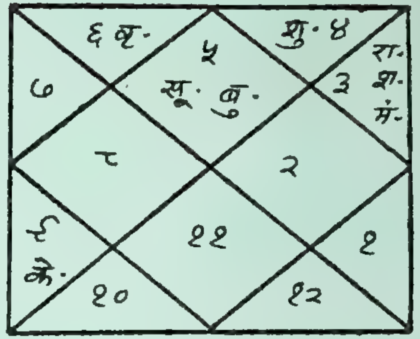

१२२५

१२२६

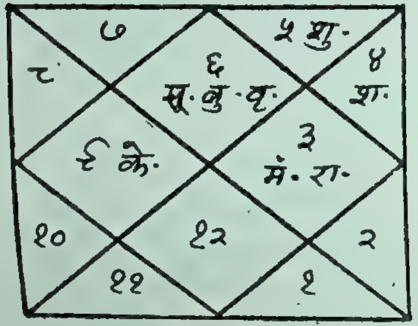

१२२७

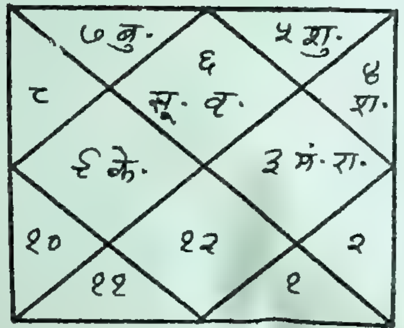

१२२८

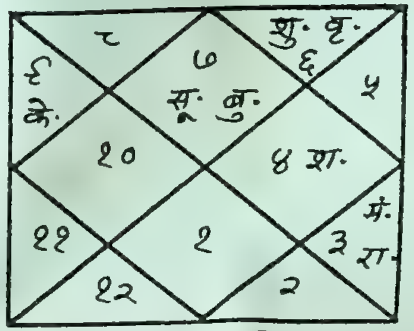

१२२९

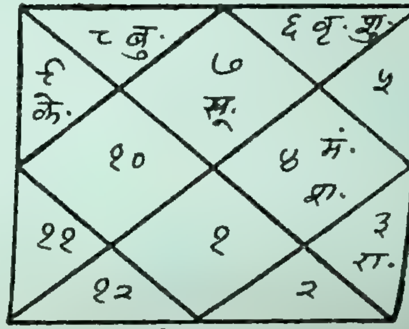

१२३०

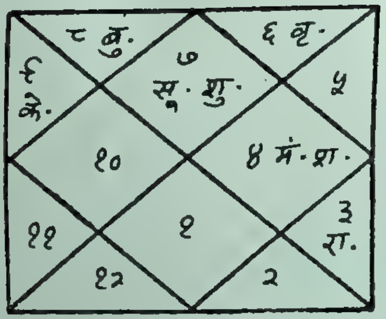

१२३१

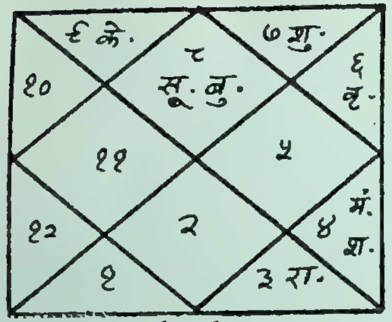

१२३२

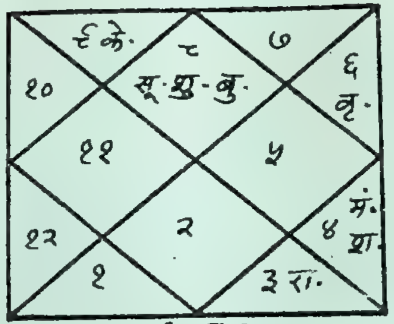

१२३३

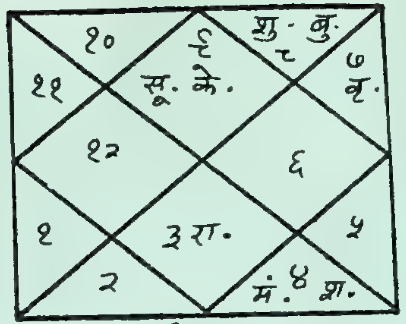

१२३४

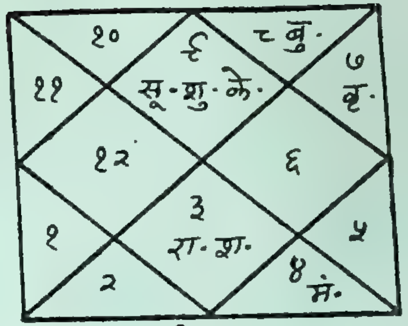

१२३५

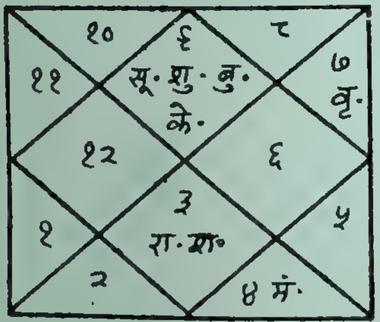

१२३६

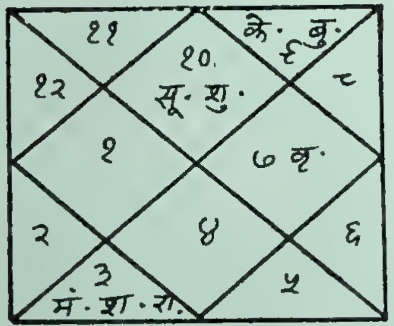

१२३७

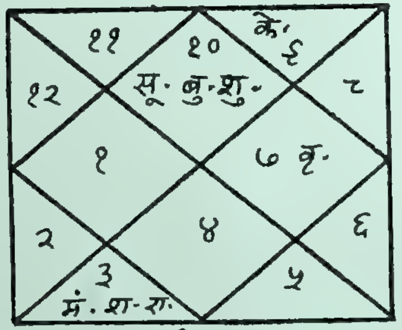

१२३८

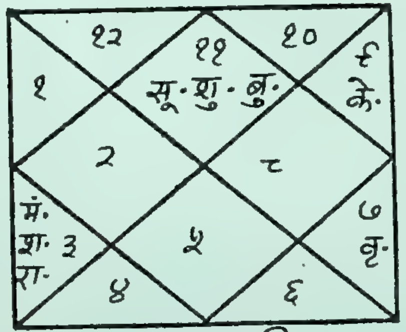

१२३९

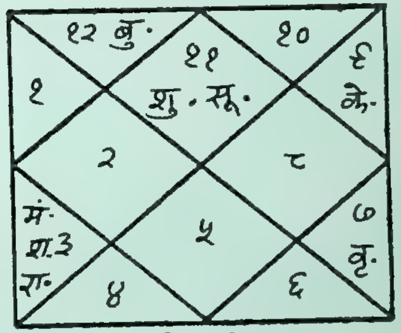

१२४०

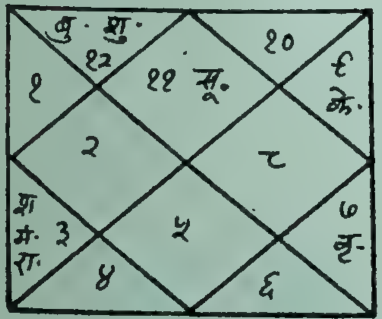

१२४१

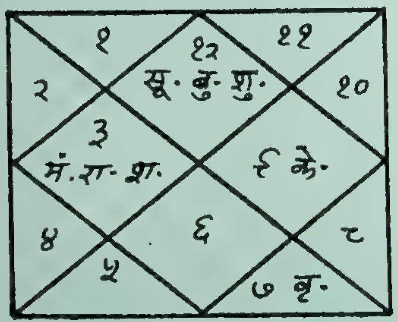

१२४२

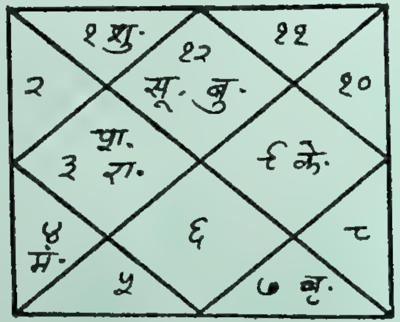

१२४३

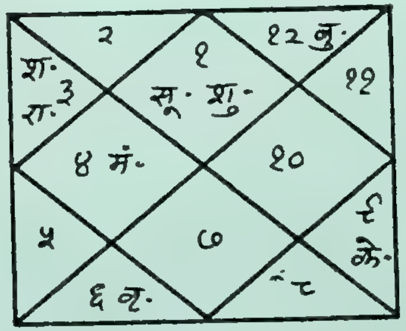

१२४४

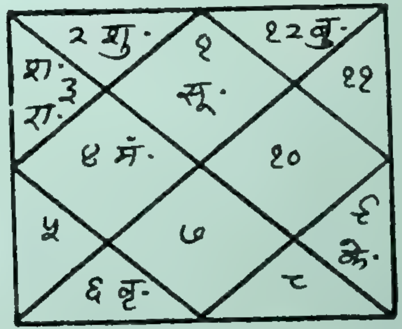

१२४५

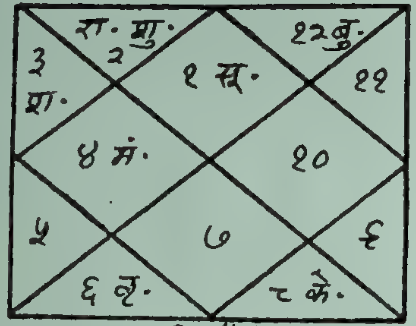

१२४६

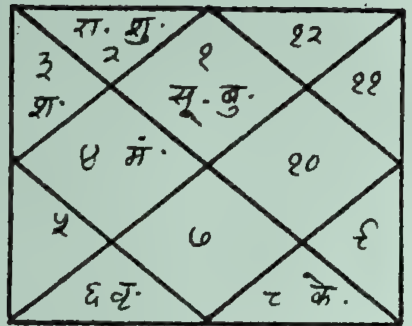

१२४७

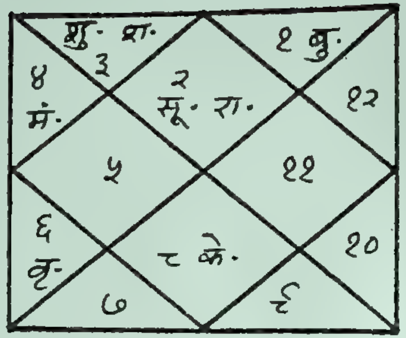

१२४८

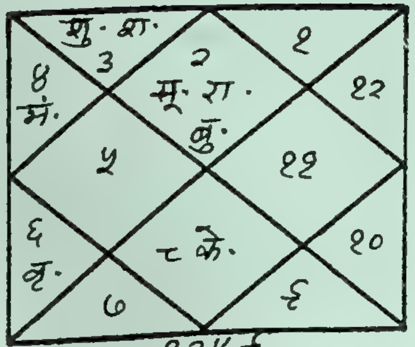

१२४९

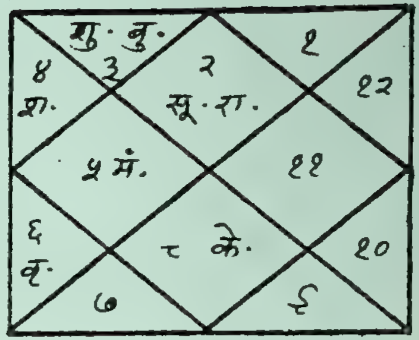

१२५०

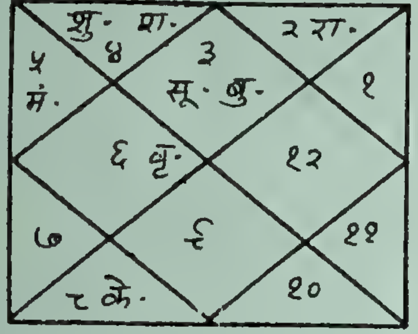

१२५१

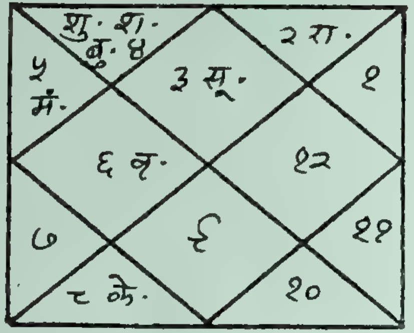

१२५२

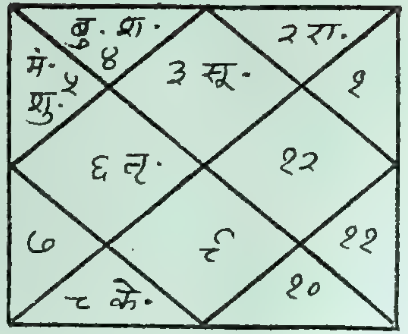

१२५३

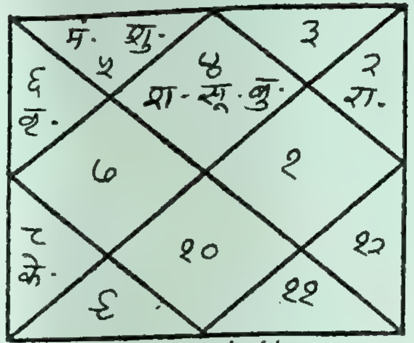

१२५४

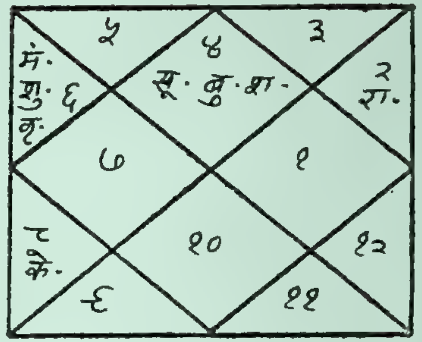

१२५५

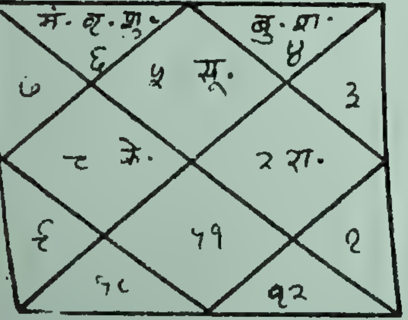

१२५६

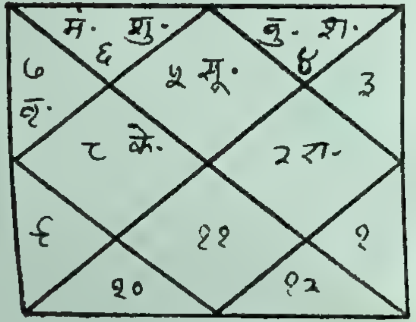

१२५७

१२५८

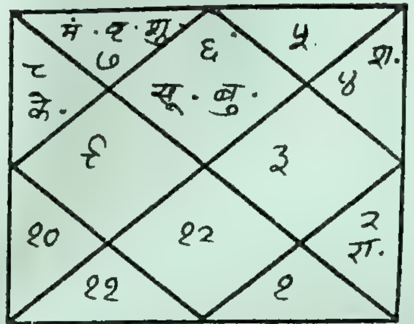

१२५९

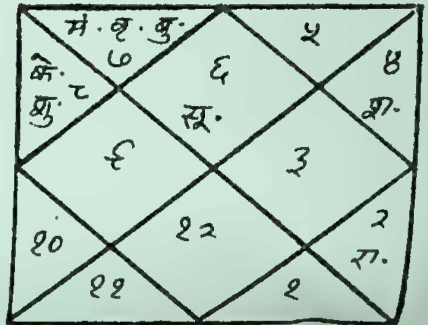

१२६०

१२६१

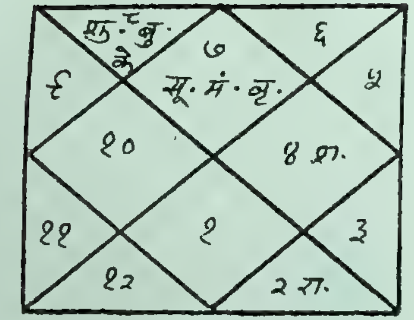

१२६२

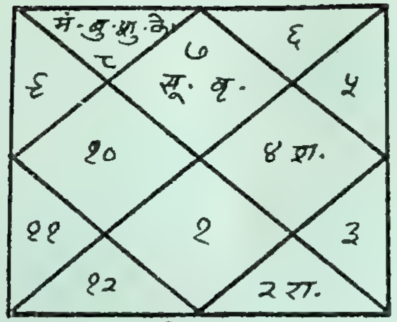

१२६३

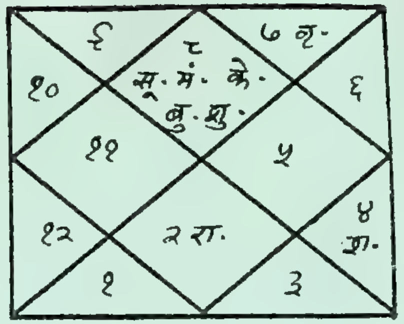

१२६४

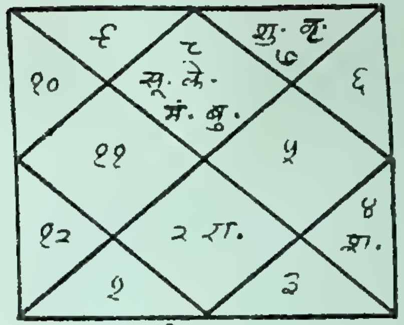

१२६५

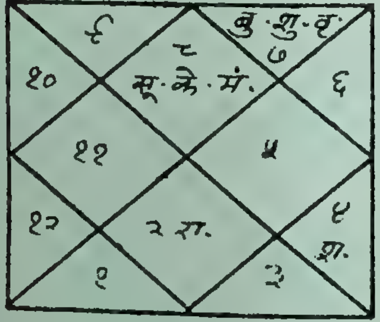

१२६६

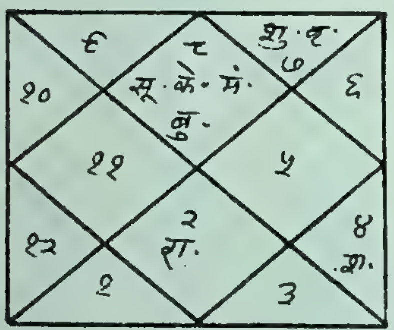

१२६७

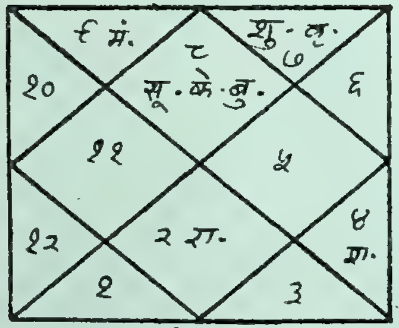

१२६८

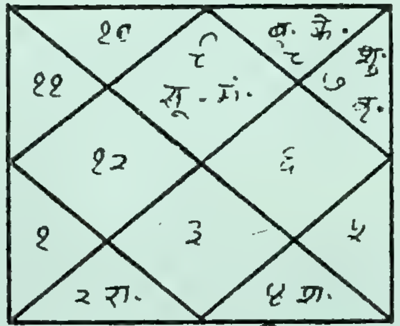

१२६९

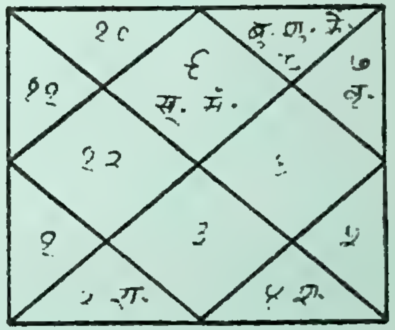

१२७०

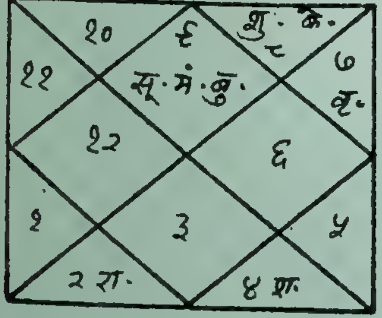

१२७१

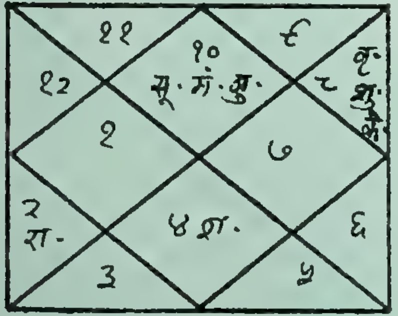

१२७२

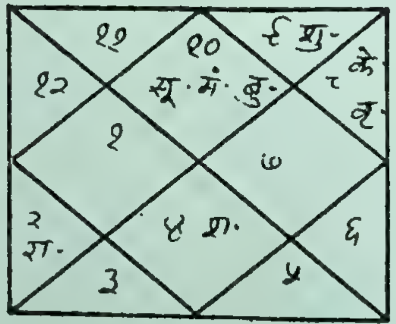

१२७३

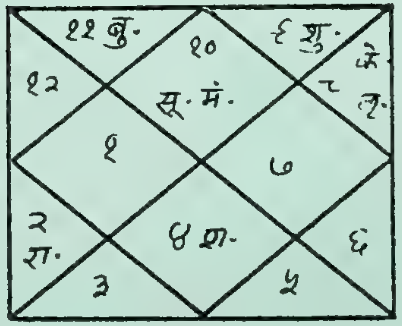

१२७४

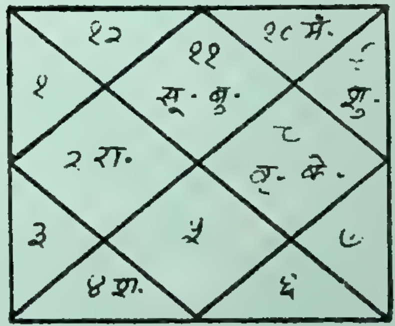

१२७५

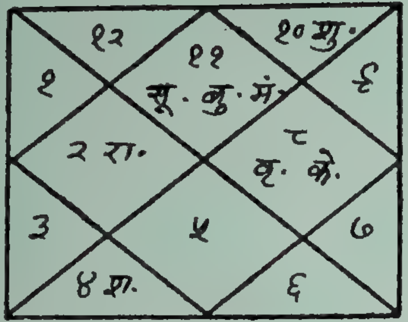

१२७६

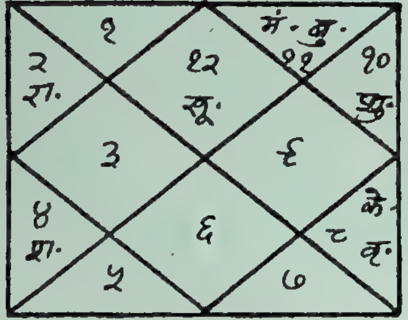

१२७७

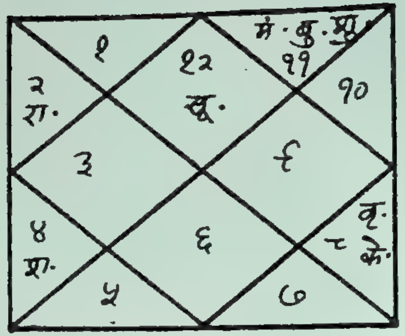

१२७८

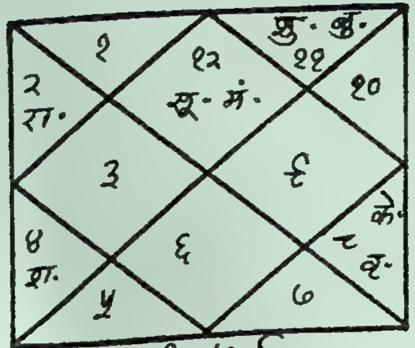

१२७९

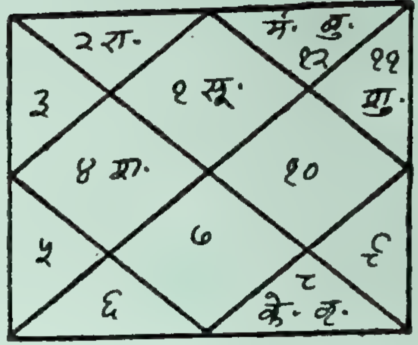

१२८०

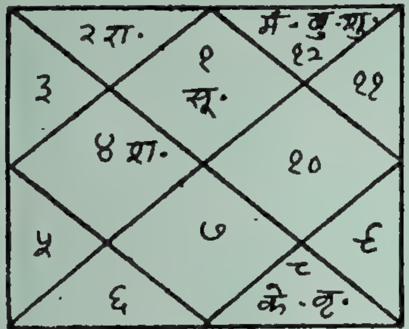

१२८१

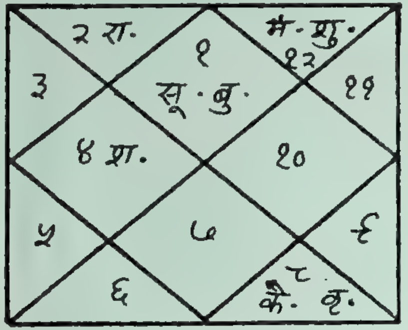

१२८२

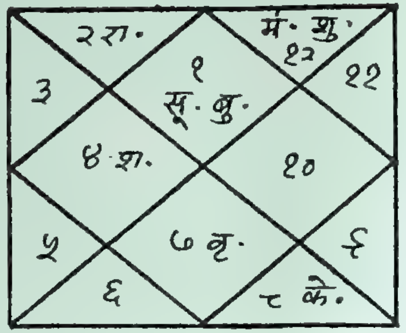

१२८३

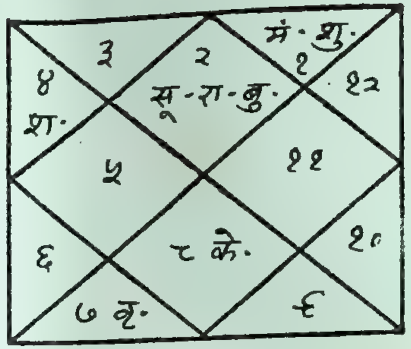

१२८४

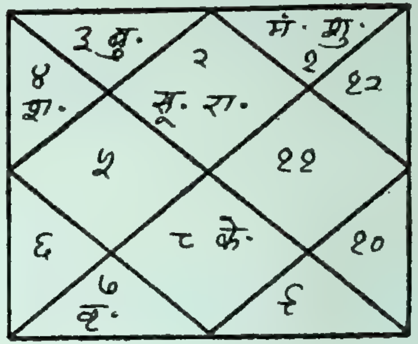

१२८५

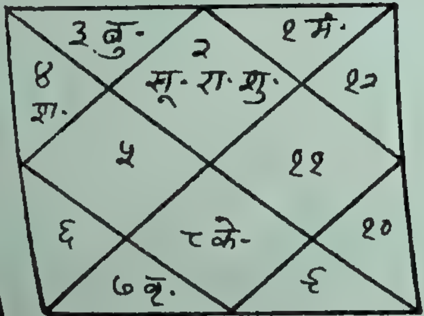

१२८६

१२८७

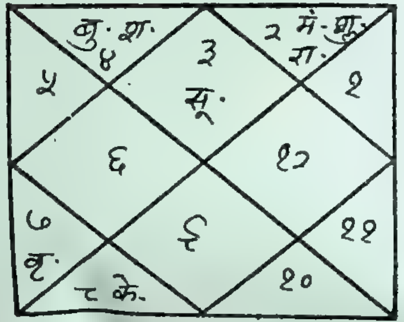

१२८८

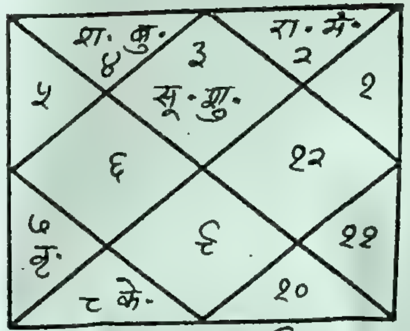

१२८९

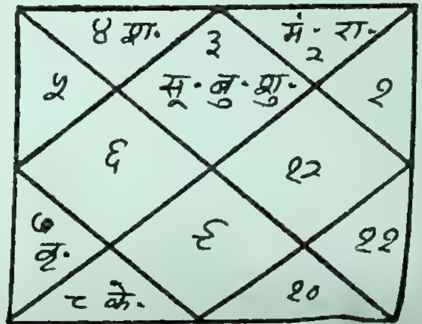

१२९०

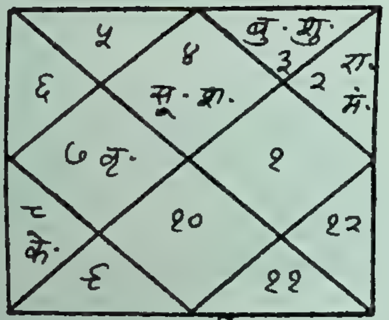
१२९१

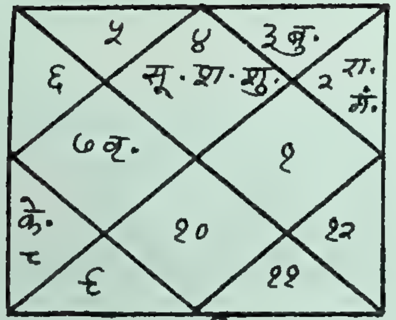
१२९२

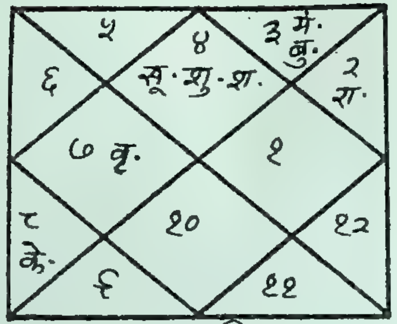
१२९३

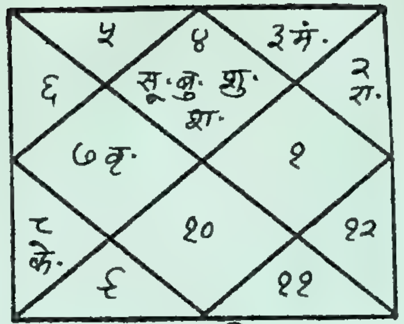
१२९४

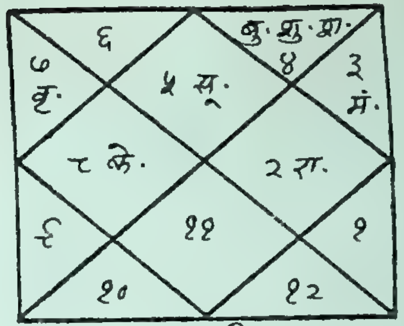
१२९५

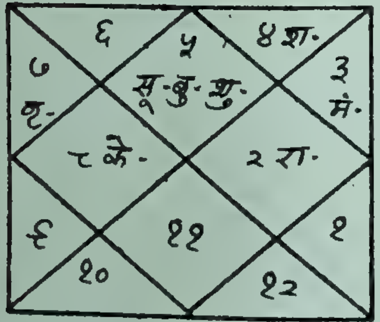
१२९६

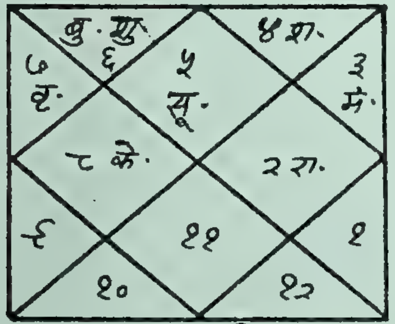
१२९७

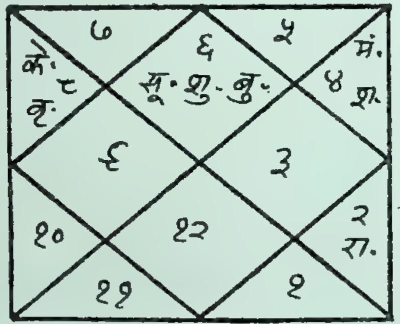
१२९८

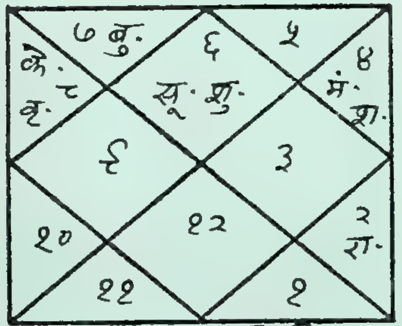
१२९९

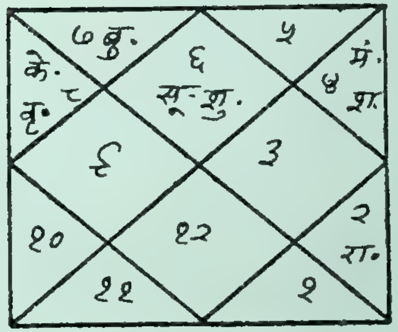
१३००

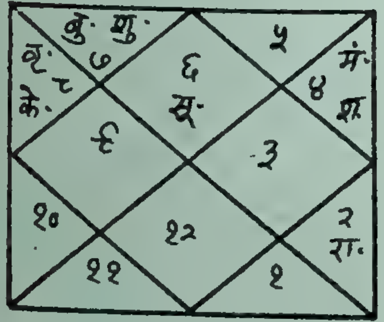
१३०१

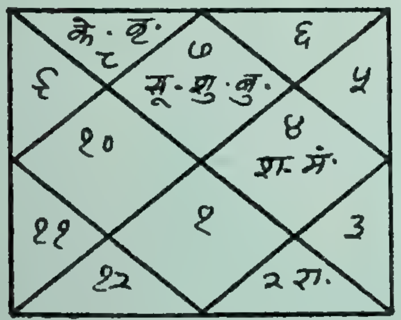
१३०२

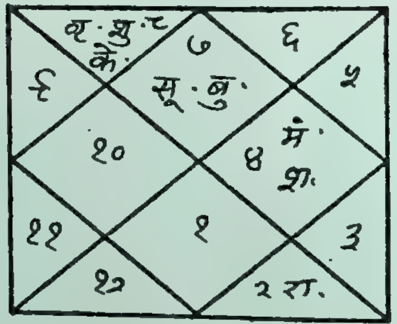
१३०३

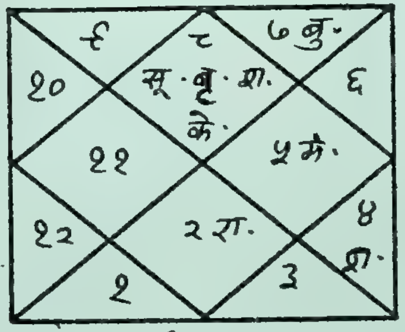
१३०४

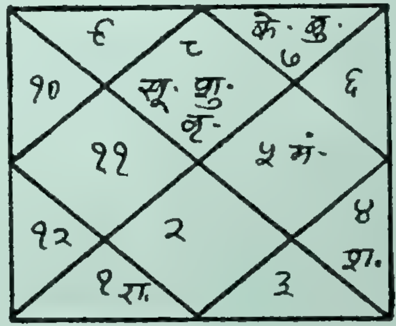
१३०५

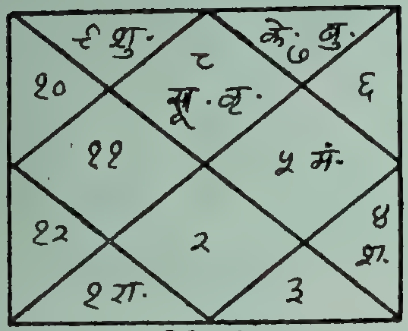
१३०६

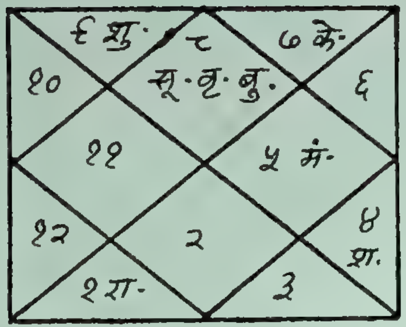
१३०७

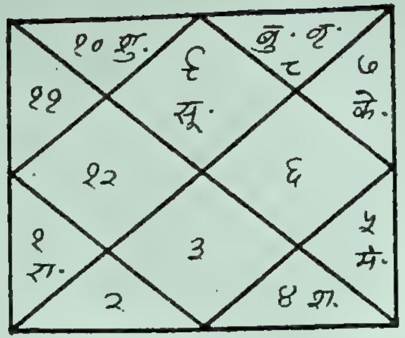
१३०८

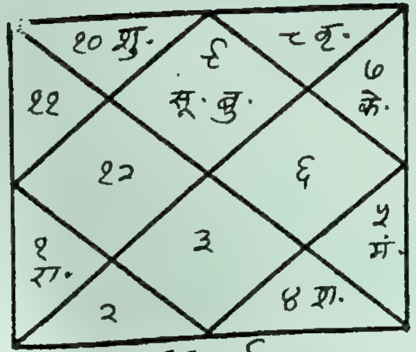
१३०९

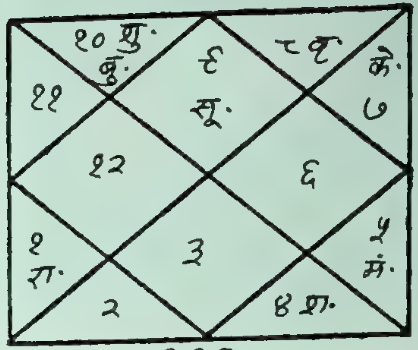
१३१०

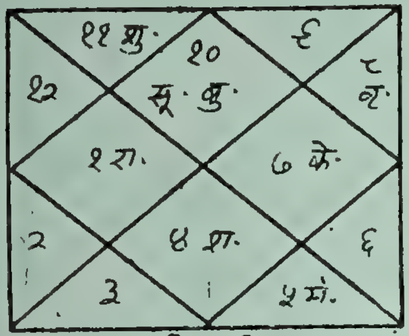
१३११

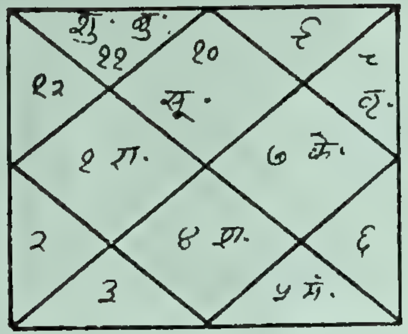
१३१२

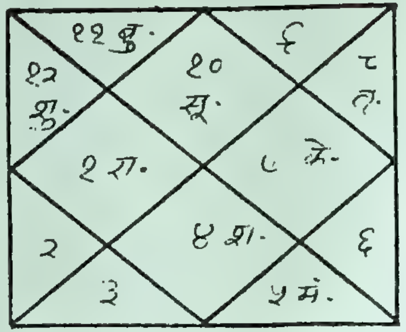
१३१३

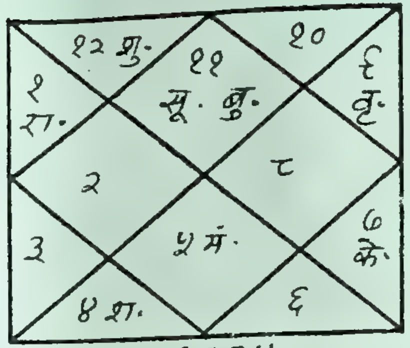
१३१४

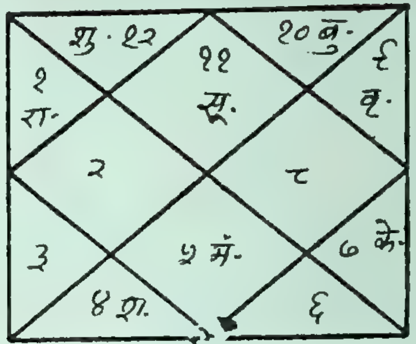
१३१५

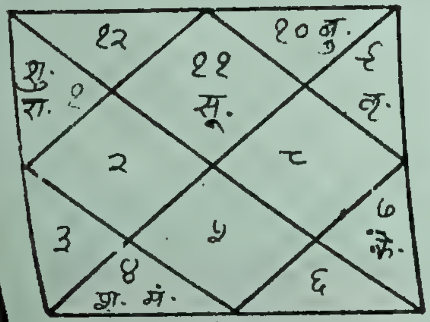
१३१६

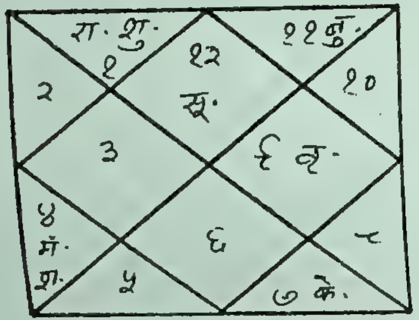
१३१७

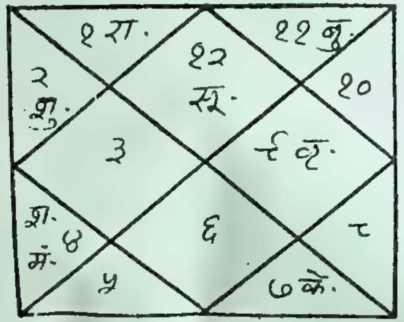
१३१८

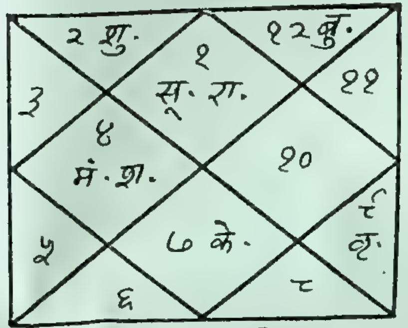
१३१९

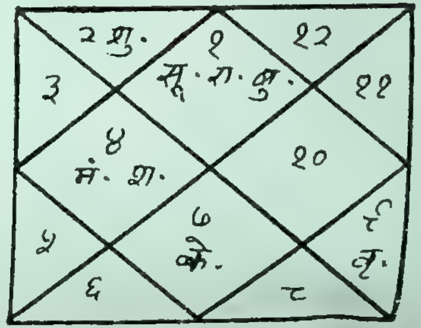
१३२०

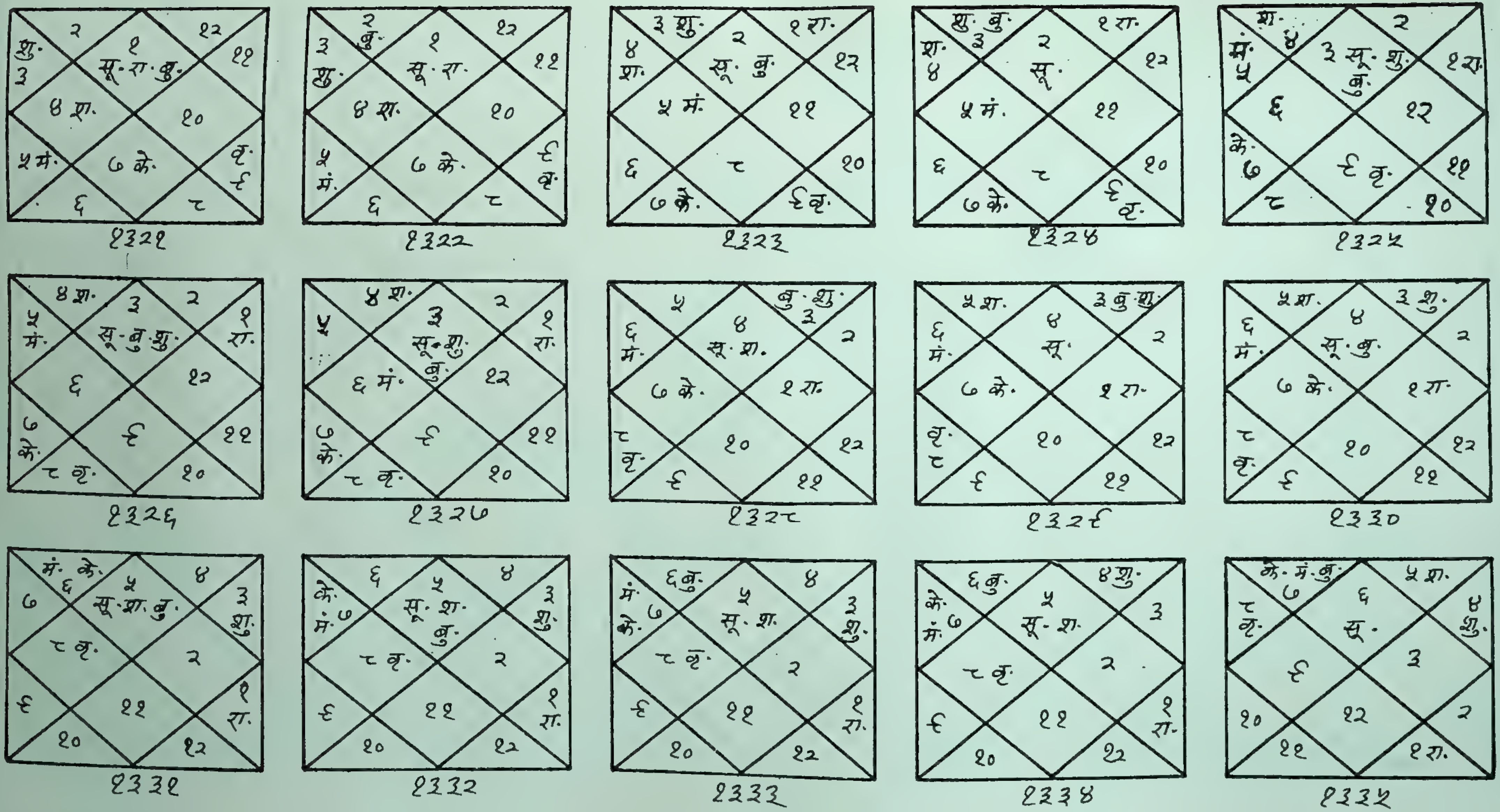

१३२१ १३२२ १३२३ १३२४ १३२५

१३२६ १३२७ १३२८ १३२९ १३३०

१३३१ १३३२ १३३३ १३३४ १३३५

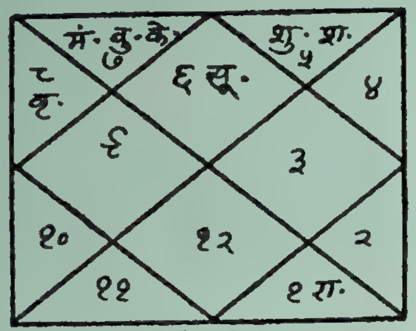

१३३६

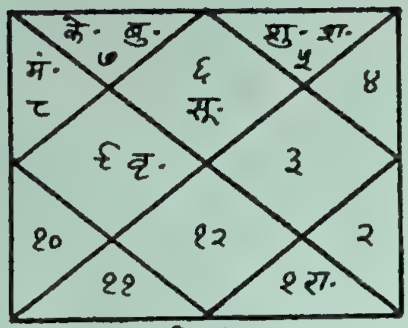

१३३७

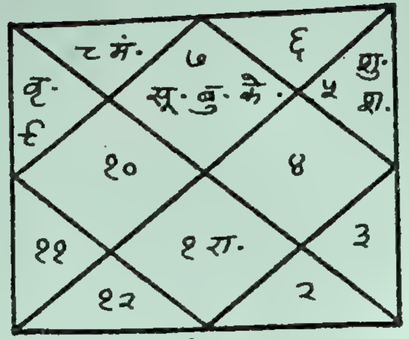

१३३८

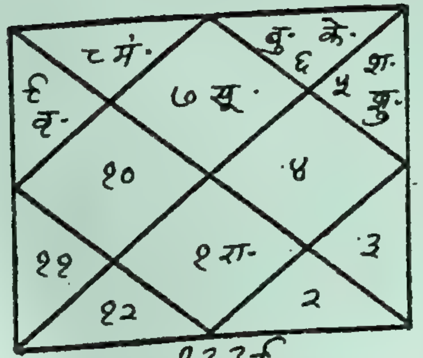

१३३९

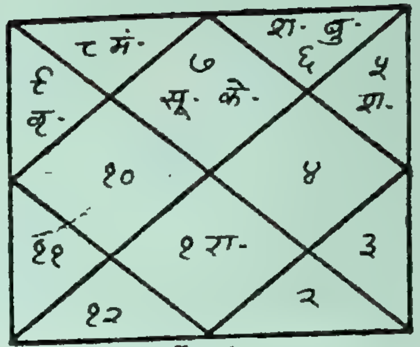

१३४०

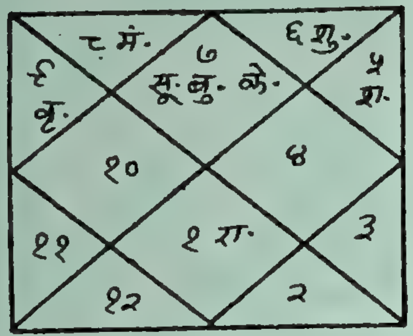

१३४१

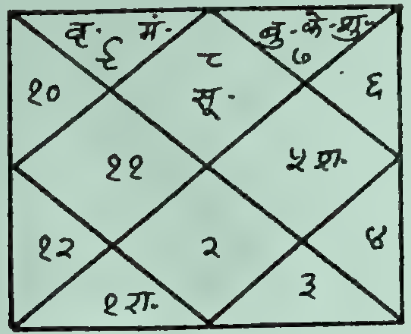

१३४२

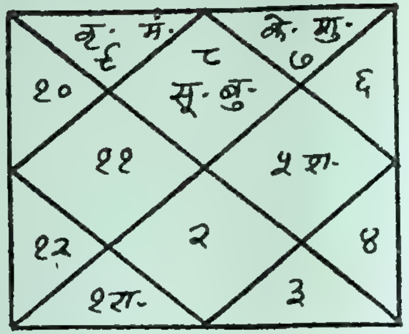

१३४३

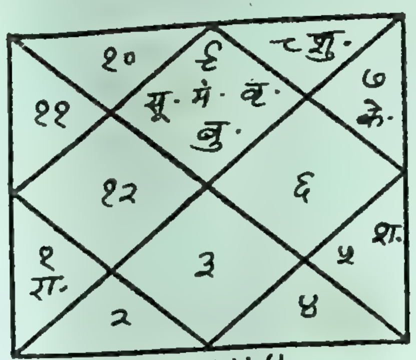

१३४४

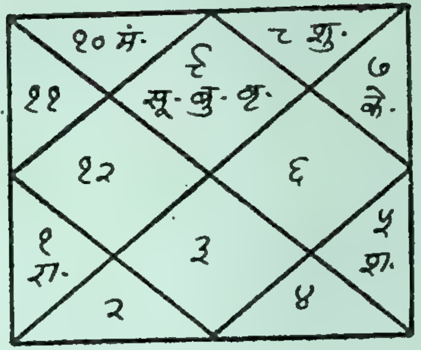

१३४५

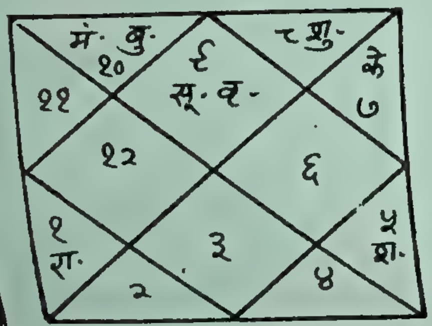

१३४६

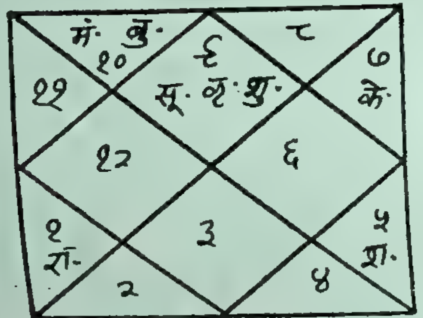

१३४७

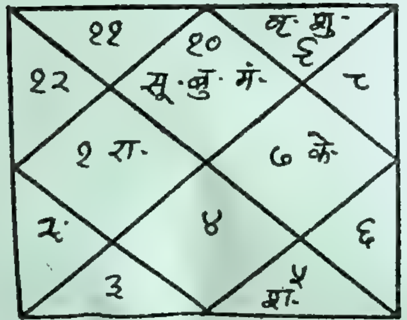

१३४८

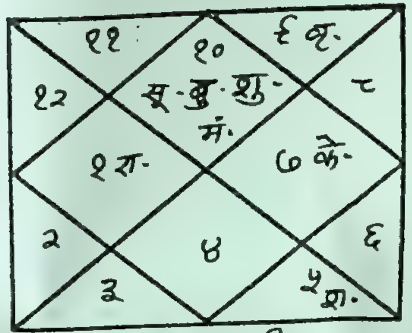

१३४९

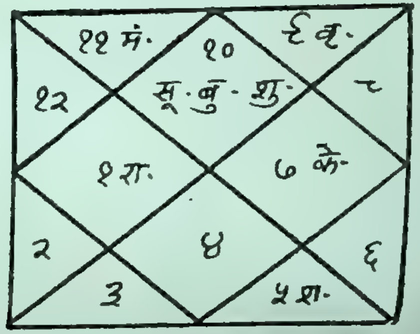

१३५०

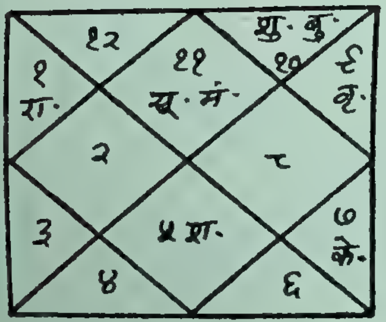

१३५१

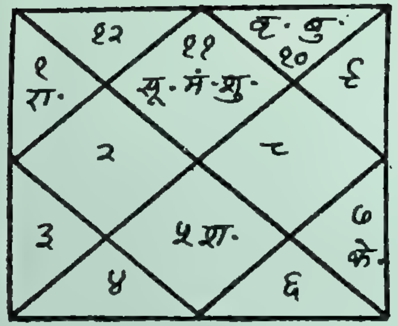

१३५२

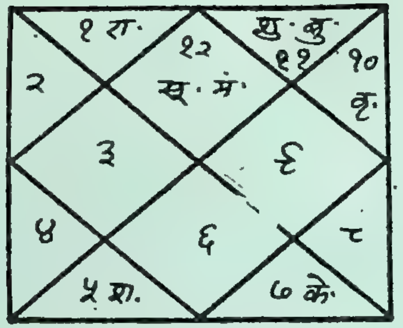

१३५३

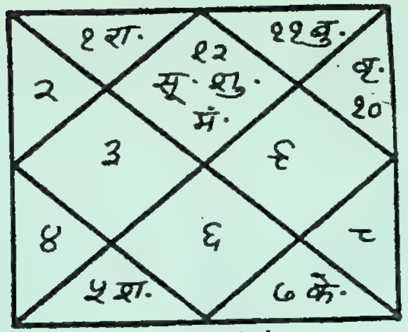

१३५४

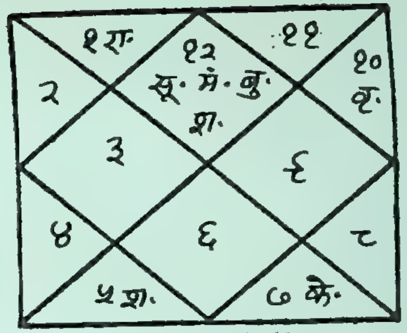

१३५५

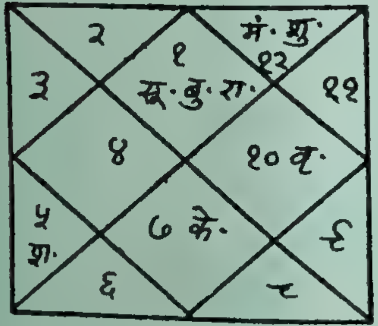

१३५६

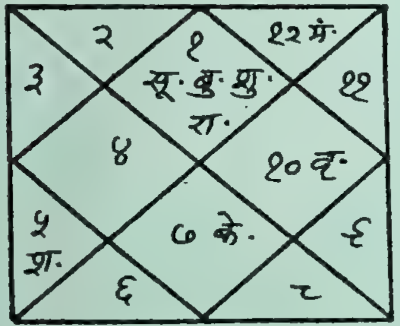

१३५७

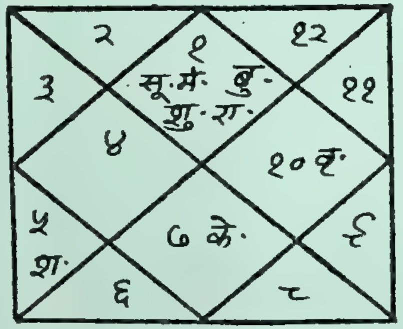

१३५८

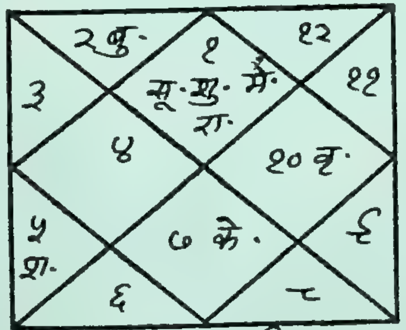

१३५९

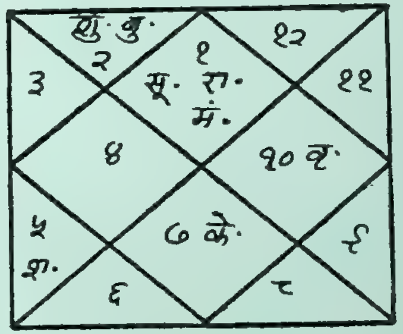

१३६०

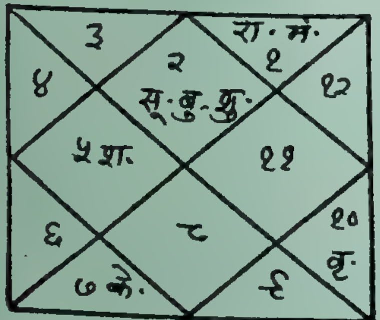

१३६१

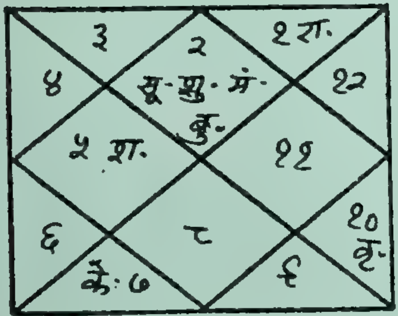

१३६२

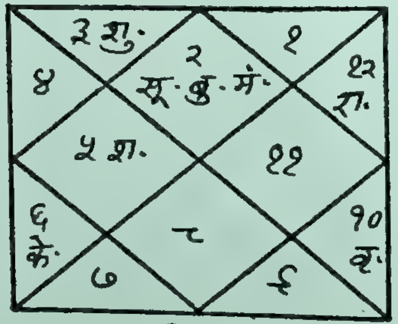

१३६३

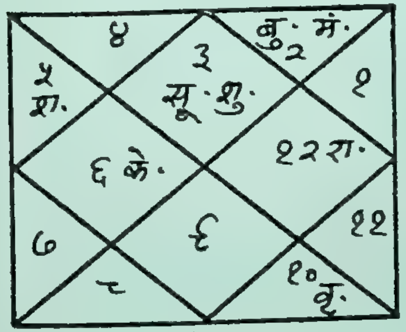

१३६४

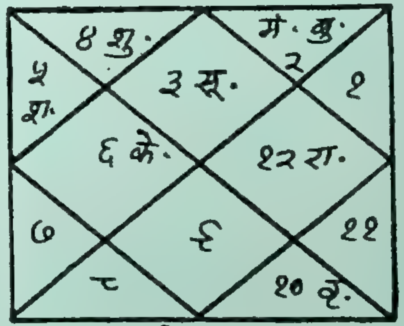

१३६५

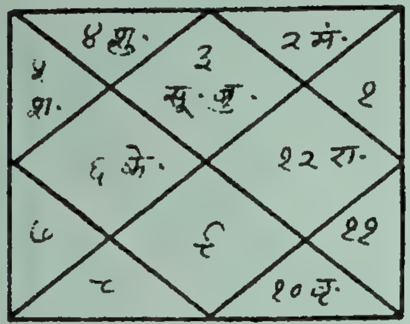

१३६६

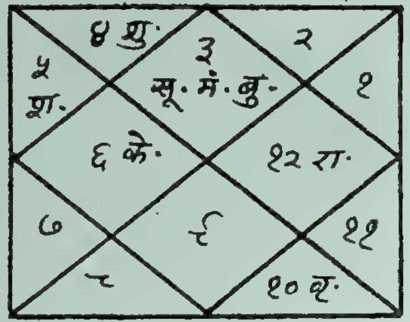

१३६७

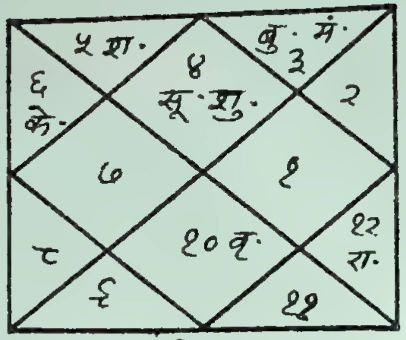

१३६८

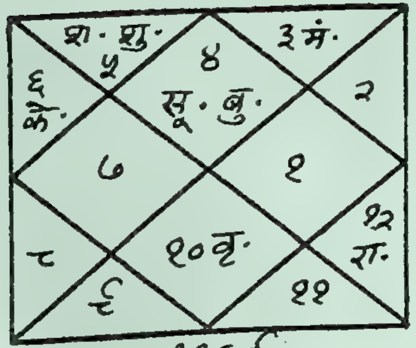

१३६९

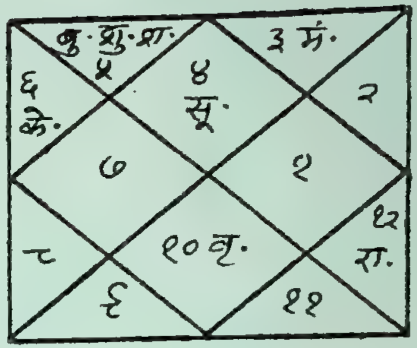

१३७०

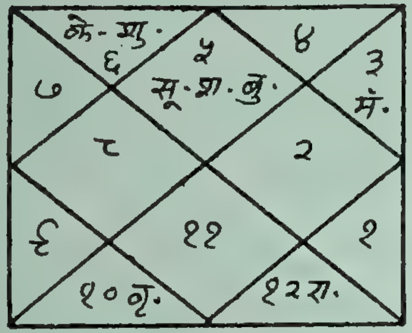

१३७१

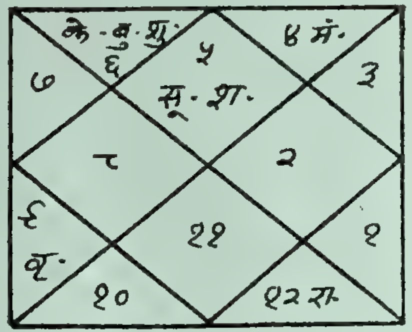

१३७२

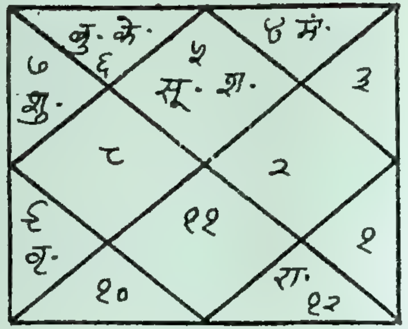

१३७३

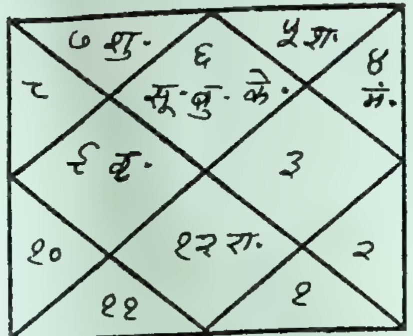

१३७४

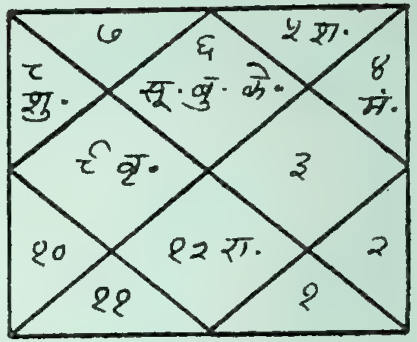

१३७५

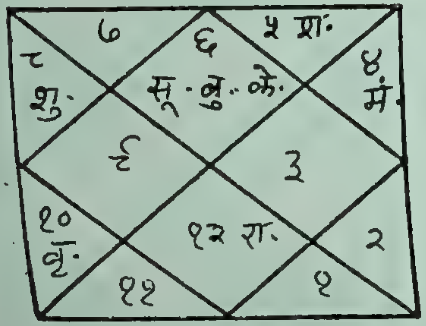

१३७६

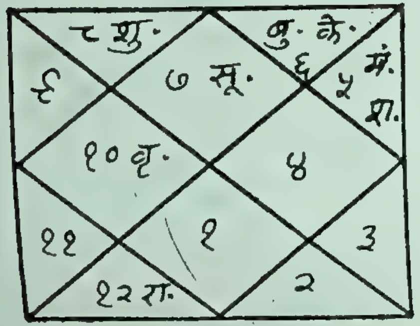

१३७७

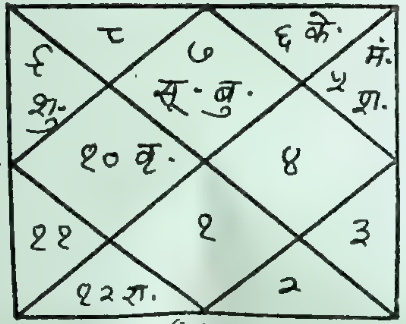

१३७८

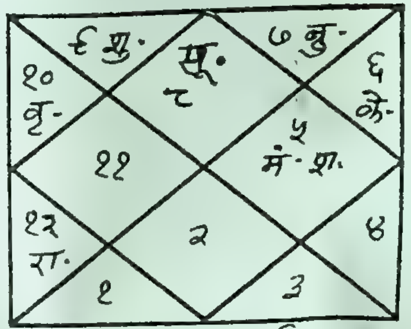

१३७९

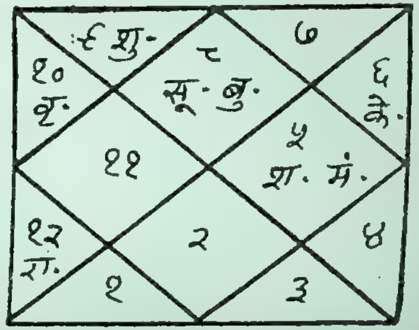

१३८०

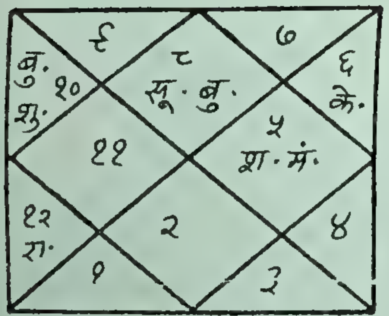

१३८१

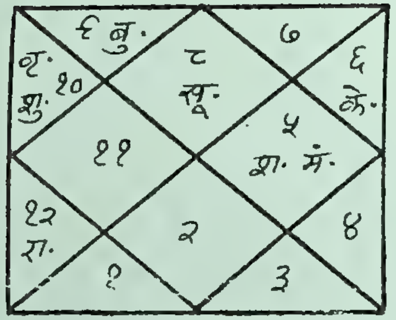

१३८२

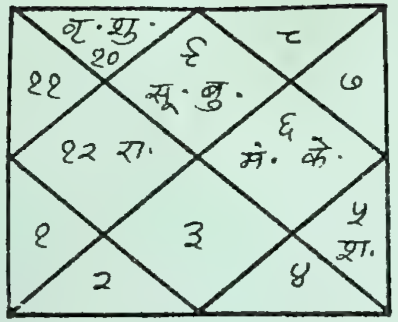

१३८३

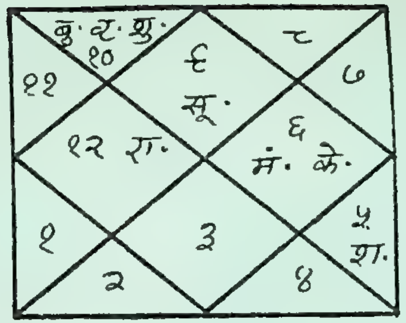

१३८४

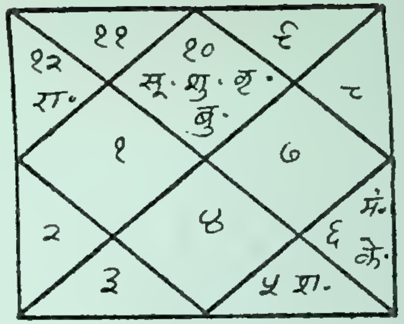

१३८५

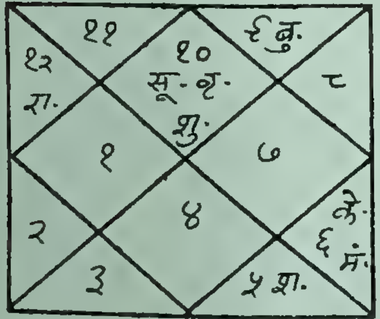

१३८६

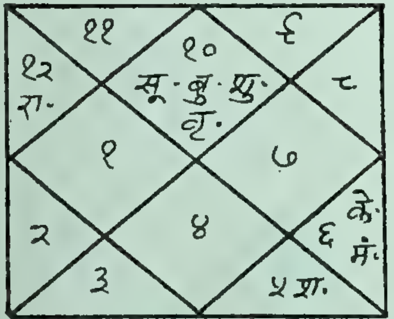

१३८७

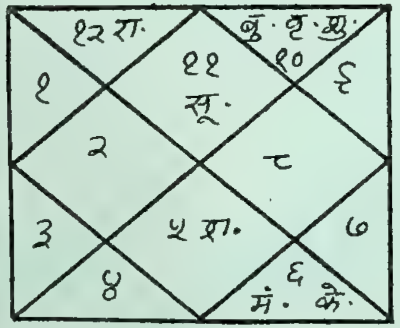

१३८८

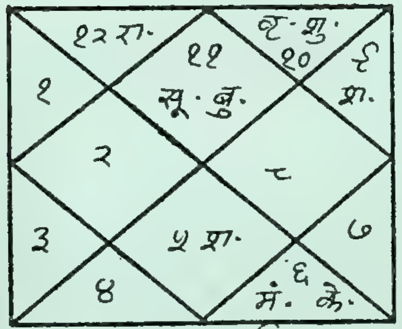

१३८९

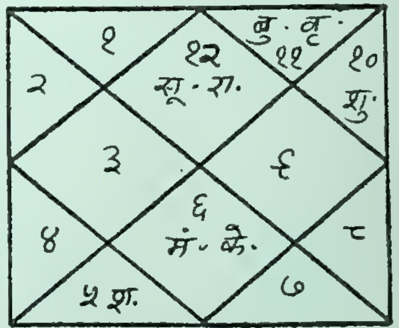

१३९०

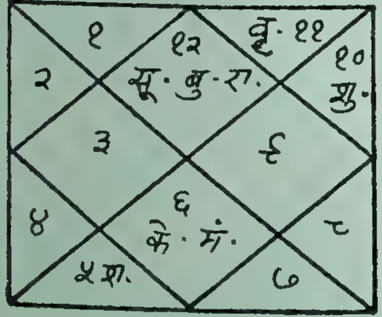

१३९१

१३९२

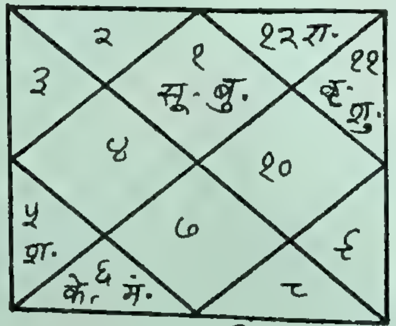

१३९३

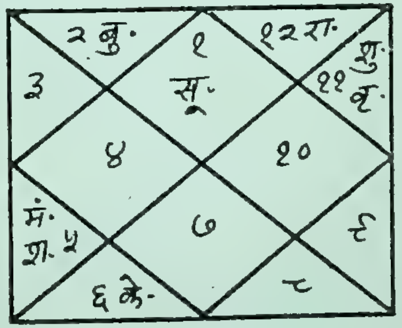

१३९४

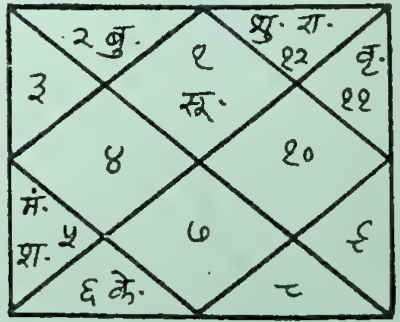

१३९५

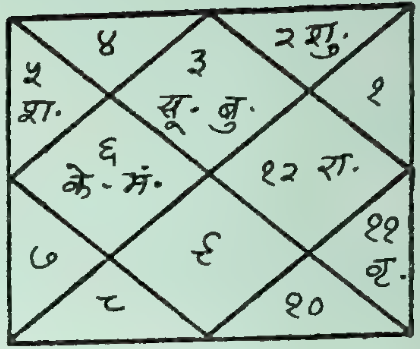

१४००

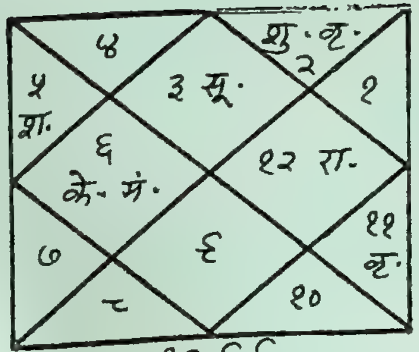

१३९९

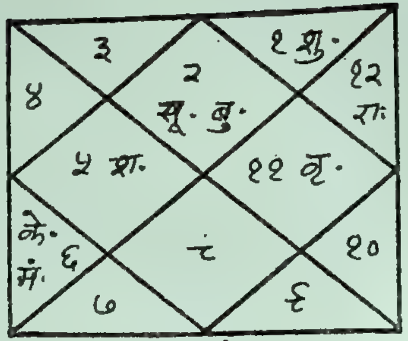

१३९८

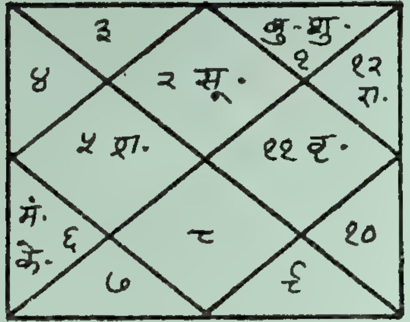

१३९७

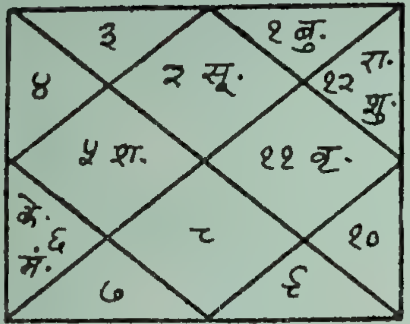

१३९६

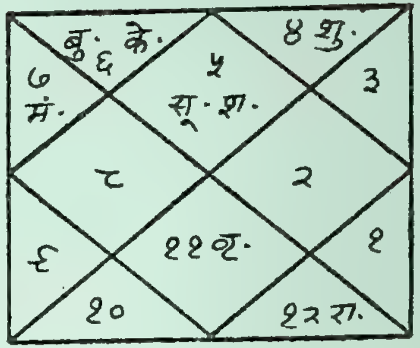

१४०५

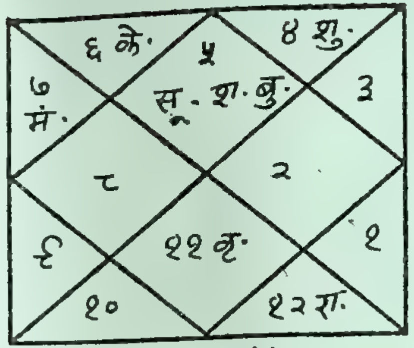

१४०४

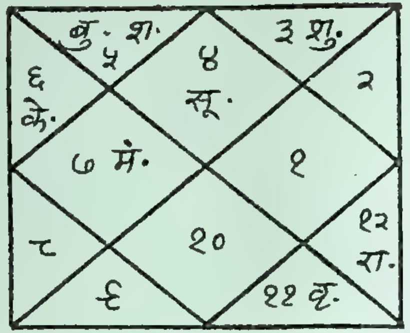

१४०३

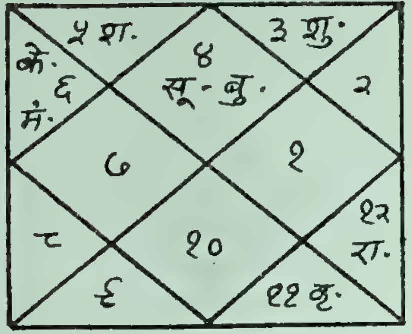

१४०२

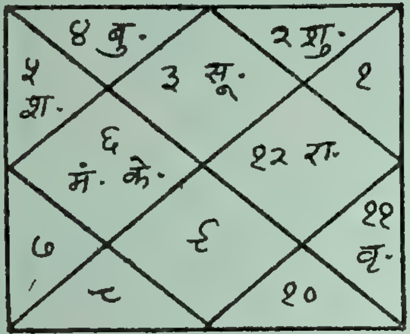

१४०१

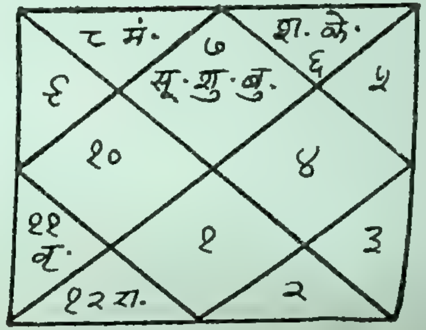

१४१०

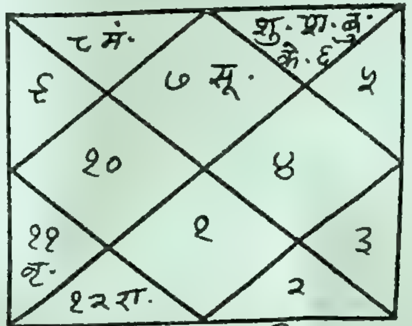

१४०९

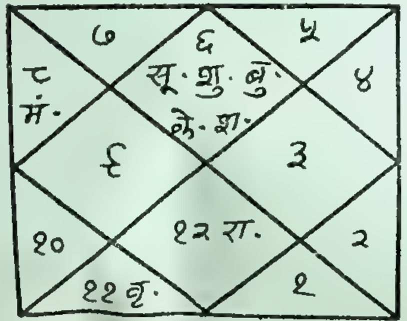

१४०८

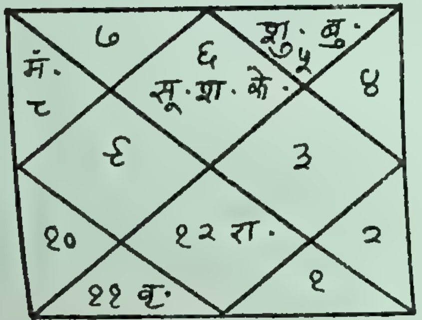

१४०७

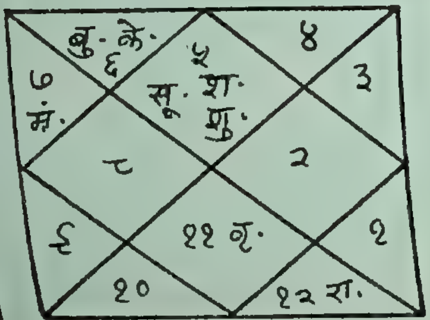

१४०६

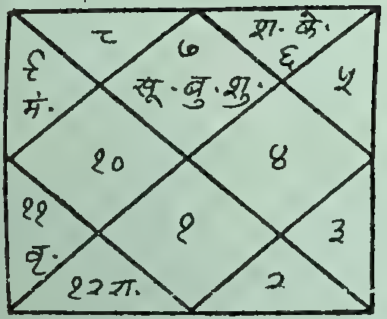
१४११

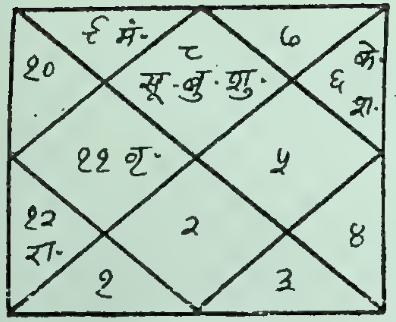
१४१२

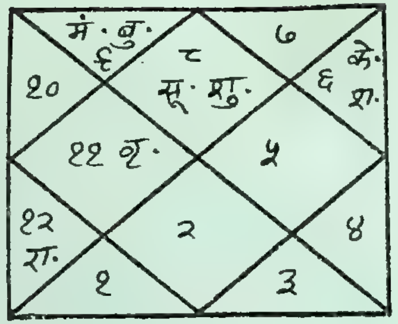
१४१३

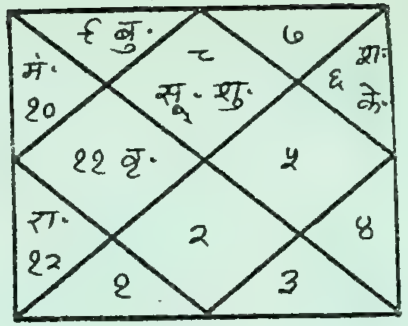
१४१४

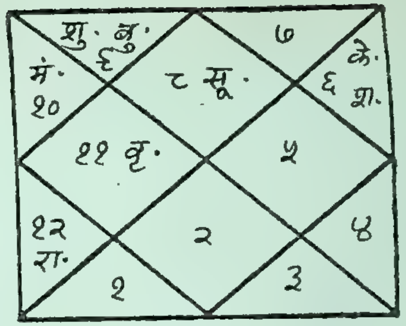
१४१५

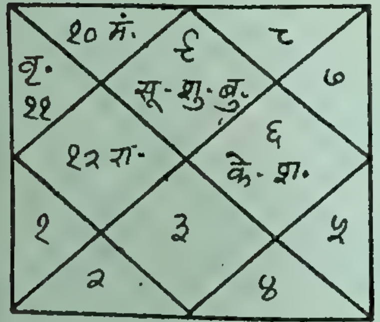
१४१६

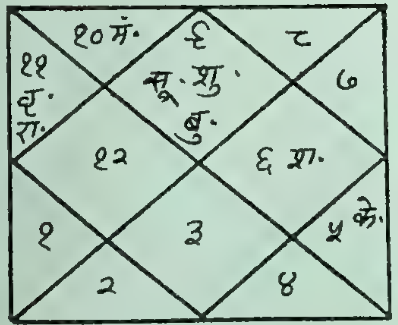
१४१७

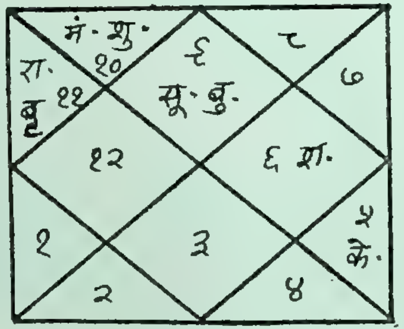
१४१८

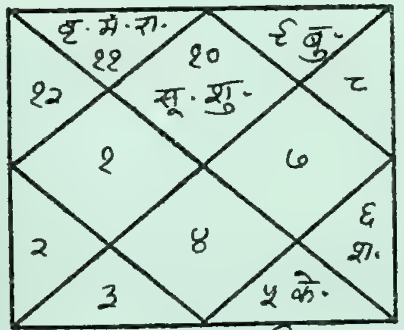
१४१९

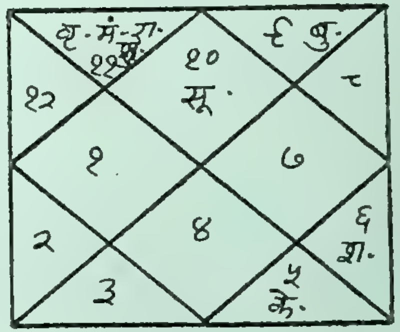
१४२०

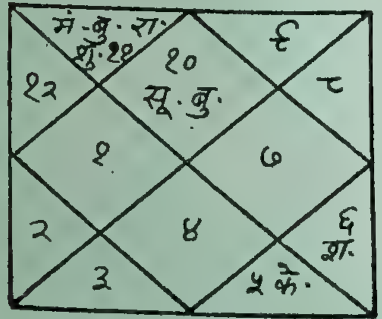
१४२१

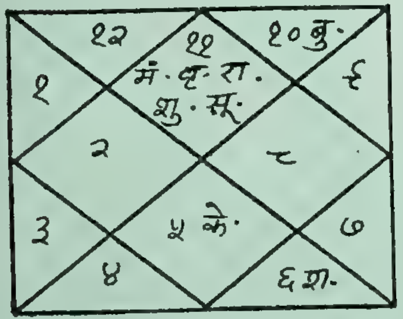
१४२२

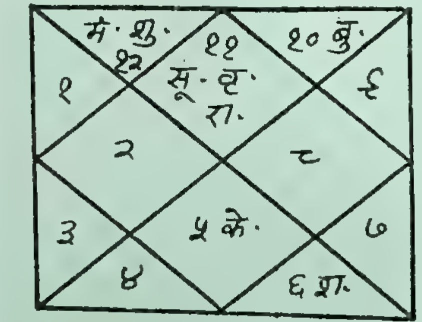
१४२३

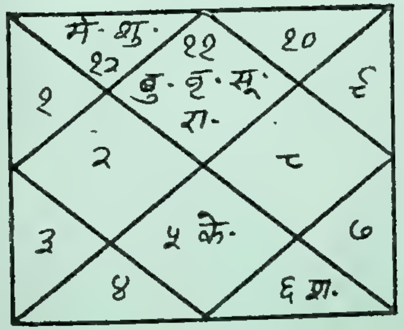
१४२४

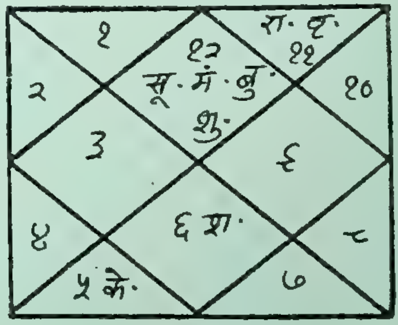
१४२५

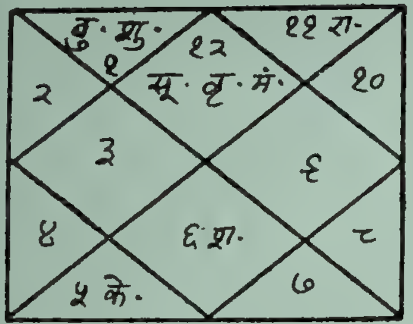

१४२६

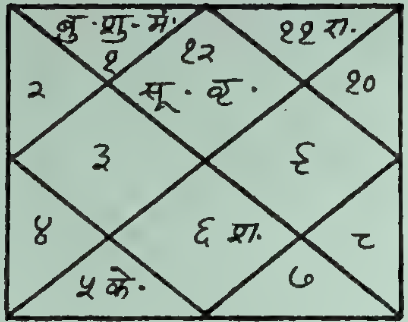

१४२७

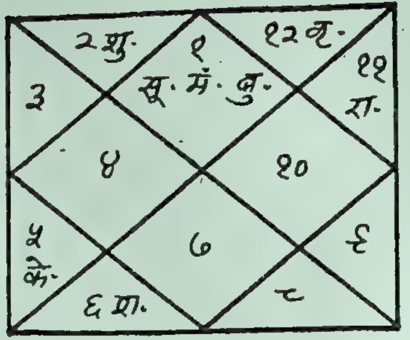

१४२८

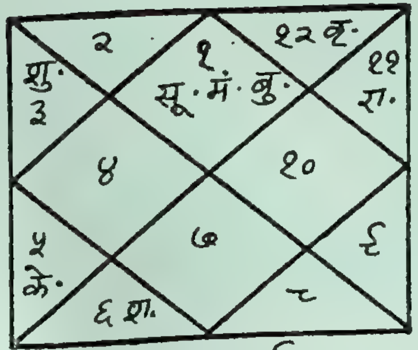

१४२९

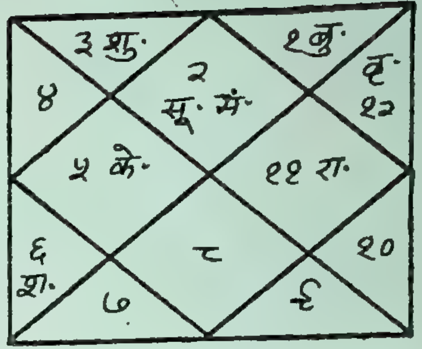

१४३०

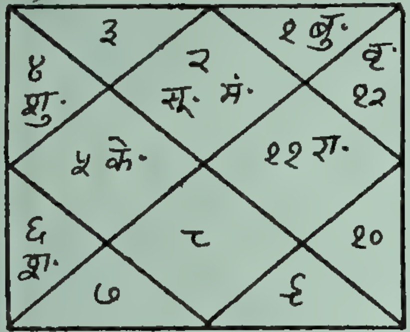

१४३१

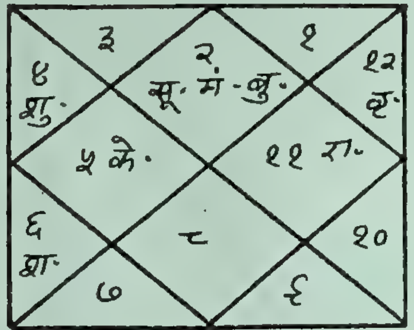

१४३२

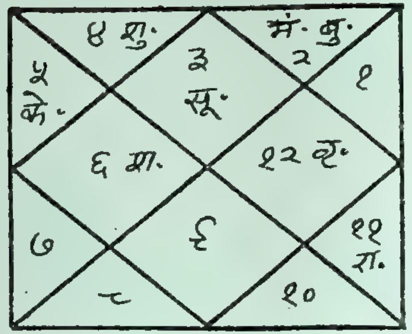

१४३३

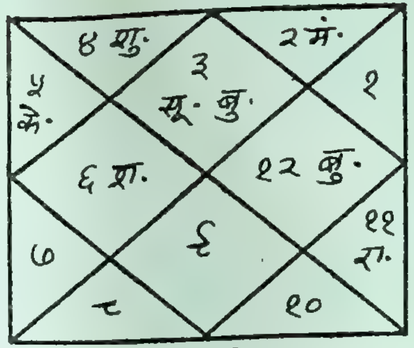

१४३४

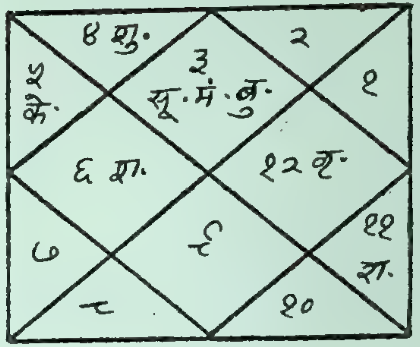

१४३५

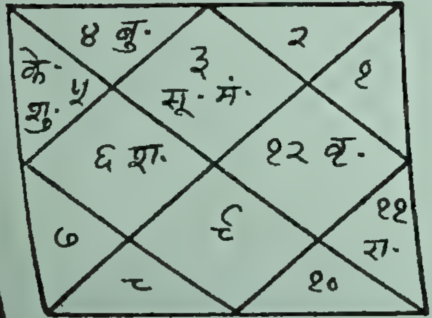

१४३६

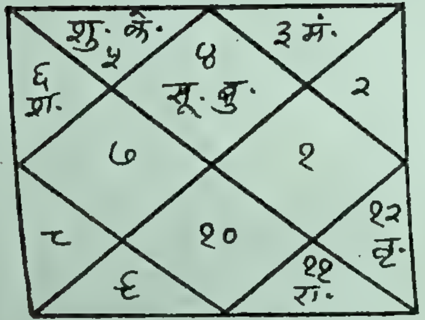

१४३७

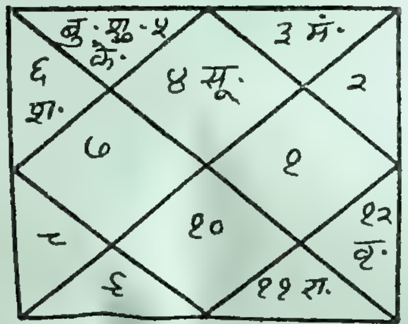

१४३८

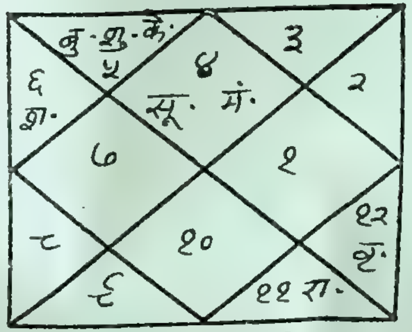

१४३९

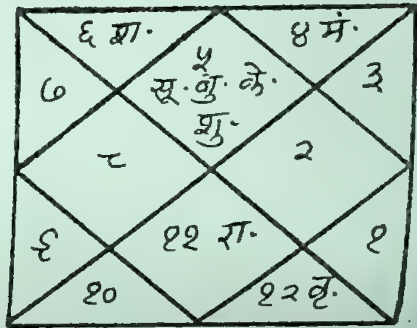

१४४०

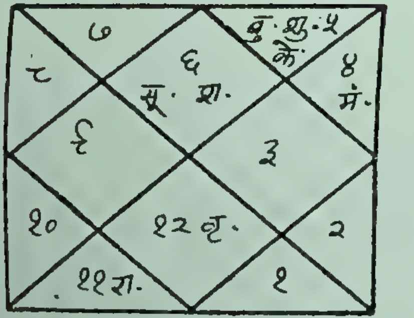

१४४१

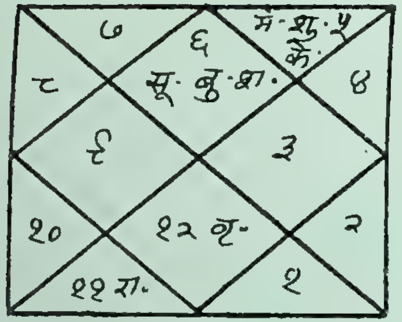

१४४२

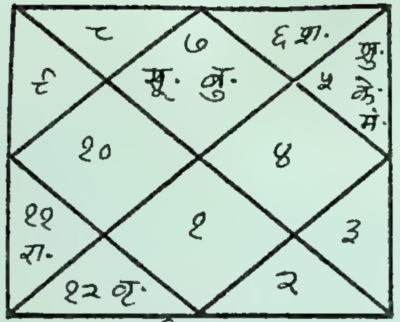

१४४३

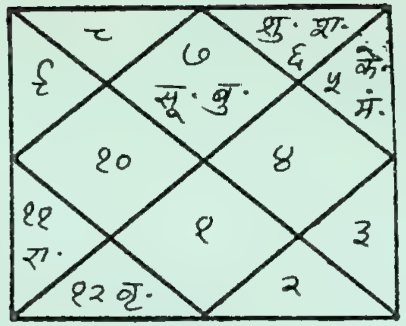

१४४४

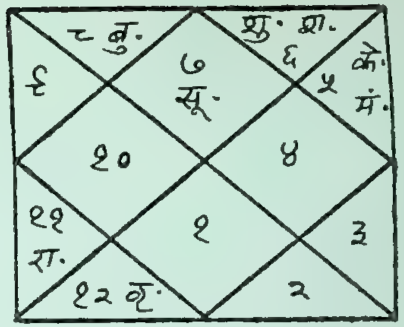

१४४५

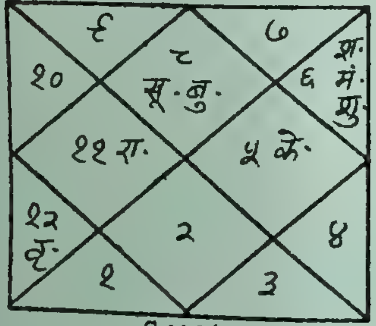

१४४६

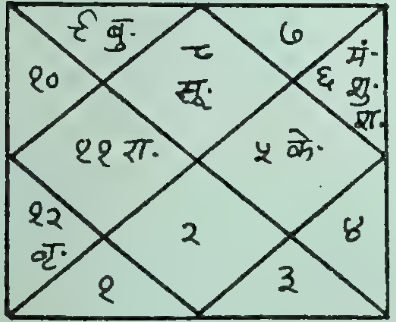

१४४७

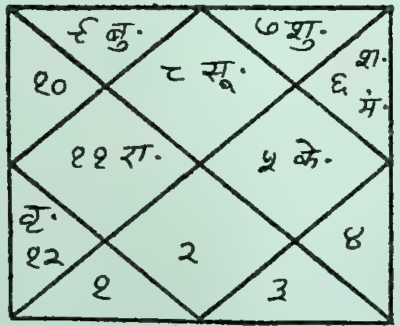

१४४८

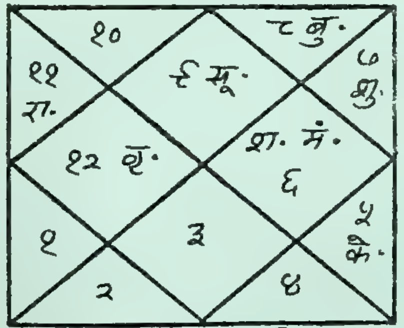

१४४९

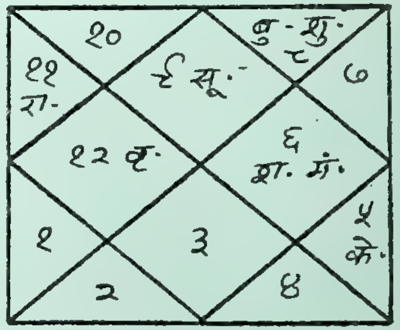

१४५०

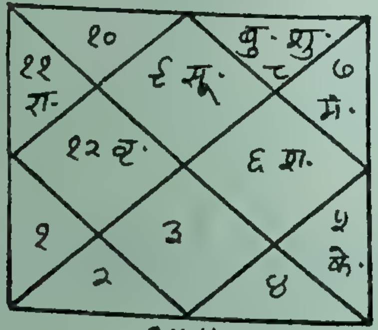

१४५१

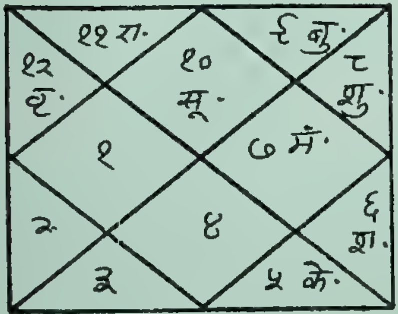

१४५२

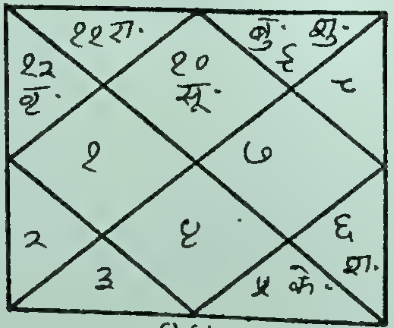

१४५३

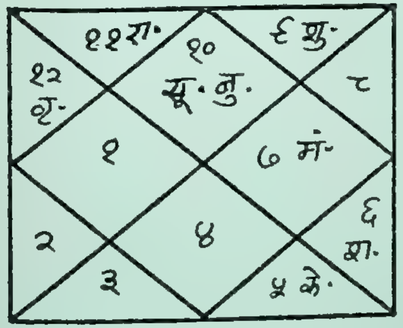

१४५४

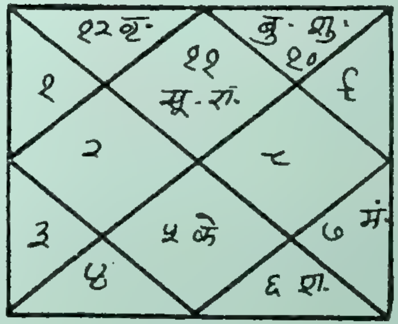

१४५५

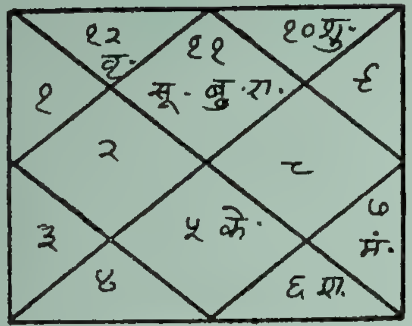

१४५६

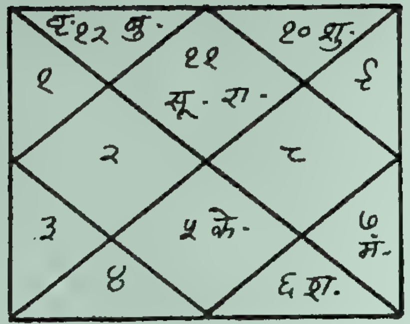

१४५७

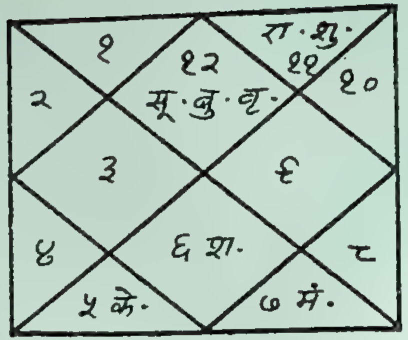

१४५८

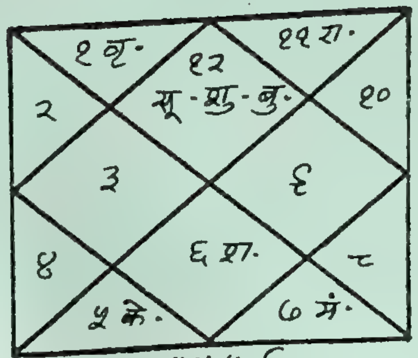

१४५९

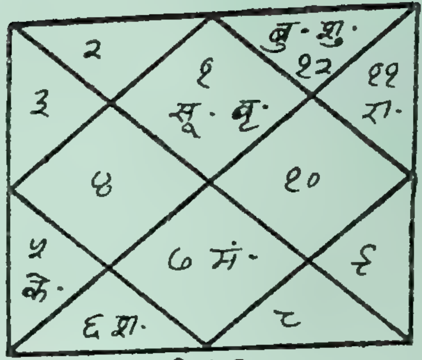

१४६०

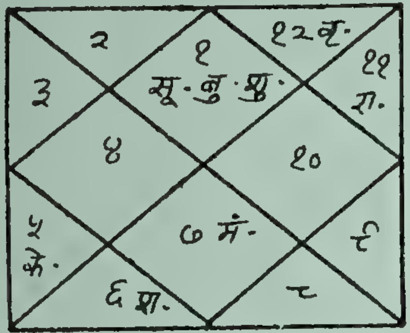

१४६१

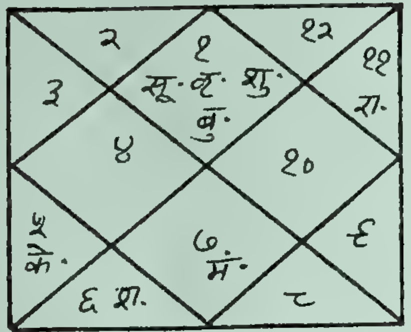

१४६२

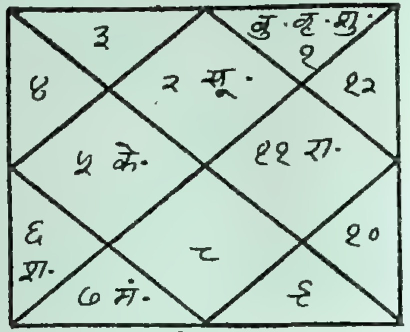

१४६३

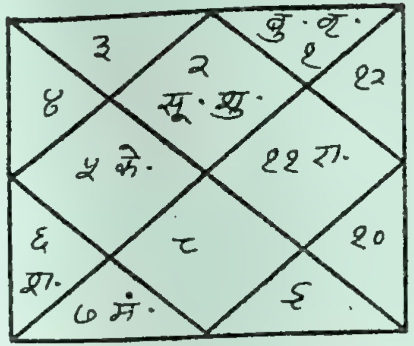

१४६४

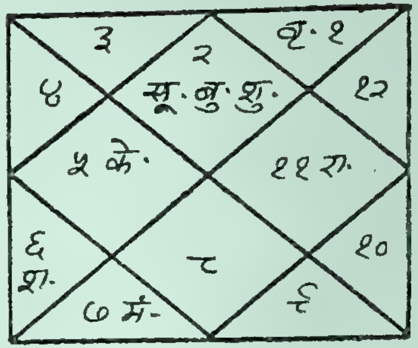

१४६५

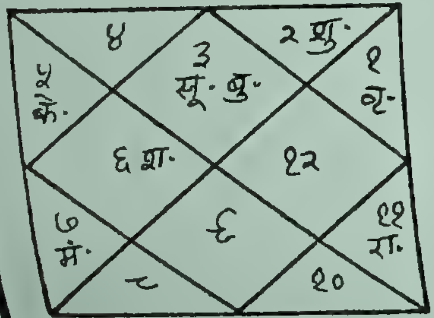

१४६६

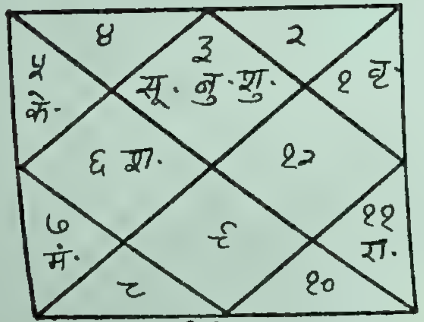

१४६७

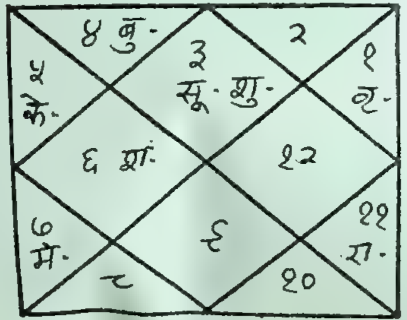

१४६८

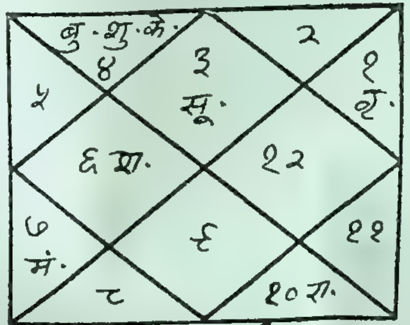

१४६९

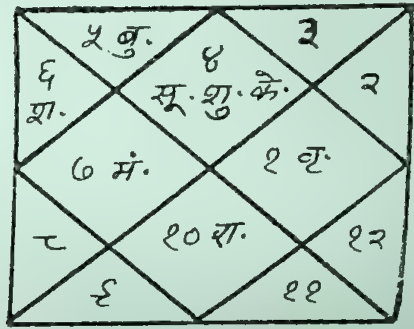

१४७०

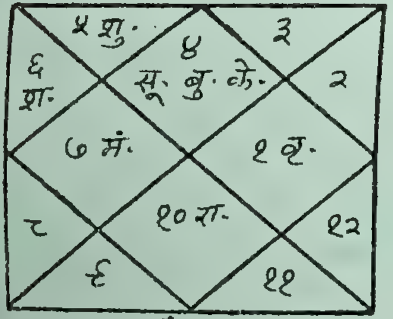

१४७१

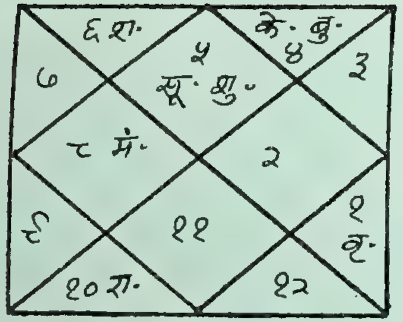

१४७२

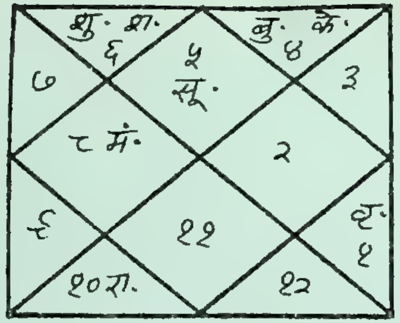

१४७३

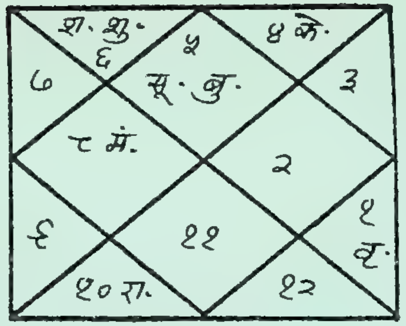

१४७४

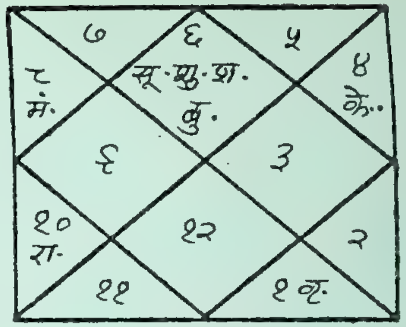

१४७५

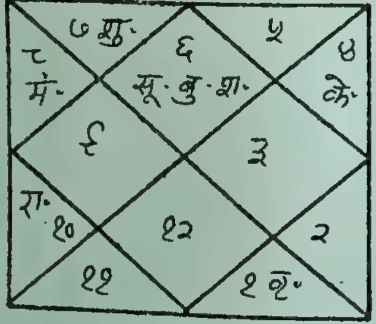

१४७६

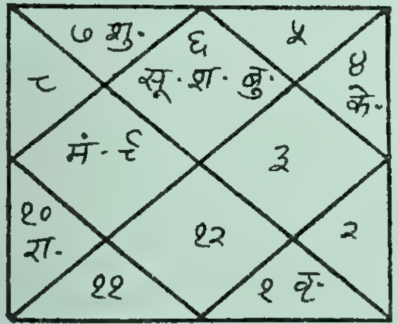

१४७७

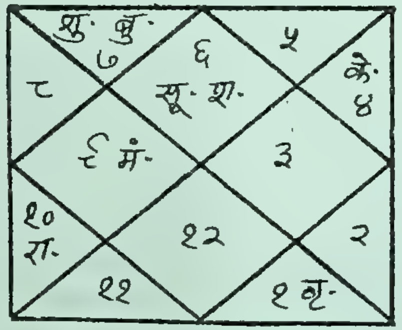

१४७८

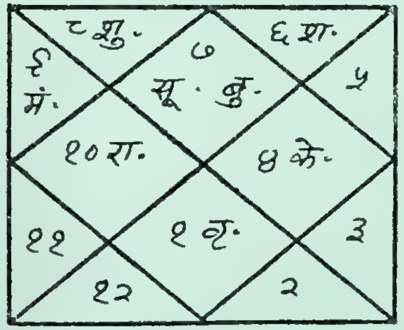

१४७९

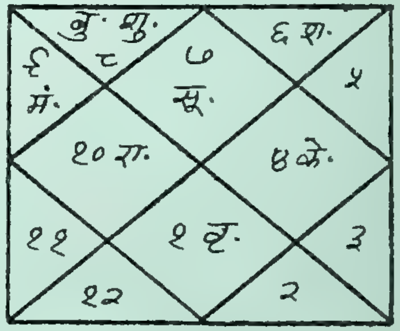

१४८०

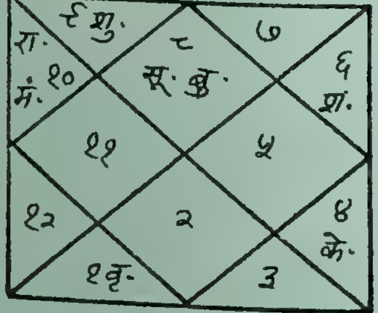

१४८१

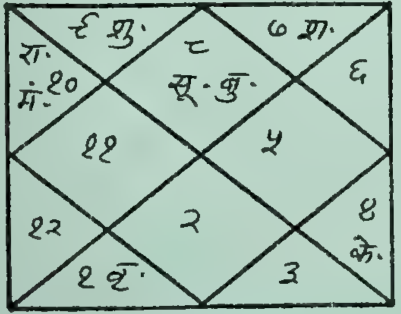

१४८२

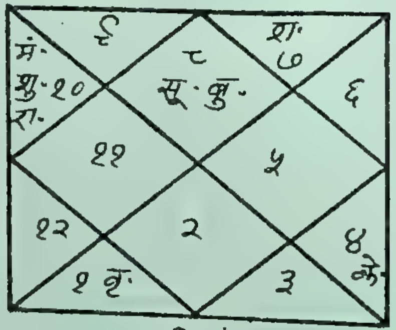

१४८३

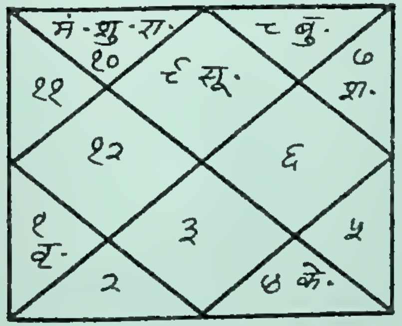

१४८४

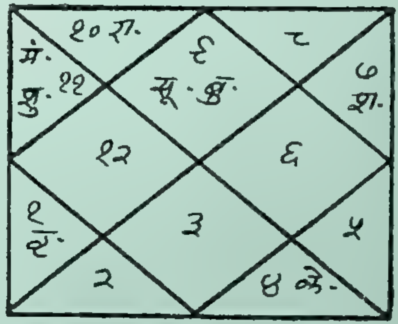

१४८५

भृ० सं० २७२

कु० प०

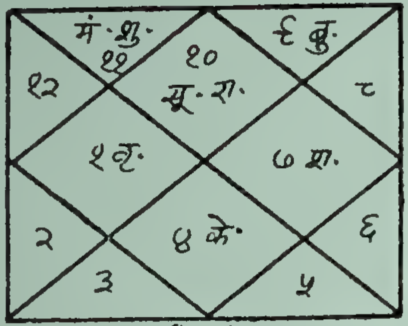

१४८६

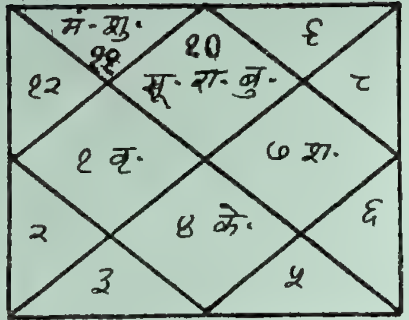

१४८७

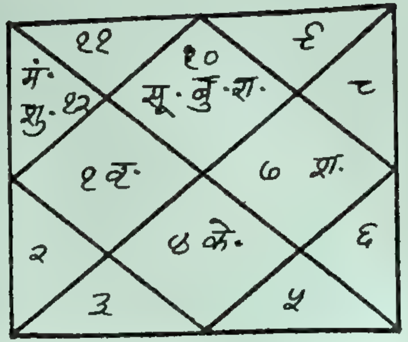

१४८८

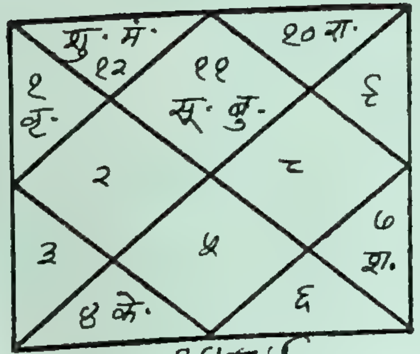

१४८९

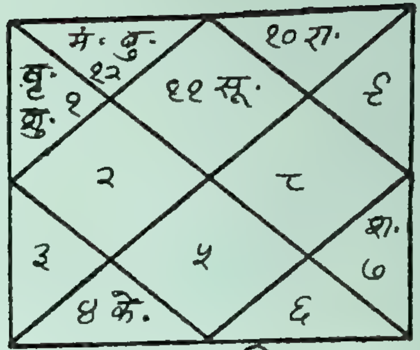

१४९०

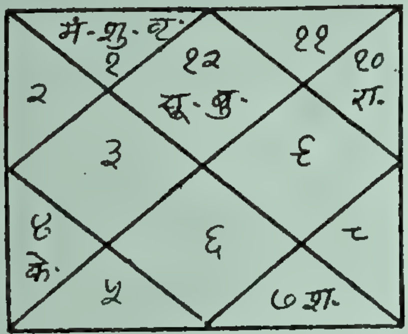

१४९१

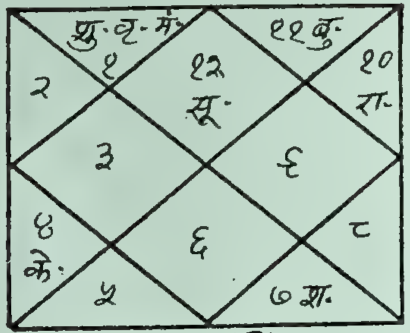

१४९२

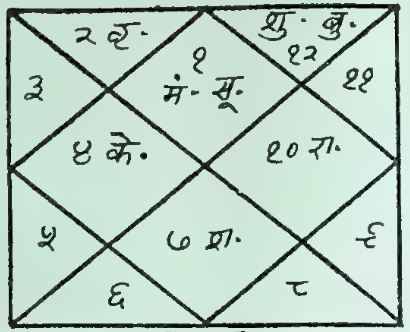

१४९३

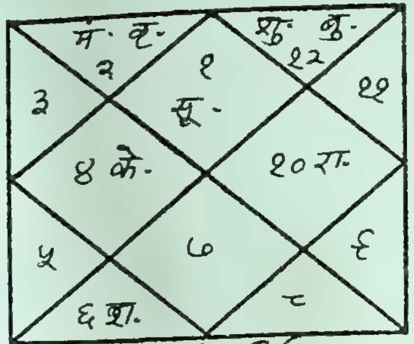

१४९४

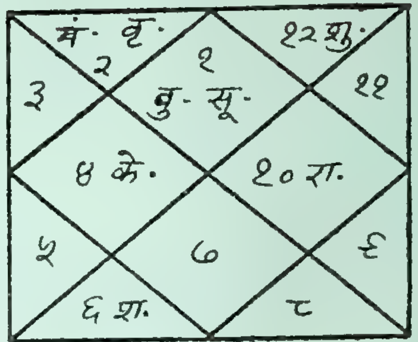

१४९५

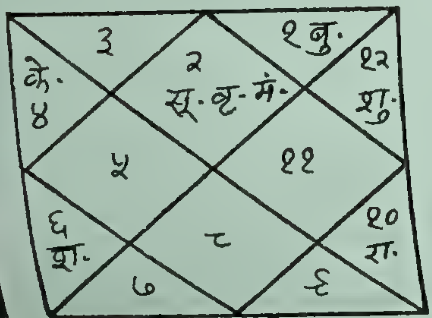

१४९६

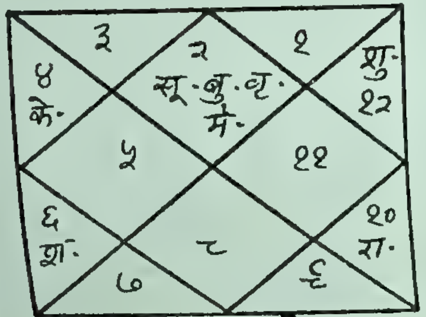

१४९७

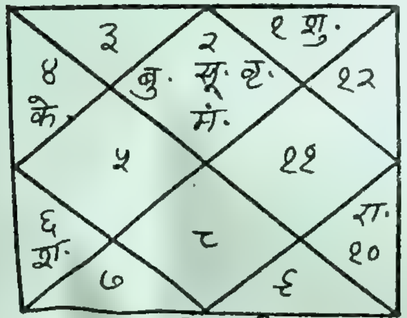

१४९८

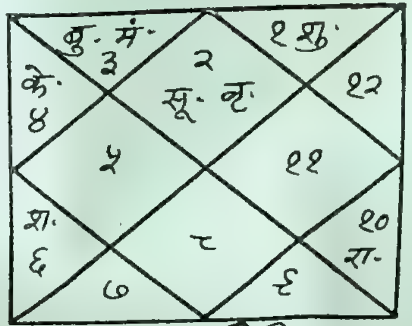

१४९९

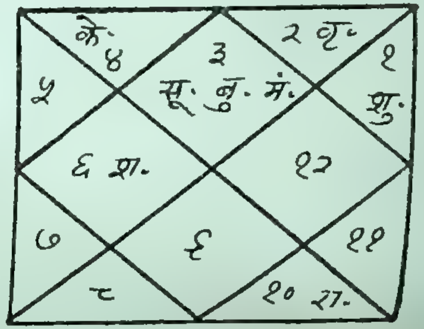

१५००

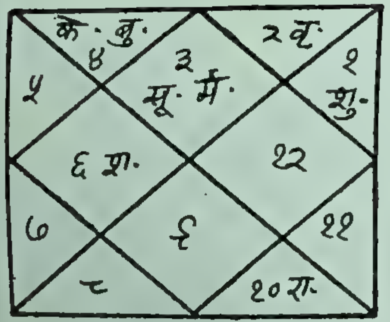

१५०१

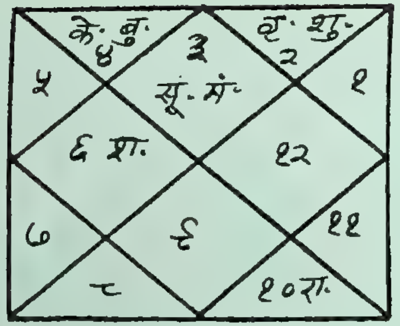

१५०२

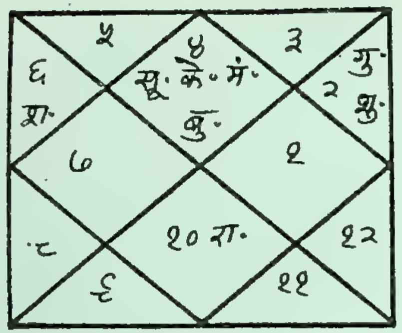

१५०३

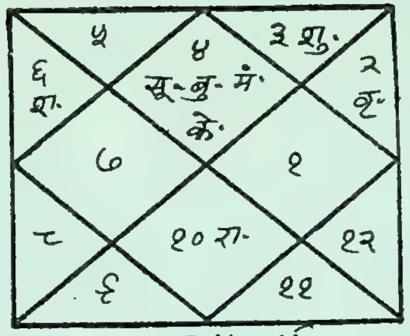

१५०४

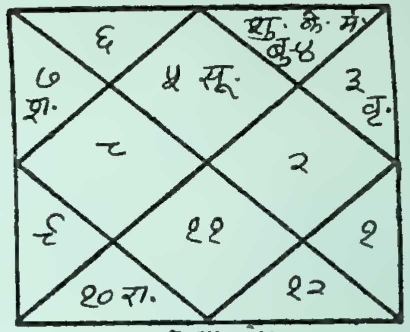

१५०५

१५०६

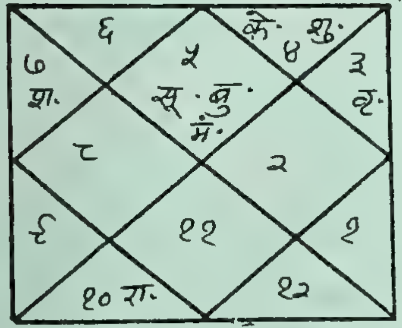

१५०७

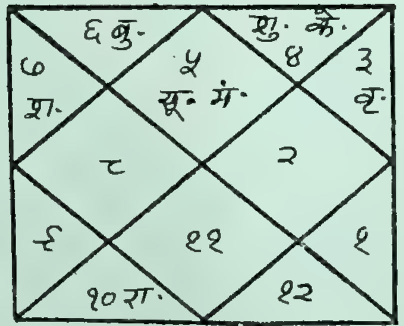

१५०८

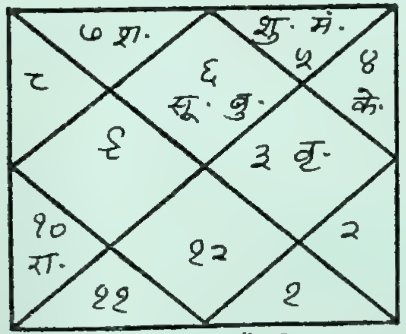

१५०९

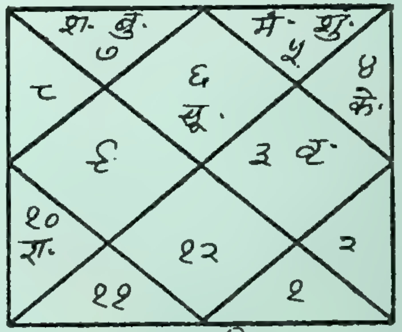

१५१०

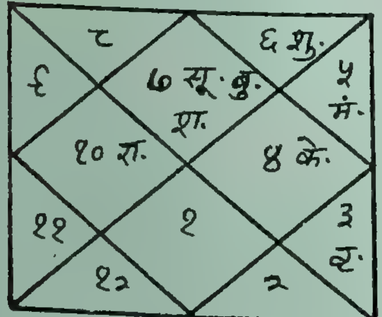

१५११

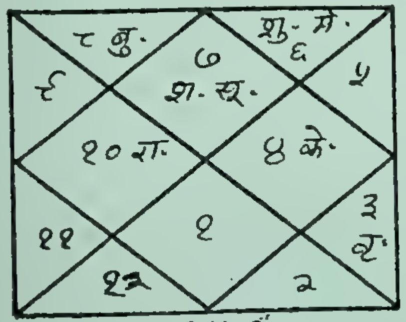

१५१२

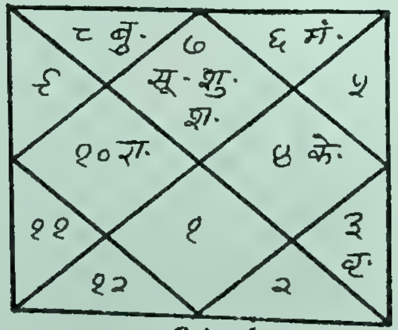

१५१३

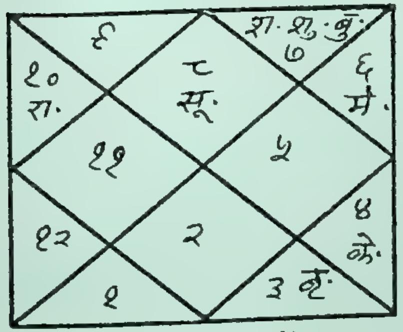

१५१४

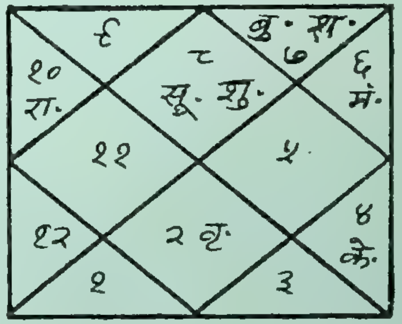

१५१५

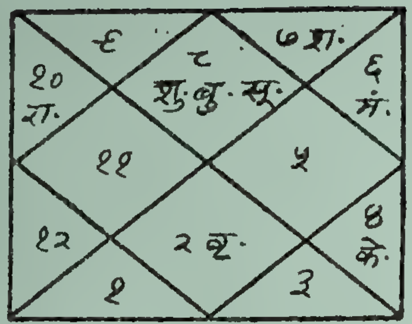

१५१६

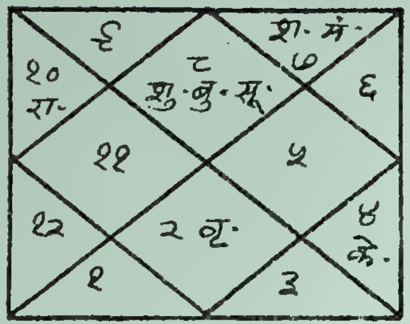

१५१७

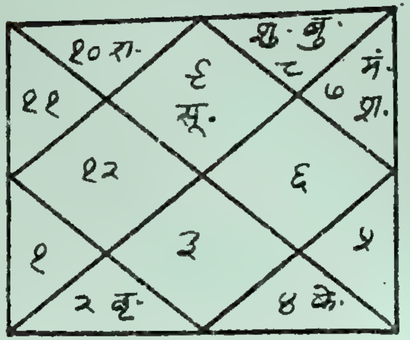

१५१८

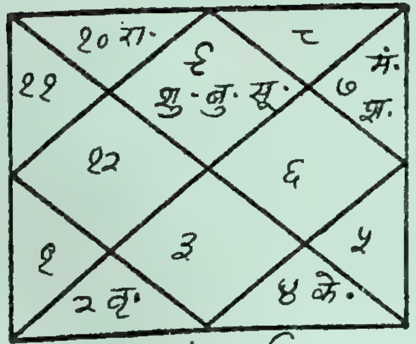

१५१९

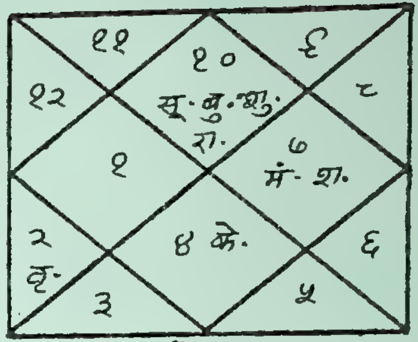

१५२०

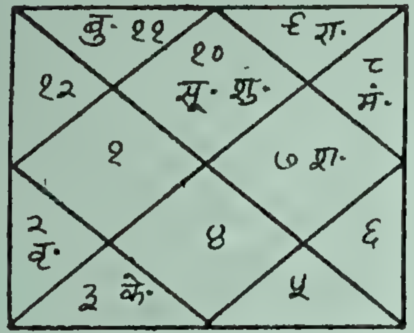

१५२१

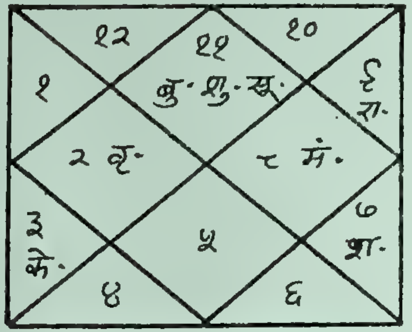

१५२२

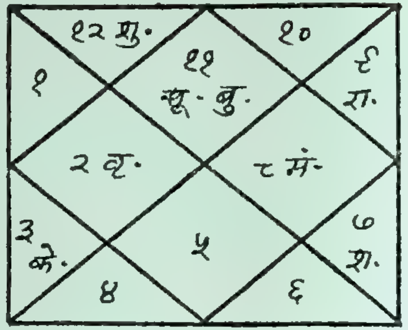

१५२३

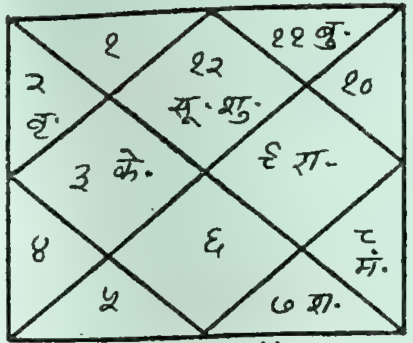

१५२४

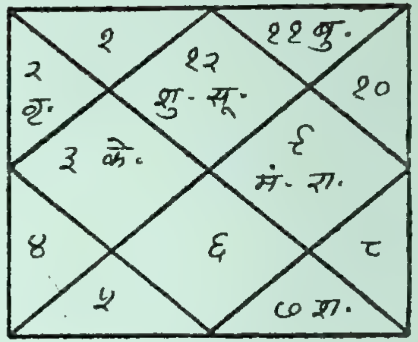

१५२५

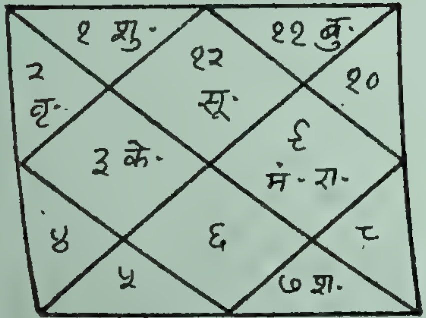

१५२६

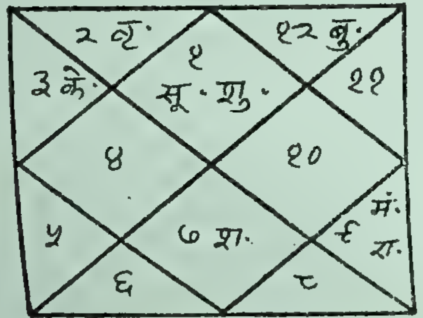

१५२७

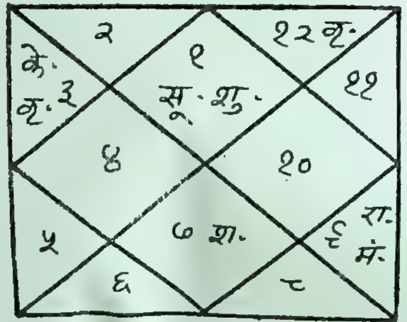

१५२८

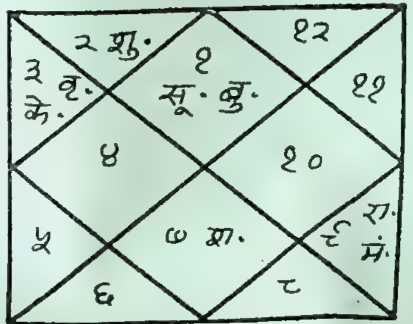

१५२९

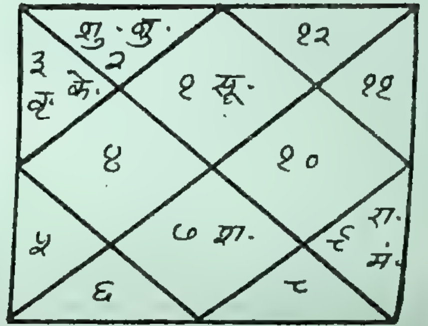

१५३०

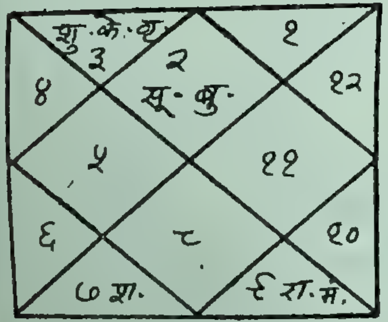

१५३१

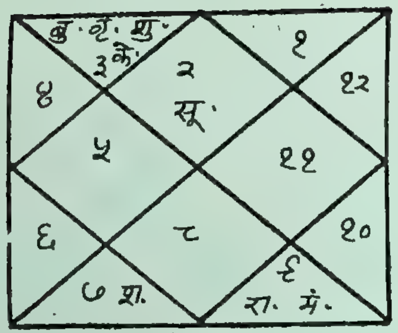

१५३२

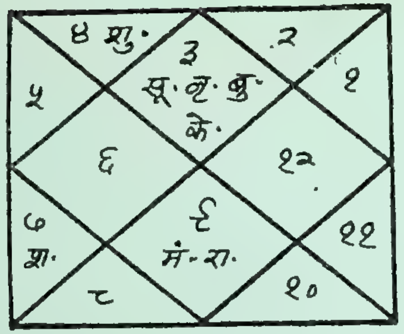

१५३३

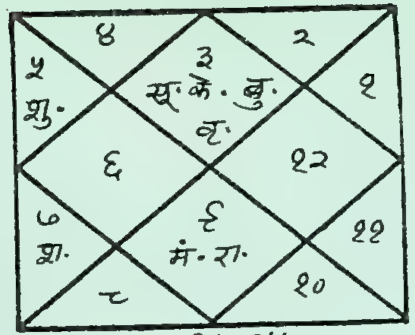

१५३४

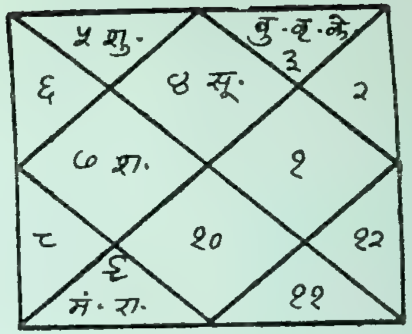

१५३५

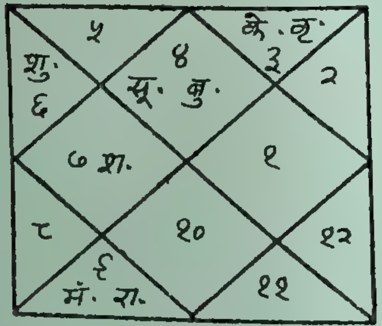

१५३६

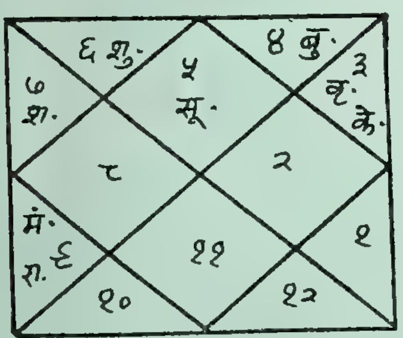

१५३७

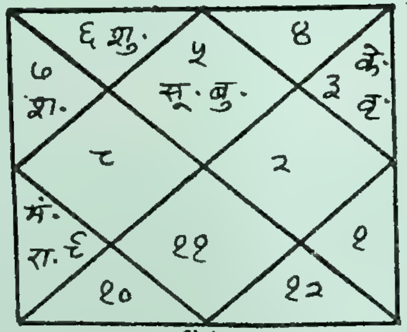

१५३८

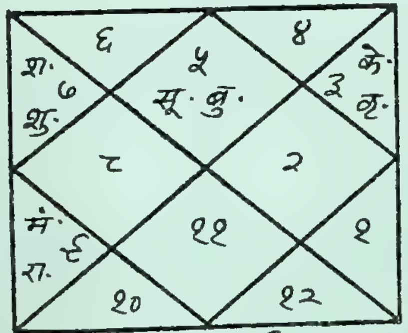

१५३९

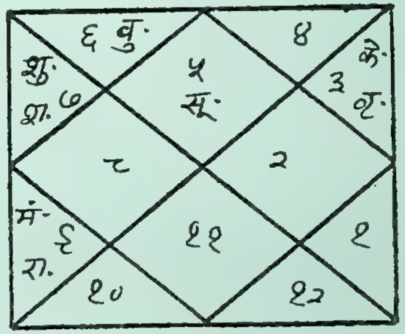

१५४०

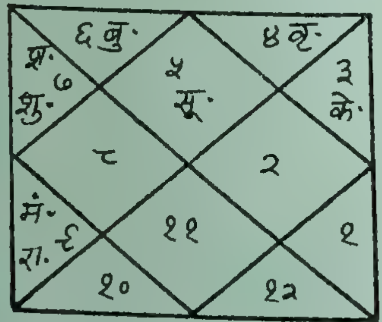

१५४१

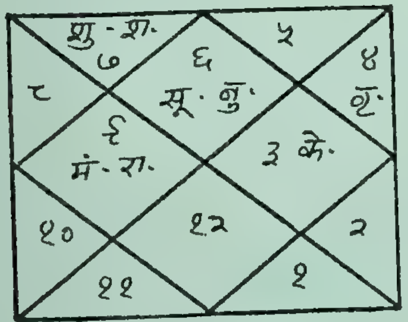

१५४२

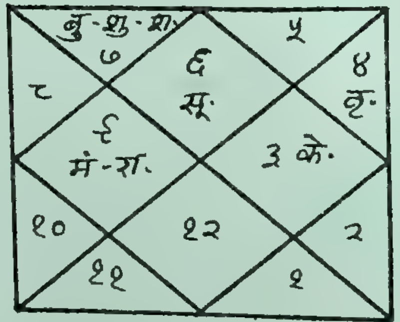

१५४३

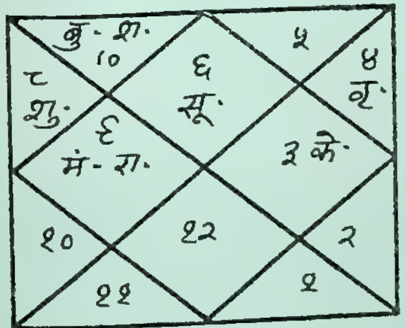

१५४४

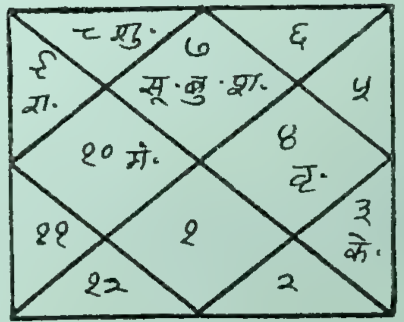

१५४५

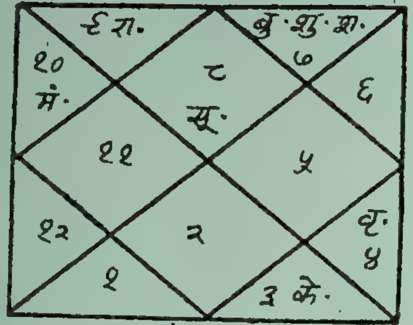
१५४६

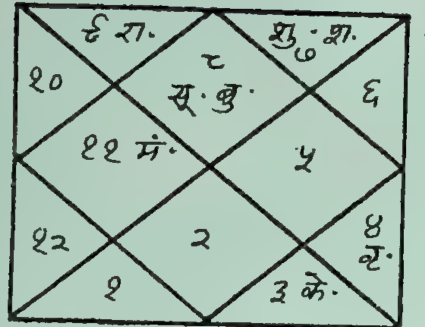
१५४७

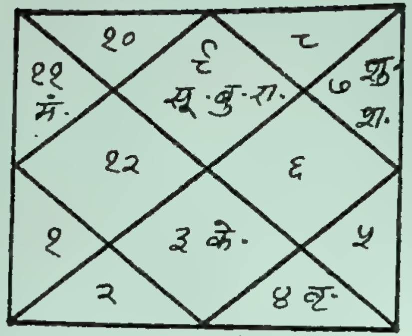
१५४८

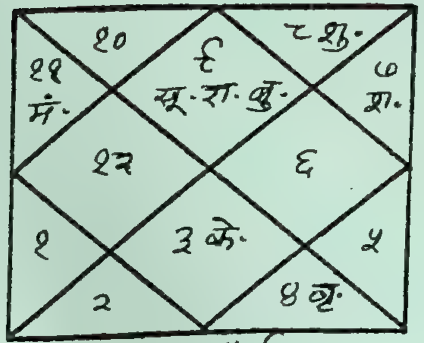
१५४९

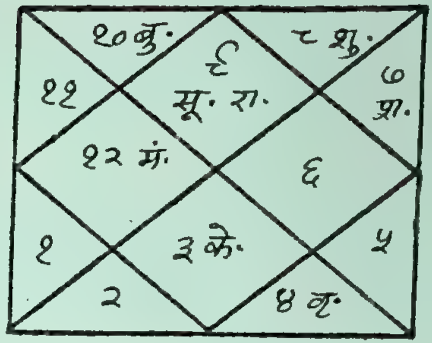
१५५०

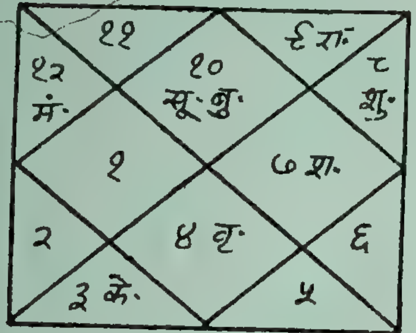
१५५१

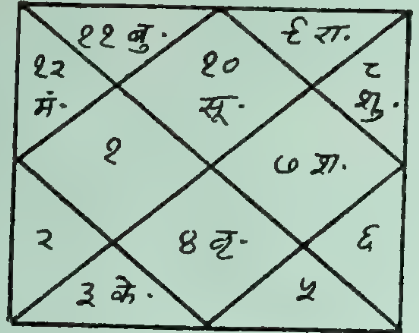
१५५२

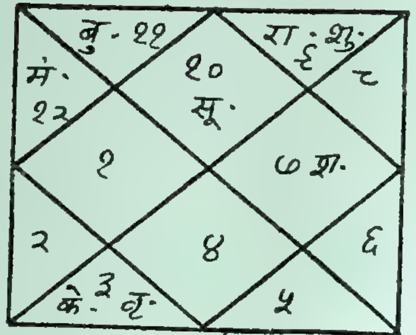
१५५३

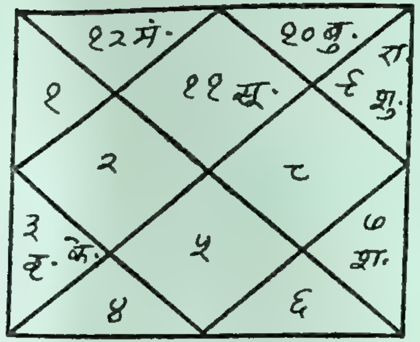
१५५४

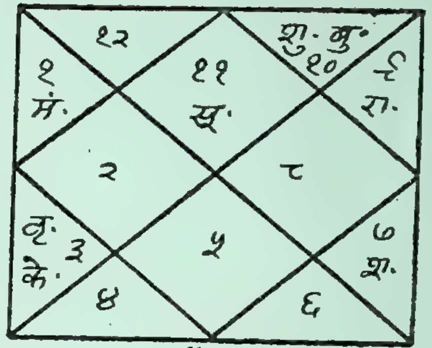
१५५५

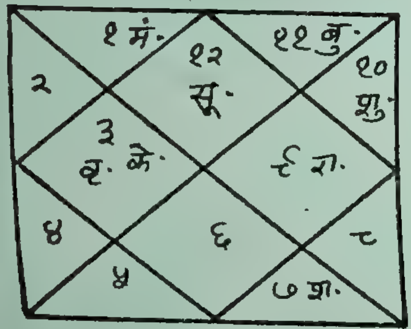
१५५६

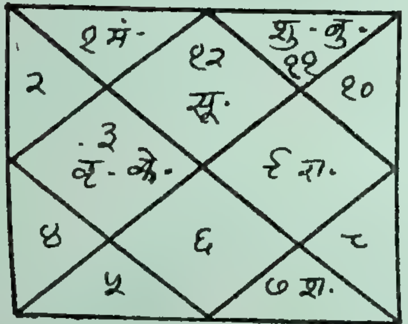
१५५७

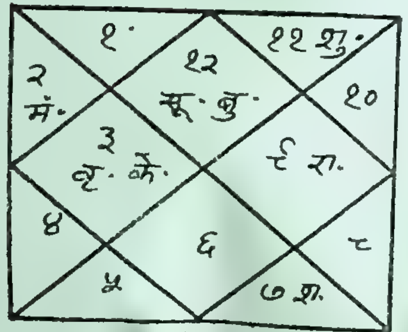
१५५८

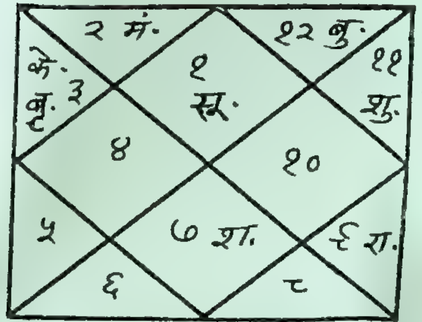
१५५९

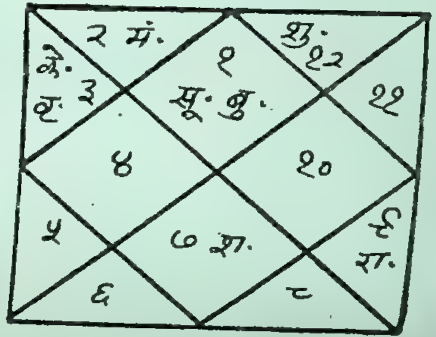
१५६०

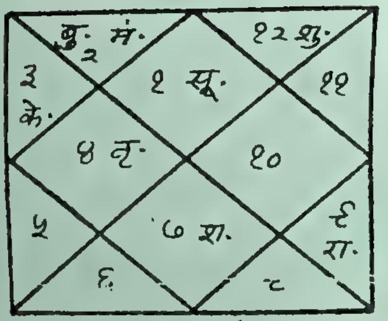
१५९६१

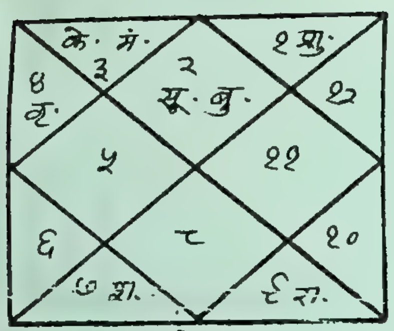
१५९६२

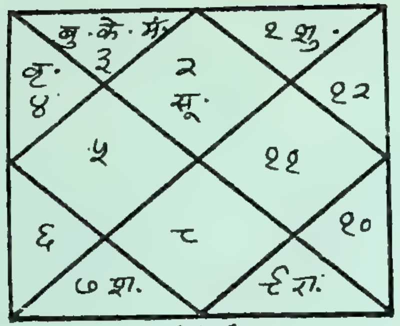
१५९६३

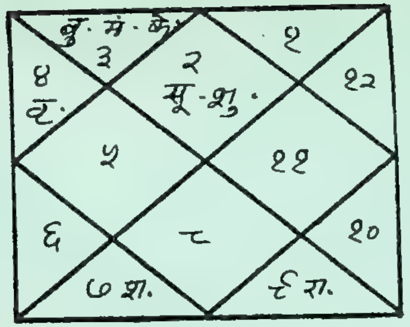
१५९६४

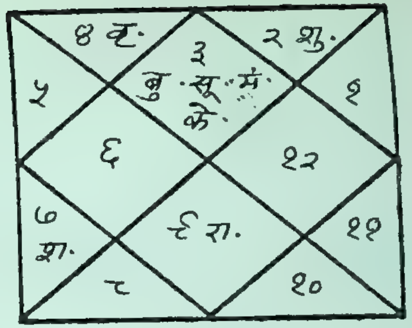
१५९६५

१५९६६

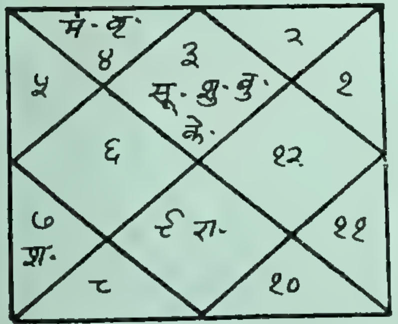
१५९६७

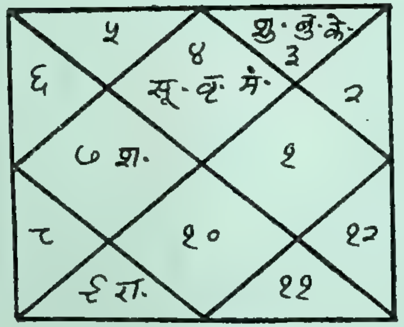
१५९६८

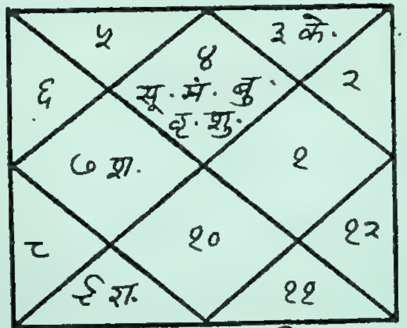
१५९६९

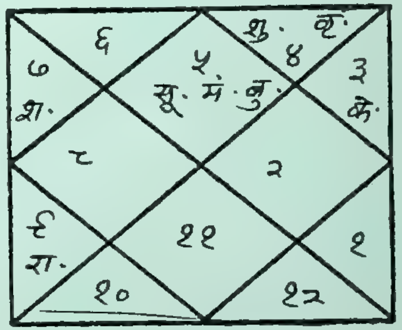
१५९७०

१५९७१

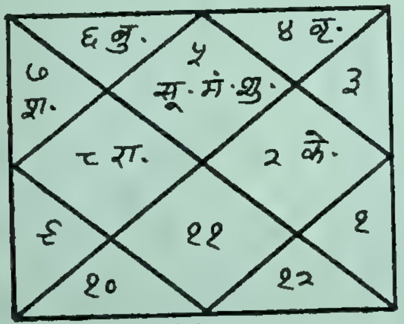
१५९७२

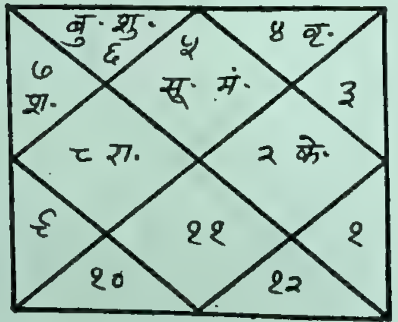
१५९७३

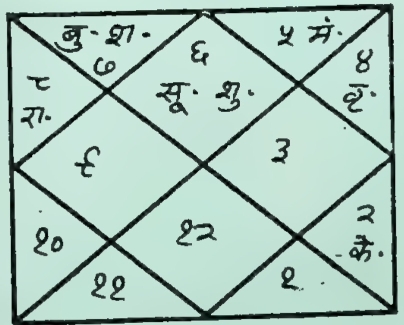
१५९७४

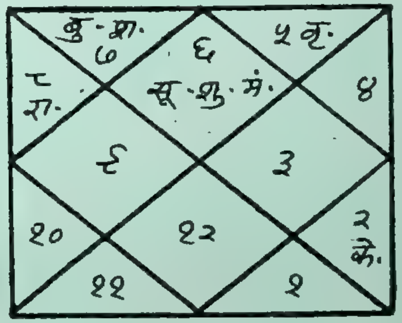
१५९७५

भू० सं०

कु० प०

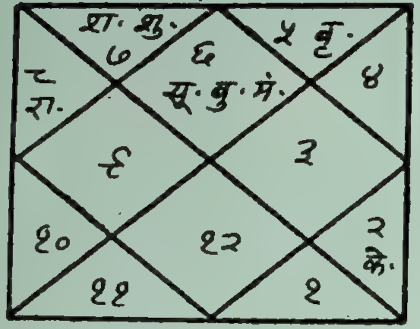

१५७६

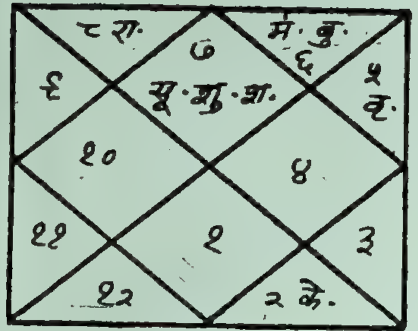

१५७७

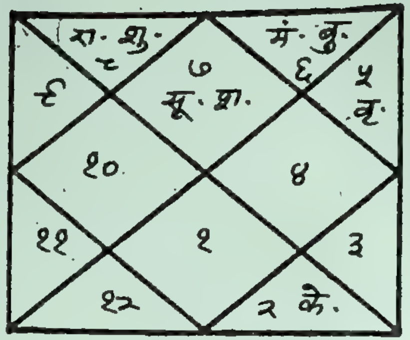

१५७८

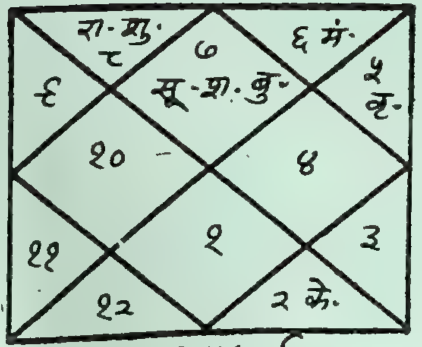

१५७९

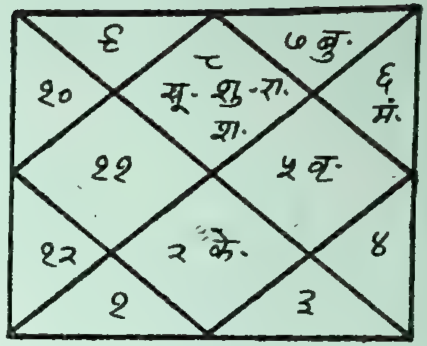

१५८०

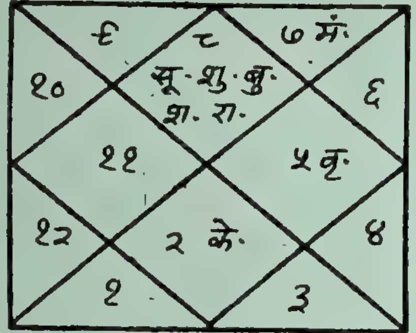

१५८१

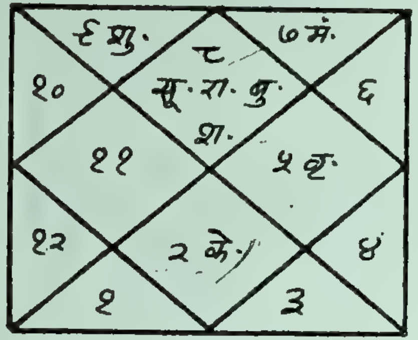

१५८२

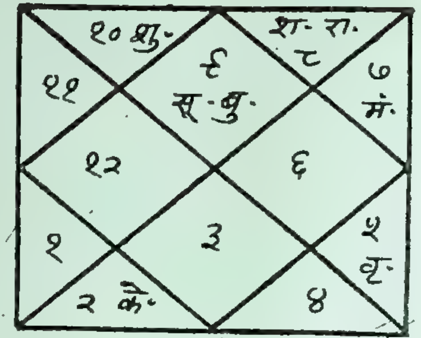

१५८३

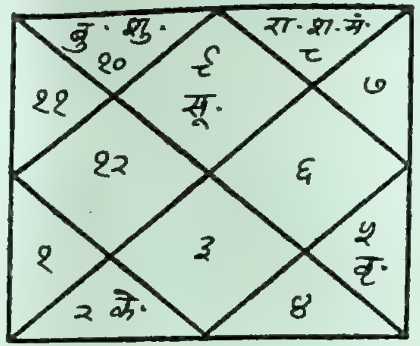

१५८४

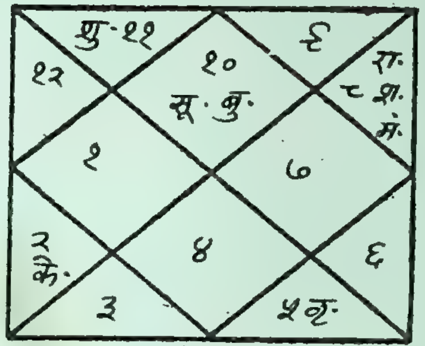

१५८५

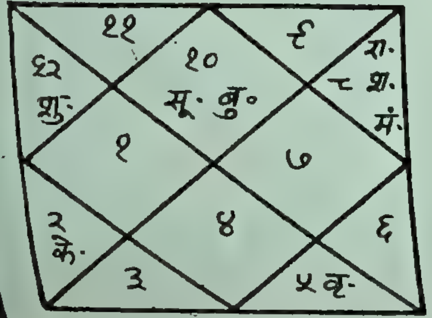

१५८६

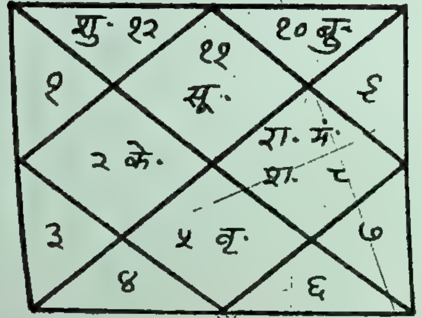

१५८७

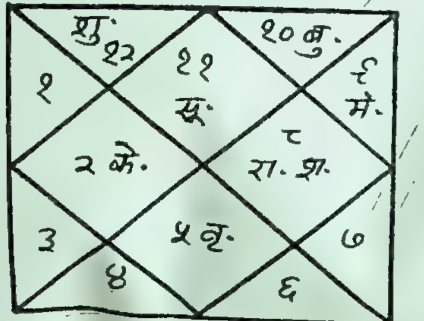

१५८८

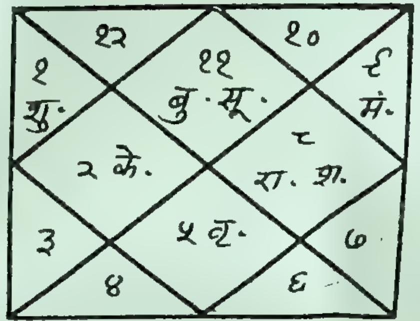

१५८९

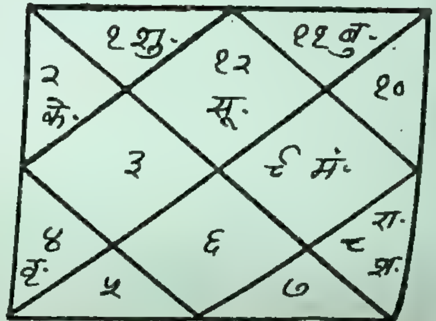

१५९०

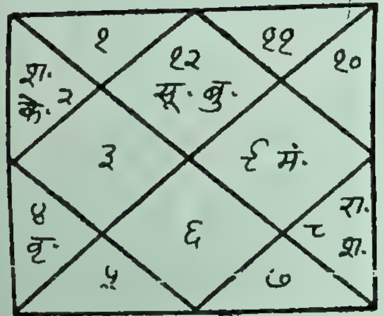

१५९१

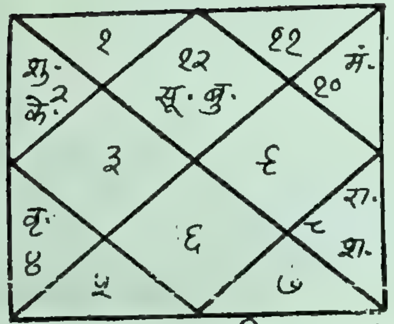

१५९२

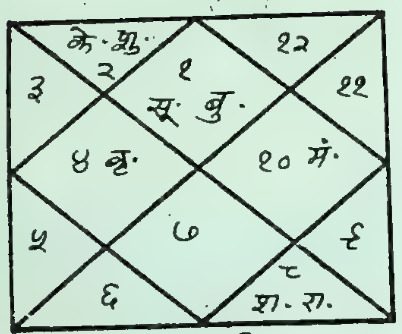

१५९३

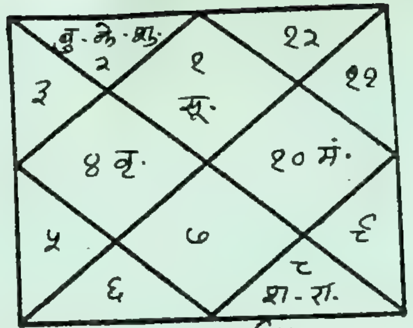

१५९४

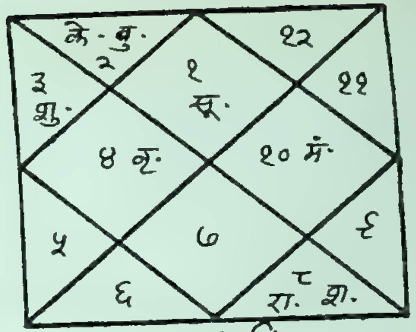

१५९५

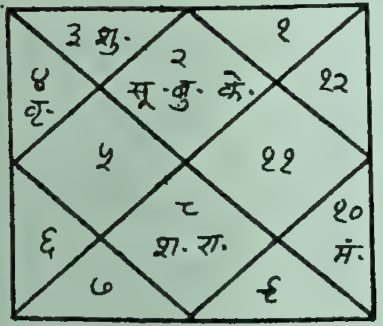

१५९६

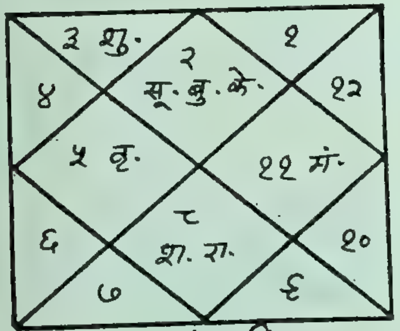

१५९७

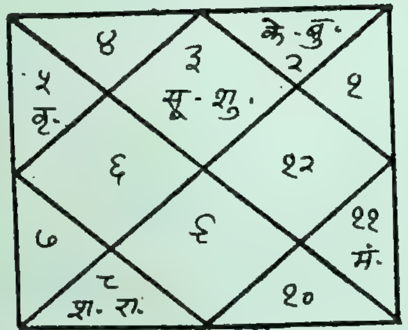

१५९८

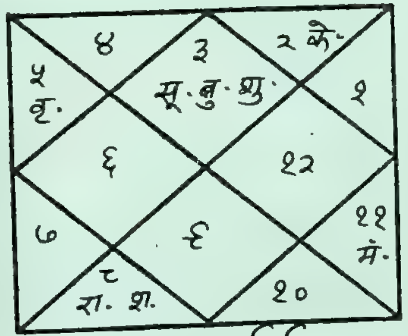

१५९९

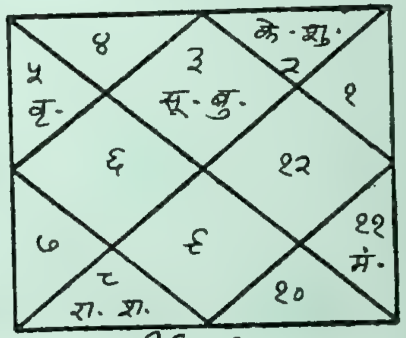

१६००

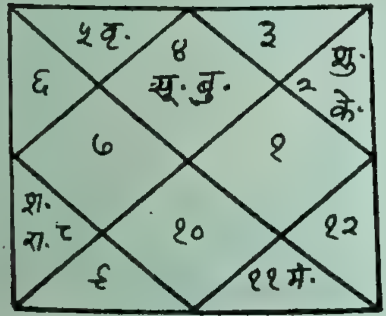

१६०१

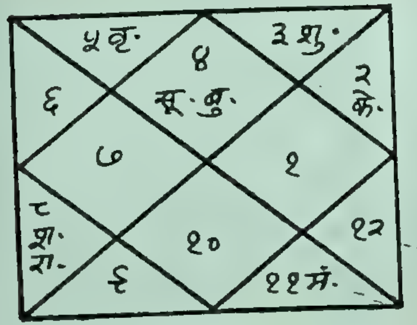

१६०२

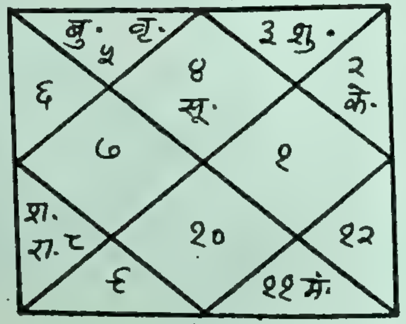

१६०३

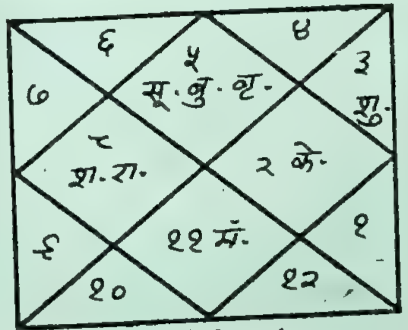

१६०४

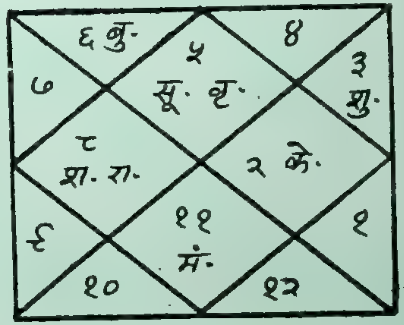

१६०५

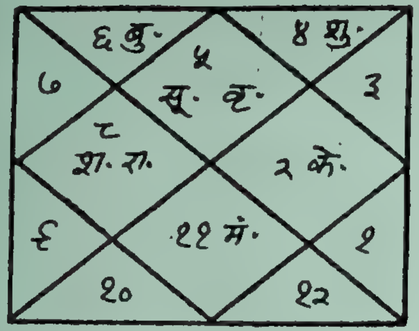

१९०६

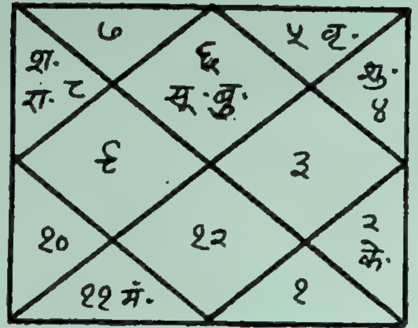

१९०७

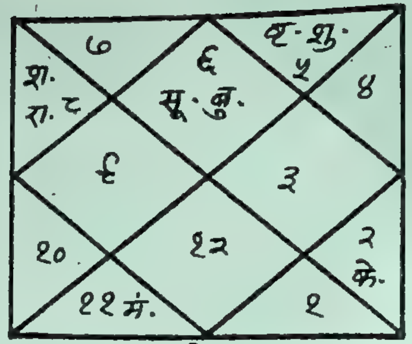

१९०८

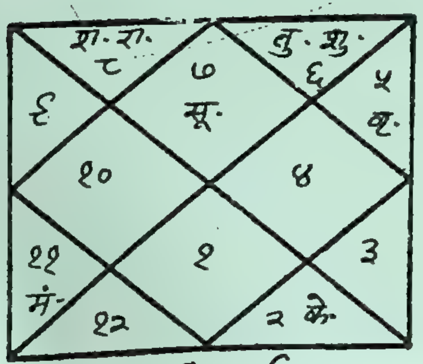

१९०९

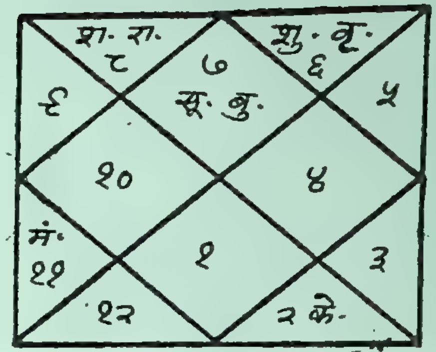

१९१०

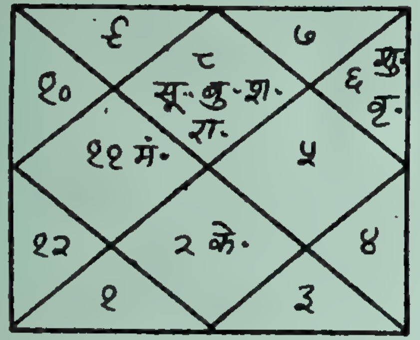

१९११

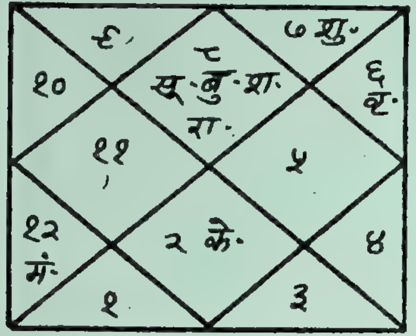

१९१२

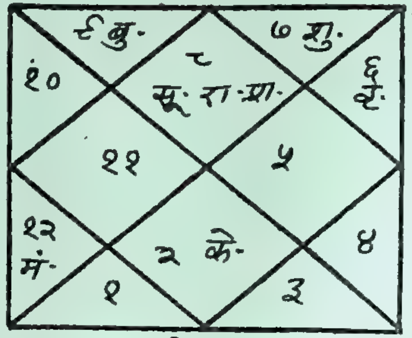

१९१३

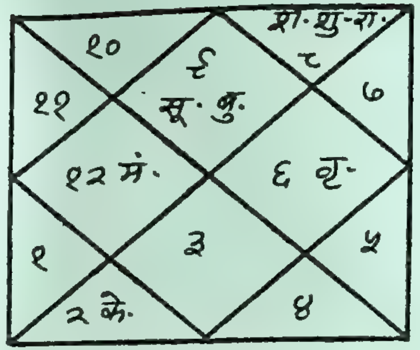

१९१४

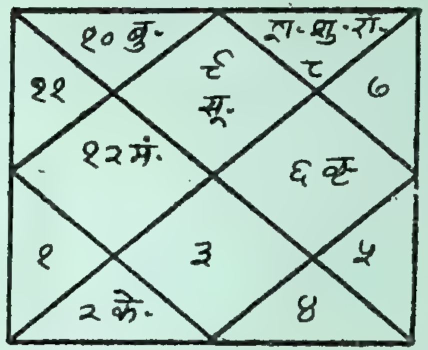

१९१५

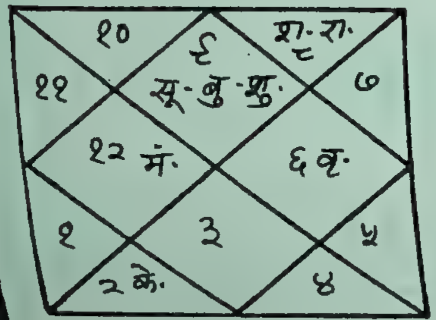

१९१६

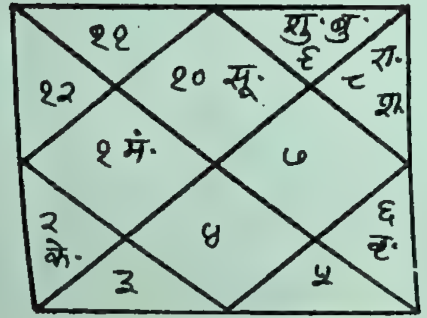

१९१७

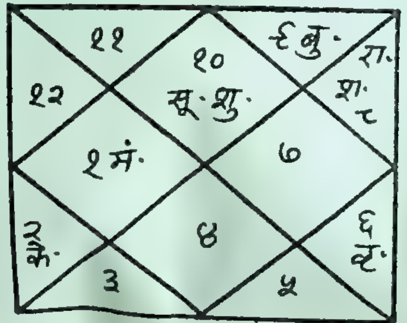

१९१८

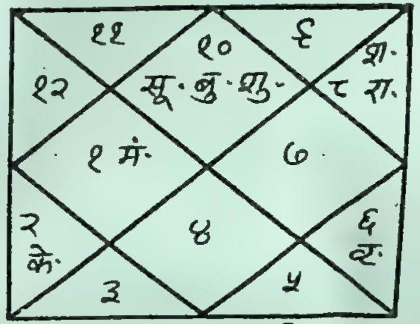

१९१९

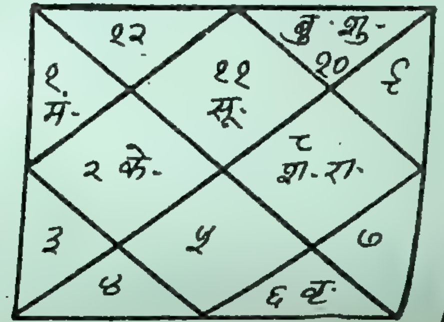

१९२०

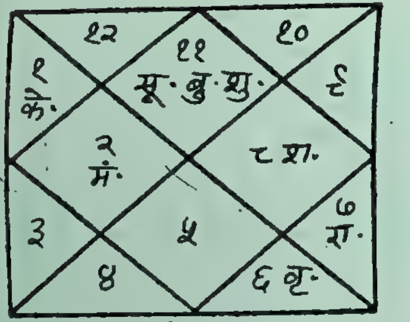

१६२१

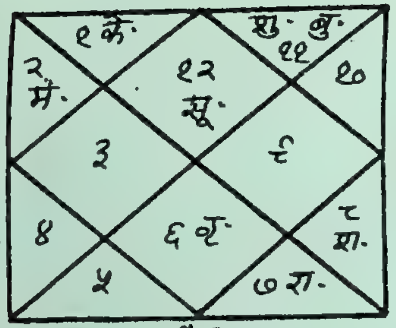

१६२२

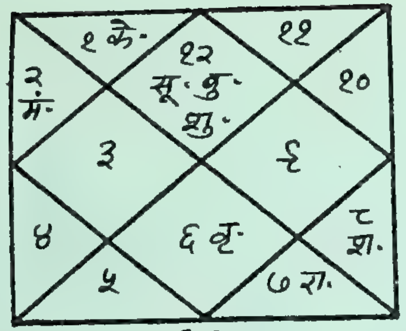

१६२३

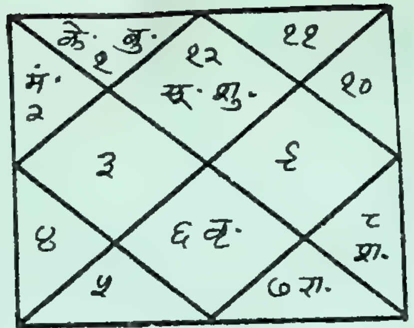

१६२४

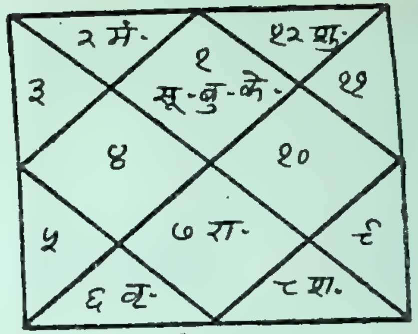

१६२५

१६२६

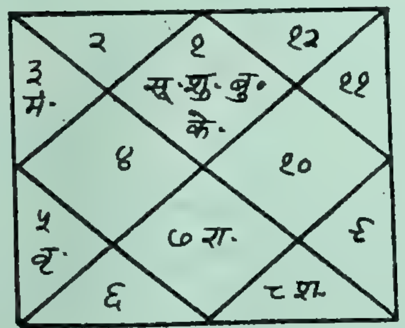

१६२७

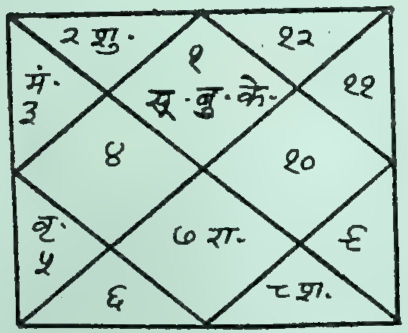

१६२८

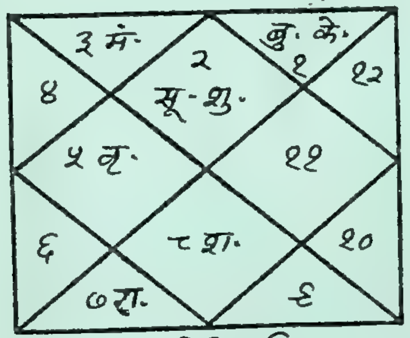

१६२९

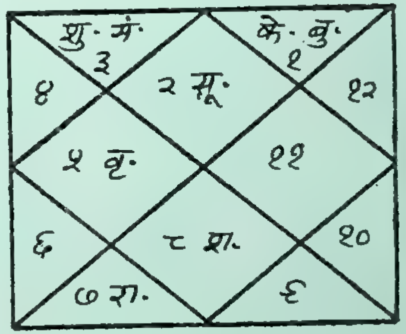

१६३०

१६३१

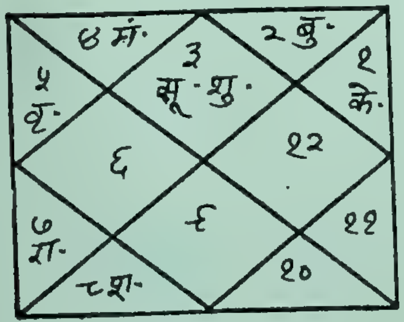

१६३२

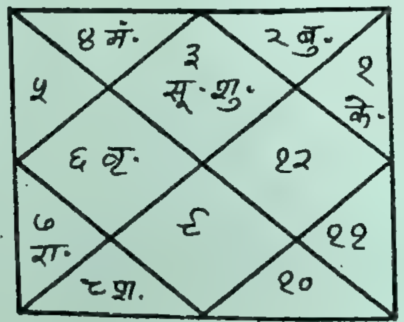

१६३३

१६३४

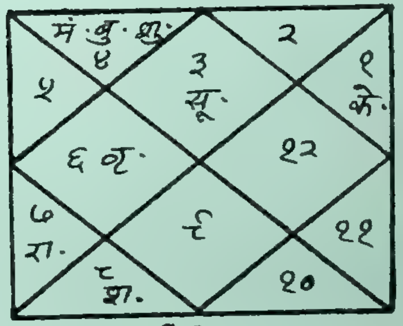

१६३५

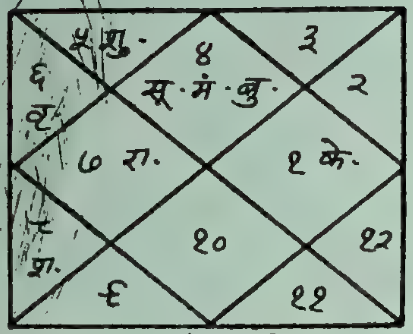

१६३६

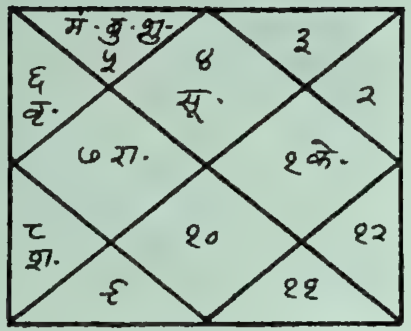

१६३७

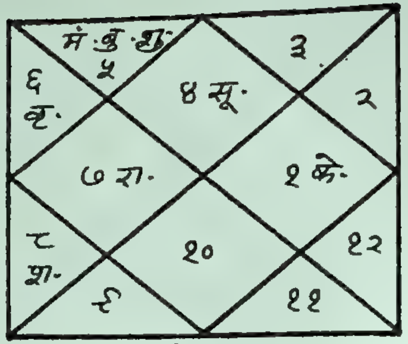

१६३८

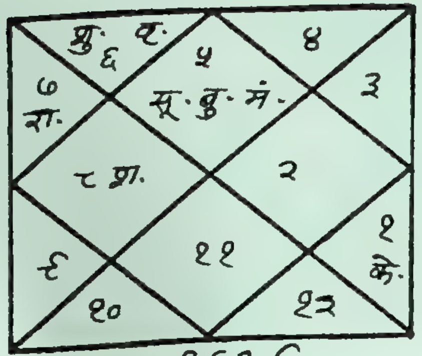

१६३९

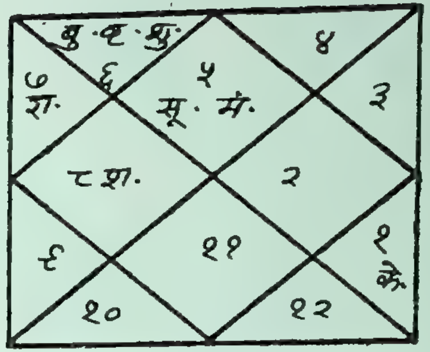

१६४०

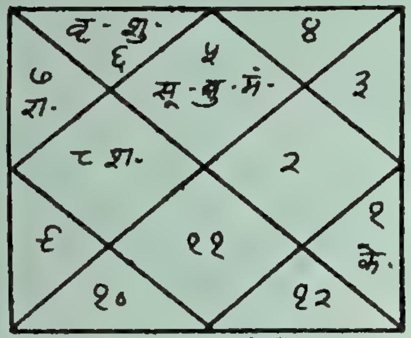

१६४१

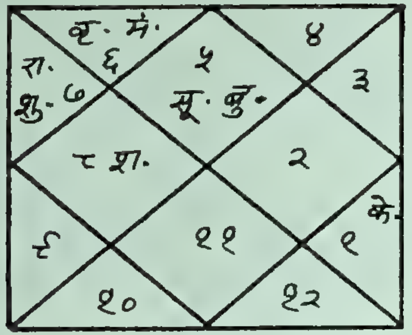

१६४२

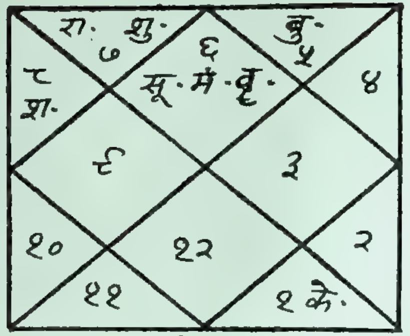

१६४३

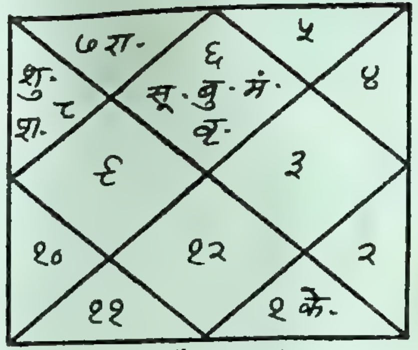

१६४४

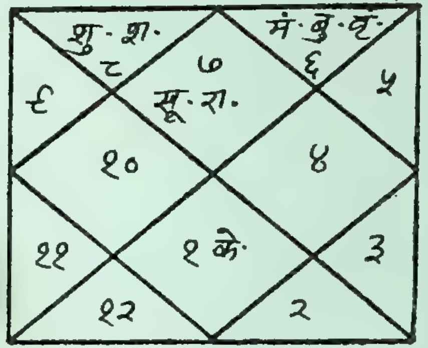

१६४५

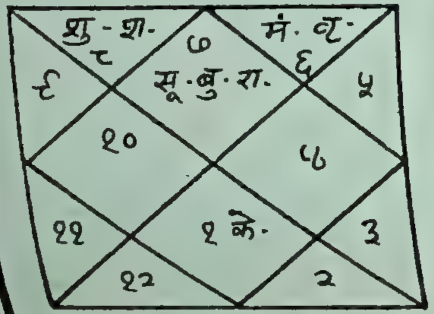

१६४६

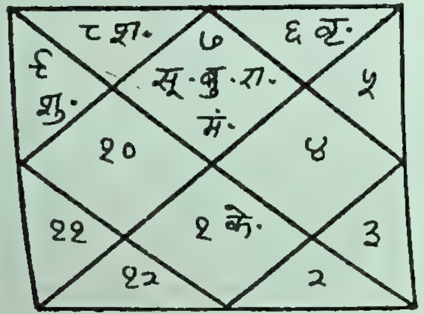

१६४७

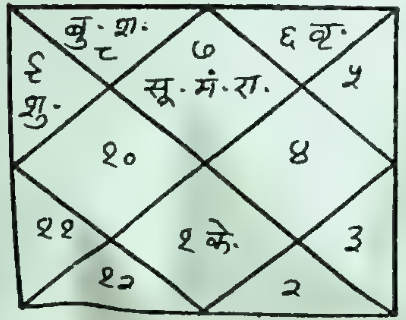

१६४८

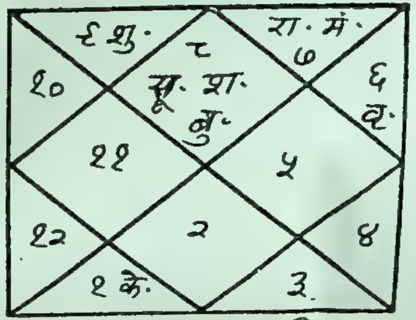

१६४९

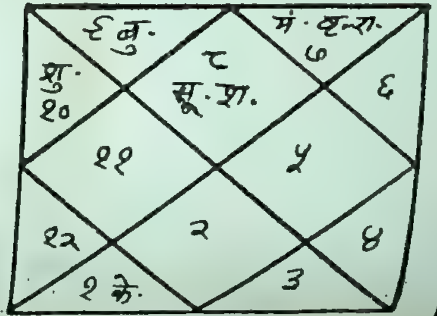

१६५०

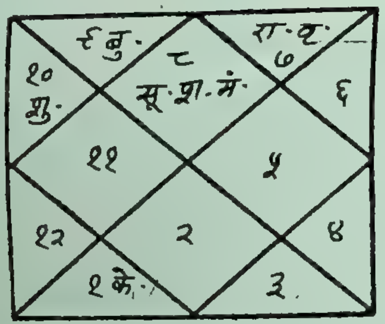

१९५१

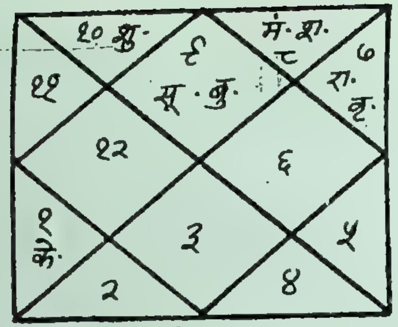

१९५२

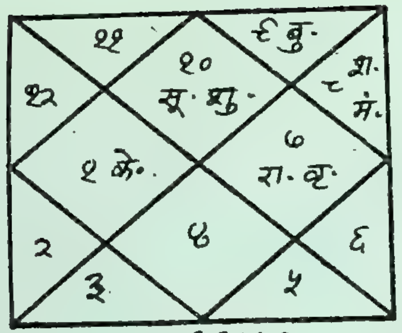

१९५३

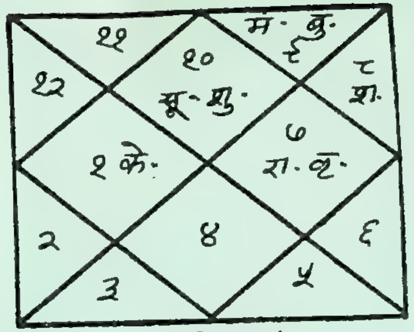

१९५४

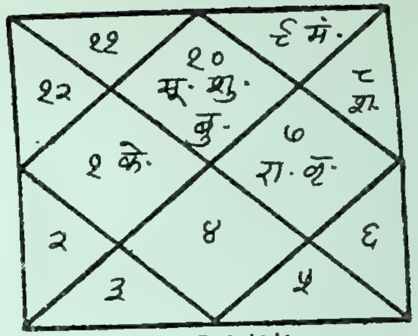

१९५५

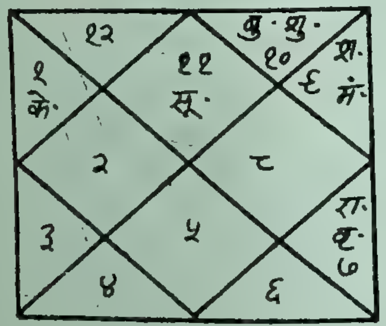

१९५६

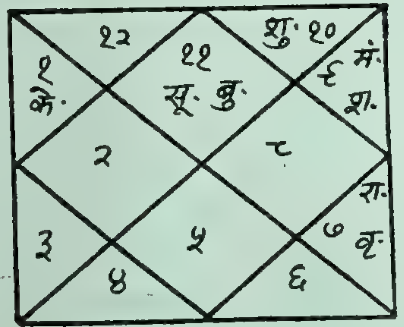

१९५७

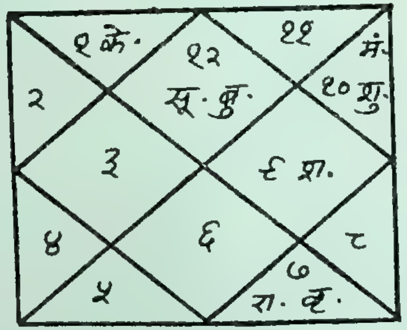

१९५८

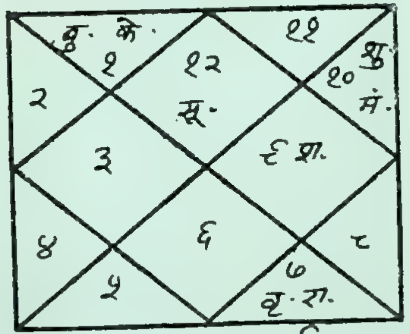

१९५९

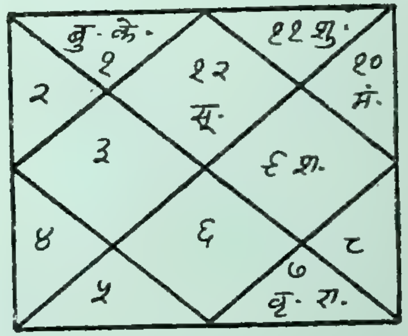

१९६०

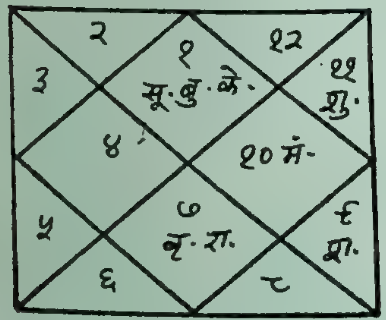

१९६१

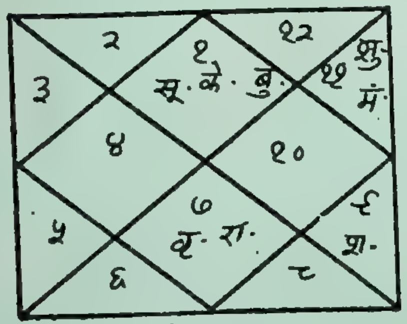

१९६२

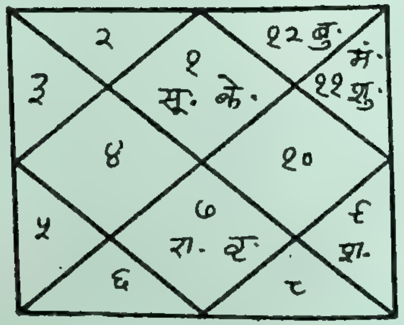

१९६३

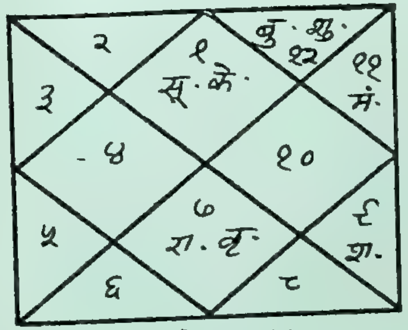

१९६४

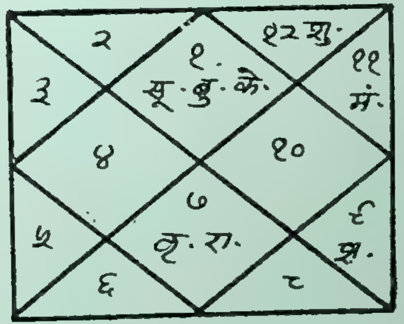

१९६५

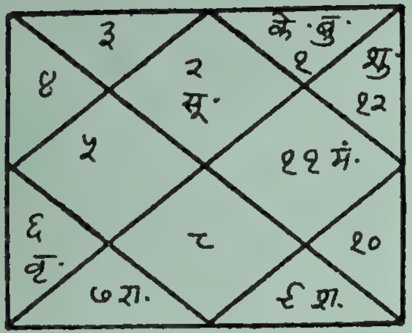
१६६६

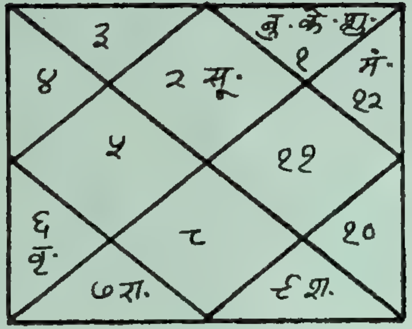
१६६७

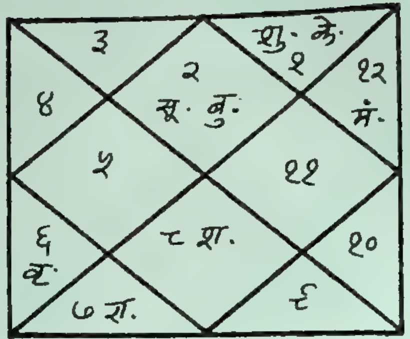
१६६८

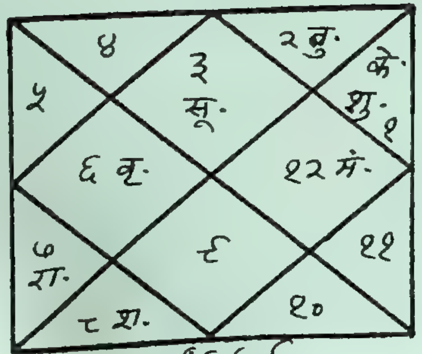
१६६९

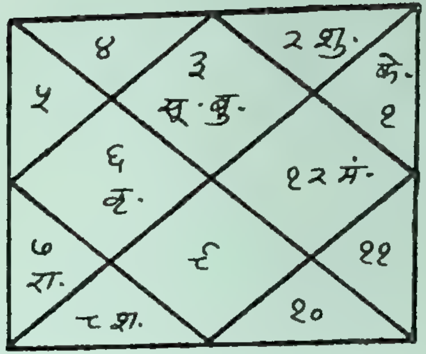
१६७०

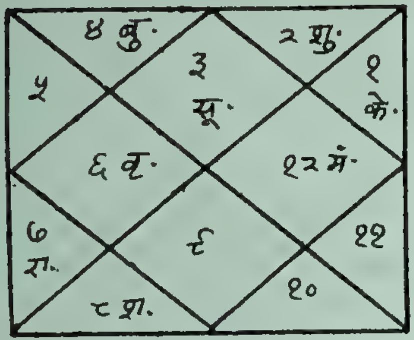
१६७१

१६७२

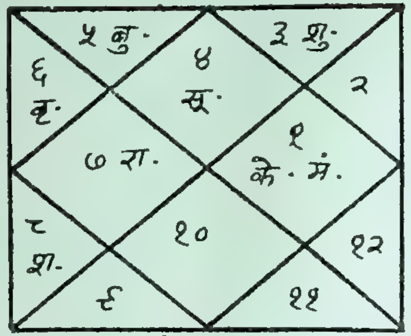
१६७३

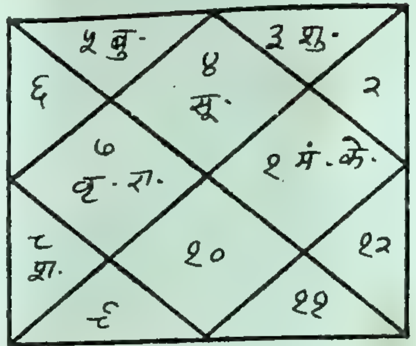
१६७४

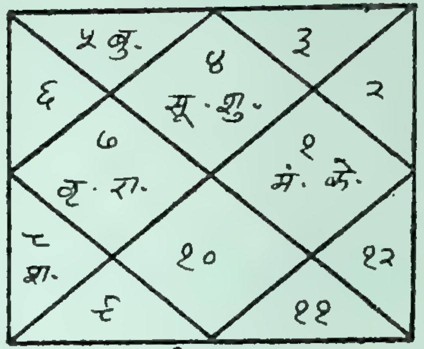
१६७५

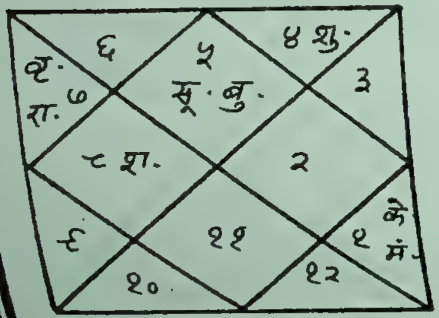
१६७६

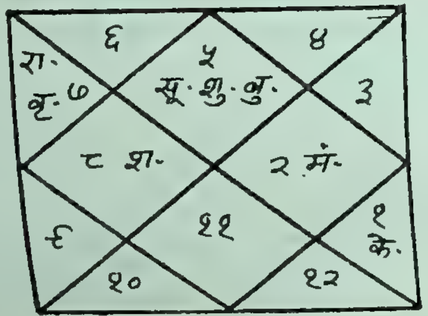
१६७७

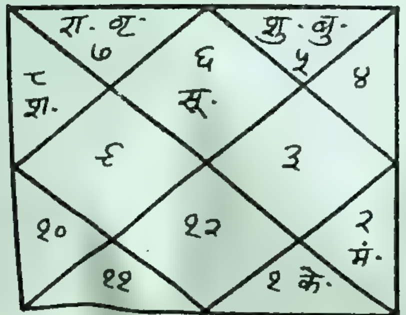
१६७८

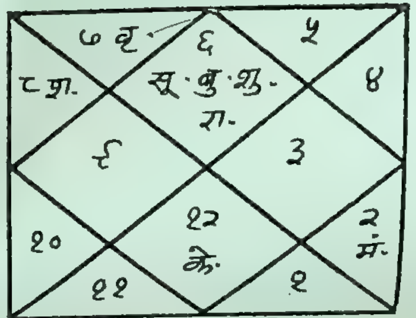
१६७९

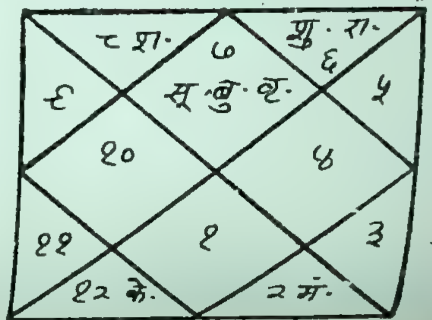
१६८०

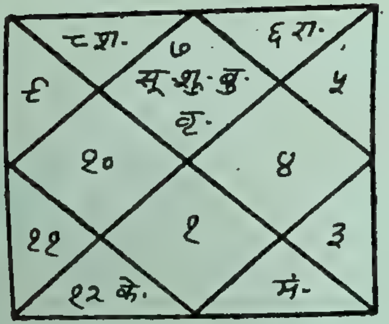

१९८१

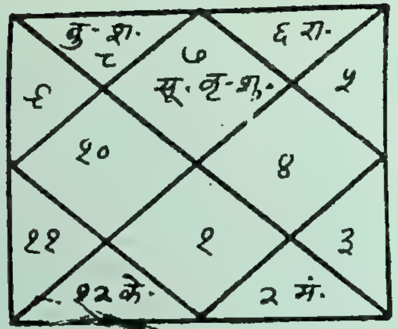

१९८२

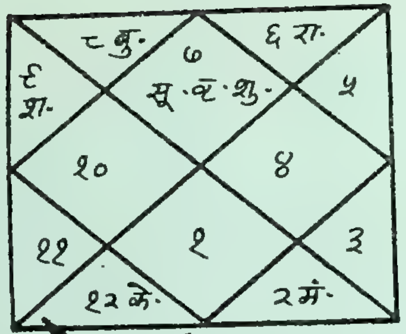

१९८३

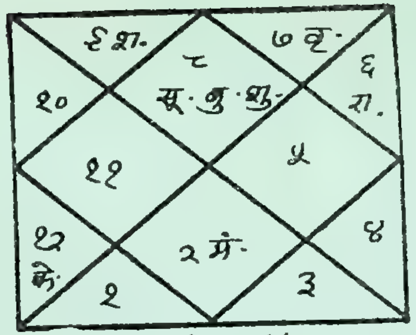

१९८४

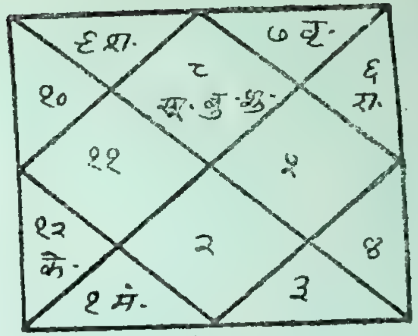

१९८५

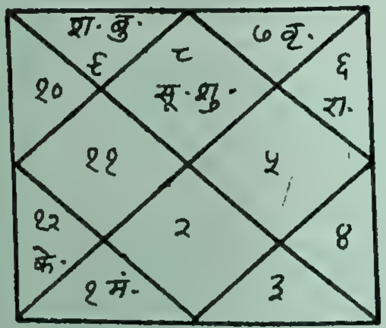

१९८६

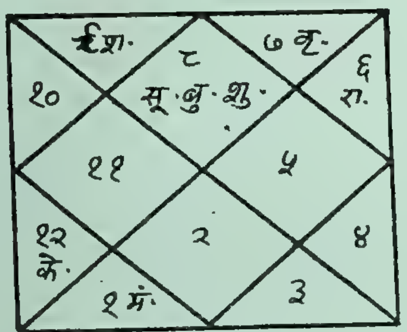

१९८७

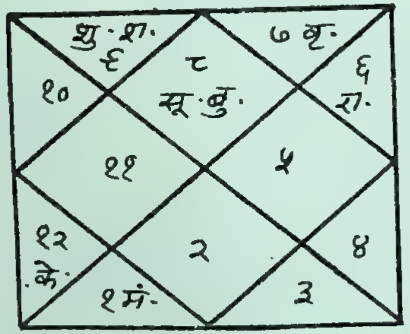

१९८८

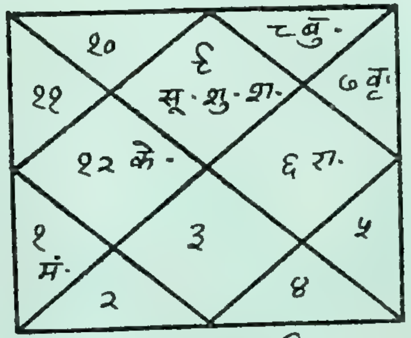

१९८९

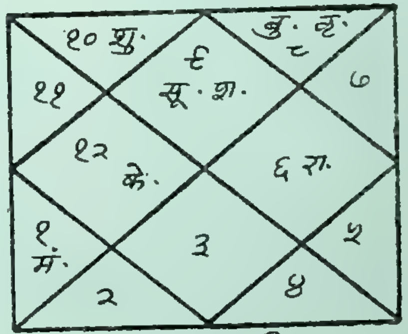

१९९०

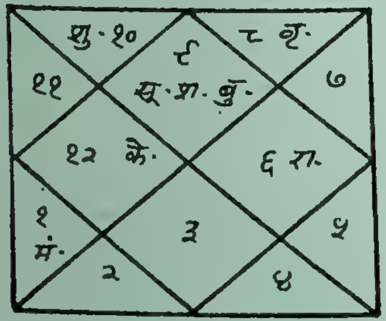

१९९१

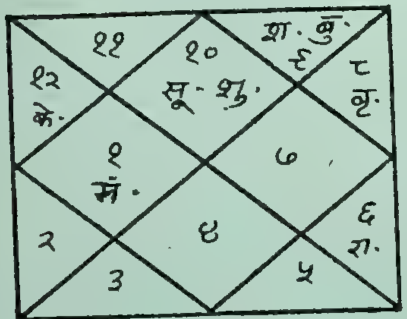

१९९२

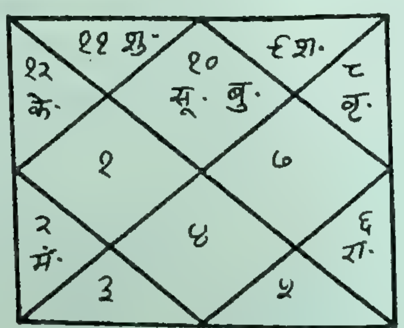

१९९३

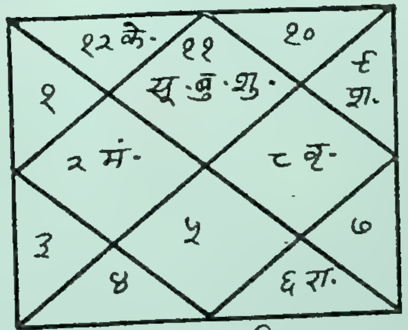

१९९४

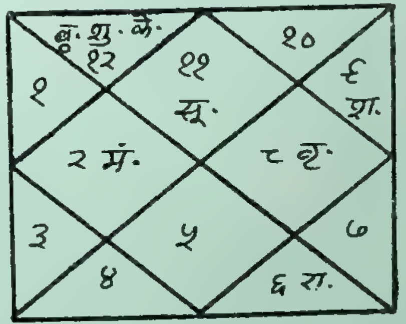

१९९५

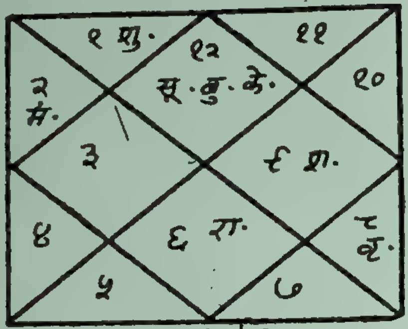

१८९६

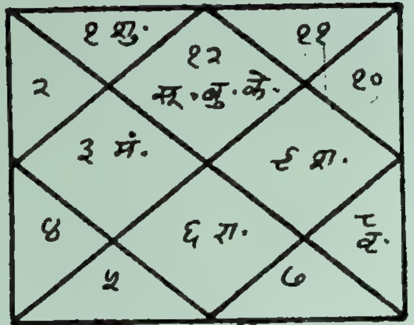

१८९७

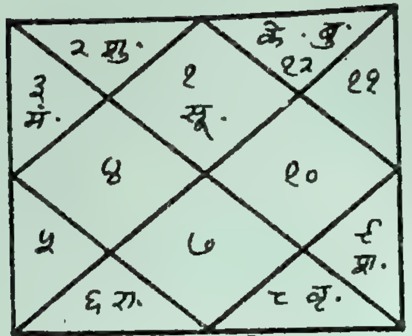

१८९८

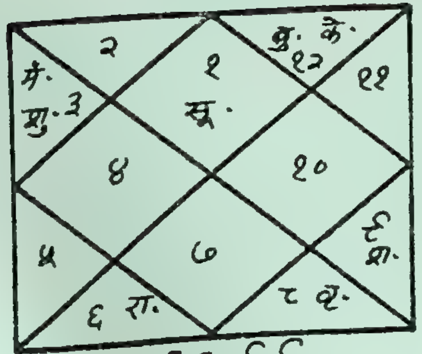

१८९९

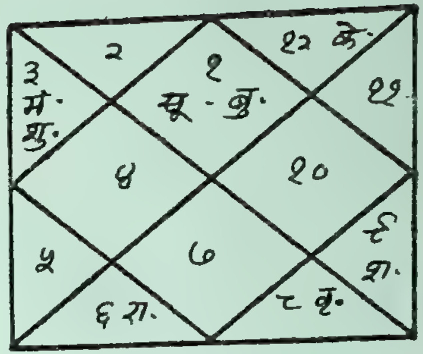

१९००

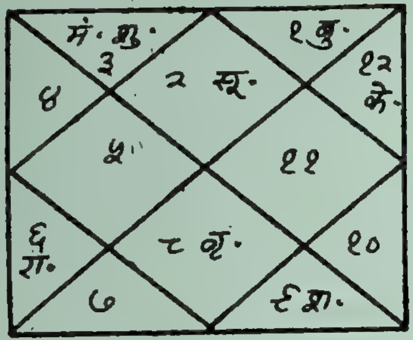

१९०१

१९०२

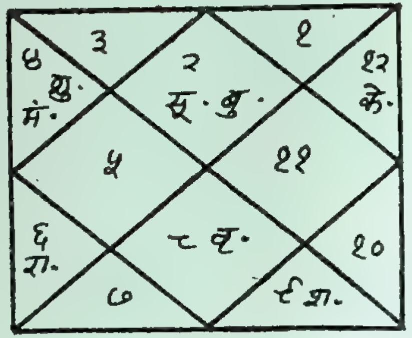

१९०३

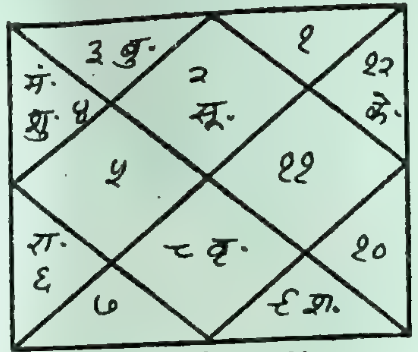

१९०४

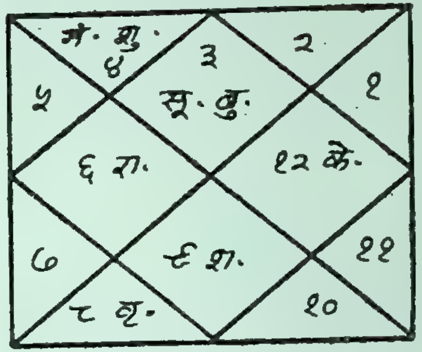

१९०५

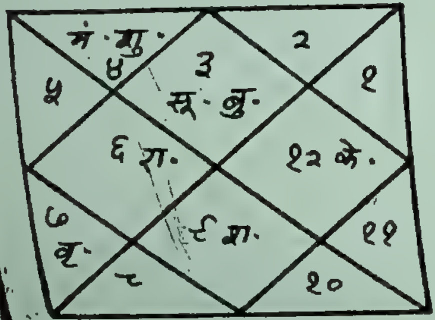

१९०६

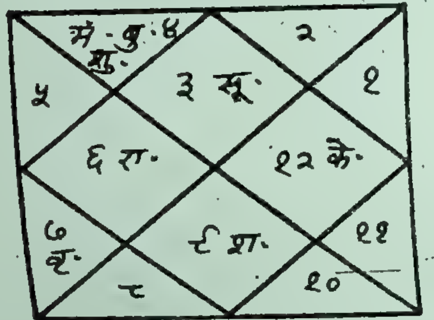

१९०७

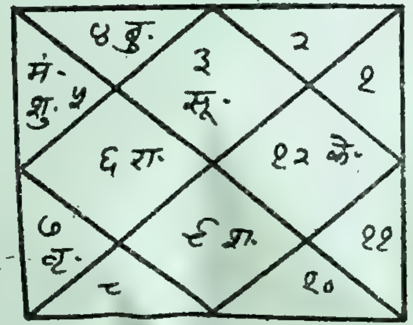

१९०८

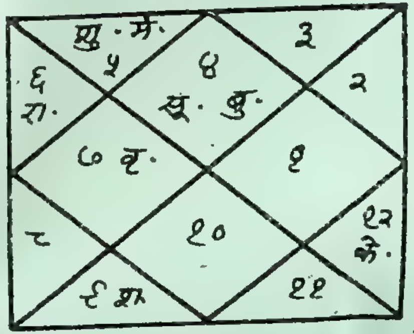

१९०९

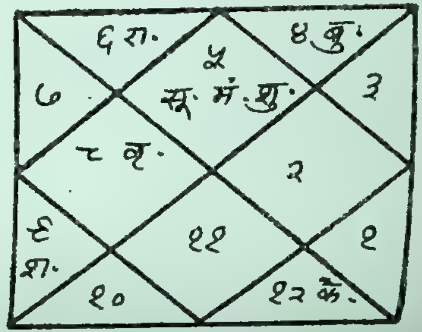

१९१०

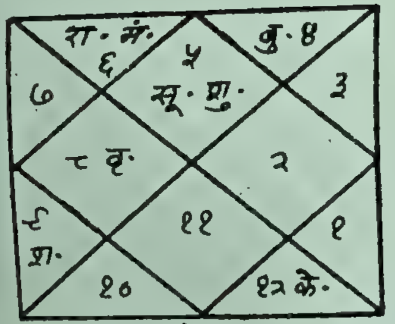

१७११

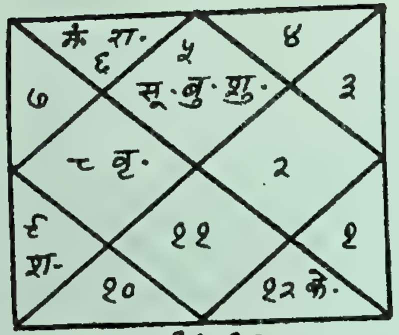

१७१२

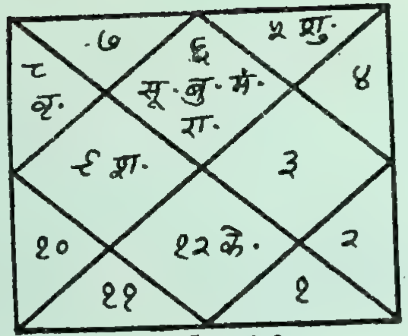

१७१३

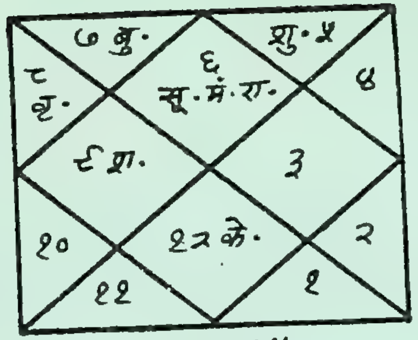

१७१४

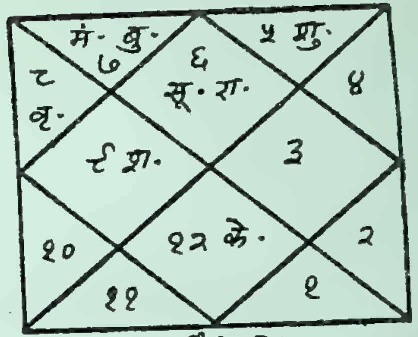

१७१५

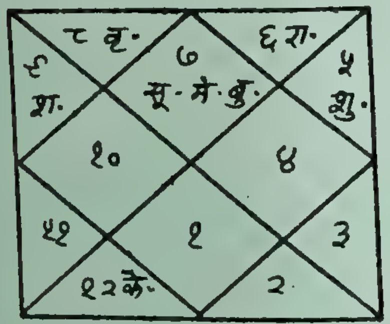

१७१६

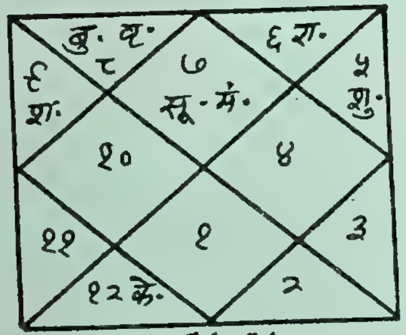

१७१७

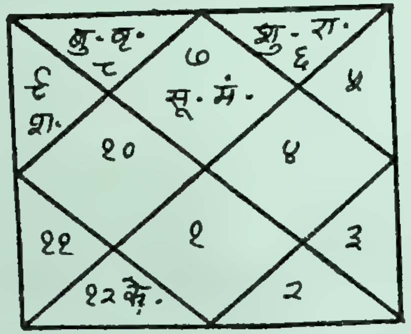

१७१८

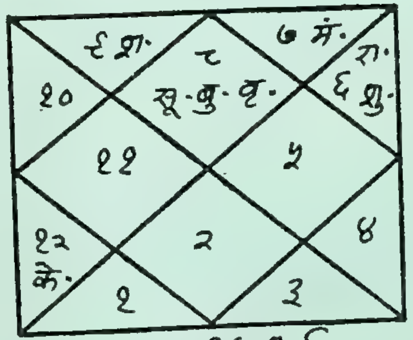

१७१९

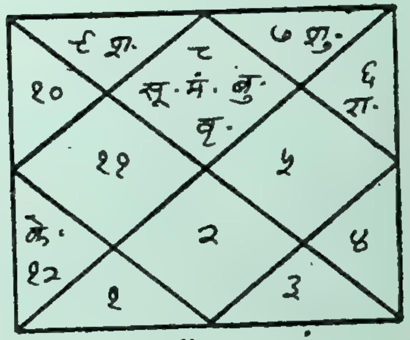

१७२०

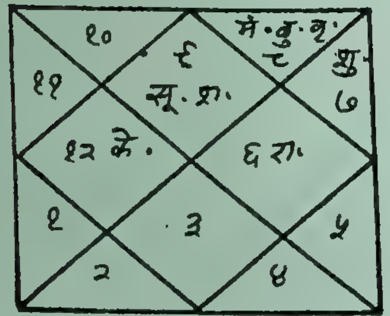

१७२१

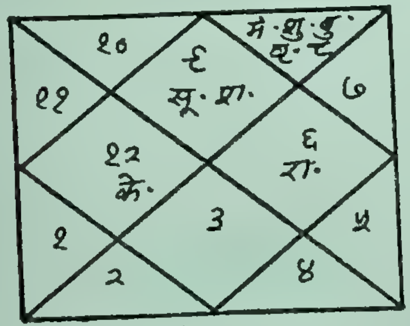

१७२२

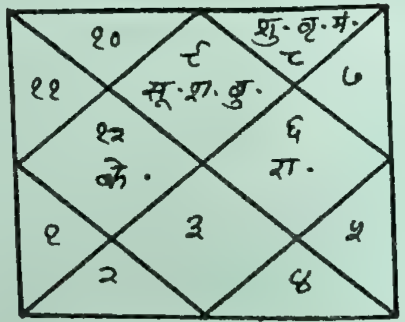

१७२३

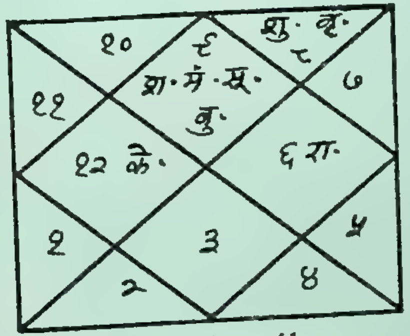

१७२४

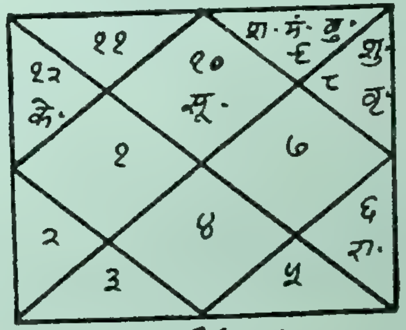

१७२५

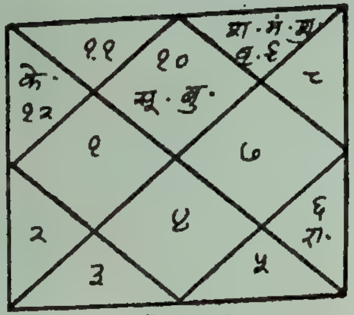
१६२६

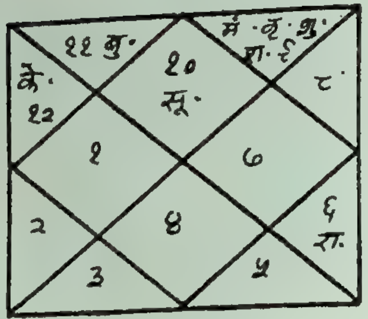
१६२७

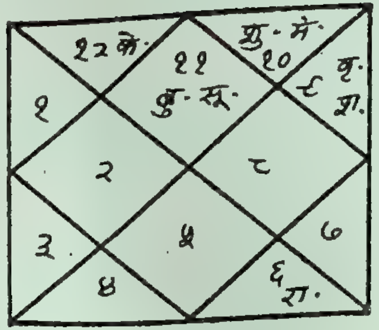
१६२८

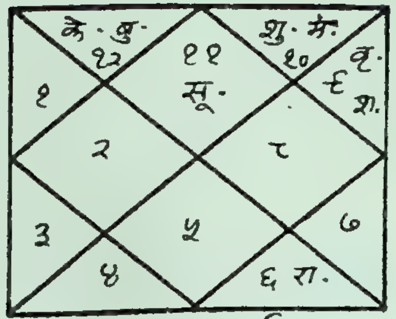
१६२९

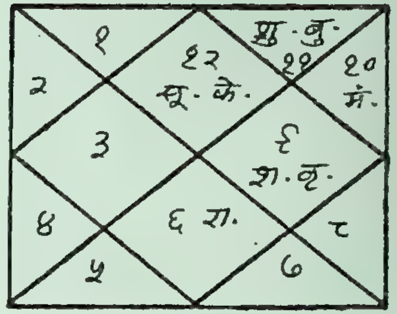
१६३०

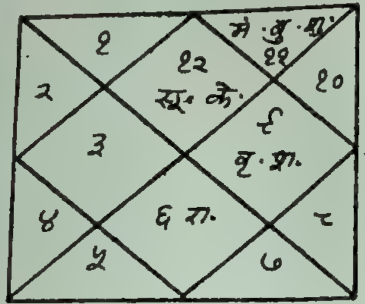
१६३१

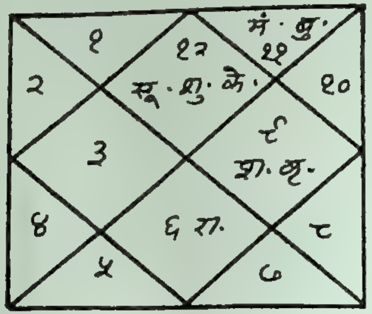
१६३२

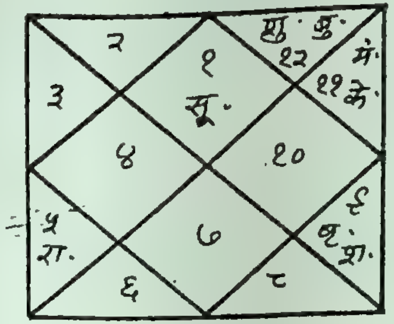
१६३३

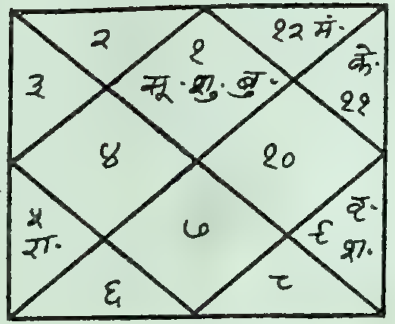
१६३४

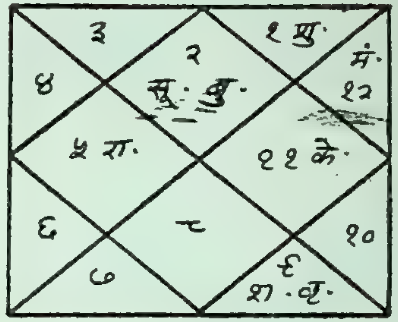
१६३५

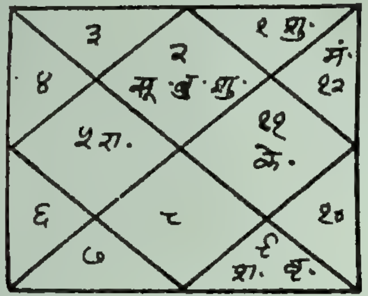
१६३६

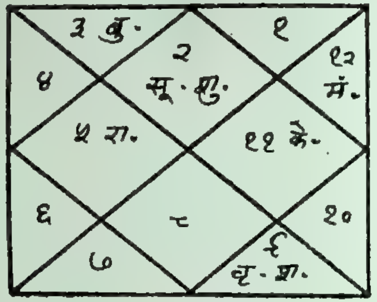
१६३७

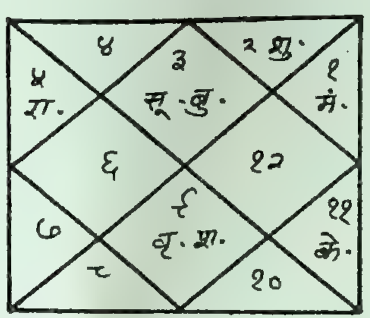
१६३८

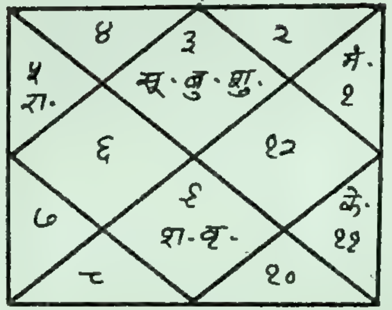
१६३९

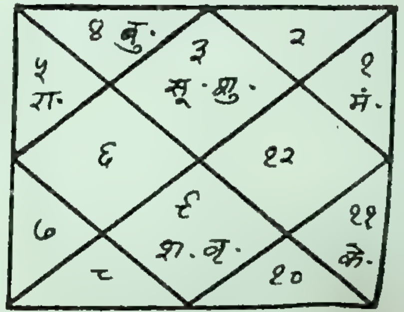
१६४०

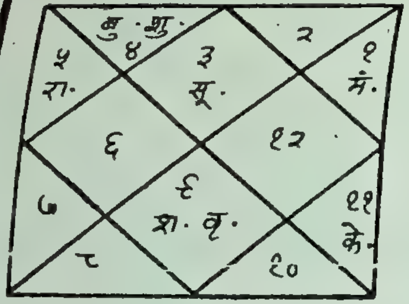

१७४१

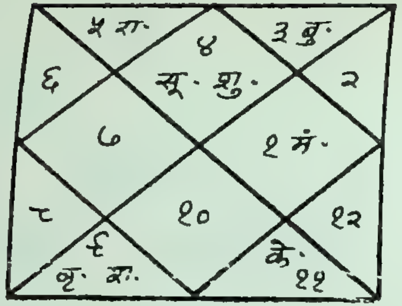

१७४२

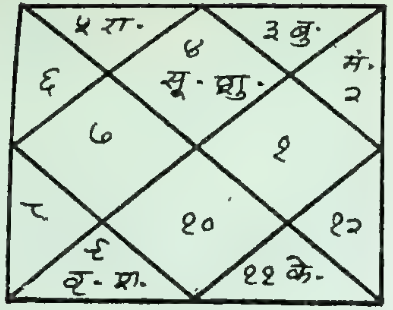

१७४३

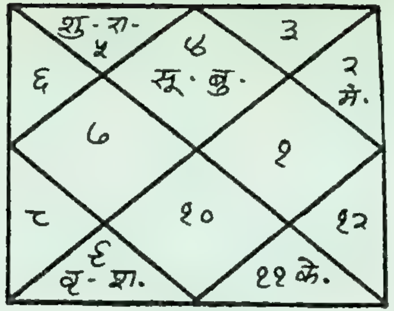

१७४४

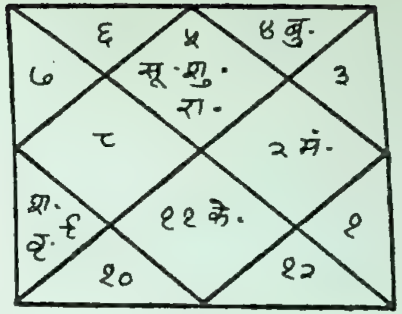

१७४५

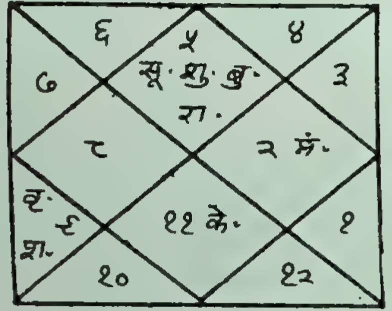

१७४६

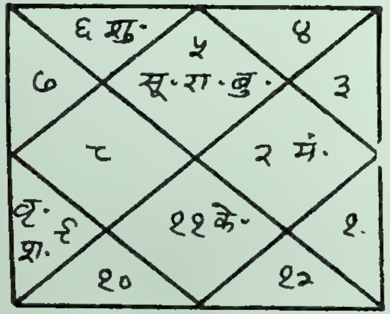

१७४७

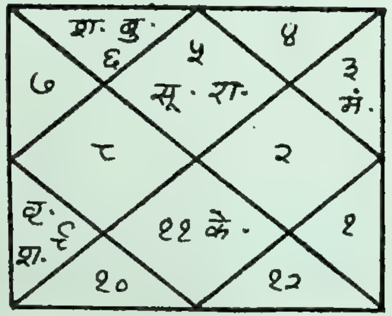

१७४८

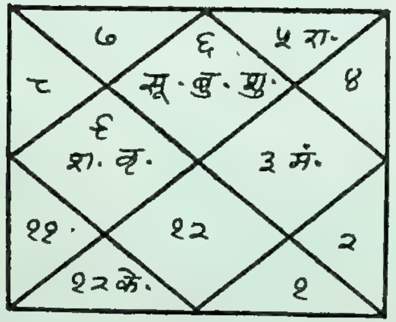

१७४९

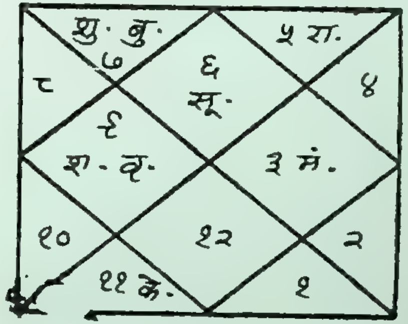

१७५०

१७५१

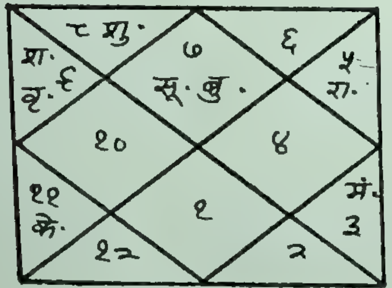

१७५२

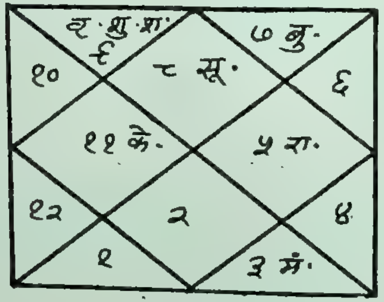

१७५३

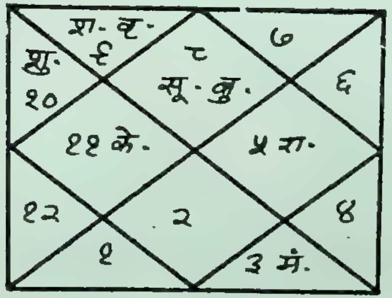

१७५४

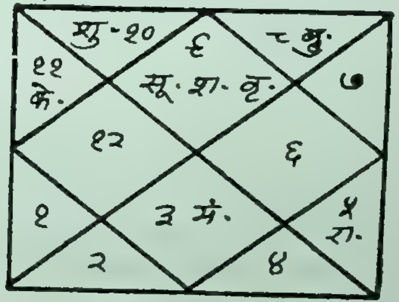

१७५५

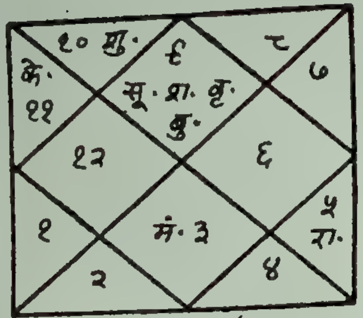

१७५६

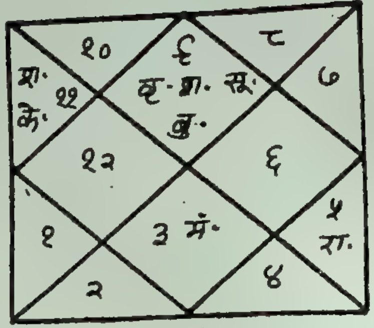

१७५७

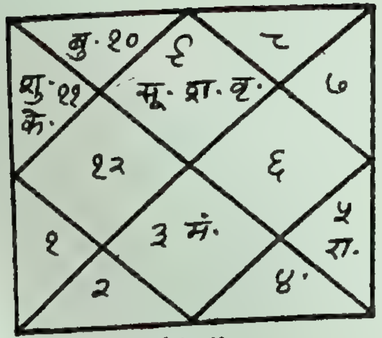

१७५८

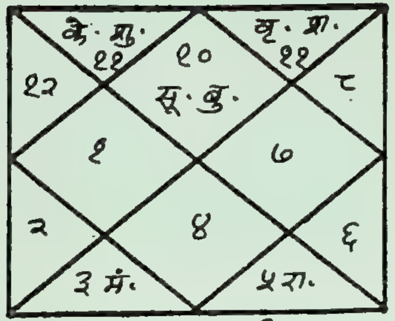

१७५९

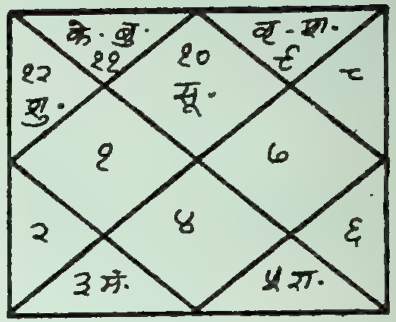

१७६०

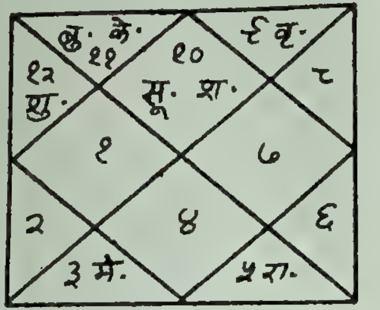

१७६१

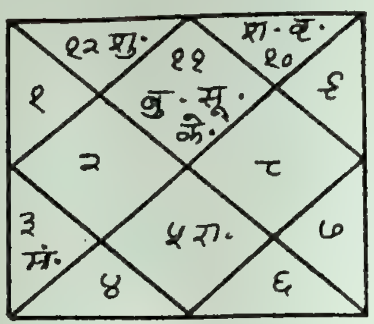

१७६२

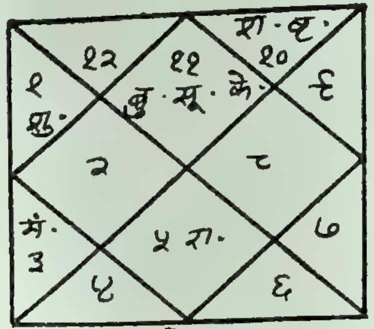

१७६३

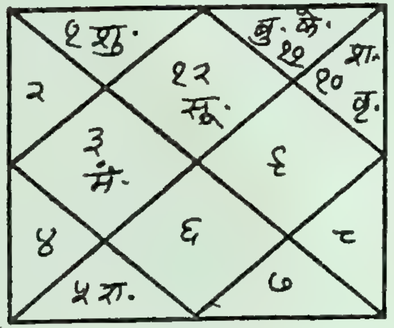

१७६४

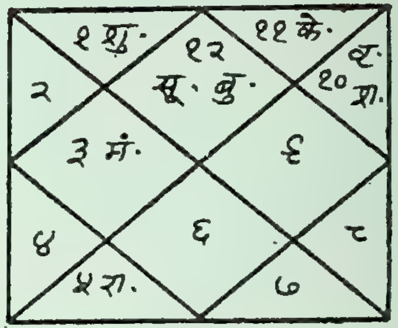

१७६५

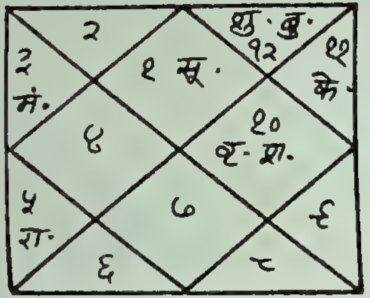

१७६६

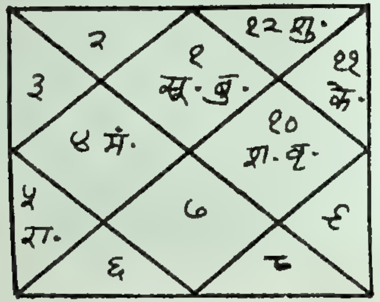

१७६७

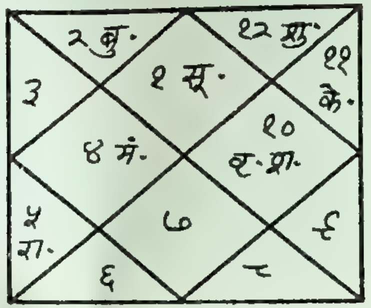

१७६८

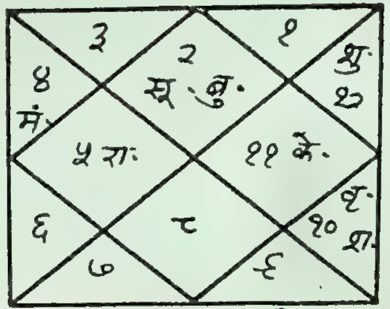

१७६९

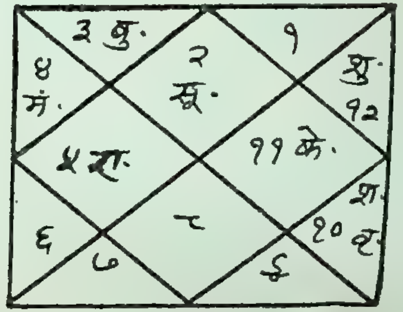

१७७०

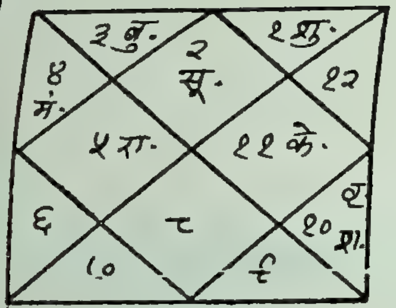

१७७१

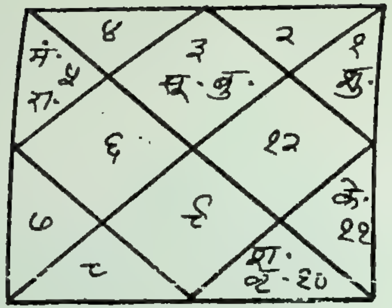

१७७२

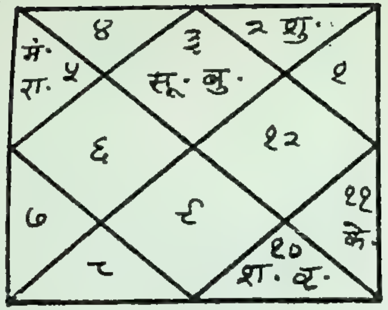

१७७३

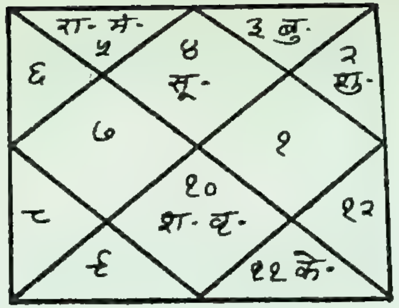

१७७४

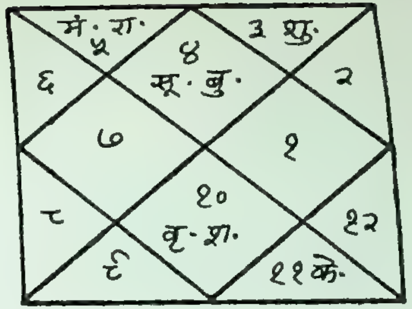

१७७५

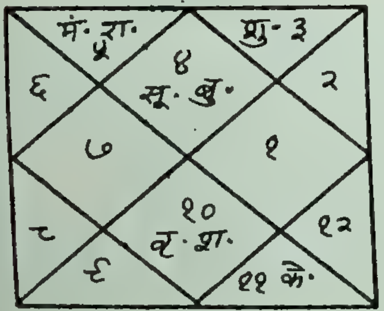

१७७६

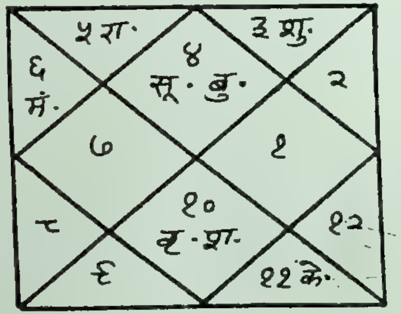

१७७७

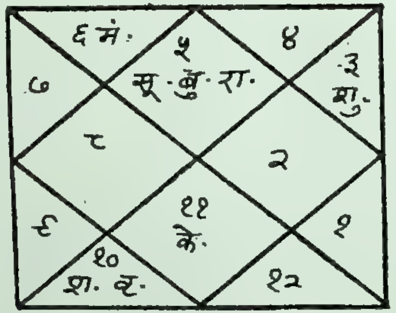

१७७८

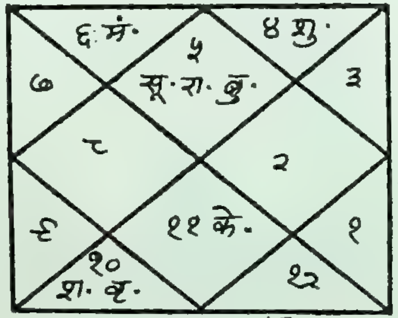

१७७९

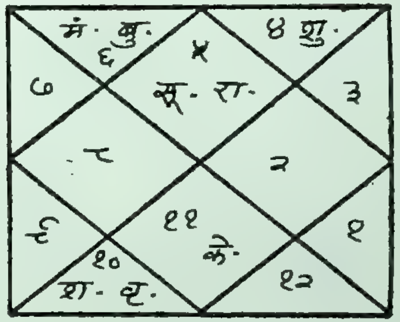

१७८०

१७८१

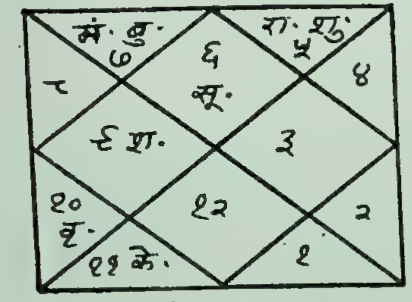

१७८२

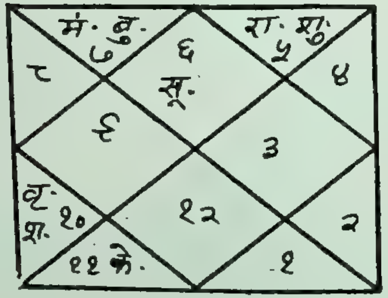

१७८३

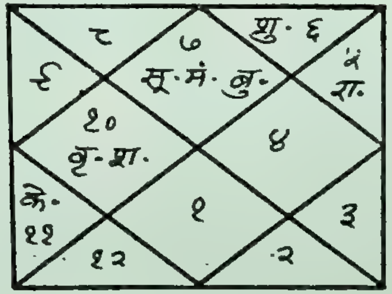

१७८४

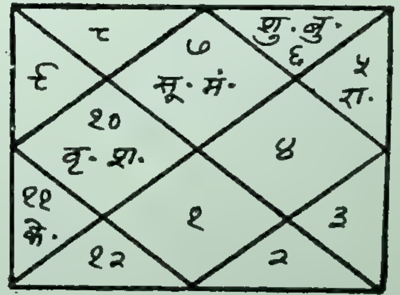

१७८५

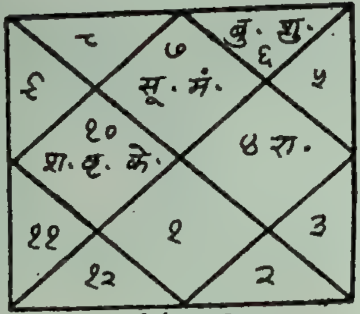

१८८६

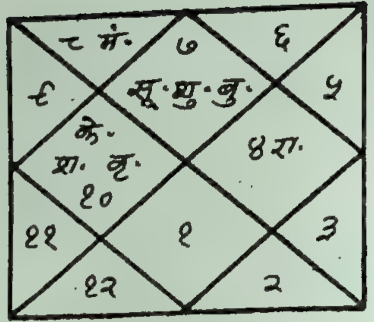

१८८७

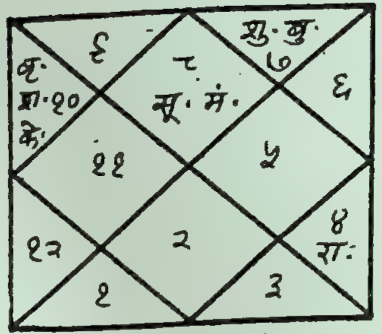

१८८८

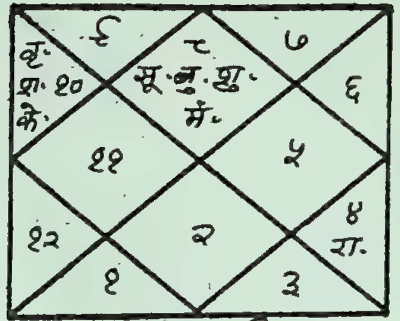

१८८९

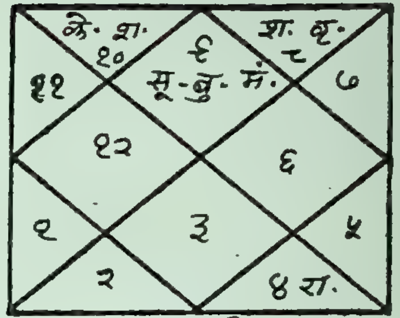

१८९०

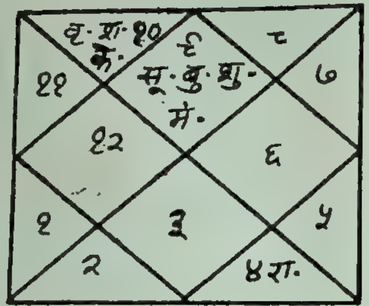

१८९१

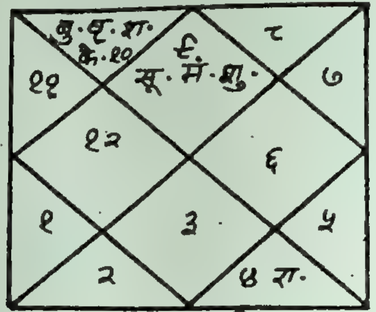

१८९२

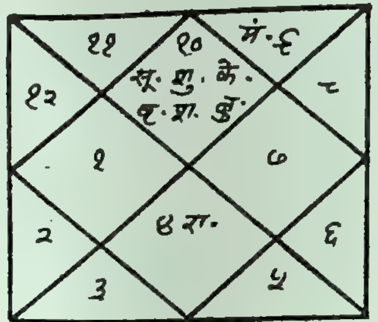

१८९३

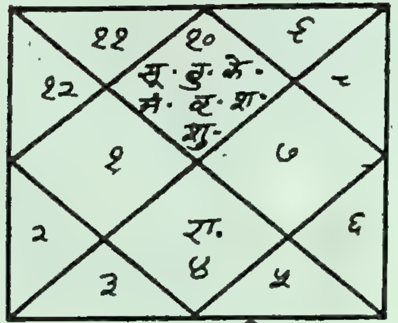

१८९४

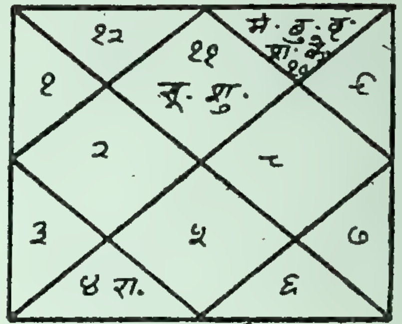

१८९५

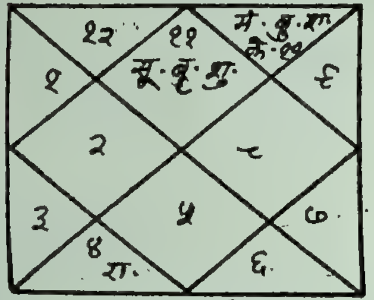

१८९६

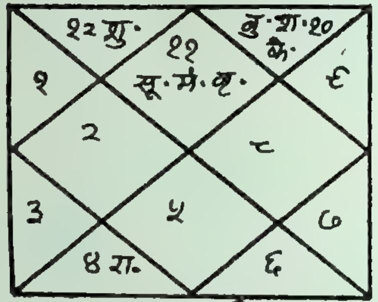

१८९७

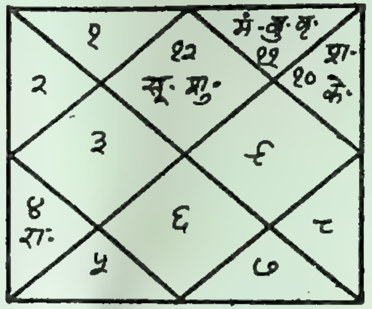

१८९८

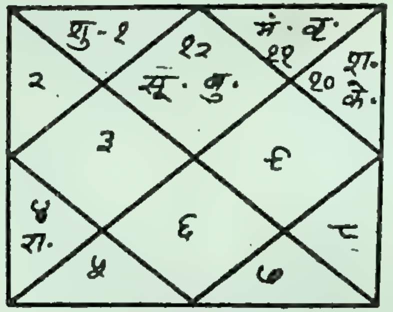

१८९९

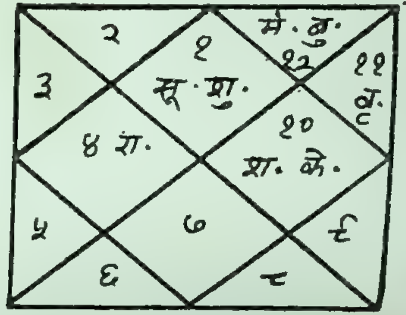

१९००

भू० सं०

कु० प०

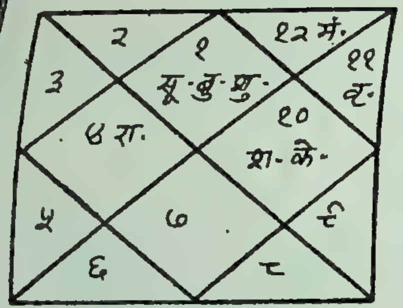

१८०१

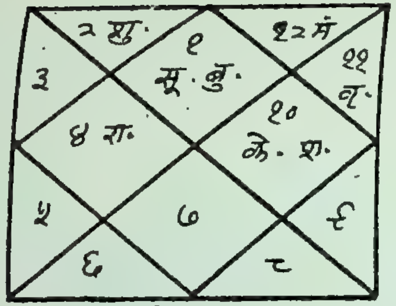

१८०२

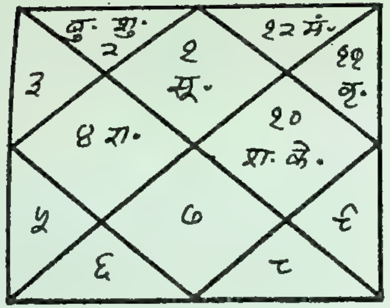

१८०३

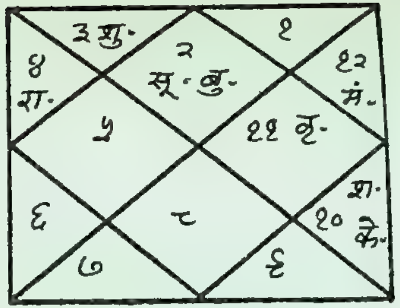

१८०४

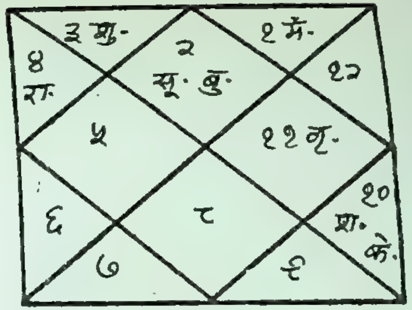

१८०५

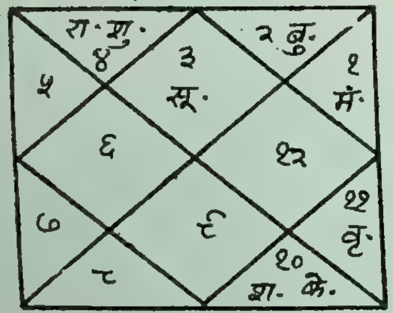

१८०६

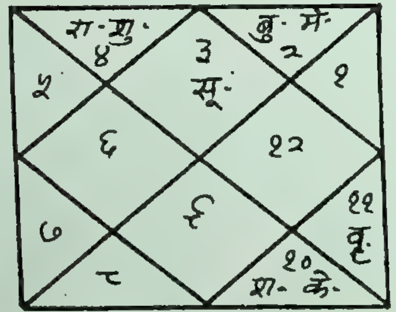

१८०७

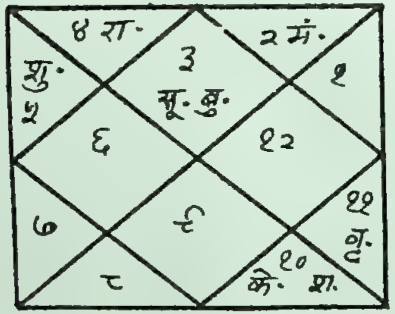

१८०८

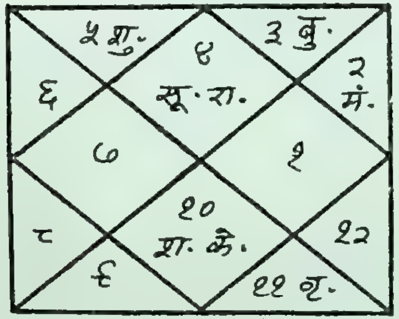

१८०९

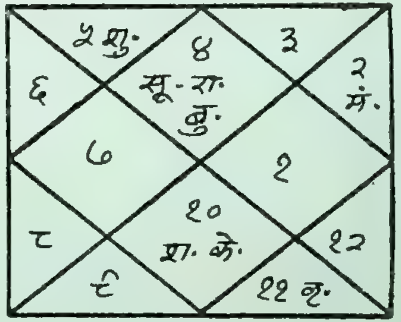

१८१०

१८११

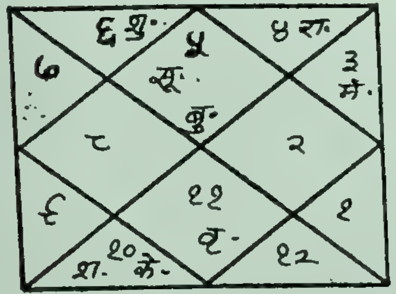

१८१२

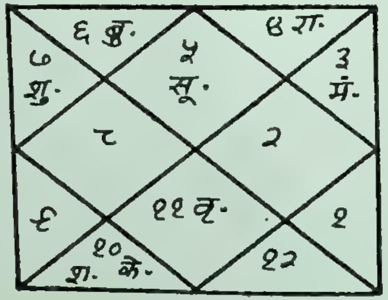

१८१३

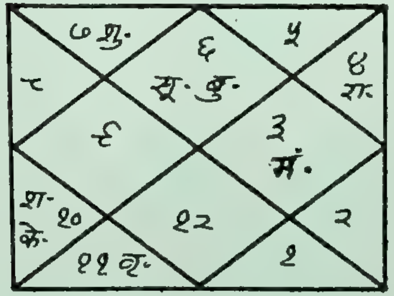

१८१४

१८१५

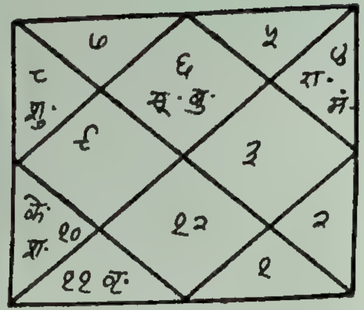
१८१६

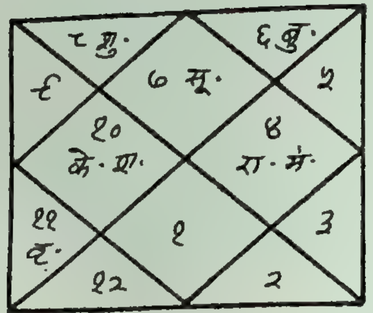
१८१७

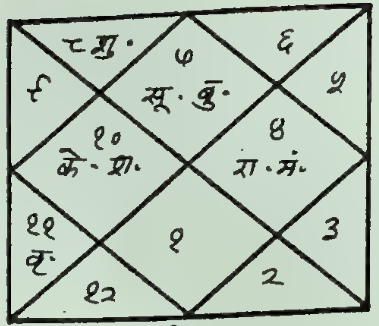
१८१८

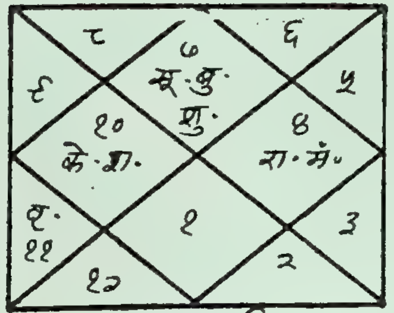
१८१९

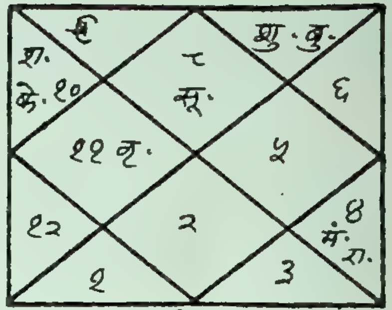
१८२०

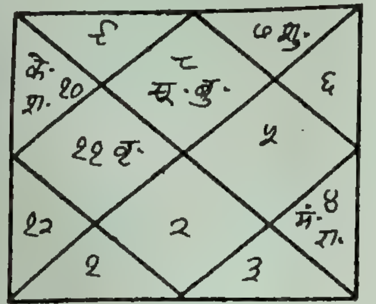
१८२१

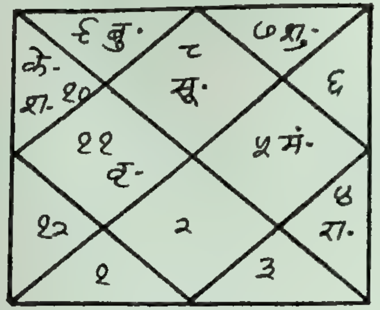
१८२२

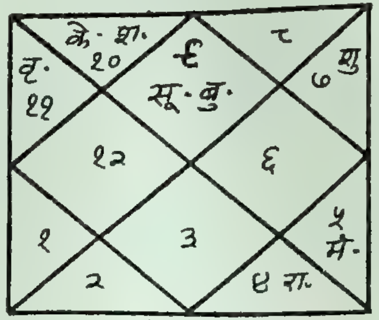
१८२३

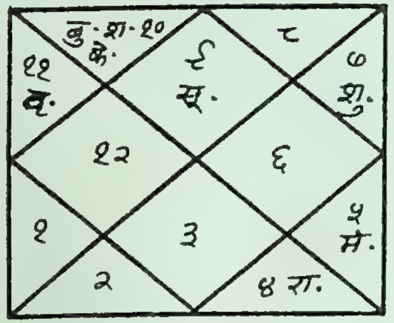
१८२४

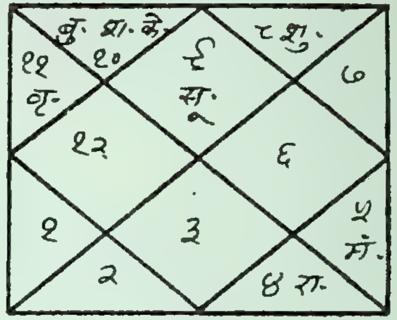
१८२५

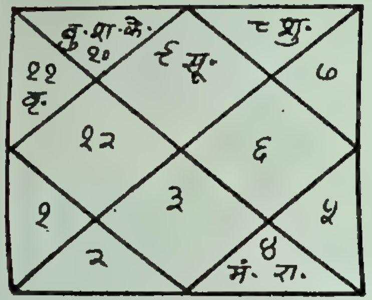
१८२६

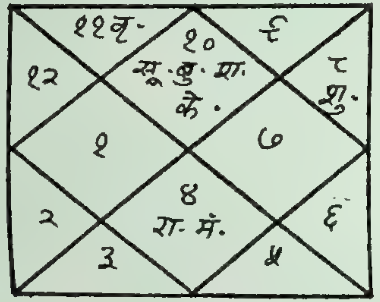
१८२७

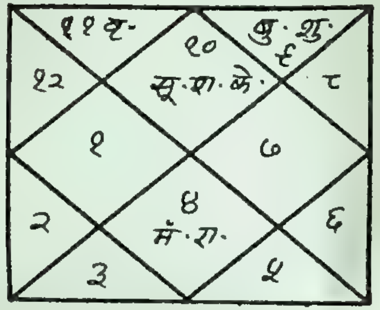
१८२८

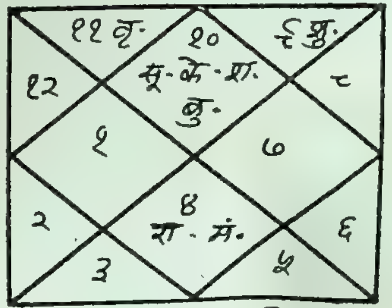
१८२९

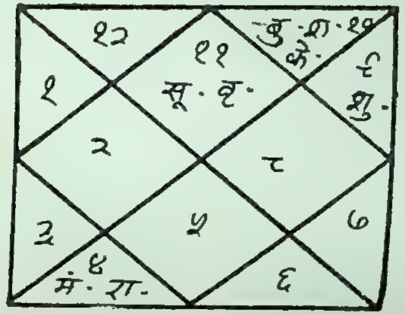
१८३०

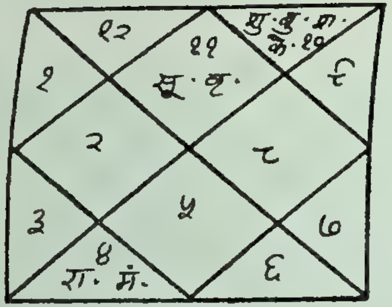
१८३१

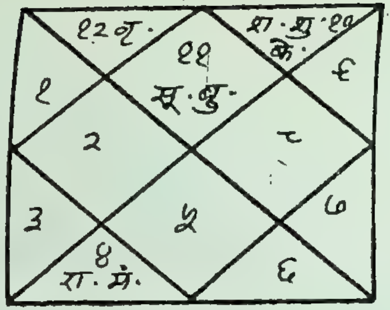
१८३२

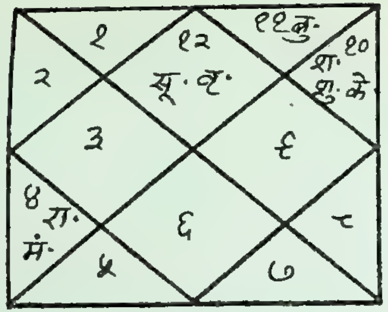
१८३३

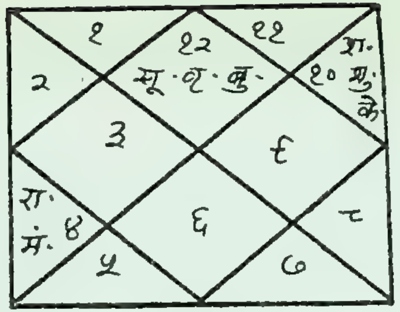
१८३४

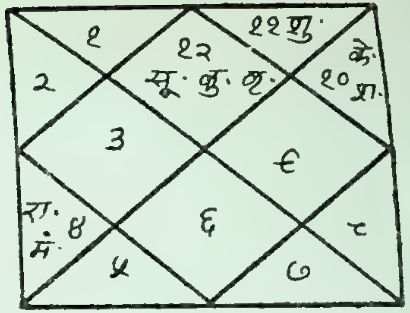
१८३५

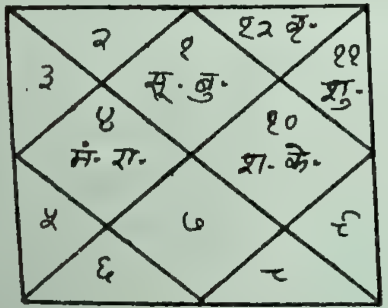
१८३६

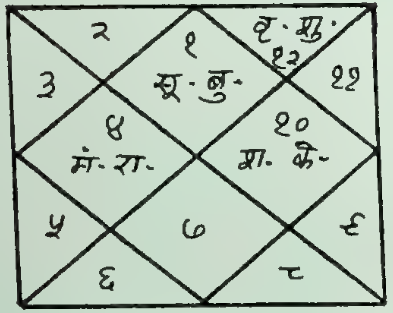
१८३७

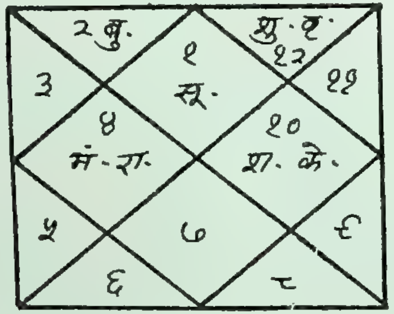
१८३८

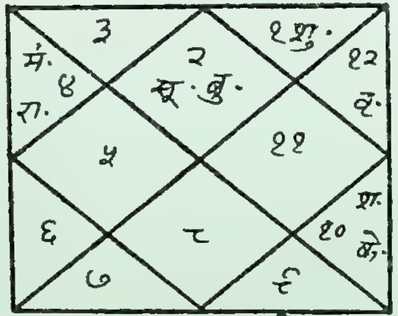
१८३९

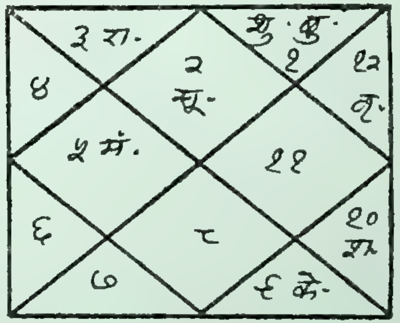
१८४०

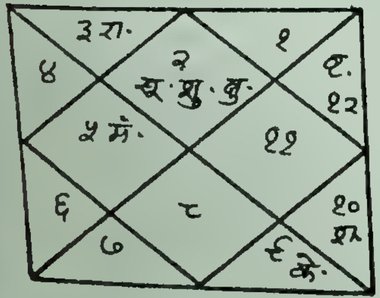
१८४१

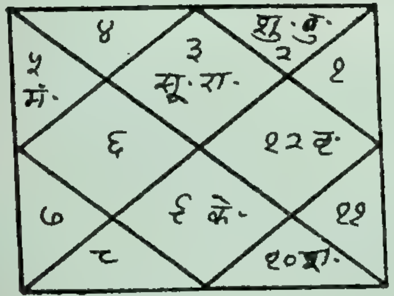
१८४२

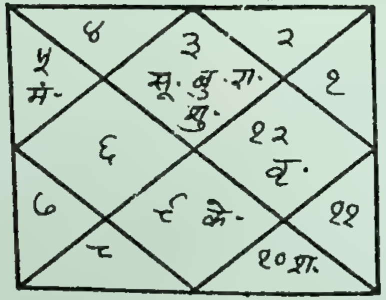
१८४३

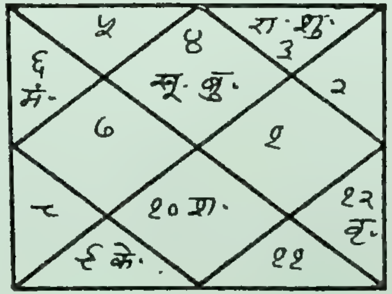
१८४४

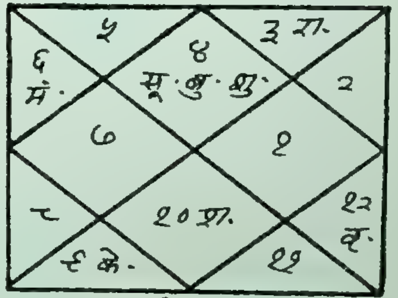
१८४५

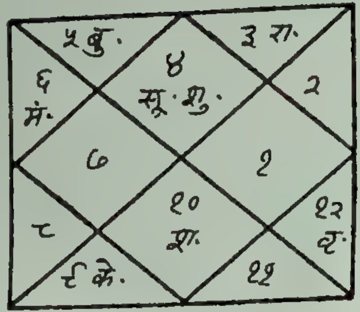

१८४६

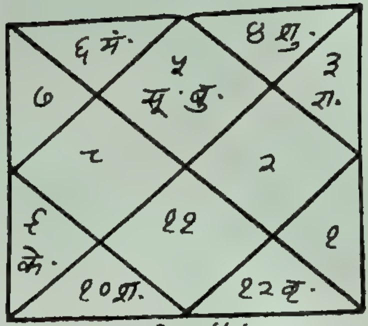

१८४७

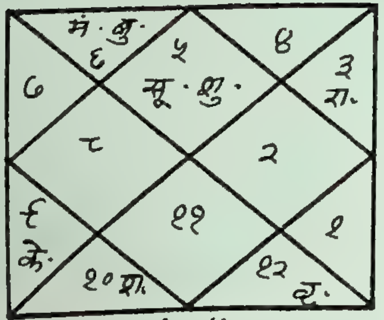

१८४८

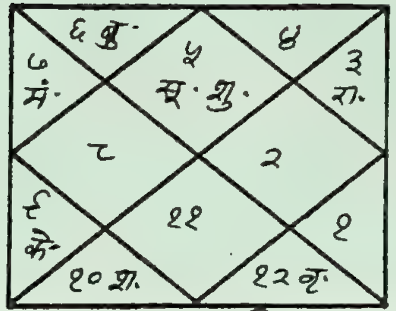

१८४९

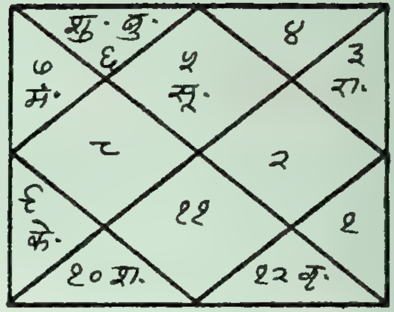

१८५०

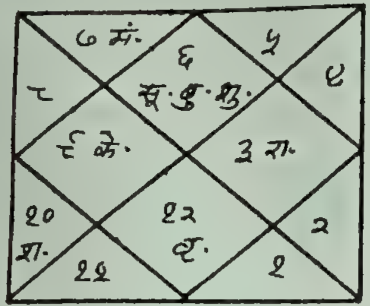

१८५१

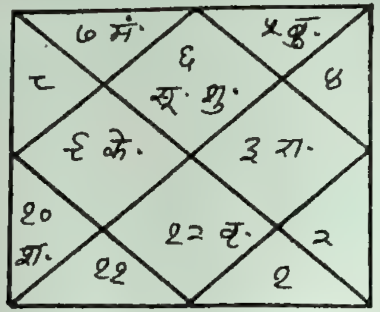

१८५२

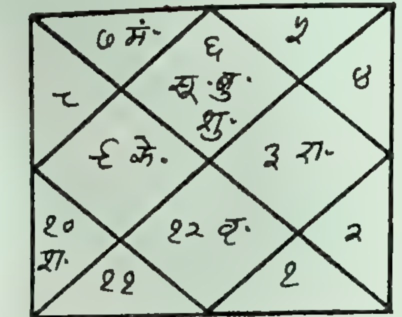

१८५३

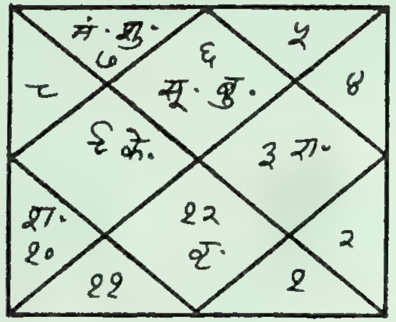

१८५४

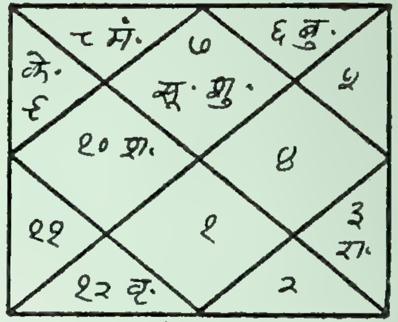

१८५५

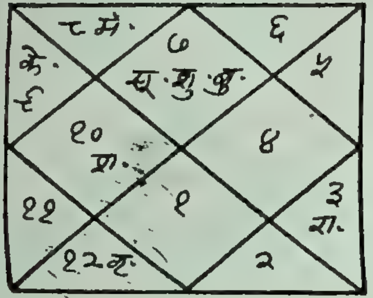

१८५६

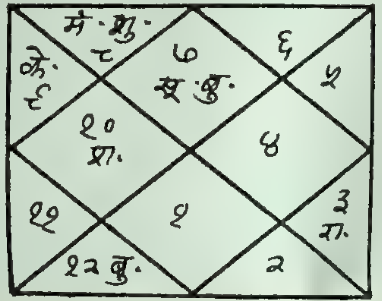

१८५७

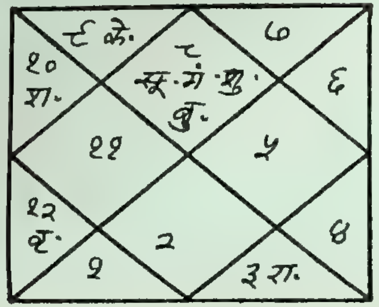

१८५८

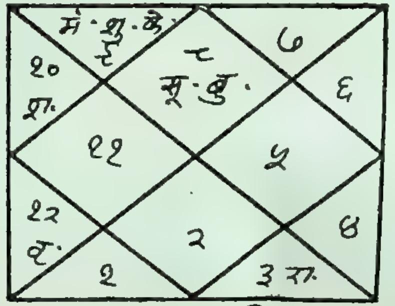

१८५९

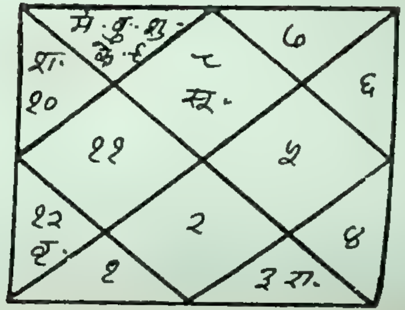

१८६०

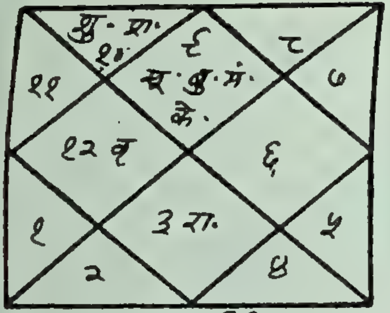
१८६१

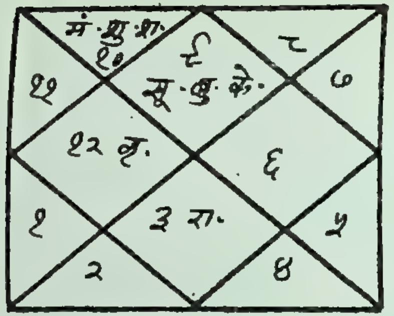
१८६२

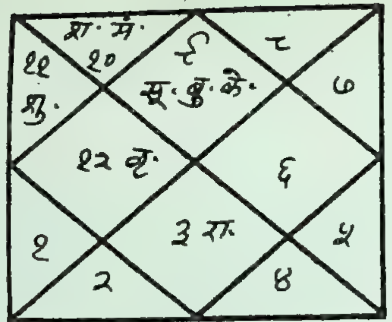
१८६३

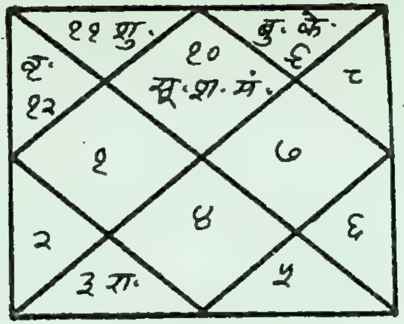
१८६४

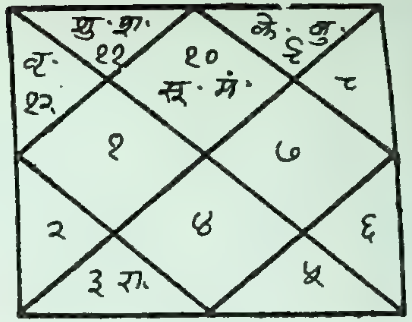
१८६५

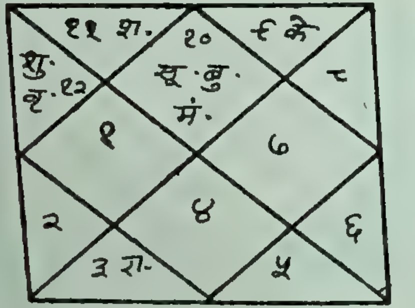
१८६६

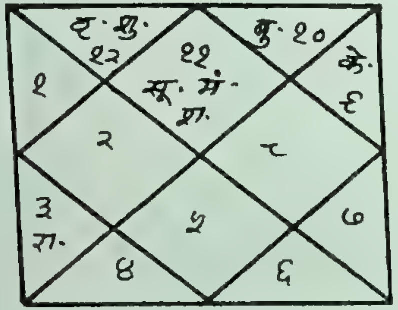
१८६७

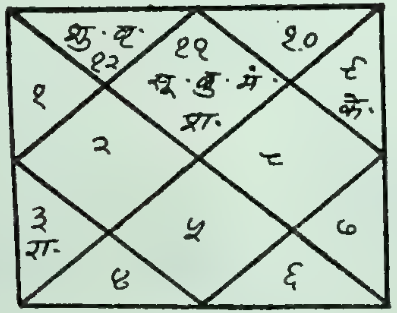
१८६८

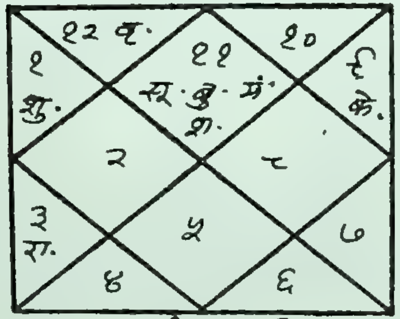
१८६९

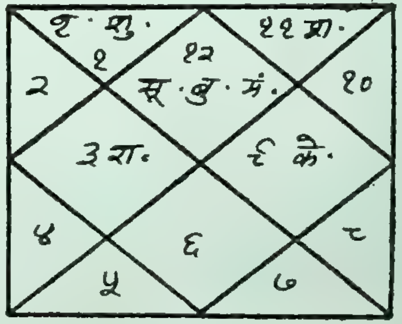
१८७०

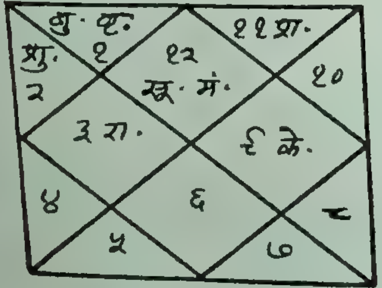
१८७१

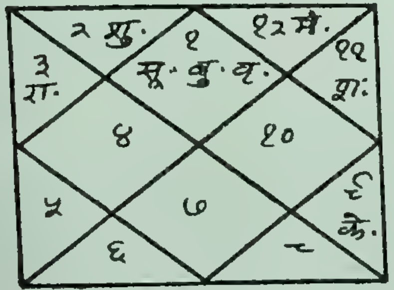
१८७२

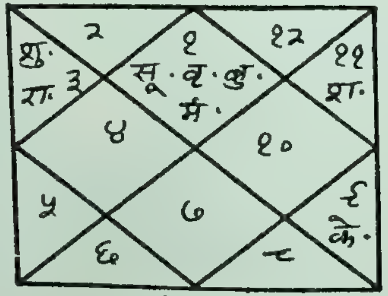
१८७३

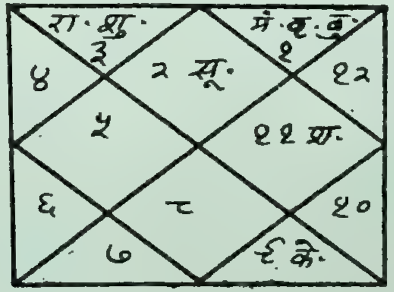
१८७४

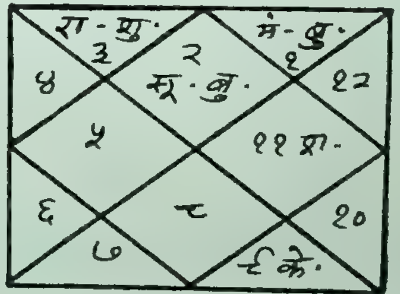
१८७५

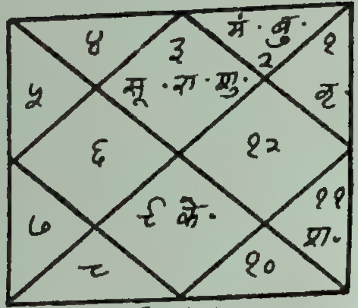
१८७६

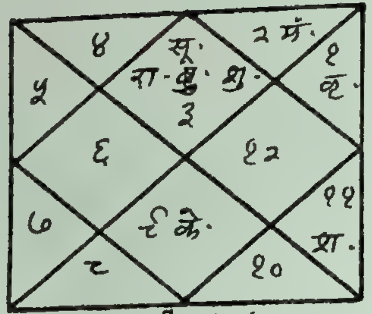
१८७७

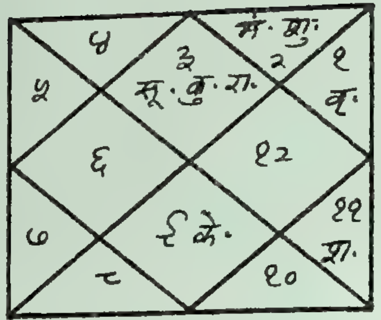
१८७८

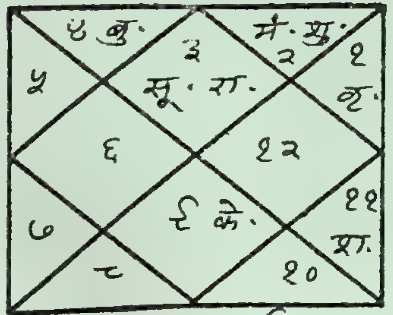
१८७९

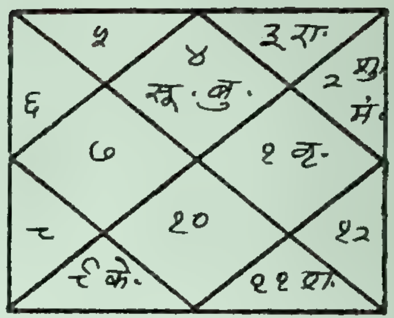
१८८०

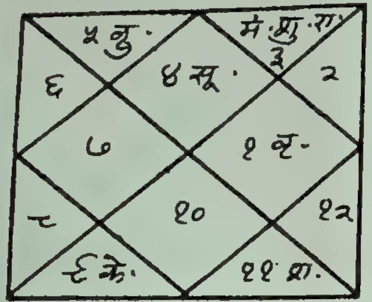
१८८१

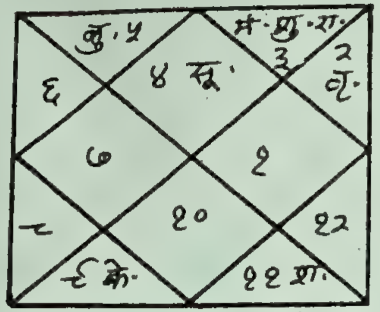
१८८२

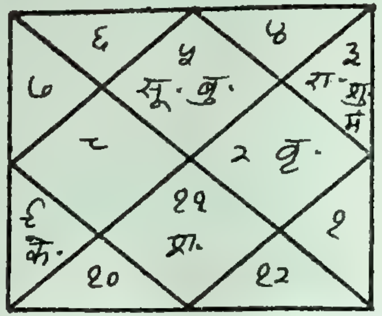
१८८३

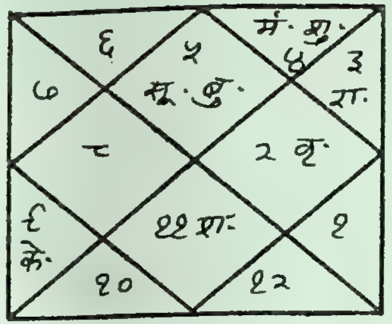
१८८४

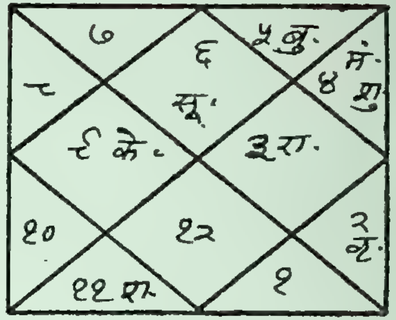
१८८५

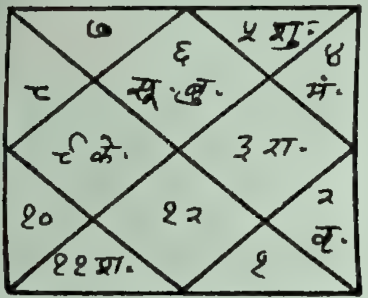
१८८६

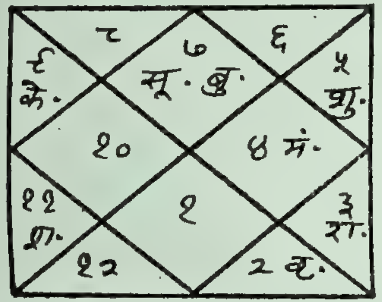
१८८७

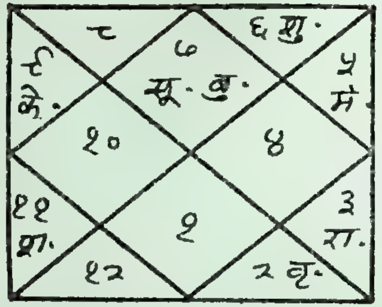
१८८८

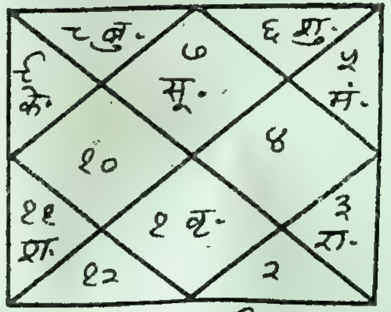
१८८९

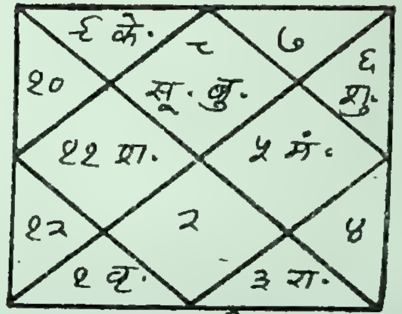
१८९०

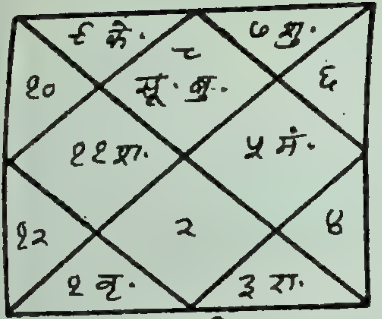

१८९१

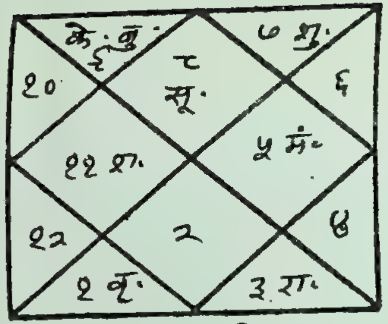

१८९२

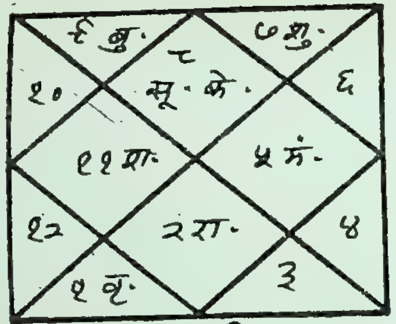

१८९३

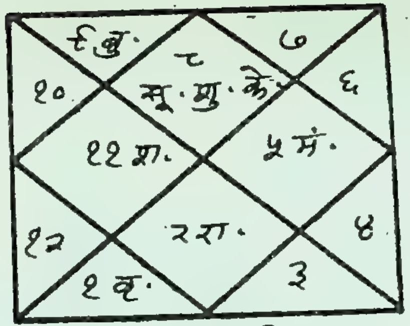

१८९४

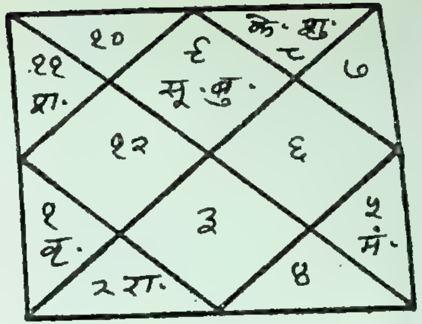

१८९५

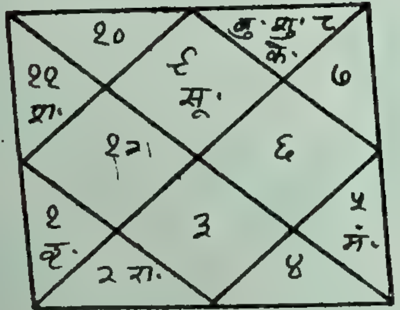

१८९६

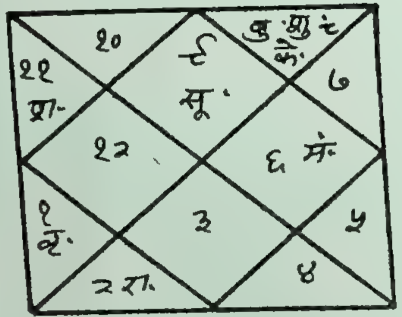

१८९७

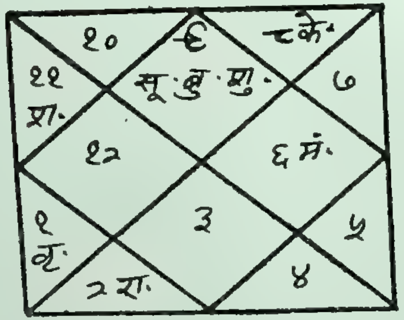

१८९८

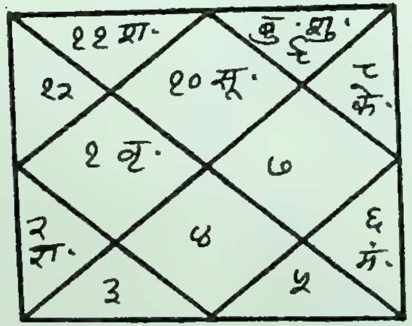

१८९९

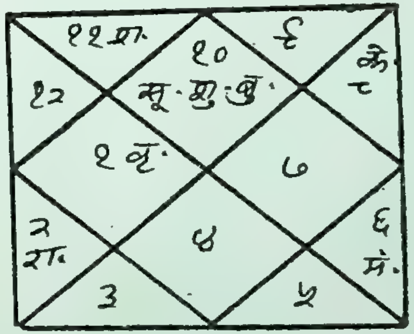

१९००

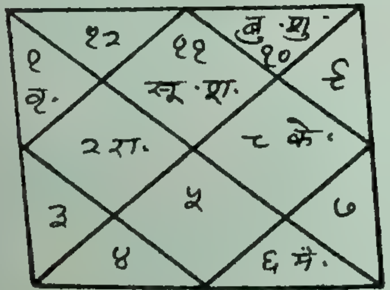

१९०१

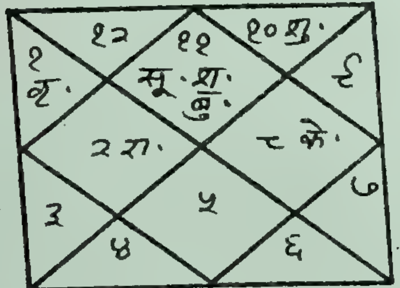

१९०२

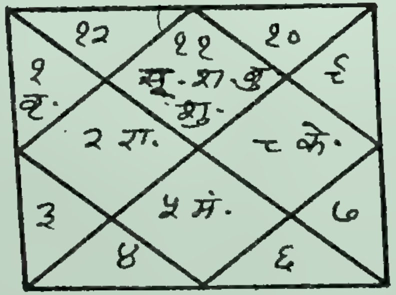

१९०३

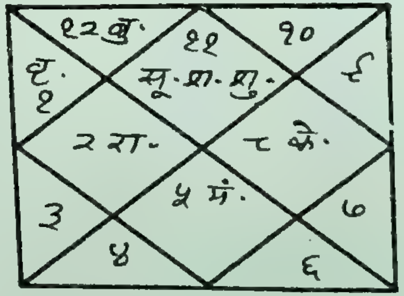

१९०४

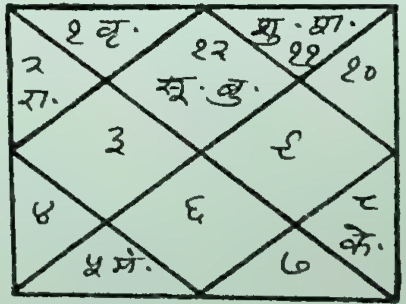

१९०५

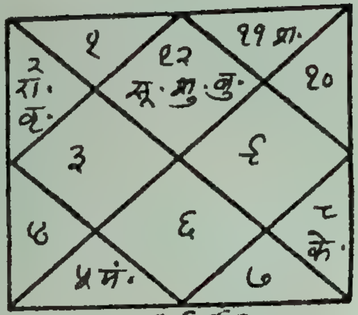

१९०६

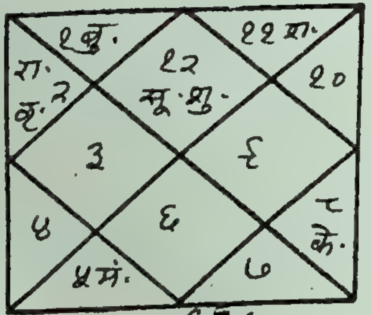

१९०७

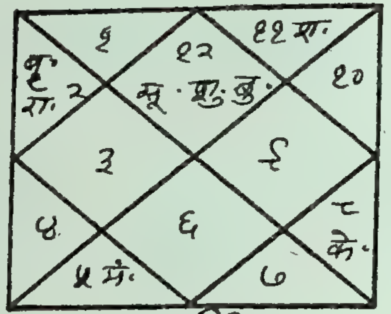

१९०८

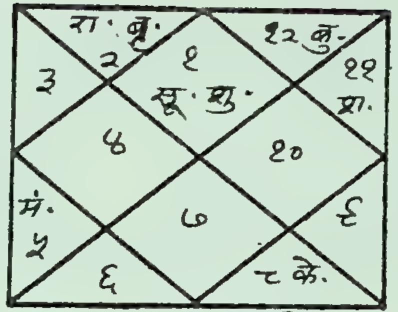

१९०९

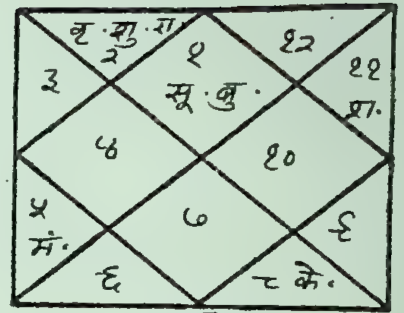

१९१०

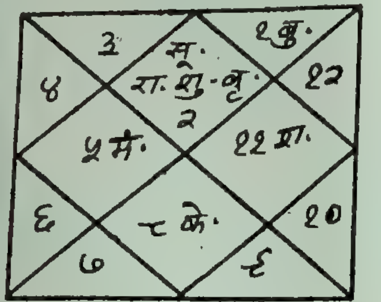

१९११

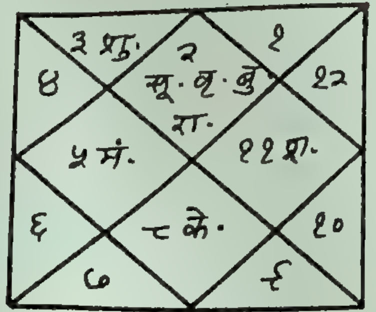

१९१२

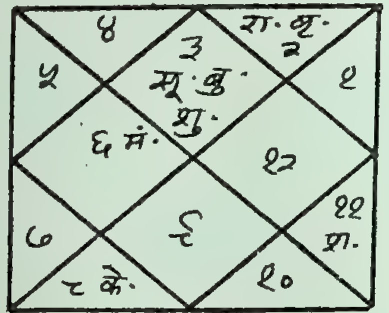

१९१३

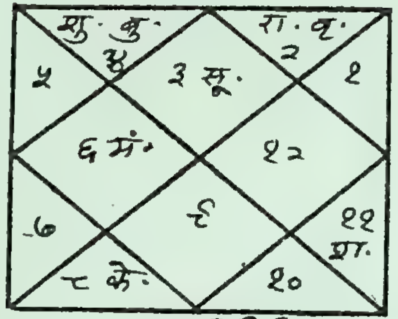

१९१४

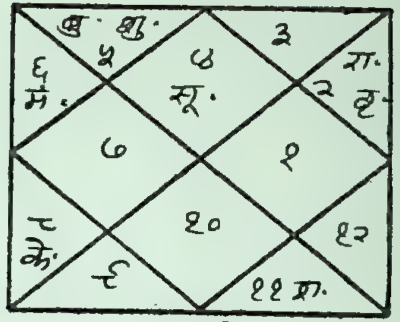

१९१५

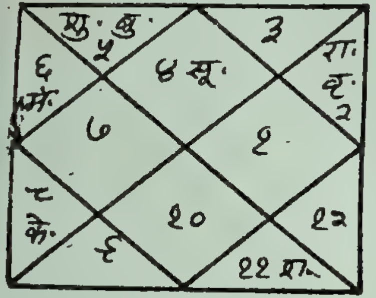

१९१६

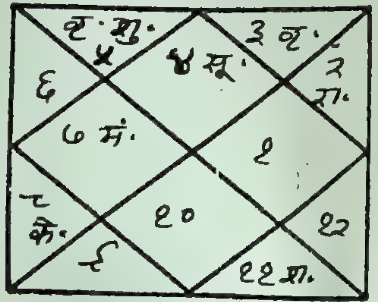

१९१७

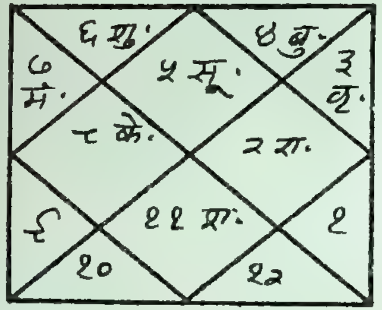

१९१८

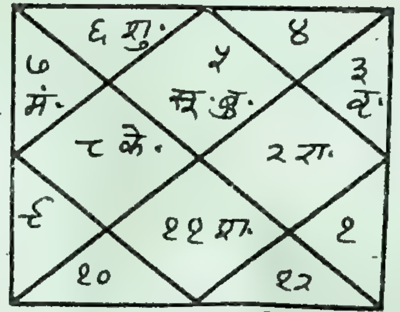

१९१९

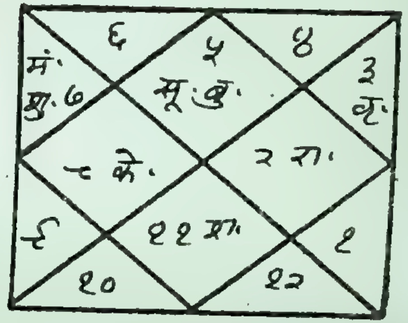

१९२०

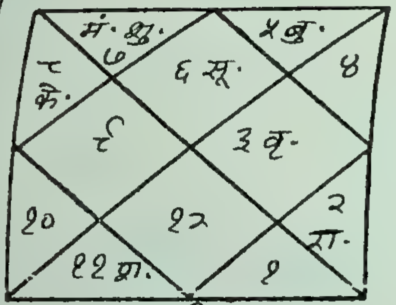
१९२१

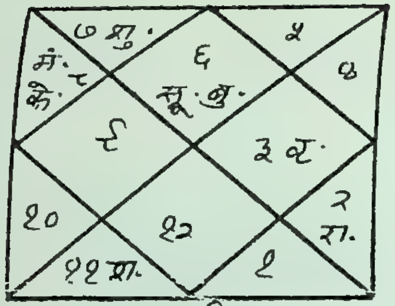
१९२२

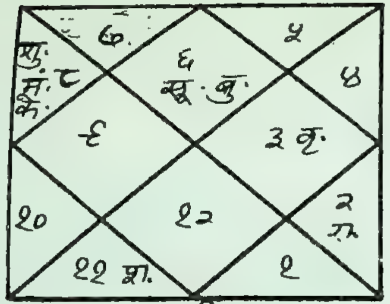
१९२३

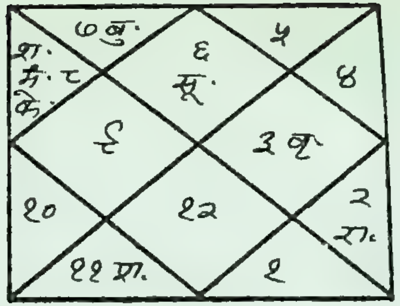
१९२४

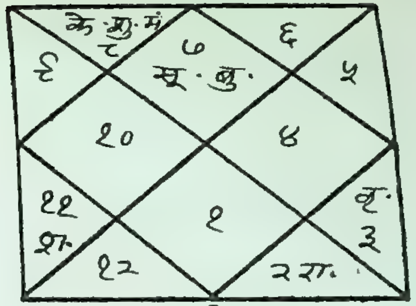
१९२५

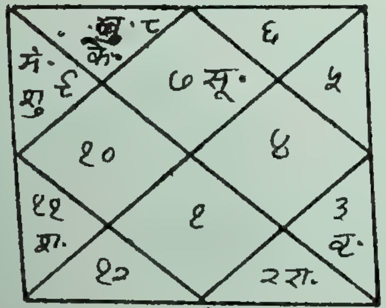
१९२६

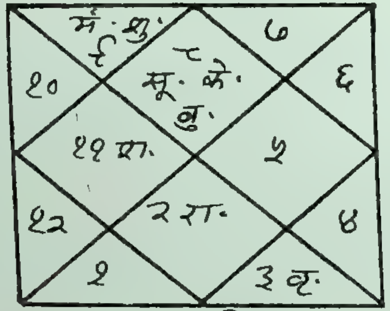
१९२७

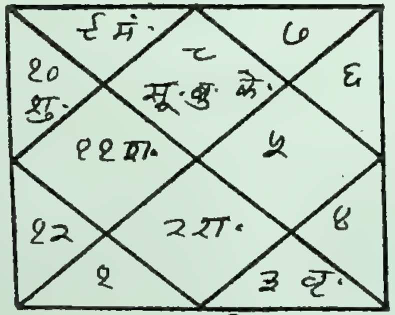
१९२८

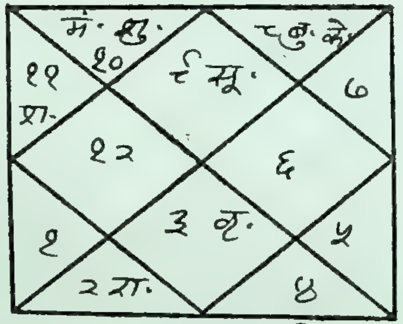
१९२९

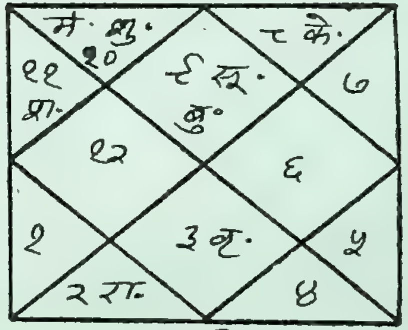
१९३०

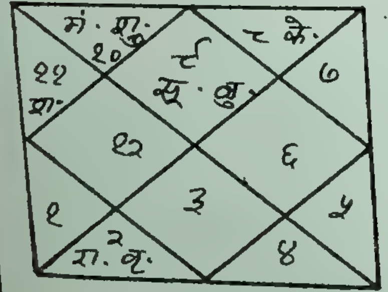
१९३१

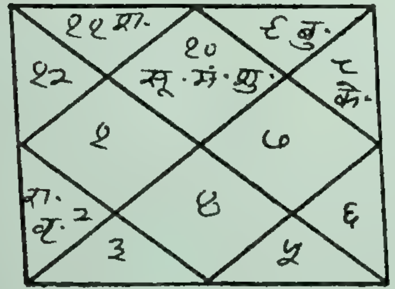
१९३२

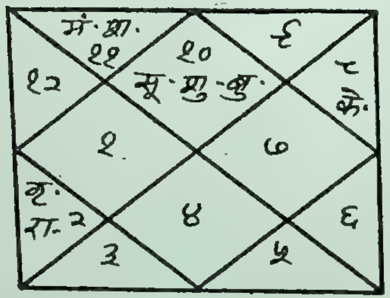
१९३३

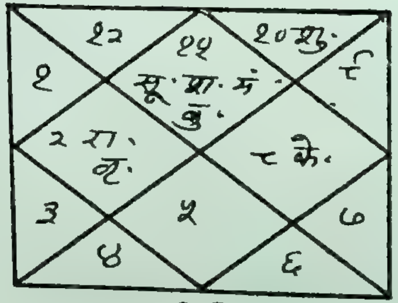
१९३४

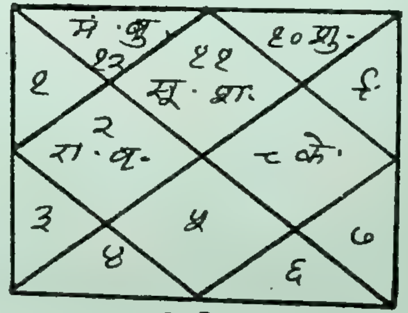
१९३५

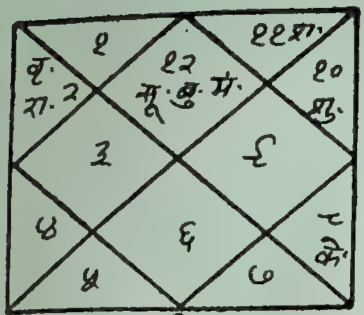
१९३६

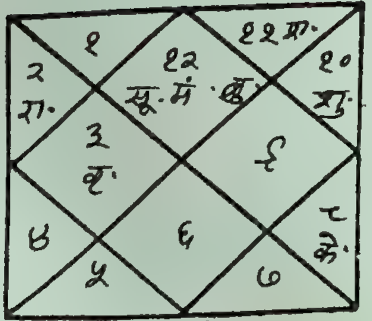
१९३७

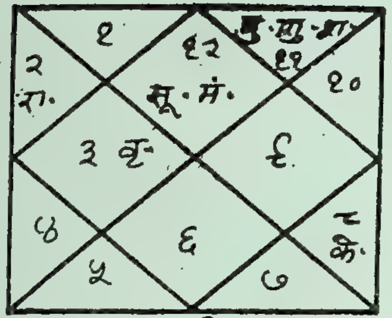
१९३८

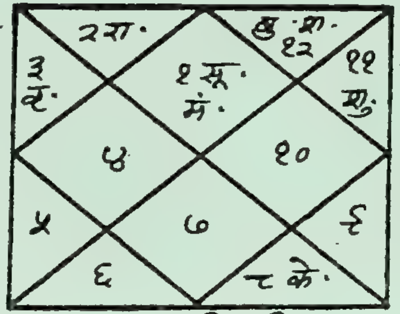
१९३९

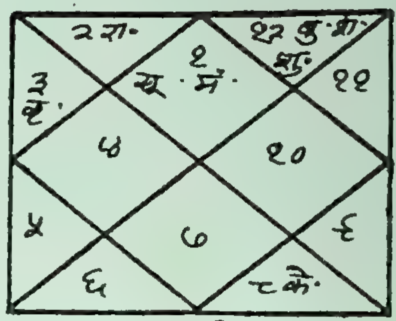
१९४०

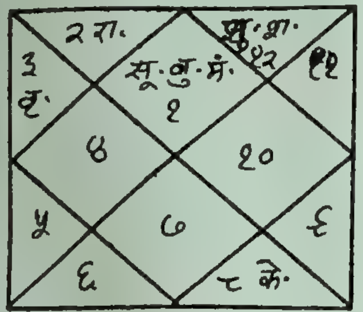
१९४१

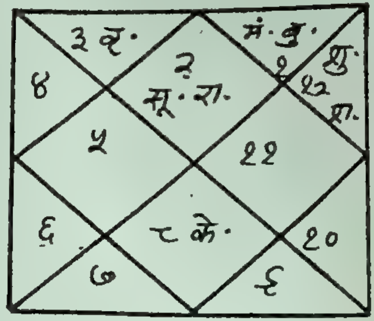
१९४२

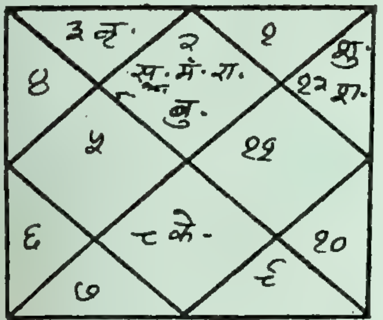
१९४३

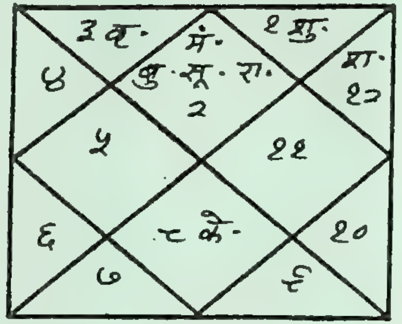
१९४४

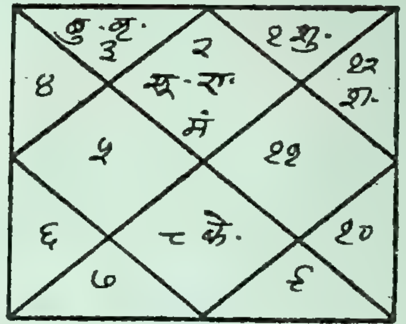
१९४५

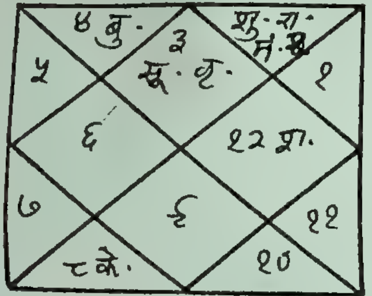
१९४६

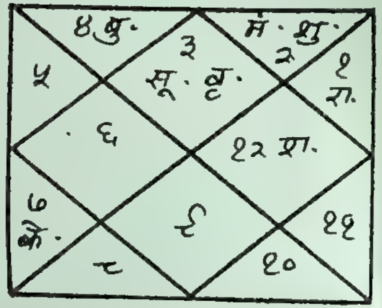
१९४७

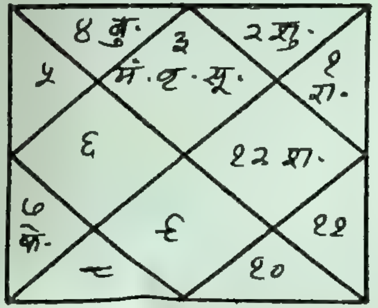
१९४८

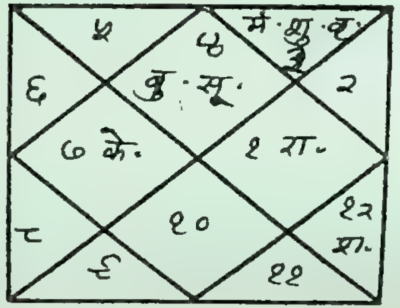
१९४९

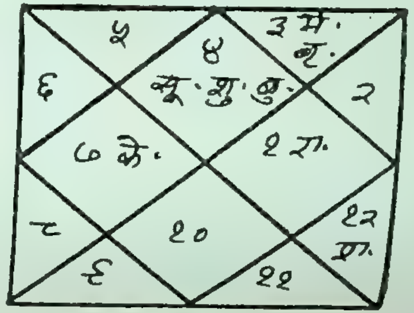
१९५०

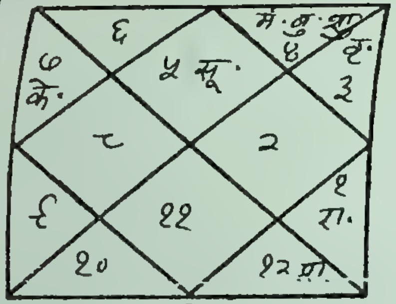
१९५१

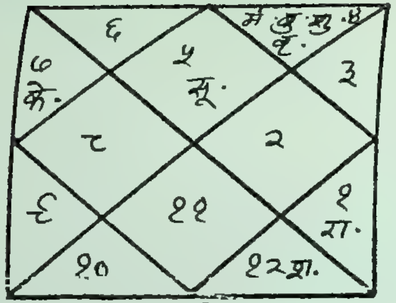
१९५२

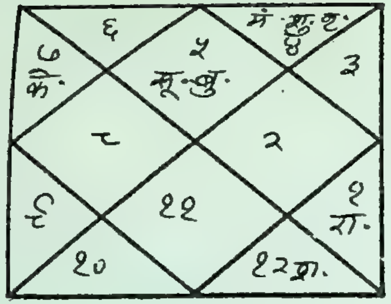
१९५३

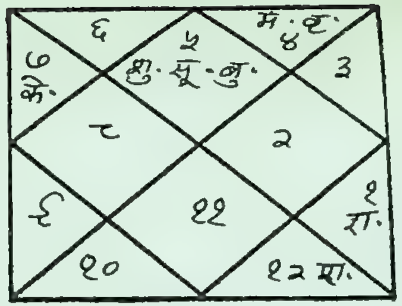
१९५४

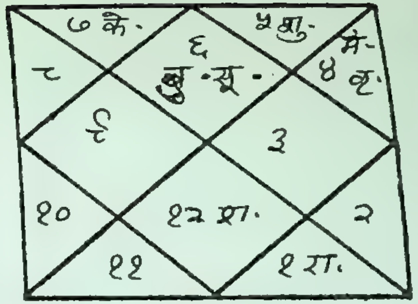
१९५५

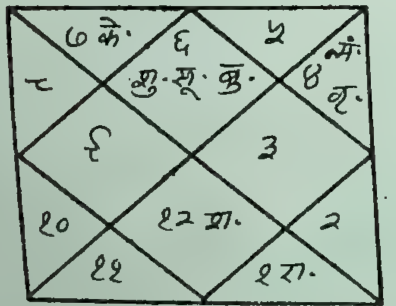
१९५६

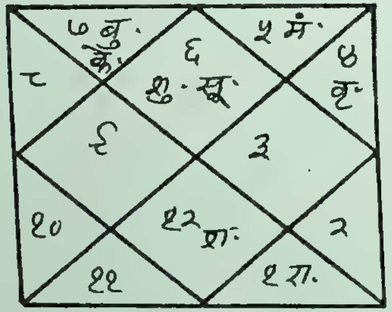
१९५७

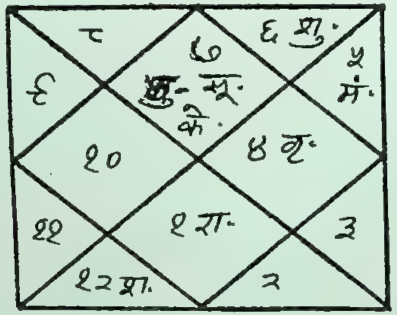
१९५८

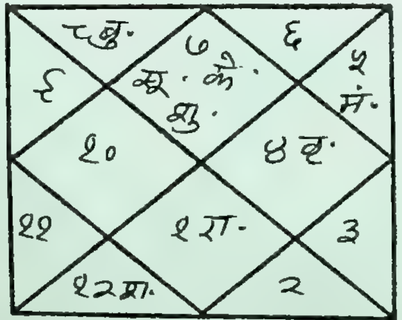
१९५९

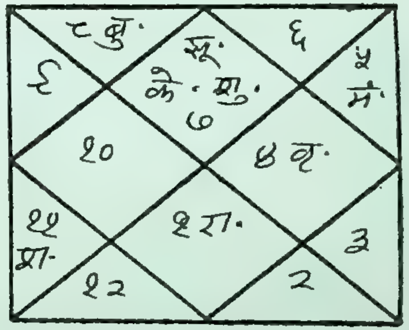
१९६०

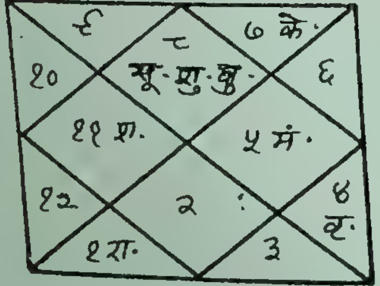
१९६१

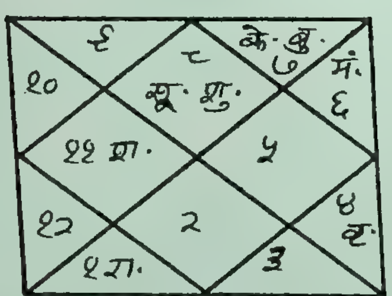
१९६२

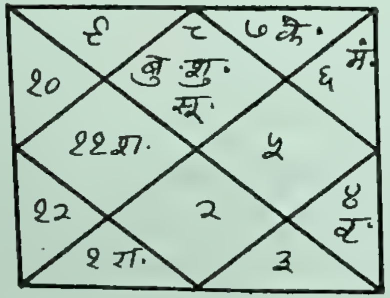
१९६३

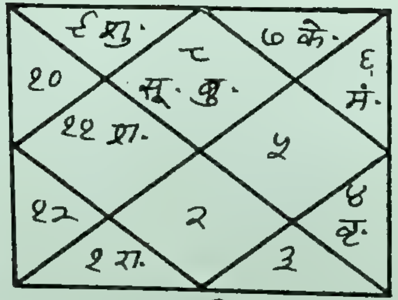
१९६४

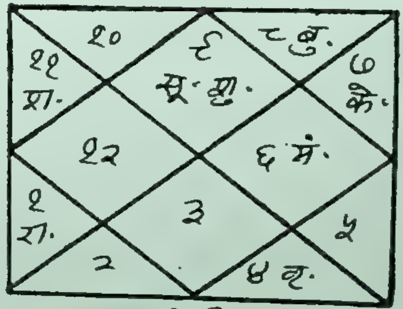
१९६५

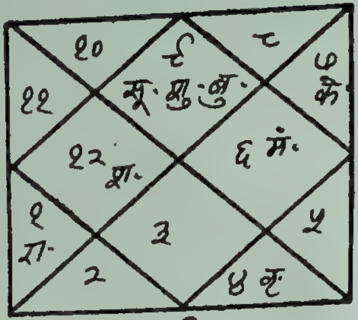
१९६६

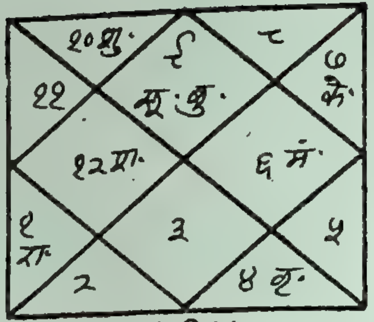
१९६७

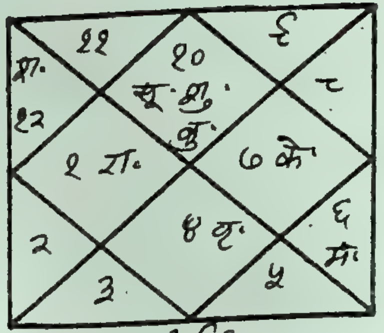
१९६८

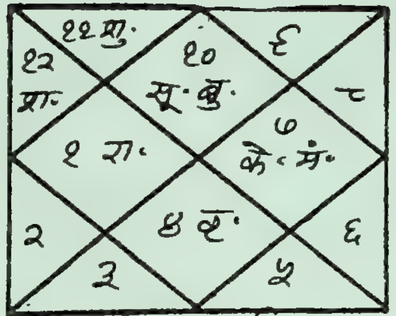
१९६९

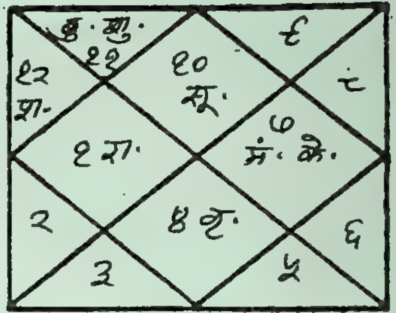
१९७०

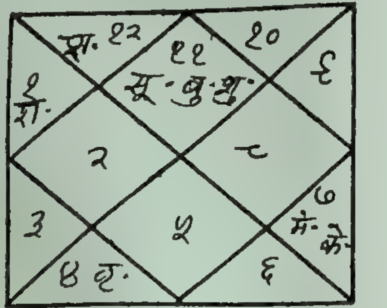
१९७१

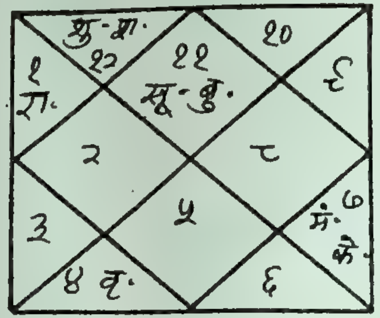
१९७२

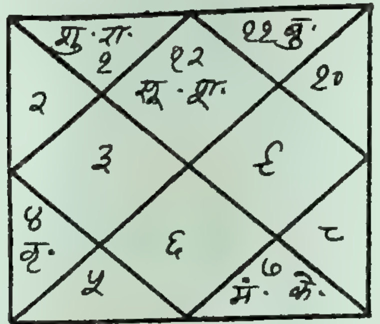
१९७३

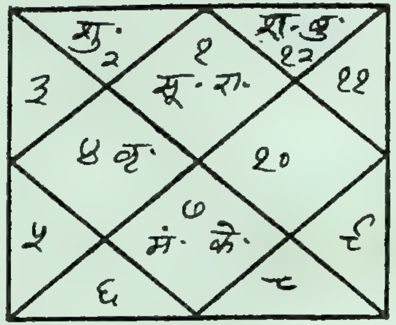
१९७४

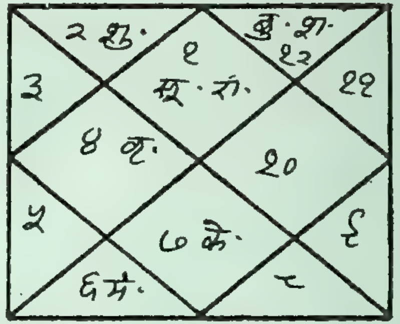
१९७५

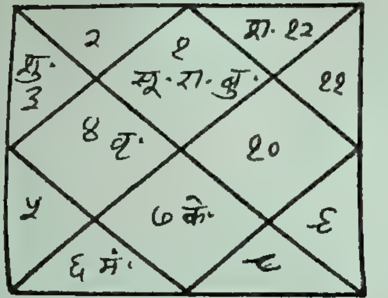
१९७६

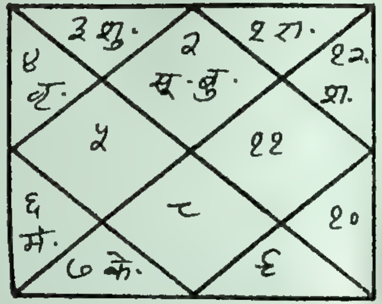
१९७७

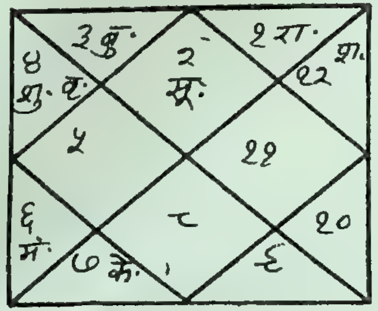
१९७८

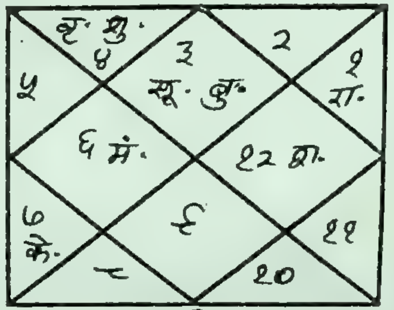
१९७९

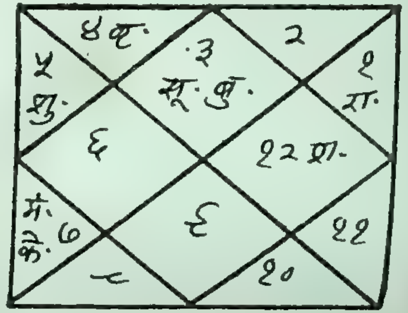
१९८०

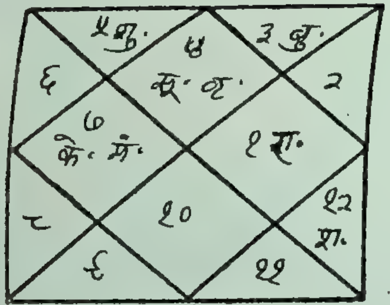

१९८१

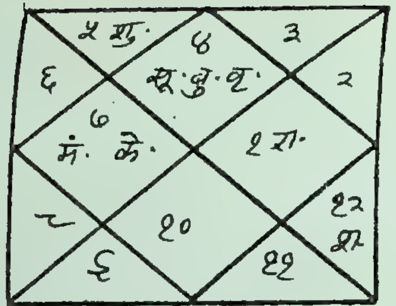

१९८२

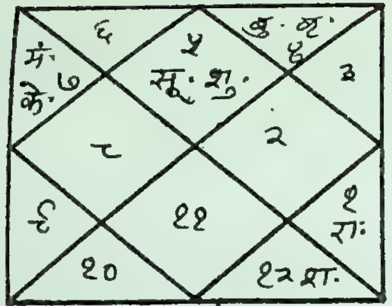

१९८३

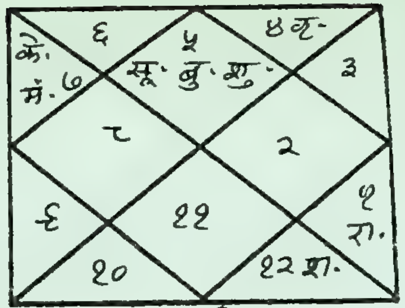

१९८४

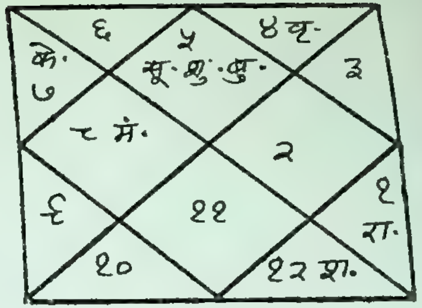

१९८५

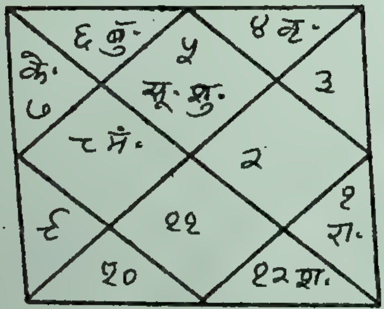

१९८६

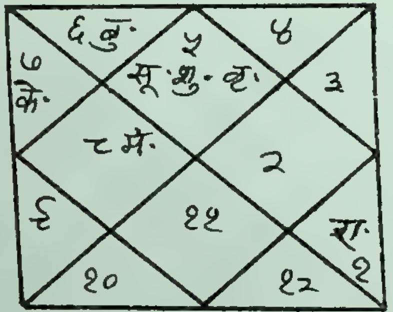

१९८७

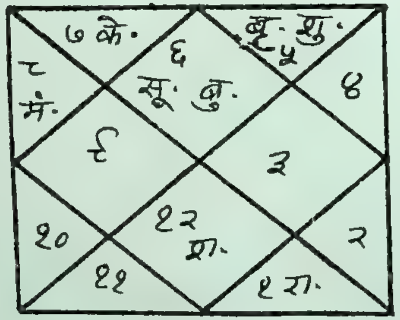

१९८८

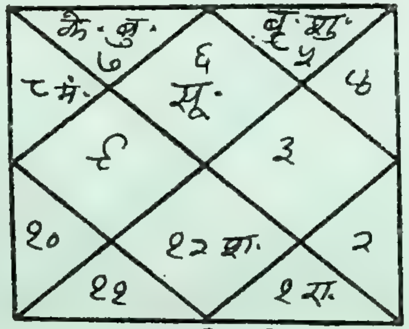

१९८९

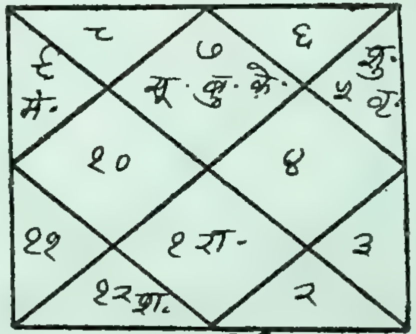

१९९०

१९९१

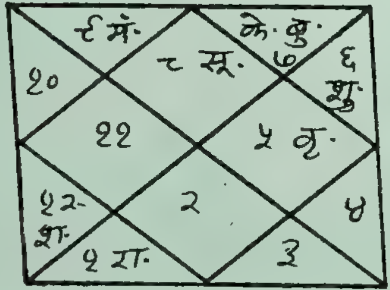

१९९२

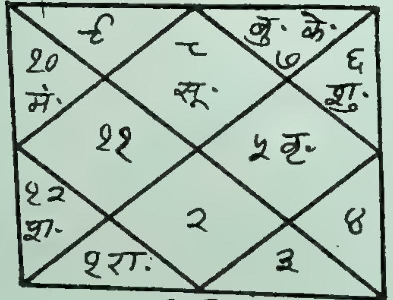

१९९३

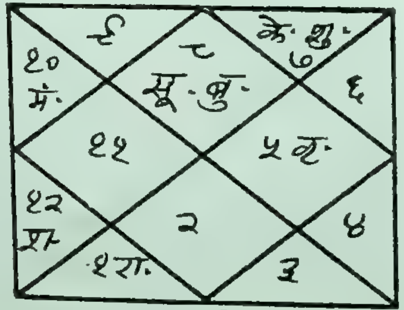

१९९४

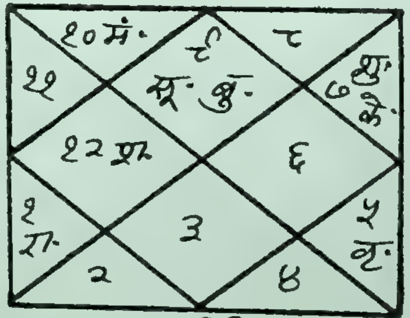

१९९५

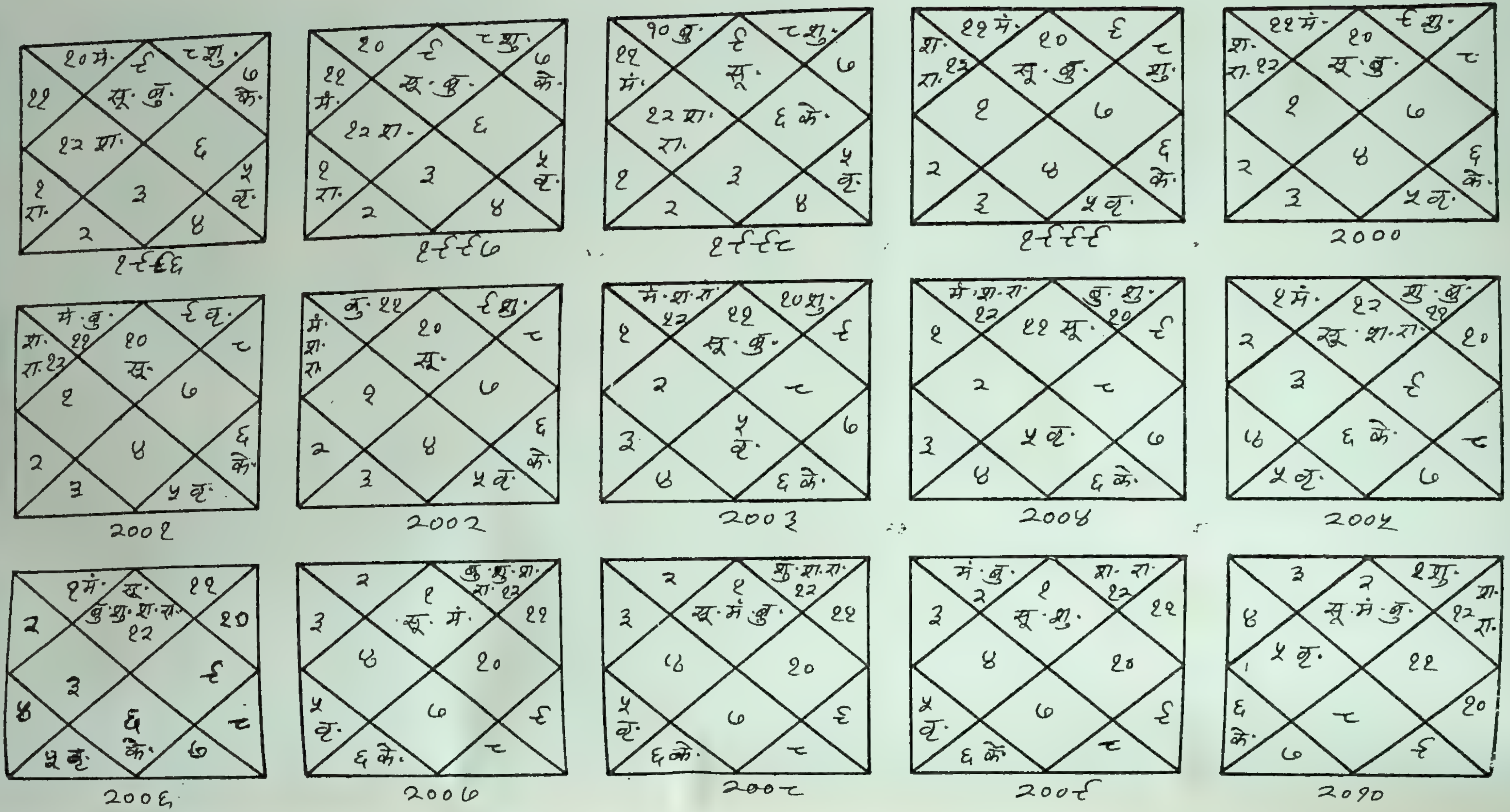
१९९६
१९९७
१९९८
१९९९
२०००
२००१
२००२
२००३
२००४
२००५
२००६
२००७
२००८
२००९
२०१०

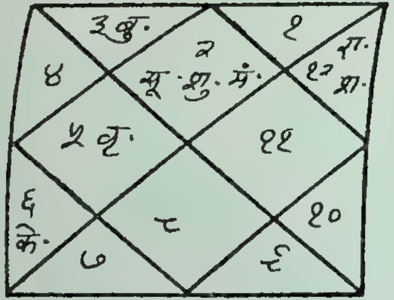
२०११

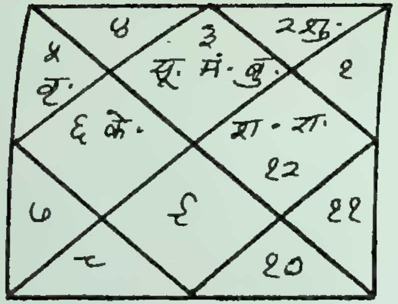
२०१२

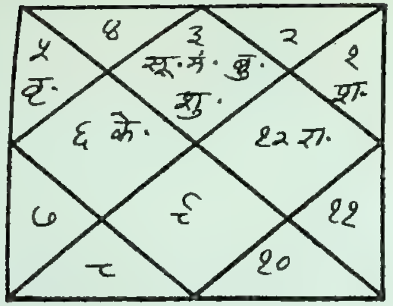
२०१३

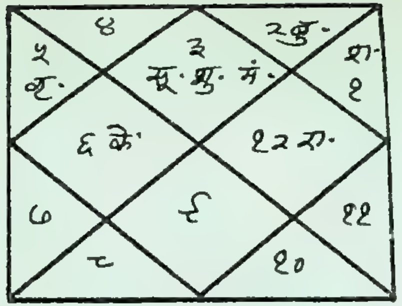
२०१४

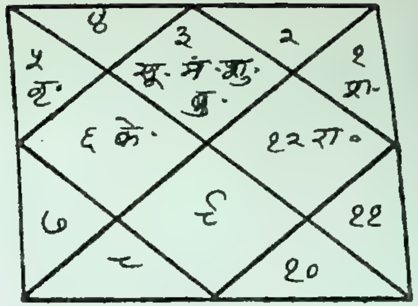
२०१५

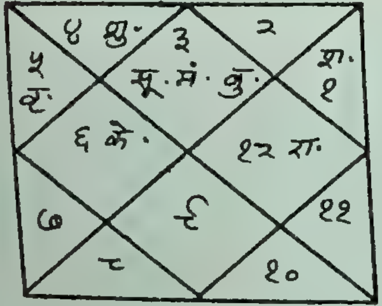
२०१६

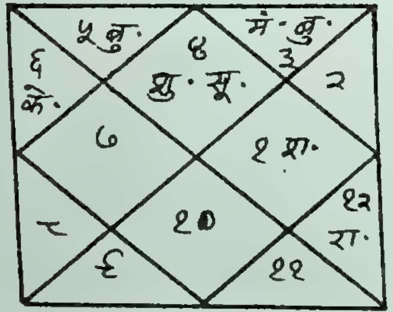
२०१७

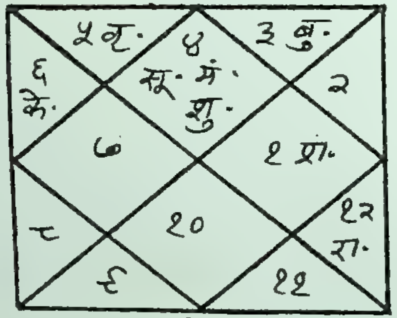
२०१८

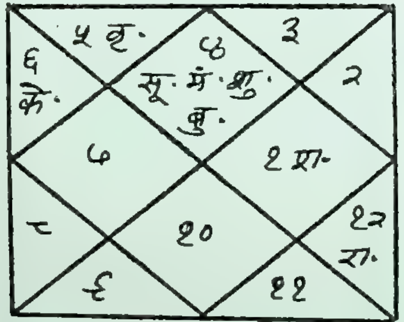
२०१९

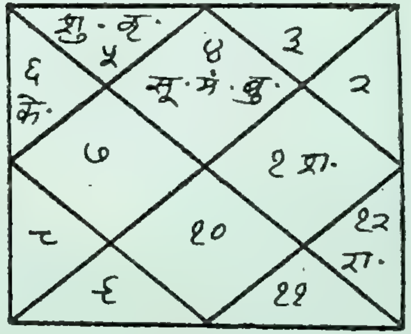
२०२०

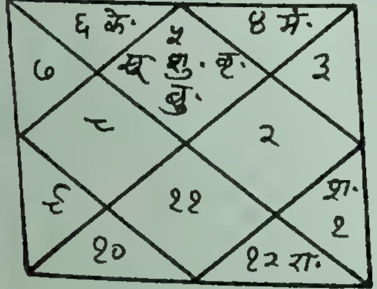
२०२१

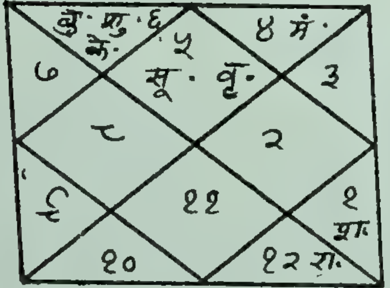
२०२२

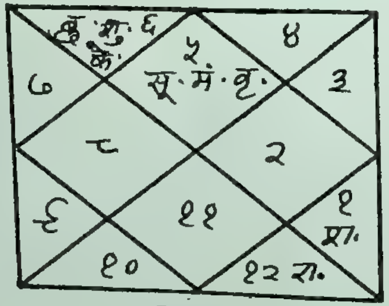
२०२३

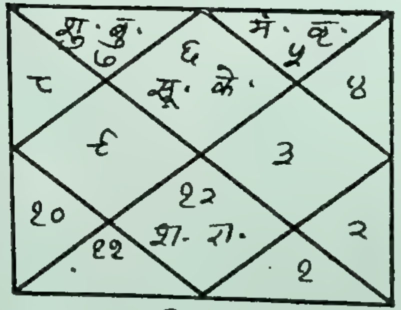
२०२४

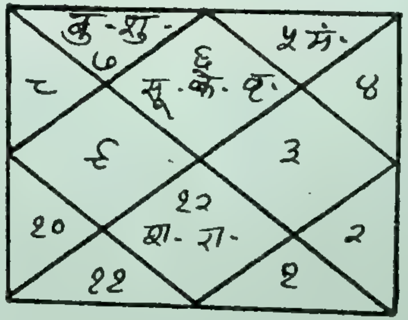
२०२५

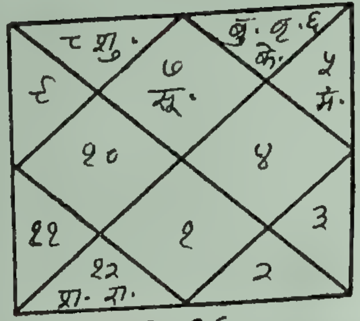
२०२६

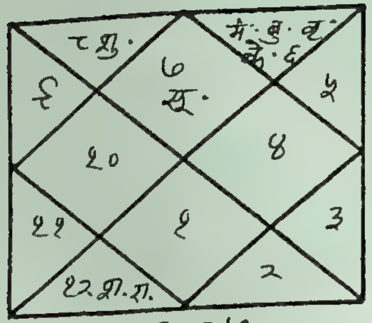
२०२७

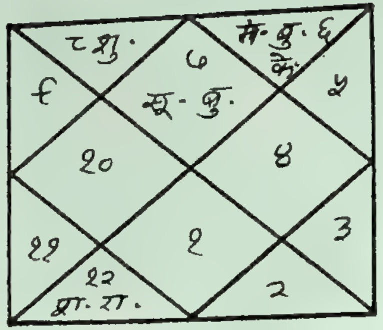
२०२८

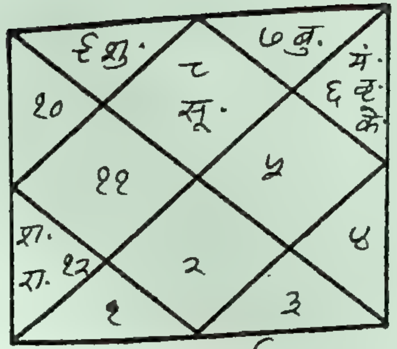
२०२९

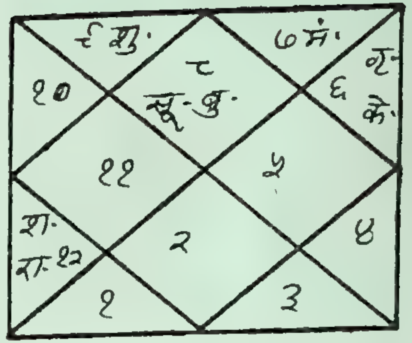
२०३०

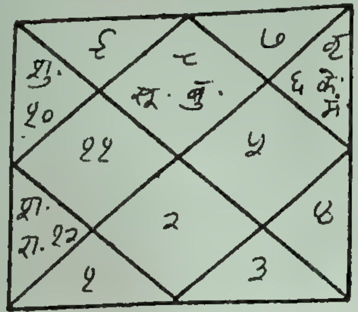
२०३१

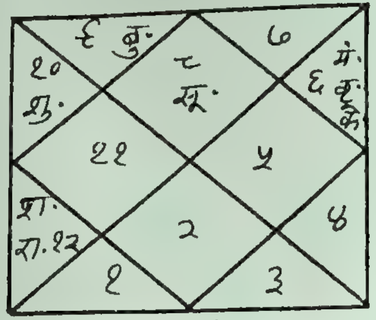
२०३२

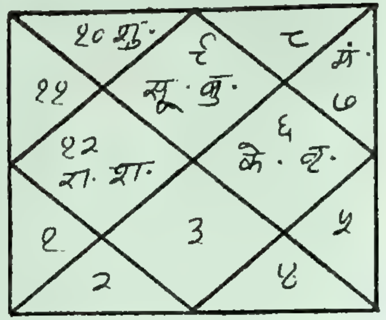
२०३३

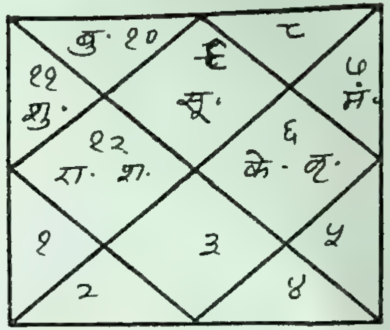
२०३४

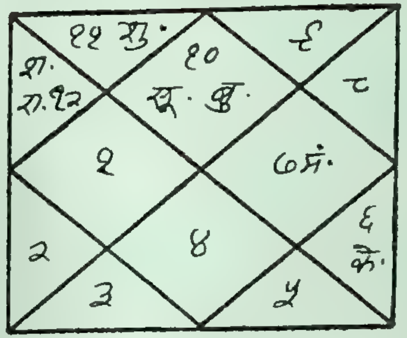
२०३५

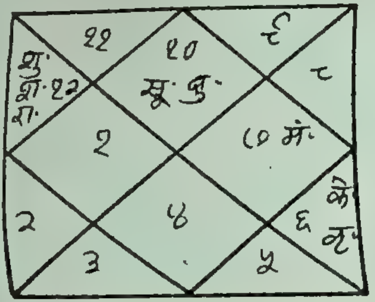
२०३६

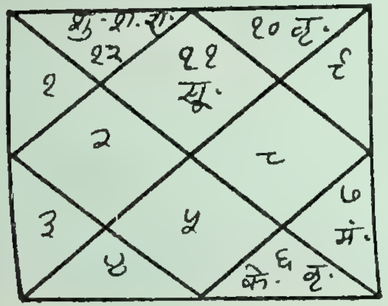
२०३७

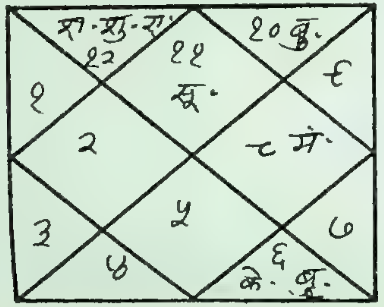
२०३८

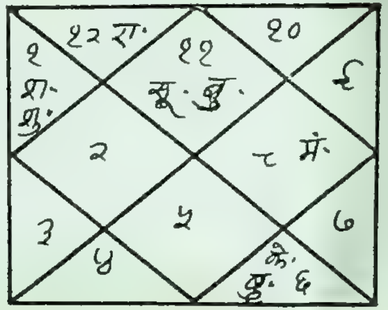
२०३९

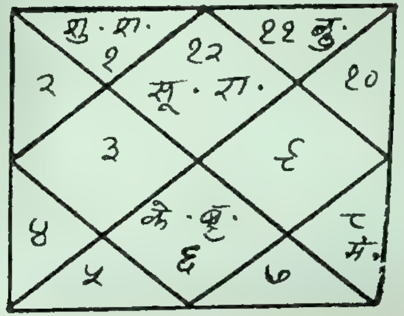
२०४०

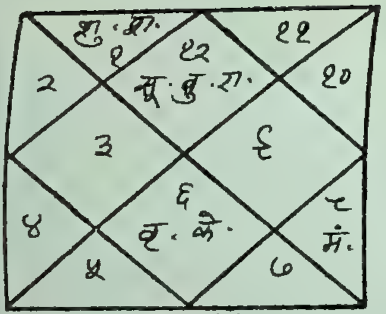
२०४१

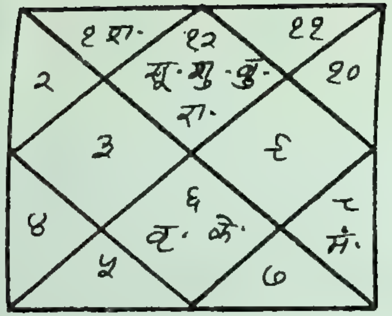
२०४२

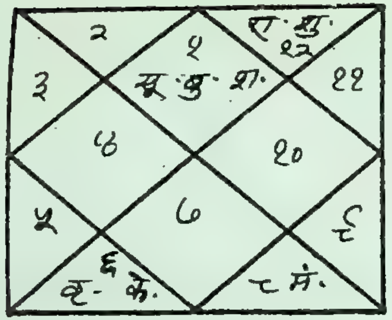
२०४३

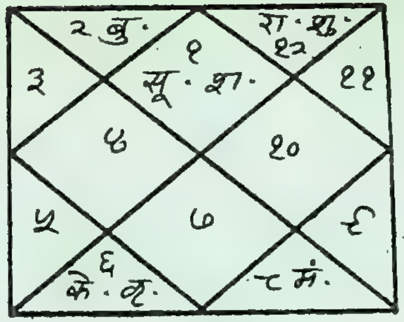
२०४४

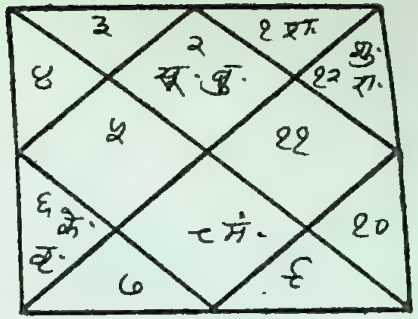
२०४५

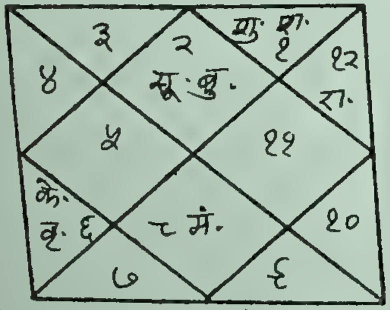
२०४६

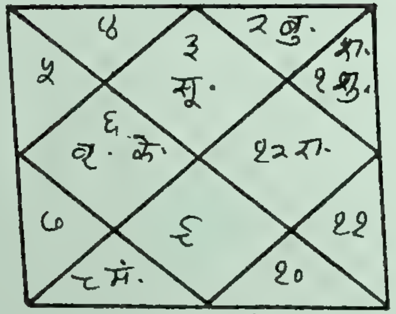
२०४७

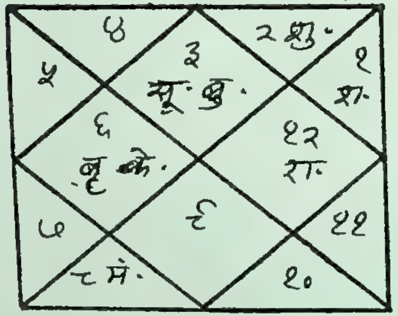
२०४८

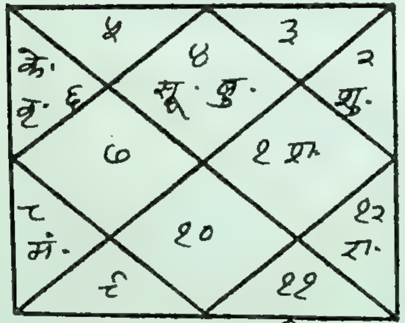
२०४९

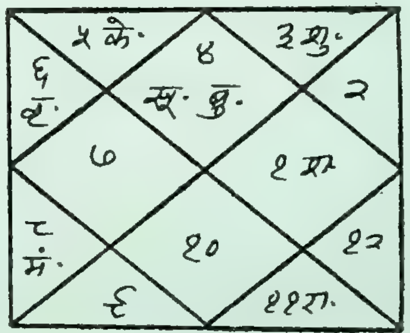
२०५०

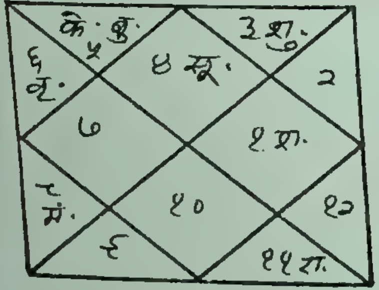
२०५१

२०५२

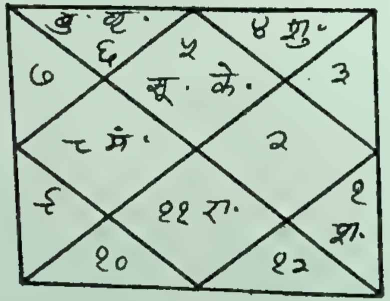
२०५३

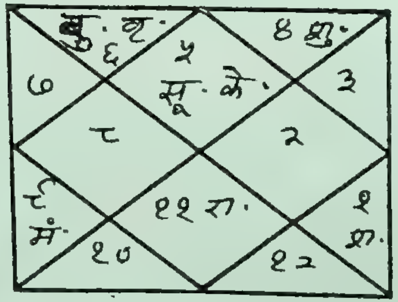
२०५४

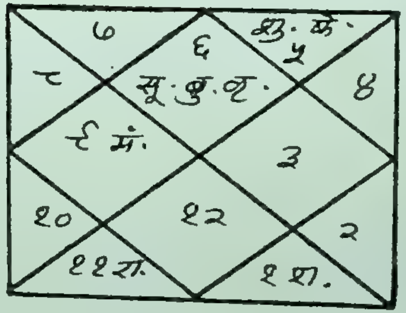
२०५५

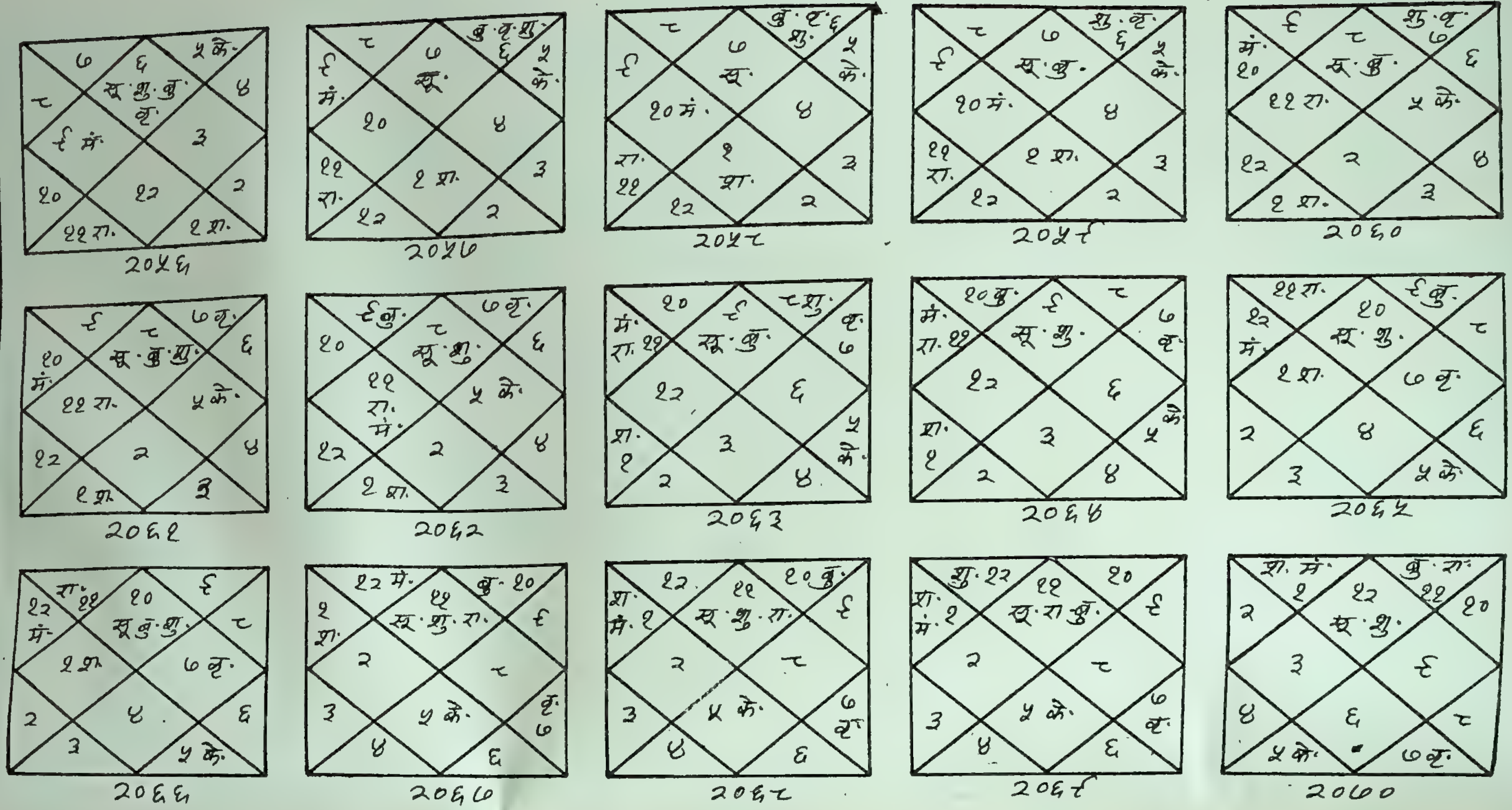

२०५६
२०५७
२०५८
२०५९
२०६०
२०६१
२०६२
२०६३
२०६४
२०६५
२०६६
२०६७
२०६८
२०६९
२०७०

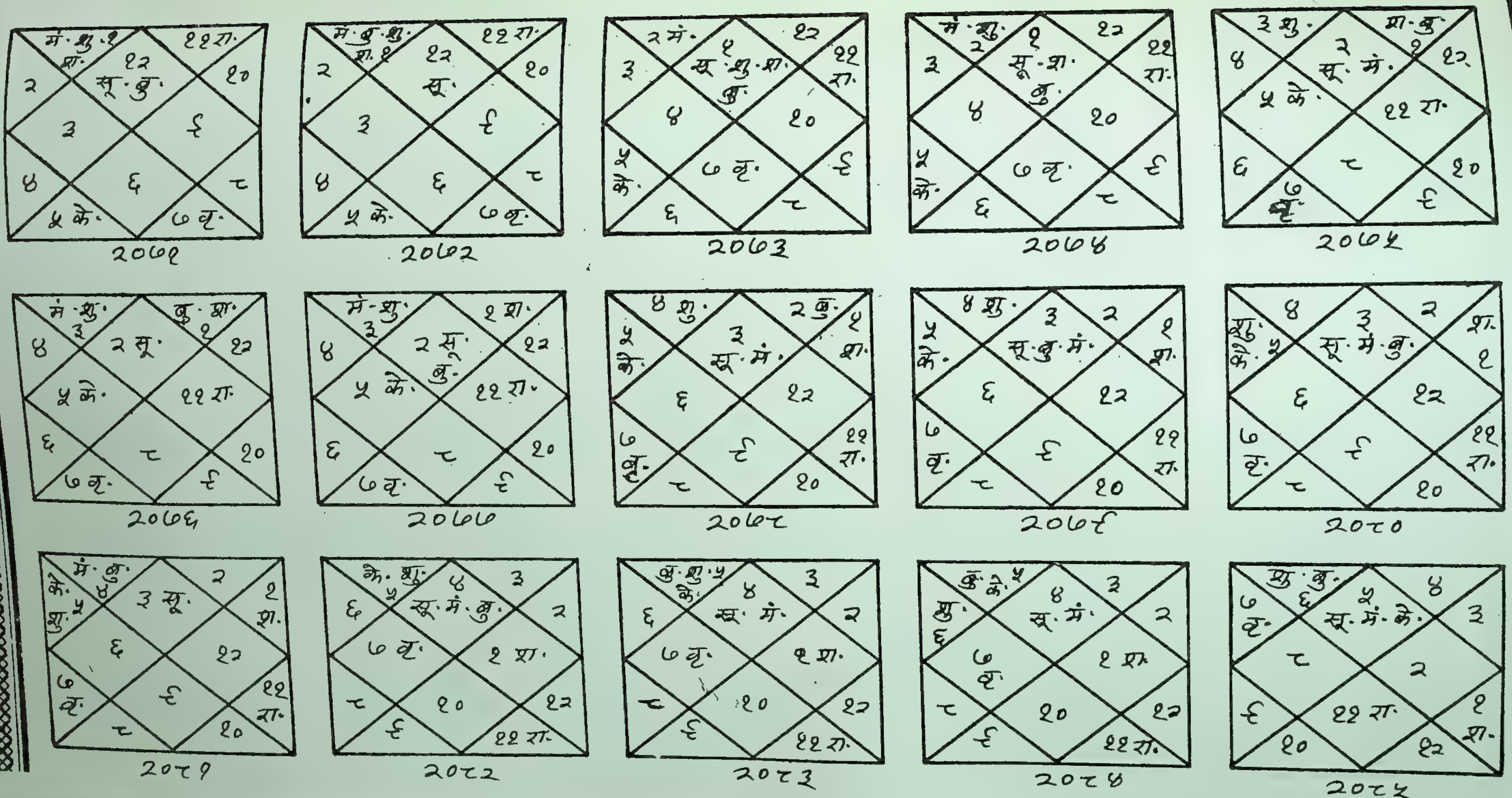
२०६१
२०६२
२०६३
२०६४
२०६५
२०६६
२०६७
२०६८
२०६९
२०७०
२०७१
२०७२
२०७३
२०७४
२०७५

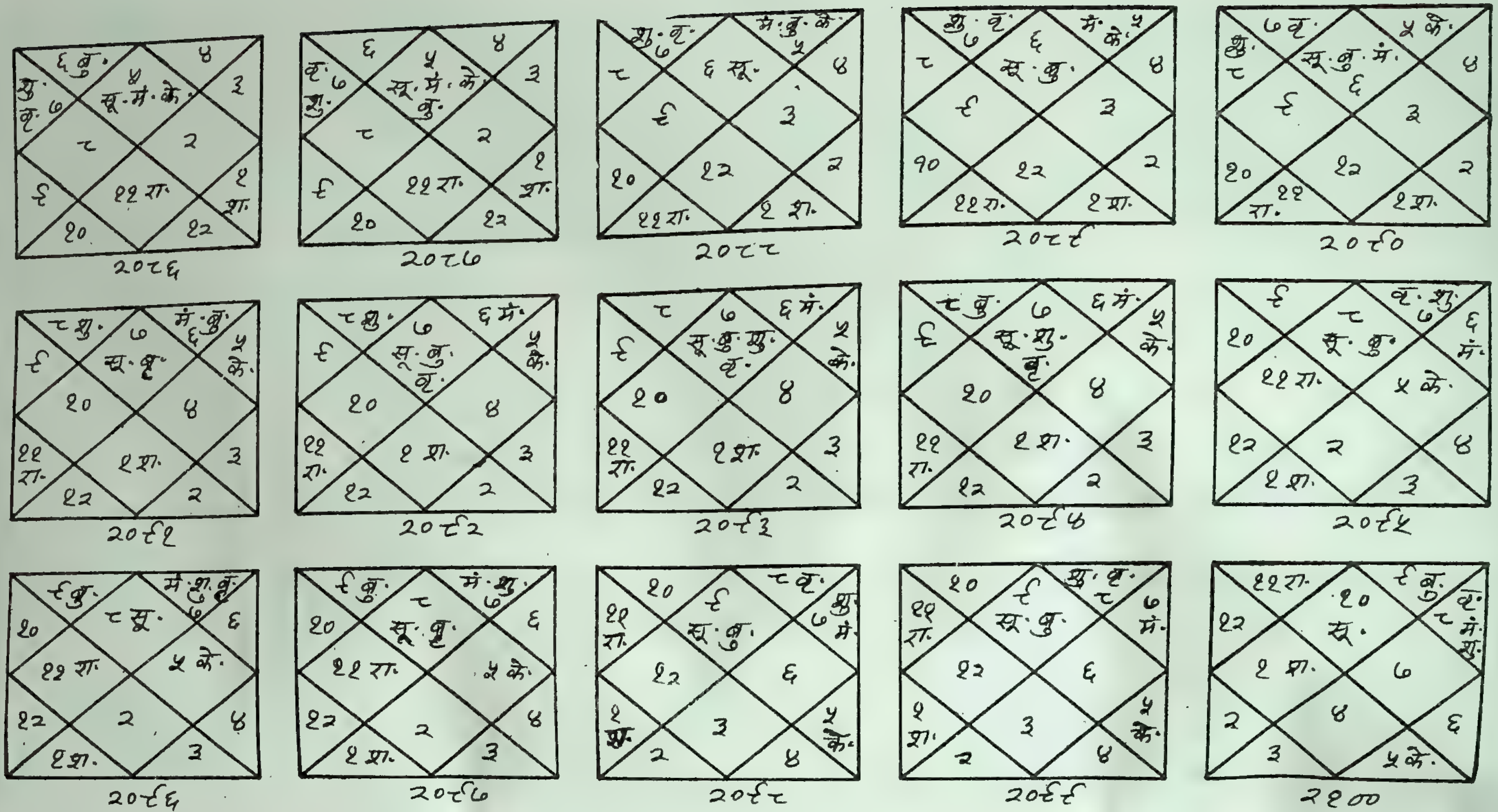
२०८६
२०८७
२०८८
२०८९
२०९०
२०९१
२०९२
२०९३
२०९४
२०९५
२०९६
२०९७
२०९८
२०९९
२१००

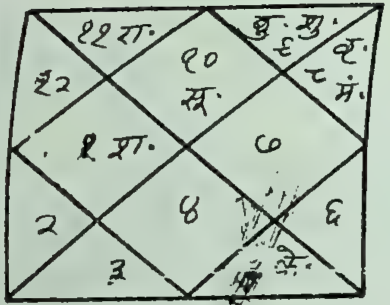

२१०१

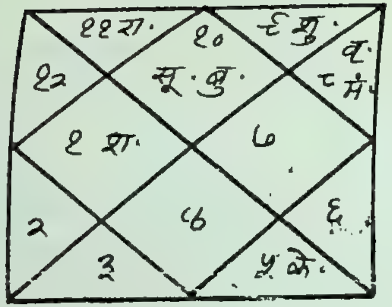

२१०२

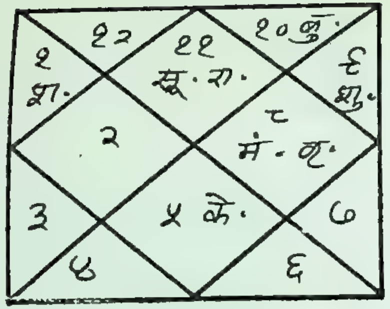

२१०३

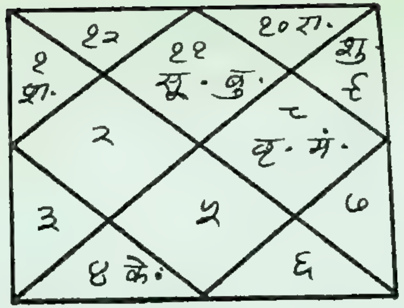

२१०४

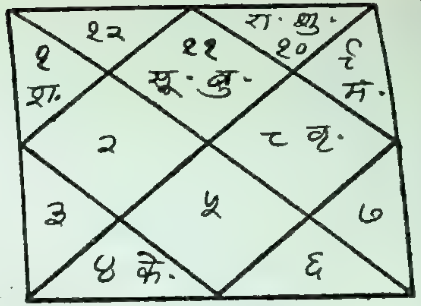

२१०५

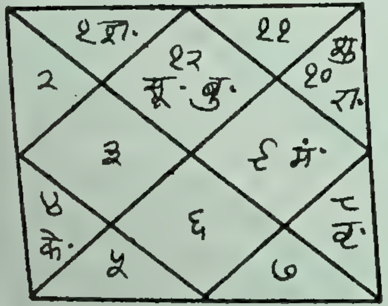

२१०६

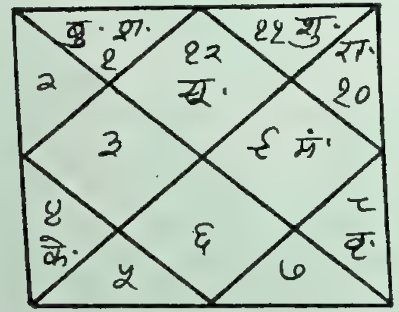

२१०७

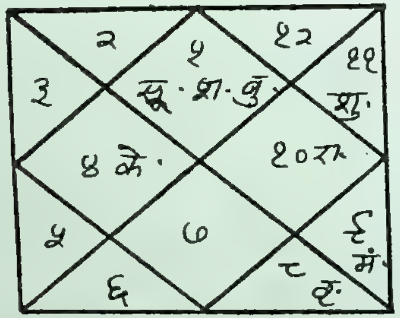

२१०८

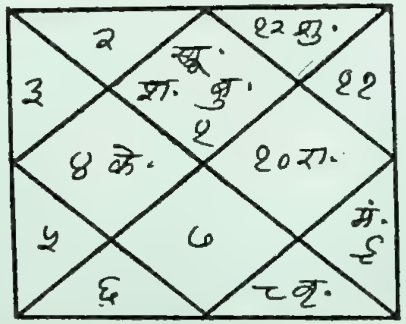

२१०९

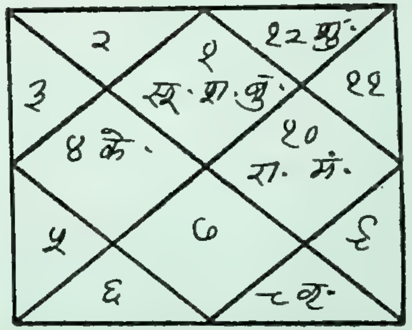

२११०

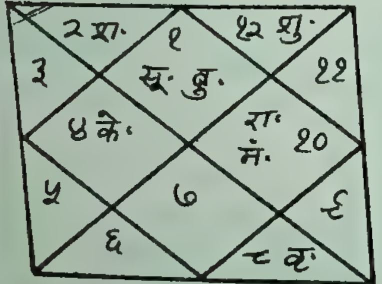

२१११

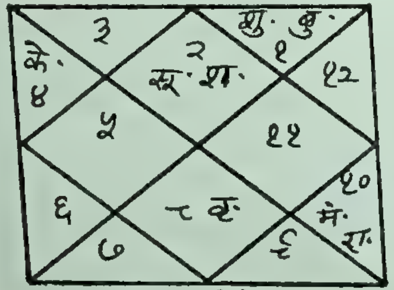

२११२

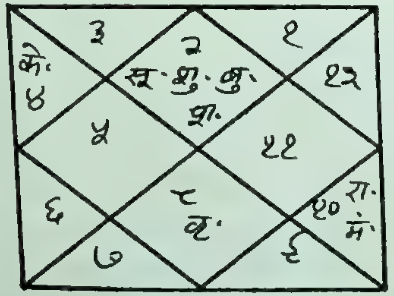

२११३

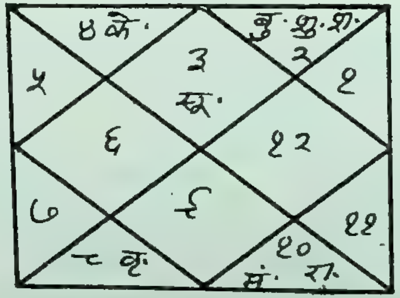

२११४

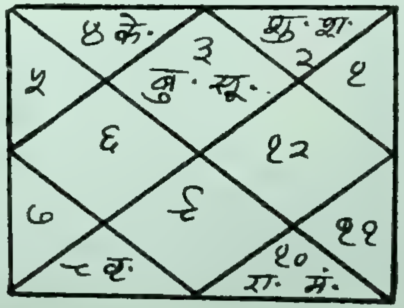

२११५

२११६

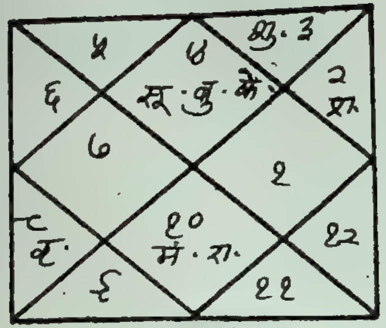

२११७

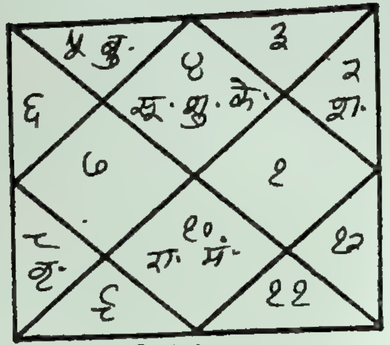

२११८

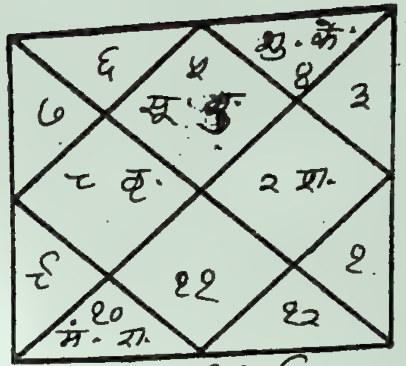

२११९

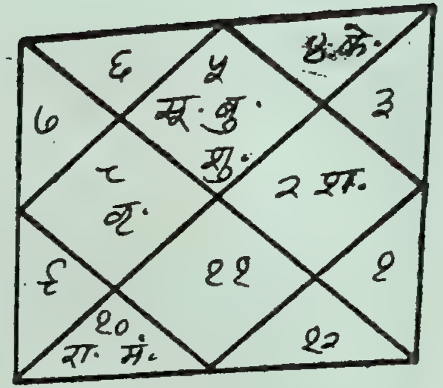

२१२०

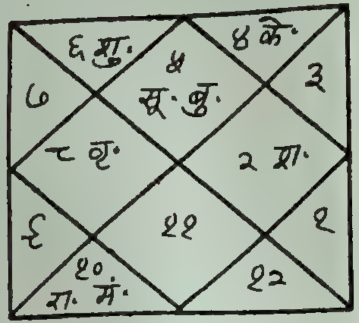

२१२१

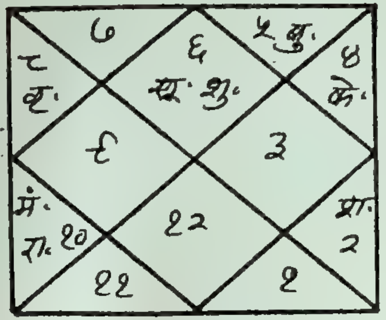

२१२२

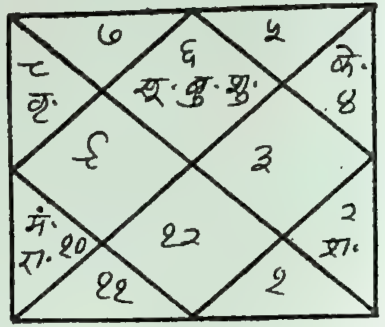

२१२३

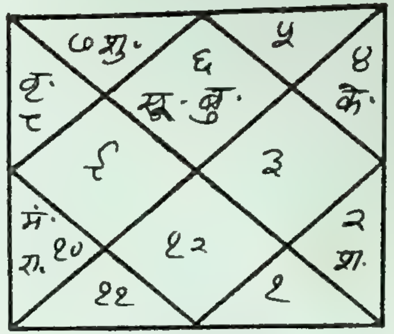

२१२४

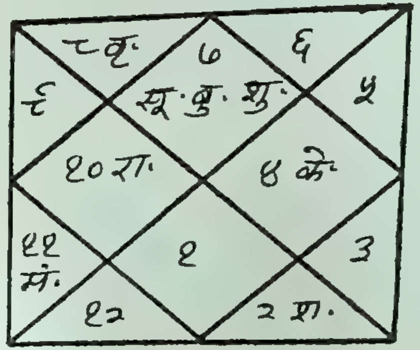

२१२५

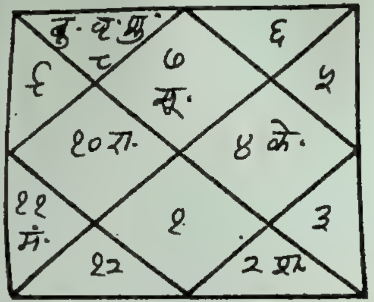

२१२६

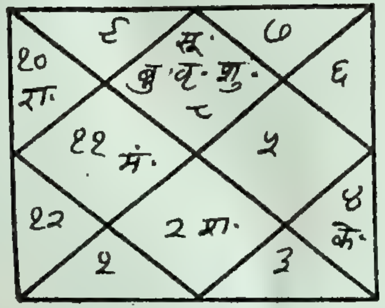

२१२७

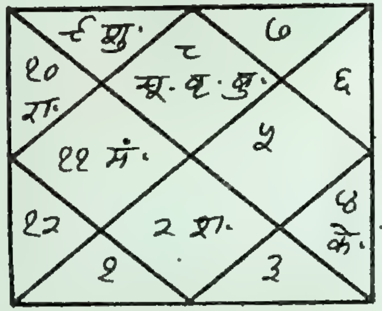

२१२८

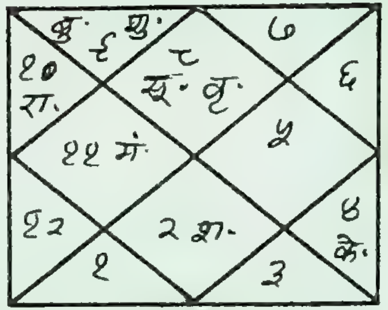

२१२९

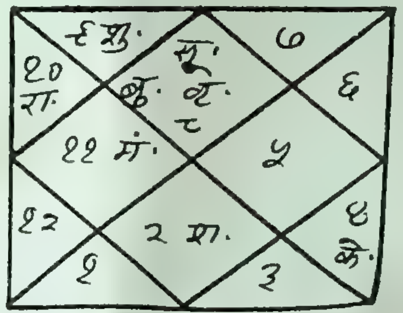

२१३०

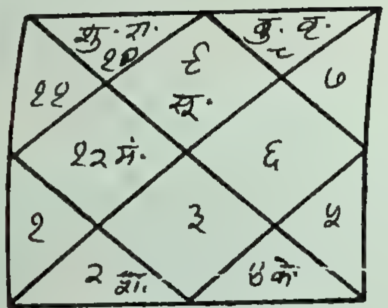

२१३१

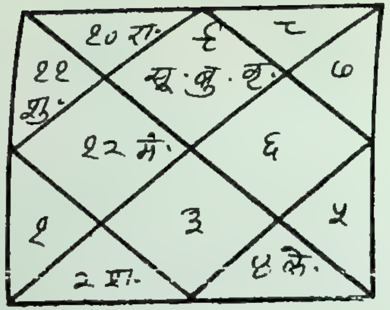

२१३२

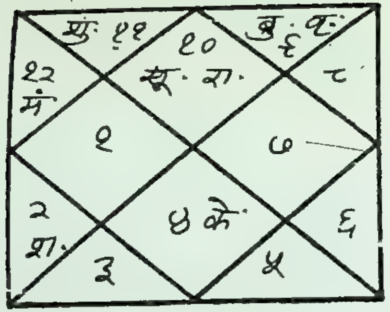

२१३३

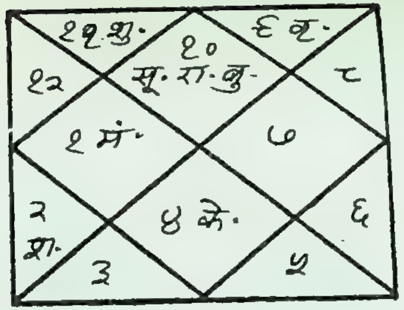

२१३४

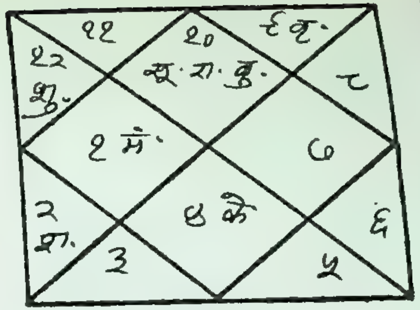

२१३५

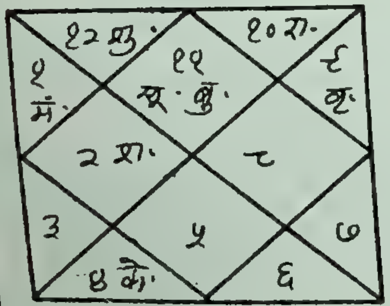

२१३६

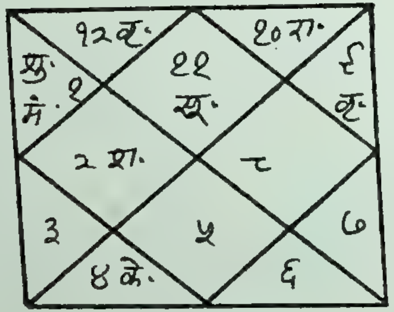

२१३७

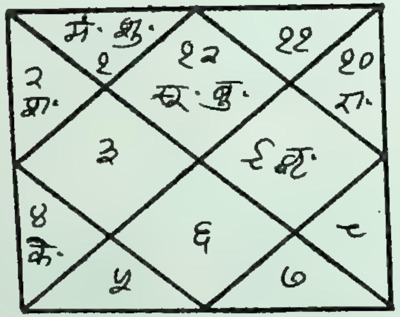

२१३८

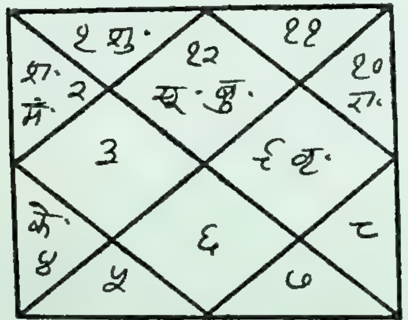

२१३९

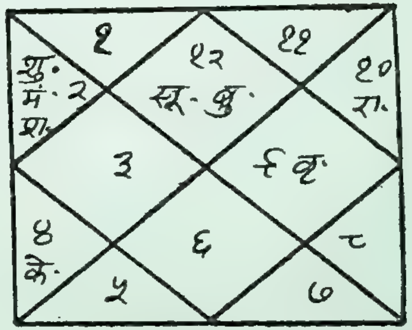

२१४०

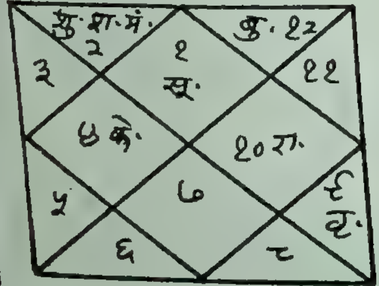

२१४१

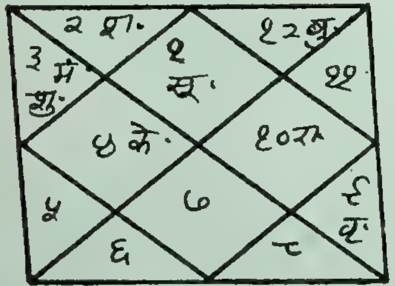

२१४२

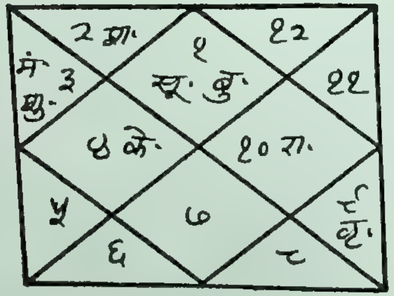

२१४३

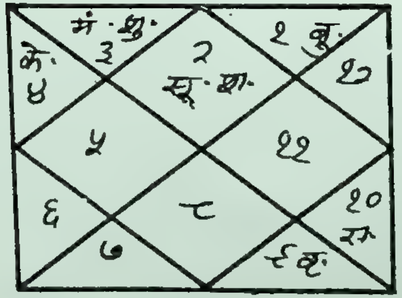

२१४४

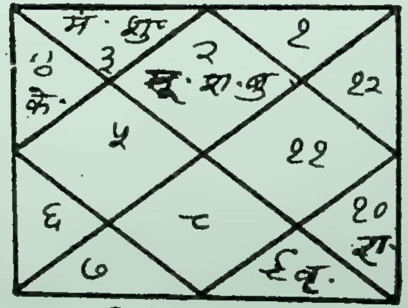

२१४५

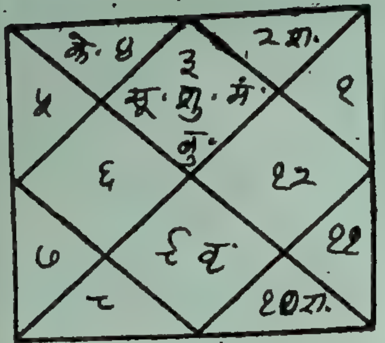

२२४६

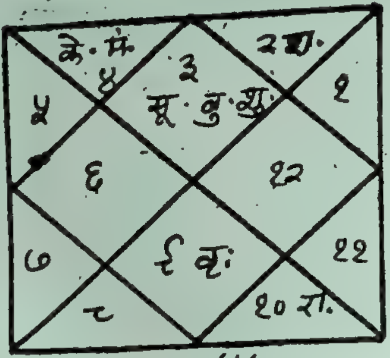

२२४७

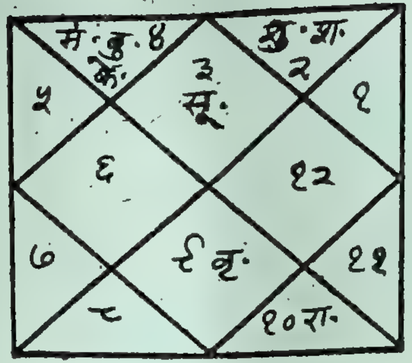

२२४८

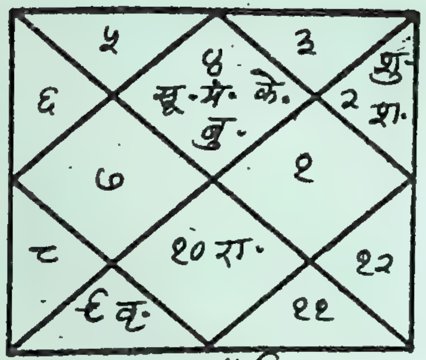

२२४९

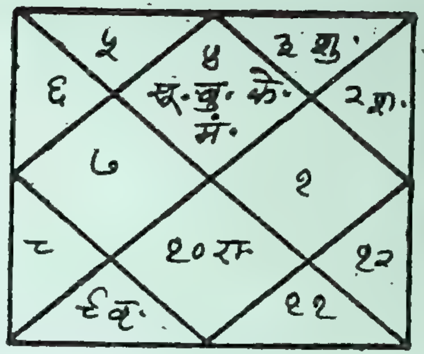

२२५०

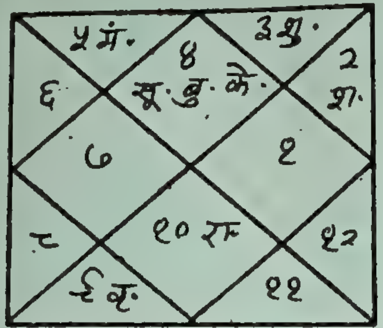

२२५१

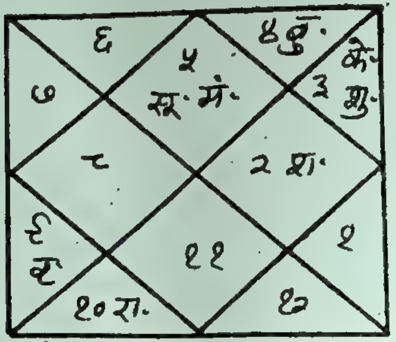

२२५२

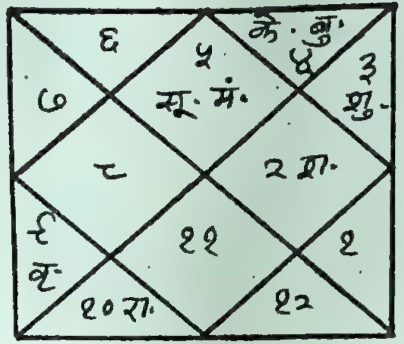

२२५३

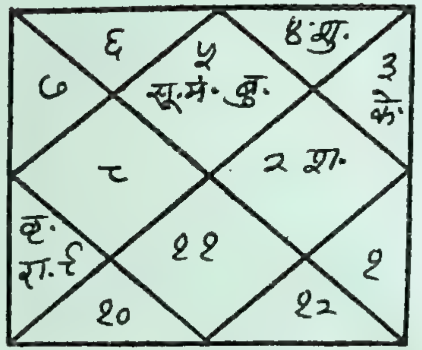

२२५४

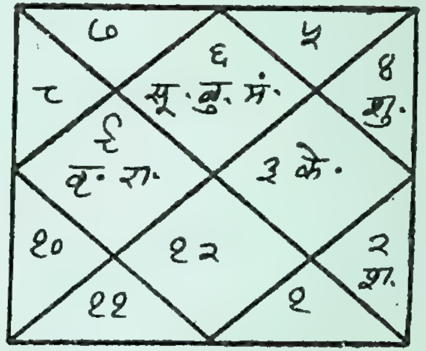

२२५५

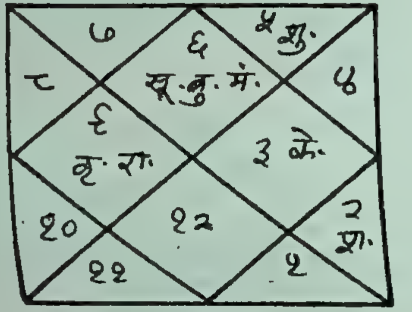

२२५६

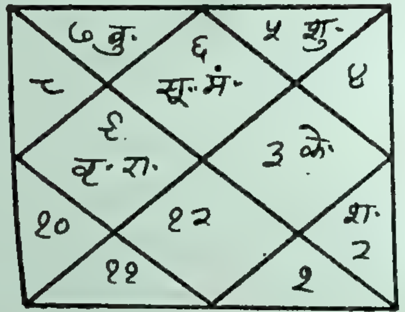

२२५७

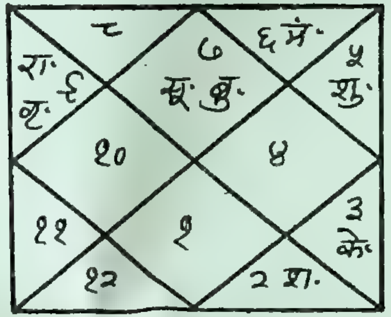

२२५८

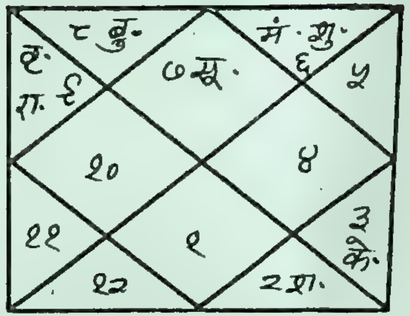

२२५९

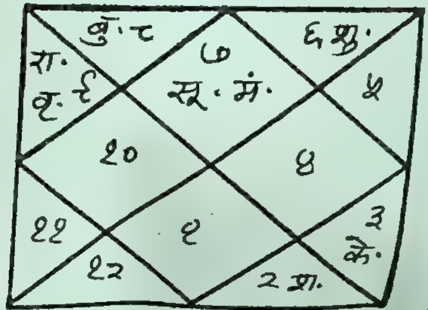

२२६०

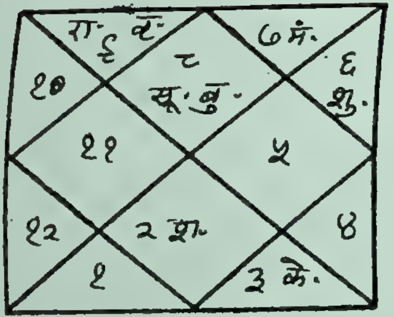
२२६१

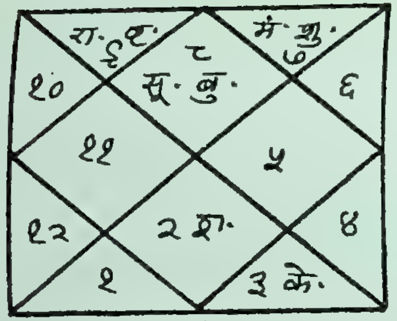
२२६२

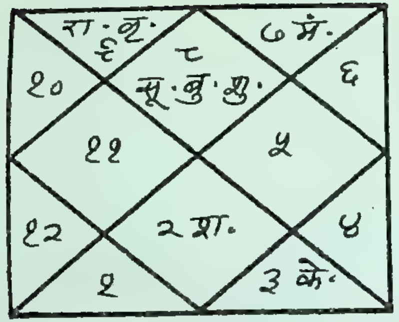
२२६३

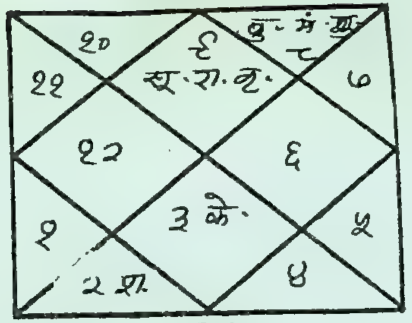
२२६४

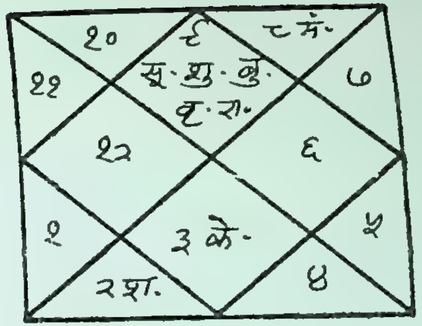
२२६५

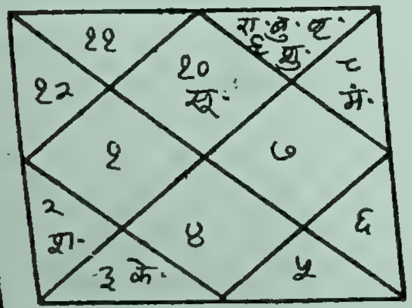
२२६६

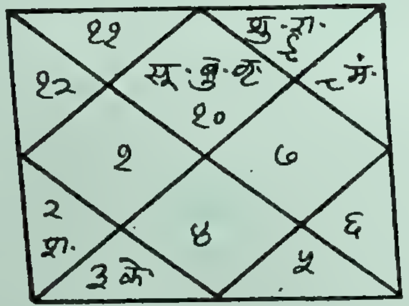
२२६७

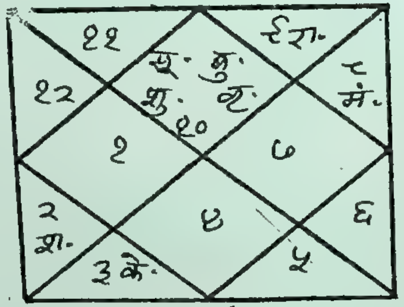
२२६८

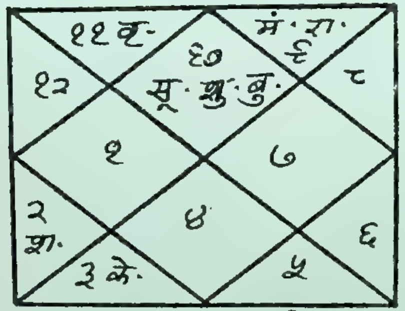
२२६९

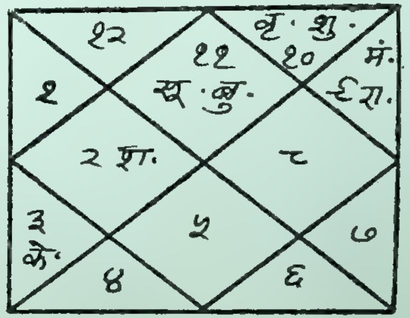
२२७०

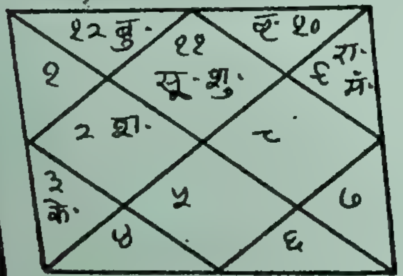
२२७१

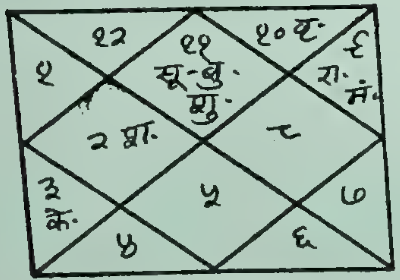
२२७२

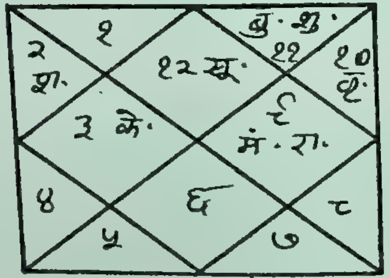
२२७३

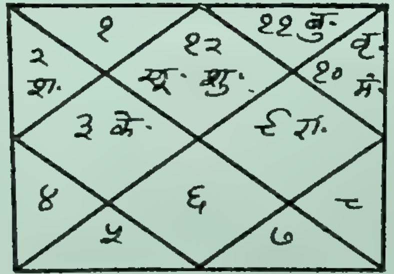
२२७४

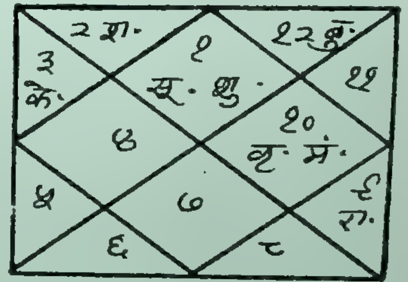
२२७५

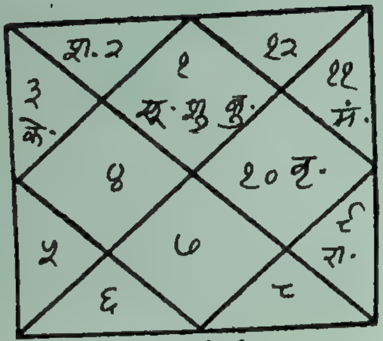

२२७६

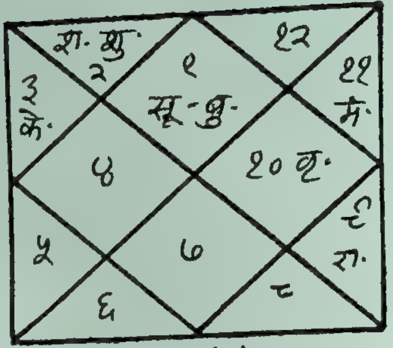

२२७७

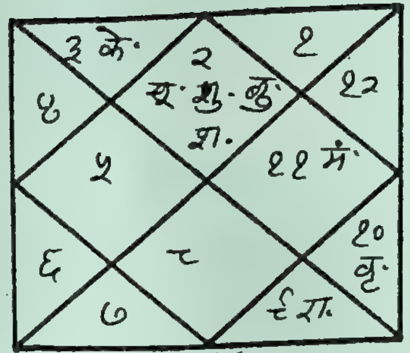

२२७८

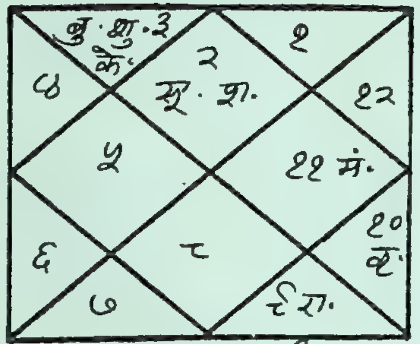

२२७९

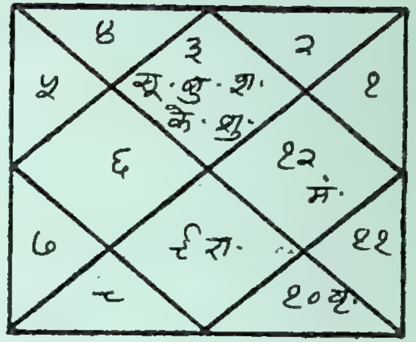

२२८०

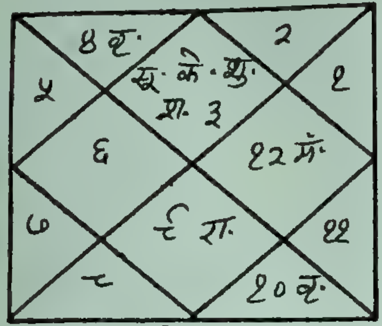

२२८१

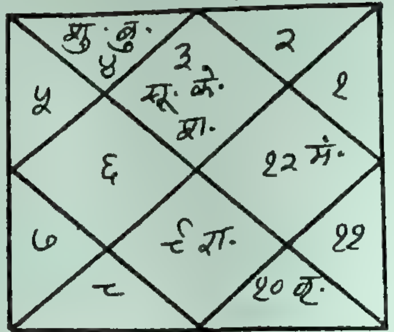

२२८२

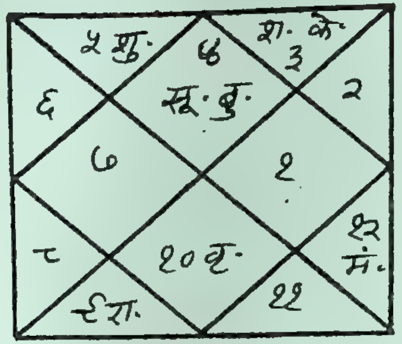

२२८३

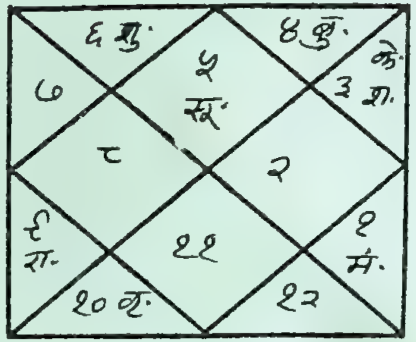

२२८४

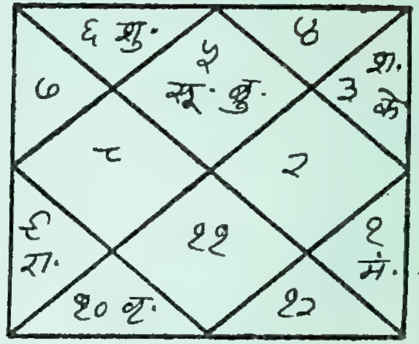

२२८५

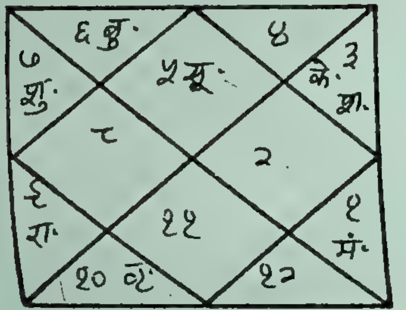

२२८६

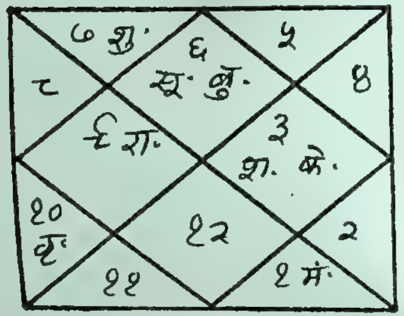

२२८७

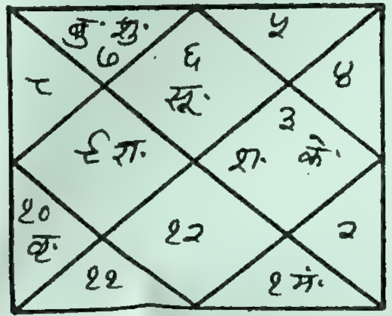

२२८८

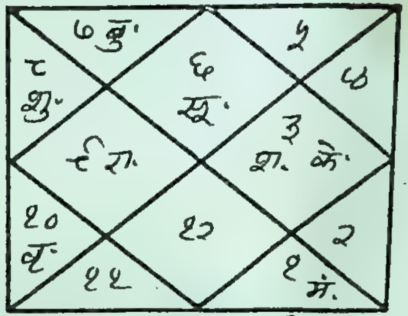

२२८९

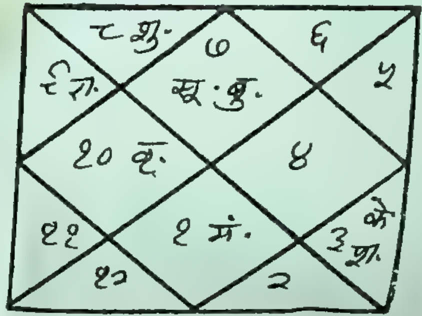

२२९०

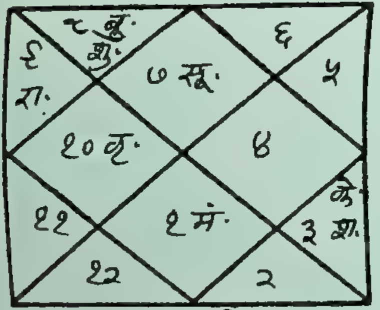
२१९१

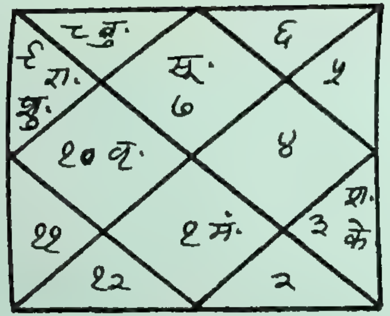
२१९२

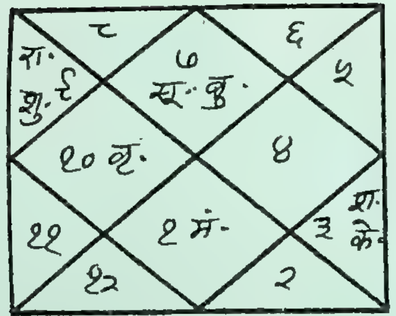
२१९३

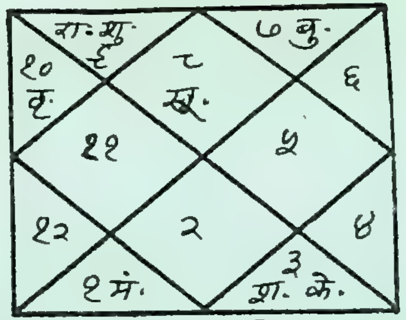
२१९४

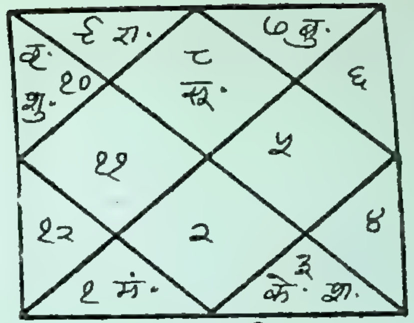
२१९५

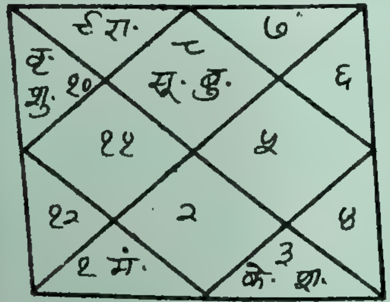
२१९६

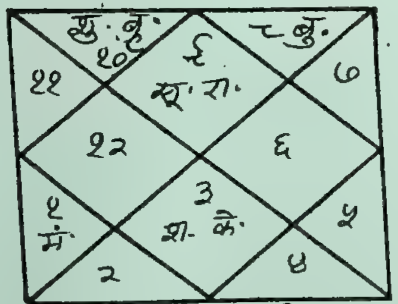
२१९७

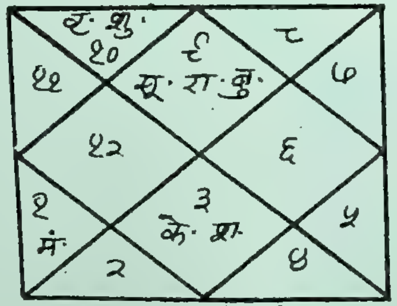
२१९८

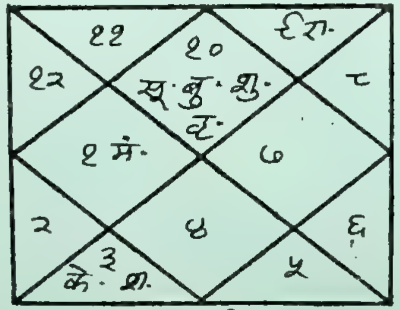
२१९९

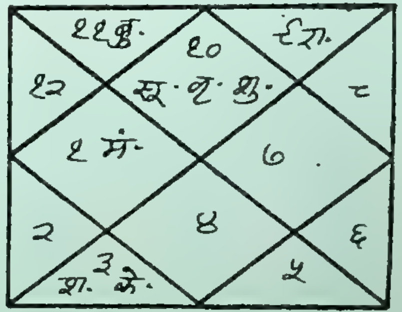
२२००

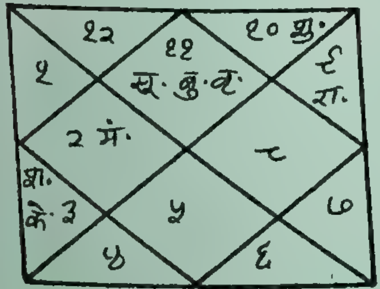
२२०१

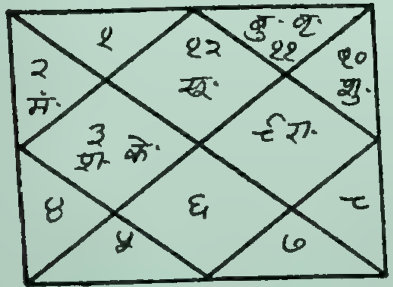
२२०२

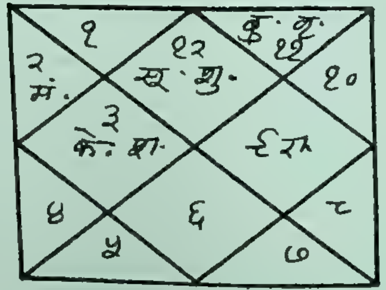
२२०३

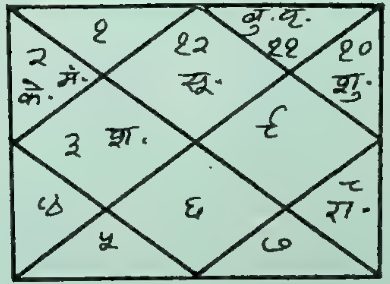
२२०४

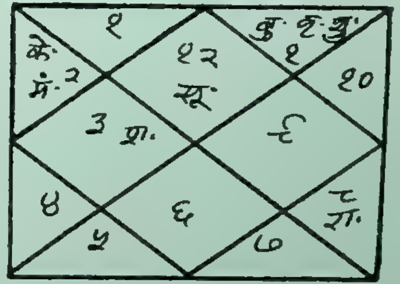
२२०५

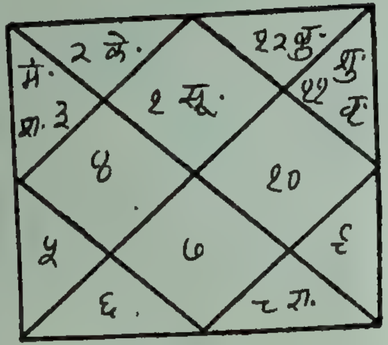

२२०६

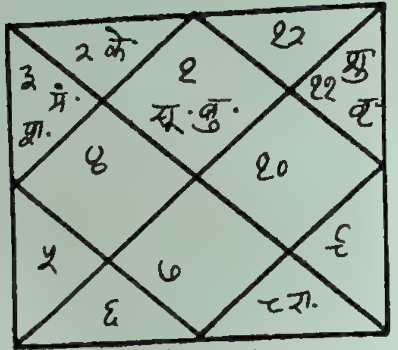

२२०७

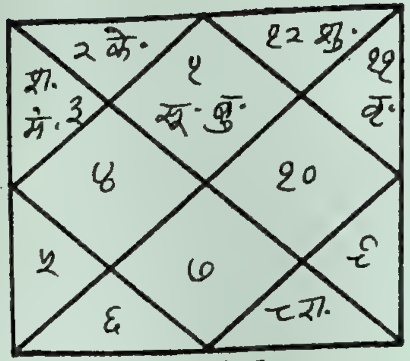

२२०८

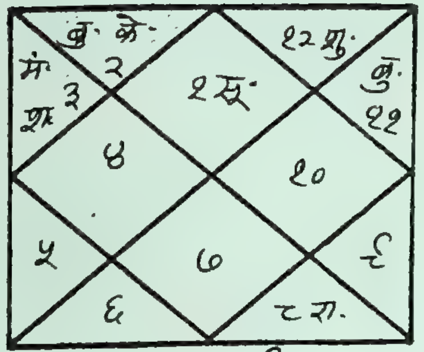

२२०९

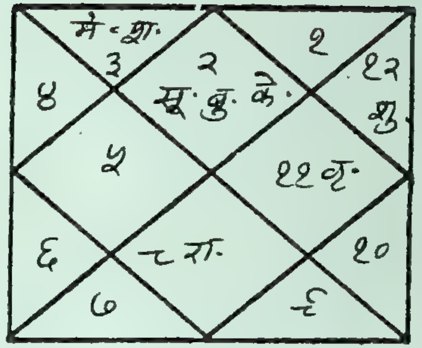

२२१०

२२११

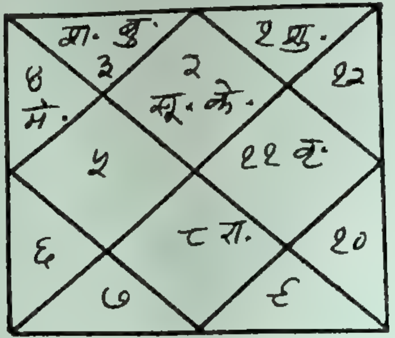

२२१२

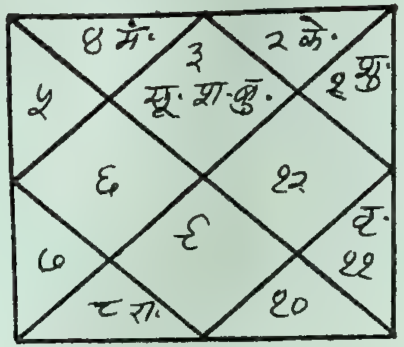

२२१३

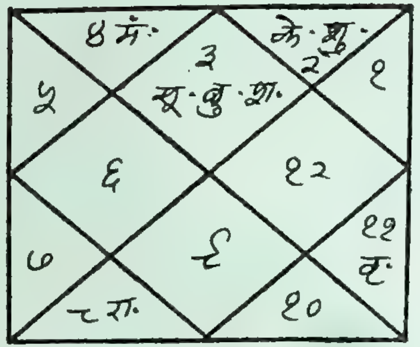

२२१४

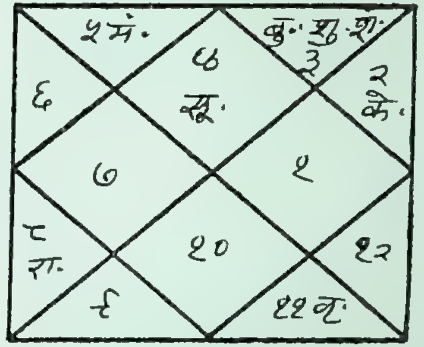

२२१५

२२१६

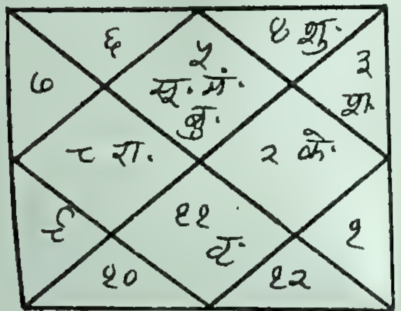

२२१७

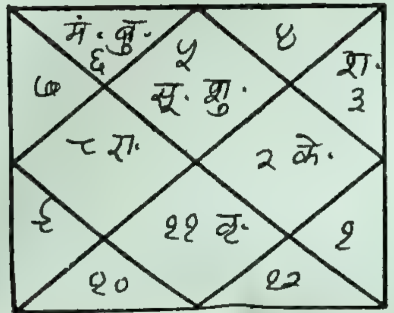

२२१८

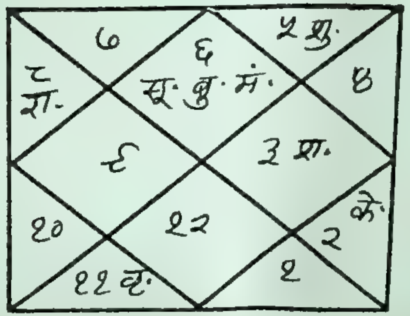

२२१९

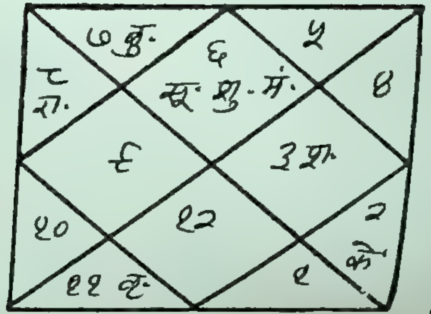

२२२०

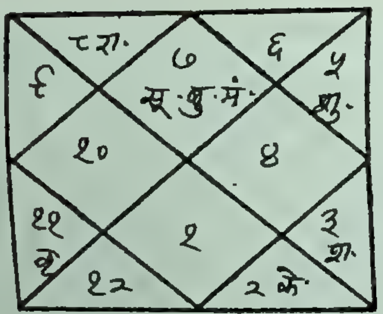
२२२१

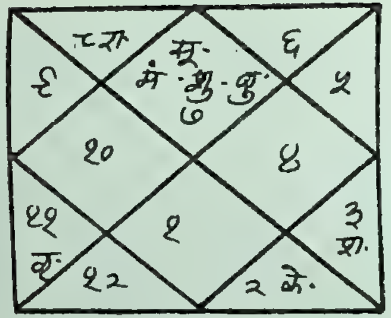
२२२२

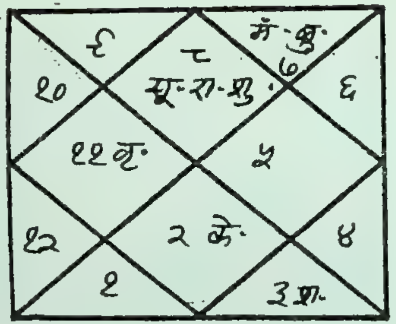
२२२३

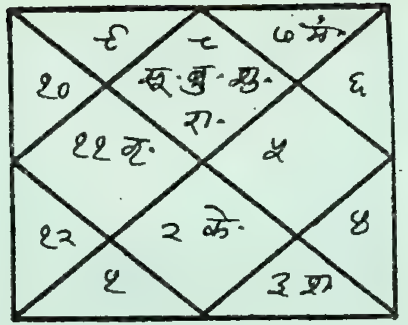
२२२४

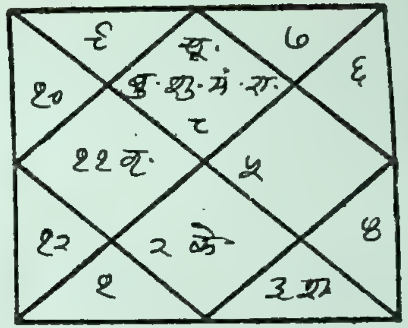
२२२५

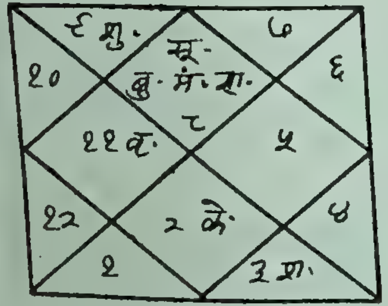
२२२६

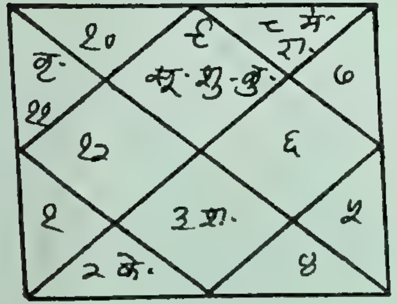
२२२७

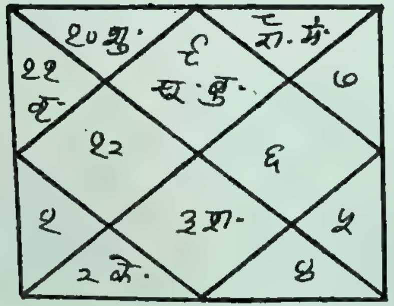
२२२८

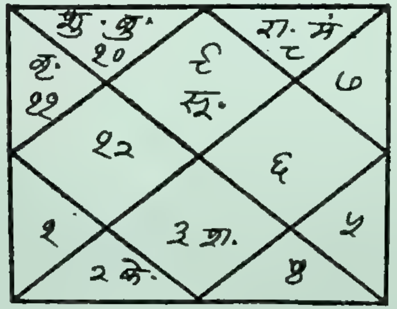
२२२९

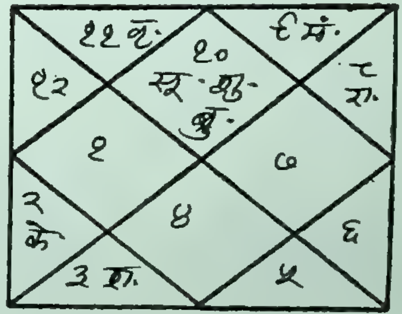
२२३०

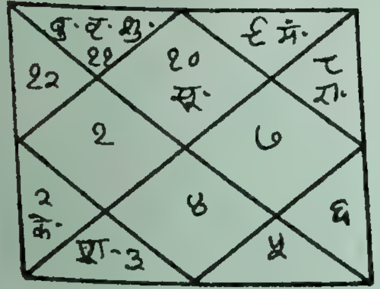
२२३१

२२३२

२२३३

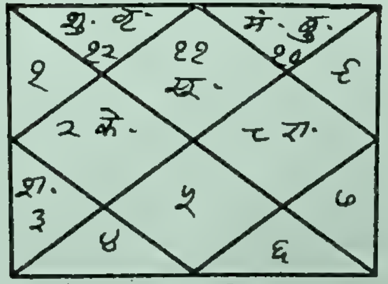
२२३४

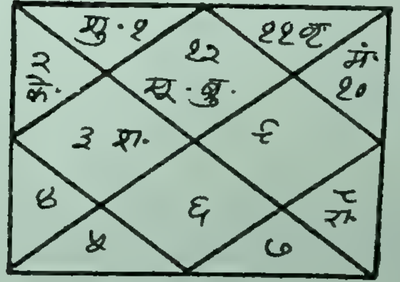
२२३५

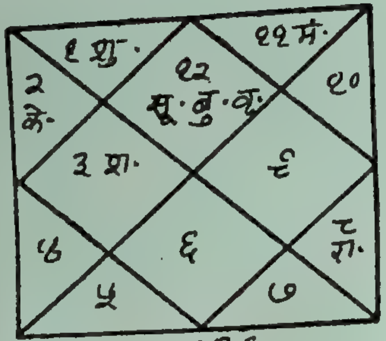
२२३६

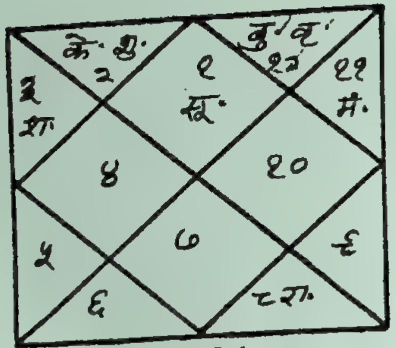
२२३७

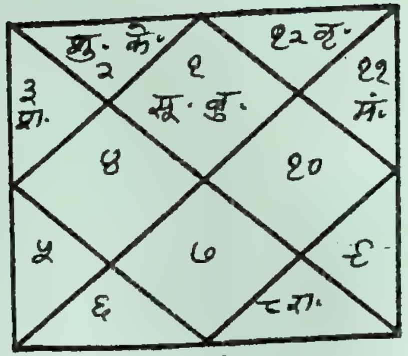
२२३८

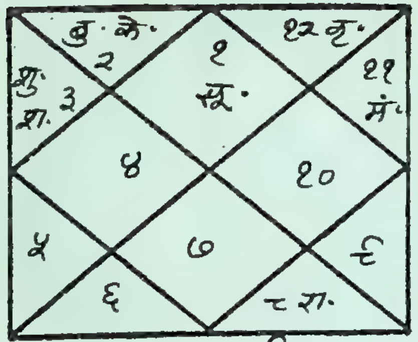
२२३९

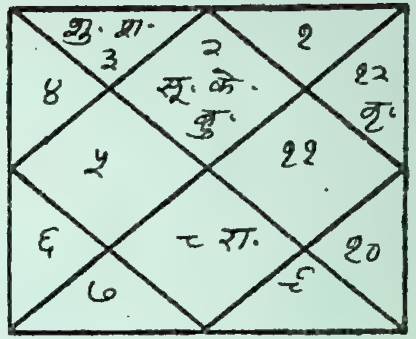
२२४०

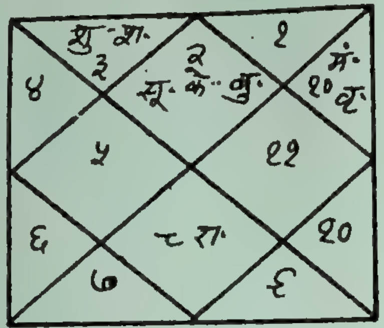
२२४१

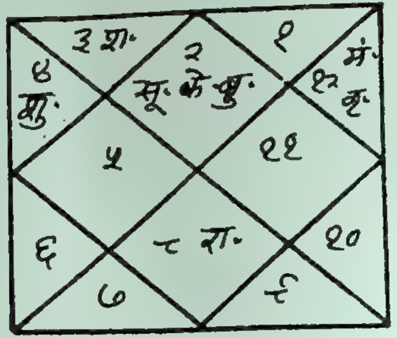
२२४२

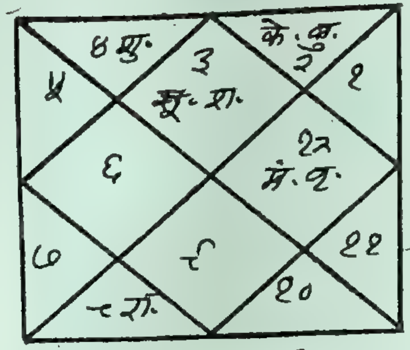
२२४३

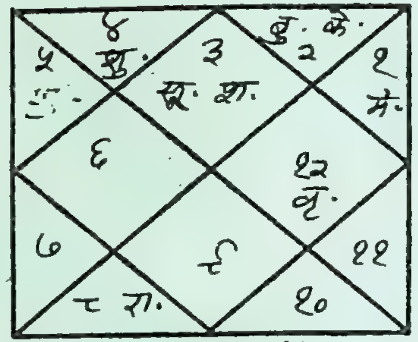
२२४४

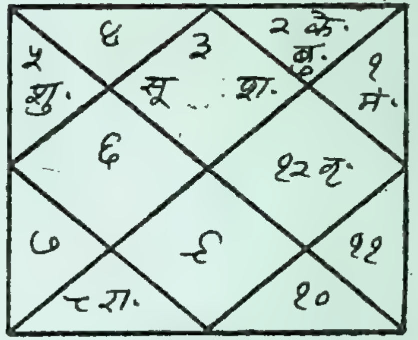
२२४५

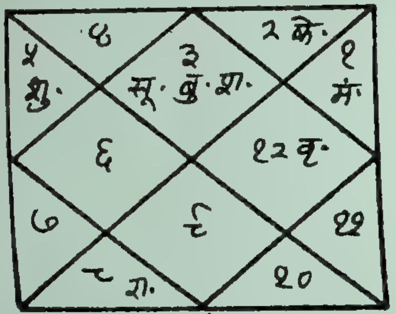
२२४६

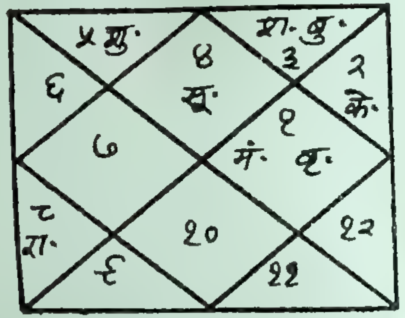
२२४७

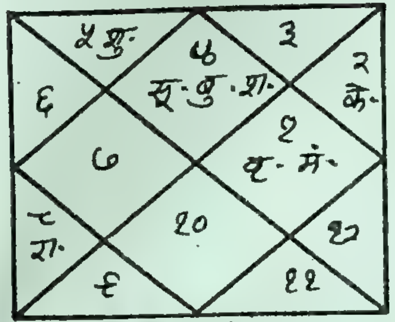
२२४८

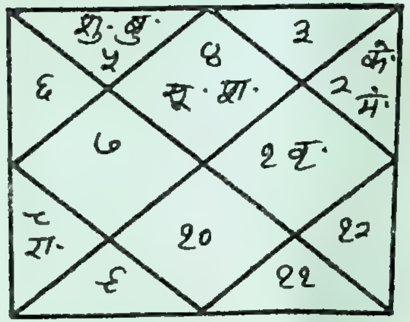
२२४९

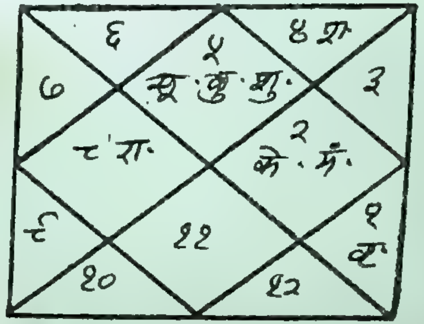
२२५०

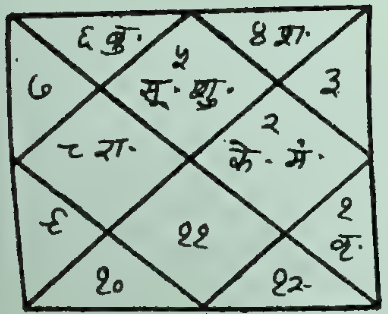

२२५१

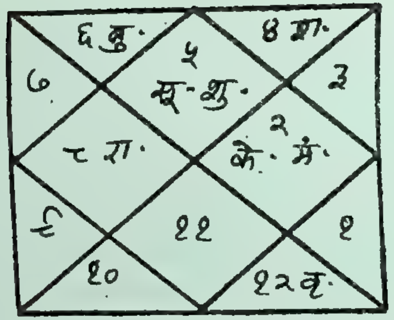

२२५२

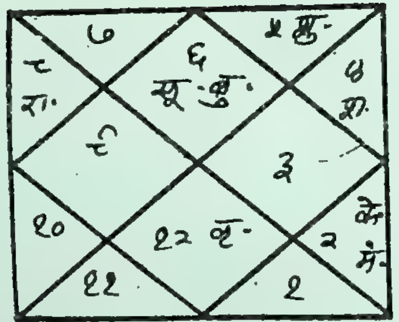

२२५३

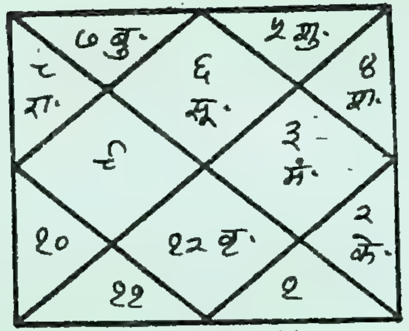

२२५४

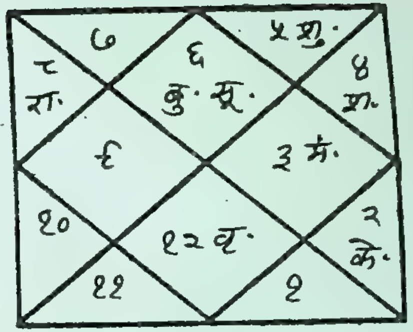

२२५५

२२५६

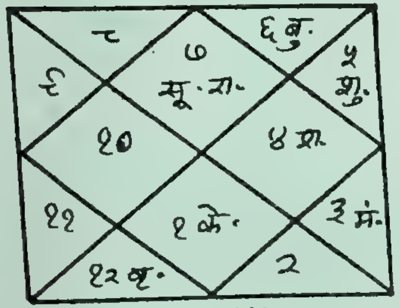

२२५७

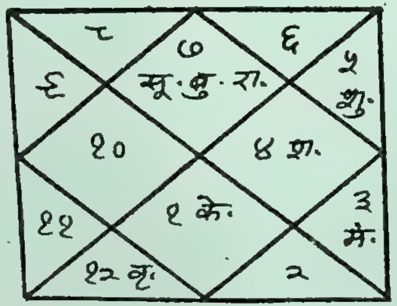

२२५८

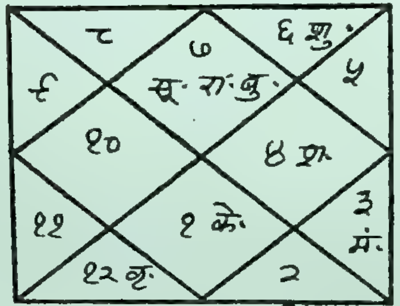

२२५९

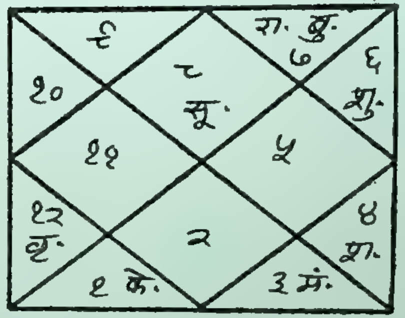

२२६०

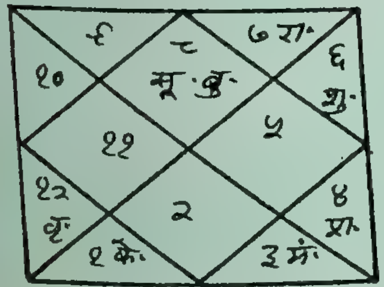

२२६१

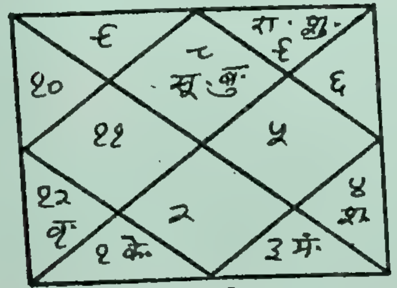

२२६२

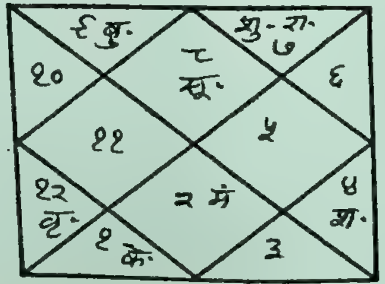

२२६३

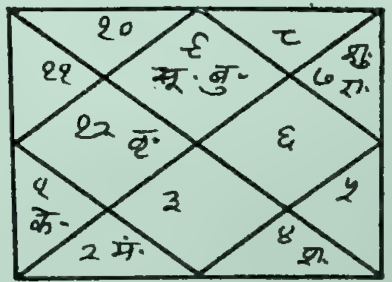

२२६४

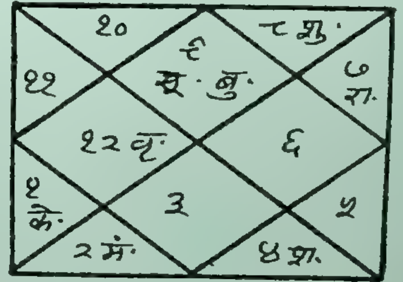

२२६५

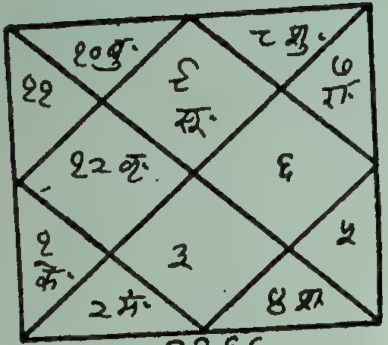
२२६६

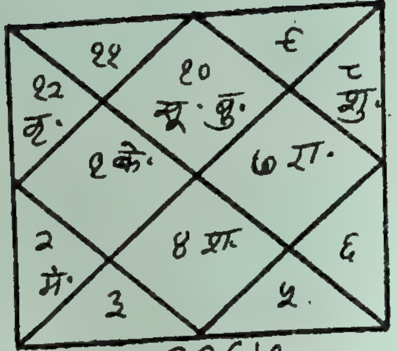
२२६७

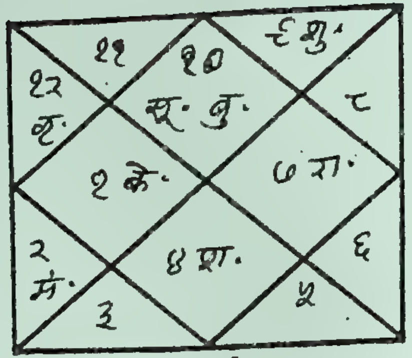
२२६८

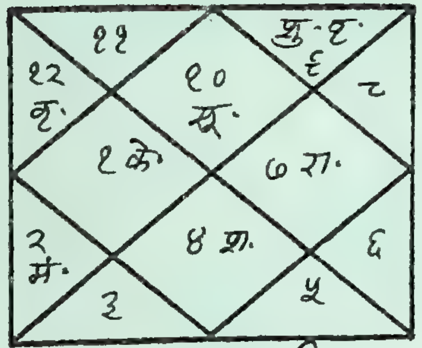
२२६९

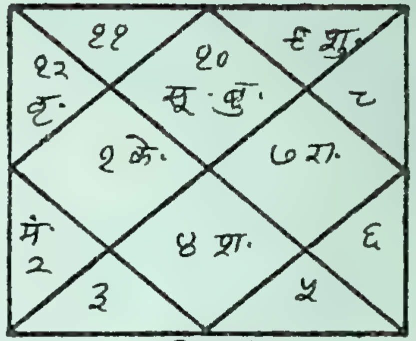
२२७०

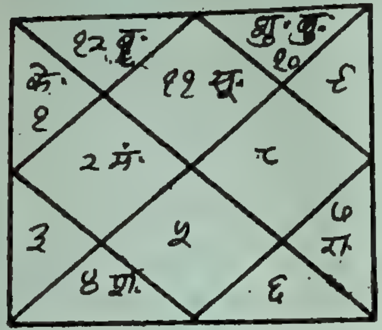
२२७१

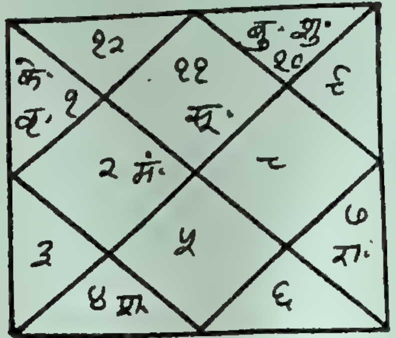
२२७२

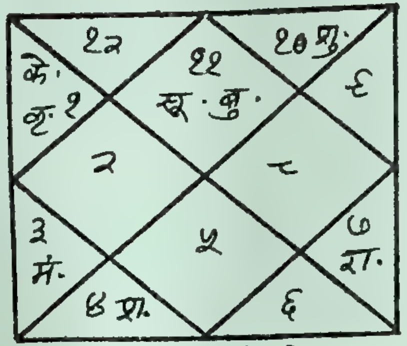
२२७३

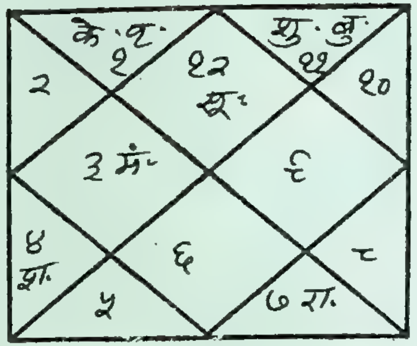
२२७४

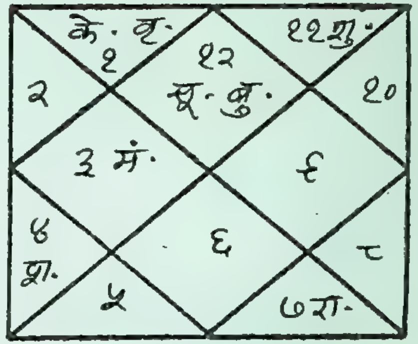
२२७५

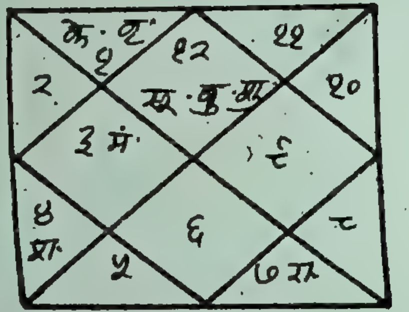
२२७६

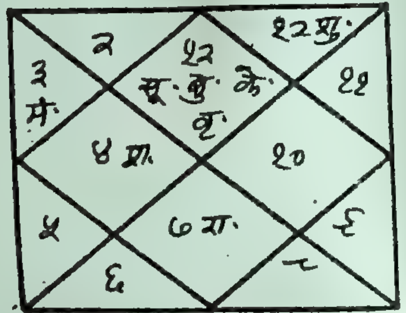
२२७७

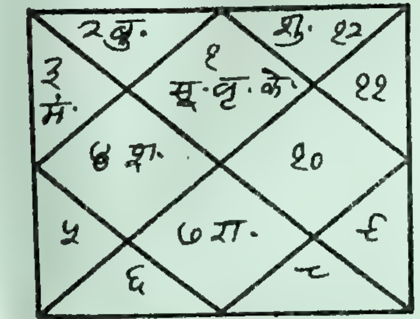
२२७८

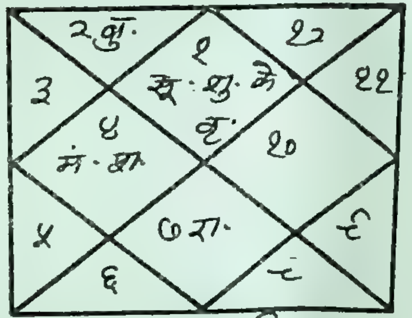
२२७९

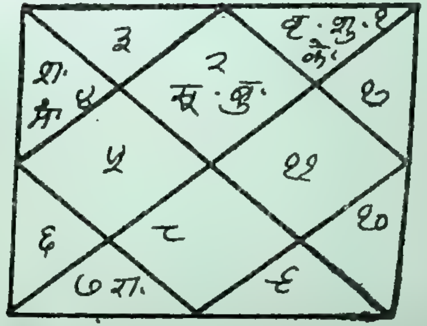
२२८०

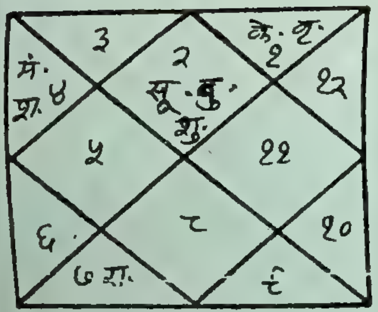
२२८१

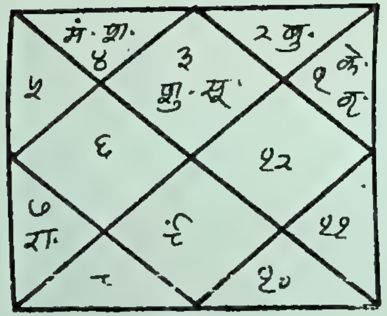
२२८२

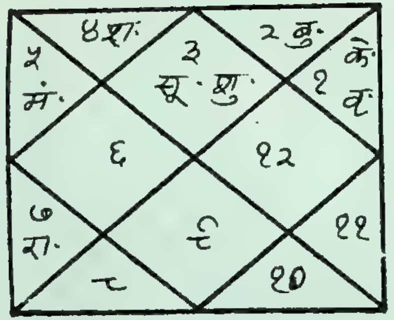
२२८३

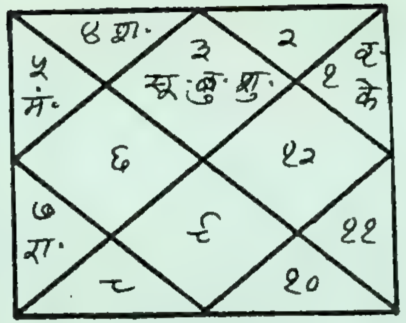
२२८४

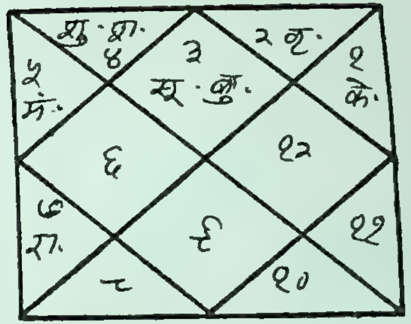
२२८५

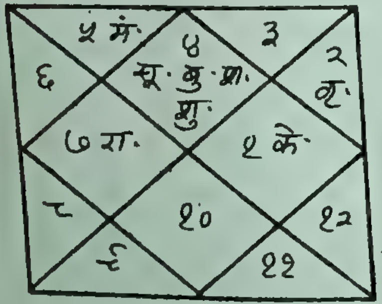
२२८६

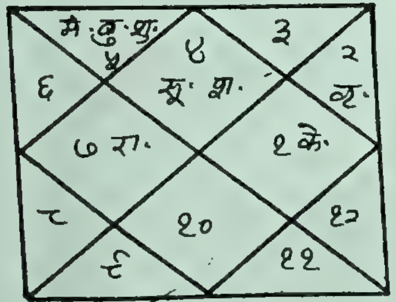
२२८७

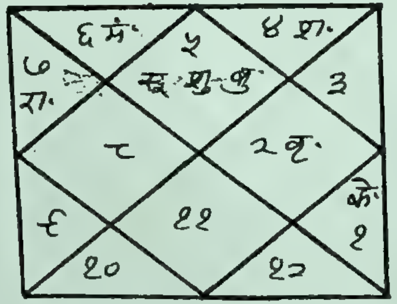
२२८८

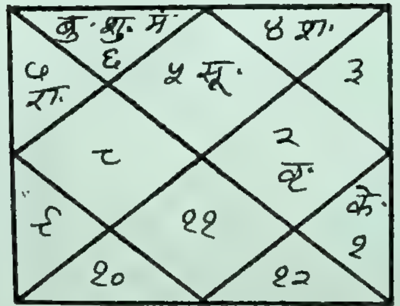
२२८९

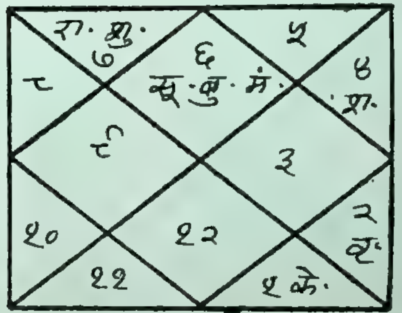
२२९०

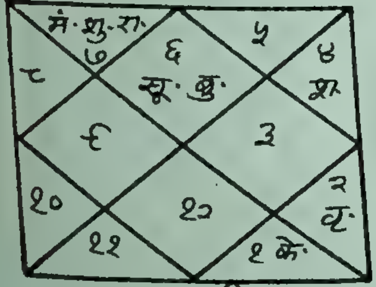
२२९१

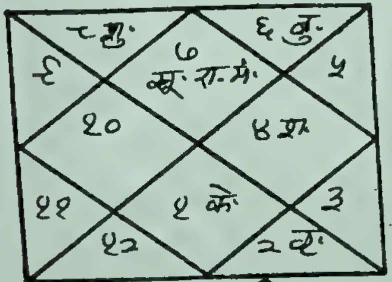
२२९२

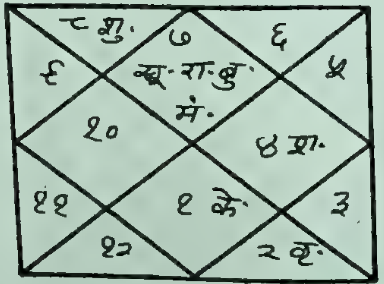
२२९३

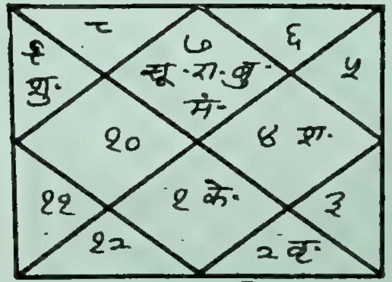
२२९४

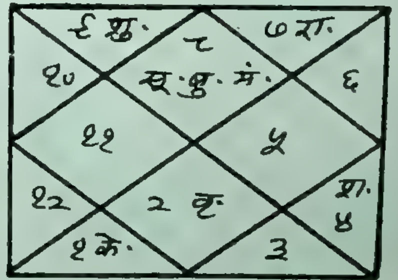
२२९५

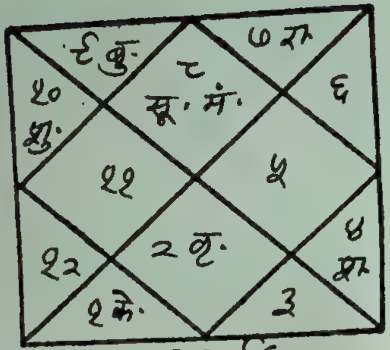

२२९६

२२९७

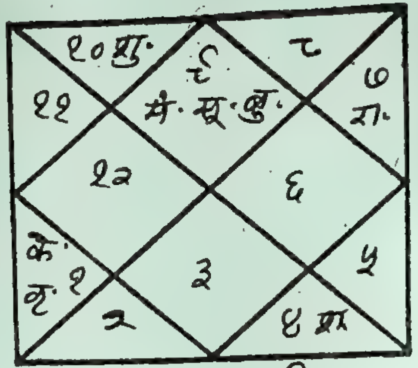

२२९८

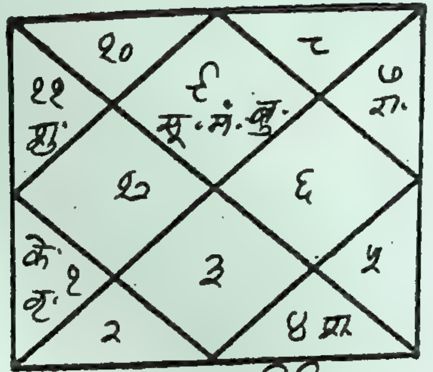

२२९९

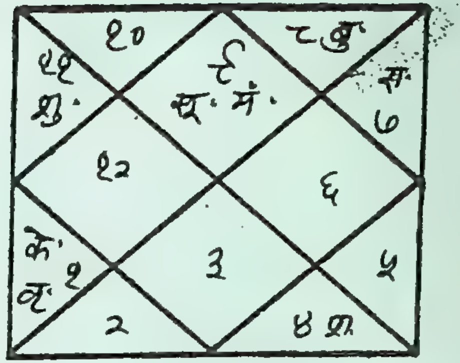

२३००

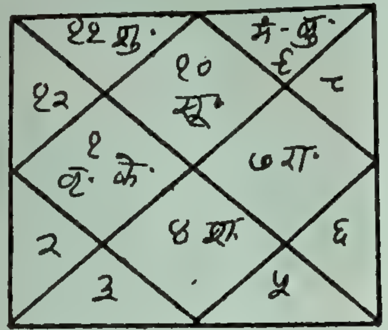

२३०१

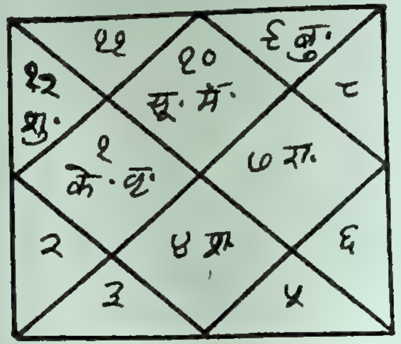

२३०२

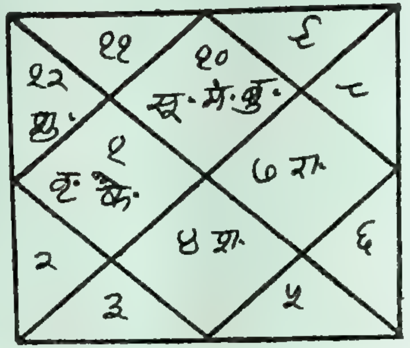

२३०३

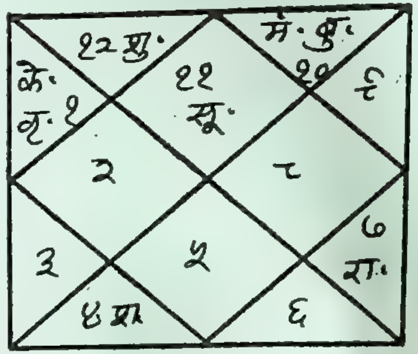

२३०४

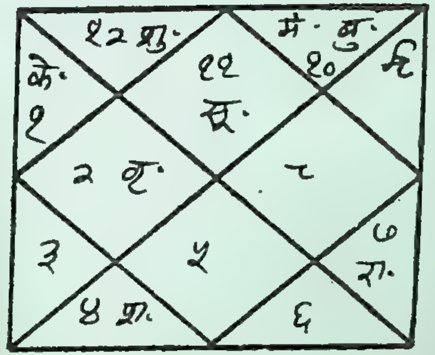

२३०५

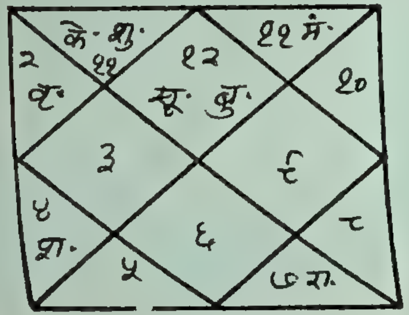

२३०६

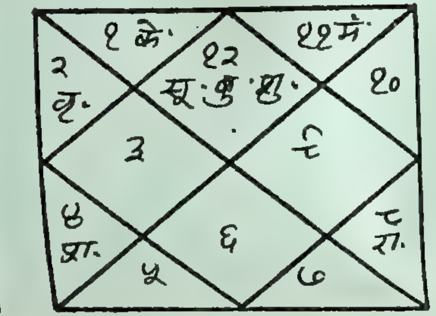

२३०७

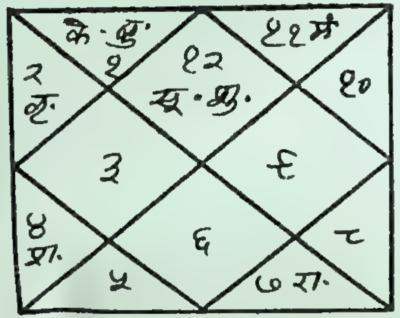

२३०८

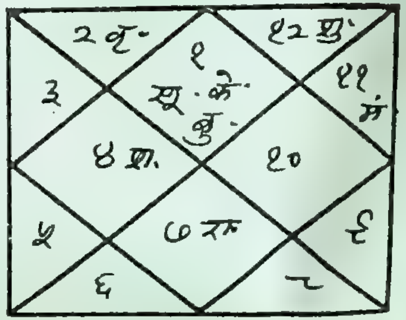

२३०९

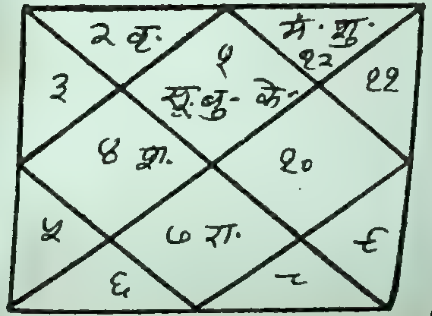

२३१०

२३११

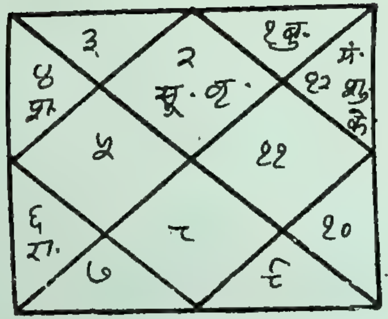

२३१२

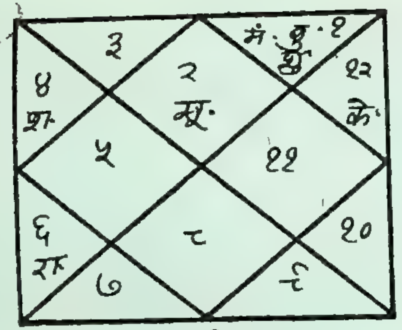

२३१३

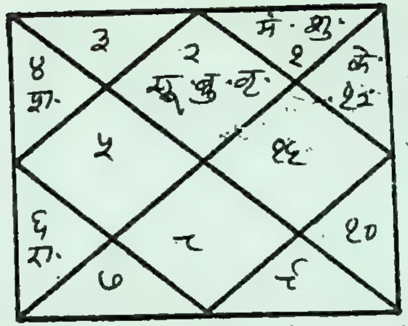

२३१४

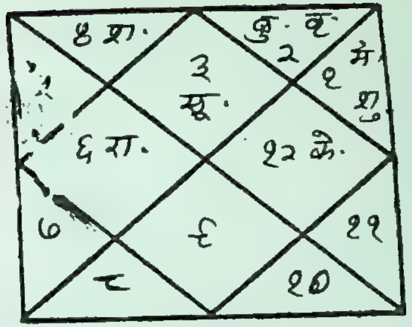

२३१५

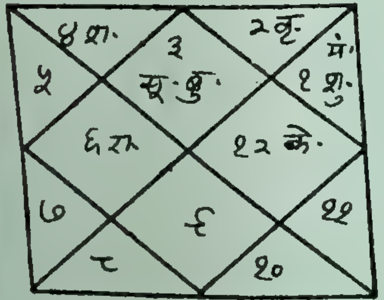

२३१६

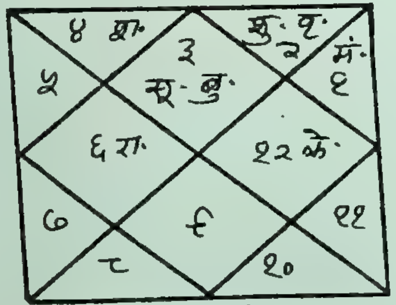

२३१७

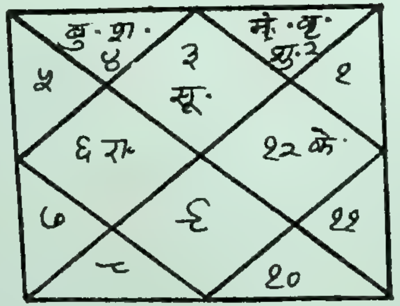

२३१८

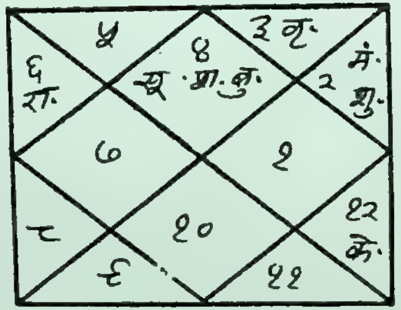

२३१९

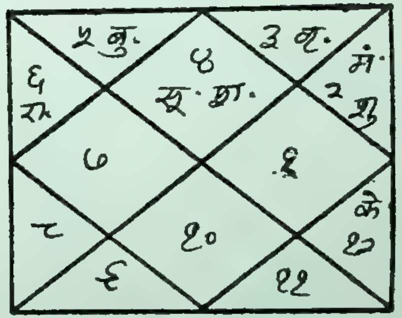

२३२०

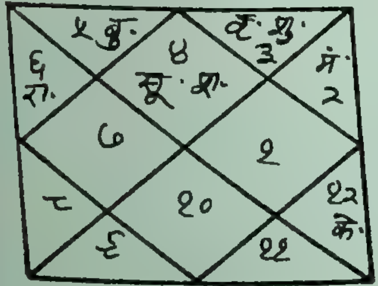

२३२१

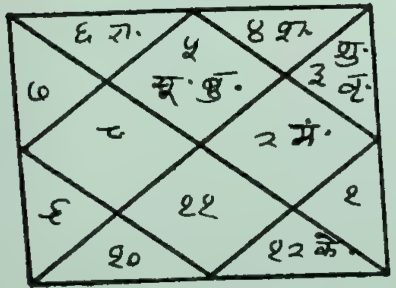

२३२२

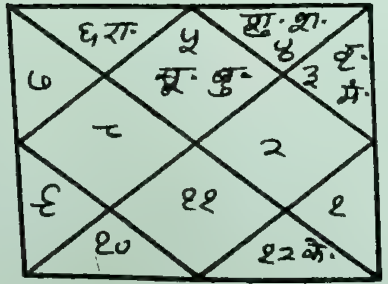

२३२३

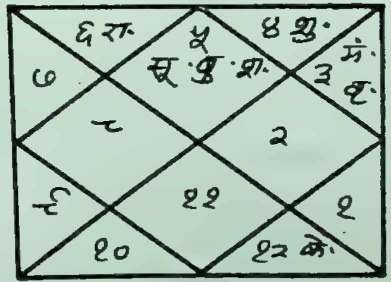

२३२४

२३२५

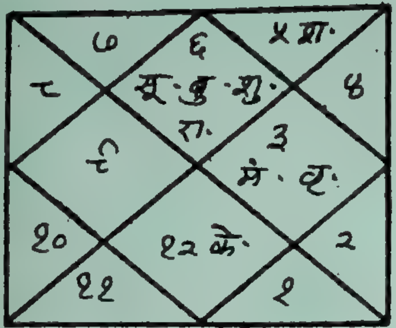

२३२६

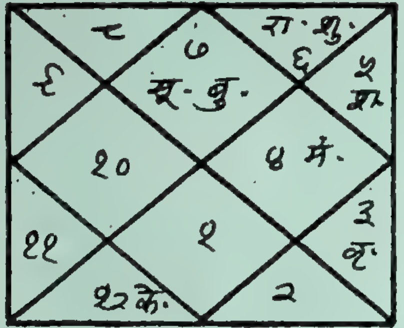

२३२७

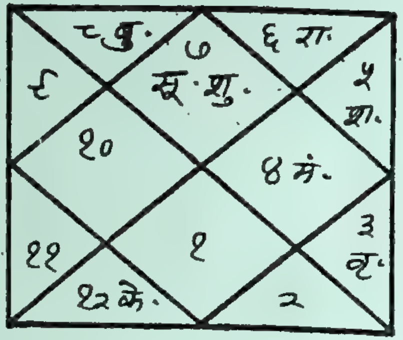

२३२८

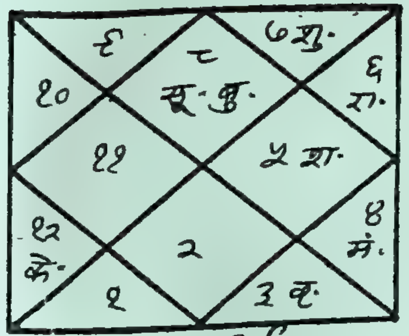

२३२९

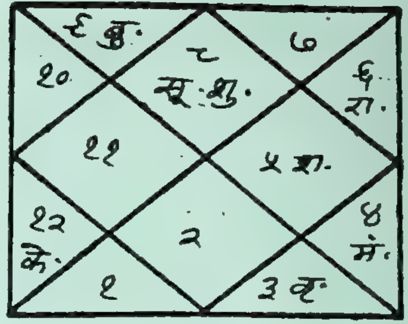

२३३०

२३३१

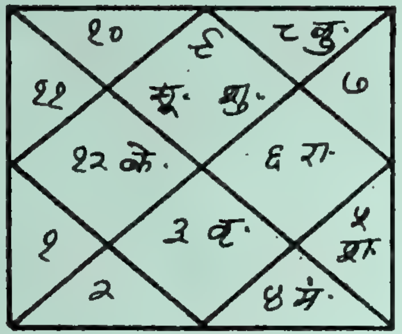

२३३२

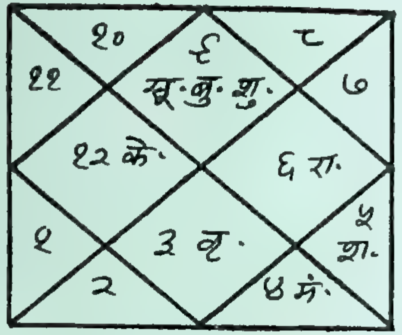

२३३३

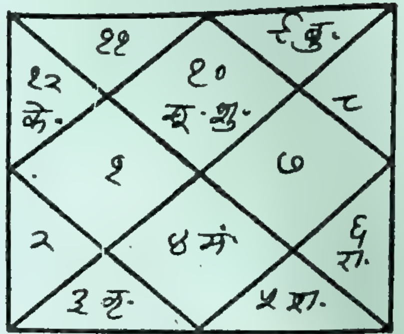

२३३४

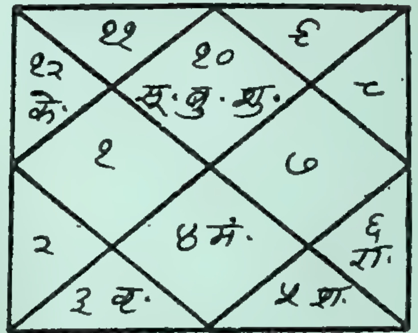

२३३५

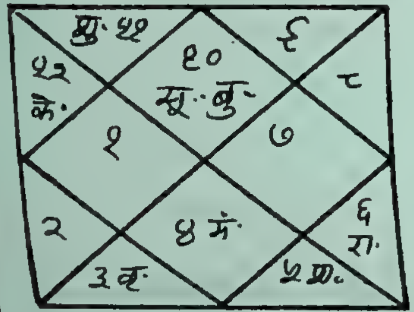

२३३६

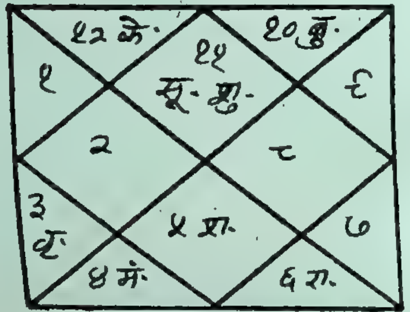

२३३७

२३३८

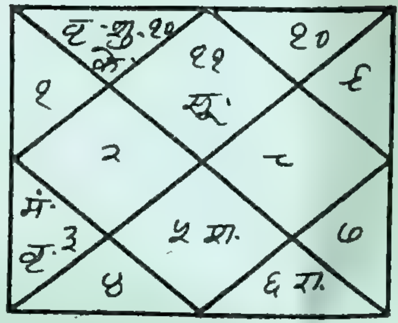

२३३९

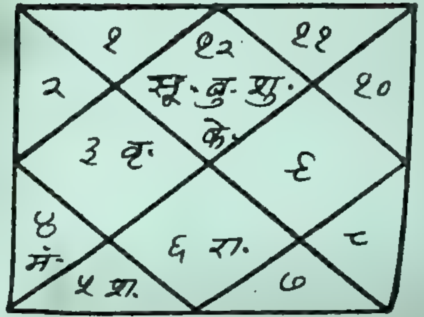

२३४०

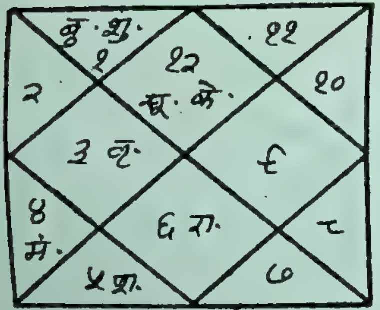
२३४१

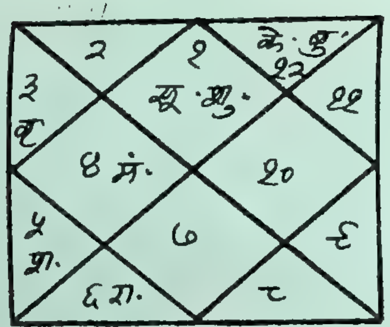
२३४२

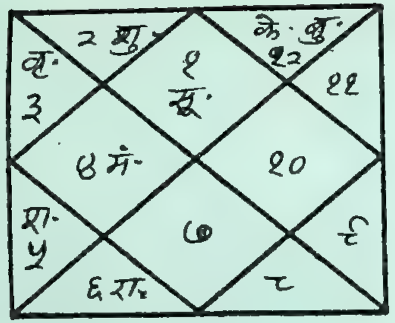
२३४३

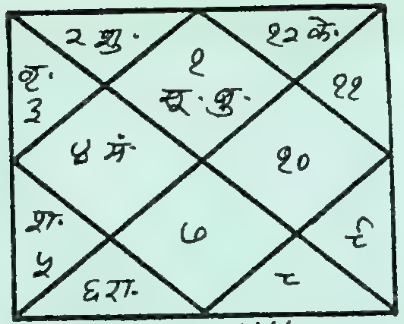
२३४४

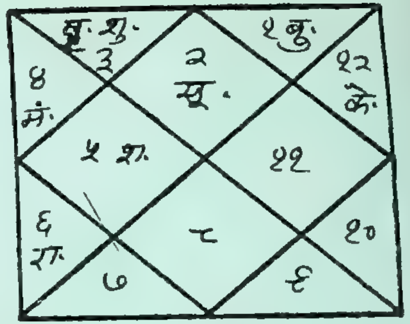
२३४५

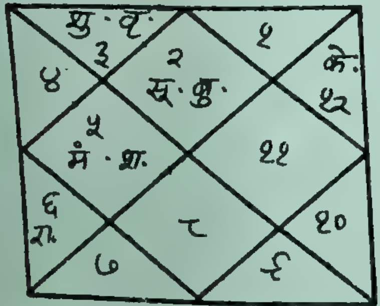
२३४६

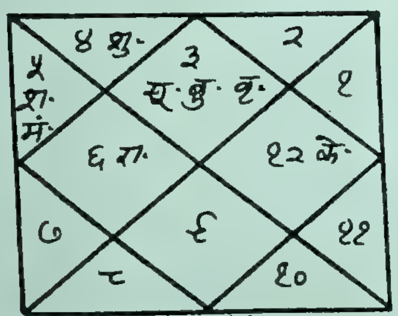
२३४७

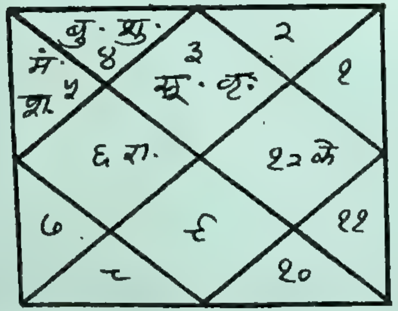
२३४८

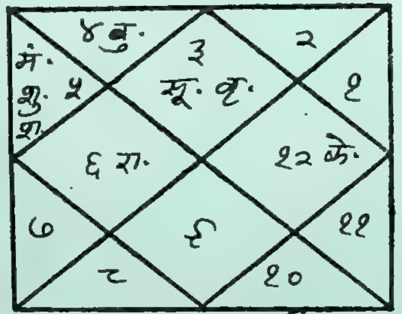
२३४९

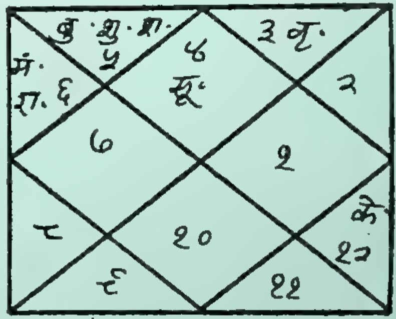
२३५०

२३५१

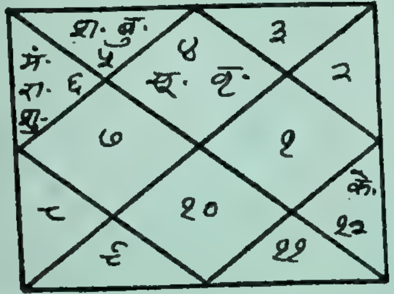
२३५२

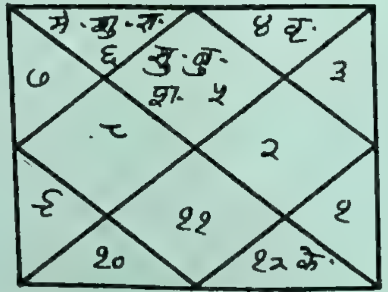
२३५३

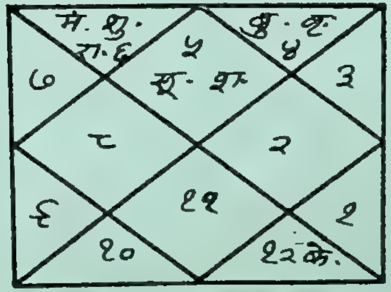
२३५४

२३५५

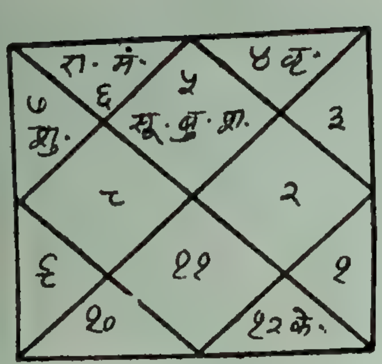
२३५६

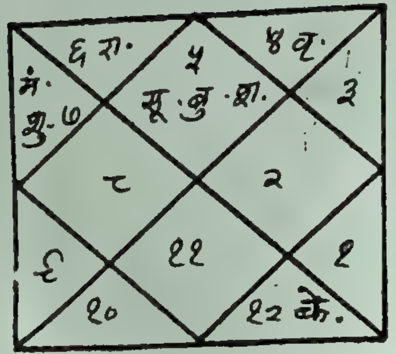
२३५७

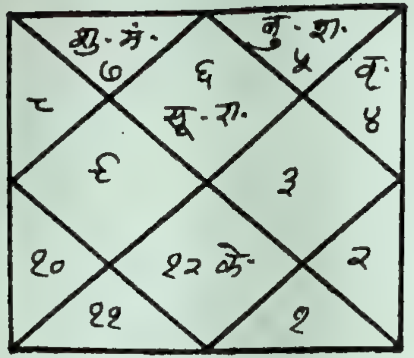
२३५८

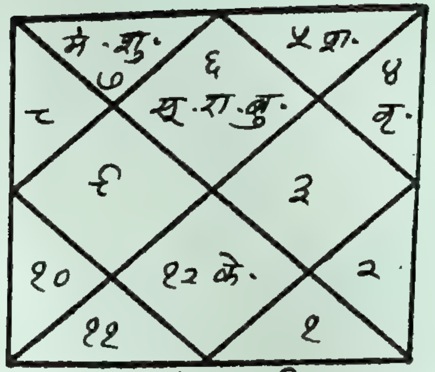
२३५९

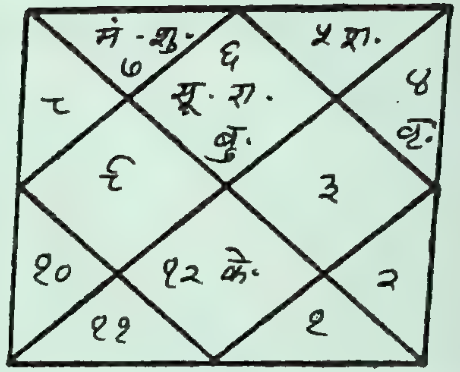
२३६०

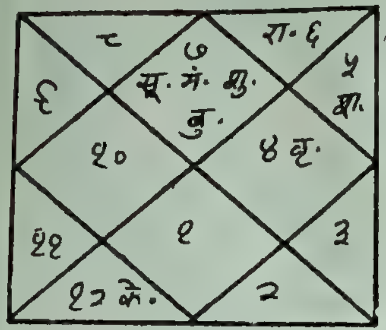
२३६१

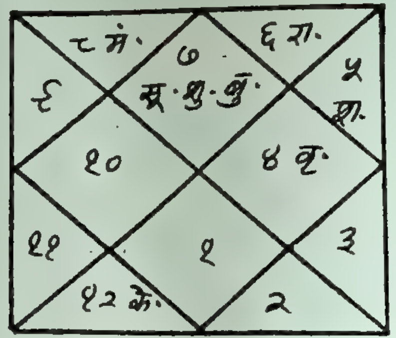
२३६२

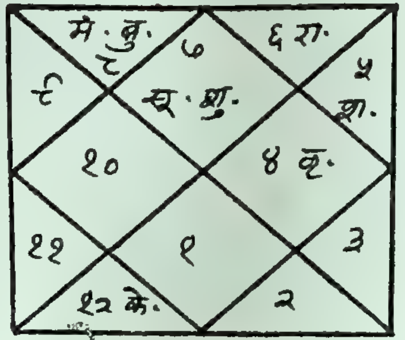
२३६३

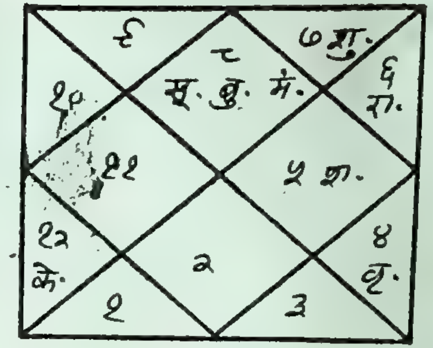
२३६४

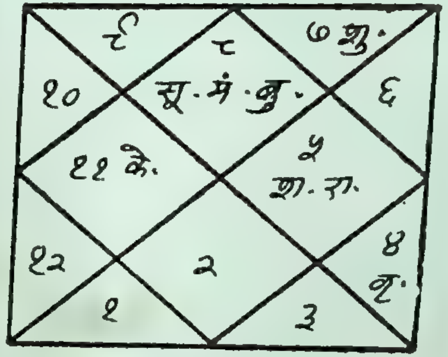
२३६५

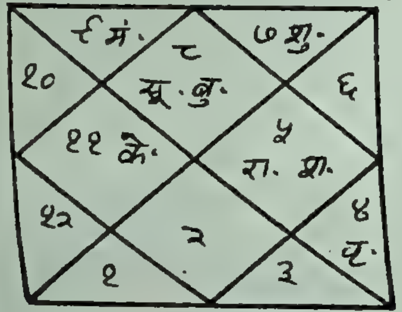
२३६६

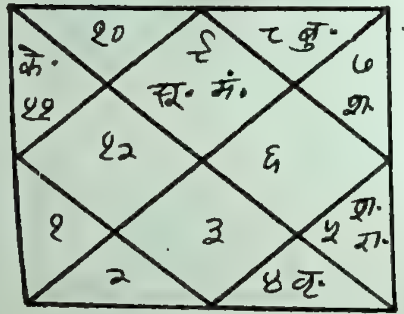
२३६७

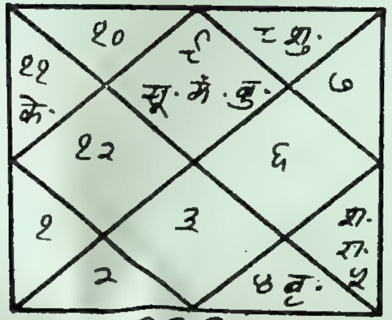
२३६८

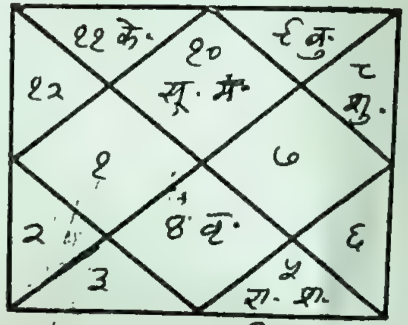
२३६९

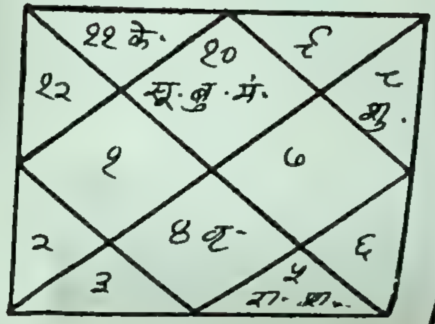
२३७०

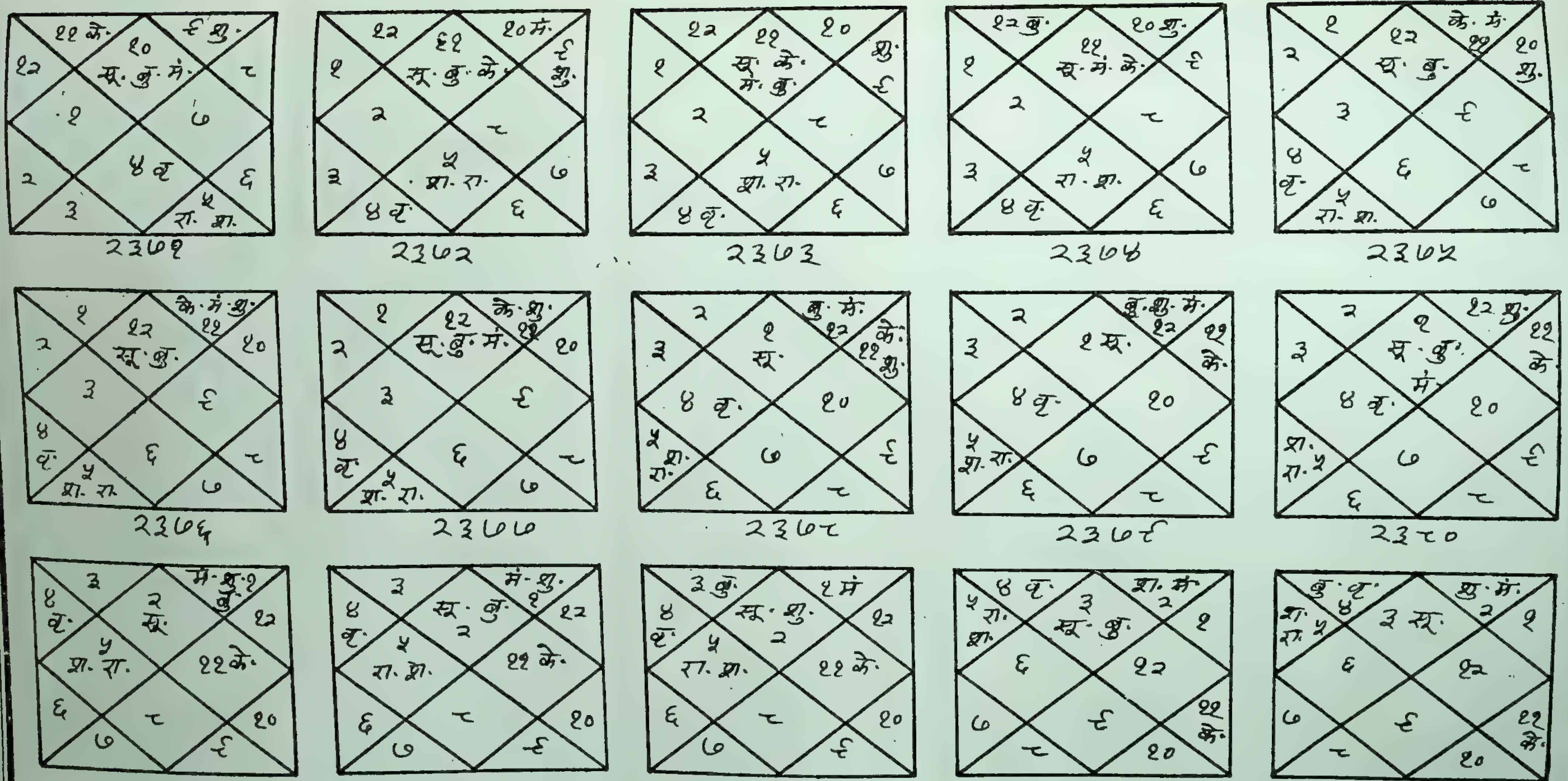

२३७१ २३७२ २३७३ २३७४ २३७५

२३७६ २३७७ २३७८ २३७९ २३८०

२३८१ २३८२ २३८३ २३८४ २३८५

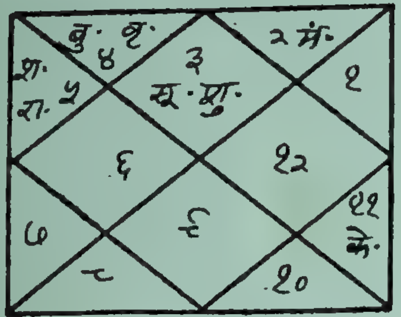
२३८६

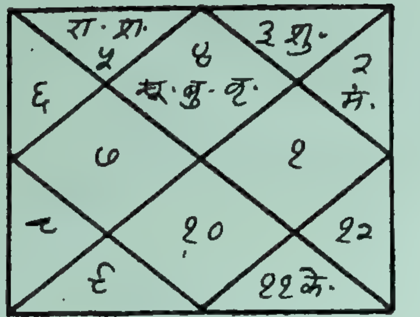
२३८७

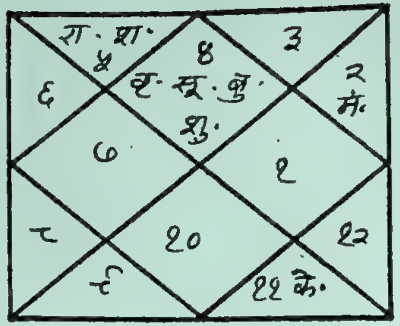
२३८८

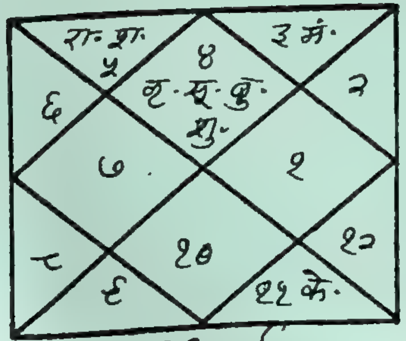
२३८९

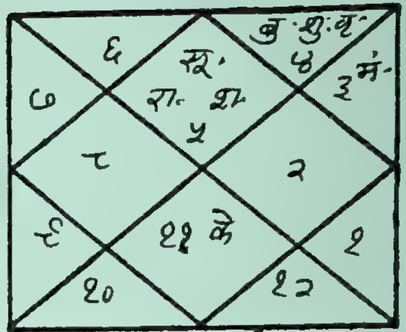
२३९०

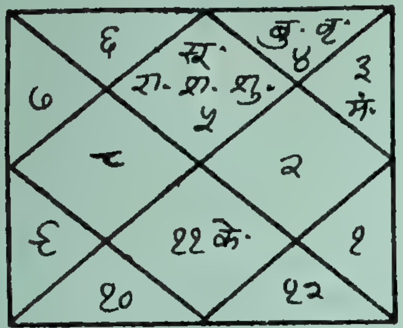
२३९१

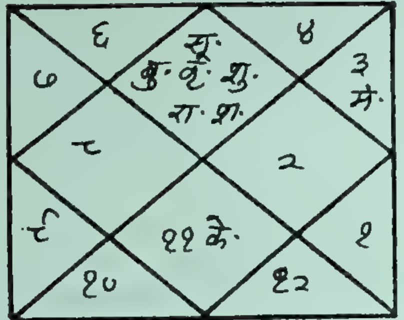
२३९२

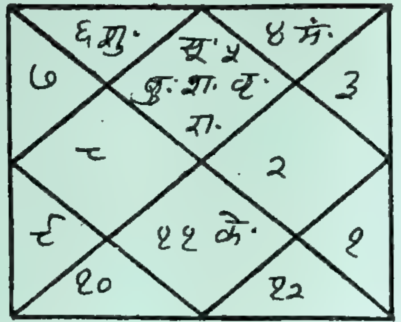
२३९३

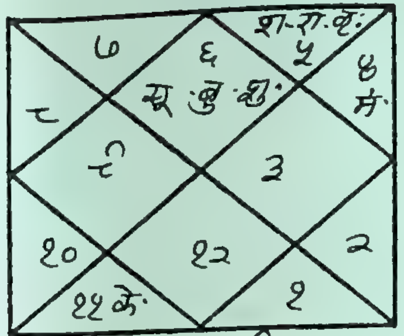
२३९४

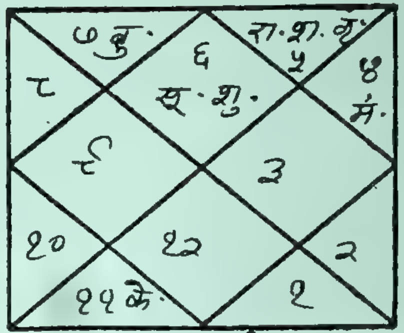
२३९५

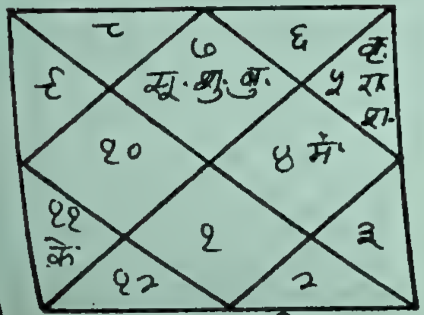
२३९६

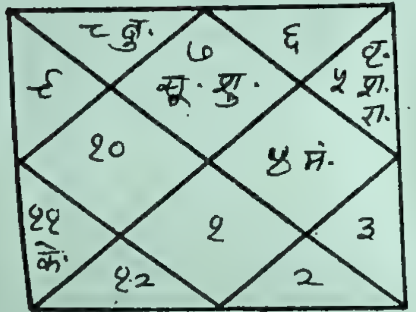
२३९७

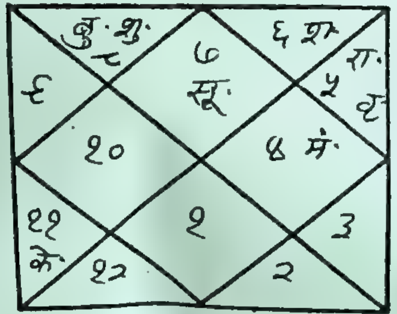
२३९८

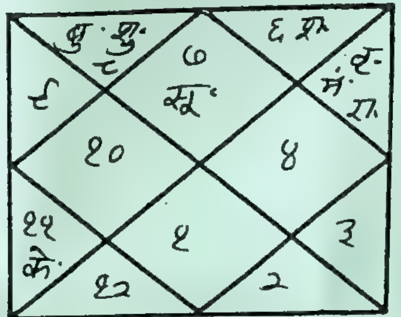
२३९९

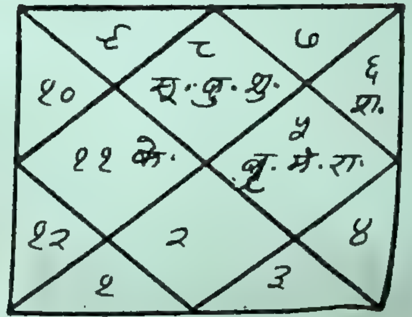
२४००

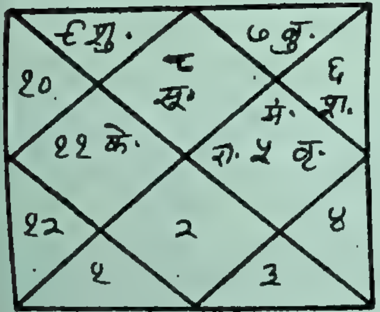

२४०१

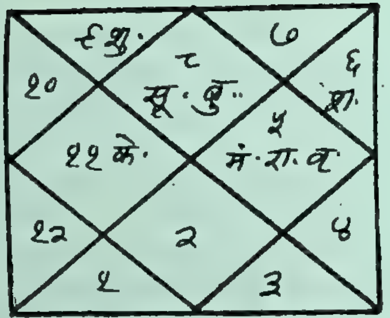

२४०२

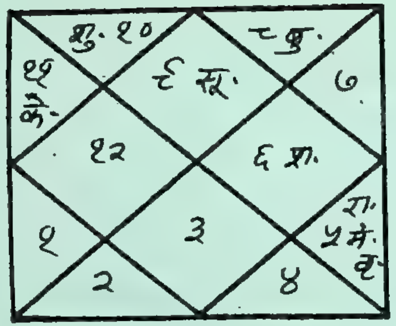

२४०३

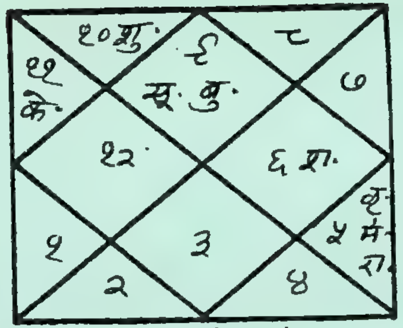

२४०४

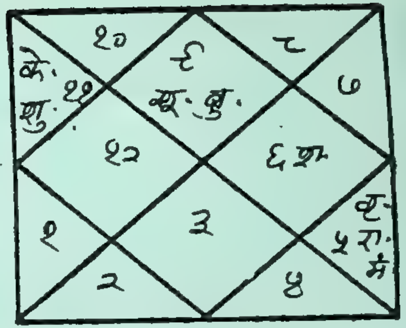

२४०५

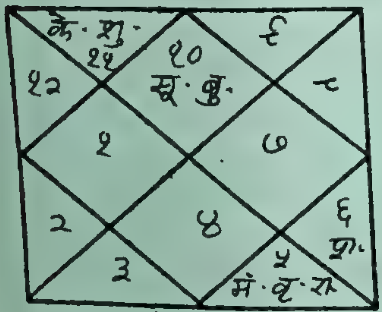

२४०६

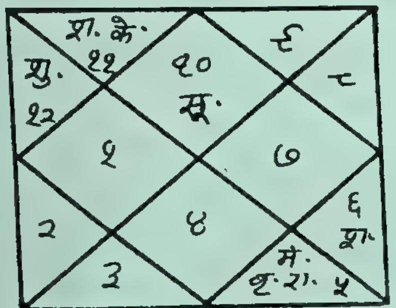

२४०७

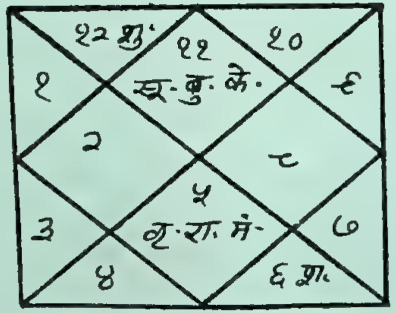

२४०८

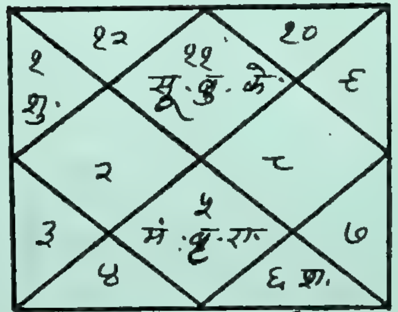

२४०९

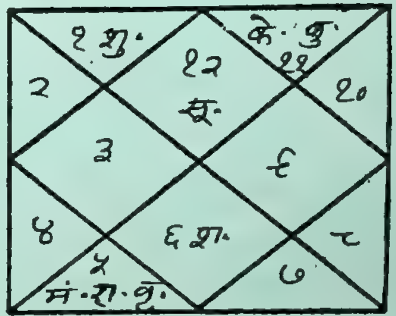

२४१०

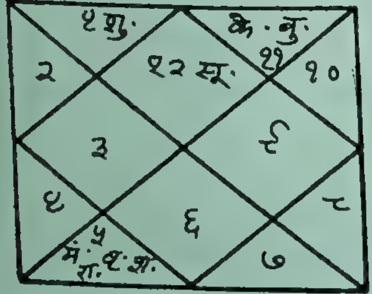

२४११

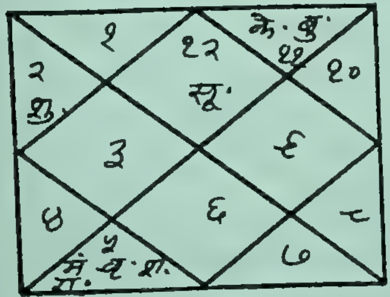

२४१२

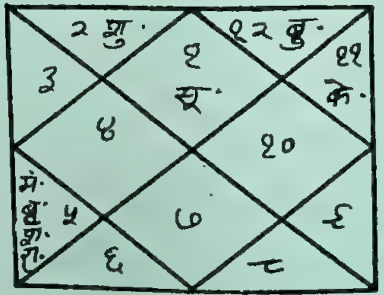

२४१३

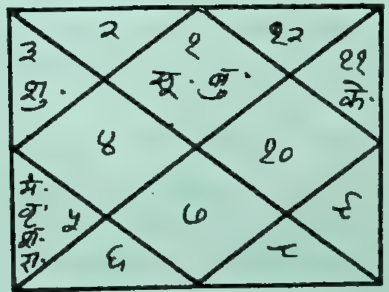

२४१४

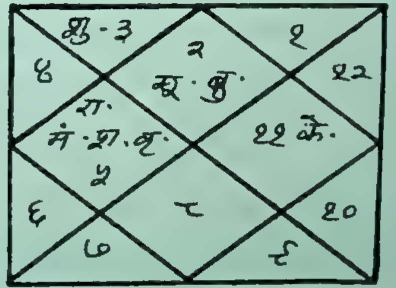

२४१५

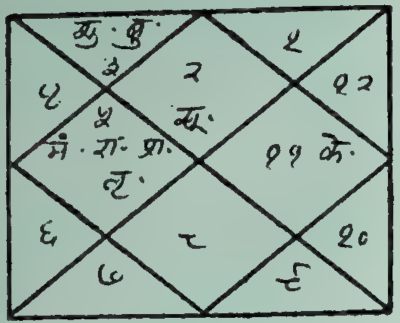
२४१६

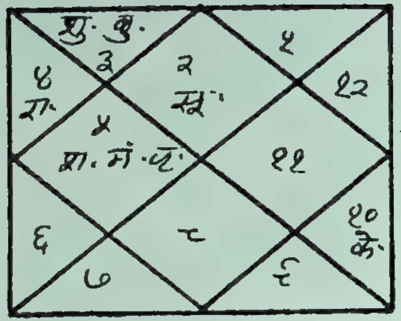
२४१७

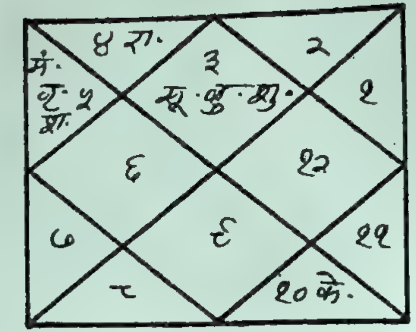
२४१८

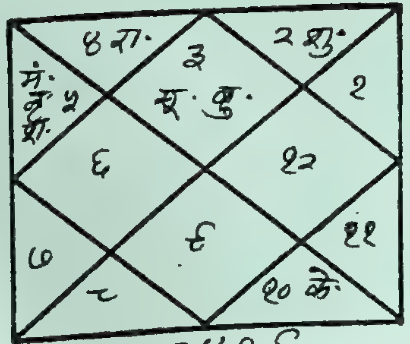
२४१९

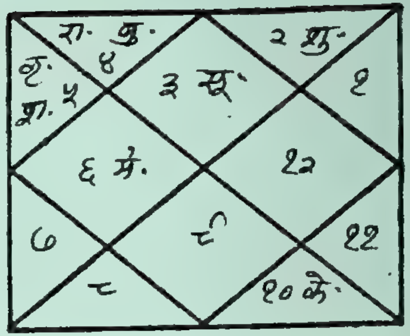
२४२०

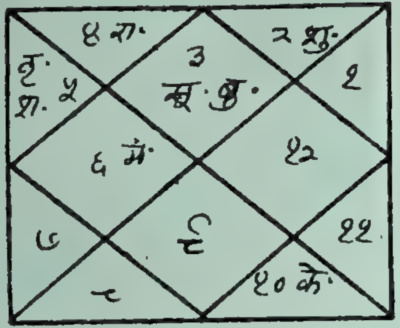
२४२१

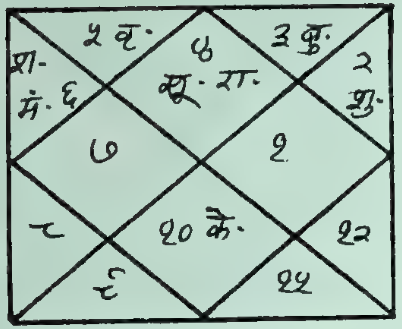
२४२२

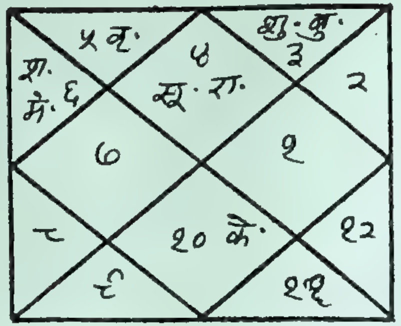
२४२३

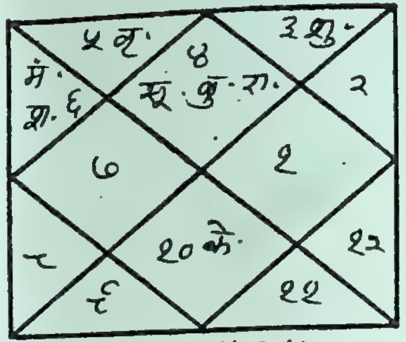
२४२४

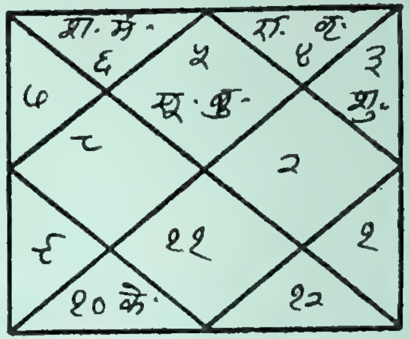
२४२५

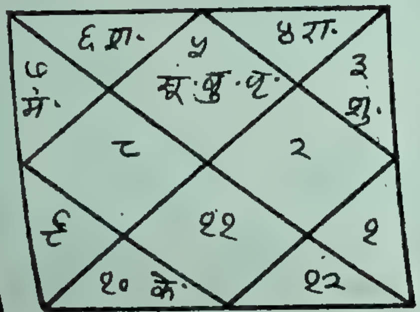
२४२६

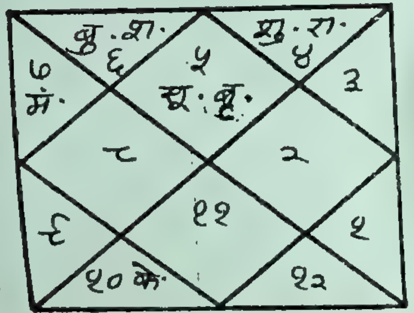
२४२७

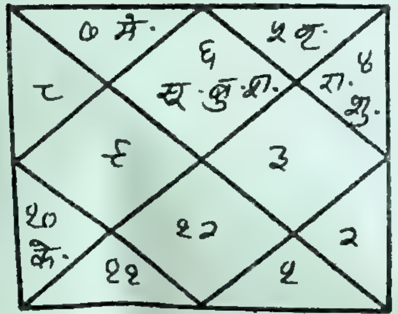
२४२८

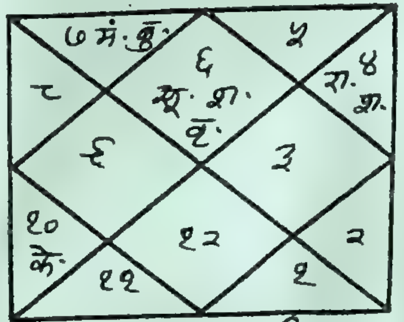
२४२९

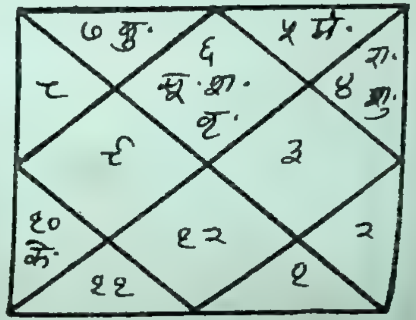
२४३०

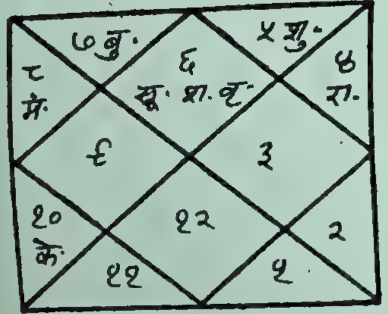
२४३१

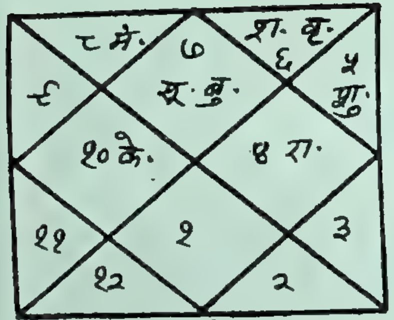
२४३२

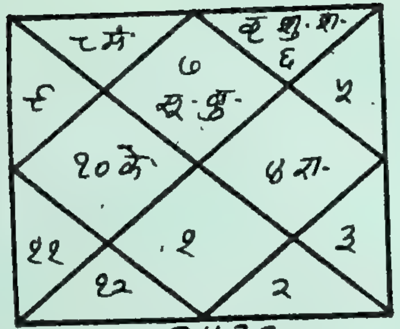
२४३३

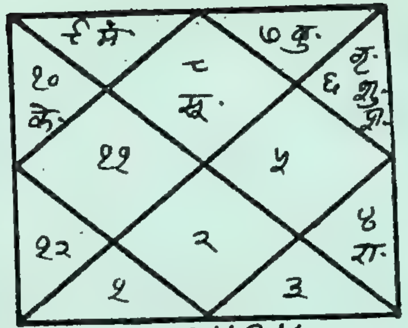
२४३४

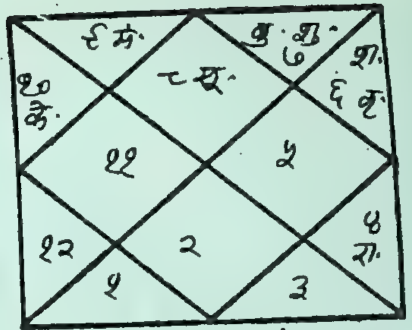
२४३५

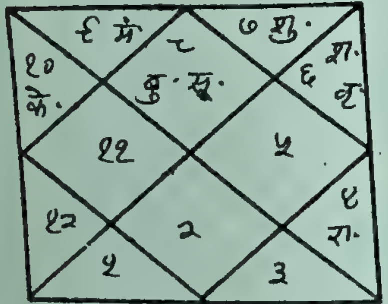
२४३६

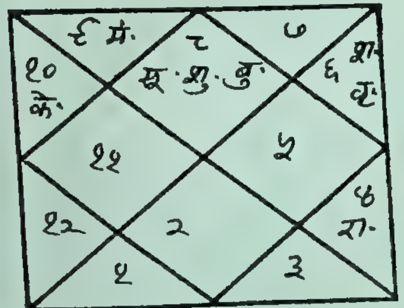
२४३७

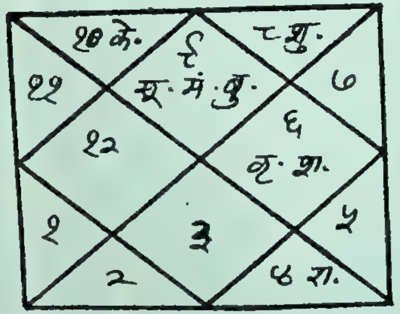
२४३८

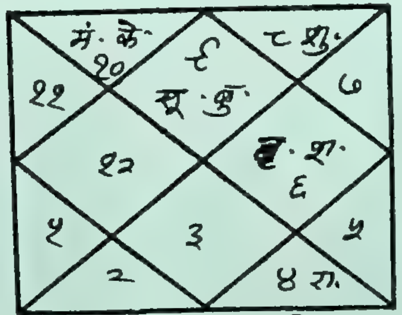
२४३९

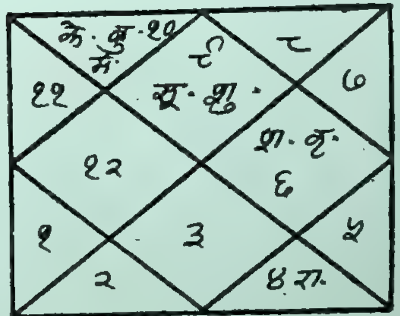
२४४०

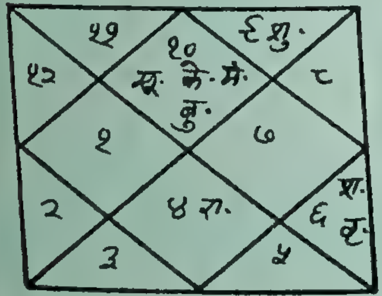
२४४१

२४४२

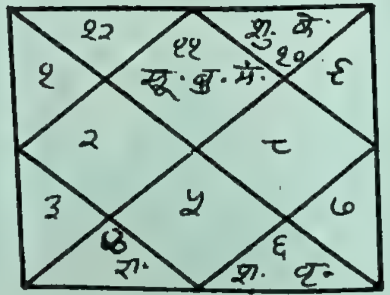
२४४३

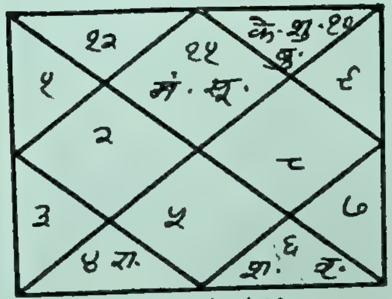
२४४४

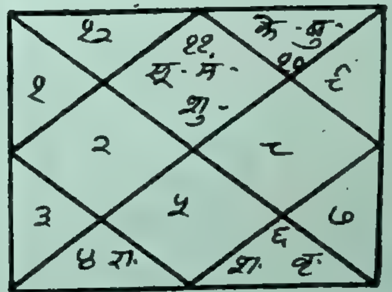
२४४५

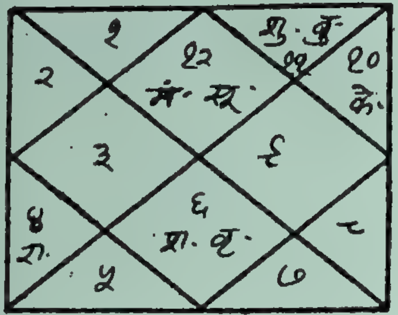

२४४६

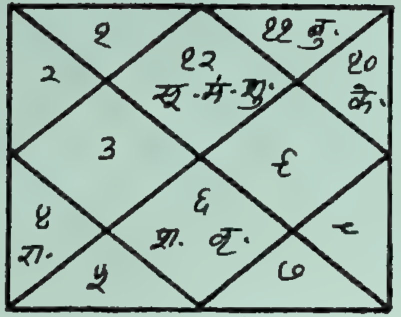

२४४७

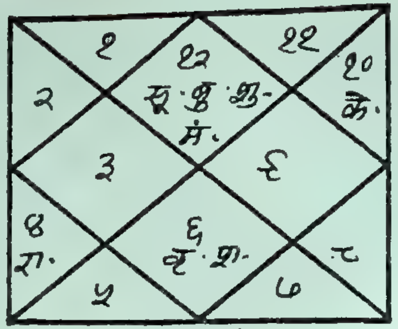

२४४८

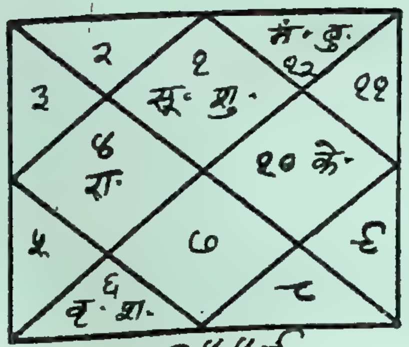

२४४९

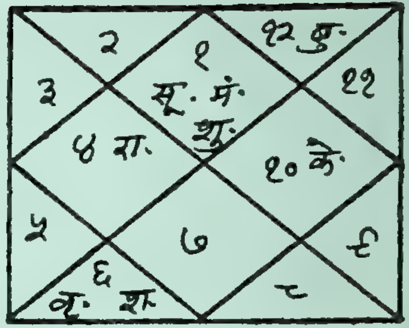

२४५०

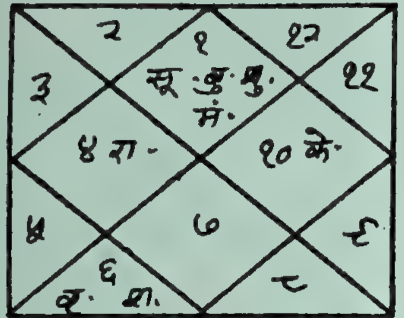

२४५१

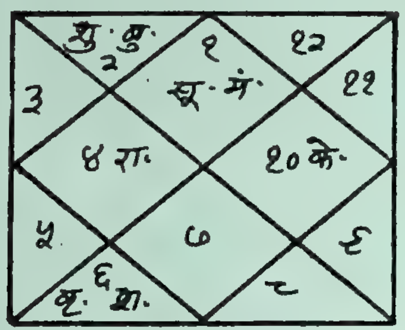

२४५२

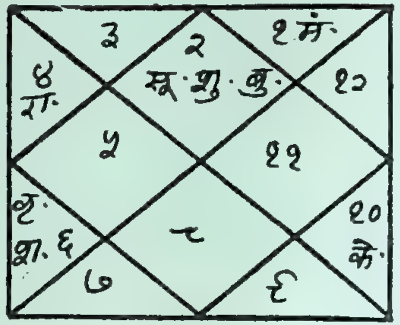

२४५३

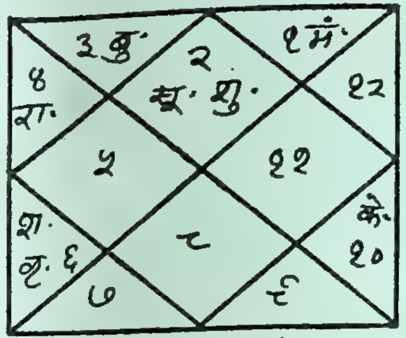

२४५४

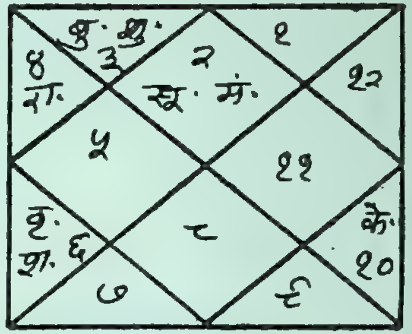

२४५५

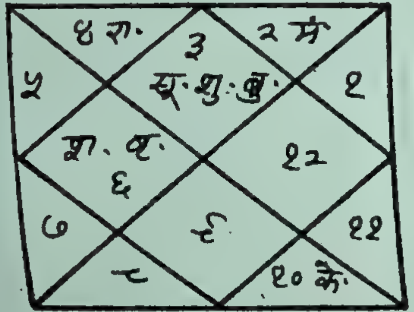

२४५६

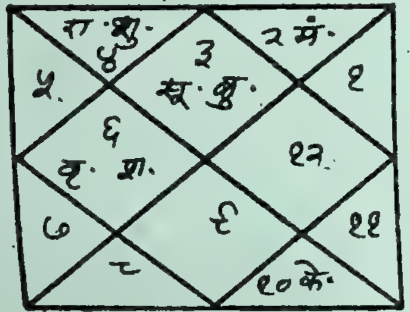

२४५७

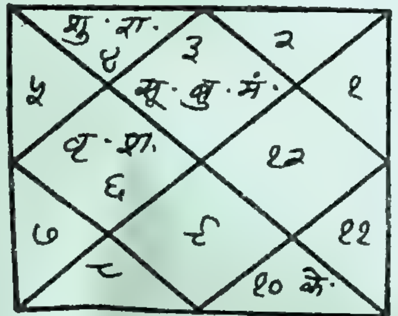

२४५८

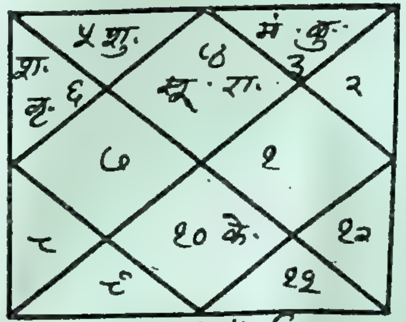

२४५९

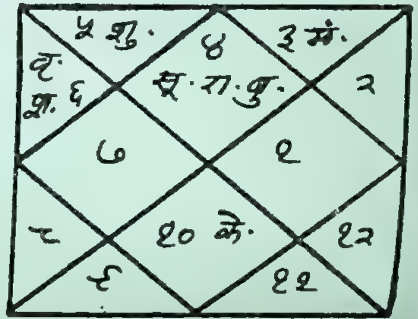

२४६०

२४६१

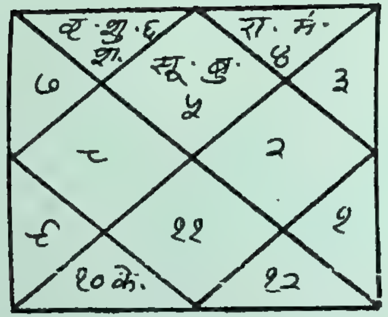
२४६२

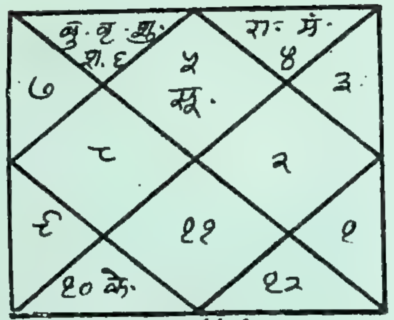
२४६३

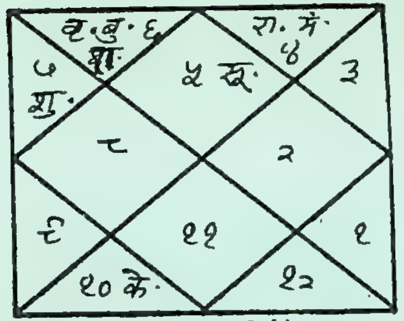
२४६४

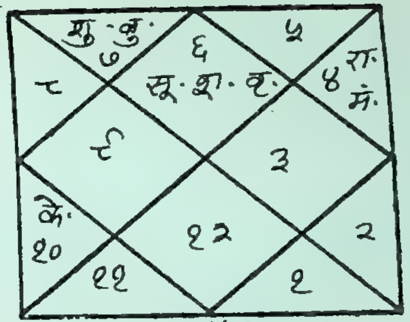
२४६५

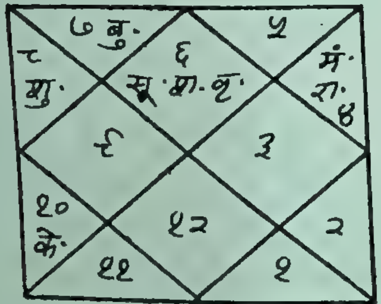
२४६६

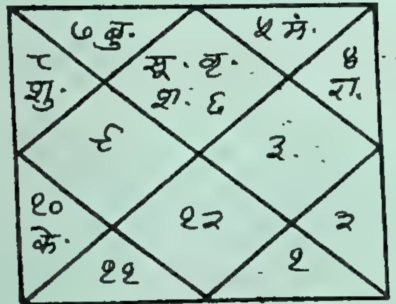
२४६७

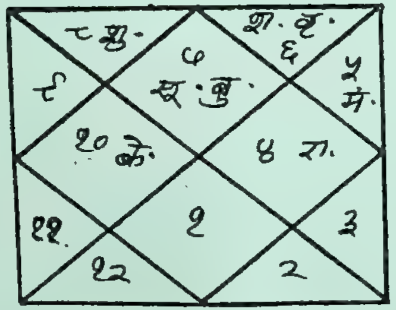
२४६८

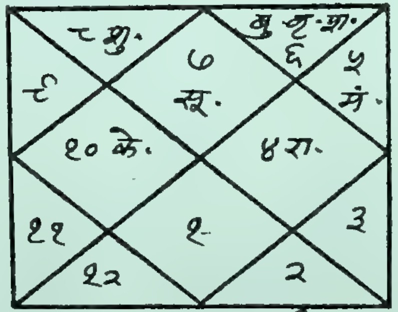
२४६९

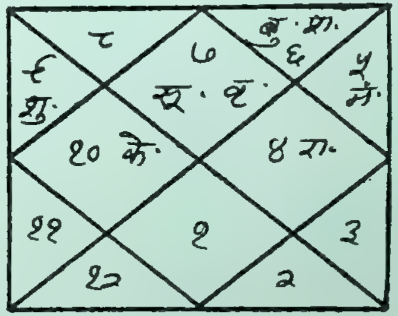
२४७०

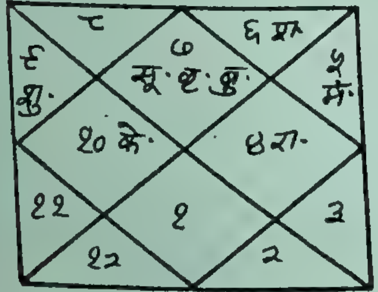
२४७१

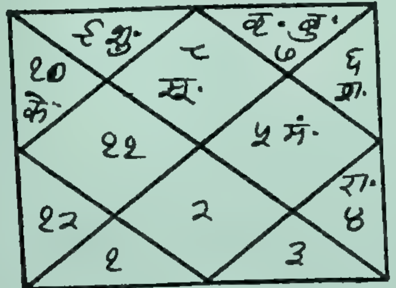
२४७२

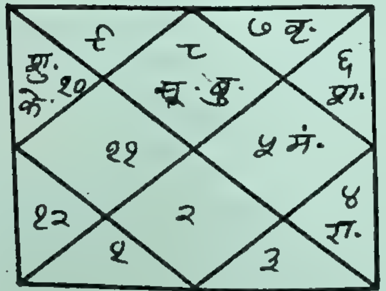
२४७३

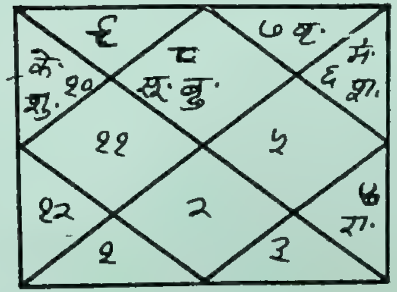
२४७४

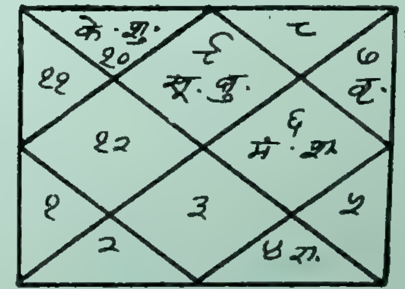
२४७५

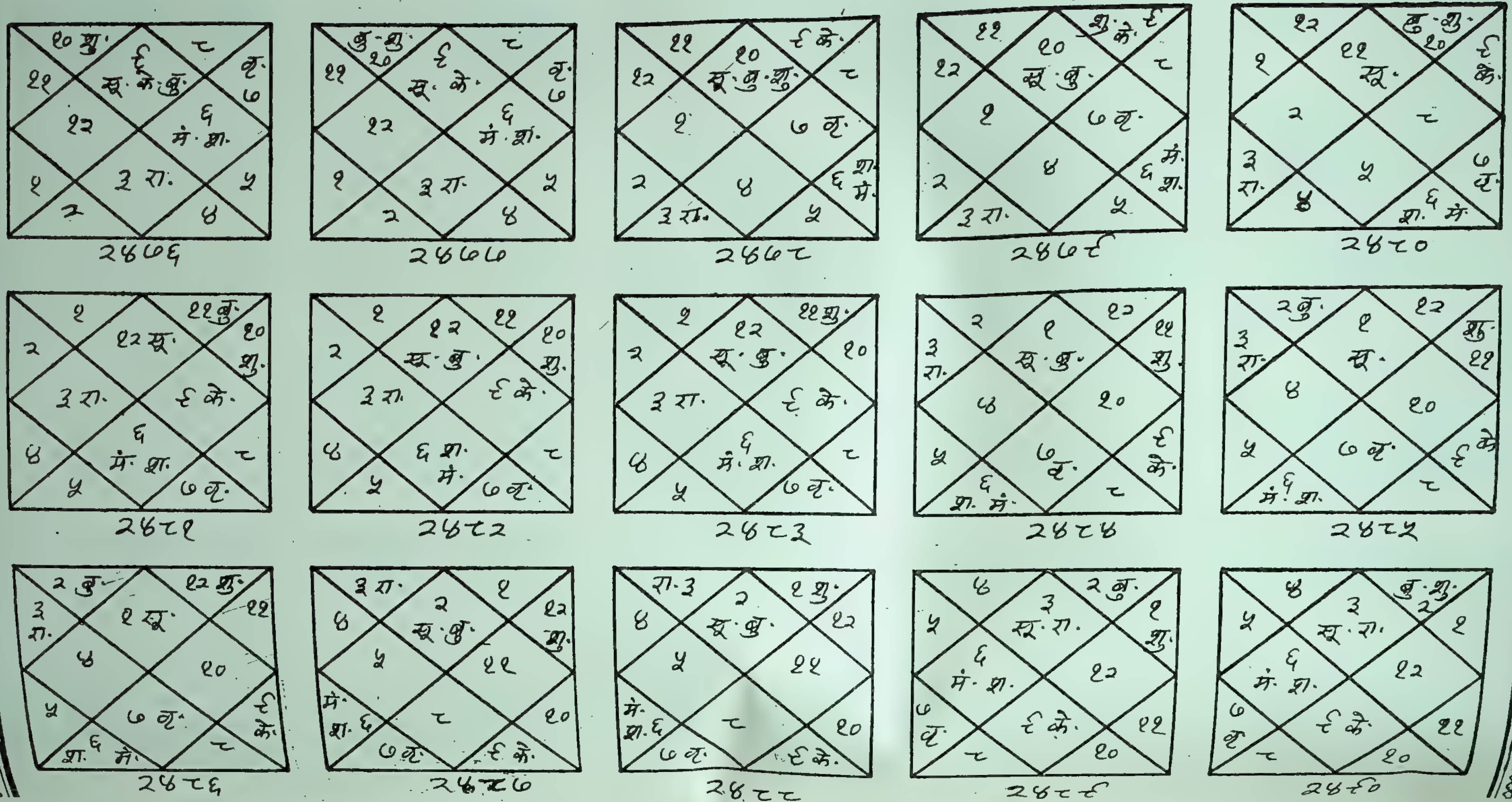
२४७६
२४७७
२४७८
२४७९
२४८०
२४८१
२४८२
२४८३
२४८४
२४८५
२४८६
२४८७
२४८८
२४८९
२४९०

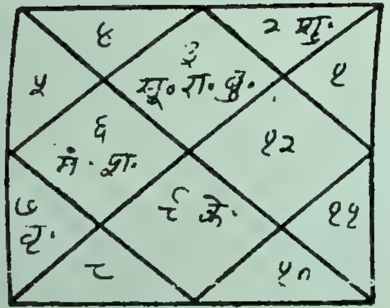
२४९१

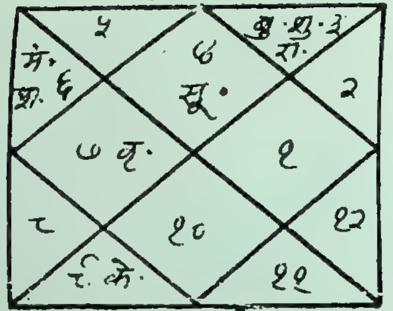
२४९२

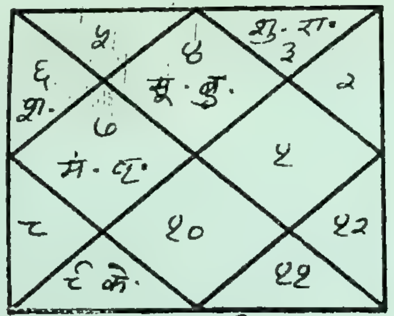
२४९३

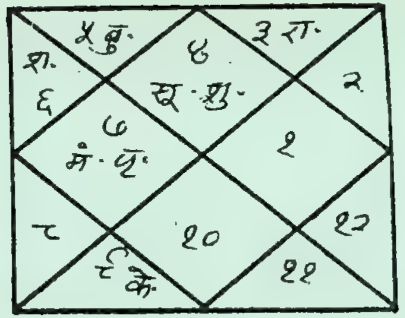
२४९४

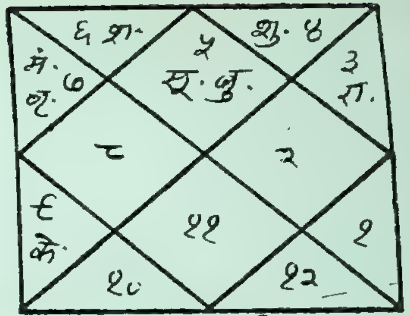
२४९५

२४९६

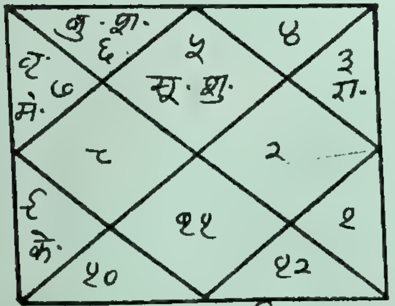
२४९७

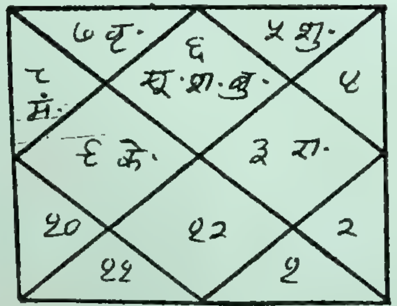
२४९८

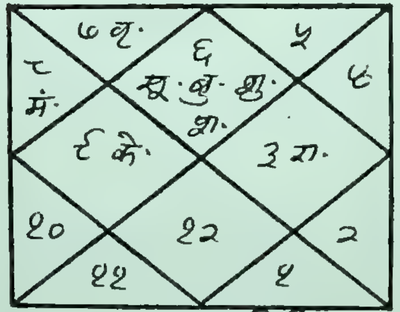
२४९९

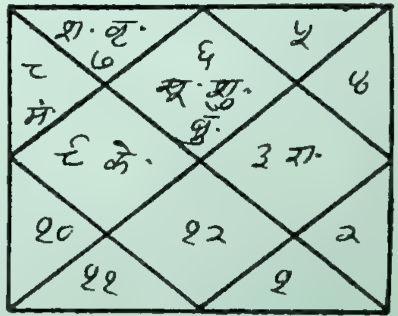
२५००

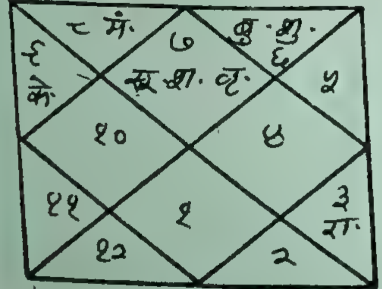
२५०१

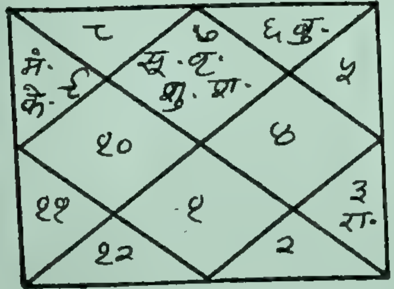
२५०२

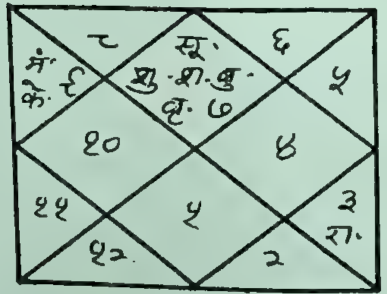
२५०३

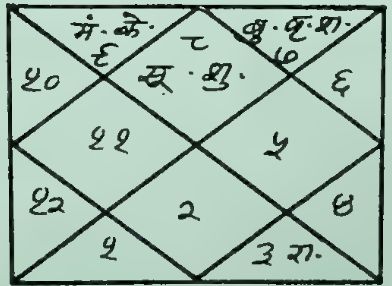
२५०४

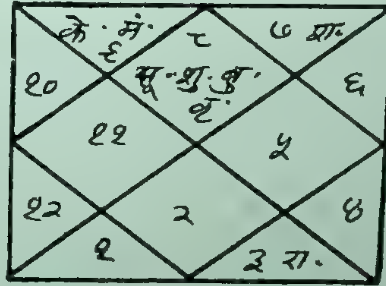
२५०५

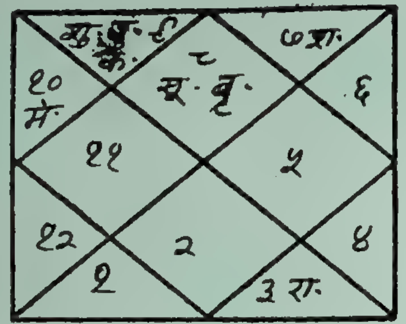

२५०६

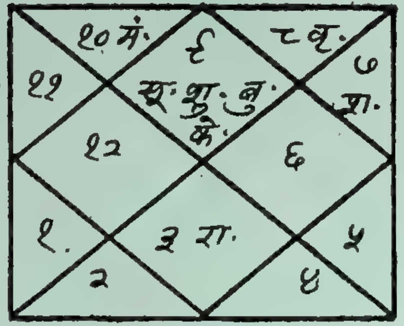

२५०७

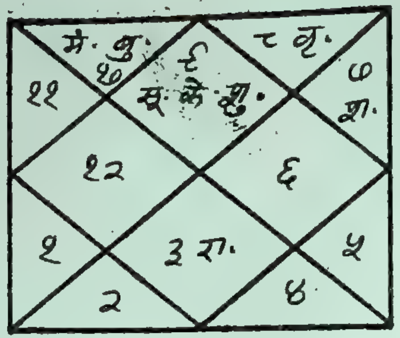

२५०८

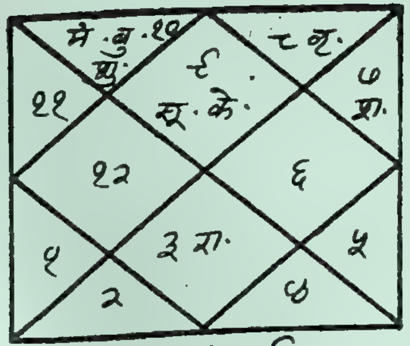

२५०९

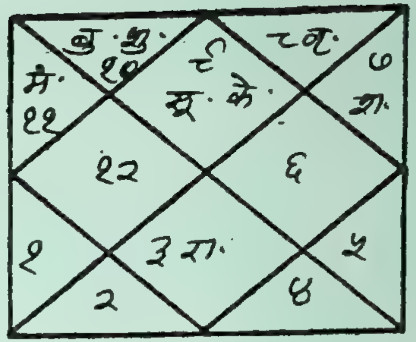

२५१०

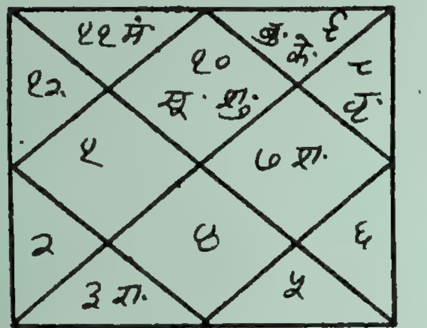

२५११

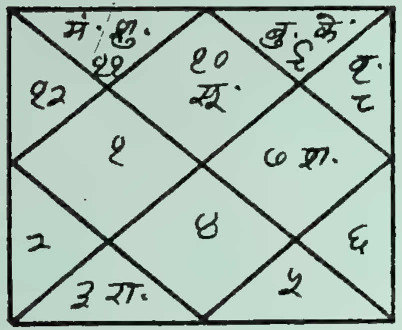

२५१२

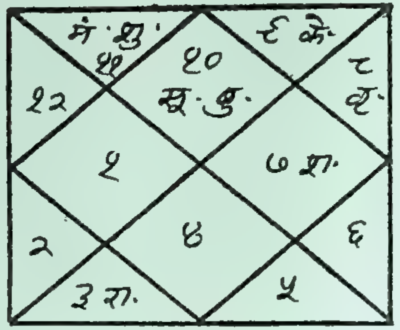

२५१३

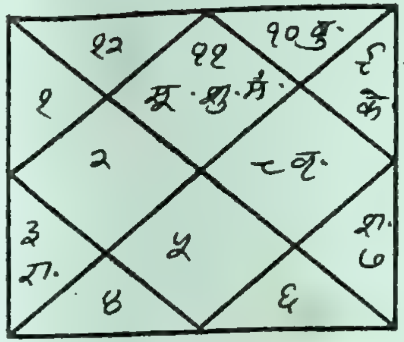

२५१४

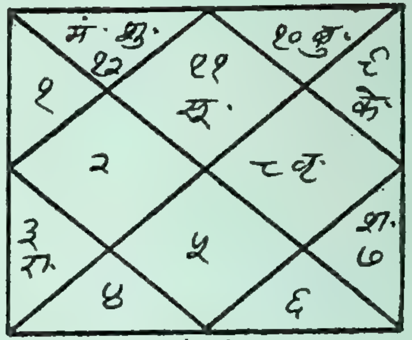

२५१५

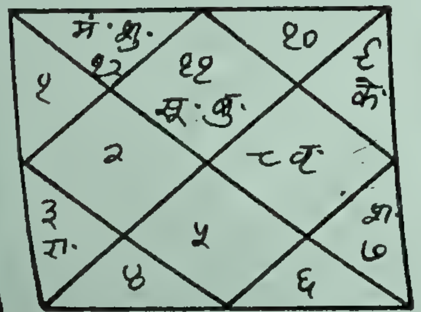

२५१६

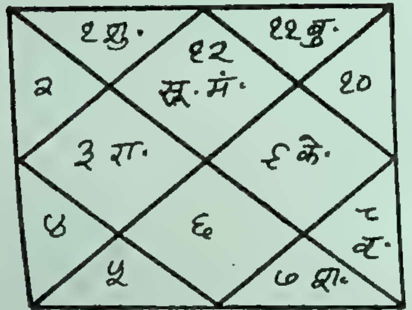

२५१७

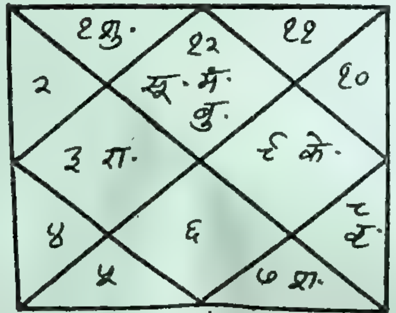

२५१८

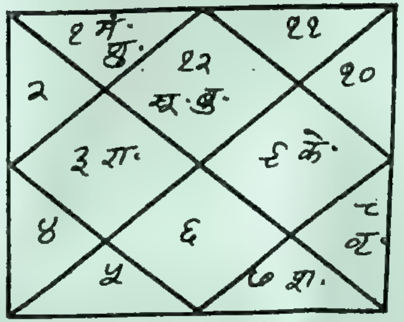

२५१९

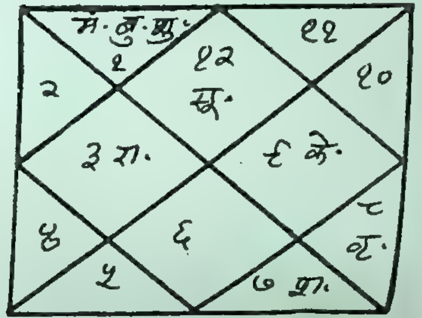

२५२०

भू० सं०

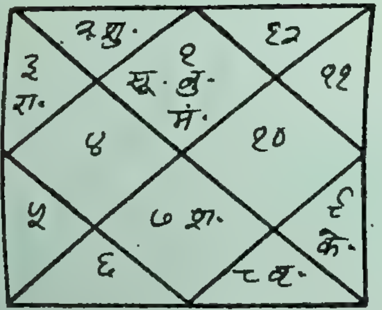

२५२१

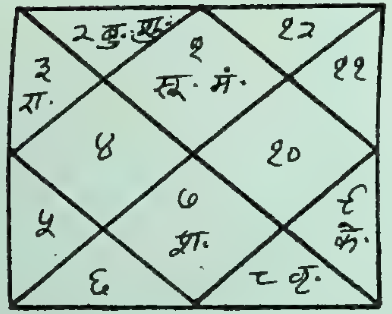

२५२२

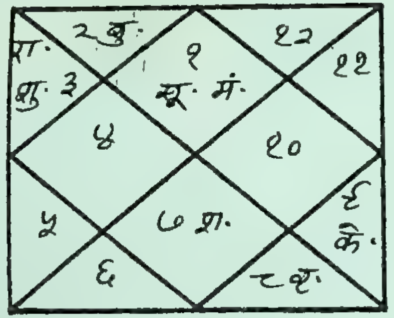

२५२३

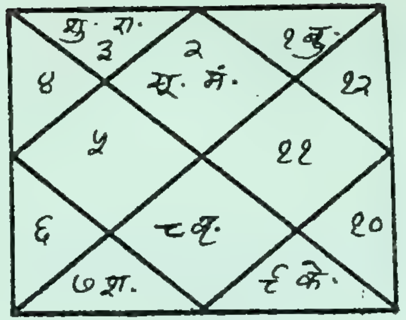

२५२४

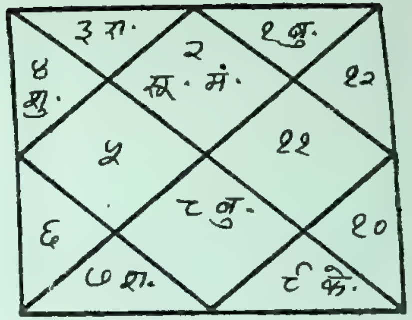

२५२५

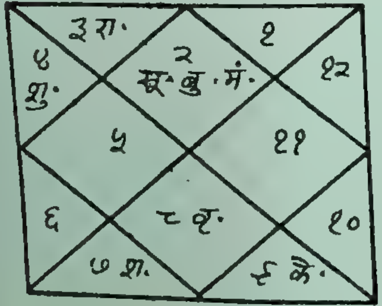

२५२६

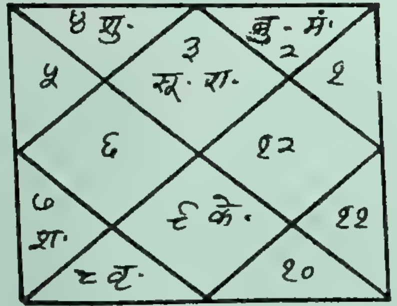

२५२७

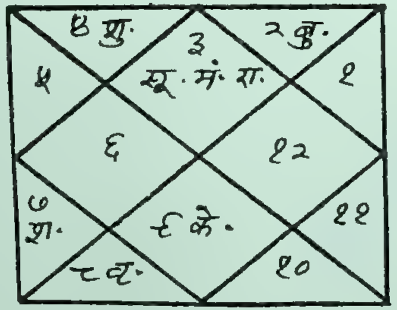

२५२८

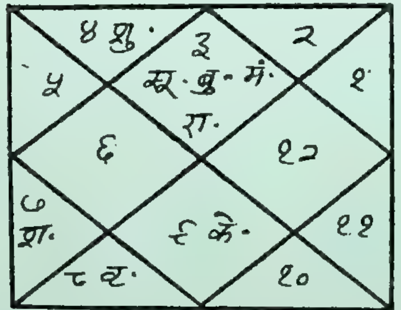

२५२९

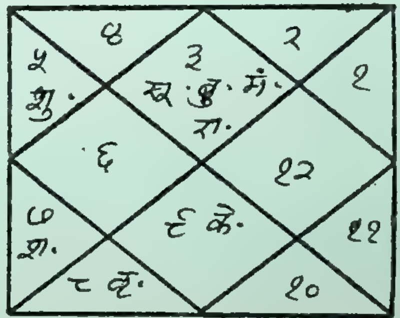

२५३०

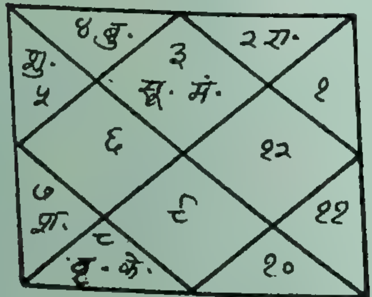

२५३१

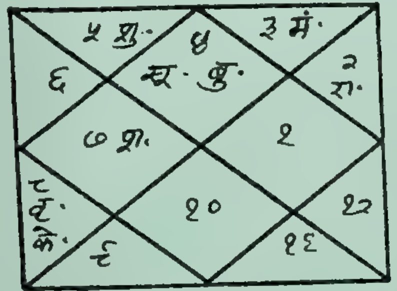

२५३२

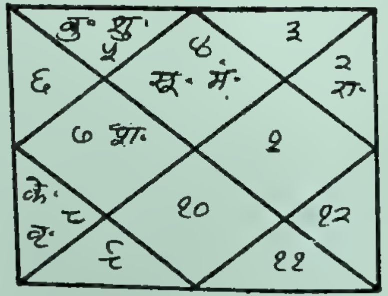

२५३३

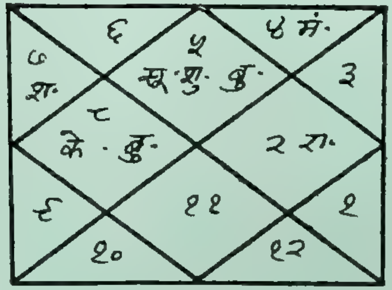

२५३४

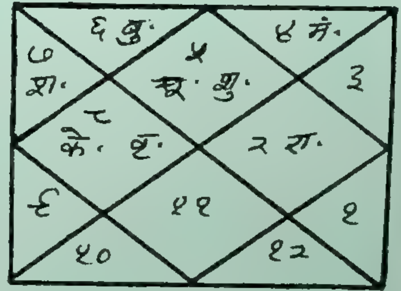

२५३५

कु० प०

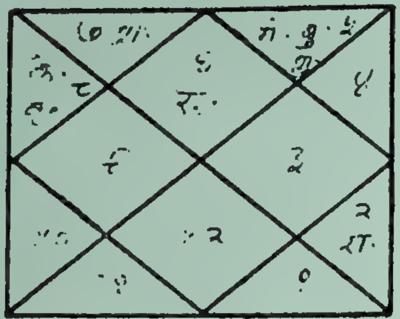

२४३६

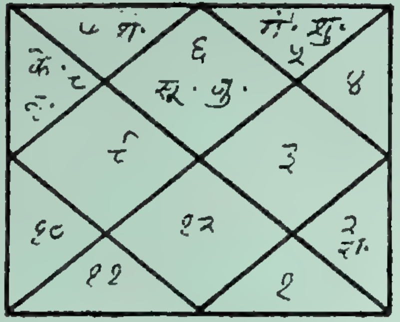

२४३७

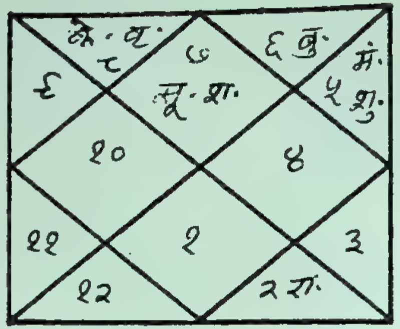

२४३८

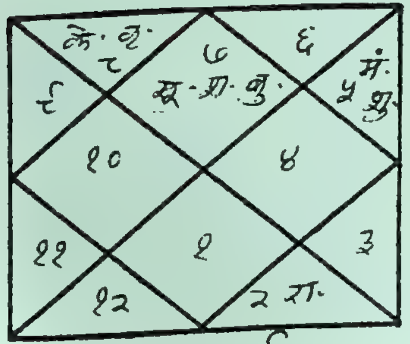

२४३९

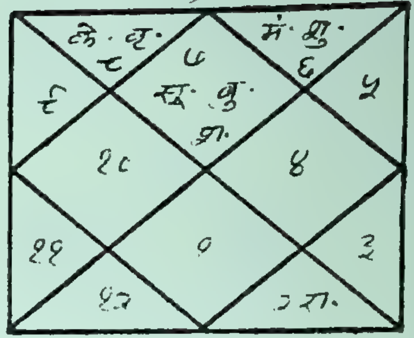

२४४०

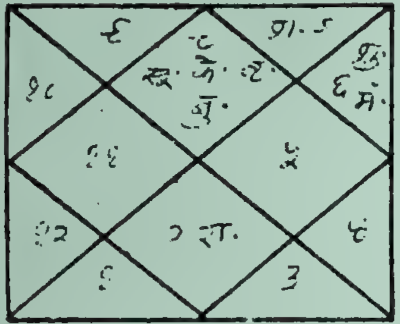

२४४१

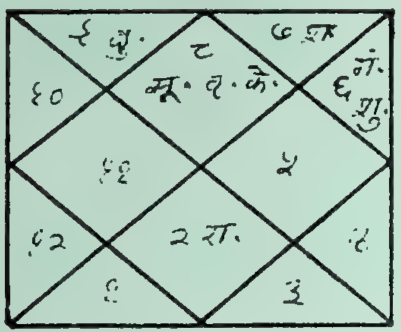

२४४२

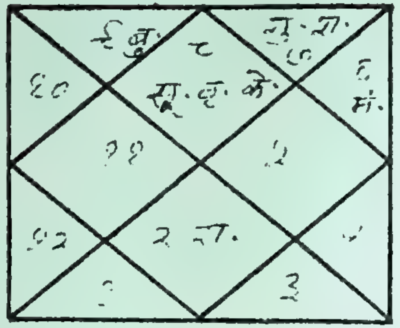

२४४३

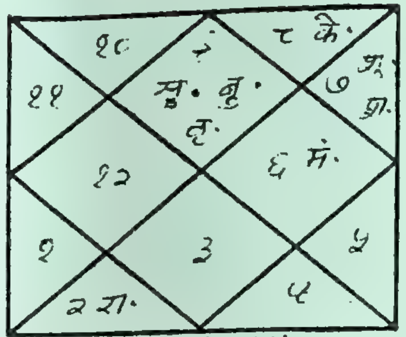

२४४४

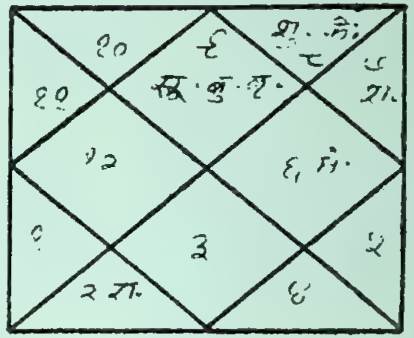

२४४५

२४४६

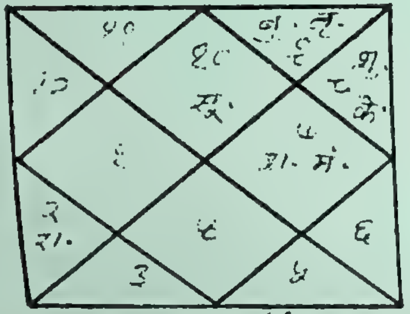

२४४७

२४४८

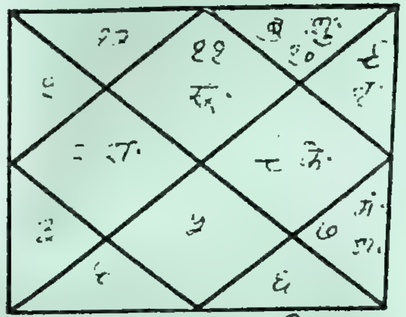

२४४९

२४५०

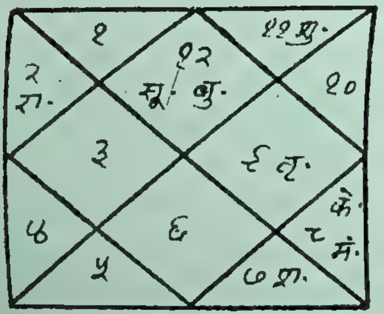

२५५१

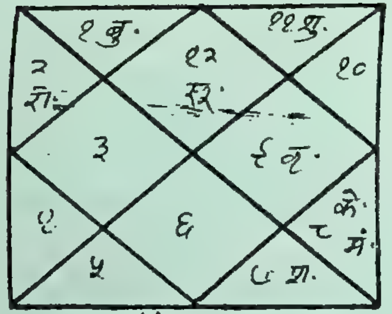

२५५२

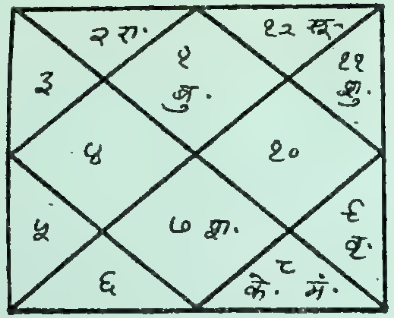

२५५३

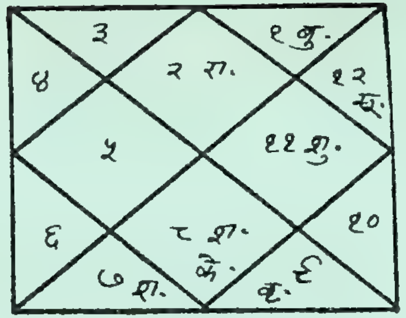

२५५४

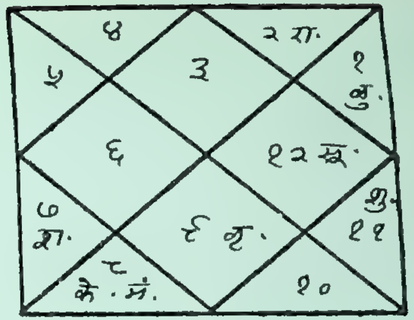

२५५५

२५५६

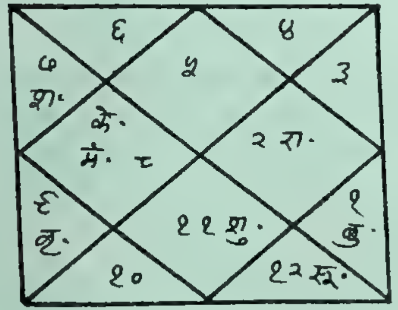

२५५७

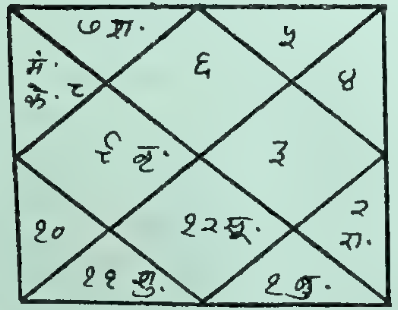

२५५८

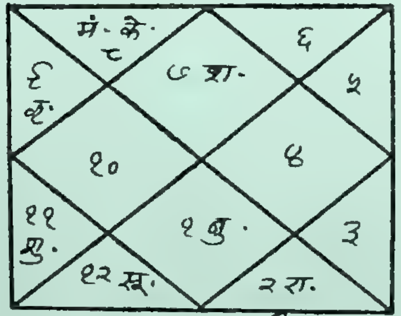

२५५९

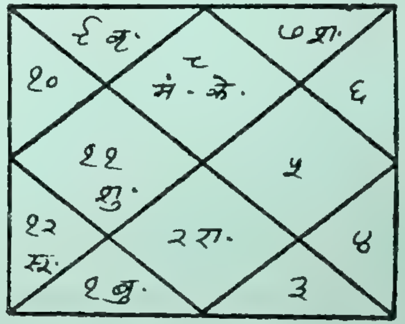

२५६०

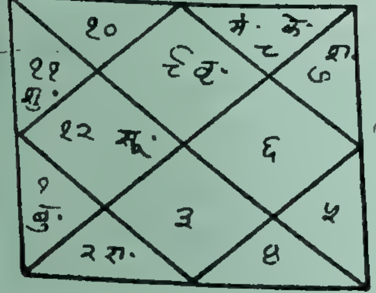

२५६१

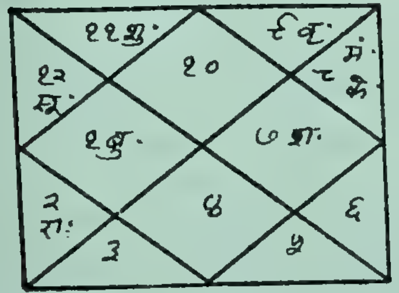

२५६२

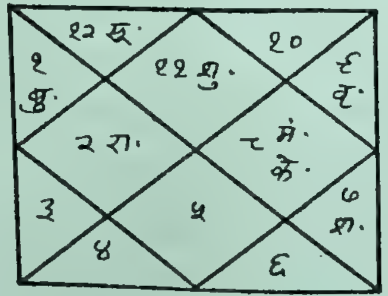

२५६३

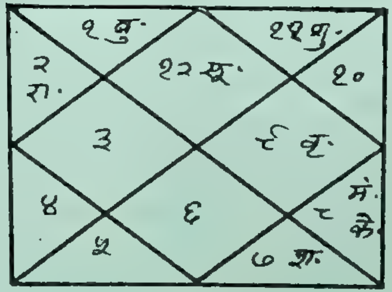

२५६४

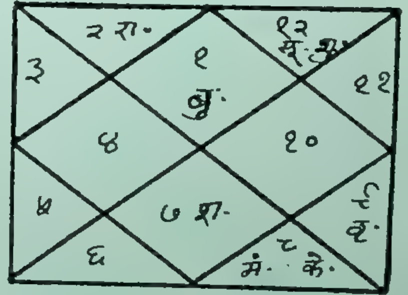

२५६५

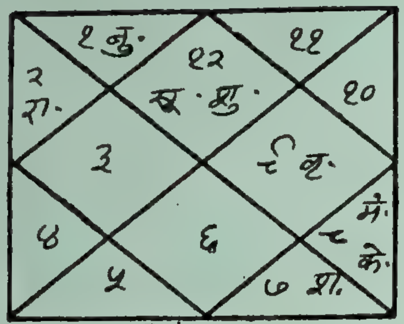
२५६६६

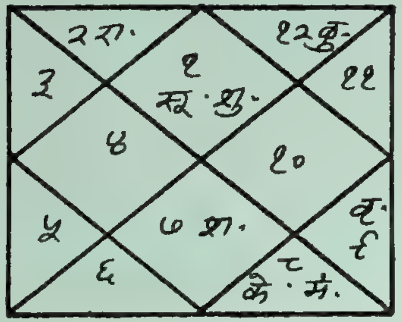
२५६६७

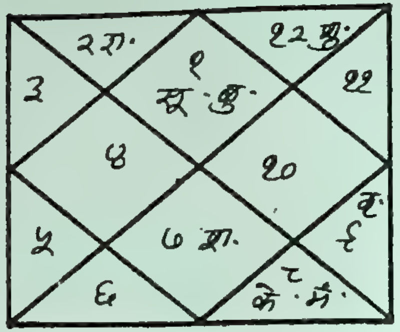
२५६६८

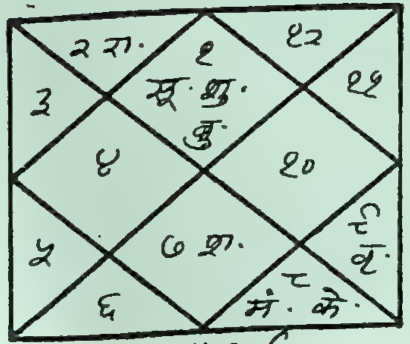
२५६६९

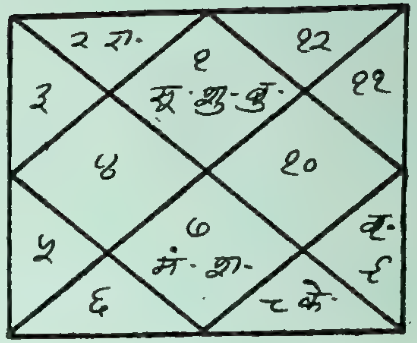
२५६७०

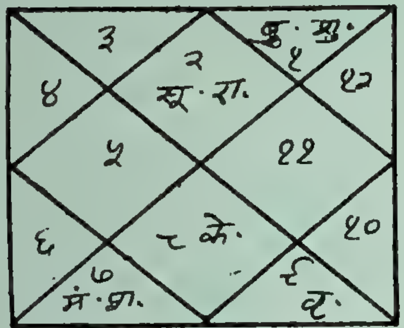
२५६७१

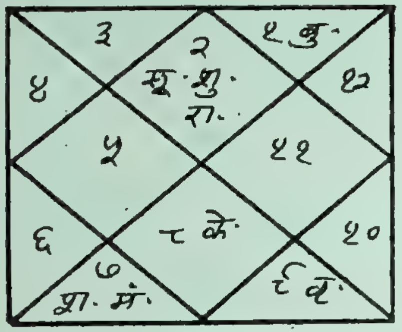
२५६७२

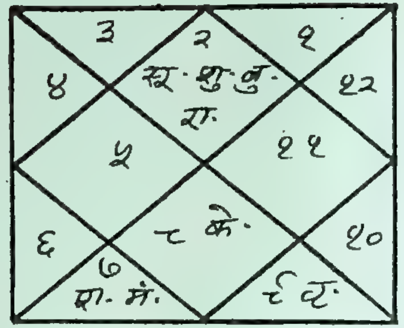
२५६७३

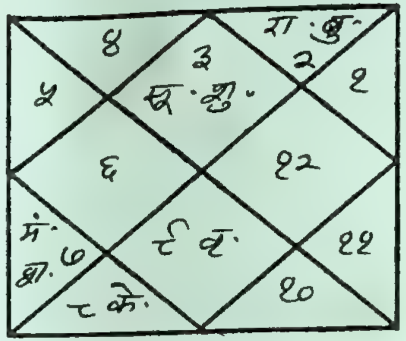
२५६७४

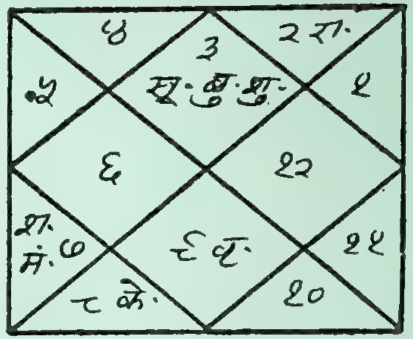
२५६७५

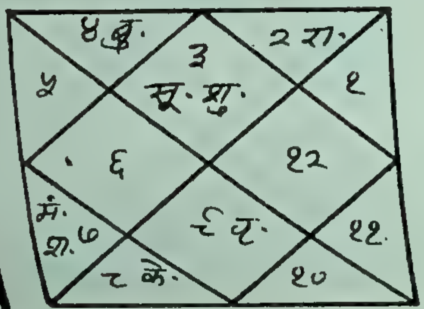
२५६७६

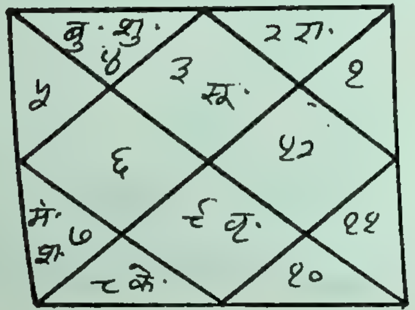
२५६७७

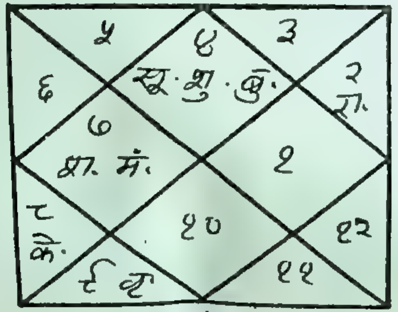
२५६७८

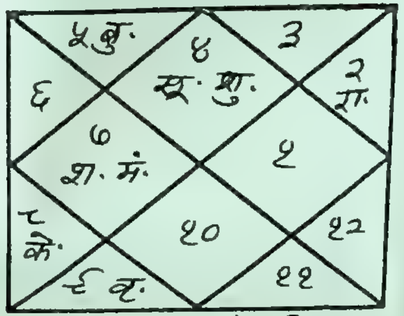
२५६७९

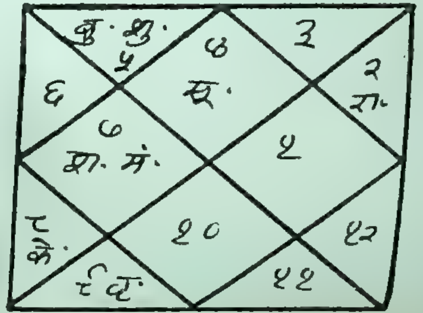
२५६८०

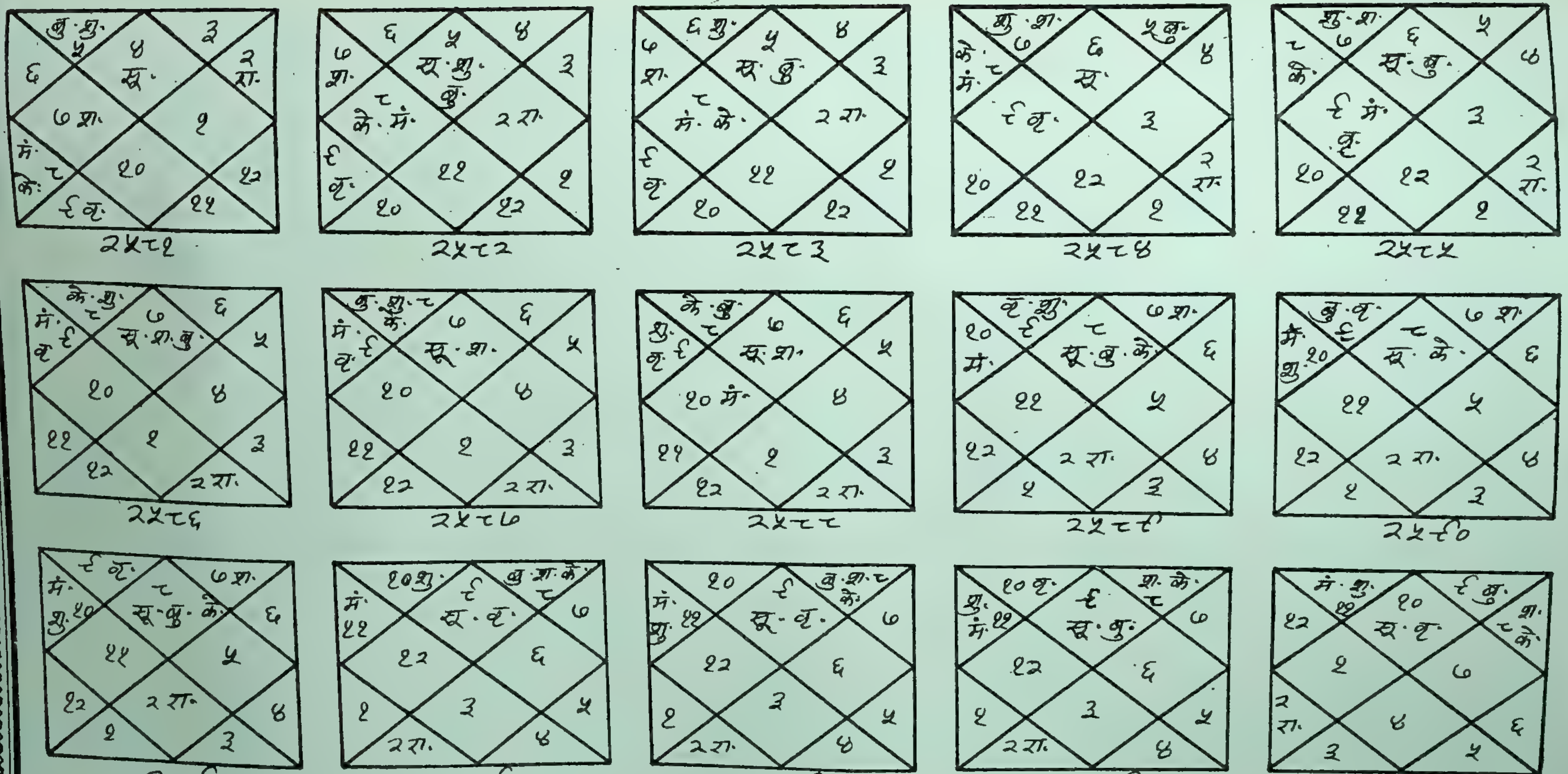

२५८१ २५८२ २५८३ २५८४ २५८५

२५८६ २५८७ २५८८ २५८९ २५९०

२५९१ २५९२ २५९३ २५९४ २५९५

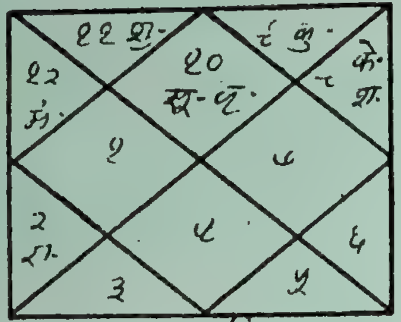

२५९६

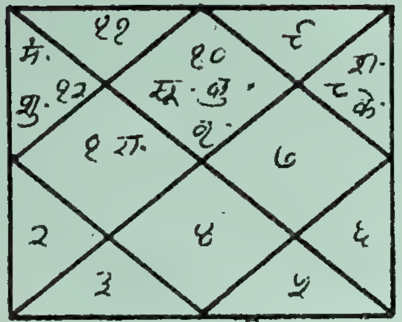

२५९७

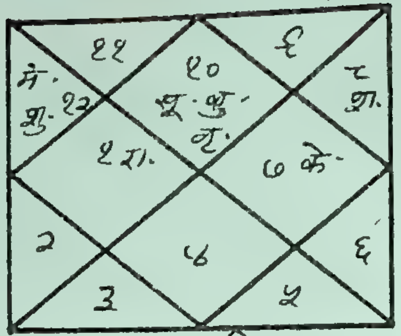

२५९८

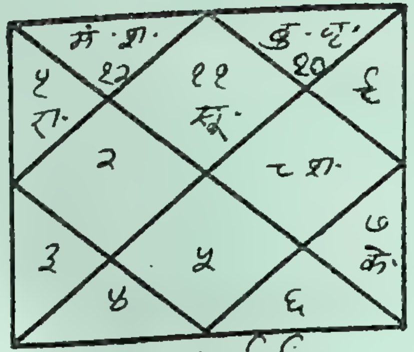

२५९९

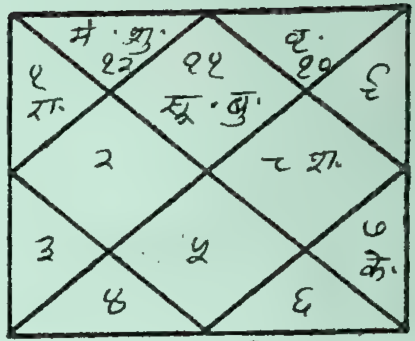

२६००

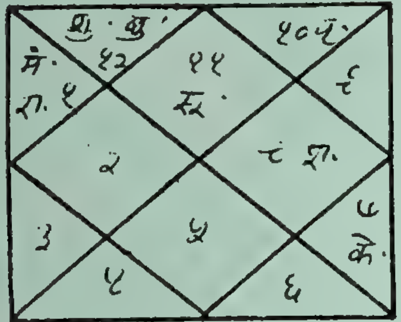

२६०१

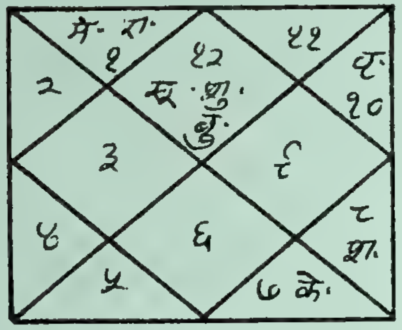

२६०२

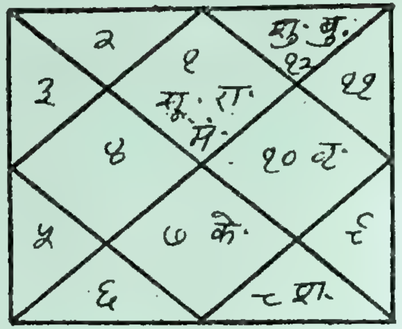

२६०३

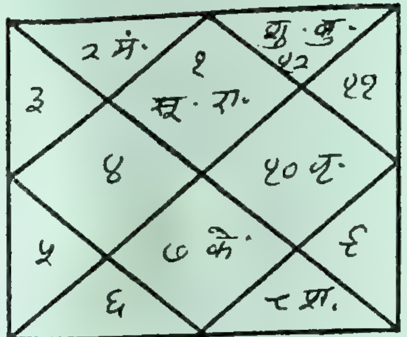

२६०४

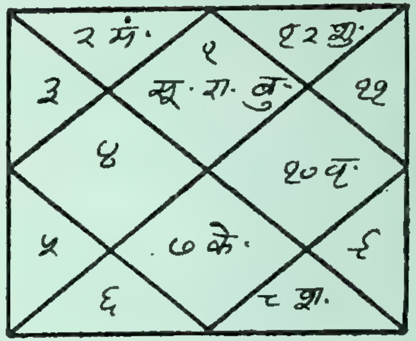

२६०५

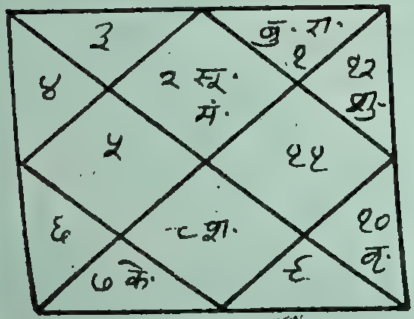

२६०६

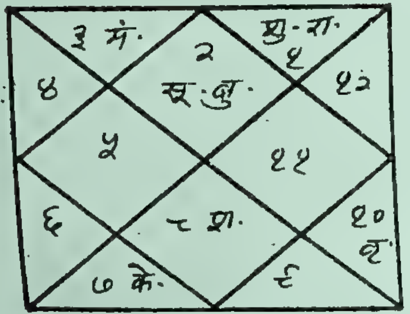

२६०७

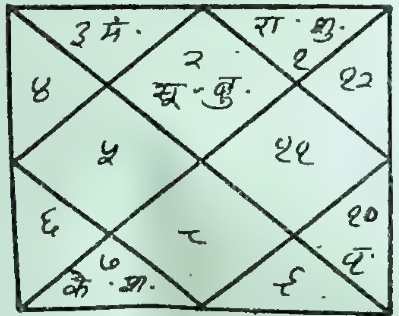

२६०८

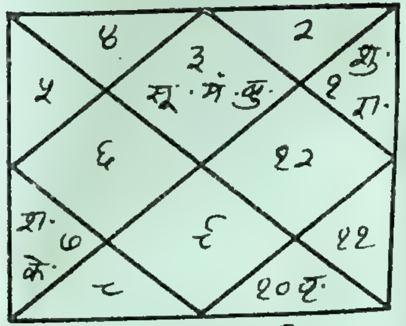

२६०९

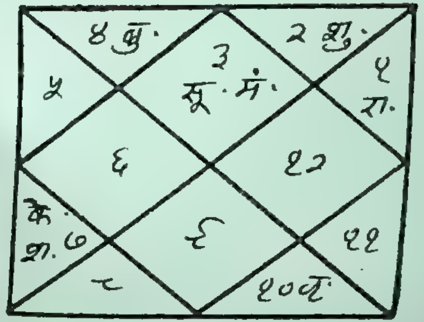

२६१०

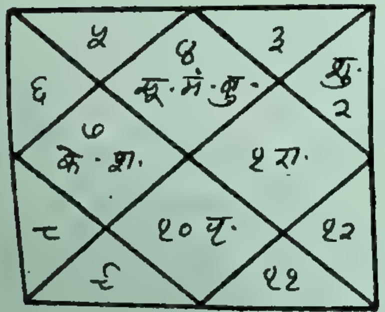
२६११

२६१२

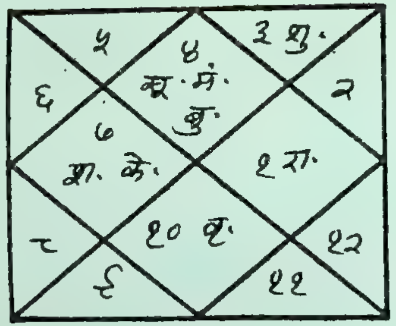
२६१३

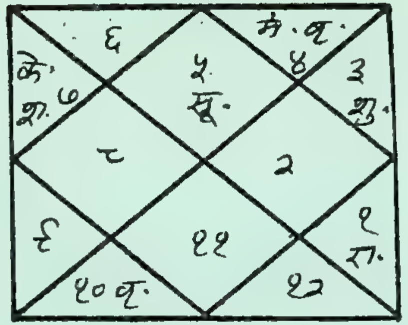
२६१४

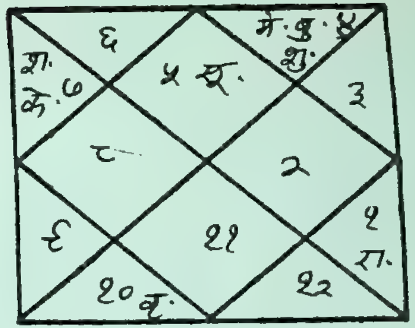
२६१५

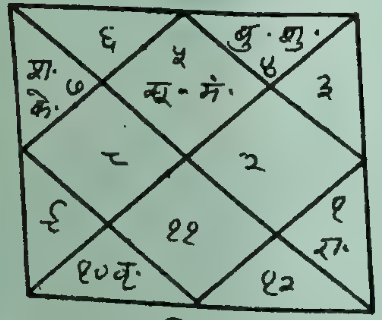
२६१६

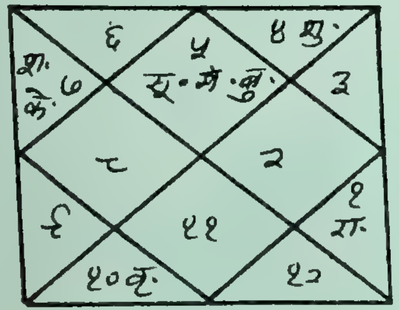
२६१७

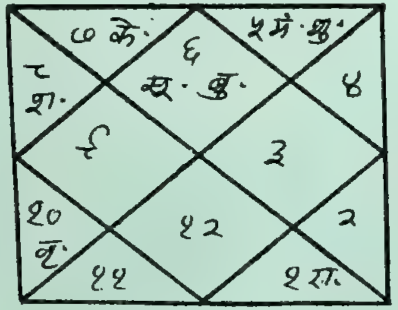
२६१८

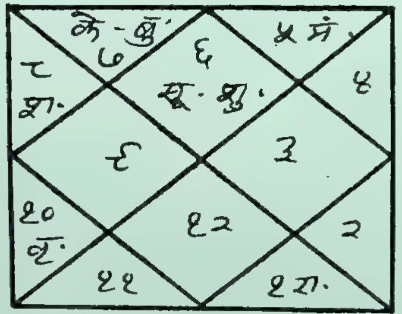
२६१९

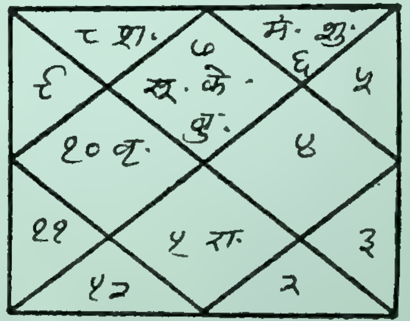
२६२०

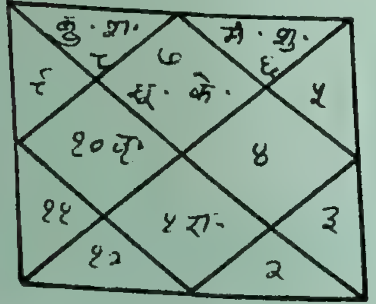
२६२१

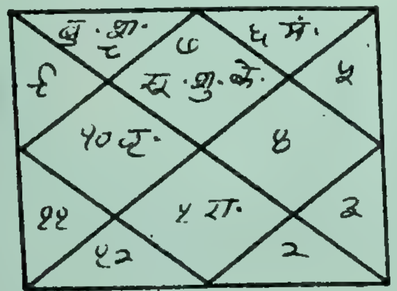
२६२२

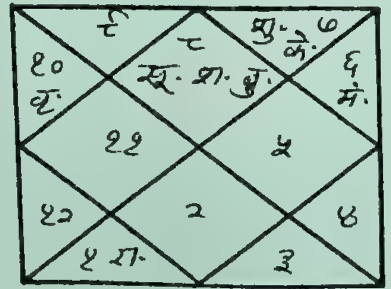
२६२३

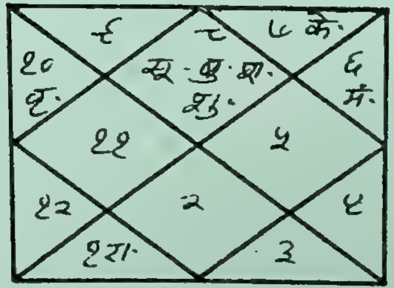
२६२४

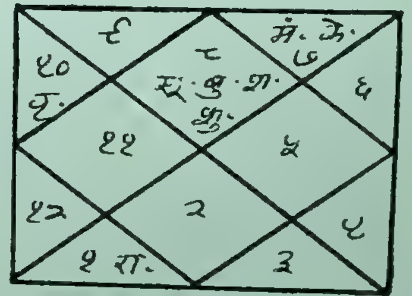
२६२५

भू० सं०

कु० प०

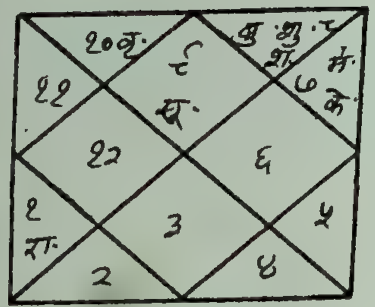

२६२६

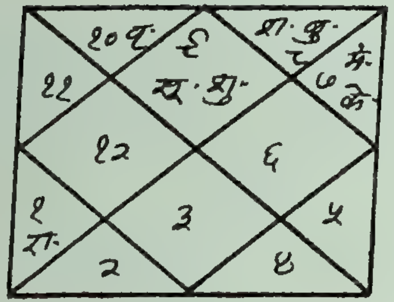

२६२७

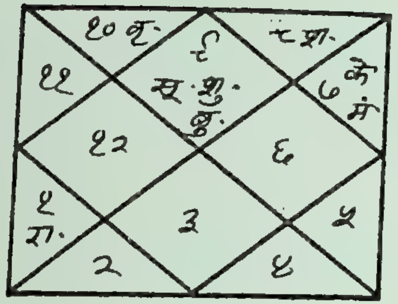

२६२८

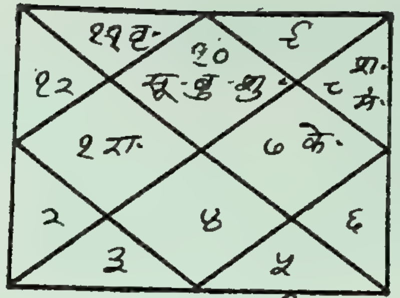

२६२९

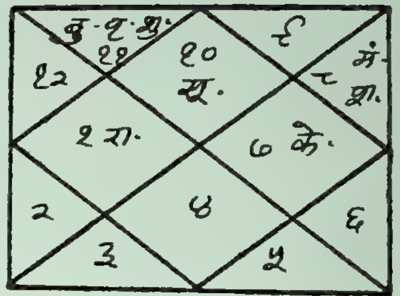

२६३०

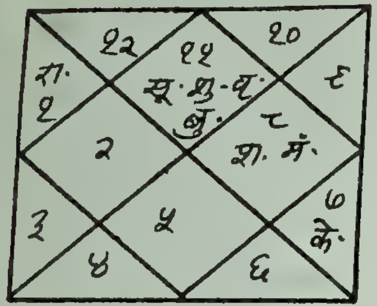

२६३१

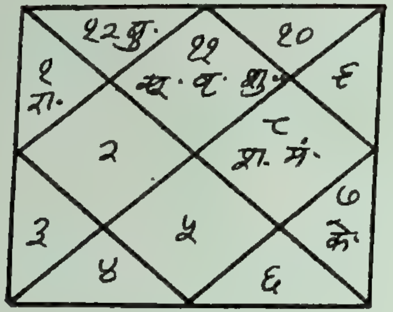

२६३२

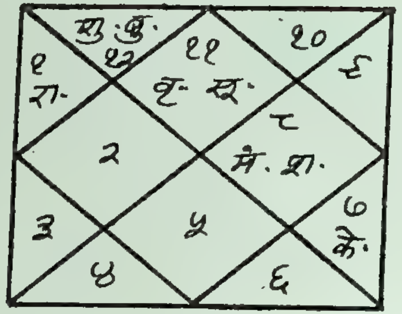

२६३३

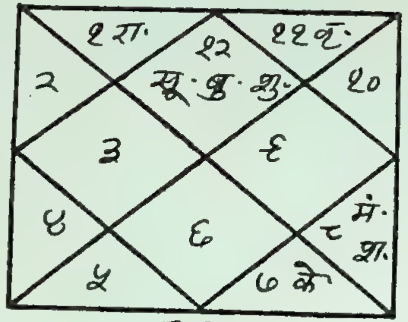

२६३४

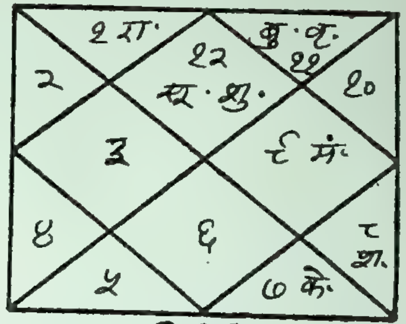

२६३५

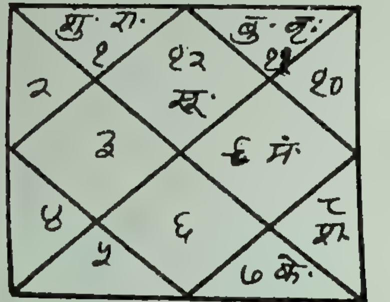

२६३६

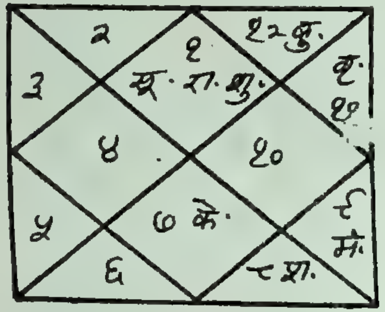

२६३७

२६३८

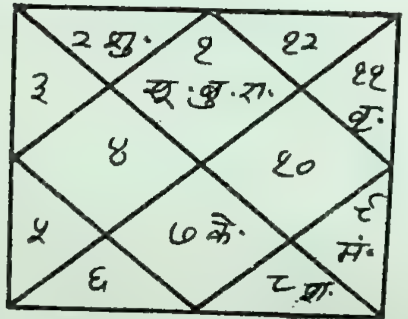

२६३९

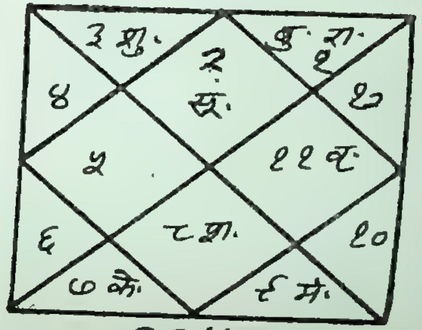

२६४०

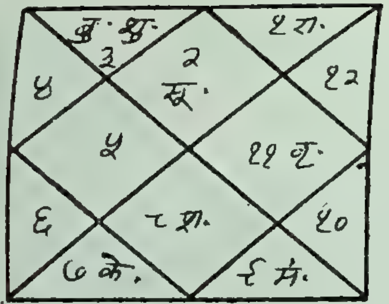

२६४१

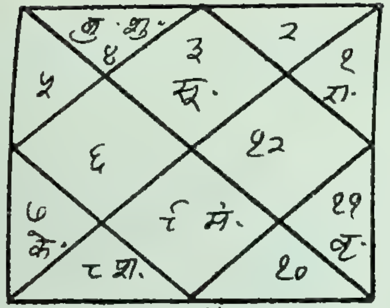

२६४२

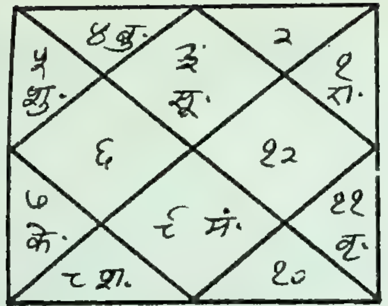

२६४३

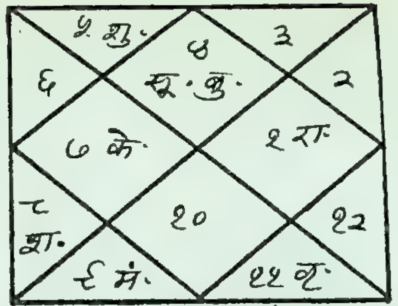

२६४४

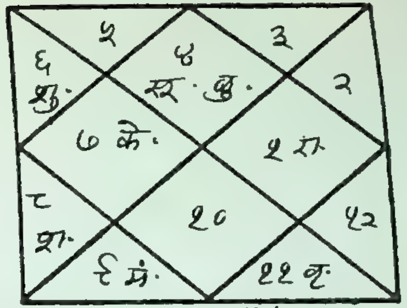

२६४५

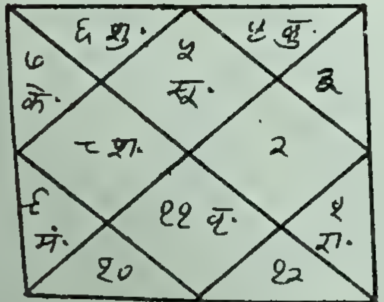

२६४६

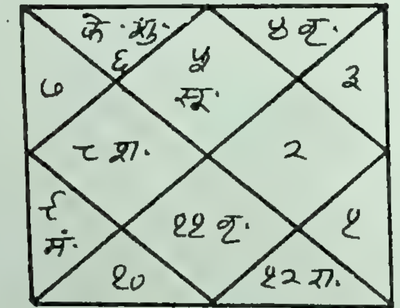

२६४७

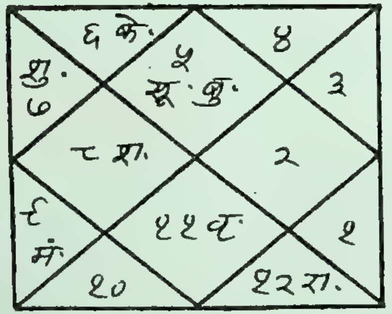

२६४८

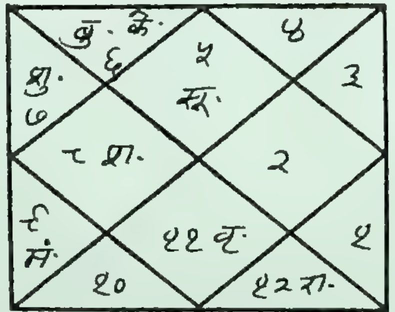

२६४९

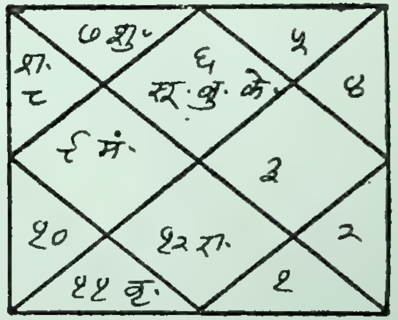

२६५०

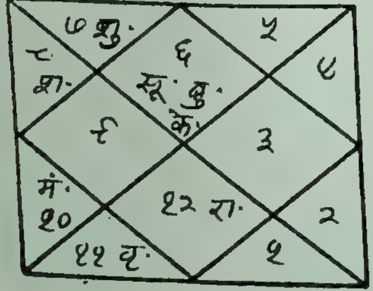

२६५१

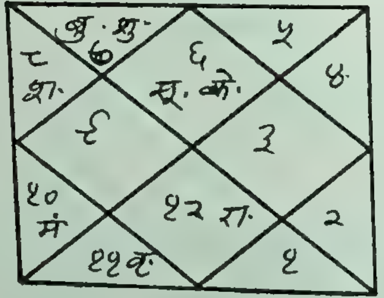

२६५२

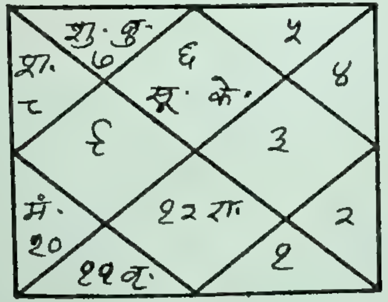

२६५३

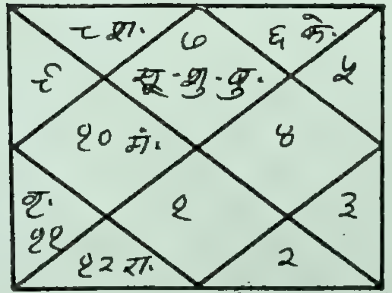

२६५४

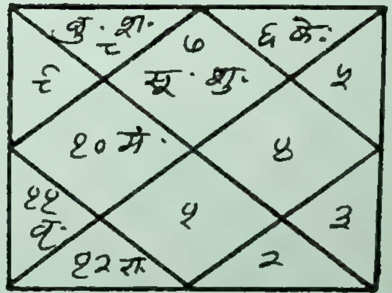

२६५५

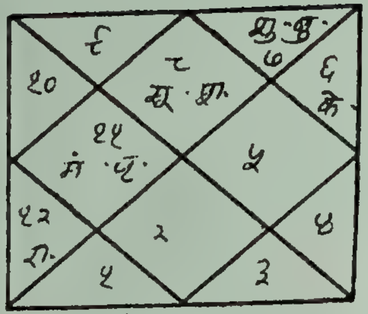
२६५६

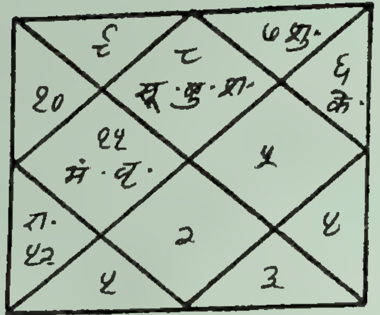
२६५७

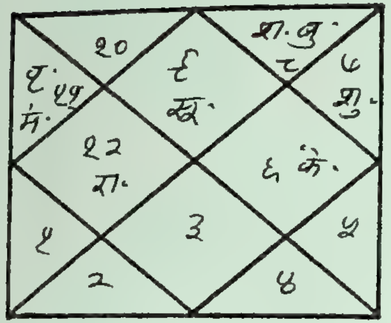
२६५८

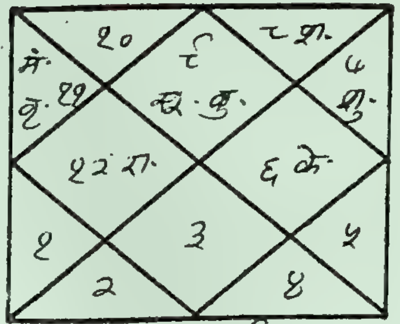
२६५९

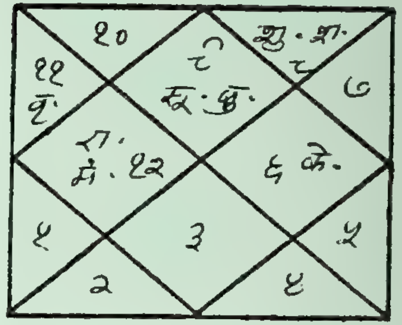
२६६०

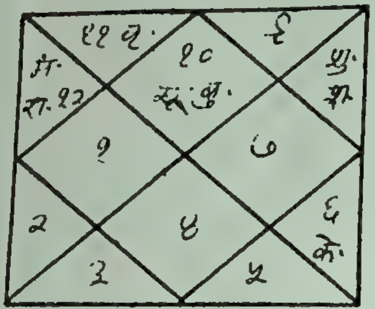
२६६१

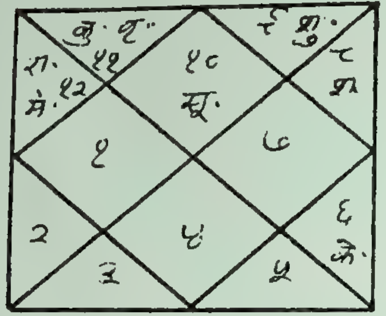
२६६२

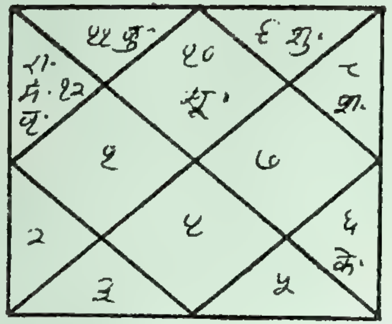
२६६३

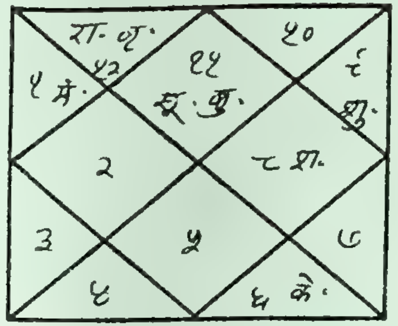
२६६४

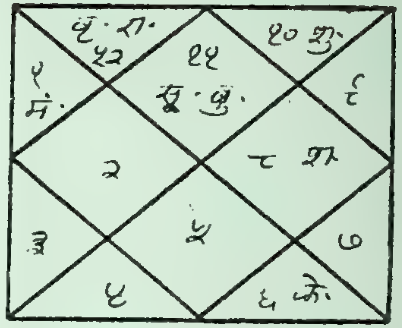
२६६५

२६६६

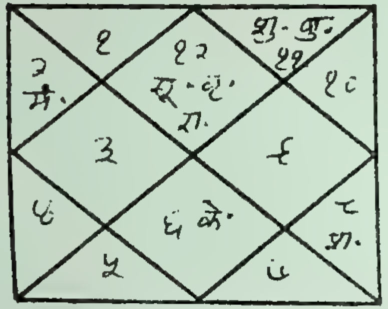
२६६७

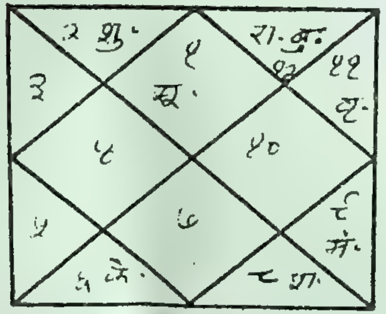
२६६८

२६६९

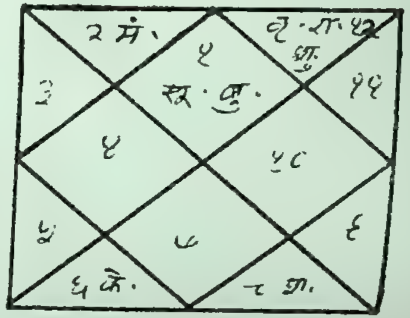
२६७०

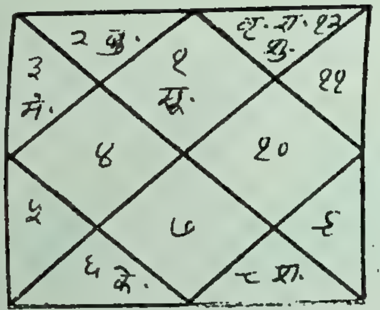
२६७१

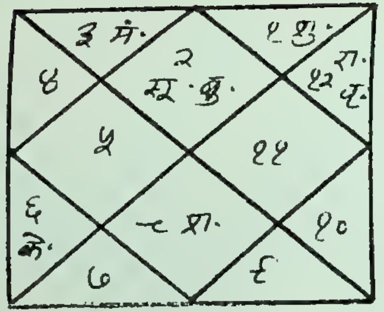
२६७२

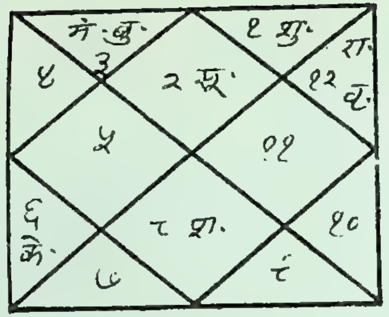
२६७३

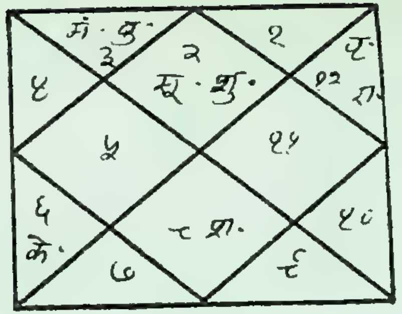
२६७४

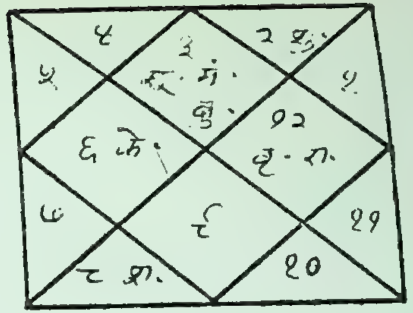
२६७५

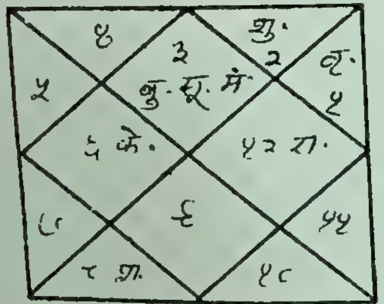
२६७६

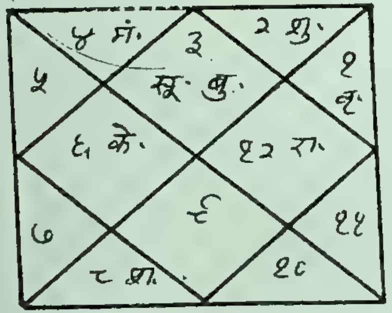
२६७७

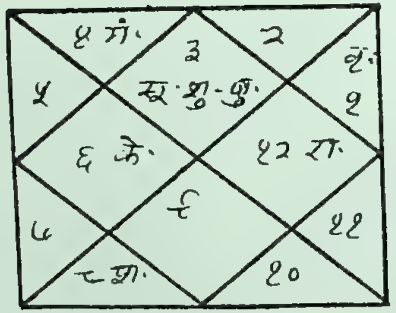
२६७८

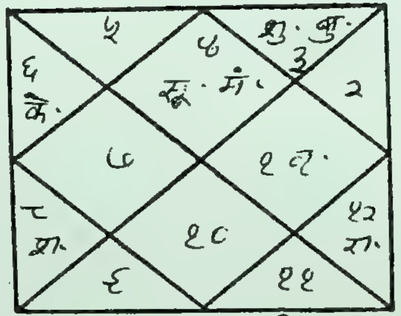
२६७९

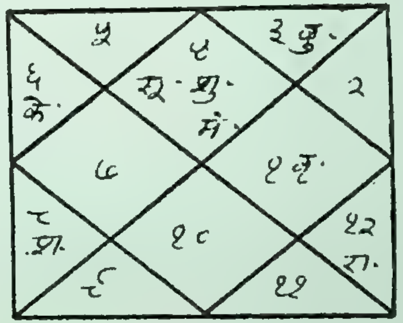
२६८०

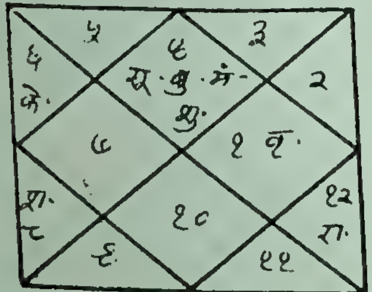
२६८१

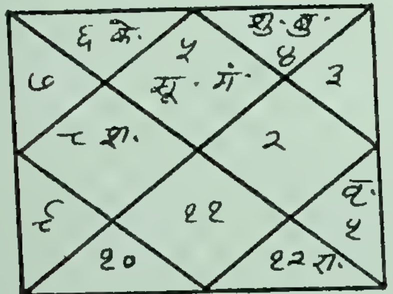
२६८२

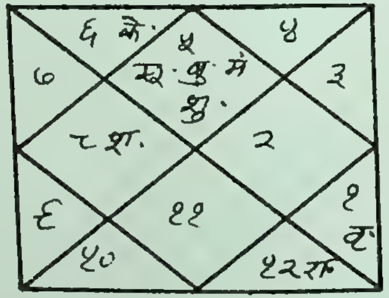
२६८३

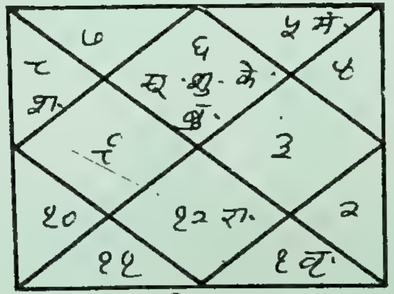
२६८४

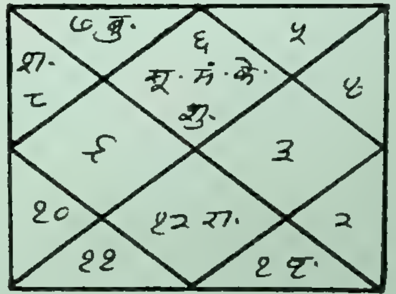
२६८५

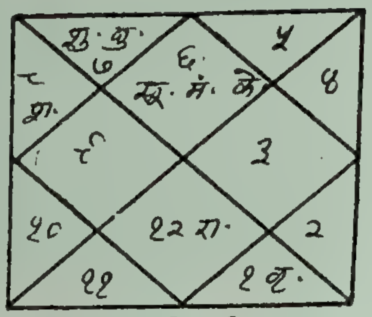
२६८६

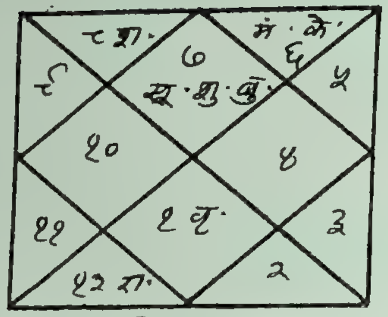
२६८७

२६८८

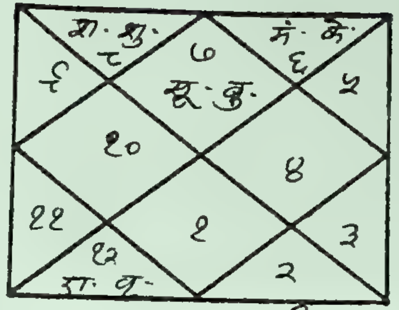
२६८९

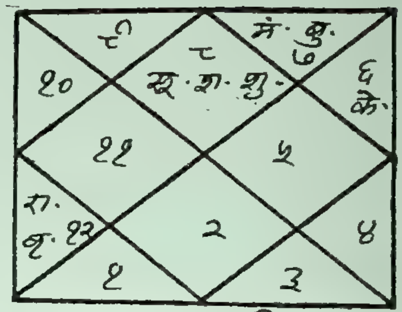
२६९०

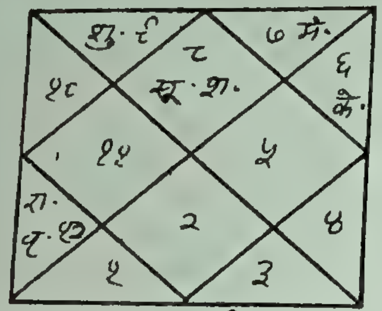
२६९१

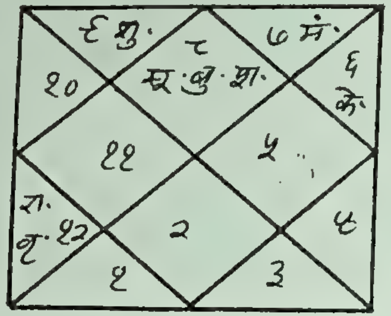
२६९२

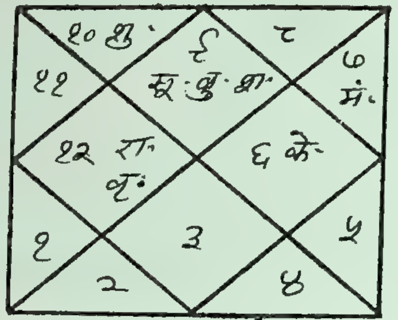
२६९३

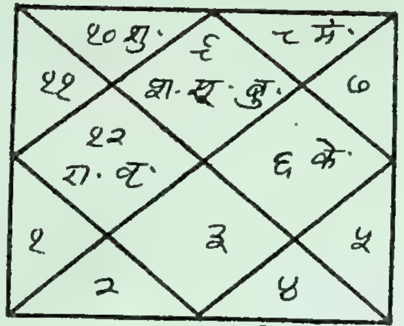
२६९४

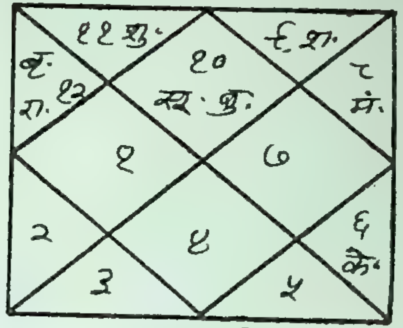
२६९५

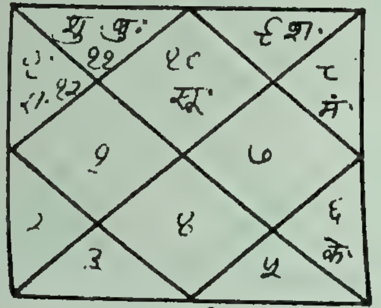
२६९६

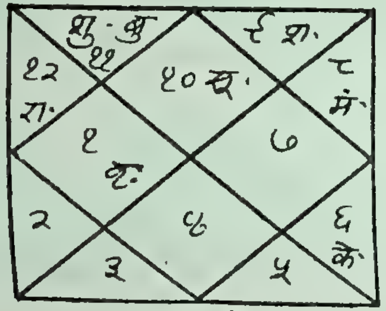
२६९७

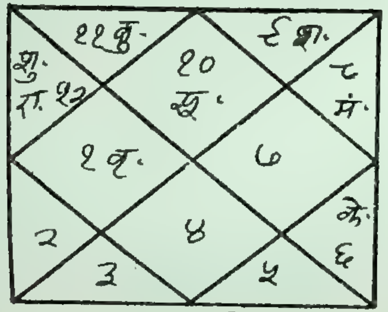
२६९८

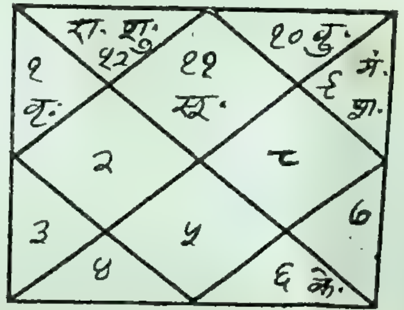
२६९९

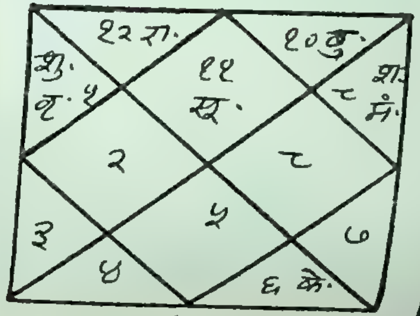
२७००

भू० सं०

कु० प०

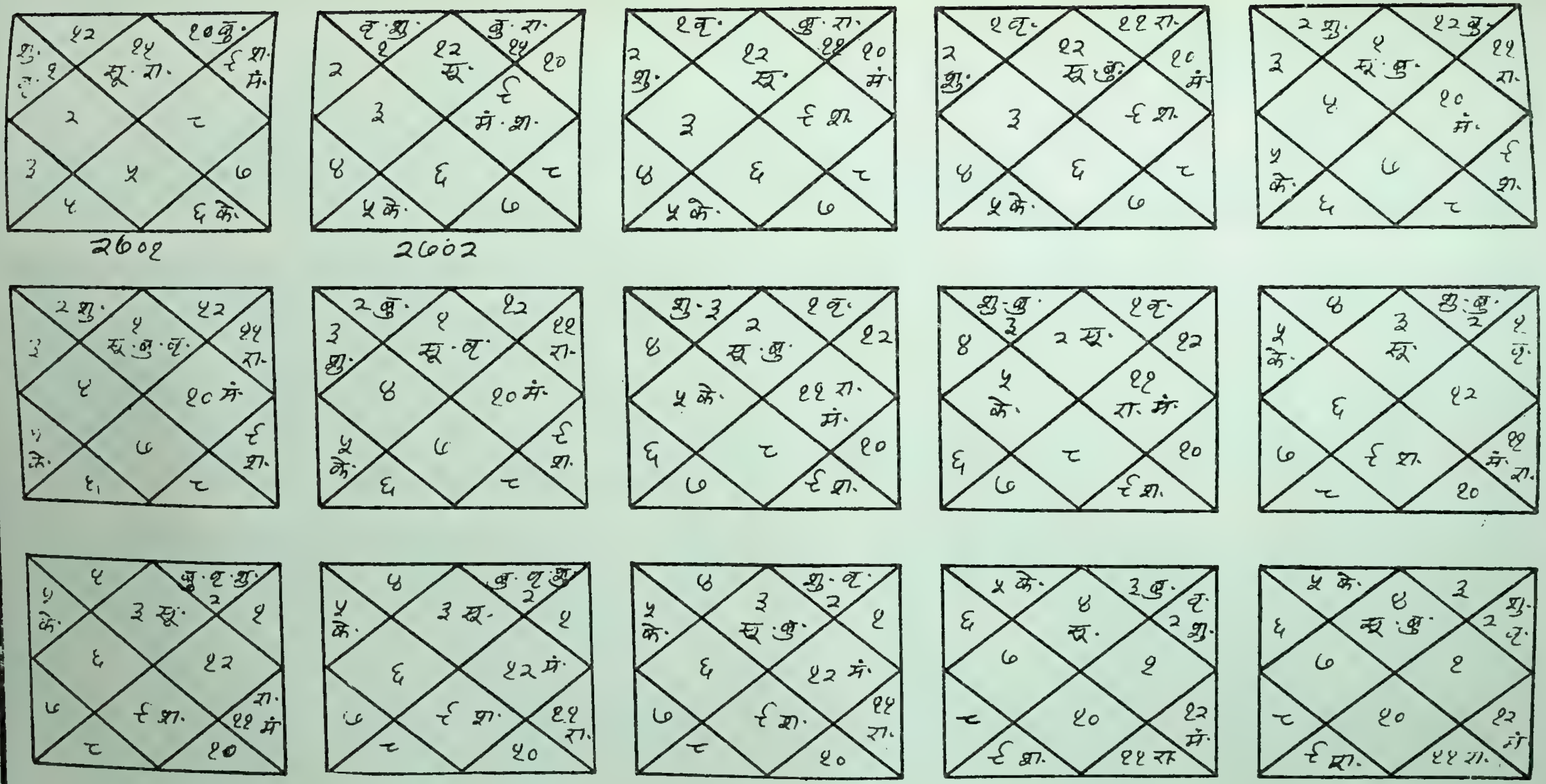

२८०१ २८०२

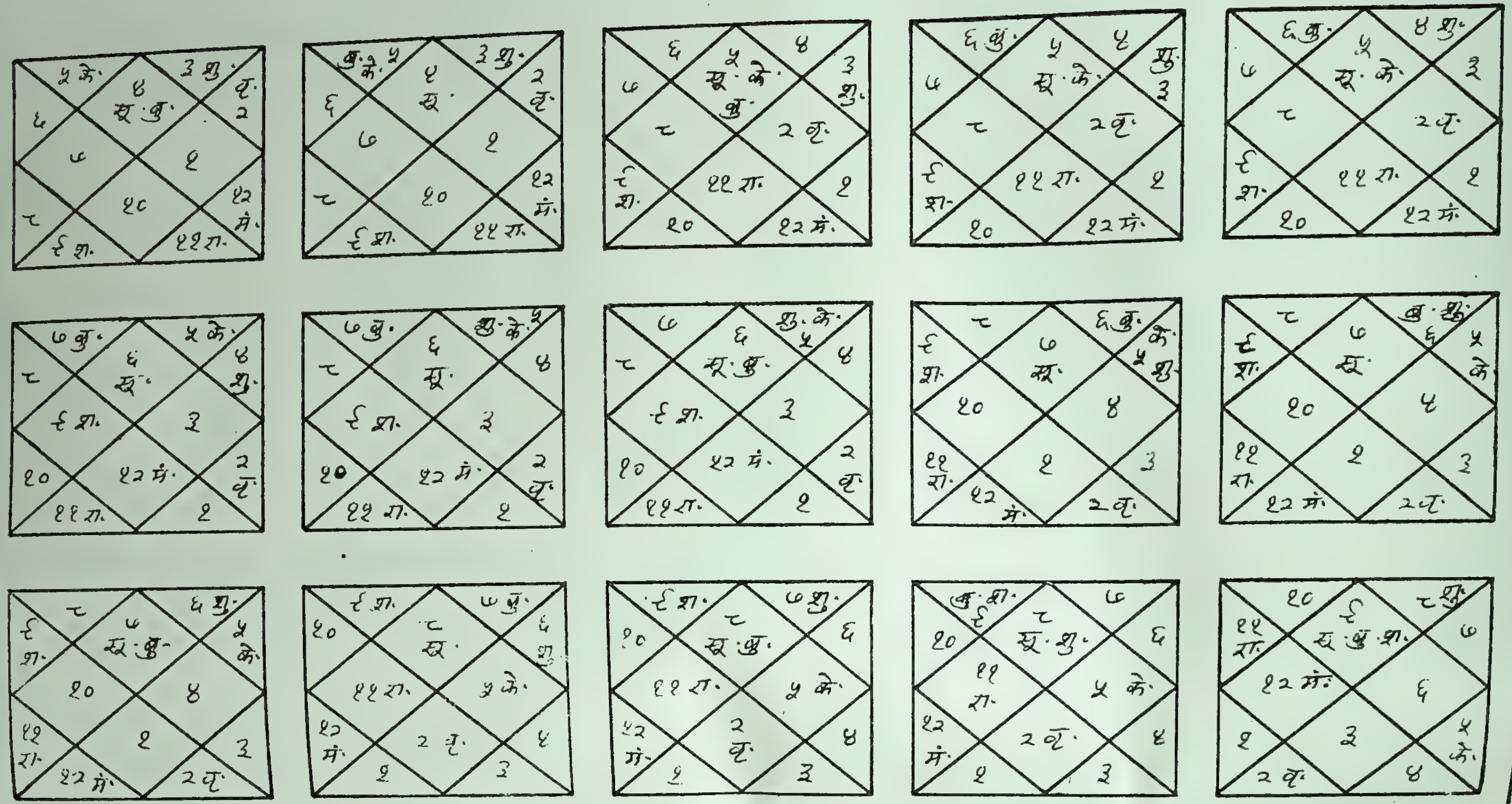

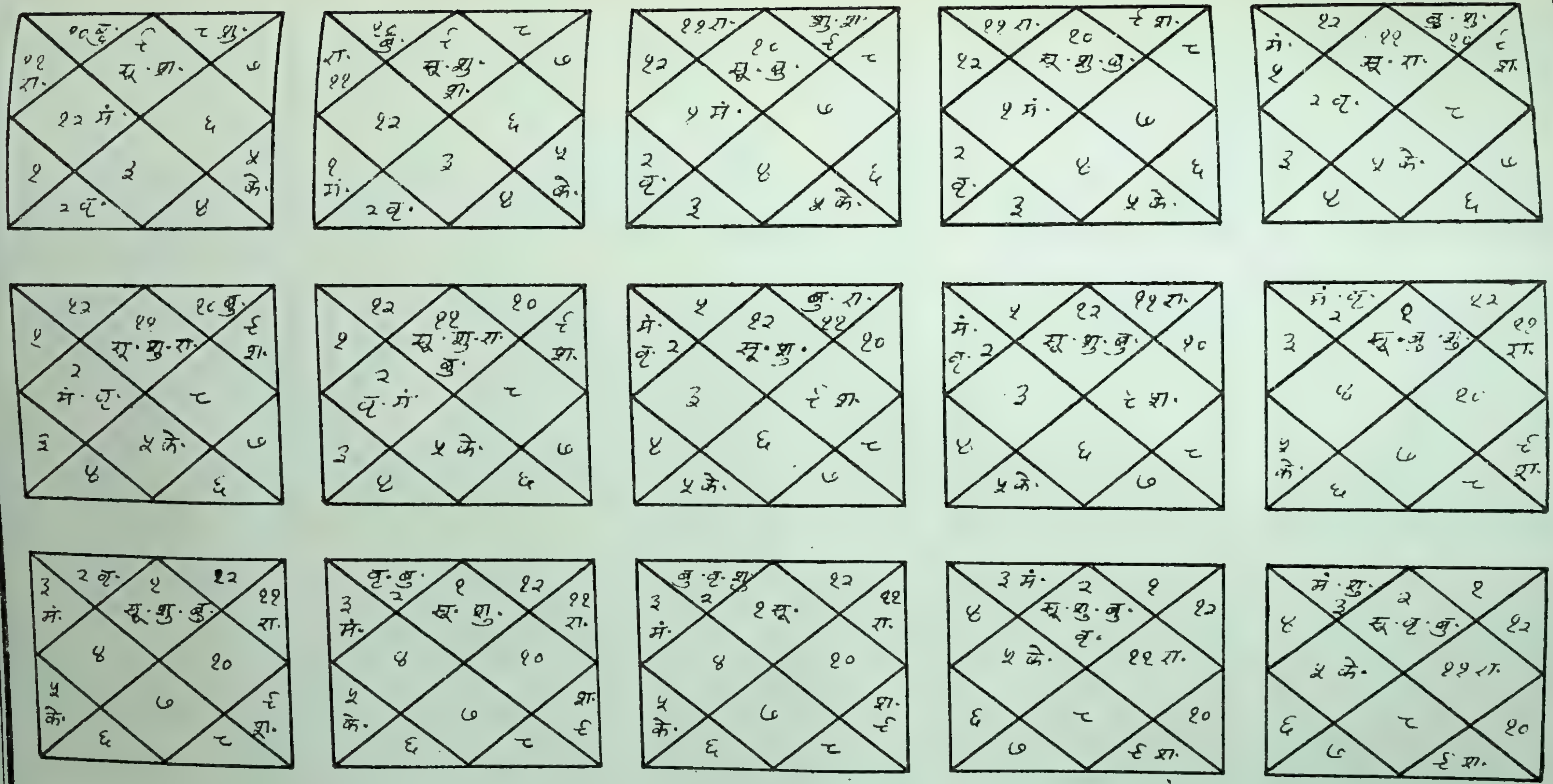

भू० सं०

कु० प०

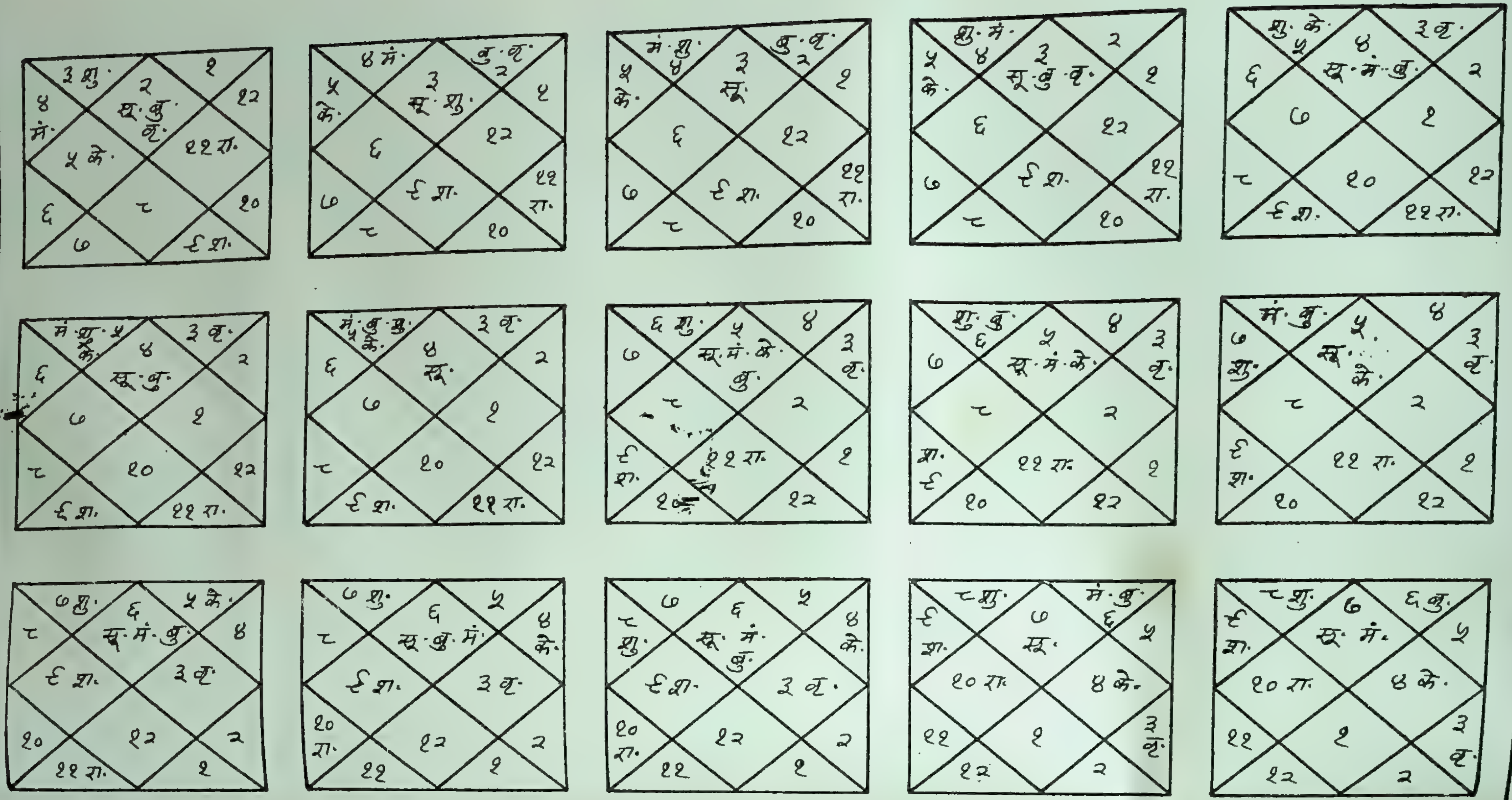

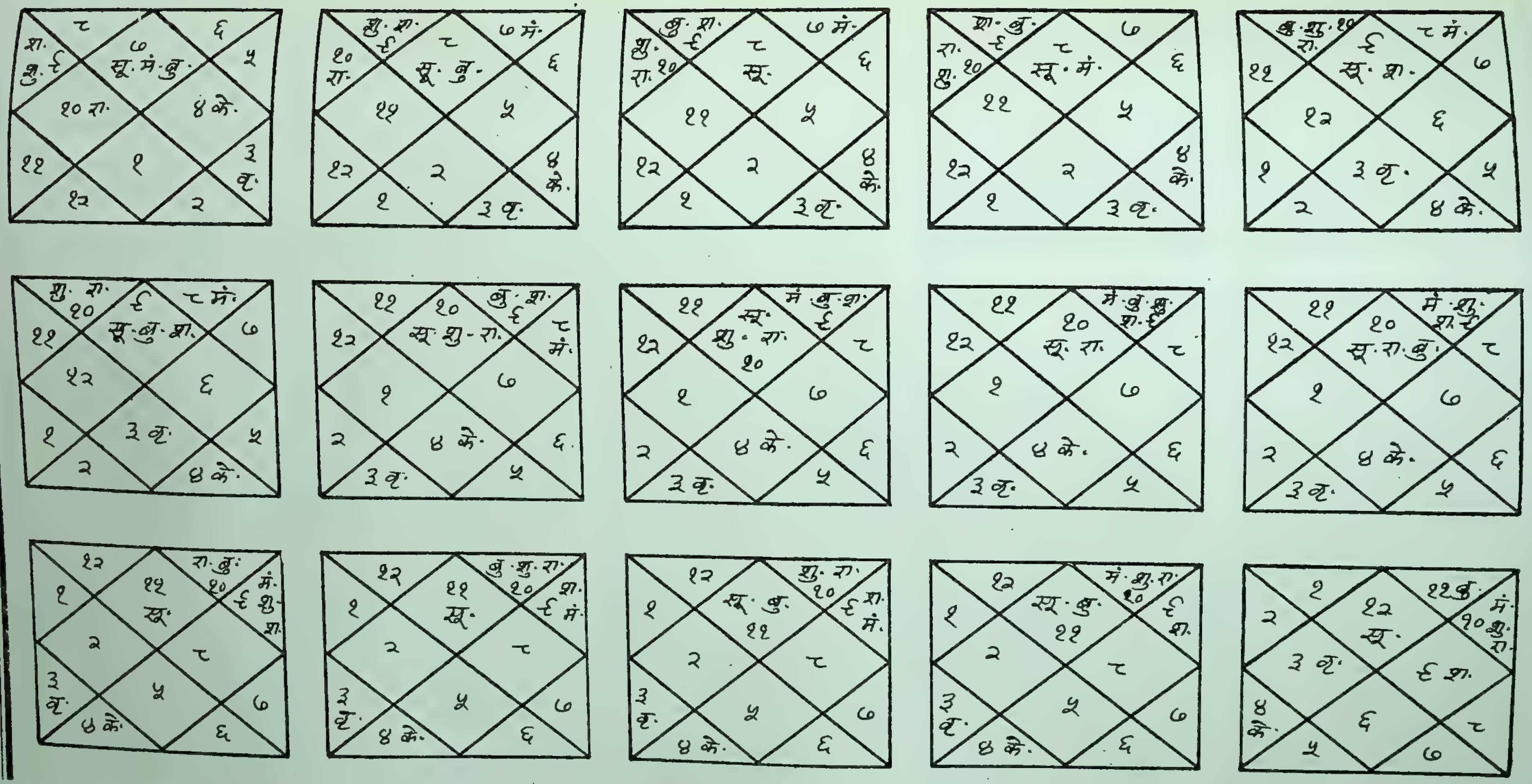

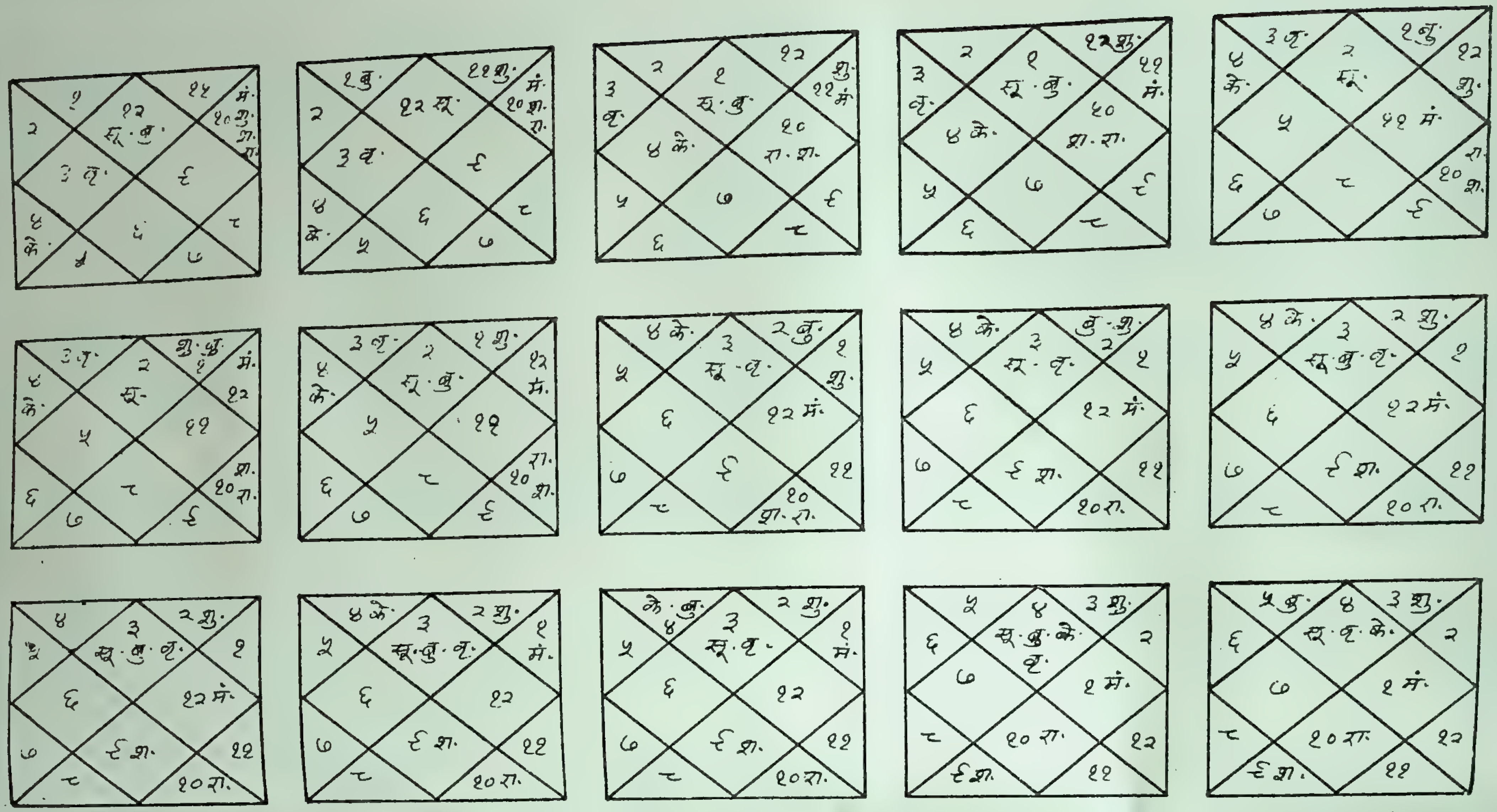

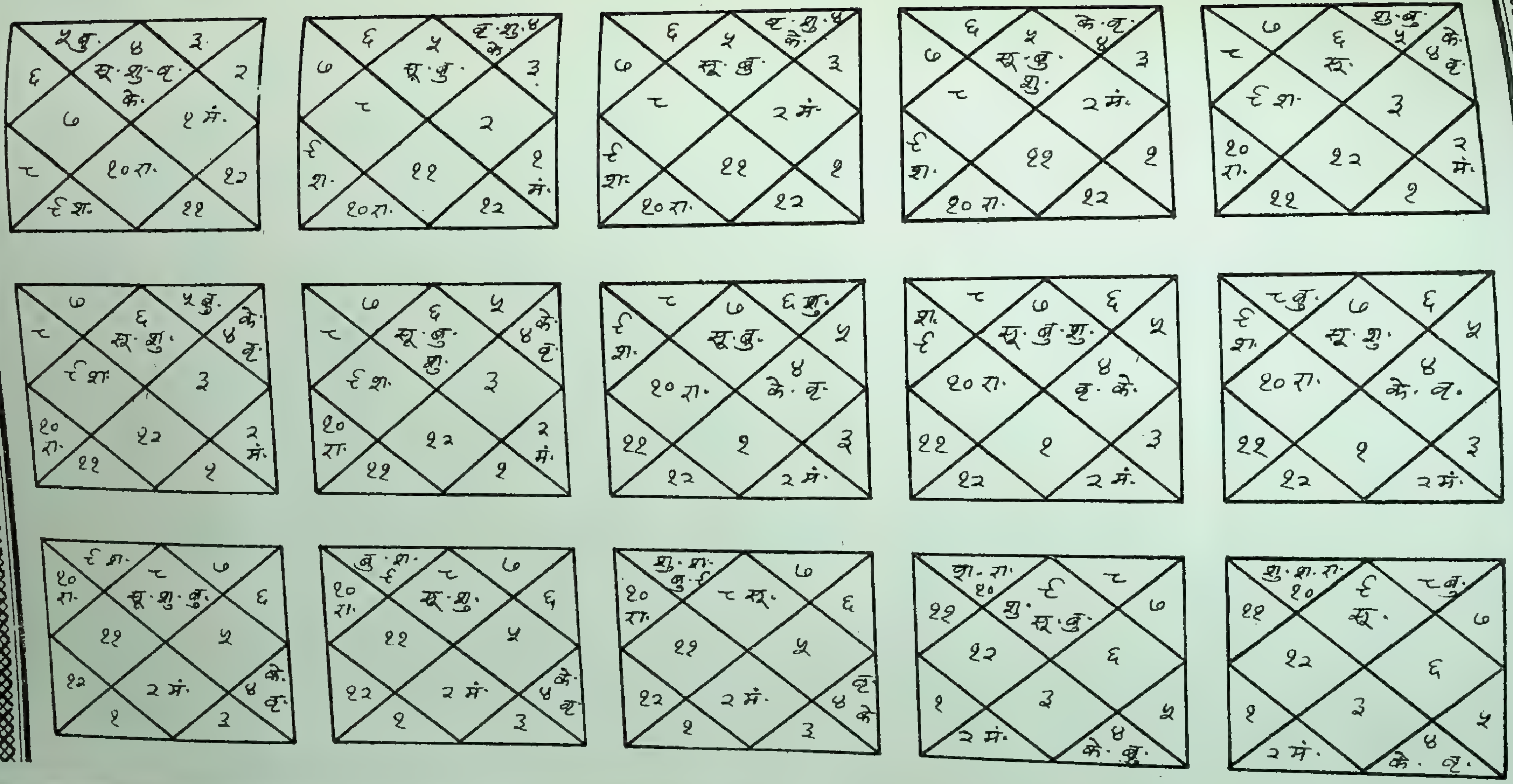

कु० प०

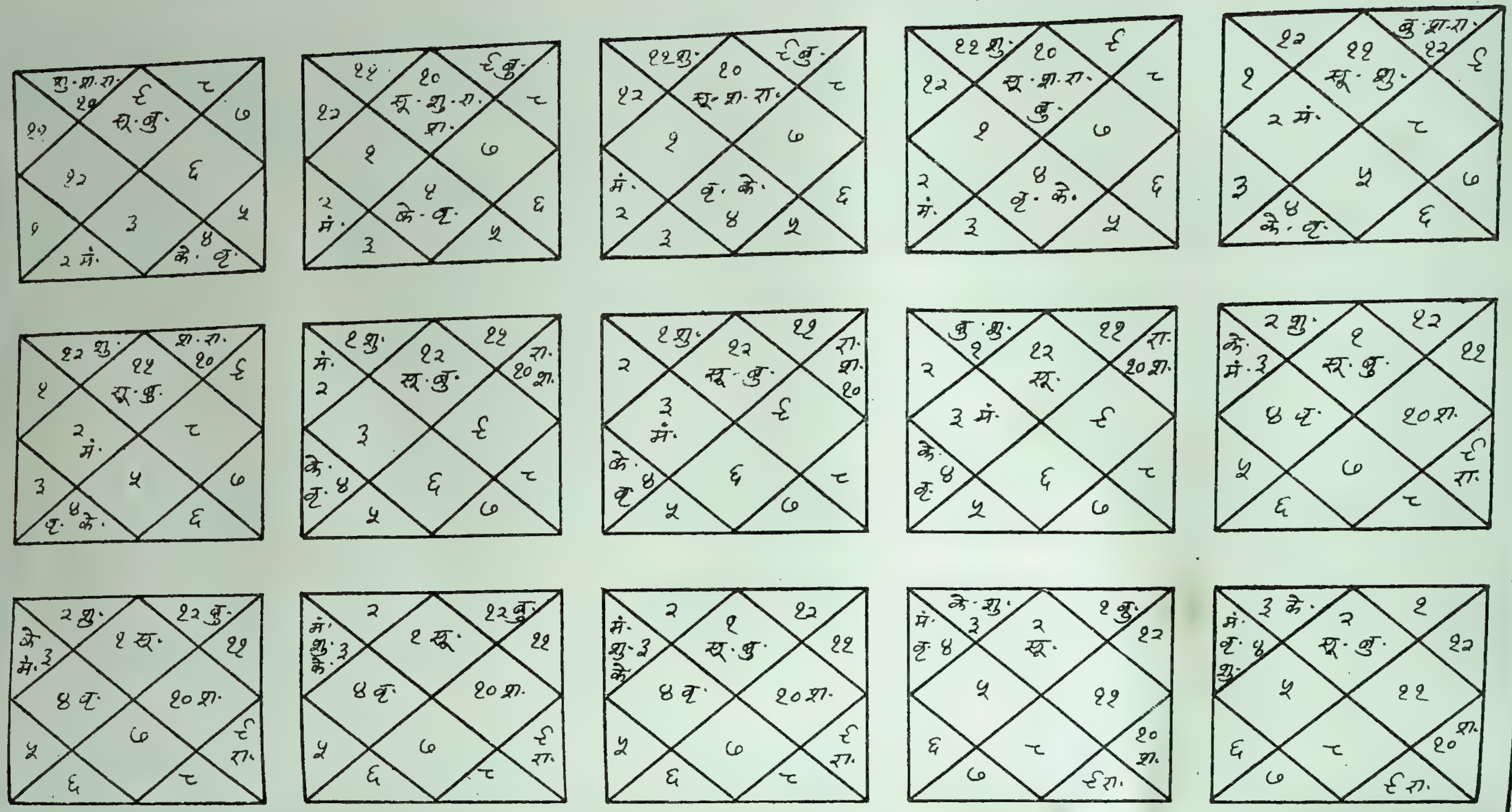

भू० सं०

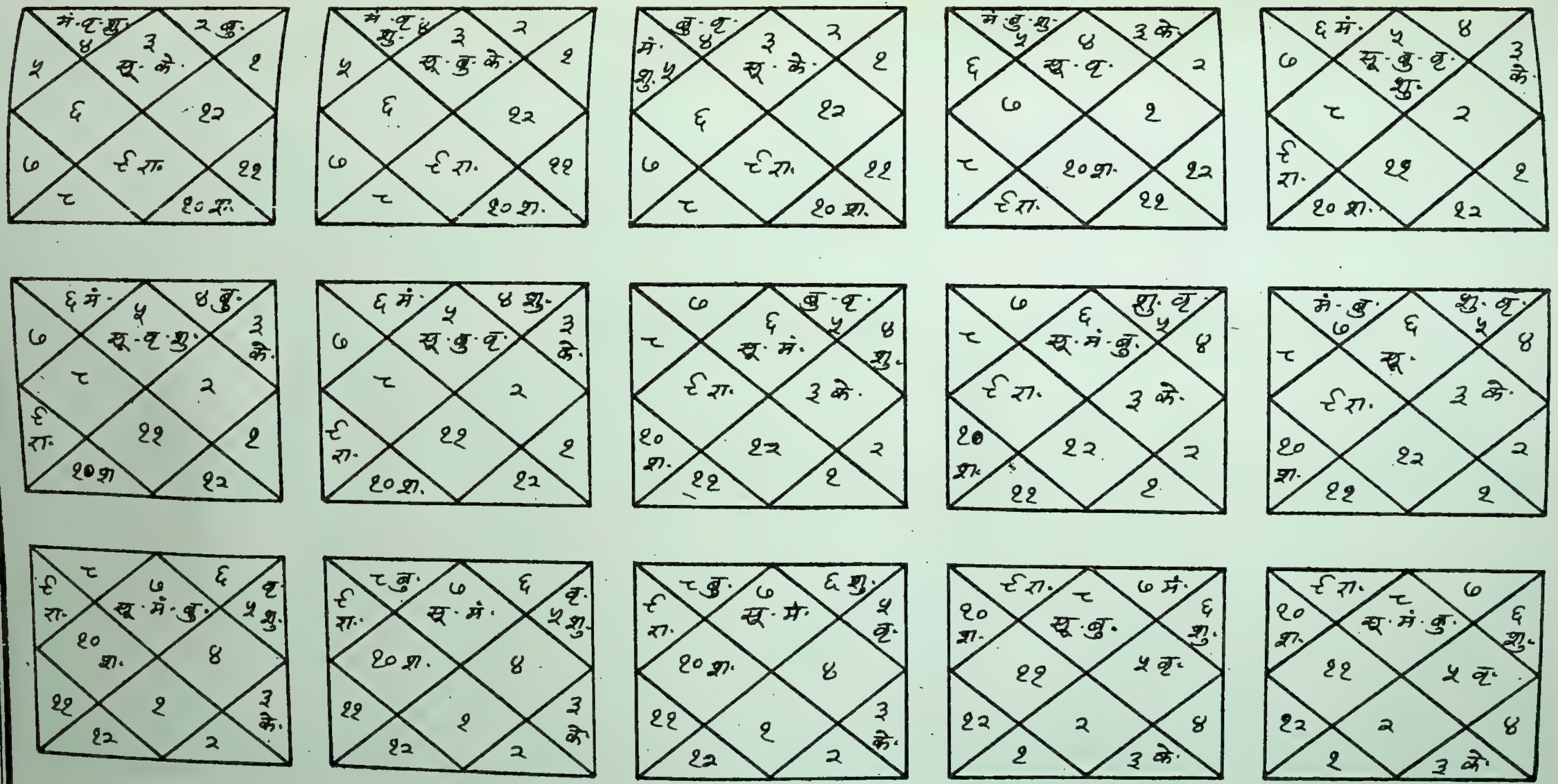

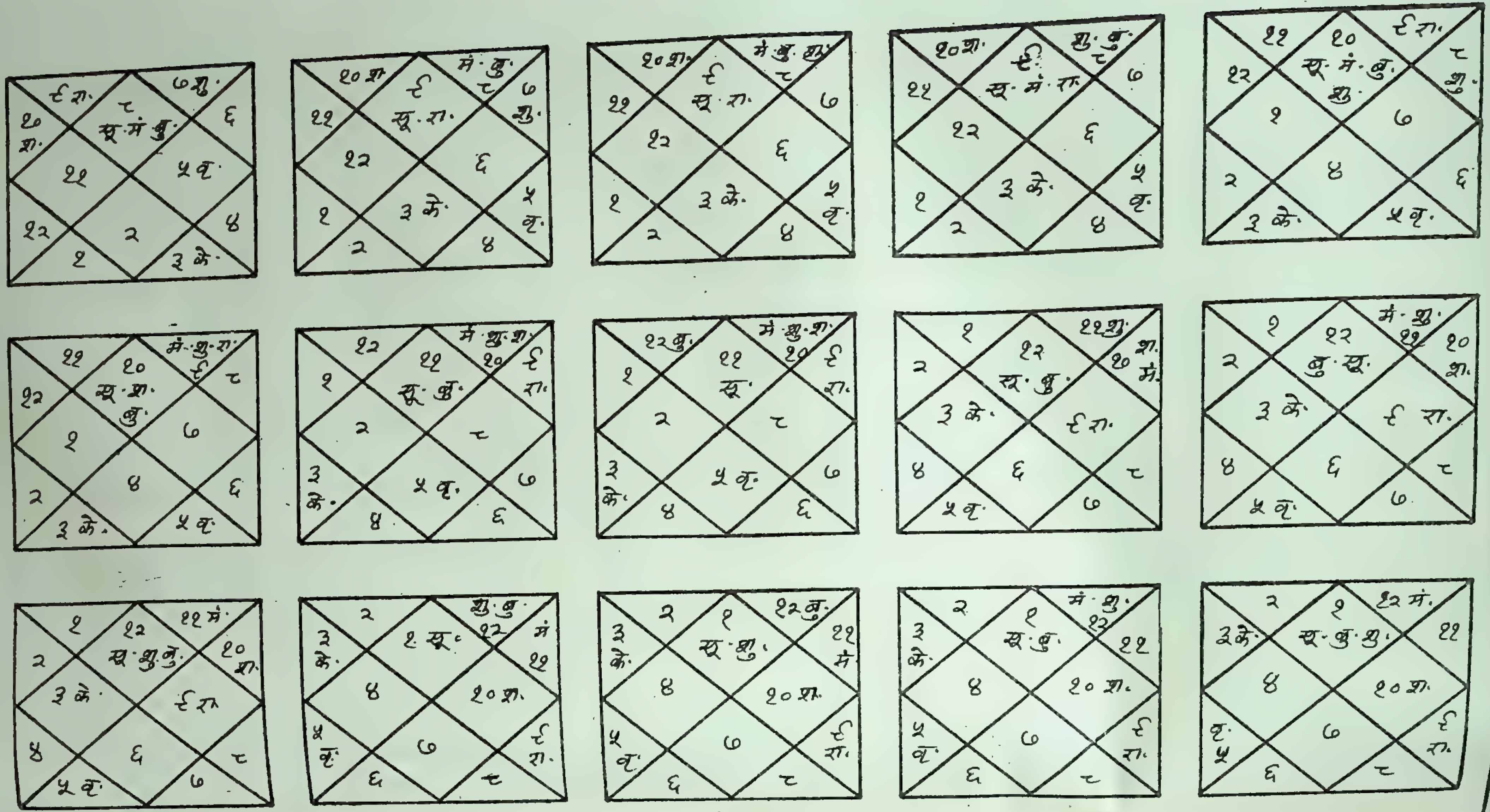

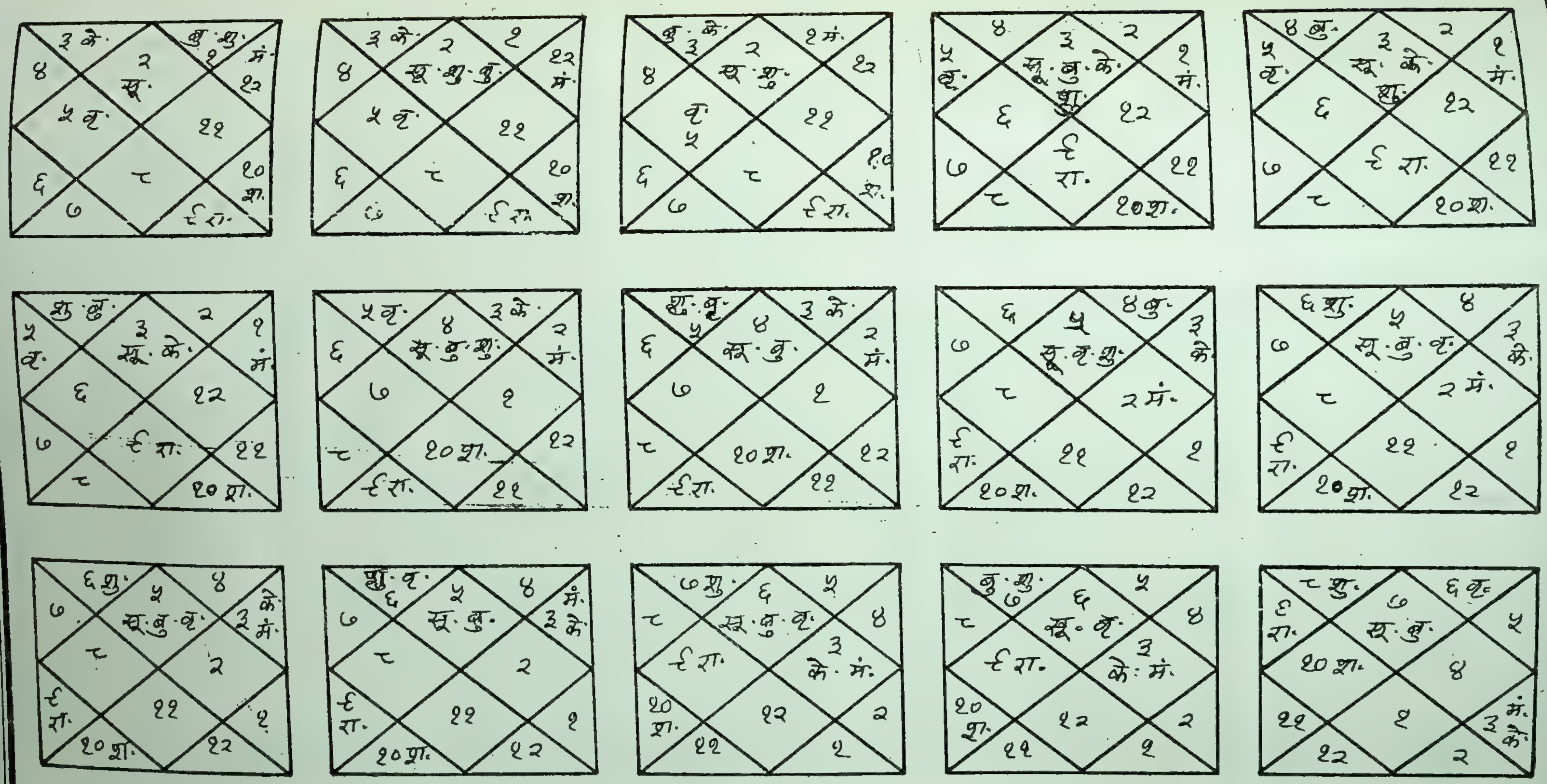

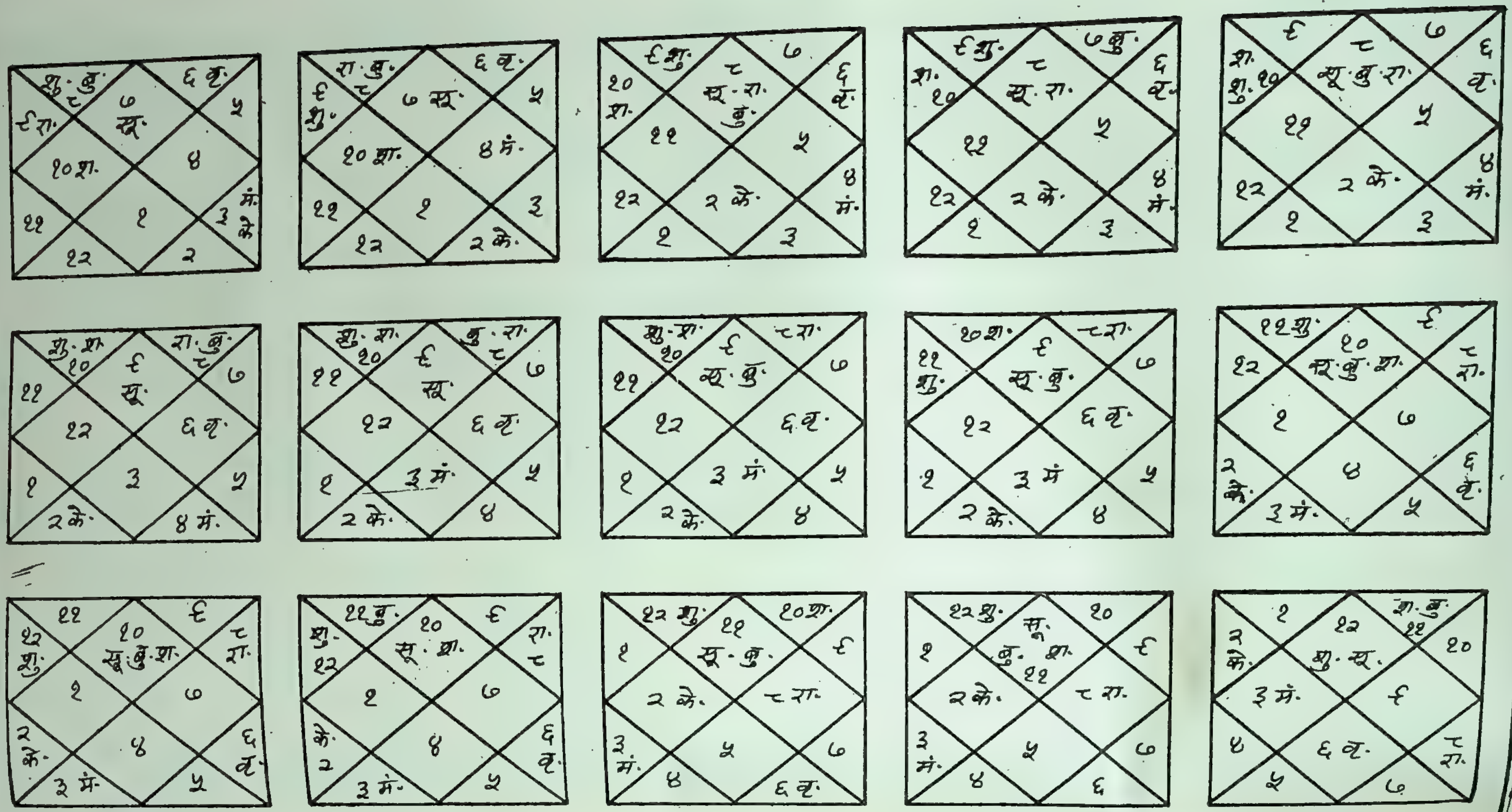

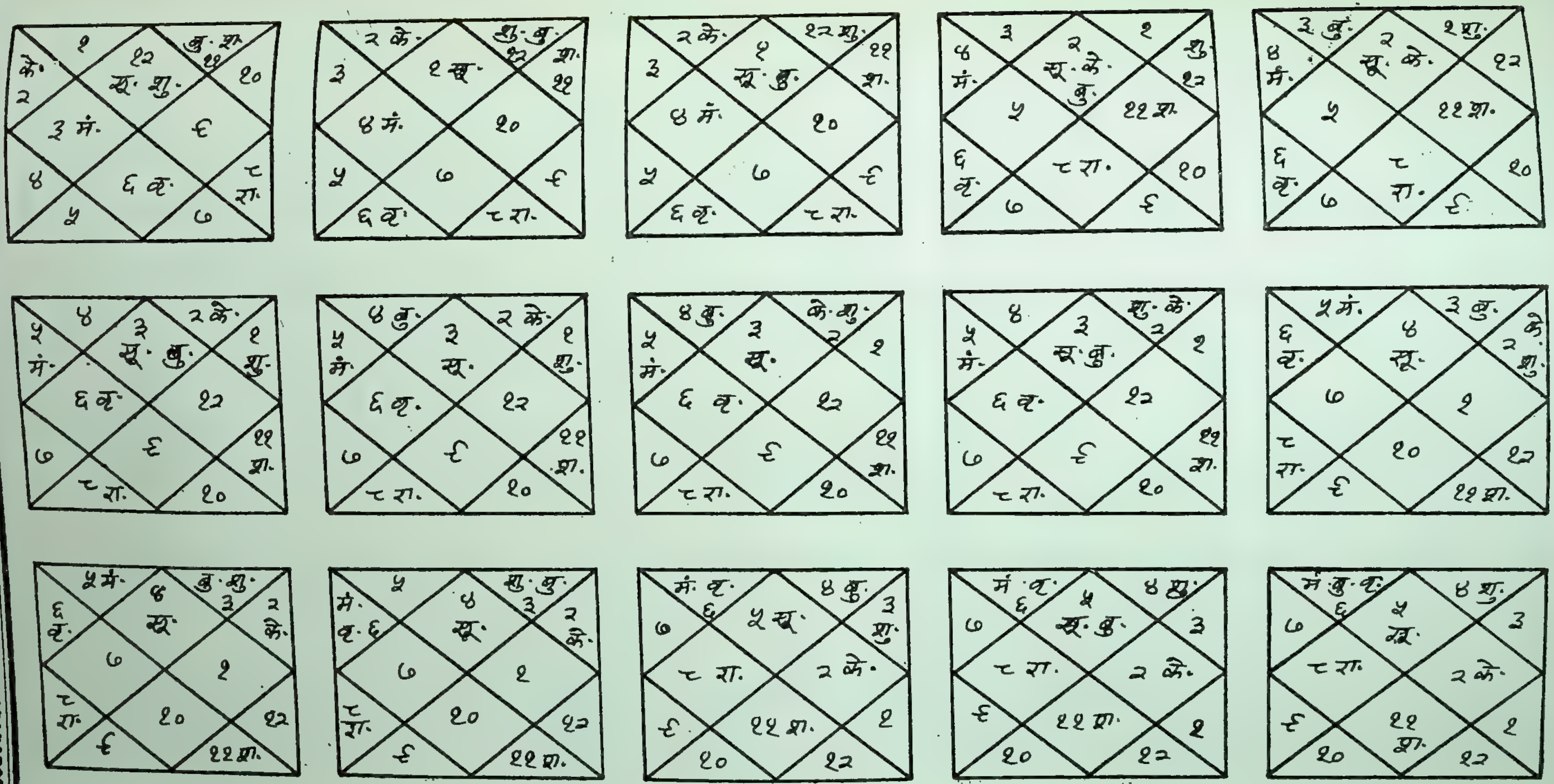

कु० प०

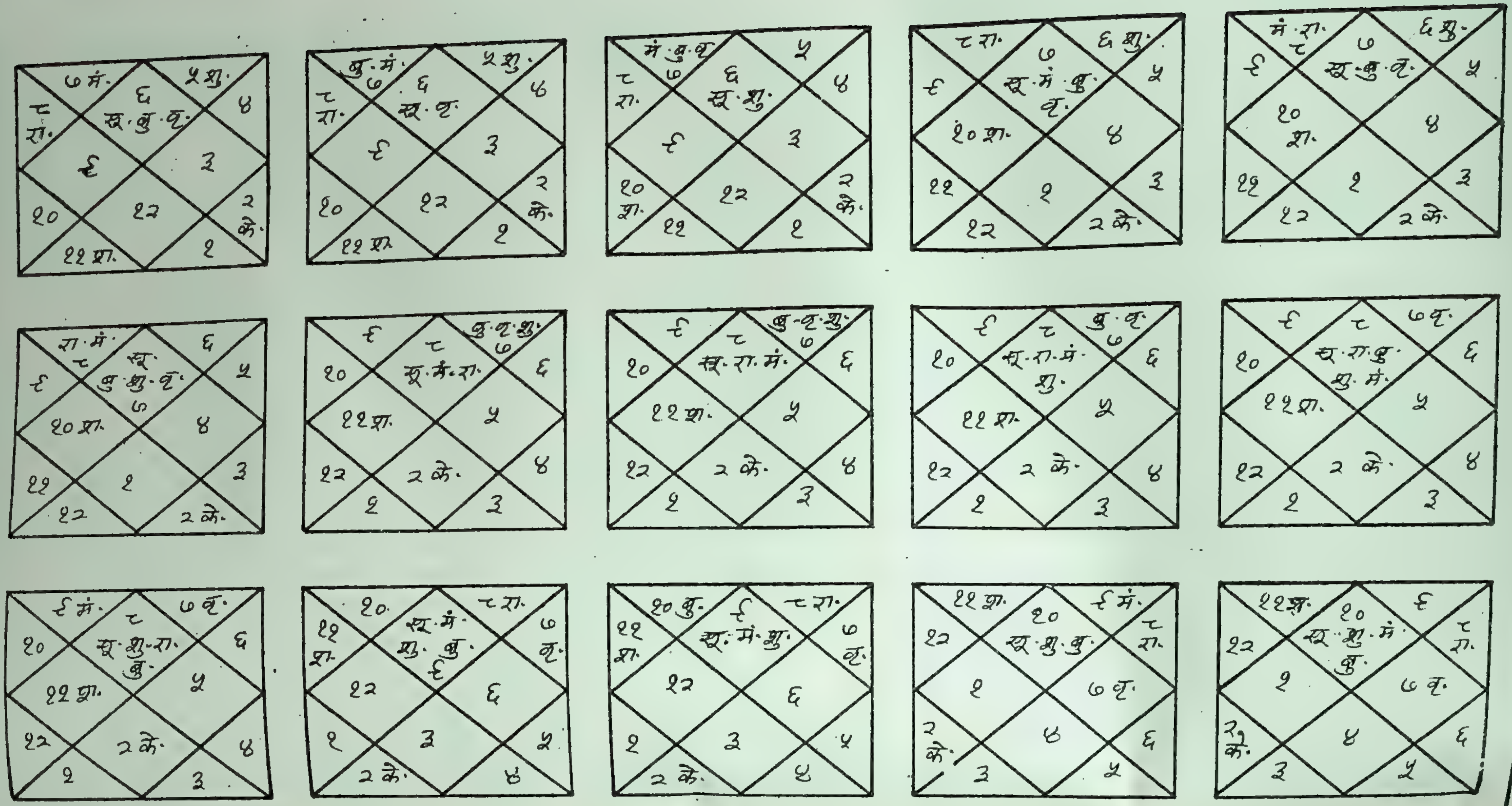

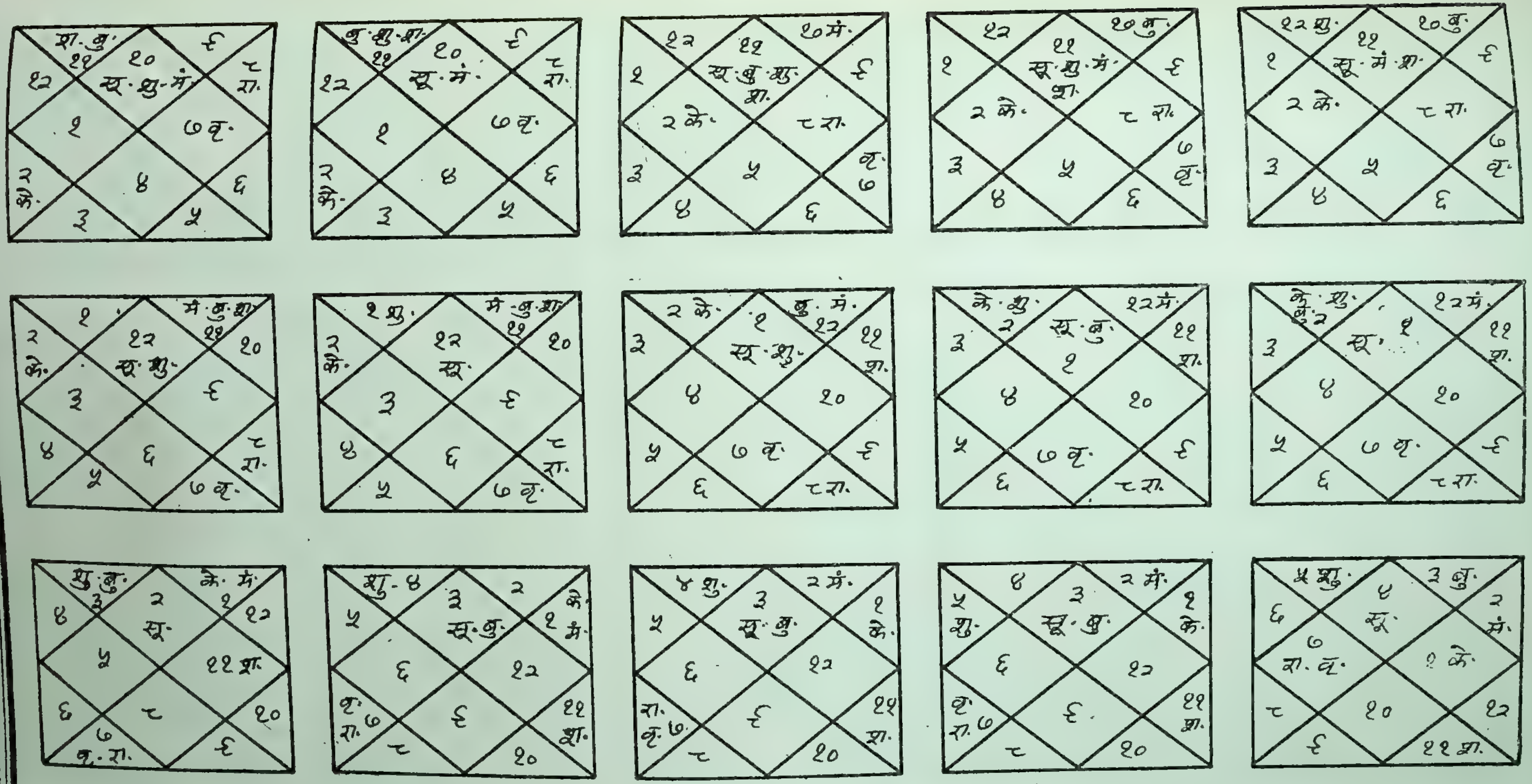

कु० प०

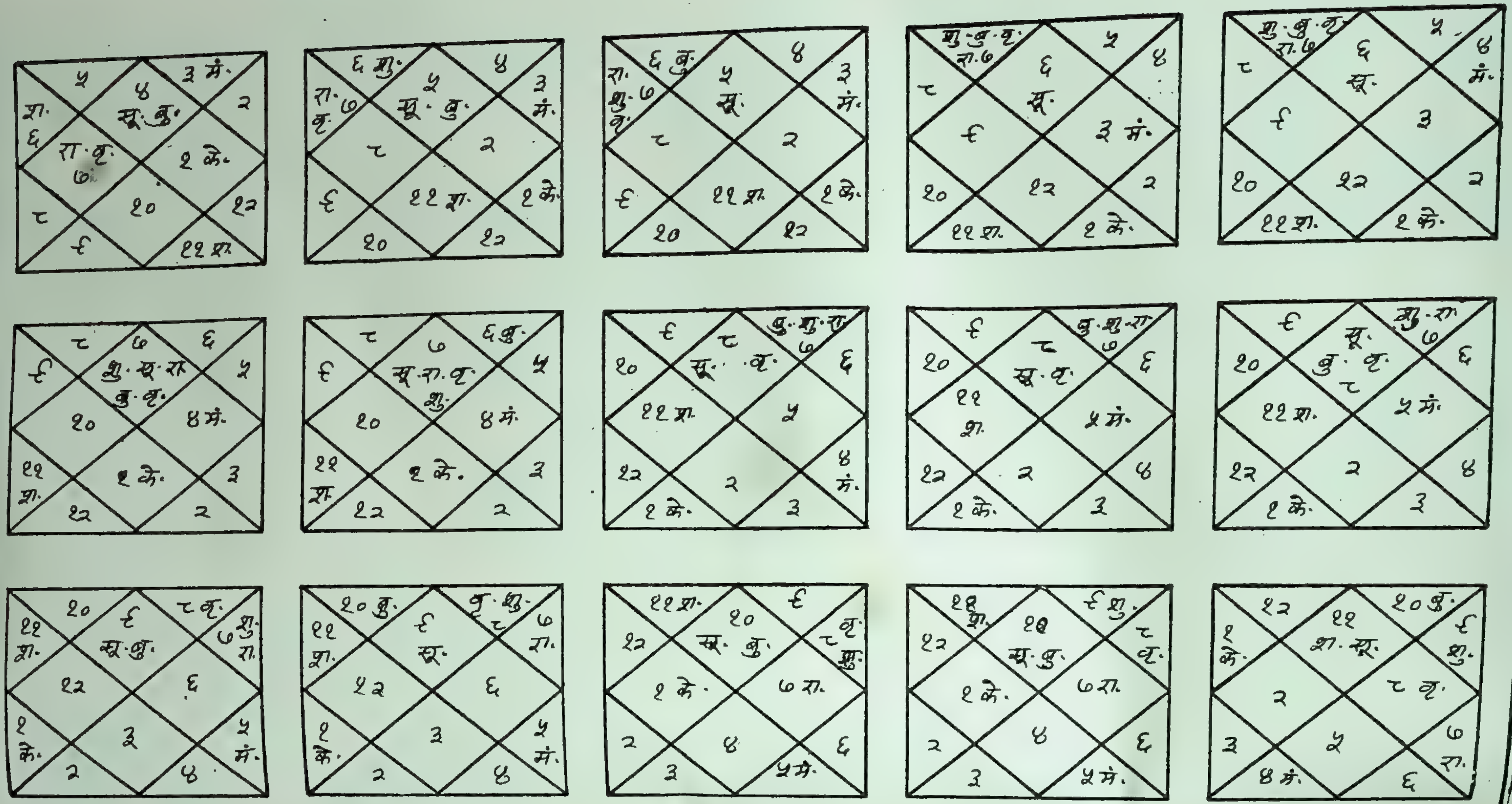

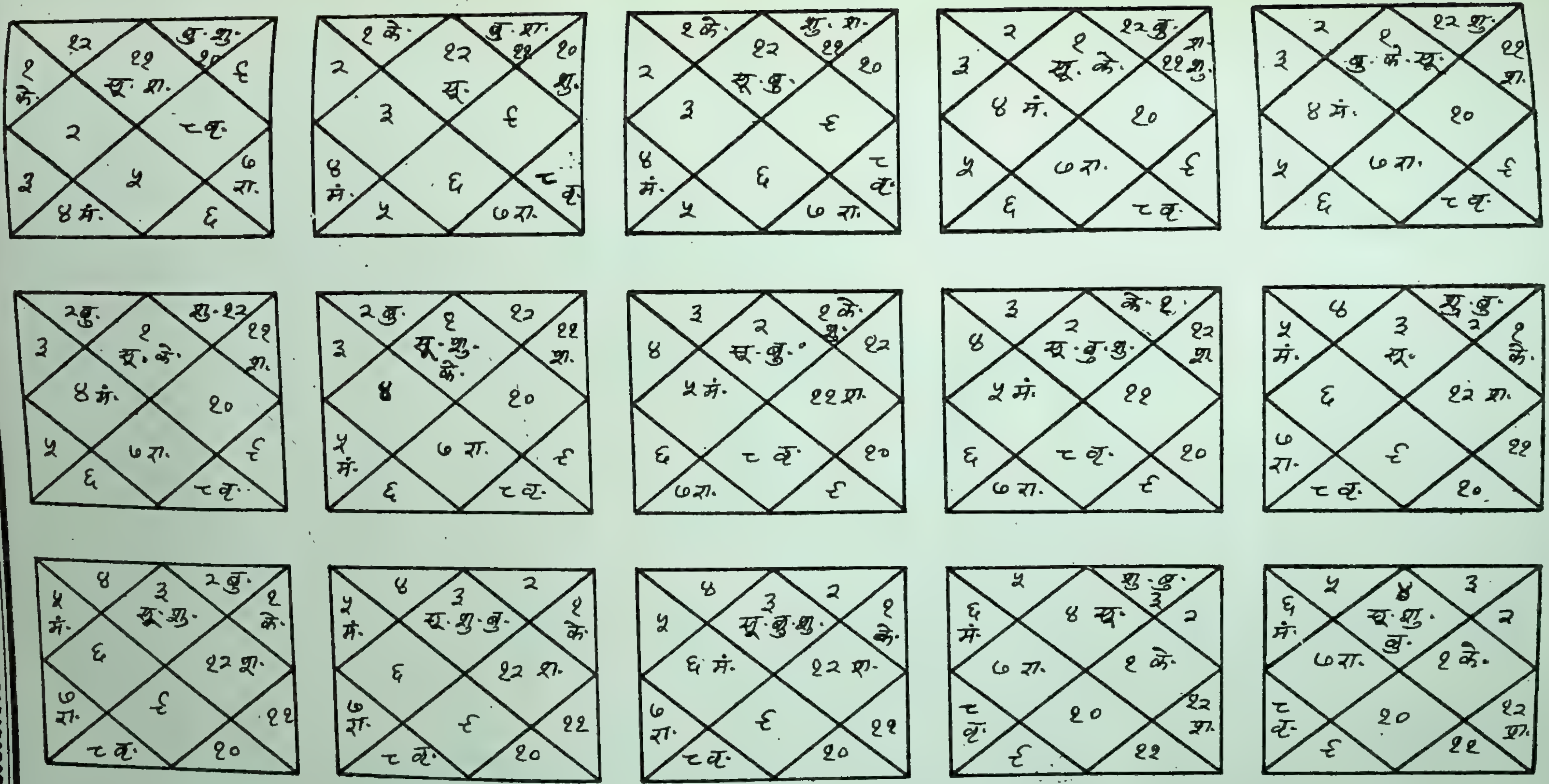

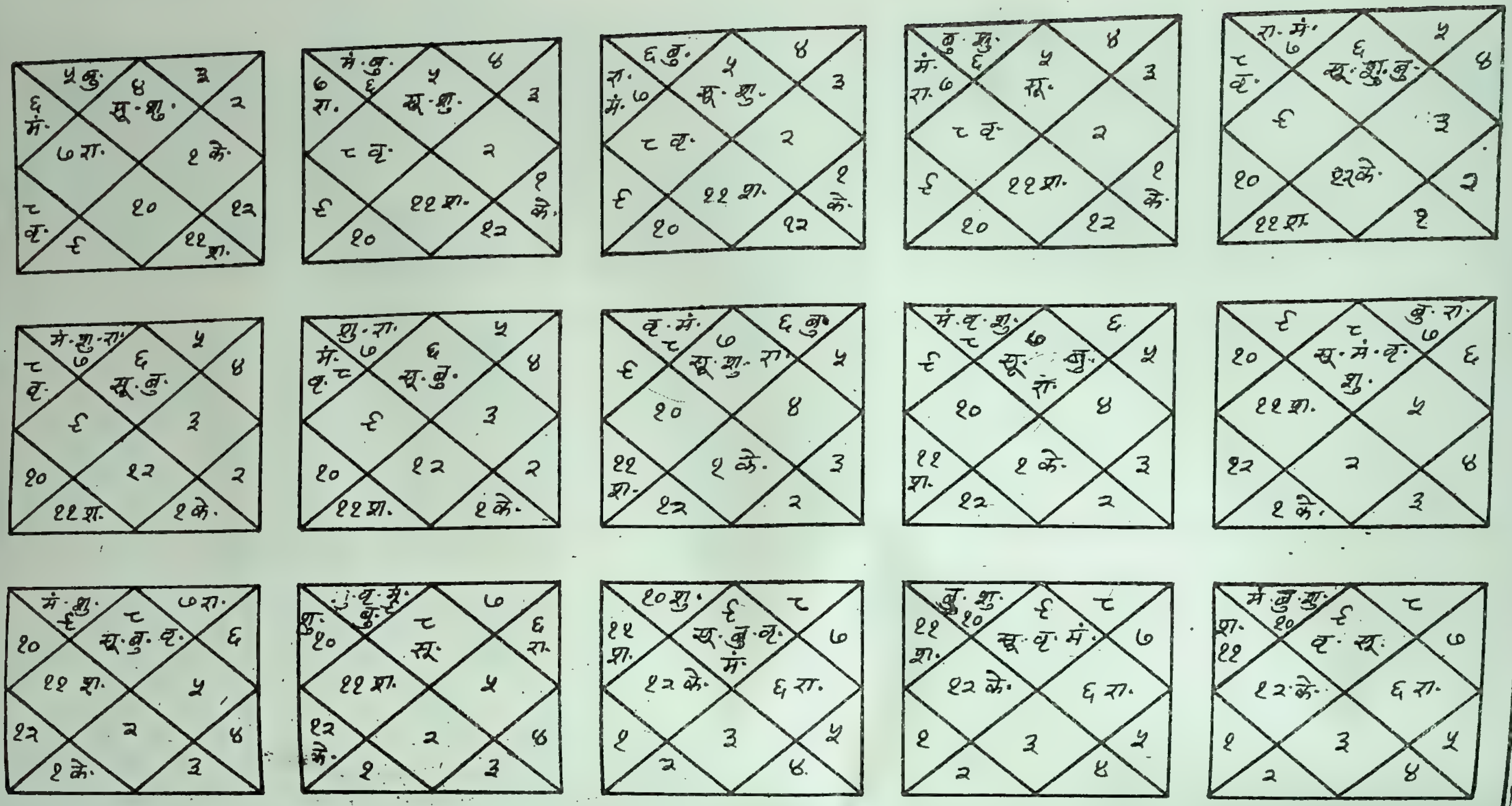

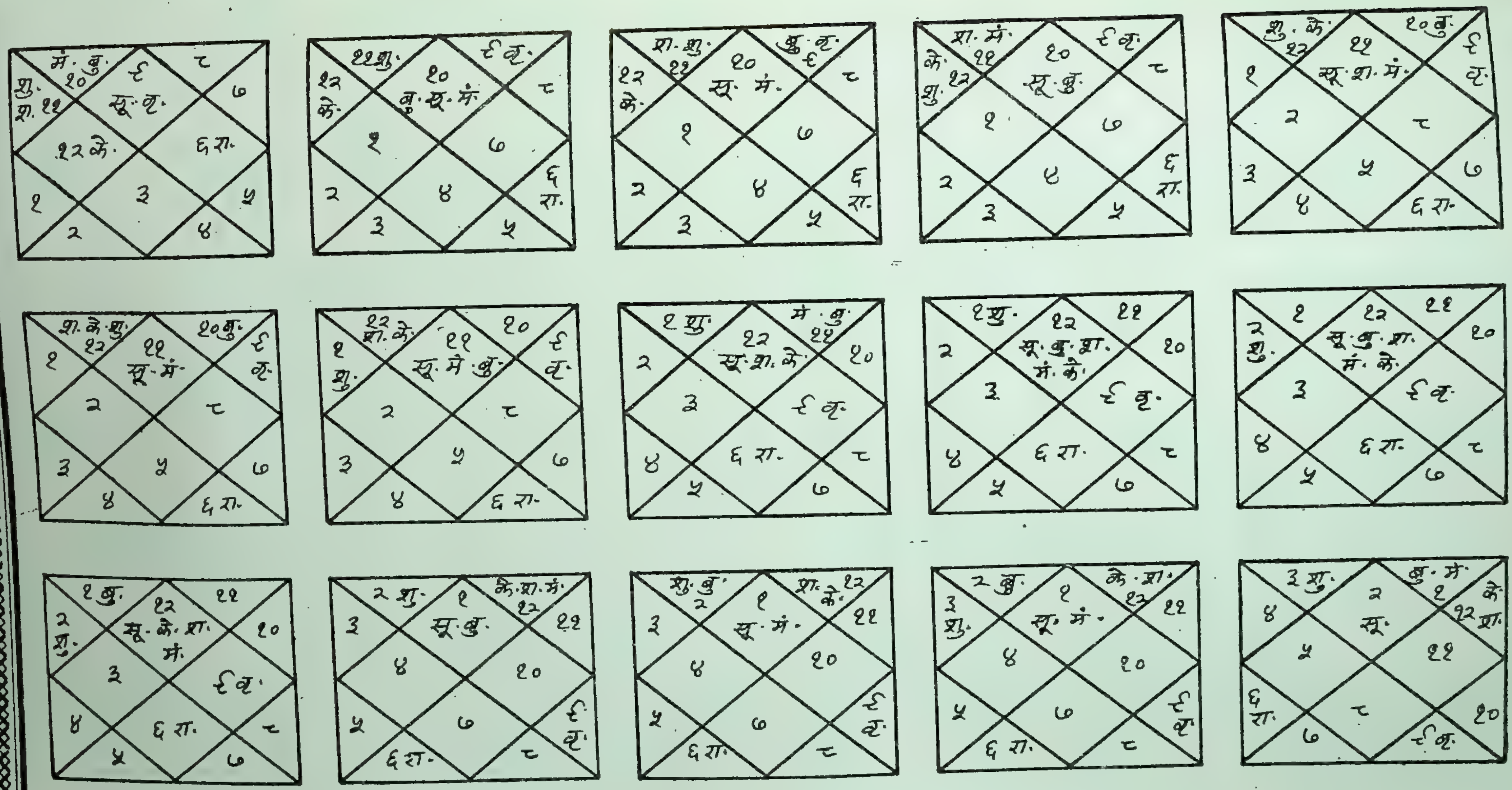

कु० प०

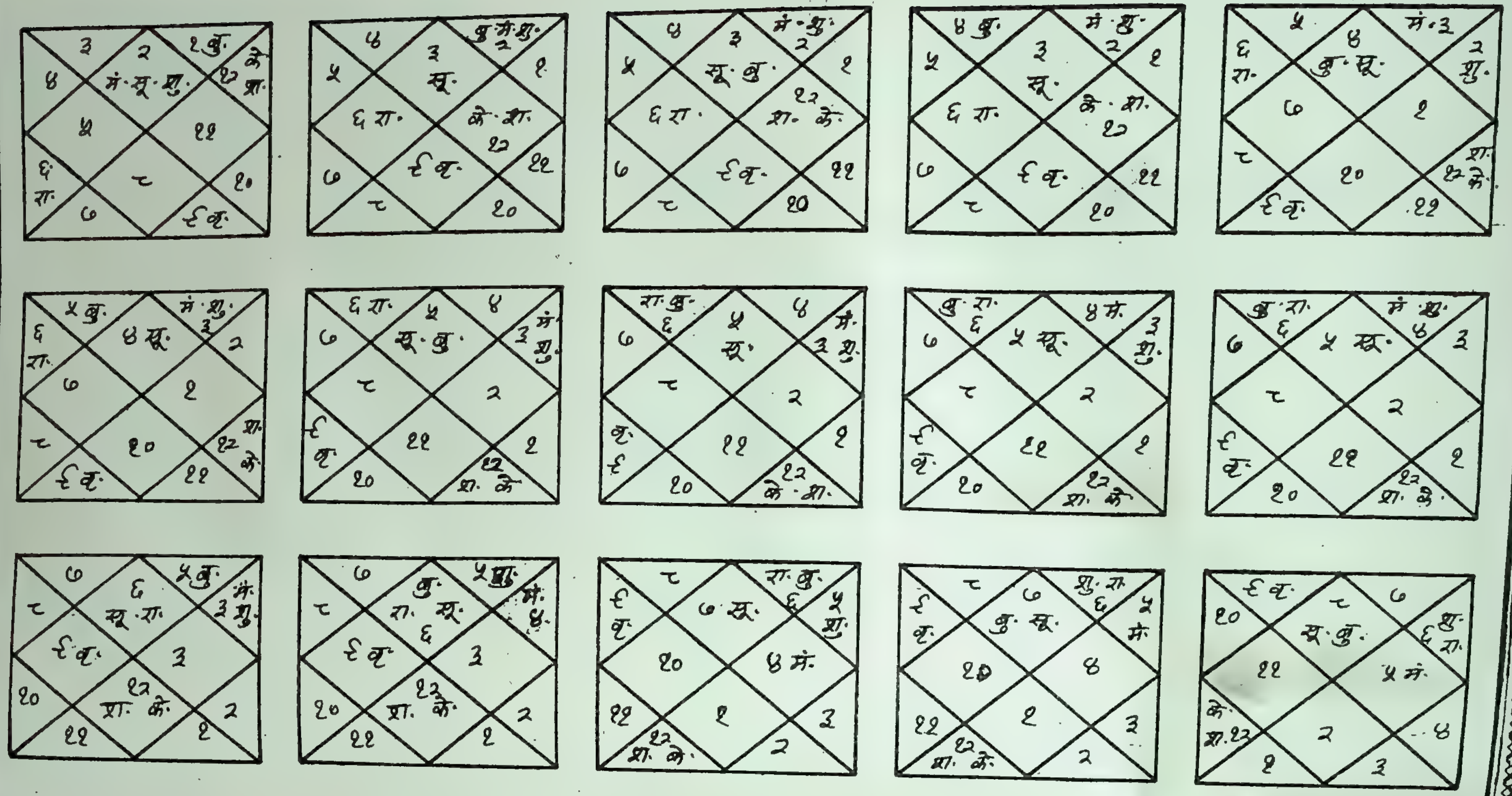

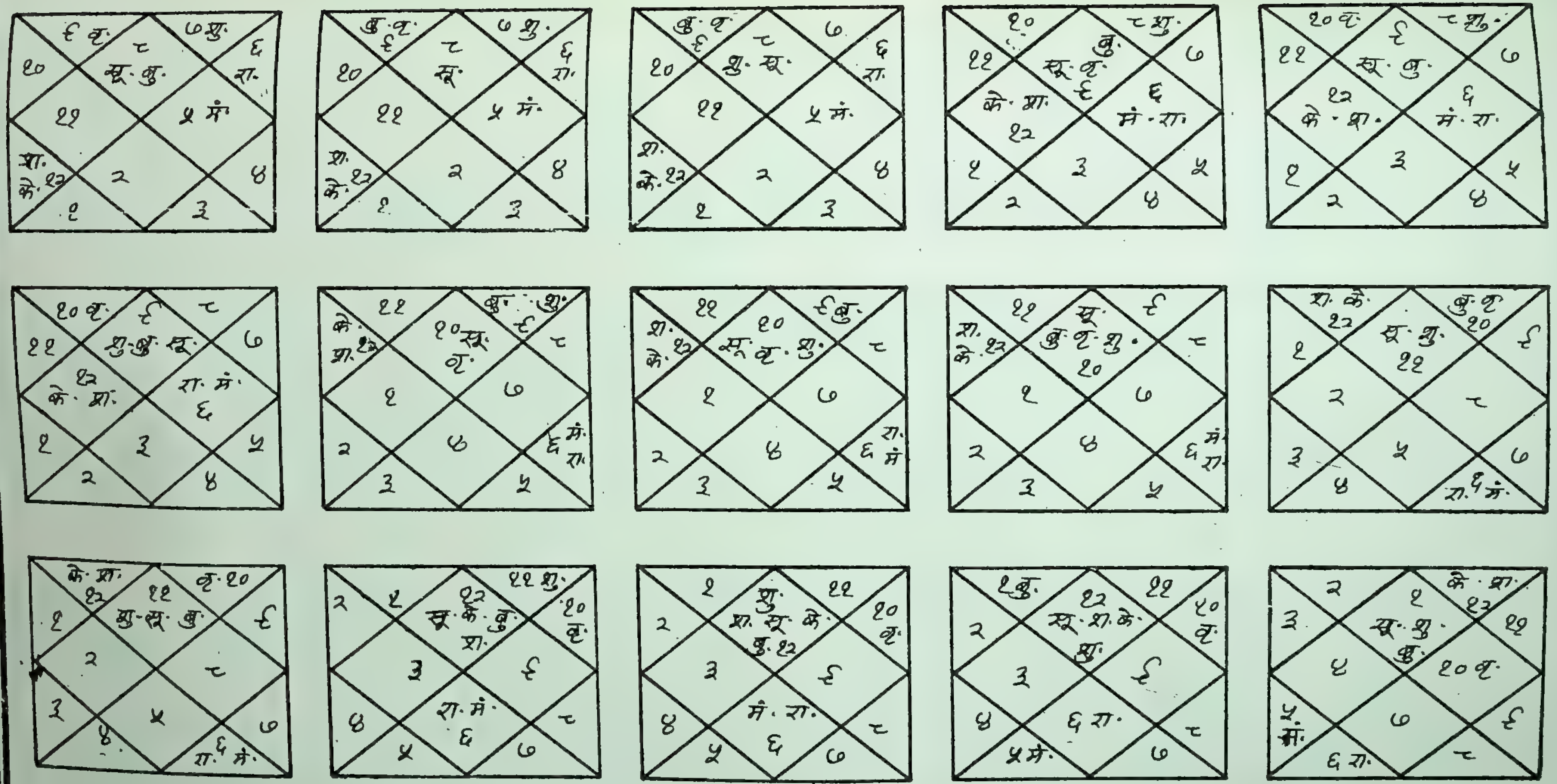

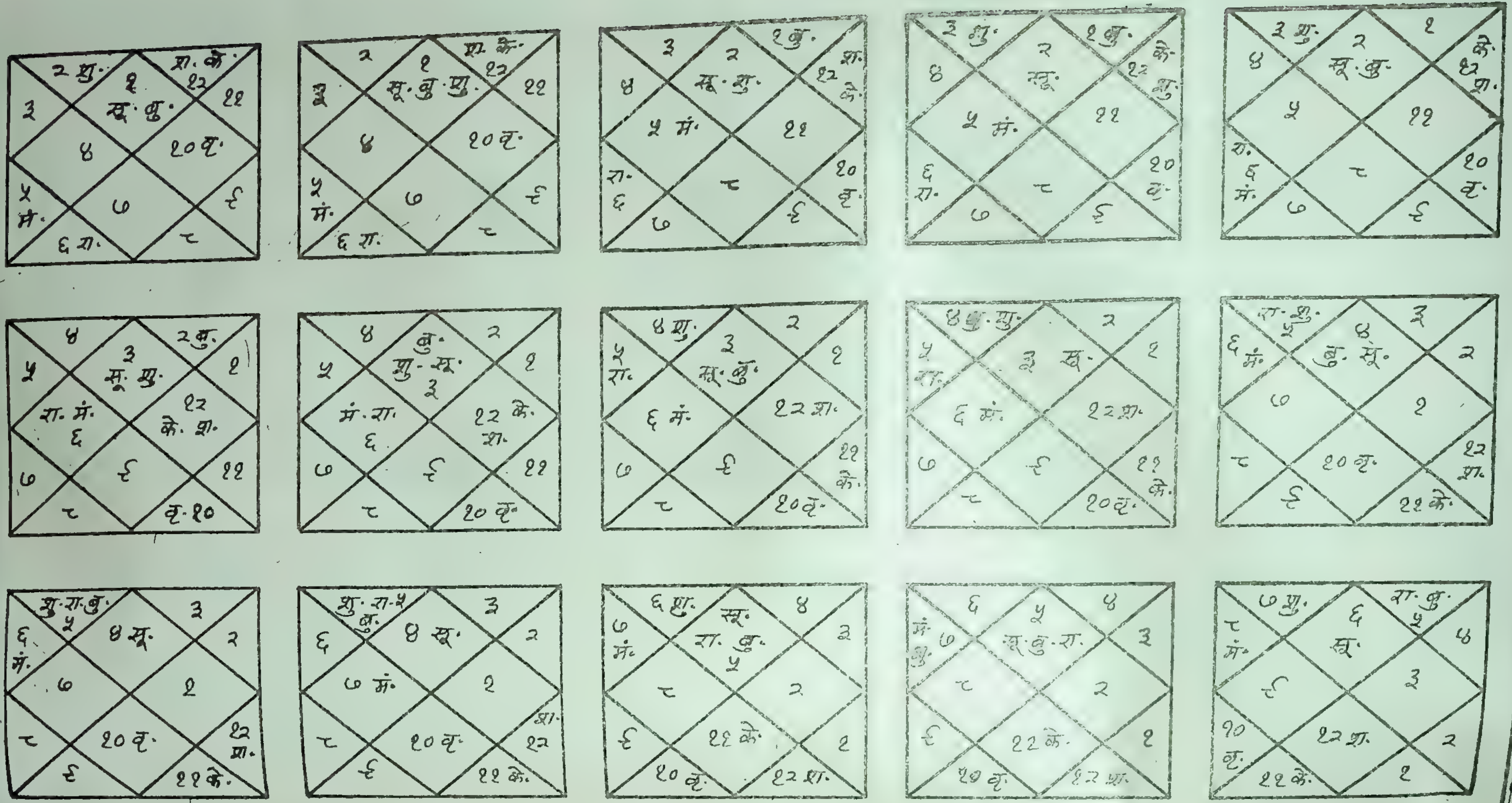

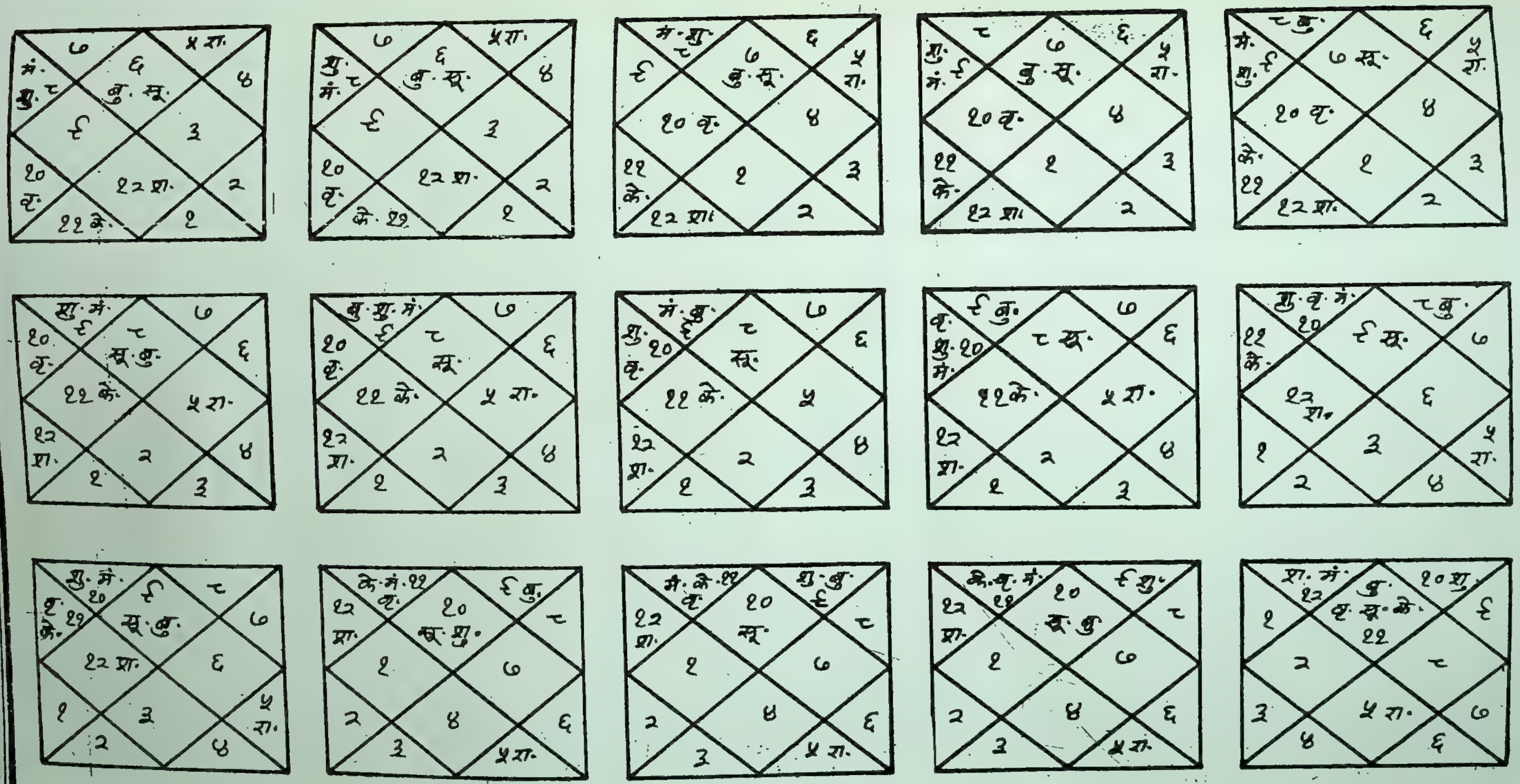

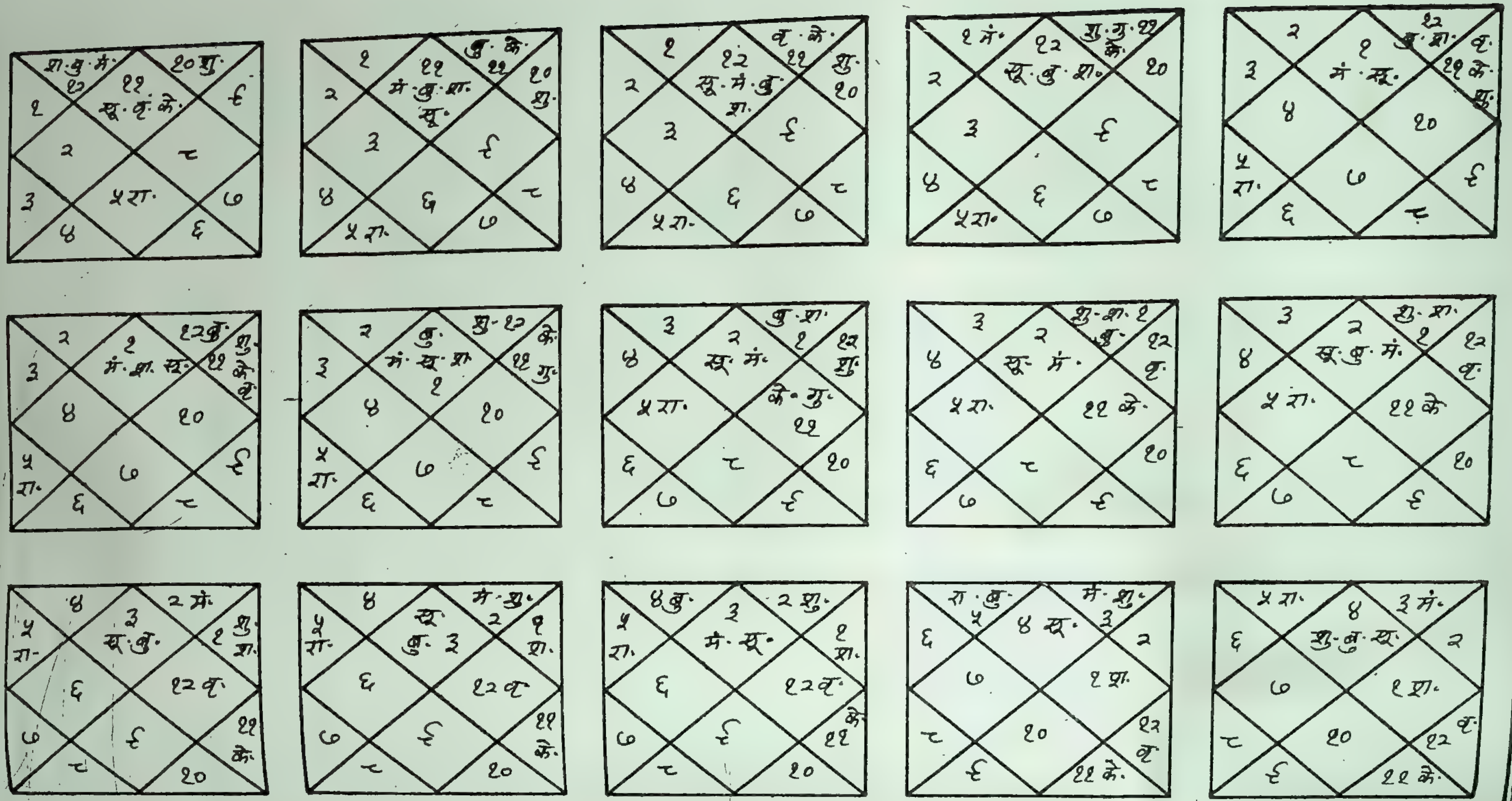

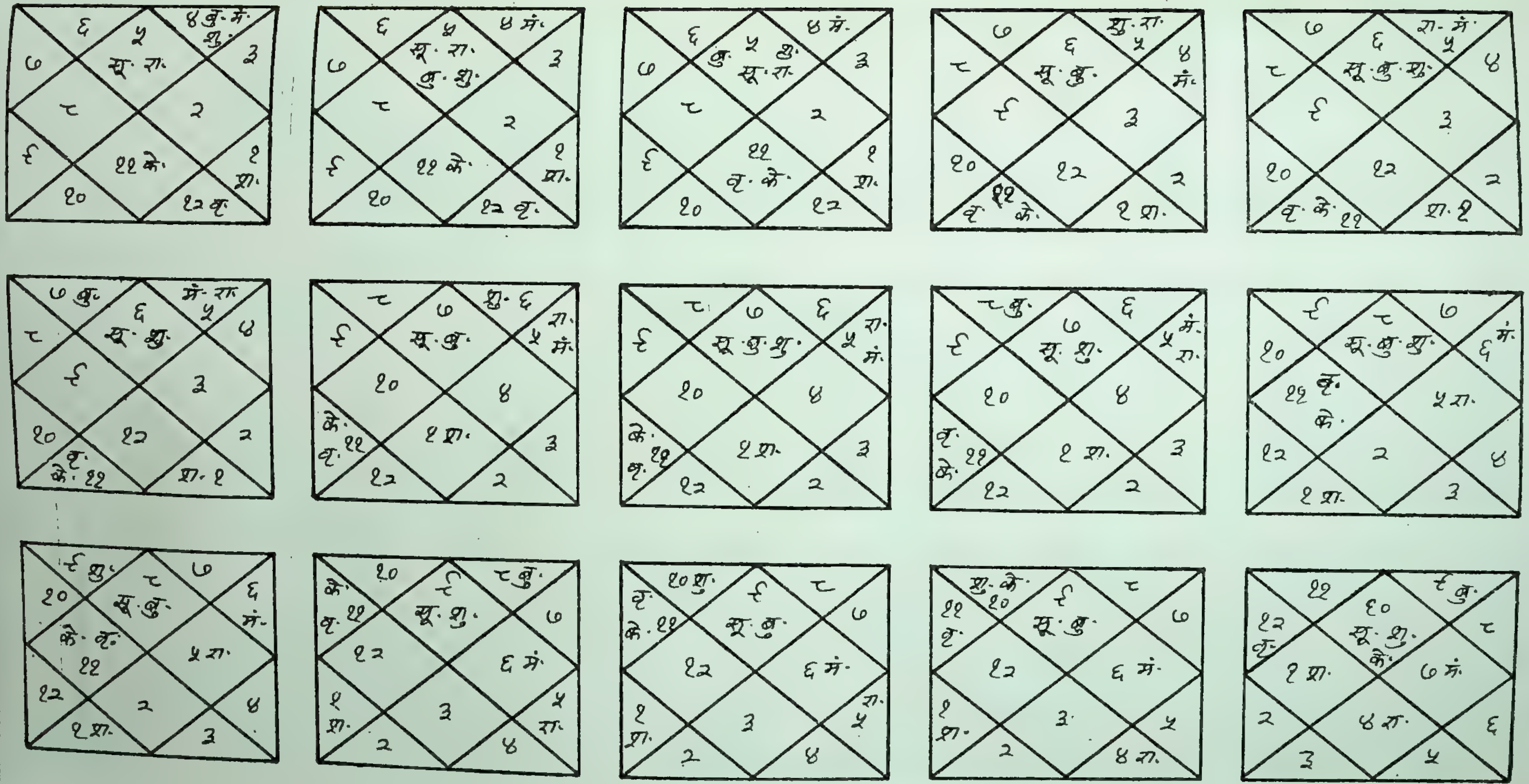

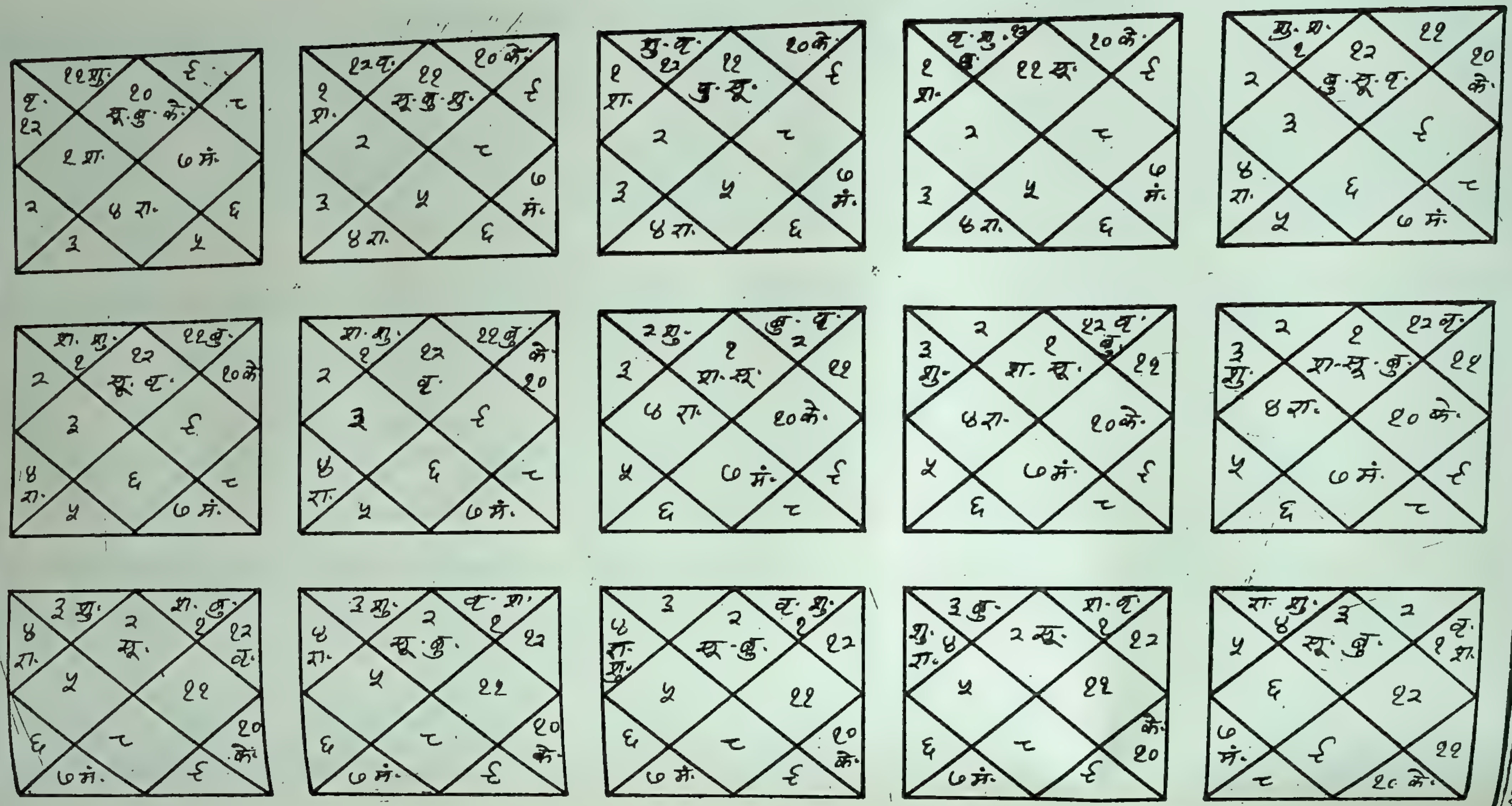

कु० प०

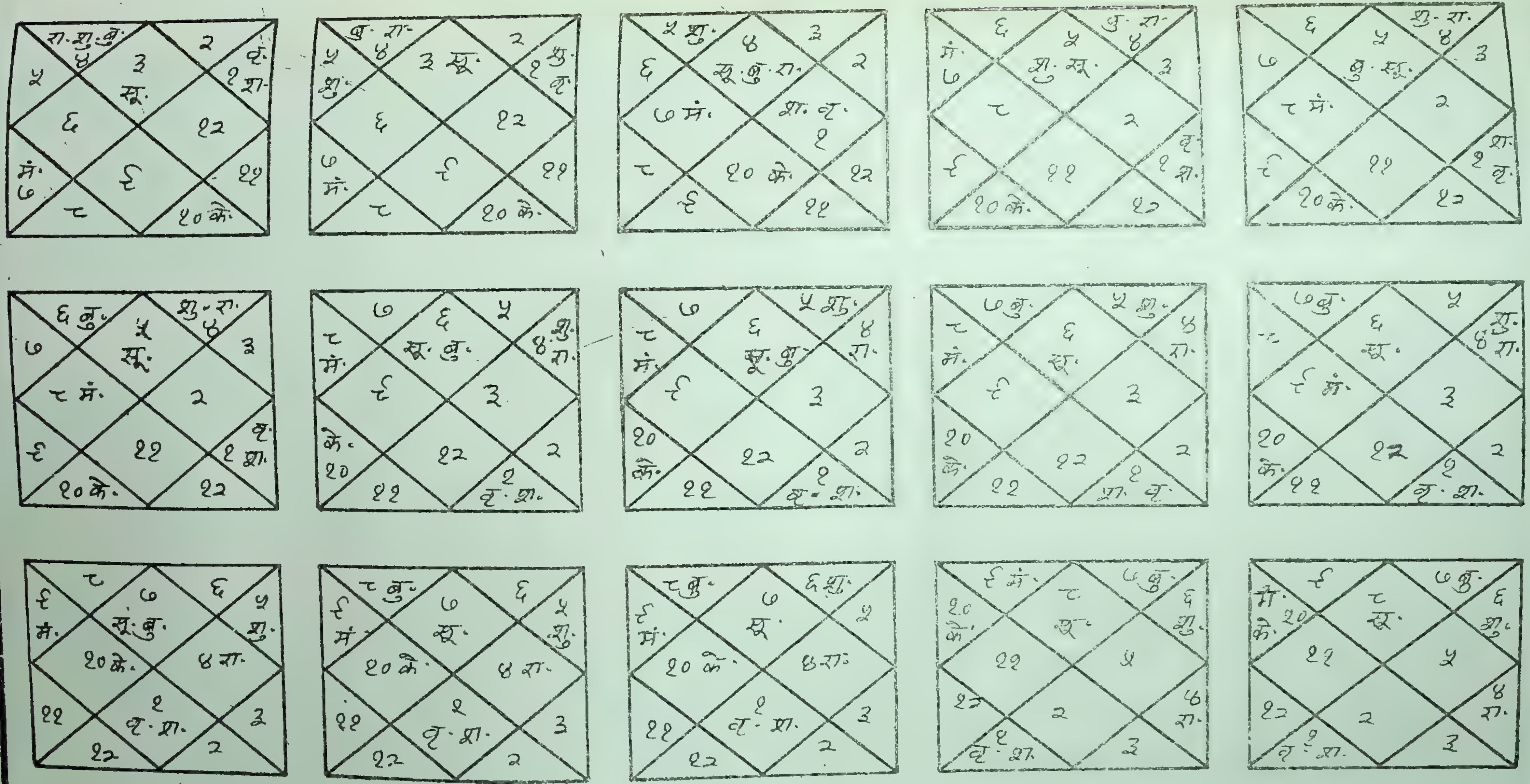

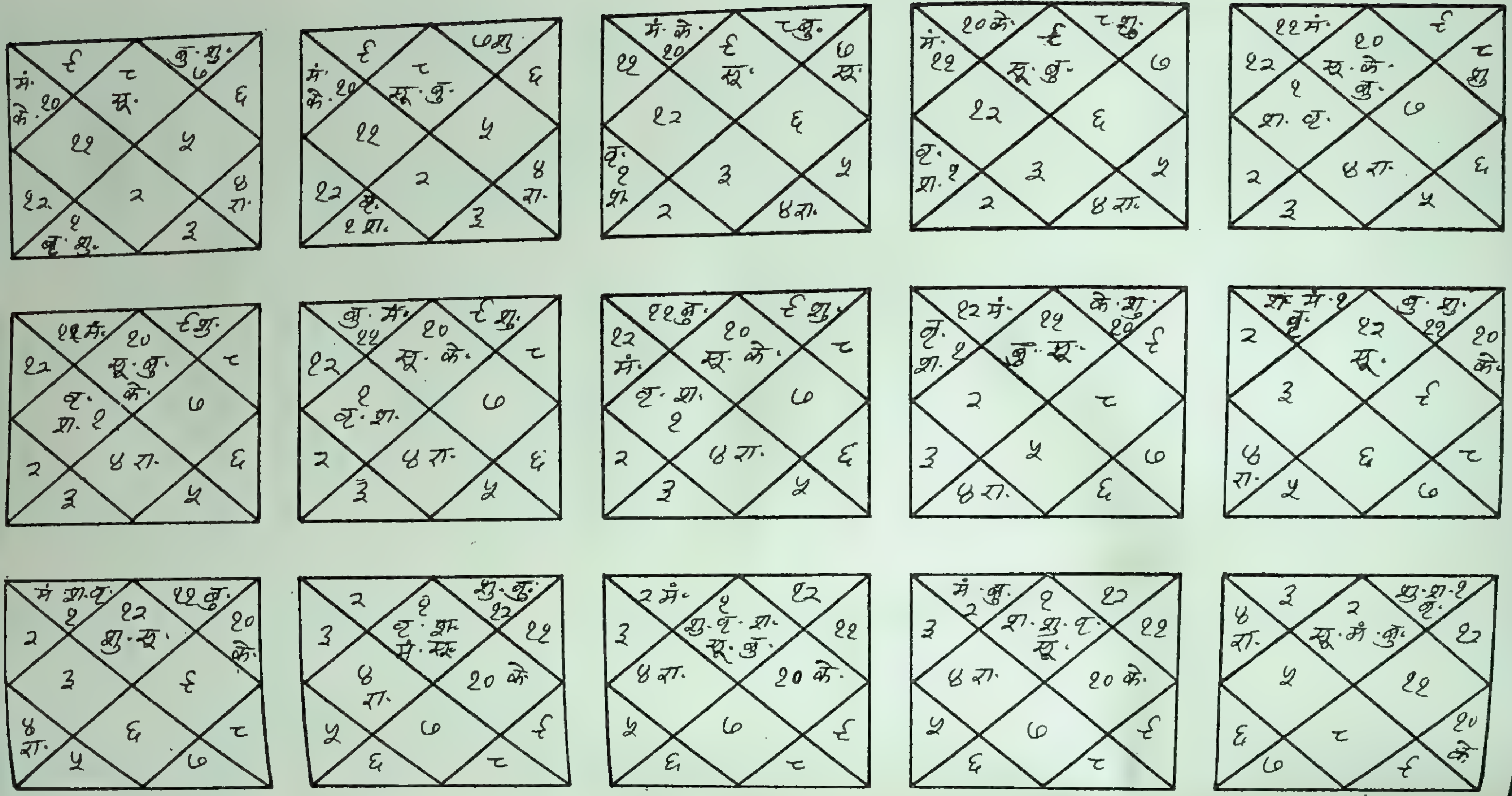

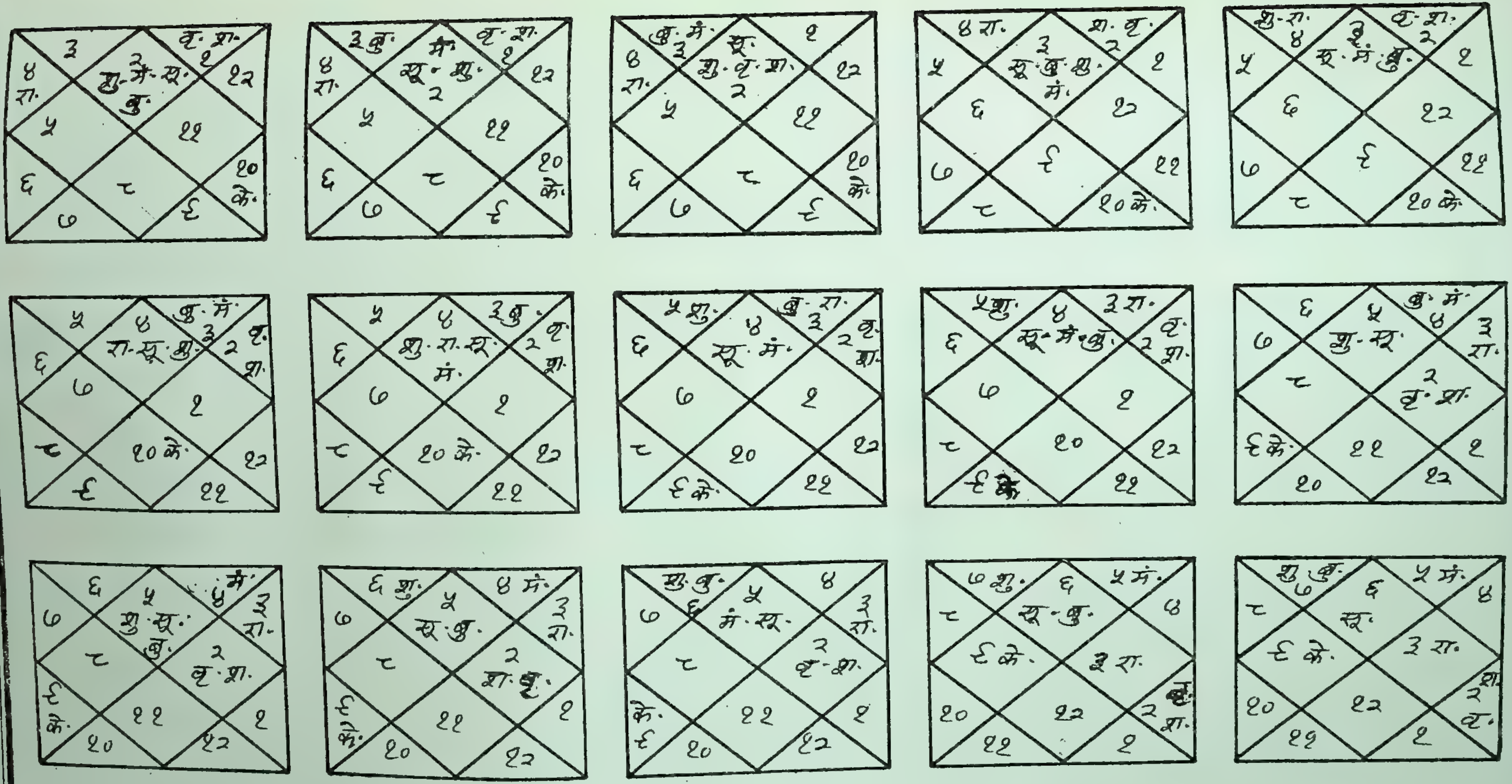

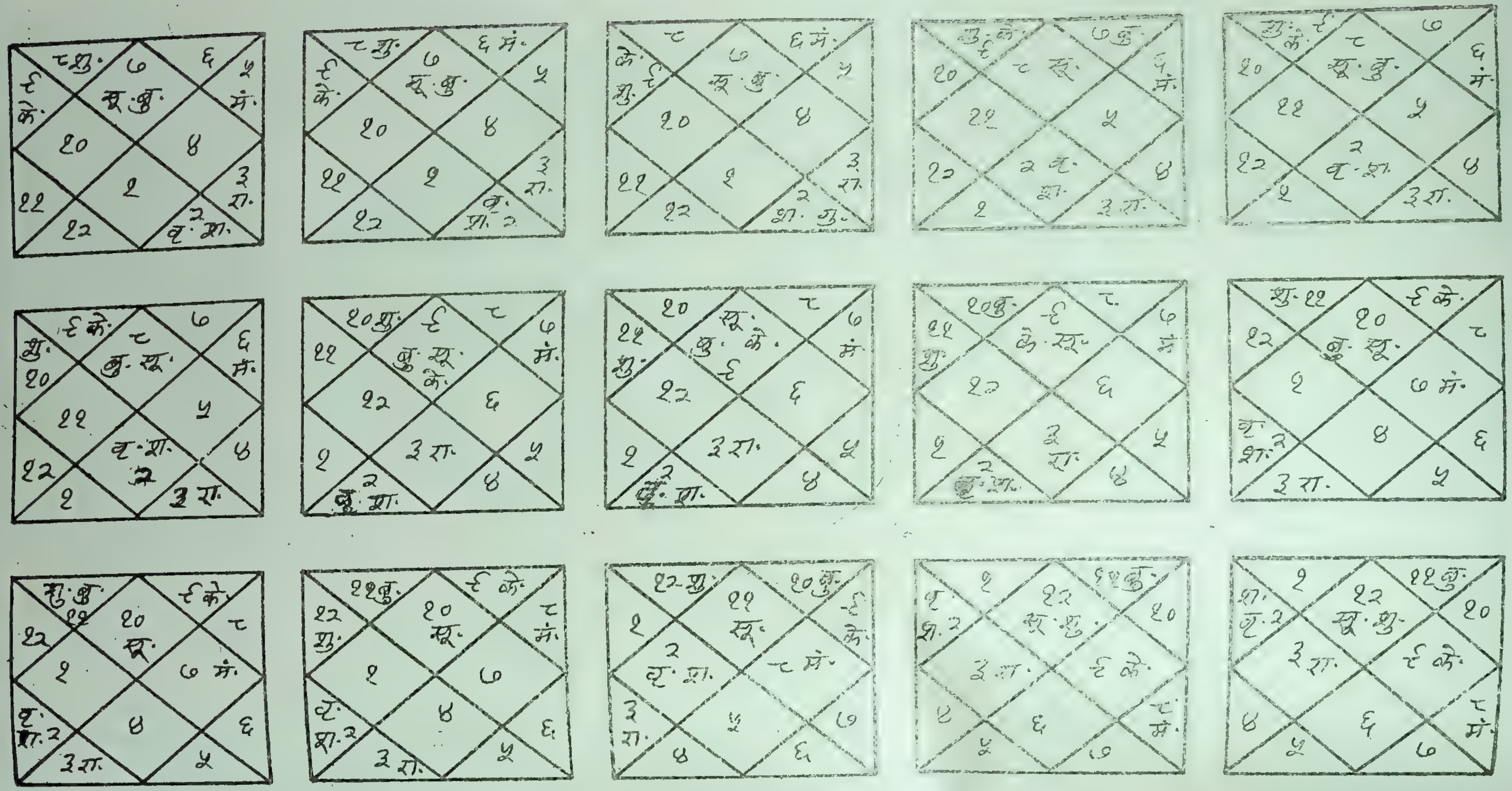

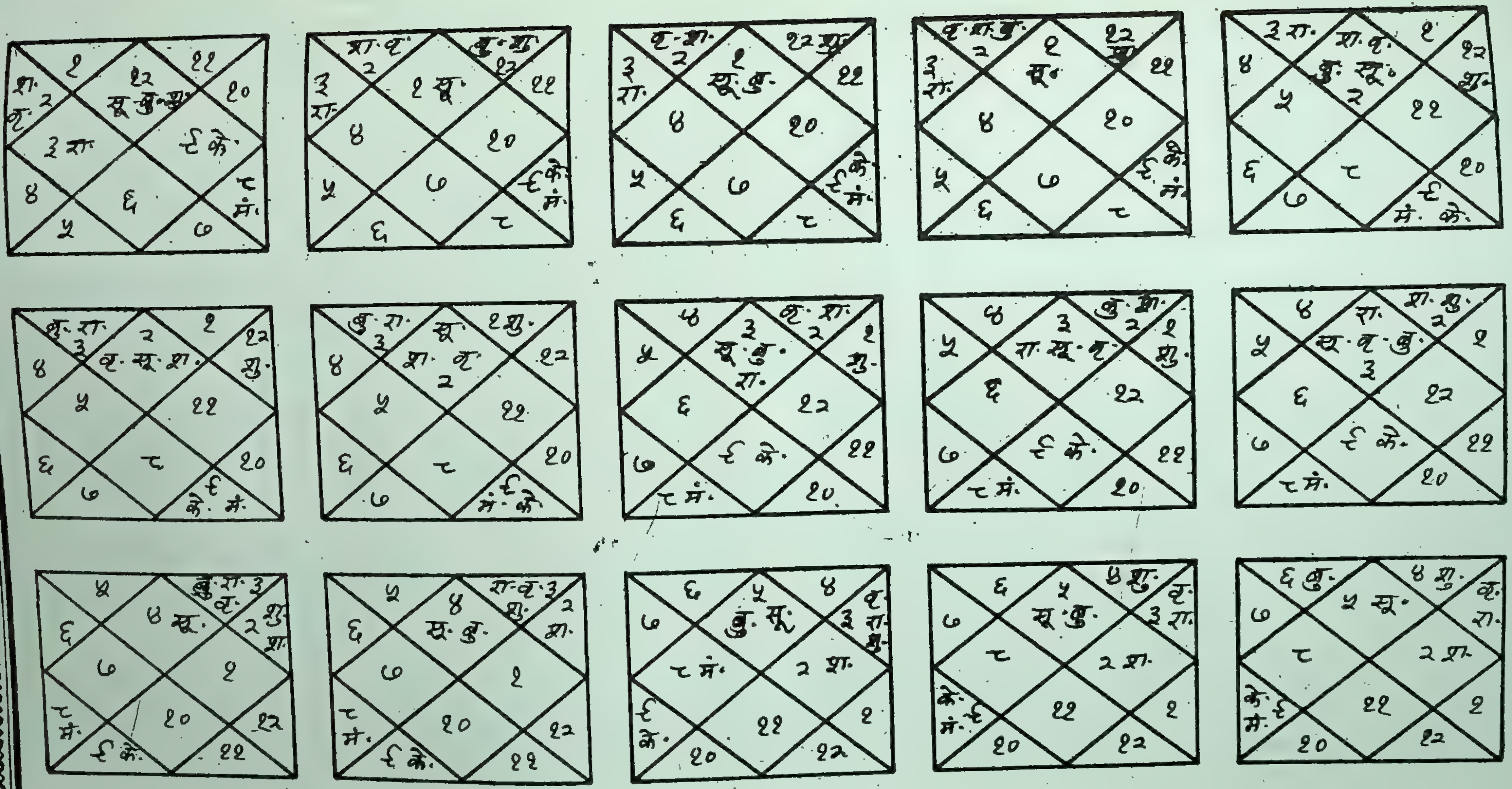

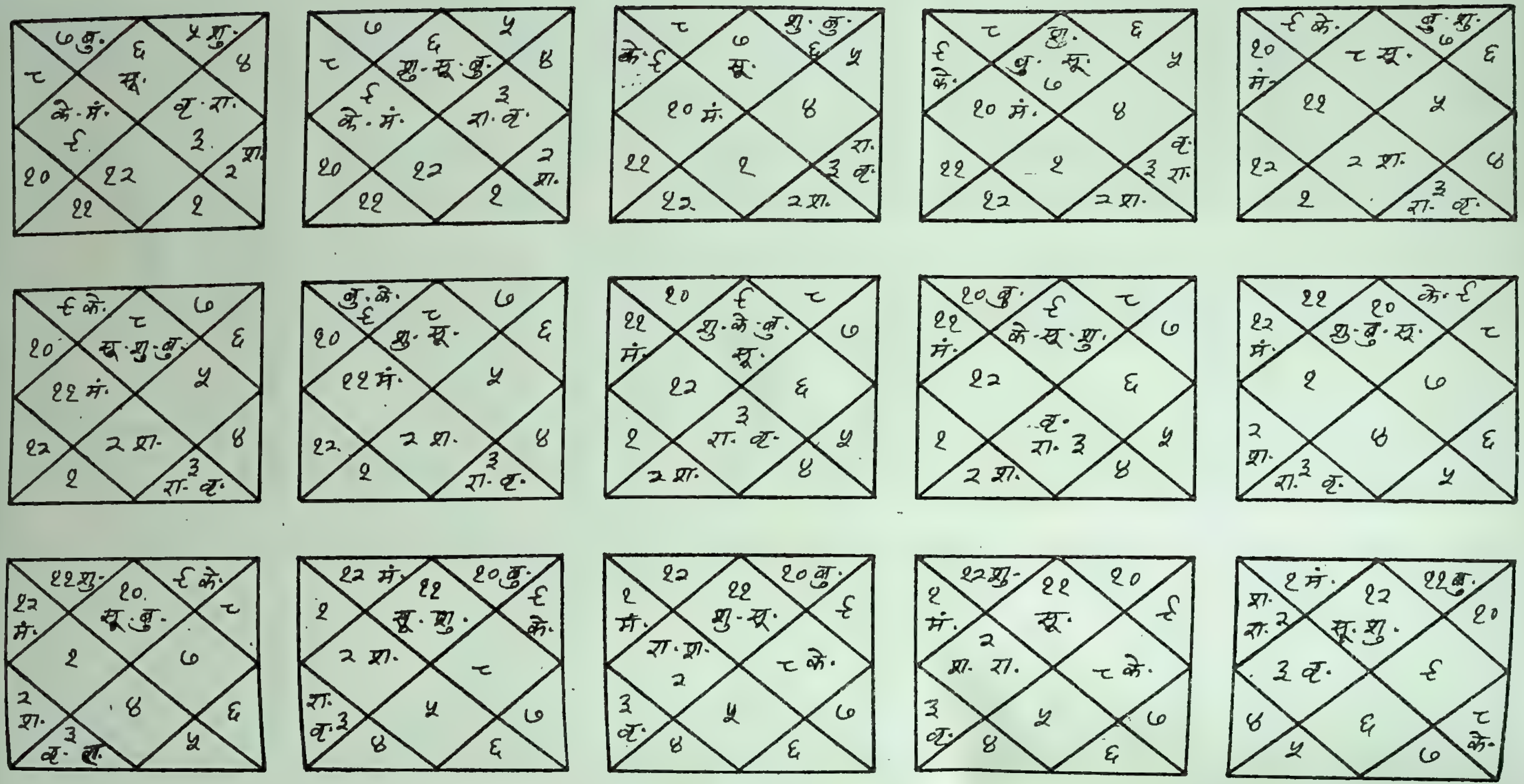

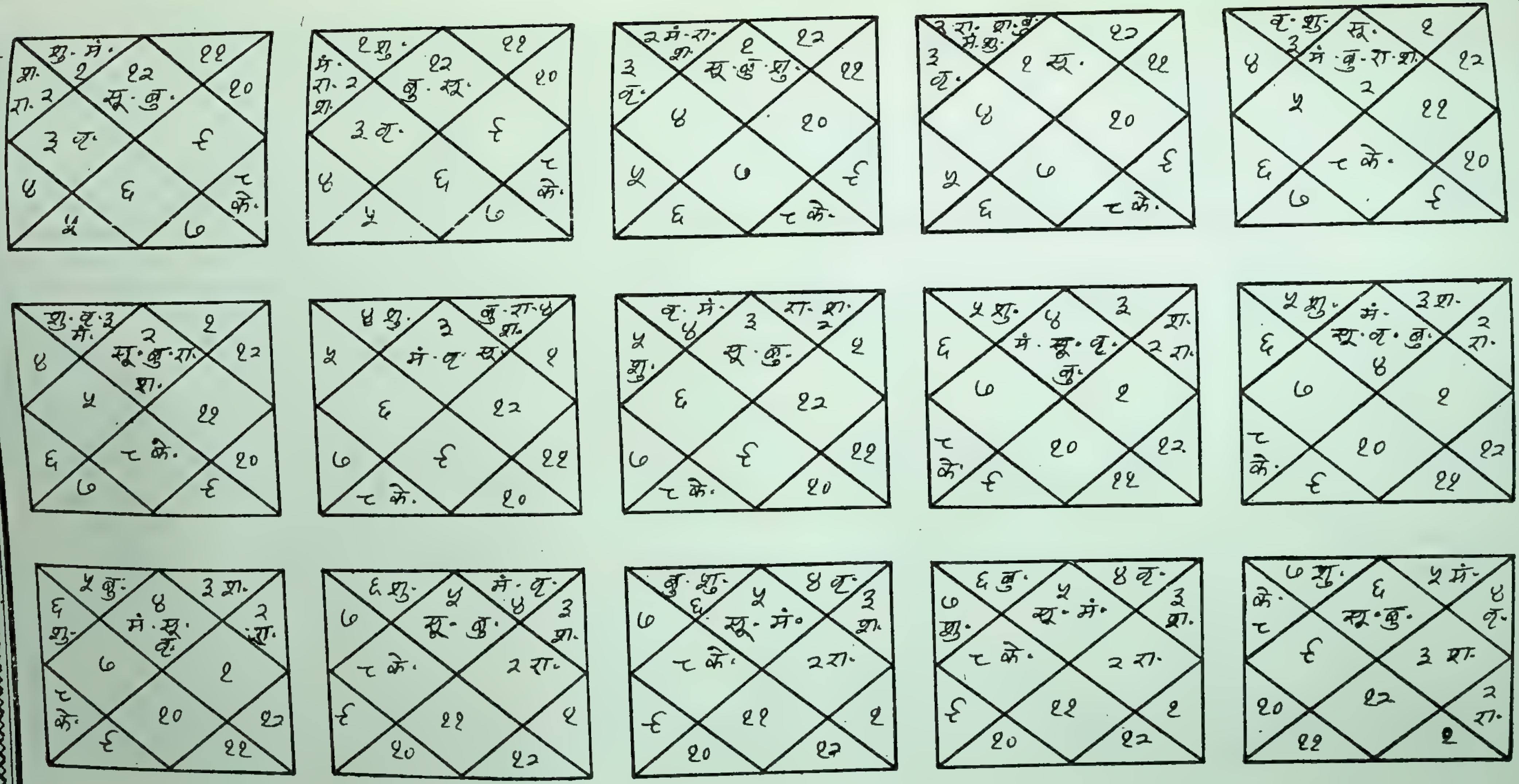

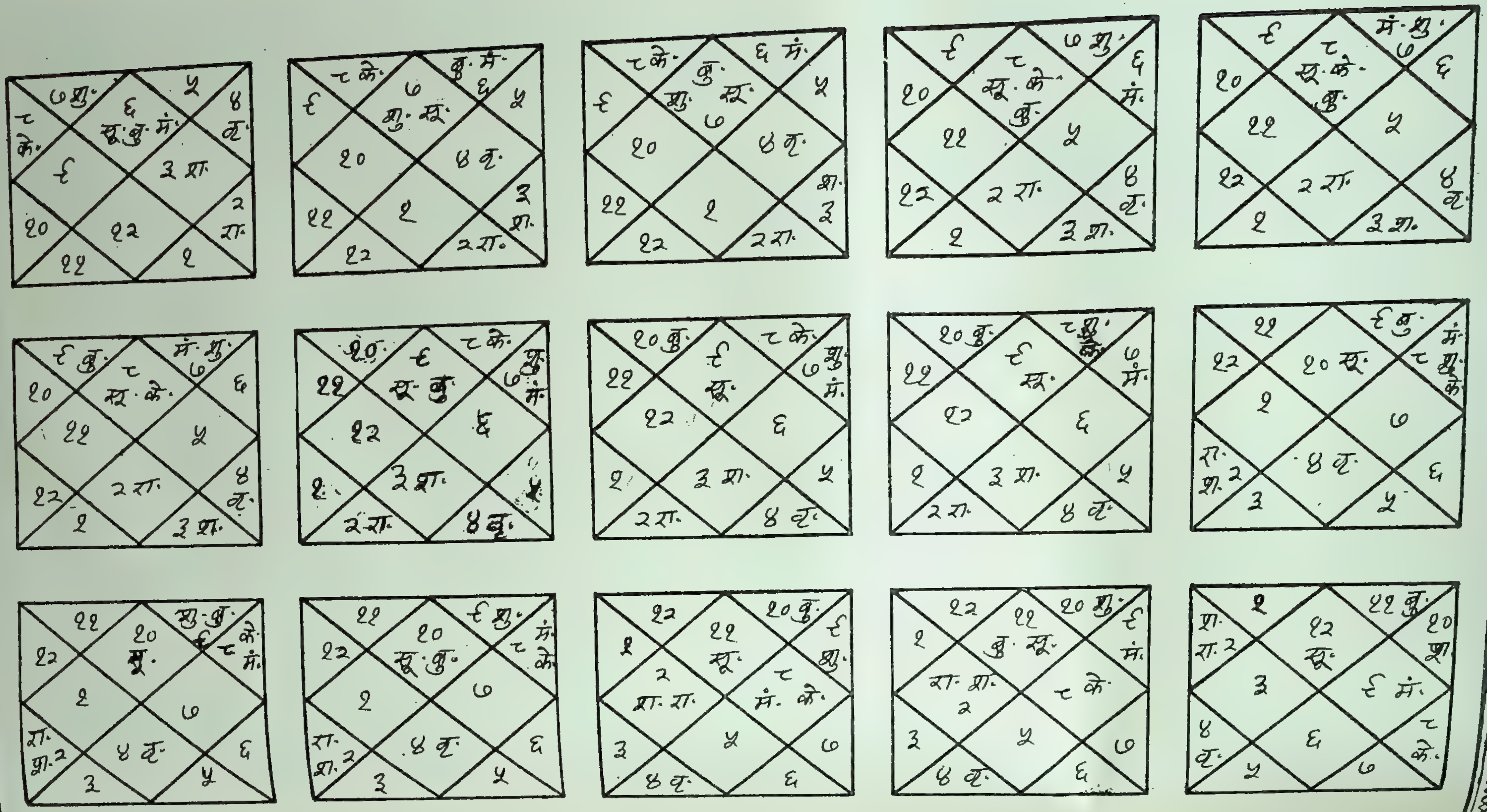

भू० सं०

कु० प०

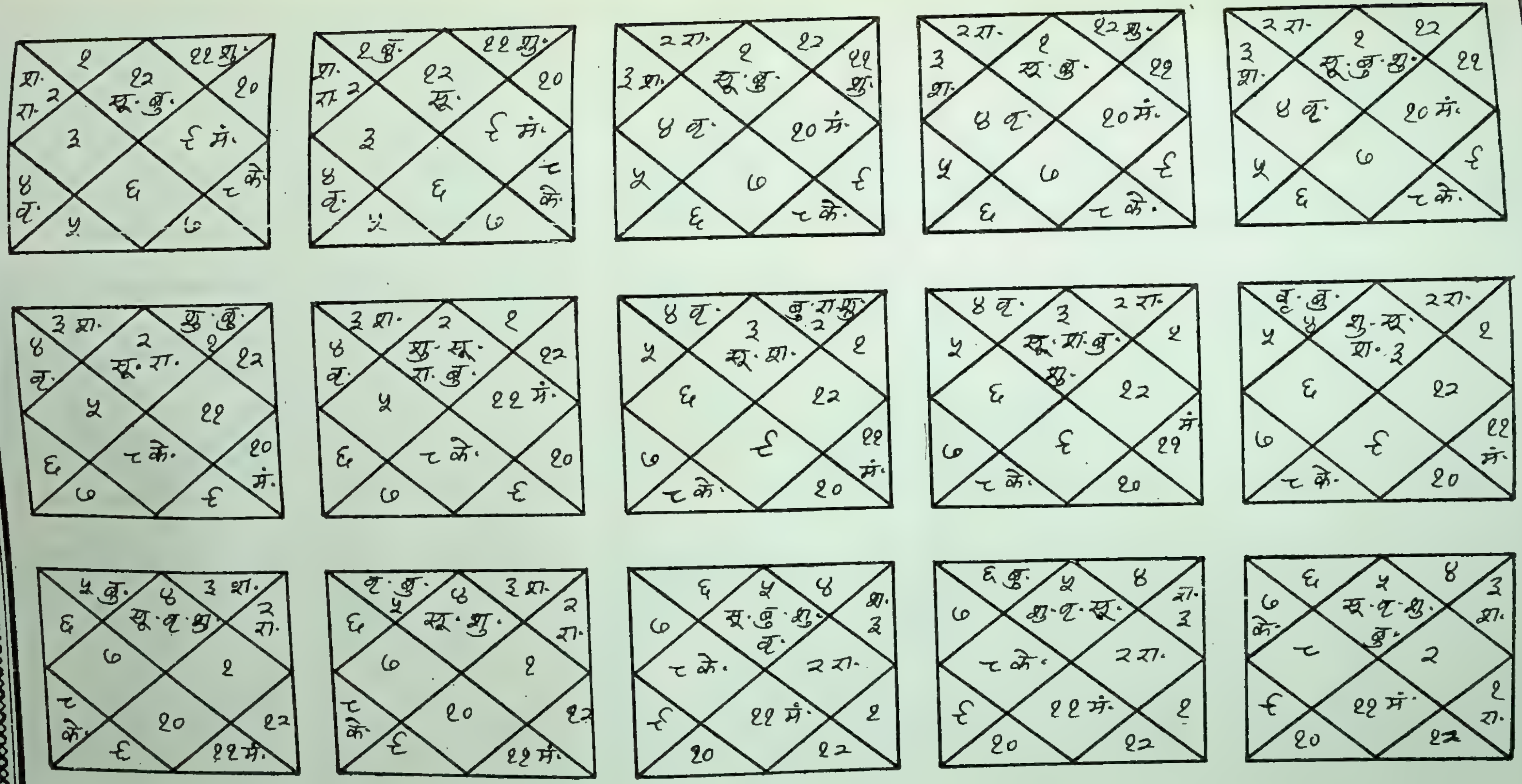

कु० प०

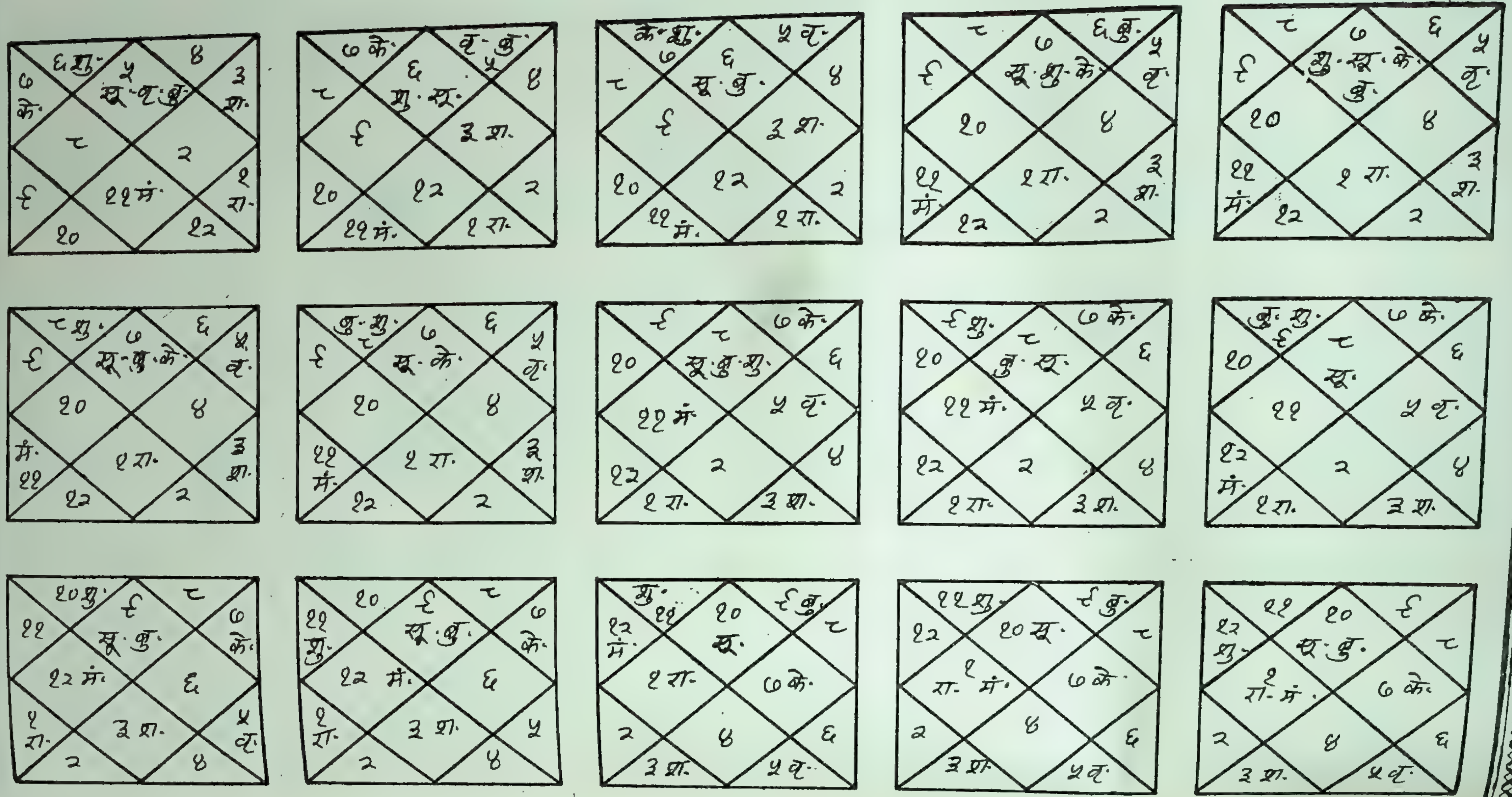

भू० सं०

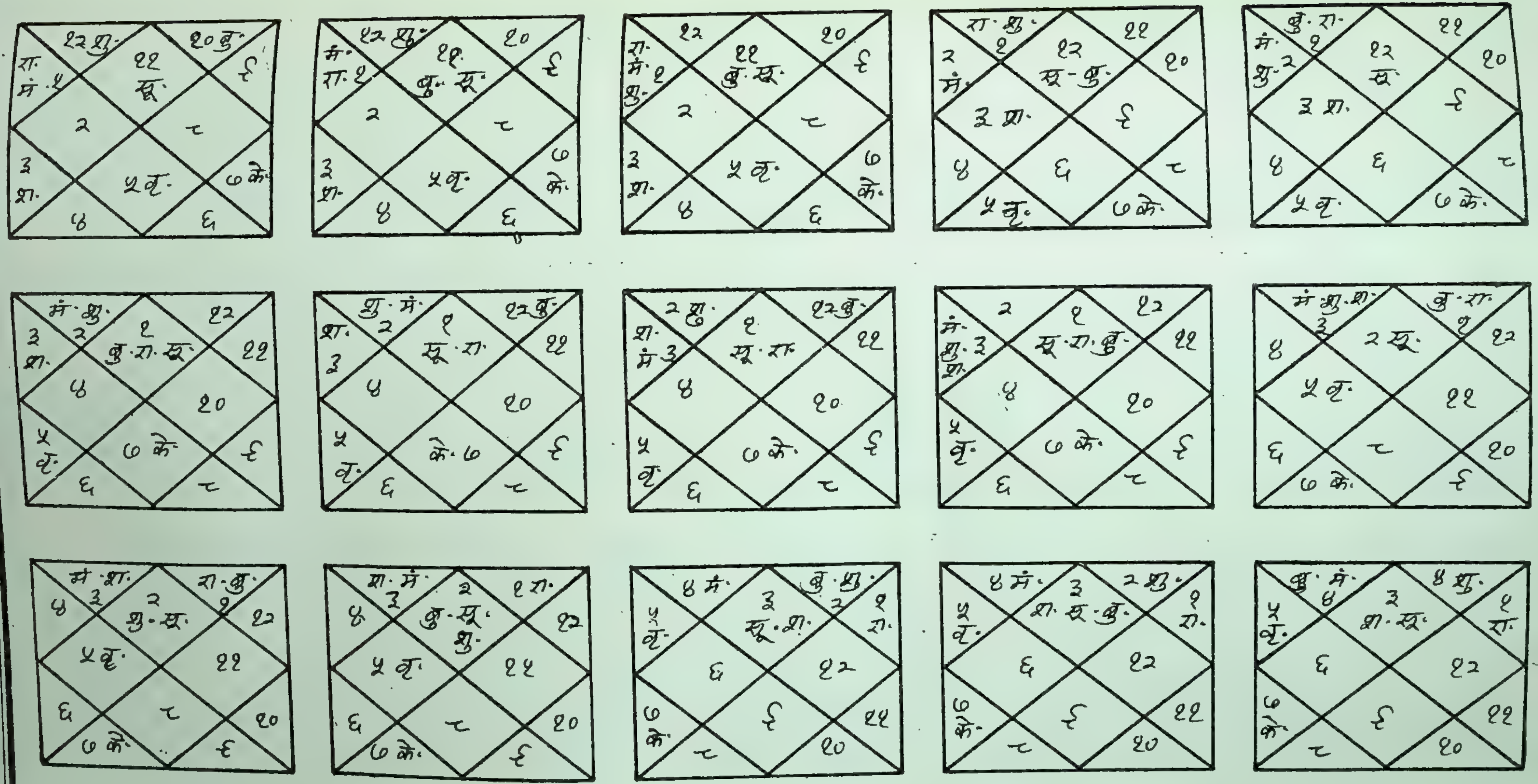

कु० प०

कु० प०

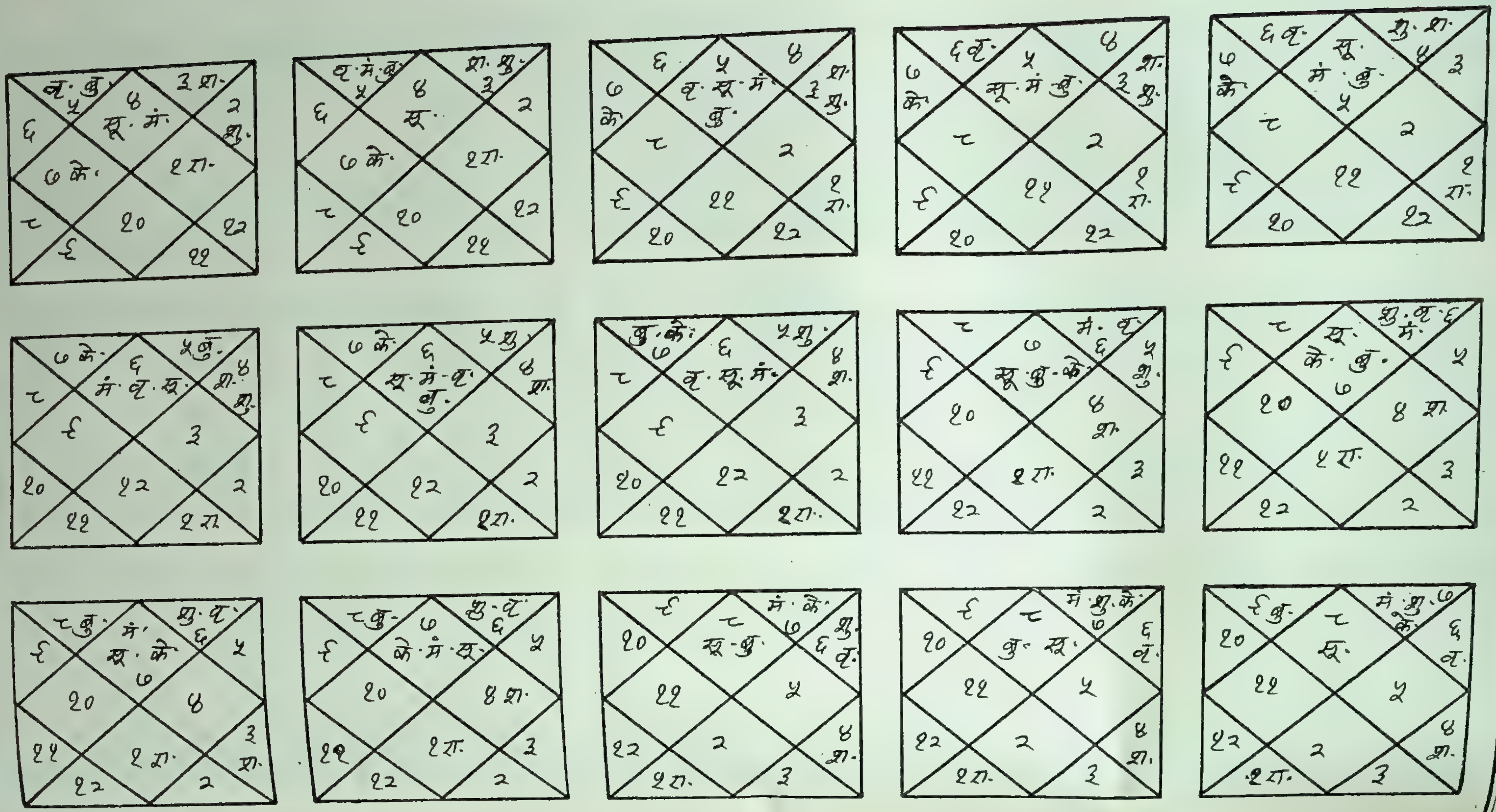

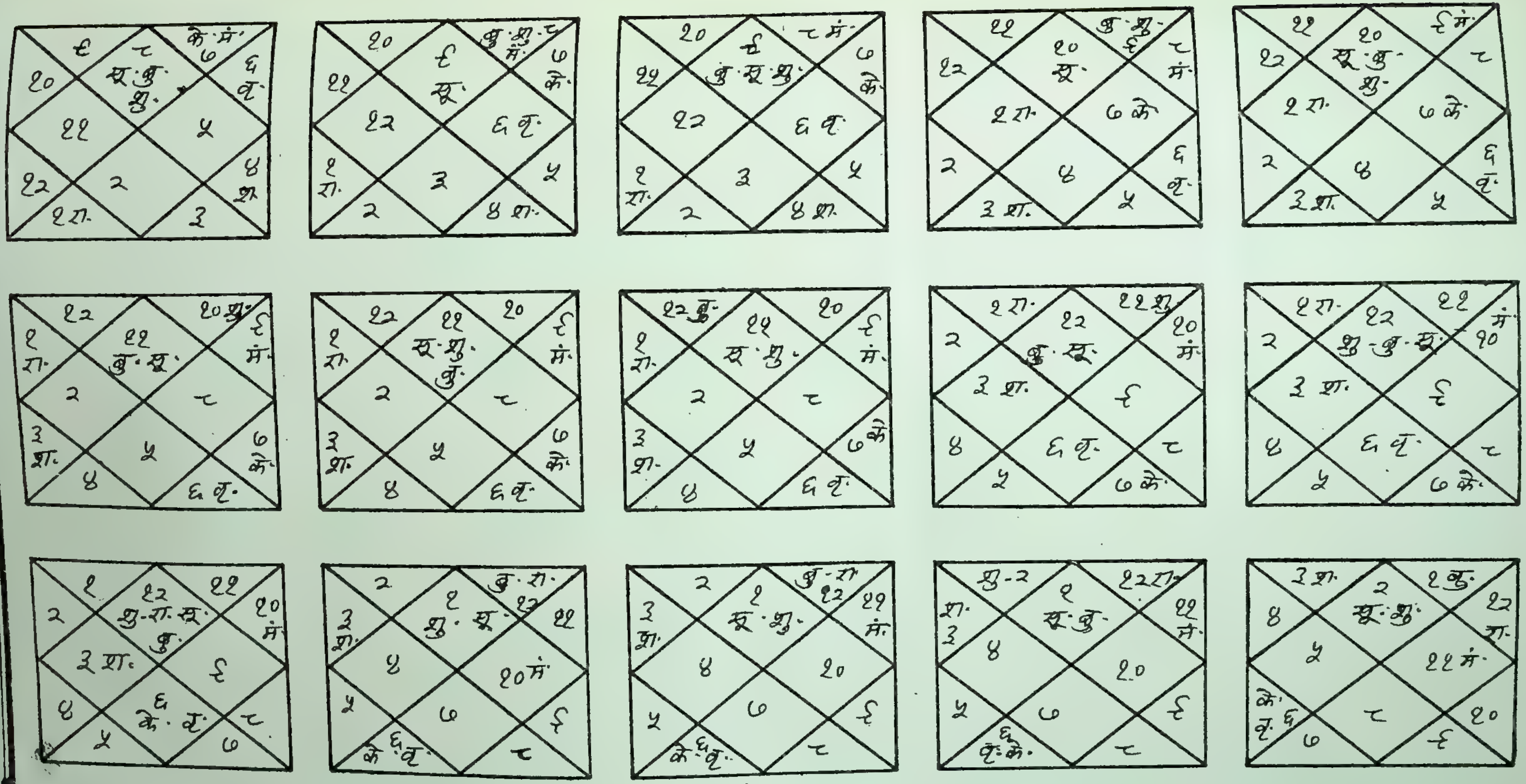

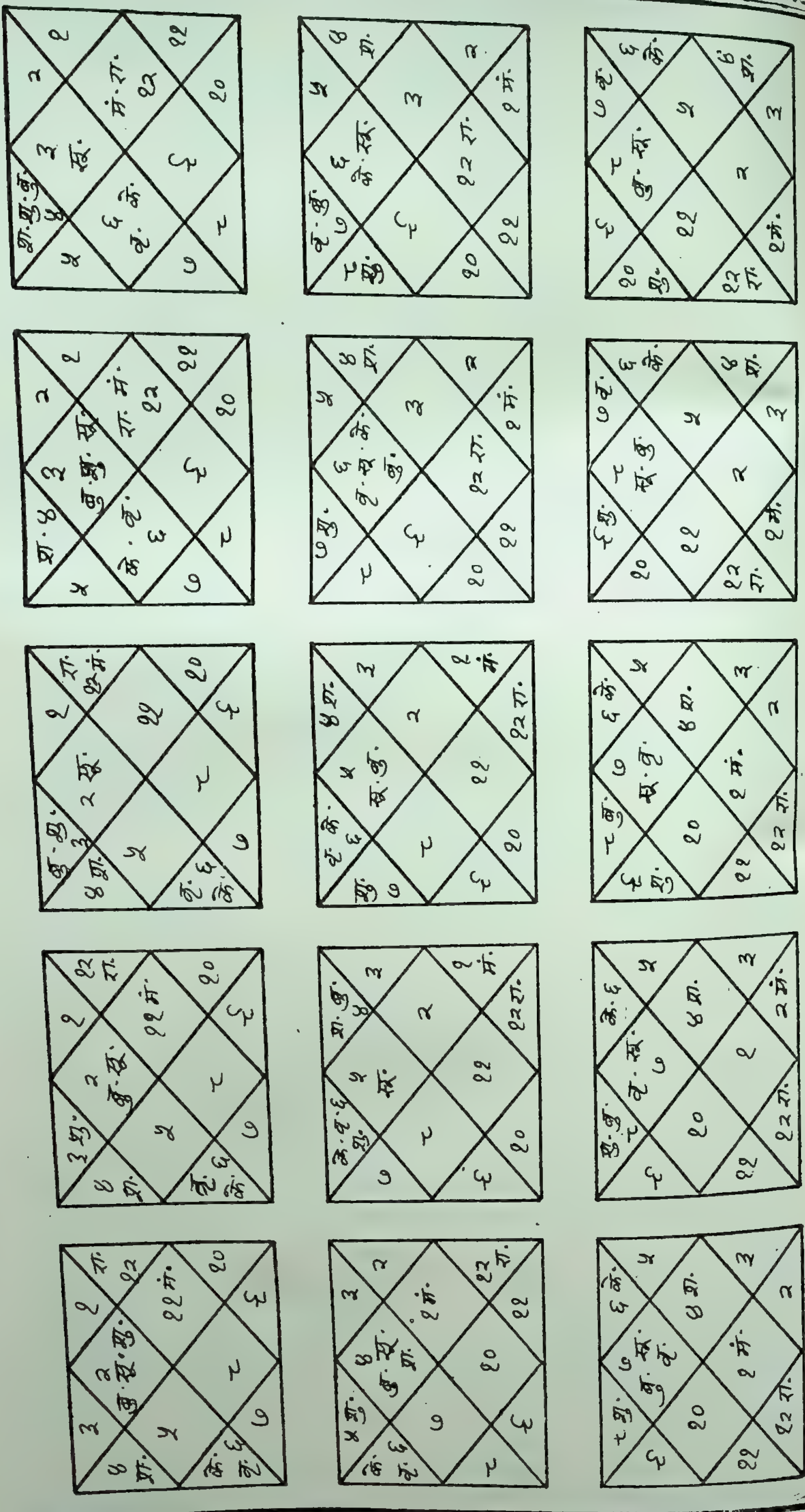

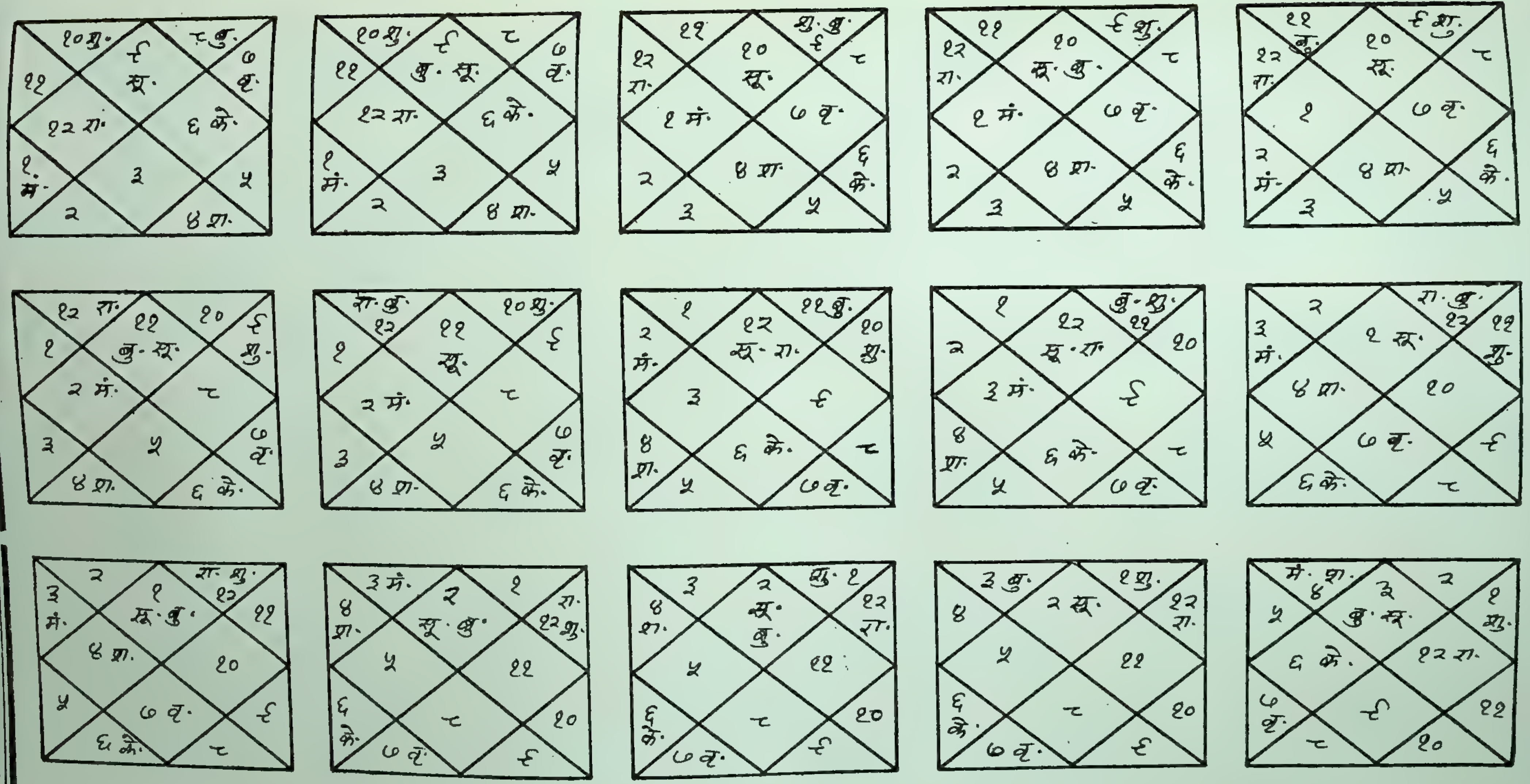

कु० प०

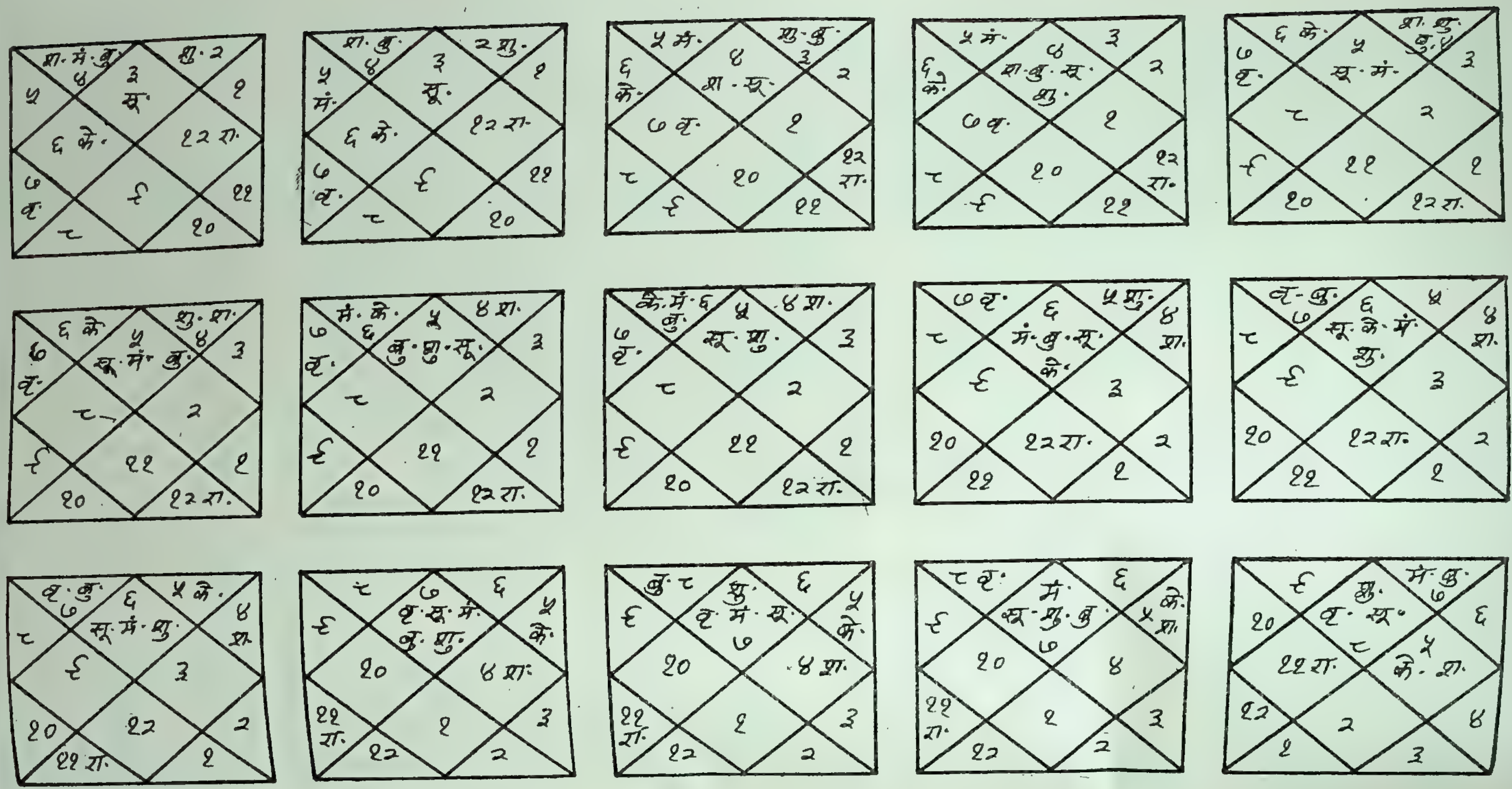

मू० सं० ३७८

मू० सं० ३३८

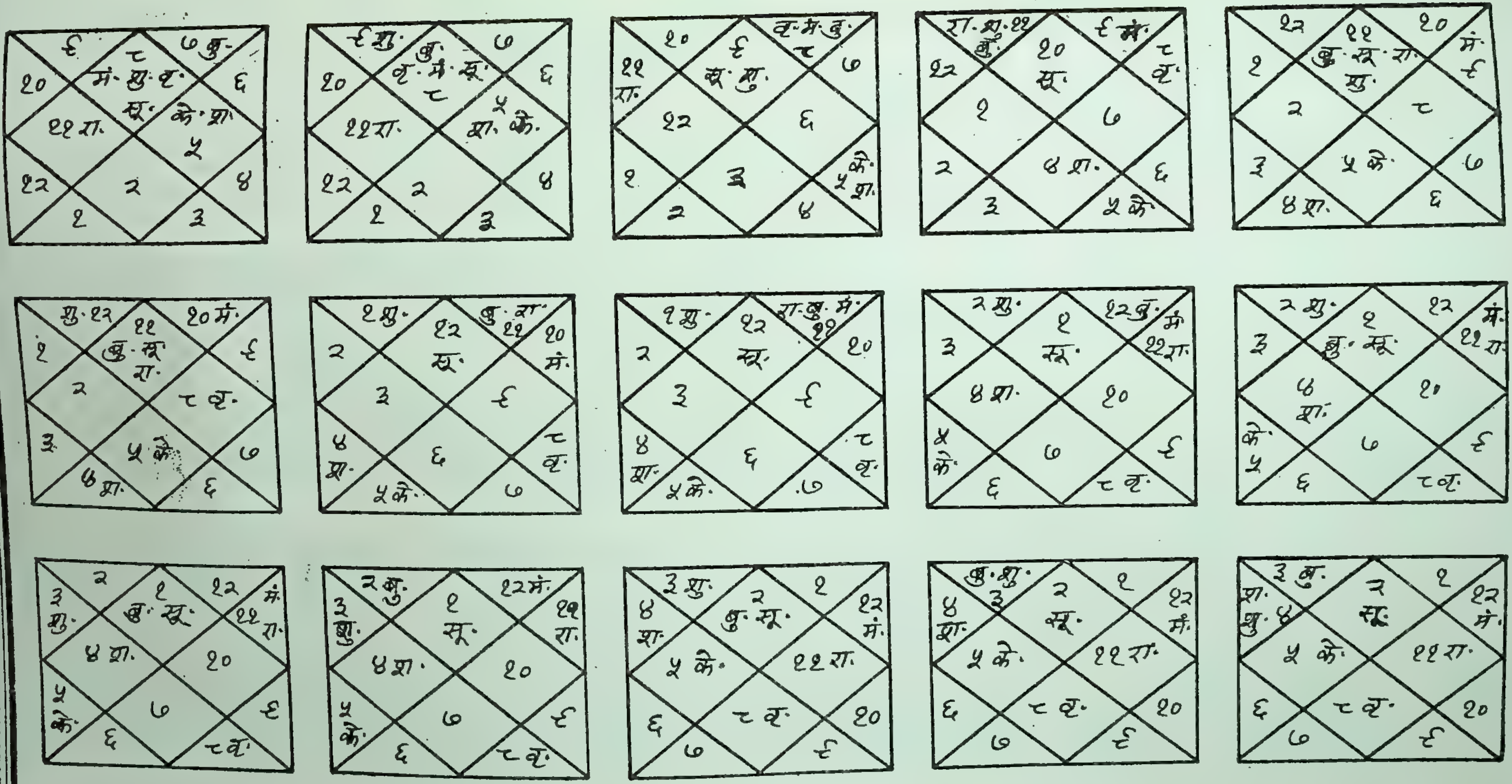

पृ० प०

मू० सं० ३३७

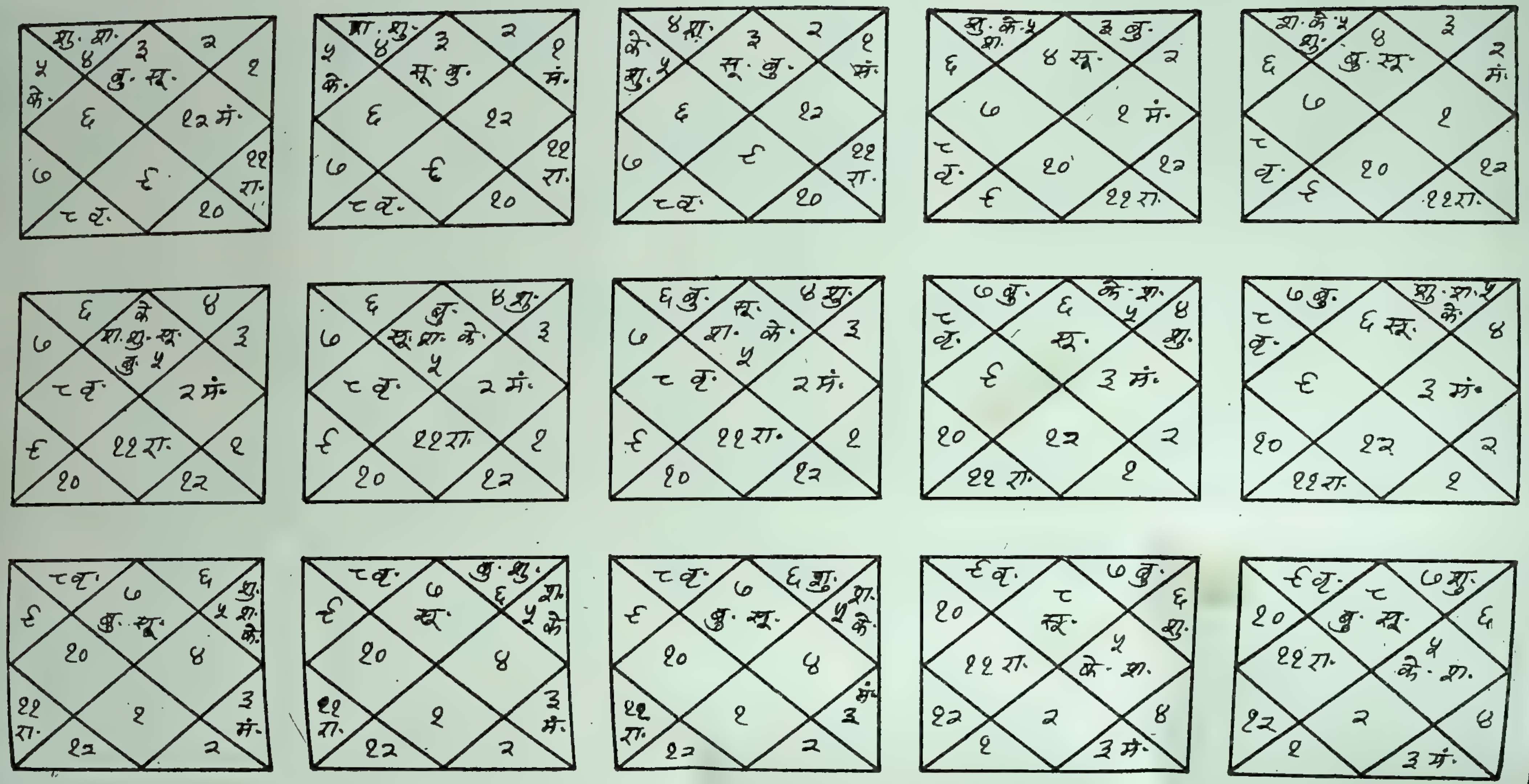

कु० प०

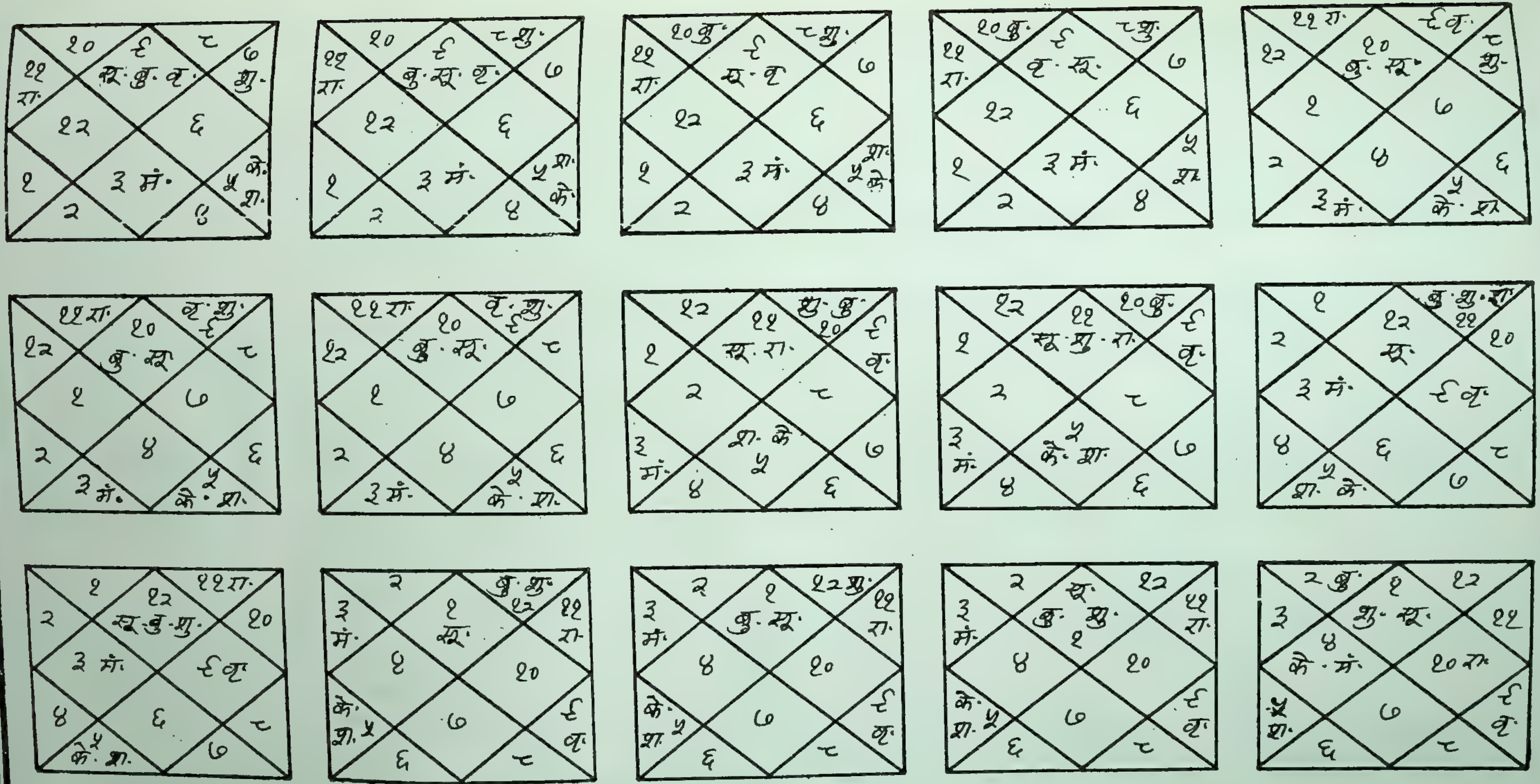

मू० सं० ३७८

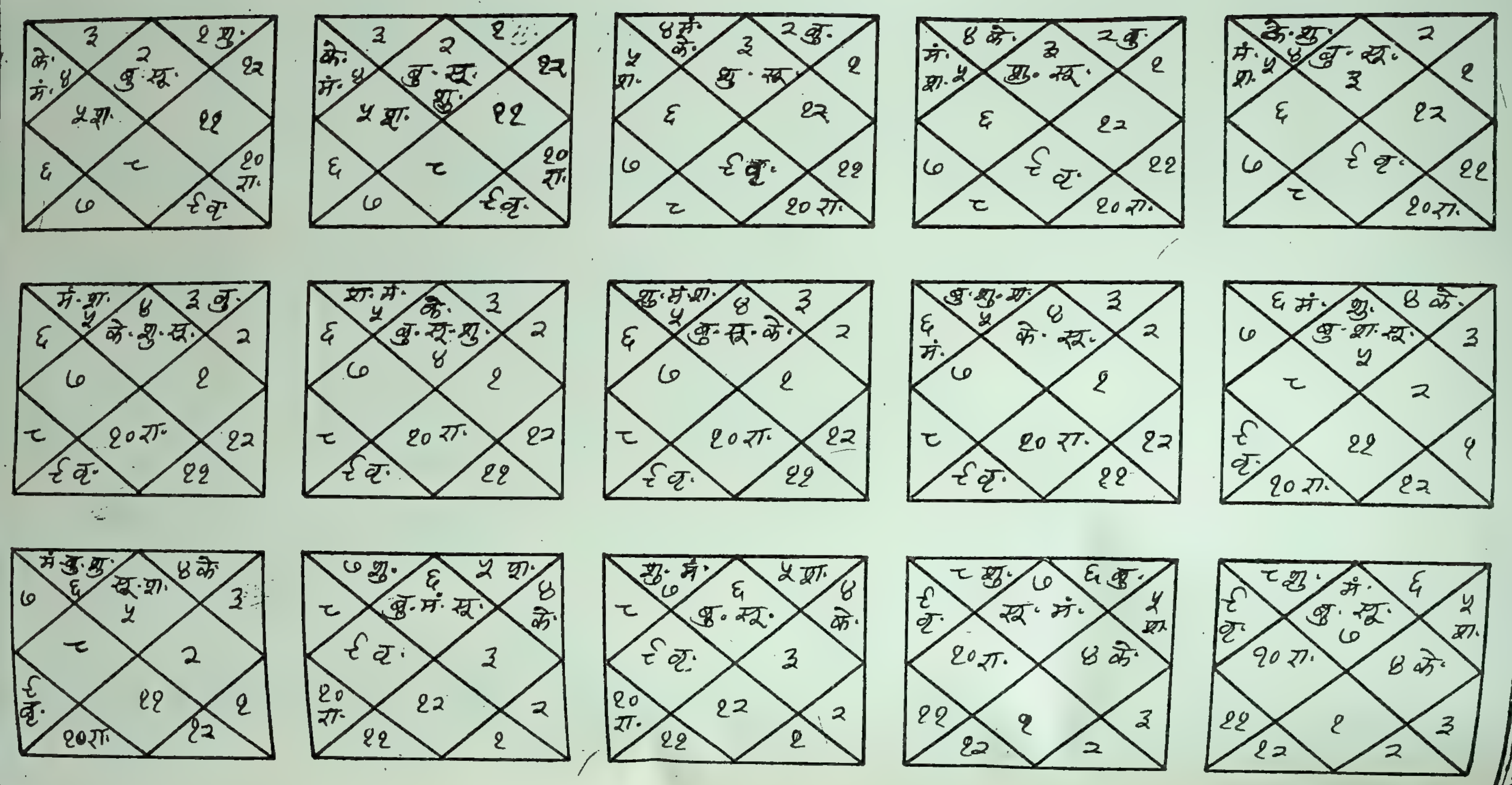

कु० प०

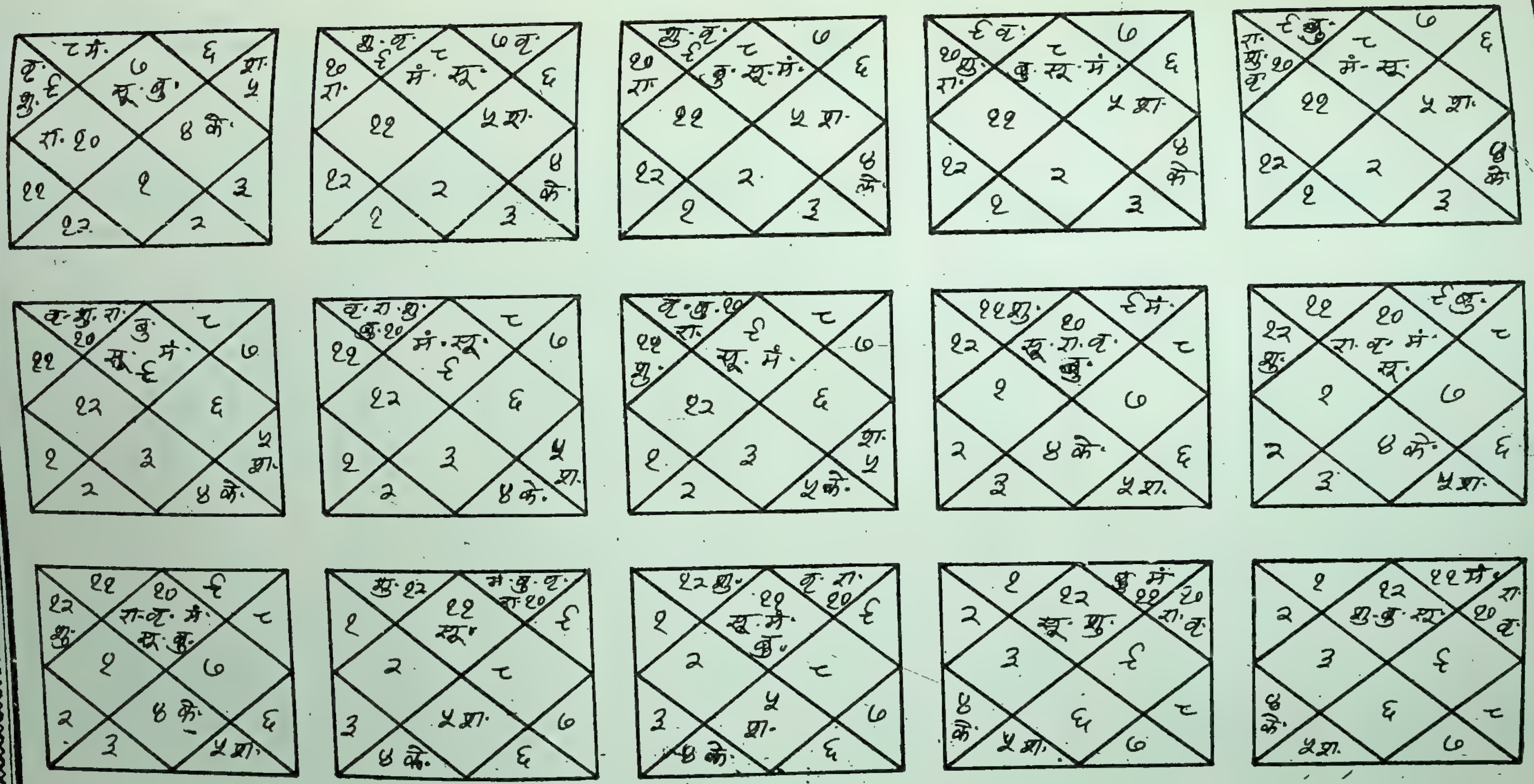

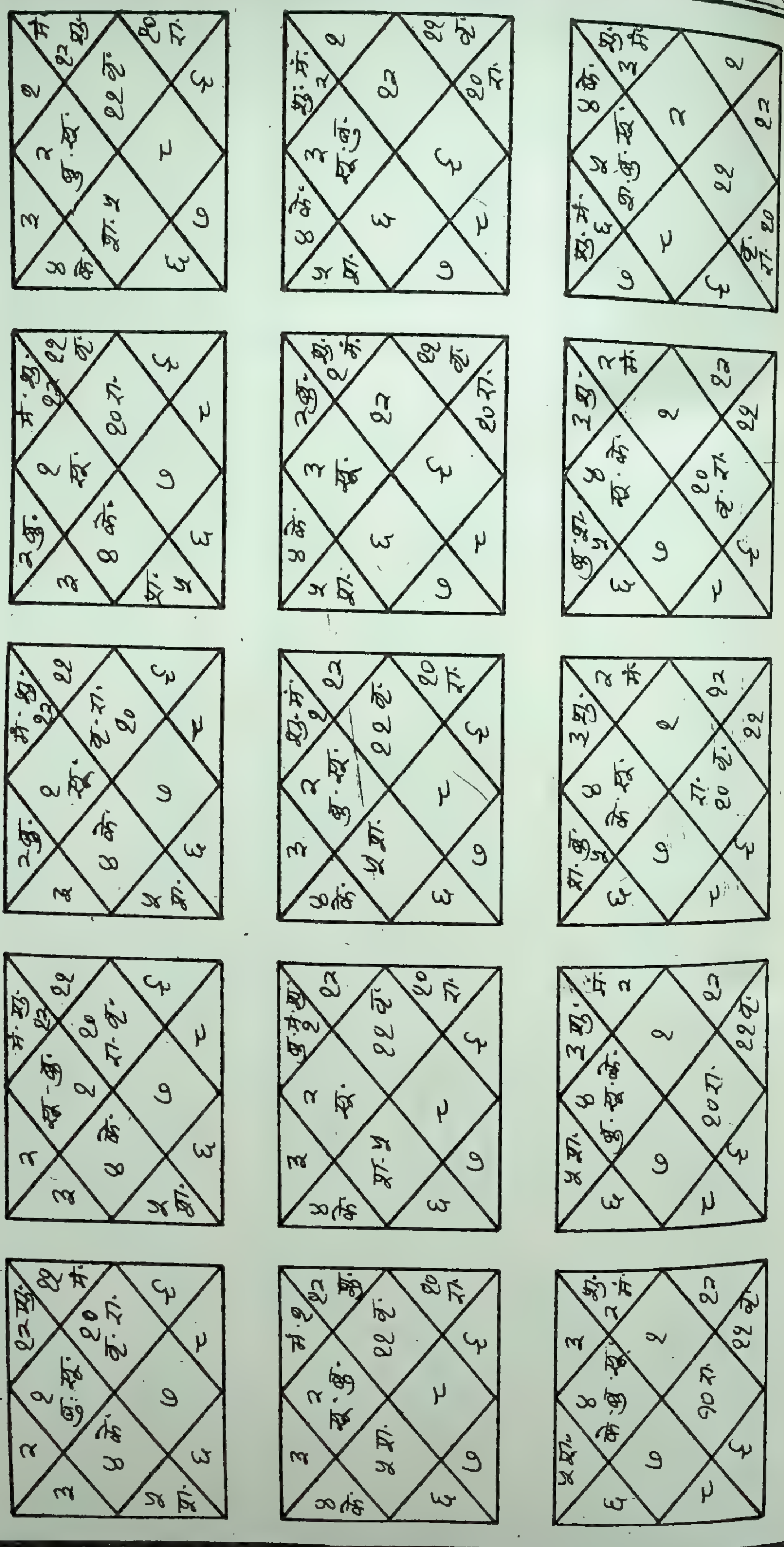

कु० प०

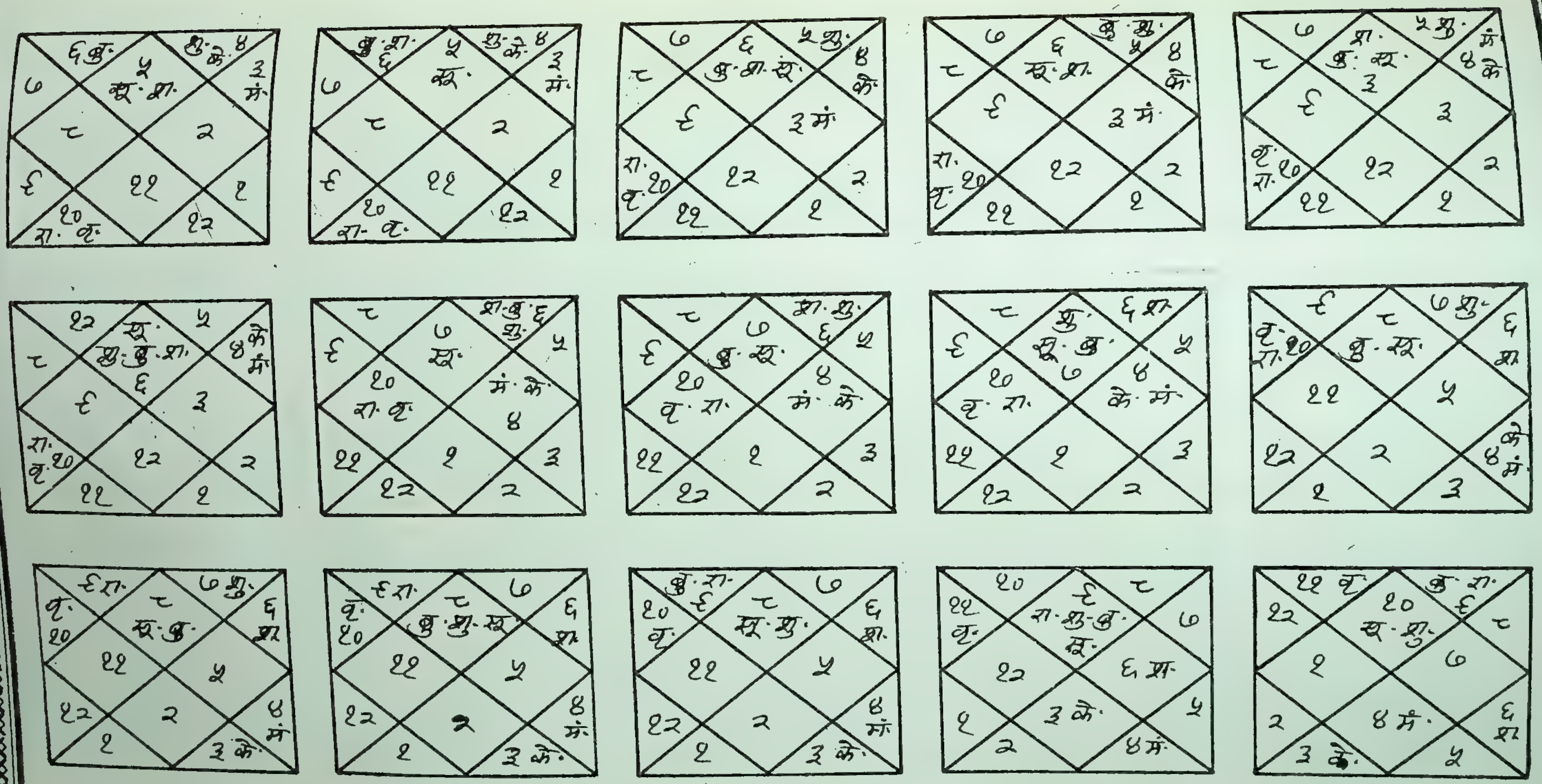

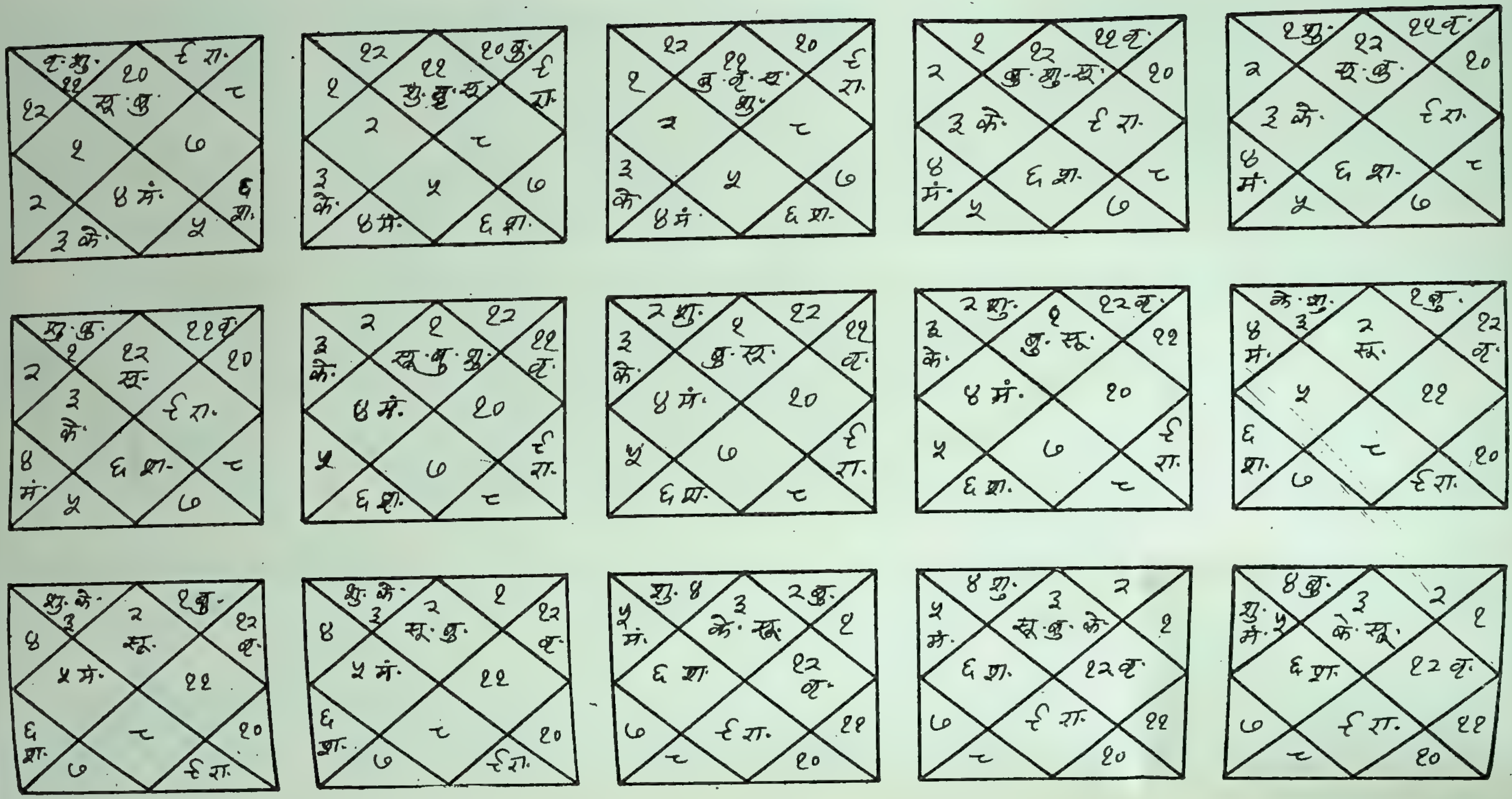
श.बु. ११ १० ६ रा. १२ सू.गु. ८ १ ७ २ ४ मं. ६ शु. ३ के. ५
१२ ११ १०गु. ६ रा. १ शु.बु.सू. २ ८ ३ के. ५ ७ ४ मं. ६ श.
१२ ११ १० ६ रा. १ बु.गु.सू. शु. २ ८ ३ के. ५ ७ ४ मं. ६ श.
१ १२ ११ बु. २ बु.शु.सू. १० ३ के. ६ रा. ४ मं. ९ श. ८ ५ ७
१ शु. १२ ११ बु. २ सू.गु. १० ३ के. ६ रा. ४ मं. ९ श. ८ ५ ७
सू.गु. १ १२ ११ बु. २ १० ३ के. ६ रा. ४ मं. ९ श. ८ ५ ७
२ १ १२ ३ के. सू.बु.शु. ११ बु. ४ मं. १० ५ ७ ६ रा. ९ श. ८
२ शु. १ १२ ३ के. बु.सू. ११ बु. ४ मं. १० ५ ७ ६ रा. ९ श. ८
२ शु. १ १२ बु. ३ के. बु.सू. ११ ४ मं. १० ५ ७ ६ रा. ९ श. ८
के.शु. ३ १ बु. ४ मं. २ सू. १२ बु. ५ ११ ९ श. ८ १० ७ ६ रा.
शु.के. ३ २ १ बु. ४ सू. १२ बु. ५ मं. ११ ९ श. ८ १० ७ ६ रा.
बु.के. ३ २ १ ४ सू.गु. १२ बु. ५ मं. ११ ९ श. ८ १० ७ ६ रा.
शु. ४ ३ २ बु. ५ मं. के. सू. १ ९ श. १२ बु. ७ ६ रा. ११ ८ १०
४ शु. ३ २ ५ मं. सू.बु.के. १ ९ श. १२ बु. ७ ६ रा. ११ ८ १०
४ बु. ३ २ शु. मं. ५ के.सू. १ ९ श. १२ बु. ७ ६ रा. ११ ८ १०

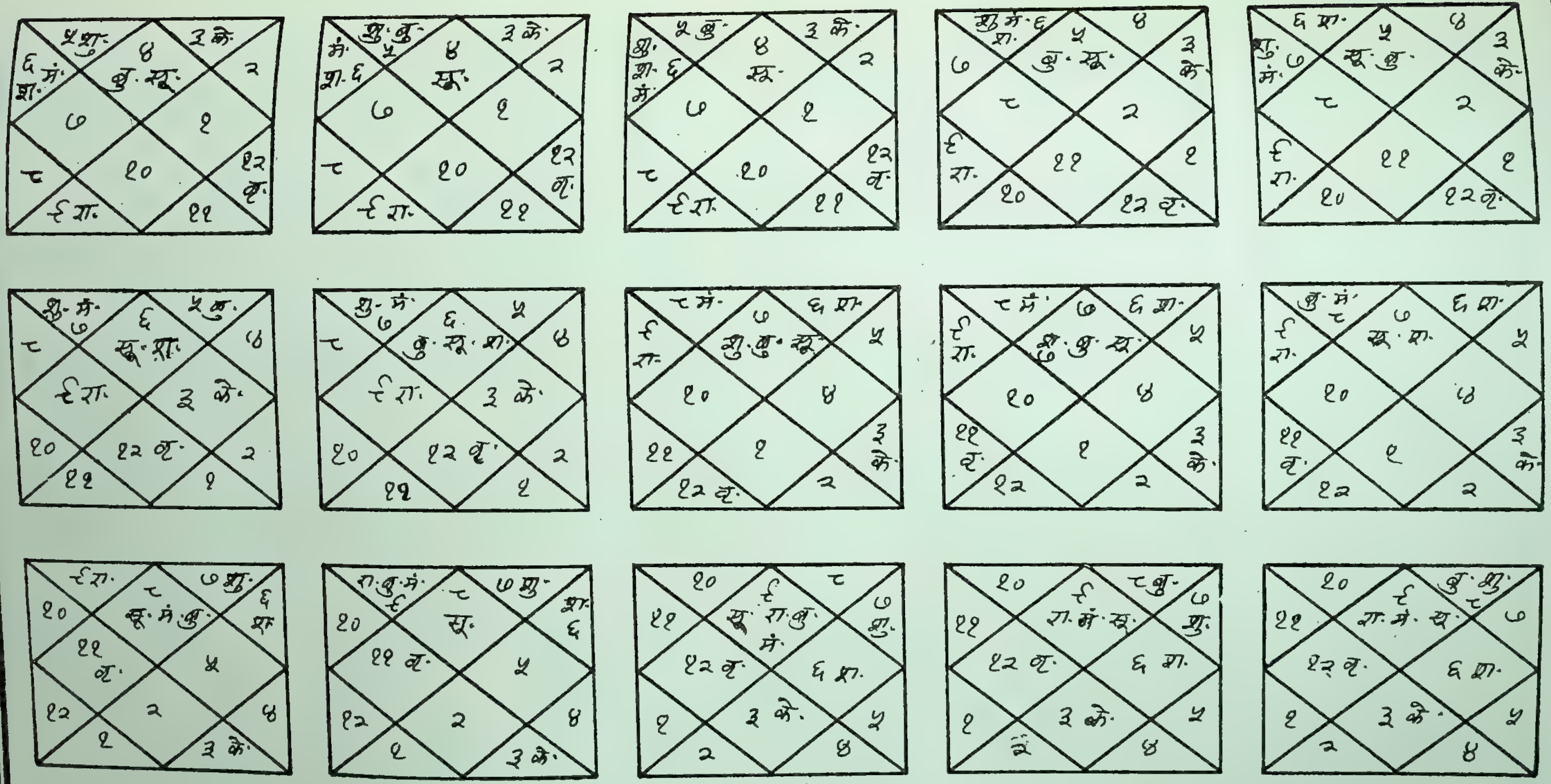

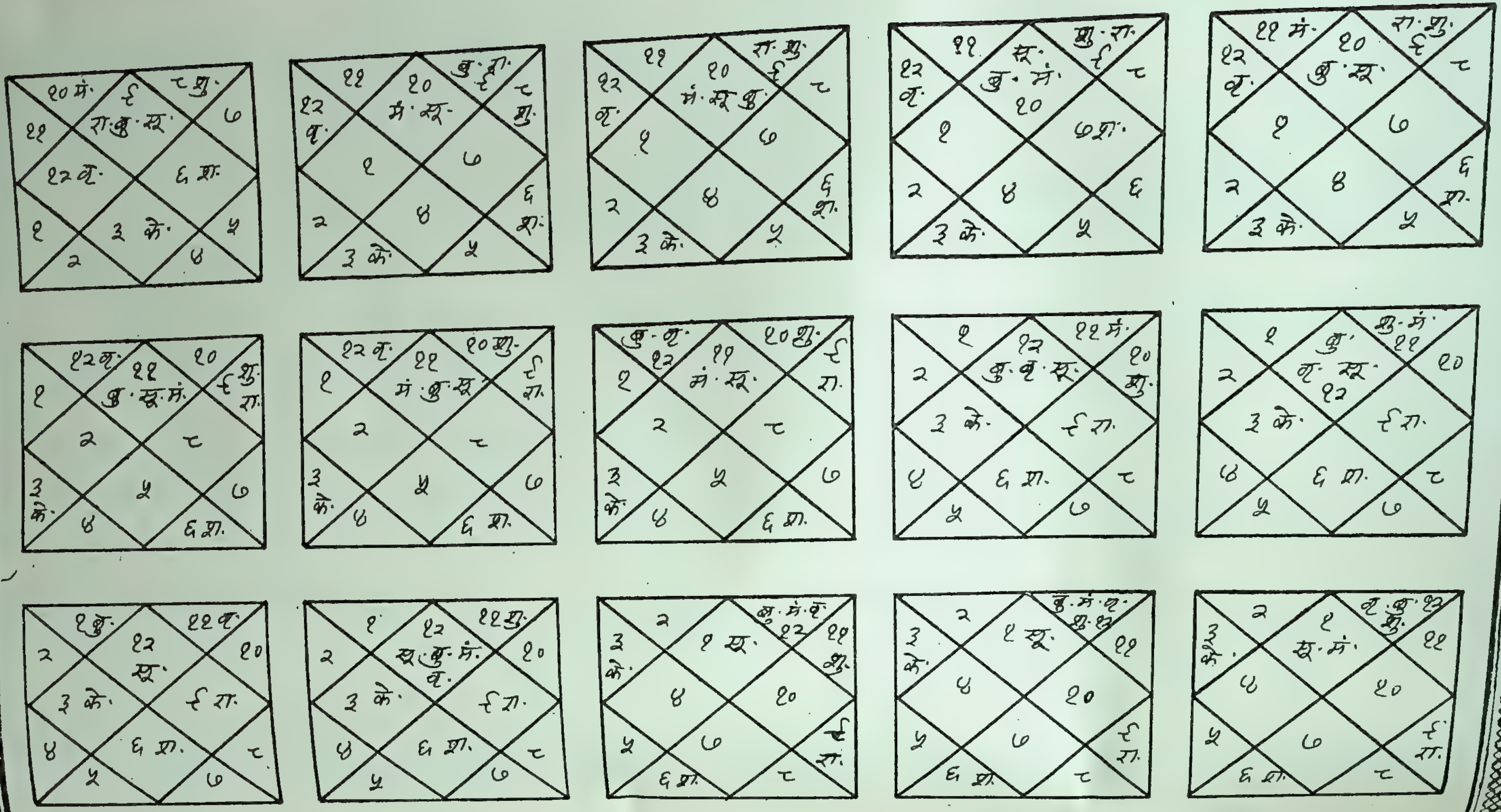

भू० सं० ४०८

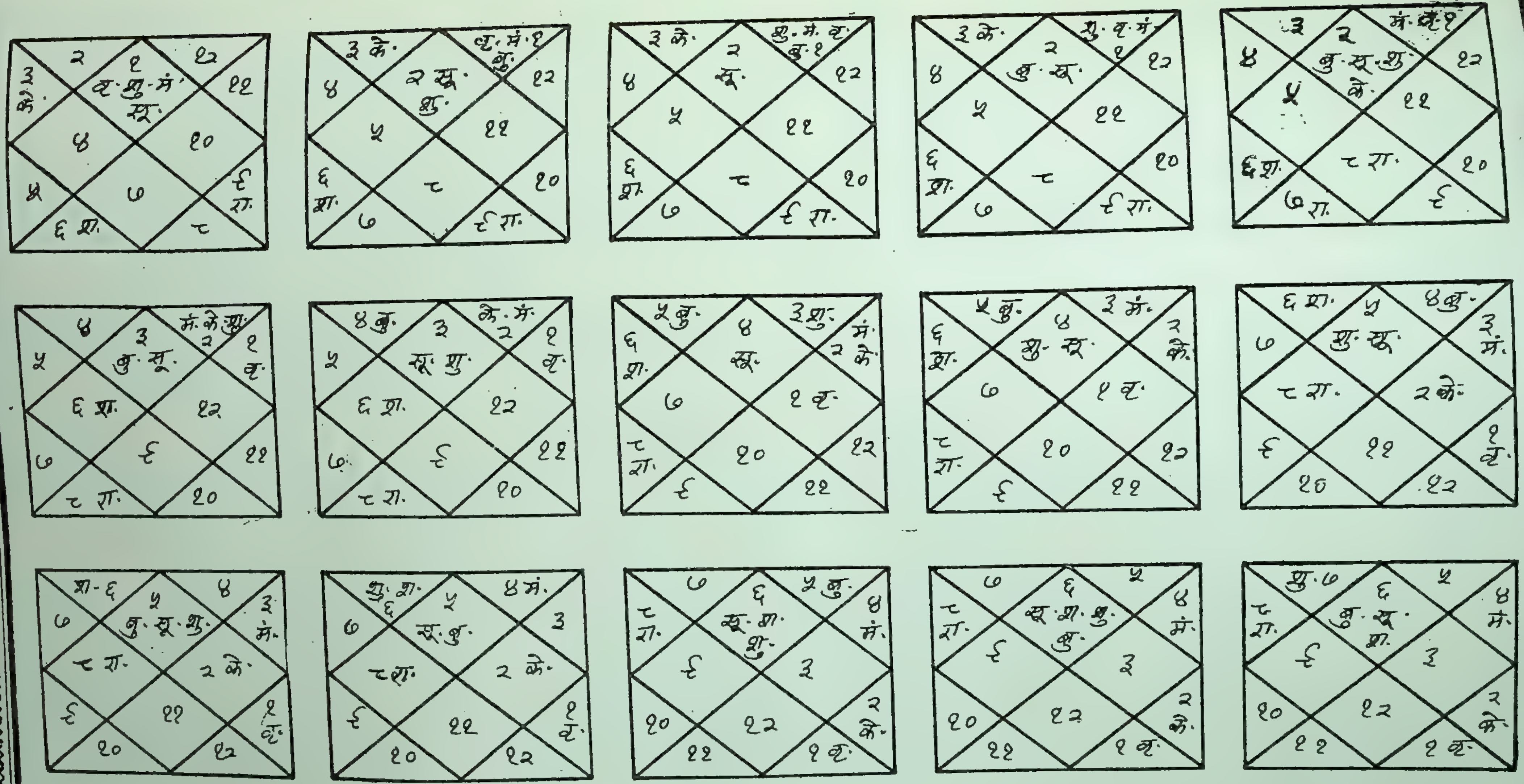

कु० प०

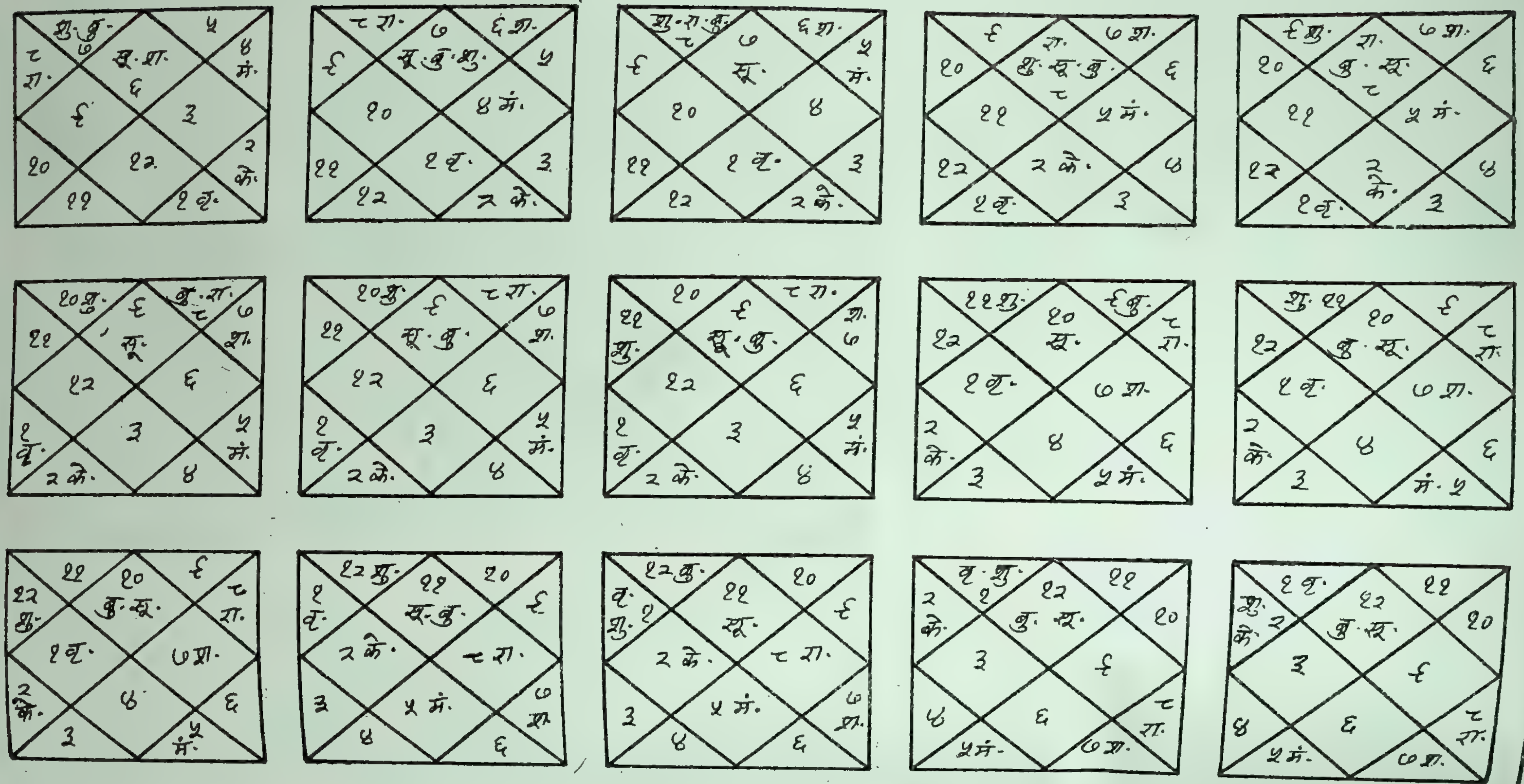

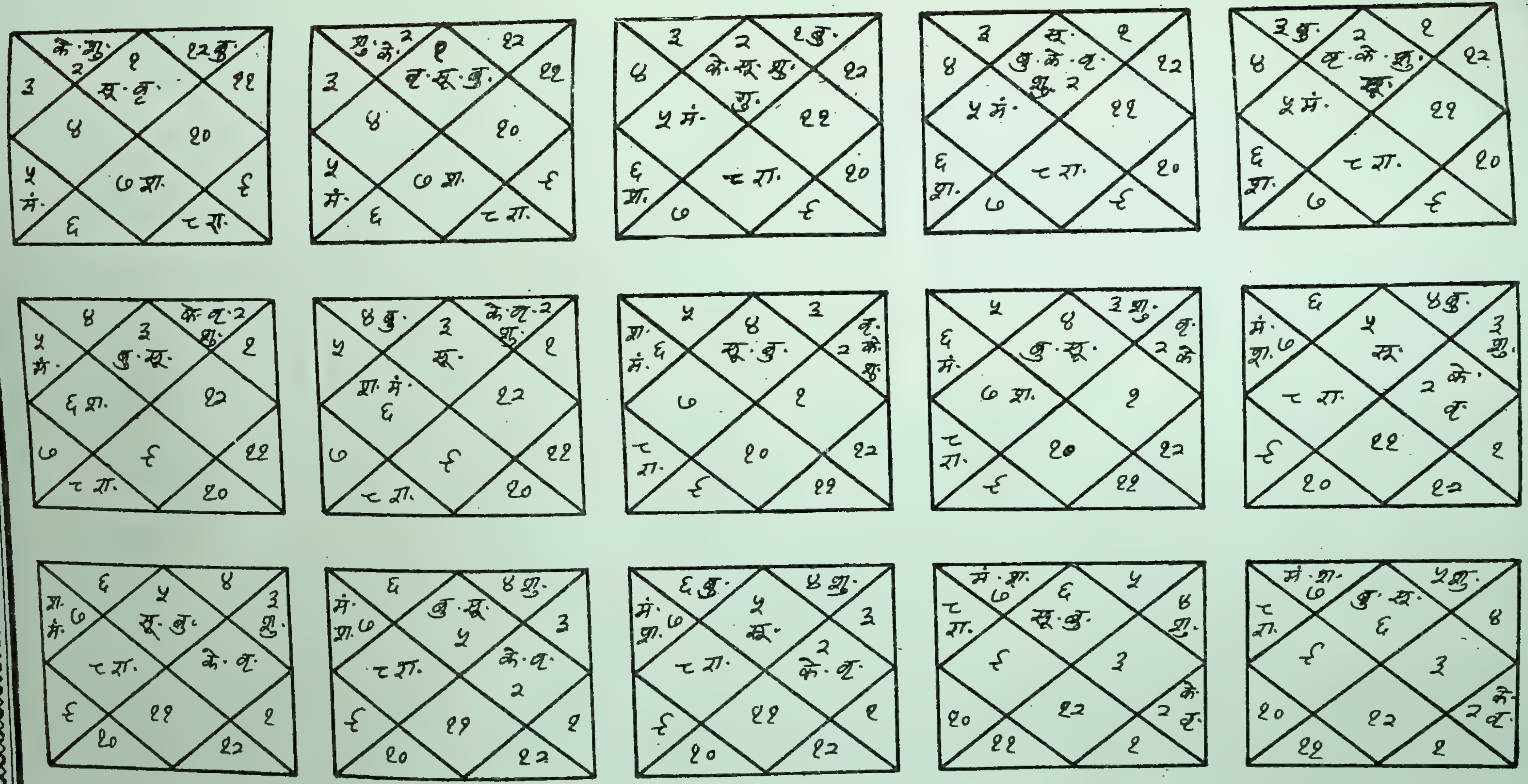

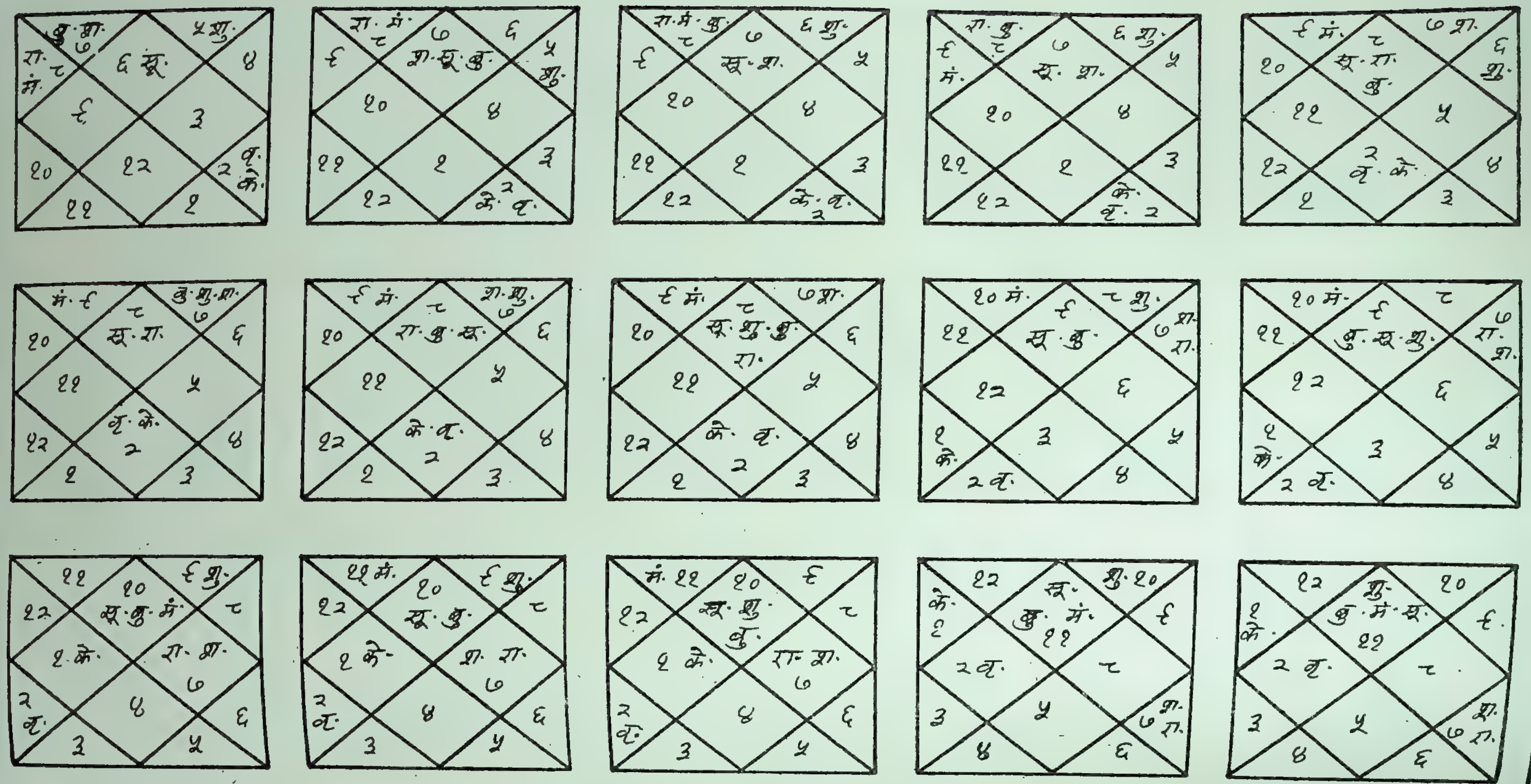

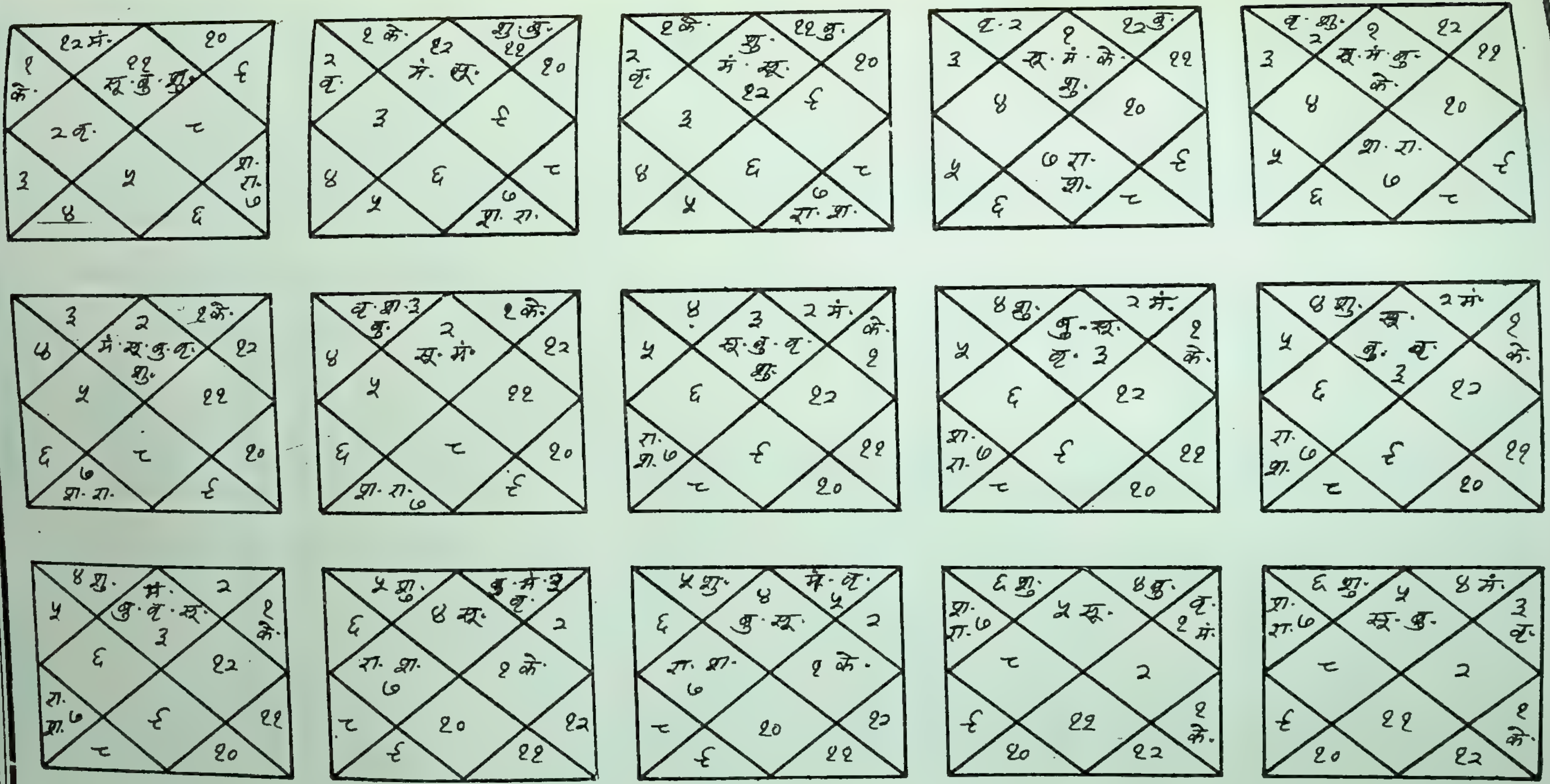

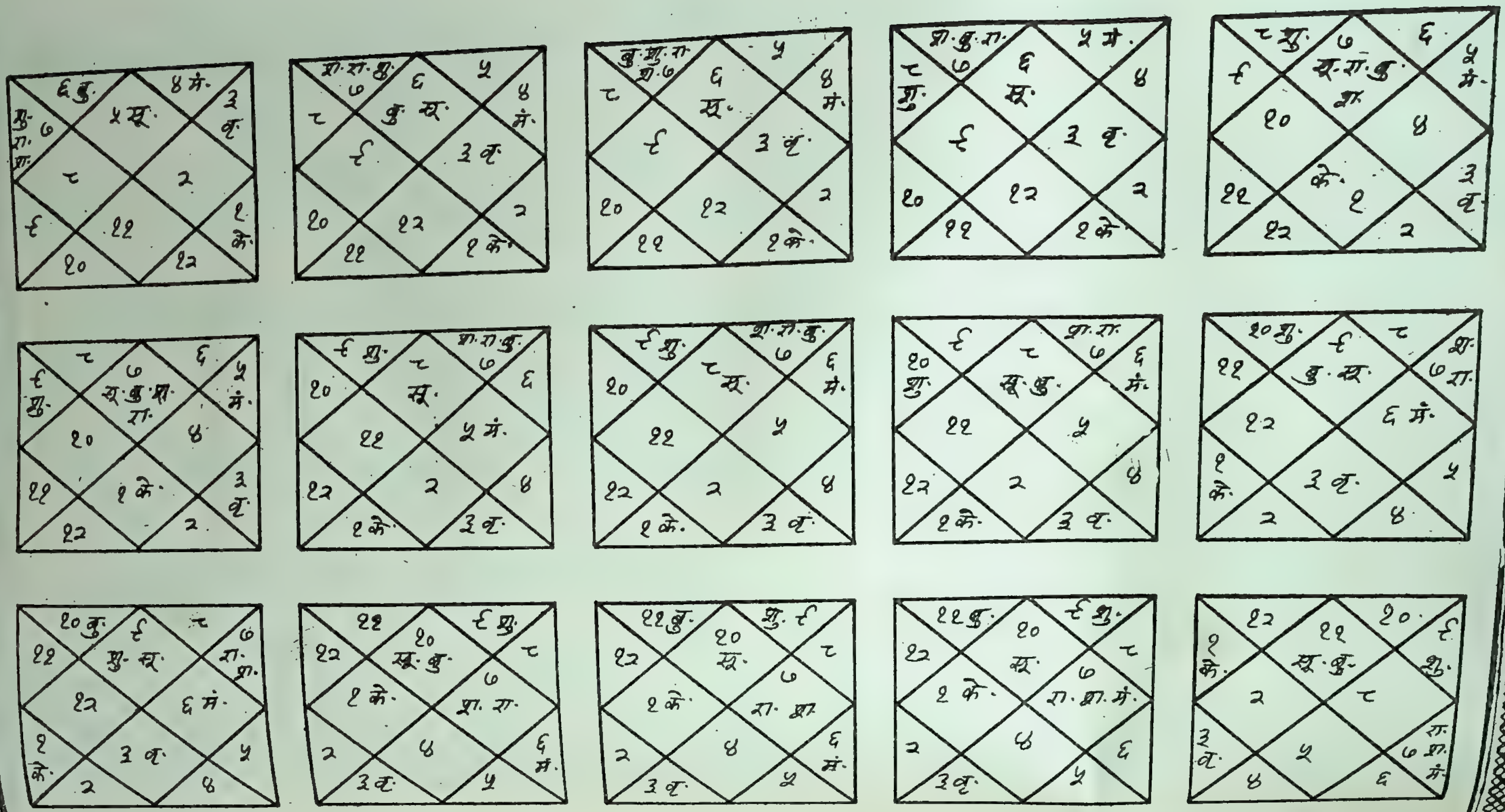

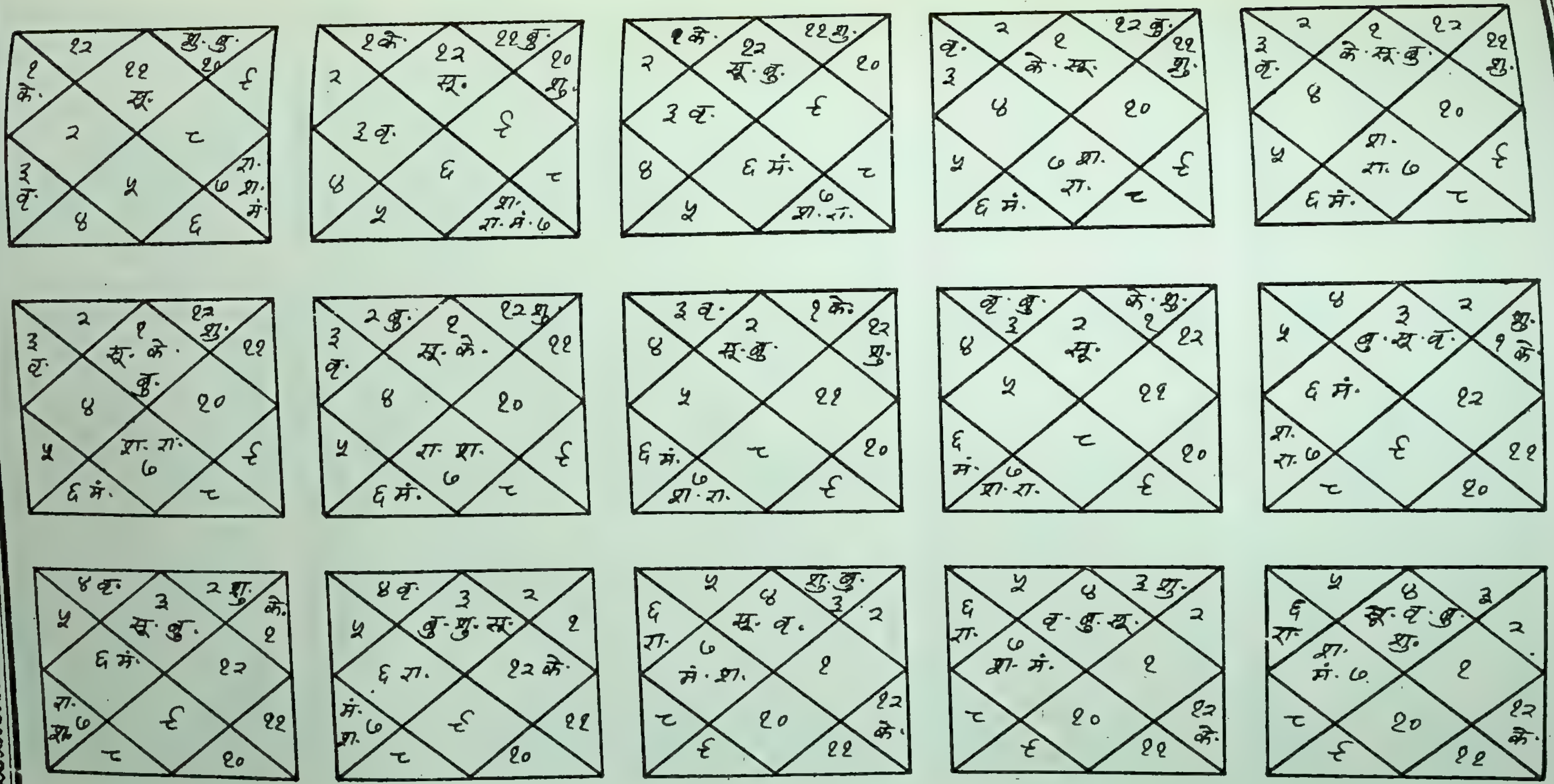

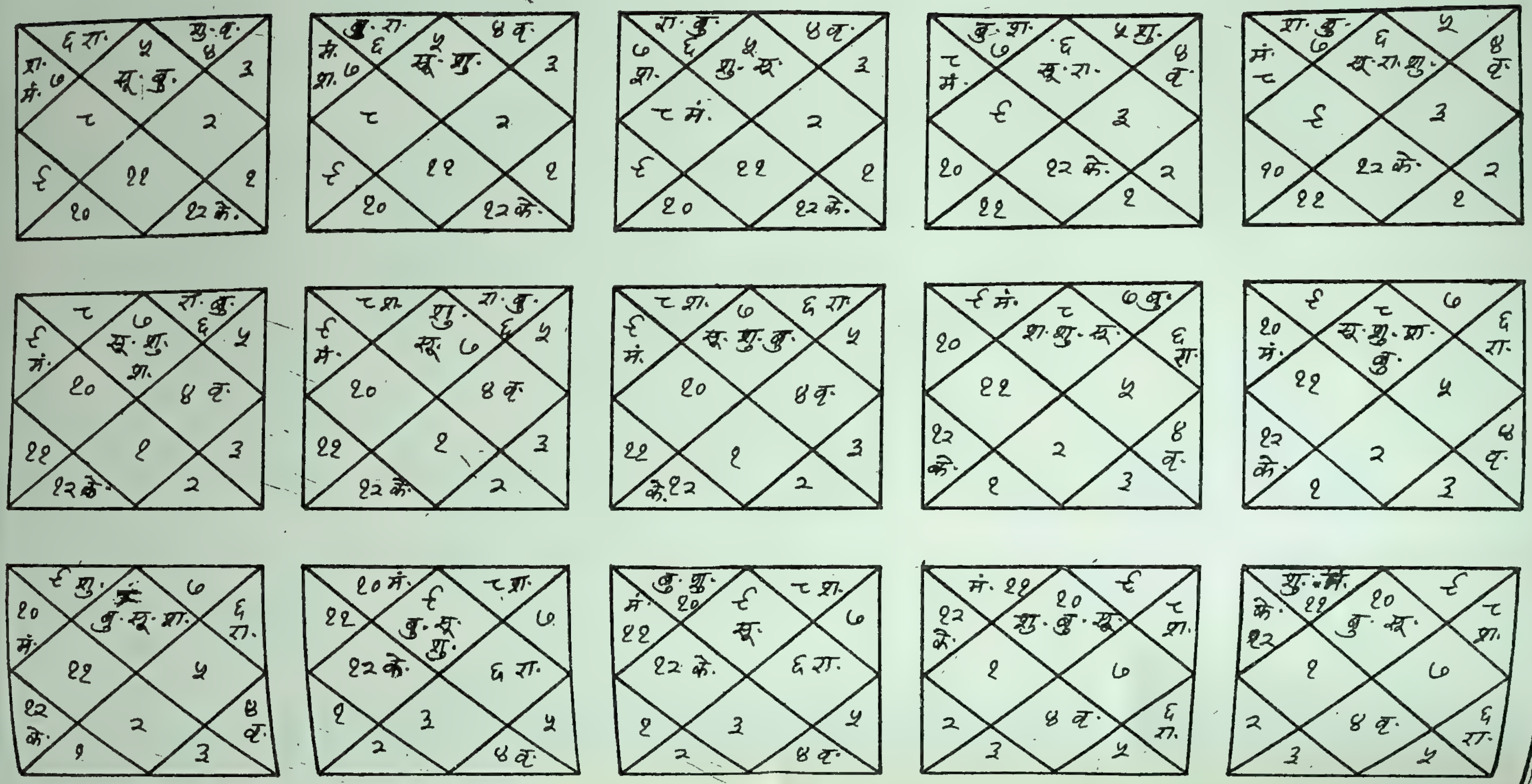

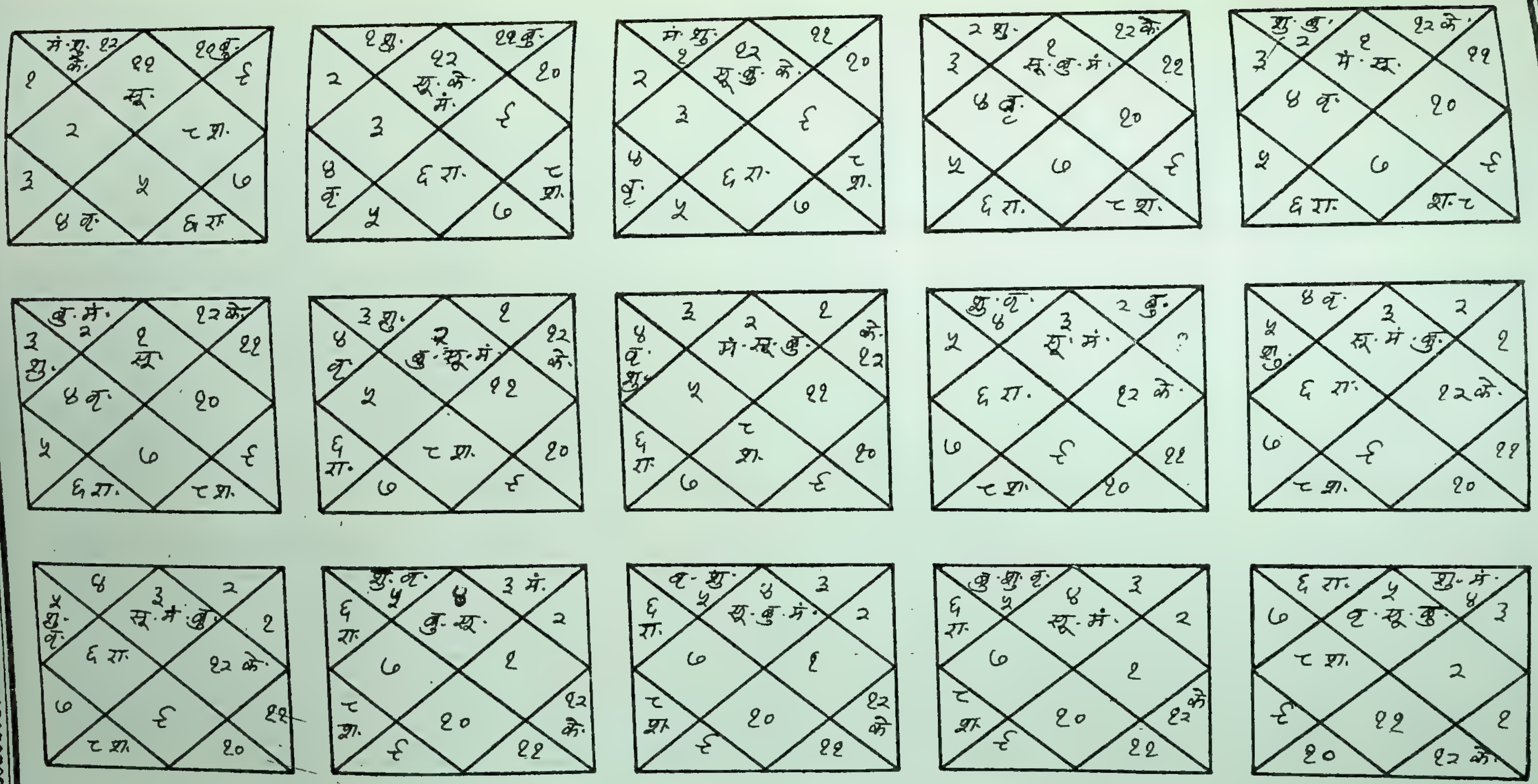

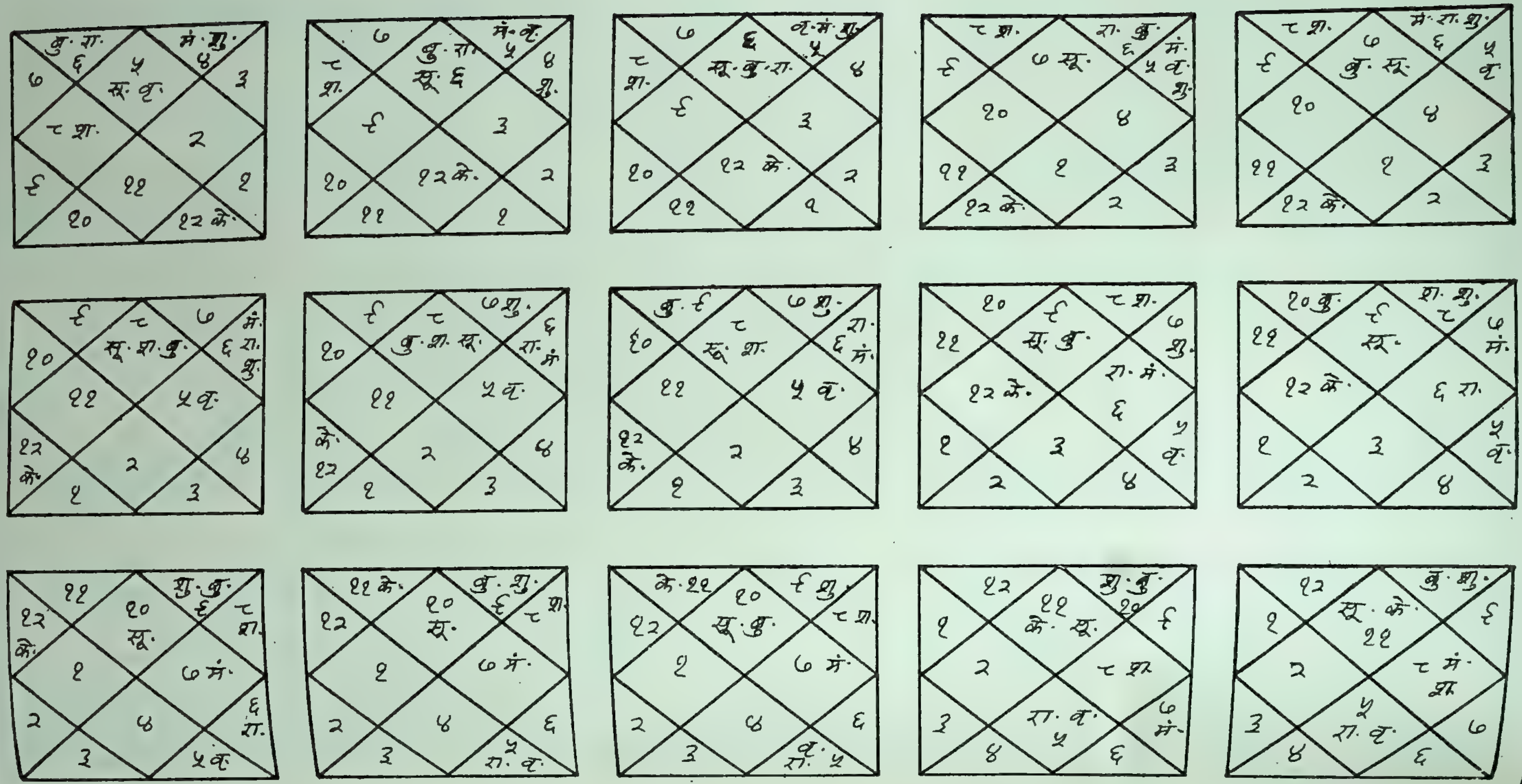

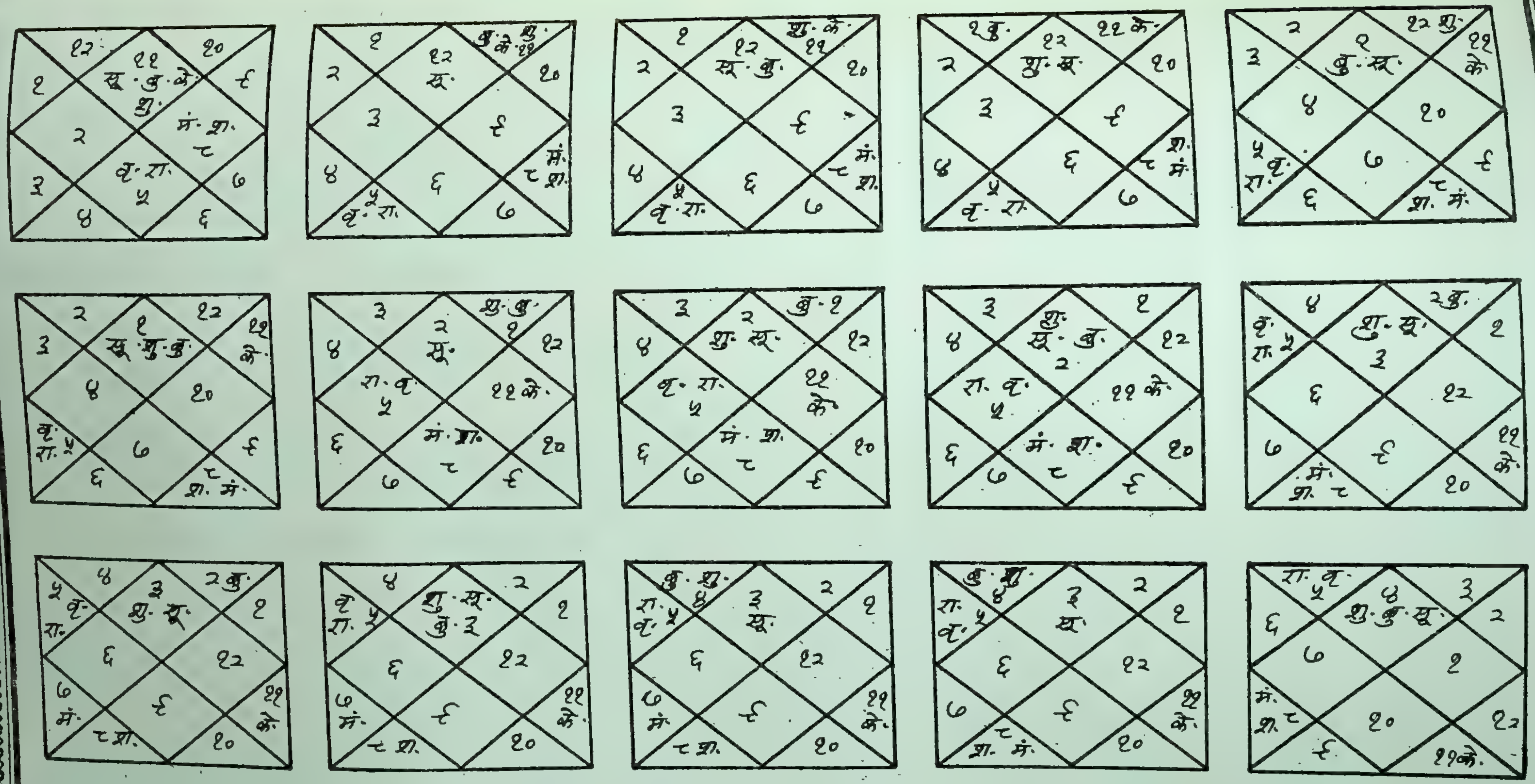

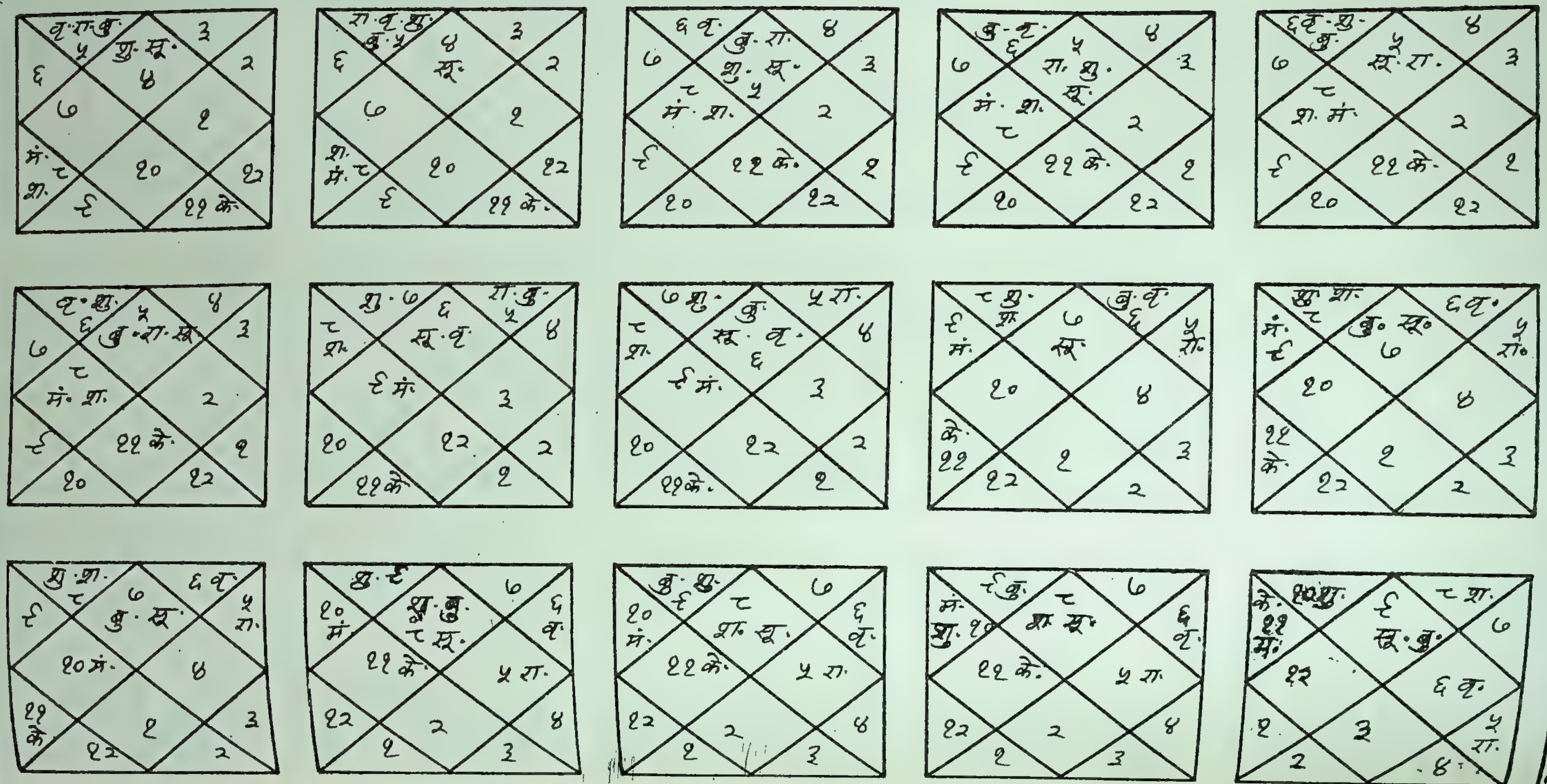

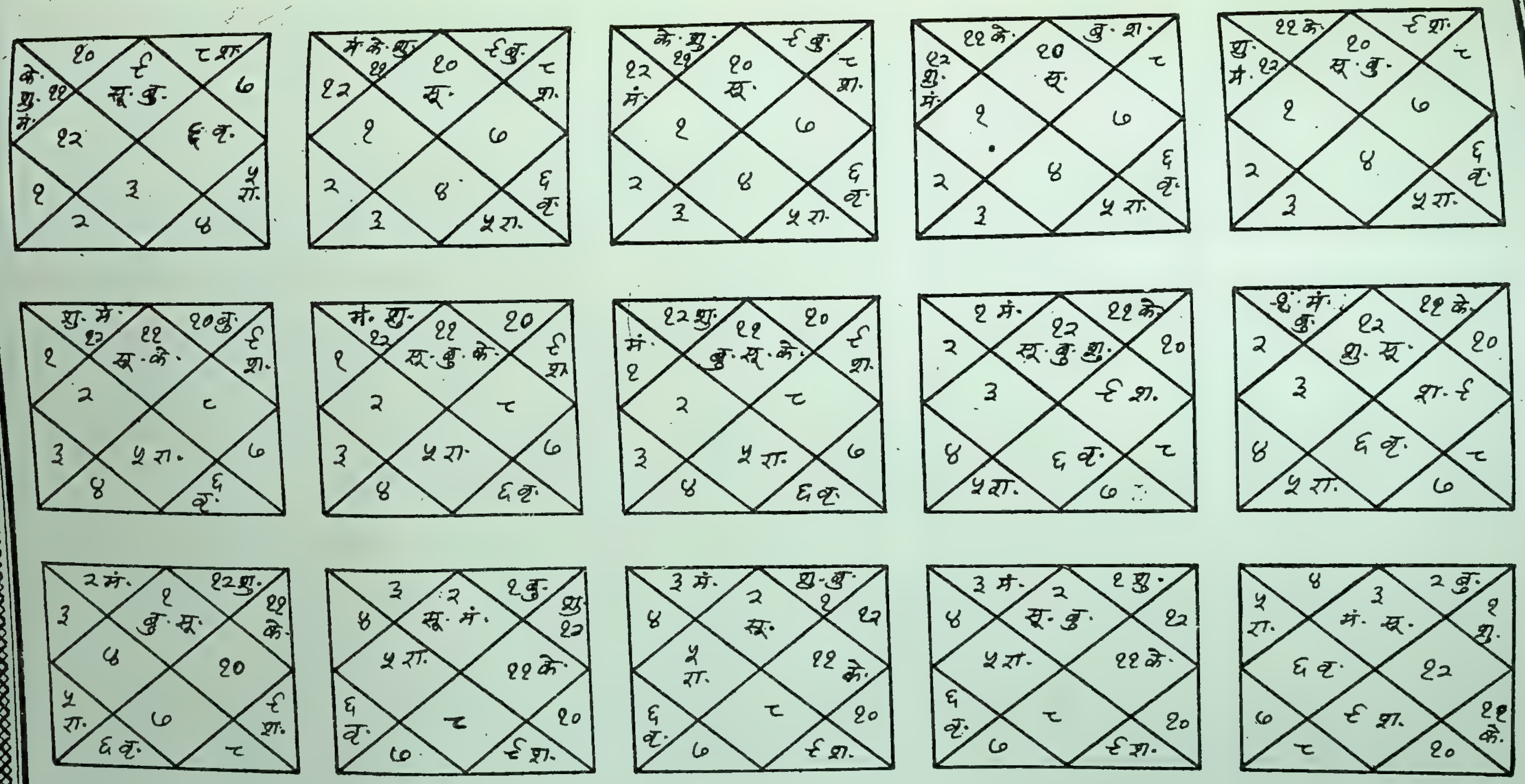

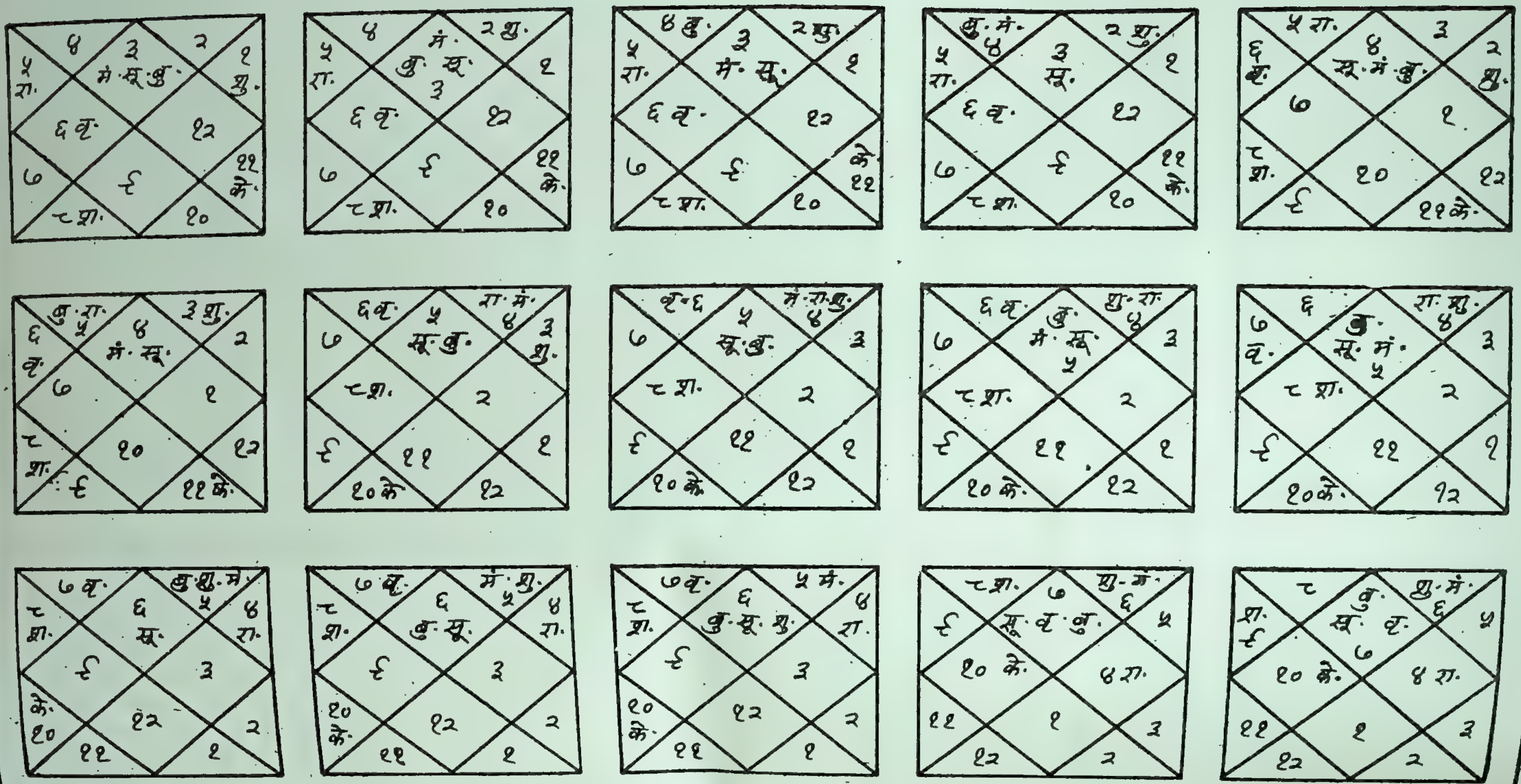

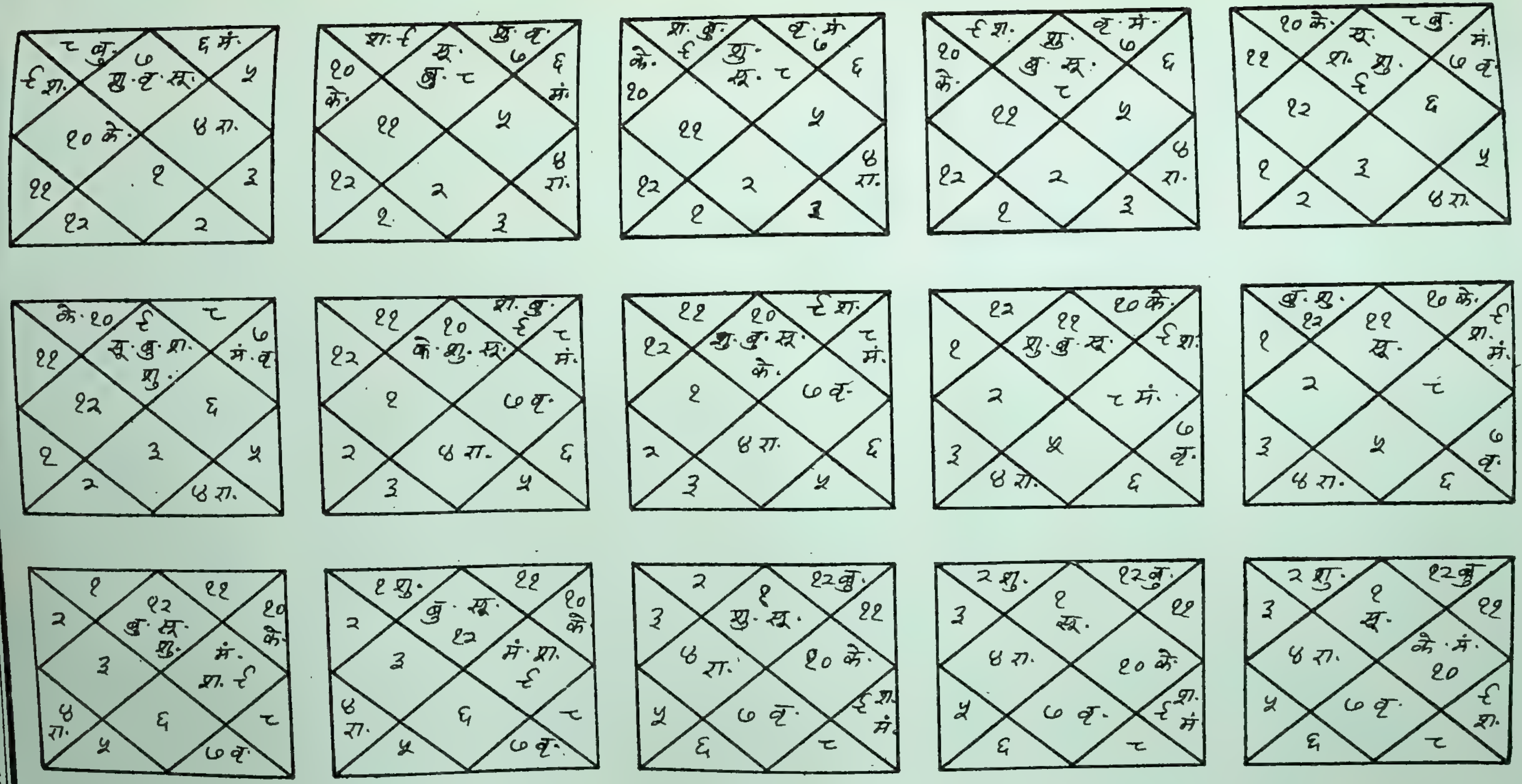

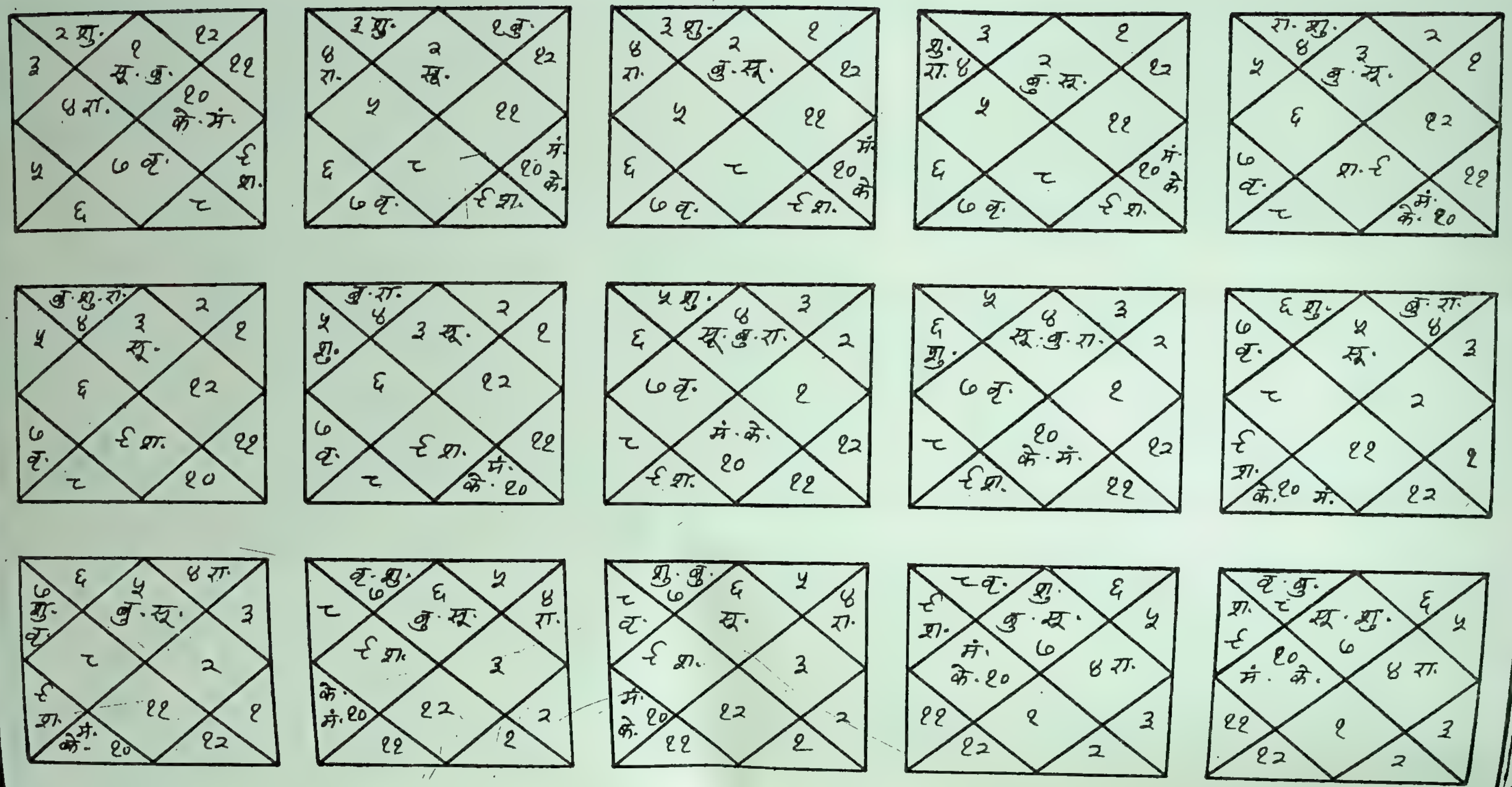

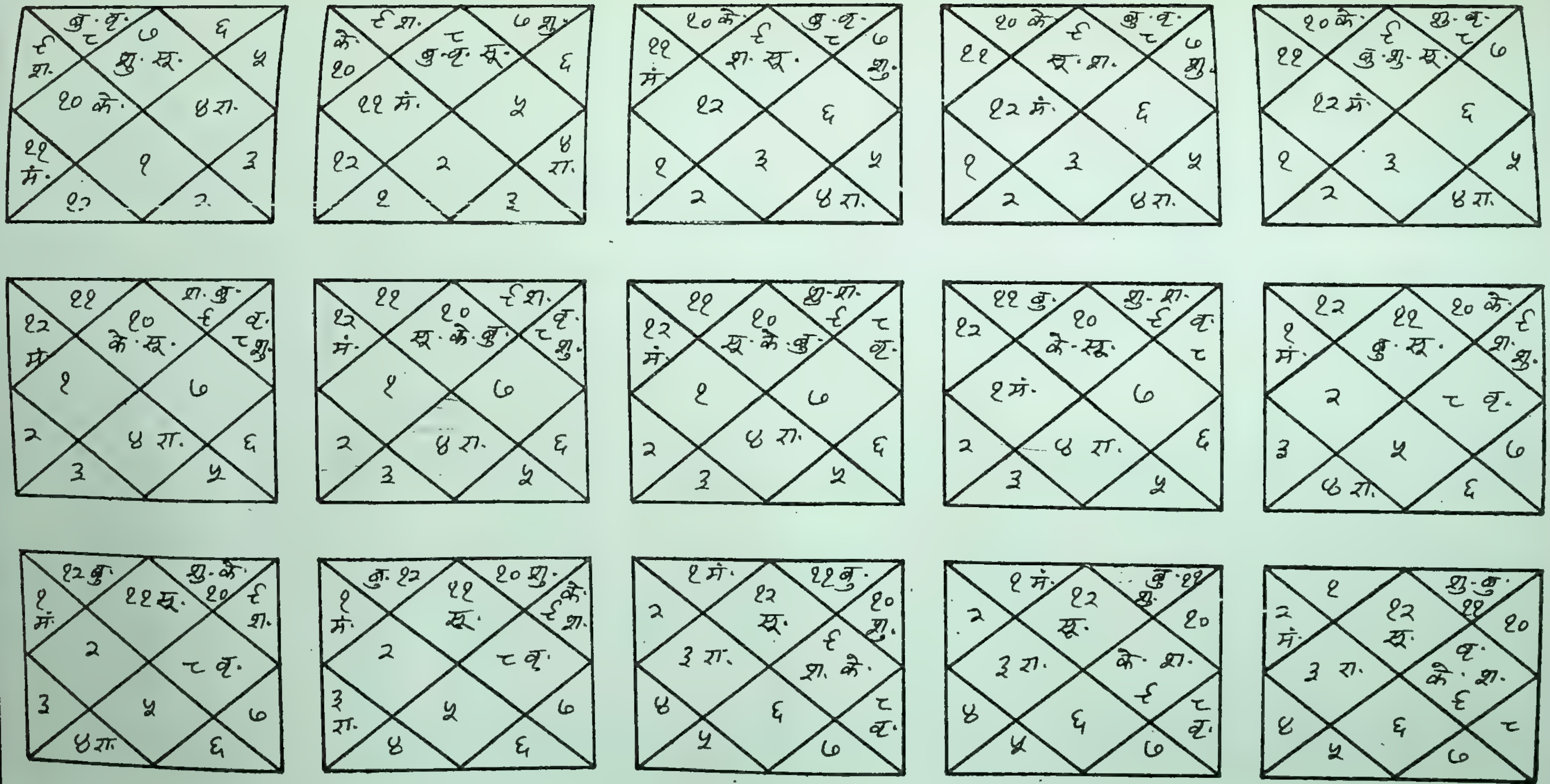

भू० सं० ८२२

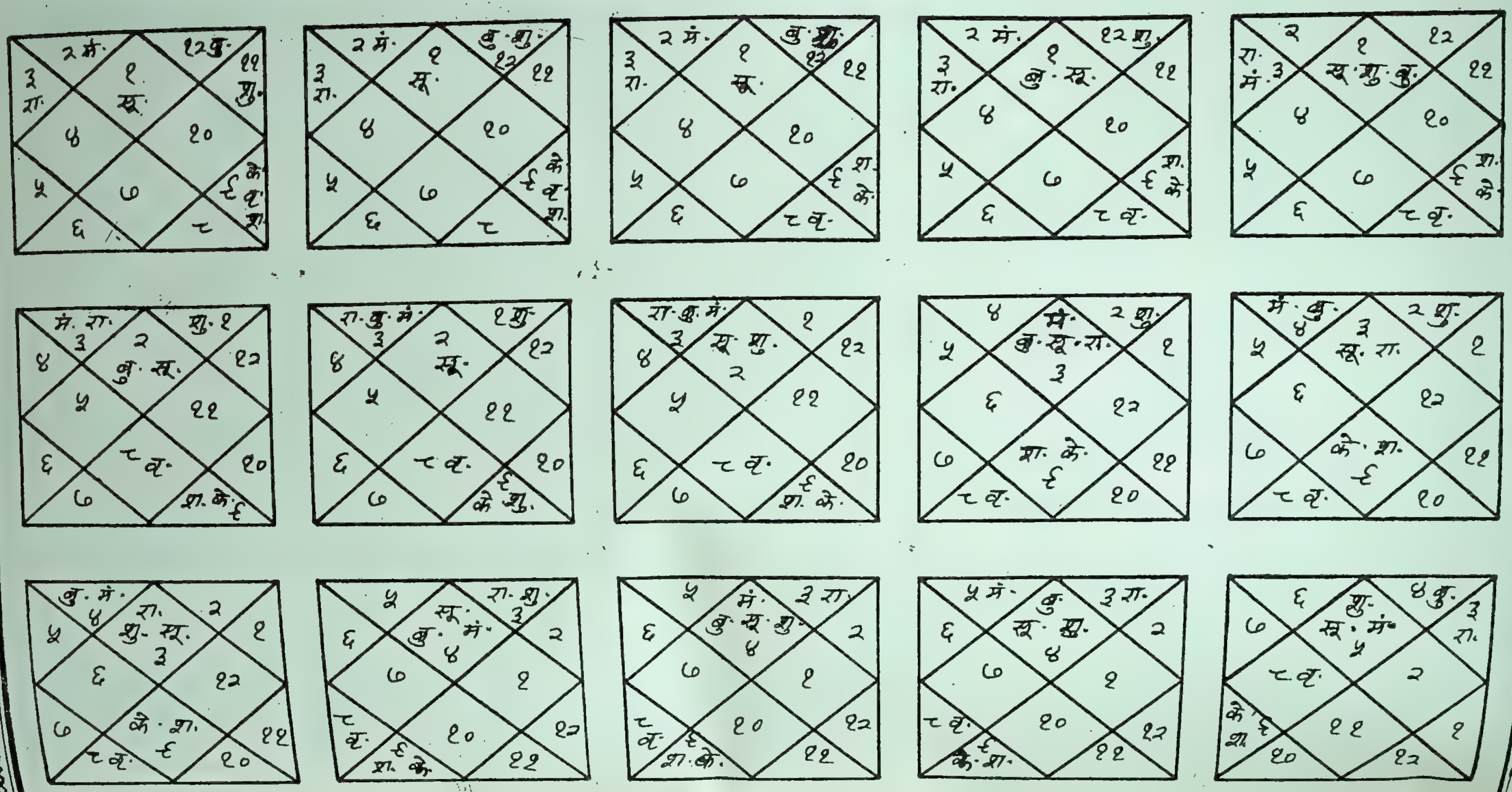

कु० प०

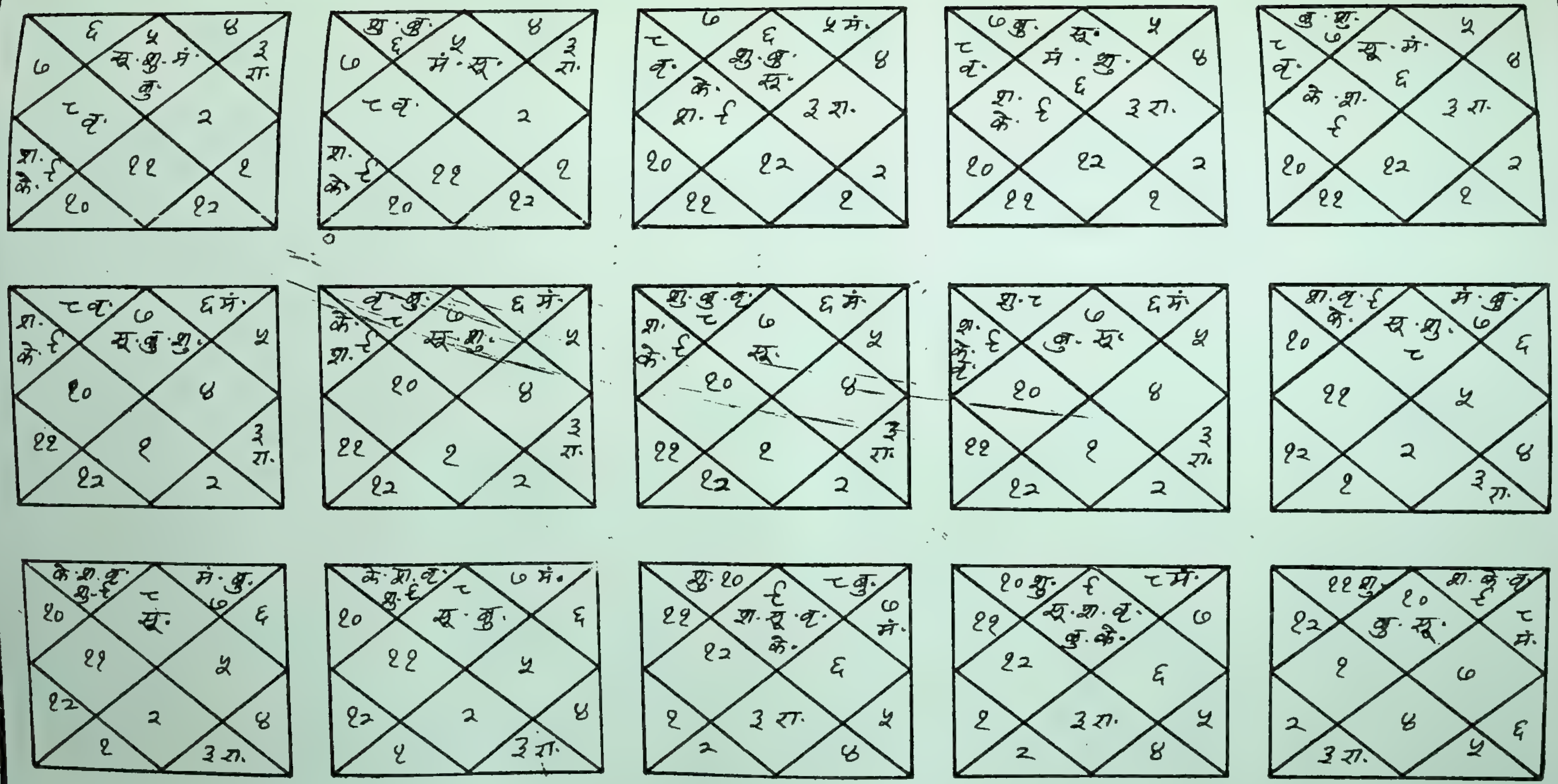

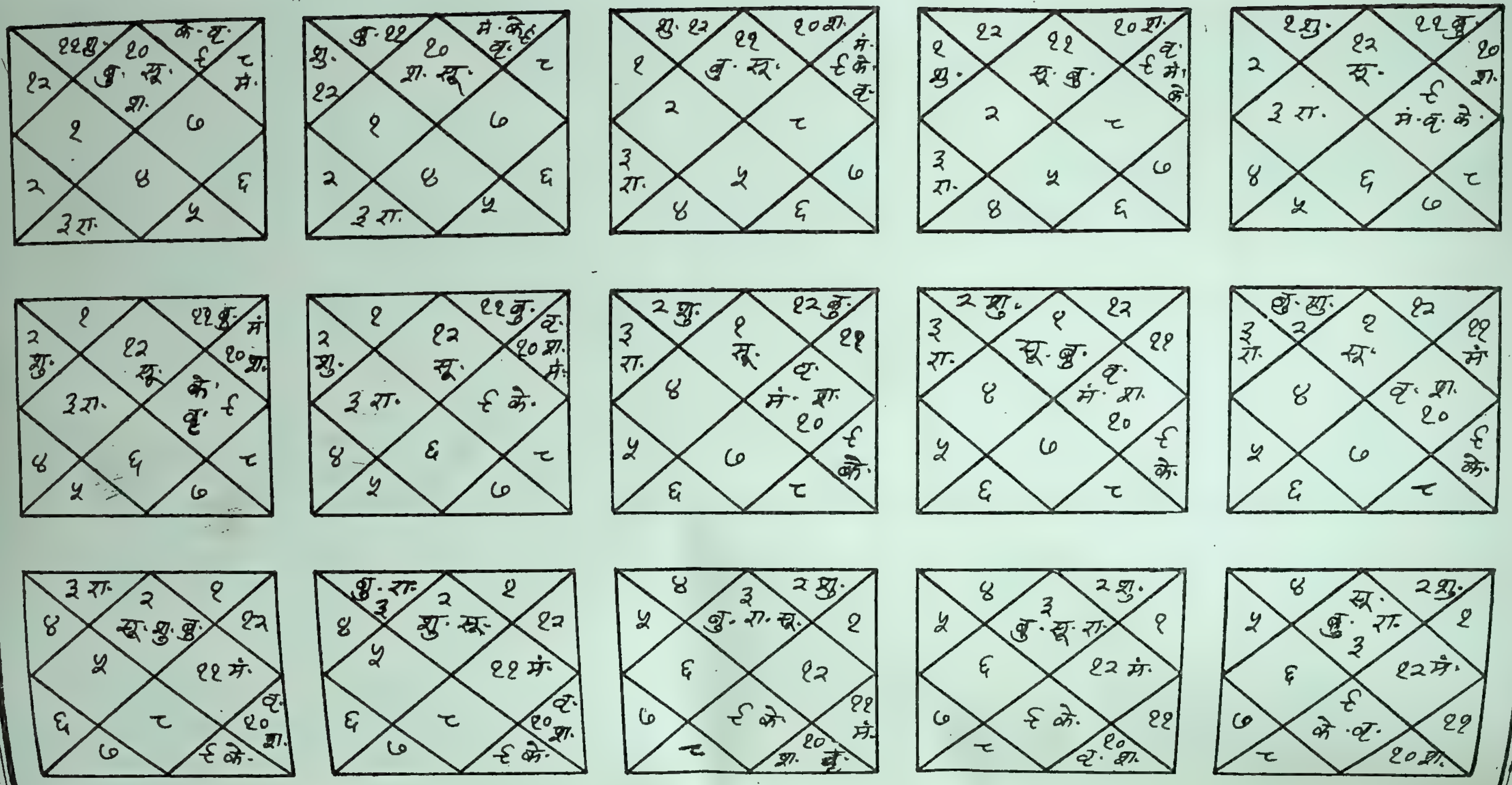

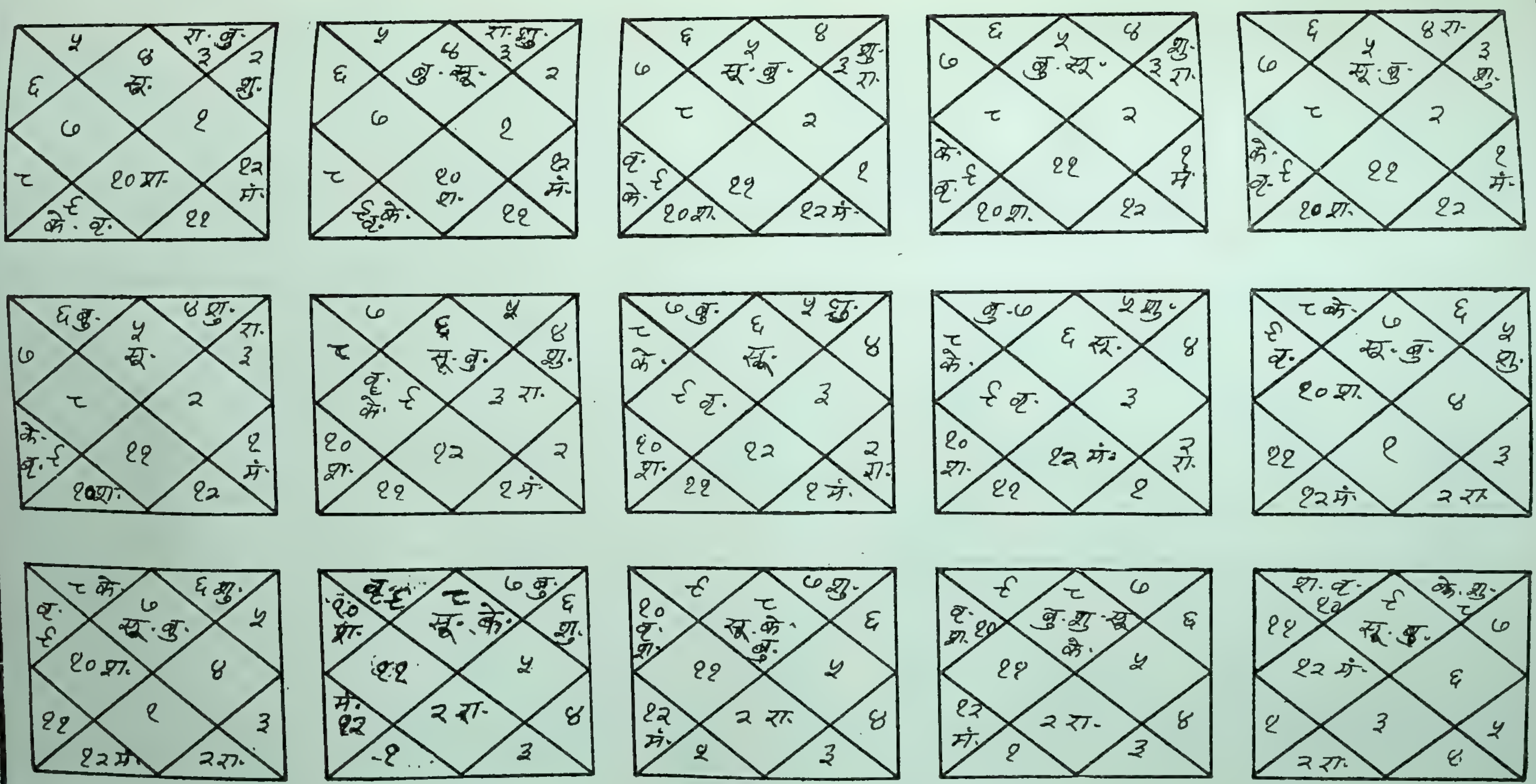

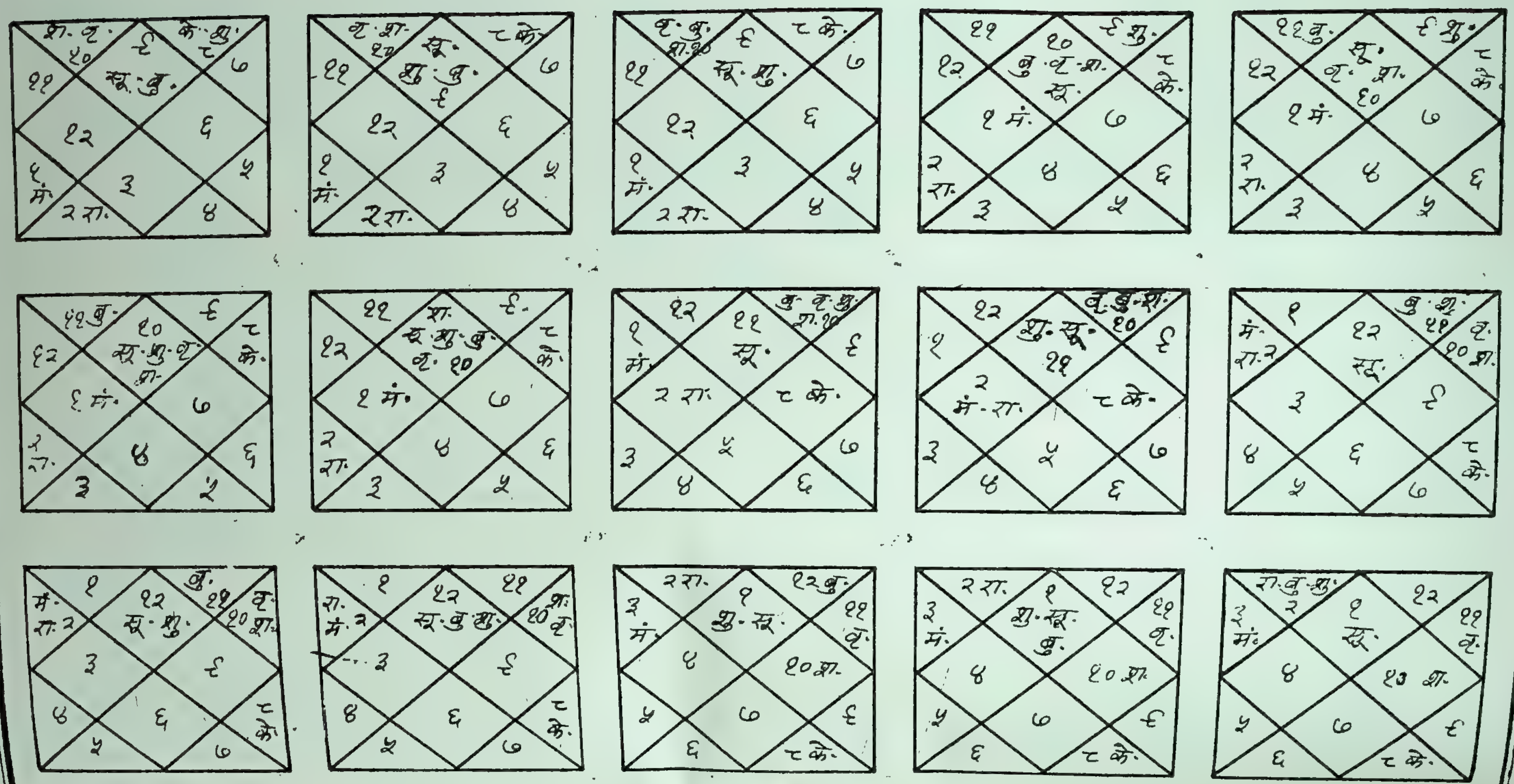

कु० प०

भृ० सं०

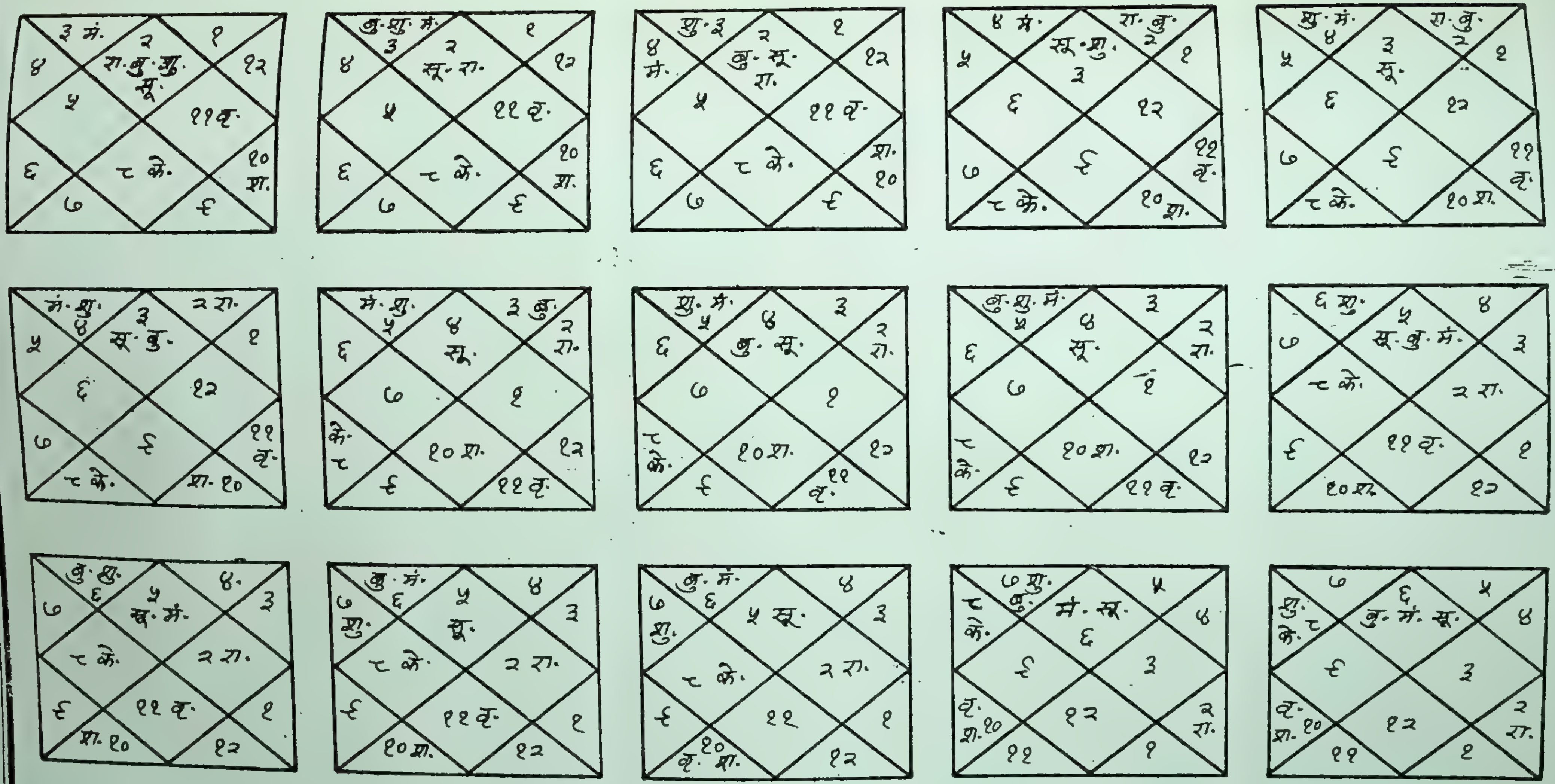

कु० प०

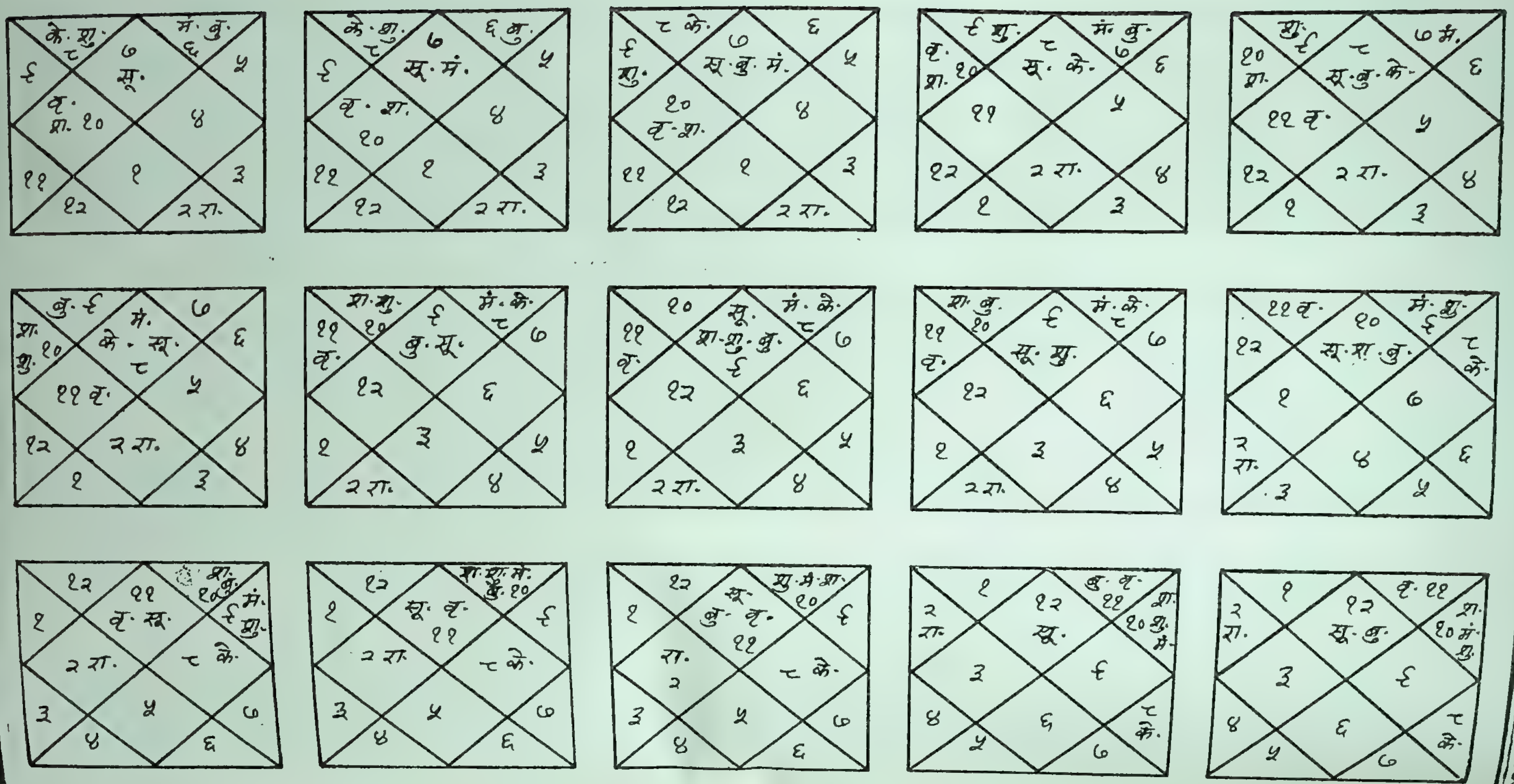

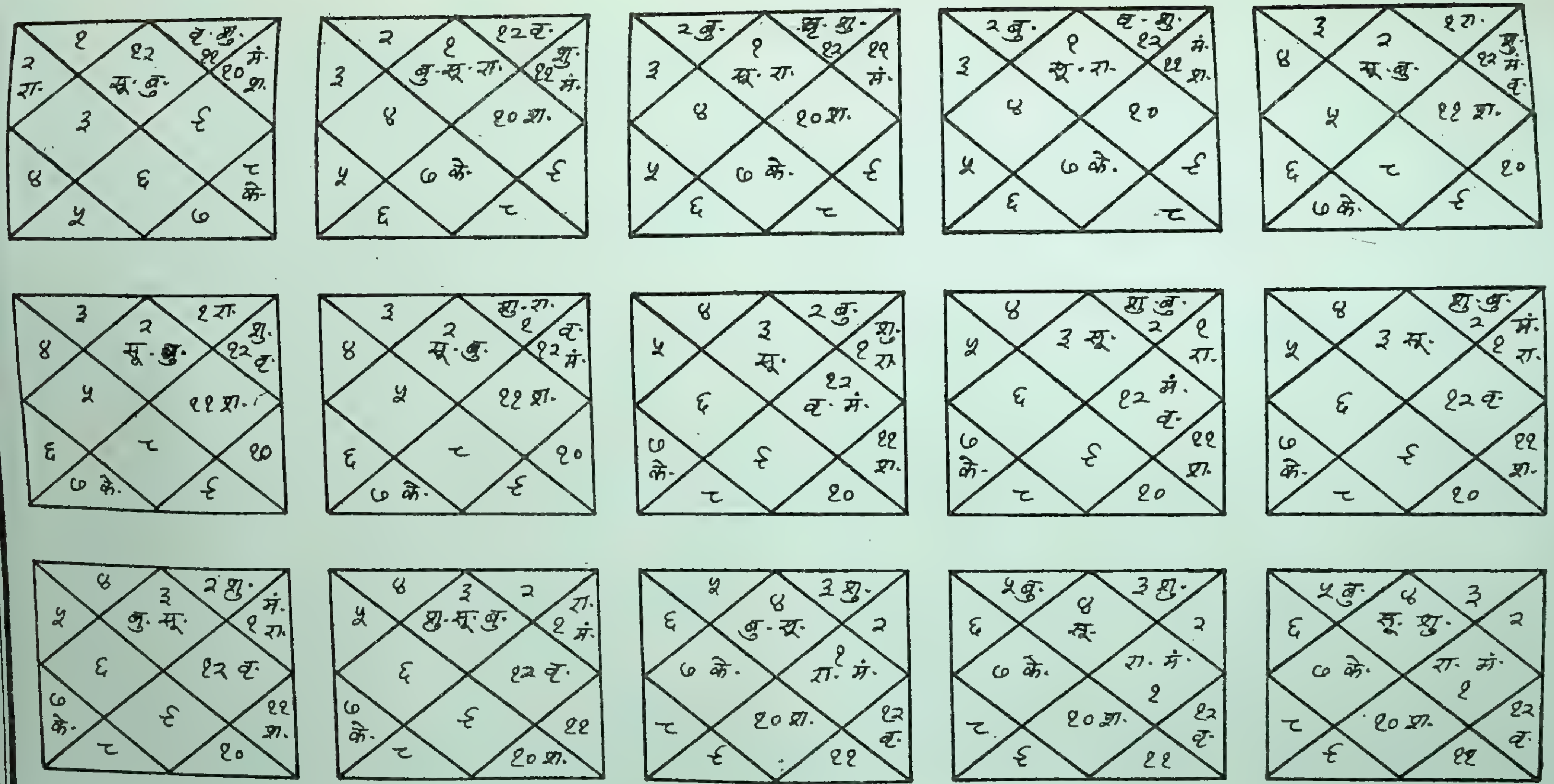

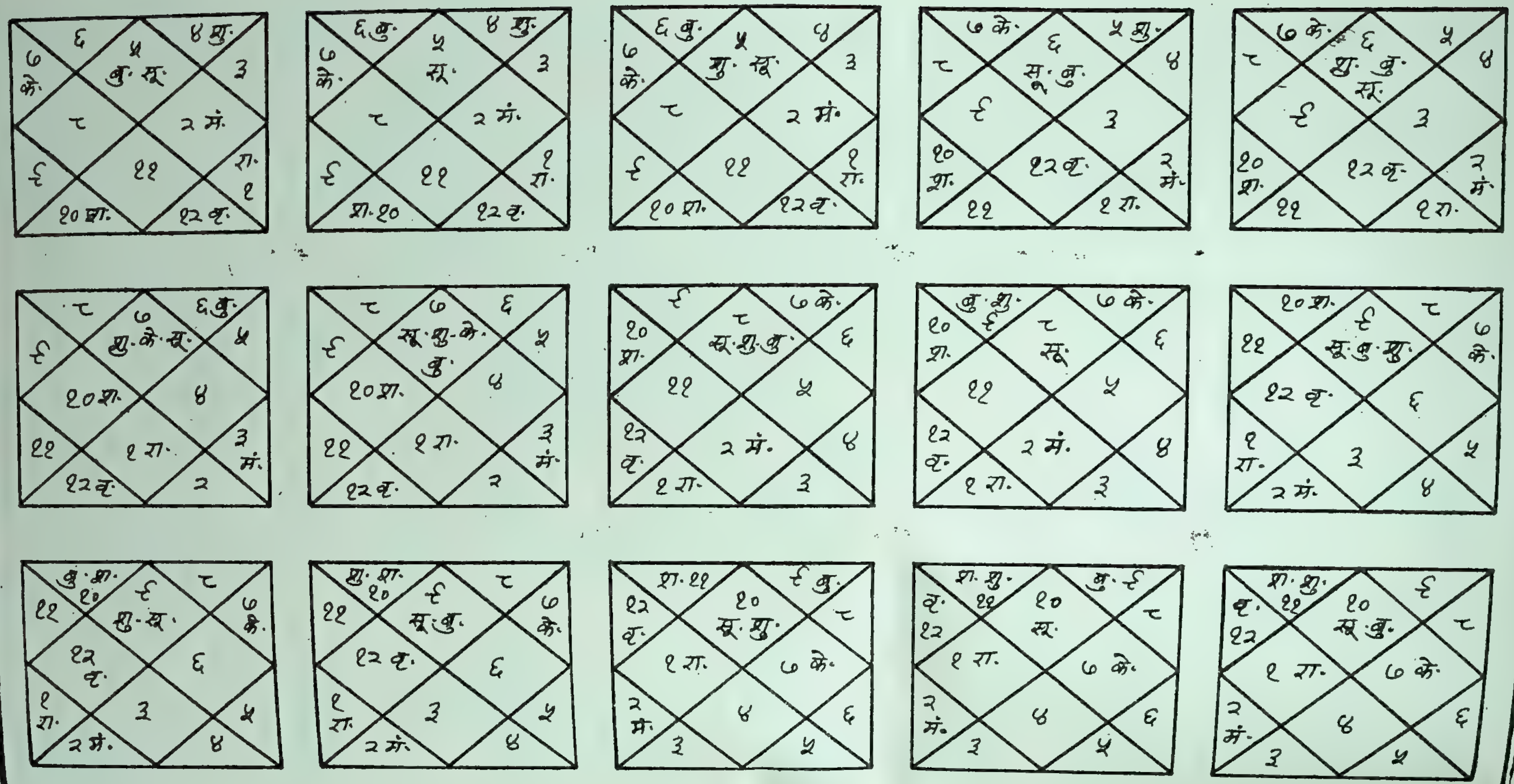

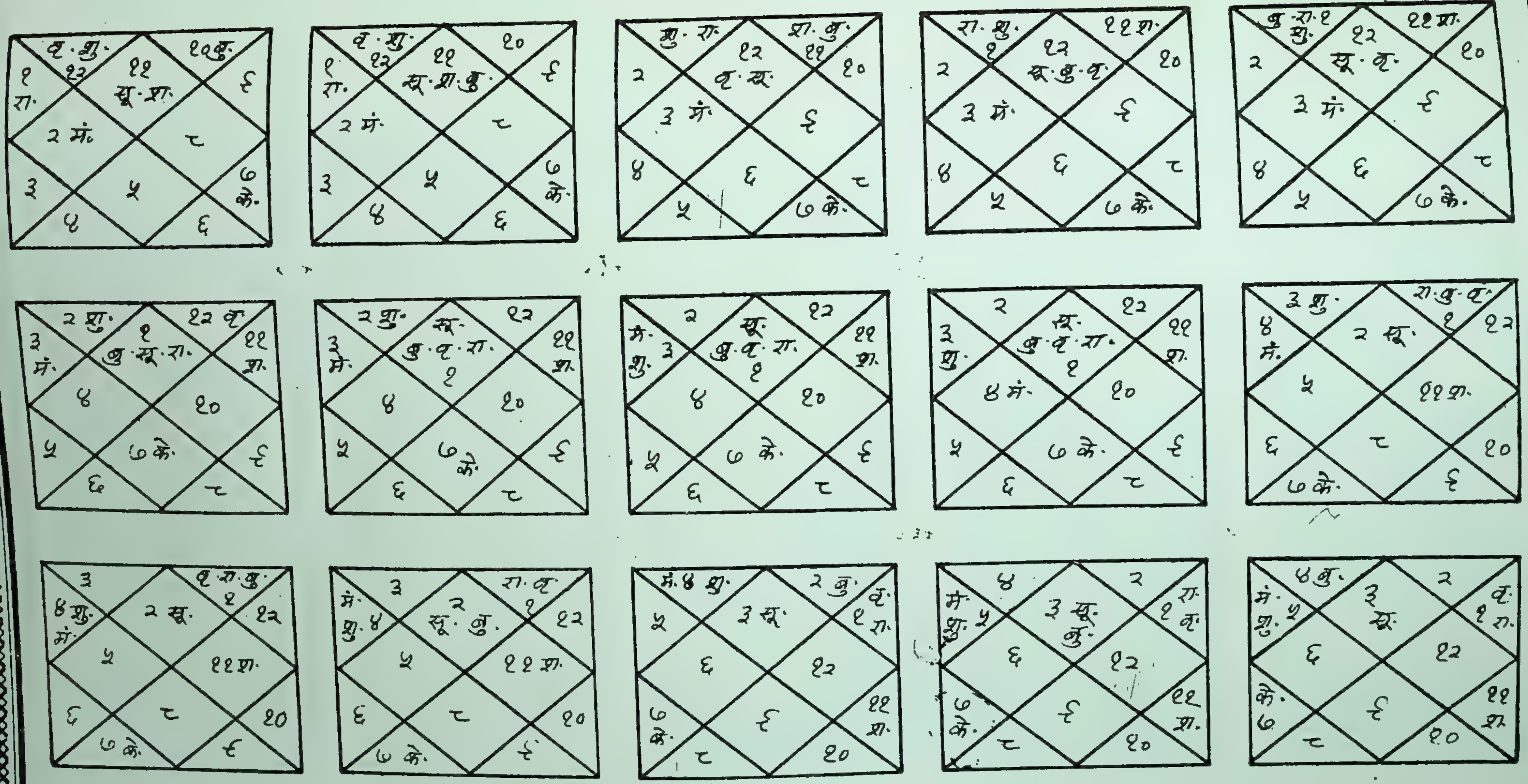

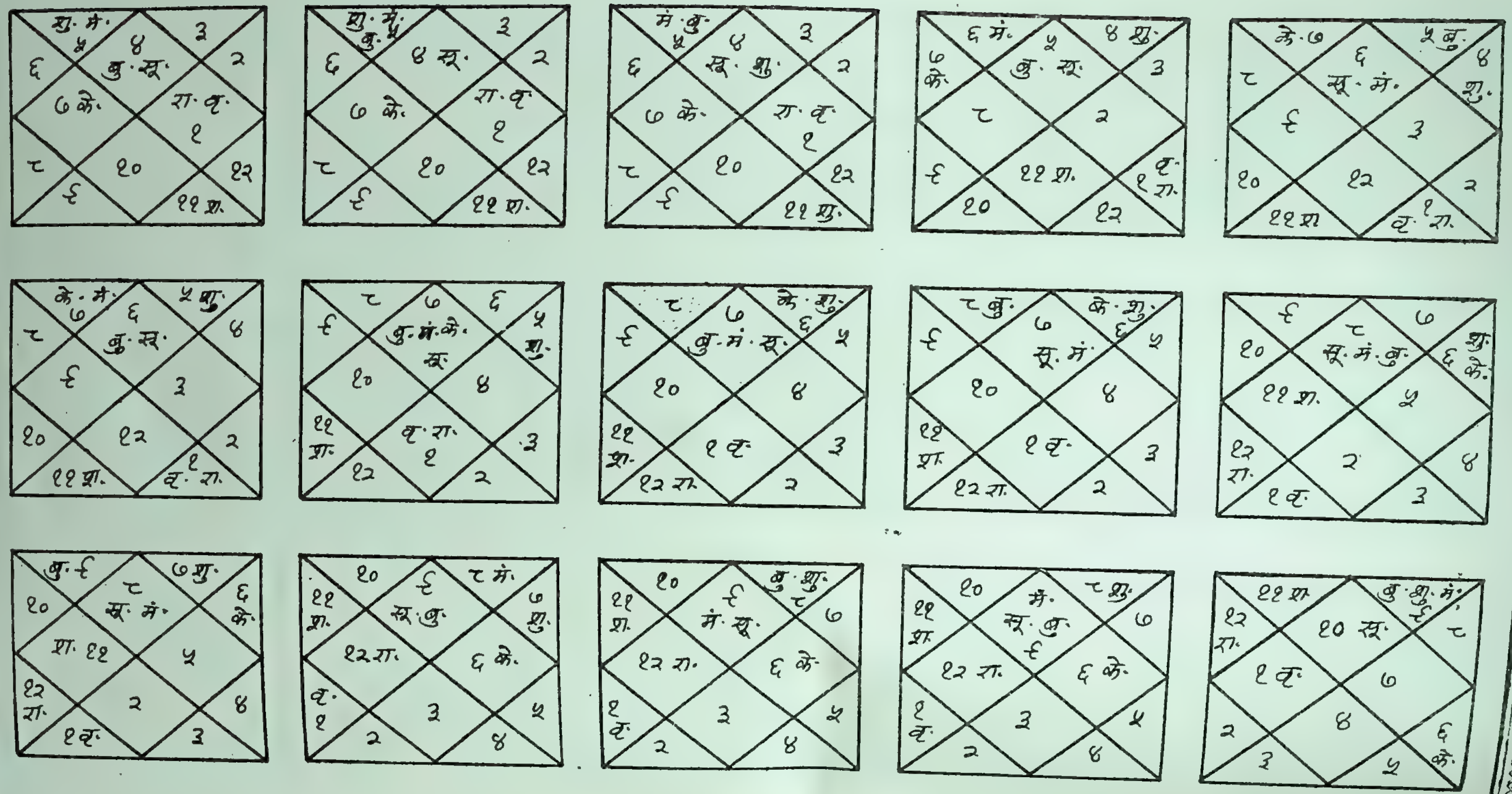
शु. मं. ५
४ बु. सू.
३
२
६
७ के.
रा. वृ. १
८
१०
१२
९
११ श.
शु. मं. बु. ५
४ सू.
३
२
६
७ के.
रा. वृ. १
८
१०
१२
९
११ श.
मं. बु. ५
४ सू. शु.
३
२
६
७ के.
रा. वृ. १
८
१०
१२
९
११ शु.
६ मं.
५ बु. सू.
४ शु.
७ के.
३
८
२
९
११ श.
वृ. १ रा.
१०
१२
के. ७
६ सू. मं.
५ बु.
४ शु.
८
९
३
१०
१२
२
११ श.
वृ. १ रा.
के. मं. ७
६ बु. सू.
५ शु.
८
४
९
३
१०
१२
२
११ श.
वृ. १ रा.
८
७
६
९
बु. मं. के. सू.
५ शु.
१०
४
११ श.
वृ. रा. १
३
१२
२
८
७
के. शु. ६
९
बु. मं. सू.
५
१०
४
११ श.
१ वृ.
३
१२ रा.
२
८ बु.
७
के. शु. ६
९
सू. मं.
५
१०
४
११ श.
१ वृ.
३
१२ रा.
२
९
८ सू. मं. बु.
७
१०
शु. ६ के.
११ श.
५
१२ रा.
२
४
१ वृ.
३
बु. ९
८ सू. मं.
७ शु.
१०
६ के.
श. ११
५
१२ रा.
२
४
१ वृ.
३
१०
९
८ मं.
११ श.
सू. बु.
७ शु.
१२ रा.
६ के.
वृ. १
३
५
२
४
१०
९
बु. शु. ८
११ श.
मं. सू.
७
१२ रा.
६ के.
१ वृ.
३
५
२
४
१०
मं. ९
८ शु.
११ श.
सू. बु.
७
१२ रा.
६ के.
१ वृ.
३
५
२
४
११ श.
बु. शु. मं. ९
१२ रा.
१० सू.
८
१ वृ.
७
२
४
३
५
६ के.

भु० सं०

कु० प०

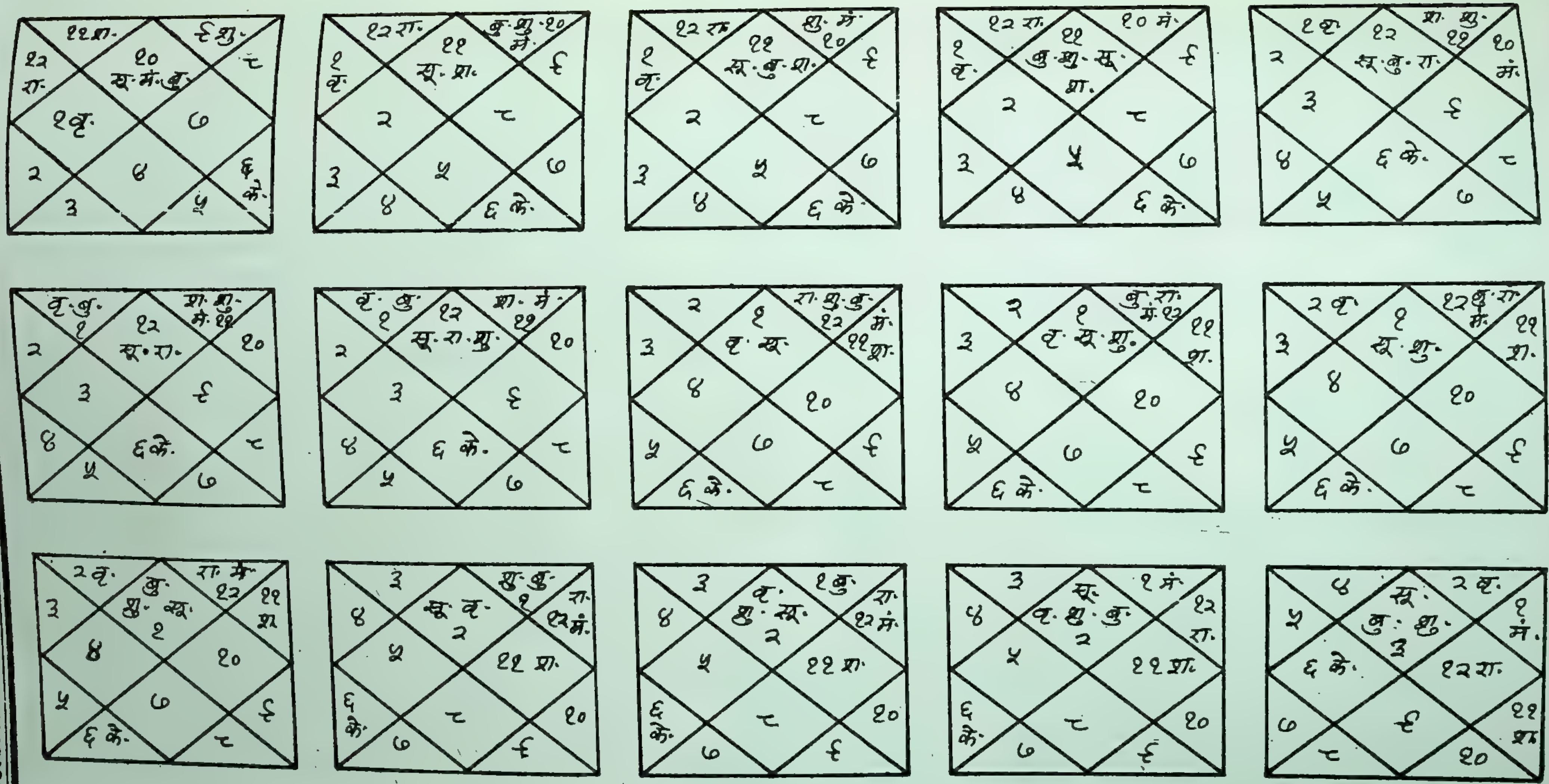

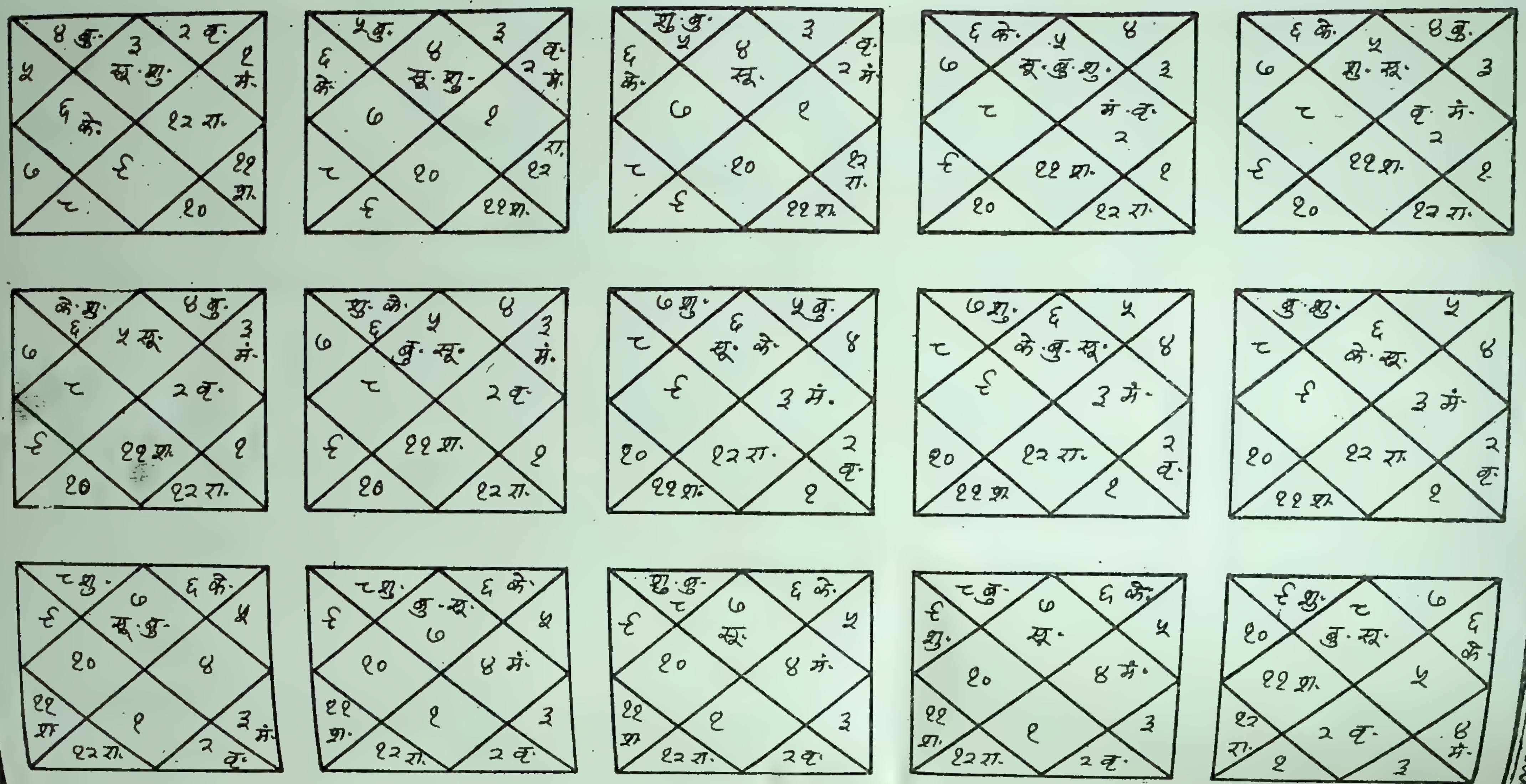

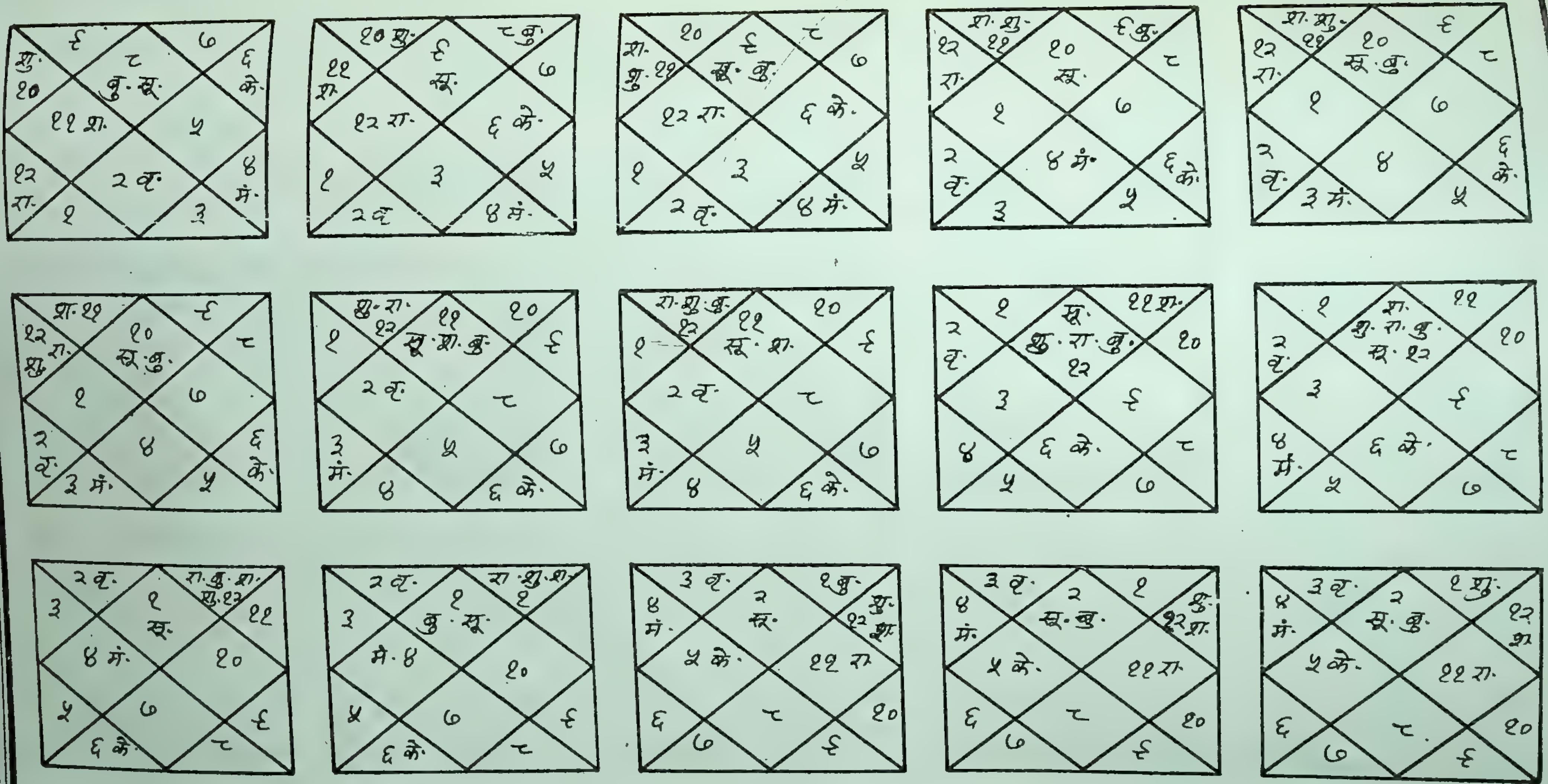

मू० सं० ४४३

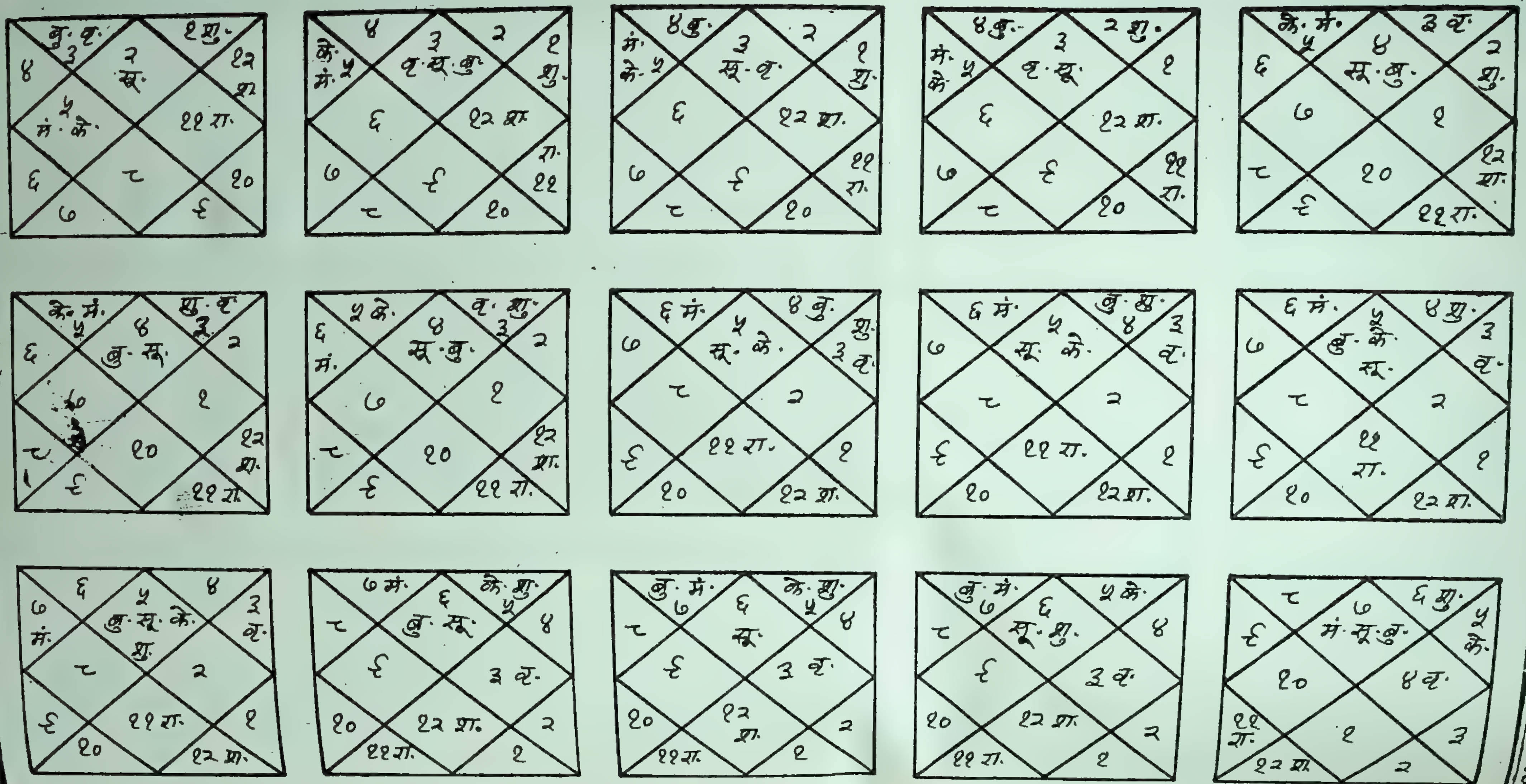

कु० ८०

भ० सं०

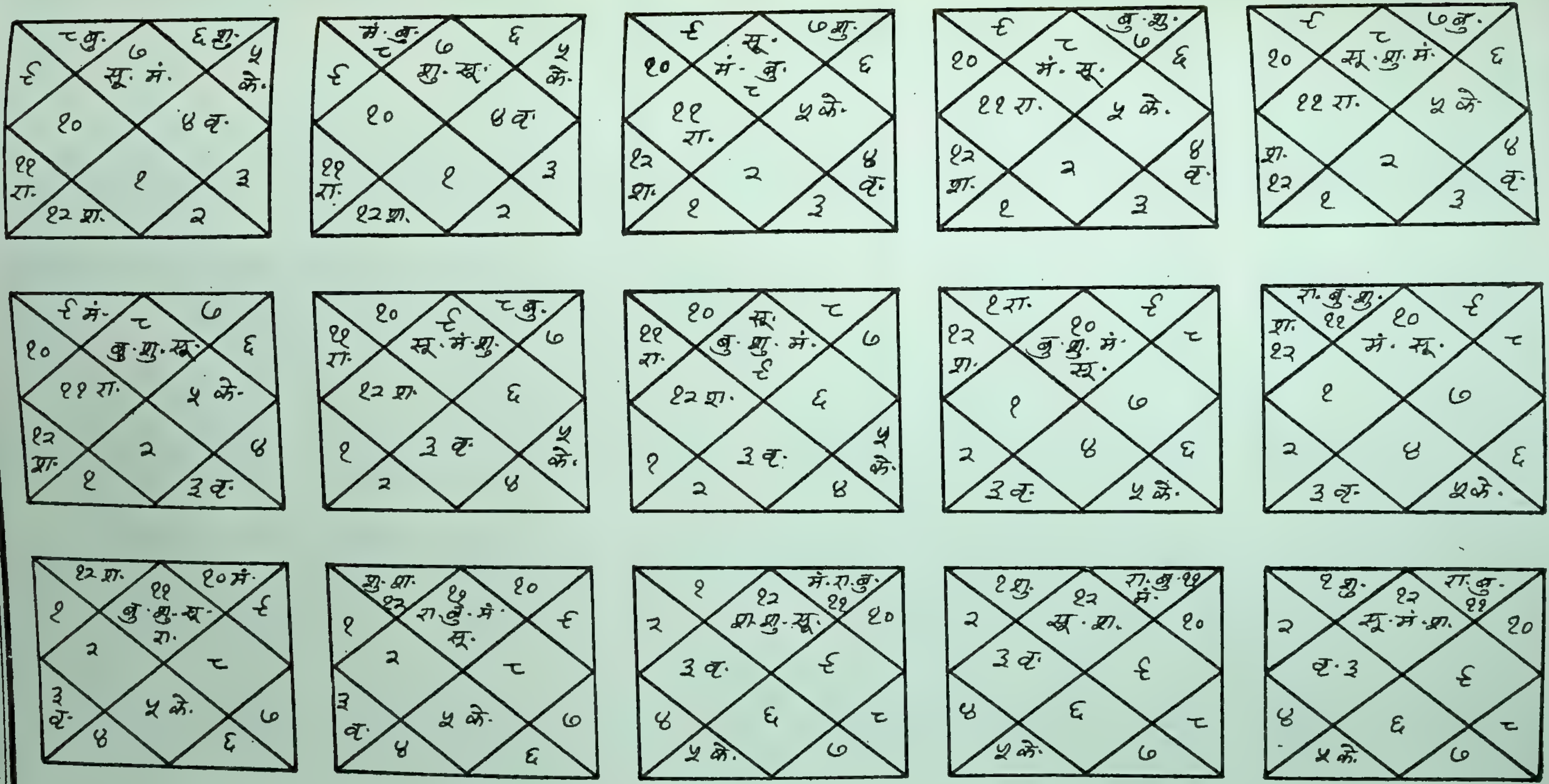

कु० प०

भू० सं० ८३४

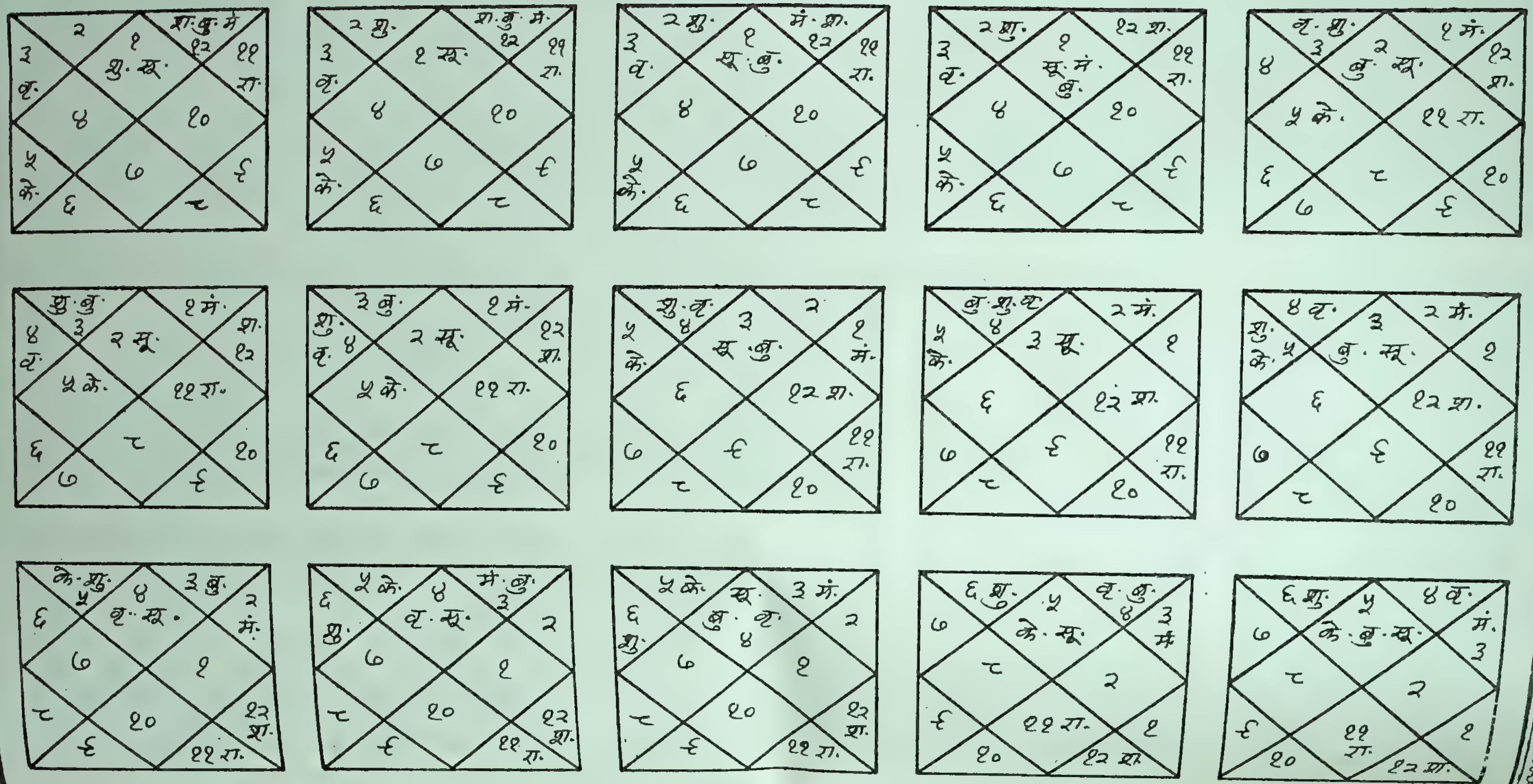

कु० प०

भू० सं० ३६४८

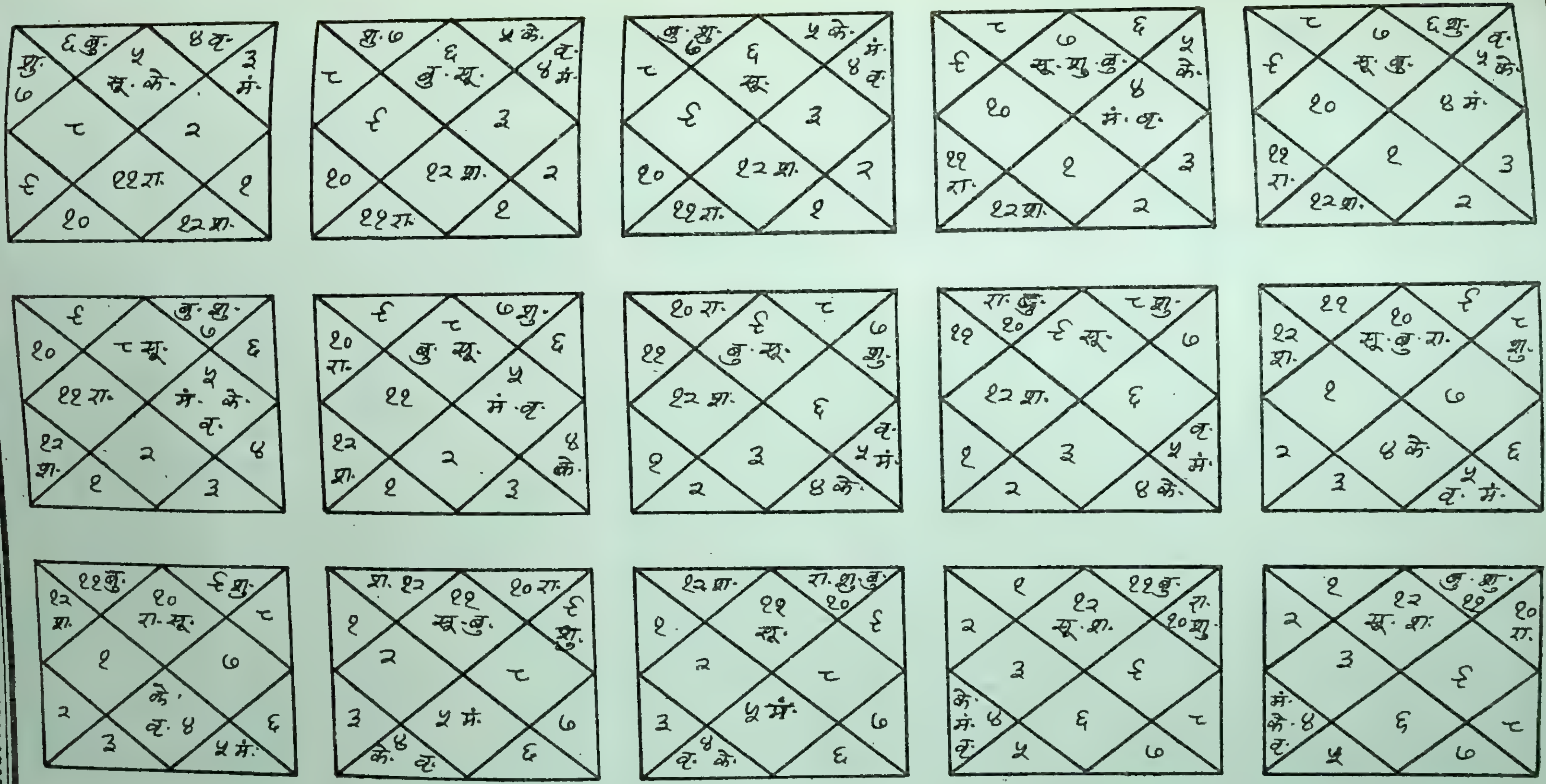

कु० प०

मू० सं० ४४०

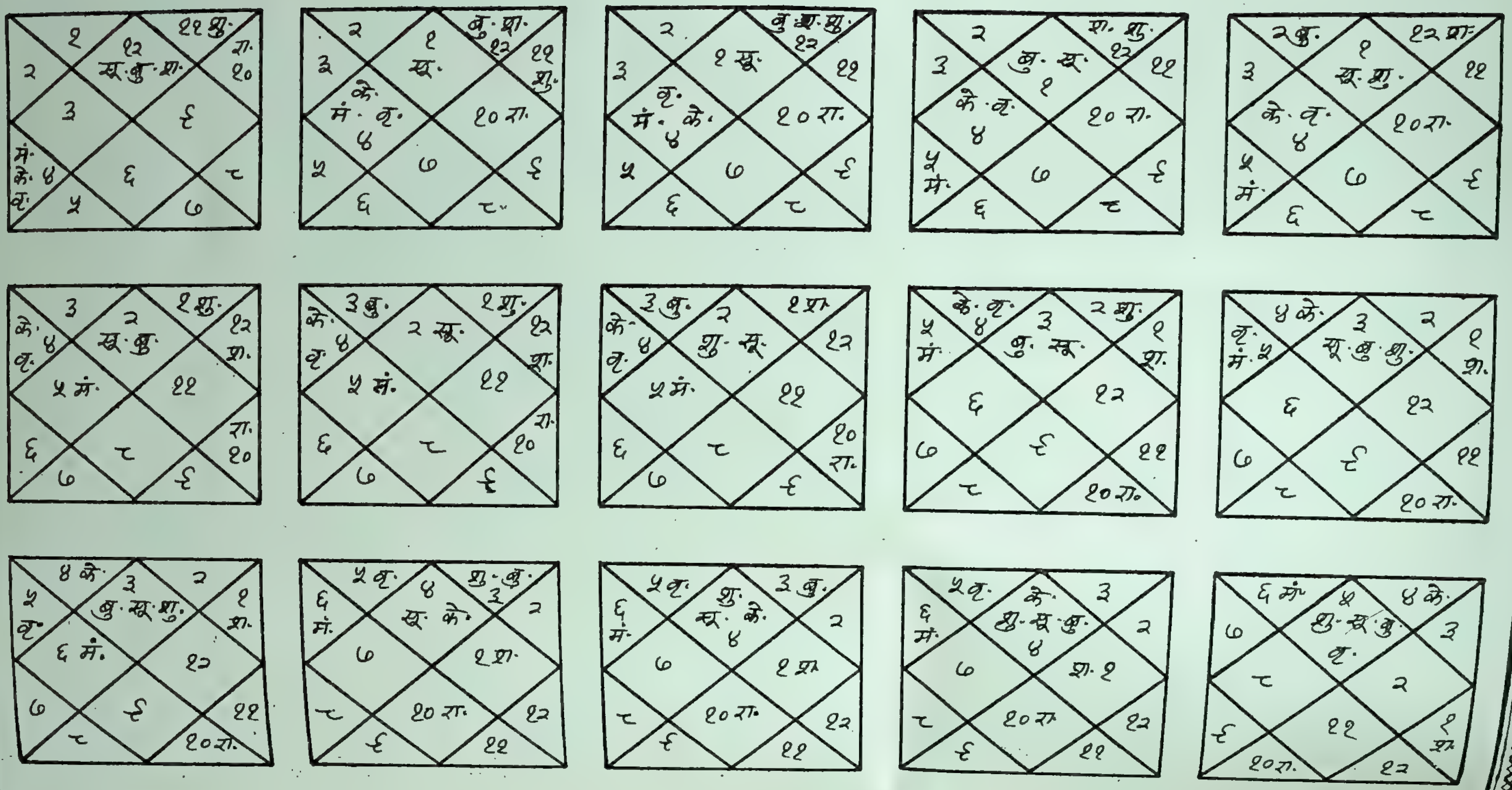

कु० प०

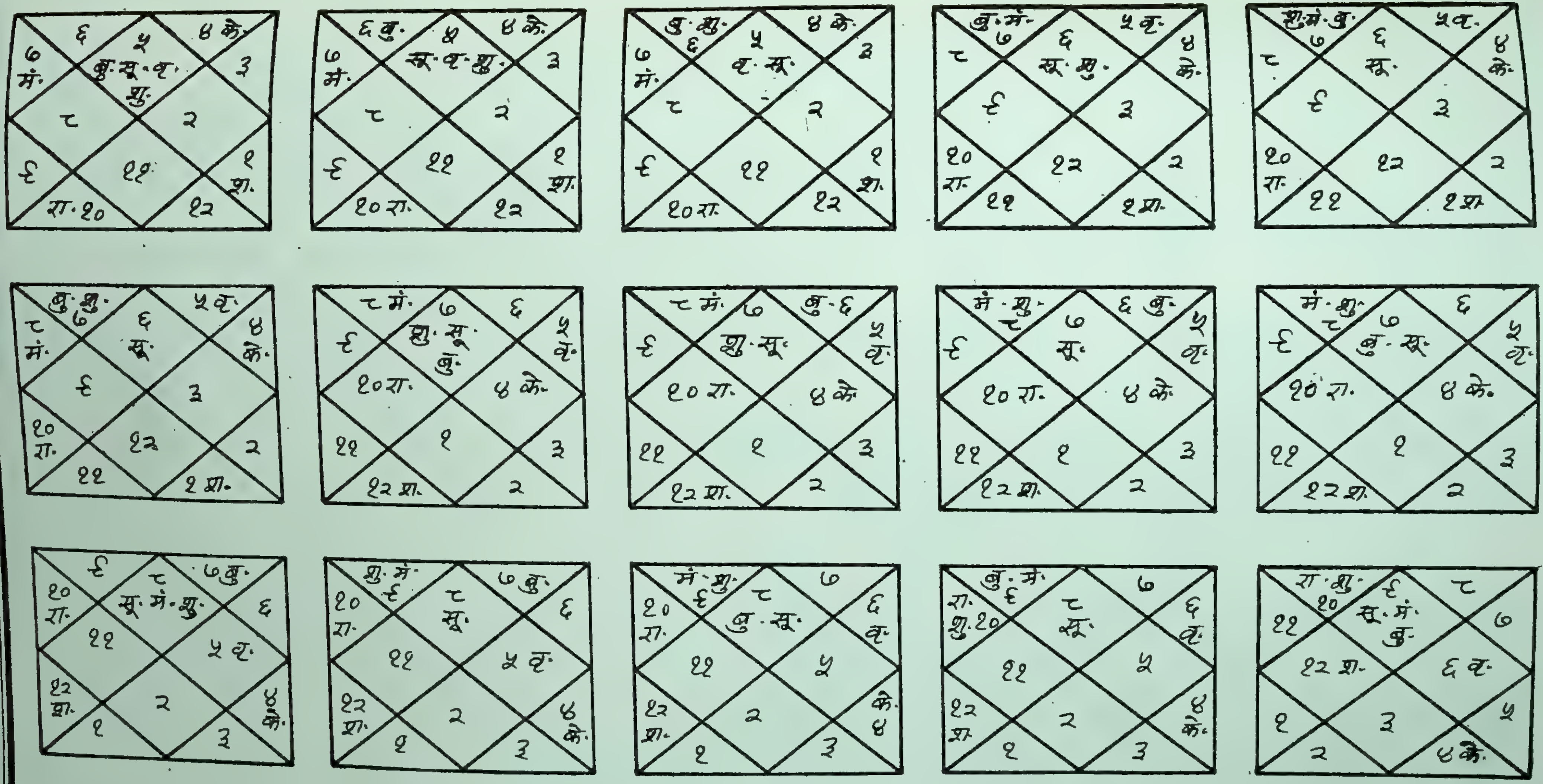

भू० सं० ४४८

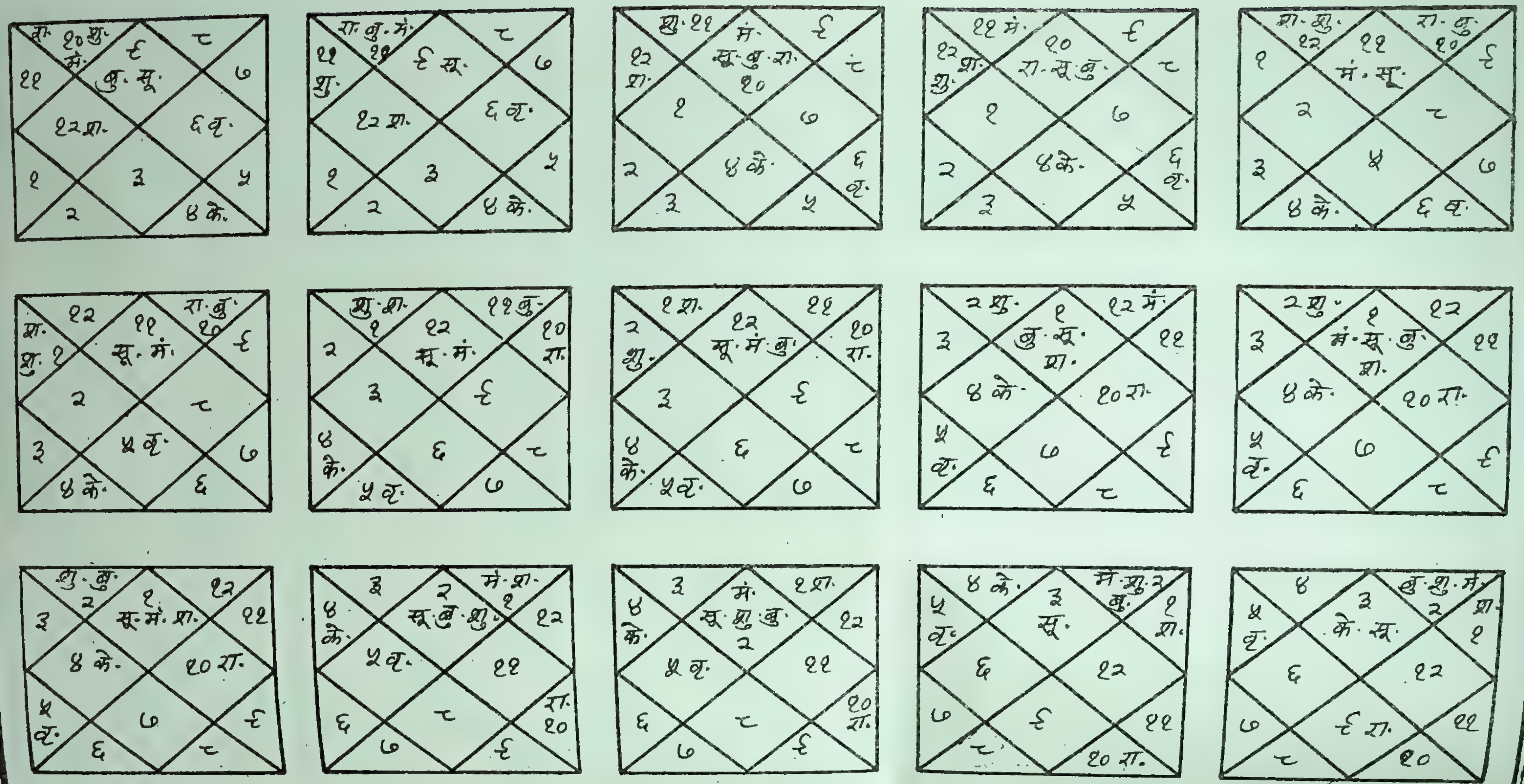

कु० प०

भू० सं० ३९९

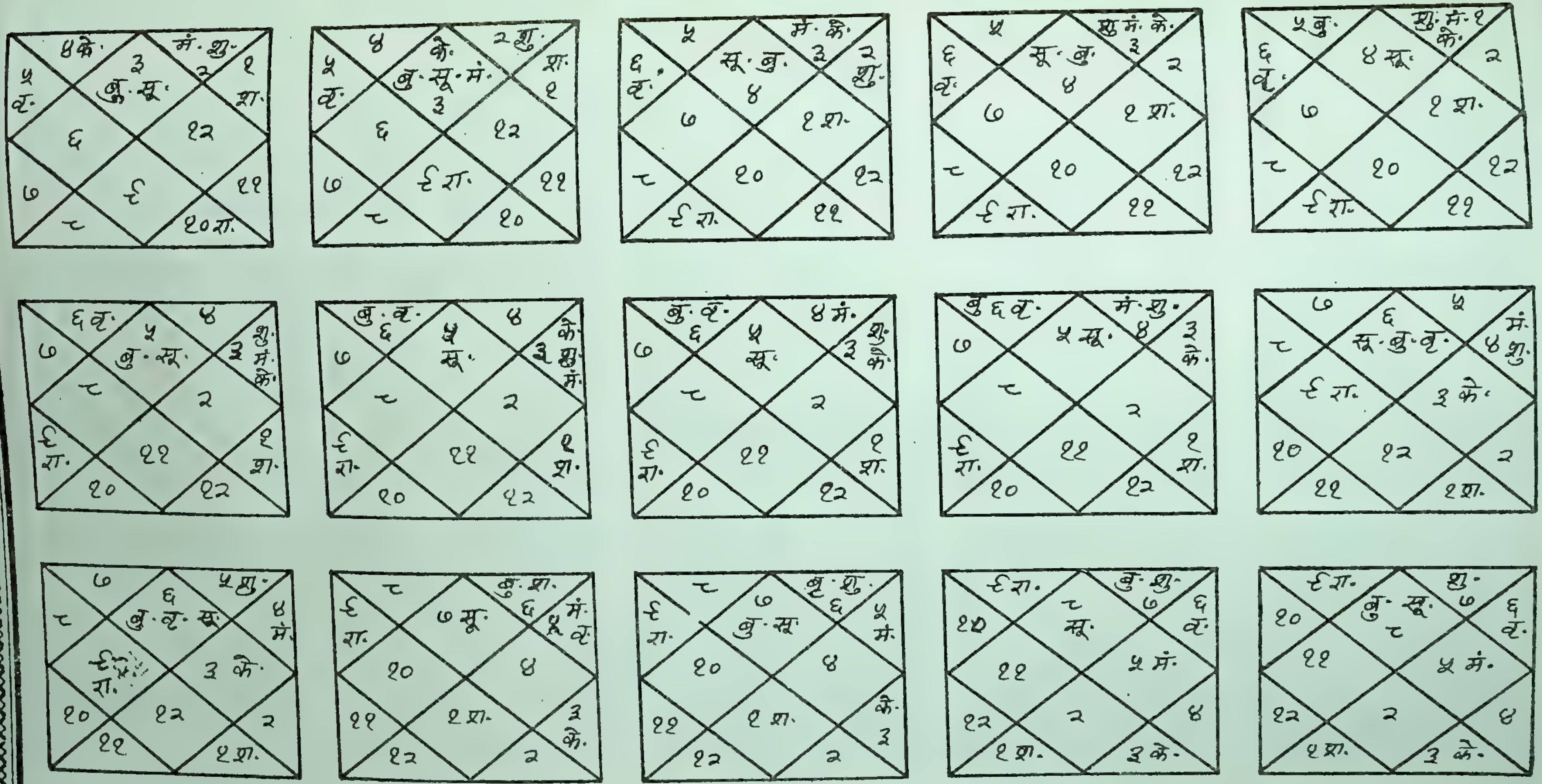

कु० प०

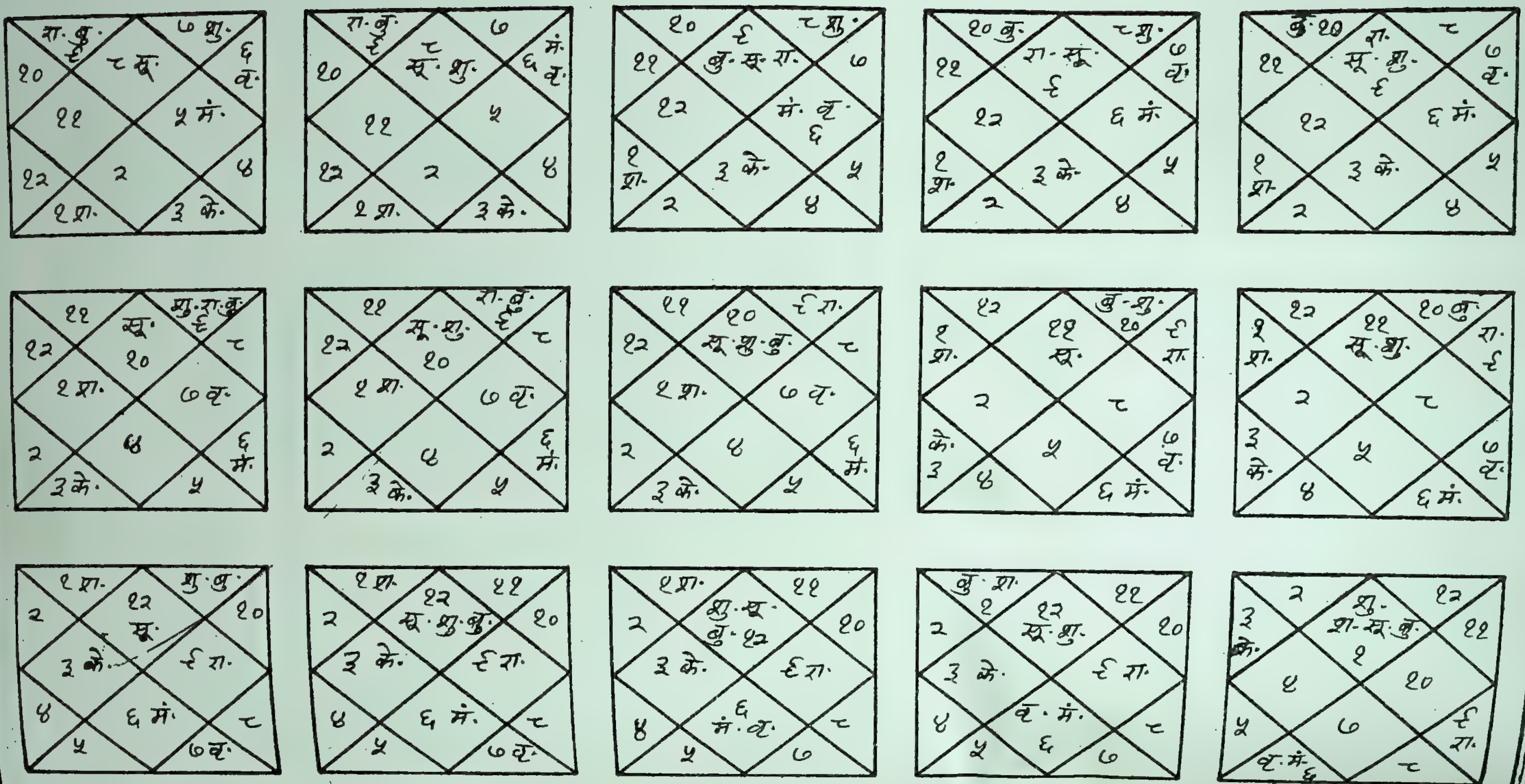

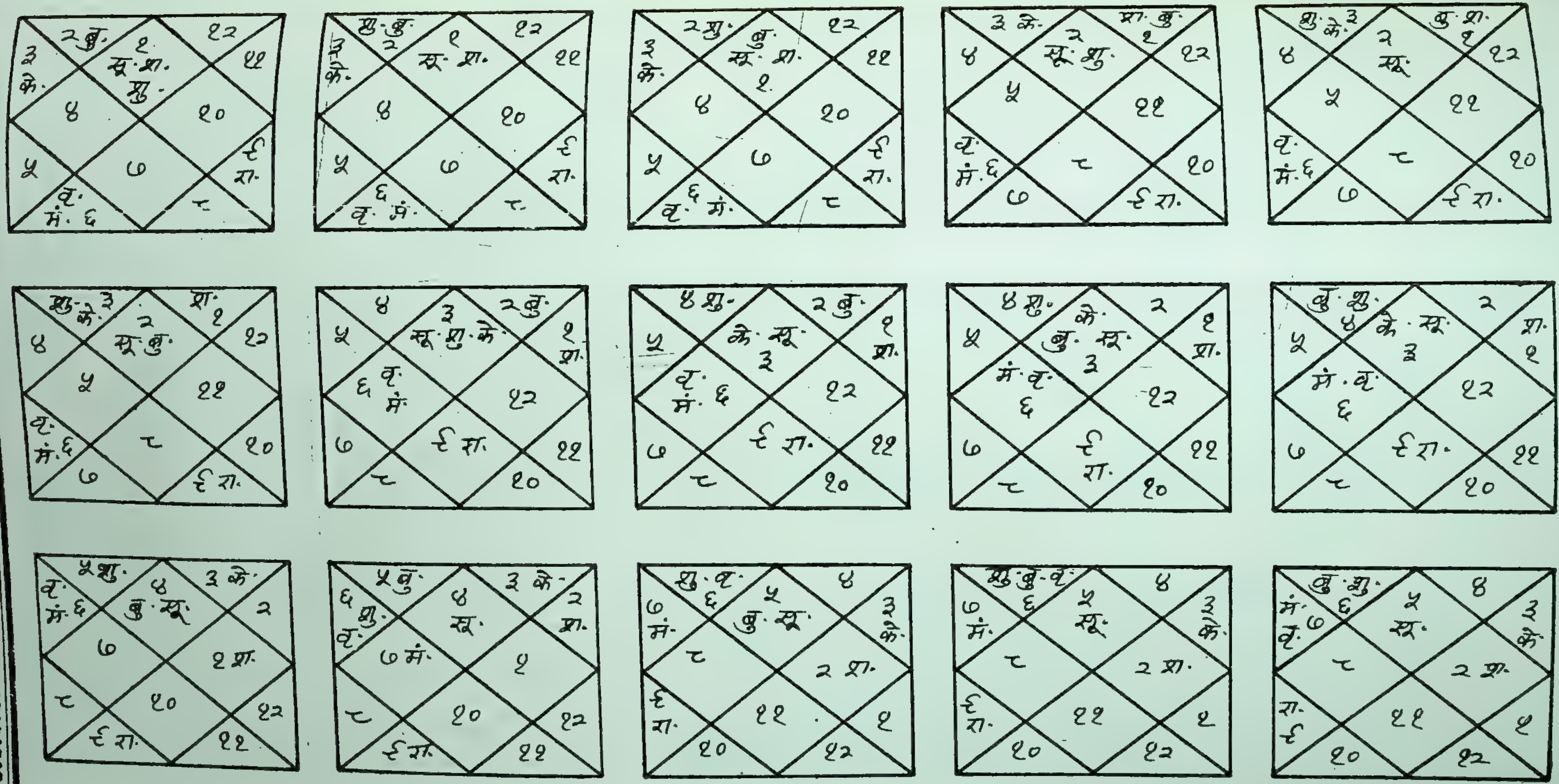

मू० सं० ३९९

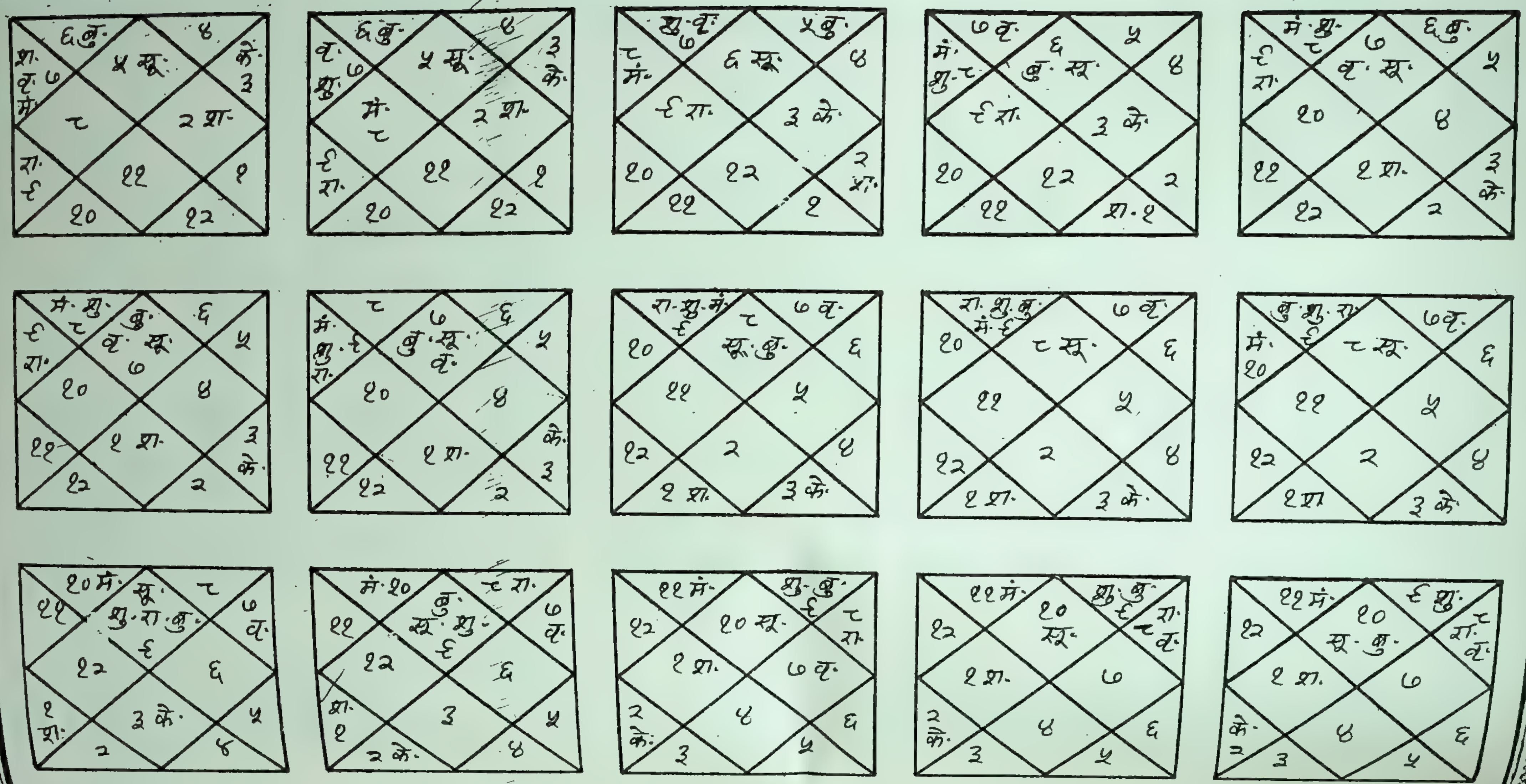

कु० प०

भू० सं० १९११

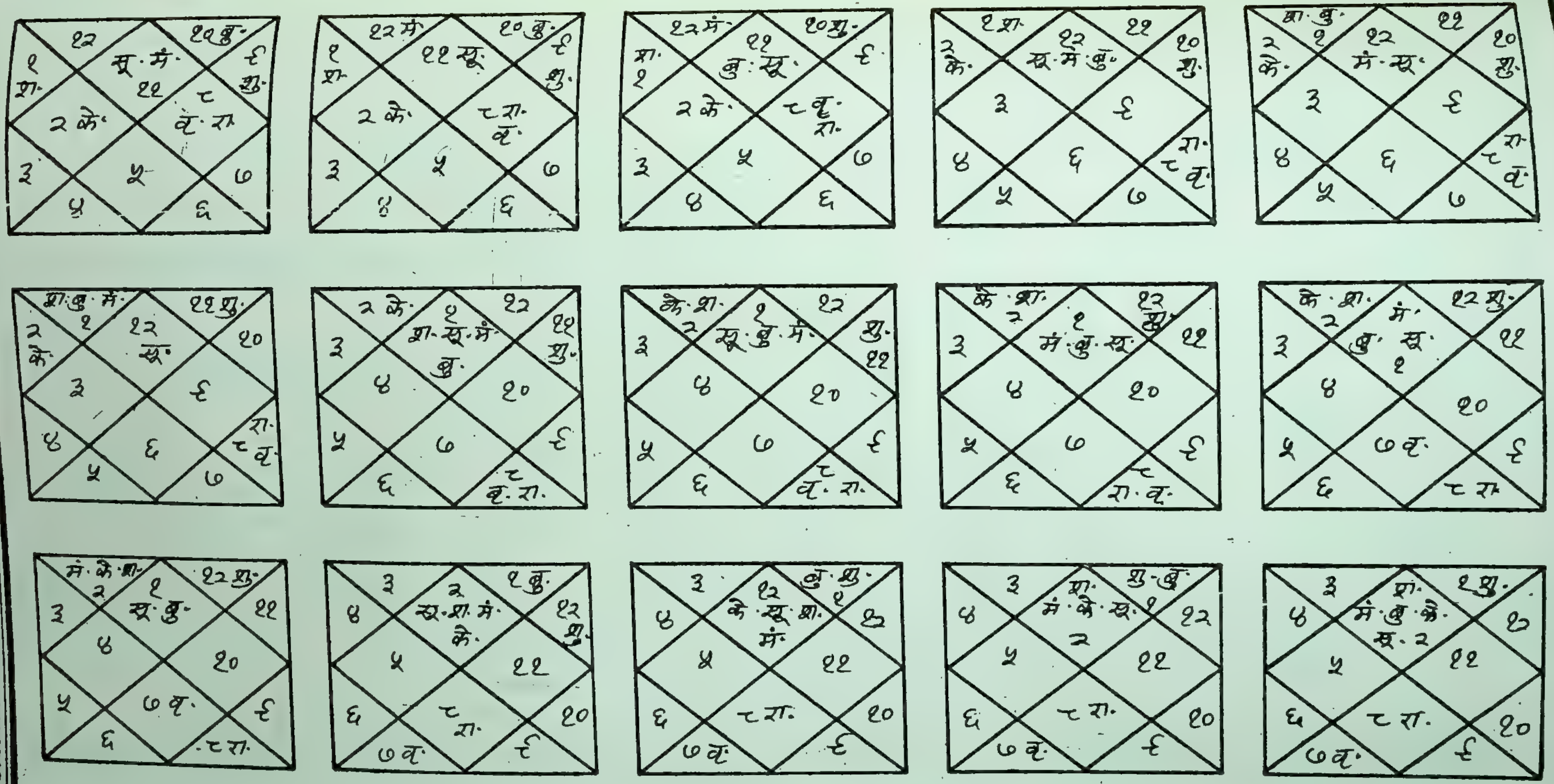

कु० प०

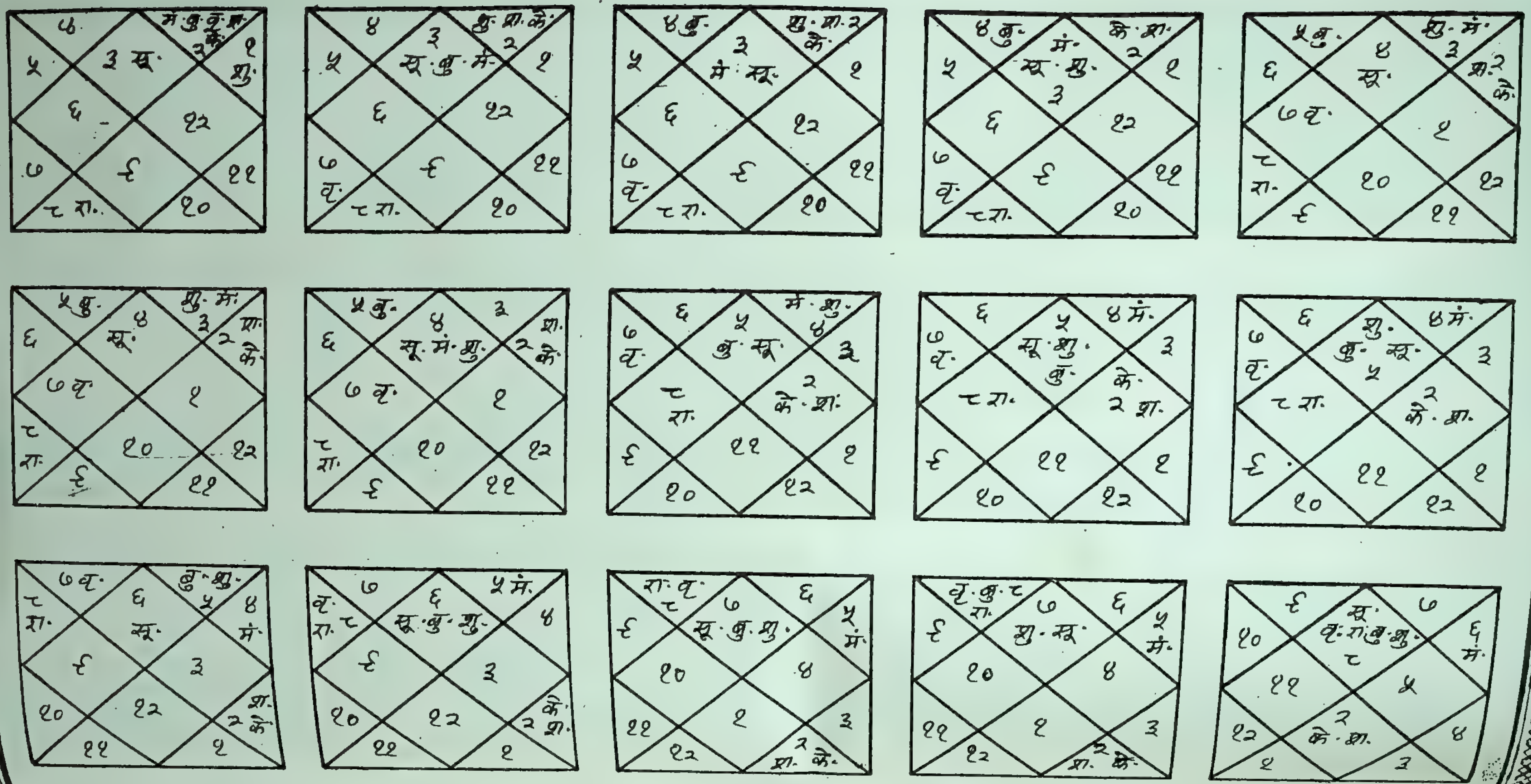

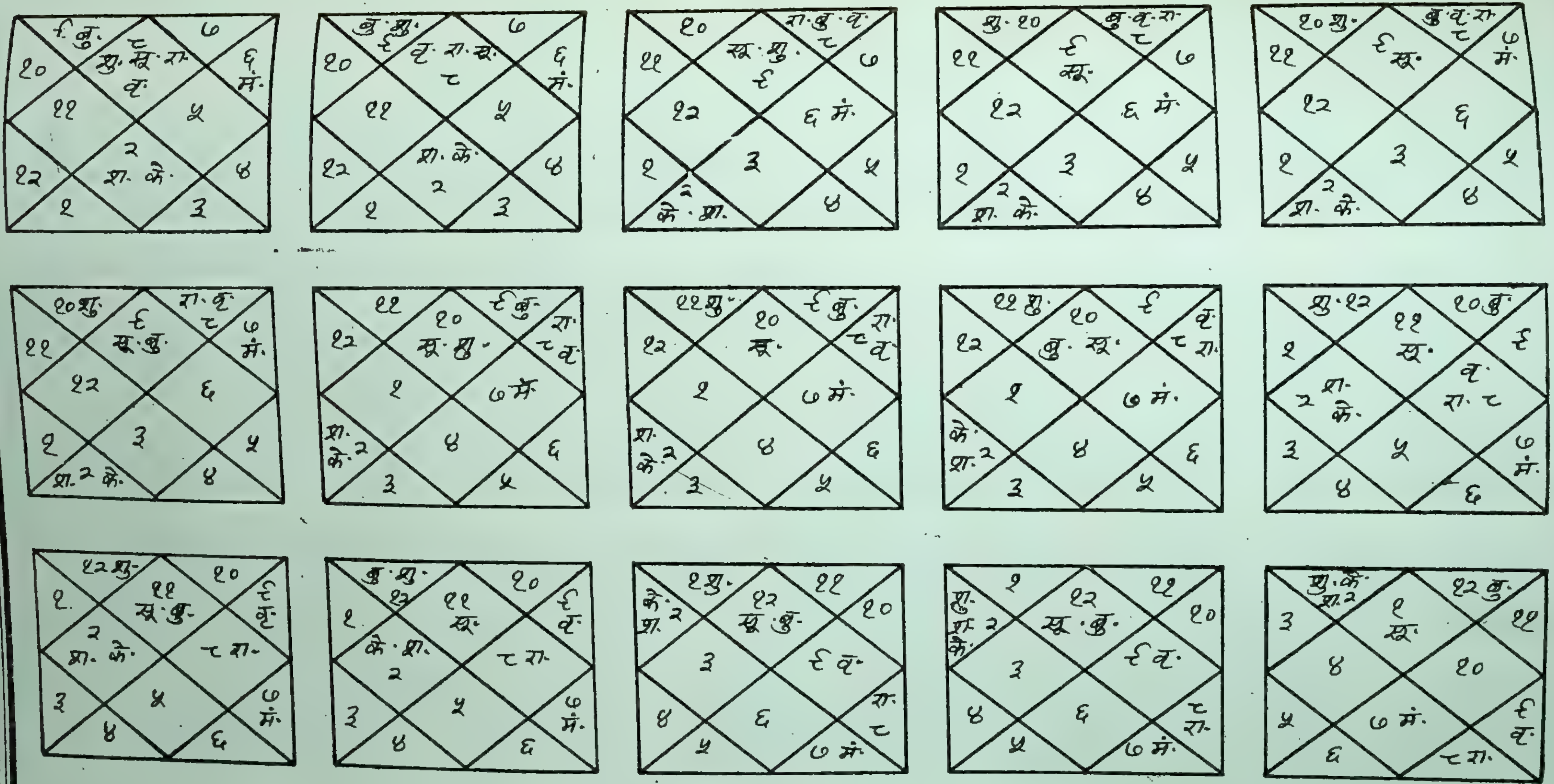

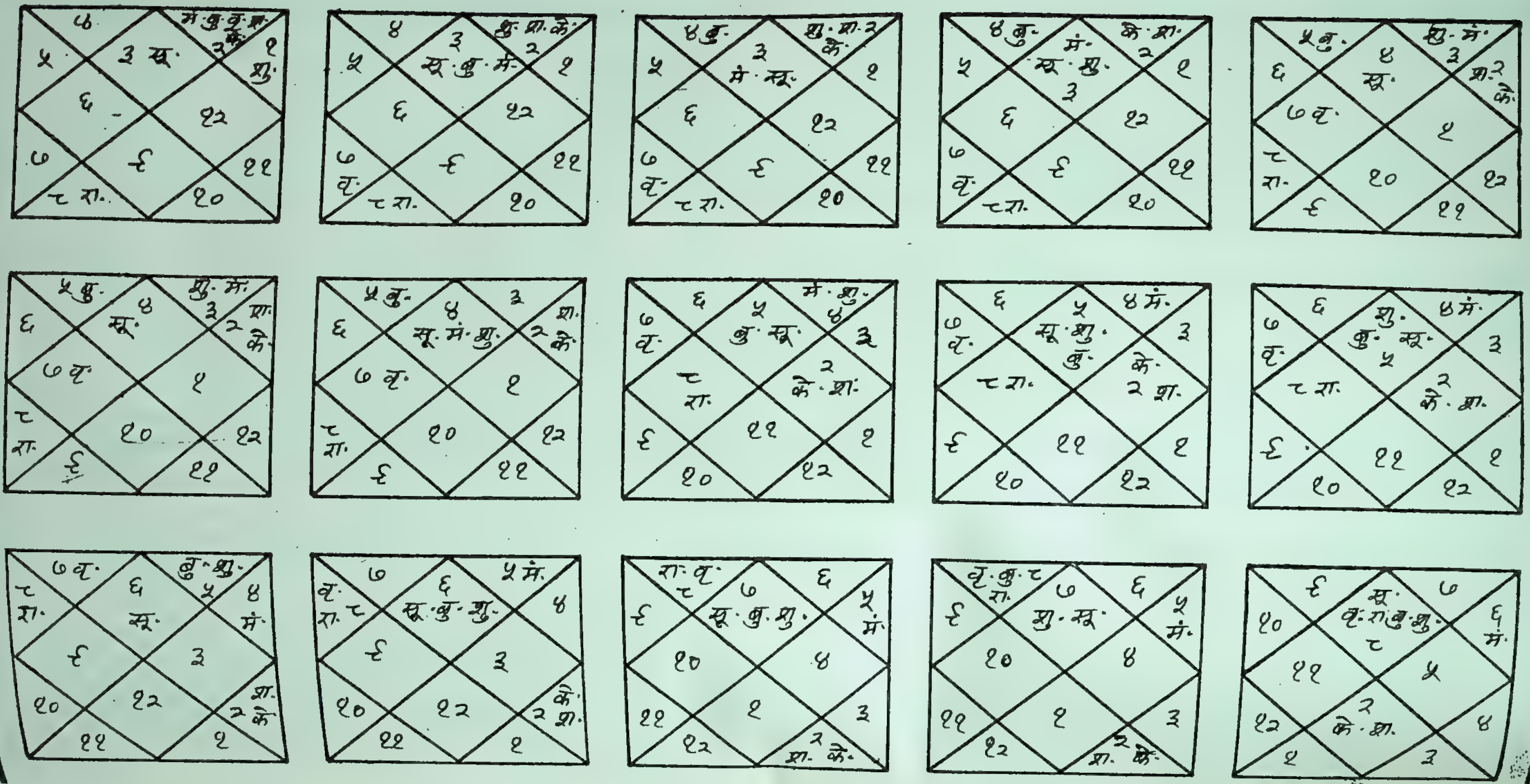

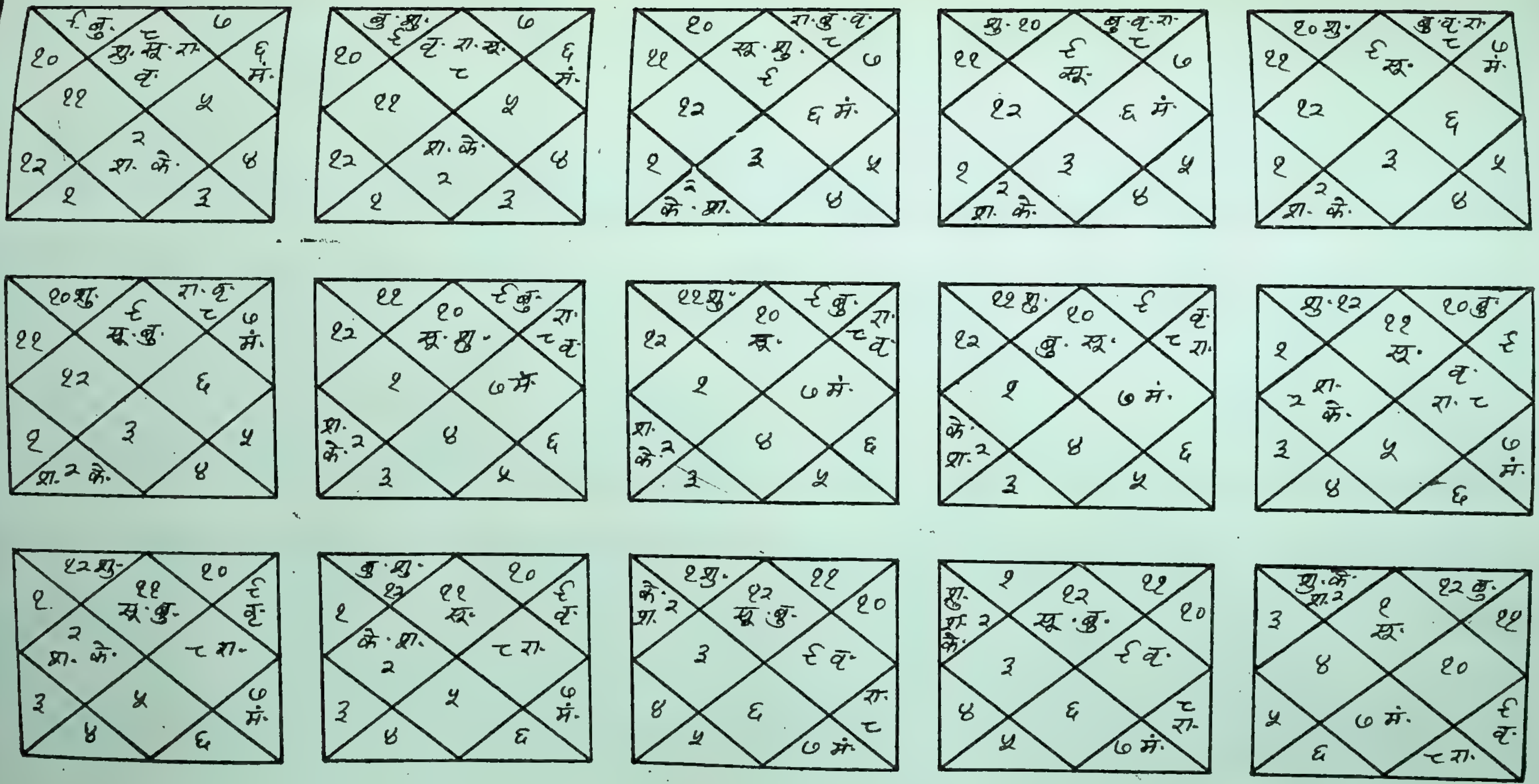

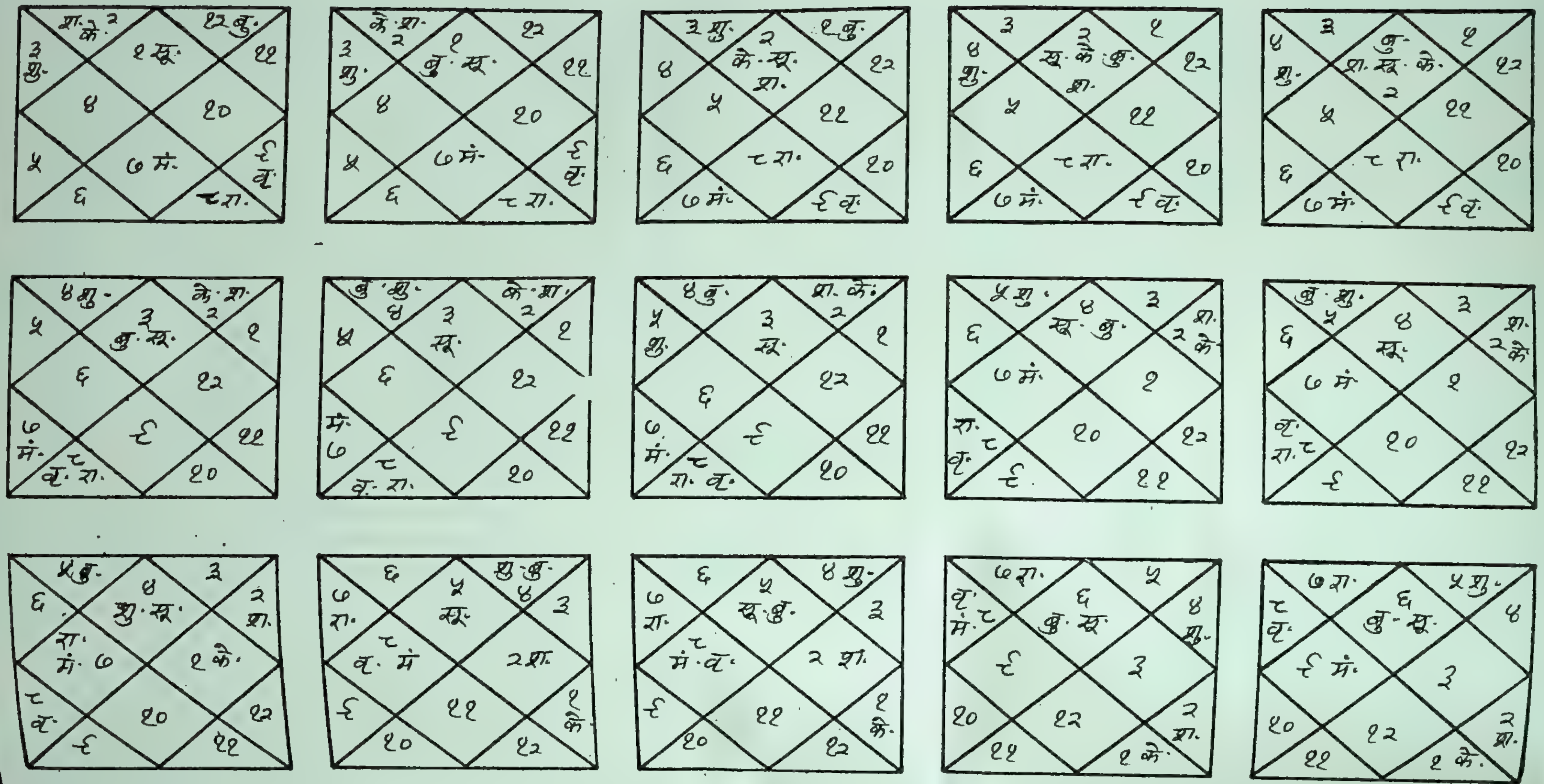

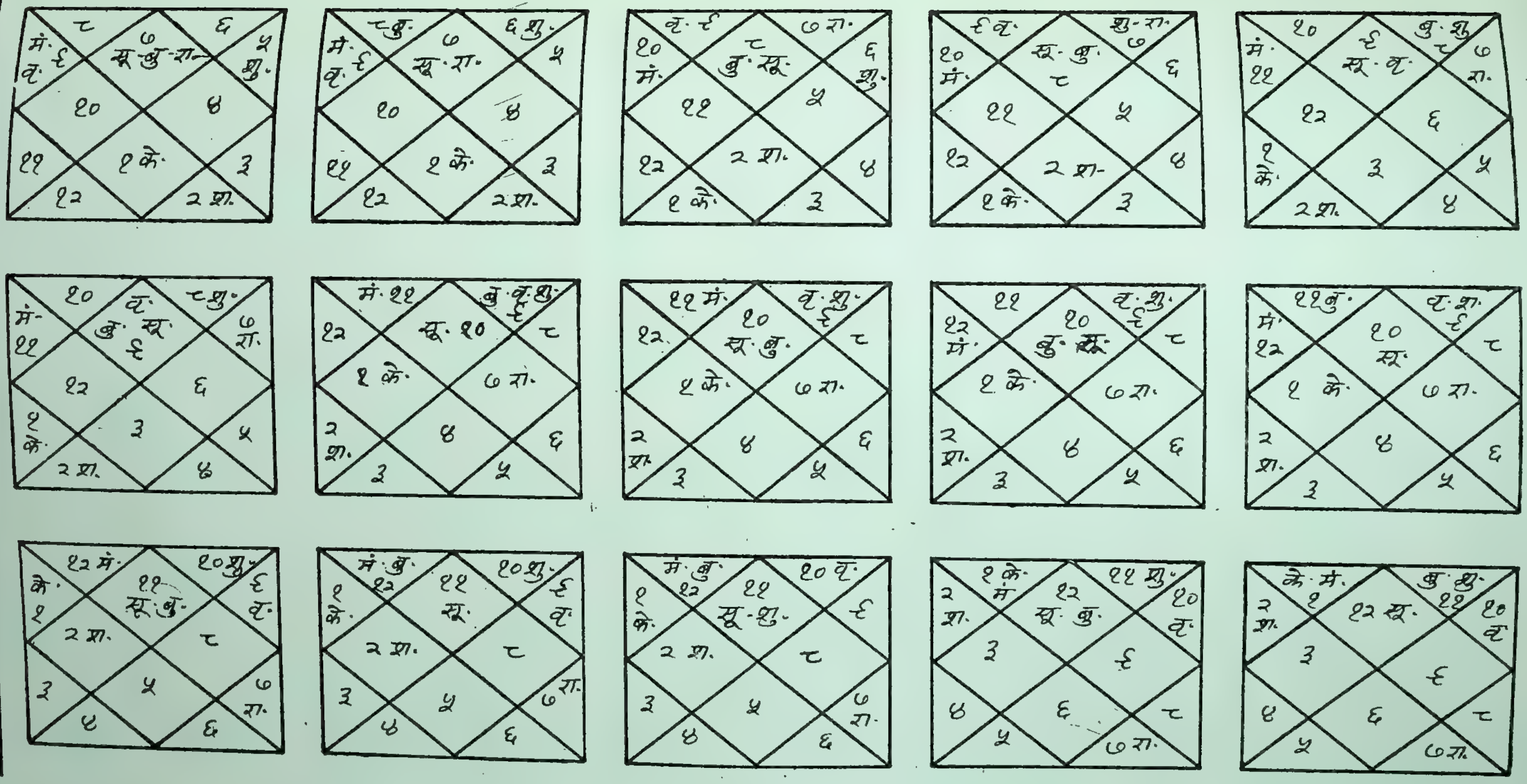

८ ७ ६ ५ शु. मं. वृ. ९ सू. बु. रा. १० ४ ११ १ के. ३ १२ २ श.
८ बु. ७ ६ शु. ५ मं. वृ. ९ सू. रा. १० ४ ११ १ के. ३ १२ २ श.
वृ. ९ ८ ७ रा. १० मं. बु. सू. ६ शु. ११ ५ १२ २ श. ४ १ के. ३
९ वृ. शु. रा. ७ १० मं. सू. बु. ८ ६ ११ ५ १२ २ श. ४ १ के. ३
१० ९ बु. शु. ८ ७ रा. मं. ११ सू. वृ. १२ ६ १ के. ३ ५ २ श. ४
१० वृ. ८ शु. मं. ११ बु. सू. ९ ७ रा. १२ ६ १ के. ३ ५ २ श. ४
मं. ११ बु. वृ. शु. ९ १२ सू. १० ८ १ के. ७ रा. २ श. ४ ६ ३ ५
११ मं. वृ. शु. ९ १० १२ सू. बु. ८ १ के. ७ रा. २ श. ४ ६ ३ ५
११ वृ. शु. ९ १२ मं. १० बु. सू. ८ १ के. ७ रा. २ श. ४ ६ ३ ५
११ बु. वृ. शु. ९ मं. १२ १० सू. ८ १ के. ७ रा. २ श. ४ ६ ३ ५
१२ मं. १० शु. ९ के. १ ११ सू. बु. वृ. २ श. ८ ३ ५ ७ रा. ४ ६
मं. बु. १२ ११ १० शु. ९ १ के. सू. वृ. २ श. ८ ३ ५ ७ रा. ४ ६
मं. बु. १२ ११ १० वृ. १ के. सू. शु. ९ २ श. ८ ३ ५ ७ रा. ४ ६
१ के. मं. ११ शु. २ श. १२ सू. बु. १० वृ. ३ ९ ४ ६ ८ ५ ७ रा.
के. मं. १ बु. शु. ११ २ श. १२ सू. १० वृ. ३ ९ ४ ६ ८ ५ ७ रा.

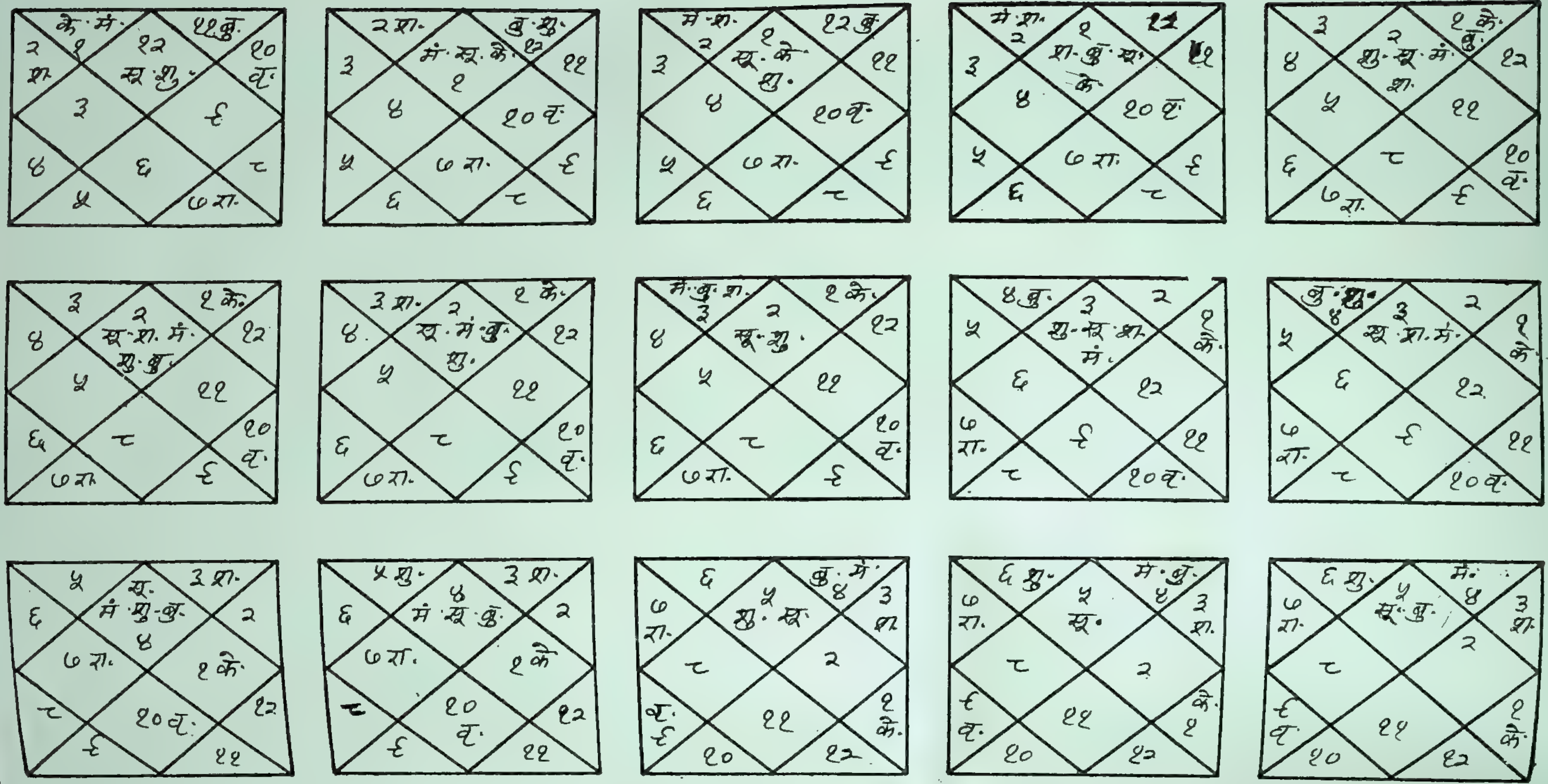

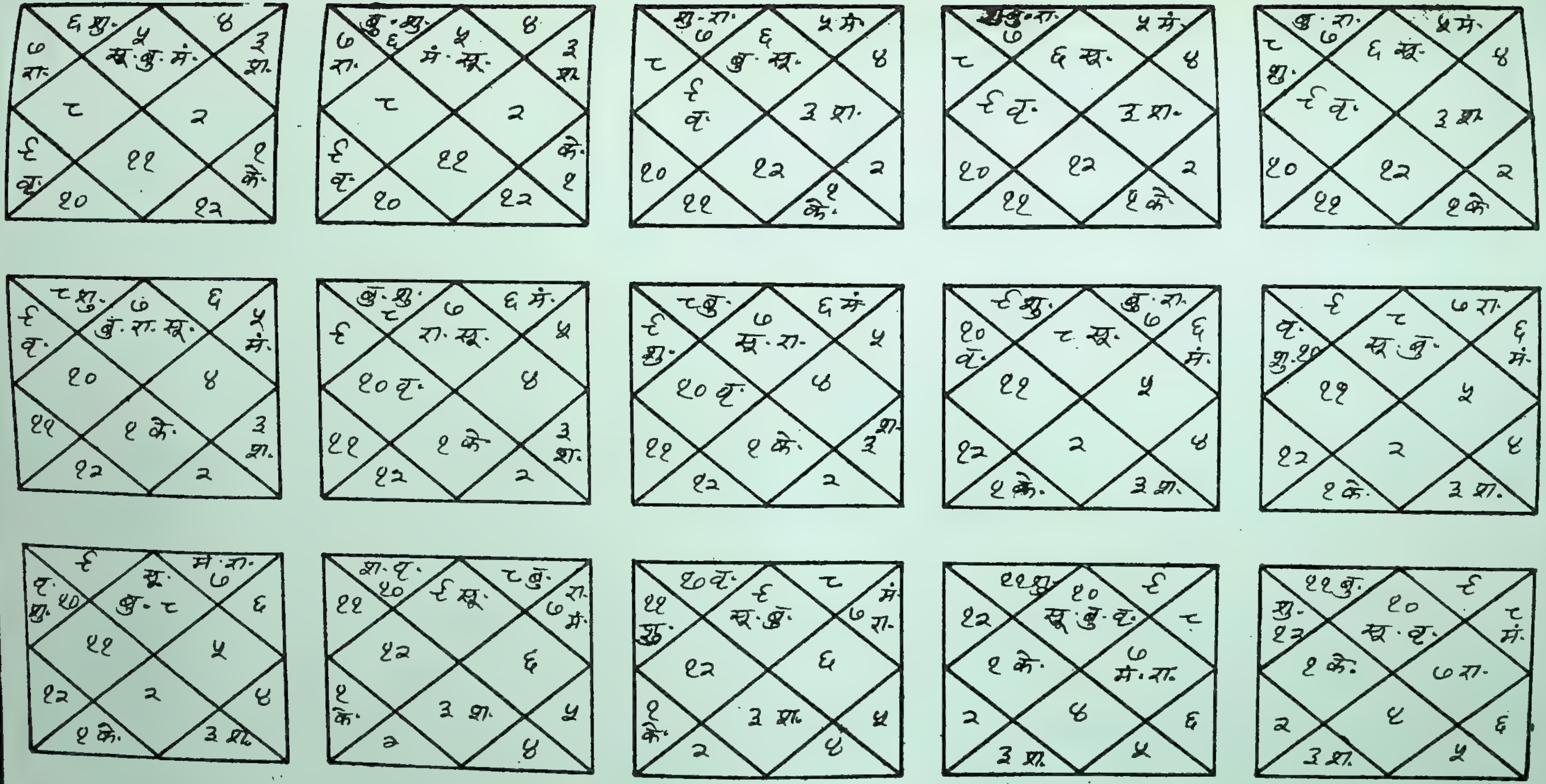

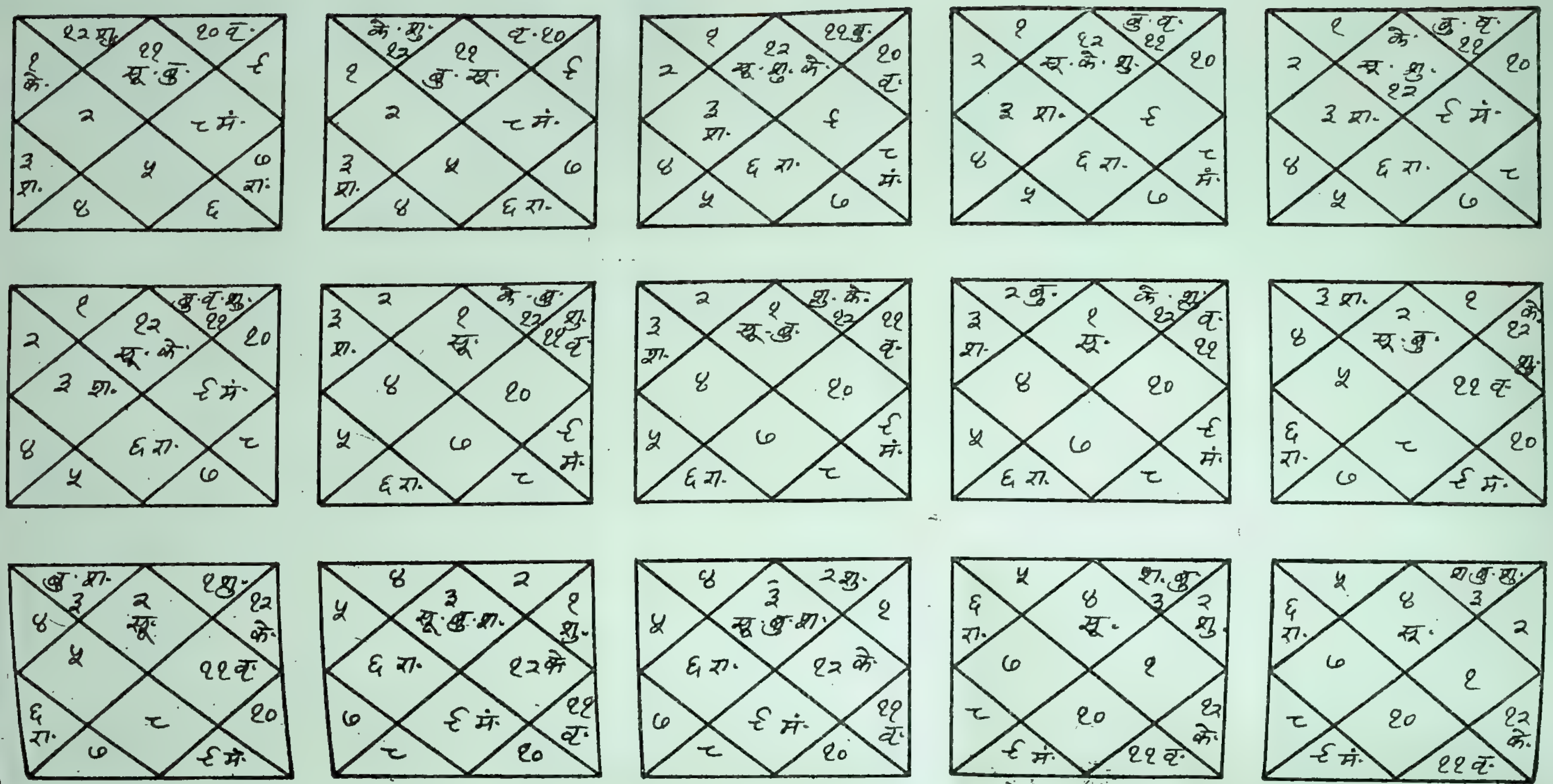

भू० सं०

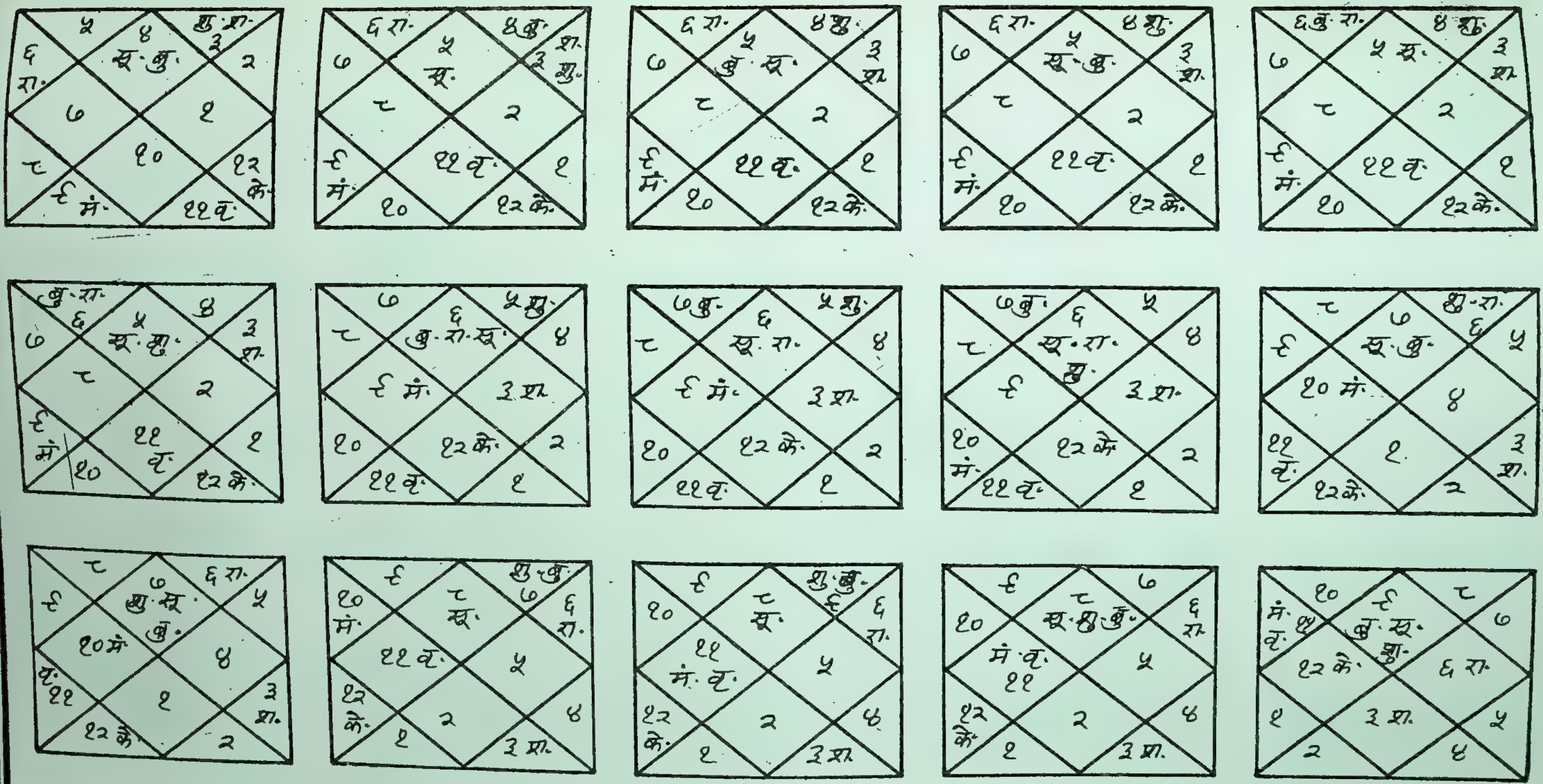

कु० प०

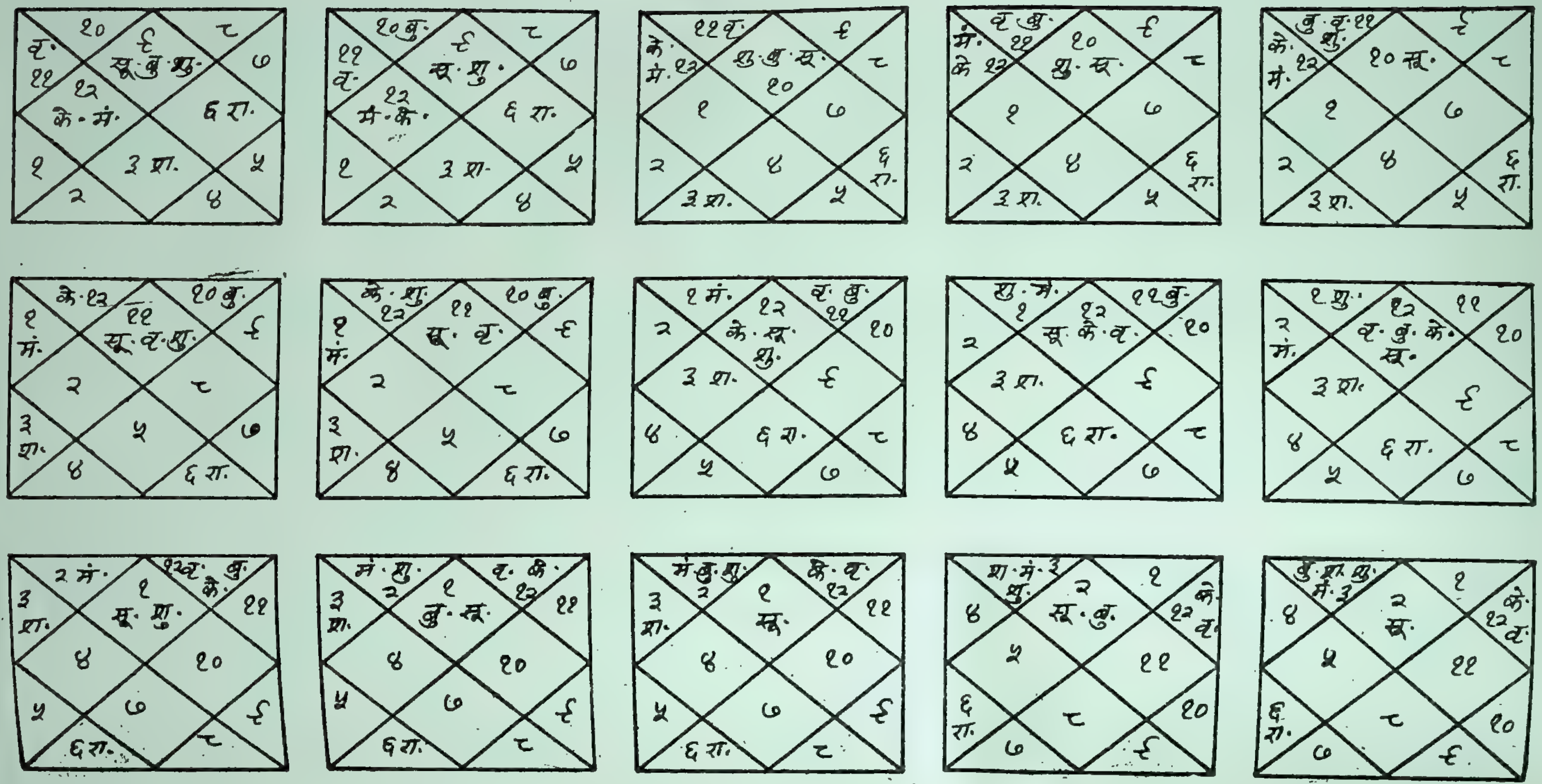

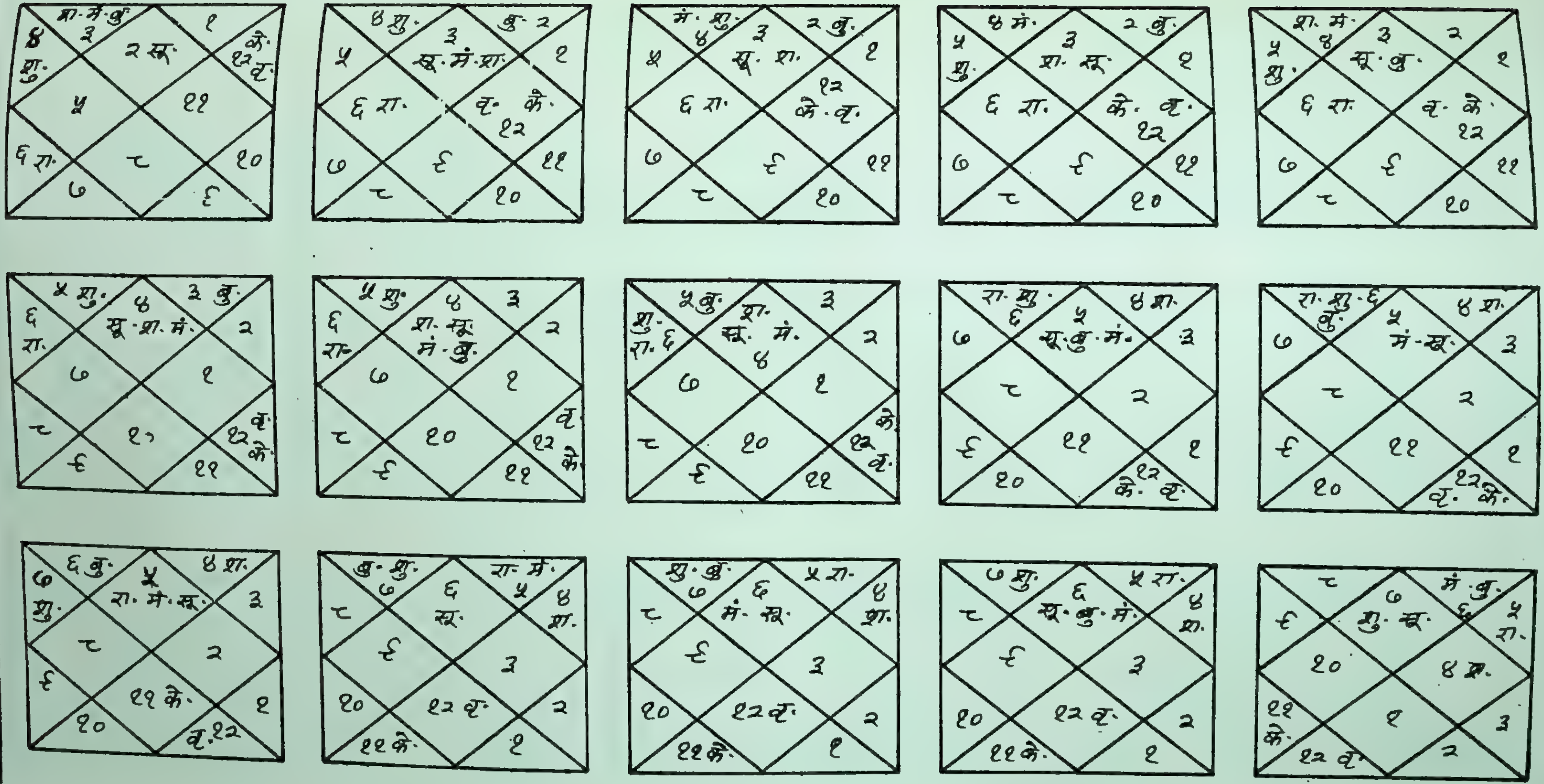

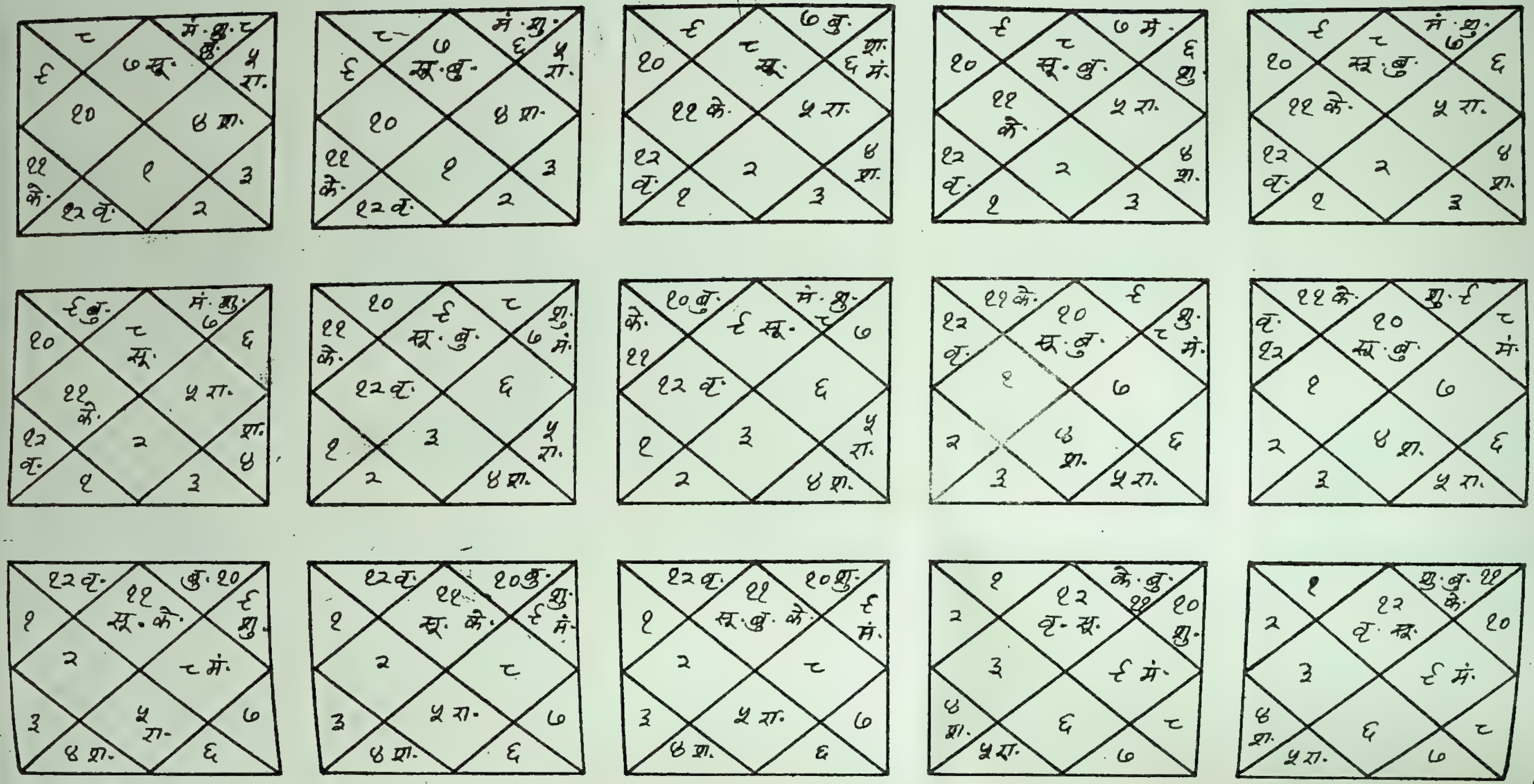

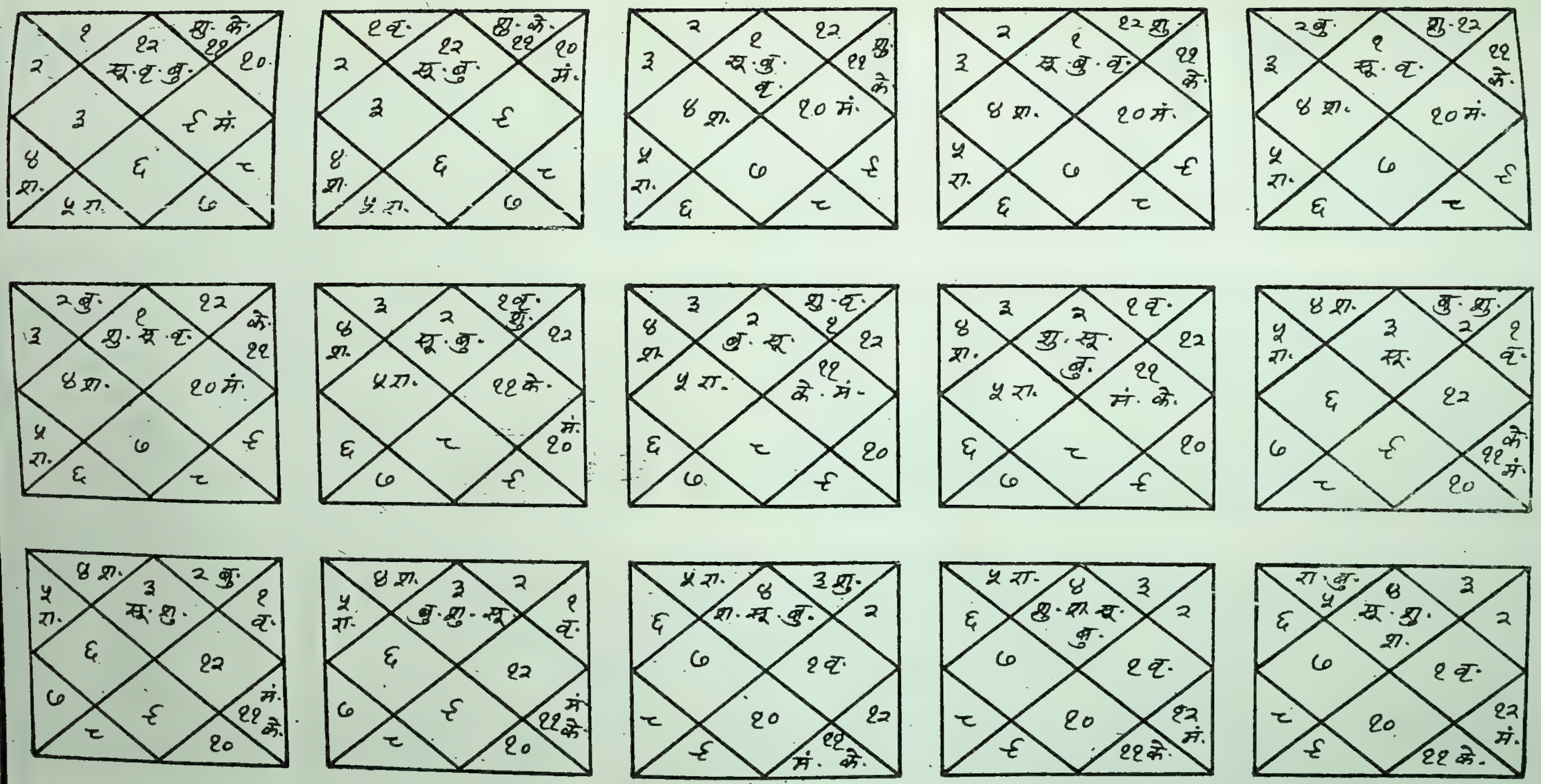

मृ० सं०

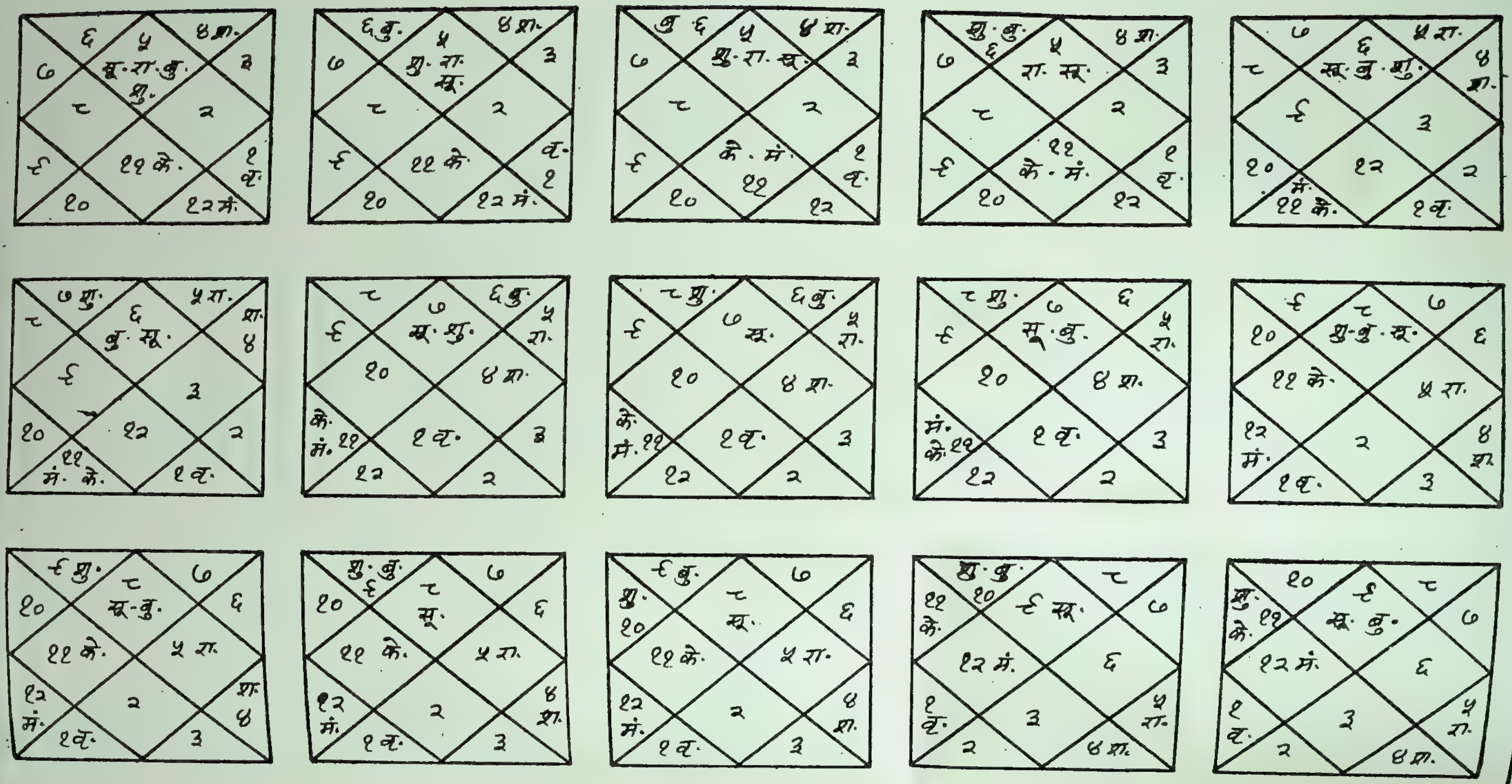

कु० प०

भू० सं०

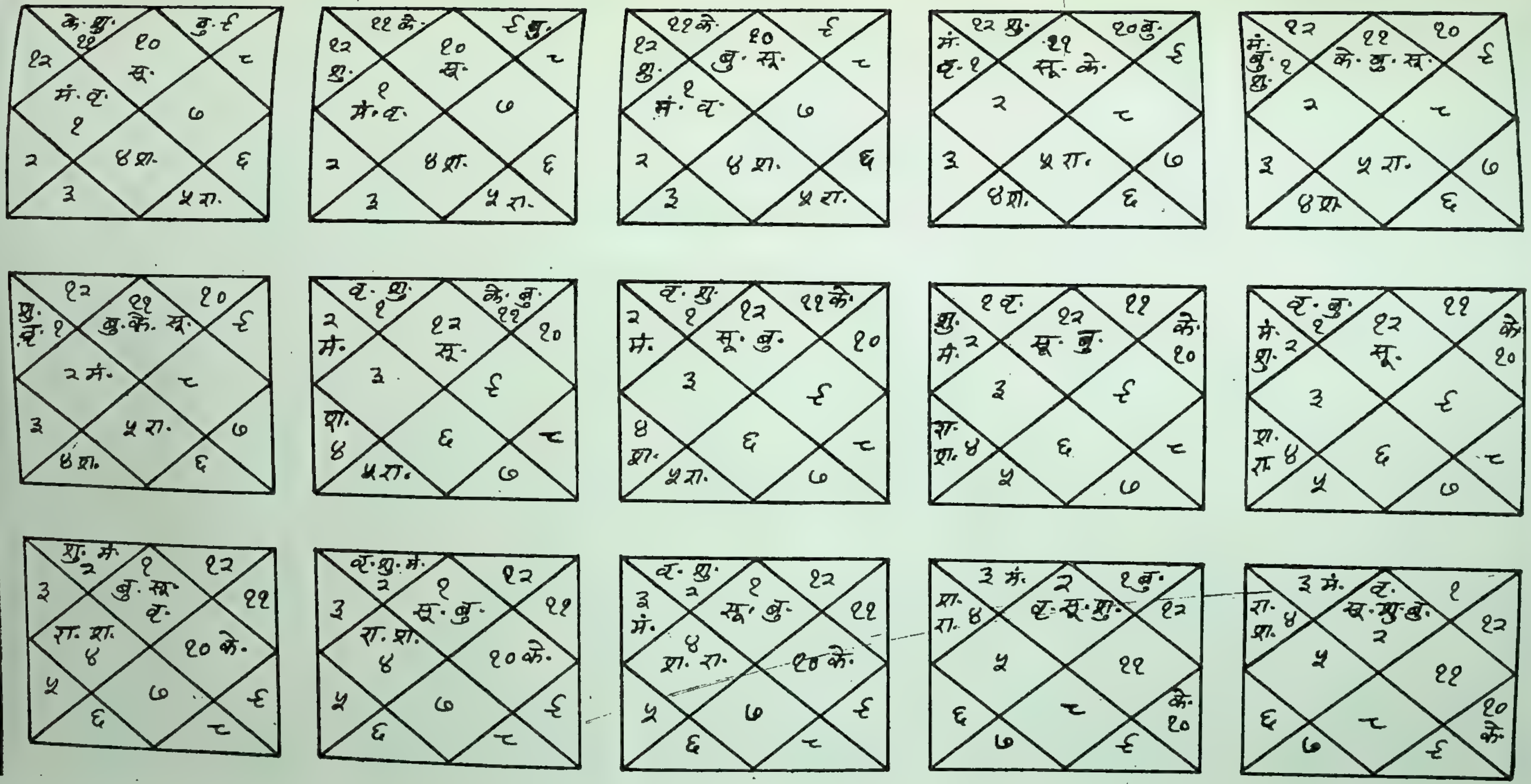

कु० प०

भृ० सं०

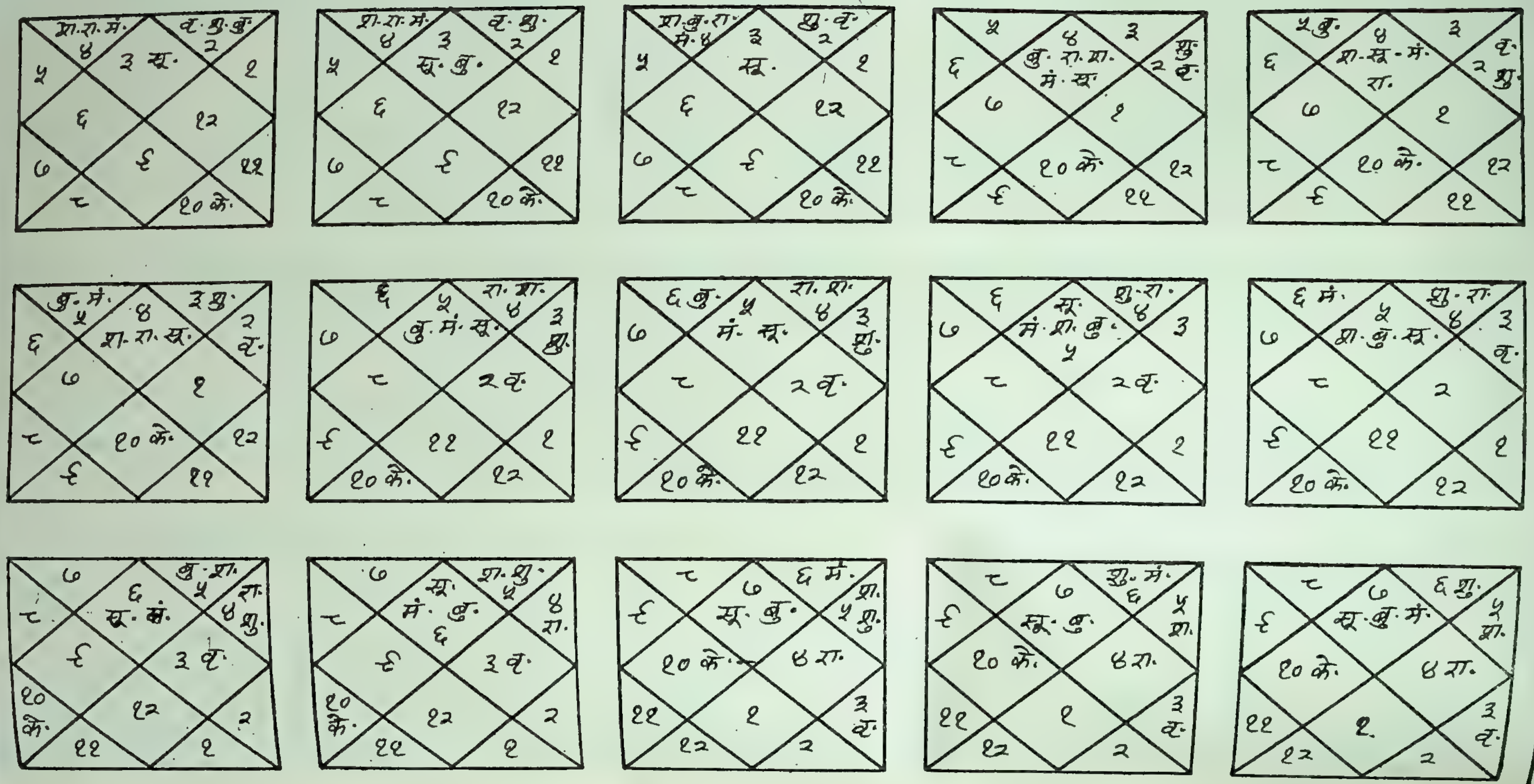

कु० प०

भू० सं०

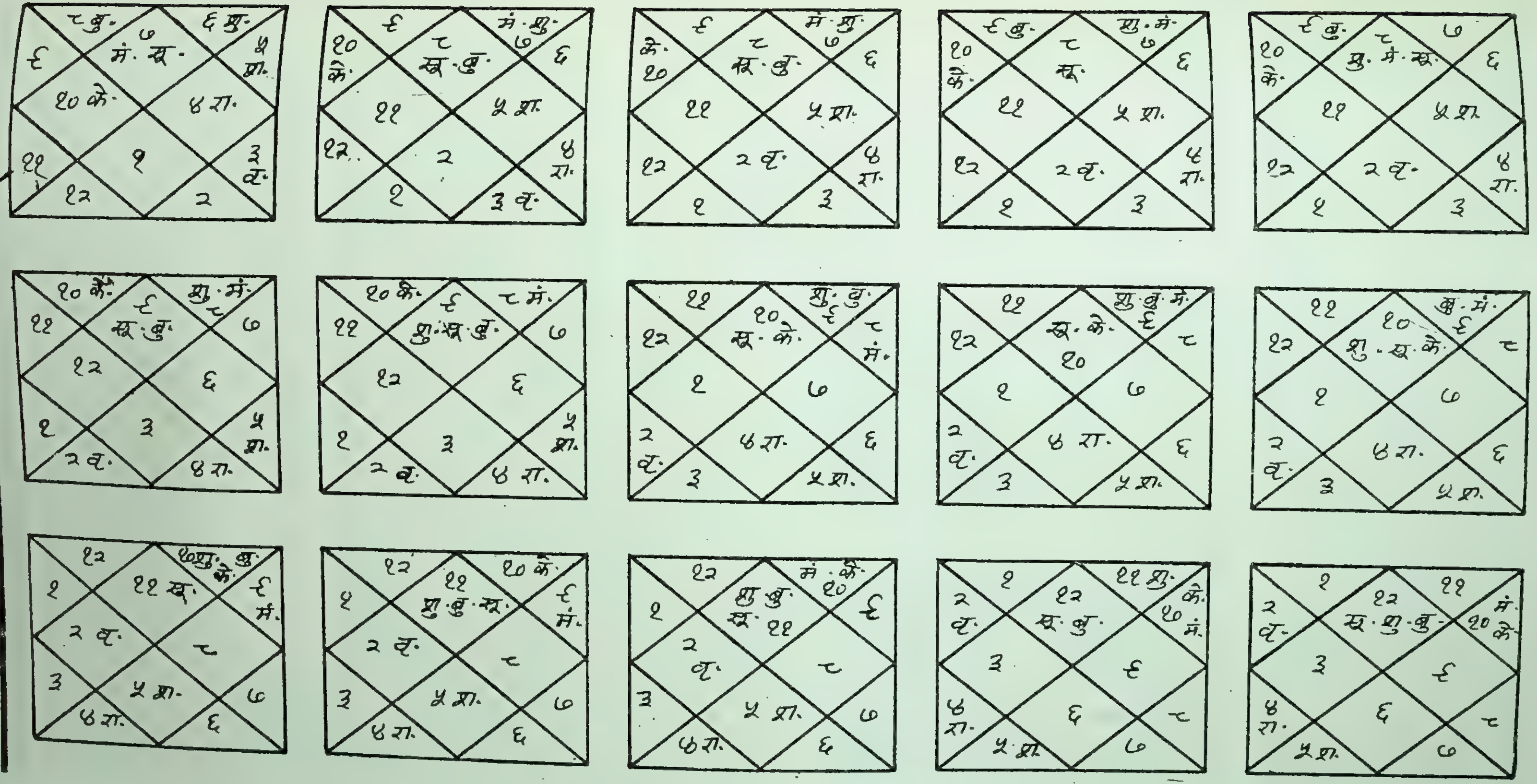

कु० प०

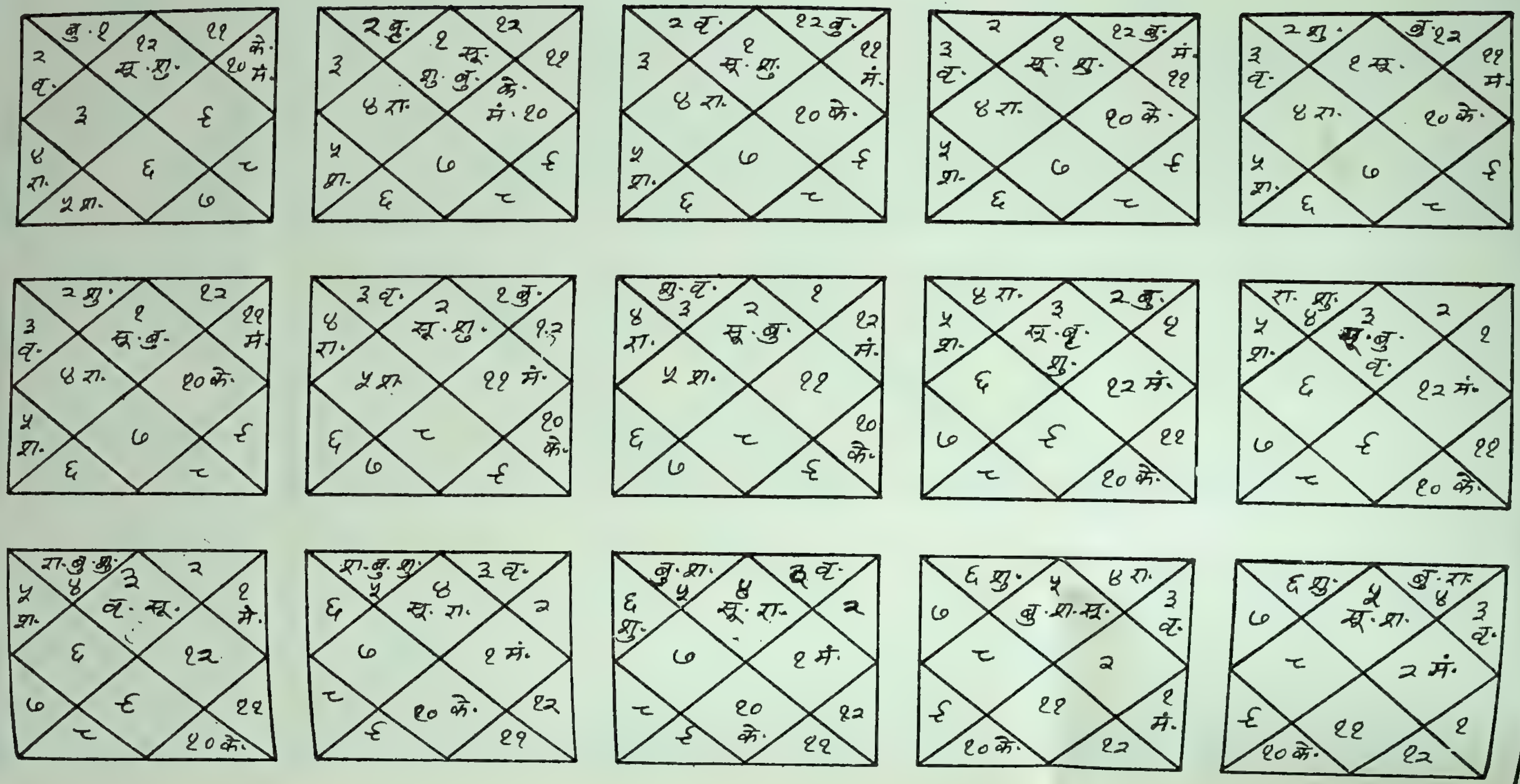

भू० सं० ८३.२

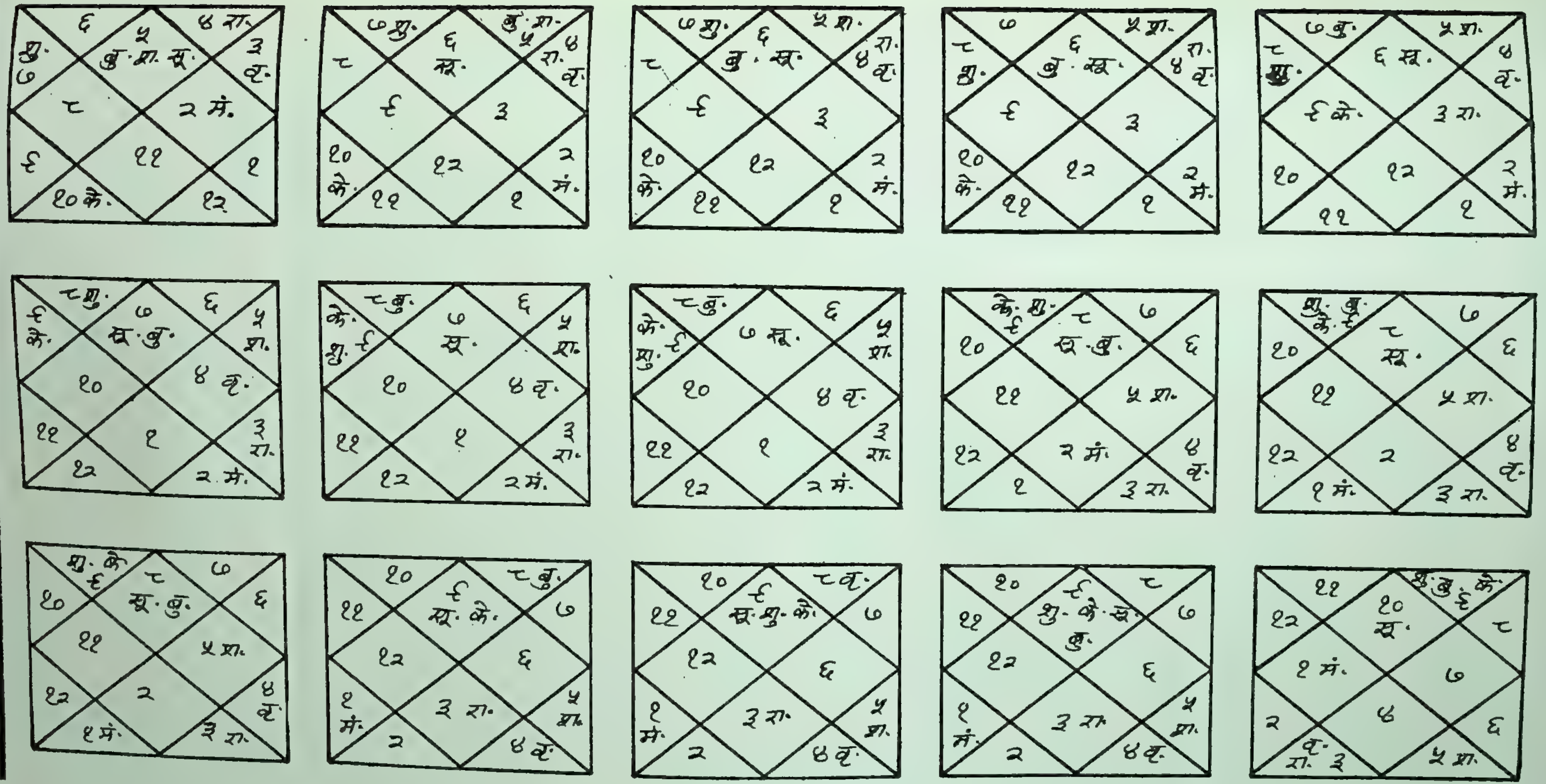

कु० प०

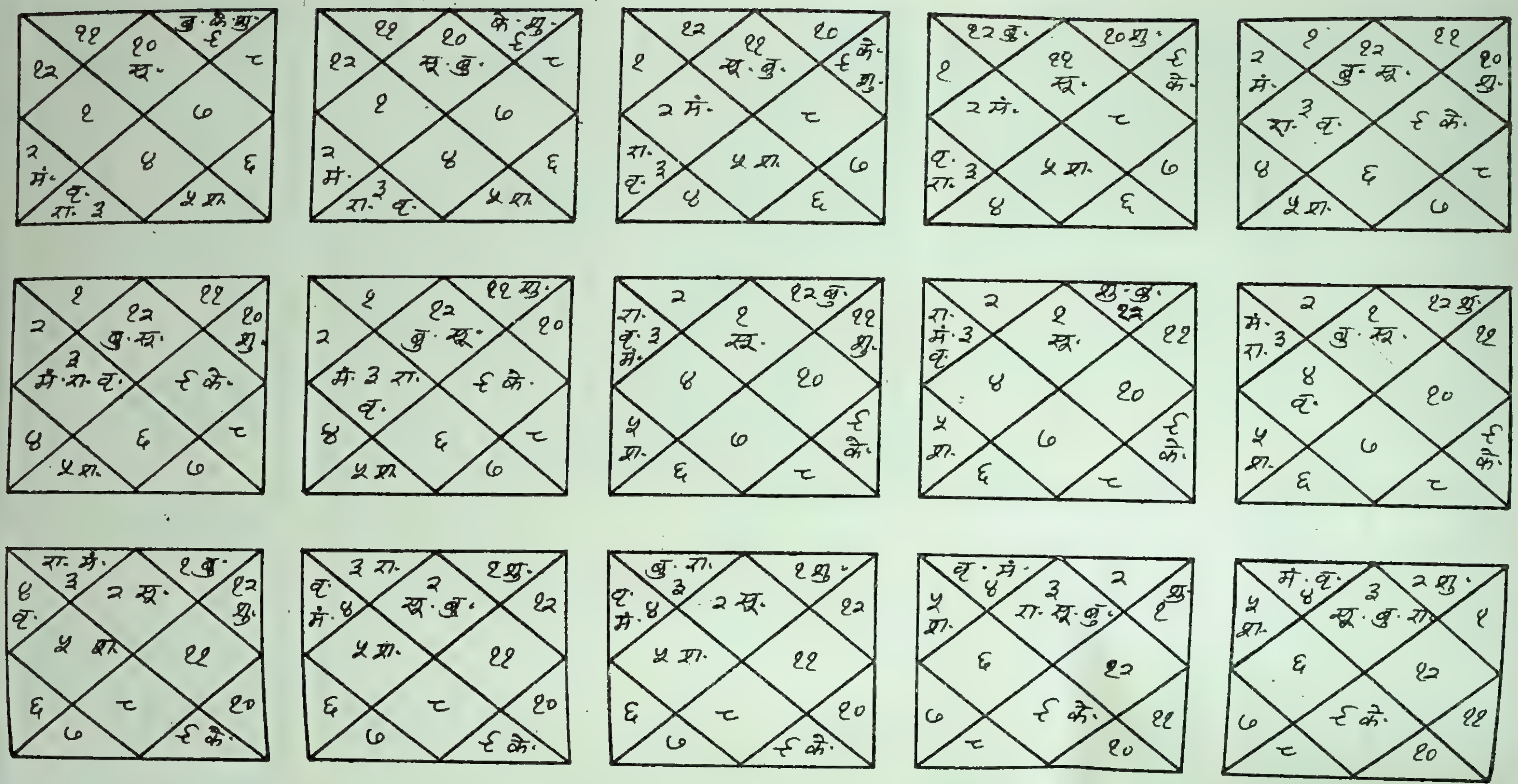

१३४ सं० मु०

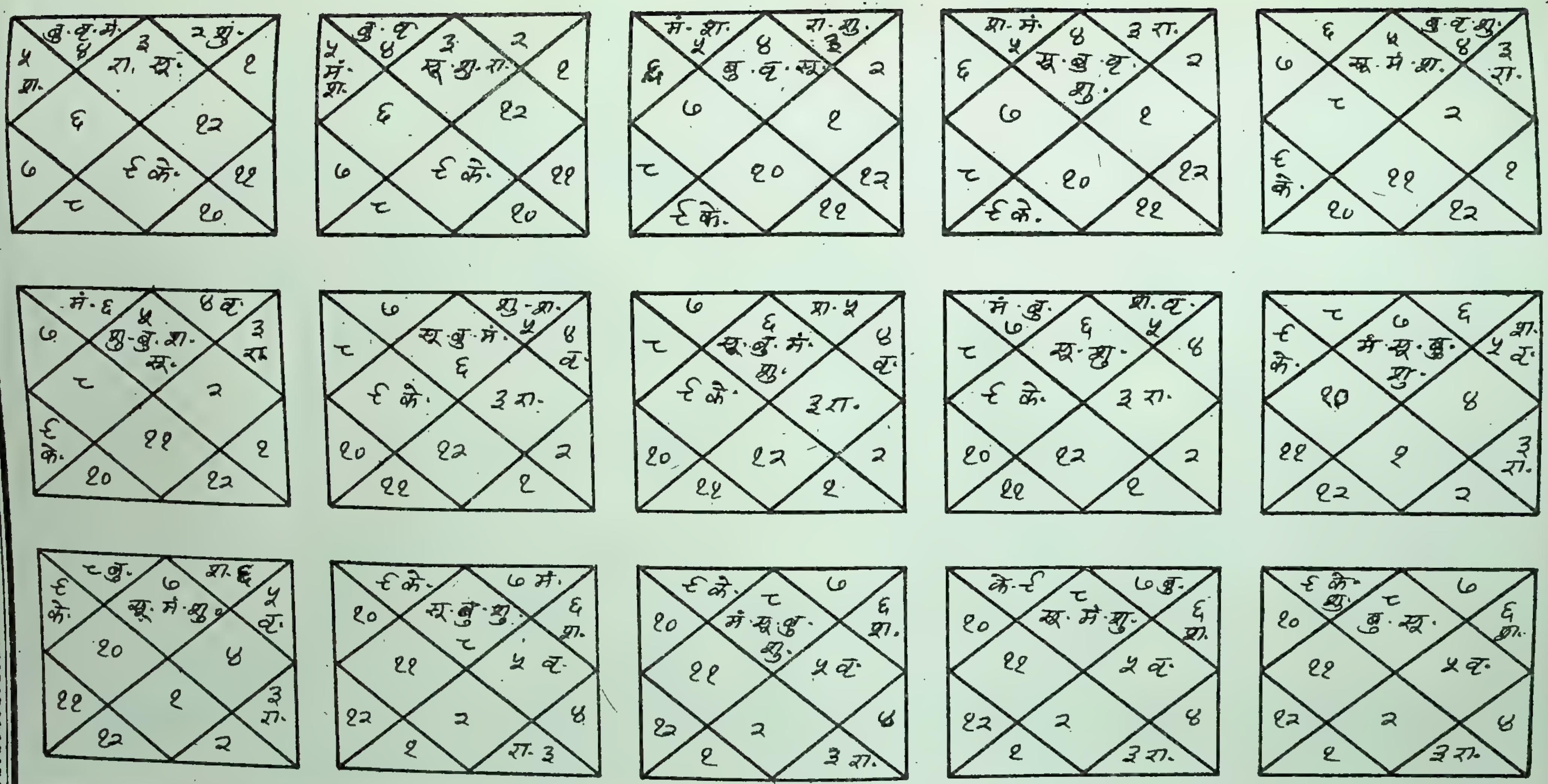

कु० प०

भू० सं०

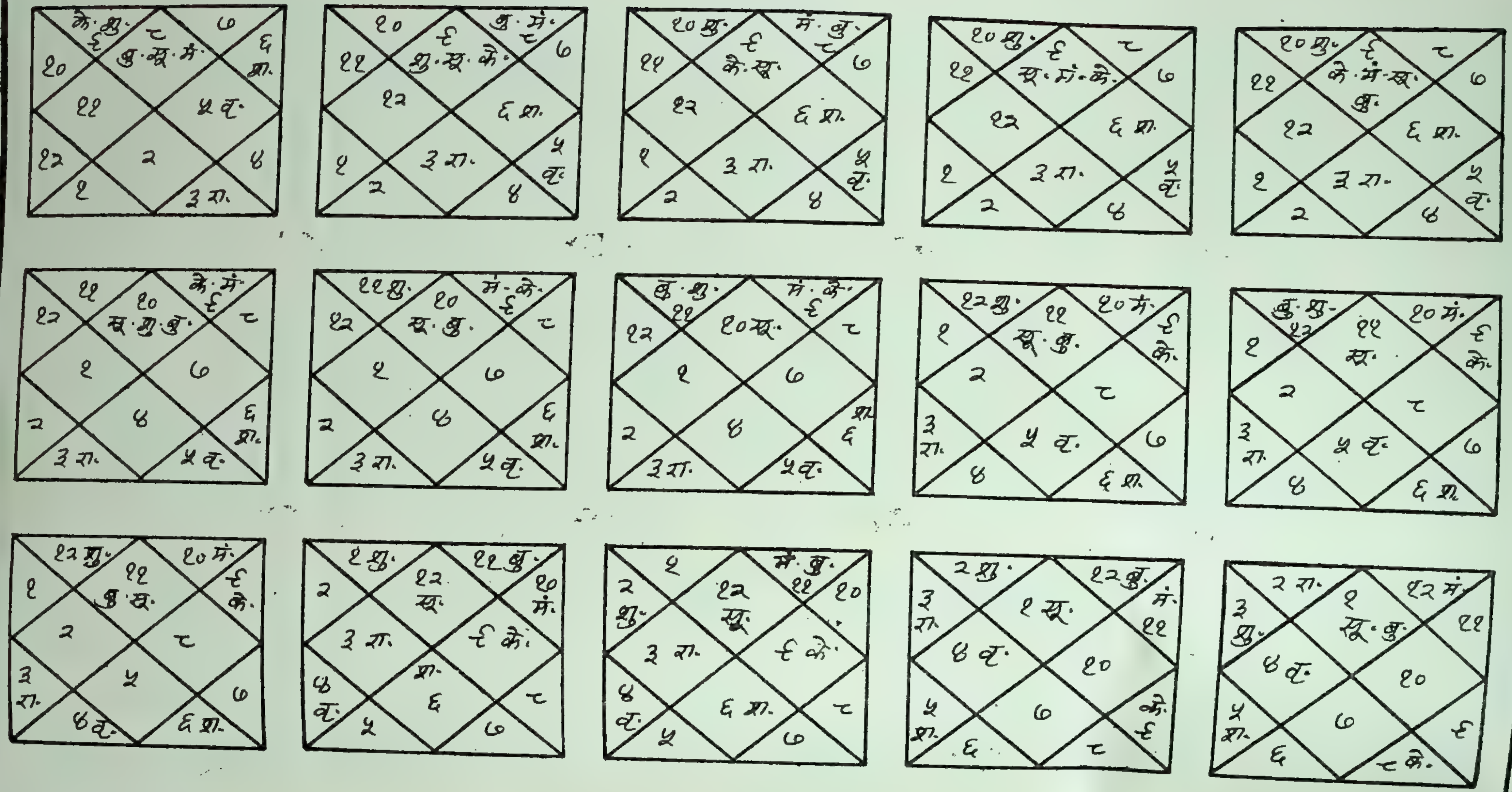

कु० प०

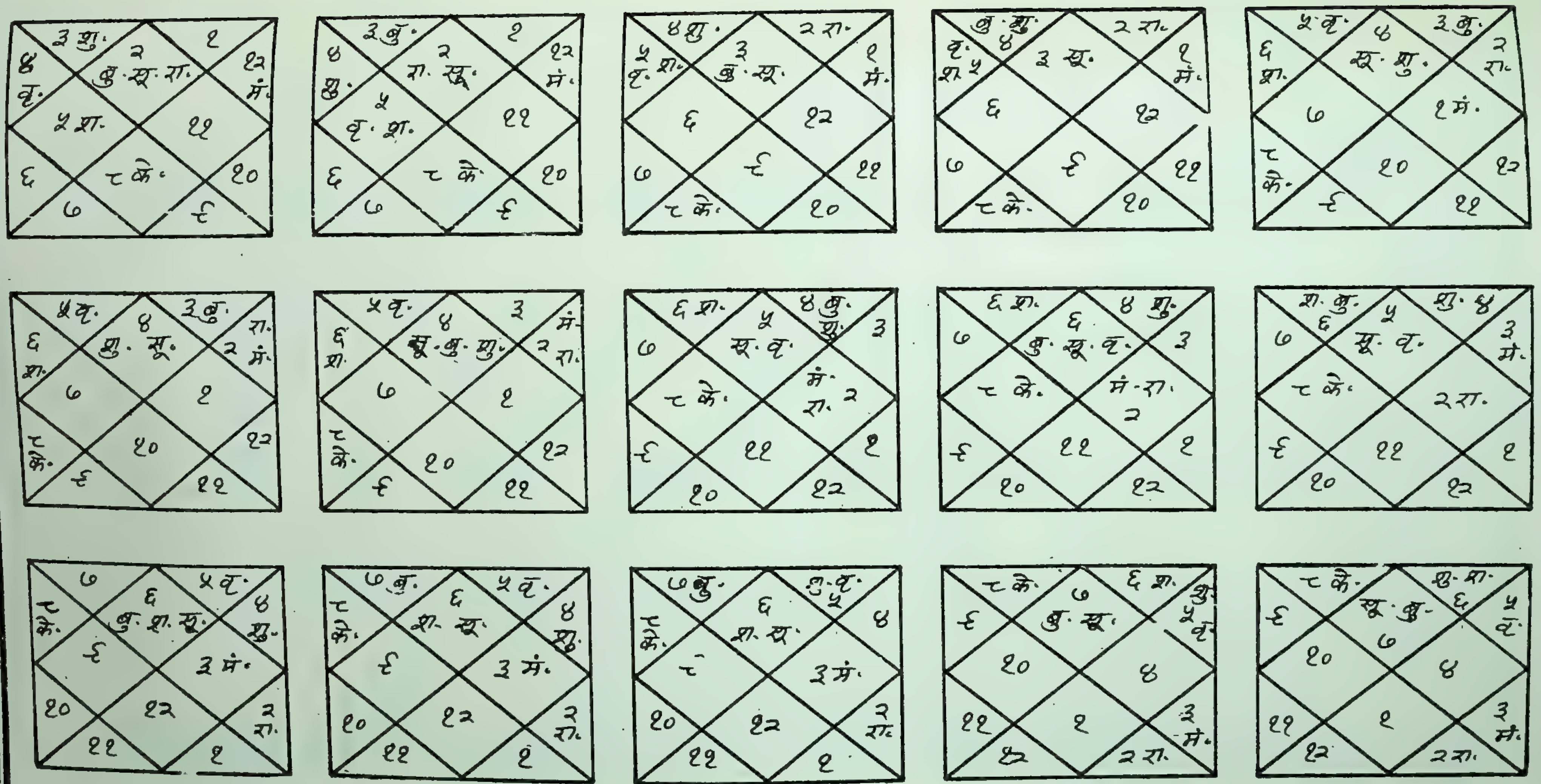

मृ० सं०

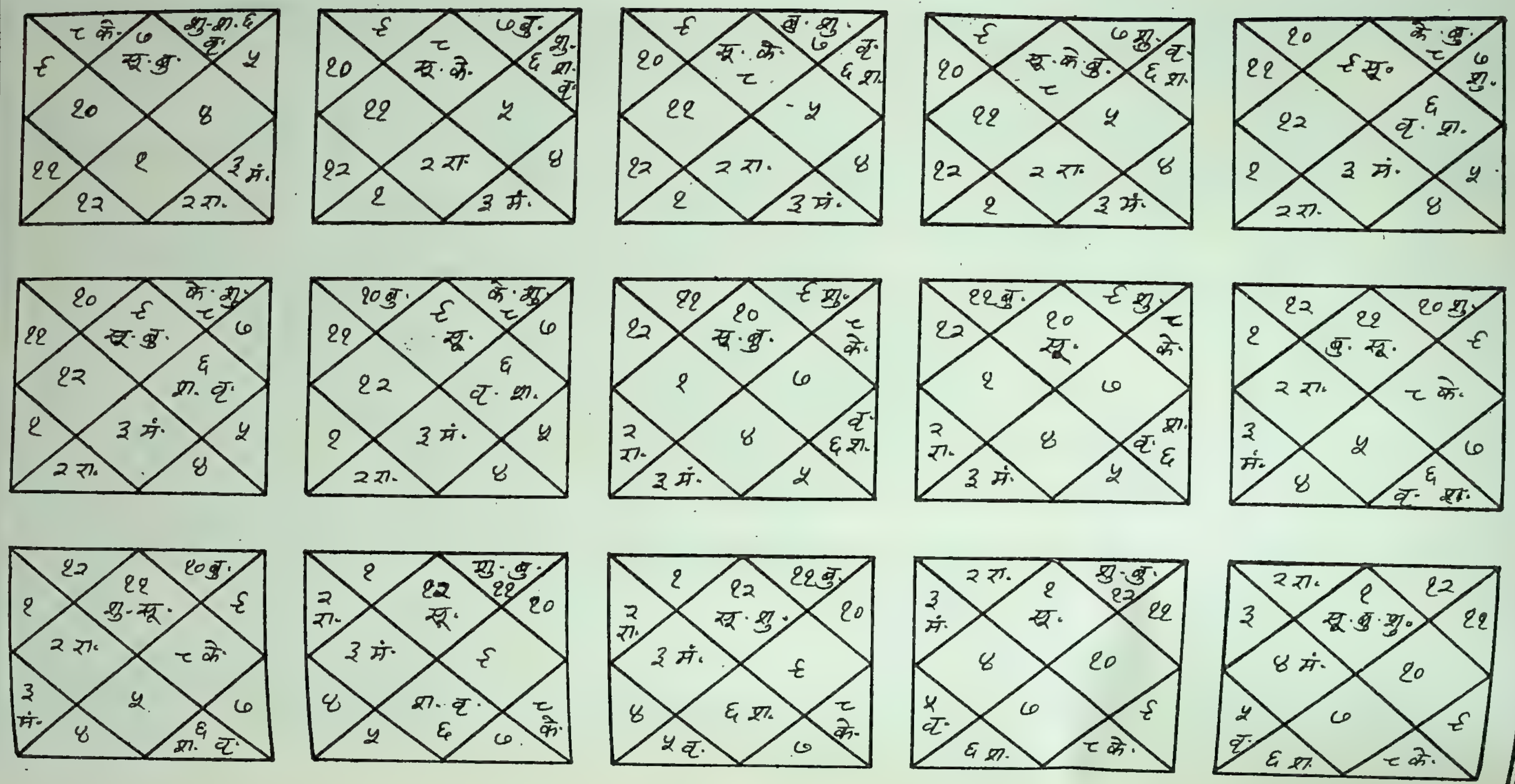

कु० प०

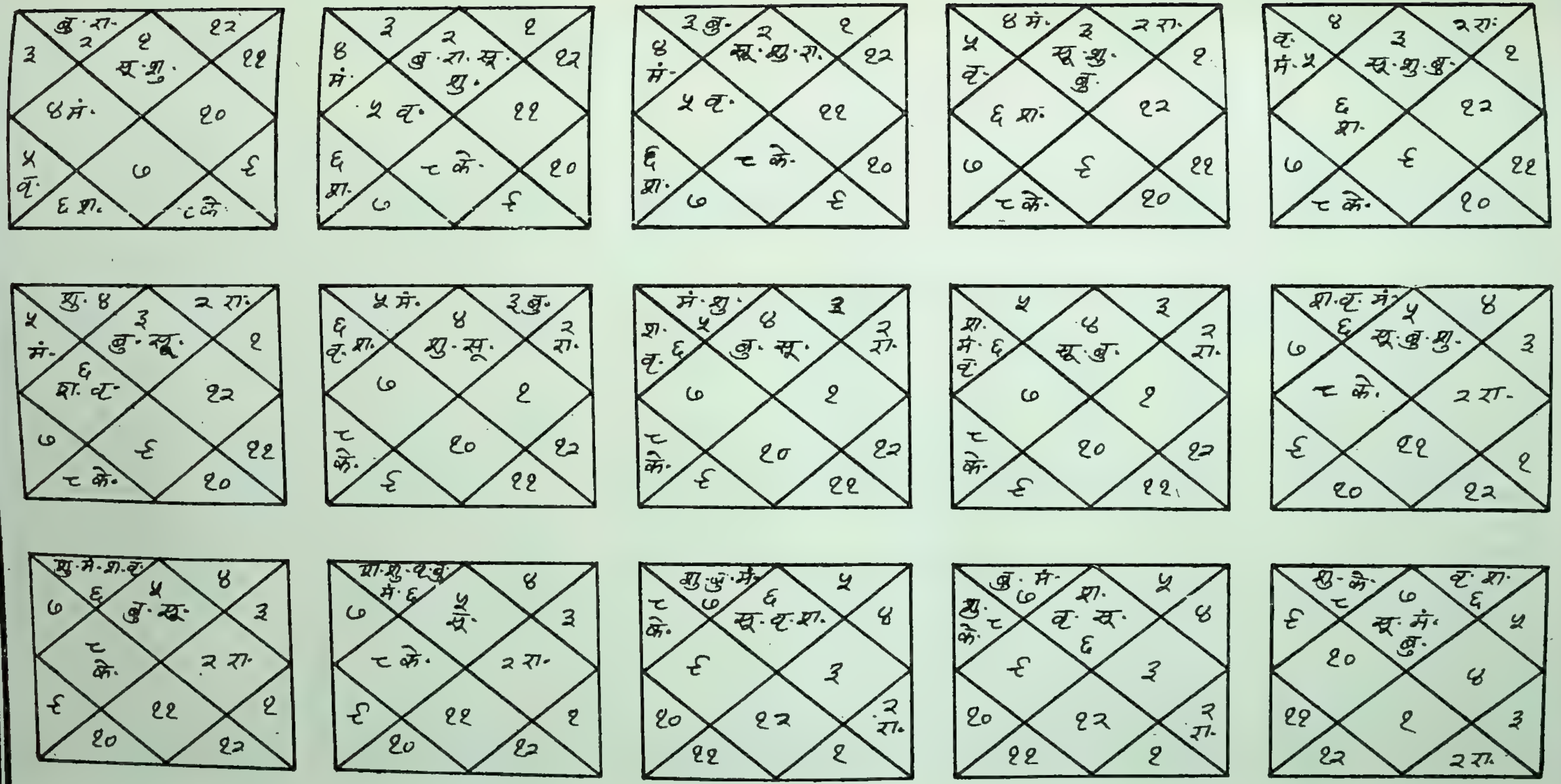

भू० सं० ४७५

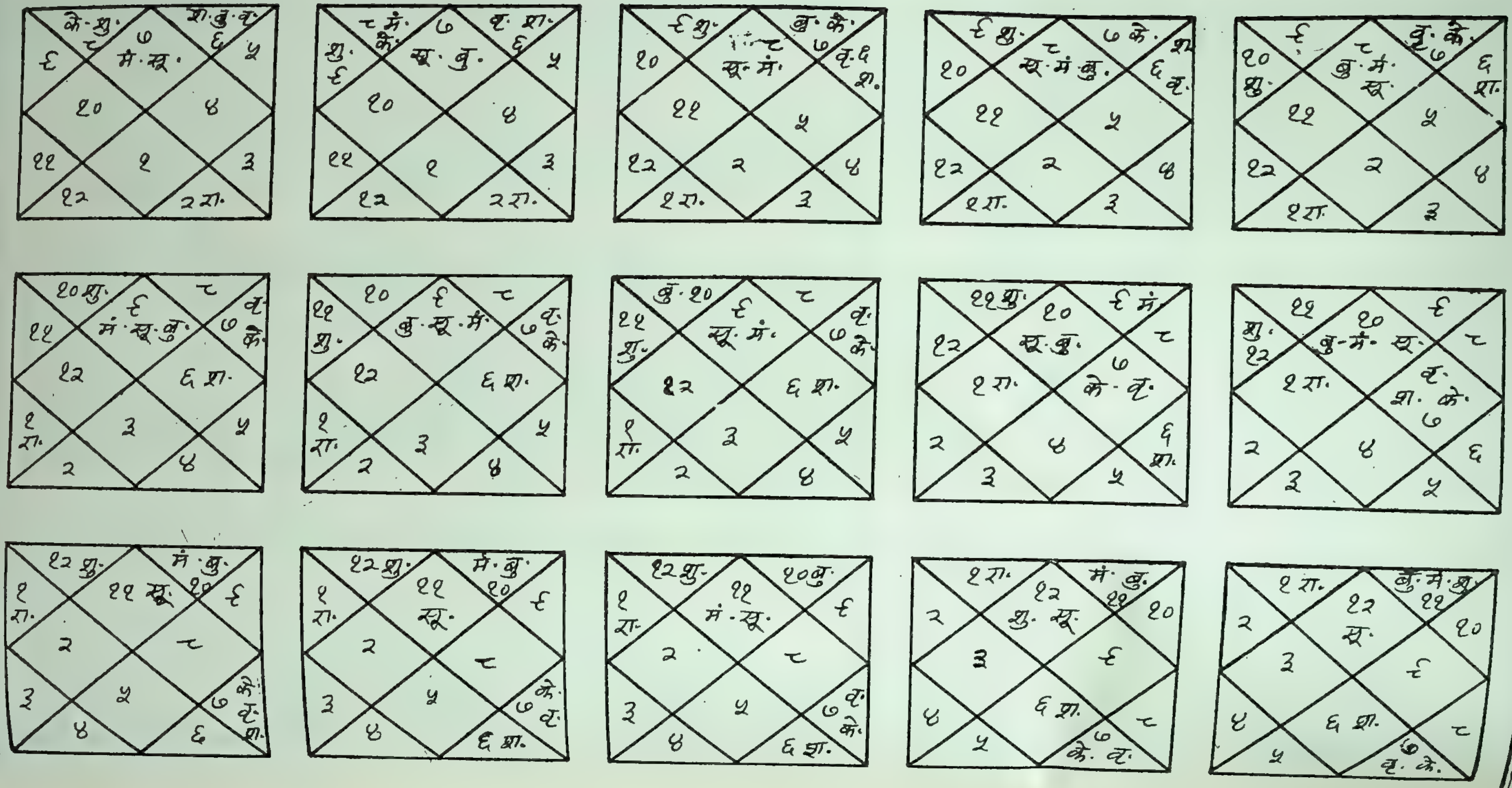

कु० प०

भू० सं०

कु० प०

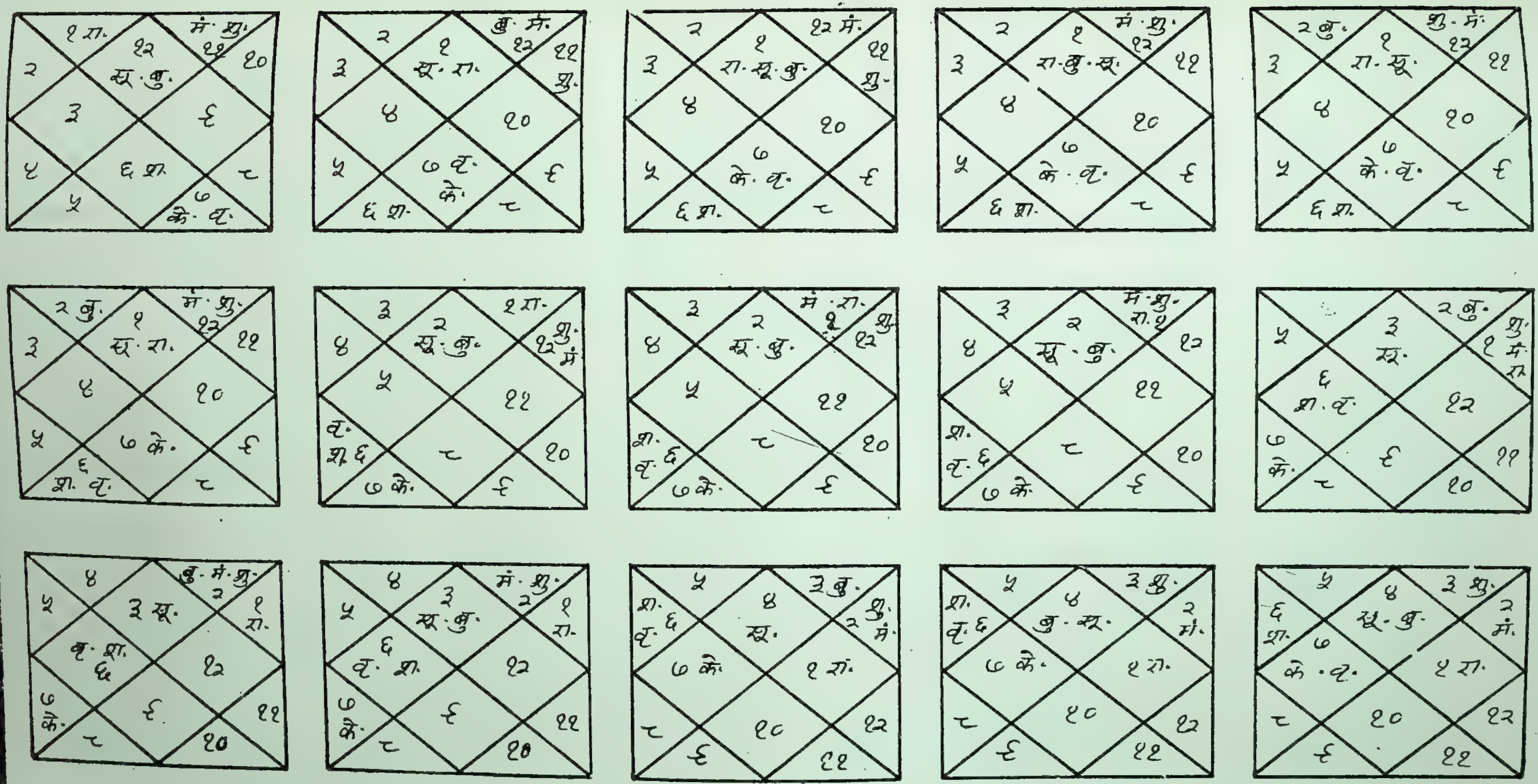

मू० सं० ४७४

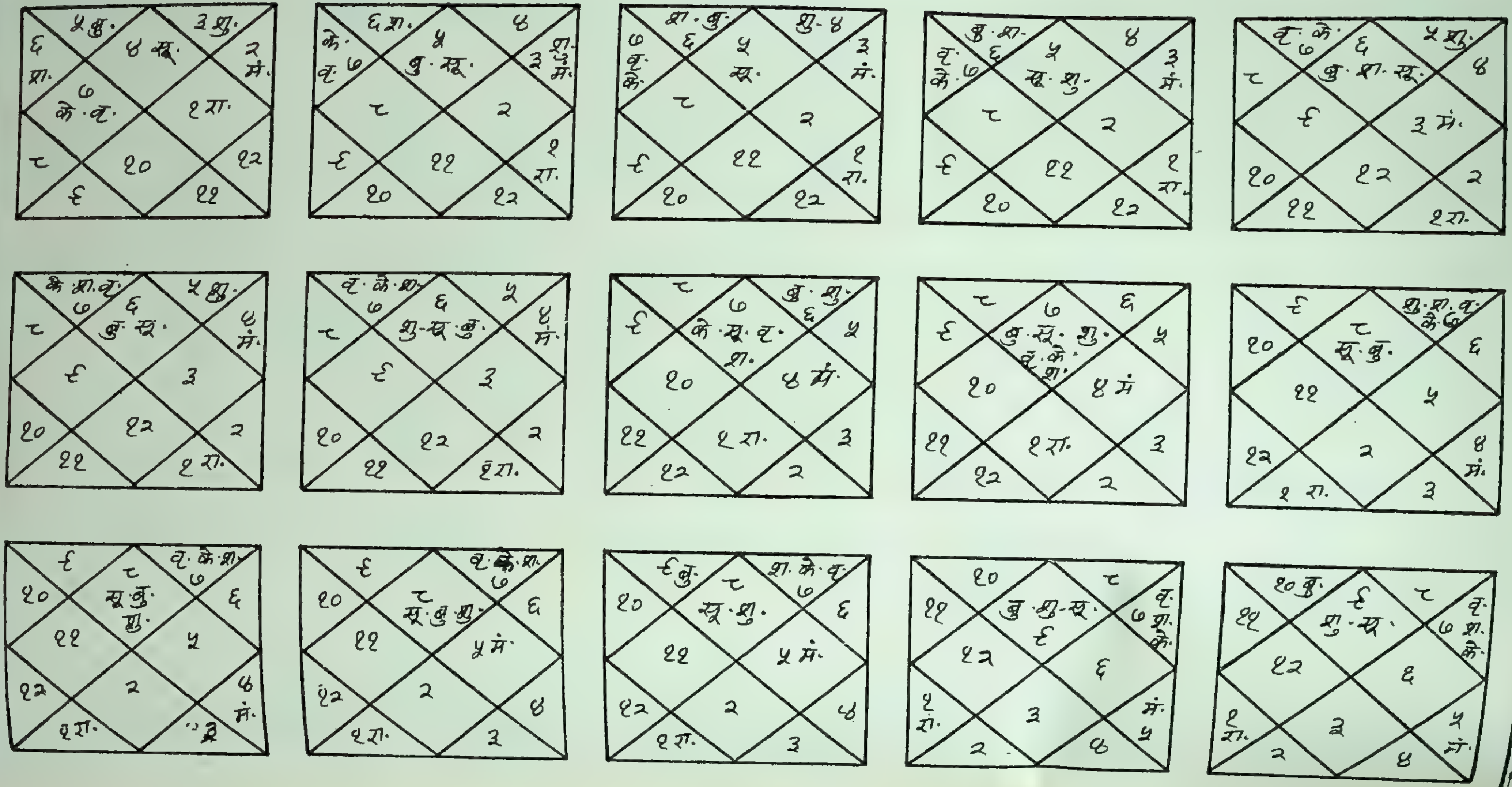

कु० प०

भू० सं०

कु० १०

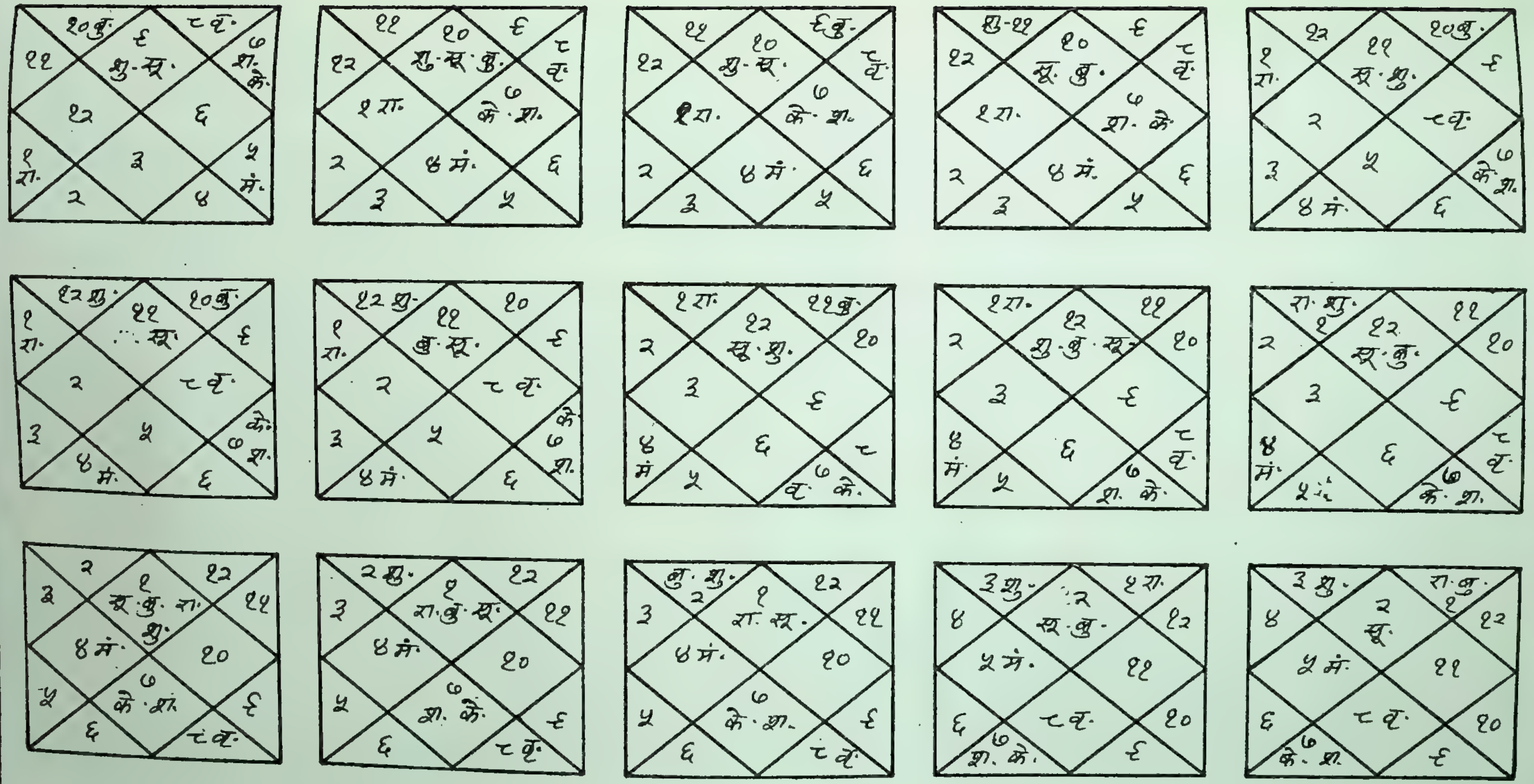

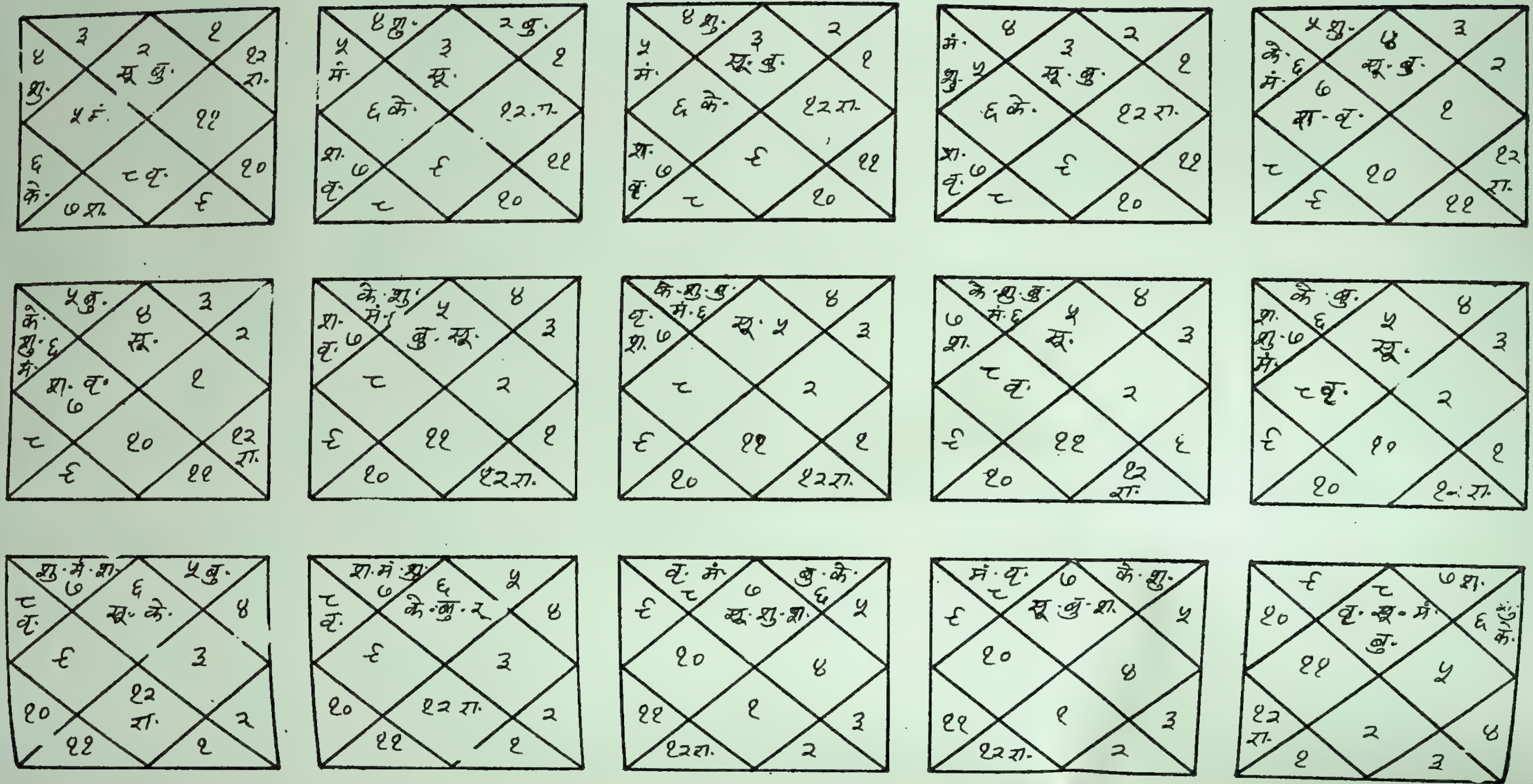

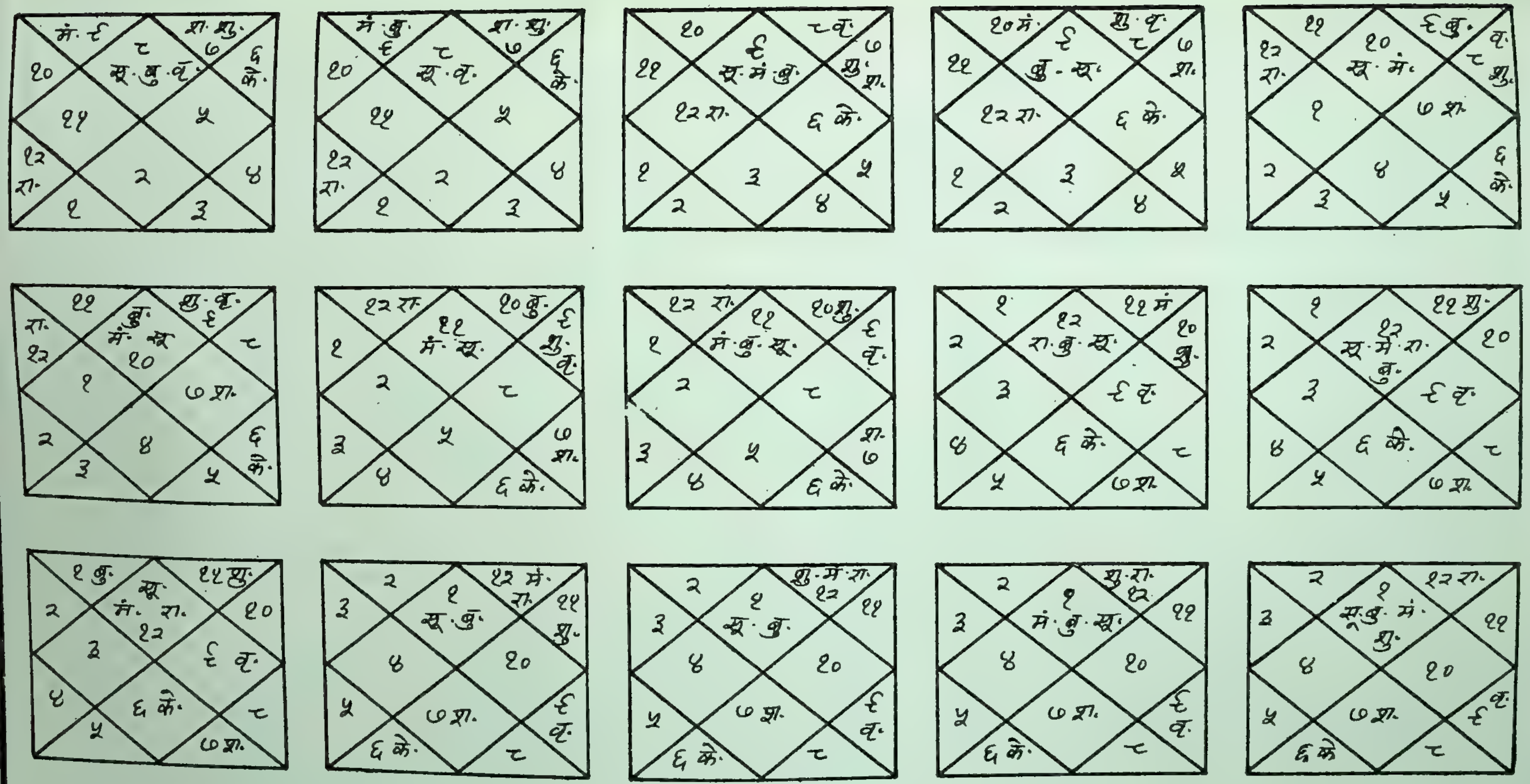
मं· ९ ८ सू· बु· वृ· श· शु· ७ ६ के· १० ११ ५ १२ रा· २ ४ १ ३
मं· बु· ९ ८ सू· वृ· श· शु· ७ ६ के· १० ११ ५ १२ रा· २ ४ १ ३
१० ९ सू· मं· बु· ८ वृ· ७ शु· श· ११ १२ रा· ६ के· १ ३ ५ २ ४
१० मं· ९ शु· वृ· ८ ७ श· ११ बु· सू· १२ रा· ६ के· १ ३ ५ २ ४
११ १० सू· मं· ९ बु· वृ· ८ शु· १२ रा· १ ७ श· २ ४ ६ के· ३ ५
११ बु· मं· सू· १० शु· वृ· ९ रा· १२ ८ १ ७ श· २ ४ ६ के· ३ ५
१२ रा· ११ मं· सू· १० बु· ९ शु· वृ· १ २ ८ ५ ३ ७ श· ४ ६ के·
१२ रा· ११ मं· बु· सू· १० शु· ९ वृ· १ २ ८ ५ श· ७ ३ ४ ६ के·
१ १२ रा· बु· सू· ११ मं· १० शु· २ ३ ९ वृ· ६ के· ४ ८ ५ ७ श·
१ १२ सू· मं· रा· बु· ११ शु· १० २ ३ ९ वृ· ६ के· ४ ८ ५ ७ श·
१ बु· सू· मं· रा· १२ ११ शु· २ १० ३ ९ वृ· ६ के· ४ ८ ५ ७ श·
२ १ सू· बु· १२ मं· रा· ११ शु· ३ ३ ४ १० ९ वृ· ५ ७ श· ६ के· ८
२ १ शु· मं· रा· सू· बु· १२ ११ ३ ४ १० ५ ७ श· ९ वृ· ६ के· ८
२ १ सू· बु· १२ मं· रा· शु· ११ ३ ४ १० ५ ७ श· ९ वृ· ६ के· ८
२ १ सू· बु· मं· शु· १२ रा· ११ ३ ४ १० ५ ७ श· ९ वृ· ६ के ८

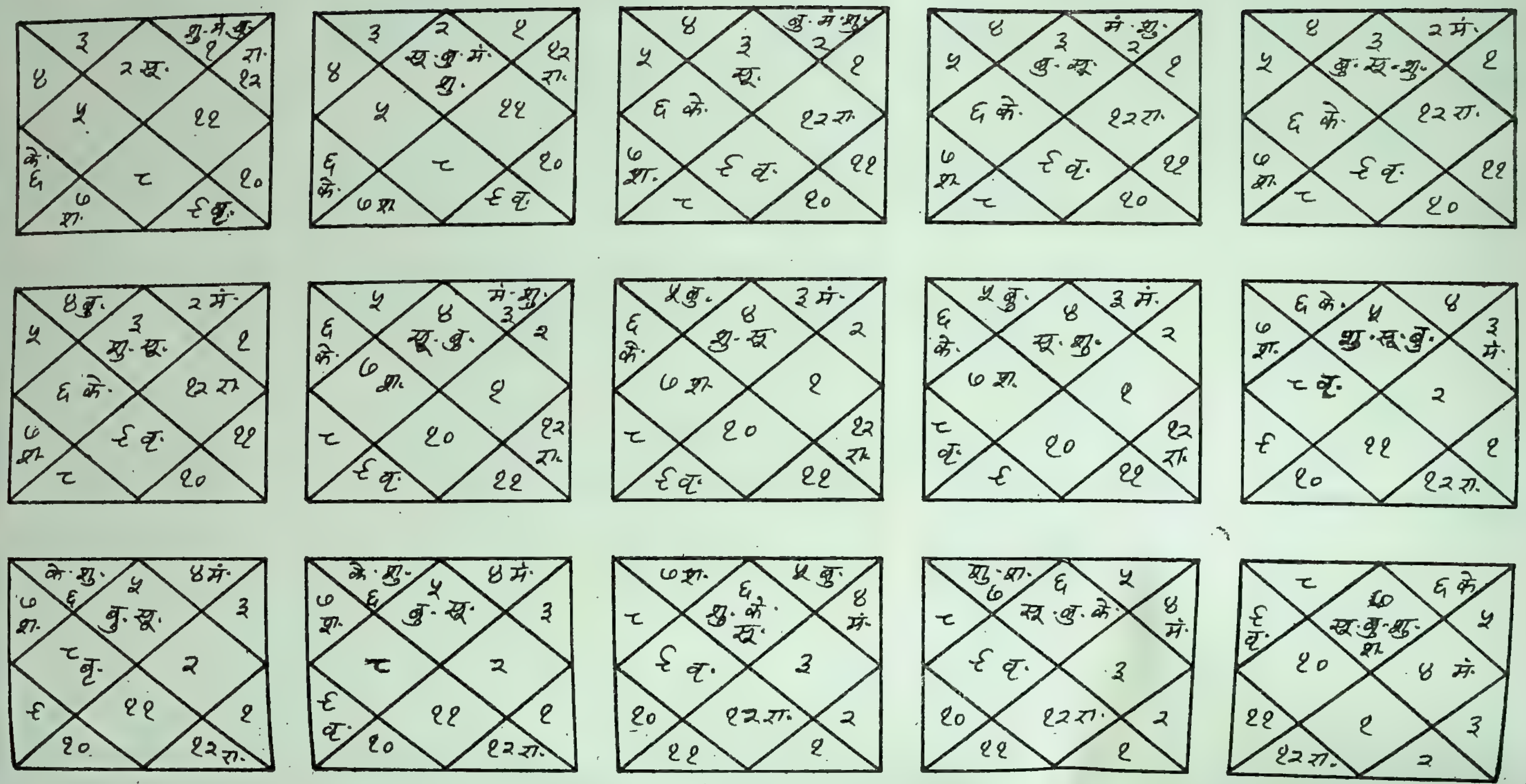

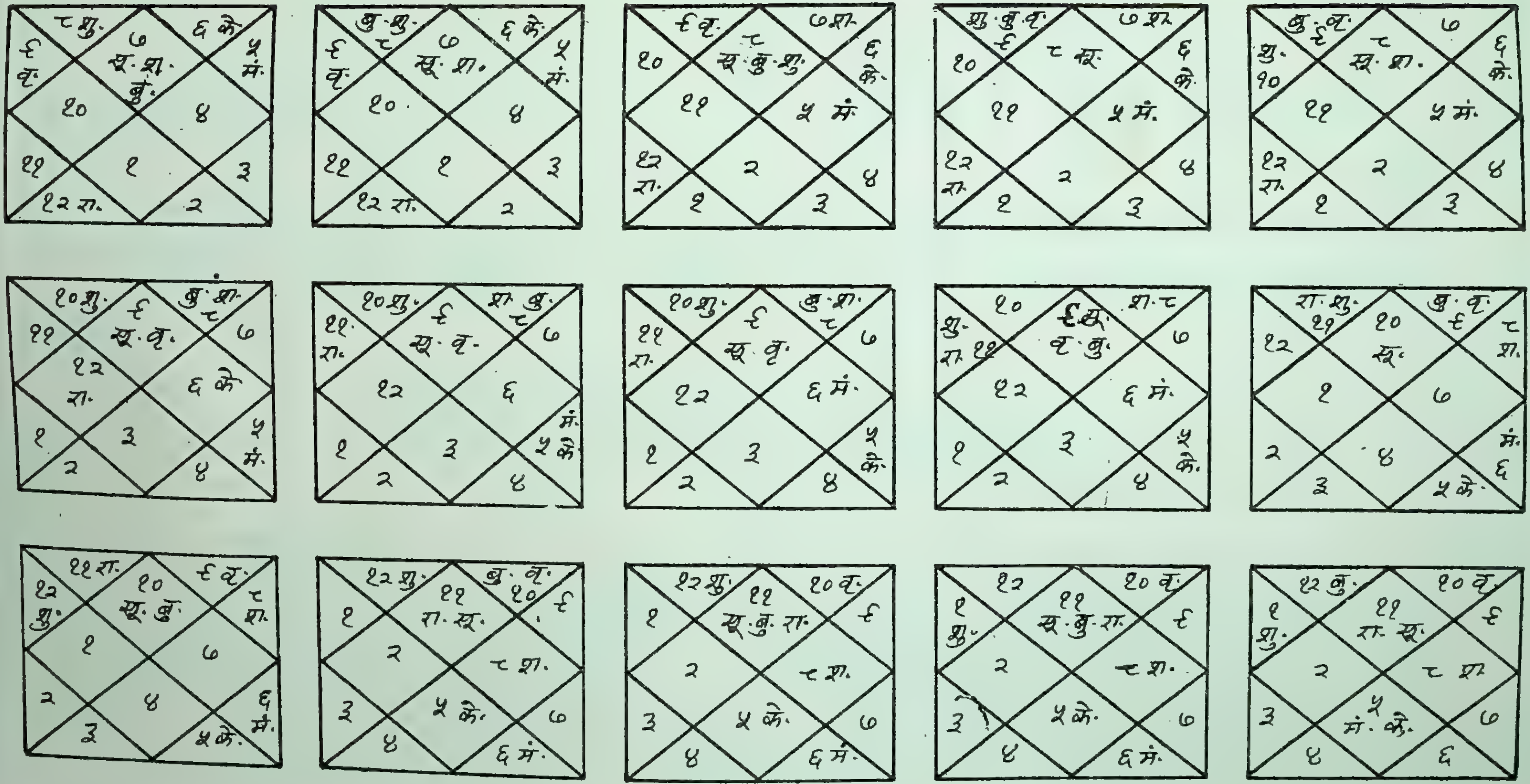

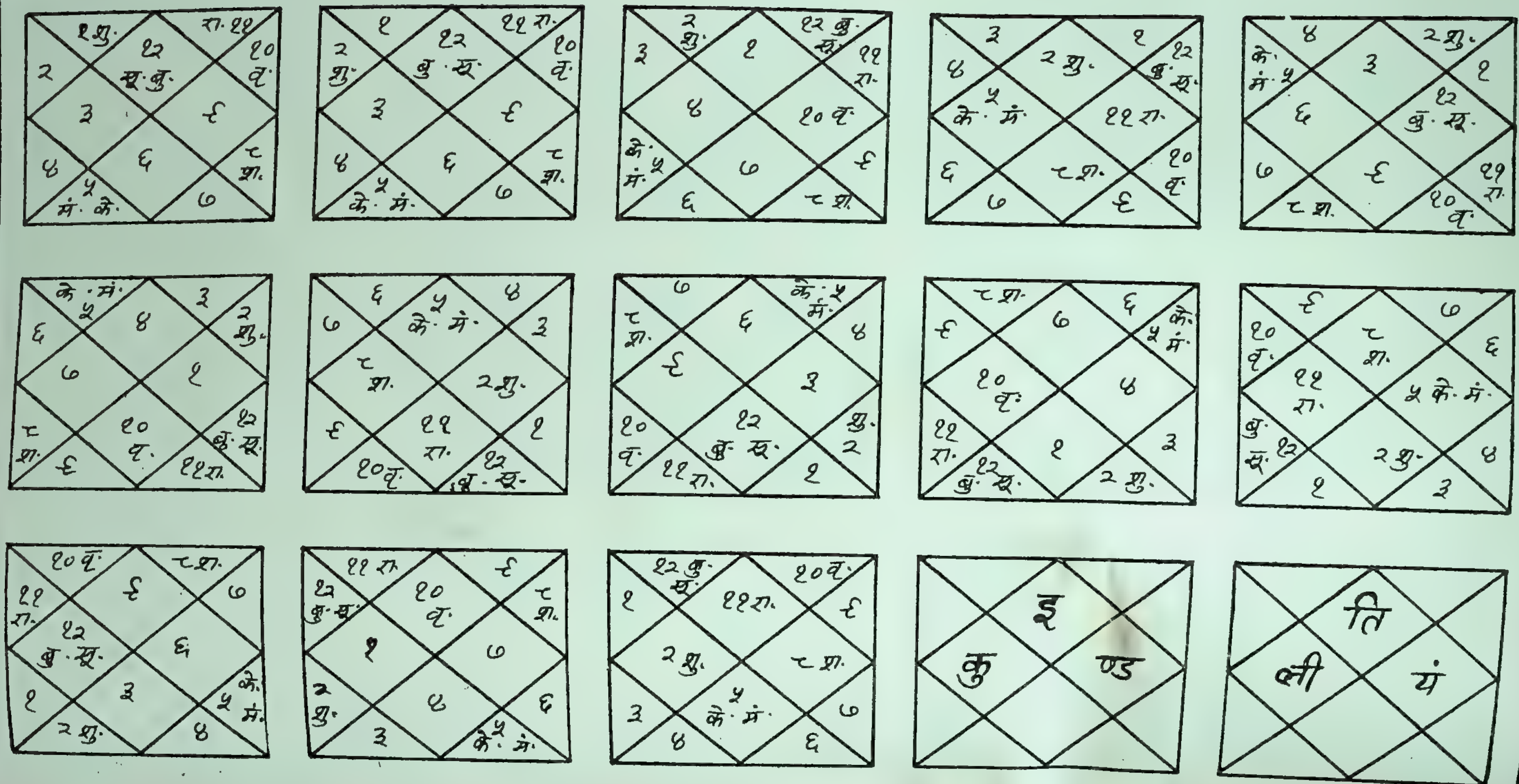
कु
इ
ण्ड
ती
ति
यं

इति श्री भृगु संहिता कुण्डली रहस्यम

द्वितीय खण्डः समाप्तम्

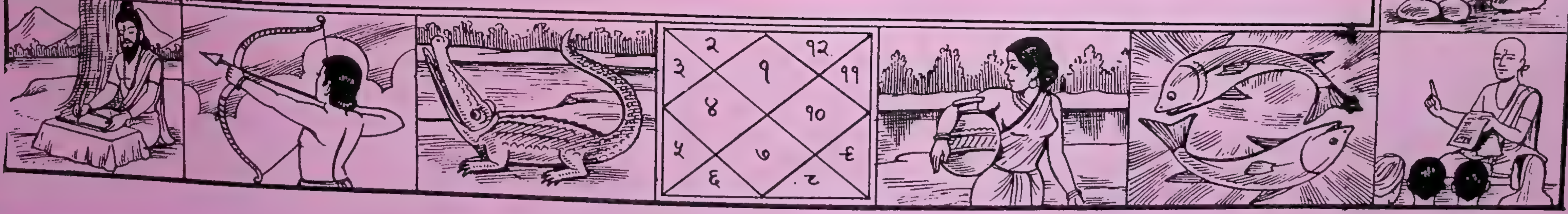

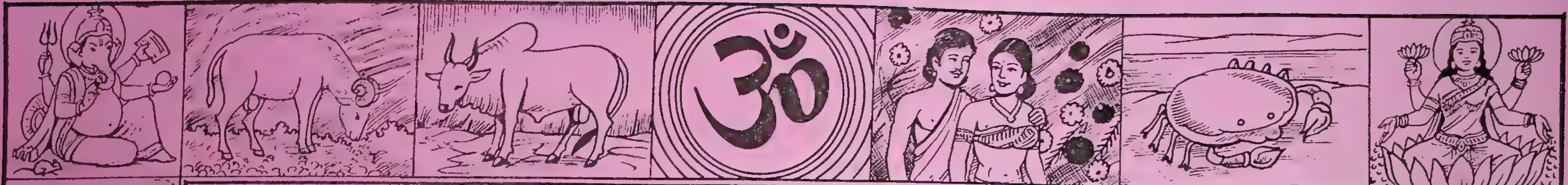

अथ श्री भृगु संहिता कुण्डली रहस्यम्

सूर्य कुण्डली फलम्

तृतीय खण्डः

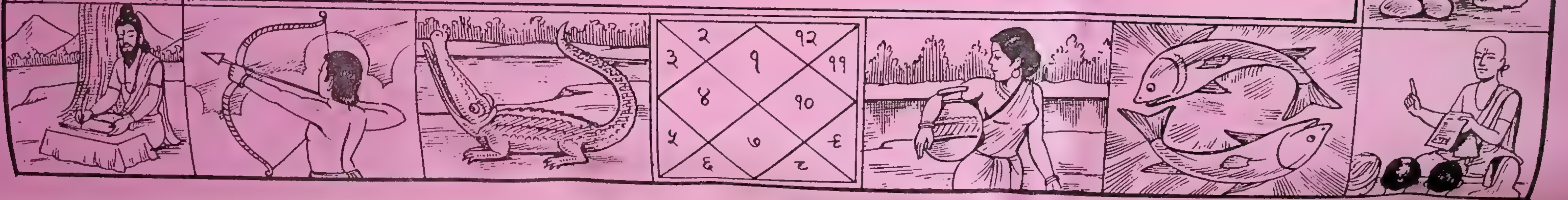

अथ भृगु संहिता कुण्डली रहस्यम्

फलादेश - खण्ड ३

(माघ सं. १९६७ वि. से सं. २०४४ वि. तक की सूर्य-कुण्डलियोंका फलादेश)

आवश्यक - ज्ञातव्य

१- 'कुण्डलीखण्ड' (पृष्ठ संख्या ९९ से ४८० तक) में सं. १९४२वि. से सं. २१००वि. तक की सूर्य-कुण्डलियाँ प्रदर्शित हैं। किस पृष्ठ पर किस सम्वत् की सूर्य-कुण्डली है तथा सूर्य-कुण्डली के आधार पर लग्न-कुण्डली किस प्रकार तैयार करनी चाहिए, इसका उल्लेख पृष्ठ संख्या २३७ से २५० तक में किया गया है। उसके अनुसार सर्वप्रथम अपने जन्म सम्वत् की सूर्य-कुण्डली को ढूँढ कर, उसके आधार पर अपनी जन्म कुण्डली तैयार करलें।

२- प्रस्तुत 'फलादेश खण्ड' में 'कुण्डली-खण्ड' के पृष्ठ संख्या १०० से १५८ तक अर्थात् सं. १९४२वि. से सं. १९६७वि. के वैशाख मास तक की सूर्य-कुण्डलियों के फलादेश का वर्णन नहीं किया गया है। कुण्डली खण्ड के पृष्ठ संख्या १५९ से पृष्ठ संख्या ३५५ तक अर्थात् माघ मास सम्वत् १९६७ वि. से सं. २०४४वि. तक की सूर्य-कुण्डलियों का संक्षिप्त-फलादेश इस खण्ड में वर्णित है। सम्वत् २०४५वि. से सम्वत् २१०० वि. तक की सूर्य कुण्डलियों का फलादेश भी इसमें नहीं है। इन भविष्यकालीन सूर्य-कुण्डलियों के फलादेश का वर्णन इस ग्रंथ के अगले संस्करणों में क्रमशः प्रकाशित किया जाएगा। प्रस्तुत खण्ड में सं. १९६७ वि. के माघ मास से सम्वत् २०४४वि. तक अर्थात् ७८ वर्ष की सूर्य-कुण्डलियों के संक्षिप्त-फलादेश का ही वर्णन किया गया है।

3- 'कुण्डली-खण्ड' के पृष्ठ संख्या १५९ की पहली सूर्य-कुण्डली के नीचे संख्या १ अङ्कित है, उसका फलादेश प्रस्तुत 'फलादेश-खण्ड' के पृष्ठ संख्या ४८३ पर संख्या १ के आगे ही दिया गया है। इसी क्रम से अन्य कुण्डलियों के विषय में भी समझना चाहिए अर्थात् 'कुण्डली-खण्ड' में जिस सूर्य-कुण्डली के नीचे जो संख्या अंकित है, उसका संक्षिप्त-फलादेश इस खण्ड में उसी संख्या के आगे दिया गया है। जिन सूर्य-कुण्डलियों के नीचे कोई संख्या अंकित नहीं है, उनके फलादेश का उल्लेख नहीं किया गया है।

४- लग्न-कुण्डलियों के आधार पर विभिन्न भावों तथा राशियों में विभिन्न ग्रहों की स्थिति, युति एवं दृष्टि के प्रभाव की जानकारी इस ग्रंथ के खण्ड १. ४ तथा ५ में वर्णित सिद्धान्तों के आधार पर प्राप्त कर लेनी चाहिए।

मू० सं० ३२८

कु० २०

(१)- इस कुण्डली में जन्म लेने वाला व्यक्ति शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी से युक्त गौरवर्ण, स्वास्थ्य विकार युक्त, सभी पर प्रभाव रखने वाला, स्वभाव से उग्र, दैनिक कार्य करने में परिश्रमी और साहसी, स्त्री पक्ष में पूर्ण शक्ति सम्पन्न, शारीरिक बल पर कार्यों का विजेता, गृहस्थ में दैनिक रूप से प्रभावी, मातृ-विरोधी, गृह-भूमि के लाभ से पूर्ण, भाई-बहिन से सुखी, गृहस्थी का संचालक, पराक्रम से सुख प्राप्त कर्ता, दैनिक व्यवसाय में सफलता पाने वाला, पितृ-सुख से शक्ति का प्राप्त कर्ता, राज्य और समाज में प्रतिष्ठा एवं मान पाने वाला, अच्छे लाभ और नफे से संयुक्त, अधिक व्ययी, गुप्त द्रव्य से हीन, सन्तान विषयक चिन्तित, बुद्धि तथा विवेक से सफलता पाने वाला, साधारण नम्र, अधिक आयु से पूर्ण, धन-संग्रह में असन्तुष्ट, यदा-कदा द्रव्य विषयक विघ्नों से युक्त और चिन्तित, बाह्य सम्बन्धों में अभाव युक्त, धन वृद्धि के लिये सतत प्रयत्नशील, कौटुम्बिक सुख सहयोग में सक्षम, धर्म पालन में दिखावा रखने वाला, विरोधियों पर प्रभावी होगा। वैसे कुछ प्राप्ति में शनि और गुरु का प्रतियोग बाधक रहेगा।

(२)- इस जन्म लग्न में जन्मा हुआ मनुष्य शारीरिक सौन्दर्य में न्यूनता युक्त तथा यदा-कदा स्वास्थ्य में विकार पाने वाला, तेजस्वी और प्रभावशाली तथा विवेक से कार्य करने वाला, स्वभाव से उग्र तथा शान्त, अतीव साहसी और परिश्रमी, गुप्त योजनाओं का निर्माता, साधारण विनम्र, अतीव स्वाभिमानी, मातृ-सुख में कुछ कमी का अनुभव करने वाला, बाहरी सम्बन्धों में मधुरता के प्रभाव से अनेक कार्यों में विजयी और सफल, गृह-भूमि के लाभ में त्रुटि पूर्ण सफलता पाने वाला, धर्म पालन में आडम्बर और ढोंग युक्त, दैनिक व्यवसाय में परिश्रमी, स्त्री-पक्ष में सफलता से युक्त और अनेक स्त्रियों का भोगी, द्रव्य लाभ के लिये सतत चिन्तित और संग्रह के लिये प्रयत्नशील, भाई-बहिन की शक्ति से पूर्ण, पैतृक-सुख का प्रापक, राज्य एवं सामाजिक साधारण सफलता पाने वाला, दैनिक आमदनी में आवश्यकता से अधिक खर्चीला, बाहर प्रभाव रखने वाला, सन्तान पक्ष में कुछ कमी के साथ सफलता से पूर्ण, विरोधियों पर प्रभावी, उत्तम स्वास्थ्य से सम्पन्न होगा।

(3) इस जन्मांग में उत्पन्न हुआ मानव शत्रुओं का विजेता, उच्च देह, उन्नत ललाट, गौरवर्ण, व्यक्तित्व से पूर्ण, प्रभावशाली, रक्तविकार से मुक्त, परिश्रमी, उग्र कर्मी, स्वभाव से क्रूर, स्त्री पक्ष में विघ्न सम्पन्न, गृहस्थ में परेशानी का अनुभव करने वाला, पराक्रम द्वारा सफलता सम्पन्न, भाई बहिन की शक्ति से सक्षम, विरोधियों पर प्रभाव रखने वाला, कौटुम्बिक सुख से पूर्ण, पुरुषार्थ से भाग्योन्नति करने वाला, विघ्नों से उपेक्षा युक्त, धर्म और ईश्वर में निष्ठावान, पैतृक-सहयोग से व्यवसाय की उन्नति में सक्षम, मातृसुख से हीन, गृह-भूमि और गृहस्थ की ओर से चिन्तित, कारोबार में बाह्य सम्बन्धों से सफलता प्राप्त करने वाला, विवेकपूर्ण स्थिति से अधिक व्ययी, दैनिक व्यवहार में कुशल, स्त्रीक्षेत्र में आत्मीयता और स्वाभिमान से युक्त, राज-समाज में मान-प्रतिष्ठा से सम्पन्न, पुरुषार्थी, मध्यायु से सम्पन्न, विद्या-बुद्धि और वाणी तथा सन्तान प्राप्ति के लिये प्रयत्नशील, यदा कदा धोखा पाने वाला, अधिक खर्चीला, दैनिक जीवन में मस्त, धनसंग्रह में दुर्बल रहते अच्छे लाभ एवं आयवाला होगा।

(4) इस जन्मचक्र में जन्मा हुआ जातक सुन्दर सुडौल देही, ऊँचा कद, गोधूम वर्ण, परम तेजस्वी और विवेकी, स्वभाव से कुछ उग्र, सरल और उदारचेता, प्रभावशाली वाणी से युक्त, मातृ-सुख में हीनता का अनुभवी, स्वाभिमानी और कटु-सत्य का भाषी, अधिक व्ययी, अच्छी आमदनी से सम्पन्न, गृहस्थ और स्त्री-पक्ष में दुर्बलता अनुभव करनेवाला, कुटुम्ब से परेशान, परम धार्मिक, शत्रुजयी, अत्यन्त प्रभावशाली, विद्यावाणी की गम्भीरता से सम्पन्न, विद्याक्षेत्र में त्रुटि की अनुभूति करनेवाला, धन संग्रह में दुर्बल, पितृ सुख और सहयोग से पूर्ण, सन्तान प्राप्ति का प्रयत्नशील, भाई-बहिन से सम्पन्न, गृह-भूमि के लाभ में हानि प्राप्तकर्ता, दैनिक सुख से युक्त, स्त्री पक्ष में मान और प्रतिष्ठा रखने वाला, बाह्य सम्बन्धों की मधुरता से व्यवसाय आदि में अच्छी उन्नति से पूर्ण और कभी कभी धोखा पानेवाला, परिश्रमी और उत्साही, गुप्त-कमजोरी का अनुभवी, बन्धु-सहयोग से वंचित, परम साहसी, स्वकार्य साधन में तत्पर, पितृ क्षेत्र का निवासी, राज-समाज में प्रतिष्ठा पानेवाला, आदर्शवादी, कठोर परिश्रमी होगा।

(५)- इस जनुर्लग्न में जन्म लेने वाला मानव सुन्दर और विशालदेही, गौरवर्ण, गृहस्थ में विघ्न पाने वाला, स्त्री पक्ष से चिन्तित, प्रभावशाली, शत्रु और विरोधियों का विजेता, पितृ-सुख एवं सहयोग से पूर्ण, पितृपक्ष की ही विलासी, उग्रचेता, स्वभाव में क्रूर, विवेकी, परम धार्मिक और ईश्वरीय निष्ठा से सम्पन्न, परम विवेकी, विद्या वाणी से सम्पन्न किन्तु स्त्री और विद्या क्षेत्र में त्रुटि का अनुभव करने वाला, अत्यन्त साहसी और पराक्रमी, व्यवसायोन्नति के लिये अतीव प्रयत्नशील, गृह-भूमि लाभ में हानि का प्राप्तकर्ता, अधिक व्ययी, राज्य सम्बन्धों में कु-शल, राज समाज की प्रतिष्ठा से युक्त, उत्तम द्रव्य लाभ से पूर्ण, सामान्य धन का संचयी, उत्तम सन्तान सम्पन्न, कौटुम्बिक परेशानियों का अनुभवी, परिश्रम से सफलता पाने वाला, मध्यायु सम्पन्न, उत्तम स्वास्थ्य युक्त, माता एवं स्त्री के सम्ब-न्धों में कमी पानेवाला, भाई बहिन के सुख-सहयोग से वंचित, गृहस्थ-पक्ष में प्रतिष्ठा का प्रापक, दैनिक जीवन एवं व्यव-हारक्षेत्र में कुशल एवं आमोद-प्रमोद का प्रेमी, कुछ राज्य क्षेत्र में बन्धन युक्त त्रुटि का अनुभवी होगा।

(६)- इस कुण्डली में जन्मा हुआ बालक ऊँचे कद वाला, गौरवर्ण, उत्तेजित किन्तु विवेकशील, विद्या-सम्पन्न, वाणी में प्रगल्भ, अत्यन्त स्वाभिमानी, गुप्त और गम्भीर योजनाओं का निर्माता, सन्तान की उत्तम शक्ति से पूर्ण, स्त्री पक्ष से क्लेश युक्त जीवन, व्यावसायिक कठिनाइयों का अनुभवी, गृहस्थ के सुख सम्बन्धों में त्रुटि सम्पन्न, धन का कम संचयी, कौटुम्बिक विघ्न युक्त, धनोपार्जन में विघ्न एवं संघर्षरत सफलता पाने वाला, विद्या प्राप्ति में कुछ अपूर्ण, मध्यायु युक्त, जीवनचर्या में प्रभावशाली, धर्म के प्रति निष्ठावान् किन्तु यथार्थ पालन न करनेवाला, भाग्योन्नति में बाधा सम्पन्न, देह में विकार और रोग युक्त, विवेक द्वारा मान प्रतिष्ठा पाने वाला, परिश्रम और पुरुषार्थ से व्यवसाय में सफल, अनेक विरोधी और शत्रुओं से सम्पन्न, विवाद में नाय-न्याय एवं धर्म से कार्य करने में सक्षम, राज और समाज में लोकप्रिय जीवन युक्त, धनवृद्धि का प्रयत्नशील, अन्याश्रय से भाग्योन्नति का प्रापक, सुन्दर स्त्री युक्त, चतुराई से प्रत्येक क्षेत्र में सफल, स्वार्थी, भाई बहिन से सुख सहयोग का आकांक्षी, साहसी, अन्य स्त्रियों का भोगी, पितृ सुख से हीन होगा।

मृ० सं० ३२८.

कु० १०

(७)- इस जन्मांग में उत्पन्न हुआ जातक उग्र और कुत्सित-कर्म करनेवाला, विवेकी, पुरुषार्थ और साहस से सर्वदा काम लेकर धन-संग्रह के लिये सर्वदा प्रयत्नशील, स्वार्थी, अच्छे द्रव्य लाभ से युक्त, ऊँचा कद, मध्यम वर्ण, महाभाग्य से सम्पन्न, शरीर में पित्तवायु प्रकोप से दूषित, सुन्दर सुशीला स्त्री पाने वाला, पितृ सुख से अल्प सुखी, विरोधी और शत्रुओं से कई बार पराभव पाने वाला, राजकीय और सामाजिक प्रतिष्ठा में न्यून, अत्यन्त स्वाभिमानी, कर्मचारी जनों से परेशान, बाह्य सम्बन्धों की मधुरता से अनेक विषयों में सफल, कूटनीतिज्ञ, परम चतुर, दैनिक जीवन में रईसी का शौकीन, प्रभावशाली, विद्या क्षेत्र में कुछ त्रुटियुक्त पूर्णता से सक्षम, सन्तान की उत्तम शक्ति पाने वाला, पितृ क्षेत्र में उन्नत, भाई बहिन के सुख सम्बन्धों में कमी का अनुभवी, कई बार शत्रुओं पर विजयी, धर्म पालन में रुचि रखने वाला, राज-समाज में मान-प्रतिष्ठा का साधारण प्राप्त कर्ता, प्रकट में धनी-मानी समझा जाने वाला, गम्भीर एवं गुप्त यात्राओं का विजेता, बार-बार धन जन की हानि पाने वाला, कई बार मृत्यु तुल्य कष्टों का भोगी, गुप्त रोगों से पीड़ित होगा।

(८)- इस कुण्डली में जन्म लेने वाला व्यक्ति मध्यम कद, गौर श्यामवर्ण, प्रभावशाली व्यक्तित्व से युक्त, विद्या और वाणी प्रयोग में परम चतुर, महान स्वार्थी, स्वभाव से उग्र और क्रूर, हृदय से न्याय और धर्म को जानने पर भी स्वार्थवश वाद कर्ता, कई स्त्रियों का भोगी, सुन्दर सुशीला गृहिणी का पति, व्यवसाय में कुछ कमी युक्त, सन्तान की उत्तम शक्ति पाने वाला, वृद्धावस्था में तिरस्कृत, स्त्री से क्लेश करने वाला, पराक्रमी और साहसी, पुरुषार्थ से द्रव्य लाभी, भाग्यवृद्धि के लिये प्रयत्नशील, प्रभावशाली जीवन से पूर्ण, राजसमाज में प्रतिष्ठा और मान प्राप्त कर्ता, पितृ क्षेत्र में समुन्नत, यदा कदा द्रव्य लाभ की अपेक्षा हानि से युक्त, भाई बहिन के सुख सम्बन्धों में त्रुटि से पूर्ण, द्रव्य द्वारा शत्रुपक्ष पर प्रभाव रखने में सक्षम, भाग्योन्नति में विघ्न प्राप्त कर्ता, धर्म पालन की यथार्थता से हीन, अधिक व्ययी, कौटुम्बिक मतभेद रखने वाला, बाह्य सम्बन्धों में चतुर, कौटुम्बिक सुख में अभावग्रस्त, कूटनीतिज्ञ, शारीरिक सौन्दर्य में त्रुटि युक्त, पितृ सुख का अल्प भोगी, गृहस्थ में पूर्ण आसक्ति रखने वाला होगा।

मू० सं० ९२८

कु० १०

(९)-इस जन्मलग्न में जन्मा हुआ मनुष्य मातृ-पक्ष में नीरस, प्रभावशाली व्यक्तित्व से सम्पन्न, दीर्घवपु, गौरवर्ण, गृह भूमि से साधारण सुखी, शारीरिक सौन्दर्य में त्रुटि युक्त, स्त्री-क्षेत्र में प्रभावी और सुखी, व्यवसायोन्नति से सुखी, अधिक व्यय करने वाला, धनसंचय में दुर्बल, स्त्री से मतभेद रखने वाला, विद्या और सन्तान पक्ष में कमी का अनुभवी, भाग्य और धर्मबुद्धि से पूर्ण, कुछ सज्जनतायुक्त, स्वाभिमानी, स्वास्थ्य विकार से चिन्तित, बुद्धि और विवेक से पूर्ण, पुरुषार्थ से धन-मान और प्रतिष्ठा का प्राप्तकर्ता, सन्तान और कुटुम्ब की शक्ति से सम्पन्न, स्त्री से सुख सहयोग पाने वाला, बुद्धि बल से धन और धन बल से उन्नति एवं सफलतायुक्त जीवन, भाग्य पक्ष में कभी-कभी कमी का अनुभवी, वाणी में सज्जनता रखने वाला, स्वार्थपूर्ति में तत्पर, जीविका हेतु परिश्रमी और तन्मयी, वार्तालाप में परिवर्तन युक्त, सुयश से वंचित, कष्ट-साध्य सम्पर्क रखने में कुशल, शत्रु और विरोधियों पर प्रभावशाली, भाग्यवृद्धि हेतु अनुचित एवं गुप्त आश्रय लेने वाला, व्यक्तित्व की उन्नति के लिये सतत प्रयत्नशील होगा।

(१०)-इस जन्मांग में पैदा हुआ जातक अपने दैहिक प्रभाव से मान प्रतिष्ठा सम्पन्न, स्वाभिमानी, समुन्नत, भाई-बन्धुओं से युक्त, परम पुरुषार्थी, साहसी, स्त्री क्षेत्र में प्रभावशाली, गृहस्थ सुख का भोगी, स्फूर्त, क्रोधी, दैनिक कार्य में हानि प्राप्तकर्ता, कौटुम्बिक सुख से वर्जित, परिश्रमी, विरोधियों द्वारा भी अर्थ-हानि प्राप्त करने वाला, सन्तान पक्ष से दुःखी, विद्या-क्षेत्र में हठ से लाभ प्राप्त कर्ता, स्वास्थ्य सम्पन्न, धार्मिक श्रद्धा की पूर्णता से हीन, दूरतर कार्य करने में तत्पर, शरीर से कृश, मातृ-सुख सहयोग से वंचित, गृह भूमि लाभ से हीन, बाह्य सम्बन्धों से युक्त, विवेक द्वारा शत्रुओं का विजेता, अधिक व्ययी, राज-समाज में मान-प्रतिष्ठा संयुक्त, साधारण गृह-भूमि का लाभ पाने वाला, पैतृक स्थान में व्यवसायोन्नत, जीवन में अनेक असुविधाओं के कारण चिन्तित, सन्तान पाने वाला, वाणी चातुर्य से द्रव्य लाभ का प्रापक, स्वार्थी, अनुचित कार्य करने में सक्षम, यदाकदा मृत्युतुल्य कष्ट का भोगी, वाचाल, गुप्त तथा गम्भीर योजनाओं का निर्माता, चातुर्य से गृहस्थ का संचालक, आन्तरिक दुर्बलता का अनुभवी, स्त्री के सहयोग से कुछ कार्यों में सफलता पाने वाला होगा।

(११)- इस जन्म लग्न में उत्पन्न होनेवाला बालक तेजस्वी, उन्नति के लिये सदा प्रयत्नशील, भाई-बहिन की शक्ति से संयुत, अत्यन्त साहसी, स्त्री क्षेत्र में प्रभावशाली, गृहस्थ भोगों में पुरुषार्थी, कर्मयोगी, स्फूर्ति और स्वाभिमानी, क्रुद्ध क्रोधी किन्तु विवेकी, द्रव्य-संचय में क्षुब्ध, कौटुम्बिक-हानि से युक्त, विपक्षियों द्वारा चिन्तित, विद्यापक्ष में हठी, सन्तति की ओर से दुःखी, कठिन कार्य करने को भी तत्पर, भाग्योन्नति में विघ्न पानेवाला, सुन्दर और दीर्घवपु, गौरवर्ण, मातृ-सुख से पूर्ण, विवेक शक्ति से जाग्रत, स्त्री से सुखी, पुरुषार्थ से सुख प्राप्त कर्ता, सुख शान्ति का अनुगामी, व्यवसाय में सफल, गृह भूमि भृत्य वाहनादि सुख से पूर्ण, अन्धा द्रव्य लाभी, राज-समाज में प्रतिष्ठित, अधिक खर्चीला, ऐश्वर्य में उन्मत्त और आसक्त, वाह्य सम्बन्धों में मधुर, विलम्ब से सन्तान पाने वाला, अन्य स्त्री का भोगी, शत्रुओं पर चातुर्य और नम्रता से कार्य करने में सक्षम, यदाकदा आय में हानि का अनुभवी, धर्म-पालन में हीन, अनुचित प्रयोग से स्वार्थपूर्ति में तन्मय, मृत्युतुल्य कष्टों का प्रापक, वाचाल, प्रगल्भ और धूर्त होगा।

(१२)- इस जन्मलग्न में जन्मा हुआ मनुष्य शरीर से पुरुषार्थ से धनी, कुटुम्ब सुख से पूर्ण, अतीव प्रभावशाली और भाग्यवान, कुटुम्ब से मतभेदी, तेजस्वी, मध्यम कद, मध्यायु युक्त, गोधूम वर्ण, स्त्री पक्ष में नीरस किन्तु गृहिणी से प्रेम रखने पर भी अन्य स्त्रियों का भोगी, विलासी, धूर्त, क्रोधी, स्वाभिमानी, उग्रचेता तथा उग्रकर्मी, संघर्षों में रत, विघ्नयुक्त लाभ पाने वाला, स्वास्थ्य और सौन्दर्य में त्रुटि युक्त, मुख पर चोट के चिन्हों से युक्त, अनेक प्रकार से रोगी, विद्या पक्ष में कमी का अनुभवी, प्रगल्भ और वाचाल, द्रव्य का भारी स्वार्थी, सन्तान सुख में बाधा पानेवाला, गुप्तेन्द्रिय रोगी, विवेकी, भाई-बहिन से सम्पन्न, बाहरी सम्बन्धों द्वारा सफल, पुरुषार्थी, मातृसुख से पूर्ण, सुन्दर और सुशीला स्त्री का पति, अनेक औरतों से युक्त, ऐश्वर्य-सम्पन्न और अधिक व्ययी, राज तथा समाज में प्रतिष्ठित, सुशिक्षित, बुद्धिमान, गुप्त रीतियों में सक्षम, दुर्बलता को छिपाने वाला, विरोध पक्ष को विजेता, उन्नति के लिये कठिन कार्य करके सफलता प्राप्त करने वाला होगा।

(१३)- इस कुण्डली में जन्म लेने वाला व्यक्ति, दीर्घ और पुष्ट देही, परम विवेकी, अत्यन्त पुरुषार्थी, मध्यम कद, गौर वर्ण, तेजस्वी, प्रभावशाली, वाचाल, कटु-सत्य भाषी, स्वाभिमानी, द्रव्य लाभ से उपेक्षित, मातृ सुख से वंचित, भाई-बहिन युक्त होते हुए भी सुख-सहयोग से हीन, वाचाल तथा क्रोधी, विद्या क्षेत्र में कमी का अनुभवी तथापि सुशिक्षित, एवं अनेक विद्या कला विद, स्त्रियों का भोग-विलास पाने वाला, सुशीला पतिव्रता स्त्री का पति, द्रव्य लाभार्थ प्रयत्नशील, उदारचेता, उग्र कर्मा, कुत्सित और कुचैल, पितृ-सुख में अल्प, पितृ क्षेत्र में ही उन्नति प्राप्तकर्त्ता, राज्य में प्रतिष्ठा प्राप्त कर बन्धन पाने वाला, उच्च व्यवसाय से समुन्नत, गृह भूमि लाभ से सम्पन्न, सन्तान सुख से पूर्ण, बुद्धि जीवी तथा कर्मयोगी, सन्तान सुख में त्रुटि का अनुभवी, सरल और कठोर, पुरुषार्थ से भाग्योन्नति कर्ता, अनेक अरिष्ट पाने वाला, भोगादि आदि में खर्चीला और प्रयत्नी, गुप्त नीतिज्ञ, दैनिक जीवन में चिन्तित, यदाकदा द्रव्य लाभार्थ कठिन विघ्न पाने वाला, चातुर्य से द्रव्य लाभी, योग्यता प्रदर्शन में गुणी होगा।

(१४)- इस जन्म लग्न में उत्पन्न हुआ मनुष्य पुरुषार्थ से द्रव्य प्राप्त करने वाला, तेजस्वी, कुटुम्ब युक्त, क्रोधी और स्वाभिमानी, प्रभावशाली व्यक्तित्व से सम्पन्न, ऊँचा कद, गौरवर्ण, कृश शरीर, अन्य व्यक्तियों से प्रतिष्ठित और धनी मान्य, द्रव्य और कौटुम्बिक सुख में कमी का अनुभवी, स्त्री की ओर से नीरस और चिन्तित, उच्च व्यवसायी, राज्य से द्रव्य लाभ पाने वाला, पितृ क्षेत्र का निवासी, बुद्धि बल से समुन्नत, विद्या तथा सन्तान पक्ष का लाभ प्राप्तकर्त्ता, सन्तान की ओर से चिन्तित और दुःखी, दैनिक जीवन में चिन्तित, उत्तम कर्म द्वारा भाग्य वृद्धि करने में पटु, पराक्रम द्वारा द्रव्योपार्जन कर धन-संचय का प्रयत्नशील, धन-संचय में न्यूनता का अनुभवी किन्तु प्रतिष्ठा सम्पन्न, भाई बहिन के सुख सहयोग से वंचित, अधिक व्ययी, सुयशी, धर्म और ईश्वर के प्रति निष्ठावान, शत्रुजयी, आय क्षेत्र में सामान्य विघ्नों का प्राप्तकर्ता, साहसी तथा विजेता, बाह्य सम्बन्धों में सफल, मातृ-वियोगी, गृहादि लाभ में हानि का अनुभवी, परम चतुर, स्वास्थ्य में अरिष्ट का प्राप्तक, भोग विलासों की प्राप्ति हेतु प्रयत्नशील, गुप्त नीतिज्ञ, यदा-कदा लाभ क्षेत्र में गहरे विघ्न पाने वाला होगा।

भू० सं० २३३. कु० २०

(२५)- इस कुण्डली में जन्म लेने वाला मानव स्वाभिमानी, गौरवर्ण, सामान्य कद, कृशशरीर, तेज और प्रतिभा सम्पन्न, वाचाल, दूसरों पर प्रभाव रखने में कुशल, विनम्र तथा चतुर, विद्यादि गुणों से विभूषित, साधारण क्रोधी और क्षुब्ध, चातुर्य से सुख और लाभों का प्राप्त कर्त्ता, सुख प्राप्ति के साधन एवं ऐश्वर्यादि से पूर्ण, मातृ सुख का प्राप्त कर्त्ता, आनन्द का अनुभवी, सरल और उदार चेता, धर्म और ईश्वर के प्रति निष्ठावान, तीर्थाटनी, स्त्री-पक्ष से सुखी और अनेक भोगों को पाने वाला, विलासी, साहसी, अन्य भोगों से पूर्ण, अनेक कार्यों में अनेक प्रकार से सफल, धन-धान्य और रत्नादि से पूर्ण, गृह-भूमि-भृत्य वाहनादि सुख से संयुत, राज्य क्षेत्र और उच्चव्यवसाय से धनी तथा मान प्रतिष्ठा सम्पन्न, दैनिक जीवन में उद्यमी और प्रयत्नशील, परम-चतुर, स्वर्ण तथा रजत कार्य से भाग्योन्नत, सन्तति सुख से युक्त किन्तु चिन्तित, यदा कदा व्यावसायिक हानि का अनुभवी, वाग्मी, धीर तथा साहसी होगा। माता पिता का पूर्ण भक्त, अनेक धार्मिक-कृत्यों का सम्पादक, दीर्घायु पाने वाला होगा।

(२६)- इस जन्मांग में उत्पन्न जातक शारीरिक सम्पन्नता से पूर्ण, अत्यन्त प्रतापी और तेजस्वी, परम क्रोधी तथा स्वाभिमानी, आत्मबली एवं साहसी, प्रारम्भिक जीवन में अतीव सुन्दर, मध्यम कद, गोधूम वर्ण, स्त्री-पक्ष से नीरसता का अनुभवी, द्विभार्या योग युक्त, व्यावसायिक विघ्नों का अनुभवी, यथोचित धर्मपालक, भाग्यवान, ईश्वर एवं भाग्य का विश्वासी, मातृ-सुख का पूर्ण भोगी, गृह भूमि लाभ से युक्त, सुन्दर एवं उत्तम स्वास्थ्य सम्पन्न, मूत्रेन्द्रिय के विकार से युक्त, धन का उत्तम संग्रही, पूर्ण धनी एवं सुख साधनों का प्राप्त कर्त्ता, कई बार घोर शारीरिक कष्ट पाने वाला, उदर रोगी, ननसाल से हीन, सन्तान की ओर से चिन्तित, ऐश्वर्यमय रहन-सहन से पूर्ण, पिता का मतभेदी, मानप्राप्ति हेतु प्रयत्नशील, अधिक विचीला, पितृ एवं बन्धु सुख से वंचित, बाह्य सम्बन्धों में सफल, चतुरता और साहस से शत्रुजयी, पौरुष द्वारा द्रव्यलाभी, राज्य तथा समाज सम्बन्धों में विघ्न प्राप्त कर्त्ता, व्यवसायोन्नति में बाधा प्रापक, गुप्त गम्भीर योजनाओं के बल पर व्यवसाय क्षेत्र में समुन्नत, कुटुम्ब से अशान्त, गृहस्थ-जीवन से अत्यन्त दुःख का अनुभवी होगा।

म० स० ३३३.

कु० २०

(१७)- इस कुण्डली-चक्र में उत्पन्न जातक परम तेजस्वी और क्रोधी, विद्या और शिक्षा से प्रभावशील, अत्यन्त पुरुषार्थी, ईश्वर-धर्म तथा भाग्यवादी, मातृ-सुख तथा पितृ-सुख का अल्प भोगी, अत्यन्त गुप्त और गम्भीर योजनाओं के बल पर व्यवसाय में उन्नत, धन-संचयार्थ प्रयत्नशील, कठिन और दुस्तर कार्य करने को तत्पर तथा उसमें दक्ष, गौधूमवर्ण, मध्यम कद, कृशवपु, गृह-भूमि लाभ में कुटुम्बकी ओर से चिन्तित, स्त्रीक्षेत्र में नीरसता का अनुभवी किन्तु स्त्री-आसक्त, द्विभार्या योग प्राप्त कर्त्ता, भाग्योदय में विघ्न प्राप्तकर्त्ता, विरोधापक्ष पर सबल, यदाकदा धर्म पालन में हीन, अनेक चिन्ताओं से युक्त, सन्तान की ओर से दुःखी, अनेक बाधाओं के अनन्तर स्वकार्य-क्षेत्र में सफल, स्वार्थी, कुत्सित हृदय, प्रारम्भिक सुख भोगी, भाई बहिन युक्त होते हुए भी उनके सुख सहयोग से वंचित, पराक्रम और पुरुषार्थ शक्ति का आराधक, योगाभ्यासी, तान्त्रिक, सुख-प्राप्ति काल में अतीव लापरवाह और हठीला, अपने शब्दों की महत्ता प्रतिपादन में संलग्न, अयशी, अग्रचेता होगा।

(१८)- इस जन्मलग्न में जन्म लेने वाला बालक परम तेजस्वी और प्रभावशाली, स्वाभिमानी, विद्या और संगीत का प्रेमी, गौरवर्ण, कृशकाय, विवेकी और शान्त-हृदय, सरल तथा उदारचेता, परम चतुर, भाग्यशाली किन्तु यदाकदा भाग्योदय में विघ्नों का ज्ञायक, स्त्री की ओर से नीरस किन्तु पूर्ण आसक्त, ऐश्वर्य सम्पन्न, पुरुषार्थी तथा साहसी और उद्यम करने को प्रयत्नशील, उद्यम से ही व्यवसाय-कार्य में समुन्नत, मातृ सुखी, पितृ सुख का अल्प भोगी, ईश्वर तथा धर्म के प्रति आस्थावान् किन्तु धर्म-पालन से पराङ्मुख, ननसाल से हानि प्राप्तकर्त्ता और मातुल को पीड़ाकारक, शत्रु और विरोधियों पर गुप्तनीति तथा चतुरताई से विजयप्राप्तकर्त्ता, व्यवसायक्षेत्र में समुन्नत और उच्च व्यवसाय सम्पन्न तथा व्यवसाय में लम्बी हानि पानेवाला, धीर-वीर-साहसी, परोपकार की भावना से युक्त, किन्तु यथार्थ पारखी, धन-धान्यादि से पूर्ण, पितृक्षेत्र का निवासी किन्तु व्यवसाय हेतु दूर देश का अनुगामी, धन का उत्तम संचयी, अपने द्वारा औरों को उपकृत करने वाला, सन्तान की ओर से दुःखी होगा।

(१९)- इस कुण्डली-चक्र में जन्म लेने वाला मनुष्य धन का अधिक व्ययी, तेजस्वी, गौरवर्ण, ऊँचा कद, अतीव प्रभावशाली, स्वाभिमानी, बाहरी सम्बन्धों में मधुर, देह में दुर्बल, अधिक व्यय से चिन्तनशील, रोग क्षेत्र में चिन्तित, पुरुषार्थी का सदुपयोगी, भाई बहिन से युक्त किन्तु उनके सुख सहयोग में त्रुटि युक्त, मातृ-सुख सम्बन्धों से हीन, परिश्रम से व्यवसाय में सफल, उत्तम स्वास्थ्य सम्पन्न, दीर्घायु, पितृ क्षेत्र में मान प्राप्त कर्ता, व्यवसायोन्नत, विवेकी, विद्याक्षेत्र में कुछ कमी युक्त, मान प्रतिष्ठा से संयुक्त, गृहस्थ भोगादि में कमी का अनुभवी, स्वाभिमान के कारण व्यवसाय रुचि से कुछ हीन, बुद्धिमान, सौन्दर्य सम्पन्न, गृह-भूमि लाभ से पूर्ण, सन्तान पक्ष में दौर्बल्य का अनुभवी, विचारों को गुप्त रखने में पटु, द्विभार्यायोग पाने वाला, भाग्योन्नति में त्रुटि युक्त जीवन प्राप्तकर्ता, ईश्वर और धर्म के प्रति आस्थावान् किन्तु धर्मपालन में दुर्बल, कुटुम्ब से विघ्न पाकर त्यक्त, मृत्यु तुल्य कष्टों का भोगी, द्रव्य संचय में हीन, विरोध-पक्ष में सफल, अरिष्ट युक्त, पितृ और राज्य क्षेत्र में कमी पाने वाला, कठोर परिश्रमी, धनप्राप्ति के लिये अधिक प्रयत्नशील होगा।

(२०)- इस जन्म-चक्र में उत्पन्न हुआ मानव परम प्रतापी, बुद्धिमान्, तेजस्वी, गौरवर्ण, ऊँचे कद वाला, अत्यन्त प्रभावपूर्ण, वाक्-चतुर, विद्या और सन्तान पक्ष में त्रुटि युक्त, विवेक सम्पन्न, शत्रु और विरोधियों पर धनबल और भाग्यबल से विजयी, भाई बहिन के सुख सम्बन्धों से हीन, कुटुम्ब से त्यागा हुआ, गुप्त-चातुर्य में पूर्ण, अधिक खर्च करने वाला, ख्यातिमान्, क्रूर और क्रुद्ध क्रोधी, वाचाल, विवेक सम्पन्न, अपना प्रभाव जमाने में चतुर, स्त्री क्षेत्र में अशान्त किन्तु सुन्दर सुशीला शिक्षिता स्त्री का पति, कई स्त्रियों से भोगविलास में धनव्यय करने वाला, ईश्वर और गो-ब्राह्मण का भक्त परन्तु धर्म-पालन की यथार्थ रीति से विमुख, स्वाभिमानी, जीवन में कई बार अरिष्ट और मृत्यु तुल्य कष्ट पाने वाला, पितृ और राज्य विषयक हीनता से पूर्ण, मातृ-सुख से वंचित, दैनिक जीवन में द्रव्य की कमी का अनुभवी, कठिन परिश्रम से द्रव्योपार्जक, भाग्य में विघ्न पाने वाला, गृह-भूमि का लाभ पैतृक रूप में प्राप्तकर्ता, कुत्सित कर्मी, धन संग्रह से हीन, पुरुषार्थी, और द्रव्यप्राप्ति हेतु सतत प्रयत्नशील, मान प्रतिष्ठा से पूर्ण होगा।

(२१)- इस जन्मांग में जन्मा हुआ बालक प्रारम्भिक जीवन में सुखी, उत्तम स्वास्थ्य सम्पन्न, आपत्ति काल में अधीर, विद्या और सन्तान-पक्ष में कमी का अनुभवी, गौरवर्ण, कृशकाय किन्तु पुष्टदेही, तेजस्वी तथा प्रतिभा सम्पन्न, मान और प्रतिष्ठा प्रापक, ऊँचा कद, क्रोधी एवं शान्त, स्त्रियों जैसा चपल, उदारचेता, क्रूर कर्मा, धन संग्रह में त्रुटि युक्त, स्त्री-पक्ष में क्लेश प्राप्त कर्त्ता परन्तु सुन्दर- पतिपरायणा- शिक्षिता- सरला स्त्री का पति, ईश्वर- गो- ब्राह्मण भक्त, किन्तु धर्म पालन की यथार्थता से विहीन, मातृ और पितृ सुख का अल्प प्राप्त कर्त्ता, उग्र क्रूर कर्मा, कई विद्याओं का जानकार, परम चतुर और विवेकी, गोपनीयता रखने वाला, परिश्रम और पुरुषार्थ के बल पर दैनिक जीवन में सफल, पितृ क्षेत्र का निवासी, साधारण गृह भूमि लाभ से संयुक्त, विरोध-पक्ष में सफल, स्वाभिमानी, धन संग्रह का अधिक प्रयत्नी, मृत्यु तुल्य कष्ट और अरिष्टों का प्राप्त कर्त्ता, कामदेव के समान सुन्दर, स्त्री में आसक्त, बुद्धिमान, भाग्योन्नति में विघ्नों से पूर्ण, बाह्य-सम्बन्धों में मधुर, अधिक खर्चीला होगा।

(२२)- इस जन्मलग्न में जन्म लेने वाला पुरुष देह से दुर्बल, कृशकाय, ऊँचा कद, श्यामवर्णी, दैनिक आय में दुर्बल, पर कर्मजीवी, गृहस्थ भोगादि से पूर्ण, परम सुन्दरी स्त्री का पति, अन्य स्त्रियों से रमण करने वाला, तेजस्वी और क्रोधी, परम विवेकी और चतुर, कुत्सित क्रूर कर्मा, क्रोधी, व्यवसायोन्नत, दस्यु सदृश स्वभाव से पूर्ण, द्रव्य-संग्रह के लिये अधिक पुरुषार्थी और कठोर परिश्रमी, अत्यधिक खर्च करने वाला, गृह भूमि लाभ से नितान्त हीन, पर स्त्री प्रसंग में द्रव्य का व्ययी, रोगिणी स्त्री का प्राप्त कर्त्ता, उदर विकार और मूत्रेन्द्रिय का रोगी, विरोधियों पर विजयी, दैनिक जीवन में द्रव्य की कमी का अनुभवी, मातृ-पितृ सुख का अल्प भोगी, मुख पर कई बार आघात पाने वाला, देशाटनी, विद्या और सन्तान से हीन या कमी का अनुभवी, बन्धु-बान्धव तथा कुटुम्ब का विरोधी, भाई-बहिन के सुख सम्बन्धों से विहीन, दिखावे के लिये धर्मपालक, मान-प्रतिष्ठा हीन, परम स्वार्थी, स्वास्थ्य में राजयक्ष्मा जैसे विकार पाने वाला, द्रव्योपार्जनार्थ निरन्तर प्रयत्नशील, भाग्योदय में विघ्न प्राप्त कर्त्ता होगा।

भू● सं● ४३८

कृ● र●

(२३)- इस कुण्डली में उत्पन्न हुआ व्यक्ति देह से दुर्बल और सौन्दर्य में त्रुटियुक्त, परतन्त्र, तेज से हीन, स्त्री क्षेत्र का अधिपति और सुन्दर पतिपरायणा स्त्री का स्वामी, व्यवसायोन्नति के लिये प्रयत्नशील, अधिक खर्च करनेवाला, बाह्य सम्बन्धों में मधुरता के कारण शक्ति सम्पन्न, धन संग्रह से वंचित, कुटुम्ब की ओर से चिन्तित, गृहस्थ सुख से हीन, भाई बहिन से युक्त, व्यवहार कुशल, शत्रुपक्ष पर प्रभावशाली, बाहरी क्षेत्रों से व्यवसायोन्नत, भाग्योन्नति में विघ्न प्राप्तकर्ता, विलम्ब से कार्यों में सफल, बाहरी क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा का प्रापक, शत्रुओं पर अनुचित प्रयोगों द्वारा सफल, पुरुषार्थी, मस्तिष्क और नेत्र पीड़ा प्राप्तकर्ता, परम साहसी, विद्या-बुद्धि और वाक्शक्ति द्वारा उत्थान को प्रयत्नशील, धर्म-पालन और ईश्वर के प्रति पूर्ण निष्ठित, स्त्री से सुख सहयोग प्राप्तकर्ता, साधारण रोग युक्त, स्त्री में पूर्ण आसक्त, व्यवसाय में तल्लीनता से सफल, सामान्य द्रव्य संग्रही, मूत्रेन्द्रिय या आन्त्ररोग पानेवाला, विद्या में साधारण, बुद्धि बल से भाग्योन्नत, सन्तान की ओर से चिन्तित, श्यामवर्ण, ऊँचा कद, स्वभाव से उग्र और शान्त, मस्तक पर चोट-चिन्ह युक्त, स्त्री से मत भेद प्राप्त कर्ता है। ...।

(२४)- इस जन्म-चक्र में जन्मा हुआ बालक शरीर से कृश, ऊँचा कद, श्यामवर्ण, दुर्बल और असुन्दर, तेज प्रभाव से हीन, स्वाभिमानी, स्वभाव से उग्र और शान्ति से स्वार्थ पूर्ति में तत्पर, धन-संचयार्थ प्रयत्नशील, परतन्त्रोपजीवी, व्यवसायार्थ प्रयत्नशील, परम विवेकी एवं विद्या-वाणी-बुद्धि योग से कार्यों में सफल, उच्च पदासीन, दैनिक व्यवहार में पूर्ण कुशल, गुप्त एवं गम्भीर योजनाओं के निर्माण में सक्षम, गो-ब्राह्मण एवं ईश्वर का भक्त तथा धर्म पालक, विद्या क्षेत्र में त्रुटि पानेवाला, अशान्त चित्त, मान-प्रतिष्ठा प्राप्तकर्ता, मातृ-सुख से वंचित, पितृ-सुख का अल्प भोगी, भोगी-विलासी, स्त्री से मतभेद या स्त्री त्रस्त, सुन्दर सुशील तथा रोगिणी स्त्री का पति, मूत्रेन्द्रिय या देह के अधोभाग का रोगी, उदर विकार पानेवाला, बाहरी सम्बन्धों में मधुर एवं सफल, अन्य में रमणशील, पितृक्षेत्र का निवासी, सामान्य गृह-भूमिलाभ का प्राप्तकर्ता, पुरुषार्थी तथा साहसी, उग्र कर्म या अनुचित प्रयोगों के करने में सक्षम और विरोधियों पर सफल, सन्तान-पक्ष में चिन्तित, भाग्योन्नति हेतु प्रयत्नशील किन्तु विघ्न प्राप्तकर्ता एवं वृद्धावस्था में कष्ट भोगी होगा।

(२५)- इस जन्मांग में जन्म लेने वाला जातक गौरवर्ण, शरीर से कृश, ऊँचा कद, स्वाभिमानी, तेजस्वी और वक्तृत्व में चतुर, परम प्रतापी, क्रोधी किन्तु विवेकी, विद्या तथा सन्तान पक्ष में त्रुटि युक्त, द्रव्य संग्रह से हीन, पैतृक गृह-भूमि का स्वामी, धन संचयार्थ निरन्तर प्रयत्नशील, पुरुषार्थी एवं साहसी, स्वभाव से सरल और उदारचेता, आपत्ति या अरिष्ट काल में अधीर, देशाटनी, आमदनी की अपेक्षा अधिक व्ययी, राज्यवृत्त्योपजीवी, भाग्योन्नति में विघ्नों का प्राप्तकर्ता, व्यग्रचित्त, अल्प पुत्र का पिता, सन्तान की ओर से चिन्तित, धर्मपालक, दैहिक अधोभाग का रोगी, नेत्र ज्योति में विकार युक्त, कटु-सत्य भाषी, स्त्री से हीन अथवा त्यक्त किंवा अन्य स्त्री का पति, अन्य रमणियों का भोगी, ईश्वर और भाग्य का पूर्ण विश्वासी, पितृ-क्षेत्र का निवासी, व्यवसाय और भाग्योदयार्थ बाहरी सम्बन्धों में मधुर, भाई-बहिन युक्त किन्तु उनके सुख-सम्बन्धों से हीन, मातृ और पितृ सुख का अल्प भोगी, मध्यायु सम्पन्न, विरोध-पक्ष पर गुप्त एवं गम्भीर योजनाओं से सफल, राज्य-विडम्बनाओं से मुक्त, ऊपर से चरित्रवान् बनने वाला होगा।

(२६)- इस जन्मचक्र में उत्पन्न हुआ व्यक्ति पितृ सुख से पूर्ण, तेजस्वी, स्वाभिमानी, व्यवसाय में सफल, क्रोधी, गौरवर्ण, कृश शरीर, ऊँचा मध्यम कद, सुन्दर वस्त्राभूषणों से युक्त, स्त्री क्षेत्र में प्रभावी, वैमनस्यता पाने वाला, हठी, शत्रु और विरोधियों पर गुप्त रीति से सफल, पराक्रमी, भाई-बहिन से युक्त, साहसी, मूत्र विकारी, व्यवसायोन्नति में यदा-कदा विघ्न प्राप्तकर्त्ता, धन संग्रही किन्तु ऐश्वर्यादि और दिखावे के रहन-सहन में अधिक व्ययी, कौटुम्बिक शक्ति से युक्त किन्तु सहयोग में त्रुटि का अनुभवी, उत्तम स्वास्थ्य सम्पन्न, विद्या एवं सन्तान में कमी पाने वाला तथा चिन्तित, दैनिक व्यवहार में चतुर, धन-संग्रह में दुःख की अनुभूति करने वाला, मातृ-सुख से वंचित, बाह्य सम्बन्धों द्वारा द्रव्य लाभी, मध्यायु सम्पन्न, स्त्री सुशीला का पति होने पर भी मतभेद रखने वाला, अन्य स्त्री का प्रेमी, दैनिक जीवन में अशान्त, उत्तम सम्बन्धों से युक्त, चतुर और विवेकी, अन्य के आश्रय पर जीवन में समुन्नत, पराक्रम से द्रव्य लाभी, शत्रु और विरोधियों का पराभव करने वाला, धैर्य सम्पन्न, सामाजिक मान-प्रतिष्ठा से युक्त, बुद्धिमान्, भाग्योदय में विघ्नों का प्राप्तकर्त्ता, सामान्य जीवन वाला होगा।

पृ० सं० ३३८   कृ० २०

(२७)- इस कुण्डली चक्र में उत्पन्न हुआ मानव मध्यम कद, गौरवर्ण, शरीर से कृश और सामान्य पुष्ट, धन-संग्रह में कुछ कमी के अनन्तर अच्छी सफलता पाने वाला, तेजस्वी और प्रतापी, क्रोधी तथा स्वाभिमानी, परम विवेकी, प्रभावशाली व्यक्तित्व से सम्पन्न, बाहुय सम्बन्धों में मधुर, भाग्य की उत्तमता से पूर्ण, मातृ सुख से युक्त और पितृ सुख का अल्प भोगी, सुन्दर शीलयुक्त गृहिणी का पति और सुख सहयोग का भागी, धर्मविद, ईश्वर एवं भाग्य के प्रति निष्ठावान्, आदर्श श्रद्धालु, व्यवसाय में सफल, वाणी में चतुर, सन्तान एवं विद्या की पूर्णता में न्यून, गम्भीर चेतना, भातृ बहिन से वैमनस्यता पूर्ण, शत्रुपक्ष में प्रभावशाली, पितृक्षेत्र का निवासी, काव्यकला एवं संगीत का प्रेमी, समाज में सम्मानित, उच्च श्वसुराल युक्त, विवेक द्वारा लौकिक व्यवहारों में कुशल, व्यवसाय का उच्च निर्माता और सफलता प्राप्त, गृहस्थ जीवन में उल्लसित और उमंगी, गृह भूमि लाभ से पूर्ण, मसखरा, गौरवमयी मृदु भाषिता से युक्त, उत्तम स्वास्थ्य सम्पन्न, सन्तान में केवल पुत्र पाने वाला, धनलाभ के लिये प्रयत्नशील, शरीर से सामान्य शुक्र रोगी, व्यवसाय में सामान्य परिश्रम से अच्छी सफलता पानेवाला होगा।

(२८)- इस जन्मलग्न में जन्म लेने वाला पुरुष मध्यम कद, गौरवर्ण, पुष्ट देही, धन-संग्रही, वाणी और प्रभावशाली व्यक्तित्व तथा शत्रुपक्ष पर अत्यन्त प्रभावी, विद्याबुद्धि का उत्तम योग प्राप्त कर्त्ता, मातृ-सुख से हीन, पितृ सुख का अल्प भोगी, सुन्दर रूपवती गुणवती पतिव्रता पत्नी का स्वामी, अन्न का विलासी, गृह भूमि लाभ से पूर्ण सुखी, धनधान्य तथा रत्नादि का भोगी, वाहन - भृत्यादि का प्रापक, उच्चकोटि का व्यवसायी, स्वाभिमानी, क्रोधी और सरल हृदय, सहज ही प्रसन्न होनेवाला, अन्य रमणियों का प्रेमी, गृहस्थ में आसक्त, द्रव्य लाभ से पूर्ण, भाग्यवादी, धर्म एवं न्याय का जानकार, देशाटन का प्रेमी, पितृक्षेत्र का निवासी, अवरोध के साथ विद्या प्राप्त कर्त्ता, ईश्वर तथा धर्म के प्रति घोर आस्तिक, शास्त्रार्थ-विजयी, पुरुषार्थी, साहसी, उत्तम स्वास्थ्य सम्पन्न, मूत्रेन्द्रिय का विकारी, वायु रोग का दोषी, हृदयरोग का एक बार प्राप्तकर्त्ता, वाणी में चतुर, विलासी और रईसी जीवन से युक्त, वृद्धावस्था में सन्तान से क्षुब्ध, दीर्घायुष्य सम्पन्न, सामाजिक मान-प्रतिष्ठा का प्राप्तकर्त्ता, संगीत काव्य-विद होगा।

(२९)- इस जन्मयोग में जन्म लेने वाला बालक देह के सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कुछ त्रुटि युक्त, गौरवर्ण, कृशकाय, ऊँचा कद, यदा-कदा विशेष संकटमय, स्त्री तथा व्यवसायक्षेत्र में त्रुटियुक्त, क्रोधी, स्वाभिमानी, प्रभावशाली, पितृक्षेत्र में निवासी तथा पितृ-सुख सहयोग से समुन्नत, चतुर, मातृ-सुख का अल्प-भोगी, बुद्धिमान्, विद्या और कला का प्रेमी तथा प्राप्तकर्त्ता, सुन्दरी चतुरा शिक्षिता स्त्री का पति, व्यवसाय में बुद्धि योग से सफल, परिश्रम सम्पन्न, धन को उत्तम कार्यों में विवेक से व्यय करने वाला, भाग्योन्नति में विघ्नों का प्राप्तकर्त्ता, शत्रुओं के प्राबल्य का प्रापक, यश में न्यून, द्रव्य-लाभ के लिये प्रयत्नशील और अच्छा लाभ पाने वाला, स्थिर-आय से युक्त, गृह-भूमिलाभ से पूर्ण, धन-संग्रह में कुछ अभाव ग्रस्त, कुटुम्ब-सुख में कमी पाने वाला, सन्तान की ओर से अत्यन्त सुखी, माता का या मातृ-पक्ष से सुख सहयोग प्राप्तकर्त्ता, साहसी और निर्भय, शत्रुओं पर चातुर्यबल से विजेता, मुकद्दमा आदि राज्यकार्यों में व्यस्त और सफल, राज्य एवं सामाजिक मान-प्रतिष्ठा का प्राप्तकर्त्ता, आत्मबली, ईश्वर की अपेक्षा पुरुषार्थ और भाग्यबल को महत्व देने वाला होगा।

(३०)- इस जन्म चक्र में उत्पन्न पुरुष गौरवर्ण, कृश-शरीर, ऊँचा कद, क्रोधी, स्वाभिमानी तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व से पूर्ण, अपनी बात प्रतिष्ठापित करने में सक्षम, उग्रकर्मी, ऐश्वर्यपूर्ण रहन-सहन रखने वाला, भोगी, विलासी, अन्य कई कामिनियों का भोगी, शुक्र-दोष से युक्त, कुटुम्ब शील से हीन, मातृ सुख से वंचित, इंजीनियर, विद्या और सन्तान का प्राप्तकर्त्ता, सन्तान में कन्याओं का आधिक्य, तेजस्वी पुत्र युक्त, अधिक खर्चीला, सामाजिक प्रतिष्ठा सम्पन्न, राज्यक्षेत्र में गुप्त योजनाओं द्वारा सफल, साहसी और घोर परिश्रमी, धन-संग्रह की उपेक्षा कर ठाट-बाट से जीवन व्यतीत करने में दक्ष, पिता का विरोधी, किन्तु पितृ-सहयोग से ही समुन्नत, भाग्योदय में अनेक बार विघ्नों का प्राप्तकर्त्ता, हठी, क्रूरकर्मा, ईश्वर और धर्म के प्रति प्रारम्भ में अनास्थावान्, शत्रुजयी, मृत्यु-तुल्य कष्टों का जीवन में पाँच बार प्रापक, राज्य से आजीविका प्राप्त करने में सक्षम, स्त्री क्षेत्र में मतभेद रखते हुए नीरसता का अनुभवी, अन्य स्त्री का पति, घोर प्रतापी रणधीर-वीर होगा।

मु० सं० २३९ कु० १०

(३१)- इस कुण्डली में जन्मा हुआ व्यक्ति दैहिक सौन्दर्य में त्रुटियुक्त श्यामवर्ण, कृशकाय, प्रभावशाली, उग्र और शान्त, गुप्त योजनाओं का निर्माता, दैनिक व्यवहार में उद्यमी, स्त्री पक्ष में अतीव प्रभावशाली, बलिष्ठ, परिश्रमी एवं पुरुषार्थी द्रव्यलाभ में सफल, पितृक्षेत्र का निवासी और शक्ति सम्पन्न, परिश्रम से लाभ पाने वाला, धन-संग्रह में सफल, कौटुम्बिक सुख सहयोग से पूर्ण, सन्तान पक्ष से सुखी और शक्तियुक्त, ननसाल की ओर से दुर्बल, अधिक व्ययी, जीवन में कई बार मृत्युतुल्य कष्ट प्राप्त कर्त्ता, स्त्रैण तथा गृहस्थ में आसक्त, बाह्य सम्बन्धों में विवेक और बुद्धि बल से सफल, जीवनयापनार्थ चिन्तित, शत्रु पक्ष में विवेक बल पर सफल, भाग्यबल से धनवान भाग्यवान् माने जाने वाला तथा गुप्त-कूटनीतिज्ञ, न्यायमार्ग से द्रव्योपार्जक, धर्मपालक और ईश्वरीय निष्ठा से पूर्ण, भाई-बहन से सम्पन्न, साहसी, विद्यापक्ष में समुन्नत, मातृ शिक्षा से आदर्शवादी, सुख सौभाग्यशाली, स्त्री से कुछ मतभेद रखने वाला, व्यवसाय क्षेत्र में कुछ विघ्नों का प्रापक, यदाकदा आलस्ययुक्त, अपनी उन्नति में तन्मय, कभी-कभी माता से मतभेद रखकर अशान्त चित्त वाला होगा।

(३२)- इस जन्मांग में उत्पन्न हुआ मनुष्य मध्यम क़द, गौरवर्ण, अत्यधिक तेजस्वी और क्रोधी तथा प्रभावशाली, उत्तम स्वास्थ्य युक्त, परिश्रमी और पुरुषार्थी, साहस के बल पर उच्च कोटि का व्यवसायी तथा कभी-कभी विघ्न प्राप्त करते हुए अपने कार्यक्षेत्र में सफल, विद्या और सन्तान शक्ति के सुख से पूर्ण, धन-संग्रह के लिये प्रयत्नशील, गृहस्थ में आसक्त, किन्तु स्त्री से मतभेद रखने वाला, दृढ़ निश्चयी, यदाकदा आलस्य के कारण हानि प्राप्त कर्त्ता, परम विवेकी और चतुर, अन्य कामिनियों का भोगी, अधिक व्ययी, धन-धान्य-वाहन-भृत्य रत्नादि सुख से पूर्ण, न्यायोचित कार्य करने में सक्षम, ननसाल की ओर से दुर्बल, शत्रुओं पर विवेक द्वारा सफलता पाने वाला, गो-ब्राह्मण देव और धर्म का यथार्थ पालक, यदाकदा मृत्युतुल्य कष्टों का भोगी, ऐश्वर्य से सम्पन्न, स्त्री पक्ष में द्रव्य का खर्चीला, सुन्दर गौरवर्णा शिक्षिता स्त्री से युक्त, माता का पूर्ण भक्त और सुख सहयोग प्राप्तकर्त्ता, धीर और साहसी, भोगादि का प्रेमी, सुख सौभाग्यशाली और भाग्यवान्, दैनिक जीवन में व्यवहार कुशल और अशान्त चित्त, राज समाज में मान प्रतिष्ठा पाने वाला होगा।

(33)- इस जन्म-चक्र में जन्म लेने वाला पुरुष ऊँचा कद, पुष्ट देही, अत्यन्त उत्साही और साहसी, स्वाभिमानी, तेजस्वी और क्रोधी, अत्यन्त विवेकी, किसी की परवाह न करनेवाला, यदाकदा विघ्नों का सामना करने में सक्षम तथा व्यवसाय में उच्चकोटि का सफल भाग्यशाली, धर्म और ईश्वर के प्रति अतीव निष्ठा सम्पन्न, विद्या में पूर्ण स्नातक तथा अनेक कला एवं विद्याओं में प्रवीण, वाक्-चातुर्य सम्पन्न और शत्रुओं पर प्रभावशाली व्यक्तित्व से सफल, दृढ़ मनस्वी, धन संचयार्थ प्रयत्नशील और उत्तम धन का संग्रही, मातृ-सुख सम्बन्धों में त्रुटि युक्त, सहोदर प्राप्तकर्ता, सन्तान से सम्पन्न तथा तद्विषयक चिन्तित, न्यायोचित बात कहने वाला एवं तदनुगामी, आलस्य से कभी-कभी क्षति भी पानेवाला, ऐश्वर्य-गृह-भूमि धन-धान्य-भृत्य-वाहन-रत्नादि सुख का पूर्ण भोगी, उत्तम स्त्री-सुख का प्राप्तकर्ता, निश्चित आय से परिपूर्ण, कौटुम्बिक सुख-सहयोग पानेवाला, धैर्यवान्, भाग्यशाली, गृहस्थ में पूर्ण आसक्त, ननसाल-पक्ष से दुर्बल, कठिनाइयों का मनोबल से सामना करने में सफल व्यक्तित्व सम्पन्न होगा।

(34)- इस जन्मांग में उत्पन्न हुआ जातक मध्यमकद, गौरवर्ण, पुष्ट देही, अतीव साहसी और उत्साही, तेजस्वी, स्वाभिमानी, स्वभाव से उग्र और विवेक सम्पन्न, देशाटन करने में सफल, पितृ-धन का विलासी, उच्चकोटि का व्यवसाय क्षेत्र में यदाकदा विघ्न पाते हुए सफल, सुन्दर सुशोभित पतिपरायणा स्त्री का पति किन्तु अन्य स्त्रियों का भी प्रेमी, गृहस्थ में पूर्ण आसक्त, विद्या में पूर्ण और संगीत काव्य, ज्योतिष, तन्त्र, मन्त्र में प्रवीण, धर्म का पालक तथा ईश्वर के प्रति पूर्ण आस्थावान, भाग्यशाली, ऐश्वर्य के हेतु अधिक विचोलि, सन्तान-सुख प्राप्त करते हुए सन्तान की ओर से चिन्तित, धन संचयार्थ प्रयत्नशील और धनकोष की वृद्धि करनेवाला, गृह-भूमि-भृत्य-वाहन आदि के सुख से संयुक्त, शत्रुओं का घोर दमनकारी, यदाकदा मृत्युतुल्य कष्टों का भोगी, परिश्रम से अनेक कार्यों में सफल तथा कभी-कभी आलस्य के कारण हानि प्राप्तकर्ता, भाग्यशाली, न्यायोचित बात कहनेवाला एवं तदनुगामी, धर्मोपदेशक, शूद्रा स्त्री में गुप्त रूप से रमण करने वाला, राज्य और समाज में मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, कौटुम्बिक सुख से पूर्ण होगा।

(३५)- इस कुण्डली में जन्मा हुआ मनुष्य दैहिक प्रभाव युक्त, ऊँचा कद, व्यक्तित्व सम्पन्न, सामान्य चिन्ताओं से युक्त, गौर वर्ण, स्वाभिमानी और तेजवान्, परम चतुर और विवेकी, प्रभाव की वृद्धि हेतु प्रयत्नशील, चंचल प्रकृति, स्त्री क्षेत्र में विघ्नों का प्राप्तकर्ता, अन्य स्त्रियों का भोग विलास पाने वाला, शत्रुजयी, व्यवसायार्थ परिश्रमी और सफल, गृहस्थ से चिन्तित, दैनिक आय में पूर्ण, कौटुम्बिक सुख सहयोग का प्रापक, धर्म का सामान्य पालक और ईश्वर में पूर्ण आस्थावान्, व्यवसाय में अधिक लाभ करने की प्रवृत्ति से युक्त, विद्या और सन्तान क्षेत्र में अभावग्रस्त, अत्यन्त साहसी, शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में त्रुटि युक्त, गृह भूमि और मातृ-सुख में अभाव पाने वाला, आन्तरिक दुःखी, स्त्री पक्ष में मान्यता प्राप्त, पितृ विषय में चिन्तित, व्यवसाय में कठिन विघ्न प्राप्तकर्ता, राज्य और समाज के सम्बन्धों में त्रुटि और मानप्रतिष्ठा में अभाव पाने वाला, बाहरी सम्बन्धों में अरुचि से सम्पर्क बनाने वाला, अधिक व्ययी, पैतृक गृह भूमि लाभ से युक्त, भाई बहिन से संयुक्त, साहस सम्पन्न, गृहस्थ की ओर से अशान्त, धन संग्रह से हीन, धन संचयार्थ गुप्त और कठिन परिश्रम से सफलता युक्त होगा।

(३६)- इस जनुलग्न में जन्म लेने वाला मानव जीवन में कई बार मृत्युतुल्य कष्टों का भोगी, जीवन रक्षार्थ अनेक उपाय करने में सक्षम और प्रयत्नशील, गुप्तशक्ति और परिश्रम से जीवन निर्वाहार्थ कठिन साधनों का प्राप्तकर्ता, गम्भीर चिन्ताओं से ग्रस्त, दीर्घायु, गौरवर्ण, ऊँचा कद, तेजस्वी, परम चतुर और विवेकी, कौटुम्बिक सुख सहयोग में त्रुटि सम्पन्न, चपल स्वभाव, धीर, वीर, साहसी, अधिक खर्चीला, अन्तस्तल में दुःखी, पितृ ओर से चिन्तित, विद्या और सन्तान की ओर से चिन्तित, स्वाभिमानी, राज्य समाज में मानप्रतिष्ठा से हीन, व्यवसाय क्षेत्र में विघ्नों का प्राप्तकर्ता तथा कठिन परिश्रम से सफल, भाई बहिन के सुख सम्बन्धों में अभाव ग्रस्त, अरुचिपूर्ण बाहरी सम्पर्क बनाने वाला, धर्म पालन में ढिलाई करने वाला तथा ईश्वर एवं भाग्यवादी, आलसी, शत्रु का विजेता, स्त्री की ओर से मतभेदी और अन्य स्त्रियों में रमणकर्ता, व्यवसाय में अधिक लाभ कमाने के स्वभाव से युक्त, मातृ-सुख से वंचित, जीवन निर्वाह के लिये चिन्तित, धूर्त और धोखेबाज, परोपकार को न मानने वाला कृतघ्नी, ऋण न चुकाने वाला, पितृ क्षेत्र का निवासी होगा।

भ० सं० ३०५

(३७)- इस कुण्डली में जन्म लेनेवाला जातक शारीरिक शक्ति से पूर्ण, शत्रुओं का घोर दमनकारी, रक्तविकारयुक्त, प्रभाव हेतु अधिक प्रयत्नशील, स्त्री क्षेत्र में चिन्तित, गृहस्थजीवन से परेशान, ऊँचा कद, गौरवर्ण, स्वभाव से सहज ही उत्तेजित, चंचल प्रकृति, अधिक परिश्रमी, आय से पूर्ण, भाग्य में प्रबल, द्रव्य और कुटुम्ब से पूर्ण, विद्या पक्ष में न्यून, सन्तान की ओर से चिन्तित, अतीव साहसी, भाई बहिन और उनके सुख सम्बन्धों से पूर्ण, पुरुषार्थ से प्रत्येक क्षेत्र में सफल, धन-धान्य-भृत्य-वाहन-गृह-भूमि लाभ का प्राप्तकर्ता, धर्म-पालक और ईश्वर के प्रति आस्थावान, भाग्यशाली, राज्य और सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में त्रुटि युक्त, मध्यायु प्राप्तकर्ता, कुरुचिपूर्ण बाह्य सम्बन्धों से युक्त, अधिक खर्च वाला, मातृपक्ष से सुखी, ऐश्वर्य से रहने वाला, धन कमाने को प्रयत्नशील, स्वास्थ्य में त्रुटि पानेवाला, यदा-कदा व्यवसाय में हानि प्राप्तकर्ता, स्त्री-पक्ष में सुख-दुःख पानेवाला, पिता से वैमनस्य युक्त, सम्बन्धों में पटु, राज्यावलम्बन युक्त, धन संग्रह में कुछ त्रुटि युक्त, स्वतः स्वभाव से परेशान रहने वाला होगा।

(३८)- इस जन्म-चक्र में उत्पन्न हुआ व्यक्ति मध्यायुप्राप्तकर्ता, गौरवर्ण, रक्तविकारी, शत्रुओं का विजेता, क्रूरकर्मी, स्वाभिमानी, प्रभावशाली, तेजसम्पन्न, ऊँचा कद, स्वास्थ्य में त्रुटि का अनुभवी, कृशकाय, स्त्री-पक्ष में सुख-दुःख पाने वाला, गृहस्थ-जीवन से चिन्तित, सन्तान की ओर से एवं विद्या पक्ष में न्यूनता युक्त, द्रव्य तथा कुटुम्ब शक्ति से पूर्ण, भाई बहिन के सुख-सम्बन्धों में कमी का अनुभवी, राज्य क्षेत्र में सफल एवं असफल, अत्यधिक परिश्रमी और खर्चीला, ऐश्वर्य सम्पन्न, विलासी जीवन, स्वभाव से परेशान, धन-धान्य-गृह-भूमि लाभ से सुखी, भाग्यवृद्धि को प्रयत्नशील, अधिक कन्याओं का पिता, वृद्धावस्था में दुःखी, मान-प्रतिष्ठा में अभाव प्राप्त करनेवाला, धर्म और ईश्वरीय निष्ठा से पूर्ण, पुरुषार्थी, द्रव्य लाभार्थ कठोर श्रम युक्त, धीर एवं साहसी, पिता से त्रुटि युक्त सम्बन्ध रखने वाला, मातृ सुखी और मातृ-पक्ष में विश्वासी, ऐश्वर्य से अधिक खर्च करने से परेशान, व्यवसाय में कभी कभी हानि युक्त सफल, धन-संग्रह को निरन्तर तत्परता युक्त, कठोर परिश्रम से आमदनी की दृढ़ता में सफल, कभी कभी गम्भीर संकट का प्राप्तकर्ता होगा।

कु० १०

(३९)-इस जन्मलग्न में जन्म हुआ मनुष्य पराक्रम और चतुरता से द्रव्य प्राप्त करने में सफल, कुटुम्ब युक्त, दैनिक व्यवसाय में जीविकोपार्जन करने में सक्षम, भाई बहिन युक्त तथा उनके सुख सम्बन्धों में त्रुटि प्राप्त कर्ता, चातुर्य शक्ति से भाग्यवृद्धि को प्रयत्नशील, पुरुषार्थ द्वारा भाग्यवान्, कृश-शरीर, ऊँचा कद, मुख पर चोट का निशान पाने वाला, स्वास्थ्य तथा सौन्दर्य में कमी का अनुभवी, श्यामवर्ण, मान-प्रतिष्ठा में त्रुटियुक्त, गुप्त योजना बनाना, गहरे संकट काल में सफल, परिश्रमी, अधिक साहसी, उग्र स्वभाव किन्तु गम्भीर और गुप्त प्रकृति, व्यवसायोन्नति में संलग्न, स्त्री-पक्ष में शक्ति सम्पन्न, गुह्य रोग से पीड़ित, अन्य स्त्रियों में रमणशील, पितृ सुख का अल्प भोगी, सामान्य मान-प्रतिष्ठा प्राप्तकर्ता, कठिन परिस्थितियों में धैर्ययुक्त, हृदय में चिन्ता के कारणों से परेशान, गृहस्थ संचालना में चिन्तित, स्त्री-पक्ष में धन खर्च करने वाला, व्यवसाय में द्रव्य लाभार्थ परिवर्तनकर्ता, विद्या तथा सन्तान से पूर्ण, शत्रु एवं विरोधपक्ष पर प्रभावशील, विवेक द्वारा मानप्रतिष्ठा प्राप्त करने में कुशल, शत्रुओं पर विजयी होगा।

(४०)- इस कुण्डली में जन्म लेने वाला पुरुष ऊँचा कद, कृश शरीर, गोधूमवर्ण, स्वाभिमानी और उत्तेजित, सन्तान शक्ति से पूर्ण, स्त्री पक्ष में क्लेश प्राप्तकर्ता, विद्या में महान्, सौन्दर्य में त्रुटि युक्त, मुख तथा मस्तक पर आघात पानेवाला, द्रव्य प्राप्ति में सफल, यदाकदा कठिनाइयों से युक्त, द्रव्य और कौटुम्बिक असन्तोष प्राप्तकर्ता, सामान्य रोगसहित उत्तम स्वास्थ्य और आयु प्राप्तकर्ता, धीर-वीर, साहसी तथा गुप्त-गम्भीर योजनाओं में निपुण, शत्रुओं पर प्रभाव सम्पन्न, पराक्रमी, भाई बहिन के सुख सम्बन्धों में त्रुटि युक्त, विवेकी तथा विजयी, विघ्न सहित स्त्री पक्ष में सफल, अन्य स्त्रियों में भी रमणशील, परिश्रम से व्यवसायोन्नति में संलग्न और सफल, विवेकी, यश और मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सक्षम, स्त्री का सहयोग पाने वाला, चतुरता से भाग्योन्नति करने में सक्षम तथा धन संग्रही, आरम्भ में कुछ परतन्त्रतायुक्त जीवन प्राप्तकर्ता, पितृ-सुख का अल्प भोगी, मातृ-सुख का प्राप्तकर्ता अथवा मातृ पक्ष का निवासी, धर्म और ईश्वर के प्रति आस्थावान् किन्तु धर्मपालन में त्रुटि रखने वाला होगा।

(४१)- इस कुण्डली में जन्म लेने वाला पुरुष मातृ-पक्ष से मतभेद प्राप्तकर्ता, गृह-भूमि से युक्त, प्रभावशाली, तेजपूर्ण, स्वभाव से उग्र तथा शान्त, घर के वातावरण से अशान्त, स्त्री पक्ष में शक्ति-सम्पन्न, व्यवसाय में सफल, गौरवर्ण, ऊँचा कद, सामान्य देह युक्त, पितृ क्षेत्र से अन्यत्र निवासी, राज-समाज और उन्नति के कार्यों में बाधा पाकर सफल, स्त्री से सामान्य पारिवारिक मतभेद, बाहरी सम्बन्धों में मधुर, खर्चा अधिक करने वाला, रक्त विकार युक्त, सन्तान की ओर से चिन्तित और दुःखी, मान प्रतिष्ठा से युक्त, विद्यापक्ष में त्रुटि युक्त, अन्य स्त्री का भोगी, धन-संग्रह में अभाव ग्रस्त, बाह्य सम्बन्धों से धन विषयक सुसफलता सम्पन्न, विवेक द्वारा विरोध पक्ष में सफलता प्राप्त कर्ता, परिश्रमी, परतन्त्रतायुक्त जीवन, राज-समाज में प्रभावशील, पितृ सुख का अल्प भोगी, धनवृद्धि को प्रयत्नशील, कौटुम्बिक सुख सहयोग में अभाव प्राप्त कर्ता, चतुरता एवं साहस सम्पन्न, भाई बहिनों का सामान्य विरोधी, धर्मपालन में श्रद्धालु, मान-प्रतिष्ठा और यश में कमी युक्त, भाग्योन्नति हेतु अनुचित और गुप्त उपयोग करने वाला, कठिन परिश्रम से जीवन यापन करने में सफल होगा।

(४२)- इस जन्मांग में उत्पन्न हुआ जातक सामान्यवर्ण, दीर्घ तनु, प्रभावशाली, तेजस्वी, विद्या एवं सन्तान पक्ष की ओर से चिन्तित एवं दुःखी, उग्रस्वभाव, गृहस्थ में अशान्त, स्त्री से सुख सहयोग के साथ मतभेदी, अन्य स्त्री का भोगी, राज-समाज एवं अन्य सम्बन्धों में मान-प्रतिष्ठा से वंचित, धन-संचय में त्रुटि प्राप्त कर्ता, धर्म धैर्य तथा साहस से सम्पन्न, धर्मपालक किन्तु अशान्त चित्त के समय धर्म-पालन में ढील करने वाला, रक्त विकारी, देह सौन्दर्य में कमी युक्त, उग्र स्वभाव किन्तु विवेकशील, पितृ क्षेत्र से अन्य स्थान में निवासी, उन्नति एवं भाग्यवृद्धि के लिये अत्यधिक परिश्रम से प्रयत्नशील, पिता का अल्प सुख प्राप्त कर्ता, आय की अपेक्षा अधिक व्ययी, गृहस्थ संचालन में साहसी और दुःखी, भाग्यार्थ गुप्त योजनाओं का प्रयोगकारी, कौटुम्बिक सुख-सहयोग से हीन, भाई बहिन से विरोधयुक्त, शत्रु-पक्ष पर विवेक और चतुराई से सफल, परतन्त्र जीवन, कठिन परिश्रमी, धन संचय से वंचित, यदा कदा अनायास द्रव्यप्राप्ति में सफल, गौरवर्ण, सामान्य गृहादि लाभ से युक्त, उन्नति के कार्यों में बाधा पाने वाला होगा।

भु० स०

कु० १०

(४३)— इस कुण्डली में जन्मा हुआ जातक गृह-भूमि लाभ से युक्त, तेजस्वी, प्रभावसम्पन्न, स्वाभिमानी, गौरवर्ण, मध्यम कद, पुष्ट देही, स्वभाव से उग्र किन्तु विवेक के कारण शान्त, मातृपक्ष में मतभेदी, गृहस्थ-सुख में त्रुटियुक्त, स्त्री-पक्ष में सुख सहभागी, व्यवसाय क्षेत्र में सफल, अर्थलाभ युक्त परन्तु सामान्य क्रिया आदि के साथ सन्तान की ओर से चिन्तित, स्त्रीपक्ष से अच्छा लाभ प्राप्तकर्ता, धनकोष में त्रुटियुक्त, कौटुम्बिक क्लेश पानेवाला, भाई-बहिन से युक्त परन्तु विरोध प्राप्तकर्ता, अधिक व्ययी, शत्रु और प्रभाव सम्पन्न, बुद्धिमान तथा पुरुषार्थ से द्रव्य लाभी, मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, वृद्ध परतन्त्रतायुक्त जीवन, यदाकदा घोर शारीरिक कष्ट प्राप्तकर्त्ता, बाह्य सम्बन्धों में मधुर, धन संग्रह के लिये प्रयत्नशील, चतुर तथा साहसी, संकटकाल में धैर्ययुक्त, धर्मपालन में श्रद्धालु परन्तु आपत्तिकाल में ढील देने वाला, सहज ही थक जानेवाला, भाग्यवृद्धि हेतु अनुचित और गुप्त प्रयोग करने में सक्षम, भाग्योदय में असन्तोषकर अनुभवी, ऊपर से प्रभावशील किन्तु आन्तरिक चिन्ताओं से ग्रस्त, कष्ट साध्य सम्बन्धों की स्थापना में चतुर होगा।

(४४)— इस जन्मांग में उत्पन्न होने वाला व्यक्ति शारीरिक शक्ति सम्पन्न, प्रभावशाली, तेजवान, स्वाभिमानी, अपने पक्ष को स्थापित करने में कुशल तथा दृढ़ निश्चयी, कौटुम्बिक शक्ति सम्पन्न, मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, मध्यम कद, गौरवर्ण किन्तु शारीरिक सौन्दर्य में त्रुटियुक्त, कृशकाय, स्वभाव से उग्र और क्रोधी, धनसंचय से हीन, भाई-बहिन युक्त, पुरुषार्थी और कर्मयोगी, स्फूर्त, अनेक कार्यों में विघ्नों के साथ सफल, पितृ-मतभेदी, पितृ क्षेत्र का निवासी और वहीं लाभ युक्त, राज्य और सामाजिक सम्बन्धों में सफल, सामान्य रोगग्रस्त, परिश्रम द्वारा सुख साधन प्राप्त करने में सफल, सन्तान की ओर से अधिक दुःखी, यदाकदा व्यवसाय में विघ्नों का संयोग, मातृसुख में त्रुटि का प्रापक, विवेक द्वारा सामान्य द्रव्य संग्रही, मध्यायु प्राप्तकर्ता, सुन्दर वाक् शक्ति में पटु तथा प्रभावसम्पन्न, स्त्री से नीरस सुख प्राप्तकर्ता, धर्म में श्रद्धावान् परन्तु धन को अत्यधिक महत्व देने के कारण शिथिलतायुक्त, दूरदर्शी, गुप्त चतुराई तथा योजनाओं द्वारा द्रव्य का अच्छा लाभ पानेवाला, विरोधपक्ष से अपना कार्य निकाल लेने में कुशल, विद्याशक्ति का अच्छा सुख प्राप्त करने वाला होगा।

(४५)- इस कुण्डली चक्र में पैदा हुआ बालक अत्यधिक प्रभावशाली, सामान्य कद, उन्नत ललाट, मुख पर चोट चिन्ह युक्त, दैहिक सौन्दर्य में सामान्य त्रुटि युक्त, गोधूमवर्ण, स्वाभिमानी, उत्तम शिक्षिता पतिपरायणा स्त्री का प्राप्तकर्ता, अन्य स्त्रियों में भी रमणशील, पुरुषार्थी और कर्मयोगी, परिश्रम द्वारा विघ्नों से संघर्ष करते हुए व्यवसाय क्षेत्र में पूर्ण सफल, विद्या बुद्धि और वाणी तथा विवेक शक्ति का उत्तम प्रापक, सन्तान पक्ष में सम प्रजा का पिता और तद्विषय में चिन्तित, गुप्त योजनाओं का निर्माता तथा चातुर्य से विरोधी पक्ष प्रभाव सम्पन्न, धर्म के प्रति आस्थावान् किन्तु व्यवहार में शिथिल, तन्त्र मन्त्र ज्योतिष आदि से भिज्ञ, संगीत काव्य कला का प्रेमी, पिता से मतभेदी, पितृक्षेत्र का निवासी, कुछ परतन्त्र, भाई बहिन से युक्त, धन-संचयार्थ अधिक प्रयत्नशील, भाग्य की उत्तम शक्ति से युक्त, द्रव्य लाभ में विघ्नयुक्त सफल, धन संचय में साधारण सफल, मातृ सुख का अल्प भोगी, राज्य और सामाजिक सम्बन्ध स्थापना में कुशल तथा उत्तम मान प्रतिष्ठा प्राप्तकर्ता, सन्तान से वैमनस्य युक्त सम्बन्धों से चिन्तित, गृह भूमि लाभ से युक्त, यदा कदा गम्भीर रोगों का प्राप्तकर्ता होगा।

(४६)- इस जन्म लग्न में उत्पन्न होने वाला मनुष्य सामान्य कद, ऊँचा माथा, गौरवर्ण, देह सौन्दर्य में त्रुटि युक्त, अतीव प्रभाव सम्पन्न, तेजस्वी, धर्म विवेकी, स्वभाव से उग्र, किन्तु सहज में शान्त, अत्यधिक स्वाभिमानी तथा दृढ़ निश्चय पर आरूढ़, गौरवर्णा सुशिक्षिता पतिव्रता स्त्री से युक्त किन्तु अन्य स्त्रियों में भी रमण करने में पटु, ऐश्वर्य से रहने वाला, गृह भूमि लाभादि से पूर्ण, पिता से मतभेदी एवं पितृ क्षेत्र का निवासी, विशिष्ट परिश्रमी और कर्मबल पर व्यवसाय क्षेत्र में समुन्नत तथा सफल, मूत्रेन्द्रिय के विकार से युक्त, विद्या बुद्धि एवं वाक् शक्ति में पूर्ण, विवेक और चातुर्य से विरोधियों पर प्रभाव में सक्षम, माता का अल्प सुख प्राप्तकर्ता, ईश्वर के प्रति निष्ठा सम्पन्न, धर्म पालन में प्रवीण, संगीत काव्य ज्योतिष तंत्र मंत्रादि का जानकार, रहस्यमयी योजनाओं के निर्माण में पटु तथा स्वकार्य साधन में कुशल, भाग्यवृद्धि हेतु सतत प्रयत्नी तथा धन-संग्रह से प्रभावयुक्त, राज्य और सामाजिक सम्बन्ध तथा उत्तम मान प्रतिष्ठा का प्राप्तकर्ता, यदा-कदा भयंकर रोगग्रस्त, भाई बहिन युक्त, कौटुम्बिक सुख प्राप्त, सन्तान युक्त परन्तु सन्तान से वैमनस्य पूर्ण सम्बन्धों के कारण दुःखी रहने वाला होगा।

(४७)- इस जन्मांग में उत्पन्न होने वाला मानव दैहिक सौन्दर्य में कुछ कमीयुक्त, पुष्ट देही, सामान्य कद, ऊँचा माथा, गौरवर्णी, स्वाभिमानी और दृढ़ निश्चयी, प्रकृति से उग्र तथा विवेकी एवं शान्त, कुछ गम्भीर रहने वाला, स्वपक्ष स्थापना में प्रवीण, पितृ क्षेत्र का निवासी, पितृ सुख प्राप्त कर्त्ता, मातृ मतभेदी, भाई बहिन युक्त, कौटुम्बिक सुख प्राप्ति के साथ सुख प्राप्ति में त्रुटि युक्त, गृह भूमि लाभ से युक्त, कठोर परिश्रमी, ऐश्वर्ययुक्त जीवन से पूर्ण, पुरुषार्थ में सफल, द्रव्य प्राप्ति हेतु निरन्तर प्रयत्नी, किन्तु इस विषय में कठिन विघ्न प्राप्त कर्त्ता, विद्या-बुद्धि और वाणी शक्ति में पूर्ण, सन्तानयुक्त किन्तु अधिक चिन्तित, धर्म के प्रति पूर्ण श्रद्धालु परन्तु पालन में शिथिल, पुरुषार्थ से भाग्य वृद्धि में सफल, शत्रुओं का पूर्ण विजेता, यदा कदा गम्भीर रोग ग्रस्त, नेत्र ज्योति में त्रुटि युक्त, संगीत काव्यादि प्रेमी, तंत्र-मंत्रादि का प्रयोगी, सुन्दरी पतिव्रता स्त्री का प्रापक, गृहस्थ में पूर्ण आसक्त, उत्तम स्वास्थ्य और दीर्घायुष्य सम्पन्न, बाह्य सम्बन्धों की स्थापना में पूर्ण प्रवीण तथा सम्मान प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सक्षम, द्रव्य संग्रही और उत्तम कार्यों में धन का व्ययी, भाग्योन्नत होगा।

(४८)- इस जन्मचक्र में उत्पन्न मनुष्य गौरवर्ण, ऊँचा कद, उन्नत ललाट, दीर्घ किन्तु कृश वपु, सौन्दर्य युक्त, प्रभावशाली और तेज सम्पन्न, उग्र स्वभाव तथा स्वाभिमानी और स्वाभिमान की रक्षा में तत्पर, विद्या-बुद्धि वाणी शक्ति से पूर्ण सम्पन्न, दृढ़ निश्चयी तथा गम्भीर रहकर गुप्त योजनाओं के निर्माण में संलग्न, प्रतिकार भावना युक्त, शत्रुओं का विजयी, पिता से मतभेद रखते हुए पितृ-सुख सहयोग का भागी एवं पितृ-क्षेत्र का निवासी तथा उन्नतिशील, कुल का दीपक, ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करने में कुशल, मातृ सुख का अल्प भोगी, भाई बहिन युक्त, किन्तु उनसे मतभेद रखने तथा विरोध प्राप्त कर्त्ता, उद्यमी और परिश्रमी, स्त्री पक्ष में नीरस, स्वतन्त्र व्यवसायी तथा संघर्ष युक्त सफल, द्रव्य संचय में सामान्य, गृह भूम्यादि लाभ युक्त, अच्छी आय वाला, गम्भीर रोगी, दीर्घायुष्य सम्पन्न, श्रद्धालु तथा ईश्वरीय निष्ठा से पूर्ण, सन्तान प्राप्तकर्त्ता एवं सन्तान की ओर से चिन्तित, कठोर परिश्रमी, पुरुषार्थ से भाग्य वृद्धि में तत्पर एवं सफल, वाहन भृत्य सुख युक्त, राज्यतः तथा सामाजिक मान-प्रतिष्ठा प्राप्त कर्त्ता, उत्तम कार्यों में धन व्ययी, (सुन्दरी स्त्री का पति, मातृ-सुख पक्ष में हानि युक्त होगा)।

(४९)- इस जनुलग्न में जन्म लेने वाला बालक गौरवर्ण, उन्नत ललाट, नेत्रज्योति से युक्त त्रुटि युक्त, पुष्ट वपु, सामान्य कद, क्रोधी- स्वाभिमानी, वाक्पटु, परम धीर- गम्भीर तथा शान्त और विवेकी, तेज-सम्पन्न, स्वपक्ष स्थापना में प्रवीण, धन-संग्रह के लिये प्रयत्नशील, यदाकदा अच्छा द्रव्य लाभी, कौटुम्बिक वैमनस्य युक्त, धनवान्, मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, दीर्घायु प्राप्त कर्त्ता, ऐश्वर्य से रहने वाला, कभी-कभी गम्भीर रोग ग्रस्त, सुन्दर स्त्रीयुक्त, गृहस्थ में आसक्त, पर-स्त्री रत, व्यवसाय व कर्मक्षेत्र में विघ्न युक्त, दैनिक जीवन में अधिक खर्च के कारण चिन्तित, गृह भूमि-लाभ से युक्त, राज्य सम्बन्धों में विघ्न प्राप्तकर्त्ता, कूटनीति सम्पन्न, भोगादि में संलग्न, पितृ-सुख से वंचित, मान-प्रतिष्ठा में कमी का अनुभवी, कठिनाई युक्त संघर्षमय जीवन से युक्त, अत्यन्त साहसी, मातृ मतभेदी तथा पृथक्त्व प्रापक, यदाकदा गृहस्थ वातावरण से दुःखी, संगीत काव्यादि प्रेमी, आवासीय-गृह में परिवर्तन युक्त, भाग्यबल पर मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सक्षम, अधिक व्ययी, परोपकार रत, ईश्वर और धर्म के प्रति निष्ठावान् तथा धर्म का पालक, बाह्य सम्बन्धों में मधुर जीवन व्यतीत करने वाला होगा।

(५०)- इस कुण्डली चक्र में उत्पन्न जातक, कृशकाय, दीर्घवपु, तेजस्वी, स्वाभिमानी, गौरवर्ण, ऊँचा कद एवं उन्नत-ललाट तथा सहज ही क्रोधी, पितृ-सुख का अल्पभोगी, शत्रुजयी, स्ववाक्य-स्थापना में दक्ष, मान प्रतिष्ठा युक्त, राज्य-सम्बन्धों में हानि युक्त, धर्म के प्रति आस्थावान् एवं यथार्थ धर्म का पालक, विद्या - बुद्धि - वाणी तथा सन्तान का उत्तम सुख प्राप्तकर्त्ता, दीर्घायुष्य सम्पन्न, यदाकदा गम्भीर रोग युक्त, संकट पाने वाला, सुन्दर पतिव्रता-स्त्री का पति, किन्तु मतभेदी, गृहस्थ जीवन से चिन्तित, कठोर परिश्रमी और साहसी, बाह्य सम्बन्ध में विघ्नों से संघर्ष करते हुए सफल, व्यवसाय क्षेत्र में कभी-कभी विघ्न युक्त अच्छी सफलता का प्रापक, अनायास उत्तम द्रव्य लाभ युक्त, पितृ क्षेत्र में निवासी, भाग्योन्नति में प्रयत्नशील तथा पूर्ण सफल, धन का उत्तम संग्रही, कुटुम्ब से मतभेद रखते हुए सुख सहयोग का भागी, गृह- भूमि लाभ से युक्त, निवासीय गृह में परिवर्तन करने वाला, वृद्धावस्था में पूर्ण सुखी, उदर रोग ग्रस्ता स्त्री पाने वाला, मातृ-सुख सहयोग में त्रुटि युक्त, परोपकारी, दयावान्, अधिक व्ययी, गृहस्थ सुख में नीरसता, पुरुषार्थ एवं परिश्रम से द्रव्य-लाभ करने वाला होगा

मु० सं० २०

(११)- इस कुण्डली में जन्म लेने वाला व्यक्ति शारीरिक बल से द्रव्य लाभी, तेजस्वी, प्रभावशाली, स्वभाव से कुछ उग्र, धन-धान्यादि से पूर्ण, ऐश्वर्य मयजीवन प्राप्त, प्रतिष्ठा-सम्पन्न, रक्त-विकार युक्त, कुटुम्ब सुख में कुछ त्रुटि युक्त, स्त्री से मतभेदी और नीरस, व्यवसाय में सामान्य विघ्न युक्त, पितृ-सुख प्राप्त एवं पितृ क्षेत्र का निवासी तथा उन्नतिशील, विद्या और सन्तान से पूर्ण, उच्चपदासीन, राज्य भाषा एवं राजनैतिक ज्ञान से सम्पन्न, वाक्शक्ति में पटु, शासनतन्त्र विधिवेत्ता, शारीरिक सौन्दर्य युक्त, ऊँचा कद, गौरवर्ण, कृश शरीर, प्रभावशाली व्यक्तित्व से पूर्ण, मातृसुख का अल्प भोगी, पुरुषार्थ एवं विवेक से धन संग्रह का प्रयत्नशील, अधिक व्ययी, भाई-बहिन के सुख सम्बन्धों से हीन, दैनिक जीवन में प्रभाव सम्पन्न, ननसाल में हानि प्राप्तकर्त्ता, शत्रु और विरोधियों पर चातुर्य से सफल, परिश्रम से भाग्योदयी, यथाशक्ति धर्म का पालक, आन्तरिक दुर्बलता से चिन्तित, परन्तु साहसी, यदा-कदा उन्नति में विघ्न युक्त, गृह भूमि लाभ सम्पन्न, भोगादि प्राप्त करने में सक्षम, गुप्त तथा गम्भीर योजनाओं द्वारा व्यवसाय और स्वउन्नति में सफलता प्राप्तकर्त्ता होगा।

(१२)- इस जन्मांग में जन्मा जातक ऊँचा कद, उन्नत ललाट, परम तेजस्वी, स्वाभिमानी, स्वभाव से उग्र, किन्तु अधिक विवेक सम्पन्न और शान्त, उदार-चेता तथा परोपकारी दयालु, सुन्दर, शिक्षित पतिव्रता स्त्री युक्त, पौरुष शक्ति से सम्पन्न, ईश्वर और धर्म के प्रति पूर्ण आस्थावान्, दीर्घ एवं पुष्ट वपु, प्रभावशाली व्यक्तित्व से पूर्ण, मातृ-सुख से वंचित, पितृ-सुख का अल्प भोगी, विद्या-बुद्धि-वाणी में प्रबल शक्ति सम्पन्न, शत्रुओं का दमनकारी, भाग्यवृद्धि एवं व्यवसाय में विघ्न युक्त तथा परिश्रम और कठोर पुरुषार्थ से उन्नत, धन संग्रह के लिये सदा प्रयत्नशील, ऐश्वर्य और भोगों से युक्त, मान-प्रतिष्ठा में कुछ कमी का अनुभवी, स्त्री-पक्ष अथवा स्त्री-सहयोग से समुन्नत, अधिक व्ययी होने के कारण धन-संग्रह से विमुख, गृहादि का साधारण लाभ प्राप्तकर्त्ता, बाह्य सम्बन्धों में गुप्त शक्ति द्वारा सफल, राज्यकर्म द्वारा प्रतिष्ठित, अन्य स्त्री प्रेम से पराङ्मुख, अन्य स्त्री से धोखा प्राप्त करने वाला, सन्तान सुख से पूर्ण, दीर्घायु प्राप्तकर्त्ता, गुप्त रोग अथवा हृद्-रोग से पीड़ित, नेत्रज्योति में त्रुटि प्राप्तकर्त्ता, कभी-कभी आलस्य करने वाला होगा।

भू० सं० ३०८

कु० १०

(५३)- इस जन्म-चक्र में उत्पन्न मानव शारीरिक क्षमता और स्वाभिमान युक्त, दीर्घ पुष्ट वपु, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, उन्नत ललाट, गौरवर्ण, उग्र और परम विवेकी, स्त्री क्षेत्र में उदासीन किन्तु गृहस्थ में पूर्ण आसक्त, अन्य स्त्री में भी रमणशील, ऊँचा कद, उदारचेता तथा परोपकारी दयालु, सुन्दर शिक्षित पतिव्रता स्त्री युक्त, पौरुष शक्ति सम्पन्न, ईश्वर और धर्म के प्रति पूर्ण आस्थावान, मातृ-सुख से वंचित, पितृ-सुख का अल्प भोगी, विद्या-बुद्धि एवं वाणी में प्रबल शक्ति सम्पन्न, शत्रुओं का प्रबल दमनकारी, भाग्यवृद्धि एवं व्यवसाय में विघ्नयुक्त, मान प्रतिष्ठा में कुछ त्रुटि का अनुभवी, स्त्री पक्ष अथवा स्त्री सहयोग से समुन्नत, अधिक व्ययी होने के कारण धनसंग्रह से विमुख, गृहादि का साधारण लाभ प्राप्तकर्ता, बाह्य सम्बन्धों में गुप्त शक्ति द्वारा सफल, राज्यकर्म द्वारा प्रतिष्ठा प्राप्तकर्ता, अन्य स्त्री से धोखा पाने वाला, सन्तान सुख से पूर्ण, दीर्घायुष्य प्राप्तकर्ता, प्रमेह अथवा हृद् रोग से पीड़ित, साहसी, नेत्र ज्योति में त्रुटि प्राप्तकर्ता, कभी कभी शैथिल्य और आलस्य युक्त होगा।

(५४)- इस जन्मलग्न में उत्पन्न होने वाला पुरुष शारीरिक सौन्दर्य सम्पन्न, गौरवर्ण, सामान्य कद, चंचल प्रकृति, अधिक विवेकी, उग्र और शान्त, मृदुल और उदारचेता, परोपकारी, ऐश्वर्य और भोग-विलास प्राप्त करने में पूर्ण, सेवा से मतभेदी, मातृ-सुख से वंचित, पितृ-सुख का अल्प भोगी, मातृपक्ष से सुखी, विद्या, बुद्धि तथा सन्तान सुख से पूर्ण, ईश्वर और धर्म निष्ठा सम्पन्न, किन्तु यथार्थ पालन में हीन, अन्य स्त्रियों में रमणकारी, विरोधी-पक्ष में चतुराई से कार्य निकालने में सफल, यदाकदा आलस्य पूर्ण, सुरा-सुन्दरी का प्रेमी, भाग्योदय में विघ्नयुक्त समुन्नत, परम चतुर और साहसी, दीर्घायु प्राप्तकर्ता, राजनीति में पटु तथा राज्य क्षेत्र में प्रतिष्ठा सम्पन्न एवं राज्य-द्रव्य का भोगी, ऐश्वर्यादि में अधिक व्ययी होने से धन-संचय से हीन, गुप्त शक्ति और गम्भीर योजनाओं में निपुण, परिश्रमी और अनुशासन प्रिय, साहस सम्पन्न, गृहादि सुख में सामान्य, प्रति पक्ष की ओर से चिन्तायुक्त, उच्च पदासीन किन्तु अवनति प्राप्तकर्ता, मान प्रतिष्ठा में अभाव का अनुभवी, स्त्री सहयोग से उन्नति प्राप्त करने में सक्षम होगा।

(५५)- इस जन्मांग में जन्म लेने वाला मनुष्य शारीरिक शक्ति सम्पन्न, आत्मबली, स्वाभिमानी, सौन्दर्य युक्त, तेजस्वी और प्रभावशाली, व्यवसाय क्षेत्र में चिन्तित, गृहस्थ-संचालन में त्रुटि का अनुभवी, धोखा पाने वाला, अत्यधिक खर्चीला, दीर्घायु प्राप्तकर्त्ता, भाई बहिन के सुख सहयोग में त्रुटि पूर्ण, गृह भूम्यादि लाभ में सामान्य, स्त्री पक्ष में त्रुटि कमी का अनुभवी किन्तु पतिव्रता स्त्री का पति, पितृ-सुख का अल्प भोगी, आमदनी में कमी का अनुभव शील, गृहस्थ में आसक्त, यदाकदा गम्भीर मृत्यु-तुल्य कष्टों का प्राप्त कर्ता, राज्य कर्मचारी, विदेश-यात्रा की सम्भावना प्राप्त, वाह्य-सम्बन्धों की मधुरता से स्वकार्य क्षेत्र में सफल, उन्नति हेतु सर्वथा प्रयत्नशील, विरोध पक्ष पर शान्ति नीति से सफल, कुटुम्ब-प्रभाव से मुक्त, साधारण धन लाभी, मातृ-सुख से वंचित, राज्य-समाज में मान-प्रतिष्ठा प्राप्तकर्त्ता, धर्म-पालन से हीन, धन संग्रह से वंचित, कुटुम्ब से परित्यक्त या वैमनस्य पूर्ण सम्बन्धों का प्राप्तकर्त्ता, सन्तान-सुख से वंचित और चिन्तित, दत्तक पुत्र प्राप्त कर्त्ता, स्वभाव से उग्र, परम चतुर, अधोशरीर में पीड़ा पाने वाला होगा।

(५६)- इस कुण्डली में उत्पन्न होने वाला जातक सुन्दर गौरवर्ण, सामान्य कद, ऊँचा माथा, स्वाभिमानी, स्त्री सुख से वंचित अथवा स्त्री की ओर से उदासीन, पत्नी प्रेमी, धीर-वीर साहसी, स्वभाव से उग्र और विवेकी तथा शान्त, कुटुम्ब से वैमनस्य पूर्ण सम्बन्धों से युक्त, दीर्घायु प्राप्तकर्त्ता, भोग-विलास और ऐश्वर्यमय जीवन से पूर्ण, सन्तान से सुखी, किन्तु मतभेद युक्त सम्बन्धों से पूर्ण, यदाकदा गम्भीर रोग ग्रस्त, धन-गृह-भूमि लाभ में साधारण, राज्य-क्षेत्र में मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, सामाजिक प्रतिष्ठा में सामान्य, राज्य कर्मचारी, उन्नति को सर्वथा प्रयत्नशील, राज्य द्रव्योपजीवी, विद्या-सुख और उन्नति में साधारण, विरोध पक्ष पर गुप्त-योजनाओं एवं चातुर्य बल पर विजयी, अनेक आपत्ति और अरिष्टों से युक्त, मातृ-सुख से वंचित, पितृ-सुख और पैतृक धन का अल्प भोगी, भाई बहिन के सुख सम्बन्धों से सर्वथा हीन, चंचल प्रकृति, स्ववाक्य-स्थापना में हठी और समर्थ, संगीत-काव्यादि का प्रेमी, दैनिक आय में त्रुटि का अनुभवी, भाग्योदय में अनेक बार विघ्नों को प्राप्त करने वाला होगा।

(५७)- इस जन्मांग में जन्मा जातक शरीर में दुर्बल, सौन्दर्य में अभाव युक्त, सामान्यकद, श्यामवर्ण, द्रव्य लाभ में त्रुटि युक्त, परतन्त्र, जीवोपभोगी, व्यवसाय कार्य में चतुर, सुन्दरी शिक्षिता स्त्री प्राप्त कर्त्ता, गृहस्थ भोग में पटु, गृहस्थ संचालन में अभाव ग्रस्त, यदाकदा अच्छे द्रव्य लाभ का पानेवाला, पराक्रम और पुरुषार्थ से सफल, कौटुम्बिक और भाईबहिन के सुख सहयोग से युक्त, स्त्री से मतभेदी, अन्य स्त्री में प्रेमयुक्त, बाह्य सम्बन्धों से भाग्योन्नति कर्त्ता, धर्म पालक, विवेकी - गम्भीर और शान्त, गुप्त योजनाओं के निर्माण में दक्ष, सन्तान पक्ष में वैमनस्य मय, विद्या - बुद्धि मय जीवन पानेवाला, भाग्यवती स्त्री का पति, उपार्जन हेतु अधिक परिश्रमी, आदर्शवादी, भाग्यवान्, सुयश प्रापक, किसी भी प्रकार आवश्यकताओं का पूर्तिकर्त्ता, दैनिक जीवन में ऐश्वर्ययुक्त, मध्यमायुसम्पन्न, कभी कभी रोग और विघ्न मय, उत्साही, वाणी में प्रभावशाली, सामान्य चिन्ताओं से युक्त, विरोध-पक्ष पर गम्भीरता और चातुर्य से काम निकालने वाला, युक्ति एवं साधनों द्वारा कार्य करने में सक्षम, शरीर के अधोभाग में गम्भीर रोग मय, विचारशील और उद्यमी होगा।

(५८)- इस कुण्डली में जन्म लेने वाला व्यक्ति लम्बे कद का, स्वाभिमानी और शान्त प्रकृति, सामान्य श्यामवर्ण, शारीरिक सौन्दर्य में अभावयुक्त, दुर्बल, विद्या - बुद्धि और सन्तान में साधारण अभाव के साथ उत्तम योग प्राप्त कर्त्ता, मध्यायु प्राप्त करने वाला, व्यवसाय कार्य में दक्ष, आमदनी में त्रुटि युक्त, गृहस्थासक्त, सुन्दर भाग्यशालिनी पति-परायणा और श्यामवर्णा स्त्री का पति किन्तु स्त्री से मतभेद रखते हुए अन्य स्त्रियों में रमण शील, उन्नत ललाट, परतन्त्रता से जीवन यापक, विरोध पक्ष और शत्रुओं पर युक्ति एवं गम्भीरता से सफल, धैर्य एवं साहस सम्पन्न, आवश्यकताओं की पूर्ति में संलग्न, दैनिक जीवन में ऐश्वर्यमय, धर्म का यथार्थ पालक, परम विवेकी, सुयश प्राप्तकर्त्ता, मूत्रेन्द्रिय में विकार युक्त, दैनिक व्यय की ओर से चिन्तित एवं परिश्रम से द्रव्य लाभ का प्रापक, आमदनी की अपेक्षा अधिक व्ययी, धन संग्रह से वंचित, कौटुम्बिक और भाई बहिन का सुख-सहयोग प्राप्तकर्त्ता, मातृ सुख का अल्प भोगी, पिता से त्यागा हुआ, निजी पुरुषार्थ से उन्नति करने में संलग्न, गृह- भूमि लाभ से हीन होगा।

भू० सं० ५२८

कु० र०

(५९) इस जन्मलग्न में उत्पन्न मनुष्य दीर्घदेही, शरीर में कृश, कृष्णवर्ण, स्वाभिमानी और क्रूर-स्वभाव, अधिक व्ययी, मध्यायु तथा अरिष्ट प्राप्त कर्ता, गृह भूमि लाभ से युक्त, कुत्सित विचार युक्त, क्रूरकर्मी, गम्भीर योजनाओं के निर्माण में दक्ष, पिता से वैमनस्य रखने वाला, प्रतिकार की भावनाओं से युक्त, स्त्री-सुख प्राप्त कर्ता, किन्तु स्त्री विहीन और अन्य स्त्रियों में रमणशील, वात स्थान का गम्भीर रोगी, अस्वादि वाहनों से युक्त, धन संग्रह के लिये अधिक प्रयत्नशील और उत्साही तथा साहसी, धन संचय में पटु, युयपति, विरोधियों का प्रबल दमनकारी, मातृ सुख से वंचित, स्वतन्त्रता युक्त एवं भययुक्त जीवन, द्यूत क्रीड़ा में दक्ष, पुरुषार्थ और परिश्रम से द्रव्य लाभी, वाणी में प्रभावशाली, विद्या और सन्तान की ओर से सामान्य सुखी, धर्म का यथार्थ पालक और परोपकारी, चतुर, कौटुम्बिक और भ्रातृ-बहिन युक्त तथा शक्ति प्राप्त कर्ता, बाहरी सम्बन्धों में सुखी, आदर्शवादी और ईश्वरीय निष्ठा में रत, राज्य विरोधी, सर्वथा चिन्ताओं से ग्रस्त जीवन व्यतीत करने वाला होगा।

(६०)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न होने वाला मानव पितृ-सुख और शक्ति सम्पन्न अर्थात् पैतृक-धन प्राप्त कर्ता, सुन्दर, गौरवर्ण, कृशोदर, उन्नत-ललाट, तेजस्वी, परम विवेकी, स्वाभिमानी, विद्या एवं सन्तानों से पूर्ण तथा उनका उत्तम सुख भोगी, सर्वथा धर्म पालने में तत्पर, सुयश प्राप्त कर्ता, दीर्घायु सम्पन्न, बलिष्ठ और नीरोग रहने वाला, स्त्री का द्विभार्या योग पाने वाला, स्त्री और द्रव्य लाभी, भाग्यशाली, धन का उत्तम संग्रही, अनेक परोपकार करने वाला, अनायास द्रव्य-लाभ से सम्पन्न, अच्छी आय वाला, स्वाभिमान युक्त, प्रभाव सम्पन्न, लोक विख्यात, राज्य और सामाजिक सुख सम्बन्धों से पूर्ण तथा श्रेष्ठ मान प्रतिष्ठा सम्पन्न, विनम्र और शान्त, कौटुम्बिक और भातृ बहिन की सुख-सहयोग शक्ति का प्राप्त कर्ता, ऐश्वर्य में अधिक रुचि, गृह-भूमि-धन धान्य-भृत्य वाहनादि सुख से युक्त, विरोधी पक्ष का दमनकारी, उत्तम कर्मी, व्यवसाय क्षेत्र में कुछ अवरोधों के साथ सफल, अनेक योगों का स्वामी, उत्साही और साहस सम्पन्न, गो-ब्राह्मण और देव भक्ति में दक्ष होगा।

(६१)- इस कुण्डली में जन्म लेने वाला जातक पितृ-सुख एवं मातृ-सुख का भोगी तथा पितृ-सहयोग का पायक, स्वाभिमानी और दृढ़ निश्चयी, धर्मविवेकी, स्वभाव से साधारण उग्र और शान्त, अत्यधिक चतुर, गौरवर्ण, उन्नतललाट, कृशदेह, दीर्घवपु, अत्यन्त तेज सम्पन्न एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व से पूर्ण, हठी, परोपकारी और दयालु, कौटुम्बिक सुख सहयोग और शक्तिमय, भाई-बहिन युक्त, विद्या-बुद्धि और वाणी तथा सन्तान का उत्तम शक्ति सम्पन्न और सुखोपभोगी, शत्रुओं का दमनकारी, रक्त-विकार और यदाकदा मृत्युतुल्य कष्ट पाने वाला, दीर्घायु प्राप्तकर्ता, धर्म के पालन में निरन्तर तत्पर और ईश्वरीय निष्ठा से पूर्ण, स्त्री से मतभेद युक्त सुख भोगी, उद्यमी और उत्साही, धन-धान्य-गृह-भूमिलाभ से पूर्ण सुखी, विदेश यात्रा और जलयात्रा का योग पाने वाला, ऐश्वर्य और धर्म कार्यों में अधिक व्ययी, राज्य और समाज सम्बन्धों में दक्ष तथा मान-प्रतिष्ठा एवं सुयश प्राप्तकर्ता, उत्तमकर्मी, आदर्शवादिता में निपुण, स्वतन्त्र व्यवसायी और यदाकदा व्यवसाय में अस्थिर अवरोध युक्त होगा।

(६२)- इस जन्मयोग में जन्मा हुआ बालक अत्यन्त साहसी, विरोधियों का प्रबल दमनकारी, शरीर में रोग पाने वाला, यश और धर्म पालन में कुछ त्रुटि युक्त परन्तु ईश्वर और धर्म में पूर्ण आस्थावान्, परिश्रमी और उत्साही, नाम कमाने वाला, आत्मबली, स्वाभिमानी, परोपकारी और दयालु, शरीर में कृश, दीर्घवपु, परमतेजस्वी, विद्या-बुद्धि-वाणी और सन्तान का उत्तम सुख प्राप्तकर्ता, स्वभाव से उग्र किन्तु शान्त, आदर्शवादिता में निपुण, रक्तविकारी, मातृ सुख में त्रुटि युक्त, पितृ सुख सहयोग का पायक, भाई बहिन और कुटुम्ब सुख शक्ति सहयोग सम्पन्न, ऐश्वर्यादि से पूर्ण और अधिक व्ययी, तेज सम्पन्न, प्रभावशाली व्यक्तित्व से पूर्ण, गृह-भूमिलाभ से युक्त, कठिन परिश्रमी और साहसी, मातृभूमि से अतिरिक्त स्थान का निवासी, दाम्पत्य सम्बन्धों में मधुरता प्राप्त, उत्तम आयु सम्पन्न, विरोध पक्ष में कठिन समस्याओं से संघर्षरत, आपत्तिकाल में युक्तिबल से कार्य करने में सक्षम, दृढ़ निश्चयी और हठी, धैर्य सम्पन्न, व्यवसाय में अवरोधों के साथ सफलता प्राप्त करने वाला होगा।

मु० सं० ४०८

कु० च०

(६३)- इस जन्मांग में जन्म लेने वाला व्यक्ति भाग्यशाली, भाग्यशालिनी पतिव्रता शिक्षिता सौन्दर्यमयी स्त्री का पति, न्यायविद्, धर्म और ईश्वर के प्रति पूर्ण निष्ठ तथा आदर्श स्वरूप धर्म का पालक, प्रभावशाली व्यक्तित्व से पूर्ण, व्यवसाय मार्ग में साधारण त्रुटि युक्त सफल, विद्या पक्ष में अवरोध के साथ सफलता का प्राप्तकर्ता, विलम्ब से सन्तान का प्रापक, पुत्र प्राप्ति का अधिक योग पानेवाला, शत्रु और विरोधियों का दमनकारी, सौन्दर्य और स्वास्थ्य में त्रुटियुक्त, अत्यधिक व्ययी, अधिक चिन्तनशील और विचारक, कृशशरीर, सामान्य कद, स्वभाव से उग्र और शान्त, धर्मविवेकी, काव्य-संगीतादि का प्रेमी, मन्त्रविद्या में निपुण, यदाकदा द्रव्य लाभ की ओर से चिन्तित, गृहस्थ-सुख भोगी, मातृ-पितृ-सुख-सहयोग का प्राप्तकर्ता, राज्य समाज सम्बन्धों में दक्ष, मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, दृढ़ निश्चयी और हठी, सरल और उदारचेता, मध्यायु प्राप्तकर्ता, स्वाभिमानी, सत्य और मृदुभाषी, गृह-भूमि लाभ युक्त, पितृक्षेत्र का निवासी तथा यदाकदा अन्य क्षेत्र में प्रवासी, साहसी तथा धैर्य सम्पन्न, धोखा प्राप्त करनेवाला होगा।

(६४)-इस जन्म चक्र में उत्पन्न होनेवाला मनुष्य कृशदेह, गौरवर्ण, ऊँचा माथा, दीर्घवपु, स्वभाव से उग्र और क्रूर तथा स्वाभिमानी, गौरवर्ण, भाग्यहीन, स्वभाव की ओर से चिन्तित, द्रव्य लाभ में अपूर्ण, परतन्त्रतायुक्त जीविकोपयोगी, अत्यधिक व्यय से परेशान, धन-संचय से हीन, मातृ-सुख से वंचित, पितृ-सुख सहयोग का प्राप्तकर्ता, पितृक्षेत्र का निवासी, शत्रुपक्ष पर युक्तिबल से विजयी, धर्मविद् और ईश्वर निष्ठा से पूर्ण, कर्मोपजीवी, उद्यमी एवं साहसी, सर्वदा चिन्तित, विद्यापक्ष में अपूर्ण, भाग्यशालिनी स्त्री का पति, गृहस्थ पालन में विघ्नयुक्त, स्त्री से मतभेदी, स्त्री से वियोग पानेवाला, विलम्ब से सन्तान प्राप्तकर्ता, बाह्य-सम्बन्धों की मधुरता तथा राज्य समाज सम्बन्धों से हीन, मान-प्रतिष्ठा में त्रुटिमय, गृहादि लाभ से वंचित, आपत्तिकाल में धैर्य खोनेवाला, यदाकदा अनायास लाभयुक्त, भाग्योन्नति के लिये निरन्तर प्रयत्नशील और धर्म पालक, कार्यक्षेत्र में कुशल, कलाकौशल सम्पन्न, गम्भीर रोग और मृत्युतुल्य कई बार कष्ट पाने वाला होगा।

(६५)-इस कुण्डली-चक्र में जन्म लेने वाला मानव गौरवर्ण, उन्नत ललाट, दीर्घवपु, स्वाभिमानी, स्वभाव से क्रुध उग्र और शान्त, जीवन में धोखे प्राप्त करने वाला, मध्यायु प्राप्त, परम विवेकी और बुद्धिमान, कृश शरीर, चतुर और साहसी एवं धैर्य सम्पन्न, पितृ-सुख का अल्पभोगी और पितृक्षेत्र का निवासी, राज्य और समाज एवं बाह्य सम्बन्धों का सुखोपभोग प्राप्त तथा मान-प्रतिष्ठामय, मातृ-सुख से वंचित, अधिक परिश्रमी और परिश्रमी, अनायास द्रव्यलाभी एवं अधिक खर्चीला, दैनिक जीवन में ऐश्वर्य से रहन-सहन युक्त, गृहस्थ संचालन के लिये चिन्तित, विद्या एवं सन्तान में अवरोधमय सुख प्राप्त, शत्रुओं पर विजयी, सामान्य रोगी और स्वास्थ्य युक्त, नेत्रज्योति में त्रुटि युक्त, धन संग्रह के लिये निरन्तर प्रयत्नशील, परस्त्री भोगी, किन्तु आदर्शवादी, धर्म पालक और वाक्‌शक्ति में प्रभावशाली, ईश्वर के प्रति निष्ठावान, भाग्यवादी, सुन्दर स्त्री प्राप्त कर्ता किन्तु मतभेदी, व्यवसाय में अवरोध के साथ सफल, अधिक चिन्तनशील और विचारवान, संगीत काव्य ज्योतिष का प्रेमी, धर्म और न्यायविद्, उपदेष्टा होगा।

(६६)-इस जन्मचक्र में उत्पन्न हुआ पुरुष कृश शरीर दीर्घ देह, सौन्दर्य में अभावी, स्वाभिमानी उग्र और धूर्त, सुन्दर शिक्षित स्त्री युक्त, किन्तु स्त्री-सुख से वंचित, प्रभावशाली व्यक्तित्व से सम्पन्न, राज्य-विरोधी और उग्रकर्मी अथवा राज्य में उच्च पदासीन, मातृ-सुख से हीन, पितृ-विरोधी और द्वेषी तथा पितृ क्षेत्र का निवासी, पितृ-गृह लाभी, उद्यमी-उत्साही तथा दृढ़ निश्चयी, स्वभाव से हठी और प्रतिकार की भावना युक्त, धर्म और ईश्वर को हृदय से मान्यता देने वाला तथा रूप से धर्म विहीन, कर्मक्षेत्र में आलसी, साहसी, भाग्योदय के लिये प्रयत्नशील परन्तु विघ्न प्राप्तकर्ता, शत्रुओं पर युक्ति बल से विजयी, अधिक व्यय से चिन्तित, व्यवसाय क्षेत्र में विघ्नों के साथ सफलता प्राप्त, सम्प्रजा का पिता, विद्याशक्ति में अवरोध सहित सफल, स्थान-परिवर्तन से दुःखी, विलम्ब से सन्तान प्राप्तकर्ता, भाग्योदयार्थ दूसरे का आश्रय ग्रहण करने वाला, कटु सत्य भाषी, मान-प्रतिष्ठा में न्यूनता का अनुभवी, सामाजिक सम्बन्धों से उदासीन, दीर्घायुष्य सम्पन्न, उदर रोग ग्रस्त, वाणी में प्रखर, पर-स्त्री में रमणशील, वृद्धावस्था में दुःखी और असम्मानित तथा तिरस्कृत होगा।

भू० सं० ३३८६

कु० १०

(९७)- इस कुण्डली में उत्पन्न हुआ व्यक्ति स्वभाव से क्रोधी और क्रूर, दीर्घवपु, कृशकाय, सामान्यवर्ण, तेजयुक्त, हठी और दृढ़-निश्चयी, पिता से मतभेद रखनेवाला, स्त्री विषय में चिन्तित, किन्तु भाग्यशालिनी स्त्री प्राप्तकर्ता, देह-सौन्दर्य में अभावमय, मातृ-सुख का अल्पभोगी, पैतृक-गृह और पितृक्षेत्र का लाभी तथा निवासी, शूरवीर और साहसी, धैर्य तथा गुप्तशक्ति साधनों द्वारा विरोधी-पक्ष पर प्रभावशील, देशाटन करनेवाला, उच्चपदासीन, विद्या, बुद्धि और वाणी में त्रुटियुक्त परन्तु प्रखर और पूर्ण, सन्तान सुख का विलम्ब से प्रापक, धर्म के पालन में हीन, उद्यमी और उत्साही तथा भाग्यवृद्धि के लिये प्रयत्नशील, समाज-प्रतिष्ठा से वंचित तथा राज्य सम्मान प्रतिष्ठा प्राप्तकर्ता, अनुशासित, आत्मशक्ति में त्रुटिमय, ईश्वरीय-निष्ठा का आन्तरिक अनुभवी, कौटुम्बिक और भाई बहिन के सुख सम्बन्धों में न्यूनता प्राप्त, अत्यधिक विचौली, परिवर्तनशील पदारूढ़, अन्य स्त्री में रमणकारी, सुरा-सुन्दरी का भोगी, मध्यायु प्राप्तकर्ता, व्यय सम्बन्धों में मधुरता तथा युक्ति बल से स्वार्थ-सिद्धि में तत्पर, वृद्धावस्था में स्थिर स्वस्थ होगा।

(९८)- इस जन्मचक्र में उत्पन्न होने वाला जातक सुन्दर शरीर युक्त, विवेकी, गम्भीर और शान्त प्रकृति, सामान्यकद, पुष्ट देह, बुद्धिमान, ऊँचा माथा, स्वाभिमानी, विद्या-बुद्धि और वाक्शक्ति में पूर्ण, धैर्य एवं साहस सम्पन्न, यदा-कदा धोखा पाने वाला, स्वकार्य स्थापना में कुशल, हठी, तेजस्वी, उच्च पदासीन, राज्य और समाज सम्बन्धों में दक्ष तथा मान प्रतिष्ठा का प्रापक, मातृ-सुख से वंचित, पिता का अल्प सुख भोगी, पितृ-क्षेत्र का स्थायी निवासी, क्रमोन्नत पद पर आरूढ़, ऐश्वर्यादि का भोगी, सुन्दर सुशील स्त्री प्राप्तकर्ता, किन्तु स्त्री की ओर से असन्तुष्ट, भाग्यवान, अच्छे लाभ से युक्त, गृहादि लाभी, सतत भाग्योदयार्थ प्रयत्नवान, ईश्वर और धार्मिक निष्ठा सम्पन्न तथा धर्म का पालक, स्वभाव से उग्र तथा शान्त एवं उदार प्रकृति युक्त, परस्त्री रमणकर्ता किन्तु आदर्शवादी, मंत्र तंत्र ज्योतिष काव्यादि में पटु, पुरातत्वशक्ति सम्पन्न, विरोधियों पर यथोपाय से विजयी, उत्तम कार्यों एवं रहन-सहन में धन व्यय करनेवाला, विलम्ब से सन्तान प्राप्तकर्ता, भाई बहिन के सुख सहयोग से वंचित, चिन्तनशील और विचारक होगा।

भृ० सं० १७८५

कु० १०

(५९)- इस जन्मलग्न में उत्पन्न होने वाला मनुष्य स्वास्थ्य में त्रुटि युक्त एवं रक्त विकार युक्त, प्रभावशाली व्यक्तित्व से सम्पन्न, अत्यधिक परिश्रमी और उत्साही, सामान्य कद, पुष्ट देह, गौरवर्ण, सुन्दर, पिता का अल्प सुख भोगी, धर्म विवेकी गम्भीर और शान्त किन्तु साधारण उग्र, स्ववाक्य-स्थापना में कुशल, सुन्दर गौरवर्ण सुशिक्षिता पतिव्रता स्त्री का पति, अन्य स्त्री में रमणशील, धर्मविद और ईश्वरीय-निष्ठा से पूर्ण तथा यथाशक्ति धर्मपालक, हठी और दृढ़ निश्चयी, शारीरिक श्रम से सफल, स्त्री में आसक्त, मातृ-सुख से पूर्ण, गृहादि लाभ युक्त, भाई-बहिन से सुखी, राज-समाज में मान-प्रतिष्ठा युक्त तथा प्रभावशाली, अच्छा द्रव्य लाभ पाने वाला, ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करने में दक्ष, उत्तम कार्यों में धन का व्ययी, विद्या-बुद्धि और वाणी एवं सन्तान का उत्तम सुख प्राप्त कर्त्ता, व्यवसाय मार्ग से भाग्योदय के लिये प्रयत्नशील, भाग्यवान, भृत्यवाहन सुख से पूर्ण, द्रव्य-संग्रही, पितृ क्षेत्र में उन्नतिशील, उदार और दयालु, चातुर्यशक्ति से विरोध पक्ष में सफल, यदाकदा विघ्न प्राप्त कर्त्ता, मध्यायु प्रापक, यश प्राप्ति में त्रुटि युक्त, अपनी उन्नति में संलग्न, पराक्रम में कभी-कभी शिथिलता युक्त होगा।

(६०)- इस जन्मांग में जन्म लेने वाला जातक स्वाभिमानी, क्रूर और क्रोधी, विद्या-बुद्धि में पूर्ण, कृशकाय, दीर्घदेही, सामान्य वर्ण, तेज-सम्पन्न, भाई के सम्बन्धों में त्रुटि युक्त किन्तु बहिन का सुख-सहयोग प्राप्त कर्त्ता, मातृ-सुख में त्रुटिमय सुखी, सन्तान से सुखी, पितृ-क्षेत्र में उन्नतशील किन्तु पितृ-मतभेदी, राज-समाज और बाहरी सम्बन्धों में मधुर तथा उच्च पद प्राप्त कर्त्ता एवं मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, कुटुम्ब सुख का सहयोगी, स्त्री में पूर्ण आसक्त, गृहस्थ-संचालन में पटु, पितृ-भक्त सन्तान प्राप्त कर्त्ता, धर्म के प्रति पूर्ण निष्ठावान् और यथाशक्ति धर्म-पालक, आदर्शवादी, विघ्नयुक्त उत्तम आय से पूर्ण, कभी-कभी आलस्य और शैथिल्य का व्यवहार करने वाला, हठी और दृढ़ निश्चयी, उद्यमी और व्यवसाय में सफल, धन-संग्रह के लिये प्रयत्नशील परन्तु धन संग्रह में अभावग्रस्त, सामान्य धन संचयी, गृह भूमि लाभ से सम्पन्न, ऐश्वर्य और उत्तम कार्यों में धन का व्यय करने वाला, मध्यायु प्राप्त कर्त्ता, बुद्धिबल और चातुर्य से विरोध-पक्ष पर विजयी, विद्युत अथवा जल से अरिष्ट प्राप्त कर्त्ता, सामान्य रोगी, किन्तु कभी-कभी गम्भीर संकट ग्रस्त, भाग्यशालिनी स्त्री का प्राप्त कर्त्ता होगा।

२४५ : सं. १

कु. ० २०

(८१)- इस जन्मांग में जन्म लेने वाला पुरुष सामान्यकद, माता-पिता का सुख-भोगी और सहयोग तथा दुलार पाने वाला, गौरवर्ण, सामान्यबली, नेत्र ज्योति में विकार का अनुभवी, शरीर से सामान्य, स्वाभिमानी, पुष्ट देह, क्रुद्ध कोपी, सामान्य और गम्भीर तथा शान्त प्रकृति, परमचतुर, व्यवसाय में दक्ष तथा कुछ विघ्नों के साथ सफल, गृह-भूमि लाभ से युक्त, मातृ-सुख में कुछ त्रुटि का अनुभवी, काव्य संगीतादि का प्रेमी, ऐश्वर्यमय जीवन बिताने वाला, विवेकी और चतुर, उच्च पदारूढ़, धर्मपालक ईश्वर के प्रति निष्ठावान्, परम सुन्दरी शिक्षिता स्त्री का पति, भाई-बहिन के सुख सम्बन्धों में न्यूनता का अनुभवी, न्यायविद्, विलासी, गृहस्थ में आसक्त, धैर्यवान्, हृद् रोग अथवा प्रमेह रोगी, उद्यमी और उत्साही, वाक्यों में रमणशील, भोग-विलास और रहन सहन में धन व्यय करने वाला, भाग्योदय में विघ्नयुक्त उन्नति-प्राप्तकर्त्ता, विरोधियों पर युक्ति-बल तथा चतुराई से सफलता प्राप्त करने में सक्षम, गृहस्थ के अतिरिक्त अन्य स्त्री भोगी, यदाकदा सुरापायी, विलम्ब से सन्तान प्राप्तकर्त्ता और उस विषय में चिन्ताग्रस्त, ज्येष्ठ पुत्र का अथवा स्त्री का मरण देखने वाला या उससे हीन होगा। यदाकदा रोगयुक्त मध्यायु प्राप्त होगा।

(८२)- इस जन्म चक्र में जन्मा हुआ जातक सामान्य कद, पुष्ट देही, उन्नत ललाट, गौरवर्ण, कामदेव के समान सुन्दर, नेत्र ज्योति में त्रुटियुक्त, संगीत-काव्य-ज्योतिष-तंत्र-मंत्र वेत्ता, उद्यमी और साहसी, कुटुम्ब से वैमनस्य प्राप्तकर्त्ता, उत्तम स्वास्थ्य सम्पन्न, कभी-कभी मृत्यु तुल्य कष्ट पाने वाला, धन संग्रह के लिये प्रयत्नशील, परन्तु कमी का अनुभवी, विद्या-बुद्धि और सन्तान से सुखी तथा पूर्ण, भाग्यशाली तथा व्यवसाय क्षेत्र में सफल, माता का अल्प सुख प्राप्तकर्त्ता, पितृ-सुख सहयोग से पितृक्षेत्र में सफल और पितृक्षेत्र का निवासी, बाह्य सम्बन्धों में मधुर और राज तथा समाज में मान प्रतिष्ठा सम्पन्न, धर्म का यथार्थ पालक, गो-ब्राह्मण और ईश्वर का पूर्ण भक्त, गृहस्थ में आसक्त, सुन्दरी शिक्षिता स्त्री प्राप्तकर्त्ता, विरोधि-पक्ष पर प्रभावयुक्त, तेजस्वी और आदर्शवादी, मधुर-मृदुल और उदारचेता, गृहस्थासक्त, परस्त्रीरत, परिश्रम तथा धन और विवेक बल पर अच्छे द्रव्य-लाभ से संयुक्त, ऐश्वर्य और उत्तम कार्यों में धन का व्ययी, यदाकदा पराक्रम परिश्रम में आलसी, कभी-कभी निज सम्बन्धों में धोखा प्राप्तकर्त्ता, गृह-भूमि-भृत्य-वाहनादि सुख से पूर्ण होगा।

भू० सं० ३४५

कु० १०

(५३)- इस जन्म चक्र में उत्पन्न हुआ पुरुष सामान्य कद, सामान्य वर्ण, देह-सौन्दर्य में अभावग्रस्त, कृशकाय, स्वाभिमानी और क्रोधी, गुप्त योजनाओं के निर्माण में दक्ष, चंचल प्रकृति, माता का अल्प सुख भोगी, अत्यधिक उत्साही और साहसी, हठी और दृढ़निश्चयी, उद्यम के लिये सर्वथा परिश्रम से कार्य करने में सक्षम और सफल, स्त्री-सुख से हीन, अन्य हीनवर्णा स्त्री को वश में रखने वाला, स्ववाक्य स्थापना में पटु, प्रभावशाली, विरोधियों और शत्रुओं पर विजयी, मूत्रेन्द्रिय तथा शुक्र रोग से पीड़ित, मृत्यु तुल्य कष्ट प्राप्तकर्ता, धर्मपालन में ढिलाई देकर ईश्वर के प्रति निष्ठावान्, परिवर्तनशील उच्च पद पर आसीन, देशाटनी, विद्या-बुद्धि में पूर्ण तथा चतुर, सन्तान की ओर से चिन्तित तथा सुख-प्राप्तकर्ता, भाग्योन्नति में विघ्नों का अनुभवी, सुरा सुन्दरी का भोगी विलासी, ठाठ-बाट से रहने में चतुर, धन-संग्रह पर निरन्तर प्रयत्नशील तथा सामान्य धन-संग्रही, गृहादि का लाभ प्राप्तकर्ता, यदा-कदा अनेक संघर्षों को पाने वाला, विवेक और युक्ति-बल से कार्य करने में प्रवीण, आत्मबल से हीन, आलस्य के कारण कई कार्यों में असफलता प्राप्त करने वाला होगा।

(५४)- इस कुण्डली में उत्पन्न होने वाला मनुष्य सामान्य वर्ण, दीर्घदेही, कृशकाय, उन्नत ललाट, प्रभावशाली, तेजस्वी, कुछ क्रूर और क्रोधी तथा स्वाभिमानी, हठीला, विवेक-सम्पन्न, शान्त और गम्भीर योजनाओं से स्वकार्य करने में प्रवीण, विद्या-बुद्धि-वाणी और सन्तान से पूर्ण, प्रारम्भिक आयु में दुःख प्राप्तकर्ता, उत्तम स्वास्थ्ययुक्त, गृहस्थ और भोग-विलासादि में आसक्त, सुन्दरी शिक्षिता किन्तु कलहप्रिया स्त्री से युक्त, कुटुम्ब-सुख सहयोग प्रापक, भाई-बहिन से युक्त और उनसे सुखी, कर्मयोगी तथा कर्मक्षेत्र में सफल, भाग्योदय में निरन्तर विघ्न प्राप्तकर्ता, अधिक खर्चीला, बाह्य सम्बन्धों में मधुर और विवेक बल से सफल, विरोधियों का दमन करने में दक्ष, दीर्घायुष्य सम्पन्न, जल या विद्युताग्नि के भय से प्रभावित, मातृ-सुख का अल्प भोगी, पिता से मतभेद रखने वाला, धन-संचय को प्रयत्नशील किन्तु धनसंग्रह में अभावग्रस्त, धर्म और ईश्वर के प्रति आस्थावान् किन्तु धर्म-पालन से विमुख, ज्योतिष-प्रेमी, काव्य-विनोदी, कृतघ्नी, पराश्रय से जीवनयापक, यदा-कदा गम्भीर रोगों से ग्रस्त, आपत्तिकाल में धर्म पालन करने वाला होगा।

(७५)- इस जन्मांग में उत्पन्न होने वाला मानव सामान्य कद तथा सामान्य वर्ण, धीर-वीर, शान्त तथा स्वाभिमानी और साहसी। स्वकार्य में निपुण, भाग्योदय में अनेक मित्रों का प्राप्तकर्ता, तेजस्वी और प्रभावशाली, स्वभाव से क्रुद्ध उग्र और क्रूर, विद्या-बुद्धि और वाणी में निपुण एवं पूर्ण, सन्तान की ओर से चिन्तित एवं मतभेदी और दुःखी, वृद्धावस्था में सुखी, भोगी-विलासी और स्त्री में आसक्त, पत्नी का अधिक प्रेमी, श्वसुरालय निवासी, मातृ-सुख से हीन, पिता और कुटुम्ब से विरोध करने वाला, हठी-साहसी और दृढ़ निश्चय से पूर्ण, स्वव्यवसाय स्थापना में प्रवीण, गम्भीर युक्ति तथा योजनाओं से कार्य में सक्षम, धर्म-पालन से विमुख, सुरा-सुन्दरी का योगी, ऐश्वर्यमय जीवन बिताने में अधिक धन व्ययी, परिश्रमी किन्तु गृहस्थ-संचालन में त्रुटि का अनुभवी, जल और अग्नि से संकट प्राप्त कर्त्ता, यदा-कदा मृत्यु तुल्य कष्ट-भोगी, विरोधियों पर प्रभावशाली, पराश्रय से जीवन यापन में दक्ष, ~~स्व~~ स्त्री के कारण भाग्योदय प्राप्तकर्त्ता, आपत्ति काल में ईश्वर के प्रति आस्थावान् होगा।

(७६)-इस जन्म चक्र में जन्म लेने वाला जातक स्वभाव से क्रूर और क्रोधी, हठी, साहसी, दीर्घवपु, कृशकाय, उन्नत ललाट, श्यामवर्ण, तेजस्वी, प्रभाव सम्पन्न, चंचल प्रकृति, आपत्ति और अनेक संघर्षों से युक्त। भाग्योदय में अनेक विघ्नों का प्राप्त कर्त्ता, धर्मविद् किन्तु धर्म-पालन से हीन, गुप्त तथा गम्भीर योजनाओं के निर्माण में सफल, परम सुन्दरी शिक्षिता सुशीला पतिपरायणा स्त्री का पति, किन्तु उससे मतभेद रखकर पर-स्त्री में आसक्त, पराक्रमी किन्तु उद्यमशक्ति से हीन, पिता से द्वेष रखने वाला, मातृ-भक्त, कुटुम्ब से युक्त किन्तु वैमनस्यकर्त्ता, भाई-बहिन युक्त, परन्तु उनसे मतभेद युक्त, दीर्घायु सम्पन्न, भोग विलास और ऐश्वर्य से रहने में दक्ष और अधिक व्यय के कारण चिन्तित तथा परेशान, पराश्रित, बाह्य सम्बन्धों में मधुर तथा प्रवीण, हृद्रोगी, वाक्शक्ति में पटु, धन संचय के लिये प्रयत्नशील किन्तु धन के संग्रह से हीन, वृद्धावस्था में तिरस्कृत और दुःखी तथा अनेक रोगों का भोगी, सन्तान से पूर्ण किन्तु सन्तान द्वारा अनादृत और उपेक्षित, घोर कष्टों को पाने वाला होगा।

मृ० सं० ५२८

कु० २०

(७७)- इस जन्मचक्र में जन्म लेने वाला जातक दीर्घदेही, स्वाभिमानी, स्त्री पक्ष में कुछ क्लेशयुक्त, विद्या क्षेत्र में सामान्य किन्तु विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, शारीरिक-सौन्दर्य में त्रुटियुक्त, व्यवसाय में अवरोधमय, गृहस्थ में पूर्ण सुखी, परिश्रमी और पराक्रमी, अत्यन्त साहसमय, मध्यायु सम्पन्न, भाई बहिन के सुख सम्बन्धों में अभावग्रस्त, संघर्षशील, दैनिक दिनचर्या में प्रभावशील और ऐश्वर्य तथा भोग-विलास में धन का अधिक खर्चीला, पितृ सुख सम्बन्धों में कमी का अनुभवी, शत्रु और विरोधियों के दमन में दक्ष, धर्म और ईश्वर निष्ठा से पूर्ण एवं धर्म-पालक, भाग्योदय में अवरोधयुक्त, राज्याश्रित तथा पितृ-क्षेत्र की उन्नति में संलग्न, राज्य एवं समाज में मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, उच्च पदारूढ़, यदा-कदा पराभवयुक्त, विवेक और गुप्त शक्ति में पटु, धन और कुटुम्ब वृद्धि के लिये चेष्टावान्, मातृ-सुखी, गृह-भूमि लाभ से संयुक्त, चातुर्य बल पर धन और कौटुम्बिक आनन्दमय, सुन्दर सुलक्षणा स्त्री का पति, अन्य स्त्री में भी रमण करने वाला, व्यवसाय कार्य में आदर्शवादी, सन्तान-सुख से पूर्ण, राज्य विषयक साधारण त्रुटि प्राप्त कर्त्ता होगा।

(७८)- इस कुण्डली में उत्पन्न होने वाला बालक कृशकाय, दीर्घवपु, उत्तम गौरवर्ण, परम सुन्दर, स्वाभिमानी और गम्भीर तथा शान्त एवं चंचल प्रकृति, क्षणिक क्रोधी, उदारचेता और दयालु, मध्यायु सम्पन्न, परिश्रमी एवं उद्यमी, व्यवसाय क्षेत्र में आदर्शवादी तथा सफल, मातृ-सुख भोगी, पितृ-सुख का अल्प प्रापक, पितृ-क्षेत्र की उन्नति में रत, गृह-भूमि लाभ से संयुक्त, अत्यन्त धार्मिक और ईश्वरीय निष्ठा सम्पन्न तथा धर्म-पालन में दक्ष, विद्या-सन्तानादि से पूर्ण, परम विवेकी और चातुर्य सम्पन्न, यशप्राप्ति में न्यून, अजातशत्रु, परोपकारी, भाग्योदय में विघ्नयुक्त सफल, गृहस्थ-सुख से पूर्ण, ऐश्वर्यमय धनी जैसी रहन-सहन से युक्त, काव्य-संगीत-ज्योतिष-तंत्र-मंत्र और न्यायविद, यदा-कदा घोर मृत्युतुल्य कष्ट-भोगी, शरीर के दक्षिण पार्श्व में चोट युक्त, धर्म क्षेत्र तीर्थादि करने वाला, भाई-बहिन आदि के सुख-सम्बन्धों से युक्त, सुन्दर सुलक्षणा एवं पतिपरायणा स्त्री का स्वामी तथा सम्पन्न श्वसुराल प्राप्त, आत्मबली तथा सत्य व्यवहार में कुशल, वाणी एवं स्ववाक्य की स्थापना में दक्ष, वाचाल शक्ति सम्पन्न, संघर्ष और आपत्तिकाल में धैर्यवान् तथा पुनर्जन्म से रहित होगा।

(९९)- इस जन्मांग में उत्पन्न हुआ व्यक्ति स्वाभिमानी, गौरवर्ण, कृशशरीर, दीर्घदेही, परम सौन्दर्य माधुर्य सम्पन्न, मृदुल और मधुर स्वभावी, विद्या-बुद्धि और वाणी तथा सन्तान-सुख से पूर्ण, वाक्-पटु, गम्भीर और शान्त प्रकृति, धर्म और ईश्वर के प्रति पूर्ण निष्ठा सम्पन्न तथा न्यायविद और धर्म का पूर्ण पालक, गो ब्राह्मण देव भक्त, मध्यायुयुक्त, संघर्ष काल और आपत्ति अरिष्ट के समय विवेक तथा धैर्ययुक्त, साहसी, कुटुम्ब और भाई-बहिन के प्राप्त सहयोग से पूर्ण, यदा-कदा गम्भीर रोगग्रस्त, भाग्योदय के मार्ग में अवरोधयुक्त सफल, सत्य व्यवहार शील तथा सद्व्यवहारी, परोपकारी, दयालुता के कारण धोखा पानेवाला, सुन्दर सुलक्षणा पति परायणा-स्त्री का स्वामी, धनी और मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, धन संग्रह में त्रुटि युक्त सम्पन्न, मातृ-पितृ-सुख-भोगी, भाग्यशाली, यश से हीन, अजातशत्रु, माता का पहले मरण पानेवाला, कर्मयोगी, आदर्शवादी, ऐश्वर्यमय जीवन प्राप्त, गृह-भूम्यादि लाभ से सम्पन्न, पितृक्षेत्र से अन्यत्र जीविकोपार्जनार्थ प्रवासी, तीर्थाटनी, तीर्थक्षेत्र में मृत्यु प्राप्त कर्त्ता किन्तु मरणकाल में दैव-स्मरण हीन, और आत्मबली होगा।

(१००)- इस जन्म लग्न में उत्पन्न होने वाला मनुष्य स्वाभिमानी तथा उग्र स्वभाव, तेजस्वी और प्रभावशाली, मातृपक्ष में नीरस, गृहस्थ में त्रुटियुक्त सुख प्रापक, कृशकाय, स्त्री क्षेत्र में शक्ति युक्त, दैहिक सौन्दर्य में अभावग्रस्त, नेत्रज्योति में विकार पानेवाला, भाई बहिन के सुख सम्बन्धों से हीन, स्त्रीपक्ष से कष्ट प्राप्तकर्त्ता, सन्तान और विद्या से दुःखी, पराक्रम और परिश्रम में शिथिल, विरोधी और शत्रुपक्ष के दमन में प्रवीण, यथा साध्य भाग्योदयी तथा धर्म-पालक, पितृ लाभ से वंचित, राज समाज पक्ष में चिन्तित, मान-प्रतिष्ठा और उन्नति में अवरोध प्राप्त, धन-संग्रह से नितान्त हीन, अल्प कुटुम्ब युक्त, अधिक खर्चीला, बाहरी क्षेत्रों में प्रतिष्ठा प्राप्तकर्त्ता, विघ्नों में धन का व्यय करके सफलता पाने वाला, व्यवसाय और कर्मक्षेत्र में परिश्रम से सामान्य सफल, राज्य और उससे उपार्जित आमदनी पर आश्रित, स्वार्थमय सज्जनता का व्यवहारी, धन-लाभ के लिये कोई भी कार्य करने को तत्पर, आपत्तिकाल में अधीर और दिखावटी साहसी, बाहरी आय से खर्च संचालन की शक्ति प्राप्त, शुक्र रोगी, नेत्र-ज्योति में हीनता प्राप्त, भ्रमणशील, भाग्योदय में दुर्बलता युक्त, स्वस्थ, मध्यायु प्राप्त करनेवाला होगा।

(८१)- इस कुण्डली में उत्पन्न हुआ मनुष्य शारीरिक-सौन्दर्य युक्त, तेजस्वी, स्वाभिमानी, साहस-सम्पन्न, आत्मबली, विरोध-पक्ष में विघ्न युक्त तथा चातुर्य-सफलता युक्त, स्त्री-क्षेत्र में शक्ति-सम्पन्न, सुन्दरी किन्तु क्रूरा-स्त्री का पति, अन्य स्त्रियों के रमण में निपुण, प्रभाव-सम्पन्न, परम विवेकी, भ्रातृ-पक्ष से विरोधी, गृह-भूमि लाभ से संयुक्त, विद्या, बुद्धि, विवेक तथा वाणी का उत्तम संयोग प्राप्त कर्ता, सन्तान-सम्पन्न, किन्तु सन्तान की ओर से चिन्तित, उत्तम गौर वर्ण, सामान्य क़द, पुष्ट देह, उत्तम स्वास्थ्य सम्पन्न, दीर्घायु प्राप्त कर्ता, धर्म-पालन में आस्था युक्त, परन्तु धर्म-निर्वाह से पराङ्मुख, भाग्योन्नति में विघ्न युक्त सफलता पाने वाला, ऐश्वर्यादि से पूर्ण तथा एतद्-विषयक अधिक व्ययी, कौटुम्बिक एवं भाई-बहिन के सुख-सम्बन्धों का प्राप्त कर्ता, श्रेष्ठ आय तथा विलक्षण-प्रतिभा सम्पन्न, व्यवसाय क्षेत्र में सफल, मृदुल तथा उदार चेता, शत्रुओं का दमनकारी, मान-प्रतिष्ठा में कुछ कमी पाने वाला, सुरापायी, राज्य पक्ष से किंचित् बन्धन प्राप्त कर्ता तथा पिता एवं स्त्री-पक्ष से लाभान्वित होता है।

(८२)- इस जन्मचक्र वाला जातक तेजस्वी, सामान्य वर्ण, प्रभाव तथा प्रतिभा सम्पन्न, धन-धान्य, भृत्य, वाहन, गृह, भूमि लाभ से युक्त, शत्रुओं पर गुप्त-युक्ति तथा चातुर्य के बल पर विजय प्राप्त करने वाला, यदा-कदा मृत्यु-तुल्य कष्ट प्राप्त कर्ता, स्त्री से मतभेद रखने वाला अथवा उसका त्याग करने वाला, रति-क्रीड़ा में निपुण, शारीरिक-बल तथा सौन्दर्य से युक्त, सुरापायी, पर-स्त्रीगामी, भाग्योदय तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफल, आत्मबली, दीर्घ-देही, मनस्वी, पराक्रमी, यदा-कदा आलस्य मग्न हो जाने वाला, श्रेष्ठ लाभ सम्पन्न, धर्म-पालन में रुचि रखने वाला, राज्य तथा समाज में उच्च-पद प्राप्त कर्ता, महान् प्रतिष्ठा अर्जित करने वाला, विद्या-बुद्धि तथा वाणी का धनी, दीर्घायु, हठी, दृढ़ निश्चयी, आत्मबली, परम साहसी, विवेकी, कौटुम्बिक-सुख तथा भाई-बहिनों के सुख से सम्पन्न, चिन्तनशील, विचारक, श्रेष्ठ वक्ता, गुप्त तथा गंभीर योजनाओं का निर्माता, सन्तान सुख से पूर्ण, मातृ सुख का अल्पभोगी तथा वृद्धावस्था में अपमानित होता है।

(८३) - इस कुण्डली वाला जातक शारीरिक-सौन्दर्य से युक्त, तेजस्वी तथा प्रभावशाली, सामान्य कद एवं पुष्ट शरीर वाला, आत्मबली, विद्या के क्षेत्र में न्यूनता युक्त, उत्तम विचारक, काव्य-ज्योतिष एवं कला विद्, सन्तान-सुख से हीन अथवा दत्तक-पुत्र लेने वाला, भाग्योदय में अनेक विघ्न पाने वाला, विरोध-पक्ष पर विजयी, धन-संग्रह में प्रयत्नशील, लेखक तथा विचारक, स्ववाक्य-स्थापन में प्रवीण, धर्मोपदेष्टा, अत्यधिक खर्चीला, दीर्घायु प्राप्तकर्त्ता, ऐश्वर्यशाली, गृह-भूमि का सामान्य लाभ पाने वाला, राज्योपजीवी, कार्य क्षेत्र तथा राज-समाज में कुछ त्रुटिपूर्ण मान-प्रतिष्ठा पाने वाला; कुटुम्ब, भाई-बहिन तथा माता के सुख से वंचित, पितृ-सुख का अल्प भोगी, पितृ-क्षेत्र में निवास करने वाला, आपत्तिकाल में अधीर हो जाने वाला, अनेक स्त्रियों का भोगी, मूत्रेन्द्रिय में विकार पाने वाला, साहसी, वाक्पटु, विवेकी, धर्म तथा ईश्वर के प्रति आस्थावान्, गृह-भूमि-लाभ में कमी पाने वाला, भाग्यवादी, उत्साही, परिश्रमी, आयवृद्धि हेतु नित्य सचेष्ट तथा अनेक स्थानों का भ्रमण करने वाला होता है।

(८४) - इस जन्माङ्ग वाला व्यक्ति शारीरिक-सौन्दर्य, विद्या, बुद्धि, विवेक-शक्ति तथा प्रतिभा सम्पन्न, तेजस्वी, प्रभावशाली, आत्मबली, रक्त एवं उदर-विकार ग्रस्त, स्त्री-सुख से परिपक्व, साहसी, सन्तान-सुख से पूर्ण, अनेक स्त्रियों का भोग करने वाला, कार्य-क्षेत्र में कुशल, दृढ़ लाभ तथा द्रव्य-संग्रहार्थ निरन्तर परिश्रम करने वाला, भाग्योदय में विघ्न युक्त, धर्म-पालक, विचारक तथा चिन्तनशील, काव्य-सङ्गीत एवं ज्योतिष आदि का प्रेमी; धर्म तथा ईश्वर के प्रति निष्ठावान्, परन्तु धर्म का यथावत् पालन न करने वाला, परम चतुर, रहन-सहन तथा ठाठ-बाट प्रदर्शन में अधिक खर्च करने वाला, मातृ-सुख से वंचित, पिता का अल्प-सुख पाने वाला, गृह-भूमि-लाभ में कमी पाने वाला, अनेक बार मृत्यु-तुल्य कष्टों का भोगी, अनायास द्रव्य-लाभ पाने वाला, धैर्य-सम्पन्न तथा सामान्य रत्नों का संग्रही होता है।

(८५)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न बालक तेजस्वी, गौरवर्ण, सामान्य कद, उन्नत ललाट, उद्यमी तथा उत्साही, कभी कभी आलस्य का व्यवहार, स्वाभिमानी और क्रोधी तथा धीर- वीर- गम्भीर और प्रशान्त, भाई-बहिन और कौटुम्बिक सुख-सहयोग से वंचित, भोग-विलास में दक्ष, स्त्री से मतभेद युक्त, सुन्दरी सुशीला और गम्भीरा स्त्री का पति, अन्य अनेक स्त्रियों से मिलन करने वाला, परिश्रमी और स्वकार्य में कुशल, सुन्दर स्वास्थ्य युक्त, शारीरिक सौन्दर्य एवं शक्ति सम्पन्न, धन-संग्रह से हीन तथा सर्वदा प्रयत्नशील, यदाकदा बीमारी पानेवाला, और रोग और मृत्यु तुल्य गम्भीर रोग कभी-कभी पानेवाला, मातृसुख का अल्प भोगी, साधारण पितृसुख प्राप्त, पितृक्षेत्र का निवासी, मध्यायुष्य युक्त, प्रेम-चतुर और विवेकी, राज्योपजीवी, ऐश्वर्य को महत्व देकर ठाठबाट में अधिक धन का व्ययी, कर्मक्षेत्र में जाते मानसम्पन्न तथा मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, विद्या में समुन्नत तथा उत्तम सन्तान युक्त, भाग्योदय में अनेक विघ्न युक्त, अनायास द्रव्य लाभी, भ्रमणशील, शत्रुओं पर विजयी, संगीत-काव्यादि प्रेम युक्त, चिन्तनशील और विचारक, धर्म तथा ईश्वर-आस्था युक्त होगा।

(८६)- इस जन्मयोग में जन्म लेने वाला, जातक परम तेजस्वी, स्वाभिमानी, रक्त-विकार प्राप्त, स्वभाव से क्रूर और क्रोधी, उग्र और प्रतापी, पितृक्षेत्र में समुन्नत और पितृक्षेत्र का निवासी, पिता से मतभेद युक्त, गृह-भूमि लाभ से वंचित, सामान्य पैतृक-गृह लाभी, स्त्री-सुख से हीन, भोग-विलास से वीतराग, धन-संग्रह के लिये प्रयत्नशील और सामान्य धनी, कुटुम्ब-सुख रहने भाई वैमनस्य सम्पन्न, मातृसुख से वंचित, सामान्य वर्ण, सामान्य कद प्राप्त, चतुर और विवेकी, अनुशासन में दक्ष, राज्याश्रित अथवा राज्य-विरोध युक्त बन्धन प्राप्तकर्ता, भाग्योदय के लिये संघर्षित एवं विघ्नयुक्त जीवन, समाज प्रतिष्ठा में न्यून, अश्वारोहण में पटु, कम आयुष्य प्रापक, मृत्युतुल्य कष्ट शीघ्र ग्राही, धर्म और ईश्वर निष्ठा से पूर्ण तथा धर्म का यथार्थ पालक, पराक्रमी धीर वीर एवं साहसी, शत्रुओं पर शासन करने में सक्षम, व्यवसाय कर्म से अकुशल, परधनोपजीवी, विद्या और सन्तान सुख से हीन, स्वावलम्बी, परिश्रमी, हठी और हठी, दस्यु कर्म में पटु अथवा कुत्सित और मलिन हृदय, अहंकार युक्त, अत्यन्त बल प्राप्त करने वाला होगा।

मु० सं० ३८५

(८७)- इस कुण्डली में जन्मा हुआ मनुष्य उत्तम गौरवर्ण, देहसौन्दर्ययुक्त, दीर्घवपु, पुष्ट देही, प्रतापी और स्वाभिमानी एवं विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, क्रोधी तथा स्वभाव से कुछ उग्र, विद्या और सन्तान सुख से पूर्ण, पितृ-क्षेत्र का निवासी किन्तु पिता से मतभेद युक्त सुख-सहयोग प्राप्तकर्ता, मातृ-सुख भोगी, विद्या में कुछ त्रुटि का अनुभवी, पराक्रमी और उत्साहयुक्त, मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, राज्य सहयोग से भवन प्राप्ति में सक्षम, गृह-भूमि लाभ से पूर्ण, धर्म तथा ईश्वर के प्रति पूर्ण निष्ठित, किन्तु धर्म पालन में आलस्य का व्यवहरण करने वाला, कौटुम्बिक और भाई-बहिन से मतभेद युक्त सुख सहयोग प्रापक, व्यवसाय और कर्मक्षेत्र में दक्ष, व्यवसाय द्वारा उत्तम धन संग्रही, कभी उच्च धन लाभी तथा कभी गम्भीर हानि पाने वाला, विरोधपक्ष पर चातुर्य शक्ति से सफल, भाग्योदय में विघ्नयुक्त उन्नति सम्पन्न, स्त्री से मतभेद युक्त सम्बन्ध निर्वहन करने वाला, उत्तम स्वास्थ्य और दीर्घायुष्य सम्पन्न, अरिष्टकाल में चिन्तित और साहसी, स्वार्थपालन में दक्ष, वृद्धावस्था में सन्तान से सुखी, कार्य क्षेत्र में परिश्रमी, हठी और दृढ़ निश्चय प्राप्तकर्ता होगा।

(८८)- इस कुण्डली चक्र में जन्म लेने वाला पुरुष परम तेजस्वी, स्वाभिमानी, सामान्य कद, गौरवर्ण, मध्यायु सम्पन्न, रक्त एवं उदर विकार युक्त, विवेकी-धीर-गम्भीर और शान्त, साहसी, आपत्तिकाल में साधारण अधीर, विरोधी और शत्रुओं पर प्रभावशाली तथा विजयी, चतुर, अवरोध के साथ विद्या और वाणी में पूर्ण, मातृ-सुख सहयोग तथा पिता का अल्प सुख प्राप्तकर्ता, भाई बहिन युक्त किन्तु कौटुम्बिक-विरोध सम्पन्न, पुरुषार्थ और परिश्रम से द्रव्योपार्जन एवं धन-संग्रहार्थ सतत प्रचेष्टित, दृढ़ और निश्चय आमदनी से सम्पन्न, अनायास द्रव्यलाभ प्राप्त करने वाला, सन्तान से पूर्ण, ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करने वाला, सामान्य धनी, गृहादि का पितृ लाभी, राज्याश्रित, स्त्री से मतभेद युक्त गृहस्थ, शारीरिक बल में न्यूनता का अनुभवी, कर्म तथा राज्य पक्ष में प्रभावशाली और मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, धर्मपालन और ईश्वरीय निष्ठा से पूर्ण, अगले जन्म बनाने वाला, उत्तम कर्माश्रयी, उत्तम स्वास्थ्य युक्त, यदा-कदा कार्यक्षेत्र में आलसी और हानि प्राप्तकर्ता, स्वभाव से हठी और अनुशासनप्रिय, सत्य का आदर्शवादी, भाग्योन्नति में साधारण विघ्न प्राप्त करने वाला होगा।

कु० १०

(८९)- इस जन्म-चक्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति शारीरिक-सौन्दर्य में त्रुटियुक्त, गौरवर्ण, तेजस्वी, कृशकाय, सामान्य कद, स्वाभिमानी, चंचल-प्रकृति, शान्त और गुप्त-रीति से कार्य करने में सक्षम, प्रभावशाली और चतुर, वाणी में प्रभाव रखने वाला, क्षणिक क्रोधी, धर्म-पालन तथा ब्रह्मनिष्ठा में पूर्ण, उत्तम कर्माश्रयी, राज्योपजीवी, राज्यपक्ष से द्रव्य लाभ में सम्पन्न, सत्य और आदर्शयुक्त, परम विवेकी, विद्या पक्ष में अवरोध के साथ सफल एवं पूर्ण, सन्तान सुख प्राप्त तथा सन्तान की उन्नति के लिये प्रयत्नशील, गृहस्थ में पूर्ण आसक्त, सुन्दर सुशीला, श्यामवर्णा स्त्री का पति, परिश्रमी और उत्साही तथा स्वकार्य में पूर्ण दक्ष और चतुर, चातुर्य से अनेक कार्यों में सफल, विरोध पक्ष पर वाणी-चातुर्य से विजयी, सामान्य धनी तथा गृहादि लाभी, मातृ-पितृ सुख का अल्प भोगी, मध्यायु प्राप्त, राज्याश्रित तथा राज्य से द्रव्यलाभ संयुक्त, विघ्नयुक्त भाग्योदयी, परोपकारी और दयालु, माता-पिता का भक्त तथा धर्मपालक, आलस्य के कारण धोखा और हानि प्राप्त, ऐश्वर्यादि भोगी, मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला होगा।

(९०)- इस जन्मांग में जन्मा हुआ जातक अत्यधिक स्वाभिमानी, तेजस्वी और स्वभाव से उग्र, कुटुम्ब तथा भाई-बहिन के विरोध से युक्त, शत्रुओं का प्रबल दमन कारी, काव्यादि प्रेमी होते हुए अहंकार में पूर्ण, हानि प्राप्त कर्ता, सामान्य कद, गेहुँआ वर्ण, उच्चकोटि की विद्या सम्पन्न, सन्तान का पूर्ण सुख पाने वाला, सुन्दर पतिपरायणा स्त्री युक्त, किन्तु सुख में न्यूनता, माता-पिता से पृथकत्व ग्रहण करने वाला अथवा उनका अल्पसुख संयुक्त, वाणी में प्रभावशाली, स्वार्थपरता में चतुर, उग्र तथा क्रोधी, अपनी स्वार्थसिद्धि के समय शान्त, धर्म का उग्रतर पालक और उग्रदेव का इष्ट रखने वाला, तन्त्र-मन्त्र विद्या संयुक्त, सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में न्यूनता का अनुभवी, ऐश्वर्ययुक्त, धन संग्रह और भाग्योदयार्थ चेष्टावान, गृह भूमि लाभ में त्रुटियुक्त, धन-संग्रह में सामान्य, यदाकदा गम्भीर हानि प्राप्त, मृत्युतुल्य कष्टों का ज्ञापक, पुरुषार्थ और परिश्रम से भाग्यशाली समझा जाने वाला, अनायास हानि और द्रव्य लाभ में सक्षम, द्वेषी और प्रतिकार भावना से संयुक्त, भ्रमणशील, भौतिक विद्याविद्, वाहनादि सुख से पूर्ण रहने वाला होगा।

भू० सं० १२२८

कु० १०

(१)- इस कुण्डली में उत्पन्न होने वाला मानव सामान्य कद, कृशकाय, गौरवर्ण, स्वाभिमानी, तेजस्वी, परम सुन्दर, विलक्षण प्रतिभा युक्त, उन्नत ललाट, कुछ उग्र, शान्त और गम्भीर, विवेकी, विद्या-बुद्धि में पूर्ण, माता-पिता का पूर्ण सुख प्राप्तकर्ता, पिता से मतभेद, राज्याश्रित और राज्य में उच्च-पद तथा मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, वि-कार्य करने में पूर्ण कुशल, मृदुल और उदारचेता तथा परोपकारी, ईश्वर और धर्म में आस्था युक्त तथा पूर्ण धर्मपा-लक, कौटुम्बिक तथा भाई-बहिन के सुख-सहयोग में त्रुटि का अनुभवी, धन संग्रह में न्यूनता प्राप्त, गृह-भूमि लाभ से सम्पन्न, विरोध पक्ष पर विजयी, वाक् शक्ति में निपुण, सन्तान प्राप्तकर्ता तथा उससे सुख भोगी, साधारण व्यवसाय युक्त, स्त्री-सुख में मतभेद युक्त किन्तु गृहस्थ में पूर्ण आसक्त, ऐश्वर्य में ठाठ-बाट से रहनेवाला, उत्तम कार्यों एवं रहन-सहन में अधिक खर्चीला, परिश्रमी और उत्साही, कुटुम्ब से शत्रुवत् व्यवहार पानेवाला, साहसी, यदा कदा मृत्यु तुल्य कष्टों का अनुभवी तथा मध्यमायुष्य सम्पन्न होगा।

(२)- इस कुण्डली में उत्पन्न जातक सामान्य कद, पुष्ट देह, गौरवर्ण, स्वाभिमानी, कटु-सत्य का आदर्शवादी, परम विवेकी, विद्या में न्यूनता का अनुभवी, गम्भीर और शान्त, उन्नति में सतत संलग्न, अतीव चतुर और विवेक सम्पन्न, गम्भीर गुप्त-योजनाओं का निर्माता, स्वकार्य करने में कुशल, सन्तान-सुख से वंचित, परोपकारी एवं दयालु, भाग्योदय में विघ्नयुक्त सफल, कुटुम्ब सुख से नितान्त हीन, मातृ सुख से वंचित, पिता का अल्प सुख भोगी, पितृ क्षेत्र का निवासी, सामान्य धन संग्रही, गृहादि लाभ युक्त, भाई-बहिन के सुख सम्बन्धों में त्रुटि का अनुभवी, राज्याश्रित और राज्य वेतनोपजीवी तथा राज्य-समाज में मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, परिश्रम और उत्साह केवल पर लाभ युक्त, ईश्वर एवं धर्म में पूर्ण आस्थावान्, धर्म का उपदेशक, संगीत-काव्यकला और ज्योतिष तथा तंत्र-मंत्र विद, सुन्दर सुशीला, पतिव्रता, श्यामा स्त्री युक्त, अन्य स्त्रियों में रमणकारी, ऐश्वर्य से रहने वाला, मित्र द्वारा तथा अन्य स्त्री द्वारा धोखा प्राप्त, यदाकदा गम्भीर अरिष्ट और रोगग्रस्त, मध्यमायु सम्पन्न होगा।

मु० सं० ९८३

कु० १०

(६३)— इस जन्मांग में जन्म लेने वाला जातक अधिक खर्चीला, ऐश्वर्य से रहने वाला, गोधूम वर्ण, देह सुन्दरता में कमीयुक्त, शरीर से कृश, सामान्य कद, स्वाभिमानी, क्रूर और उग्र स्वभाव, बाहरी क्षेत्र में सफल, चिन्ता से ग्रस्त, स्त्री-पक्ष में त्रुटि का अनुभवी, भाई बहिन युक्त, अनेक स्त्रियों में रमणशील, परिश्रम युक्त कार्यों और पराक्रमी, मातृ एवं पितृ सुख-सम्बन्धों में अभाव पाने वाला, अच्छी स्त्री का पति, व्यवसाय क्षेत्र में विघ्न युक्त, परिश्रम द्वारा सफलता प्राप्त, दीर्घायु प्राप्तकर्ता, उत्तम स्वास्थ्य युक्त, मूत्रेन्द्रिय या गुह्य स्थान का रोगी, सुख में रोग प्राप्तकर्ता, व्यापार में दक्ष और उन्नतिशील, विद्या में न्यून किन्तु विवेकी, सन्तान सुख में त्रुटि प्राप्तकर्ता, समाज में प्रभावशाली, भाग्योन्नति में विघ्न युक्त सफलता प्राप्तकर्ता, शत्रुओं का गुप्त रीति से उपाय का शमनकारी, कौटुम्बिक सुख-सहयोग का भोगी, राज्य क्षेत्र में गौरव प्राप्त, राज्यनीति का जानकार, धन संग्रहार्थ शक्ति का प्रयोगकारी, मातृ-पितृ सुख प्राप्तकर्ता, गृह-भूमिलाभ से सम्पन्न, धर्म में आस्थावान् किन्तु धर्मपालन में हीन, गृहस्थ भोगों में अभिरुचि सम्पन्न होगा।

(६४)— इस जन्म चक्र में जन्म लेने वाला पुरुष सामान्य कद, कृशदेही, गोधूम वर्ण, विद्या में त्रुटि युक्त, स्वाभिमानी और उग्र क्रोधी, अग्नि से भय पाने वाला, स्त्री एवं भोगादिकों में पूर्ण आसक्त तथा तद्विषय में अधिक धन व्ययी, धन संग्रहार्थ निरन्तर प्रयत्नशील किन्तु धन-संग्रहहीन, स्त्री से मतभेदी, गुप्त स्थान का रोगी, कौटुम्बिक एवं मातृ-सुख में न्यून, पितृ सुखी, सन्तान सुख में न्यूनता का अनुभवी, परम विवेकी-चतुर-एवं साहसी, व्यवसाय में सफल किन्तु भाग्योदय में विघ्नों से ग्रस्त, भाई-बहिन युक्त परन्तु विरोध युक्त सम्बन्धों का प्राप्तक, उद्यमी और उत्साही, उदर के नीचे के भाग में मृत्यु तुल्य कष्ट पाने वाला, राज्य-समाज में प्रभावशाली, अन्य स्थानों में भ्रमणशील, पितृ क्षेत्र का निवासी, परिश्रम से उन्नति करने वाला, सामान्य गृहादि लाभ से युक्त, बुद्धिबल और चातुर्य से शत्रुओं पर प्रबल, मुकदमेबाज, धूर्त और उद्धत, मनस्वी, गम्भीर योजनाओं के निर्माण में दक्ष, साहस से अनेक कार्यों में सफलता प्राप्त, धर्म के प्रति आस्थावान् किन्तु धर्म पालन की अपेक्षा भोग-विलास को महत्व देने वाला होगा।

(९५)- इस जन्मलग्न में उत्पन्न होने वाला व्यक्ति दीर्घदेही, श्यामवर्ण, स्वाभिमानी, क्रूर तथा उग्रतर क्रोधी, धन और पुरुषार्थ को अधिक महत्व प्रदान करने वाला, परिश्रमी और उत्साही, गृह-भूमि धनधान्य के लाभ से पूर्ण, धर्म और ईश्वर के प्रति अनास्थावान्, स्त्री से मतभेदी, भोग-विलास की चिन्ता से परे, विद्या और सन्तान-सुख में त्रुटि का अनुभवी, अन्य स्त्री में आसक्त, शारीरिक सौन्दर्य में त्रुटि युक्त, भाई बहिन और कौटुम्बिक-सुख सहयोग से अभावग्रस्त तथा उनका विरोधी, भाग्योन्नति और व्यवसाय में विघ्नयुक्त सफल, बाहरी सम्बन्ध स्थापित करने में सक्षम और दक्ष एवं मधुर, शत्रु और विरोधियों का गम्भीर शमनकारी, विवेक हीन, स्वार्थपरता के अतिरिक्त किसी की चिन्ता न करने वाला, उदरस्थान में रोग का अनुभवी, मातृ-सुख से वंचित, बलोन्मत और पितृद्वेषी, पितृक्षेत्र का निवासी किन्तु भ्रमणकारी, सर्वथा मलिनचित्त, परोपकार भावना हीन, आत्मबल से रहित, साहस-सम्पन्न, समाज में न्यूनतायुक्त प्रतिष्ठा और प्रभाव को प्राप्त करने वाला होगा।

(९६)- इस जन्मचक्र में उत्पन्न हुआ पुरुष सुन्दर गौरधूम्र वर्ण, तेजस्वी, स्वाभिमानी, विवेकी और उग्र स्वभाव, आपत्ति काल में धैर्यहीन, राज्यक्षेत्र में कुछ बन्धन का योग पाने वाला, सामाजिक प्रतिष्ठायुक्त, गृह-भूमि लाभ युक्त, धनकोष की वृद्धि के लिये निरन्तर चेष्टित किन्तु द्रव्य-संग्रह में न्यून, उत्साही और पराक्रमी परिश्रम द्वारा अनेक कार्यों में सफलता प्राप्त, भाग्योन्नति में संलग्न, परन्तु विघ्नयुक्त भाग्योन्नत, भाई बहिन से पूर्ण किन्तु उनके सुख सहयोग और कौटुम्बिक सुख में न्यूनता का अनुभवी, धर्म पालक और ऐश्वर्य तथा भोगादिकों में संलग्न, पितृ सुख से हीन, मातृ-सुख प्राप्त कर्त्ता, विलम्ब से उपाय द्वारा सन्तान पाने वाला, सन्तान सुख से हीन, वृद्धावस्था में सुखी, सुन्दर सुशिक्षिता सुशीला पतिपरायणा स्त्री का पति, किन्तु उससे मतभेद युक्त सम्बन्ध रखने वाला, बाधायुक्त विद्याक्षेत्र में सफल, शत्रु और विरोध पक्ष पर प्रभावशाली, ऐश्वर्य और रहन-सहन में अधिक व्ययी, अर्शादि रोग से पीड़ित, मृत्यु-तुल्य कष्टों का अनुभवी, मध्यायु प्राप्त करने वाला होगा।

(९७)- इस कुण्डली में जन्म लेने वाला मानव सामान्य कद, पुष्टदेही, गोधूमवर्ण, शारीरिक सौन्दर्य सम्पन्न, प्रतिभावान, स्वाभिमानी, आदर्शवादी, सत्य-व्रत धारी, उन्नत ललाट और क्रुद्ध क्रोधी तथा उग्र, परम साहसी और उत्साही, पिता से मतभेद युक्त, मातृ-सुख से न्यून, पिता का पूर्ण सुख भोगी, पितृ क्षेत्र का निवासी और पितृ क्षेत्र में ही उन्नतिशील, दीर्घायु प्राप्त किन्तु अनेक अरिष्टों का प्राप्तकर्ता, धन-संग्रह के लिये और भाग्योन्नति में सदा प्रयत्नशील और जनकोष- गृह भूमि- धन- धान्य- रत्नादि से परिश्रम द्वारा पूर्णता प्राप्त, सुन्दर सुशीला पतिव्रता स्त्री का प्राप्तकर्ता, गृहस्थ भोगों की चिन्ता से मुक्त उन्नति में चेष्टित, ईश्वर और धर्म का पालक, विद्या में बाधायुक्त/पुष्ट, विलम्ब से सन्तान प्राप्तकर्ता, विवेकी, गम्भीर योजनाओं में पटु, राज्य और समाज में पूर्ण प्रतिष्ठा सम्पन्न, उदररोग से पीड़ित, विरोधियों का विजेता, यश में न्यूनता प्राप्त, सामान्य परोपकारी, तीर्थाटन करने वाला, सत्यवादितादि से युक्त, कौटुम्बिक सुख में न्यूनता पाने वाला होगा।

(९८)- इस कुण्डली-चक्र में उत्पन्न होने वाला व्यक्ति दीर्घ और पुष्ट देही, स्वाभिमानी, अत्यधिक बुद्धिमान, धन- धान्य- गृह भूमि लाभ से युक्त, धर्म कार्यों को निरन्तर करने वाला, परलोक को महत्व प्रदान करने वाला, अधिक पैसा, विलक्षण प्रतिभा युक्त, उन्नत ललाट, ऐश्वर्य सम्पन्न, भोगादि में अनासक्त, तेजस्वी और प्रभावशाली, वाक् शक्ति में प्रवीण और शास्त्रवेत्ता, विद्याक्षेत्र में पूर्णता प्राप्त, दैवी प्रतिभा सम्पन्न, परोपकार और उत्तम कार्यों में धनव्यय करने वाला, सुन्दर-सुशीला मिष्टभाषिणी- अतिथि सत्कारक- पतिव्रता स्त्री का स्वामी, धन संग्रह से हीन, सामान्य धनी, गृहादि लाभ से पूर्ण, रोग और अरिष्ट युक्त दीर्घायु प्राप्त, अजातशत्रु, अग्नि से भय अथवा अरिष्ट पाने वाला, व्यवसाय क्षेत्र में विघ्न युक्त सफल, राज्य और समाज में पूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त, धर्मोपदेशक, आदर्श, श्यामवर्णा स्त्री प्रापक, पुत्र-सुख प्राप्त, तीर्थ क्षेत्र का निवासी और प्रवासी तथा तीर्थक्षेत्र में अनायास मृत्यु प्राप्त करने वाला, पुनर्जन्म में महान् उच्चकोटि के परिवार में जन्म लेने वाला महापुरुष होगा।

मू० सं० ५३२

कु० २०

(९९)- इस कुण्डली में उत्पन्न होने वाला मनुष्य स्वाभिमानी, स्वभाव से कुछ उग्र और क्रोधी, रक्तविकारयुक्त, शारीरिक सौन्दर्य में त्रुटियुक्त सम्पन्न, गोधूमवर्ण, पुष्ट देही, सामान्य कद, उन्नत ललाट, विद्या-बुद्धि से पूर्ण, तेजस्वी, प्रतापी, रोगिणी श्यामा स्त्री प्राप्तकर्त्ता, उदरविकारी, स्त्री के कारण भाग्यवान्, परिश्रमी और लगनशील, भाग्योदय में कुछ त्रुटि और विघ्नों से संयुक्त, धर्मपालक और ईश्वर के प्रति पूर्ण आस्थावान्, दृढ़ निश्चयी और हठी, विलक्षण प्रतिभासम्पन्न, मननशील और विचारक, स्वयं ही हृदय में सन्तप्त रहने वाला, परम चतुर और विवेकी, भाई-बहिन और कुटुम्ब के सुख सहयोग में न्यूनता प्राप्त, उत्तम आयु सम्पन्न, द्रव्य लाभ में त्रुटियुक्त, व्यवसाय क्षेत्र में सफल, धन-संग्रह में अभावग्रस्त, सन्ततियों में पुत्र से सुखी, राज्य और सामाजिक मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, आपत्ति काल में धैर्यसम्पन्न, मातृ-पितृ सुख प्रापक, शत्रु और विरोधियों को वाक् चातुर्य से परास्त करने में सफल, ऐश्वर्यसम्पन्न, भोग-विलास में दक्ष किन्तु स्त्री की अपेक्षा धर्म को महत्व प्रदान करने वाला, तीर्थाटनी, तीर्थक्षेत्र में सामान्य गृह-भूमि लाभ तथा वहीं मरण प्राप्त करने वाला होगा।

(१००)- इस जन्म-चक्र में जन्मा हुआ जातक तेजस्वी, गोधूमवर्ण, सामान्य कद, पुष्ट देही, प्रभावशाली, परम चतुर और विवेकी, कर्मयोगी, ईश्वर और धर्म के प्रति पूर्ण निष्ठ तथा धर्मकार्यों में दक्ष, कुछ क्रोधी एवं उग्र तथा सहज ही शान्त, स्वकार्य साधन में कुशल, समाज और राज्य क्षेत्र में प्रतिष्ठा सम्पन्न तथा राज्याश्रित, राज्य वेतनोपजीवी, धन-संग्रह और उन्नति के लिये निरन्तर परिश्रम द्वारा चेष्टित, विद्या में पूर्ण स्नातक, सन्तान-सुख विलम्ब से प्राप्त कर्त्ता, ऐश्वर्य भोगी और रहन-सहन में रईसों जैसा रहने वाला, सुन्दरी शिक्षिता, श्यामा रोगयुक्ता स्त्री का पति, गृहस्थासक्त, अन्य में भी रमणशील, उत्साही और साहस बल पर अनेक कार्यों में सफल, भाग्योदय में विघ्न प्राप्तकर्त्ता, मध्यायुष्य सम्पन्न, माता-पिता का अल्प सुख भोगी, पैतृक गृहादि का लाभी, गुप्त चातुर्य से विरोधियों पर सफल, व्यवसाय में दक्ष, सामान्य धन सम्पन्न, रक्तविकार प्राप्त कर्त्ता, गुह्य स्थान का रोगी, स्त्री की ओर से चिन्तित, हृदय में आन्तरिक दुःख का अनुभवी, अरिष्ट युक्त उत्तम स्वास्थ्य भोगी, यदा-कदा आलस्य के कारण गम्भीर हानि प्राप्त, दृढ़ आय में कमी का अनुभव करने वाला होगा।

(२०१)-इस कुण्डली में उत्पन्न हुआ मानव परम तेजस्वी, प्रतापी, स्वाभिमानी, कुछ उग्र और क्रोधी स्वभाव, अनुशासन प्रिय, गोधूमवर्ण, अन्तर्द्वेष से स्वयं ही संतप्त, दृढ़ निश्चयी और हठी, सामान्य कद, पुष्ट देही, विवेक मय गम्भीर योजनाओं के निर्माण में दक्ष, परिश्रमी और साहसी, साधारण अवरोध के साथ विद्या में प्रवीण, सन्तान सुख भोगी, पराक्रमी तथा प्रतिभा-सम्पन्न, राज्य क्षेत्र में उच्च पदारूढ़ मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, मातृ और पितृ-सुख से सहयोग प्राप्त, सुन्दर सुशीला श्यामवर्णा उदर विकार युक्ता स्त्री का पति, स्वयं भी गुप्त रोग से पीड़ित, गृहस्थासक्त, स्त्री से कुछ मतभेद युक्त सम्बन्ध रखने वाला, अन्य स्त्रियों के साथ भोग-विलास में दक्ष, भाग्योदय में अवरोध के साथ उन्नत, धर्म और ईश्वर के प्रति निष्ठा सम्पन्न, ऐश्वर्य और रहन-सहन में धन का व्ययी, परिश्रम द्वारा व्यवसाय में सफल तथा धन-संग्रहार्थ सतत चेष्टित और गृह-भूमि धन से सम्पन्न, पिता से कुछ मतभेद रखने वाला, भ्रमणशील, दीर्घायु प्राप्त कर्ता, शत्रुओं का विजेता, आमदनी में सामान्य अवरोध युक्त होगा।

(२०२)-इस जन्म-चक्र में उत्पन्न होने वाला बालक मातृ सुख तथा कौटुम्बिक और भाई बहिन के सुख सम्बन्धी में त्रुटि प्राप्त कर्ता, शत्रु और विरोधियों के दमन में दक्ष, विद्या में पूर्ण स्नातक, प्रतापवान, तेजस्वी, प्रतिभा सम्पन्न, अनेक विद्याओं में पटु, स्वाभिमानी, परम विवेकी, चिन्तनशील और विचारक, गौरवर्ण, दीर्घदेही और कृश, वाक्शक्ति में प्रवीण, माता-पिता-ईश्वर का पूर्ण भक्त तथा धर्म-पालन में धन का व्ययी, ऐश्वर्य युक्त जीवन भोगी, अधिक व्यय से चिन्तित, सन्तान-सुख से हीन, दत्तक पुत्र लेने वाला, कन्या-पिता, तीर्थाटनी, गृह-भूमि लाभ में त्रुटि युक्त, राज्य और समाज सम्बन्धी लोकप्रियता युक्त, स्त्री और गृहस्थ की अधिक चिन्ता न करने वाला, तीर्थक्षेत्र का निवासी और वहीं मृत्यु प्राप्त कर बैकुण्ठ गन्ता, मध्यायुष्य युक्त, धन की अपेक्षा धर्म को अधिक महत्व प्रदाता, विरोध युक्त, सामान्य रोगी, उत्तम स्वास्थ्य युक्त, हृद्-रोग पीड़ित, पिता से मतभेदी, कुछ विभिन्नता प्राप्त, गृहस्थ की ओर से उदासीन, भाग्योन्नति में विघ्न युक्त, द्रव्य संग्रहार्थ परिश्रम पराक्रम हीन, यदा कदा द्रव्य-लाभी, सामाजिक कुशल सम्पन्न होगा।

(१०३)- इस जन्म लग्न में जन्म लेने वाला मनुष्य उत्तम गौरवर्ण, दीर्घदेही, कृशवपु, सभी से मित्रता रखने में दक्ष, विद्यापक्ष में कुछ न्यूनता प्राप्त, किन्तु अनेक विद्याओं और वाक्वाणी में चतुर, परोपकारी और दयालु, परम तेजस्वी और आत्मबल तथा इष्टबल युक्त, रक्त-विकारी, तेजस्वी और प्रतापवान, व्यवसाय क्षेत्र में सफल, सुन्दर आय युक्त, राजपक्ष-सम्बन्धों में मधुर, प्रतिभा तथा प्रभावशाली, परम विवेकी, धर्म और ईश्वर के प्रति निष्ठावान, गौ ब्राह्मण देव-भक्त, धर्मपालन में प्रवीण, धर्मकार्यों में धन व्ययी, तीर्थ-निवासी और वहीं हृदरोग से पीड़ित अथवा रक्तदोष से देहत्याग कर बैकुण्ठ गामी, पुनर्जन्म से रहित, अतीव विवेकी, भाग्योन्नत, माता-पिता का पूर्ण सुख प्राप्त, मध्यमायुष्य प्राप्त, मृत्यु तुल्य अरिष्टों का प्राप्तकर्ता, उद्यमी और उत्साही, परिश्रम से भाग्योन्नत, सुशीला शिक्षिता पति-धर्म-परायणा स्त्री का स्वामी, सन्तान का सामान्य सुखी अथवा सुखविहीन, गृहादि लाभ युक्त, राज सम्बन्ध हीन और समाज में सुयश प्रापक, विलक्षण बुद्धि, नवीन वस्त्रों का धारक, द्रव्य की ओर से चिन्तायुक्त होगा।

(१०४)- इस जन्मलग्न में जन्मा हुआ व्यक्ति पुष्ट देही, गौरवर्ण, दीर्घवपु, विद्या में पूर्ण स्नातक, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, सन्तान का उत्तम सुख प्राप्तकर्ता, मातृ-पितृ-भ्रातृ-मित्र एवं कौटुम्बिक सुख-सम्बन्धों से युक्त, प्रतिभा सम्पन्न, स्वाभिमानी, यथार्थ धर्म पालक और ईश्वर के प्रति निष्ठायुक्त, कठोर और दृढ़ निश्चय सम्पन्न, अनुशासनप्रिय, विरोध-पक्ष पर प्रभावी, मानवता-सम्पन्न, सदा परिश्रमी और उत्साही, व्यवसाय में पटु और सफल, राज्य और समाज में पूर्ण प्रतिष्ठा-मान प्राप्तकर्ता, भाग्यशाली, पैतृक धन से युक्त, दीर्घायु प्राप्त करने वाला, तीर्थक्षेत्र में नदीतट का निवासी, धन-धान्य-गृह-भूमि-भृत्य-वाहन-रत्नादि सुखोपभोगी, सुन्दर गौरवर्णा सुशिक्षिता पति निष्ठायुक्त स्त्री का पति, भोग-विलास में दक्ष, गृहस्थ में सामान्य अनुकूल, विलक्षण प्रवीणता प्राप्त, वाक्वाणी द्वारा स्ववाक्य-स्थापना में दक्ष, भाग्योदय में यदाकदा हानि प्राप्तकर्ता, रक्तविकारी, दैहिक सौन्दर्य में कुछ त्रुटि युक्त, परोपकार करने वाला, गुणग्राही, गुणीजनों का सम्मान कर्ता, ऐश्वर्य-सम्पन्न होगा।

(२०५)- इस कुण्डली में उत्पन्न होने वाला मनुष्य ऐश्वर्य और भोग-विलास में अधिक व्यय करने वाला, कठोर हृदय, दीर्घवपु, अतीव तेजसम्पन्न, क्रोधी, स्वभाव से उग्र, विद्या में प्रवीण, गौरवर्ण, कृशशरीर, नेत्रज्योति में त्रुटियुक्त, परिश्रमी और उत्साही तथा अत्यन्त साहसी, धर्म-पालन और भाग्योन्नति में निरन्तर विघ्नों का प्रापक किन्तु भाग्योन्नत, अनेक स्त्रियों का भोगी, रक्तविकारी, विरोध-पक्ष पर गुप्त उपायेन विजय प्राप्तकर्ता, मातृ-सुख सम्बन्धों में कमी प्राप्त, पिता से मतभेद युक्त, सन्तान प्रापक किन्तु सन्तान-सुख वर्जित, कुचेल और कुमार्गगामी सन्तान का पिता, धर्म पालन से विमुख, सुन्दरी सुशीला स्त्री का स्वामी, परन्तु उसे कष्ट प्रदाता, उद्धत और बलोन्मत्त, सदैव धनाढ्य, भ्रमणशील, स्वयं हृदय में चिन्तित, निश्चित और दृढ़ आय से वर्जित, पराक्रमी, परिश्रमशील द्वारा विघ्नयुक्त व्यवसाय में सफल, कभी उच्च द्रव्य लाभ और कभी ऊँची हानि प्राप्त करने वाला, धन-संग्रह हेतु सदा चेष्टित, तथा द्रव्य प्राप्ति में सफल, पितृ-सुख का अल्प भोगी, अत्यन्त साहस से कार्यक्षेत्र में रत, सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होगा।

(२०६)- इस जन्मयोग में जन्मा हुआ जातक गौरवर्ण, सामान्य कद, पुष्टदेही, परम साहसी, पराक्रम और परिश्रम से सामान्य विघ्न पाता हुआ व्यवसायक्षेत्र में सफल और भाग्योन्नत, तेजस्वी और स्वाभिमानी, अनुशासनप्रिय, उत्साही, परम चतुर और विवेकी, संगीत-काव्यादि प्रेमी, विद्या और सन्तान-सुख से पूर्ण, मातृ-सुख वर्जित, पितृभक्त, अल्पस्थान प्राप्तकर्ता, गृह-भूमिलाभ से युक्त, मध्यमायु प्राप्त, भोग-विलास में दक्ष, सुन्दरी सुशीला गौरवर्णा स्त्री से संयुक्त, गृहस्थ में पूर्ण आसक्त, ऐश्वर्यमय जीवन युक्त, ऐश्वर्य एवं उत्तम कार्यों में अधिक धन व्यय करने वाला, सामान्य विरोधयुक्त, वाक्शक्ति से प्रभावशाली, आदर्श और भाग्यवादी, ईश्वर में पूर्ण निष्ठावान किन्तु धर्मपालन से हीन, धर्म की अपेक्षा मानवता को अधिक महत्त्व देने वाला, परोपकारी और दयालु, सामान्य कठोर और हठी, रामपुत्र का पिता, भाई बहिन के सुख सम्बन्धों और सहयोग से अभावग्रस्त, साहस से गुप्त कार्य करने में दक्ष, यदा-कदा द्रव्य लाभ में त्रुटि प्राप्तकर्ता, मातृ-पक्ष से सुखी, राज्य और सामाजिक प्रतिष्ठा-सम्पन्न होगा।

३२८, मे. २ कु. ० १०

(१०७)- इस जन्म-चक्र में उत्पन्न होने वाला मनुष्य सामान्य कद, उन्नत ललाट, पुष्ट देही, उदर एवं मूत्रेन्द्रिय के विकारयुक्त, गौरवर्ण, उदार और दयालु, साहसी तथा विवेकी, कुछ हठी, विद्या-बुद्धि में पूर्णता प्राप्त, संगीत काव्यादि प्रेमी, ऐश्वर्य-सम्पन्न तथा ऐश्वर्य में अधिक व्ययी, उत्तम गुणी मित्र-मण्डल सन्तान का पिता, मातृ-सुख सम्बन्धों में कमी का अनुभवी, मध्यमायु प्राप्त, भाग्यशाली, साहस और घोर श्रम से व्यवसाय क्षेत्र में सफल, स्त्री से मतभेदयुक्त सम्बन्ध, सुन्दरी गौरांगना का स्वामी, उत्तम और उच्च कोटि का व्यापारी, धर्म का पालन करने में दक्ष, धन संग्रहार्थ निरन्तर चेष्टित और अच्छा धन-संग्रही, दृढ़-द्रव्य लाभ पाने वाला, भोग-विलास में दक्ष, रक्त-विकारी, नेत्र ज्योति में न्यूनता पाने वाला, भाई-बहिन के सुख-सम्बन्धों से हीन, राज्य पक्ष से कुछ बन्धन प्राप्त कर्ता, पितृ क्षेत्र का निवासी एवं पितृ-क्षेत्र में समुन्नत, भ्रमण काल में धोखा और हानि ग्रस्त, गृह भूम्यादि का लाभ पाने वाला, समाज में मान प्रतिष्ठा सम्पन्न, विरोधियों द्वारा भी हानि पाने वाला होगा।

(१०८)-इस कुण्डली में जन्म लेने वाला बालक कृशकाय, दीर्घशरीर, गौरवर्ण, ऊँचा कद, उन्नत ललाट, तेजस्वी और स्वाभिमानी, प्रभावशाली व्यक्तित्व से पूर्ण, विद्या में पटु, कठोर प्रकृति, स्वकार्य एवं स्वार्थपरता में दक्ष, अत्यधिक उत्साही और साहसी, पराक्रम में न्यूनता प्राप्त, पितृ-सुख सहयोग का प्राप्त कर्ता, उग्र और क्रूर स्वभाव एवं राज्य क्षेत्र में बन्धन प्राप्त कर्ता, व्यवसाय क्षेत्र में पूर्ण सफल और भाग्यशाली, धर्म-पालक, परन्तु मानवतावादी भोगैश्वर्य में धन का व्ययी, परलोक आदि को न मानने वाला, निरन्तर परिश्रम द्वारा भाग्योन्नति में संलग्न तथा सफल, सामाजिक मान प्रतिष्ठा में अग्रगामी, सुन्दरी स्त्री का पति, भोग-विलास की ओर साधारण ध्यान देने वाला, धन संग्रह में दक्ष, गृह-भूमि-भृत्य-वाहन से पूर्ण, कुछ कृपण प्रकृति, नेत्र ज्योति में मन्दता का अनुभवी, उदर रोग या गुप्त रोग ग्रस्त, मातृ-सुख सम्बन्ध एवं कौटुम्बिक तथा भाई-बहिन के सुख-सहयोग से वंचित, विरोधियों द्वारा हानि प्राप्त कर्ता, हठी स्वभाव वाला, दृढ़ लाभ से सम्पन्न, भ्रमणशील होगा।

मु० सं० ५३६

कु० १०

(१०९)- इस कुण्डली में जन्म लेने वाला मनुष्य तेजस्वी, स्वाभिमानी, सामान्य वर्ण, देहसौन्दर्य में कुछ त्रुटि युक्त, प्रभावशाली और उग्र स्वभाव, हृष्टदेही, गुप्त-योजनाओं द्वारा अपने कार्य में रत, साधारण क्रोधी, अनुशासनप्रिय और दक्ष, चतुर तथा विवेकी, सहज ही शान्त, उद्यमार्थ सर्वथा चिन्तित, भाई-बहिन और कौटुम्बिक शक्ति तथा उनके सहयोग में त्रुटियुक्त; श्यामवर्णा स्त्री प्राप्त, किन्तु स्त्री से मतभेदी; व्यवसाय हेतु निरन्तर प्रयत्नशील तथा चिन्ता परिश्रम से सफल, यदाकदा भाग्योन्नति में विघ्न प्राप्त, बाहरी मधुर-सम्बन्धों द्वारा अच्छा द्रव्यलाभी और राज्य तथा सामाजिक मान-प्रतिष्ठा से सम्पन्न, रईसी से रहने वाला एवं ऐश्वर्य हेतु धन खर्च करने में पटु, सन्तान में त्रुटि युक्त सुख प्राप्त, विद्या पक्ष में आन्तरिक कमी का अनुभवी, गौरव-प्राप्ति को चिन्तित, मातृ-सुख में हीनतायुक्त, पिता का अल्प सुख भोगी तथा पितृसेवक का ही निवासी और पितृ-क्षेत्र में समुन्नत, गृह-भूम्यादि का सुख प्राप्त, धन संग्रहार्थ प्रयत्नवान तथापि धन-संग्रह में त्रुटि युक्त, चतुर और साहसी, उत्तम आयु प्राप्त, शत्रुओं से संघर्षरत, रक्तविकारी होगा।

(११०)- इस कुण्डली में जन्मा हुआ जातक धीर-वीर साहसी, तेजस्वी, कृशकाय, दीर्घवपु, क्रोधी और विवेकी, स्व-कार्य-साधन में दक्ष, रक्तविकारी, कृष्णवर्ण, राज्याश्रित और राज्यवेतनोपजीवी, मातृ-सुख में कमी का अनुभवी, गम्भीर गुप्त योजनाओं के निर्माण में पटु, भाग्योदय में अनेक विघ्न और संघर्षों का प्राप्तकर्ता, उत्साही और उद्यमी, परिश्रम द्वारा अपने अनेक कार्यों में सफल, सुरा-सुन्दरी का सेवी, भोग-विलास में दक्ष, सुन्दरी शिक्षिता रोगिणी स्त्री का पति और उससे मतभेद रखने वाला, कुछ उग्र और क्रोधी स्वभाव, व्यवसाय में विघ्नयुक्त, धन संग्रहार्थ सतत चेष्टित किन्तु धन-संग्रह के अभाव से ग्रस्त, सामान्य गृहभूमि का लाभी, ऐश्वर्य में धन का अधिक व्ययी, सन्तान-सुख और विद्या-पक्ष में त्रुटियुक्त, राज्य और सामाजिक मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, वाक्-चातुर्य और बुद्धि तथा युक्तिबल से संयुक्त, पिता का अल्प सुख प्राप्तकर्ता, पितृक्षेत्र का निवासी और पितृक्षेत्र में समुन्नत, अग्नि और शस्त्रादि से भययुक्त, गुप्त स्थान का रोगी तथा अरिष्टयुक्त दीर्घायु प्राप्त, भाई-बहिन और कुटुम्बयुक्त किन्तु उनके सुख-सहयोग से वंचित, हृदय में चिन्तित तथा सर्वदा सन्तप्त रहने वाला अधार्मिक होगा।

मु० सं०

कु० १०

(१११)- इस जन्म लग्न में जन्म लेने वाला जातक कृशदेही, सामान्यकद, उत्तम गौरवर्ण, तेजस्वी और प्रभावशाली, विद्या और सन्तान-सुख से पूर्ण, शारीरिक-सौन्दर्य युक्त, स्वाभिमानी और चतुर, सामान्य क्रोधी और रक्तविकार युक्त, अत्यन्त गम्भीर और शान्त, मृदुल तथा हँसने-हँसाने वाला, विवेकशील; सुन्दर, सुलक्षणा, शिक्षिता, गौरवर्णी, पतिव्रता स्त्री युक्त, भोग-विलास में दक्ष, साधारण विरोध युक्त, पर चातुर्य से विजयी, ऐश्वर्यमय रहन-सहन में अधिक व्ययी, परोपकारी और दयालु, उत्तम व्यापारी, धर्म-पालक और गो-ब्राह्मण तथा ईश्वर का भक्त, सदाचारी एवं पवित्र, कभी उच्च हानि तथा कभी उच्च लाभ युक्त, गृह-भूमि-धन-धान्य-भृत्य-वाहनादि में सम्पन्न, उत्तम धन-संग्रही, कर्मयोगी, सामाजिक और राजकीय मान प्रतिष्ठा सम्पन्न, चोरों से भय पाने वाला, पितृ एवं मातृ सुख का भोगी, माता-पिता का प्रतिपालक, भाई-बहिन के सुख सहयोग से युक्त, कुटुम्ब से विरोध प्राप्त, सेवाकार्य क्षेत्र में सफल, बाहरी सम्बन्धों में मधुरता प्राप्त, चपल प्रकृति, वाक्‌वाणी में प्रभावशाली, पितृक्षेत्र में उन्नतिकर्ता होगा।

(११२)- इस जन्मांग में उत्पन्न हुआ मनुष्य सामान्य कद, उन्नत ललाट, गौरवर्ण, कृशकाय, प्रभावशाली व्यक्तित्व से सम्पन्न, उदारचेता एवं परोपकारी, ऐश्वर्य से रहने में पटु और अधिक व्ययी, उत्तम धर्म पालक तथा गो, ब्राह्मण और स्त्री तथा ईश्वर में आस्थावान, भाग्यशाली, अत्यन्त मधुर और चंचल प्रकृति, विद्या और सन्तान-सुख से पूर्णतः प्राप्त, अनायास कभी उच्च हानि और लाभ दोनों का प्राप्तकर्ता, उत्तम सफल व्यवसायी, आय की अपेक्षा खर्च के आधिक्य से चिन्तित, अग्नि और शस्त्र तथा दस्युओं से भय प्राप्त, युवावस्था प्राप्त, मातृ-पितृ सुख का भोगी, माता-पिता की सेवा से सम्पन्न, उत्तम लक्षण युक्त, वाक्‌वाणी में चतुर और शान्त एवं विवेकी, भोग-विलास में दक्ष, युवावस्था में अरिष्ट भय प्राप्त; सुन्दर, पतिव्रता, गौरांगना स्त्री का पति, राज्य एवं सामाजिक मान प्रतिष्ठा प्राप्त, साधारण विरोध प्राप्त, भाई-बहिन युक्त सुखी, किन्तु कुटुम्ब से विरोध पाने वाला, सदाचार सम्पन्न, आपत्तिकाल में अधीर, साधारण साहसी, बाह्य-मधुरता प्राप्त, वाणी में मृदुल, गृह-भूम्यादि धन-धान्य सम्पन्न होगा।

(११३)- इस जन्मलग्न में जन्म लेने वाला जातक कृशकाय, दीर्घबिन्दु, परम धीर और साहसी, उत्तम गौरवर्ण, मृदुल और उदारचेता, गम्भीर शान्त, परोपकारी, ईश्वर और धर्म के प्रति पूर्ण निष्ठ, विद्या-बुद्धि और सद्गुणी सन्तान का उत्तम सुख प्राप्तकर्ता, भाई-बहिन से सुखी किन्तु कुटुम्ब से विरोध ग्रस्त, अग्नि और चोरों से भय पाने वाला, परम चतुर और विवेकी, स्वाभिमानी एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, माता-पिता का पूर्ण सुख प्राप्तकर्ता, गृह भूमि-धनकोष-भृत्य-वाहनादि से सुखी, सदाचारी और पवित्र, वाक् शक्ति में मधुर तथा चतुर, विरोधपक्ष पर विजयी, उच्चकोटि का सफल व्यवसायी, कार्यक्षमता युक्त, सुन्दर पतिव्रता शिक्षिता गौवर्णा स्त्री प्राप्तकर्ता, भाग्यशाली, भोग-विलास में दक्ष, अधिक व्यय के कारण साधारण चिन्तित, दृढ़ आय सम्पन्न, मातृ-पितृ भक्त, युवावस्था में ही मृत्यु भय से ग्रस्त, बाह्य सम्बन्धों की मधुरता युक्त राज्य एवं सामाजिक मान-प्रतिष्ठा प्राप्तकर्ता, चिन्तनशील और विचारक, विद्वान्, अनेक विद्याविद्, संगीत-काव्य-ज्योतिषादि का प्रेमी होगा।

(११४)- इस कुण्डली में जन्म ग्रहण करने वाला व्यक्ति कृशकाय, सुन्दर गठित सुडौल शरीर युक्त, श्यामवर्ण, तीव्र दृष्टि, दैहिक सौन्दर्य में अभाव प्राप्त, स्वाभिमानी और उग्रतथा भयंकर क्रोधी, साहसी, सन्तान सुख और विद्या पक्ष में न्यून, कटु-सत्य भाषी, माता-पिता-भाई-बहिन-कुटुम्ब सभी का विरोधी, स्त्री से वियुक्त अथवा हीन, शूद्रा अथवा हीन जाति की स्त्री को घर में रखने वाला, जीवन में अनेक बार धोखा प्राप्त, मूत्रेन्द्रिय या गुप्तस्थान का रोगी, हीन वृत्ति से जीविकोपार्जक, धर्मविद् होते हुए साधारण धर्म पालक, राज्यवेतनोपजीवी, गृहस्थ संचालनार्थ अत्यधिक चिन्तित, धन-संग्रहार्थ निरन्तर चेष्टित तथापि धन-संग्रह से हीन, भाग्य और कर्म को प्रधानता देने वाला, पितृक्षेत्र और अन्य क्षेत्र में निवास करने वाला, दीर्घायुष्य सम्पन्न, मरणकाल में ईश्वर नामोच्चारण तथा तीर्थस्थान में मृत्यु प्राप्त होने से वैकुण्ठ जाकर आवागमन रहित, अनेक विरोध और अरिष्टों का भोगी, स्वयं भी हीन जाति में उत्पन्न, सत्संग प्राप्ति के कारण विवेकी, प्रज्ञावान्, आन्तरिक-चिन्तनी होगा।

भु० सं०

कु० १०

(११५)- इस कुण्डली में जन्मा हुआ मनुष्य दीर्घविद्, कृशकाय, श्यामवर्ण, उन्नत ललाट, तेजस्वी और प्रतिभावान, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, रक्तविकार युक्त, पितृ-भक्त, मातृ-सुख से वंचित, विवेकी, हठी, क्रोधी, पाप-चतुर, विद्या में न्यूनता का अनुभवी, सन्तान-सुख में भी न्यून, गृह-भूमिलाभ से युक्त, भोग-विलास में दक्ष, गृहस्थ में अनुरक्त, दीर्घायुष्य प्राप्त, वृद्धावस्था में सुखी, पितृक्षेत्र का निवासी और वहीं समुन्नत, परिश्रम और उत्साह के बल पर कर्मकुशल और सफल, स्त्री वर्ग से सुख-सौभाग्य युक्त तथा भाग्यवान, धर्मपालक, किन्तु तत्सम्बन्ध में कुछ शैथिल्य का व्यवहारी, गम्भीर गुप्त युक्ति द्वारा कार्यक्षेत्र में दक्ष और सफलता युक्त, सामान्य आत्मबली, वाक्‌चातुर्य से विरोधियों पर सफल, गुप्तरोग से पीड़ित, नेत्र ज्योति में न्यूनता प्राप्त, भाई-बहिन और कौटुम्बिक-सुख सहयोग पाने वाला, तीर्थक्षेत्र में मृत्यु प्राप्त कर्ता। सुखी और उदार तथा विनोदी स्वभाव वाला, दृढ़ आय प्राप्त, दीर्घायु, हृद्‌रोगी, गृह-भूमि-वाहनादि से सुखी, धन संग्रहार्थ चेष्टित, सामान्य धनी, राज्य और समाज में प्रतिष्ठा सम्पन्न, ऐश्वर्य में व्यय करने में दक्ष होगा।

(११६)- इस जन्मांग में जन्म लेने वाला बालक दृढ़ाशयी, स्वाभिमानी, सामान्य कद, उन्नत ललाट, रक्तविकार और शुक्र रोगी, सामान्य विद्या प्राप्त, उग्र और क्रोधी, हठी, अपनी ही कहने वाला, भोग-विलास में पटु, ऐश्वर्य और अन्य कार्यों में अधिक व्यय सम्पन्न, सन्तान की ओर से चिन्तित, कभी कभी असफलता युक्त भाग्योन्नति में बाधा पाने वाला, कौटुम्बिक सुख सहयोग प्राप्त, अग्नि और जल से भय प्राप्त कर्ता, उद्यमी और परिश्रम तथा साहस बल पर भाग्यशाली, भाई-बहिन की उत्तम सुख सहयोग शक्ति युक्त, पितृ-द्वेषी और मातृ-सुख में न्यून, आन्तरिक दुर्बलता का अनुभवी एवं ज्योतिष-प्रेमी, गृह-भूमिलाभ युक्त एवं धन संग्रही, दृढ़ आय से सम्पन्न, राज्य और सामाजिक मान-प्रतिष्ठा से युक्त, राज्यक्षेत्र में समुन्नत, तन्त्र-मंत्रादि, दीर्घायु सम्पन्न, तीर्थक्षेत्र में मृत्यु प्राप्त करने वाला, धर्म के यथार्थ पालन में शैथिल्य युक्त, भाग्य एवं कर्मवादी, ईश्वरीय निष्ठा से पूर्ण, नेत्र-ज्योति में मन्दता का अनुभवी, यदाकदा मृत्यु-तुल्य कष्ट और अरिष्टों का प्राप्त कर्ता, स्त्रियों में रमणशील, श्यामा सुन्दरी प्रियम्वदा स्त्री का स्वामी, किन्तु उसकी ओर से उदासीन, विरोधी-पक्ष पर बलवान, गृहासक्त होगा।

भू० सं० कु० १०

(११७)- इस कुण्डली चक्र में उत्पत्ति ग्रहण करने वाला जातक, संगीत-काव्य तंत्र-मंत्र विद, सामान्य कद, मृदुल और उदार विनोदी प्रकृति, पुष्टदेही, आन्तरिक चिन्ताग्रस्त, विद्या-बुद्धि में पूर्ण, उन्नत ललाट, अधिक कन्याओं का पिता, सन्तान सुख प्राप्त, मातृ-सुख में न्यून, पितृ-भक्त किन्तु पितृ-सुख का अल्प भोगी, राज्य क्षेत्र में समुन्नत, पितृ क्षेत्र का निवासी और भ्रमणशील, विरोधियों का मान मर्दनकारी, अत्यधिक चतुर और साहसी, विद्या में पूर्णता प्राप्त, अनेक औषधियों का प्रयोग कर्त्ता, अच्छी आमदनी से सम्पन्न, उदारचेता और परोपकारी, मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, सुन्दर पतिव्रता, भाग्यशालिनी गौरांगना, नवीनादेही स्त्री का पति, सफल व्यवसाय युक्त, चिन्तनशील-विचारक और ग्रन्थ-लेखक, भाग्योन्नति में अनेक विघ्न पानेवाला, गृह-भूमि-वाहनादि लाभों का प्राप्तकर्त्ता, मध्यमायुष्य सम्पन्न, उत्तम गुणयुक्त पुत्रवाला, स्वकार्य करने में दक्ष, उत्साह और व्यक्तित्व सम्पन्न, विद्वान् पुरुषों में प्रतिष्ठा प्राप्त, ऐश्वर्य से रहने वाला, भाई-बहिन और कौटुम्बिक-सुख सहयोग से हीन, वाहन तथा शस्त्रादि से पीड़ित, नेत्र ज्योति में मन्दता का अनुभवी होगा।

(११८)- इस जन्मलग्न में उत्पन्न हुआ मनुष्य स्वाभिमानी, तेजस्वी, पितृ-सुख प्राप्त कर्त्ता, क्रोधी, पिता से मतभेद रखने वाला, पैतृक तथा अन्य गृह भूमि लाभ से युक्त, गम्भीर और शान्त, हठी तथा दृढ़ निश्चयी, विद्या बुद्धि में पूर्णता प्राप्त, सामान्य उग्र स्वभाव युक्त अनुशासनप्रिय नियमपालक, मातृ-सुख में न्यून, उत्तम गुणी पुत्रों से युक्त कन्याओं का पिता, सुन्दर गौरवर्णा, पतिभक्ता स्त्री का स्वामी, भोगविलास की अपेक्षा धर्म और कर्म को अधिक महत्व देने वाला, ईश्वर और पितृ-भक्त, कार्याधिक्य के कारण कदा-कदा धर्म-पालन में शिथिल, परम विद्वान् चिन्तक तथा विचारक, आध्यात्म विद्या सम्पन्न, प्रभावशाली व्यक्तित्व प्राप्त, विरोधी-पक्ष पर सबल, विद्वानों और राज्य तथा सामाजिक मान-प्रतिष्ठा युक्त, कौटुम्बिक एवं भाई-बहिन के सुख-सहयोग से हीन, कर्मक्षेत्र में प्रबल परन्तु असफलताओं के कारण भाग्यवादी, अनेक ग्रन्थों का प्रणेता, ज्योतिष-काव्य-कलादि प्रेमी और गुण ग्राहक, मध्यमायु प्राप्त, भाग्योन्नति में अनेक विघ्नबाधाकर्त्ता, धन संग्रहार्थ अत्यधिक प्रयत्नशील तथापि धन संग्रह में सदैव हीनता सम्पन्न, आयु के उत्तरार्ध में सुखी और सौभाग्यशाली होगा।

सू० श० कु० १०

(११९)- इस जन्मांग में उत्पन्न हुआ मनुष्य दीर्घ और कृश शरीर, गौरवर्ण, तेजस्वी, उग्र और क्रोधी स्वभाव, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, उन्नत ललाट, दृढ़ निश्चयी और हठी, रक्त-पित्त-विकार युक्त, नेत्रज्योति में मन्दता का अनुभवी, पितृ-भक्त और पैतृक धन-गृह-भूमि लाभ से युक्त तथा पितृ-सुख प्राप्तकर्त्ता, विद्या और सन्तान की ओर से त्रुटि युक्त, विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न; सुन्दरी, गौरांगना, सुलक्षणा, पति परायणा स्त्री का स्वामी, किन्तु सामान्य मतभेदी; गृहस्थ में अनुरक्त और विरक्त। उत्तम धर्मपालक और ईश्वर में दृढ़ निष्ठा सम्पन्न, अनेक विद्या विद्, परिश्रमी और भाग्यवादी, साहसबल से अनेक कार्यों में सफल, राज्यक्षेत्र में कुछ न्यूनता युक्त तथा सामाजिक प्रतिष्ठा युक्त, सफल व्यवसायी, उद्यमी एवं उत्साही। मातृ सुख का अल्प-भोगी, भाग्योदय में अनेक विघ्न युक्त, विरोध पक्ष पर गुप्त योजनाओं द्वारा विजयी, भाई-बहिन और कुटुम्ब से त्रुटि युक्त सुख-सहयोग का भागी, ऐश्वर्यादि में अधिक व्यय करने वाला, धन-संग्रह हेतु निरन्तर चेष्टित, साधारण धन-संग्रही, मृत्युतुल्य कष्टों का प्राप्तकर्त्ता, मध्यमायु सम्पन्न, स्त्री पक्ष से भाग्यवान माना जाने वाला होगा।

(१२०)- इस जन्मलग्न में उत्पन्न होने वाला व्यक्ति सामान्य कद, चंचल प्रकृति, गौरवर्ण, पुष्टदेही, उन्नत ललाट, मातृ सुख वियोग प्राप्तकर्त्ता। उत्साही और साहसी, परम चतुर और विवेकी, संगीत काव्य और स्त्रियों का प्रेमी; पतिपरायणा श्यामा स्त्री का पति और गृहस्थासक्त। उत्तम स्वास्थ्य सम्पन्न, ऐश्वर्य से रहने वाला, स्ववाक्य-स्थापना में पटु, विद्वान, राज्य और सामाजिक प्रतिष्ठा युक्त, स्वाभिमानी तथा साधारण उग्र, भाग्योदय में साधारण अवरोध के साथ धनी। पितृक्षेत्र का निवासी, पितृ सुख का अल्प भोगी, मृदुल और उदारमना एवं परोपकारी, ईश्वरीय-निष्ठा सम्पन्न तथा धर्मविद् और धर्म-पालन में दक्ष, ठाटबाट में खर्चीला, दृढ़ आमदनी से युक्त, विद्या और सन्तान का उत्तम सुख-भोगी, वाक्चातुर्य से विरोध पक्ष पर सफल, मध्यमायुष्य सम्पन्न, युक्तिबल से व्यवसाय में पटु तथा सफल, धनसंग्रह हेतु परिश्रमी, निरन्तर प्रयत्नशील और धन-संग्रह युक्त, गृह-भूमि-लाभ एवं भृत्य-वाहनादि सुख से पूर्ण, नित्य का कर्मयोगी और भाग्यवादी, परिश्रम का आदर्श स्वरूप। यदाकदा परिश्रम में आलस्य करने वाला होगा।

भृ० सं० ६४५

कु० १०

(१२१)- इस जन्म चक्र में जन्मा हुआ बालक शरीर से सुन्दर, गौरवर्ण, सामान्य कद, उन्नत ललाट, परम चतुर और विवेक सम्पन्न, स्वाभिमानी, साधारण उग्र तथा सहज ही शान्त, वाक् पटु, परोपकारी तथा दयालु, जीवन में कई बार धोखा प्राप्त, हठी और दृढ़ निश्चय युक्त, वाक्‌चातुर्य से विरोध शमन में दक्ष, धार्मिक और ईश्वर-भक्त, उत्तम वाहन सुख सम्पन्न, ऐश्वर्य से रहन-सहन में अधिक व्ययी, यदाकदा गृहस्थ संचालनार्थ चिन्तित, भाग्यशाली, विद्या में कुछ न्यूनता युक्त पूर्ण, सन्तान प्राप्त तथापि सन्तान की ओर से चिन्तित, धर्मपालन में कुछ आलसी, भाई-बहिन युक्त तथा सुखेच्छ हर्षाग से पीड़ित, पराक्रमी और उत्साही, मातृ-सुख का अल्प भोगी, पितृ-भक्त, किन्तु अल्प पितृ-सुख प्राप्त, व्यवसाय और कर्मक्षेत्र में अवरोधयुक्त सफल, धन-संग्रहार्थ सर्वदा प्रयत्नशील और सामान्य धनी, गृहादि लाभ से साधारण सुखी, दृढ़ आशायुक्त और साहसी, सुन्दर, सुलक्षणा स्त्री का स्वामी, किन्तु मतभेदी, गृहस्थ में अनुरक्त, नेत्र ज्योति में विकार पाने वाला, अन्य स्त्रियों का भोगी, पितृ क्षेत्र निवासी, राज्य-समाज में मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होगा।

(१२२)- इस जन्मयोग में जन्म लेने वाला जातक दीर्घायु, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, कृशदेही, अत्यधिक स्वाभिमानी, तेजस्वी और क्रोधी, साहसी, कर्मयोगी, पुरुषार्थ एवं परिश्रम से भाग्यशाली, राज्य और समाज में उच्च पद प्राप्त तथा मान प्रतिष्ठा युक्त, रक्त विकारी एवं नेत्र-पीड़ित, श्यामवर्णा सुन्दरी स्त्री से मतभेद युक्त, अन्य स्त्रियों का भोगी, ऐश्वर्य से रहने वाला, अतीव खर्चीला, मातृ-पितृ सुख का अल्प भोगी, पिता का भक्त, विद्या में न्यूनता युक्त पूर्णता प्राप्त, साधारण गृहादि लाभी, गृहस्थासक्त किन्तु गृहस्थ-संचालनार्थ चिन्तित, अनेक बार धोखा तथा मृत्युतुल्य कष्ट प्राप्त, भ्रमणशील, पितृक्षेत्र निवासी, उत्तम निश्चित आय सम्पन्न, कुटुम्ब से शत्रुवत व्यवहार पाने वाला, भाई-बहिनों का विरोधी, उत्तम गुणमयी सन्तान प्राप्त, वृद्धावस्था में दुःखी, मध्यमायु सम्पन्न, विद्या एवं कर्मशक्ति से सफल, ईश्वर और धर्म में निष्ठित किन्तु अपेक्षाकृत पुरुषार्थ को महत्व प्रदाता, हठी और दृढ़ निश्चयवान, जीवन में जीविकोपार्जनार्थ मातृभूमि से पृथक् स्थानों पर रहने वाला, स्ववाक्य स्थापना में परम दक्ष, अनुशासनप्रिय होगा।

भ० स० ११८

कु० १०

(१२३)- इस कुण्डली चक्र में उत्पत्ति प्राप्त करने वाला व्यक्ति परोपकारी और दयालु, मातृ-सुख से वंचित, सत्यवादी, सामान्य कद, सुन्दर गौरवर्ण, पुष्ट देही, उन्नत भालयुक्त, स्वाभिमानी और साधारण उग्र तथा सहज ही शान्त, परम विवेकी, विद्या में पूर्ण स्नातक, दृढ़ निश्चय युक्त, उपदेष्टा, अनेक विद्याविद्, काव्य और ज्योतिष प्रेमी, ऐश्वर्य से रहने वाला, गृह-भूमि तथा धन का साधारण लाभ प्राप्त कर्त्ता, ईश्वर और धर्म में आस्थावान्, पुरुषार्थ और परिश्रम से भाग्योन्नत, राज्य-समाज में प्रतिष्ठा-सम्पन्न, वाक् चातुर्य से प्रभावशाली, सफल व्यवसायी और निश्चित आय युक्त, मध्यमायुष्य प्राप्त, भाई-बहिन और कुटुम्ब-सुख से नितान्त हीन, पिता का सुख सहयोग प्राप्त और पितृभक्त, उत्तम गुण सम्पन्न पुत्रों से युक्त, अधिक व्ययशील, अनेक बार धोखा और मृत्युतुल्य कष्टों को प्राप्त कर्त्ता, गुप्त रोग से पीड़ित, पौरुष कर्म को अधिक महत्व प्रदान करने वाला, विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, धन संग्रह हेतु अत्यधिक चेष्टित तथा सामान्य धनी, गृहादि लाभ से युक्त, चिन्तनशील और विचारक होगा।

(१२४)- इस जन्मांग में उत्पन्न मानव सामान्य कद, पुष्ट देही, परम विवेकी और चतुर, व्यवहार कुशल, परोपकारी और दयालु, कई बार धोखा खाने वाला, गुप्त रोग अथवा नेत्रज्योति में विकारयुक्त, समुन्नत ललाट, संगीत काव्य ज्योतिषादि अनेक विद्याविद्, साहसी और हठी, स्वाभिमानी, उपदेष्टा, विद्या क्षेत्र में स्नातक, उत्तम गुणी पुत्रों का पिता, श्यामवर्णा स्त्री प्राप्त तथा उसके सुख-सहयोग से समुन्नति और मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला, वाक्-चातुर, भाई-बहिन और कुटुम्ब से पूर्ण विरोध पाने वाला, ऐश्वर्य तथा कामिनी पक्ष में अधिक व्ययी, मातृ-सुख वंचित, पिता का अल्प-सुख भोगी, पितृ-भक्त एवं पितृक्षेत्र-निवासी, पुरुषार्थ शक्ति से अनेक कार्यों में सफल, वाक्-चातुर्य तथा विद्या-शक्ति से स्वकार्य-साधन में पटु एवं विरोधपक्ष पर सबल, प्रभावशाली व्यक्तित्व प्राप्त, गुप्त रोग से पीड़ित तथा कई बार मृत्यु तुल्य अरिष्टों को प्राप्त कर्त्ता, मध्यायु सम्पन्न, दृढ़ और निश्चित आय प्राप्त करने में प्रवीण, गृहादि का साधारण लाभी, भाग्योन्नति तथा राज्य-प्रतिष्ठा प्राप्त, धर्म और ईश्वर में आस्थावान्, कर्मयोगी, सामाजिक मानसम्मान युक्त होगा,

भू० सं० १२२५

कु० २०

(१२२५) - इस कुण्डली-चक्र में उत्पन्न हुआ पुरुष स्त्री-सुख में न्यूनता युक्त, अन्य स्त्रियों से भोग-विलास में दक्ष, शारीरिक सौन्दर्य में त्रुटि युक्त, कृशकाय, परम विवेकी और प्रवीण, दीर्घदेही, अधिक उग्र, बहुत धोखा प्राप्त, नेत्र-ज्योति में विकार ग्रस्त, उदर में वायु-शूल से पीड़ित, विद्या और सन्तान से सुखी तथा सन्तान द्वारा भाग्योन्नत, धर्म पालन में सामान्य, सुरा-सुन्दरी का सेवक, गुप्तरोगी, शत्रु और विरोधियों का प्रबल दमन दक्ष, वृद्धावस्था में सुखी, मातृ-पितृ सुख में साधारण, सामाजिक और राज्यक्षेत्र में मान-प्रतिष्ठा हीन, किसी की परवाह न करने वाला, साहस और परिश्रम से विविध कार्यों में सफल, परक्षेत्र निवासी, कर्म और पौरुष को महत्व देने वाला, भाई-बहिन और कुटुम्ब से विरोध युक्त, शूद्रा अथवा हीन जाति की स्त्री में रमण शील, मध्यमायुष्य प्राप्त, गृह-भूमि लाभ से संयुक्त, स्वाभिमानी परन्तु आन्तरिक दौर्बल्य का अनुभवी, लोक-परलोक को न मानने वाला, तथापि ईश्वर में निष्ठायुक्त, स्ववाक्य स्थापना में पटु, साधारण विद्या प्राप्त, विचक्षण बुद्धि, ऐश्वर्य में प्रभावी और अधिक व्यय करने वाला होगा।

(१२२६) - इस कुण्डली में पैदा हुआ व्यक्ति दीर्घवपु, कृशकाय, उन्नत ललाट, श्यामवर्ण, कुछ अर्ध विक्षिप्त, स्त्री-सुख से वंचित, अन्य सुख सहित, गृह-भूमि लाभ से युक्त, अधिक मौन रहने वाला, भूमि-वाहन से युक्त, धन-धान्यादि से पूर्ण, मान-प्रतिष्ठा और सामाजिक स्तर से वंचित, राज्य क्षेत्र में कुछ बन्धन पाने वाला, मध्यमायु सम्पन्न, अतीव सामान्य विद्या प्राप्त, गृहस्थ में आसक्त, पितृक्षेत्र का निवासी, माता का पूर्ण सुख प्राप्त, पिता को चिन्ताएँ प्रदान करने वाला, धर्म-कर्म हीन, सहज में ही क्रोधित, स्वीय माता के कारण भाग्यशाली, पराश्रित, मंद सन्तान युक्त, आयु के उत्तरार्ध में सन्तान द्वारा पोषित-पालित, कई बार जीवन में अनेक मृत्यु तुल्य कष्टों का प्राप्तकर्ता, रोगों के कारण अधिक व्यय सम्पन्न, उदर विकारी तथा नेत्र-ज्योति में न्यूनता प्राप्त, पाँवों से कुछ लाचार जैसा, पराक्रम-पुरुषार्थ तथा परिश्रम हीन, व्यर्थ ही जीवन जीने वाला, औरस सन्तान हीन, अधिक हठीला, पितृ-क्षेत्र निवासी, स्त्री पर आश्रित, दीन-हीन और कुचैला, सम्भवतः पिता द्वारा भोगी जाने वाली स्त्री सहित होगा।

(१२७)- इस कुण्डली में जन्म लेने वाला जातक सामान्य कद, गौरवर्ण, उन्नत ललाट, पुष्टदेही, स्वाभिमानी और उग्र, विवेकी और चतुर, गम्भीर और सहज ही शान्त, मृदुल तथा उदार चेता, परोपकारी और दयालु, धर्मभीरु और लोक-परलोक का विचारक, लेखक तथा काव्य-संगीत-ज्योतिषादि का प्रेमी, ग्रन्थ-प्रणेता, विलक्षण प्रतिभा-सम्पन्न, धर्म-पालक, मातृ-सुख से हीन, पिता का अल्प सुख भोगी, परिश्रम से भाग्योन्नत, गृह-भूमि का सामान्य लाभी, राज्य तथा सामाजिक मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, भाग्योदय में अवरोध युक्त, विद्या में अवरोध के साथ समुन्नत, सन्तान की ओर से चिन्तित, तथा पुत्रों का पिता, पितृभक्त और पितृक्षेत्र निवासी, कार्यदक्ष, ऐश्वर्य से रहकर उससे अधिक व्ययी, उदर एवं रक्त पित्त विकार पाने वाला, मध्यमायुष्य सम्पन्न, गृहस्थासक्त, सुन्दरी, श्यामवर्णा, पति परायणा स्त्री प्राप्तकर्ता, अच्छा द्रव्य लाभी एवं द्रव्य-संग्रही, वाक्-चातुर्य से विरोध-पक्ष का दमन करने में दक्ष, आपत्ति या अरिष्ट के समय अधीर होकर साहस से कार्य करने में सक्षम, चिन्तनशील, धोखा प्राप्त करने वाला होगा।

(१२८)- इस जन्म-चक्र में जन्म ग्रहण करने वाला मानव दीर्घवपु, कृशदेही, स्वाभिमानी और उग्र, प्रभावशाली श्रेष्ठ व्यक्तित्व से सम्पन्न, कौटुम्बिक और भाई बहिन से विरोधात्मक सम्बन्धों का प्राप्तकर्ता, गौरवर्ण, उन्नत ललाट, उत्तम स्वास्थ्य युक्त, चंचल प्रकृति एवं अनुशासन-प्रिय, मातृ सुख से वंचित, परिश्रमी और दृढ़ साहसी, हठी एवं विवाद स्थापना में पूर्ण पटु, धर्म-प्रेमी और ईश्वर में निष्ठित, ऐश्वर्यादि का भोगी, पिता का सुख-सहयोग प्राप्त और पितृभक्त, विपुल पराक्रमी, धन-संग्रहार्थ निरन्तर प्रयत्नशील किन्तु द्रव्य कोष का सामान्य लाभी, गृह-भूम्यादि लाभ में भी सामान्य, उत्तम स्वास्थ्य संयुक्त, विद्याक्षेत्र में पूर्ण, सन्तान-सुख प्राप्तकर्ता, किन्तु सन्तति की ओर से चिन्तित, उत्तम श्यामा स्त्री का पति और स्त्री क्षेत्र से भी समुन्नत, परन्तु स्त्री से मतभेदी, राज्य पक्ष में उच्च पदासीन अथवा डाक्टर और इंजीनियर, व्यवसाय द्वारा द्रव्य लाभ में पटु, सामाजिक और राज्यक्षेत्र में उच्च मान प्रतिष्ठा समुन्नत, भाग्यशाली, कभी कभी द्रव्य लाभ में अनायास हानि प्राप्तकर्ता, विरोधियों का विजेता, नेत्र-ज्योति में त्रुटि का अनुभवी होगा।

भू० सं० ११८

कु० १०

(१२९)- इस कुण्डली-चक्र में उत्पन्न होने वाला मनुष्य दीर्घदेही, ऊँचाकद, सामान्य गेहुँआवर्ण, मलिन और कुत्सित विचारधाराओं से युक्त, साहसी और अविवेकी, ऐश्वर्य तथा भोगादि में अधिक व्ययी, आत्मदौर्बल्य युक्त, चोर अथवा दस्युओं जैसी विचारधारावाला, सामान्य शिक्षा युक्त, उत्तम स्त्री प्राप्तकर्ता तथा मित्र-क्षेत्र का निवासी, पर-स्त्री-गमन में दक्ष, एक पुत्र प्राप्तकर्ता, वृद्धावस्था में दुःखी, सामाजिक प्रतिष्ठा हीन, राज्य क्षेत्र में बन्धन युक्त, गृह-भूमि-भाई-बहिन से युक्त होने पर भी सबका विरोधी, अन्यायत द्रव्य-लाभ से संयुक्त, धन-संग्रहार्थ कोई भी कार्य करने को तत्पर, हत्यारा और कुटुम्ब से अन्तर्द्वेष एवं प्रतिस्पर्धा भावना सम्पन्न, मातृ-सुख का भोगी किन्तु पितृ-सुख से वंचित, धर्म और भाग्योदय से पराङ्मुख, वाक्-चातुर्य से विरोध को दबाने में सक्षम तथापि विरोधियों द्वारा सर्वदा आतंकित एवं भयग्रस्त, परिश्रम एवं पराक्रम से यदाकदा द्रव्य-लाभ करने वाला, रक्त-विकार युक्त, पतिव्रता स्त्री का पति तथा स्त्री को सर्वदा कष्ट प्रदान करनेवाला, सर्वदा भय-ग्रस्त रहेगा।

(१३०)- इस कुण्डली में उत्पत्ति ग्रहण करने वाला व्यक्ति सामान्य कद, पुष्ट देही, साहसी और उग्र, उन्नत ललाट, ऐश्वर्य से रहने में दक्ष, विद्या-क्षेत्र में पूर्ण स्नातक, सफल व्यापारी, उच्च कोटि का वक्ता, सन्तान के उत्तम गुणों से सन्तुष्ट तथा सन्तति-सुख प्राप्तकर्ता, गृहस्थ-संचालन में कभी-कभी धन की त्रुटि का अनुभवी, राज्य क्षेत्र की सफलता में न्यून, सामाजिक मान-प्रतिष्ठा और सुयश में कमी का अनुभवी, विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, माता-पिता भाई बहिन और कुटुम्ब सभी के सुख-सहयोग का भागी, धर्मविद और ईश्वर तथा लोक-परलोक का विचारक परन्तु धर्म-पालन में शिथिल, भाग्योदय में अनेक विघ्न प्राप्तकर्ता, उत्साही और परिश्रमी, कृपण प्रकृति, दयालुता से परे, परोपकार की भावना से युक्त तथापि परोपकार न करने वाला, धन-धान्य रत्न-गृह-भूमि लाभ से संयुक्त, प्रथम माता का मरण पाने वाला, विरोध होने पर विरोध की चिन्ता से मुक्त, वायु पित्त का रोगी, मध्यमायु प्राप्तकर्ता, सुन्दर श्यामवर्णा पतिव्रता स्त्री का स्वामी, व्यापार-व्यवसाय से धन संग्रहार्थ निरन्तर द्रव्यकोष की वृद्धि में संलग्न होगा।

भू० सं० २८९५ | कु० १०

(१३१)- इस जन्मांग में जन्मा हुआ व्यक्ति दैहिक सौन्दर्य में कुछ त्रुटियुक्त दीर्घ वपु, कृशकाय, ऊँचा कद, उन्नत ललाट, उत्साही और साहसी, स्वाभिमानयुक्त, सत्यवादी, विवेकी और चतुर, उदर-विकार एवं शुक्र तथा मूत्रेन्द्रिय के दोष प्राप्त कर्त्ता, गोधूमवर्णा और सुन्दरी तथा कलहकारिणी स्त्रीयुक्त, स्वस्त्री तथा परदार-रत, ऐश्वर्यमय रहन-सहनयुक्त, ऊपरी रईसों जैसा प्रभावशाली, व्यक्तित्व सम्पन्न, मातृ-सुख से वर्जित, पिता का सुख-सहयोग प्राप्त कर्त्ता एवं पितृभक्त और पितृक्षेत्र निवासी, गृह-भूमिलाभ में कुछ त्रुटियुक्त, दयालु तथा पापकर्म वर्जित, धर्म तथा ईश्वर के प्रति आस्थावान परन्तु धर्म पालन में शिथिल, भाग्योदय में अनेक विघ्न पानेवाला, दृढ़ और निश्चित आय सम्पन्न, द्रव्य-संग्रहार्थ सतत प्रयत्नशील और साधारण धन-सम्पन्न, भाई-बहिन युक्त परन्तु कौटुम्बिक सहयोग में त्रुटिमय, विद्या बुद्धि में पूर्ण, चिन्तनशील एवं विचारक, मधुरभाषी, यदा कदा कटु वाक्य बोलने वाला, गुप्त परनिन्दक, आत्मदौर्बल्य का अनुभवी, विरोधियों पर प्रबल तथापि विरोधयुक्त, सन्तान से चिन्तित, दीर्घायु प्राप्त, तीर्थ क्षेत्र में देह त्यागने वाला होगा।

(१३२)- इस जन्म-चक्र में जन्म ग्रहण करने वाला मानव विद्या-बुद्धि में पूर्ण सफल तथा विचक्षण, सन्तानवान और चिन्तित परन्तु सन्तान युक्त, द्रव्यकोष में पूर्ण, कृपण प्रकृति, दीर्घवपु, पुष्ट देही, ऊँचा कद, प्रभावशाली, उद्यमी और साहसी, सफल व्यवसायी एवं व्यक्तित्व सम्पन्न, उन्नत ललाट, सामान्यवर्ण, श्यामा कलही सुन्दरी स्त्री का स्वामी और उससे मतभेदी, परदारा भोक्ता, ऐश्वर्ययुक्त रहन-सहन में दक्ष, भाग्योदय में विघ्न प्राप्तकर्त्ता, राज्य क्षेत्र में बन्धनयुक्त, सामाजिक प्रतिष्ठा एवं सुयश तथा सुख में न्यूनता का अनुभवी, नेत्रज्योति तथा शुक्र और गुप्तेन्द्रिय एवं उदर रोगी, दृढ़ और निश्चित आय सम्पन्न, साहसी, आत्मदौर्बल्ययुक्त, दीर्घायुष्य सम्पन्न, मातृ-सुख से वर्जित, पितृ-सुख सहयोग का भागी और पितृभक्त तथा पितृक्षेत्र का निवासी, भाग्योदय में विघ्नों का ज्ञापक, मधुर और सत्य भाषी यदा-कदा परद्वेष समन्वित, कौटुम्बिक-विरोध पाने वाला, चतुर, चातुर्य प्रभाव से विरोधियों पर हावी तथा विरोध ग्रहणयुक्त, व्यवसाय-स्थापना में पटु, निरन्तर द्रव्य-कोष वृद्धि में प्रयत्नवान, यदा-कदा मृत्यु तुल्य कष्टों का भोक्ता, भाई-बहिन का सुख सहयोग प्राप्ति में पूर्ण होगा।

भ०
स०

(१३३)- इस कुण्डली में जन्म लेने वाला बालक, देह में सुन्दर, ऊँचा कद, उन्नत ललाट, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, स्वाभिमान और विद्याभिमान से युक्त, स्वभाव से उग्र और क्रोधी तथा अनुशासन, किसी की चिन्ता न करनेवाला, पराक्रम में सदा-सदा शैथिल्य का व्यवहारी, मातृ-सुख से नितान्त हीन, पितृ-भक्त किन्तु पिता से सुख-सहयोग प्राप्त करते हुए पितृमतभेद युक्त और पितृक्षेत्र का निवासी, धन संग्रहार्थ सर्वथा चेष्टित तथा सामान्य-धनी और पैतृक-सुख सम्पत्तियुक्त, परिश्रमशी-थिलता से धोखा पाने वाला, स्त्री का प्रथम मरणयुक्त, अन्य स्त्री भुक्त, भोग-विलास में दक्ष, उत्तम दीर्घायुसम्पन्न, भाई-बहिन के सुख-सम्बन्धों में त्रुटि प्राप्त कर्ता, सामाजिक प्रतिष्ठा और राज्य मान से हीन, भाग्योन्नति में कई बार विघ्न मय, ऐश्वर्य भी रहन-सहन तथा स्त्री-पक्ष में अधिक खर्चीला, सन्तान युक्त परन्तु सन्तान की ओर से उपेक्षित, वृद्धावस्था में दुःख प्राप्त कर्ता, धर्म कर्म से हीन तथापि ईश्वर में आस्थावान्, तीर्थ-स्थान में अनायास देहत्यागी, धनकोषयुक्त, व्यापार में त्रुटि प्राप्त कर्ता, उदर-विकारी, वायु और शूल से पीड़ित, नेत्रज्योति में मन्दता का अनुभवी होगा।

(१३४)- इस जन्मांग में जन्म ग्रहण करने वाला जातक दैहिक-सौन्दर्य में त्रुटि युक्त, गोधूमवर्णी, उन्नत ललाट, परम-स्वाभिमानी और विवेकी तथा मधुरभाषी, मातृ-सुख में न्यूनता प्राप्त, पितृ-सुख भोगी और सहयोग प्राप्त, विद्या बुद्धि में चतुर, गम्भीर और शान्त, ऐश्वर्ययुक्त रहन-सहन में पटु, परस्त्री से धोखा पाने वाला, स्त्री-सुख में सामान्य, सन्तानयुक्त, परन्तु सन्तान से उपेक्षा प्राप्त, दीर्घायुष्य युक्त, नेत्रज्योति में न्यूनताग्रस्त और उदर-रोगी, वायुशूल-पीड़ित, संग्रहणी रोग या अर्श रोग पानेवाला, भाई-बहिन से सुख सहयोग सम्बन्धों में साधारण त्रुटिमय, धनी और सफल व्यवसायी, निश्चित-आय सम्पन्न, धर्म विद और ईश्वर में निष्ठा होते हुए धर्म-पालने में शिथिल, वृद्धावस्था में दुःखी, तीर्थ-क्षेत्र में उदर रोग से देह त्यागने वाला, वाक्चातुर्य और गुप्त-योजनाओं द्वारा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में कुशल, दृढ निश्चय युक्त, आत्मबल में त्रुटि प्राप्त कर्ता, उद्यमी एवं उत्साही, पर उपदेश में दक्ष किन्तु पालन में अपूर्ण, ऊपर से आदर्शवादी, हीन जाति की स्त्री का भोक्ता, सामाजिक-प्रतिष्ठा और राज्य-प्रतिष्ठा में न्यूनता प्राप्त, तथा परदेसवासी होगा।

भू० सं०

कु० २०

(१२५)- इस जन्मांग में जन्म लेने वाला जातक दीर्घ देही, कृशकाय, उत्तम गौर वर्ण, उन्नत ललाट, परम विवेकी और चतुर, गम्भीर और शान्त, स्वाभिमानी, सामान्य उग्र, सुन्दरी सुशीला विनम्र, सुलक्षणा, पतिव्रता स्त्री प्राप्तकर्ता; गृहस्थ में अनुरक्त, विद्या और सन्तान से पूर्ण एवं सुखी, प्रत्येक कार्य में दक्ष, मातृ-पितृ सुख-सहयोग को पाने वाला, सफल व्यवसायी, गृह-भूमि-धन-धान्य-भृत्य-वाहनादि से पूर्ण, राज्य और समाज में मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, धर्म-पालक तथा ईश्वर में पूर्ण निष्ठ, परोपकारी और दयालु, विरोधी-पक्ष को वाक्-चातुर्य से दबाने में दक्ष, मधुर एवं सत्यभाषी, यदाकदा भाग्योन्नति में विघ्न प्राप्त कर्ता, भाई-बहिन और कौटुम्बिक सुख-सहयोग में सफल, अल्पायु प्राप्त कर्ता, कुक्षि-कोष का लाभी, प्रथम पिता का मरण पाने वाला, दैहिक-सौन्दर्य में साधारण त्रुटि युक्त, धैर्य एवं साहस सम्पन्न, अनेक धार्मिक कृत्यों को करने वाला, निश्चित आययुक्त, ज्येष्ठ पुत्र अथवा सा-ले का मरण प्राप्त, सदाचारी और पवित्र, संगीत-काव्य-कला आदि का प्रेमी होगा।

(१२६)- इस जन्मचक्र में जन्मा हुआ बालक दीर्घ वपु, उत्तम गौर वर्ण, उन्नत भाल, साहस सम्पन्न, विचक्षण बुद्धि, प्रत्येक कार्य में दक्ष, विवेकी और चतुर, निरालस्य युक्त, मृदुल-गम्भीर और शान्त तथा विद्या क्षेत्र में पूर्ण दक्ष, सन्तान-सुख से हीन, दत्तक पुत्र ग्रहण करने वाला, धन-संग्रहार्थ निरन्तर प्रयत्नशील एवं धनसंग्रह में पूर्ण, मध्यमायुष्य सम्पन्न, अध्यात्म विद्या प्रेमी तथा अनेक विद्याओं का ज्ञाता, राज्य क्षेत्र तथा कर्म में यदाकदा विघ्न-पाने वाला, भाई-बहिन और पारिवारिक सम्बन्धों द्वारा सहयोग-प्राप्ति में असफल, चिन्तनशील और विचारक, माता एवं पिता का पूर्ण भक्त और सेवाभावी तथा उनका उत्तम सुख सहयोग प्राप्त कर्ता, श्रमशील, कई ग्रन्थों का प्रणेता और उपदेष्टा, विरोधियों का विजयी, स्वाभिमान और गौरवमयी भावनाओं से संयुक्त, किसी की चिन्ता न करने वाला, ईश्वर में पूर्ण निष्ठावान् और धर्म कार्यों का प्रेमी, भाग्योन्नति, सामाजिक प्रतिष्ठा-सम्मान प्राप्त, रक्तविकार तथा गुह्यरोग की पीड़ा पाने वाला, अति सुन्दरी पति परायणा सुशीला स्त्री का स्वामी तथा उससे कुछ उपेक्षा रखने वाला होगा।

भृ० सं० कु० १०

(१२७)- इस कुण्डली में उत्पन्न हुआ व्यक्ति सामान्य कद, उत्तम गौरवर्णाभ, प्रभावशाली व्यक्तित्व और विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, धीर-वीर-साहसी और उद्यमी तथा परिश्रमी, सामाजिक एवं राज्य की मान-प्रतिष्ठा प्राप्त; कर्मयोगी, मातृ-पितृ सुख सहयोग में न्यूनताग्रस्त, भाग्यवान, द्रव्यकोष से पूर्ण, धन-संग्रहार्थ प्रयत्नवान, साधारण अवरोधयुक्त विद्या प्राप्ति में पूर्ण सफल, गुह्य रोग से पीड़ित, सन्तान का उत्तम सुख प्राप्तकर्ता, गम्भीर और शान्त, मधुर सत्यभाषी, आदर्श स्वरूप, सदाचारी और पवित्र, साधारण उग्र, चिन्तनी एवं विचारक, परोपकारी तथा अध्यात्मपथ पर अग्रसर, धर्मकार्यों के पालन में प्रवीण, विद्वान और पण्डित, व्यवसायक्षेत्र में सफल तथा समुन्नत, वाक्चातुर्य और सौम्य प्रकृति से विरोधियों का विजेता, गृह-भूमि-धन-धान्य भृत्यादि से युक्त, भाई-बहिन और पारिवारिक सम्बन्धों में अभावग्रस्त, मध्यमायु पानेवाला, गो-ब्राह्मण-देव भक्त; पतिपरायणा, सुशीला स्त्री प्राप्तकर्ता तथा इससे सुख प्राप्त और समुन्नत, परोपकार में कभी निष्फलता का अनुभवी, मरणकाल में भगवन्नाम की विस्मृतियुक्त हो।

(१२८)- इस कुण्डली में उत्पत्ति ग्रहण करने वाला मानव सामान्य कद, परम सुन्दर, गौरवर्ण, स्वभाव से कुछ उग्र, तथा सहज ही शान्त, तेज और प्रभावसम्पन्न, चंचल प्रकृति, संगीत-काव्य-ज्योतिष आदि अनेक विद्याओं में पूर्ण और उनका प्रेमी, उन्नत ललाट, सामान्य कृपण, परोपकारी और दयालु, लोक-परलोक और धर्म एवं ईश्वर में आस्थावान्, मातृ-सुख में न्यून, पितृ सुख एवं पैतृक धन से उन्नति में दक्ष, व्यवसाय क्षेत्र में परिश्रमी और सफल, उत्तम सन्तान-सुख से पूर्ण किन्तु सन्तान की ओर से चिन्तित, परम विद्वान, चिन्तनशील और विचारक, गृहस्थ में अनुरक्त, सुन्दर सुलक्षणा सुशीला पतिपरायणा स्त्री का प्राप्तकर्ता किन्तु स्त्री का प्रथम मरण पानेवाला, द्रव्य-संग्रही और द्रव्यकोषयुक्त, तथापि कभी-कभी व्यवसाय में गहरी हानि पाये, भाग्योन्नति और धर्मपथ पर अग्रसर, आपत्ति काल में सहज ही अधीर होकर साहस बल वा सफलता, कौटुम्बिक एवं भाई-बहिन के सुख सहयोग में अभावग्रस्त, अध्ययनशील, दीर्घायु प्राप्त, शस्त्र-अग्नि-जल का प्राप्तकर्ता, धन-धान्य-गृह-भूमिलाभ से सम्पन्न और सामाजिक मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न होगा।

(१३९)- इस जन्मांग में जन्मा हुआ बालक दैहिक-सौन्दर्य में कमीयुक्त, दीर्घायु, सामान्य वर्ण, स्वाभिमानी और क्रोधी, परोपकार-भावना से हीन, कुत्सित और मलिन-हृदय, प्रतिकार-भावना सम्पन्न, परम-चतुर और विवेकी, साहसी और उत्साही, मातृ-सुख से हीन, पितृ-सुख प्राप्त, परन्तु पिता से मतभेद रखने वाला, धर्म-प्रेमी और ईश्वर में निष्ठावान किन्तु आवश्यकतार्थ ही धर्म का पालक, सुन्दर रोगिणी स्त्री का पति, किन्तु उससे वंचकता कर अन्य स्त्रियों में रमणशील, मनोरंजन को अधिक महत्व प्रदान करने वाला, विद्या में कुछ पूर्ण तो कुछ अपूर्ण, सुरा-सुन्दरी का सेवी, सन्तान की ओर से चिन्तित और दुःखी, अत्यधिक परिश्रमी और उत्साह शक्ति से भाग्योन्नति हेतु निरन्तर चेष्टित, विरोधियों पर विजयी, गृह-भूमिलाभ युक्त परन्तु द्रव्य-संग्रह में साधारण, अधिक व्ययी, यदा-कदा गृहस्थ संचालनार्थ चिन्तित, ऐश्वर्यमयी रहन-सहन से सम्पन्न, उत्तम स्वास्थ्य युक्त परन्तु गुह्य रोग से पीड़ित, नेत्र ज्योति में कुछ कमी का अनुभवी, साधारण मान पानेवाला, राज्य में बन्धन प्राप्तकर्ता, भोग-विलास में दक्ष, मध्यमायु होगा।

(१४०)- इस जन्मलग्न में जन्म लेनेवाला जातक सामान्य कद, पुष्ट देही, तेजस्वी और प्रभावशाली व्यक्तित्व से पूर्ण, श्यामवर्ण, दैहिक सौन्दर्य में कुछ कमीयुक्त सुन्दरता प्राप्त, साहसी, स्वाभिमानी तथा उग्र, सुरा-सुन्दरी का अधिक सेवी, मदोन्मत्त और बल से उद्धत, मातृ-सुख से हीन एवं पिता से अन्तर्द्वेषी, भाई बहिन और पारिवारिक सुख-सम्बन्ध सहयोग प्राप्त, अत्यधिक परिश्रमी और उत्साह-बल पर भाग्योन्नति तथा द्रव्यकोष संग्रह में दक्ष, गृह-भूमिलाभ युक्त, गुप्तयोजनाओं का निर्माता तथा कार्यक्षेत्र में सफल और यदाकदा भयंकर हानि प्राप्तकर्ता, उत्तम स्वास्थ्य सम्पन्न, मध्यमायुष्य प्राप्त, विषपान का सम्भावी, विरोधियों का प्रबल दमनकर्ता, गुह्य रोग से पीड़ित, सन्तान की ओर से चिन्तित, परोपकारी भावना से वर्जित, स्वार्थ में तत्पर, ऐश्वर्य से रहन-सहन में अधिक व्ययी, सुन्दरी और रुग्णा स्त्री का पति और उसका वंचक, अन्य स्त्रियों में लिप्तकर्ता, शूद्रा स्त्री को संग रखने वाला, कामविद् और आस्तिक होते हुए भी धर्म-मार्ग से हीन, मानप्रतिष्ठा से न्यून, राज्य क्षेत्र में कुछ बन्धन ग्रस्त होगा।

(१४१)- इस जन्म-चक्र में जन्म ग्रहण करने वाला व्यक्ति परम सुन्दर, प्रभावशाली, वाणी में मधुर भाषी, तेजस्वी, गौरवर्ण, सामान्य कद, कृशदेही, ऐश्वर्यमय उज्वल जीवन ले रहने में दक्ष, मृदुल और उदार, चंचल-प्रकृति, मातृ-पितृ सुख में कुछ मतभेद या न्यूनता ग्रस्त, सामाजिक मान-प्रतिष्ठा और तिरस्कार युक्त, धर्मप्रेमी और ईश्वर में पूर्ण आस्थावान, सुन्दरी पतिव्रता का पति, किन्तु स्त्री का प्रथम मरण प्राप्त, यदा-कदा धर्मपालन में आलस्य युक्त, विद्या में पूर्ण दक्ष, परिश्रमी और भाग्योदयार्थ प्रयत्नशील परन्तु भाग्योदय-हीन, पाँच पुत्रों का पिता, वृद्धावस्था में सन्तान द्वारा सुख प्राप्तकर्त्ता, सदाचारी और पवित्र, गृहादि-लाभ में सामान्य, पराश्रित और पर द्रव्य द्वारा गृहस्थ-संचालक, किन्तु गृहस्थ की यथार्थ आय से हीन, भ्रमणशील, वाक्-पटुता से विरोधियों पर सफल, लेकिन अपर्यालवती बल पर जीवन-निर्वाहक, चिन्तनशील और विचारक, तीर्थाटनी और तीर्थ क्षेत्र में मृत्यु प्राप्तकर्त्ता, अध्यात्म-पथ का प्रेमी, सामान्य शूल या अर्शरोगी, उदर शूल से पीड़ित, विनय-सम्पन्न होगा।

(१४२)- इस कुण्डली में जन्मा हुआ मनुष्य, दीर्घदेही, कृशकाय, लम्बा कद, गौरवर्ण, स्वाभिमान से ओतप्रोत, स्वभाव से क्रोधी, अत्यधिक परिश्रमी और साहसी, सुन्दर सुशीला पतिव्रता स्त्री का पति, और स्त्री-सुख में मतभेदी, उत्तम शुभ लक्षण युक्त सन्तान प्राप्त तथा उससे वृद्धावस्था में सुखी, सामान्य धनी तथा गृह-भूमि लाभ से युक्त, मातृ सुख में न्यूनता प्राप्त, पितृ-सुख और सहयोग का भागी एवं पितृभक्त, ऐश्वर्य में उन्मत्त तथा उसमें अधिक व्यय सम्पन्न, भाग्योन्नति हेतु सर्वदा प्रयत्नवान, परन्तु भाग्योदय में अनेक विघ्नों का प्राप्तकर्त्ता, यदा-कदा गृहस्थ-संचालन में द्रव्य की ओर से चिन्तित, विरोधपक्ष पर वाक्चातुर्य एवं गुप्त साधनों द्वारा विजयी, सामाजिक प्रतिष्ठा युक्त, मार्ग में चोरों से भय प्राप्त करने वाला, व्यवसाय क्षेत्र में साहस बल पर कभी-कभी विघ्नयुक्त सफल, धर्म और ईश्वर में आस्थावान किन्तु पालन में आलस्य युक्त, कभी गम्भीर हानि तो कभी गम्भीर लाभ से संयुत, मध्यमायु प्राप्तकर्त्ता, नेत्रज्योति में मन्दता का अनुभवी, उदर शूल एवं गुह्यरोग प्राप्तकर्त्ता, पुत्रों के कारण भाग्यशाली माना जाने वाला होगा।

मृ० सं०

(१४३)- इस कुण्डली में उत्पन्न होनेवाला पुरुष मध्यमकद, गौरवर्ण, पुष्टदेही, स्वाभिमानी और क्रुद्ध उग्र तथा सहज ही शान्त, प्रभावशाली व्यक्तित्व-सम्पन्न, परम विवेकी, उद्यमी और चतुर एवं साहस-सम्पन्न, वाक्‌चातुर्य में दक्ष, विद्या और सन्तति से पूर्ण तथा सुख सहयोग प्राप्त, चिन्तनशील एवं विचारक, संग्रहकर्त्ता और पुरातत्ववित्, संगीत काव्य ज्योतिषादि विद्याओं में दक्ष, व्यवहार कुशल, कटु-सत्य भाषी और आदर्शवादी, प्राचीन संस्कृतिमय विचारधाराओं का पोषक, धर्म और ईश्वर में पूर्ण निष्ठावान्, सामान्य धनी एवं गृहादि लाभ में साधारण, दीर्घायुष्य प्राप्त तथा वृद्धावस्था में सन्तान का उत्तम सुख भोगी एवं भाग्यशाली माने जाने वाला, मातृ-सुख में न्यून एवं पितृ-सुख का भी अल्प भोगी, पितृक्षेत्र का निवासी और पितृभक्त, राज्य और समाज में मान प्रतिष्ठा सम्पन्न, स्त्री-सुख में कुछ मतभेद और न्यूनता से ग्रस्त, शत्रु और विरोधियों का प्रबल विजेता, व्यवसाय में सफल तथापि भाग्योदय में अनेक विघ्नों का प्राप्तकर्त्ता एवं गुह्य रोग से पीड़ित, गृहस्थ संचालनार्थ कर्मों का अनुभवी, तीर्थक्षेत्र में निवास करने वाला होगा।

(१४४)- इस कुण्डली में उत्पन्न होने वाला मानव सामान्य कद, पुष्टदेही, मातृ-सुख में अभाव ग्रस्त, अत्यधिक स्वाभिमानी, गौरवर्ण, दैहिक सौन्दर्य युक्त, परम ऐश्वर्य सम्पन्न और रहन-सहन में अधिक व्ययी, मृदुल और मधुर भाषी, सन्तान सुख में न्यूनता ग्रस्त, विद्या-पक्ष में अवरोध युक्त, बुद्धि में प्रतिभा सम्पन्न, परम चातुर्य से स्वकार्य में दक्ष, गृह-भूमि-धन धान्य-भृत्य-वाहनादि सुखों से पूर्ण, द्रव्यकोष युक्त, अनेक धार्मिक कृत्यों का सम्पादक, धर्म और ईश्वर में निष्ठासम्पन्न और धर्म पालक, गुणी एवं गुणीजनों का सम्मानकर्त्ता, सम्भवतः दत्तक पुत्र ग्रहण करने वाला अथवा बहुत विलम्ब से सन्तान प्राप्तकर्त्ता, उत्तम स्वास्थ्य एवं मध्यमायु प्राप्त, सुन्दरी सुशीला शुभलक्षणा पत्नी प्राप्त करने वाला, भोग विलास में दक्ष, अनेक विद्याओं का जानकार किन्तु आन्तरिक कर्मों का अनुभवी, राज्य क्षेत्र में अवरोध युक्त सफल और उन्नतिकर्त्ता तथा मान-प्रतिष्ठा युक्त, विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न और विद्वान् माना जाने वाला, वाक्‌पटुता और विनयशीलता से विरोधियों पर सफल, पारिवारिक विरोध से ग्रस्त किन्तु बड़ी बहिन का सहयोग भागी होगा।

(९४५)- इस जन्म-चक्र में जन्मा हुआ बालक दीर्घवपु, कृशकाय, उत्तम गौरवर्ण, स्वाभिमानी, अत्यधिक तेजस्वी, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, स्वभाव से उग्र, विद्याक्षेत्र में कुछ न्यूनता युक्त, ऐश्वर्यमय जीवन में अधिक व्ययी, विदेश यात्रा का योग प्राप्त, चातुर्य और विनयशीलता से विरोधपक्ष पर सबल, प्रतापी एवं साहसी, राज्यक्षेत्र में समुन्नत और सामाजिक मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, सन्तान की ओर से चिन्तित और विलम्ब से सन्तान प्राप्तकर्त्ता, परिश्रमी और उत्साही, स्थान-परिवर्तनशील, भाई-बहिन और परिवार से संयुत तथापि उनके सुख-सम्बन्धों से वंचित, कर्मयोगी, परिश्रम द्वारा भाग्योदयी, वृद्धावस्था में धन-धान्य और गृह-भूमि लाभ युक्त, पैतृक-धन और पितृ-सुख प्राप्तकर्त्ता, विलक्षण प्रतिभा-सम्पन्न, स्वकार्य-साधन तथा द्रव्यसंग्रह में निरन्तर प्रयत्नशील, स्त्री-सुख-भोगी, किन्तु स्त्री की अपनी उन्नति की संलग्नता के कारण उपेक्षा करने वाला, मातृ-सुख में न्यूनता का अनुभवी, धर्म और ईश्वर में आस्थावान् और समयानुकूल धर्म का पालक, मध्यमायुष्य सम्पन्न, भ्रमणशील, दृढ़-निश्चयी और हठी एवं अनुशासन-प्रिय होगा।

(९४६)- इस कुण्डली में जन्म ग्रहण करने वाला जातक, तेजस्वी, पुष्टदेही, स्वाभिमानी, शान्त, चतुर और विवेक सम्पन्न, गौरवर्ण, उन्नत-ललाट, विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, विद्या-पक्ष में अवरोधयुक्त समुन्नत, संगीत काव्य-कला आदि का प्रेमी, सन्तान की ओर से चिन्तित, अनेक विद्याओं का ज्ञाता, वाक्चातुर्य सम्पन्न तथा तद् बल से विरोधियों का विजेता, मातृ-सुख में न्यूनता का अनुभवी, ऐश्वर्यमय रहन-सहन युक्त, परोपकारी और दयालु, भगवान् और धर्म में पूर्ण आस्था-युक्त तथा धर्मपालक, राज्यक्षेत्र में समुन्नत और भाग्योदयार्थ अत्यधिक उद्यमशील, पितृ सुख तथा धन प्राप्त कर्त्ता, दुर्घटना योग संयुत, कभी बाहरी हानि तथा परम लाभ पाने वाला, भाई-बहिन और पारिवारिक-सुख-सहयोग में अभाव का अनुभवी, नेत्र ज्योति में मन्दता प्राप्त, सुन्दर सुशीला गौरवर्णा स्त्री का पति और उससे मतभेदी, अन्य के द्वारा भी धन लाभ युक्त, मध्यमायु प्राप्त कर्त्ता, रक्त-पित्त विकारी, अनेक बार मृत्यु तुल्य कष्टों का प्राप्तकर्त्ता, परिश्रमी और उत्साह सम्पन्न, पराक्रम द्वारा भी भाग्योदय युक्त, हठी और दृढ़ निश्चयी, कटु सत्य भाषी, कुछ कृपण, सामाजिक मान प्रतिष्ठा में न्यूनता युक्त होगा।

३५५ : भ० सं०

(१४७)- इस जन्मांग में जन्म लेने वाला जातक सामान्य कद, पुष्ट देही, गौरवर्ण, विद्या क्षेत्र में पूर्ण समुन्नत, मातृ सुख में न्यूनता का अनुभवी एवं अन्य द्वारा बाधित, स्वाभिमानी, तेजस्वी, प्रभावशाली व्यक्तित्व से सम्पन्न, परम चतुर और बुद्धिमान, विवेकी तथा सत्संगी, कुछ कठोर तथा शान्त एवं गम्भीर प्रकृति, विवादास्पद स्थापना में पटु, वाक्‌चातुर्य से मधुर, दूरदर्शी और गम्भीर योजनाओं का निर्माता, गृह-भूमि-धन-धान्य-भृत्य-वाहनादि सुख से पूर्ण, राज्य एवं सामाजिक क्षेत्र में समुन्नत और मान-प्रतिष्ठा संयुक्त, ईश्वर तथा धर्म के साथ कर्मयोग को महत्व प्रदान करने वाला, विरोध पक्ष पर सर्वथा वाक्‌चातुर्य से प्रबल, विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, मध्य मायुष्य प्राप्त कर्ता, धर्मपालक और दानशील, व्यवसाय क्षेत्र में यदा-कदा गम्भीर हानि पाकर गम्भीर लाभ पाने वाला, उच्च कोटि का व्यवसायी, भाई-बहिन परिवार तथा अन्य सभी से मधुर सम्बन्ध युक्त, अनुशासन प्रिय, ऐश्वर्ययुक्त रहन-सहन, पराक्रमी और उत्साही, निश्चित आय सम्पन्न, कभी-कभी विघ्न युक्त भाग्योन्नत, भोगविलास में दक्ष, सुन्दरी स्त्री का पति तथा उससे कुछ मतभेदी होगा।

(१४८)- इस जन्म-चक्र में जन्म ग्रहण करने वाला मनुष्य दीर्घायु और पुष्ट देही तथा सामान्य वर्ण, स्वाभिमानी एवं परिश्रमी, विवेकी तथा चतुर, क्रोधी और उग्र प्रकृति परन्तु विवेक से शान्त, विद्या और सन्तान का पूर्ण सुख प्राप्त, मातृ सुख में न्यून, पितृ सुख एवं पैतृक धन प्राप्त किन्तु पिता से मतभेदी, परिवार एवं भाई-बहिन के सुख सम्बन्धों में कुछ त्रुटि युक्त, द्रव्य-संग्रही, दूरदर्शी, गुप्त-योजनाओं के निर्माण में दक्ष और उनमें सफलता प्राप्त, सामान्य धर्म पालक, हठी और दृढ़ निश्चयी, गहरे हानि-लाभ से संयुक्त तथा दृढ़ लाभ प्राप्त, पैतृक धन द्वारा उन्नति करते हुए व्यवसाय क्षेत्र में परिश्रम एवं कर्मयोग से सफल, भाग्य समुन्नत, प्रभावशाली व्यक्तित्व द्वारा राज्य और सामाजिक मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, सुन्दरी स्त्री से मतभेद रखने वाला स्वामी, ऐश्वर्य से रहने में दक्ष, पर-स्त्री गामी तथापि आदर्शवादी और अनुशासन प्रिय, मध्यमायु सम्पन्न, साहसी और प्रतिकार भावना से संयुक्त एवं विरोध-पक्ष का पूर्ण कौशल के साथ विजेता, भाग्यवान माना जाने वाला, मित्रों से मधुर सम्बन्धों में कुशल, स्व कार्य-साधन में तत्पर और दृढ़ निश्चय सम्पन्न होगा।

पृ० २०

(१४९)- इस जन्मलग्न में उत्पन्न होने वाला पुरुष सामान्य वर्ण, दीर्घ देही और कृशकाय, उग्र तथा क्रोधी, अत्यधिक स्वाभिमानी और अहंकार सम्पन्न, बलोद्धत एवं साहसी, विपुल पराक्रमी और परिश्रमी, धर्म को सामान्य महत्व देते हुए कर्मयोग को अधिक महत्व प्रदान करने वाला, मातृ-सुख में न्यून और पिता से मतभेद युक्त, मध्य आयु प्राप्त, नेत्रज्योति और वात रोग से पीड़ित, सुन्दरी स्त्री प्राप्त, किन्तु उससे मतभेद रखते हुए ऐश्वर्यमय जीवन के साथ पश्चात गामी एवं उन्नत, स्वार्थ-साधन में तत्पर, भाग्योदय में विघ्न युक्त सफलता प्राप्त, निश्चल आत्म-सम्मान, भाग्योन्नति में पूर्ण दक्ष, रक्तविकार प्राप्त, उदरशूल युक्त, दूरदर्शी और श्रेष्ठ योजना और दृढ़ता विरोधियों का प्रबल दमनकारी, विद्या और सन्तान से पूर्ण किन्तु सन्तान की ओर से चिन्तित, राज्य और सामाजिक मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, राज्योपजीवी, अवस्थाओं में तिरस्कृत और दुखी, बदला लेने को उद्यत, अत्यधिक हठी और अनुशासनप्रिय, गृह भूमि लाभ से युक्त और द्रव्यकोष का संग्राहक, भाइयों और परिवार से कुछ मतभेद युक्त सम्बन्धों का पालन करने वाला होगा।

(१५०)- इस जन्म-चक्र में जन्म ग्रहण करने वाला व्यक्ति, दीर्घ वपु, कृशकाय, उन्नत-ललाट, सामान्य वर्ण, दैहिक सौन्दर्य में त्रुटि युक्त, मातृ-सुख से वंचित अन्य द्वारा पालित, गृह-भूमि लाभ में कुछ त्रुटि का अनुभवी, हठी क्रोधी और उग्र स्वभाव, स्वाभिमान और अहंकार सम्पन्न, वाम कुपथ और प्रतिस्पर्धा भावना युक्त, सुन्दरी स्त्री प्राप्त परन्तु उसके सुख सहयोग से हीन, परस्त्री में रमणशील, द्रव्यकोष का संग्रही, गहरी हानि और लाभ के साथ भाग्य में विघ्नों को प्राप्त करने वाला, विद्या और सन्तान से युक्त किन्तु सन्तति की ओर से चिन्तित, नेत्र ज्योति, रक्तविकार और गुप्तेन्द्रिय का रोगी, अनुशासनप्रिय और दृढ़ निश्चयी, बाह्य सम्बन्धों में मधुर, राज्योपजीवी परन्तु बन्धन प्राप्त, सन्तानवत् कारण भाग्यवान माना जाने वाला, मान-प्रतिष्ठा में न्यून, भाइयों और परिवार का द्वेषी, आन्तरिक दुखी, व्यवसाय में गहरा हानि-लाभ के साथ सफलता प्राप्त, कुछ गुप्त कर्मों में भी संलग्न, विरोधियों का विजेता, परिश्रम और कर्म को अधिक महत्व प्रदाता, कर्मबल और भाग्य को मानने वाला, मध्यमायुष्य सम्पन्न, गृहादि लाभ में त्रुटि युक्त लाभ पाने वाला, वृद्धावस्था में दुखी होगा।

(२५१)- इस कुण्डली में उत्पन्न होने वाला मानव स्वाभिमानी- हठी- क्रोधी अत्यधिक अहंकारी और अनुशासन-प्रिय, दीर्घवपु, कृशकाय तथा सामान्य वर्ण प्राप्त, भाईबहिन के सुख सम्बन्धों में कुछ त्रुटि का अनुभवी, धर्म और ईश्वर के साथ परिश्रम और कर्मबल को महत्व प्रदाता, दीर्घायुष्य प्राप्त, गृह- भूमिलाभ से सम्पन्न तथा कुछ कमी का अनुभव करते हुए द्रव्य-संग्रह करने में तत्पर और सामान्य धनी, कर्मक्षेत्र में असफलता पाने पर भाग्य और ईश्वर को कोसने वाला, मान प्रतिष्ठा हीन, शत्रुओं के दमन में दक्ष, उत्तम स्वास्थ्य युक्त किन्तु नेत्र ज्योति और मूत्रेन्द्रिय विकारों से भी ग्रस्त, उत्तम सन्तान का पिता और सन्तान द्वारा वृद्धावस्था में सुख प्राप्त, भाग्योदय में विघ्नों के साथ समुन्नत, राजपक्ष से मुकदमें बन्धन युक्त, प्रतिकार भावनाओं से संयुक्त, गुप्त योजनाओं के निर्माण में पटु, दस्युओं सदृश प्रकृति, स्त्री के सुख से वंचित, परस्त्री में आसक्त और धोखा पाने वाला, मातृ सुख प्राप्त, पितृ-सुख का अल्प भोगी, तीर्थक्षेत्र के समीप मृत्यु प्राप्त कर्ता और मरणकाल में ईश्वर स्मरण से हीन होने के कारण नरक प्राप्ति का अधिकारी होगा।

(२५२)- इस कुण्डली में उत्पत्ति ग्रहण करने वाला बालक दीर्घवपु, कृशकाय, उन्नत ललाट, सामान्य वर्ण, पिता से अन्तर्द्वेष करने वाला मातृ सुख भोगी, अत्यधिक स्वाभिमानी- हठी- क्रोधी- दूरदर्शी और अनुशासनप्रिय, ईश्वर और धर्म को जानते हुए भी न मानने वाला, सुन्दरी स्त्री का स्वामी होते हुए परस्त्रियों में आसक्त, बलोद्धत और साहसी, गुप्त योजनाओं के निर्माण में दक्ष और शत्रुओं का विजेता, कर्म तथा परिश्रम को अधिक मान्यता प्रदान करने वाला, बन्धन युक्त, मान-प्रतिष्ठा से हीन, सन्तान-सुख में त्रुटि युक्त, दीर्घायुष्य प्राप्त, वृद्धावस्था में दुखी और तिरस्कृत, भाई-बहिन के सुख सम्बन्धों में त्रुटि युक्त, सामान्य धनी, गृह- भूमिलाभ में पितृक्षेत्र का अधिकारी, यदा-कदा असफलता के कारण ईश्वर और भाग्य को मान्यता देकर धर्म-पालक, परिश्रम और पुरुषार्थ से द्रव्य-संग्रह में संलग्न और भाग्योदय में सामान्य सफलता युक्त, पारिवारिक दुखी, मरणकाल में ईश्वर स्मरण से हीन, नेत्र ज्योति में विकार और गुप्त रोग पाने वाला, सतत चालबाजी और धोखे से कार्य करने में दक्ष, प्रतिकार भावना युक्त होगा।

(१५३)— इस जन्म लग्न में जन्म लेने वाला मनुष्य सामान्य कद, पुष्टदेही, गौरवर्ण, परम तेजस्वी और प्रभावशाली, उत्साही और साहस-सम्पन्न, भविष्य सोचने वाला दूरदर्शी, अत्यन्त चतुर और स्वयं में आन्तरिक परेशान रहने वाला, विद्या क्षेत्र में पूर्ण दक्ष किन्तु सन्तान की ओर से चिन्तित एवं दुःखी, परिश्रमी और पराक्रमी होते हुए भी आलस्ययुक्त, आलस्य के कारण हानि प्राप्त करता, हठी और स्वाभिमानी, कामदेव के समान सुन्दर एवं भोग-विलासादि में पूर्ण दक्ष, अधिक कामुक और नेत्रज्योति में विकार प्राप्त, सुन्दर पतिव्रता गौरांगना स्त्री का पति किन्तु उसके साथ वंचक, अन्य अनेक स्त्रियों में रमण करता, ऐश्वर्य और कामवासना तृप्ति को धन का अधिक व्ययी, एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर विपुल द्रव्य प्राप्त करता, धर्म विद और ईश्वर में आस्थावान, सामान्य धर्मपालक, भाग्यशाली, व्यवसाय में असफलता युक्त सफलता पाने वाला, दृढ़ और निश्चित लाभ युक्त, विलक्षण मेधावी, प्रज्ञा संपन्न, मध्यमायु प्राप्त, मातृ सुख से वियोग का भागी, पितृ-सुख हीन, सामाजिक प्रतिष्ठा में न्यूनता का अनुभवी, भाई बहिन युक्त और परिवार से द्वेष पाने वाला तथा विरोधी पक्ष पर चातुर्य तथा गुप्त रीति से प्रभावशाली होगा।

(१५४)— इस जन्मांग में जन्म ग्रहण करने वाला पुरुष सामान्य कद, पुष्टदेही, हठी और स्वाभिमानी, कटु-सत्य भाषी, गौरवर्ण, उन्नत ललाट, मातृ सुख से वंचित, पितृ-सुख का अल्प भोगी, चंचल प्रकृति, गम्भीर और उच्च विचारक, दूरदर्शी, परोपकारी और दयालु, प्रभावशाली व्यक्तित्व एवं वाक्-चातुर्य सम्पन्न, परम मेधावी और चतुर, ईश्वर एवं धर्मनिष्ठ और धर्मोपदेष्टा, ऐश्वर्यमयी रहन सहन में दक्ष, विद्यापक्ष में सामान्य तथा सन्तान की ओर से असन्तुष्ट या चिन्तित, हीन, परिवारी जनों से अत्यन्त शत्रुतापूर्ण सम्बन्धों का प्राप्तकर्ता, सुन्दरी गौरांगना स्त्री का पति किन्तु उसका वंचक और पर-स्त्री में रमणशील, आदर्शवादी, प्राचीन संस्कृति का आराधक, पितृक्षेत्र निवासी और पिता का पूर्ण भक्त, धन संग्रह में कमी का अनुभवी, परिश्रम और उत्साह शक्ति से अनेक अवरोध पाते हुए भाग्योदय में सम्मुन्नत, वाणी में प्रगल्भ, विद्वान, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में प्रभावशील तथा मानप्रतिष्ठा सम्पन्न, विरोध-पक्ष पर गुप्त रीति से सफल, मध्यमायुष्य युक्त, समाज में भाग्यशाली मान्यता प्राप्त, गृह-भूमि लाभ में सामान्य, यदा कदा स्त्री के विषय में धोखा ग्रस्त, रहन सहन में अधिक व्यय करने वाला, हठी और दृढ़ निश्चयी होगा।

भ० सं० 0375

कु० १०

(१५५)- इस जन्मलग्न में जन्म लेने वाला जातक दैहिक सौन्दर्य में अभावयुक्त दीर्घवपु, गौरवर्ण, अत्यन्त साहसी और सहज ही भयग्रस्त, अतीव क्रोधी और उग्र प्रकृति, प्रत्येक कार्य को करने में तत्परतायुक्त, धर्म-कर्म और ईश्वर निष्ठाहीन, सभी से विरोध पाने वाला, राज्य और समाज में प्रतिष्ठा का अभाव पाने वाला, पिता का अल्पसुख भोगी अथवा पिता से द्वेषी, मातृ-सहयोग का भागी और समुन्नत, अतीव मलिन और कुत्सित विचार धाराओं से युक्त, स्त्री और सन्तान एवं विद्या सुख में नितान्त अपूर्ण, हीनवर्ण, हीनवर्ग की अन्य स्त्रियों में रमणशील, राज्य क्षेत्र में बन्धन प्राप्तकर्त्ता, अनुशासनात्मक शक्ति में पूर्ण, आयु की अल्पता से संयुक्त, बुद्धि विवेकहीन, अनेक स्थानों से तिरस्कृत, भाग्योदय में हीनता का अनुभवी, मुख और माथे पर प्रत्याघात के चिन्हों से युक्त, ठगी अथवा धोखे से आजीविका में संलग्न, चोर एवं दस्युओं जैसा व्यवहारी, भाई-बहिन और परिवारीजनों से बहिष्कृत, यदाकदा धन प्राप्त कर लेने में सक्षम, आत्म-घाती किंवा शीघ्र ही मृत्यु प्राप्त, कुमार्ग गामी, द्रव्य संग्रहार्थ प्रयत्नशील, सम्भवतः पितृघाती होगा।

(१५६)- इस जन्मांग में जन्म ग्रहण करने वाला बालक मध्यमकद, पुष्ट देही, श्यामवर्ण, अतीव साहस सम्पन्न, चतुर और विवेकी, अत्यन्त मधुर वाक्य कहकर आन्तरिक स्वार्थ-तत्पर, स्वाभिमानी और क्रूर प्रकृति, धर्म कर्म और ईश्वरोपासना का आकांक्षी होते हुए धर्मपालन में नितान्त हीन, ऊपर से अच्छा दिखाई देने वाला, प्रमलिन और नीच प्रकृति का आन्तरिक द्वेषी और प्रतिकार भावनाओं से संयुक्त, मातृ-पक्ष अथवा मातृ-सुख सहयोग का भोगी, राज्य और सामाजिक प्रतिष्ठाहीन, यदाकदा दया का व्यवहारी, अनुशासन और गुप्त योजनाओं के निर्माण में दक्ष, विद्या एवं सन्तान तथा भोगसुख से अभाव ग्रस्त, अन्य स्त्रियों का वंचक-लम्पट और उनमें रमणकर्त्ता, अतीव कामुक, ऐश्वर्य से रहन-सहन में दक्ष, द्रव्य संग्रहार्थ प्रयत्नशील, अन्य स्थान का धन पाने वाला, भाई बहिन तथा परिवार के सुख-सहयोग से वंचित, पितृ-द्वेषी, यदाकदा अनायास द्रव्य पाकर अपने को भाग्योन्नत मानने वाला, मेधावी किन्तु आत्मबल से हीन, आन्तरिक भय का अनुभवी, सभी से विरोध करने या पाने वाला, वाक् चातुर्य से कार्य करने में सक्षम, गुप्तेन्द्रियरोगी, अल्पायु प्राप्त होगा।

भ० सं० ११४: ८६ कु० र०

(१५७)- इस कुण्डली में उत्पन्न हुआ पुरुष दैहिक सौन्दर्य में त्रुटियुक्त, श्याम वर्ण, स्वाभिमानी और क्रूर, मधुरवाक्य वक्ता, ऐश्वर्यमयी रहन-सहन में दक्ष और तत्सम्बन्ध में अधिक व्ययी, सामान्य कद तथा पुष्ट देही, धर्म और ईश्वर में आस्थावान् तथा यदाकदा धर्म पालक, अनेक अरिष्टों से ग्रस्त, आपत्ति काल में ईश्वरवादी, परिश्रमी और साहसी तथा कर्मयोग को अधिक महत्व प्रदान करने वाला, पितृ एवं मातृ-सुख में न्यूनता का अनुभवी, पौरुष से भाग्योन्नत और धनसंग्रही तथा सामान्य धनी, मध्यमायु से पूर्व मृत्युग्रस्त, विद्या और सन्तान सुख में सामान्य, स्त्री सुख सम्बन्धों में मतभेद रखकर अन्य स्त्रियों का वंचक और लम्पट तथा उनमें रमणकर्ता, कामवासना-तृप्ति हेतु प्रत्येक कार्य करने को तत्पर, स्वार्थी और साधारण दयालु, भोग-विलास में पटु, अन्य स्थान का निवासी, राज्य और सामाजिक प्रतिष्ठा में अभाव ग्रस्त, भाई-बहिन और पारिवारिक सुख सम्बन्धों में अपूर्णता ग्रस्त, सभी से विरोध पाने वाला, गुप्त रोग या हृद् रोग तथा शुक्र रोग से पीड़ित, आन्तरिक दौर्बल्य और भय से सम्पन्न, किसी अन्य स्त्री से धन के कारण धोखा पाने वाला होगा।

(१५८)- इस कुण्डली-चक्र में उत्पन्न होने वाला मनुष्य स्वाभिमानी और क्रूर तथा क्रोधी प्रकृतियुक्त, दैहिक सौन्दर्य में त्रुटियुक्त, प्रभावशाली-व्यक्तित्व सम्पन्न, पिता का अल्प सुख भोगी, मातृक्षेत्र अथवा मातृ सुख सहयोग का भोगी, धन संग्रहार्थ निरन्तर प्रयत्नवान्, कृपण और कुचैल, सभी से विरोधयुक्त, श्यामवर्णा स्त्री से मतभेदग्रस्त अन्य स्त्री का भोगी, शुक्र रोग से पीड़ित, नेत्र ज्योति में मंदता का अनुभवी, परिश्रम और पुरुषार्थ से भाग्योन्नति में संलग्न, सामान्य कद, कृशदेही, गौरवर्ण, विद्या और सन्तान सुख में अभाव ग्रस्त या साधारण, सामाजिक और राजनीय प्रतिष्ठा में न्यून, ईश्वर और धर्म में आस्थाहीन, दस्युओं या चोरों से भय पाने वाला, सामान्य आयु सम्पन्न, अन्यस्थल निवासी, द्रव्यकोष और स्थिर आय से सम्पन्न, ऋणी और हृदि निरव्ययी, किसी के विरोध की चिन्ता न करने वाला, बुद्धि-विवेक में दुर्बल, भाई-बहिन और व्यापारीजनों से युक्त किन्तु धन के कारण उनके विरोध से युक्त, अनेक आपत्ति और अरिष्टों से संयुक्त, राज्य कार्यों से समुन्नत और न्यायालय की शरण लेकर अपने कार्यों में सफलता प्राप्त करेगा।

(१५९)- इस कुण्डली में उत्पत्ति ग्रहण करने वाला मानव सामान्य कद, गौर वर्ण, चतुर और विवेकी, गम्भीर तथा शान्त, धर्म-कर्म और ईश्वर में अत्यन्त आस्थावान् और धर्म-पालक, गो-ब्राह्मण-भक्त, सेवा-परायण, परोपकारी और दयालु, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, मेधावी तथा धर्मोपदेष्टा, अनेक विद्याओं का जानकार, मातृ-पितृ सुख सहयोग से पूर्ण, स्ववाक्य-स्थापना में दक्ष, मधुर और सत्यभाषी तथा आदर्शवादी, शत्रु और विरोध से हीन, अनेक औषध प्राप्तकर्ता, राज्य और सामाजिक उच्च पदासीन तथा मान प्रतिष्ठा सम्पन्न, भाई-बहिन और परिवार का सुख-सहयोग प्राप्तकर्ता, द्रव्य संग्रह पर तत्पर और द्रव्य-कोष से पूर्ण, अनेक प्रकार से उच्च आय से युक्त, पितृ-भक्त, चिन्तनशील और विचारक, दीर्घजीवी, विद्या-पक्ष में अवरोध युक्त सफलता प्राप्त, सन्तान की शुभलक्षणता से सुखी, कर्म और साहस के बल पर भाग्योन्नत, उन्नतिशील और सफल व्यवसायी, अनेक धर्मकृत्यों का सम्पादक, सुन्दरी, पतिपरायणा, गौरांगी मृदुल स्वभाविनी स्त्री का पति और उसी में तथा गृहस्थ में अनुरक्त, माता से कुछ मतभेद प्राप्त, ऐश्वर्य-धन धान्य-गृह भूमि युक्त होगा।

(१६०)- इस कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य दीर्घ वपु, ऊँचा कद, कृशदेही, विलक्षण प्रतिभा-सम्पन्न, पिता से कुछ मतभेद युक्त, पितृक्षेत्र निवासी, विद्या-क्षेत्र में पूर्ण दक्ष और कुशल, सन्तान की ओर से चिन्तित परन्तु उत्तम लक्षण युक्त सन्तान प्राप्त, प्रचण्ड मेधावी, क्रोधी और स्वाभिमानी, गौरवशाली, प्रभावशील व्यक्तित्व से ओत-प्रोत, सत्यवक्ता व्यवहारी, आदर्श स्वरूप, धर्म और ईश्वर-निष्ठा में पूर्ण एवं धर्मपालक, भाई बहिन के सुख सम्बन्धों में त्रुटि युक्त, राज्यपक्ष में सम्मुन्नत और भाग्योन्नत, सामाजिक मान प्रतिष्ठा सम्पन्न, परिश्रमी और उत्साही, नेत्रज्योति में कुछ विकार प्राप्त, जीवन में कई बार भयंकर मृत्यु तुल्य कष्टों का प्राप्तकर्ता, धन संग्रही और द्रव्यकोष से पूर्ण, मध्यमायुष्य प्राप्त, उत्तम कार्यों में धन व्यय करने वाला, साहसी और विवेकी, चतुराई तथा दूरदर्शिता से अनेक कार्यों में सफल, शत्रु और विरोध-पक्ष पर विजयी, ऐश्वर्ययुक्त जीवन व्यतीत करने में दक्ष, पारिवारिक और वाह्य सम्बन्धों में त्रुटि युक्त, मधुर, हठी और दृढ़निश्चयी तथा आत्मबली, सुन्दरी गौरांगी पतिव्रता स्त्री प्राप्त, किन्तु उससे कुछ मतभेद युक्त, पुरुषार्थ से कुल का नामोज्वल करने वाला, भाग्यशाली होगा।

भृ० स० ६३३२

कु० र०

(१६१)- इस जन्म चक्र में जन्म लेने वाला बालक दीर्घायु, कृशकाय, स्वाभिमानी और क्रोधी, पिता से कुछ मतभेद युक्त, परिश्रमी और पितृ-सुख सहयोग का भागी एवं पितृ क्षेत्र-निवासी, राज्योपजीवी, गौरवर्ण, गोत्र में योग्य वाणी का वक्ता, धर्म और ईश्वर में आस्थावान, मातृ-सुख का अल्प-भोगी, विद्या क्षेत्र में सामान्य, सन्तान की ओर से चिन्तित तथा दुःखी, प्रभावशाली व्यक्तित्व से सम्पन्न, सदाचारी और पवित्र, अनुशासन प्रिय तथा आदर्श स्वरूप, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में समुन्नत एवं मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, कईबार मृत्यु तुल्य कष्ट और अरिष्ट प्राप्त कर्ता, गुप्त रीति से विरोधियों का दमन करने में दक्ष, परिश्रमी और उत्साही तथा साहस शक्ति से अनेक कार्यों में सफल, ऐश्वर्ययुक्त रहन सहन में अधिक, मार्ग में चोरों से भय संयुक्त, भाई बहिन और पारिवारिक शक्ति में अभाव-ग्रस्त, परिश्रम से जीविकोपार्जन का द्रव्य संग्रहार्थ निरन्तर चेष्टित तथा भाग्योन्नत और सामान्य धनी, धर्मपालक, निष्ठुर होते हुए कुछ दयालु, दैहिक सौन्दर्य में कुछ कमी का अनुभवी, सुन्दरी, शिक्षिता, गौरांगी, पतिव्रता गृहिणी का प्रापक तथा गृहस्थासक्त होगा।

(१६२)- इस जन्म कुण्डली में जन्मा हुआ जातक दीर्घजीवी, सामान्य कद और सामान्य वर्ण, स्वाभिमानी, चतुर और विवेकी, विद्या क्षेत्र में कुछ त्रुटि युक्त, पुत्रादि से युक्त, स्वाभिमानी और साहस सम्पन्न, गौरवान्वित-देव भक्त तथा दयालु और धर्मपालक, सुन्दर वक्तृत्व युक्त, स्वभाव से उग्र दिखाई देने वाला किन्तु शान्त और दयालु, ऐश्वर्ययुक्त रहन-सहन में पटु, सुन्दर शिक्षिता गौरांगी तथा पतिव्रता स्त्री से मतभेदी और गृहस्थासक्त, गृहादि लाभ में सामान्य, अधिक व्ययी, गृहस्थ-संचालनार्थ आय में संकट का अनुभवी, परिश्रम से जीविकोपार्जक, और भाग्योदयार्थ सतत प्रयत्नशील, वृद्धावस्था में पुत्रों के कारण सुख प्राप्त कर्ता और भाग्यशाली, सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में सामान्य, द्रव्य-संग्रह में अभाव ग्रस्त, विरोध-हीन, किन्तु भाई-बहिन और कौटुम्बिक सुख-सम्बन्धों में न्यूनता का अनुभवी, सर्वदा अर्थाभाव से आन्तरिक दुःखी, यदाकदा मलिन विचार युक्त परन्तु पवित्रतायुक्त, कर्म क्षेत्र में भाग्य हीनता से हीन, वाक्पटु और स्ववाक्य स्थापना में दक्ष, मातृ-सुख न्यूनता का अनुभवी तथा पितृ-सुख का अल्प भोगी और पितृ क्षेत्र-निवासी, उदर विकार से पीड़ित होगा।

(१९३)- इस कुण्डली चक्र में उत्पत्ति ग्रहण करने वाला व्यक्ति दीर्घ देही और कृश, गोधूम वर्ण, स्वाभिमानी और क्रोधी, स्वभाव से उग्र, स्वार्थपूर्ति में सर्वदा तत्पर, गृहादि लाभ में सामान्य, साधारण धन-संग्रही, प्रतिकार की भावना और से संयुक्त, पारिवारिक और भाई-बहिन तथा मातृ-सुख सम्बन्धों में अभावग्रस्त, पितृ-सुख का अल्पभोगी और अन्य स्थलप्रवासी, अतीव साहसी और प्रभावशाली व्यक्तित्व से सम्पन्न, स्त्री-सुख में अभावयुक्त अथवा मतभेद के साथ सफल, भोग-विलास और स्त्री तथा गृहस्थ की चिन्तन करते हुए सर्वदा भाग्योदय और धन-संचय में संलग्न, पुत्रादि संयुक्त, विद्याक्षेत्र में सामान्य, परिश्रम और उत्साह शक्ति से द्रव्य संग्रही तथा सामान्य-धनी, वृद्धावस्था में सन्तान से सुखी और भाग्यशाली, यदा कदा गृहस्थ संचालन में द्रव्य की कमी का अनुभवी, आवश्यक रूप से धर्मपालक, ईश्वर आस्था संयुक्त, उदर शूल और रक्त-विकार से पीड़ित, रहन-सहन में साधारण, गुप्त रीति और चातुर्य से विरोधि-पक्ष पर सबल विजयी, मध्यमायुष्य सम्पन्न, तीर्थक्षेत्र में निवासी और देहत्यागी होगा।

(१९४)- इस जन्मलग्न में जन्मा हुआ पुरुष उत्तम गौर वर्ण, सामान्य कद, पुष्ट देही, परम सुन्दर, स्वाभिमानी, चतुर और विवेकी, स्वार्थ-पूर्ति में सर्वदा तत्पर, मधुर और सत्य भाषी किन्तु आन्तरिक चालबाज, मातृ-सुख-सहयोग में न्यूनता प्राप्त, भाई-बहिन के सुख सम्बन्धों का प्राप्तकर्त्ता, परिवारीजनों से दुःखी, ऐश्वर्य और ठाटबाट से रहने वाला, भोग-विलास में दक्ष, सुन्दरी, श्यामा, शिक्षिता स्त्री का पति और अन्य स्त्रियों के रमण से वर्जित, किन्तु अधिक कामुक, उत्तम स्वास्थ्य संयुक्त दीर्घजीवित प्राप्त, पुत्रादि से वृद्धावस्था में सुखी और भाग्यशाली, पिता से मतभेद युक्त पितृ-सुख सहयोग का भागी, विद्या शक्ति-चातुर्य और साहस से व्यवसाय में सफलतायुक्त पैतृक धन से समुन्नत होकर गृह भूमि भृत्य-वाहन और द्रव्यकोष का अच्छा लाभ प्राप्तकर्त्ता, नेत्र ज्योति में त्रुटियुक्त, यदाकदा उच्च लाभ और हानि का प्राप्तकर्त्ता, परिश्रम में निरन्तर रत, धर्म और ईश्वर में आस्थावान तथा धर्मपालक और कर्मयोगी, सामाजिक मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, तीर्थक्षेत्र-निवासी और देहत्यागी तथा क्रुद्ध उग्र और दयालु एवं परोपकारी, शत्रुजित् होगा।

भृ० स० ८.३८.

(१६५)- इस जन्माङ्ग में जन्मा हुआ बालक सामान्य कदवाला, गोधूम वर्ण, ऊँचा भाल, दैहिक-सौन्दर्य में कुछ त्रुटि युक्त, स्वाभिमानी, तेजस्वी और प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, परम साहसी और चतुर, स्वार्थसिद्धि हेतु मधुरवाणी एवं चतुराई से कार्य करने में दक्ष, स्वभाव से उग्र और क्रोधी, अनुशासनप्रिय, भोग-विलास में दक्ष; सुन्दरी सुशिक्षिता पतिव्रता स्त्री प्राप्त करते हुए उससे मतभेद युक्त-अन्य स्त्रियों का भोगी; साहस और चातुर्य से व्यवसाय में सफल; कार्य हेतु अन्य स्थानों में भ्रमणशील, हृद्‌रोगी और रक्त-विकार युक्त, मध्य आयुष्य प्राप्त, विरोधियों का दमनकारी, विद्या और सन्तान में पूर्ण तथा सुखी, राज्य क्षेत्र में बन्धन प्राप्तकर्ता, सामाजिक प्रतिष्ठा में न्यूनता युक्त, कई बार मृत्यु तुल्य कष्टों का प्राप्तकर्ता, ईश्वर और धर्म में आस्थावान, आदर्शवादिता युक्त, पराक्रम शैथिल्य और आलस्य के कारण भोग ग्रस्त, भाग्यक्षेत्र में समुन्नत, ऐश्वर्य से रहन-सहन में कुशल, मातृ सुख सहयोग प्राप्तकर्ता, गृह-भूमि लाभ युक्त, भाई-बहिन और पारिवारिक सुख-सहयोग में त्रुटि सम्पन्न, पितृ क्षेत्र निवासी, पितृ-मतभेद युक्त, यदाकदा गृहस्थ संचालन में त्रुटि युक्त होगा।

(१६६)- इस जन्म चक्र में जन्म लेने वाला जातक सामान्य कद, पुष्ट देही, उत्तम गौरवर्ण, शारीरिक-सौन्दर्य सम्पन्न, परम चतुर तथा विवेकी, साहसी और स्वाभिमानी, सामान्य उग्र और सहज ही शान्त, मधुर और सत्य वाणी सम्पन्न, हँसने हँसाने वाला, धीर-वीर गम्भीर, साहस और चातुर्य से स्वकार्य क्षेत्र में पूर्ण सफल, विद्या-बुद्धि एवं सन्तान सम्पन्न और उनसे सुख प्राप्तकर्ता, मध्यमायु से अधिक आयु प्राप्तकर्ता, माता पिता का पूर्ण सुखभोगी और पितृभक्त, उत्तम धार्मिक कार्यों में धन का व्ययी, ऐश्वर्य से रहन-सहन में दक्ष, भाई-बहिन और कौटुम्बिक सुख सहयोग में त्रुटि का अनुभवी, दीर्घजीवी, राज्य प्रतिष्ठा में न्यूनता युक्त, सामाजिक मान प्रतिष्ठा सम्पन्न, भोग-विलास में दक्ष, ईश्वर और धर्म में पूर्ण निष्ठावान तथा धर्म पालक, धन-धान्य गृह भूमि वाहनादि सुख से पूर्ण, सिर पर चोट के चिन्ह युक्त, उत्तम निश्चित आय सम्पन्न, विरोधियों पर विजयी; सुन्दरी, गौरांगी, पतिव्रता स्त्री का पति और गृहस्थ में अनुरक्त, रक्त-विकार और हृद्‌रोग युक्त, परोपकारी और दयालु किन्तु सामान्य निष्ठुर, पितृक्षेत्र में भी पूर्ण भाग्योन्नत तथा उत्तम कार्यों के कारण स्वर्ग प्राप्ति का अधिकारी होगा।

कु० १०

भ०
स०
३३८

(१६७)- इस जन्म लग्न में जन्मा हुआ मनुष्य सुन्दर, गौरवर्ण, शारीरिक सौन्दर्य में त्रुटि युक्त, नेत्र-ज्योति में विकार-ग्रस्त, दीर्घ और कृशकाय, उन्नत ललाट युक्त, स्वाभिमानी और अधिक साहसी तथा धैर्य सम्पन्न, कटु-सत्य का भाषी, आदर्श स्वरूप, प्रकृति से क्रुद्ध कृपण और धन संचयार्थ निरन्तर प्रयत्नवान् तथा सामान्य धनी, माता का अल्प सुख भोगी और पितृ सुख सहयोग का भागी, पितृ क्षेत्र निवासी, यदा-कदा भाग्योदय और गृहस्थ-संचालन में त्रुटि का अनुभवी, ईश्वर और धर्म मार्ग का अनुयायी तथा उत्तम कार्य और रहन-सहन में धन का अधिक व्ययी, भाई-बहिन के सुख सम्बन्धों में मधुरता प्राप्त किन्तु कौटुम्बिक सहयोग में त्रुटि युक्त, सुन्दरी गौरांगी शिक्षिता स्त्री का पति और उससे सुख-सहयोग का भागी, सन्तान तथा विद्या की ओर से चिन्तित, स्वकार्य क्षेत्र में सफल, वाक्-चातुर्य से विरोधियों पर सफलता युक्त, मध्यमायु प्राप्तकर्ता, सामाजिक प्रतिष्ठा सम्पन्न, राज्य क्षेत्र में त्रुटि युक्त सफल, भाग्योन्नति में न्यूनता का अनुभवी, चिन्तनशील और विचारक तथा अच्छा वक्ता होगा।

(१६८)- इस जन्मलग्न में उत्पन्न होने वाला व्यक्ति सामान्य कद, पुष्ट देही, गेहुँआ वर्ण, शारीरिक सौन्दर्य और नेत्र ज्योति में विकार ग्रस्त, मलिन और कुचैल हृदय, स्वाभिमानी और साहसी तथा क्रोधी एवं स्वार्थसिद्धि हेतु मधुर-वाक्य कहने वाला, मूत्रेन्द्रिय और उदर रोग से पीड़ित, भोगविलास में दक्ष तथा अधिक कामी एवं अन्य स्त्रियों में अधिक भोगी, विद्या और सन्तान से पूर्ण, वृद्धावस्था में सन्तान से तिरस्कृत, ऐश्वर्य और भोग-विलास में अधिक धन व्यय करने वाला, सुन्दरी श्यामा स्त्री प्राप्त कर्ता, किन्तु उससे वैमनस्य और मतभेदी, भाई-बहिन और परिवारी के क्लेशों से युक्त, मातृ-सुख का अल्प भोगी, पिता से मतभेद युक्त सुख का भोगी और पितृ क्षेत्र निवासी, प्रतिकार भावना युक्त, दीर्घजीवी, उत्तम प्रबन्धक और राज्य वेतनोपजीवी, गृहस्थ-संचालन में त्रुटि का अनुभवी, वाक्-चातुर्य से विरोध पर सफल तथापि विरोध प्राप्तकर्ता, गृहादि लाभ में सामान्य, भाग्योन्नति में अनेक विघ्न पाने वाला, धन-संग्रह से नितान्त हीन, आरम्भ में शिशुप्रिय, धर्म-कर्म और ईश्वर को मानने वाला, किन्तु धर्मपालन से हीन होगा।

कु०
१०

(२६९)- इस कुण्डली में उत्पत्ति ग्रहण करने वाला मानव दीर्घ और पुष्ट देही, परम सुन्दर और गौरवर्ण, चतुर और विवेकी तथा साहसी, प्रभावशाली तेजस्वी व्यक्तित्व सम्पन्न, मधुर और सत्यमय आदर्शवाणी युक्त, धर्मोपदेष्टा और धर्मविद् एवं ईश्वर तथा धर्म में निष्ठावान् किन्तु धर्मपालन में स्वार्थी, माता और बहिन-भाई तथा पारिवारिक सम्बन्धों तथा सुख में अभावग्रस्त, पितृ सुख सहयोग का भागी एवं पितृक्षेत्र-निवासी, विद्या और सन्तान में पूर्ण तथा सुख प्राप्तकर्त्ता, धनसंग्रह में त्रुटि का अनुभवी, गृहस्थ सरल; स्थूला, श्यामा स्त्री का पति, ऐश्वर्यमय जीवन युक्त तथा अधिक व्ययी, मधुर वाणी तथा चतुराई से विरोधपक्ष का विजेता, उदर और गुप्त रोग-ग्रस्त, दीर्घायुष्य प्राप्त, भाग्योन्नति में विघ्नयुक्त, अन्य-स्त्री में भी रमणकर्त्ता और धोखा प्राप्त, पितृ-सहयोग से व्यवसाय क्षेत्र में सफल, यदाकदा आलस्य के कारण हानि प्राप्तकर्त्ता, सामाजिक और राज्य क्षेत्र में मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, उच्चकोटि का विचारक, गृह भूम्यादि लाभ में सामान्य, बुद्धिकौशल से आपत्ति या अरिष्टकाल में सफलता प्राप्त, धन संचयार्थ चेष्टित और त्रुटियुक्त होगा।

(२७०)- इस कुण्डली चक्र में उत्पन्न होने वाला पुरुष दीर्घ और पुष्ट शरीर, उन्नत ललाट, परम सुन्दर, प्रभावशाली और तेजस्वी, चिन्तनशील और विचारक, नेत्रज्योति और गुप्त रोग पीड़ित, अत्यधिक पुरुषार्थी और साहसी, पुरुषार्थ और पराक्रम से भाग्योन्नतिकर्त्ता किन्तु भाग्योन्नति में त्रुटियुक्त, आदर्श-सत्य और मधुर वाणीयुक्त, परम मेधावी, अनुशासनप्रिय, कार्य करने को सर्वदा उद्यत, धर्म-कर्म और ईश्वर में निष्ठावान् एवं धर्म का यथार्थ पालक, सुन्दरी स्थूला श्यामा स्त्री युक्त और गृहस्थ-सुख प्राप्तकर्त्ता, विद्या एवं सन्तति सुख में पूर्ण, यदा-कदा विघ्नयुक्त-भाग्योन्नति, भातृभगिनि और पारिवारिक सुख सम्बन्धों का भोगी, मातृ सुख में न्यूनता का अनुभवी, चातुर्य और वाक्शक्ति से विरोधियों पर सफलता प्राप्त, उत्तमायु प्रापक, ऐश्वर्य से रहन सहन में कुशल, बलवान्, परोपकारी और दयालु, यदा कदा आय में त्रुटि का अनुभवी, राज्य क्षेत्र और सामाजिक समुन्नत एवं मानप्रतिष्ठा सम्पन्न, विद्वान्, वृद्धावस्था में सन्तान द्वारा सुख प्राप्त करते हुए भाग्यशाली माना जाने वाला, यदा कदा मृत्युतुल्य कष्ट प्राप्तकर्त्ता होगा।

भ० सं० २३५.

कु० २०

(२८०१)- इस कुण्डली में जन्म ग्रहण करने वाला बालक मध्यम कद, पुष्ट और गठित देही, स्वाभिमानी और उग्र तथा विवेकी, उन्नत ललाट, वाणी में चतुर, श्यामवर्ण, शारीरिक सौन्दर्य में त्रुटियुक्त, स्वार्थसिद्धि में तत्पर, मातृ सुख भोगी, लेखन-कार्य में कुशल और उसी से जीविका निर्वाह करने वाला, सदा चिन्तित रहने वाला, अधिक कन्याओं का पिता, सन्तान की ओर से दुःखी, गुप्तनीतिक रीति से कार्य कुशल, गृह भूमि लाभ से वंचित, साधारण रहनसहन युक्त, ईश्वर और धर्म में निष्ठा सम्पन्न, धर्मकार्य करने वाला तथा उससे कुछ द्रव्यलाभ प्राप्त, अधिक व्यय के कारण दुःखी, यदा-कदा गृहस्थ-संचालनार्थ चिन्तित, भाग्योदय में अवरोध युक्त, मध्यमायु प्राप्त, मातृ-सुख भोगी, पैतृक गृह स्वामी, पिता का अल्प सुख प्राप्त कर्त्ता, भाई बहिन युक्त किन्तु उनके तथा पारिवारिक सुख-सम्बन्धों में त्रुटि युक्त, सुन्दरी, गौरांगी कलहकारिणी, सभी से कड़े रहने वाली स्त्री का पति एवं उसके कारण सभी के विरोध से युक्त, वाक्चातुर्य से विरोधपक्ष को सन्तुष्ट करने वाला, द्रव्य के संग्रहार्थ सर्वदा प्रयत्नवान् किन्तु द्रव्य संग्रह में अभावग्रस्त, परिश्रमी एवं उत्साही और साहस सम्पन्न होगा।

(२८०२)- इस जन्मचक्र में जन्मा हुआ जातक मध्यमकद, गोधूमवर्ण, गठित और पुष्ट वपु, स्वाभिमानी उग्र तथा क्रोधी, विवेक से कार्य करने में सक्षम, स्वार्थ-सिद्धि हेतु सर्वथा गुप्त-नीति व रीति और योजनाओं के निर्माण में दक्ष तथा तत्पर, अनुशासन-प्रिय, विद्या बुद्धि में पूर्ण कुशल, धर्म एवं ईश्वर के प्रति आस्थावान् व धर्म-पालक और उत्तमकार्यों का सम्पादक व उनमें द्रव्य-लाभ व व्यय प्राप्त, मातृ-सुख सहयोग का भोगी, मातृ-पक्ष से धनलाभी, परिश्रम एवं उत्साह तथा कर्मक्षेत्र पर अच्छे द्रव्य-लाभ से संयुक्त, सन्तान की ओर से दुःखी, गृहादि लाभ से पूर्ण, मध्यमायुष्य प्राप्त, वाक्चातुर्य से विरोध पक्ष को सन्तुष्ट करने में प्रवीण, यदाकदा गृहस्थ-संचालन में त्रुटि युक्त और मृत्यु तुल्य कष्ट तथा औषधों का प्राप्त कर्त्ता, कलहकारिणी, पुष्ट देही सुन्दरी स्त्री का पति, अधिक कन्याओं का पिता, द्विभार्यायोग संयुक्त, द्रव्य संग्रहार्थ निरन्तर चेष्टित तथा सामान्य धनी, पितृ-सुख का अल्प भोगी, पितृ स्थान निवासी, भाई-बहिन और परिवार की ओर से सभी का विरोध प्राप्त करने वाला, साहस-सम्पन्न, नेत्रज्योति में विकार का अनुभवी होगा।

भ० सं० ५३५ कु० १०

(१७०३)- इस जन्मयोग में उत्पन्न होने वाला व्यक्ति मध्यम कद, कृशदेही, स्वाभिमानी, अधिकार-भावना युक्त, क्रोधी और उग्र, अनुशासन-प्रिय, सन्तान की ओर से निरन्तर चिन्तित और दुःखी, सामान्य सन्तान युक्त, तेजस्वी और प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, आन्तरिक द्वेष से दग्ध, मानसिक अशान्त, गृह-भूमि-लाभ से युक्त, ईश्वर और धर्म के प्रति आस्थावान् तथापि सामान्य धर्म पालक, सुन्दरी कलहा स्त्री का पति और उसके कारण सभी का विरोध ग्रहण करने वाला, मातृ-सुख-सहयोग में अल्प, पितृ-सुख भोगी, चिन्तनशील और विचारक, अत्यन्त गुप्त रीति से विरोध को दबाने में प्रवीण तथापि विरोध युक्त, कई बार मृत्यु-तुल्य कष्टों को पाकर मध्यमायु प्राप्त, द्रव्य-संग्रह और भाग्योदयार्थ उत्साह और परिश्रम से कार्य करने में तत्पर तथा सामान्य धन संग्रही और भाग्योन्नत, व्यवसाय कर्म में असफलता युक्त सफल, विद्या ग्रहण की ओर से त्रुटि युक्त, सामाजिक और राजकीय प्रतिष्ठा व सम्मान में अभावग्रस्त, नेत्र ज्योति व रक्त विकार युक्त, भाई-बहिन और कुटुम्ब का विरोध ग्रहण करने वाला, स्वार्थ-सिद्धि एवं द्रव्य-लाभार्थ निरन्तर चेष्टित रहेगा।

(१७०४)- इस जन्म-चक्र में जन्मा हुआ पुरुष उत्तम विचार शक्ति तथा गुप्त-योजनाओं के निर्माण में दक्ष, गौरवशाली और प्रतिष्ठा भावना युक्त, प्रभावशाली तथा तेजस्वी, दीर्घ कद, शारीरिक सौन्दर्य में त्रुटि युक्त, दीर्घदेही और उन्नत ललाट, गौरवर्ण, स्त्री का विरोध और मतभेद पाने वाला, आदर्शवादी, भोग-विलास एवं ऐश्वर्य युक्त रहन-सहन में पटु, विद्या-बुद्धि-विवेक में पूर्ण, वाक्चातुर्य व कौशल से कार्य करने तथा विरोध को दबाने में सक्षम तथापि निरन्तर विरोध युक्त, उदर-विकार एवं अग्नि तथा चोरों से भयग्रस्त, व्यवसाय क्षेत्र में अवरोध युक्त सफल, पितृ सुख का अल्प भोगी तथा पितृ क्षेत्र-निवासी, माता के सुख-सहयोग का भागी और उससे समुन्नत एवं मातृ भक्त, ईश्वर और धर्म के प्रति निष्ठावान् तथा यथार्थ-धर्म का पालक, स्वाभिमान सम्पन्न, वृद्धावस्था में सुखी, अनेक अरिष्ट वाला दीर्घायु सम्पन्न, भाई-बहिन और परिवार की ओर से दुःख पाते हुए गम्भीरता के कारण सन्तुष्ट, कन्या व पुत्रों का पिता किन्तु पुत्रों की ओर से चिन्तित रहना उनके कारण भाग्यशाली माने जाने वाला, द्रव्य लाभ से पूर्ण, मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होगा।

(२६५)- इस कुण्डली में उत्पन्न होने वाला व्यक्ति दीर्घवपु, पुष्ट देही, उन्नत-ललाट, विद्या- बुद्धि तथा सन्तान से पूर्ण व सुखी, परम उत्साही और साहसी, ऐश्वर्यपूर्ण इन्द्र सदृश रहन-सहन में दक्ष, स्वाभिमानी और आदर्शवादी, अनुशासन प्रिय, मातृ-सुख-सहयोग में स्वल्प, पितृ सुख सहयोग का भागी, दीर्घजीवी, रक्त एवं नेत्र-ज्योति में विकारयुक्त तथा उदरशूल से पीड़ित, स्त्री-सुख में मतभेद ग्रस्त, धर्म व ईश्वर के प्रति आस्थावान्, किन्तु धर्मपालन में कुछ शैथिल्य युक्त, परिश्रम और कर्मयोग को महत्व प्रदान करते हुए पितृधन से व्यवसाय क्षेत्र में रत तथा अवरोधमय भाग्योन्नति प्राप्तकर्त्ता, गृह- भूमि द्रव्यकोष से लाभान्वित, वृद्धावस्था में सन्तान के कारण भाग्यशाली माना जाने वाला, नेता तथा उत्तमवक्ता, राज्य-क्षेत्र से लाभान्वित तथा सामाजिक मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, विरोध-पक्ष पर वाणी-चातुर्य तथा गुप्तरीति व नीति से सफलता प्राप्त, विलक्षण प्रतिभा-सम्पन्न, परोपकारी और दयालु, विवेक बल या अनेक कार्यों में सफलता प्राप्त, मानसिक अशान्ति ग्रस्त, भाई-बहिन के व पारिवारिक सुख-सम्बन्धों से युक्त होगा।

(२६६)- इस कुण्डली चक्र में उत्पन्न हुआ मनुष्य दीर्घदेही, कृशकाय, स्वाभिमानी और क्रोधी, गौरवर्ण, उन्नत-ललाट, तेजस्वी और प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, ऐश्वर्ययुक्त रहन-सहन में दक्ष, भोग विलास में पटु, सुन्दरी-स्त्री का पति किन्तु उसका वंचक और अन्य स्त्रियों से द्रव्य-लाभ करते हुए रमणशील, परम साहसी, धूर्त और लम्पट, कर्म-क्षेत्र में कुशल एवं येन केन प्रकारेण राज्य क्षेत्र से जीविका चलाने वाला, सन्तान-सुख से हीन, किसी की चिन्ता न करने वाला, उद्धत और कलहप्रिय, राज्य और सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में न्यून, धर्म और ईश्वर को मान्यता देते हुए अधिक कामी और सदाकदा धर्म का निर्वहन करने वाला, अनेक विरोध व भाग्योन्नति में विघ्नयुक्त, गृहस्थ- संचालनार्थ कुछ द्रव्य-संग्रही, भाई बहिन तथा परिवार का विरोधी, बुद्धि-कौशल्य से कई कार्यों में सफलता प्राप्त, शत्रुओं और अरिष्टों से युक्त, मध्यमायु प्राप्त, वृद्धावस्था में दुःखी और तिरस्कृत, यशहीन, नेत्रज्योति और उदरशूल संग्रहणी रोग से पीड़ित, स्वार्थ-सिद्धि में तत्पर, अन्य-स्त्री में सन्तानयुक्त, केवल एक पुत्री के कारण कुछ सुख प्राप्त करने वाला होगा।

भृ० सं० १०५८ कु० १०

(१७७)- इस जन्म चक्र में जन्म ग्रहण करने वाला मानव परम मेधावी, साहसी, स्वाभिमानी, गौरवशाली बात कहने में चतुर, दीर्घबाहु, कृशकाय, सुन्दर और गौरवर्ण, नेत्र ज्योति में कुछ मन्दता ग्रस्त, उन्नत-ललाट, दूरदर्शी, तेजस्वी और प्रभावशाली; सुन्दरी स्त्री युक्त, किन्तु उससे मतभेद ग्रस्त; अन्य में रमणशील, बलोद्धत, विद्या-बुद्धि में अपूर्ण रहते हुए भी पूर्ण माने जाने वाला, देशाटनी, गृहस्थ युक्त होते हुए परदेश निवासी और भ्रमणशील, संगीत-काव्य-ज्योतिष-कला क्षेत्र में प्रवीण और ललित कार्य से जीविका निर्वाहक, किसी की चिन्ता न करने वाला, पतिव्रता स्त्री युक्त, अनेक बार मृत्यु तुल्य कष्ट पाने वाला, निर्भीक, राज्य व सामाजिक प्रतिष्ठा-हीन किन्तु राजकीय व सामाजिक व्यक्तियों से मधुर सम्बन्ध स्थापित कर मान-प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेने में सक्षम, भाई बहिन और परिवार से उपेक्षित, भोग-विलास और सुरा-सुन्दरी एवं ऐश्वर्य में धन का अधिक व्ययी, ईश्वर व धर्म में आस्थावान् और उपदेष्टा किन्तु धर्म से विमुख, गृह-भूमि का पैतृक लाभी तथापि लाभ हीन, भाग्योन्नति की उपेक्षा करने वाला होगा।

(१७८)- इस जन्मयोग में जन्म लेने वाला बालक दीर्घ बाहु और पुष्ट, गौरवर्ण, उन्नत ललाट, स्वाभिमानी, गौरवमयी आदर्श वाक्य-सम्पादन में प्रवीण, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, तेजस्वी, गम्भीर विचारधाराओं से विवेक सम्पन्न, बलोद्धत, सुरा-सुन्दरी का प्रेमी, सुन्दरी गौरवर्णा प्रतिष्ठा युक्त पतिव्रता स्त्री का पति और उससे सन्तान ग्रहण कर उसकी उपेक्षा कर निरन्तर भ्रमणशील तथा अन्य स्त्रियों में रमणशील, भोग-विलास और ऐश्वर्य में धन का अधिक व्ययी, शताधिक स्त्रियों का भोगी, साहसी तथा वाक्चातुर्य से पूर्ण, विद्या में अपूर्ण होते हुए भी विद्वान् माने जाने वाला, पितृ सुख का भोगी, पैतृक धन लाभी होते हुए भी धन से हीन, लाखों से अधिक धन कमा कर उड़ाने वाला, सामाजिक मान-प्रतिष्ठा हीन, बाह्य-सम्बन्धों में मधुर और मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, वृद्धावस्था में घर आ कर पड़ने वाला, पुत्रों द्वारा उपेक्षित और तिरस्कृत तथा दुःखी, संगीत काव्यादि का प्रेमी, मातृ-सुख में अल्प, कई बार मृत्यु-तुल्य कष्ट पाकर दीर्घजीवी, भाग्योदयार्थ उपेक्षा करने वाला, गृहस्थ में अनुरक्त व विरक्त, राज्य क्षेत्र में सम्मान प्राप्त करता होगा।

(१७९)- इस कुण्डली-चक्र में उत्पत्ति ग्रहण करने वाला जातक परम तेजस्वी और प्रभावशाली एवं स्वाभिमानी, आदर्श चरित्र, सत्यवादी, ईश्वर धर्म तथा कर्म में आस्थावान्, दीर्घ वपु, परम सुन्दर और कृशकाय, उन्नत-भाल, विचारशील, विद्या-बुद्धि और सन्तान-सुख से पूर्ण किन्तु विलम्ब से सन्तान और विद्या प्राप्त करने वाला, पैतृक धन तथा परिश्रम के बल पर भाग्योन्नत, सुन्दरी स्त्री प्राप्त करने वाला किन्तु स्त्री-सुख से वर्जित और अन्य कई स्त्रियों में भोग-विलास में दक्ष, साहसी, मातृ-सुख और पितृ-सुख सहयोग का भागी, धन-धान्य-गृह-भूमि-भृत्य-वाहनादि सुख से सम्पन्न, राज्य और सामाजिक मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, पैतृक धन से व्यवसाय में अवरोध युक्त भाग्योन्नत, ऐश्वर्यमय रहन-सहन में प्रवीण और अधिक धन व्यय करने वाला, सन्तान की ओर से चिन्तित, विरोधियों पर गुप्त रीति तथा वाक् चातुर्य से सफलता प्राप्त, मध्यमायुष्य सम्पन्न, मानसिक अशान्ति का अनुभवी, परिवार और भाई-बहिन सभी से सम्बन्धों में मधुर, अधिक उत्साही, अनुशासनप्रिय, हठी तथा दृढ़ निश्चयी और कर्मयोगी होगा।

(१८०)- इस जन्मांग में जन्म लेने वाला व्यक्ति अत्यन्त तेजस्वी, स्वाभिमानी, गौरवर्ण, सुन्दर और प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, कुछ उग्र, पुष्ट देही और मध्यम कद, ऐश्वर्यमयी रहन-सहन युक्त, अत्यन्त मेधावी और चतुर, विद्या-बुद्धि और विवेक सम्पन्न, सहज ही शान्त और गम्भीर, सत्यता युक्त आदर्शवादी, उन्नत ललाट, नेत्र ज्योति में विकार युक्त, विलम्ब से सन्तान प्राप्त और सन्तान की ओर से चिन्तित; सुन्दरी, गौरांगी, पतिव्रता स्त्री युक्त और उसका वंचक तथा अन्य स्त्रियों में रमणशील, गृहस्थासक्त, मातृ-सुखहीन, पितृ-सुख प्राप्त और पितृ क्षेत्र में व्यवसायोन्नत निवासी, संगीत-काव्य-ज्योतिषादि का प्रेमी, ईश्वर और धर्म के प्रति आस्थावान्, आदर्शवादी, उत्तम कार्यों में धन का व्ययी, धर्मपालक, वाक्-पटुता से विरोधियों का विजेता, गृह-भूमि लाभ में विघ्न युक्त, धन-संचयार्थ निरन्तर चेष्टा सम्पन्न, सामान्य धनी, भाग्योन्नत, राज्य और सामाजिक प्रतिष्ठा-मान युक्त, अनेक अरिष्ट और जल, अग्नि से भय पाता हुआ मध्यमायु प्राप्त, भाई-बहिन और कुटुम्ब का विरोध ग्रहण करने वाला, विद्या-बुद्धि से गौरवान्वित, परोपकारी एवं दयालु तथा सहिष्णु होगा।

(१८१)- इस लग्न में जन्म लेने वाला बालक अत्यधिक साहसी, न करने योग्य कार्यों को करने में भी तत्पर, गौर-
वर्ण, दीर्घ देही, कृशकाय, आत्मबल से हीन, चंचल प्रकृति, उन्नतललाट, विलक्षण विद्या बुद्धि में प्रवीण, स-
न्तान की ओर से अधिक चिन्तित, बलोद्धत, धूर्त, ऐश्वर्य में प्रमत्त और रहन-सहन तथा भोगविलास में अधि-
क धन व्यय करने वाला, लम्पट, कामी और स्त्री सुख से हीन, अनेक स्त्रियों का भोगी, अधिक हठी और हठ निश्चयी,
दिखावे और धर्म के प्रति आस्थावान किन्तु स्वार्थवश धर्म-पालक, गृह भूमि लाभ में सामान्य, अनेक विद्या विद शत्रु
और विरोध-पक्ष को वाक्-चातुर्य तथा बुद्धि-कौशल से परास्त करने में निपुण, संगीत-काव्य-ज्योतिष आदि प्रेमी, नि-
रन्तर धन संग्रह को चेष्टित, निश्चित आमदनी से सम्पन्न, नेत्र ज्योति में विकार युक्त, राज्यपक्ष में प्रतिष्ठा प्राप्त, किन्तु
सामाजिक मान से हीन, स्त्री का शीघ्र ही मरण प्राप्त, मध्यमायु प्राप्त कर्त्ता, उदर-रोग से पीड़ित, भाई-बहिन युक्त सुख सम्ब-
न्धों में त्रुटि का अनुभवी, पारिवारिक क्लेशी और उनपर गुप्त नीति-रीति से प्रबल, आदर्श स्थापना में पटु होगा।

(१८२)- इस जन्मयोग में जन्म-ग्रहण करने वाला जातक दीर्घदेही, विद्या-पक्ष में त्रुटि प्राप्तकर्त्ता किन्तु साहस शक्ति
से अनेक कार्यों को करने में संलग्न, बलोन्मत्त, प्रतापी और तेजस्वी, प्रभावशाली व्यक्तित्व से पूर्ण, आत्मबल हीन,
उन्नत ललाट, गौर वर्ण, शारीरिक सौन्दर्य में त्रुटि युक्त, आन्तरिक ईश्वरीय सत्ता का विश्वासी, किन्तु धर्म-पालन
से हीन, भोग-विलास में दक्ष, लम्पट और कामुक एवं स्व-स्त्री सुख से हीन तथा शताधिक स्त्रियों में रमण कर्त्ता, सन्तान
की ओर से दुःखी, वृद्धावस्था में तिरस्कृत और अपमानित, ऐश्वर्य और रहन-सहन में धन का अधिक व्ययी, कई बार मृत्यु
तुल्य कष्टों का प्राप्तकर्त्ता, स्त्री का प्रथम मरण प्राप्त अथवा स्त्री-सन्तान-हीन; अनेक स्थानों पर भ्रमण शील, राज्य और
सामाजिक मान-प्रतिष्ठा से वर्जित, भाग्योन्नति में विघ्नों का अनुभवी, परतन्त्र रहकर जीवन-यापन करने वाला, मलिन और कु-
त्सित विचारवान, गृह-भूमि लाभ से वंचित, चोरी जैसी प्रवृत्ति, भाई-बहिन और पारिवारिक विरोध प्राप्त कर्त्ता, सम-
य पड़ने पर विनयशीलता और वाक्-पटुता से विरोध-पक्ष को परास्त करने वाला, मातृ-पितृ-सुख से वर्जित होगा।

भु० सं० १,०७४ कु० २०

(१८३)- इस जन्म-चक्र में उत्पत्ति ग्रहण करने वाला व्यक्ति सामान्य कद और पुष्ट देह, व्यायामशील, उन्नत ललाट, धर्म भावना और विद्या-बुद्धि तथा वाणी-चातुर्य में दक्ष, स्वाभिमानी एवं साहसी, विवेकी और विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, विद्वान और भाग्यशाली, गृह-भूमि-द्रव्यकोष, धन-धान्य-भृत्य-वाहनादि सुख से पूर्ण, ईश्वर और दान में आस्थावान तथा सामान्य धर्मपालक, सुन्दरी-स्त्री का पति किन्तु स्त्री-सुख में सामान्य, अन्य स्त्रियों में रमणशील, ऐश्वर्य सम्पन्न, भोग-विलास में धन का अधिक व्ययी, निश्चित आय सम्पन्न, स्वाधीन स्वभाव के व्यक्ति, अनेक विद्यादि संगीत-काव्यादि प्रेमी, मातृ-सुख में न्यून तथापि पितृ-सुख का अल्पभागी, पैतृक धन तथा व्यवसाय क्षेत्र में पूर्णता प्राप्त और कुछ त्रुटि युक्त सफल, विरोधियों का विजयी, उत्तम स्वास्थ्य सम्पन्न, नेत्र ज्योति में त्रुटि का अनुभवी, भाई-बहिन के सुख-सहयोग में न्यूनता प्राप्त, समाजित, परोपकारी और दयालु, उत्तम गुणी सन्तान युक्त तथा उससे सुख प्राप्त, दीर्घ जीवन संयुक्त, उदर शूल और गुप्तेन्द्रिय में विकार-ग्रस्त, साहस-सम्पन्न, उद्यमी और परिश्रमी होगा।

(१८४)- इस जनुर्लग्न में जन्मा हुआ मानव गौरवर्ण, कृशकाय, स्वाभिमानी और हठी, साहसी और क्रोधी, भोग विलास में दक्ष, स्त्री सुख में सामान्य, मेधावी, प्रतिकार भावना युक्त, रक्त विकार, उदर शूल-संग्रहणी आदि रोगों से ग्रस्त, अनेक स्त्रियों का भोगी, सन्तान और विद्या सुख में सामान्य, कृपण, धनोपार्जनार्थ सर्वथा तत्पर, परिश्रमी और उत्साही, मातृ सुख हीन, पितृ सुख सहयोग का भागी और पितृ भक्त, स्वकार्य क्षेत्र तथा व्यवसाय में विघ्न युक्त सफल, विरोधियों का विजेता, भाई-बहिन के सुख सम्बन्ध प्राप्त किन्तु पारिवारिक क्लेश ग्राही, यदा कदा आलस्य के कारण लम्बी हानि युक्त, गम्भीर और गुप्त योजनाओं के निर्माण में दक्ष, सहज ही आपत्ति काल में भयग्रस्त, निश्चित आय सम्पन्न, पितृ क्षेत्र निवासी, गृह भूमि लाभ प्राप्त एवं भाग्योन्नत, सन्तान भी और से चिन्तित, अपने स्वभाव से आन्तरिक दुःख का अनुभवी, ईश्वर और धर्म का आस्तिक तथापि धर्म पालन में न्यूनता युक्त, यश हीन, साधारण मातृ-प्रतिष्ठा प्राप्त, मध्यमायु से अधिक जीवन प्राप्त कर्त्ता, कईबार जीवन में द्रव्य के विषय में धोखा पाने वाला होगा।

(१८५)- इस कुण्डली में उत्पन्न हुआ मनुष्य अत्यधिक साहसी और हठी तथा मृदुल प्रकृति, हँसने-हँसाने वाला, विनोदी, स्ववाक्य-प्रतिपादन में मधुरतायुक्त, प्रियम्वद, चतुर और मेधासम्पन्न, गौरवर्ण, कृशकाय, सामान्य कद, सुन्दरी, पतिपरायणा, गौरांगी स्त्री का पति और उससे सुखी तथा उत्तम सन्तान प्राप्त करेगा, गृह- भूमि- द्रव्य कोष- सुख- वाहन- धन- धान्यादि से पूर्ण, मातापिता का पूर्ण सुख प्राप्त, परोपकारी और दयालु, निश्चित आय सम्पन्न, विद्या-बुद्धि की पूर्णता प्राप्त, सन्तान की ओर से सन्तुष्ट, ऐश्वर्ययुक्त रहन-सहन में दक्ष, पाँच पुत्रों का तथा एक कन्या का पिता, उत्तम कार्यों में धन का व्यय, भाई-बहिन और पारिवारिक सुख सहयोग से पूर्ण, भाग्योन्नति और व्यवसाय में यदा-कदा अवरोध युक्त सफलता प्राप्त, तीर्थाटनी, गो-ब्राह्मण- ईश्वर का पूर्ण भक्त तथा धर्म पालन की दृढ़ निष्ठा के कारण दीर्घायुष्य प्राप्त कर सुख ग्रहण करते हुए, बैकुण्ठ प्राप्त कर आवागमन से रहित, उदारचेता, विरोध-हीन और अजातशत्रु एवं सभी प्रकार से सम्पन्नता प्राप्त, किन्तु धर्मपालनार्थ सर्वदा चिन्तित रहेगा।

(१८६)- इस जन्मांग में जन्म लेने वाला पुरुष श्यामवर्ण, दीर्घदेही, उन्नत ललाट, शारीरिक सौन्दर्य में त्रुटियुक्त, परम साहसी और स्वाभिमानी, कुछ उग्र तथा सहज ही शान्त, विवेकी और चतुर, विद्या में कुछ न्यूनतायुक्त पूर्ण, मेधावी, उद्यम और उत्साह से परिपूर्ण, सत्यवादी और कठोर तथा कुछ दयालु, गौरांगना पतिपरायणा सुलक्षणा स्त्री प्राप्त और उसकी ओर से संतुष्ट तथा सुखी, सन्तान की ओर से चिन्तित किन्तु सन्तानयुक्त, भाग्योदय में विलम्बता का अनुभवी तथापि राज्यवेतनोपजीवी और राज्य में उच्चपदासीन, राजकीय और सामाजिक मान प्रतिष्ठा सम्पन्न, ईश्वर और धर्म के प्रति आस्थावान् और धर्म पालक, द्रव्य लाभ से पूर्ण किन्तु द्रव्यकोष के संग्रह में न्यूनता का अनुभवी, मातृ- पितृ- सुख- सहयोग का भागी, परिवारीजनों से शत्रुता पूर्ण सम्बन्ध-व्यवहार पाने वाला, गुप्तेन्द्रिय और प्रमेह रोग से पीड़ित, मध्यमायुष्य प्राप्त, हृद् रोग की ओर से चिन्तित एवं कृशकाय, हठी और दृढ़निश्चयी, विरोधियों पर अपनी गम्भीरता तथा युक्ति-बल से विजयी, परिवार की ओर से सदा चिन्तित बना रहेगा।

मू० सं० ३०५ कु० २०

(१८७)- इस जन्म लग्न में जन्मा हुआ पुरुष श्याम वर्ण, दीर्घदेह, कृशकाय, स्वाभिमानी और कठोर, उग्र स्वभाव, भाई बहिन के सुख-सम्बन्धों से हीन, पारिवारिक निरन्तर विरोध प्राप्त कर्ता, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, शारीरिक सौन्दर्य में त्रुटिग्रस्त, अनुशासन-प्रिय, गुप्त योजनाओं के निर्माण में दक्ष तथा कार्य करने में कुशल और प्रभावी, साहस शक्ति से अनेक कार्यों में संलग्न और सफल; सुन्दरी, पतिव्रता स्त्री का पति किन्तु उसका वंचक, लम्पट और कामी, ऐश्वर्योन्मत्त और अधिक व्ययी, भोग-विलास में कुशल तथा अन्य-स्त्रियों में रमण कर्ता, राज्यक्षेत्र में वेतनोपजीवी और उच्च-पद एवं सम्मान प्राप्त, सामाजिक प्रतिष्ठा में न्यूनताग्रस्त, मध्यमायु प्राप्त, वृद्धावस्था में चिन्तित और दुःखी एवं सन्तान द्वारा उपेक्षित, गृह भूमि कार्य में सामान्य, विरोधियों का गुप्तरीति से प्रबल दमनकारी, धर्मपालन में सामान्य, मलिन और कुचैले हृदय, गुप्तेन्द्रिय और हृदय विकार ग्रस्त, नेत्रज्योति में मन्दता का अनुभवी, दृढ़ और निश्चित आय सम्पन्न, अनुशासन प्रिय, विद्या क्षेत्र में स्नातक, मातृ-सुख का अल्प भोगी और पितृद्वेषी, अन्य व्यवसाय से युक्त, वाहनादि सुख से पूर्ण, परम भाग्यशाली होगा।

(१८८)- इस जन्मयोग में जन्म ग्रहण करने वाला मनुष्य दीर्घदेही, कृश-शरीर, शारीरिक सौन्दर्य में कुछ त्रुटियुक्त, श्यामवर्ण, साहसी, विवेकी और चतुर, कठोर और अनुशासनप्रिय, स्वार्थसिद्धि में तत्पर, गुप्तरीति से कार्य करने में कुशल, आवश्यकतार्थ मधुर भाषी और मृदुल व्यवहार कुशल, पर-निन्दक, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, भोग-विलास में दक्ष एवं ऐश्वर्य के क्षेत्र में पटु, राज्य वेतनोपजीवी तथा उच्च पदासीन, न्यायवेत्ता, धर्मपालक और ईश्वर के आस्थावान्, राज्य द्वारा सम्मानित एवं प्रतिष्ठा सम्पन्न, सुन्दरी स्त्री का पति, किन्तु मतभेदी और उससे असन्तुष्ट तथा सुख-सहयोग का भागी, सन्तान की ओर से चिन्तित, अधिक व्ययी, भ्रमणशील, मातृ-पितृ-सुख भोगी, परिश्रमी और उत्साही, धनसंग्रह विवर्जित, सामान्य गृह-भूमि युक्त, मदोन्मत्त, वृद्धावस्था में दुःखी, दौहित्र का पालक, भाई बहिन के सुख-सम्बन्धों में अभाव पाने वाला, स्व-पारिवारीजनों द्वारा त्यक्त अथवा पूर्ण विद्वेष युक्त, निश्चित आय सम्पन्न, गम्भीर और शान्त रहकर शनैः शनैः अपने कार्य में कुशल, आपत्तिकाल में भय-ग्रस्त, मध्यमायु प्राप्त, हृदय एवं शुक्र रोग से पीड़ित, अरिष्टों से बचने वाला होगा।

भू० सं० | कु० १०

(१८९)- इस जन्म-चक्र में उत्पन्न हुआ बालक गौरवर्ण, कृशदेही, सामान्यकद, उन्नत ललाट, चंचल प्रकृति, स्वाभिमानी और साहसी, उत्साही तथा परिश्रमी, विद्या-बुद्धि में पूर्णता प्राप्त, सन्तान की ओर से सन्तुष्ट, विलक्षण प्रतिभा और गौरवशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, माता-पिता का पूर्ण सुख प्राप्त, किन्तु पिता से कुछ मतभेद युक्त, परोपकारी और दयालु तथा आवश्यकतानुसार निष्ठुर, विलक्षण और विनोदी स्वभाव, ऐश्वर्यमय जीवन से युक्त, मधुर और प्रिय तथा सत्यवादी आदर्श स्वरूप, साहस-चातुर्य तथा परिश्रम से अनेक कार्यों व व्यवसाय में सफल, गृह-भूमि लाभ से पूर्ण, भाई-बहिन और परिवार के सुख सम्बन्धों से नितान्त हीन, दीर्घायुष्य प्राप्त, सुन्दरी, गौरांगी, शिक्षिता, पतिव्रता स्त्री प्राप्त और उससे सन्तुष्ट तथा सुखी, राज्यपक्ष में क्रमोन्नत व सामाजिक मान प्रतिष्ठा सम्पन्न, परिवार के अतिरिक्त विरोध हीन तथा सर्वत्र यश प्राप्तकर्ता, उदर-विकार और गुह्यरोग से पीड़ित, वृद्धावस्था में पूर्ण सुखी, द्रव्य-कोष संग्रह में कुछ त्रुटि का अनुभवी, धर्मकर्म और ईश्वर के प्रति आस्थावान और धर्म-पालक, विद्युताग्नि के भय से शंकित, कर्मयोगी, गृहादि का नवनिर्माता होगा।

(१९०)- इस जन्म कुण्डली में जन्म-ग्रहण करने वाला जातक साहसी और उग्र स्वभाव, दीर्घांग, शारीरिक सौन्दर्य में कमी युक्त तथा कुछ बढ़कर बातें करनेवाला, स्वार्थान्ध, किसी भी करने योग्य या न करने योग्य कार्य को करने में तत्पर, अत्यधिक क्रोधी, भ्रमणशील और दस्यु तथा चोरों से भय अथवा अनिष्ट प्राप्तकर्ता, कलही और उदर रोगी, स्त्री प्राप्त तथा स्त्री-सुख से हीन, बलात्कार पूर्वक अन्य स्त्री में रमणकर्ता अथवा शूद्रागामी, सन्तान और विद्या युक्त, द्रव्य-संग्रह तल्लीन किन्तु हीनता प्राप्त, वृद्धावस्था में सन्तान का सुख ग्राहक और सन्तान के कारण भाग्योन्नत, राज्यपक्ष से सामान्य भाग्योन्नत, गृह भूम्यादि लाभ से हीन, अधिक व्ययी, परिवार का विरोध और भाई-बहिन का विरोध प्राप्तकर्ता, नेत्र-ज्योति में विकार ग्रस्त, रक्त-वायु रोगी, कई बार मृत्युतुल्य कष्ट अथवा अरिष्ट युक्त, आपत्तिकाल में व्यग्रतावश आत्महत्यार्थ प्रयत्नशील, अल्पायु सम्भावित, हठी और प्रतिकार भावना युक्त, उदरशूल पीड़ित, ऐश्वर्य हीन, मलिन और कुचैल रहने वाला, गृहस्थ-संचालनार्थ आय-विषयक चिन्तित और दुःखी, पितृ-सुख हीन, माता का अल्प सुख भोगी होगा।

भु० सं० २?८

कु० १०

(१६१)- इस कुण्डली चक्र में जन्म ग्रहण करने वाला बालक सामान्य कद, पुष्ट देही, उन्नत ललाट, गौरवर्ण, शारीरिक सौन्दर्य में कुछ त्रुटियुक्त, मुख-मस्तक पर आघात के चिन्ह युक्त, माता-पिता का सुख भोगी, किन्तु मातृ सुख में न्यूनता ग्रहण करने वाला, प्रभावशाली और तेजस्वी, सत्यवादी, मृदुल, परोपकारी और दयालु, सहज ही गम्भीर और शान्त, दूरदर्शी एवं गुप्त योजनाओं के निर्माण व व्यवसाय में दक्ष, चतुर और विवेकी, पितृ क्षेत्र निवासी, भोगैश्वर्ययुक्त रहन-सहन, विद्या और सन्तान सुख से पूर्ण, ईश्वर और धर्म में निष्ठा-सम्पन्न तथा धर्म-पालक, विरोधी-पक्ष का विजेता, उत्तम स्वास्थ्य सम्पन्न, नेत्रज्योति और गुप्त-रोग पीड़ित; सुन्दरी, श्यामवर्णी, चंचला स्त्री का स्वामी, किन्तु उससे कुछ मतभेदयुक्त, अनेक स्थानों पर भ्रमणशील, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, भाग्यवान, गृह-भूम्यादि लाभ से पूर्ण, द्रव्य-संग्रहार्थ सर्वदा चेष्टित और धनी, भाई-बहिन युक्त एवं उनके सुख-सम्बन्ध सहयोग का भागी परन्तु कौटुम्बिक सुख-सहयोग में अभाव का अनुभवी, परिश्रमी और उत्साही, यदाकदा भाग्योदय में विघ्नयुक्त होगा।

(१६२)- इस कुण्डली में जन्मा हुआ जातक तेजस्वी और प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, सामान्य कद और पुष्टदेही, विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, अनुशासनप्रिय, गौरवर्ण, मुख-माथे पर चोट का निशान पाने वाला, शारीरिक सौन्दर्य और वर्ण में कुछ हीनतायुक्त, उदरशूल और नेत्र-रोग पीड़ित, विनोदी-स्वभाव, परोपकारी और दयालु, विद्याक्षेत्र में अभाव का अनुभव करते हुए पूर्णता प्राप्त, सन्तान की ओर से चिन्तित, सुन्दरी पतिव्रता श्यामवर्णा स्त्री प्राप्त किन्तु उससे वैचारिक मतभेदी, अन्य कई स्त्रियों में रमणकर्ता, यदाकदा कर्महीनता और आलस्य के कारण व्यवसाय क्षेत्र में हानि पाकर भाग्योन्नति में अवरोधयुक्त, उत्साह-परिश्रम एवं साहस शक्ति से व्यवसायरत और सफलता प्राप्त, भोगैश्वर्ययुक्त रहन-सहन और धन का अधिक व्ययी, कभी-कभी धोखा पाने वाला, शत्रुओं पर वाक्चातुर्य से विजयी, ईश्वर और धर्म में निष्ठा सम्पन्न और धर्मपालक, गृह-भूम्यादि का लाभ प्राप्तकर्ता, पारिवारिक क्लेश संयुक्त, तथापि भाई-बहिन और माता-पिता के सुख-सहयोग का भागी, पितृ क्षेत्र निवासी, मध्यमायु प्राप्त, राज्य क्षेत्र में न्यूनता का अनुभवी और भाग्यवान होगा।

भृ० सं० ५८७ कु० १०

(९६३)- इस जन्माङ्ग में उत्पन्न होने वाला व्यक्ति, प्रभावशाली और तेजस्वी, विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, धर्म और ईश्वर में आस्थावान् होते हुए यथार्थ धर्माचरण से हीन, मातृ-सुख से वंचित, भोगविलास में दक्ष तथा अन्यस्त्रियों का भोगी, सदाचार और पवित्रता से हीन, ऊपर से आदर्शवादी, स्वाभिमानी और सहज ही शान्त, अत्यधिक चतुर और विवेक सम्पन्न, परोपकारी और दयावान, गृह-भूमि लाभ प्राप्त, पितृ-सुख का अल्प भोगी किन्तु पितृ भक्त एवं पितृ क्षेत्र का निवासी, धन संग्रहार्थ निरन्तर चेष्टित और धनी, भाग्योदय में अनेक विघ्नों का प्राप्त कर्त्ता, पारिवारिक क्लेशयुक्त, सामान्य कद, पुष्ट देही, गौरवर्ण, साहस और चातुर्य से व्यवसाय में सफलता प्राप्त, शत्रुओं का विजेता, नेत्र ज्योति में विकार का अनुभवी, संगीत काव्य ज्योतिषादि प्रेमी, विद्या में अपूर्ण, सुन्दरी स्त्री का पति किन्तु उसका वंचक और मत-भेद प्रिय, गृहस्थ में आसक्त, सन्तान की ओर से चिन्तित तथापि सन्तान सुख प्राप्त कर्त्ता, दीर्घजीवी, सामाजिक और राजकीय मान प्रतिष्ठा से युक्त, सन्तान के कारण वृद्धावस्था में अधिक सुखी और भाग्यशाली माने जाने वाला होगा।

(९६४)-इस जन्म चक्र में उत्पत्ति ग्रहण करने वाला पुरुष उत्तम गौरवर्ण, पुष्ट देही, दीर्घबाहु, स्वाभिमानी, मातृ-पितृ-सुख से पूर्ण, पितृ-भक्त और पितृ-क्षेत्र निवासी, विद्या में अपूर्ण, सन्तान की ओर से चिन्तित तथापि सन्तानयुक्त, उत्तम स्वास्थ्ययुक्त, पवित्र और सदाचारी, उत्साही-साहसी और अत्यधिक परिश्रमी तथा कर्मयोगी, ईश्वर और धर्म के प्रति पूर्ण आस्थावान, गो-ब्राह्मण-पालक और धर्मकार्यों में संलग्न, परम चतुर-विवेकी तथा स्वाभिमानी, मातृ-सुख में कुछ न्यूनता का अनुभवी, चिन्तनशील और विचारक, वाक्-चातुर्य से समाजित, उत्तम स्वास्थ्य-सम्पन्न दीर्घ जीवन प्राप्त, समस्त जीवन भर सुख प्राप्त, गृह-भूमि लाभयुक्त, धनकोष से सम्पन्न, निश्चिन्त और दृढ़ आय युक्त, सन्तान की ओर से चिन्ताग्रस्त तथापि उत्तम गुणी सन्तान प्राप्त कर्त्ता और सन्तान के कारण वृद्धावस्था में अधिक भाग्यशाली, सामाजिक और राजकीय मान प्रतिष्ठायुक्त, भाई-बहिन और कुटुम्ब सभी का सुख-सहयोग प्राप्त, वायुविकार युक्त, उत्तम कार्यों में धन का व्यय करने वाला, तीर्थाटनी और तीर्थ क्षेत्र में देहत्यागी तथा आवागमन हीन-वैकुण्ठ-प्राप्ति का अधिकारी होगा।

भृ० सं० ०२८९ कु० १०

(२९७)- इस जन्मचक्र में जन्मा हुआ मानव अत्यधिक चतुर और विवेकी, स्वाभिमानी, गौरवशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, उत्तम गौरवर्ण, दीर्घ तथा पुष्टदेही, परम आदर्शवादी, सर्वदा वाक्पटु, स्वभोजित, विद्याक्षेत्र में अवरोध युक्त पूर्णता प्राप्त, माता-पिता का पूर्ण सुख भागी किन्तु मातृ सुख में कुछ न्यूनता का अनुभवी, सन्तान की ओर से चिन्तित तथापि उत्तम गुणयुक्त सन्तान का पिता, व्यवसाय युक्त, और व्यवसाय में सफल, गृह-भूमि-भृत्य-वाहन-पशु-द्रव्यकोष-धन-धान्य-मार्गवाहिका सभी प्रकार से पूर्ण सुखी, दृढ़ और निश्चित आय सम्पन्न, जीवन भर उत्तम कार्यों में संलग्न, अजातशत्रु और विरोधहीन, समस्त जीवन भर सुख प्राप्त कर्ता, उत्तम स्वास्थ्य युक्त दीर्घजीवी, परोपकार और धर्मकार्यों का सम्पादक, गो-ब्राह्मण तथा ईश्वर में पूर्ण निष्ठावान तथा भक्त, ऐश्वर्यमय रहन सहन युक्त, पवित्र तथा सदाचरण करने वाला, सुन्दरी श्यामा भक्त स्त्री का पति और उसकी ओर से कुछ उदासीन, गृहस्थ में अनुरक्त, तीर्थाटन कर्ता तथा तीर्थ क्षेत्र अथवा विष्णु मन्दिर में देहत्यागी और बैकुण्ठ गमन का अधिकारी होगा।

(२९८)- इस कुण्डली में उत्पन्न हुआ मनुष्य उत्तम गौरवर्ण, दीर्घ और पुष्ट देही, उन्नत ललाट, स्वाभिमानी और क्रोधी तथा अनुशासनप्रिय, दूरदर्शी, माता-पिता का पूर्ण भक्त तथा मातृ-सुख में कुछ न्यूनता का अनुभवी, ननसाल पक्ष का प्रिय, क्रोधी-स्वभाव के कारण आन्तरिक दुःखी, साहसी और परिश्रम सम्पन्न, साहस शक्ति से कर्मक्षेत्र तथा व्यवसाय में सफल, कर्मयोगी तथा धर्म और ईश्वर के प्रति आस्थावान् एवं यथार्थ धर्म का पालक, द्रव्यकोष और भा-रवाहन के सुख सम्बन्धों में त्रुटि युक्त सफल, सन्तान की ओर से चिन्तित किन्तु उत्तम गुणी सन्तान के कारण वृद्धाव-स्था में सुखी और भाग्यवान, हठी और दूरदर्शी, उत्तम कार्यों में धन का व्ययी और द्रव्यकोष भृत्य वाहन गृह भूमि लाभ से युक्त, सांसारिक साधारण विरोधग्रस्त, गृहस्थासक्त, पवित्र और सदाचाररत, चिन्तनशील और लोक पर-लोक का विचारक, ऐश्वर्ययुक्त रहन-सहन में दक्ष, विरोधपक्ष का विजेता, सुन्दरी स्त्री का स्वामी किन्तु उसकी ओर से उदासीन, कर्म रूपी ईश्वर को मान्यता देनेवाला, दीर्घजीवी, मानप्रतिष्ठाप्राप्त और मोक्षप्राप्ति का अधिकारी होगा।

भू० सं० कु० र०

(१९७)- इस जन्मांग में जन्म ग्रहण करने वाला बालक उत्तम स्वास्थ्य सम्पन्न गौरवर्ण, दीर्घ देही किन्तु कुछ कृश, स्वाभिमानी और उग्र तथा सहज ही शान्त, ऐश्वर्ययुक्त रहन-सहन में दक्ष, माता-पिता का पूर्ण सुख प्राप्त तथापि पितृ-सुख में न्यूनता का अनुभवी और उन्नत ललाट, विद्याध्ययन-अध्यापन में प्रवीण, पितृ सम निवासी, दीर्घ जीवन को प्राप्त, उत्तम गुणमय पुत्रों का पिता, कुछ हठी और परोपकारी तथा दयालु, व्यवसाय कर्म में पूर्ण दक्ष और सफल तथा भाग्योन्नत, वृद्धावस्था में सन्तान द्वारा सुख प्राप्त और अधिक भाग्यशाली, राज्य और सामाजिक मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, धर्म तथा ईश्वर के प्रति पूर्ण निष्ठावान तथा उत्तम धर्म कार्यों का सर्वथा सम्पादक, अनेक क्षेत्रों में दानशील, विद्या और काव्य तथा ज्योतिष का प्रेमी; सुन्दरी, सुलक्षणा, गौरांगी, शिक्षिता और भक्त-स्त्री का स्वामी और उसकी ओर से सन्तुष्ट तथा उसके कारण बैकुण्ठ का अधिकारी, भाई-बहिन के सुख सम्बन्धों से युक्त परन्तु सामान्य पारिवारिक क्षति बोध युक्त, गृह भूमि धन-धान्य भृत्य-वाहन-द्रव्य कोष के सुख से पूरित रहने वाला होगा।

(१९८)- इस जन्म चक्र में जन्मा हुआ जातक चिन्तनशील और विचारक, स्वाभिमानी और विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, उत्तम गौरवर्ण, सामान्य कद, पुष्ट देही, मातृ-सुख और पितृ-सुख प्राप्त, माता-पिता और ईश्वर का भक्त, धर्म में आस्थावान् और पालक, विद्या बुद्धि सुख में पूर्ण, उत्तम पुत्रों का पिता और उनसे सुख प्राप्तकर्ता, मध्यम युवा सम्पन्न, ऐश्वर्य युक्त रहन-सहन में पूर्ण दक्ष, हठी और विवेकी, परोपकारी और दयालु; सुन्दरी, गौरांगी स्त्री का पति किन्तु उससे मतभेद रहते, राज्य वेतनोपजीवी तथा उसी से कुछ द्रव्य संग्रह करने में संलग्न तथापि द्रव्य कोष में त्रुटि का अनुभवी, यदा-कदा गृहस्थ-संचालनार्थ आन्तरिक दुःखी, वृद्धावस्था में सन्तान के कारण भाग्योन्नत और गृह-भूमि लाभ युक्त, वाक्पटुता से विरोधियों को सन्तुष्ट करने में सफल, साहसी और उत्साही एवं उद्यम रत कर्मयोगी, राज्य और सामाजिक मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, संगीत-काव्य-ज्योतिष प्रेमी, स्वस्त्री में ही अनुरक्त, पवित्र और सदाचारी, गृहस्थ में अधिक ममता रखने वाला, शुक्र और हृदरोगी तथा नेत्र ज्योति में त्रुटि का अनुभवी, दूरदर्शी और लोक परलोक का विचारक होगा।

भृ० सं० ८२४

कु० २०

(१९९)- इस कुण्डली में उत्पन्न होने वाला पुरुष दीर्घायु, पुष्ट देही, गौरवर्ण, उत्तम उन्नत ललाट, विद्या क्षेत्र में कुछ त्रुटि युक्त पूर्णता प्राप्त, मध्यमायु सम्पन्न, प्राचीन धर्म और संस्कृति का परिपोषक, माता-पिता का पूर्ण सुख-भोगी, भोग-विलास एवं ऐश्वर्य से रहन-सहन में दक्ष, परोपकारी और दयालु, कुल की मान-मर्यादा का रक्षक, राज्य एवं सामाजिक मान प्रतिष्ठा प्राप्त, धन-धान्य-गृह-भूमि-द्रव्यकोष-भृत्य-वाहनादि सुख से संयुक्त, उत्तम गुणी पुत्रों का पिता तथापि सन्तान की ओर से चिन्तित, सुन्दर सुशीला और गौरांगी पतिव्रता स्त्री का पति, किन्तु उससे कुछ मतभेदी, भाई-बहिन तथा परिवार का सुख-सहयोग प्राप्त, उदर-विकार पीड़ित एवं सामान्य-चर्मरोग से प्रभावी, स्वाभिमानी, स्ववाक्य-स्थापना में पटु। वाक्चातुरी में प्रभावशील व्यक्तित्व सम्पन्न, उत्तम स्वास्थ्य युक्त, द्रव्यकोष में न्यूनता का अनुभवी और भाग्योन्नत, वाणी-चातुर्य से विरोध का विजेता। संगीत काव्यादि प्रेमी, परिश्रम और साहस बल पर अनेक कार्यों में सफल तथा लाभ युक्त, ईश्वर और धर्म में पूर्ण निष्ठावान एवं उत्तम धर्मकार्यों का सम्पादक होगा।

(२००)- इस जन्मांग में जन्म ग्रहण करने वाला व्यक्ति मध्यमायु प्राप्त, मार्ग में चोरों से भय-ग्रस्त अथवा आघात पाने वाला, वाणी में चतुर और प्रभाव रखने वाला, मध्यम कद, गोधूम वर्ण, उन्नत भाल, स्वाभिमानी हठी एवं दृढ़ निश्चय युक्त, संगीत काव्य-ज्योतिषादि प्रेमी, विद्याक्षेत्र में त्रुटि युक्त पूर्णता प्राप्त, विलक्षण-प्रतिभा सम्पन्न, अनेक विषयों का पंडित, मातृ-सुख का अल्प-भोगी, पितृ-सुख प्राप्त कर्त्ता और पितृ भक्त, उत्तम कार्यों एवं रहन-सहन में दक्षता के साथ द्रव्य का अधिक व्ययी, उत्तम गुणी सन्तान प्राप्त और उनके कारण भाग्यशाली मान्यता प्राप्त, द्रव्यकोष वृद्धि में तत्पर और धनी, नेत्रज्योति एवं गुप्तेन्द्रिय रोग ग्रस्त, सुन्दरी श्यामा पतिपरायणा स्त्री का पति, गृहस्थ में अनुरक्त, धर्म और ईश्वर का अनन्य भक्त और धर्म-पालक, राज्य से भी द्रव्यलाभी, यदाकदा भाग्योदय में विलम्बता प्राप्त, परोपकारी एवं दयालु, चातुर्य और विवेक सम्पन्न, सत्यवादी और आदर्श पवित्र, गृह-भूमि लाभ प्राप्त, भाई बहिन और पारिवारिक सुख सम्बन्धों में मधुर, कर्मयोगी, उत्साह और परिश्रम तथा साहस से विरोध पक्ष एवं अनेक कार्यों में सफल होगा।

(२०१)— इस कुण्डली चक्र में उत्पन्न होने वाला बालक स्वार्थ-सिद्धि में तत्पर, सामान्य कद, गौरवर्ण, उन्नत ललाट, विद्या-बुद्धि में पूर्ण, सन्तान-सुख प्राप्त और सन्तान के कारण चिन्तित तथा वृद्धावस्था में उसके कारण भाग्यशाली, परम साहसी और उत्साही। स्वभाव से कुछ उग्र तथा सहज ही शान्त, मलिन-चित्त, रक्त और वायु-विकार से पीड़ित, स्वाभिमानी और प्रतिकार भावना से युक्त। अनेक विषयों का जानकार, वाक्-चातुर्य से ओतप्रोत, कटु-सत्य भाषी, बलोद्धत एवं ऐश्वर्य से रहन-सहन की भावना की प्रबलता, सफलता प्राप्त। शत्रु और विरोधपक्ष पर बुद्धि कौशल तथा वाणी प्रभाव से विजयी। राज्य और सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में न्यूनता का अनुभवी। मातृ-पितृ सुख भोगी, किन्तु मातृ-सुख में अल्प, पितृ-क्षेत्र का स्थायी-निवासी, पदोन्नत, धर्म-कर्म और ईश्वरीय सत्ता में आस्थावान्। भाग्योदय में विघ्नयुक्त; सुन्दरी, गौरांगी स्त्री कलह युक्त प्राप्त, अन्य स्त्रियों में रमणशील, भाई-बहिन और कौटुम्बिक सुख-सहयोग से वंचित, द्रव्यकोष संग्रहार्थ उद्यमी किन्तु न्यूनता का अनुभवी, विलक्षण बुद्धि होगा।

(२०२)— इस जन्मांग में जन्मा हुआ जातक गौरवर्ण, उन्नत ललाट, सामान्य कद, पुष्ट देही, स्वाभिमानी और उग्र, विवेकी और चतुर, स्ववाक्य स्थापना में प्रवीण, स्वार्थ-सिद्धि में तत्पर। द्रव्य-कोष संग्रही और सामान्य धनी, धर्म-कर्म और ईश्वर में निष्ठायुक्त तथापि स्वार्थपरता हेतु धर्म-पालक। स्वभाव से कुछ उग्र एवं कटु-सत्य भाषी, परोपकारी और उदारचेता, भोग-विलास में दक्ष, अन्य स्त्रियों में रमणशील और किसी स्त्री से द्रव्य विषय में धोखा ग्रस्त, डाक्टर या शल्य-चिकित्सक, राज्य क्षेत्र में कुछ त्रुटि का अनुभवी, भाग्योदय में अवरोध ग्रहण करने वाला, भाई-बहिन युक्त और पारिवारिक क्लेश प्राप्त, गृह-भूमि लाभ में सामान्य, विद्या और सन्तान के कारण सुखी, वृद्धावस्था में सन्तान से सुखी और भाग्योन्नत, मान-प्रतिष्ठा युक्त किन्तु न्यूनता का अनुभवी, नेत्र-ज्योति में कमी प्राप्त, गुप्तेन्द्रिय में रोगग्रस्त, वाक्-चातुर्य और बुद्धि-कौशल से विरोध-पक्ष का विजेता, मध्यमायु से अधिक जीवन प्राप्त, परिश्रमी और उत्साही, यदा-कदा गृहस्थ-संचालनार्थ त्रुटियुक्त, मातृ-सुख सहयोग का भागी, पितृ-सुख में अल्प होगा।

(२०३)- इस जन्म चक्र में जन्म लेने वाला पुरुष कृशकाय, सुन्दर गौरवर्ण, दीर्घवपु, राज्य क्षेत्र में समुन्नत और मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, स्वाभिमानी और साहसी, विवेक और क्रोध तथा वाक्-चातुर्य में पूर्ण, अनुशासनप्रिय, उत्तम वाहन से युक्त, भाग्योन्नति में अनेक विघ्न प्राप्त करने, साहसी और सभी कार्यों में धन का अधिक व्यय होने से आन्तरिक दुःखी, गृह, भूमि लाभ में सामान्य, श्रममय जीवन एवं रहन-सहन में प्रवीण, माता-पिता के सुख-सहयोग से समुन्नत, मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, सन्तान और विद्या में पूर्ण तथा सुखी, शारीरिक और मानसिक निरन्तर क्लेश सहने वाला, मध्यमायुष्य सम्पन्न, वामपार्श्व में चोट-प्राप्त, दैहिक-सौन्दर्य में कुछ कमी का अनुभवी; सुन्दरी, सुशीला, गौरांगी तथा शिक्षिता, पतिव्रता स्त्री युक्त और उससे सुख प्राप्त, पितृभक्त एवं पितृ क्षेत्र का स्थायी निवासी, अन्य स्थानों पर भ्रमणशील, विरोध-पक्ष पर साहस से कार्य करने में सक्षम, वृद्धावस्था में सन्तान के कारण कुछ भाग्यशाली माना जाने वाला, ईश्वर और धर्म-कर्म पर आस्था रखते हुए धर्म पालन से विमुख, कर्मयोग को अधिक महत्व देने वाला होगा।

(२०४)- इस जन्मलग्न में जन्म ग्रहण करने वाला व्यक्ति साहसी और स्वाभिमानी, सत्य का परिपोषक एवं न्याय पूर्ण बात में प्रसिद्धि प्राप्त, स्वभाव से कुछ उग्र विचार देने वाला, चतुर और विवेकी, परोपकारी और दयालु, सामान्य कद, पुष्ट-देही, मधुरभाषी, नेत्रज्योति में विकार युक्त; सुन्दरी, श्यामा, शिक्षिता, पतिपरायणा स्त्री का स्वामी और उससे सुख-सहयोग प्राप्त, विद्या और लेखन में सुखी, भाग्योदय में निरन्तर विघ्न प्राप्त करता, द्रव्य-संग्रहार्थ सर्वदा प्रयत्नशील और परिश्रमी किन्तु द्रव्य-संग्रह में न्यूनता प्राप्त, मध्यमायु से अधिक जीवन पाने वाला, भौतिक सुख और रहन-सहन में प्रवीण, स्ववाक्य-स्थापना में दक्ष, हठी, धर्म पालन में न्यून, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में समुन्नत तथा मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, वृद्धावस्था में सन्तान के कारण सुखी और भाग्यशाली, गृह-भूमि लाभ में सामान्य, अहंकारयुक्त किन्तु उनके और पारिवारिक सुख सम्बन्धों से वर्जित, गृहस्थासक्त, विरोध-पक्ष पर साहस तथा युक्ति-बल से प्रभावी, परिश्रम को अधिक महत्व देने वाला तथा वृद्धावस्था में ईश्वरीय सत्ता और भाग्य को मान्यता प्रदान करने वाला होगा।

भु० स० ५२१

कु० १०

(२०५)- इस जन्मयोग में उत्पन्न होने वाला मनुष्य दीर्घदेही, उन्नत ललाट, गौरवर्ण, कृशकाय परन्तु बलिष्ठ व तेजस्वी और प्रतापी, पितृभक्त और साहस सम्पन्न, बलवान, स्वाभिमानी और क्रोधी तथा अनुशासनप्रिय, न्यायोचित कर्म से ओतप्रोत, सत्यभाषी, सफल कर्मयोगी, परिश्रमी और निरन्तर उत्साही, राज्यक्षेत्र और समाज में समुन्नत और मान-प्रतिष्ठायुक्त, प्रभावशाली व्यक्तित्व से पूर्ण, गृह-भूमि-धन-धान्य-भृत्य-वाहनादि से युक्त, द्रव्य-कोष में कुछ त्रुटि युक्त सफल, भाग्योदय में विघ्न प्राप्त, धर्म और ईश्वर की अपेक्षा कर्मबल को अधिक मान्यता देने वाला, बाहरी सम्बन्धों में मधुरता पूर्ण व्यवहार के कारण सफल, मध्यमायु से अधिक जीवन प्राप्त, रक्त और वायु विकार ग्रस्त, विद्या और सन्तान-सुख से पूर्ण, ऐश्वर्य से रहने में पटु, सुन्दरी, गौरांगना, पतिव्रता स्त्री प्राप्त और उससे सुख सहयोग प्राप्त कर्त्ता, विरोधपक्ष का प्रबल दमनकारी, गृहस्थ में अनुरक्त, पिता का भक्त और मातृ-सुख में न्यूनता प्राप्त, भाई-बहिन के सुख-सम्बन्धों और पारिवारिक-सम्बन्धों में त्रुटि-ग्रस्त, चर्मरोगी, वृद्धावस्था में अधिक सुखी और आनन्दी कहलाने वाला होगा।

(२०६)- इस कुण्डली में उत्पत्ति ग्रहण करने वाला मानव उन्नत ललाट, परोपकारी और दयालु, उदारचेता, साहसी और स्वाभिमानी, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, तेजस्वी, सामान्य कद, पुष्टदेह, विचारक और चिन्तनशील, धर्म और ईश्वर में निष्ठा तथा गौ-ब्राह्मण और धर्म पालक, विद्या और सन्तान-सुख से पूर्ण, भाग्यशाली, कुल और पूर्वजों का नाम उज्ज्वल करने वाला, राज्य तथा सामाजिक क्षेत्रों में समुन्नत और मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, चतुर और विवेकी, अनेक विषयों का विद् तथा विद्वानों की मान्यता प्राप्त, विरोधियों का सर्वथा विजयी, गृह-भूमि-लाभ से युक्त, पारिवारिक विद्वेष प्राप्त कर्त्ता, भाई-बहिन के सुख-सम्बन्धों से त्रुटि युक्त, द्रव्य-संग्रहार्थ निरन्तर प्रयत्नवान् किन्तु द्रव्य-संग्रह में त्रुटि का अनुभवी, परिश्रम द्वारा अनेक कामों में सफल और भाग्यवान्, भोग-विलास में दक्ष तथा अन्य स्त्रियों में रमणकर्त्ता, न्यायोचित पक्ष का प्रतिपालक, सुन्दरी, पृथुला, श्यामा, पतिव्रता स्त्री का पति, गृहस्थ में आसक्त, नेत्रज्योति और मूत्रेन्द्रिय रोगी, उदर विकार ग्रस्त, ईश्वर और धर्म में आस्थावान् तथा धर्म-पालक, मातृ-सुख का अल्पभोगी, पितृ-भक्त होगा।

(२०७)- इस जन्म चक्र में जन्म ग्रहण करने वाला व्यक्ति दीर्घदेही, कृशकाय, गौरवर्ण, स्वाभिमानी, तेजस्वी और प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, पितृ-भक्त और माता की अपेक्षा पिता का सुख-सहयोग प्राप्त, पितृ क्षेत्र निवासी तथा पितृ-क्षेत्र में समुन्नत, विद्या और सन्तान-सुख से पूर्ण, भाग्योन्नत, क्रोधी और कृपण-स्वभाव, धन संग्रहार्थ निरन्तर प्रयत्नशील तथा धन संग्रह में पूर्ण, गृह-भूमि-धन-धान्यादि से युक्त; सुन्दरी, श्यामा, उदर-रोगिणी स्त्री का पति तथा उससे सुख-सहयोग प्राप्त तथापि उससे वैचारिक और मतभेदी एवं अन्य स्त्रियों में मेलकर्ता, हठी और गौरवमय वाक्यों का उच्चारक, गम्भीर और गुप्त-नीति-रीति से विरोध का दमनकारी, भाई-बहिन और पारिवारिक क्लेश युक्त, राज्य और सामाजिक मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, ऐश्वर्य से रहन-सहन में दक्ष, ईश्वर और धर्म में आस्थावान् तथा धर्म-पालक, उत्तम कार्यों में कृपणवृत्ति से धन का व्ययी तथा स्वावलम्ब-साधना में प्रवीण, मध्यमायु प्राप्त, कई बार मृत्यु तुल्य कष्टों को प्राप्त करने वाला, चिन्तनशील और विचारक, न्यायप्रिय, गौरव से रहने वाला, धीर-वीर और साहसी तथा विवेक सम्पन्न, उदर विकार और गुप्त रोग पीड़ित होगा।

(२०८)- इस जन्मांग में उत्पन्न होने वाला जातक श्यामवर्ण, दीर्घवपु, आत्मबल से हीन, क्रूर और क्रोधी स्वभाव, वाक्-चतुर और निर्बल तथा साहस से स्वार्थ-सिद्धि में तत्पर, उन्नत-ललाट, कृशकाय, नेत्र ज्योति में विकार ग्रस्त, भोगी विलासी, स्त्री-सुख से नितान्त हीन, शूद्रा अथवा म्लेच्छ स्त्री का स्वामी, किसी की परवाह न करने वाला, ईश्वर और धर्म में आस्तिक भावना रखते हुए बलोद्धत, वाक्-पटु, भोग-विलास में दक्ष और पूर्णकामी, उदरविकार और गुप्तरोग पीड़ित, विरोधियों और शत्रुओं पर भारी तथा गुप्त-रीति नीति से प्रभावी, द्रव्य-संग्रहार्थ निरन्तर चेष्टित और सभी काम करने को उद्यत, भाई-बहिन और परिवार से सुखी, स्त्री से विरोध पाने वाला, राज्य द्वारा लाभ प्राप्त, सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में हीन, यदा-कदा अनायास द्रव्य प्राप्ति से सुखी और भाग्योदय में विघ्न युक्त, कई बार जल और अग्नि तथा विद्युत से पीड़ित एवं हृद्रोग पाने वाला, गृह-भूमि लाभ युक्त, सन्तान-सुख भी और से चिन्तित, मध्यमायुष्य प्राप्त और वृद्धावस्था में दुःखी, हृदय से आन्तरिक संतप्त, मलिन और कुत्सित भावनाओं से युक्त, धर्म पालन से हीन, परिश्रमी और उत्साह-सम्पन्न होगा।

भू० सं० १२८९ | कु० २०

(२०९) - इस कुण्डली में जन्म लेने वाला बालक दीर्घवपु, श्यामवर्ण, पुष्टदेही, स्वाभिमानी और हठी, चतुर तथा विवेकी, माता का सुख-भोगी, पितृ-सुख में अल्प, पितृ-क्षेत्र निवासी, साहसी और प्रभावशाली व्यक्तित्व पूर्ण, हठ पूर्वक वाक्य स्थापता एवं स्वार्थ-सिद्धि में तत्पर, परिश्रम और साहस-शक्ति से भाग्यशाली तथा द्रव्य-कोष के संग्रहार्थ सर्वथा तत्पर, भोग विलास में दक्ष, स्त्री सुख में नितान्त हीन अथवा स्त्री से पृथक् रहनेवाला, विद्या और सन्तान से पूर्ण किन्तु वृद्धावस्था में सन्तान और स्त्री से तिरस्कृत तथा दुखी, गृह-भूमि लाभ में सामान्य, क्रोधित और धूर्त, गुप्तयोजनाओं का निर्माता, स्वकार्यक्षेत्र में सफल और भाग्योदय में विघ्न युक्त समुन्नत, प्रतिकार भावना युक्त, भाई बहिन और कुटुम्ब तथा किसी की चिन्ता न करने वाला, मध्यमायु प्राप्त, नेत्रज्योति तथा अर्शरोग और अन्य उदर-विकार ग्रस्त, राज्यक्षेत्र में समुन्नत और राज वेतनोपजीवी, धर्मकर्म और ईश्वर में आस्थावान् किन्तु धर्मपालन से हीन, रहन-सहन में प्रवीण, अपने द्रव्य से अन्य स्त्रियों का हित-साधन करने वाला, मरणकाल में कन्या से सुख-सहयोग पाने वाला होगा।

(२१०)- इस जन्म चक्र में उत्पत्ति ग्रहण करने वाला जातक उन्नत ललाट, श्याम वर्ण, पुष्ट देही, ईश्वर और धर्म के प्रति आस्थावान् किन्तु यथार्थ धर्म का यदा-कदा पालक, स्वाभिमानी, अत्यधिक चतुर और साहसी, साहस शक्ति से अनेक कार्यों में सफल, भाग्योदय में विघ्नयुक्त, सामान्य समुन्नत, परिश्रमी और उत्साही, भोगैश्वर्य से रहन-सहन में पटु, स्त्री का वंचक और स्त्री-सुख से हीन तथा स्त्री से पृथक रहनेवाला, अन्य सम्बन्धित स्त्रियों को लाभप्रदाता, धूर्त और शत्रुओं से तिरस्कृत, राज्यक्षेत्र और विद्या पक्ष में पूर्णता प्राप्त और राज्य से अर्थलाभ युक्त, आन्तरिक द्वेषी किन्तु किसी की चिन्ता न करने वाला, हठी और स्वपक्ष को दृढ़ रखने में प्रवीण, उदरविकार - संग्रहणी - गुदार्श से पीड़ित एवं नेत्रज्योति में त्रुटि का अनुभवी, मध्यमायु प्राप्त, सन्तान युक्त और सन्तान सुख से वंचित, कन्या के कारण वृद्धावस्था में यदा-कदा सुख प्राप्त, गृह भूमि लाभ में सामान्य, द्रव्य संग्रही भी उपेक्षा करने वाला और द्रव्यकोष हीन, भाई-बहिन तथा कौटुम्बिक-विरोध युक्त, आत्मबल से हीन, प्रायः मौन रहकर स्वकार्य का सम्पादक होगा।

(२११)- इस जन्म चक्र में उत्पन्न होने वाला मानव दीर्घतनु, कृश-देही, उन्नत ललाट, आदर्श स्वरूप, स्वाभिमानी, गौरवर्ण, तेजस्वी, स्वभाव से क्रुद्ध उग्र, अनुशासनप्रिय, सत्यवादी और निर्भीक, साहस-सम्पन्न, परमेश्वधावी, भोगैश्वर्य-सम्पन्न और रहन-सहन में दक्ष, नेत्रज्योति और रक्त-विकार युक्त, विद्या और सन्तान से सुखी तथा पुत्री [illegible], माता-पिता का पूर्ण सुख भोगी, विरोधियों का प्रबल दमनकारी, यदा-कदा मृत्यु तुल्य कष्टों को प्राप्तकर्ता, [illegible] पित्र-मित्र की अपेक्षा अन्यत्र मिलाप, रहन-सहन में धन का अधिक व्ययी, पर्याप्त धन का लाभी तथा यदा-कदा द्रव्य संग्रह में त्रुटि का अनुभवी, गृह-भूमि-धन-धान्यादि से सम्पन्न, भाई-बहिन और पारिवारिक सुख-सहयोग में कुछ न्यूनता प्राप्त, ईश्वर और धर्म के प्रति आन्तरिक आस्थावान, कुछ उद्दत और कृपण, सुन्दरी, श्यामा स्त्री का पति और उससे सुख-सन्तोष प्राप्त, भाग्योन्नत, अन्य स्त्री में भी रमणशील, भ्रमणशील किन्तु भ्रमण काल में धोखा और भय ग्रस्त, न्यायोचित बात कहने में पटु, सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में कुछ न्यून होगा।

(२१२)- इस जन्मांग में जन्म ग्रहण करने वाला बालक स्वाभिमानी, साहसी और निर्भीक, सुन्दरी सुशील कुछ क्रोधिनी पतिव्रता स्त्री का पति और उससे सुख-सहयोग प्राप्त तथा उसके कारण भाग्योन्नत, गृह-भूमि-धन-धान्य-भृत्य-वाहनादि सुख से पूर्ण, परिश्रमी और उद्यमी, सामाजिक प्रतिष्ठा में न्यूनता का अनुभवी, वाहन सम्बन्धी में अभाव ग्रस्त, दीर्घ देही और कृश-शरीर, नेत्रज्योति और रक्त-विकार तथा वायु पीड़ा से प्रभावित, द्रव्य लाभ प्राप्त होते हुए भी द्रव्य-संग्रह में तत्पर, विद्या और सन्तान से सुखी, पुत्र और पुत्रियों तथा पौत्रादिकों से संयुत, मातृ-पितृ-सुख सहयोग का भागी, अन्य स्त्रियों में भी रमण कर्ता, गौरवर्ण, भाई-बहिन और पारिवारिक-सुख-सहयोग युक्त, रहन-सहन और भोग-विलास में दक्ष, परोपकार के साथ यश हीन, ठाठ बाट में धन का अधिक व्ययी, बलोद्धत और तेजस्वी एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व से शत्रुओं का दमनकारी, सर्वथा भाग्योन्नत, भ्रमणशील प्रवृत्ति के कारण हानि प्राप्त, मध्यमायुष्य सम्पन्न, कई बार मृत्यु-तुल्य कष्ट और चोट का आघात सहने वाला होगा।

भू० सं० कु० १०

(२१३)- इस कुण्डली चक्र में उत्पत्ति ग्रहण करने वाला जातक सुन्दर, गौर वर्ण, शारीरिक सौन्दर्य सम्पन्न, सुगठित पुष्ट देही और सामान्य कद, विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, संगीत काव्यादि प्रेमी, चतुर और विवेकी, स्वाभिमानी एवं उग्र, मातृ-सुख से वर्जित तथा पिता का अल्प-सुख प्राप्त, भोगी और कानून शास्त्री में यत्नशील; सुन्दरी, गौरांगी, कुछ क्रोधिनी पतिव्रता भार्या का पति और उससे भी सुख-सहयोग से सन्तुष्ट; परिश्रम द्वारा तथा अन्य प्रकार से विपुल धन लाभी और द्रव्य-संग्रह में पर्याप्त; गृह-भूमि-लाभयुक्त, यदा-कदा भाग्योन्नति में विघ्नयुक्त सफलता प्राप्त, हठी और विवाद्य वाद में चतुर तथा दृढ़, अच्छा वक्ता, ईश्वर और धर्म में आस्थावान् और धर्म पालक, विरोध-पक्ष पर विजयी, कई बार मृत्यु-तुल्य कष्ट पाने वाला, विद्या और सन्तान तथा सन्तति-सुख से पूर्ण, परोपकारी और दयालु तथा यश-हीन, भाई-बहिन युक्त तथा उनके सुख-सहयोग का भागी, किन्तु पारिवारिक-क्लेश प्राप्तकर्त्ता, पक्षाघात और रक्त-विकार तथा वायु विकार से पीड़ित, मध्यमायु सम्पन्न, भ्रमण काल में हानि प्राप्तकर्त्ता, गृहस्थ में आसक्त होगा।

(२१४)- इस जन्मांग में उत्पन्न होने वाला पुरुष उत्तम गौर वर्ण, विशाल देही, पुष्ट, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, तेजस्वी, स्वाभिमानी और स्वाभिमान-रक्षार्थ सर्वदा तत्पर, आदर्श सत्यवादी और न्यायप्रिय, चतुर तथा साहसी, हठी और दृढ़ निश्चयी, उत्तम आदर्श बातें कहने वाला, निर्भीक, ईश्वर और धर्म के प्रति अत्यन्त निष्ठावान् एवं धर्म का पालक, माता पिता- भाई बहिन सभी का भक्त, धन की अपेक्षा चरित्र को महत्व प्रदाता, विलक्षण विद्या बुद्धि सम्पन्न, विद्या और सन्तान में त्रुटियुक्त तथा सन्तान की ओर से चिन्तित, धर्मग्रन्थों और संस्कृति का अध्येता एवं उनका पोषक, अजातशत्रु, राज्य और सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में पूर्ण, राज्य में पदोन्नत और उससे जीवन-निर्वाहक, भाई-बहिन और पारिवारिक सुख-सहयोग में त्रुटि का अनुभवी, दीर्घजीवन प्राप्त, भगवद्-स्मरण करते हुए तीर्थस्थान अथवा देवालय में देह-त्यागी, गृह-भूमि लाभ युक्त, परन्तु द्रव्य कोष में त्रुटि का अनुभवी, भाग्यशाली और विद्वान् माने जाने वाला, यदा-कदा रोगी रहने वाला स्वस्थ, उदारमना, सुन्दरी पतिव्रता स्त्री का सुख-भोगी होगा।

मू० सं० ०३५.४

कु० १०

(२१५)- इस जन्म-चक्र में उत्पन्न होने वाला व्यक्ति दीर्घ देही, उन्नत ललाट, स्वाभिमानी और चरित्र की रक्षार्थ सर्वदा तत्पर, सत्यवादी, न्यायप्रिय, गौरवर्ण, पुष्ट देही, निर्भीक और साहसी, राज्य क्षेत्र में उच्च पदासीन और जीवन निर्वाहक, धर्म-चतुर और विवेकी, स्वभाव में मृदुल और परोपकारी एवं दयालु, अजातशत्रु, विद्या पक्ष में कुछ अवरोध के साथ पूर्णता प्राप्त, सन्तान की ओर से चिन्तित, गृह भूमि-लाभ युक्त तथापि द्रव्य-संग्रह में न्यूनता का अनुभवी, सर्वदा सत्यपथ का अनुगामी और ईश्वर- धर्म- माता-पिता- भाई-बहिन - गो-ब्राह्मण सभी का भक्त और आस्थावान, सुन्दरी, सुलक्षणा, पतिपरायणा स्त्री के सुख-सहयोग का भागी, उदारचेता, पदोन्नति तथा कर्मक्षेत्र में अवरोध के साथ सफलता प्राप्त, राज्य और सामाजिक मान प्रतिष्ठा सम्पन्न, स्वस्थ और नीरोग दीर्घजीवन प्राप्त, दृढ़ एवं निश्चित आय से भाग्योन्नत, पारिवारिक क्लेश से आन्तरिक दुःखी, भोगैश्वर्य सम्पन्न, वाणी शक्ति से सभी पर प्रभावशाली, चातुर्य और साहस से अनेक कार्यों में सफलता प्राप्त, गृहस्थ में आसक्त, उत्तम स्थान व काल में देहत्यागी होगा।

(२१६)- इस जन्मचक्र में उत्पन्न होने वाला मनुष्य विशालकाय, उत्तम स्वास्थ्य सम्पन्न गौरवर्ण, उदारमना, परोपकारी और दयालु, स्वाभिमानी और सत्य तथा आदर्शवादिता की रक्षार्थ सर्वदा तत्पर, प्राचीन धर्म और संस्कृति का उपासक, भाई-बहिन, माता-पिता का सुख-सहयोग भागी, तथापि मातृ-सुख में न्यूनता का अनुभवी, धर्मपालक और ईश्वर में निष्ठा से पूर्ण, विलक्षण प्रतिभा- बुद्धि- चातुर्य विवेक से सम्पन्न, विद्या पक्ष में अवरोध के साथ पूर्णता प्राप्त, सन्तान की ओर से चिन्तित अथवा विलम्ब से सन्तान प्राप्तकर्ता, राज्य और सामाजिक मान प्रतिष्ठा सम्पन्न, भाई बहिन और पारिवारिक सुख सहयोगों में त्रुटि का अनुभवी, दीर्घायुष्य सम्पन्न, गृह- भूमि लाभ में सामान्य तथा द्रव्यलाभ में न्यूनता प्राप्त, भोगैश्वर्य युक्त उत्तम जीवन व्यतीत कर्ता, पतिव्रता- सुन्दरी नीरोगी - सुलक्षणा स्त्री का स्वामी और उससे सुख-सहयोग एवं सन्तोष पाने वाला, गृहस्थ में अनुरक्त, सदाचारी और पवित्र, उत्तम काल व स्थान में देहत्यागी, भाग्योदय में अनेक बार विघ्न प्राप्तकर्ता तथापि वाणी प्रभाव से सफलता पाने वाला होगा।

(२९७)- इस जन्मांग में जन्म ग्रहण करने वाला मनुष्य दीर्घ और पुष्ट वपु, स्वाभिमानी, साहसी और चतुर एवं पूर्ण विवेक सम्पन्न, हठी और स्ववाक्य-स्थापनों में वाणी प्रभाव से प्रवीण, भोगैश्वर्य सम्पन्न, परोपकारी और दयालु, निर्भीक, धर्म और ईश्वर में पूर्ण निष्ठा तथा धर्म-पालक, सत्यवादी और न्यायप्रिय, विद्या-बुद्धि में पूर्ण तथा उत्तम गुण युक्त सन्तान का पिता तथा वृद्धावस्था में उसके द्वारा सुख-सहयोग प्राप्तकर्ता एवं भाग्योन्नत, भाग्योन्नति में सर्व बाधक पानेवाला, रहन-सहन में दक्ष और धन का व्ययी, उत्तम कार्यों व धर्म में धन व्यय करनेवाला, सुन्दरी गौरांगी स्त्री का स्वामी और उससे सुख सहयोग पाकर सन्तुष्ट, गृहस्थासक्त, सामान्य विरोध पर गुप्त रीति नीति एवं वाणी प्रभाव से विजय प्राप्त करने में सक्षम, मातृ-पितृ सुख का अल्प भोगी और पितृ-भक्त एवं पितृ क्षेत्र निवासी, गृह-भूमि लाभ में न्यूनता का अनुभवी, सामान्य द्रव्य-संग्रही, परिश्रम और साहस से भाग्योन्नत तथा आत्मसन्तुष्ट, मध्यमायु प्राप्त, उत्तम स्थान का निवासी, भाई-बहिन और पारिवारिक सुख-सहयोग में आन्तरिक त्रुटि का अनुभव करनेवाला होगा।

(२९८)- इस कुण्डली चक्र में उत्पन्न होने वाला व्यक्ति स्वाभिमानी, गौरव-सम्पन्न, गौरवर्ण, दीर्घ वपु और कृशकाय, साहसी, पुरातत्ववेत्ता, विलक्षण प्रतिभा एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व से ओतप्रोत, गुप्त-योजनाओं के निर्माण में दक्ष, क्रोधी और अनुशासनप्रिय, सत्य तथा न्यायप्रिय, पिता का सुख-सहयोग भागी, मातृ-सुख और गृह-भूमि लाभ में न्यूनता प्राप्त, पितृ-भक्त, कुशल और स्वकार्य में दक्ष, राज्य-क्षेत्र में उच्च पदासीन और मान-प्रतिष्ठा युक्त भाग्योन्नत, भाग्योदय में विघ्नयुक्त सफलता प्राप्त, परिश्रमी और उत्साही, ईश्वरीय सत्ता को स्वीकारते हुए कर्मयोग को महत्व प्रदान करने वाला, उत्तम स्थान का निवासी और उत्तम कार्यों में धन का व्ययी, स्त्री की ओर से आन्तरिक दुःखी, उत्तम गुणी पुत्रों का पिता तथा सन्तान की ओर से चिन्तित, बुद्धि-कौशल और वाणी प्रभाव से विरोध का विजेता, भोगैश्वर्य और रहन-सहन में दक्ष, भाई-बहिन का सुख-सहयोग संयुत किन्तु पारिवारिक क्लेश से आन्तरिक दुःखी, किसी की अधिक परवाह न करने वाला, मध्यमायु प्राप्त, वृद्धावस्था में पुत्र-सुख सहयोग से संयुत तथा भाग्यशाली होगा।

मृ० सं० ६३४

कु० १०

(२१९)- इस जन्मांग में जन्म लेने वाला जातक उत्तम सुगठित देही, पुष्ट और गौरवर्ण, स्वाभिमानी और गौरव युक्त, मधुर तथा सत्यभाषी, भोगैश्वर्य और रहन-सहन में दक्ष तथा अधिक व्ययी, साहस तथा अनेक विषयों में पूर्ण, विद्वान तथा मेधावी और विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, विद्यापक्ष में आन्तरिक त्रुटि का अनुभवी, स्ववाक्य स्थापना में प्रवीण, परिश्रमी और उत्साही, मातृ-सुख में अल्प, पितृ-सुख में भी कुछ अल्प और पितृभक्त तथा पितृक्षेत्र निवासी, राजकीय और सामाजिक मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, सन्तान की ओर से चिन्तित, भाई-बहिन और पारिवारिक सुख सम्बन्धों में प्रतिकूल समुन्नत, द्रव्य संग्रहार्थ निरन्तर चेष्टित तथा धन-संचयी, गृह-भूमि-लाभ से युक्त, यदाकदा भाग्योदय में विघ्न युक्त सफल, सुन्दरी शिक्षिता किन्तु कलही-स्त्री का पति और उसके सुख-सहयोग से कुछ सन्तुष्ट तथा गृहस्थ में अनुरक्त, परन्तु अन्य-स्त्रियों में भी यदा-कदा रमणकर, द्रव्य-संग्राहक, ईश्वर और धर्म के प्रति आस्थावान् तथा धर्म-पालक, आदर्शवादिता के स्थापन में निपुणता प्राप्त, मध्यमायुष्य सम्पन्न, उत्तम-स्थान में देहत्याग कर मोक्ष-पथ का अनुगमन करने वाला होगा।

(२२०)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न होने वाला मनुष्य मध्यम कद, गौरवर्ण, स्वाभिमानी, तेजस्वी, आदर्श सत्यवादी, यदाकदा आमदनी में अवरोध पाने वाला, विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, कुछ उग्र स्वभाव और सहज ही शान्त तथा विवेकी, वाक्-चातुर्य में प्रवीण, हठी और स्ववाक्य-स्थापना में पूर्ण पटु, परोपकारी और दयालु, मातृ सुख से पीड़ित तथा पितृ-सुख का अल्प भोगी, पितृ भक्त एवं पितृ-क्षेत्र निवासी, परिश्रम के अनन्तर भी आन्तरिक त्रुटि का अनुभवी, विद्या और सन्तान सुख में पूर्ण, वाणी-विलास और गुप्त रीति से विरोधियों पर विजेता, रहन-सहन में दक्ष और अधिक व्ययी, राज्य एवं सामाजिक मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, सुन्दरी गौरांगी कलहकारिणी स्त्री का पति और उससे सुख सहयोग प्राप्त करते हुए भी असन्तुष्ट, पवित्र और सदाचारी, ईश्वर और धर्म में आस्थावान् किन्तु धर्म-पालन में शिथिल, भाग्योदय में कुछ अवरोध के साथ समुन्नत, भाई-बहिन और पारिवारिक क्लेशों के कारण दुखी, गृह-भूमि लाभयुक्त तथा द्रव्य का सामान्य संग्रही, यदा-कदा अरिष्टों के अतिरिक्त मध्यमायुष्य सम्पन्न, उत्तम-स्थान में अनायास उत्तम कार्य के साथ देहत्याग करने वाला होगा।

भू० सं० ४७२६

कु० १०

(२२१)- इस जन्मलग्न में जन्म ग्रहण करने वाला जातक मध्यम कद, सामान्य गोधूम वर्ण, उन्नत ललाट, स्वाभिमानी और क्रोधी तथा काम-चतुर और विवेकी, माता-पिता का पूर्ण सुख सहयोग प्राप्त, विद्या और सन्तान क्षेत्र में समुन्नत और सुखी, गुप्त योजनाओं के निर्माण में पटु, स्वार्थसिद्धि में तत्पर, पूर्ण ऐश्वर्य युक्त एवं भोग-विलास में प्रवीण, भाईबहिन युक्त तथा पारिवारिक उनके सुख-सम्बन्धों में अतीवक्लेश प्राप्त कर्ता, परिश्रमी और उत्साही, मध्यमायुष्य सम्पन्न, राज्य और कर्मक्षेत्र में समुन्नत तथा उच्चपदासीन और मान-प्रतिष्ठासम्पन्न, परिश्रम और साहस से भाग्योदय प्राप्त कर्ता, हठी और दृढ़निश्चयी एवं कार्य हेतु मधुर-वाक्य रत, अनुशासनप्रिय, नेत्रज्योति एवं शारीरिक सौन्दर्य में त्रुटियुक्त, गृह भूमि लाभ से संयुक्त, द्रव्य-कोष में त्रुटि का अनुभवी, दृढ़ और निश्चित आय सम्पन्न, सुन्दरी गौरांगी शिक्षिता पतिव्रता स्त्री का स्वामी तथा गृहस्थ में आसक्त, पाँच पुत्रों का पिता, ईश्वर और धर्म में आस्थावान तथा परोपकारी, वायु-विकार से उत्तम स्थान में देह-त्यागी, उत्तम कार्यों में धन का व्ययी और मोक्ष-मार्ग का अनुसरणशील होगा।

(२२२)- इस जन्म चक्र में जन्मा हुआ बालक उत्तम गुण युक्त गौर वर्ण, मध्यम कद, उन्नत ललाट, माता-पिता और ईश्वर का भक्त, परोपकारी और दयालु, मधुरवाक्य युक्त, हठी और स्वाभिमानी तथा उत्तम गोपनीय वाक्यों को मधुरता से कहनेवाला, भाईबहिन और परिवारीजनों से विद्वेष पानेवाला, द्रव्य-संग्रह में हीन, मातृ-सुख में कुछ त्रुटि का अनुभवी, सुन्दरी सुशिक्षिता सुशीला पतिपरायणा स्त्री का पति और उससे सुख सहयोग प्राप्त, सन्तान की ओर से कुछ चिन्तित, सम पुत्रों का सृष्टिकर्ता, परिश्रमी और साहस-सम्पन्न आत्मबली, दृढ़ और निश्चित आय युक्त तथा उत्तम कार्य और ऐश्वर्यमय रहन-सहन में धन का व्ययी, नेत्रज्योति में विकार युक्त, अनेक विद्याओं में प्रवीण और सुखी, संगीत काव्य-ज्योतिष का प्रेमी, रक्त एवं वायु-विकार पानेवाला, विरोध-पक्ष पर वाक्-चातुर्य तथा प्रभावशाल व्यक्तित्व से विजयी, मध्यमायु प्राप्तकर्ता, भाग्योदय में विघ्नयुक्त सफलता ग्रहण करने वाला, उत्तम स्थान में देहत्यागी, गृह-भूमि लाभ में त्रुटि का भी अनुभवी, राज्य और सामाजिक मान प्रतिष्ठा प्राप्त, सुयशयुक्त मरण प्राप्त कर बैकुण्ठ जाने वाला होगा।

भृ० सं० — कु० र०

(२२३)- इस जन्म चक्र में जन्मा हुआ व्यक्ति दीर्घवपु, कृश-शरीर, सुन्दर गौरवर्ण, शारीरिक सौन्दर्य में कुछ त्रुटियुक्त, माता-पिता का पूर्ण सुख-सहयोग प्राप्त, आपत्ति-काल में धैर्य के साथ कार्य करने में गम्भीर, साहसी और चतुर, विवेकी और मधुर भाषी, चातुर्य और गुप्त रीति से विरोधी-पक्ष पर सबल, भाई-बहिन और परिवारिक क्लेश का अत्यन्त भोगी, गृह-भूमि लाभ युक्त, आत्मबली, धर्म-कर्म और ईश्वर के प्रति निष्ठावान तथा धर्म का पालक, हठी और स्वाभिमानी तथा स्ववाक्य-स्थापना में प्रवीण, परोपकारी और दयालु, प्रत्येक कार्य को दक्षता से करने वाला, विद्या-बुद्धि में पूर्ण तथा उससे सुख प्राप्त कर्ता, भाग्योदय में कुछ अवरोध युक्त, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में समुन्नत एवं मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, प्रिय वाक्यों के उच्चारण में प्रवीण, रहन-सहन और ऐश्वर्य युक्त, पतिव्रता शिक्षिता स्त्री से पूर्ण सुख सहयोग प्राप्त किन्तु सन्तान कष्टों से चिन्तित, उत्तम गुणी सन्तान का पिता, निश्चित लाभ पाने वाला, श्रेष्ठ उत्तम कार्यों में धन का व्ययी, भोग-विलास में दक्ष और गृहस्थासक्त, यदाकदा मृत्युतुल्य कष्ट पाने वाला होगा।

(२२४)- इस जन्मांग में जन्म लेने वाला पुरुष दीर्घ और कृश काय, शारीरिक सौन्दर्य में विकार युक्त गौरवर्ण, स्वाभिमानी और सहज ही क्रोधी तथा अशान्त-चित्त, कुछ विक्षिप्त जैसा, द्रव्य-कोष संग्रहार्थ निरन्तर उद्यतशील तथापि धन संग्रह से नितान्त हीन, विद्या-बुद्धि से संयुक्त होने के कारण राज्य-क्षेत्र में समुन्नत तथा राज्य वेतनोपजीवी, पैतृक गृह-भूमि लाभ वियुक्त, गृहस्थ और स्त्री-प्रसंगों में धन का व्यय करने वाला, स्त्री और भाई सुख से वर्जित, मध्यमायु प्राप्त, विरोधी पक्ष को गुप्त योजनाओं के बल पर दबाने में प्रवीण, किसी की परवाह न करने वाला, बलहठ, साहस से कार्य करने में तत्पर, स्वार्थी और कामुक, सन्तान सुख से नितान्त हीन और चिन्तित तथा वृद्धावस्था में महत् दुःख प्राप्त कर्ता, अभाव-ग्रस्त जीवन युक्त, अनेक स्त्रियों में रमणकर्ता, धर्म-कर्म और ईश्वरीय निष्ठा से हीन, भाई-बहिन युक्त किन्तु उनको और परिवारी जनों का द्वेषी, पिता का अल्प सुख प्राप्त कर्ता अथवा पितृद्वेषी, मातृ-सुख सहयोग से कुछ सुख प्राप्त, अनेक स्थानों पर भ्रमणशील, मलिन और कुचैल होगा।

भू० सं०

कु० १०

(२२५)- इस जन्मचक्र में उत्पन्न होने वाला मानव मध्यमकद, उन्नत-ललाट, पुष्ट और गठित देही, स्वाभिमानी और हठी, ऐश्वर्य से रहन-सहन में दक्ष, धन संचय और स्वार्थपूर्ति हेतु मधुर वाक्योच्चारण में प्रवीण, मलिन और अशान्त हृदय; मलिन-क्रोधिनी शूद्रावत् श्यामा स्त्री का पति और उससे विद्वेष कर अन्य स्त्रियों में रमणकर्त्ता, अधिक व्ययी, राज्य-क्षेत्र में कुछ सफल तथा राज्यवेतनोपजीवी, विरोध के समक्ष दीन-हीन बन कर मधुर रीति से कार्य करने में कुशल, मातृ-सुख से हीन, पितृ-सुख सहयोग से विद्या प्राप्त कर सुखी किन्तु पितृद्वेषी और निन्दक, भाई-बहिन का सुख-सहयोग पाने वाला, साहस-सम्पन्न, चोर जैसी प्रवृत्ति, पैतृक गृहादि के लाभ से युक्त, पारिवारिक क्लेश प्राप्तकर्त्ता, ऐश्वर्य और भोगविलास में दक्ष, यदाकदा भाग्योदयी और मृत्यु-तुल्य कष्टों का प्राप्तकर्त्ता, द्रव्य-कोष-संग्रह से आन्तरिक दुःखी, परिश्रम और बुद्धि से प्रवीणता प्राप्त, रक्त-पित्त के विकार से युक्त, नेत्रज्योति में विकारग्रस्त, मध्यमायु प्राप्त, सन्तान सुख से हीन अथवा उसकी ओर से अत्यधिक चिन्तित तथा वृद्धावस्था में घोर संकटग्रस्त होगा।

(२२६)- इस कुण्डली में उत्पन्न हुआ मानव दीर्घ और कृशदेही, श्यामवर्ण, उन्नत ललाट, हठी और क्रोधी, विद्वेष भावनाओं से पूर्ण और आन्तरिक दुःखी, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, विलक्षण मेधायुक्त तथा गुप्त योजनाओं का निर्माता, धर्म-कर्म और ईश्वर का प्रेमी तथा यथार्थ धर्मपालन से हीन, स्वार्थपूर्ति हेतु धर्मपालक, सामान्य धन और द्रव्यकोष संग्रही, पैतृक गृहादि लाभी, क्रोधी, श्यामा स्त्री का पति, भाई-बहिन का सुख सहयोग प्राप्त, माता-पिता का द्वेषी और निन्दक, अन्य स्त्रियों में रमणकर्त्ता, नेत्र ज्योति-मस्तिष्क विकारयुक्त, मूत्रेन्द्रिय और उदर रोग से पीड़ित, सुरा-सुन्दरी सेवी, अभक्ष्य-भक्ष्य ग्रहणकर्त्ता, ऐश्वर्य और प्रभाव हेतु धन का अधिक व्ययी, राज्यवेतनोपजीवी और राज्यक्षेत्र में सफल, यदाकदा भाग्य-लाभ प्राप्तकर्त्ता, विरोध पक्ष की प्रबलता से कई बार असफलता पाने वाला, सन्तान युक्त तथापि सन्तान सुख में न्यूनता का अनुभवी, उदर विकार के कारण मृत्यु-तुल्य संकटग्रस्त, अधिक परिश्रम और साहस से यदाकदा भाग्योदय में सफलता प्राप्त, मध्यमायुष्य सम्पन्न, वृद्धावस्था में तिरस्कृत और अनेक संकटों से ग्रस्त, यश हीन होगा।

(२२७)- इस कुण्डली में जन्म लेने वाला जातक साधारण कद, गौरवर्ण, काम-चतुर और विवेकी, गम्भीर तथा शान्त, उन्नत ललाट, तेजस्वी, विलक्षण प्रतिभा एवं प्रभावशाली वाणी और व्यक्तित्व का धनी, स्वाभिमानी और कुछ उग्र, माता का अल्प सुखभागी और पितृ-सुख सहयोग का भोगी तथा पितृ-भक्त एवं पितृ-क्षेत्र निवासी, राज्य क्षेत्र में समुन्नत और राज्यवेतनोपजीवी, गृह भूमिलाभ में सामान्य, साहसी, परोपकारी और दयालु, विद्या और सन्तान से पूर्ण किन्तु सन्तान की ओर से चिन्तित, भाई बहिन और परिवार के सुख-सम्बन्धों में त्रुटियुक्त, विरोधियों पर वाक्-चातुर्य तथा गुप्त रीति-नीति से सफल, वृद्धावस्था में सन्तान का अच्छा सुख प्राप्तकर्ता, नेत्रज्योति और उदरविकार युक्त, श्यामा स्त्री का पति किन्तु उसका मतभेदी और अन्य स्त्रियों में रमणशील, भोगैश्वर्य तथा रहन-सहन में दक्ष एवं धन का अधिक व्ययी, धन-संचय में न्यूनता का अनुभवी तथापि भाग्यशाली और सामाजिक मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, मध्यमायुष्य प्राप्त, ईश्वर और धर्म में आस्थावान तथा धर्म का पालक और संगीत काव्य ज्योतिष आदि प्रेमी होगा।

(२२८)- इस कुण्डली-चक्र में जन्म ग्रहण करने वाला बालक दीर्घायु और कृश, गौरवर्ण, उन्नत ललाट, अत्यधिक साहसी और क्रोधी, तेजस्वी, स्वाभिमानी और प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, वाणी में ओजस्वी, हठी एवं दृढ़निश्चययुक्त, स्वावलम्ब स्वाधीनता में दृढ़, पितृभक्त और पितृ-सुख सहयोग के कारण विद्या-बुद्धि में समुन्नत, दूरदर्शी, गुप्त-योजनाओं के निर्माण में प्रवीण, पितृ-क्षेत्र निवासी, राज्य क्षेत्र में समुन्नत तथा राज्यवेतनोपजीवी, सन्तान का वृद्धावस्था में सुख प्राप्त तथा सन्तान की ओर से चिन्तित, भोग-विलास और रहन-सहन में दक्ष तथा धन का अधिक व्ययी, गृहभूमि लाभ में सामान्य तथा कुछ कठोर प्रकृति, ईश्वर और धर्म में आस्तिक और धर्म पालक, नेत्र ज्योति एवं उदर विकारयुक्त और यदा-कदा मृत्युतुल्य कष्टों का प्राप्तकर्ता, स्त्री सुख में अल्प तथा अन्य स्त्रियों में रमणकर्ता, अनुशासनप्रिय, विरोधिपक्ष का प्रबल शमनकारी, धन संग्रह में निरन्तर चेष्टित तथा सामान्य धन-संग्रही, भाई बहिन और परिवार के सुख-सम्बन्धों में त्रुटि का अनुभवी, मध्यमायु से अधिक जीवन प्राप्त, दृढ़ और निश्चित आययुक्त, मानप्रतिष्ठा सम्पन्न होगा।

भू० स० कु० १०

(२२९)- इस जन्मांग में जन्म लेने वाला व्यक्ति उत्तम गौर वर्ण, दीर्घबाहु, कृशकाय, स्वाभिमानी और तेजस्वी, ओजस्वी वाणी से सम्पन्न, उन्नत ललाट, कुछ कठोर और हठी तथा दृढ़-निश्चय युक्त, अत्यधिक साहसी और उत्साही, पितृ-सुख सहयोग का भागी तथा उससे सम्मुन्नत और पिता का भक्त, मातृ सुख का अल्प भोगी, रहन-सहन में दक्ष और ऐश्वर्य युक्त, धर्म तथा ईश्वर में निष्ठा और धर्म पालक, विद्या-बुद्धि में पूर्ण, गृह-भूमि लाभ से युक्त और धन सम्पन्न, व्यवसाय में कभी उच्च हानि और कभी उच्च लाभ का प्राप्त कर्त्ता, वृद्धावस्था में सन्तान-सुख प्राप्त, स्त्री सुख में स्वल्प और शताधिक स्त्रियों का भोगी, मध्यमायुष्य सम्पन्न, शत्रुओं पर वाक्चातुर्य और गुप्त नीति-रीति से सर्वथा विजयी, मान प्रतिष्ठा में सामान्य, अपने स्वभाव से आन्तरिक दुःखी, भोग-विलास में अधिक धन व्यय करनेवाला, भाई बहिन के सुख-सम्बन्धों का प्राप्तकर्त्ता किन्तु परिवारीजनों का क्लेश सहन करनेवाला, पितृ क्षेत्र का स्थायी निवासी और कार्यार्थ देश-देशान्तरों में भ्रमणशील तथा परिश्रम और उत्साह से भाग्यशाली, यदा-कदा मृत्यु तुल्य कष्टों का प्राप्त कर्त्ता होगा।

(२३०)- इस जन्मांग चक्र में उत्पन्न होने वाला पुरुष साधारण कद, पुष्ट देही, गौर वर्ण, उन्नत ललाट, पराक्रमी और विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, तेजस्वी और प्रभावशाली व्यक्तित्व एवं स्वाभिमान युक्त, बुद्धि और वाक्चातुर्य से प्रत्येक कार्य में सफल, केवल एक-दो सन्तानों का पिता और उनसे वृद्धावस्था में दुःखी, निरन्तर परिश्रमी, स्त्री सुख से वंचित, धार्मिक और ईश्वर तथा लोक-परलोक को मानने वाला, परोपकारी और दयालु, विद्या सुख में कुछ अवरोध युक्त सफल, माता-पिता का पूर्ण सुख भोगी और उनका भक्त, कर्मयोग को महत्व प्रदान करनेवाला, गृह-भूमि लाभ युक्त, राज्य क्षेत्र से दृढ़ और निश्चित आय सम्पन्न, तथा भाग्योन्नत, राज्य एवं सामाजिक क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, साहस और धैर्य से कार्य करने में कुशल, आपत्ति या और संकट-काल में धैर्य सम्पन्न, विरोध की चिन्ता न करनेवाला, भाई बहिन और पारिवारिक सुख सम्बन्धों में न्यूनता का अनुभवी, उत्तम कार्यों से उत्तम स्थान में रत और वायु विकार से देह त्यागी और तत्काल बैकुण्ठ प्राप्त कर, आवागमन रहित, मध्यमायु प्राप्त होगा।

(२३१)- इस जन्म लग्न में उत्पत्ति ग्रहण करने वाला, मनुष्य स्वाभिमानी और वाक्-कौशल से पूर्ण, साहसी और स्वाभिमानी, तेजस्वी और प्रतिभाशाली, प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व-सम्पन्न, सामान्य उग्र तथा सहज ही शान्त-धीर और गम्भीर, विलक्षण मेधावी, ईश्वर और धर्म-कर्म में पूर्ण आस्थावान् तथा धर्म-पालक, परोपकारी और दयालु, संगीत-काव्य-ज्योतिष एवं धर्म-ग्रन्थों का अध्येता, विद्या और सन्तान-सुख से पूर्ण, मध्यमायुष्य सम्पन्न, गौरवर्ण, पुष्ट देही, साधारण कद, उन्नत ललाट, पर्याप्त धनी और भाग्यशाली तथा कर्म योग को महत्व प्रदान करने वाला, सभी क्षेत्रों में उदार शील-वृत्ति के कारण मान-प्रतिष्ठा प्राप्त कर्त्ता, भाई-बहिन और माता-पिता का पूर्ण सुख-सहयोग प्राप्त, किन्तु पौत्रों से द्वेष प्राप्त कर्ता, प्रायः अजातशत्रु, तथापि बुद्धि और वाणी-चातुर्य से सभी को वश करने में सक्षम, स्त्री-सुख से वंचित, धन-धान्य-गृह-भूमि-भृत्य-वाहन सुख से पूर्ण, विद्या और सन्तान सुख से कुछ और सुख सफलता प्राप्त, मध्यमायु से अधिक जीवन प्राप्त, उत्तम तीर्थों के करने से उत्तम स्थान में देहत्याग कर बैकुण्ठ-प्राप्ति का अधिकारी होगा।

(२३२)- इस जन्मचक्र में उत्पन्न होने वाला मानव गौरवर्ण, दीर्घ और कृश शरीर, उन्नत ललाट, शारीरिक सौन्दर्य में कुछ त्रुटियुक्त, साहसी और क्रोधी, अनुशासनप्रिय, अपने स्वभाव के कारण आन्तरिक दुःखी, स्वाभिमानी तथा यथा-काल अपनी स्वार्थ-सिद्धि हेतु विनय-सम्पन्न, गुप्त और गम्भीर योजनाओं के निर्माण में प्रवीण, विद्या और सन्तान सुख में संयुक्त, साहस-परिश्रम और बुद्धि-कौशल से धनसंग्रहार्थ निरन्तर प्रयत्नवान् और गृह-भूमि एवं द्रव्य संग्रह युक्त, सभी से निरन्तर विरोध का प्राप्त कर्त्ता, कठोर और हठी एवं दृढ़ निश्चयी, सन्तान की ओर से चिन्तित, पितृ-द्वेषी, माता का पूर्ण सुख-सहयोग भोगी तथापि मातृ-सेवा से हीन, ईश्वर और धर्म को आन्तरिक मान्यता देकर ऊपर से उद्दण्ड और धूर्त तथा धर्म-पालन से हीन, स्त्री सुख में न्यूनता का अनुभवी, आत्मिक दुर्बलता का प्राप्त कर्त्ता, भोगैश्वर्य और रहन-सहन में दक्ष, धन का अधिक व्ययी, अन्य रमणियों का प्रेमी और किसी स्त्री से प्रबल धोखा पाने वाला, भाई-बहिन युक्त, परिवार तथा सभी से प्रायः द्वेष रखने वाला, मध्यमायु से अधिक जीवन प्राप्त, वृद्धावस्था में तिरस्कृत और दुःखी होगा।

भू० स०

कु० र०

(233)- इस जन्मयोग में जन्मा हुआ बालक, गौरवर्ण, पुष्ट देही, साधारण कद, उन्नत ललाट, साहसी और चतुर एवं विवेक-सम्पन्न, शारीरिक सौन्दर्य युक्त, गुप्त योजनाओं के निर्माण में प्रवीण और विलक्षण मेधावी, ऊपर से मधुर और शान्त, किन्तु आन्तरिक धूर्त, स्वार्थ-सिद्धि में पूर्ण उद्यत, यद्यपि कभी-कभी परोपकारी, भोगैश्वर्य युक्त रहन-सहन में दक्ष, धर्म और ईश्वर-आस्था में पूर्ण और धर्मपालक, वाक्-चातुर्य से सम्पन्न, विद्या और सन्तानपक्ष में समुन्नत, परिश्रमी और साहसी तथा बुद्धि-कौशल द्वारा धन-संचय से पूर्ण और भाग्योन्नत, गृह-भूमि लाभ सम्पन्न, सुन्दरी, पतिव्रता, स्त्री का सुख सहयोग प्राप्त, एक पत्नीव्रती, भोग-विलास में दक्ष, मध्यमायुष्य सम्पन्न, माता-पिता के सुख-सहयोग का भोगी, भाई-बहिन के सुख-सम्बन्धों से युक्त, परन्तु पीढ़ा का विरोध पाने वाला, मान-प्रतिष्ठा में न्यूनता का अनुभवी, अच्छी आमदनी से युक्त, रक्त और वायु-विकार तथा नेत्रज्योति में त्रुटि युक्त, कुछ उदार भाव-नाएं रहते हुए भी कृपणता युक्त, बुद्धि-कौशल और वाक्-चातुर्य से विरोधपक्ष पर विजय पाने वाला होगा।

(234)- इस जन्म कुण्डली में जन्म ग्रहण करने वाला जातक पुष्ट देही, गौरवर्ण, स्वाभिमानी और अनुशासनप्रिय, उन्नत ललाट, परम सुन्दर, आत्मबल से हीन, विद्या-बुद्धि और विवेक सम्पन्न, सन्तान की ओर से चिन्तित, स्वार्थ-सिद्धि में सर्वथा उद्यत, कृपणता युक्त उदार, भोगैश्वर्य और रहन-सहन में दक्ष, माता-पिता का पूर्ण सुख सहयोग भोगी, मान-प्रतिष्ठा में न्यूनता का अनुभवी, सुन्दरी, गौरांगना, पतिव्रता स्त्री का पति, किन्तु उसका वंचक और अन्य स्त्रियों में रमण करने वाला, वायु-विकार और नेत्र विकार ग्रस्त, धन-संग्रहार्थ निरन्तर चेष्टित और धनी, गृह-भूमि-द्रव्य कोष युक्त समुन्नत यद्यपि भाग्योदय में यदा-कदा विघ्न पाने वाला, पीढ़ा से द्वेष पाकर भाई-बहिन के सुख-सम्बन्ध और सहयोग का भागी, प्रायः नीरोग और स्वस्थ, यात्राकाल में अनिष्ट भय ग्रस्त, ईश्वर और धर्म के प्रति आस्था-वान, किन्तु स्वार्थ-सिद्धि हेतु धर्मपालक, गुप्त-नीति-रीति से कार्य करने में सक्षम तथा इसी के कारण प्रसिद्धि प्राप्त, विद्या क्षेत्र में समुन्नत होकर सम्भवतः इंजीनियर बनने वाला और मध्यमायु तथा विरोधियों का विजेता होगा।

(२३५)- इस जन्म कुण्डली में जन्मा हुआ व्यक्ति अत्यधिक साहसी और क्रोधी एवं सहज ही उग्र, गोधूमवर्ण, उन्नतललाट, मध्यमकद, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, गृह-भूमि-लाभ में सामान्य, सुन्दरी, सुशीला, पतिव्रता स्त्री का पति और उससे सुख-सहयोग प्राप्त, भाई बहिन और जीविका तथा प्राय: सभी जनों से द्वेषयुक्त, परिश्रमहीन और आलसी तथा बलोद्धत, कठोर-प्रकृति, सदैव आन्तरिक-चिन्तित, सन्तान को पीड़ित करने वाला, माता-पिता से पूर्ण सुख-सहयोग प्राप्त तथापि उनसे भी वैमनस्ययुक्त पृथक जीवन निर्वाह करने वाला, विद्या और सन्तान में न्यूनता का अनुभवी, मध्यमायु से पूर्व का जीवन प्राप्त, यदा-कदा मृत्यु-तुल्य कष्टों को प्राप्त कर्ता, गृहस्थ संचालनार्थ धन के अभाव से आन्तरिक दुखी तथापि ऊपर से प्रभावशाली, मान-प्रतिष्ठा से वंचित, राज्य वेतनोपजीवी, सतत परिश्रम का विचारक, ईश्वर और धर्म का स्वार्थपरता हेतु प्रेमी, व्यर्थ ही गुरु को महत्व प्रदान करने वाला, कृपणवृत्ति, विदेशी रमणी में रमणकर्ता, क्रोध के कारण अपने सभी गुणों से वंचित, द्विभार्यायोग प्राप्तकर्ता होगा।

(२३६)- इस जन्म चक्र में जन्म लेने वाला पुरुष सुगठित पुष्ट देही, गौरवर्ण, साधारण कद, स्वाभिमानी और गौरव-सम्पन्न, हठी और दृढ़निश्चयी, भोगैश्वर्य युक्त रहन-सहन में पटु, साहसी और चतुर, स्वावलम्ब-साधनों में प्रवीण, भाई-बन्धु और पारिवारिक क्लेश प्राप्तकर्ता, मातृ-पितृ सुख-सहयोग का भोगी, गृह-भूमि लाभ में सामान्य, धन-संग्रहार्थ निरन्तर चेष्टित और अवरोधयुक्त सामान्यधनी, विद्या और सन्तान-सुख में त्रुटि का अनुभवी, मध्यमायुष्य प्राप्त, ईश्वर और धर्म के प्रति आस्थावान और धर्मपालक, संगीत काव्य और धर्म संस्कृति का उपासक, राज्य वेतनोपजीवी तथा वाक्चातुर्य और साहससे पदोन्नत तथा पदावनत, सामान्यत: गृहस्थ-सुख संचालक, द्विभार्यायोग प्राप्त कर दूसरी स्त्री से सुखी तथापि प्रथम और दूसरी स्त्री से सन्तानोपरान्त भी सन्तान की ओर से चिन्तित, और तिरस्कृत, मान प्रतिष्ठा में न्यूनता का अनुभवी, गुरु को सर्वाधिक महत्व प्रदान करने वाला, विरोध संयुक्त तथापि राज्य-क्षेत्र में प्रभावशाली और साधारण मान प्राप्त, मध्यमायु प्राप्त, दक्षिणपार्श्व में वायु विकार या चोट ग्रस्त होगा।

भू● सं● कु● र●

३०३.

(२३७)- इस जन्मांग में जन्म लेने वाला बालक दीर्घ-लघु-कृशकाय, गौरवर्ण, स्वाभिमानी और उग्र, शारीरिक-सौन्दर्य में कुछ त्रुटियुक्त, माता-पिता का पूर्ण सुख-सहयोग भोगी और पितृभक्त, विलक्षण-मेधा-सम्पन्न और योजनाओं का निर्माता तथा उनमें सफल, मेधावी और अनुशासन-प्रिय, अत्यन्त साहसी, गृह-भूमि लाभ में सामान्य, सत्यवादी और सत्यमार्ग का अनुसरण करनेवाला, ईश्वर और धर्म में आस्थावान, स्त्री-सुख से वर्जित, तथापि सन्तान-सुख से पूर्ण और सन्तान की ओर से चिन्तित, विद्या पक्ष में अवरोध के साथ समुन्नत, राज्य वेतनोपजीवी और राज्य तथा सामाजिक मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, धन-संग्रहार्थ निरन्तर चेष्टित, तथापि धन-संग्रह में कमी का अनुभवी, भाई-बहिन और पारिवारिक सुख-सम्बन्ध और सहयोग में त्रुटि युक्त, बार-बार भाग्योन्नति में विघ्न प्राप्तकर्ता, किन्तु परिश्रम और साहस-शक्ति से समुन्नत, यदाकदा विरोध युक्त तथा मृत्यु-तुल्य कष्टों का प्रापक, संगीत-काव्य-ज्योतिषादि प्रेमी एवं गुणीजनों का आदर करनेवाला, अल्पायु प्राप्त, ऐश्वर्य और रहन-सहन में दक्ष तथा धन का अधिक व्ययी होगा।

(२३८)- इस जन्म कुण्डली में जन्मा हुआ जातक साहसी, मध्यम कद, मध्यम वर्ण, सुगठित और पुष्ट देही, चंचल प्रकृति, विद्या और सन्तान से पूर्ण सुखी, उत्तम गुणी सन्तान का पिता, परोपकारी और दयालु, साहसी किन्तु आपत्ति और अरिष्ट काल में अधीर, कभी कभी आय के लिये चिन्तित, सुन्दरी स्त्री का पति किन्तु कलहकारिणी और रोगिणी रहने से प्रायः स्त्री-सुख से वर्जित, गृहस्थ में अनुरक्त, अनेक प्रकार के कर्म और व्यवसाय में संलग्न तथा राज्य एवं सामाजिक-क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा युक्त, माता-पिता का सुख भोगी, किन्तु मातृ-सुख में अल्प, भाई-बहिन और पारिवारिक सुख-सहयोग प्राप्तकर्ता, परिश्रम और साहस से भाग्योदयी तथा धन-संग्रही, गृह-भूमि-धन-धान्य-भृत्य-वाहनादि का उत्तम सुख प्राप्तकर्ता, ईश्वर और धर्म में पूर्ण आस्थावान तथा धर्म-पालक, उत्तम कार्यों में विवेक से धन का व्ययी, विद्वान और चतुर, अनेक विद्याओं में प्रवीण, गुणग्राही और गुणीजनों का सम्मानकर्ता, नेत्र ज्योति तथा रक्त और वायु विकार एवं गुप्त रोग से पीड़ित, मध्यमायु से अधिक जीवन, विरोधियों पर विजयी हो।

(२३९)- इस जन्म लग्न में जन्म ग्रहण करनेवाला मानव दीर्घवपु, कृशकाय, श्यामवर्ण, साहसी और उग्र तथा गम्भीर गुप्त-योजनाओं के निर्माण में दक्ष, अलंकार भावनायुक्त, पितृद्वेषी और मातृ-भक्त, स्त्री-सुख से वंचित, बलोद्धत और भोग-विलास में प्रवीण और उसमें अधिक व्यय करता हुआ अन्य स्त्रीमें रमणशील, विद्या और सन्तान सुख से पूर्ण, ईश्वर और धर्म में आस्था रखते हुए भी सामान्य धर्मपालक और सर्वथा स्वार्थसिद्धि में तत्पर, विलक्षण मेधा सम्पन्न और प्रभावशाली व्यक्तित्व से पूर्ण, भाई-बहिन और परिवार के सुख-सम्बन्धयुक्त, सुरा-सुन्दरी का प्रेमी, यदा-कदा परोपकार करनेवाला, वाक्-चातुर्य और साहससे विरोधियों का विजेता, नेत्रज्योति तथा वातश्लेष्म विकार ग्रस्त, आन्तरिक असन्तुष्ट और दुःखी, वृद्धावस्था में पुत्रों से तिरस्कृत, अनेक प्रकारसे परिश्रम कर धन-संग्रह में पटु और धनी, भाग्योदय प्राप्तकर्ता, यदा-कदा गहरी हानि पानेवाला, कईबार मृत्युवत् कष्टों का भोगी, सभी की ओर से प्रायः निश्चिन्त, गृह-भूमि और ऐश्वर्य का भोगी, मलिन एवं कुचैल चित्त वाला होगा।

(२४०)- इस कुण्डली में उत्पन्न हुआ मनुष्य गौरवर्ण, सुन्दर, शारीरिक सौन्दर्य में कुछ त्रुटियुक्त, मेधावी और साहसी, परम चतुर और विवेकी किन्तु विद्या और सन्तान-सुख से हीन, विवाहिता-स्त्री से त्यक्त और अन्य हीन वर्ण स्त्री को पास रखने वाला, मलिन और कुचैल, सर्वथा स्वार्थ तत्पर, गृह-भूमि लाभ से युक्त, सामान्य-धन-संचयी, ईश्वर और धर्म को जानते हुए भी धर्मपालन में सामान्य, भोग-विलास और ऐश्वर्ययुक्त रहन-सहन में दक्ष तथा इनमें धन का अधिक व्ययी, सुरा-सुन्दरी का अनुगामी, राज्य और सामाजिक प्रतिष्ठा में न्यून, राज्य क्षेत्र में बन्धन तथा कई बार मृत्यु तुल्य कष्टों का भोगी, नेत्रज्योति तथा रक्तवायु विकार से ग्रस्त, मूत्रेन्द्रिय में कष्ट प्राप्तकर्ता, वाक्चातुर्य और गुप्त नीति-रीति से विरोध पर विजयी, अनेक स्थानों पर भ्रमणशील और अन्य स्त्रियों का भोगी, माता का अल्प-सुख प्रापक किन्तु पितृभक्त और परोपकारक, मलिन और कुत्सित विचारों से युक्त, भाई-बहिन और परिवार का विरोधी, बुद्धि कौशल और साहस से भाग्योन्नत, दीर्घजीवन के अन्तिमकाल में बहुत दुःखी होगा।

(२४१)- इस कुण्डली चक्र में उत्पत्ति ग्रहण करने वाला पुरुष सुगठित पुष्ट देही, दीर्घवपु, श्यामवर्ण, शारीरिक सौन्दर्य युक्त, स्वभाव से क्रोधी और उग्र, साहसी तथा विवेकी, मित्र से द्वेष करने वाला, गुप्त-गम्भीर योजनाओं के निर्माण में दक्ष, आत्मबल से ओतप्रोत तथा अनुशासनप्रिय, न्यायोचित बात कहने वाला, ईश्वर और धर्म कर्म में आस्थावान् होते हुए भी धर्मपालन से हीन, गृह-भूमि-धन-धान्य लाभ से युक्त और अनेक प्रकार से अपने कार्यों में अवरोधयुक्त सफल; सुन्दरी, श्यामा, उदररोगिणी, पतिव्रता स्त्री का पति, किन्तु उसका वंचक और शताधिक स्त्रियों में रमणशील तथा इस कार्य में धन का व्ययी, यदाकदा परोपकारी और गृहस्थ-संचालनार्थ धन में त्रुटि का अनुभवी, भाग्योन्नति में अनेक विघ्नयुक्त, सन्तान और विद्या-सुख में न्यून, दत्तक-पुत्र का पिता, दीर्घायुष्य-सम्पन्न, कार्यव्यस्त, आन्तरिक दुःखी और रक्त-पित्त तथा मूत्रेन्द्रिय रोगी, वृद्धावस्था में सामान्य सुखी, विरोधी का वाक्-चातुर्य से विजेता, मान-प्रतिष्ठा में साधारण और भाई-बहिन तथा परिवार से विद्वेषक, पृथक् रहने वाला होगा।

(२४२)- इस जन्मलग्न में उत्पन्न होने वाला व्यक्ति शारीरिक-सौन्दर्य में कुछ त्रुटि युक्त, दीर्घवपु, गौरवर्ण, पुष्ट शरीर वाला, साहसी और चतुर, विवेक युक्त, गुप्त रीति से कार्य करने में प्रवीण, प्रबल मेधावी, अनेक विद्याओं का वेत्ता और उत्तम प्रवक्ता तथा धर्मोपदेष्टा, किन्तु क्रियापक्ष में त्रुटि का अनुभवी, प्रतापी और साहसी, धन संग्रहार्थ भ्रमणशील, वृद्धि हेतु सचेष्ट परन्तु धनसंग्रह में न्यून; अनेक प्रकार से आदर प्राप्त, राज्य और सामाजिक प्रतिष्ठा में न्यूनता का अनुभवी, अध्यात्मप्रेमी किन्तु बाह्य आडम्बर युक्त, कुछ धूर्त प्रकृति और अनेक रमणियों में रमणकर्ता, तथापि प्रभावशाली, प्रमेह-रोगी, हृद्-रोग या मूत्रेन्द्रिय-विकार से अथवा यक्ष्मा से मृत्यु पाने वाला, अल्पायु से कुछ अधिक जीवन युक्त, भाग्योन्नति और गृह भूमि लाभ तथा स्त्री और सन्तान-सुख से हीन, कुछ ब्रह्मचारी अथवा सन्यासी सा दीखने वाला, येन केन प्रकारेण जीवन बिताने वाला, भोगैश्वर्य युक्त, मातृ-पितृ सुख से हीन, अन्य का परिपोषक, शनैः शनैः नरक-मार्ग को ग्रहण करने वाला, अधम और नीच होगा।

म॰ सं॰ ४०३ कुं॰ १०

(४०२)- इस जन्मांग में जन्म ग्रहण करने वाला बालक दीर्घवपु और पुष्ट देही तथा गौरवर्ण, स्वाभिमानी, अत्यधिक साहसी और चतुर, चंचल तथा क्रोधी, अनुशासन और दृढ़ता से कार्य करने में सक्षम किन्तु परिश्रम के उपरान्त भी भाग्योदय में सर्वथा अवनत और विरोधयुक्त, योजना-निर्माण में प्रवीण, अधिक कामी और दुरात्मा, सुन्दरी पतिव्रता स्त्री का पति होते हुए भी उससे परित्यक्त अथवा द्विभार्यायोग प्राप्त, ऐश्वर्य और बलोन्मत्त तथा अधिक व्ययी, अन्य अनेक स्त्रियों में रमणकर्ता, स्वार्थ-सिद्धि में लवा, ईश्वर और धर्म को जानने-मानने के अनन्तर भी धर्म-पालन से नितान्त हीन, राज्यक्षेत्र में समुन्नत और राज्यवेतनोपजीवी, मातृ-सुख से हीन, पितृ-द्वेषी और कुलांगार, स्वयं ही आन्तरिक रूप से अपने आचरणों के कारण दुःखी, रक्त-पित्त-विकार ग्रस्त, अनायास द्रव्य लाभ युक्त, भाई-बहिन और परिवार का विरोधी, बाह्य विरोध को दबाने के लिए प्रयत्नशील, भ्रमणशील, गृह-भूमि-लाभ से वर्जित, अल्पायु से कुछ अधिक जीवन प्राप्त, यदा-कदा मृत्यु तुल्य कष्टों का भोगी, सुरा-सुन्दरी-प्रेमी, साहस और उत्साह से अनेक कार्यों में सफलता प्राप्त करने वाला होगा।

(४०३)- इस लग्न में जन्मा हुआ जातक मध्यम कद, गौरवर्ण, सुन्दर किन्तु कुछ त्रुटि युक्त, स्वभाव से विनम्र, मातृ-सुख-सहयोग प्राप्त, रहन-सहन में दक्ष, विद्या-क्षेत्र में अवरोध के साथ समुन्नत, विलम्ब से सन्तान प्राप्त कर्ता, पितृ-सुख में त्रुटि का अनुभवी, पितृ-देश-निवासी, सामान्य गृहस्थ और सुन्दरी स्त्री का पति और उसी में आसक्त, ईश्वर और धर्म में पूर्ण निष्ठावान् तथा धर्म पालक, परिश्रमी तथा उत्साही, विरोध-पक्ष पर युक्ति और चातुर्य से सफल, राज्य पक्ष में समुन्नत और राज्यवेतनोपजीवी तथा मान प्रतिष्ठा युक्त, सुरैश्वर्य सम्पन्न, गृह-भूमि लाभ से युक्त, गम्भीर तथा सामान्य उग्र, साहस से अनेक कार्यों में सफल, भाग्योदय में कुछ अवरोध और विघ्न युक्त, भाई बहिन और परिवारीजनों का प्रिय, परोपकारी और दयालु, अल्पायु से अधिक जीवन प्राप्त, यश और कीर्ति-सम्पन्न, सामान्य धनी, धैर्य और विवेक से कार्य करने में सक्षम, स्त्री के सुख-सहयोग से भी कुछ उच्चता प्राप्त कर्ता, सत्यवादी और मधुरभाषी, आदर्शवादिता से जीवन व्यतीत करने वाला, उच्च विचारवान्, लेखक या लेखन से भी द्रव्य प्राप्त कर्ता होगा।

(२४५)- इस जन्म चक्र में उत्पन्न होने वाला पुरुष सुन्दर, गौरवर्ण, सुगठित पुष्ट देही, मध्यम कद, उन्नत ललाट, माता और पिता का पूर्ण भक्त तथा उनका परिपालक और सुख-सहयोग प्राप्त, गृह भूमि लाभ युक्त, साहसी और चतुर, विवेक-सम्पन्न, धर्म और ईश्वर तथा लोक-परलोक का जानकार एवं निष्ठा युक्त धर्म पालक, आदर्शवादी एवं मधुरता युक्त सत्य का आश्रयी, विद्या-बुद्धि से पूर्ण विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, सन्तान की ओर से चिन्तित, मध्यमा सुख युक्त, लेखक अथवा उपदेष्टा, पितृ-क्षेत्र का स्थायी निवासी, राज्य और सामाजिक मान प्रतिष्ठा एवं सुयश प्राप्त, ऐश्वर्य युक्त भृत्य वाहनादि से पूर्ण सुखमय जीवन व्यतीत करने वाला, भाई बहिन तथा परिवार का प्रिय और तथा समाज का प्रिय, परोपकारी और दयालु, उत्तम कार्यों में धन का व्ययी, विरोध हीन किन्तु कई बार मृत्यु-तुल्य कष्टों का प्राप्त कर्ता, साहसी और धैर्य तथा संघर्षशीलता से अपने परिश्रम द्वारा अनेक कार्यों एवं व्यवसायों में सफलता युक्त, गृहकार्य संयुक्त, परम प्रवीण, बहुचर्चित और लोक विख्यात, पुरुषार्थ का धनी होगा।

(२४६)- इस जन्म लग्न में उत्पन्न होने वाला जातक दीर्घवपु, कृशकाय, गौरवर्ण, उन्नत ललाट, स्वाभिमानी और उग्र, हठी तथा दृढ़ निश्चयी, अनुशासन प्रिय, अत्यधिक साहसी, विरोधियों का प्रबल दमनकारी, ऐश्वर्य युक्त जीवन व्यतीत करने में प्रवीण तथा धन का अधिक व्ययी, स्त्री तथा सन्तान सुख से वंचित, स्वार्थ सिद्धि एवं धन संग्रहार्थ सर्वथा चेष्टित, ईश्वर और धर्म का जानकार होते हुए धर्म पालन से हीन, अनेक स्त्रियों में रमण कर्ता, स्त्री वंचक और कुछ क्रूर प्रकृति, राज्य क्षेत्र में समुन्नत तथा द्रव्य प्राप्त कर्ता साथ ही कुछ बन्धन युक्त, अन्य स्त्री को घर में रखने वाला बलादत, अधिक कामी और पर-सुन्दरी का प्रेमी, नेत्र ज्योति में त्रुटि युक्त तथा रक्त विकार ग्रस्त, मातृपक्ष सुख सहयोग से हीन, किन्तु बाद में पिता का प्रशंसक, अल्पायु प्राप्त, राज्य यक्ष्मा अथवा तद्वत रोग से मरण प्राप्त कर्ता, भाग्योदय में अनेक विघ्न युक्त अथवा इन सबके अनन्तर दास्य भाव से जीवन व्यतीत करने वाला, कुछ विक्षिप्त अथवा अन्य लोगों की दया पर आधारित जीवन यापन करने वाला, मान प्रतिष्ठा-हीन होगा।

(२४७)- इस जन्मयोग में जन्म ग्रहण करने वाला व्यक्ति (पुष्ट देह, गोधूमवर्ण, मध्यमकद, मेधावी, साहसी और स्वाभिमानी), विमार्क से क्रुद्ध उग्र तथा क्रोधी, हठी तथा दृढ़ निश्चयी एवं अनुशासन-प्रिय, मातृ-पितृ सुख सहयोग प्राप्त, भाई-बहिन और परिवार का प्रिय किन्तु बाहरी विरोधयुक्त, विरोध को वाक्-चातुर्य और गुप्त रीति से दबाने में सक्षम, गृह भूमि लाभ स्वार्जित, द्विभार्या योग प्राप्त, कलहकारिणी भिन्न प्रकृति युक्त दूसरी स्त्री की ओर से सर्वथा आन्तरिक क्लेश प्राप्त करता, सन्तान की ओर से चिन्तित, अवरोधयुक्त भाग्योदय में समुन्नत, विद्या पक्ष में न्यूनता का अनुभवी, गृहस्थ संचालनार्थ धन का अधिक व्ययी, ईश्वर और धर्म में आस्थावान होते हुए अनेक झंझटों के कारण धर्म-पालन की यथार्थता से हीन, राज्य और सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में त्रुटि का अनुभवी, सर्वथा आन्तरिक चिन्तित, यदाकदा अनायास द्रव्य लाभ से सन्तुष्ट, अल्पायु से कुछ अधिक जीवन प्राप्त, धन का सामान्य संग्रही किन्तु द्रव्य कोष से हीन, सन्तप्त हृदय, कृपणतायुक्त, स्वार्थ-सिद्धि हेतु दूसरों से दया का याचक होगा।

(२४८)- इस कुण्डली-चक्र में जन्मा हुआ मनुष्य साहसी और चतुर, परमसुन्दर गौरवर्ण, प्रभावशाली व्यक्तित्वसम्पन्न, तेजस्वी, दूरदर्शी और मेधावी, परिश्रमी, मध्यम कद, उन्नत ललाट, सत्य और न्याययुक्त बात कहने में प्रवीण, चतुर और विवेक-सम्पन्न, सुन्दरी, सुशीला, सुलक्षणा, पतिव्रता स्त्री का पति, विद्या में कुछ त्रुटि का अनुभवी और सन्तान की ओर से चिन्तित, गृह भूमि धन-धान्य भृत्य-वाहनादि सुख से पूर्ण, परोपकारी और दयालु, ऐश्वर्ययुक्त रहन-सहन में पटु, व्यवसाय क्षेत्र में सफल, स्त्री-सहयोग से भी कुछ उन्नतियुक्त, ईश्वर और धर्म का पूर्ण निष्ठावान् तथा यथार्थ धर्म पालक, भाई-बहिन और परिवारीजनों का प्रिय, अल्पायु से अधिक जीवन प्राप्त, सामाजिक मान प्रतिष्ठा प्राप्त करता, माता-पिता का पूर्ण भक्त तथा उनके सुख-सम्बन्ध और सहयोग से सुखी, वातरोग से कम रोगी, यदा-कदा बाहरी विरोध पाने वाला, वाणी में दक्षतायुक्त यश-सम्पन्न, अनुशासन-प्रिय, विलक्षण प्रतिभायुक्त, सर्वथा परिश्रमी और कुछ आन्तरिक चिन्तित, विद्यावान्, मानव जीवन की सफलता प्राप्त उत्तम काल में देहत्याग होगा।

(५४९)- इस जन्मचक्र में जन्म ग्रहण करने वाला मानव कृश-शरीर, दीर्घवपु, दाम्य सुन्दर, गौरवर्ण, उन्नत ललाट, माता-पिता और गुरु का पूर्ण सुख सहयोग प्राप्त और उनकी कृपा से समुन्नत, विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, नेत्र ज्योति सम्बन्ध विकार का अनुभवी, मधुर और सत्यतायुक्त न्यायवादी, विद्या क्षेत्र में त्रुटि का अनुभव होते हुए भी धर्मनिष्ठ, दूरदर्शी, सभी का प्रिय, ईश्वर और धर्म तथा माता-पिता, गुरु में पूर्ण निष्ठावान् और इन सभी का भक्त, लोक-परलोक का विचारक, प्रबल राजयोग प्राप्त, लौकिकी चिन्ता से मुक्त, सुन्दरी, पतिव्रता, सुलक्षणा, नीरोगी स्त्री का पति और सन्तान की ओर से कुछ चिन्तित, स्त्री का मरण प्राप्त अथवा गृहस्थ त्याग कर विरक्त होने वाला, अनेक शिष्यों से युक्त, धर्मोपदेष्टा, सर्वत्र सम्मान प्रतिष्ठा सम्पन्न, उत्तम स्थान व उत्तम काल में देहत्यागी, पुनः मानव जीवन प्राप्त, मध्यमायुष्य सम्पन्न, द्रव्य-कोष-भृत्य-वाहनादि, ऐश्वर्य से पूर्ण उत्तम कुल में जन्म ग्रहण करने वाला, भगवदीय और शिवधर्मानुरागी तथा शिवलोक-गमन करने वाला महापुरुष होगा।

(५५०)- इस जन्म चक्र में उत्पत्ति ग्रहण करने वाला मनुष्य सुन्दर गौरवर्ण, कृशकाय, दीर्घदेही, उन्नत ललाट, अत्यधिक साहसी और परिश्रमी, विलक्षण प्रतिभा-सम्पन्न, स्वाभिमानी और ऊपर से आदर्श दीखने वाला, स्वार्थी तथा अतीव कामी, सुन्दर स्त्री का प्रेमी और अन्य में मैत्रीशील, भोग-विलास में कुछ घृणित रीति ग्रहण करने वाला, सुखैश्वर्य में अधिक द्रव्य का व्ययी, गृह-भूमि तथा द्रव्य संचय में सामान्य, ईश्वर और धर्म तथा पिता का भक्त और धर्मपालक तथा धर्मोपदेष्टा, अनेक विद्याओं में पटु किन्तु विद्या क्षेत्र में आन्तरिक त्रुटि का अनुभवी, नेत्र ज्योति तथा उदर विकार ग्रस्त, सन्तान की ओर से कुछ चिन्तित, भाई-बहिन के सुख-सम्बन्धों में अभावग्रस्त, मातृसुख का अल्प भोगी अथवा व्यभिचारिणी माता का पुत्र, सामाजिक मान-प्रतिष्ठा युक्त, मध्यमायु प्राप्त कर्त्ता, वृद्धावस्था में जीवन का सुख लेने वाला, संगीत-काव्य-ज्योतिष का प्रेमी और एतद्विषयक ग्रन्थों का प्रणेता, मेधावी, यदा-कदा भाग्योदय में विघ्न प्राप्त कर्त्ता तथा जीवन में कई बार मृत्यु तुल्य कष्टों को भोगने वाला होगा।

(२५१)- इस जन्माङ्ग में जन्म ग्रहण करने वाला बालक उत्तम गौरवर्ण, कृश-शरीर, सामान्यकद, गम्भीर और शान्त प्रकृति, साहसी और स्वाभिमानी तथा चतुर और विवेकी, मृदुल, विनोदी स्वभाव, परोपकारी एवं दयालु, अनुशासनप्रिय और सत्यप्रिय, विलक्षण प्रतिभासम्पन्न, मेधावी, माता-पिता का पूर्ण सुख सहयोग प्राप्त और उनका भक्त, भाई बहिन एवं परिवारी जनों का प्रिय, धन-धान्य-गृह-भूमि-भृत्य-वाहनादि सुख से पूर्ण, ईश्वर और धर्म में निष्ठावान् तथा धर्मपालक, कर्मयोगी, पुरुषार्थ और परिश्रम तथा साहस शक्ति से अनेक कार्य और विविध व्यवसायों में पूर्ण सफलता प्राप्त, दृढ़ और निश्चित आमदनी युक्त। भोगैश्वर्य और रहन-सहन में दक्ष, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में समुन्नत एवं मान प्रतिष्ठा सम्पन्न, मातृ सुख में कुछ न्यूनता का अनुभवी, विद्या और सन्तान सुख से पूर्ण, विरोधी पर गुप्त रीति से विजयी, सुन्दरी, शिक्षिता, गौरांगी पतिपरायणा स्त्री का स्वामी तथा भाग्योदय का अच्छा लाभ प्राप्तकर्ता, मध्यमायुष्य सम्पन्न, यदा-कदा मृत्यु तुल्य कष्टों का प्राप्तकर्ता, दानशील, उत्तम कार्यों के कारण उत्तम स्थान और उत्तम काल में देहत्यागी होगा।

(२५२)- इस जन्म चक्र में जन्म लेने वाला जातक उत्तम गुणों से युक्त, स्वाभिमानी, दीर्घवपु, कृशकाय, गौरवर्ण, साहसी, विद्या बुद्धि से पूर्ण और मेधावी, कुछ उग्र प्रकृति, भाव युक्त बात कहने में पटु, प्रभावशाली व्यक्तित्व एवं विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न। भोगैश्वर्य युक्त और रहन सहन में दक्ष, मध्यमायुष्य सम्पन्न, विद्या और सन्तान का उत्तम सुखभोगी, मातृसुख में कुछ त्रुटि का अनुभवी और पितृ-सुख-सहयोग प्राप्त। पितृभक्त तथा पितृ-सम्पत्तिवासी, भाई बहिन एवं परिवारी जनों के सुख सम्बन्धों से युक्त। ईश्वर और गौ ब्राह्मण तथा धर्म में आस्थावान् और धर्म पालक, यथार्थ रूप से दानशील, गृह भूमि भृत्य वाहन, द्रव्य कोष-सुख से पूर्ण; सुन्दरी सुशीला, पतिव्रता स्त्री का पति, किन्तु उससे मतभेद युक्त अथवा द्विभार्यायोग प्राप्त, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में समुन्नत एवं मान प्रतिष्ठा प्राप्त, विरोध का सर्वथा विजयी, गम्भीर और धैर्य सम्पन्न किन्तु कुछ मानसिक अशान्ति का अनुभवी, सत्यवादी और आदर्श, कर्मयोग एवं साहस से व्यवसाय में कभी कभी गम्भीर हानि के साथ सफलता प्राप्त। भोगादि में पूर्ण, भाग्योन्नति का अच्छा लाभ प्राप्त, उत्तम कार्यों का सम्पादक, परिश्रम से उन्नति करने वाला होगा,

भृ० सं० 303, कु० १०

(५५३)- इस जन्मचक्र में जन्मा हुआ मनुष्य भाग्योदय और धर्मपालन में अवरोध-युक्त सफलता प्राप्त, दीर्घ-तनु, कृश शरीर, उन्नत ललाट, गौरवर्ण, मातृ-सुख में कुछ-न्यूनता का अनुभवी, भ्रमणशील, विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, प्रभावशाली व्यक्तित्व से पूर्ण, चतुर और विवेकी, अत्यन्त मेधावी, सत्यवादी और अनुशासन प्रिय, स्वाभिमानी, अनेक विद्याओं में प्रवीण, धर्मशास्त्रों का अध्येता और ईश्वर तथा धर्म में निष्ठायुक्त धर्मपालक, यथार्थ-परोपकारी और दानशील, उत्तम कार्यों में धन का व्ययी, गृह-भूमि लाभ से युक्त, हठी और दृढ़ निश्चयी आय युक्त, द्रव्य कोषार्थ निरन्तर प्रयत्नशील, अत्यधिक साहसी और परिश्रमी। धर्म के साथ कर्मयोग को महत्व प्रदान करनेवाला, यदाकदा अवरोध के साथ भाग्योन्नति, भाई बहिन और सन्तान तथा उत्तम स्त्री का सुख भोगी, किन्तु स्त्री और परिवार से कुछ विरोध प्राप्त, विरोधि-पक्ष का विजयी, मध्यमायु से अधिक जीवन प्राप्त, रक्त पित्त विकार ग्रस्त, सभी क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, समुन्नत, लेखक अथवा उत्तम वक्ता किंवा विविध व्यवसायों का कर्ता, पितृ-सुख सहयोग प्राप्त, पितृक्षेत्र में उत्तम काल में देहत्यागी होगा।

(५५४)- इस जन्म लग्न में जन्म लेने वाला व्यक्ति मध्यम कद, उत्तम गौरवर्ण, परम सुन्दर, पुष्ट और गठित देही, स्वाभिमानी, विलक्षण मेधायुक्त प्रतिभा सम्पन्न, प्रभावशाली व्यक्तित्व से पूर्ण, माता-पिता का पूर्ण भक्त और उनका सहयोग सुख प्राप्त किन्तु पितृ-सुख में कुछ-न्यूनता का अनुभवी, परिश्रम और साहस शक्ति उत्तम भाग्योदय से लाभी, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में समुन्नत एवं मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, भाई बहिन और परिवार के विद्वेष पूर्ण सम्बन्धों से युक्त, यदाकदा मृत्यु तुल्य कष्टों का भोगी, ईश्वर और धर्म में आस्थावान तथा धर्मपालक, भोगैश्वर्य और रहस्य-सहन में प्रवीण धन का अधिक व्ययी, सुन्दरी पतिव्रता स्त्री का पति तथा उससे सुख सहयोग प्राप्त किन्तु अन्य स्त्रियों में भी रमणशील, गम्भीर और शान्त तथा मृदुल प्रकृति, परोपकारी और दयालु, वाक्-चातुर्य तथा विवेक से विरोधियों का विजेता, विद्या और सन्तान सुख से पूर्ण तथापि परिश्रम के उपरान्त भी द्रव्य कोष संग्रह में त्रुटि का अनुभवी, तीर्थाटनी, मध्यमायुष्य सम्पन्न, यदाकदा गृहस्थ संचालनार्थ द्रव्य की कमी अनुभव होने से अशान्त चित्त, भाग्यवादिता से शान्ति का अनुभवी होगा।

(२५५)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न होने वाला पुरुष मध्यम कद, पुष्ट-शरीर, गम्भीर और शान्तिक (...) योजनाओं का निर्माता, उन्नत-ललाट, गौरवर्ण, मातृ-पितृ-सुख सहयोग का भोगी, किन्तु पितृ-सुख में त्रुटि का अनुभवी, परिश्रमी और साहसी, भाई-बहिन से युक्त होते हुए उनके सुख सम्बन्धों से त्रुटि युक्त और परिवारीजनों से विद्वेष प्राप्त कर्ता, विद्याक्षेत्र और सन्तान में त्रुटि का अनुभवी, पैतृक-धन और गृह-भूमि लाभ युक्त तथा पैतृक धन और परिश्रम से शनैः शनैः उन्नति में संलग्न भाग्योदय का लाभ पानेवाला, विरोधी की चिन्ता न करने वाला, गृहस्थ में आसक्त, सुन्दरी दीर्घदेही पुष्टांगी गौरांगना पतिव्रता, किन्तु कलहकारिणी स्त्री से युक्त चिन्तित और दुःखी, ईश्वर और धर्म में आस्थावान तथा सामान्य धर्म-पालक, शक्ति उपासना को अधिकता से महत्व प्रदान करनेवाला, अशान्त चित्त एवं चंचल-प्रकृति, दीनता और मलिनता से रहन-सहन में ही सुख का अनुभवी, द्रव्य-संग्रहार्थ निरन्तर प्रयत्नशील तथापि द्रव्य-संग्रह में त्रुटि युक्त, मध्यमायु से पूर्ण का जीवन प्राप्त, प्रायः स्वस्थ रहनेवाला, नेत्रज्योति में विकार ग्रस्त होगा।

(२५६)- इस लग्न कुण्डली में उत्पन्न हुआ मानव दीर्घवपु, पुष्ट देही, गौर वर्ण, उन्नत ललाट, उत्तम स्वास्थ्य सम्पन्न, माता-पिता का पूर्ण सुख-सहयोग प्राप्त, विद्या क्षेत्र में त्रुटि का अनुभवी तथापि विलक्षण मेधा और चातुर्य एवं विवेक युक्त, अत्यधिक साहसी, मातृ-पितृ भक्त, परिश्रम पूर्वक पैतृक धन से अच्छा भाग्योन्नत, वृद्धावस्था में सुखी, सन्तान की ओर से चिन्तित दुःखी, भाई-बहिन और परिवारीजनों के सुख सम्बन्धों में नितान्त न्यून, अपितु परित्यक्त जीवन; गृहस्थ में अनुरक्त, सुन्दरी पुष्टांगी गौरांगना पतिव्रता, किन्तु सामान्य उपायों का पति और उसके सुख-सहयोग से सम्पन्न, वृद्धावस्था में सन्तान-सुख और सामाजिक-मान प्रतिष्ठा सम्पन्न, ईश्वर और धर्म में आस्थावान एवं निरन्तर धर्म पालक, न्यायोचित सत्यता पूर्ण मधुर-वाक्य कहने में प्रवीण, उत्तम कार्य एवं रहन-सहन में धन का अधिक व्ययी, गृह-भूमि लाभ से युक्त तथापि द्रव्य-संग्रह में त्रुटि का अनुभवी, शिव शक्ति सेवा परायण, वाक्-चातुर्य और गुप्त नीति रीति से विरोधियों का विजेता, मध्यमायुष्य प्राप्त, यदा-कदा मृत्यु तुल्य कष्टों का भोगी, विद्युताग्नि से पीड़ित होगा।

(२५७)- इस कुण्डली चक्र में जन्म ग्रहण करने वाला बालक पुष्ट देही, सामान्य कद, गौरवर्ण, शारीरिक सौन्दर्य में कुछ त्रुटियुक्त, अत्यधिक साहसी और स्वाभिमानी, प्रभावशाली व्यक्तित्व से पूर्ण, न्यायपूर्ण सत्यता युक्त मधुर और कटुवाक्यवादिता में प्रवीण, उत्तम वक्ता, धर्मविद, विद्या और सन्तान-सुख से पूर्ण तथा अनेक विद्या एवं कलाओं में प्रवीण, विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, भोगैश्वर्य युक्त तथा रक्तसंग्रह में दक्ष, पितृ-मातृ-सुख भोगी तथापि मातृ-सुख में त्रुटि का अनुभवी, परिश्रम और साहस से उत्तम भाग्योन्नत, राज्य और समाज में मान प्रतिष्ठा सम्पन्न, भाई-बहिन और पारिवारिक सुख सम्बन्धों में विद्वेष उत्पन्नकर्ता तथा परिवार को प्यार करने पर भी असंतुष्ट माना जाने वाला, वृद्धावस्था में अपने को अच्छा सुखी अनुभव करने वाला, ईश्वर और धर्म में आस्थावान तथा धर्मपालक, संगीत काव्य ज्योतिष शास्त्र वेत्ता, उत्तम कार्यों में धन का व्ययी, रक्त और वायु विकार से पीड़ित, सुन्दरी पतिव्रता स्त्री का पति और उसके सुख-सहयोग का भोगी, लोक-परलोक का चिन्तनवान्, विष्णु-गणेश-भक्त, मृत्यु का कठिन कष्ट सहता हुआ उत्तम स्थान में देहत्यागी होगा/

(२५८)- इस जन्म चक्र में जन्मा हुआ जातक श्यामवर्ण, कृशशरीर, दीर्घदेही, मलिन और कुचैल चित्त तथा विद्वेष भावनाओं से पूर्ण, स्वार्थ-सिद्ध्यर्थ मधुरवाणी का प्रयोगी, किन्तु आन्तरिक-कटुता युक्त, ईश्वर और धर्म को मानते हुए भी कुत्सित कर्म करने वाला, मलिन शायी, अपने को अहंकार में गौरवशाली मानने वाला, भोगी और अत्यधिक कामी, चोरी अथवा ठगी से परद्रव्य का अपहर्त्ता, निरन्तर न्यायालयों में भ्रमणशील, विरोधपक्ष का विजयी, सुन्दर, पतिव्रता स्त्री को त्याग कर हीना-स्त्री को घर में रखने वाला एवं सदा-सर्वदा भोग-विलास और स्त्री विषय में धन का अधिक व्ययी, स्त्री द्वारा धोखा प्राप्त एवं अनेक रमणियों का रमणकर्ता, नेत्रज्योति-मूत्रेन्द्रिय और उदर-विकार का प्राप्तकर्ता, मातृ-पितृ-द्वेषी, कुल और परिवार को कलंक लगानेवाला, स्त्री विषय में राज्य-बन्धन ग्रस्त तथा अत्याकृष्ट, सदा-सर्वदा क्लेश सहते हुए भी अपने को सुखी मानने वाला, मान-प्रतिष्ठा और गृह-भूमि-द्रव्य कोष तथा सन्तान-सुख से हीन। सम्भवतः स्त्री-विषय में ही दस्युओं के हाथ से अस्त्र-शस्त्र से मृत्यु पाने वाला होगा/

(२५९)- इस जन्मलग्न में जन्म ग्रहण करनेवाला व्यक्ति मध्यम कद, मध्यम वर्ण, कृशशरीर, नेत्र ज्योति और रक्त-वायु-विकार से ग्रस्त, अत्यधिक साहसी-परिश्रमी- और स्वाभिमानी, मातृ-पितृ-सुख-हीन और पितृ-द्वेषी, परिश्रम से कुछ द्रव्य-लाभ और भाग्योदय प्राप्तकर्ता, चोर और मलिन चित्त, धूर्त तथा वंचक, अधिक कामी, ईश्वर और धर्म-आस्था से हीन, उदररोग तथा मूत्रेन्द्रिय रोगी, सुरा-सुन्दरी का प्रेमी, बलोद्धत, स्त्री तथा सन्तान और विद्या-सुख में हीनता प्राप्त, वयाधिका-षण्ढा अनेक स्त्रियों में रमणकर्ता, शूद्रवत् आचरणों में प्रवीण, भोग-विलास के समय घृणित रीति से रमणकर्ता, रिश्तेदारी की अन्य स्त्री को, वयोधिका स्त्री को घर में रख कर उससे सुख-सहयोग तथा धन लाभ प्राप्त, शीघ्र ही मृत्यु-मुख में जाने का मार्गानुगामी, भाई-बहिन और परिवार का विद्वेषी, राजयबन्धन ग्रस्त और सर्वत्र मान प्रतिष्ठा हीन, पौरुष से यदा-कदा द्रव्य-लाभी, विरोधियों पर साहस तथा वाक्य-चातुर्य से प्रभावशील, पितृ क्षेत्र से अन्यत्र निवास करने वाला होगा।

(२६०)- इस जन्मयोग में जन्म लेने वाला पुरुष मध्यम कद, शारीरिक सौन्दर्य में कुछ त्रुटि युक्त गौरवर्ण, सामान्य शरीर, मातृ-पितृ-सुख सहयोग में न्यूनता प्राप्त, पितृ-भक्त, अन्य क्षेत्र का निवासी, मध्यमायु प्राप्त, सन्तान और विद्या सुख में सामान्य, चतुर और विवेकी, सुन्दरी श्यामा पतिव्रता उदर-रोगिणी स्त्री का पति और शीघ्र ही उसके मरण से प्रायः एकाकी-जीवन व्यतीत करनेवाला, गृह-भूमि लाभ से युक्त और सामान्य धन-संग्रही, शिष्य अथवा दत्तक पुत्र से सुखी तथा उसी को धन प्रदाता, ईश्वर और धर्म में आस्थावान तथा धर्मपालक, सामान्य भाग्योदय लाभी, चिन्तनशील और विचारक, भाई-बहिन सुख तथा उनके और परिवार जनों के सुख-सम्बन्धों में त्रुटि का अनुभवी, तथापि भाई-बहिन का हितचिन्तक और उनकी द्रव्यादि से सहायता करनेवाला, दृढ़ और निश्चित द्रव्योपार्जन से हीन, भाग्यवादी और उत्तम सफलता-पूर्ण वाक्यों का प्रतिपालक, बुद्धि अथवा वायु विकार ग्रस्त, सामान्य मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, उत्तम धर्म-कार्यों का सम्पादक और उसमें धन का व्यय करने वाला होगा।

(२६१)- इस जन्म कुण्डली में जन्म लेने वाला बालक श्यामवर्ण, पुष्ट देही, मध्यम कद, शारीरिक सौन्दर्य में कुछ त्रुटि का अनुभवी, विद्या क्षेत्र में पूर्ण किन्तु सन्तान की ओर से चिन्तित, गौरव-सम्पन्न, पिता से कुछ मतभेदी और बाद में पिता का प्रशंसक, मातृ सुख सहयोग प्राप्तकर्ता, स्वाभिमानी, हठी एवं दृढ़ निश्चय सम्पन्न, स्वविचार-स्थापनों में प्रवीण, ईश्वर और धर्म में आस्थावान तथा धर्म-पालक, यथार्थ परोपकारी और दयालु, सामान्य धन संग्रही परन्तु धन-संग्रहार्थ निरन्तर चेष्टित, यदाकदा आमदनी और नागयोन्नति में विघ्न का अनुभवी, सुन्दरी, पतिव्रता, सुशीला, उदररोगिणी, श्यामा स्त्री को प्राप्त कर्ता तथा उसके सुख-सहयोग से समुन्नत, व्यवसाय क्षेत्र में पैतृक-धन-साहस और परिश्रम से सफल, गृहभूमि लाभयुक्त, राज्य और सामाजिक प्रतिष्ठा सम्पन्न, भाई-बहिन के सुख-सम्बन्ध और परिवार के सुख-सहयोग प्राप्त, सन्तान में अधिक पुत्रों का पिता, विरोधियों का सर्वथा विजयी एवं वाम पार्श्व में पीड़ायुक्त, नेत्र ज्योति तथा वात श्लेष्म रोगी, गम्भीर और गुप्त योजनाओं द्वारा अपनी सफलता-सिद्धि को सर्वथा प्रयत्नशील, भोगैश्वर्य और रहन-सहन में अधिक व्ययी, प्रभावशाली व्यक्तित्व युक्त होगा।

(२६२)- इस जन्म-चक्र में जन्म-ग्रहण करने वाला जातक परम तेजस्वी, गौरवर्ण, स्वाभिमानी, विलक्षण प्रतिभाशाली, दीर्घ वपु, कृश-शरीर, उन्नत ललाट, स्वभाव से कुछ उग्र, प्रभावशाली व्यक्तित्व-सम्पन्न, उच्च कोटि का मेधावी, विद्याक्षेत्र में पूर्ण, पिता का उत्तम सुख प्राप्त और पितृ-भक्त, माता-भाई-बहिन तथा परिवार के सुख-सम्बन्धों में कुछ त्रुटियुक्त, राज्य और सामाजिक मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, राज्य सेवोपजीवी, धन संग्रहार्थ निरन्तर चेष्टित तथापि सामान्य धनी, गृह-भूमि लाभ से युक्त, पितृ-सुख सहयोग से समुन्नत, भाग्योदय में कुछ अवरोध युक्त, रक्तविकार एवं नेत्ररोगी, स्त्री-सुख सम्बन्धों में न्यूनता का अनुभवी, वाक्पटु और चातुर्य युक्त, शत्रुओं विरोधपक्ष का गुप्त रीति-नीति से सफल, यदाकदा शस्त्र और वाहनादि से मृत्यु-तुल्य कष्टों को प्राप्त कर्ता, दीर्घायुष्य-सम्पन्न, ईश्वर और धर्म में दृढ़-आस्थावान तथापि कर्म और पुरुषार्थ को अधिक महत्व प्रदान करने वाला, विनोदी स्वभाव, सन्तान की ओर से चिन्तित किन्तु उत्तम गुण-सम्पन्न पुत्र का पिता, कभी-कभी आमदनी में गम्भीर संकट का अनुभवी, व्यवसाय क्षेत्र में हानि प्राप्त कर्ता होगा।

म० स० १०३ | कु० १०

(२६३)- इस जन्म चक्र में उत्पन्न हुआ व्यक्ति दीर्घदेही, कृश शरीर, सौन्दर्य युक्त उत्तम गौरवर्ण, स्वाभिमानी और प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, स्वभाव से कुछ उग्र और क्रोधी, विलक्षण प्रतिभाशाली, पितृ-सुख-सहयोग से विद्या क्षेत्र में पूर्ण समुन्नत और पैतृक धन का सामान्य लाभी, पितृ-भक्त, तेजस्वी एवं अतीव मेधा सम्पन्न, माता, भाई बहिन एवं परिवार के सुख-सम्बन्धों में न्यूनता ग्रस्त, वातश्लेष्म विकार युक्त एवं नेत्रज्योति में त्रुटि का अनुभवी, ऐश्वर्य- भोग-विलास तथा स्त्री पक्ष में धन का अधिक व्ययी, विरोधियों का प्रबल दमनकारी, प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी, गुप्त-रीति से कार्य करने में दक्ष, सन्तान की ओर से चिन्तित, दीर्घायुष्य सम्पन्न, भाग्योदय में अनेक विघ्नों का प्राप्त कर्ता, ईश्वर और धर्म में आस्थावान होते हुए भी यथार्थ-धर्म-पालन से हीन, अत्यधिक कामी और अन्य स्त्रियों में रमणशील, एक पुत्र का पिता, धन संग्रहार्थ अत्यधिक परिश्रम के उपरान्त भी द्रव्यकोष से हीन, राज्यवेतनोपजीवी, यदा-कदा मृत्यु तुल्य कष्ट प्राप्त कर्ता, गृह-भूम्यादि लाभ से हीन होकर राज्यपक्ष में मान युक्त होगा।

(२६४)- इस जन्मलग्न में उत्पन्न होने वाला पुरुष मध्यमकद, गौरवर्ण, पुष्ट देही, स्वाभिमानी और ऐश्वर्य सम्पन्न, विलक्षण प्रतिभा और वाक्-चातुर्य युक्त, परोपकारी और दयालु, माता-पिता का पूर्ण भक्त, ईश्वर और धर्म में आस्थावान तथा धर्मशास्त्रों का विचारक, धर्मपालक, दानशील, परिश्रमी और उत्साही तथा साहस और विवेक द्वारा अनेक रीति से व्यवसाय क्षेत्र में समुन्नत, गृह-भूमि-धन-धान्य-भृत्य-वाहन-द्रव्यकोष संग्रह के सुख से ओत-प्रोत, प्रभावशाली व्यक्तित्व और रहन सहन युक्त, वातश्लेष्म और नेत्र-पीड़ा का अनुभवी, दीर्घायुष्य प्राप्त, [illegible] और सन्तान सुख से पूर्ण, मातृ-सुख में न्यूनता ग्रस्त, पवित्र और सदाचारी, कुछ हठी, स्ववाक्य-स्थापना में प्रवीण, राज्यक्षेत्र में कुछ बन्धन ग्रस्त, सुयश और सामाजिक मान प्रतिष्ठा सम्पन्न, शत्रु और विरोधि-पक्ष पर वाक्-वाणी से सफलता प्राप्त, भाई-बहिन और पारिवारिक सुख-सहयोग युक्त, शरीर के दाहिने पार्श्व में पीड़ा ग्रस्त, सुन्दर पतिव्रता और सुशीला तथा धार्मिक स्त्री का सुख-सहयोग भागी, देशाटन और तीर्थाटन करने वाला, मध्यमायुष्य सम्पन्न होगा।

(२६५)- इस कुण्डली में उत्पत्ति ग्रहण करने वाला मानव दीर्घकाय, स्वभाव से कुछ उग्र तथा शान्त, तेजस्वी, प्रतिभा-सम्पन्न, उन्नत ललाट, स्वाभिमानी, कृशशरीर, गौरवर्ण, प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी, पितृ-सुख सहयोग प्राप्त कर्त्ता और समुन्नत तथा पितृ-भक्त, माता के सुख-सम्बन्धों में अभाव प्राप्त, भाई-बहिन और पारिवारिक सुख-सहयोग से युक्त, सदाचारी और पवित्र, विलक्षण मेधावी, विद्या और सन्तान का उत्तम सुख प्राप्त तथापि सन्तान की ओर से चिन्तित, धर्म और ईश्वर में दृढ़ आस्थावान एवं धर्म-पालक, राज्य और सामाजिक मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, उदार मना और दानशील तथा ऐश्वर्य और रहन-सहन में अधिक व्ययी, तथापि गृह-भूमि-धन-धान्य-भृत्य-वाहन-[illegible] द्रव्य कोष से पूर्ण सुखी, धर्मशास्त्रों का विचारक; सुन्दरी-पुष्ट और दीर्घदेही गौरांगी-शिक्षिता-सुशीला-पति और धर्मपरायणा स्त्री के सुख सहयोग का पूर्ण भोगी, दीर्घायुष्य प्राप्त, भ्रमण और देशाटन तथा धार्मिक-कृत्य करने वाला, सभी क्षेत्रों में सफलता और मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, सदाचारी और पवित्र, दूरदर्शी, उत्तम गौरवमयी प्रभावशाली वाणी युक्त होगा।

(२६६)- इस जन्मांग में जन्म लेने वाला मनुष्य गौरवर्ण, मध्यम कद, पुष्टदेही, सुन्दर स्वास्थ्य-सम्पन्न, विलक्षण प्रतिभा और प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, अत्यन्त मेधावी, उत्तम गुण युक्त पुत्रों का पिता तथापि सन्तान की ओर से चिन्तित, मातृ-सुख में न्यूनता का अनुभवी, विद्या-क्षेत्र में समुन्नत, गृह-भूमि-धन-धान्य से पूर्ण, परिश्रम एवं [illegible] से कार्य करने में प्रवीण, मधुर और प्रभाव शाली वाणीयुक्त, पवित्र और सदाचारी, परोपकारी तथा दयालु, राज्य क्षेत्र में कुछ बन्धन का अनुभवी, भाई-बहिन और पारिवारिक क्लेश से दुःखी रहने वाला, सुन्दरी सुशीला-पतिव्रता-मध्यमवर्णा-शिक्षिता धार्मिक स्त्री का सुख भोगी और उसके सहयोग से समुन्नत, विरोध-पक्ष को गुप्त-रीति और वाणी प्रभाव से विजय करने में सफल, व्यवसाय-पक्ष में कभी गहरी हानि और कभी गम्भीर लाभ प्राप्त होने से भाग्योन्नति में अवरोध युक्त सफलता प्राप्त, गुप्त और गम्भीर योजनाओं के निर्माण में पटु और अशान्त, ईश्वर और धर्म का यथार्थ सेवक, नेत्र-ज्योति तथा शरीर के वाम-पार्श्व में विकार पाने वाला, दीर्घायुष्य युक्त तथा वृद्धावस्था पर्यन्त सुख भोगी होगा।

भ० स० ३८३ कु० २०

(३६७)- इस जन्मांग में जन्म ग्रहण करनेवाला बालक लम्बा कद, उन्नत-ललाट, स्वाभिमानी और अत्यधिक क्रोधी, हठी और दृढ़ निश्चयवान्, गौरवर्ण, शारीरिक-सौन्दर्य में कुछ त्रुटियुक्त, प्रभावशाली-व्यक्तित्व सम्पन्न, माता और पिता का अल्प-सुख प्राप्तकर्ता, अन्य अथवा भाई-बहिन द्वारा लालित-पालित, विद्या बुद्धि में विचक्षण, मेधावी और साहसी, आपत्तिकाल में अत्यधिक अधीर और अशान्त, भाई-बहिन कुल तथा परिवार के सुख सहयोग से समुन्नत किन्तु बाद में सभी से मत-भेदी, सफल व्यवसायी और निश्चितः आमदनी से संयुक्त, वाक्-चातुर्य से विरोध-पक्ष पर प्रभावी, उत्तम गुणी सन्तान और सुशीला पतिव्रता स्त्री का पति, भाग्योदय में कई बार विघ्न प्राप्तकर्ता, गृह-भूमि और द्रव्य-कोष में साधारण, तथापि रहन-सहन में प्रभावशाली, परिश्रमी और साहस से द्रव्योपार्जक, उत्तम कार्यों एवं रहन-सहन में द्रव्य का व्ययी, ईश्वर और धर्म में निष्ठावान् तथा यथार्थ-धर्म का पालक, पितृभक्त और बार-बार पिता का स्मरण कर सद्मार्ग पर चलनेवाला, कटु-सत्य का भाषी, दीर्घायुष्य सम्पन्न तथा उत्तम-स्थान देवालय अथवा तीर्थ में देहत्याग कर बैकुण्ठ-प्राप्ति का अधिकारी होगा।

(३६८)- इस कुण्डली में जन्म लेनेवाला जातक उन्नत ललाट, उत्तम गौरवर्ण, मध्यम कद, पुष्ट-देही, कुछ श्यामलता लिये हुए मुख पर व्रण अथवा चोट के चिन्ह से युक्त, साहसी और स्वाभिमानी किन्तु स्वार्थ-सिद्धि और प्रभाव हेतु वाक्पटुता में प्रवीण, चतुर और विवेकी, हठी तथा दृढ़-निश्चय युक्त, मातृ और पितृ-सुख भोगी, विलक्षण प्रतिभा-सम्पन्न, मेधावी किन्तु आपत्ति संकट काल में अधीर, विद्या और उत्तम गुणी सन्तान-सुख से सम्पन्न तथापि सन्तान की ओर से चिन्तनशील, उत्तम विचारक, पवित्र और सदाचारी एवं रहन-सहन में आदर्श, भाई-बहिन और परिवार का सुख सहयोग भागी, वाक्चातुर्य से विरोध-पक्ष पर प्रभावशाली; सुन्दरी, गौरांगी, पतिव्रता, सुलक्षणा स्त्री का पति और उसके सुख-सहयोग का भोक्ता, कई बार मृत्यु-तुल्य कष्टों का भोगी, ईश्वर और धर्म में पूर्ण निष्ठा, उदारमना और परोपकारी, धर्मानुसार आचरण करता हुआ धर्मशास्त्र और उत्तम पुरुषों का सत्संगी, गृह-भूमि तथा द्रव्य कोष में परिश्रम और साहस से भाग्यवान् किन्तु अनेक बार भाग्योदय में विघ्न प्राप्तकर्ता, देवस्थान अथवा तीर्थ-क्षेत्र में उत्तम आयु का लाभ कर देहत्याग कर मोक्षार्थी होगा।

सं. ३ कु० २०

(२६९)- इस जन्म चक्र में उत्पन्न होने वाला व्यक्ति सामान्य कद, पुष्ट देही, कुछ श्यामता लिये गौरवर्ण, मुख अ-थवा भाल पर व्रण या चोट-चिन्ह से युक्त, स्वाभिमानी और गौरवशाली, पिता का अल्प सुख भोगी किन्तु पितृ-भक्त, मातृ अथवा मातृपक्ष से सुख-सहयोग प्राप्त, विद्या-बुद्धि का उत्तम सुख प्राप्त कर्त्ता, चतुर-विवेकी-मेधावी-साहसी और प्र-भावशाली व्यक्तित्व से तथा वाक्-चातुर्य से सर्वत्र और विरोधियों का विजेता, कटु सत्य का वादी, उत्तम आदर्श कर्मकर्त्ता, पवित्र और सदाचारी, धर्मशास्त्र और उत्तम पुस्तकों का सेवक तथा विचारक और प्रचारक, परिश्रम और साहस भाग्योदय में कुछ विघ्न पाता हुआ समुन्नत और गृह-भूमि-द्रव्यकोष-सन्तान की ओर से भाग्यशाली, निश्चित आय से युक्त, कई बार मृत्यु तुल्य कष्टों का भोक्ता, दीर्घायुष्य सम्पन्न, सुन्दरी गौरवर्णा सुशीला स्त्री का पति और उसका सुख सहयोग भोगी, रहन-सहन और उत्तम कार्यों में धन का व्ययी, ईश्वर और धर्म में आस्थावान, राज्य की अपेक्षा सामाजिक मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, परोपकारी और दयालु, मध्यमायु से अधिक जीवन प्राप्त कर भगवद्स्मरण करता हुआ वैकुण्ठ गन्ता होगा।

(२७०)- इस जन्मलग्न में उत्पत्ति ग्रहण करने वाला पुरुष दीर्घ देही, गौरवर्ण, उन्नत-ललाट, विवेकशील किन्तु अ-तीव साहसी और क्रोधी, पतिव्रता, सुशीला और सौभाग्यशालिनी स्त्री का पति, राज्य क्षेत्र में समुन्नत तथा राज्यवेतनो-पजीवी, यदाकदा गृहस्थ संचालनार्थ चिन्तित, सामान्य-गृह-भूमि का लाभ प्राप्त कर्त्ता, निरन्तर परिश्रमोपरान्त भी भा-ग्योदय में विघ्न पाता हुआ द्रव्यकोष संग्रह में हानि का अनुभवी, हठी और अधिक स्वाभिमानी तथा दृढ़ निश्चय स-म्पन्न, उत्तम गुणी सन्तान का पिता और सन्तान के कारण वृद्धावस्था में सुखी और भाग्यशाली, राज्य और समाज में मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, अनुशासन प्रिय, ईश्वर और धर्म की अपेक्षा कर्मयोग और पुरुषार्थ को अधिक महत्व देने वा-ला, किन्तु वृद्धावस्था में ईश्वर में पूर्ण-निष्ठा युक्त, पितृ-सुख का अल्प भोगी तथा मातृ और पत्नी के सुख सम्बन्धों में भी त्रुटि का अनुभवी, यदाकदा मृत्यु तुल्य कष्ट प्राप्त कर्त्ता, रक्तविकार और नेत्रज्योति में न्यूनता ग्रस्त, मध्यमायु से अधिक जीवन प्राप्त तथा सन्तान-सुख भोग कर भगवद्स्मरण करता हुआ देह त्यागने वाला होगा।

(२६१)- इस जन्माङ्ग में जन्म लेने वाला जातक मध्यम कद, गौरवर्ण, उन्नत ललाट, शारीरिक सौन्दर्य से पूर्ण, स्वाभिमानी और कटु-सत्यवादी तथापि विवेकी, माता का अल्प सुख प्राप्त तथापि पितृ-सुख भोगी और पितृ-भक्त, साहसी एवं परिश्रमी, अत्यन्त मेधावी, विद्या और सन्तान सुख से पूर्ण, राज्य क्षेत्र में समुन्नत तथा राज्यवेतनोपजीवी एवं उच्चपदासीन, कुल मर्यादा का पोषक तथा राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, भाई-बहिन और पारिवारिक सुख-सम्बन्धों में न्यूनता प्राप्त, विलक्षण-मेधा और प्रतिभा सम्पन्न, कर्मयोग के साथ भाग्य और ईश्वर में भी आस्थावान एवं धर्म का यथार्थ पालक; सुन्दरी, सुशीला, धार्मिका स्त्री का पति; किन्तु स्त्री के पूर्ण सुख में कुछ अल्पता का अनुभवी, प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी, रहन-सहन में दक्ष, मानसिक रूप से सामान्यतः अशान्त, परिश्रम द्वारा गृह-भूमिलाभी किन्तु द्रव्यकोष-संग्रह में त्रुटि का अनुभवी, शत्रुओं और विरोधपक्ष पर वाक्चातुर्य तथा गुप्त रीति से सफल, चिन्तनशील और विचारक तथा सद्शास्त्रों का अध्येता होगा।

(२६२)- इस कुण्डली में जन्म ग्रहण करने वाला बालक दीर्घवपु, उन्नत ललाट, गौरवर्ण, अत्यधिक स्वाभिमानी और साहसी, नितान्त परिश्रमी और कुछ उग्र स्वभाव, हठी एवं दृढ़ निश्चय युक्त, अनुशासन प्रिय, माता-पिता का पूर्ण सुख-सहयोग प्राप्त, सुख-भोगी एवं उनका भक्त, विद्या क्षेत्र में कुछ अवरोध युक्त सफल और राज्य तथा सामाजिक मान प्रतिष्ठा प्राप्त, राज्य क्षेत्र में उच्च पदासीन तथा राज्यवेतनोपजीवी, ईश्वर और धर्म में आस्थावान एवं सामान्य धर्म पालक, कर्मयोग और पुरुषार्थ को महत्त्व देने वाला, सत्य का उपासक और आदर्श स्वरूप, भाई-बहिन और कौटुम्बिक-सुख-सहयोगों में त्रुटि प्राप्त, सामान्य गृह-भूमिलाभी, रक्त-विकार और नेत्रज्योति में कुछ न्यूनता प्राप्त, सन्तान के कारण चिन्तितवान किन्तु वृद्धावस्था में सन्तान के कारण भाग्यशाली, जीवन में अवरोधयुक्त भाग्योन्नत, रहन-सहन में पटु, स्त्री का पूर्ण सुख-सहयोग प्राप्त किन्तु कुछ मतभेद युक्त, शत्रु-पक्ष पर प्रभावशाली व्यक्तित्व तथा गुप्त-रीति से सफल, मध्यमायु प्राप्त, मानसिक रूप से अशान्त, उत्तम गुणों से युक्त होगा।

मृ० स० 383 कु० १०

(263)- इस जन्म लग्न में जन्मा हुआ मानव गम्भीर प्रकृति, गम्भीर और गुप्त-योजनाओं का निर्माता, अनेक व्यक्तियों के साथ उपकार करने पर भी विरोध प्राप्त, सुयश-हीन, दीर्घवपु, श्याम वर्ण, विलक्षण मेधावी और अत्यधिक साहसी, यदा कदा हानि प्राप्त व्यवसाय क्षेत्र में पूर्ण सफल तथा राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में समुन्नत और मान प्रतिष्ठा प्राप्त। मातृ-सुख सहयोग का भागी। पितृ-सुख में अल्प, अतीव पुरुषार्थी, गृह-भूमि-धन-धान्य-भृत्य-वाहनादि सुख से पूर्ण, भाग्य शाली, उत्तम गुण युक्त सन्तान प्राप्त तथा उस के कारण पूर्ण सुखी एवं वृद्धा वस्था में अधिक भाग्यवान। भाई-बहिन और परिवार के सुख-सम्बन्धों युक्त, विवेक एवं विद्या-सम्पन्न, स्त्री-सुख में सामान्य, प्रभावशाली व्यक्तित्व तथा बुद्धि योग से विरोध-पक्ष पर सफल, यदा-कदा मृत्यु तुल्य कष्ट प्राप्त कर्ता, चिन्तनशील और विचारक, ईश्वर और धर्म में आस्थावान किन्तु यथार्थ-धर्म का पालक, रहन-सहन में दक्षता के साथ कुछ कृपण प्रकृति, धन संग्रह को अधिक महत्व देकर सर्वथा धनसंग्रहार्थ चेष्टित और मध्यमायु प्राप्त होगा।

(264)- इस जन्म-चक्र में उत्पन्न होने वाला मनुष्य साहसी, स्वाभिमानी, विवेकी, दीर्घवपु, प्रभावशाली व्यक्तित्व तथा बुद्धि कौशल से विरोध पक्ष पर सफलता प्राप्त, श्यामवर्ण, विद्या और बुद्धि सम्पन्न, भाई-बहिन और परिवार से सुख-सहयोग प्राप्त, माता का पूर्ण सुख-सहयोग भागी। पितृ-सुख में अल्पता प्राप्त, चिन्तनशील और विचारक, कर्म और पुरुषार्थ से सामान्य अवरोध युक्त सफल भाग्यवान, राज्य क्षेत्र में समुन्नत, अनुशासनप्रिय और कठोर, दृढ़ता से कार्य करनेवाला, ईश्वर और धर्म में साधारण आस्था युक्त तथापि यदाकदा धर्म शैली का सम्पादक, जीवन में कई बार मृत्यु तुल्य कष्ट भोगी, मध्यमायु प्राप्त, शारीरिक सौन्दर्य में त्रुटि युक्त, गृह-भूमि-धन-धान्यादि सुख से पूर्ण, धन संग्रहार्थ निरन्तर प्रयत्नवान, भाग्योन्नत, स्त्री-सुख में सामान्य, वृद्धावस्था में सन्तान के कारण अधिक भाग्यवान, रोगोपरान्त शीघ्र ही स्वास्थ्य लाभ करनेवाला, राज्य और सामाजिक मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, बुद्धि और विवेक द्वारा अनेक कार्यों में सफलता प्राप्त, रहन-सहन में दक्षता के साथ कुछ कृपणता युक्त, धन को अधिक महत्व देने वाला होगा।

मु० सं० ०२३

कु० र०

(२७५)- इस जन्म चक्र में उत्पन्न व्यक्ति दीर्घवपु, श्यामवर्ण, कृशकाय, उन्नत ललाट युक्त, साहसी और स्वाभिमानी, विवेकी, गम्भीरता से योजनाबद्ध कार्य करने में कुशल, चिन्तनशील और विचारक, सफल व्यवसायी, राज्य-क्षेत्र में बुद्धवन्त धनयुक्त, कठोर और अनुशासनप्रिय, माता के सुख-सहयोग से समुन्नत, पितृसुख में न्यूनता प्राप्त, हठी और दृढ़निश्चय सम्पन्न, उपकार करने पर भी सर्वदा विरोधयुक्त, शत्रुविरोध और प्रभावशाली व्यक्तित्व तथा बुद्धियोग से दबाने में सफल, उत्तम गुणी सन्तान का पिता और उसकी ओर से चिन्तित तथापि वृद्धावस्था में उसी के कारण अधिक सुखी और भाग्योन्नत, भाई-बहिन और कौटुम्बिक सुख-सम्बन्धों में कुछ न्यूनतायुक्त, ईश्वर और धर्म की अपेक्षा पुरुषार्थ और कर्म को अधिक महत्व देने वाला तथापि कभी-कभी धर्मकृत्य का सम्पादक, मान प्रतिष्ठा में सामान्य, साधारण गृह-भूमि और धनलाभयुक्त, सुन्दरी स्त्री का पति तथापि मतभेदयुक्त, यदा कदा रक्त वायुविकार युक्त मृत्युतुल्य कष्टों का प्राप्तकर्ता, मध्यमायुष्य सम्पन्न, द्रव्य कोष की वृद्धि में सतत-संलग्न, कभी गम्भीर हानि प्राप्त होगा।

(२७६)- इस जन्मलग्न में उत्पत्ति ग्रहण करने वाला पुरुष दीर्घवपु, कृशकाय, सामान्य वर्ण, ऊँचा कद, उन्नत ललाट, स्वाभिमानी और कठोर, साहस सम्पन्न तथा गम्भीरता से कार्य करने में पटु, क्रोधी, रहन-सहन और पर-स्त्री प्रसंग में धन का व्ययी, मूत्रेन्द्रिय और नेत्रज्योति में विकारग्रस्त, पितृ-सुख-सहयोग से समुन्नत किन्तु पितृ द्वेषी, माता का पूर्ण भक्त और प्रतिपालक, ईश्वर-धर्म-पुरुषार्थ में आस्थावान् और कर्तव्य निष्ठ, राज्य वेतनाय जीवी अथवा राज्य पक्ष से अच्छा द्रव्य लाभ लेने वाला, भाग्योदय में अनेक बार विघ्नों का प्राप्तकर्ता, भाई बहिन और परिवार का सुख सहयोग अनेक बार प्राप्त होते पर भी किसी का न मानने वाला कृतघ्नी, हठी और दृढ़-निश्चयी, येन केन प्रकारेण धनसंग्रह का स्वार्थसिद्धि में तत्पर तथा साधारण गृह-भूमि लाभ प्राप्तकर्ता, श्यामा सुन्दरी स्त्री का पति किन्तु उसका वंचक, अन्य स्त्रियों में रमणशील, विद्या और सन्तान सुख में साधारण अथवा दत्तक पुत्र ग्रहणकर्ता, मध्यमायुष्य सम्पन्न, यदा कदा गम्भीर धोखा पाने वाला, वृद्धावस्था में अनेक बार अनेक प्रकार से कष्टों को भोगने वाला होगा।

(२७७)- इस जन्मलग्न में जन्मा हुआ जातक उत्तम गौरवर्ण, सामान्य-कद, परम सुन्दर, उन्नत ललाट, प्रभावशाली व्यक्तित्व तथा विलक्षण प्रतिभा और उत्तम गुणों से युक्त, साहसी-स्वाभिमानी, चतुर और विवेकी, माता-पिता का पूर्ण भक्त और कुल-सहयोग भागी, विद्या-पक्ष में पूर्ण समुन्नत, राज्य और सामाजिक मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, पैतृक धन द्वारा बुद्धि योग और साहस से सफल व्यवसायी, यदा-कदा गम्भीर हानि युक्त भाग्योन्नत, गृह-भूमि-धन-धान्य-द्रव्य-कोष-भृत्य-वाहनादि सुख से पूर्ण, विनोदी और चंचल प्रकृति, ऐश्वर्ययुक्त रहन-सहन में दक्ष, ईश्वर और धर्म के प्रति आस्थावान्, परोपकारी एवं दयालु; सुन्दरी, श्यामा, पतिव्रता, किन्तु रोगग्रस्ता स्त्री का पति, यदा-कदा सुरा-सुन्दरी का भी उपभोक्ता, मूत्रेन्द्रिय और वात-श्लेष्मा की पीड़ा से ग्रस्त, भाई-बहिन और परिवारिक कुल-सम्बन्धों से युक्त, विरोधियों का विजेता, सन्तान में अधिक कन्याओं का पिता, मध्यमायु से अधिक जीवन प्राप्त, उदर रोग अथवा विस्फोटक रोगों से मृत्यु तुल्य कष्टों का प्राप्तकर्त्ता, सत्यवादी और वृद्धावस्था में सुखी होगा।

(२७८)- इस जन्माङ्ग में जन्म ग्रहण करने वाला बालक दीर्घवपु, कृश-शरीर, गौरवर्ण, साहसी और अत्यधिक क्रोधी, उग्र स्वभाव, विद्या क्षेत्र में सामान्य, मातृ सुख में अल्प, पितृ-सुख भोगी, भाई-बहिन और पिता तथा परिवार का पूर्ण विरोधी, उच्छृंखल और उद्दण्ड, पैतृक धन को सुरा-सुन्दरी में नष्ट करने वाला, स्वाभिमानी, रहन-सहन में पटु और धन का भोग विलास में अधिक व्ययी, एक पुत्र का पिता; सुन्दरी, गौरांगी, पतिव्रता स्त्री का पति, अनेक बार मृत्यु-तुल्य कष्टों को भोगने वाला, पुरुषार्थ और क्रियाशीलता से हीन, बाह्य-सम्बन्धों में न्यूनता प्राप्त, राज्य और सामाजिक मान-प्रतिष्ठा से हीन, कुसंगति में आसक्त, ईश्वर और धर्म-कर्म को जानते हुए भी उनसे पराङ्मुख, शनैः शनैः गृह-भूमि और द्रव्य-संग्रह से हीन होने वाला, अत्यधिक रोग-ग्रस्त होने पर धन का चिन्तक और अपने कर्मों पर पश्चात्ताप कर दुखी होने वाला, अल्पायु प्राप्त, राजयक्ष्मा रोग से चिकित्सालय में देहत्यागी, नीच और अशान्त-चित्त, क्रूरकर्मा, भाग्यहीन, मरण काल में कुछ प्रभु स्मरण करने वाला, किन्तु प्रज्ञाशून्य अवस्था में देहत्यागी होगा।

(२७९)- इस कुण्डली में जन्म ग्रहण करने वाला व्यक्ति गौरवर्ण, सामान्य कद, साधारण उग्र-स्वभाव, क्षीण देही, चतुर और विवेकी, साहसी तथा स्वाभिमानी, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पूर्ण, वाणी और बुद्धि में विलक्षण, वाक्चतुर एवं सन्तान स्थापना में प्रवीण, मातृ-सुख से वंचित, पितृ-सुख सहयोग प्राप्त और पितृ-क्षेत्र निवासी तथा पितृ-भक्त, मध्यमायु प्राप्तकर्ता, सन्तान की ओर से चिन्तित, विद्या पक्ष में न्यूनता का अनुभवी तथापि विद्वान माना जाने वाला, मानप्रतिष्ठायुक्त, उदारता तथा धर्म और ईश्वर में निष्ठा, भाग्यवादी, दृढ़ और निश्चित आय से युक्त, रहन-सहन में दक्ष और भोग-विलासादि में प्रवीण, सर्वत्र भ्रमण का व्यवसाय और जीविकोपार्जन में संलग्न तथा सफलता प्राप्त, विरोधी पक्ष पर प्रभावी रूप से सफल, सुखैश्वर्य युक्त, गृह-भूम्यादि का साधारण लाभी, अतीव मेधावी, द्रव्यकोष के संग्रहार्थ सर्वथा प्रयत्नवान किन्तु साधारण संग्रही, सुन्दरी, गौरांगी कृशकाय स्त्री का पति और उससे मतभेदी तथा वंचक, अन्य स्त्रियों का यदा-कदा भोगी, भाई-बहिन और परिवार के सुख-सम्बन्धों में साधारण होगा।

(२८०)- इस जन्म कुण्डली में जन्मा हुआ पुरुष अत्यधिक साहसी और स्वाभिमानी, उत्तम गुणों से सम्पन्न, गौरवर्ण, सुन्दर, सुगठित, पुष्ट देही, चतुर और विवेकी, मातृ-पितृ-सुख का पूर्ण भोगी, स्त्री-पक्ष में द्विभार्या योग प्राप्त का सुखी और भाग्योन्नत, अत्यन्त मृदुल और उदारचेता, परोपकारी एवं दयालु, ईश्वर और धर्म में पूर्ण आस्थावान तथा धर्मपालक, विरोध-पक्ष पर प्रभावशाली व्यक्तित्व तथा वाक्-कौशल से सफलता प्राप्त, गम्भीर और शान्त तथा विनोदी स्वभाव, ऐश्वर्ययुक्त रहन-सहन में प्रवीण, उत्तम गुण युक्त सन्तान का पिता, किन्तु प्रथम पुत्र के वियोग से अशान्त और दुखी, गृह-भूमि, धन-धान्यादि सुख से पूर्ण, द्रव्य-कोष का उत्तम लाभ पाने वाला, व्यवसाय क्षेत्र में सफल, पैतृक अथवा अन्य स्रोत से प्राप्त धन और शारीरिक श्रम से उपार्जित धन द्वारा भाग्यशाली, उत्तम स्वास्थ्य सम्पन्न, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, विद्या पक्ष में पूर्ण और समुन्नत, भाई-बहिन तथा पारिवारिक-सुख-सहयोगों में मधुर, मध्यमायु से अधिक जीवन प्राप्त करने वाला, सत्य और न्यायपूर्ण वाक्यों का प्रतिपालक, चिन्तनशील और विचारक तथा सत्संग-प्रेमी होगा।

(२८१)- इस जन्माङ्ग में जन्म लेने वाला बालक गौरवर्ण, पुष्ट देही, सामान्य कद, प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी, साहसी एवं स्वाभिमानी, चतुर और विवेकी तथा सर्वथा स्वार्थ-सिद्धि में तत्पर, कुछ उग्र तथा विनोदी, मधुर-वाक्यों द्वारा स्वकार्य करने में प्रवीण, पिता का सुख-सहयोग भागी, मातृ-सुख में न्यूनता का अनुभवी, सुन्दर स्वास्थ्य से युक्त, कभी-कभी रक्त और वायु-विकार का रोगी, यदाकदा अधिक अवरोधों के अनन्तर भाग्योन्नत, भाई-बहिन और कौटुम्बिक सुख-सहयोग से हीन, राजपक्ष से मेलयुक्त तथा राज्यवेतनोपजीवी, विरोध-पक्ष पर अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व एवं साहस से विजयी, सुन्दरी, सुशीला, धार्मिका स्त्री का पति और उसके सुख-सहयोग का भोगी, प्रतीकार भावना से संयुक्त, साधारण गृह-भूमि लाभ प्राप्त कर्ता, विद्याक्षेत्र में कुछ अवरोधों के साथ सफल, ऐश्वर्यादि रहन-सहन के लिये प्रयत्नशील, मध्यमायु प्राप्त, यदा-कदा मृत्यु-तुल्य कष्ट का भोक्ता, धन संग्रहार्थ सर्वथा चेष्टितवान् किन्तु द्रव्यकोष हीन, परिश्रम और बुद्धि-विवेक से कई कार्यों में सफलतायुक्त, सन्तान की ओर से चिन्तित होगा।

(२८२)- इस जन्म चक्र में जन्म ग्रहण करने वाला जातक उन्नत कद एवं उन्नत ललाट, दीर्घदेही, सामान्यतः पुष्ट और गौरवर्ण, अनुशासन-प्रिय, अत्यधिक साहसी एवं स्वाभिमानी, प्रत्येक कार्य करने को उद्यत, भाई-बहिन और परिवार के सुख-सम्बन्धों से नितान्त हीन, रक्तपित्त-विकार का रोगी, सुन्दर मेधावी तथा विलक्षण प्रतिभा युक्त, भाग्योन्नति हेतु सर्वथा चेष्टित किन्तु अवरोधों के साथ सफल, सुन्दरी सुशीला श्यामा स्त्री का पति और उसके सहयोग से समुन्नत किन्तु उससे मतभेदी, परिश्रम और साहस विवेक से स्वकार्यों में सफलता प्राप्त, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में मान प्रतिष्ठा में न्यूनता का अनुभवी, उद्यमी और उत्साही, पितृ-धन और पितृ-सुख सहयोग का भागी तथा पितृ-भक्त, मातृ-सुख में अल्प, विद्याक्षेत्र में कुछ विघ्नों के साथ सफलता प्राप्त, सन्तान की ओर से चिन्तित, ईश्वर और धर्म में निष्ठावान् तथा धर्मपालक और भाग्यवादी, हठी एवं दृढ़निश्चयी, मध्यमायु प्राप्त, जीवन में दो बार मृत्यु-तुल्य कष्ट पाने वाला, गृह-भूमि का सामान्य लाभी, द्रव्य-कोष के संग्रह में न्यूनता का अनुभवी होगा।

भू॰ सं॰ २८३ | कु॰ र॰

(२८३)– इस जन्मलग्न में जन्मा हुआ व्यक्ति मध्यमकद, हृष्ट-देही, गौरवर्ण, साहसी और स्वाभिमानी, उन्नत ललाट, अनुशासन-प्रिय, विलक्षण प्रतिभायुक्त चतुर और विवेकी, आदर्श वाक्यों की स्थापना में प्रवीण, भोगैश्वर्य और रहन-सहन में दक्ष, भ्रातृ-भगिनी और पारिवारिक सुख-सहयोग सम्बन्धों में सामान्य, पितृ-कृपा से पूर्ण सम्पन्न और मित्र-सुख-सहयोग का भोक्ता, किन्तु मातृ-सुख में अभाव पानेवाला, पितृ-भक्त और पितृ-क्षेत्र निवासी, हृदभार्या योग ग्रहण का गृहस्थ सुख का भोक्ता, विद्याक्षेत्र में पूर्ण तथा सन्तान का उत्तम सुख प्राप्तकर्ता, अतीव मेधावी, सत्साहित्य और संगीत काव्यादि प्रेमी, ईश्वर और धर्म में आस्थावान् और धर्म-पालक, मध्यायु प्राप्ता, वातश्लेष्म रोगी, परिश्रमशील और उत्साही किन्तु द्रव्यकोष संग्रह में न्यूनता का अनुभवी, भाग्योदय में विघ्नों का अनुभवी, परोपकारी और दयालु होने से द्रव्य विषयक धोखा प्राप्त, विरोधी पक्ष पर वाक् चातुर्य से प्रभावी, गृहभूमि लाभ में सामान्य, राज्य एवं सामाजिक क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा प्राप्ता, द्रव्य के कारण अपने को आन्तरिक दुःखी अनुभव करनेवाला होगा।

(२८४)– इस कुण्डली-चक्र में उत्पन्न होने वाला पुरुष अतीव मेधावी और साहसी तथा विवेकी, स्वकार्य-साधन में चतुर, गौरवर्ण, संगीत-साहित्य काव्य ज्योतिषादि प्रेमी, रूप से आदर्श तथा आदर्श वाक्य-स्थापना में प्रवीण, सुन्दरी सुशीला स्त्री का पति और उसका वंचक तथा भोग विलासादि में प्रवीण और अनेक स्त्रियों का भोक्ता, ईश्वर और धर्म में आस्थावान्, भोगविलास में धन का अधिक व्ययी, पैतृक गृहादि का सामान्य लाभी, भाग्योदय में अनेक बार विघ्न पाने वाला, पितृ-सुख सहयोग का भागी और पितृ-भक्त तथा पितृ-क्षेत्र निवासी, मातृ-सुख में न्यूनता का अनुभवी, परिश्रमी और उत्साही, धन-संग्रहार्थ निरन्तर तत्पर, तथापि द्रव्य-कोष संग्रह में अभाव पानेवाला, विरोधी पक्ष पर प्रभावशाली व्यक्तित्व तथा बुद्धि-कौशल से विजयी, विद्या में पूर्ण और उसी से सम्मानित तथा विद्या बुद्धि द्वारा शुद्ध द्रव्य प्राप्त करनेवाला, मध्यमायुष्य प्राप्त, सन्तान के द्वारा वृद्धावस्था में सुखी और भाग्यशाली माना जानेवाला, परोपकारी और दयालु, वृद्धावस्था में उत्तम कार्यों का सम्पादक तथा उत्तम स्थान में देहत्यागने वाला होगा।

भू० सं० २८३८ कु० १०

(२८५)- इस जन्माङ्ग में जन्म ग्रहण करने वाला मानव उन्नत ललाट, गौरवर्ण, शारीरिक सौन्दर्य में साधारण श्रेष्ठ युक्त, धर्म विद्वान् और विवेकी तथा चतुर एवं साहसी, उन्नत कद, स्वाभिमानी किन्तु विद्या-पक्ष में आन्तरिक न्यूनता का अनुभवी, सन्तान युक्त किन्तु सन्तान-सुख से सर्वथा हीन, धनसंग्रहार्थ निरन्तर चेष्टित और सामान्य पैतृक धन के साथ गृह-भूमि द्रव्य-कोष का उत्तम लाभ प्राप्त होने पर भी आन्तरिक-न्यूनता का अनुभवी, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, परोपकारी और दयालु, ईश्वर तथा धर्म में पूर्ण निष्ठावान्, वात श्लेष्म तथा नेत्र ज्योति में न्यूनता प्राप्त, परिश्रम और विवेक बल से अच्छा द्रव्योपार्जक और भाग्योन्नत तथा उत्तम कार्य और धर्मपालक, सत्साहित्य का प्रचारक और अध्येता मनस्वी, ऐश्वर्य युक्त रहन-सहन में दक्ष, परिवार एवं भाई-बहिन से पृथकत्व ग्रहण करने वाला, परिव्राजक स्थिति में राज्ययोग पाने वाला, सुन्दरी सुशीला और पतिव्रता, धार्मिका स्त्री का पति तथा उसके सुख-सहयोग का भोक्ता, अग्रिम जन्म को सुधारने वाला, उपदेष्टा तथा उत्तम स्मृति के साथ देह त्यागी होगा।

(२८६)- इस कुण्डली चक्र में उत्पत्ति ग्रहण करने वाला मनुष्य मध्यम कद, मध्यम वर्ण, उन्नत ललाट, धर्मभीरु और पिता का पूर्ण सुख भोक्ता, मातृ-सुख में स्वल्प, सुन्दरी किन्तु क्रोधिनी और रोगिणी स्त्री का पति, अन्य अनेक स्त्रियों में रमणशील, ऊपर से आदर्श दिखाई देने वाला, परिश्रमी और उत्साही, भोग-विलास तथा ऐश्वर्य युक्त रहन-सहन में दक्ष तथा धन का व्ययी, विद्या क्षेत्र में पटु, किन्तु आन्तरिक न्यूनता ग्रस्त, सन्तान-सुख से हीन अथवा दत्तक पुत्र का पिता, विरोधपक्ष पर वाक्-चातुर्य और बुद्धि कौशल से विजयी, भाई-बहिन और परिवार के सुख-सहयोग का भागी, आपत्तिकाल में अधीर और मानसिक अशान्त, परिश्रम और साहस से अनेक कार्यों में सफल तथा भाग्योन्नत, गृह-भूमि का उत्तम लाभ प्राप्त कर्त्ता, द्रव्यकोष संग्रह में न्यूनता का अनुभवी, ईश्वर और धर्म में आस्था-युक्त और धर्म-पालक, दीर्घायुष्य प्राप्त कर्त्ता, कभी-कभी हिंसा की भावना से युक्त होने पर भी अहिंसक, सुखैश्वर्य युक्त होने पर भी त्रुटि का अनुभवी, नेत्र-ज्योति तथा रक्तवायु विकार से पीड़ित रहने वाला होगा।

(२८७)- इस जन्म चक्र में जन्मा हुआ जातक मध्यमकद, गौरवर्ण, उन्नत ललाट, पुष्ट और गठित देही, अत्यधिक स्वाभिमानी, साहसी- चतुर -विवेकी, विलक्षण प्रतिभा युक्त मेधावी, प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी, चिन्तनशील और विचारक, भोगैश्वर्य और विलासी जीवन व्यतीत करने में प्रवीण, सफल परिश्रमी और व्यवसायी तथा परिश्रम और साहस से भाग्योन्नति कर्त्ता, नेत्रज्योति अथवा मूत्रेन्द्रिय में विकार प्राप्त कर्त्ता किंवा मानसिक रूप से अशान्त, धार्मिक और पारिवारिक तथा पितृ-सुख-सहयोग का भोगी, माता का उत्तम-सुख प्राप्त कर्त्ता अथवा व्यभिचारिणी माता का पुत्र, ईश्वर और धर्म में श्रद्धा-निष्ठा तथा धर्मपालक, पिता से मतभेद होते हुए भी पितृभक्त, विद्याक्षेत्र में समुन्नत तथा उत्तम गुणी सन्तान का पिता किन्तु सन्तान की ओर से चिन्तित, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, सुन्दरी क्रोधी अथवा रुग्णा स्त्री का पति और उसके सहयोग का भोगी, उत्तम कार्यों का सम्पादक, गुणग्राही, मधुरभाषी, गृह-भूमि लाभ युक्त तथापि द्रव्यकोष संग्रह में न्यूनता का अनुभवी, दीर्घायु होगा।

(२८८)- इस जन्म लग्न में जन्म लेने वाला बालक दीर्घवपु, गौरवर्ण, उन्नत ललाट, प्रभावशाली व्यक्तित्व से ओतप्रोत, साहसी और स्वाभिमानी, विद्याक्षेत्र में पूर्ण तथा अनेक विद्याओं में पटु-प्रवीण, सत्संग और सद्शास्त्रों को अधिक महत्व देने वाला धार्मिक प्राणी, कवि ज्योतिषी एवं अनेक ग्रन्थों का प्रणेता, गुणग्राही और विद्वानों को आदर देने वाला, धर्मकर्म और ईश्वर में आस्थावान तथा धर्मपालक, उत्तम कार्यों का सम्पादक, दीर्घायु प्राप्त, उत्तम स्थान में देहत्यागी, भ्रमणशील, माता-पिता का श्रद्धालु किन्तु मातृसुख में कुछ न्यूनता का अनुभवी, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में प्रतिष्ठा-सम्पन्न, पर्याप्त धन-संग्रही और गृह-भूमि तथा दृढ आय से समुन्नत तथा अच्छा भाग्यशाली, सन्तान सुख से पूर्ण तथापि सन्तान की ओर से यदा-कदा चिन्तित, दक्षिण पार्श्व में वायु-विकार अथवा प्रत्याघात से पीड़ा पाने वाला अथवा वाहनादि चोट से भय-ग्रस्त, चिन्तनशील और विचारक, धर्मनिष्ठ ईश्वर और लोक-परलोक को अधिक महत्व प्रदान करने वाला, विनयसम्पन्न, अनायास ही देहत्यागने वाला होगा।

भृ० सं० ७८३ | कृ० १०

१८८९- इस जन्माङ्ग में जन्म लेनेवाला जातक दीर्घायु, गौरवर्ण, स्वाभिमानी और विवेकी, नेत्र ज्योति में विकार पाने वाला, साहसी और चतुर, विनोदी किन्तु गम्भीर, परोपकारी और दयालु, विद्या क्षेत्र में पूर्ण होते हुए भी आत्मीक-न्यूनता का अनुभवी। सत्संग और सत्शास्त्रों का प्रेमी, संगीत-साहित्य ज्योतिष तथा अनेक विद्या और कलाओं में प्रवीण, धर्म-शास्त्र और ईश्वर के प्रति निष्ठावान और धर्मपालक, माता-पिता-गो ब्राह्मण का भक्त, पितृ-सुख भोगी और पितृ क्षेत्र निवासी किन्तु मातृ-सुख में अल्प, धार्मिक-सामाजिक-राज्य क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, भोगैश्वर्ययुक्त रहन-सहन में दक्ष, धन-संग्रह में अभाव का अनुभवी, विलक्षण प्रतिभा और मेधा तथा प्रभावशील व्यक्तित्व सम्पन्न, सामान्य वायु विकार ग्रस्त, दीर्घायुष्य सम्पन्न, उत्तम कार्यों का सम्पादक, भाग्योन्नति में त्रुटि ग्रस्त, विरोधियों का सर्वथा विजेता, गुण ग्राही और गुणियों का सम्मानकर्ता; सुन्दरी सुशीला, धार्मिका, पतिपरायणा स्त्री का पति। देश-प्रदेश में विख्यात, सन्तान की ओर से चिन्तित, गृह भूमि तथा दृढ़ आय से सम्पन्न, परोपकारी एवं दयालु, उदारमना, आपत्तिकाल में भगवदाश्रय ग्रहण करने वाला होगा।

१८९०- इस जन्म कुण्डली में जन्मा हुआ बालक मध्यम कद, कृशकाय, उन्नत-ललाट, स्वाभिमानी और साहसी, भोगैश्वर्ययुक्त रहन सहन में प्रवीण, आध्यात्मिक एवं जीवन का विरोधग्राही, पैतृक-धन और साहस तथा परिश्रम से भाग्योन्नत, सन्तानयुक्त किन्तु सन्तान की ओर से चिन्तित, भोगैश्वर्य तथा उपकार और धार्मिक कृत्यों में धन का व्ययी एवं द्रव्य कोष संग्रह में त्रुटियुक्त, परम-चतुर और मेधावी, मनस्वी तथा सत्शास्त्रों का अध्येता, उदारमना और दयालु एवं परोपकारी तथापि गृह भूमि लाभ से युक्त और दृढ़ तथा निश्चित आय सम्पन्न, मातृ-सुख में अल्प और पिता का पूर्ण सुख सहयोग प्राप्त। वायु तथा नेत्र-विकार ग्रस्त, दीर्घायु प्राप्तकर्त्ता, उत्तम कार्यों का सम्पादक, यदा-कदा मृत्यु तुल्य कष्ट पानेवाला, उत्तम स्वास्थ्य-सम्पन्न, देश-प्रदेश-राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में मान प्रतिष्ठा प्राप्त, गुणी और अनेक विद्याविद, ईश्वर तथा धर्म के प्रति निष्ठा तथा यथार्थतः धर्म पालक, सत्शास्त्रों का विचारक और प्रचारक, पितृ क्षेत्र निवासी, संगीत साहित्य-ज्योतिष आदि में पटु, स्वावलम्ब-स्थापना में प्रवीण, कभी-कभी आमदनी के लिये चिन्तित, पतिव्रता स्त्री का स्वामी होगा।

१२६७- इस जन्मांग में जन्म लेने वाला जातक दीर्घवपु, कृशकाय, श्यामवर्ण, उन्नत-ललाट, स्वाभिमानी और क्रोधी, शारीरिक-सौन्दर्य में कुछ त्रुटि युक्त, गम्भीर और गुप्त योजनाओं के निर्माण में पटु, सर्वथा स्वार्थसिद्धि में तत्पर, दीर्घायुष्य प्राप्त, सुशीला- धार्मिका - पतिव्रता - श्यामा किन्तु रोगिणी- सरला स्त्री का पति और उससे सुख सहयोग प्राप्त, विद्या-क्षेत्र में कुछ न्यूनता का अनुभवी, पुत्र-सुख प्राप्त तथापि पुत्र की ओर से चिन्तित, सामान्य गृह-भूमि और द्रव्य कोष युक्त, मातृ-सुख में अल्प और पिता से मतभेद युक्त तथापि पिता का प्रशंसक, ऐश्वर्यमय जीवन के रहन-सहन में दक्ष, नेत्र-ज्योति तथा गुप्तेन्द्रिय में विकार ग्रस्त, भाई-बहिन और पारिवारिक-सुख सम्बन्धों से पूर्ण, राज्यवेतनोपजीवी और राज्य क्षेत्र में समुन्नत तथा मानप्रतिष्ठा प्राप्त तथा धन का अधिक व्ययी, कुछ कृपण प्रकृति, यदाकदा गृहस्थ संचालनार्थ द्रव्य अभाव का अनुभवी, परन्तु प्रभावशाली व्यक्तित्व एवं बुद्धि कौशल से विरोध पक्ष पर सफलता युक्त, भाग्योन्नति में बार-बार विघ्न प्राप्तकर्ता, ईश्वर और धर्म में निष्ठावान् होगा।

१२६८- इस जन्मांग में जन्म ग्रहण करने वाला बालक कुछ श्याम वर्ण, दीर्घवपु, कृशकाय, विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, स्वाभिमानी, चतुर और विवेकी, माता-पिता का पूर्ण स्नेह योग प्राप्त तथा समुन्नत किन्तु उनसे सर्वथा मतभेदी, वाक्-पटु, परम धार्मिक और ईश्वर तथा धर्म में आस्थावान्, उन्नत ललाट, कुछ स्वाभिमानी तथा क्रोधी, भोग-विलास और ऐश्वर्य युक्त रहन-सहन में प्रवीण, सुन्दरी गौरवर्णा - सरला - धार्मिका स्त्री का पति और उसके सुख सहयोग का भोगी, सुरापायी, प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी और विरोध-पक्ष पर वाक्चातुर्य से सफल, पुत्रवान् तथापि पुत्रादि की ओर से चिन्तित, अनुशासनप्रिय और अधिक कामी, विद्याक्षेत्र में पूर्ण और राज्यवेतनोपजीवी, उच्चपदासीन एवं राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, गृह- भूमि- भृत्य- वाहन तथा द्रव्य कोष से पूर्ण तथापि भाग्योन्नति में कई बार विघ्नों को पानेवाला, भाई बहिनों के सुख-सम्बन्धों से युक्त किन्तु पारिवारिक-सुख सहयोग से वंचित, यदाकदा धर्म-पालन में आलस्य युक्त, नेत्र और उदर रोग से पीड़ित, दीर्घ-जीवन प्राप्त होगा।

भृ० सं० ३८३ कु० १०

(९६३)— इस जन्म-चक्र में जन्मा हुआ व्यक्ति प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, सुन्दर गौरवर्ण, सामान्य कद, पुष्ट-देही, उन्नत-ललाट, स्वाभिमानी, क्रोधी, सत्यवादी, न्याय-प्रिय, मातृ-सुख में अल्प अथवा हीन, विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, परोपकारी और दयालु, विद्या-क्षेत्र में पूर्ण तथा प्रवीण और उत्तम सुशिक्षित गुणी पुत्रों का पिता, और उन से पूर्ण सुख प्राप्त, पिता का पूर्ण सुख-सहयोग भोगी और पितृ-भक्त, राज्य तथा सामाजिक क्षेत्रों में समुन्नत तथा मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, गृह-भूमि का सामान्य लाभ पानेवाला, ऐश्वर्यमय जीवन की रहन-सहन में दक्ष और तत्सम्बन्ध में धन का अधिक व्ययी, हठी और दृढ़ निश्चयी, उत्तम प्रबन्धक तथा स्वीवाक्य-स्थापनों में प्रवीण, भाग्यवान् किन्तु द्रव्य-संग्रह में त्रुटि का अनुभवी, भाई-बहिन के सुख-सम्बन्ध से युक्त, विरोधियों का प्रबल दमनकारी, ईश्वर और धर्म में पूर्ण आस्थावान, सुन्दरी श्यामा सरला स्त्री का पति किन्तु उसके प्रेम के और अन्य अनेक स्त्रियों में रमण करता, राज्य-पक्ष में कुछ त्रुटि युक्त, परिश्रम से भाग्योन्नति करने वाला होगा।

(९६४)— इस जन्म-चक्र में जन्म लेने वाला पुरुष सामान्य कद, परम सुन्दर, तेजस्वी, गौरवर्ण, स्वाभिमानी और उग्र, परम-चतुर और विवेकी, माता-पिता का पूर्ण सुख प्राप्त और उनका भक्त तथा सेवाभावी, अत्यन्त धार्मिक और प्राचीन संस्कृति का उपासक, सत्शास्त्रों और सत्संग का सेवन करनेवाला, ईश्वर और लोक-परलोक का चिन्तक, उत्तम धर्मकार्यों का सम्पादक, स्वीवाक्य-स्थापनों में प्रवीण, सत्य और न्यायप्रिय, विद्या और सन्तान सुख में पूर्ण, पाँच पुत्रों का पिता, गृहस्थासक्त होते हुए भी गृहस्थ की ओर से प्रायः उदासीन, भाग्यशाली, स्वपरिश्रम तथा पितृ और बन्धु-बान्धवों के सुख सहयोग से सर्वथा भाग्योन्नत, रहन-सहन में प्रवीण, गो-ब्राह्मण, द्विज-देव भक्त, उदारमना, प्रभावशाली व्यक्तित्व से विरोधी-पक्ष का विजयी, गृह-भूमि-धन-धान्य-भृत्य-वाहनादि सुख से पूर्ण, द्रव्यकोष संग्रहार्थ निरन्तर प्रयत्नवान् तथापि धन-संग्रह में कुछ त्रुटि का अनुभवी, गम्भीर योजनाओं द्वारा अनेक कार्यों में शनैः शनैः सफल, दीर्घायुष्य युक्त, स्त्री-सुख प्राप्त, उत्तम कार्यों द्वारा उत्तम स्थान व समय में देहत्यागी मोक्षाधिकारी होगा।

(२६५)- इस जन्मचक्र में उत्पन्न होने वाला मनुष्य सुन्दर, गौरवर्ण, दीर्घदेही, कृशकाय, उन्नत ललाट, स्वाभिमानी और कुछ उग्र, साहसी, किन्तु आत्मबल से हीन, हठी और दृढ़ निश्चयी, ईश्वर और धर्म को मानने वाला किन्तु धर्म-पालन से हीन, अधिक कामी और भोग-विलास में दक्ष तथा धन का अधिक व्ययी, ऐश्वर्ययुक्त रहन-सहन में दक्ष, आपत्ति और ओषधकाल में सहज ही अधीर, स्त्री-सुख से हीन, किन्तु अन्य स्त्रियों में रमणकर्ता, विवाहिता स्त्री से मतभेदयुक्त, विद्याक्षेत्र में प्रवीण और दक्ष तथा सन्तान-सुख प्राप्त, मातृ-सुख से हीन अथवा अल्प सुख भोगी, पितृ-सुख का भोगी और उसी से समुन्नत तथापि पिता से मतभेदी और बाद में पिता का प्रशंसक, मद्यपानकर्ता, संगीत-काव्य-ज्योतिष का प्रेमी, भाई-बहिन और पारिवारिक सुख-सहयोगों से वंचित, धन-संग्रहार्थ निरन्तर चेष्टित तथापि बार-बार विफल युक्त भाग्योन्नत, परिश्रमी और उत्साही, राज्यवेतनोपजीवी तथा राज्यक्षेत्र में मान प्रतिष्ठायुक्त, नेत्रज्योति तथा रक्त-विकार ग्रस्त, वृद्धावस्था में अपने कृत्यों पर पश्चात्ताप करने वाला और दीर्घायु होगा।

(२६६)- इस जन्म-चक्र में उत्पन्न होने वाला मानव गौरवर्ण, उन्नत ललाट, सामान्य कद, पुष्ट-देही, संगीत साहित्य-ज्योतिष और संस्कृति का प्रेमी, साहसी और चतुर, मधुरभाषी तथापि सत्याग्रही और स्वाभिमानी, विद्याक्षेत्र में पूर्ण तथा अनेक विषयों का जानकार, अल्पकाल में ही माता पिता को सुख और सन्तोष देने वाला, विरोध पक्ष पर वाक्चातुर्य और प्रभावशाली व्यक्तित्व से सफल, गृह-भूमि लाभ में सामान्य, परोपकारी और दयालु, द्रव्य संग्रहार्थ प्रयत्नशील, किन्तु त्रुटि का अनुभवी, स्वतन्त्र और भोग-विलासादि में धन का अधिक व्ययी, स्त्री-सुख से नितान्त हीन किन्तु अन्य स्त्रियों में रमणकर्ता, सुरा-सुन्दरी का सेवी और उसी के कारण रोग-ग्रस्त, विलक्षण प्रतिभा-सम्पन्न, सन्तान-सुखार्थ चिन्तित, ईश्वर और धर्म में आस्थावान् किन्तु धर्म-पालन से हीन, भाई-बहिन और पारिवारिक सुख-सहयोगों से वंचित, राज्यक्षेत्र में समुन्नत, परिश्रमी और उत्साही तथा राज्यवेतनोपजीवी एवं राज्य-पक्ष में मान प्रतिष्ठायुक्त, भाग्योदय में अनेक बार विघ्न-प्राप्तकर्ता, अल्पायु से कुछ अधिक जीवन पाने वाला होगा।

(२९७)- इस जन्म कुण्डली में जन्म लेने वाला जातक उत्तम गौरवर्ण, पुष्ट देही, सामान्य कद, उन्नत ललाट, साहसी और स्वाभिमानी, हठी और दृढ़निश्चयी, परोपकारी और दयालु, भोगैश्वर्य और विलासी, मृदुल तथा उदारचेता, विनोदप्रिय और आमोद-प्रमोद को अधिक महत्त्व प्रदान करनेवाला, विलक्षण-प्रतिभा एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी, धर्मविवेकी, शान्त-धीर-गम्भीर तथा वाक्-चातुर्य से सभी पर प्रभावी, विद्या क्षेत्र में त्रुटियुक्त होते हुए भी अनेक विद्याओं में दक्षता प्राप्त, माता-पिता और भाई-बहिन का प्रिय और उनके सुख-सहयोग का भागी किन्तु पारिवारिक क्लेश प्राप्तकर्ता, भाग्योन्नति में विघ्न पाते हुए भी भाग्यवान, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में समुन्नत एवं मानप्रतिष्ठासम्पन्न, सदैव उत्साहपूर्वक उत्तम कर्मों का सम्पादक तथा सभी का प्रशंसापात्र, सुन्दरी-शिक्षिता गौरांगी-पतिव्रता स्त्री का पति, गृह-भूमि और द्रव्यकोष संग्रह में पर्याप्त लाभी, भ्रमणशील, उच्चकोटि का न्यायवेत्ता, ईश्वर और धर्म में पूर्ण आस्थासम्पन्न तथापि धर्म-पालन में कुछ आलसी, मध्यमायु से अधिक जीवन प्राप्त करनेवाला एवं सन्तान की ओर से चिन्तित।

(२९८)- इस कुण्डली चक्र में जन्म ग्रहण करनेवाला बालक शारीरिक-सौन्दर्य में कुछ त्रुटि युक्त गौरवर्ण, सामान्य कद, कृशकाय, साहसी और स्वाभिमानी, यदा-कदा गृहस्थ संचालनार्थ आय में त्रुटि का अनुभवी, चतुर और विवेकी, कार्यसिद्धि में तत्पर, द्रव्यकोष संग्रहार्थ सर्वथा प्रयत्नवान् और पर्याप्त धनी, विद्याक्षेत्र में पूर्णतायुक्त और उसी से भाग्योदय प्राप्त, ईश्वर और धर्म में पूर्ण आस्थावान, सत्शास्त्रों का प्रेमी, उत्तम वक्ता, मातृ-सुख से वंचित अथवा अल्पतायुक्त, पितृ-सुख का भोगी, गृह-भूमि लाभ से युक्त, भ्रमणशील वृत्ति से भाग्योन्नत, उत्साही और पराक्रमी, भाई-बहिनके सुख-सहयोग का भोक्ता किन्तु पारिवारिक क्लेश युक्त, स्त्री-सुख से वंचित, तथापि अनेक भोगैश्वर्य प्राप्त, सन्तान अथवा नाद सम्पत्ति सुख से पूर्ण, विरोधी-पक्ष पर सर्वथा सफल, उदारमना, किन्तु कृपणतायुक्त, उत्तम कार्यों का सम्पादक, सर्वत्र सुयश और मानप्रतिष्ठा सम्पन्न, परिव्राजक, यती अथवा सफल-चिकित्सक, चिन्तनशील और विचारक, कुछ गृहस्थ भोगों से उदासीन, परिश्रम द्वारा भाग्योदय प्राप्तकर्त्ता, मध्यायु से अधिक जीवन प्राप्त करने वाला होगा।

(२९९)- इस जन्मांग में जन्म ग्रहण करनेवाला व्यक्ति मध्यम कद, गौरवर्ण, सामान्य देही, उन्नत ललाट, विनोदी, साहसी और चतुर, विवेक-सम्पन्न, विद्या क्षेत्र में पूर्णता प्राप्त तथा संगीत - मंत्रशास्त्र - ज्योतिष - काव्य साहित्य आदि अनेक विद्याओं में पारंगत, ईश्वर और धर्म में पूर्ण आस्थावान तथा निन्त्य उत्तम कार्यों का सम्पादक एवं धर्मपालक, गो-ब्राह्मण-द्विज-देव भक्त, माता - पिता और भाई-बहिन के सुख-सम्बन्धों में पूर्ण तथा माता - पिता का भक्त और उनका प्रति पालक पोषक, परोपकारी और दयालु, भोगैश्वर्य तथा सन्तान-सुख प्राप्त, यथोप्त गृह - भूमि लाभ तथा द्रव्य-लाभ युक्त। सर्वत्र मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, परिश्रम और साहस से भाग्योदय प्राप्त कर्ता, पारिवारिक जीवन में कुछ त्रुटि युक्त, प्रभावशाली व्यक्तित्व तथा प्रतिष्ठा शक्ति से विरोध पक्ष पर सबल, वृद्धावस्था में सन्तान से उत्तम सुख पाने वाला, यदाकदा द्रव्यलाभार्थ चिन्तित, पितृक्षेत्र-निवासी, उत्तम प्रासाद तथा तीर्थक्षेत्र में स्थायी निवास करने वाला, वाक्चातुर्य में प्रभावशाली, उत्तम प्रवक्ता, स्त्री की ओर से कुछ उदासीनता युक्त, दीर्घायु प्राप्त और उदर विकार ग्रस्त होगा।

(300)- इस जन्म लग्न में जन्म लेने वाला पुरुष दीर्घ वपु, कृशकाय, गौर वर्ण, उन्नत ललाट, स्वाभिमानी और चतुर, विद्या-क्षेत्र में पूर्णता के साथ काव्य - संगीत - मंत्रशास्त्र - तंत्र - ज्योतिष आदि अनेक विद्याओं और चित्रकला में प्रवीण, विद्वान, सर्वत्र मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, द्रव्य कोष और गृह भूमि लाभ में प्रवीण, तथापि असन्तोष का अनुभवी, परिश्रमी और साहस शक्ति से भाग्योदयी, ईश्वर और धर्म में पूर्ण निष्ठा तथा धर्मपालक, उत्तम प्रासाद युक्त श्रेष्ठ स्थान में पितृ क्षेत्र का स्थायी-निवासी, स्त्री-सुख से कुछ उदासीन, सन्तान-सुख प्राप्त, यदाकदा द्रव्यलाभार्थ चिन्तित, धीर-वीर, शान्त तथा गुप्त रीति और योजनाओं द्वारा स्वकार्य क्षेत्र में कुशल, मातृ-सुख सहयोग से समुन्नत, पितृ-सुख सहयोग से अल्पतायुक्त, भाई-बहिन और परिवारीजनों से कुछ त्रुटि युक्त सम्बन्ध प्राप्तकर्ता, अन्य पुरुषों स्त्री का प्रीति, अपयश भी चिन्ता न कर, अपने पथ पर अग्रसर, 'सर्वेगुणाः काञ्चनमाश्रिताः' का आश्रय लेने वाला, नेत्र ज्योति और वातश्लेष्म विकार ग्रस्त, प्रभावशाली व्यक्तित्व और द्रव्य शक्ति से विरोध का विजेता, दीर्घायुष्य सम्पन्न होगा।

मु० सं० ३३३ पृ० १०

(३०१)- इस कुण्डली में उत्पन्न हुआ मनुष्य स्वाभिमानी और चतुर, साहसी तथा विवेकी, स्वभाव से कुछ उग्र तथापि सहज ही शान्त, धीर-वीर-गम्भीर और तेजस्वी, विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व से ओतप्रोत, दीर्घायु, पुष्ट देही, उन्नत ललाट और उत्तम गौर वर्ण युक्त सुन्दरता प्राप्त, भोगैश्वर्य और विलासी तथा रहन-सहन में प्रवीण, सुवाक्य स्थापना में प्रवीण, योजना बद्ध कार्य करने में सक्षम तथा अनुशासन-प्रिय, मृदुल और उदारमना, ईश्वर और धर्म में आस्थावान एवं धर्मपालक, माता-पिता के सुख-सहयोग का भोक्ता तथा मातृ-भक्त, परिश्रमी और साहस तथा बुद्धि-कौशल से पर्याप्त सफलता प्राप्त एवं भाग्योन्नत, द्रव्य-आय और द्रव्य कोष सम्पन्न यद्यपि द्रव्य संग्रह में कुछ त्रुटि का अनुभवी, यदाकदा मृत्यु तुल्य कष्ट प्राप्त कर्ता, भाई बहिन युक्त तथापि पारिवारिक सुख-सम्बन्धों में त्रुटि युक्त, विद्या पक्ष में पूर्ण-प्रवीण तथा राज्य और समाज में गृह भौम लाभ से सम्पन्न और मान प्रतिष्ठा प्राप्त, सत्य और न्याय का आश्रित, सहजता से कर्मों में उन्नति करने वाला, वाक्पटुता से विरोध पक्ष पर विजयी, सुन्दर, गौरांगी, विलासप्रिय स्त्री के सुख तथा सन्तान सुख भोगी।

(३०२)- इस कुण्डली चक्र में जन्म लेने वाला मानव श्यामवर्ण युक्त सुन्दरता प्राप्त, उन्नत ललाट, दीर्घ तथा पुष्ट देही, संगीत-साहित्य काव्य ज्योतिष का प्रेमी, विद्याक्षेत्र में सामान्य किन्तु बहु विज्ञ, मंत्र शास्त्र, आयुर्वेद में निष्णात, सन्तानयुक्त किन्तु सन्तान की ओर से चिन्तित, तेजस्वी, मेधावी और हठी तथा गम्भीर योजनाओं के निर्माण में पटु, भोग-विलास में दक्ष, गुह्य रोग पीड़ित, विरोध युक्त किन्तु विरोधी की ओर से निश्चिन्त, ईश्वर और धर्म में आस्थायुक्त तथापि आपत्ति या औषध काल में ही धर्म का पालक, विवेकी और गम्भीर, सुन्दरी शिक्षिता किन्तु कलहप्रिय स्त्री का पति और स्त्री की ओर से उदासीन रहकर अन्य स्त्रियों का भोक्ता तथा परिश्रम और साहस से अपनी उन्नति में सतत संलग्न, गृह-भूमि और द्रव्य कोष-संग्रह से युक्त, राज्याश्रित अथवा इंजीनियर या स्वयं उद्योग द्वारा अनेक वस्तुओं का निर्माता, कभी-कभी गम्भीर हानि पाने वाला, मातृ-पितृ सुख सहयोग का भोगी, किन्तु पितृ-मतभेदी, नेत्रज्योति में त्रुटि का अनुभवी, उद्धत और कुछ अहंकार युक्त, कृपण वृत्ति, परन्तु मरण काल में सहज ही उत्तम स्थान या तीर्थ क्षेत्र में देहत्यागी होगा।

मु० सं० ३३३

कु० १०

(३०३)- इस जन्मांग में जन्म लेने वाला जातक सामान्य कद, पुष्टदेही, श्यामवर्णयुक्त सुन्दरता प्राप्त, चतुर और विवेकी, अत्यधिक साहसी और पुरुषार्थी, ईश्वर और धर्म में निष्ठा, किन्तु धर्मपालन में शिथिलतायुक्त, सुन्दरी, शिक्षिता पतिव्रता किन्तु कलहप्रिय स्त्री का पति, सन्तानयुक्त तथापि सन्तान प्राप्ति में विलम्बयुक्त या चिन्तित, भोगी- ऐश्वर्य और विलासिता प्रिय एवं रहन सहन में दक्ष, बड़ा-बड़ा अवरोधयुक्त व्यवसाय में सफल, सफल चिकित्सक अथवा उद्योगी इंजीनियर, अनेक विद्याओं में पारंगत, साधारण अहंकारी, सत्यतायुक्त न्यायप्रिय, आत्मीय कुटुम्ब दौर्बल्य का अनुभवी, मेधावी, गृह-भूमि लाभ से युक्त, द्रव्य-संग्रहार्थ निरन्तर प्रयत्नवान् और पर्याप्त धनी किन्तु भाग्योदय में कुछ त्रुटियुक्त, भाईबहिन और पाटियों के क्लेश प्राप्तकर्त्ता, अनेक विरोधियों से युक्त किन्तु प्रभावशाली व्यक्तित्व तथा वाक्पटुता से विरोधियों का विजयी, नेत्रज्योति में विकारग्रस्त और वातश्लेष्मपीड़ित, मातृ-पितृ सुख सहयोग का अल्पभोक्ता, परिश्रम और साहस से समुन्नत, उत्तम स्थान या तीर्थ में सहज ही देह त्यागने वाला होगा।

(३०४)- इस जन्मांग चक्र में जन्म ग्रहण करने वाला बालक साहसी, दीर्घायु, उन्नत-ललाट, स्वाभिमानी और चतुर, कृशकाय, विद्याक्षेत्र में पूर्णता के साथ कुछ त्रुटि का अनुभवी, गुप्त रीति-नीति से कार्य करने में कुशल और स्वार्थसिद्धि में सर्वथा तत्पर, जीवन में सब की उपेक्षा करके ही सर्वस्व मानकर निरन्तर द्रव्यसंग्रहार्थ चेष्टित, माता-पिता का पूर्ण सुख सहयोग भोक्ता, तथापि उनसे मतभेद रख कर पृथक् रहने वाला, द्रव्य संग्रह और गृह-भूमि लाभ से युक्त किन्तु द्रव्यार्जन में भाग्यहीनता से कुछ त्रुटि का अनुभवी, वायु और नेत्र विकारग्रस्त, भाईबहिन और पाटियों के क्लेश पाने वाला, भोगी और कामुक, स्त्रीयुक्त किन्तु स्त्री की उपेक्षा करने वाला, सन्तानयुक्त परन्तु सन्तान की ओर से चिन्तित तथा वृद्धावस्था में सन्तान द्वारा उपेक्षित, मध्यमायु से कुछ अधिक जीवन प्राप्त, राज्य-विडम्बना या मुकदमों में उलझने से धन का अपव्ययी, भाग्योन्नति और मानप्रतिष्ठा में त्रुटियुक्त, ईश्वर और धर्म का आस्तिक आस्थावान् परन्तु धर्मपालन से हीन, स्त्री और सन्तान से भी पृथक् रहने वाला, कुछ विचित्र स्वभावयुक्त, हठी, उत्तम स्थान में क्लेशयुक्त देहत्यागी होगा।

मु. सं. पृ० १०

(२०७)- इस जन्म चक्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति मध्यमकद, उन्नत ललाट, गौरवर्ण, कृश-देही, साहसी और चतुर, वाक्‌प्रवीण तथा मेधावी, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, तेजस्वी, परम धार्मिक और सुन्दरी-शिक्षिता-गौरवर्णा-पतिव्रता-धार्मिका स्त्री का पति, धर्मपालक, माता-पिता का सुख सहयोग भागी किन्तु मातृ-सुख में अल्प, पितृ-भक्त और पितृ-सहयोग तथा निजी परिश्रम से कुछ त्रुटि युक्त भाग्योन्नत, विद्या और सन्तान सुख सम्पूर्ण, यत्र-तत्र पर्यटन का उद्योग रत तथा धन-संग्रही, गृह-भूमि-लाभ से युक्त पर्याप्त धनी, भाई-बहिन और परिवारी के सुख सम्पूर्ण, बाह्य विरोध युक्त किन्तु प्रभावशाली व्यक्तित्व तथा उत्तम कार्यों से विरोध पर सफलता प्राप्त, मध्यमायु से पूर्व ही जीवन समाप्त करने वाला, सामाजिक मान प्रतिष्ठा सम्पन्न, यदा-कदा द्रव्य की ओर से चिन्तित, भोगेश्वर्य और रहन-सहन तथा उत्तम धर्म कार्यों में धन का अधिक व्ययी, कभी-कभी प्रमाद वश अन्य स्त्रीका सेवन करने वाला और उससे धन लाभ ग्रहण करने वाला, चोट अथवा गुह्य-विकार में रक्त की अधिक शिथिलता से देह त्यागने वाला होगा।

(२०८)- इस जन्म चक्र में जन्मा हुआ पुरुष तेजस्वी, विनोदी, मनस्वी और मेधावी, संगीत तथा साहित्य-प्रेमी, पिता का भक्त और सुख-भोक्ता तथा मातृ-सुख में अल्प अथवा हीन, सामान्य कद, गौरवर्ण, उन्नत ललाट, पुष्ट देही, स्वाभिमानी और सत्यवादी, भाग्योदय में कुछ त्रुटि युक्त, सुन्दरी गौरांगी धार्मिका सरला शिक्षिता पतिव्रता स्त्री का पति और उसके सहयोग सुख का भोक्ता, परिश्रमी और साहस सम्पन्न, चिन्तनशील और विचारक, अनेक विद्याविद और विद्वान उत्तम गुणी पुत्रों का पिता और उन से सुख प्राप्तकर्ता, प्रभावशाली व्यक्तित्व एवं वाक्‌पटु, स्ववाक्य-प्रतिपादन में प्रवीण, रहन-सहन में दक्ष, ईश्वर और धर्म के प्रति आस्थावान तथा धर्म-पालक, सत्शास्त्रों और संस्कृति का अध्येता, उत्तम प्रवक्ता, उत्तम रीति से अपने व्यवसाय क्षेत्र में सफल और गृह-भूमि तथा द्रव्य संग्रह आदि से पर्याप्त धनी भाग्यशाली, भाई-बहिन से कुछ विरोध पाने वाला तथापि उनका प्रतिपालक, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा संयुक्त, नेत्रज्योति तथा रक्त वायु विकार से पीड़ित, मध्यमायु प्राप्त, यदा-कदा द्रव्य विषयक चिन्तित होगा।

भू० सं० ३३६३

कु० १०

(३०७)- इस जन्मांग में उत्पन्न होने वाला जातक साहसी, क्रोधी, स्वाभिमानी, चतुर, कुछ अहंकार युक्त, गौरवर्ण, उन्नत ललाट, सामान्य कद, पुष्ट देही, अहंकार के कारण आन्तरिक दुःख भोक्ता, स्त्री और सन्तान सुख से हीन अथवा सब कुछ त्याग कर परिव्राजक या यती चिह्न ग्रहण करने वाला, भ्रमणशील, शीघ्र ही सन्यास में प्रबल राजयोग प्राप्तकर्त्ता, गृह-भूमि-धन-शिष्य-द्रव्य कोष का लाभ पानेवाला, विरोध युक्त, कई बार विष अथवा अन्य स्थिति से मृत्यु तुल्य कष्टों का भोक्ता, मध्य आयु से कुछ पूर्व का ही जीवन ग्रहण कर्त्ता, परम धार्मिक और सद्शास्त्रों का अध्येता तथा उत्तम विचारक, उपदेष्टा, किन्तु उपदेश में अहंकार युक्त होने से ही सर्वत्र अपयश प्राप्त, मान-प्रतिष्ठा में स्वल्प, विरोध के कारण सर्वथा आन्तरिक चिन्तित, नेत्रज्योति तथा वायु-विकार से पीड़ित, मानसिक रूप से अशान्त, कभी कभी उदारमना होने से विरोध पक्ष पर सफलता प्राप्त, राज्य क्षेत्र अथवा वाद विवादों में निरन्तर सफल, मरणकाल में उत्तम चिन्तन युक्त देहत्याग करने वाला होगा।

(३०८)- इस जन्मांग चक्र में उत्पत्ति ग्रहण करने वाला बालक दीर्घबाहु, गौरवर्ण, पुष्ट देही, उन्नत ललाट, साहस सम्पन्न, परम चतुर और विवेकी, माता-पिता का भक्त और उनका प्रतिपालक तथा उनके सुख सहयोग का भोक्ता और समुन्नत, शान्त, भोगैश्वर्य युक्त रहन-सहन में प्रवीण, ईश्वर और धर्म के प्रति पूर्ण निष्ठा, सज्जन और गुणी विद्वद् जनों का सेवक और आदरकर्त्ता, गृह भूमि लाभ से युक्त एवं सामान्य धनी, राज्य और सामाजिक मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, राज्य क्षेत्र में समुन्नत, भाग्योदय में कुछ त्रुटि युक्त, मातृ पक्ष का भी सुख सहयोग भागी, भाई बहिन युक्त किन्तु पारिवारिक क्लेश युक्त, स्त्री सुख में अल्प और सन्तान युक्त तथापि सन्तान की ओर से चिन्तित, विनय युक्त प्रभावशाली वाणी का धनी, सत्याश्रयी, अपने भाग्य और परिश्रम से ही समुन्नत, मध्य आयुष्य प्राप्त, सामान्य विरोध पानेवाला किन्तु विरोध पक्ष पर वाणी तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व से सफलता प्राप्त, सर्वथा प्रायः स्वस्थ रहने वाला, संगीत काव्य-साहित्य अथवा चित्रकला का प्रेमी, जलक्रीडा प्रवीण, यदाकदा भ्रमणशील वृत्तिवाला होगा।

भू० सं०

(३०९)- इस जन्मांग में जन्म होने वाला जातक दीर्घायु, गौरवर्ण, स्वाभिमानी, चतुर और विवेकी, विनोदी और हँसमुख, गम्भीरता से कार्य करने में कुशल, उन्नत ललाट, विद्याक्षेत्र में पूर्णता प्राप्त किन्तु सन्तान की ओर से चिन्तित, पिता का पूर्ण सुख सहयोग भोक्ता तथा पितृभक्त एवं पितृक्षेत्र से अन्यत्र निवासी, मातृसुख सहयोग में अल्प, भाई-बहिन और पत्नी के सुख सम्बन्धों में त्रुटि का अनुभवी, राजक्षेत्र में समुन्नत और उच्चपदासीन तथा राज्यवेतनोपजीवी, भोगैश्वर्ययुक्त रहन-सहन में प्रवीण, प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी, सुन्दरी गौरांगना शिक्षिता स्त्री का पति तथा उसका सहयोग प्राप्त समुन्नत, गृह भूमि लाभ में सामान्य परन्तु धन-धान्य-भृत्य-वाहनादि सुख से पूर्ण और भाग्यशाली, शत्रु और विरोधि-दक्ष पर वाक्चातुर्य एवं बुद्धि कौशल से सफलतायुक्त, पर्यटन द्वारा अच्छा लाभ प्राप्त करनेवाला, अनुशासन प्रिय और मेधावी तथा स्ववाक्य योजना में प्रवीण, ईश्वर और धर्म के प्रति आस्थावान् तथा सत्य आदर्शयुक्त उत्तम कार्यों का सम्पादक एवं धर्म-पालक, परोपकारी और दयालु, कुल कीर्ति का प्रकाशक, वातश्लेष्मा तथा आघात से कष्ट-भोक्ता, मध्यमायु प्राप्त करने वाला होगा।

(३१०)- इस जन्मांग चक्र में जन्म ग्रहण करनेवाला बालक कुछ श्यामलता युक्त गौरवर्ण, आकृति से परम सुन्दर, मध्यम कद और पुष्ट देही, प्रभावशाली व्यक्तित्व एवं विलक्षण प्रज्ञा से सम्पन्न, हठी और दृढ़-निश्चयी, स्वाभिमानी, गम्भीर गुप्त-योजनाओं द्वारा अपने कार्य में प्रवीण, अनुशासन-प्रिय, यथार्थ रीति से धर्म पालक, माता-पिता का पूर्ण भक्त तथा उनका प्रतिपालक, पितृक्षेत्र का स्थायी निवासी, मातृ-पितृ सुख-सहयोग का भोक्ता, वंश-परम्परायुक्त संस्कृति तथा आदर्शवादिता का पोषक तथा रक्षक, उदारमना और दयालु, सुन्दरी शिक्षिता स्त्री का पति और उसका सुख सहयोग भोक्ता, धन की अपेक्षा कर्म और चरित्र को अधिक महत्व देनेवाला, उत्तम गुण युक्त धार्मिक तीन पुत्रों का पिता, गृह-भूमि-भाग वाहन-धन-धान्यादि युक्त भाग्यशाली, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में मान प्रतिष्ठा प्राप्त, साहित्य और ज्योतिषादि प्रेमी, अनेक विद्या और कलाविद, विद्यासुख से पूर्ण, प्रायः अजातशत्रु तथापि प्रभावशाली व्यक्तित्व से विरोधियों का विजेता, भोगैश्वर्ययुक्त रहन-सहन में पटु, उत्तम कार्यों का सम्पादक, मध्यमायु प्राप्त, अन्त्र अथवा वातरोग से पीड़ित होगा।

कु० १०

(३११)- इस कुण्डली चक्र में उत्पन्न होने वाला व्यक्ति दीर्घायु, पुष्ट देही, श्यामवर्ण, सुन्दर, उन्नत ललाट, स्वाभिमानी और कुछ उग्र, चतुर और विवेकी, विद्याक्षेत्र में पूर्ण प्रवीण तथा विद्या का सुख भोक्ता, पिता से कुछ प्रेम-न्यूनतायुक्त सम्बन्ध रखनेवाला, पितृस्थान से दूर अन्यत्र क्षेत्र में निवासी, उत्तम गुण युक्त धार्मिक पुत्रों का पिता, सुन्दरी शिक्षिता किन्तु कलहकारी स्त्री का स्वामी, राज्य-पक्ष से कुछ बन्धन ग्रहण करनेवाला, दृढ़-आय सम्पन्न, भाग्यशाली और सफल व्यवसायी, गृह-भूमि लाभ से युक्त, स्वकार्य-साधन में प्रवीण, मध्यमायु से अधिक जीवन प्राप्त करने वाला, द्रव्य कोष संग्रहार्थ निरन्तर चेष्टित और पर्याप्त धनी। सामाजिक क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, ईश्वर और धर्म के प्रति निष्ठावान् किन्तु यदाकदा धर्मकार्यों का सम्पादक, तीर्थाटन करनेवाला, भोगी और विलासी तथा रहन सहन में प्रवीण, पुरुषार्थी एवं परिश्रमी, स्त्री से मतभेद युक्त सुख-सहयोग प्राप्त, वाक्‌चातुर्य और बुद्धि-कौशल से विरोध पर विजयी, भाई बहिन और परिवार के सुख-सम्बन्धों से युक्त, विद्या और कला में प्रवीण, लक्ष्य साधने में चतुर होगा।

(३१२)- इस कुण्डली में उत्पत्ति ग्रहण करने वाला पुरुष दीर्घायु, कुछ श्यामवर्ण, उन्नत ललाट, साहसी और स्वाभिमानी, भाई बहिन के सुख-सहयोग से पूर्ण किन्तु परिवार के क्लेश युक्त, कुछ उग्र और चंचल प्रकृति, रहन-सहन में प्रवीण, सुन्दरी श्यामा स्त्री के सुख-सहयोग का भागी और समुन्नत, अत्यधिक परिश्रमी और उत्साही, गुण युक्त सन्तान का पिता तथापि सन्तान की ओर से चिन्तित, पिता से कुछ मतभेद रखनेवाला, भाग्यशाली किन्तु भाग्योदय में कुछ अवरोध युक्त सफल, सफल व्यवसायी, ईश्वर और धर्म के प्रति आस्थावान् किन्तु धर्मपालन की यथार्थता से कुछ उदासीन, धन संग्रहार्थ निरन्तर चेष्टित और पर्याप्त धनी होने पर भी आन्तरिक त्रुटि और असन्तोष का अनुभवी, विद्या पक्ष में पूर्णता प्राप्त और सफल, वाक्‌चातुर्य से विरोध पर विजयी, मातृ-सुख-सहयोग का भोक्ता और समुन्नत, धन धान्य गृह भूमि लाभ से पूर्ण, राज्य और सामाजिक क्षेत्र में मान प्रतिष्ठा में सामान्य। लक्ष्य एवं कार्य सिद्धि में तत्पर, कुछ वैचारिक और हठी तथा अहंकारी, मध्यमायु प्राप्त, गुह्यरोग से पीड़ा पाने वाला, मेधावी और प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न होगा।

भृ० सं० ३३३ कु० र०

(३१३)- इस जन्म-चक्र में जन्मा हुआ मानव गौरवर्ण, कृशकाय, दीर्घायु, शारीरिक सौन्दर्य में त्रुटियुक्त, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, कार्य-सिद्धि में सर्वथा तत्पर, साहसी और अत्यधिक स्वाभिमानी, प्रतीकार भावनाओं से युक्त, ईश्वर के प्रति आस्तिक होते हुए धर्म और ईश्वर की अपेक्षा पुरुषार्थ-कर्म को अधिक महत्व देने वाला, मेधावी, गुप्त रीति से गम्भीर योजनाओं द्वारा द्रव्य-कोष संग्रहार्थ निरन्तर चेष्टित, सुन्दरी गौरांगी स्त्री का मतभेद युक्त पति, उत्तम गुण युक्त सन्तान का पिता और सन्तान की ओर से चिन्तित, विद्यापक्ष में कुछ अवरोधयुक्त सफल, विरोध की चिन्ता न करके लक्ष्यसाधना में तत्पर, परिश्रम द्वारा भाग्योन्नत, गृह-भूमि-द्रव्य को बेचने के लाभ से युक्त, हठी और अनुशासन प्रिय, मातृ-सुख सहयोग का भोक्ता और पितृ-सम्बन्धों में मतभेद युक्त, कृपणवृत्ति, भाईबहिन और पारिवारिक सुख-सम्बन्धों में न्यूनता प्राप्त, वृद्धावस्था में सन्तान का सुख न पाने वाला, गुप्त-रोग और उदर-विकार से पीड़ित, राज्य और सामाजिक मान प्रतिष्ठा में त्रुटि का अनुभवी, मध्यमायु से कुछ अधिक जीवन प्राप्त करने वाला होगा।

(३१४)- इस जनुलग्न में जन्म लेने वाला मनुष्य दीर्घायु, कृशकाय, माता-पिता का पूर्ण सुख सहयोग प्राप्त, उद्दण्ड, चंचल प्रकृति, हठी और स्वाभिमानी, विद्याक्षेत्र में न्यूनता युक्त, उन्नत ललाट, सर्वदा आन्तरिक द्वेष-भावनाओं के कारण ईर्ष्यालु और मानसिक अशान्त, माता-पिता को अतीव कष्टकारी या उनका हत्यारा, भोगी और विलासी, सुरा-सुन्दरी का आराधक, सुन्दरी स्त्री का पति किन्तु उसे कष्ट दाता तथा अन्य स्त्रियों में रमणशील अथवा दूसरी स्त्रियों को घर में रखने वाला, पितृक्षेत्र से अन्यत्र जाकर निवासी, पैतृकधन और गृहलाभ से हीन, वायु और उदरशूल से पीड़ित, सन्तान सुख से हीन अथवा सन्तान द्वारा तिरस्कृत अपमानित, कुत्सित कर्मी, ईश्वर और धर्म के प्रति आस्थावान् किन्तु धर्मपालन से सर्वथा विमुख, भाईबहिन-परिवार एवं अन्य जनों का विरोधी, क्रोधयुक्त और धूर्त, परिश्रम और पुरुषार्थ से धन कमा कर येन केन प्रकारेण सुख भोक्ता किन्तु द्रव्यकोष में नितान्त हीन, कभी-कभी कुछ उपकार करने वाला, परोपकार को न भूलने वाला, बाहुपीड़ाग्रस्त, वृद्धावस्था में पश्चात्तापी, और प्रथम स्त्री से सुख प्राप्त, मध्यमायुष्य सम्पन्न होगा।

(२१५)- इस कुण्डली में जन्म लेने वाला जातक परम सुन्दर, गौरवर्ण, मध्यम कद, पुष्ट देही, साहसी और चतुर एवं स्वभाव से कुछ उग्र, प्रत्येक कार्य करने को सर्वदा तत्पर, विवेकी और चंचल प्रकृति, रहन-सहन में दक्ष, धन संग्रह में सर्वथा तत्पर, मातृ सुख में न्यूनता का अनुभवी, धार्मिक कार्यों में धन का व्यय करने वाला, पितृ-सुख भोगी और पितृ भक्त, निजी भुजाओं से उपार्जित द्रव्य द्वारा गृह भूमि द्रव्य कोष का लाभी, भाई बहिन और पारिवारिक सुख-सम्बन्धों में त्रुटि युक्त, ईश्वर के प्रति निष्ठावान, भाग्यशाली, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में मान प्रतिष्ठा सम्पन्न, स्वकार्य व्यवसाय में सफल, चतुर और शिक्षिता स्त्री का पति, विलम्ब से सन्तान प्राप्त करने वाला अथवा सन्तान की ओर से चिन्तित, प्रभावशाली व्यक्तित्व से विरोध-पक्ष पर सर्वथा विजयी, रक्त एवं पित्त विकार युक्त, कभी-कभी द्यूत-क्रीड़ा आदि विलास का आश्रयी, अपनी उन्नति के लक्ष्य में निरन्तर संलग्न, उच्च व्यक्तियों और बुद्धिमानों से सम्पर्क रखने वाला, मध्यमायु से कुछ अधिक जीवन प्राप्त, विलक्षण प्रतिभा-सम्पन्न, अनुशासन प्रिय, सत्यता और न्याय युक्त मधुर वाक्य कहने में प्रवीण, साहित्य और संगीत का प्रेमी होगा।

(२१६)- इस कुण्डली में जन्म ग्रहण करने वाला बालक दीर्घ और पुष्ट वपु, गौरवर्ण, शारीरिक सौन्दर्य में कुछ त्रुटि युक्त, परम बुद्धिमान और मेधावी, साहस-सम्पन्न, स्वाभिमानी, मातृ-सुख में अल्प और पितृ-सुख भोगी, विद्या में प्रवीण, सर्वथा भाग्यवृद्धि को प्रयत्नशील, स्वभाव से उग्र तथा सहज ही शान्त, अनुशासनप्रिय, उदारमना, धर्म और ईश्वर में निष्ठायुक्त तथा सामान्य धर्मपालक, सत्संग प्रेमी, ऐश्वर्य युक्त रहन सहन में दक्ष, राज्य क्षेत्र में उच्च पद पर आसीन तथा राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में मान प्रतिष्ठा प्राप्त, मध्यमायु प्राप्त करने वाला, सुन्दरी- गौरांगी- शिक्षिता स्त्री का स्वामी और भोग-विलास युक्त गृहस्थ में अनुरक्त किन्तु सन्तान की ओर से सर्वथा चिन्तित, दत्तक पुत्र ग्रहण करने वाला, भाई बहिन और पारिवारिक सुख-सम्बन्ध तथा सहयोग से युक्त, धर्म कार्य और तीर्थाटन में धन का व्ययी, पैतृक धन तथा भुजोपार्जित द्रव्य से पूर्ण धनी, गृह-भूमि लाभ से युक्त, धन-धान्य-भृत्य-वाहनादि सुखों से पूर्ण, प्रभावशाली व्यक्तित्व से सर्वथा विरोधियों का विजेता, भाग्यवान, निश्चित और दृढ़ आय सम्पन्न होगा।

मु० सं० ४९३ कु० १०

(११८)- इस जन्मांग में उत्पन्न होने वाला मानव दीर्घदेही, पुष्ट-शरीर, गौरवर्ण, रक्तविकार युक्त शारीरिक सौन्दर्य में कुछ त्रुटियुक्त, साहस-सम्पन्न, स्वाभिमानी, स्वभाव से कुछ उग्र तथा सहज ही शान्त, विलक्षण प्रतिभा और मेधासम्पन्न, संगीत काव्यादि प्रेमी, विद्याक्षेत्र में पूर्ण निष्णात, धन-संग्रह यार्थ सर्वदा चेष्टित और धनी, कृपणतायुक्त परोपकारी, मातृ-पितृ सुख का पूर्ण भोक्ता, पैतृक धन-लाभ से युक्त, पिता का भक्त, राज्य क्षेत्र में उच्च पदासीन और राज्य और सामाजिक मान प्रतिष्ठा प्राप्त, मध्यमायु सम्पन्न, ईश्वर और धर्म में आस्थावान्, धर्मकार्यों का अभिमान से सम्पादक, आत्मबली, तीर्थाटन करने वाला, उत्तम कार्यों में धन का व्ययी, धन-धान्य-गृह-भूमि-भृत्य वाहनादि सुख से युक्त, सुन्दरी, गौरांगी, शिक्षिता स्त्री का पति, भोग-विलास में पटु और गृहस्थ में अनुरक्त, सन्तान की ओर से सर्वदा चिन्तित, कार्यक्षेत्र में कभी-कभी आलसी, यदाकदा भाग्योदय में विघ्न पाने वाला, दृढ़ और निश्चित आय सम्पन्न, प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी और विरोधियों का सर्वथा विजेता, भौतिक और पारिवारिक सुखी होगा।

(११९)- इस जन्मांग में उत्पत्ति ग्रहण करने वाला पुरुष मध्यम कद, गौरवर्ण, पुष्ट देही, साहसी और स्वाभिमानी तथा स्वभाव से अतीव उग्र और क्रोधी, चंचल प्रकृति, हठी एवं दृढ़ निश्चयी, मातृ-सुख में अल्प और पितृ-सुख प्राप्त, भौतिक और पारिवारिक सुख में भी त्रुटि का अनुभवी, सर्वदा अन्तस्तल में मत्सरता के कारण सन्तप्त रहने वाला, विद्या क्षेत्र में प्रवीण और तन्त्र-मन्त्र आदि का जानकार, योगाभ्यास द्वारा ईश्वर और धर्म में आस्थावान्, सामान्य धनी और भाग्यशाली, भृत्य वाहनादि सुख से पूर्ण, साधारण धन-संग्रही, स्त्री से कुछ मतभेदी और स्त्री का प्रथम मरण पाने वाला, मध्यमायु से कुछ अधिक जीवन प्राप्त, विरोधियों पर कुटनीति और वाक्य पटुता से विजयी, अन्य स्त्री में भी रमणकर्त्ता, कई पुत्रों का पिता किन्तु दुराचरण के कारण सन्तान की ओर से चिन्तित, राज्य द्वारा जीविकोपार्जन युक्त उच्च पद पर प्रतिष्ठित तथा राज्य से पर्याप्त धन लाभी, सामाजिक मान प्रतिष्ठा प्राप्त, पराक्रमी और उद्यमी तथा कर्म को अधिक महत्व प्रदान करने वाला, सिर और मस्तक पर चोट के निशान से युक्त होगा।

(३१९)- इस जन्म कुण्डली में जन्म लेने वाला व्यक्ति परम तेजस्वी, स्वाभिमानी, साहसी, उग्र और क्रोधी तथा अनुशासन-प्रिय, हठी और दृढ़ निश्चयी, विद्याक्षेत्र में प्रवीण तथा अनेक विद्याओं में दक्षता प्राप्त, कार्यक्षेत्र में अथक परिश्रमी और उत्साही, किसी की न सुनने वाला, नेत्र ज्योति में विकार का अनुभवी, भाई-बहिन युक्त तथा पारिवारिक सुख-सम्बन्धों में सामान्य, बुद्धिमान् और मेधावी तथा निर्माण योजना में पटु, दूरदर्शी, परन्तु परिश्रम पर भी भाग्य का यथार्थ लाभ न पाने वाला, स्त्री से मतभेदी और स्त्री का मरण प्रथम पाने वाला, सन्तान युक्त किन्तु सन्तान की ओर से चिन्तित, मान-प्रतिष्ठा में न्यूनता का आन्तरिक अनुभवी, हृदय में सर्वथा सन्तप्त, स्वार्थ-सिद्धि में कुशल और आवश्यकतार्थ विनम्र और वाक्पटुता से विरोध पक्ष से पीछे बदला लेने में सफल, परिवारीजनों से शत्रुता पूर्ण सम्बन्धों से युक्त, कभी कभी भाग्य लाभ पाने वाला, ईश्वर और धर्म के प्रति आन्तरिक आस्थावान् किन्तु मदोन्मत्त और उद्धत, वृद्धावस्था में सन्तान के कारण भाग्यशाली किन्तु सन्तान से तिरस्कृत जीवन युक्त, गृहादि लाभ में सामान्य, दाहिने पाँव में चोट पाने वाला, मध्यमायु होगा।

(३२०)- इस जन्म लग्न में जन्म ग्रहण करने वाला मनुष्य सामान्य कद, सामान्य वर्ण, मुख-मस्तक पर चोट के चिन्ह से युक्त, साहसी और उग्र तथा बदला लेने की प्रवृत्ति वाला, विद्याक्षेत्र में न्यून, कुछ चोरों जैसी प्रकृति, आवश्यकतार्थ विनयी, स्त्री-हीन अथवा अन्य स्त्री को गृह में रख कर उसी में उत्पन्न सन्तान से युक्त, आय की अपेक्षा अधिक खर्चीला, राज्य वेतन पर जीवी, मातृ-सुख में स्वल्प अथवा अन्य द्वारा पालित, पितृ-सुख का भी अल्प भोक्ता, गृहादि लाभ में सामान्य, यदा कदा भाग्य लाभ पाने वाला, स्वार्थ-सिद्धि में तत्पर, कई स्त्रियों का भोक्ता, गृहस्थ की ओर से चिन्तित, राज्य और सामाजिक मान प्रतिष्ठा से हीन, वृद्धावस्था तक धन-संचय से नितान्त वर्जित, भाग्य पर और ईश्वर पर आरोप लगा कर जीवन निर्वाहक, मध्यमायु से कुछ अधिक जीवन प्राप्त, दुर्भाग्यशाली-सन्तान का पिता, गृहस्थ संचालनार्थ द्रव्य-न्यूनता का अनुभवी, परिश्रमी, राज्य क्षेत्र में दण्डित किन्तु विजयी और सफल, कभी कभी अत्यन्त अभाव ग्रस्त जीवन प्राप्त, उदर शूल अथवा गुदेन्द्रिय से रोग-ग्रस्त, कुछ हीन-बुद्धि होगा।

भू० सं० कु० १०

६४३

(३२१)- इस जन्म चक्र में जन्म लेने वाला मानव गोधूम वर्ण, कृश शरीर, मध्यम कद, सदा विचारशील और तेजस्वी तथा दूरदर्शी, गुप्त योजनाओं के निर्माण में पटु, मातृ-सुख का अल्प भोगी, पितृ-धन और पितृ-सुख का उपभोक्ता, चंचल प्रकृति, कटु सत्यवादी, नेत्र ज्योति का विकार पाने वाला, मध्यमायु से कुछ अधिक जीवन युक्त, भाई बहिन और परिवार युक्त तथापि सुख सम्बन्धों में त्रुटि युक्त, इंजीनियर अथवा शल्य-चिकित्सक, परिश्रम द्वारा द्रव्योपार्जनार्थ सतत प्रयत्नवान, पैतृक-गृह-भूमि लाभ से संयुत, पितृ-भक्त, विद्या-बुद्धि में पारंगत, अनेक विषयों में पूर्ण, रोगिणी, श्यामा, सुशीला स्त्री का पति, शिक्षित एवं श्रेष्ठ सन्तान से सुखी, गृहस्थ में आसक्त, कुसंगति से दूर, अपने लक्ष्य पर अटल, स्वभाव से सामान्यतः उग्र, अधिक परिश्रम से भाग्योन्नत, प्रतिस्पर्धा की भावना से पूर्ण और उन्नतिशील, वाक्-पटुता एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व से विरोध पक्ष का विजेता, अर्थ-संचय में सामान्य, ऐश्वर्य युक्त रहन-सहन में प्रवीण, धन-धान्य-भृत्य वाहनादि सुख से पूर्ण, उदर विकार तथा गुह्य-रोग से पीड़ित, प्रायः उत्तम स्वास्थ्य सम्पन्न, विलक्षण मेधावी और कुल का प्रतापी होगा।

(३२२)- इस जन्मचक्र में जन्म ग्रहण करने वाला मनुष्य मध्यम कद, साधारण पुष्ट देही, उन्नत ललाट, साहसी और स्वाभिमानी, कभी उग्र तो कभी शान्त, विद्या-बुद्धि में पूर्ण समुन्नत, दीर्घायुष्य युक्त, तीर्थ अथवा उत्तम स्थान और उत्तम काल में देहत्यागी, निश्चित और दृढ़ आय से सम्पन्न, भाई-बहिन और पारिवारिक जीवन से सन्तुष्ट, माता से कुछ मतभेद युक्त सम्बन्ध पाने वाला, पितृ-भक्त और पितृ-सुख भोक्ता तथा पैतृक-धन और गृह-भूमि लाभ से युक्त, अनेक विद्या विषयों में प्रवीण, राज्य एवं सामाजिक क्षेत्रों में मान प्रतिष्ठा प्राप्त, धन-धान्यादि से पूर्ण सुखी, श्रेष्ठ गुणी पुत्रों का पिता, रहन-सहन में प्रवीण, आवश्यकतार्थ गुप्त रीति से कार्य करने तथा विरोध-पक्ष पर विजय प्राप्त करने में सक्षम, नेत्र ज्योति में कुछ त्रुटि युक्त, विलक्षण प्रतिभावान, प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी, कर्म और ईश्वर दोनों के प्रति निष्ठा, अधिक परिश्रम द्वारा धन संग्रह और भाग्योन्नति कर्त्ता, यथार्थ-धर्म का पालक, मानवतावादी, कुछ कठोर किन्तु उदारमना, गोधूम वर्णा, शिक्षिता, रोगिणी स्त्री का स्वामी, गृहस्थ में अनुरक्त, अनुशासन प्रिय, दूरदर्शिता से ओतप्रोत, न्याययुक्त वाणी कहने में प्रवीण होगा।

(३२३)- इस जन्माङ्ग में जन्म लेने वाला जातक उत्तम गौरवर्ण, मध्यम कद, पुष्ट-शरीर, शारीरिक-सौन्दर्य सम्पन्न, आकर्षक प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी, मातृ-पितृ सुख भोक्ता और माता-पिता का पूर्ण भक्त, साहसी और स्वाभिमानी, धर्म और ईश्वर के प्रति पूर्ण निष्ठावान् तथा सत्शास्त्र और सत्संग का प्रेमी, विद्या-बुद्धि में पूर्ण पारंगत एवं विनम्रता युक्त मधुर वाक्यों-धारणे में प्रवीण, कर्मनिष्ठ, परोपकारी और दयालु, यदाकदा मृत्यु-तुल्य कष्ट भोगने वाला, शत्रु और विरोधियों का विजेता, सामान्य अर्थलाभी, उत्तम गुणी सन्तान का पिता और उससे सुख-सेवा पाने वाला, कर्म प्रभाव से राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में बहुचर्चित तथा प्रतिष्ठित, दूरदर्शी और सन्तान के कारण भाग्यशाली, सदोपदेष्टा अथवा उत्तम विचारक और प्रवक्ता, लेखक, अनेक विधाओं में पारंगत, कर्म और योग को महत्व दाता; सुन्दरी, शिक्षिता, सुशीला पतिव्रता एवं गौरांगी स्त्री का स्वामी तथा उसके द्वारा पूर्ण सुख-सहयोग प्राप्त समुन्नत, गृहस्थानुरक्त, मध्यमायु से कुछ अधिक जीवन प्राप्त, यदाकदा गृहस्थ-संचालनार्थ द्रव्य की कमी का अनुभवी और बुद्धिमान् गण्य होगा।

(३२४)-इस जन्माङ्ग में उत्पन्न हुआ बालक उत्तम गौरवर्ण, मध्यम कद, मध्यमवर्गीय पुष्ट देही, उन्नत ललाट, परम बुद्धिमान, साहसी और अत्यधिक स्वाभिमानी, स्वभाव से कुछ उग्र, सत्य और न्याय-पथ का अनुगामी, विलक्षण वाक् प्रवीण, दूरदर्शी, गम्भीर योजनाओं के निर्माण में पटु, कुशाग्र बुद्धि, विद्याक्षेत्र में निष्णात, बुद्धि-कौशल और कर्मशीलता से राज्य एवं सामाजिक क्षेत्रों में समुन्नत तथा मान-प्रतिष्ठा संयुत; सुन्दरी, गौरांगना, गोधूमवर्णा, धार्मिका पतिपरायणा स्त्री का पति और उससे सुख-सहयोग प्राप्त, समुन्नत, कभी-कभी गम्भीर मृत्यु सदृश कष्ट पाने वाला, परम विवेकी और चतुर, पुरुषार्थ-बल तथा सन्तान के कारण भाग्यवान्, सामान्य अर्थ-संचयी, गृहादि-लाभ से युक्त, माता-पिता का पूर्ण सुख-सहयोग प्राप्त, भक्त, सत्शास्त्रों का अध्येता, दाहिने नेत्र में विकार पाने वाला, विरोध-पक्ष का अपने सदाचरण और व्यक्तित्व द्वारा सफल किन्तु परिवारीजनों का क्लेश-भोक्ता, गृहस्थानुरक्त तथा गृहस्थ-संचालन में प्रवीण, ईश्वर और धर्म तथा भाग्य के प्रति आस्थावान्, उदारमना, उत्तम क्षेत्र में देहत्यागी, मध्यमायुष्य प्राप्त होगा।

(३२५)- इस जन्माङ्ग में जन्म लेने वाला जातक मध्यम कद, मध्यम वर्ण, पुष्ट देही, साहसी और क्रोधी तथा स्वाभिमानी एवं अनुशासनप्रिय, न्याययुक्त सत्यवादी और स्वभाव से कुछ उग्र, संस्कृति का उपासक, सदाचारी और पवित्र, माता का अल्प सुख प्राप्त और पितृ-धन तथा पितृ-सुख सहयोग का भागी एवं पितृभक्त, साधारण रहन-सहन और उच्च विचारों से सम्पुष्ट, विद्या-बुद्धि में पूर्ण स्नातक, पुत्रादि सन्तान से सुखी किन्तु वृद्धावस्था में कष्ट भोक्ता, स्त्री की ओर से उदासीन, पतिव्रता-धार्मिका-सुशिक्षिता स्त्री का स्वामी और गृहस्थ में अनुरक्त, अपने लक्ष्य पूर्ति और उन्नति में संलग्न, राज्य और समाज तथा कुटुम्बों में प्रतिष्ठा प्राप्त, धन-धान्य-गृह-भूमि-भृत्य-वाहन एवं द्रव्य कोष से पूर्ण और भाग्योन्नत, ईश्वर और धर्म के प्रति पूर्ण निष्ठावान एवं धर्म का यथार्थ पालक, साहस और बुद्धि कौशल से सर्वथा उन्नत, भाई बहिन का सुख सहयोग भोगी तथापि पारिवारिक क्लेश भोगी, प्रभावशाली व्यक्ति-त्व से शत्रुपक्ष पर सर्वदा विजयी, नेत्रज्योति और रक्तविकार का अनुभवी, पार्श्वभाग में पीड़ा पानेवाला होगा।

(३२६)- इस जन्म चक्र में जन्म ग्रहण करने वाला बालक सुन्दर गौरवर्ण, ऊँचा कद और प्रभावशाली देह प्राप्त, उन्नत ललाट, साहसी-चिन्तनशील विचारक एवं दूरदर्शी, ईश्वर और धर्म के प्रति पूर्ण निष्ठ और परम धार्मिक, स्वाभिमानी तथा माता-पिता एवं पूर्वजों का सेवक और भक्त, श्यामा-पुष्टा-पतिव्रता-रागिणी स्त्री का पति और स्वयं मूत्रेन्द्रिय में विकार का अनुभवी, माता का अल्प सुख प्राप्त, ऐश्वर्यमय रहन-सहन में दक्ष, परोपकारी और दयालु, कभी-कभी निष्ठुर और हठी तथा दृढ़ निश्चय सम्पन्न, विद्याक्षेत्र में कुछ त्रुटि अवरोध के साथ सम्पन्न, परम बुद्धिमान् और चतुर, पुत्रों का पिता, बुद्धि एवं वाक्-चातुर्य में पटु तथा विरोध-पक्ष पर सर्वथा विजयी, गुरुजनों का सम्मानक और तीर्थाटनी, धन-धान्य और द्रव्य-कोष में पर्याप्त धनी, गृह-भूमि लाभ से युक्त, सतत परिश्रमी, सत्शास्त्रों का अनुगामी और उपदेष्टा तथा प्रवक्ता, न्याययुक्त सत्यवादी, आदर्श स्वरूप, सन्तानार्थ द्विभार्यायोग आदि की सम्भावना से युक्त, मध्यमायु से अधिक जीवन प्राप्त, उत्तम स्थान व काल में देहत्यागी होगा।

भू० सं० ३८३

कु० २०

(३२७)- इस जन्मलग्न में उत्पन्न होनेवाला व्यक्ति गौरवर्ण, उन्नत ललाट, उच्च और प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी, साहसी और चतुर तथा दूरदर्शी, सत्शास्त्र और सत्साहित्य तथा सत्संग का प्रेमी, परम धार्मिक, स्वाभिमानी एवं दृढ़-निश्चयी तथा यदा-कदा कठोर दिखाई देने वाला, विद्या पक्ष में कुछ त्रुटि अवरोध के साथ पूर्ण सफलता प्राप्त, गौरवमय उच्च आदर्शवाला, न्यायप्रिय और सत्यवादी एवं अनुशासित जीवन से युक्त; सुन्दरी, धार्मिका, श्यामा, रागिणी स्त्री का पति; पुत्रों का पिता और सन्तान की ओर से चिन्तित, ईश्वर और धर्म का पालक, भाई-बहिन और माता-पिता के सुख सम्बन्धों में कुछ त्रुटि युक्त, अथक परिश्रमी और अपनी उन्नति में संलग्न, गृह-भूमि और द्रव्य-संग्रह में सामान्य लाभयुक्त, वृद्धावस्था में सुखी और भाग्यवान, तीर्थाटन तथा धर्मकृत्यों का सम्पादक, बुद्धि-कौशल और वाक्-चातुर्य से विरोधियों का विजेता, माता-पिता का सेवक, मध्यमायु से अधिक जीवन प्राप्त, बुद्धि विपर्यय अथवा मस्तिष्क रोग से जीवन लीला समाप्त कर उत्तम काल व स्थान में देहत्याग कर बैकुण्ठवासी हो।

(३२८)- इस जन्मलग्न में उत्पत्ति ग्रहण करने वाला पुरुष ऊँचा कद, उन्नत ललाट, अत्यधिक साहसी और स्वाभिमानी, विद्याक्षेत्र में अपूर्ण तथापि अनेक विद्याओं में प्रवीण, संगीत-साहित्य-ज्योतिष-तंत्र-मन्त्रवेत्ता, गृहस्थ की ओर से उदासीन और स्त्री से पृथक् तथा गृहस्थ से पृथक् रहकर अन्यत्र भ्रमणशील और प्रवासी, अपने लक्ष्य की पूर्ति में प्रवीण, अनेक स्त्रियों का भोक्ता, सुरापायी, बहुचर्चित, सन्तानयुक्त, प्रभावशाली व्यक्तित्व से पूर्ण, वाक्-चातुर्य में सक्षम, धार्मिकता के साथ अधार्मिक, यदाकदा राजनीति का व्याख्याता, पैतृक गृह-लाभ से युक्त, यदाकदा गृहस्थ की ओर ध्यान देने वाला, मदोन्मत्त और उद्धत, धूर्त और ठगों जैसी प्रवृत्ति रखनेवाला, भाई-बन्धु एवं अन्य परिवारीजनों का निन्दक, सत्पुत्रों का पिता, धार्मिका पतिव्रता स्त्री का पति, पर्याप्त धनोपार्जन करने पर भी अत्यधिक व्यय रखने वाला, पिता का प्रशंसक, मध्यमायु से अधिक जीवन प्राप्त, यदा कदा मृत्यु तुल्य कष्टों का भोक्ता, वृद्धावस्था में अत्यधिक दुःख पाकर पैतृक स्थान में देहत्यागी होगा।

भृ० सं० कु० १०

(३२९)- इस जन्म चक्र में जन्मा हुआ मानव गौरवर्ण, सामान्य कद, पुष्ट देही, मातृ-सुख का अल्प-भोगी और पितृ सुख प्राप्तकर्ता, साहसी एवं वाकपटु, बुद्धि में तीव्र किन्तु विद्याक्षेत्र में बहुत साधारण, मलिनचित्त, पिता का प्रशंसक, स्त्री सुख से नितान्त हीन, अप्राकृतिक व्यभिचार में रत, पैतृक गृहादि लाभी किन्तु उससे भी हीन, मलिनाशय, सन्तान-सुख से वर्जित, पराश्रित, चोर जैसी प्रवृत्ति, उदर निर्वाहार्थ यदा-कदा कार्य और परिश्रम करनेवाला, गुह्य स्थानों में अनेक रोग प्राप्त, कुसंग में चित्त रखने वाला, भाई-बहिन युक्त होने पर भी तत्सुख का सामान्य भोगी, परिवारीजनों के सुख-सहयोग से वंचित, एक स्थान पर न रहने वाला, भाग्यहीन, ईश्वर और धर्म पर आस्था होते हुए भी धर्म कार्यों से विमुख, राज्य और सामाजिक प्रतिष्ठा-सम्मान से वंचित, वृद्धावस्था में अत्यधिक दुखी, सर्वथा क्लेशयुक्त, राज्य बन्धन और दण्ड पाने वाला, अनेक कुकृत्यों में रत, दीर्घजीवन युक्त अथवा अल्पायु में ही शरीर त्यागने वाला, नरक पथ का अनुगामी, बात करने में मधुरभाषी होगा।

(३३०)-इस जन्मकुण्डली में जन्म लेने वाला मनुष्य रक्त विकारयुक्त शारीरिक सौन्दर्य में कुछ त्रुटि लिये हुए गौरवर्ण, उन्नत ललाट, दीर्घ और कृशदेही, अत्यधिक साहसी और स्वाभिमानी, गुप्त योजनाओं के निर्माण में पटु, प्रभावशाली वाणी और व्यक्तित्व का धनी, निष्ठुर और हठी दृढ़ निश्चयी, अनेक स्त्रियों का भोगी, गृहस्थ में आसक्त, रहन-सहन और ऐश्वर्य में दक्ष, अधिक खर्चीला, विद्याक्षेत्र में कुछ अवरोध के साथ सफल और उससे द्रव्य लाभ और सुख का उपभोक्ता, कई पुत्रों का पिता और वृद्धावस्था में उनसे सुख प्राप्त कर्ता, गृह-भूमि और द्रव्य कोष में सामान्य, स्त्री से सुख सहयोग भोक्ता तथा ससुराल से लाभ पानेवाला, पितृक्षेत्र से अन्य स्थान का निवासी, भ्रमणशील व्यवसाय रत, राज्य और सामाजिक प्रतिष्ठा सम्मान में न्यून, अनुशासनप्रिय, ईश्वर और धर्म में आस्थावान किन्तु धर्म पालन से विमुख, वृद्धावस्था में अपने कृत्यों का पश्चात्ताप करने वाला, भाई बहिन और परिवार-सुख से वंचित, किसी के विरोध की चिन्ता से मुक्त, और कलाहृत, योग और तन्त्र शास्त्र का ज्ञाता, मध्यायु प्राप्त, नेत्रज्योति में विकारग्रस्त एवं अनुशासनप्रिय होगा।

भु० सं० २४३

कु० २०

(३११)- इस जन्माङ्ग में जन्म लेने वाला जातक परम सुन्दर, गौरवर्ण, मध्यम कद, उन्नत ललाट, स्वाभिमानी और साहसी, पुष्ट देही, विलक्षण बुद्धियुक्त मति, विदेशों में कुछ अवरोध के साथ सफल, सर्वदा चिन्तित, मातृसुख से वंचित, अन्य पालित, पिता का प्रशंसक और पितृ-भक्त, ऐश्वर्यमय रहन-सहन में प्रवीण, सुन्दरी पतिव्रता गौरांगी स्त्री का पति किन्तु उसका वंचक और मतभेदी, अन्य अनेक स्त्रियों का भोक्ता, नेत्रज्योति में विकार पाने वाला, परोपकारी और दयालु, गृह-भूम्यादि का लाभी, कई बार धोखा खाने वाला, न्यायप्रिय और कटु-सत्यवादी, भुजाओं से उपार्जित द्रव्य द्वारा अनेक सुख भोगी, प्राचीन संस्कृति का उपासक, ईश्वर और धर्म में आस्थावान्, भाई-बहन और पारिवारिक सुख-सहयोग से वंचित, हठी और उग्र, प्रबल मेधावी तथा दूरदर्शी, विरोध-पक्ष पर प्रभावशाली व्यक्तित्व से सफल, द्रव्य-संग्रहार्थ निरन्तर प्रयत्नशील किन्तु द्रव्यकोष में न्यून, दृढ़ आय और कई पुत्रों का पिता, वृद्धावस्था में सुखी और अनेक धर्मकृत्यों का सम्पादक, मध्यमायु प्राप्त, उत्तम स्थान में देहत्यागी होगा।

(३१२)- इस जन्माङ्ग चक्र में जन्मा हुआ बालक ऊँचा कद, उन्नत ललाट, कृशकाय और सुन्दर गौरवर्ण, साहसी और स्वाभिमानी, मातृ-सुख का अल्प भोक्ता, पितृ-सहयोग से समुन्नत, पितृ-क्षेत्र का निवासी एवं पितृ प्रशंसक, भाई-बहिन युक्त किन्तु परिवार की ओर से चिन्तित, हठी और उग्र स्वभाव, दृढ़ और निश्चित आय से युक्त, गृह-भूम्यादि लाभी, द्रव्य संग्रहार्थ प्रयत्नशील, और सामान्य द्रव्य-संचयक, सुन्दरी गौरवर्णा स्त्री का पति और उसका वंचक, दृढ़व्रती, स्पष्टवक्ता, सत्यवादी एवं अनुशासन-प्रिय, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, विलक्षण मेधावी, अनेक स्त्रियों में रमणशील, गुप्तेन्द्रिय तथा नेत्रज्योति में विकार ग्रस्त, कई पुत्रों का पिता, मध्यमायुष्य सम्पन्न, ईश्वर में विश्वासवान् किन्तु धर्मपालन से हीन, सर्वथा चिन्तित, अशान्त चित्त, मनस्वी और विचारक, आलस्य के कारण कभी-कभी गम्भीर हानि से युक्त, विदेशों में कुछ त्रुटि युक्त सफल, लेखक, मन्त्र-तन्त्र और योगशास्त्र का ज्ञाता, पुत्रों के कारण, वृद्धावस्था में सुखी, प्रभावशाली व्यक्तित्व से शत्रुओं पर विजयी, प्रतीकार की भावना से युक्त, उत्तम मोक्ष प्राप्त करने वाला होगा।

भू० सं० ३९३ | कु० र०

(333)- इस कुण्डली-चक्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सुन्दर, गौरवर्ण, ऊँचा कद, उन्नत-ललाट, अलंकार की भावना से युक्त, नेत्र-ज्योति में विकारग्रस्त, साहसी और स्वाभिमानी, परम-बुद्धिमान, पितृ और माता का पूर्ण सुख सहयोग भागी, मित-भक्त, सदा-सर्वदा उन्नति के लिये प्रयत्नशील, उदारचेता, कटु सत्यवादी और अनुशासनप्रिय, विद्याक्षेत्र में पूर्ण समुन्नत, ऐश्वर्ययुक्त रहन-सहन में दक्ष, बन्धु-बान्धव और भाई-बहिन सभी का प्रिय, कुल का उद्योतक, परम मेधावी, अभियन्ता अथवा उच्चकोटि का चिकित्सक, गृह-भूमि-धन-धान्य-भृत्य-वाहनादि सुख से पूर्ण, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में उच्च मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, पुत्र-पुत्री आदि से सुखी, द्रव्य-संग्रह में कुछ कमी का अनुभवी तथापि पर्याप्त-द्रव्य लाभ से सम्पन्न, प्रायः स्वस्थ और नीरोग रहनेवाला, यदाकदा मृत्यु-तुल्य कष्ट का भोक्ता, सर्वथा विरोधहीन, पुरुषार्थ और सन्तान-बलपर भाग्यशाली, मध्यमायुष्य प्राप्त, सुन्दरी गौरांगी शिक्षिता-स्त्री का पति और उसके सुख सहयोग का भोक्ता, मानसिक अशान्ति और कुछ उग्र स्वभाव, देशाटन से लाभ प्राप्त करने वाला होगा।

(334)- इस जन्म-चक्र में जन्म लेने वाला मनुष्य गौरवर्ण, कृशकाय, दीर्घवपु, अत्यधिक साहसी और स्वाभिमानी, मानसिक रूप से सर्वथा अशान्त और चिन्तित, उग्र और क्रूर कर्मा, चँचल तथा क्रोधी प्रकृति, शारीरिक सौन्दर्य तथा नेत्रविषयक विकार ग्रस्त, व्यवसाय क्षेत्र में सफल, ऐश्वर्य और सामाजिक कार्यों में द्रव्य-खर्च करने वाला, सुन्दरी, गौरांगी पतिव्रता स्त्री का पति और उसका सुख-सहयोग भोगी, तथापि उससे मतभेदी, गुप्त योजनाओं के निर्माण में पटु, संघर्षशील, कई पुत्र और पुत्रियों का पिता, दृढ़ और निश्चित आय से युक्त, गृहस्थासक्त, धन-संग्रहार्थ प्रयत्नशील और पर्याप्त धनी तथा भाग्यशाली, यात्राकाल में दस्युओं से पीड़ित, ऐश्वर्य और बुद्धि योग से विरोध पक्ष का विजेता, प्रायः स्वस्थ और नीरोग रहनेवाला, पुरुषार्थ और साहस कर्म से द्रव्योपार्जक, ईश्वर और धर्म के प्रति आस्थावान किन्तु धर्मपालन की यथार्थता से हीन, मध्यमायुष्य सम्पन्न, कई बार मृत्यु तुल्य कष्टों का भोक्ता, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, भाई-बहिन और पारिवारिक सुख-सहयोग से वंचित, मातृ-सुख का अल्प भोक्ता, पितृ-सुख में भी अभाव पाने वाला होगा।

पृ० सं० ३४० | पृ० २०

(३३५)- इस जन्म-चक्र में उत्पन्न हुआ मानव सामान्य कद, उन्नत ललाट, कृष्णवर्ण, साहसी और उग्र स्वभाव, अपने लक्ष्य साधनार्थ विनयशील और मृदुभाषी, सर्वथा मतभेद की नीति और भावनाओं से मुक्त, गुप्त रीति और योजनाओं के निर्माण में प्रवीण, दूरदर्शी तथा मर्म-चतुर और मेधावी, माता-पिता का पूर्ण सुख भोक्ता, पैतृक धन से समुन्नत और भाग्यशाली, विद्या क्षेत्र में पूर्ण सफल, कई कन्याओं का पिता, एक पुत्र या दो पुत्र युक्त, ईश्वर और धर्म में पूर्ण आस्तिक तथा पूर्ण धर्मपालक और कई धर्मानुष्ठानों का सम्पादक, राज्य क्षेत्र में समुन्नत और उच्च पदासीन अथवा सफल चिकित्सक, भुजाओं से उपार्जित द्रव्य द्वारा पूर्ण धनी, उदर विकार या आमाशयी रोगी, सुन्दरी गौरवर्णी शिक्षिता स्त्री का स्वामी, बन्धु-बान्धव, भाई बहिन और परिवारीजनों का प्रिय तथा उनका उपकार करने वाला, कई सामाजिक कार्यों का सम्पादक, मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, पूर्ण गृहस्थानुरक्त, सादा जीवन के साथ रहन-सहन में प्रवीण, मध्यमायु से अधिक जीवन प्राप्त, यदा-कदा द्रव्य संकोच का अनुभवी, गृह-भूमि-वाहनादि सुख से पूर्ण होगा।

(३३६)- इस जन्म लग्न में उत्पत्ति ग्रहण करने वाला पुरुष कृष्णवर्ण, उन्नत ललाट, दीर्घ और कृशदेही, प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी, माता-पिता का पूर्ण सुख भोक्ता किन्तु पितृ-सुख में कुछ न्यून अथवा पिता से मतभेद रखने वाला, साहसी और कुछ क्रोधी-चंचल प्रकृति, गुप्त नीति-रीति द्वारा कार्य करने में सक्षम, योजना निर्माण में प्रवीण, परम मेधावी, और दूरदर्शी, प्रायः गम्भीर और अशान्त चित्त, कर्मयोगी, ईश्वर और धर्म में पूर्ण आस्थावान तथा धर्मानुष्ठान में संलग्न, तीर्थाटन करने वाला, द्रव्य-संग्रह में सक्षम और बुद्धि तथा साहस से सफल भाग्यवान, कई पुत्र और पुत्रियों का पिता, संगीत साहित्य का प्रेमी, व्यवसाय क्षेत्र में सफल, विद्या क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त, पितृ क्षेत्र निवासी, लक्ष्य साधनार्थ मृदुभाषी और विनम्र, गृह-भूमि-द्रव्य-भृत्य वाहनादि सुख से पूर्ण, बन्धु-बान्धव और परिवारीजनों का प्रिय तथा सभी का उपकार करने वाला, दीर्घायुष्य-सम्पन्न, धर्म सेवार्थ सामाजिक धर्म कार्यों का सम्पादक तथा मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, सुन्दरी शिक्षिता स्त्री का सुख भोक्ता किन्तु उससे कुछ मतभेद या उपेक्षा रखने वाला होगा।

भु० सं० ३६३

कु० १०

(३३७)- इस जन्मांग में जन्म लेने वाला जातक साहसी और सदैव अपनी लक्ष्य-पूर्ति में तत्पर, शारीरिक सौन्दर्य में कुछ त्रुटि युक्त गौरवर्ण, प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी, दीर्घ एवं पुष्ट देही, उग्र प्रकृति और अनुशासन-प्रिय, परम बुद्धिमान और मेधावी, विद्याक्षेत्र में पूर्ण सफल तथा वाक् पटु, अनेक विद्याविद् और कलाकार, विचक्षण बुद्धि, आवश्यकतानुसार विनयी, स्त्रीपक्ष में सदैव कष्ट उठाने वाला, मातृ-पितृ सुख भोगी, पिता का भक्त और अल्प सुख भोक्ता, अन्य क्षेत्र का निवासी, राज्य क्षेत्र में समुन्नत और मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, कर्मयोगी, गुप्त योजनाओं का निर्माता, दूरदर्शी, गृह-भूमि, धन-धान्य-ऐश्वर्य-भृत्य-वाहनादि सुखों से पूर्ण, बन्धु-बान्धव एवं परिवारीजनों का प्रिय, रहन सहन में दक्ष और अधिक व्ययी, ईश्वर और धर्म में आस्थावान तथा यथार्थ मानव धर्म का पालक, सन्तान युक्त यथेष्ट धनी तथा भाग्योन्नत, मध्यमायु से अधिक आयु प्राप्त, गृहस्थ में अनुरक्त, विदेश यात्रा और विदेशीय दारा का भोग योग प्राप्त, प्रभावशाली व्यक्तित्व से विरोधियों का विजेता, पूर्णप्रायः स्वस्थ और नीरोग, भ्रमणशील, व्यवसाय में सफल, उत्तम स्थान में देहत्यागी होगा।

(३३८)- इस जन्मांग चक्र में जन्मा हुआ बालक उत्तम गौरवर्ण, ऊँचा कद, उन्नत ललाट, प्रभावशाली व्यक्तित्व से पूर्ण, साहसी और स्वाभिमानी, उग्र तथा चंचल प्रकृति, रहन-सहन में पटु, धन-संग्रहार्थ सर्वथा प्रयत्नशील तथापि धन-संचय में कुछ त्रुटि प्राप्त, हठी और दृढ़ निश्चयी, स्त्रियों की ओर से उपेक्षित, पुत्र-पुत्री सन्तान युक्त, विद्याक्षेत्र में सफल, सफल वस्त्र या सर्राफे का व्यवसायी, अनेक सुख और अनेक स्त्रियों में रमणशील, प्रायः स्वस्थ और नीरोग, यदाकदा मृत्यु-कष्टों का भोक्ता, नेत्रज्योति और रक्त-पित्त विकार प्राप्त, ईश्वर और धर्म में आस्थावान किन्तु धर्म-पालन से हीन, राजकीय विडम्बना अथवा राज्य-दण्ड के भय से सम्भावित, पितृक्षेत्र और अन्य क्षेत्र में निवासी, भाई-बहिन और पारिवारिक सुख से हीन, अच्छी आमदनी से युक्त किन्तु यदा कदा द्रव्य न्यूनता का अनुभवी, कुत्सित विचार और मलिन कर्मी, अनेक बार विरोध-पक्ष के प्राबल्य से हानियुक्त, दीर्घायुष्य प्राप्त, वृद्धावस्था में दुःखी और सन्तान द्वारा तिरस्कृत तथापि उत्तम स्थान में घोर कष्ट भोगता हुआ उत्तमकाल में देहत्यागी होगा।

भू० सं० २४३ कु० १०

(३३९)- इस कुण्डली-चक्र में जन्म ग्रहण करनेवाला मानव सुन्दर गौरवर्ण, उन्नत ललाट, व्यक्तित्व प्रभावशाली, मध्यमकद, सत्य और न्यायप्रिय वाक्पटु, विवादस्पद प्रायः तर्कों में प्रवीण, पुष्टदेही, परम बुद्धिमान, कार्यसाधन में तत्पर, सुन्दरी-शिक्षिता-गौरांगी स्त्री का पति, गृहस्थ में अनुरक्त, सन्तान युक्त और सन्तान की ओर से चिन्तित, विद्याक्षेत्र में सफल, सामान्य-द्रव्य संग्रही, यदाकदा गृहस्थ संचालनार्थ द्रव्य न्यूनता का अनुभवी, अधिक बेचैनी, भोग प्रवृत्ति के आधिक्य से कई रमणियों में रमणशील, किसी स्त्री से द्रव्य विषयक धोखा प्राप्त, पितृक्षेत्र निवासी, अनुशासनप्रिय, मातृ-सुख से वंचित अथवा जारिणी माता का पुत्र, पितृ-प्रशंसक, धर्म-कर्म में आस्थावान, किन्तु सामान्य धर्मपालक, मान-प्रतिष्ठा में सामान्य तथा साधारण भाग्योन्नत और गृह-भूमि आदि में भी सामान्य लाभ युक्त, भाईबहिन और पारिवारिक सुख में न्यूनता का अनुभवी, दीर्घायुष्य सम्पन्न, वृद्धावस्था में अधिक दुःखी, विरोधपक्ष पर सर्वथा सफल, अथवा विरोध की चिन्ता से मुक्त, दूरदर्शी, नेत्रज्योति में विकार युक्त, पार्श्व पीड़ित, गुप्तरोगी होगा।

(३४०)- इस जन्म चक्र में जन्म लेने वाला मनुष्य दीर्घ और कृशदेही, सुन्दरतायुक्त श्यामवर्ण, उन्नत ललाट, साहसी और उग्रचेता तथा क्रूरकर्मा, हठी और दृढ़ निश्चयी, सुन्दरी, पतिव्रता, शिक्षिता स्त्री का स्वामी, अनुशासनप्रिय, विद्याक्षेत्र में सफलता प्राप्त, गृहस्थासक्त, ऐश्वर्ययुक्त रहन-सहन में दक्ष, व्यवसाय में गम्भीर उतार-चढ़ाव पानेवाला, भाग्योदय में अनेक बाधायें प्राप्त, प्रायः स्वस्थ और नीरोग, बलोद्धत तथा अहंकारी, ईश्वर और धर्म की अपेक्षा भाग्य और कर्म को महत्व देने वाला, मध्यमायुष्य सम्पन्न, जीवन के मध्य अनेक अरिष्टों का भोक्ता, सन्तानयुक्त किन्तु सन्तान की ओर से अधिक चिन्तित, रक्त एवं पित्त विकारग्रस्त, मूत्रेन्द्रिय अथवा यक्ष्मारोग से पीड़ित, गृह-भूमि एवं द्रव्यकोष लाभ में सामान्य, धन-संग्रह हेतु सर्वथा प्रयत्नवान, मातृ-सुख में न्यून, पिता से सर्वथा विरोधी, और पिता का एक ही पुत्र, पारिवारिक विरोध युक्त, वाकपटुता से विरोधी पर विजयी, मान-प्रतिष्ठा में सामान्य, वृद्धावस्था अथवा प्रौढ़ावस्था में आन्तरिक पश्चातापी, यदाकदा गृहस्थ-संचालनार्थ द्रव्य-त्रुटि का अनुभवी होगा।

(३४१)- इस जन्म चक्र में उत्पन्न हुआ जातक सुन्दर, गौरवर्ण, दीर्घ और पुष्ट देही, उन्नत ललाट, उद्यमी और उत्साही, साहसी और स्वाभिमानी, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, कुछ उग्र स्वभाव, परन्तु विवेकी, विलक्षण बुद्धि, दूरदर्शी और सत्य तथा न्यायप्रिय, अनुशासन प्रिय, वाक् चतुर, प्रायः स्वस्थ और नीरोग, प्रभावशाली व्यक्तित्व तथा मधुरता से विरोधियों पर विजयी, विद्या-शिक्षा क्षेत्र में सामान्य, माता-पिता का अल्प-सुख प्राप्त, सन्तान की ओर से चिन्तित किंवा विलम्ब से सन्तान प्राप्त, राज्य वेतनोपजीवी तथा मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, पैतृक-धन और गृहादि लाभ से युक्त, सुन्दरी श्यामा पतिव्रता-शिक्षिता-बुद्धिमती स्त्री का पति, व्यवसाय कर्म क्षेत्र में सफल, दृढ़ और निश्चित आय से युक्त, भाई-बहिन और पारिवारिक सुख में सामान्य, दीर्घायुष्य सम्पन्न, उदर-विकार और नेत्र-रोग पानेवाला, ईश्वर-धर्म-भाग्य में आस्थावान तथा धर्म-पालक, भाग्योन्नति में विघ्न युक्त सफलता प्राप्त, रहन-सहन में दक्ष, गृहस्थासक्त, प्रायः अशान्त चित्त, स्त्री अथवा स्वसुराल के कारण भाग्यवान्, बाह्य-सम्बन्धों में मधुरता प्राप्त होगा।

(३४२)- इस जन्मलग्न में उत्पत्ति ग्रहण करनेवाला बालक उत्तम गौरवर्ण, उन्नत ललाट, पुरुषार्थी और साहसी एवं स्वाभिमानी, अधिक खर्चीला, सामान्य कद और पुष्ट देही, विवेक सम्पन्न, विद्या क्षेत्र में सामान्य, रहन-सहन में दक्ष, मातृ सुख में स्वल्प, पितृ सुख भोक्ता, पितृ-क्षेत्र से अन्यत्र निवासी, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा युक्त, सुन्दरी श्यामा स्त्री का पति, किन्तु उससे मतभेदी, अन्य स्त्रियों में रमणकर्ता और द्रव्य लोभी, यदाकदा गृहस्थ संचालनार्थ चिन्तित, व्यवसाय कर्मक्षेत्र में सफल, किन्तु भाग्योन्नति में अनेक विघ्न युक्त, ईश्वर और दया धर्म में आस्थावान, किन्तु धर्मपालन में त्रुटि युक्त, सन्तान द्वारा वृद्धावस्था में सुखी, पुरुषार्थ कर्म में कभी-कभी आलस्य युक्त, विलक्षण मेधावी और अनेक विद्या-विद, साहित्य और ज्योतिषादि प्रेमी, गृहस्थ में अनुरक्त, भाई-बहिन और पारिवारिक सुख सहयोग से वंचित, गृह-भूमि लाभ में सामान्य तथा द्रव्य संग्रहार्थ निरन्तर प्रयत्नशील तथापि द्रव्यकोष में त्रुटि युक्त, परोपकारी और दयालु, मध्यमायु प्राप्त, कई बार मृत्यु तुल्य कष्ट प्राप्तकर्ता, कुछ छलीकार भावनाओं से युक्त, अशान्त चित्त होगा।

(३४३)- इस जन्माङ्ग में जन्मा हुआ व्यक्ति उत्तम गौरवर्ण, उन्नत ललाट, मध्यमकद और पुष्ट देही, कुछ उग्र प्रकृति, स्वाभिमानी और सत्य तथा अनुशासन प्रिय, परोपकारी और दयालु, ईश्वर और धर्म में निष्ठावान् किन्तु धर्मपालन की मर्यादा से वंचित, भातृविहीन और पारिवारीजनों के क्लेश से मुक्त, विलक्षण प्रतिभा वाक्पटुता-सम्पन्न, दूरदर्शी, स्वकार्य साधन में तत्पर, मातृ-सुख से हीन अथवा जारिणी माता का पुत्र, पुरुषार्थबल से समुन्नत, सुन्दरी-स्त्री का स्वामी, प्रायः स्वस्थ और नीरोग, किन्तु कभी-कभी मृत्यु तुल्य कष्टों का प्राप्त कर्ता, नेत्रज्योति में विकार ग्रस्त, रहस्य सहन में प्रवीण और अन्य कामिनियों का भोक्ता, विद्या और सन्तान-क्षेत्र में समुन्नत तथा वृद्धावस्था में सन्तान द्वारा सुख प्राप्त, प्रभावशाली व्यक्तित्व तथा बुद्धि कौशल से विरोध-पक्ष सफल, भाग्योन्नति तथा द्रव्य-संग्रहार्थ निरन्तर चेष्टित तथापि भाग्योदय में अनेक विडम्बना प्राप्त, मध्यमायुष्य सम्पन्न, प्रायः प्रसन्नचित्त, राज्य वेतनोपजीवी तथा मान प्रतिष्ठा प्राप्त, गृह-भूमि लाभ में सामान्य, गृहस्थासक्त, दक्षिण-पार्श्व में पीड़ा तथा मुख-मस्तक पर प्रत्याघात के चिन्ह युक्त होगा।

(३४४)- इस जन्माङ्ग में जन्म लेने वाला पुरुष सुन्दर दीर्घवपु, गौरवर्ण, उन्नत ललाट, अल्प ... साहसी और स्वाभिमानी, उग्र स्वभाव और उग्रकर्मी, प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी, सुन्दरी पतिव्रता स्त्री का पति और उसमें तथा अन्य स्त्रियों में अनुरक्त, अधिक खर्चीला, भोग-विलास में दक्ष, विद्या और सन्तान क्षेत्र में सामान्य, वृद्धावस्था में सन्तान तथा स्त्री द्वारा तिरस्कृत और उपेक्षित, गृह-भूमि लाभ में सामान्य, व्यवसाय की उन्नति को लालायित किन्तु अनेक बाधाओं से ग्रस्त, बलोद्धत और किसी की चिन्ता न करने वाला, भातृविहीन और पारिवारिक सुख सहयोग से वंचित, सभी को शंकालु-दृष्टि से देखने वाला, प्रायः अशान्त चित्त, कई बार मृत्यु-तुल्य कष्टों का भोक्ता, किसी स्त्री से भयंकर धोखा प्राप्त, मध्यमायु से अधिक जीवन प्राप्त, द्रव्यकोष संग्रहार्थ नित्य प्रयत्नवान् किन्तु द्रव्य संग्रह से हीन, भाग्योदय में अनेक विघ्न पाने वाला, प्रभावशाली व्यक्तित्व से विरोध-पक्ष पर सबल, उत्साही और कर्मयोगी, ईश्वर तथा भाग्य को कोसने वाला, धर्मपालन से हीन, वृद्धावस्था में अपने कृत्यों का पश्चात्तापी, मान-प्रतिष्ठा से वर्जित होगा।

भृ० सं० ६६३

कु० १०

(३४५) इस कुण्डली में जन्म लेनेवाला जातक गौरवर्ण, साहसी और मर्मविवेकी, स्वाभिमानी, धीर-वीर और गम्भीर, दीर्घ व पुष्ट देही, उन्नत ललाट, अनुशासनप्रिय, परोपकारी और दयालु, स्त्री की ओर से उदासीन, अथवा स्त्री के मरने पर गृहस्थ को त्यागनेवाला, अनेक पुत्र अथवा शिष्ययुक्त, गृह-भूमि-धन-धान्य-भृत्य-वाहनादि सुखों से पूर्ण, प्रबल राजयोग प्राप्त, मातृ-सुख में स्वल्प, पितृ-सहयोग और सुख से समुन्नत एवं पितृ-भक्त, ईश्वर और धर्म में पूर्ण निष्ठा तथा धर्म का यथार्थ-पालक, देशाटन और तीर्थाटन से युक्त, भाईबहिन और पारिवारिक क्लेश पानेवाला अथवा उनके सुख-सहयोग से वंचित, स्वेच्छाचारी, मध्यमायुष्य जीवन प्राप्त, विद्याक्षेत्र में अनेक विघ्न विद्, भाग्योदय में अनेक विघ्नों का प्राप्तकर्ता, मुकदमों से त्रस्त, सन्तान की ओर से अधिक चिन्तित, शत्रु और विरोधियों का प्रबल दमनकारी, नेत्रज्योति और उदर-विकार ग्रस्त, दूरदर्शी, प्रायः अशान्त-चित्त, राज्य-क्षेत्र में अधिक मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, विरोध की चिन्ता न करनेवाला तथापि उनसे सर्वथा लगनशील होगा।

(३४६) इस कुण्डली चक्र में जन्म ग्रहण करनेवाला बालक सुन्दर गौरवर्ण, उन्नत ललाट, साहसी और स्वाभिमानी, दीर्घ वपु और पुष्ट देही, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, मृदुल और उदार, कुछ उग्र और अनुशासनप्रिय प्रकृति, रक्त विकार और नेत्रज्योति में विकार ग्रस्त, साहित्य और संगीत का प्रेमी, भोगविलास में दक्ष, अनेक कामिनियों का सुख-भोक्ता, स्वस्त्री की ओर से उदासीन अथवा स्त्री से सर्वथा मतभेद रखनेवाला, पाँच पुत्रों का पिता, दूरदर्शी और विवेकी, प्रायः स्वस्थ और नीरोग, मानसिक रूप से अशान्त, विद्याक्षेत्र में पूर्ण स्नातक, भाग्योदय में अनेक बाधायुक्त, भाईबहिन और पारिवारिक क्लेश सहनकर्ता अथवा व्यभिचारी जनों से त्रस्त, मातृ-सुख में अल्प, पितृ-सुख सहयोग से समुन्नत और पितृ-भक्त, ईश्वर और धर्म में आस्थावान् किन्तु धर्मपालन की यथार्थता से हीन, प्रबल कर्मयोगी, यदाकदा कर्म और बुद्धि योग से भी असफल होने पर भाग्यवादी, राज्यक्षेत्रों में सम्मानयुक्त, मध्यमायु जीवन प्राप्त, प्रभावशाली व्यक्तित्व से विरोधियों का विजेता, प्रतिकार की भावना रखनेवाला, धन-धान्यादि-गृह-भूमिलाभ में पर्याप्त होगा।

(३४१)- इस जन्मांग में उत्पन्न होनेवाला मानव शारीरिक सौन्दर्य में कामदेव के समान, उत्तम गौरवर्ण, उन्नत ललाट, ऐश्वर्ययुक्त, रहन-सहन और भोग-विलास में दक्ष, साहसी और स्वाभिमानी, मृदुल और विनोदी प्रकृति, चंचल स्वभाव, सुन्दरी, प्रशिक्षिता पतिव्रता स्त्री का पति और गृहस्थानुरक्त, कई पुत्रों का पिता, विद्याक्षेत्र में पूर्ण प्रवीण और समुन्नत, संगीत-साहित्य-ज्योतिष-रत्नपरीक्षा आदि का प्रेमी, मातृ-पितृ सुख-सहयोग से पूर्ण, भाग्योदय में अनेक बाधायुक्त तथापि समुन्नत, काव्यांग प्रेमी, पारिवारिक क्लेश प्राप्तकर्ता, अथवा परिवारीजनों से पृथक्, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, कुल का दीपक, शत्रु और विरोधियों से क्लेश प्राप्त तथापि उनका प्रबल दमनकारी, धन-धान्य गृह-भूमि-भृत्य-वाहनादि सुखों से पूर्ण, यदा कदा द्रव्य की कमी का अनुभवी, मध्यमायु से अधिक जीवन प्राप्त, निरन्तर व्यवसाय में संलग्न, व्यवसाय में बारबार उतार-चढ़ाव युक्त, परोपकारी और दयालु, विद्या बुद्धि कौशल से स्वउन्नति में संलग्न और प्रवीण, प्राचीनता का परिपोषक तथा कुछ नवीनतायुक्त सत्संग का प्रेमी होगा।

(३४२)- इस जन्मांग चक्र में उत्पत्ति ग्रहण करने वाला मनुष्य शारीरिक सौन्दर्य में त्रुटियुक्त, श्यामवर्ण, अशान्तचित्त, अत्यन्त उग्रस्वभाव व क्रूर कर्मी, साहसी और अनेक जीवों का संहारक, विद्या और सन्तान सुख से हीन, भोगविलास में दक्ष, अत्यधिक खर्चीला, मातृ-पितृ-विरोधी, पैतृक गृहादि से हीन होकर यत्र-तत्र भ्रमणशील, बलोद्धत और धूर्त, स्ववाक्य-स्थापना का हठी, कर्मक्षेत्र में निष्णात, स्त्री व गृहस्थ-सुख से वंचित, बलात्कार और अन्य अनेक स्त्रियों में रमणकर्ता, नीच और कुचैल प्रकृति, भाग्य की प्रबलता से कभी कभी पर्याप्त धन पाने वाला किन्तु सर्वथा निर्धनी, प्रायः स्वस्थ और नीरोग, मूत्रेन्द्रिय किंवा शुक्ररोग से पीड़ित, कभी कभी चोरी करने वाला, सज्जनों जैसा आचरण करके ठगविद्या में प्रवीण, किसी के गृह-भूमि और स्त्री आदि पर शक्ति से अधिकार पाने वाला, स्त्रियों के साथ पाशविकता का आचरणकर्ता, भ्रातृविहीन और परिवार तथा मान-प्रतिष्ठा एवं ईश्वर और धर्म की ओर से उदासीन, अनुशासन करने में प्रवीण, अश्व से गिरकर चोट पाने वाला, प्रतिकार भावनाओं से युक्त, अल्पायु से कुछ अधिक जीवन प्राप्त होगा।

भु० सं० ६९३ कु० २०

(३४९)- इस जन्म चक्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दीर्घवपु, शारीरिक सौन्दर्य में त्रुटि युक्त, श्यामवर्ण, कृशदेही, उन्नत ललाट, आकृति से कुछ भयंकर, मुख और माथे पर चोट या व्रण के चिन्ह युक्त, भोग-विलास और रहन-सहन में दक्ष, अत्यधिक खर्चीला, कभी-कभी दूसरों को धोखा देकर जीवन यापन करनेवाला, स्त्री व गृहस्थ-सुख से हीन, विद्या और सन्तान सुख से हीन, कर कभी तथा क्रूर और उग्र प्रकृति, अनेक व्यसनों में संलग्न, कभी-कभी भाग्य या चोरकर्म से पर्याप्त धन प्राप्त कर भी गृह-भूमि और अन्य सुख साधनों से हीन, जारिणी माता का पुत्र, पितृ-सुख का अल्प भोक्ता, मान-प्रतिष्ठा हीन, कईबार राज्य दण्ड भोगी, अनेक स्त्रियों में रमण शील अथवा अप्राकृतिक मैथुन युक्त व्यभिचार में रत, पितृ-गृहादि सुख से वंचित, प्रायः पराश्रित, अस्थिर कर्मी, यत्र-तत्र भ्रमणशील, बलोद्धत, ईश्वर और धर्म आस्था से हीन, भाई बहिन युक्त तथा परिवारीजनों का सतत विरोधी, शुक्र रोग से पीड़ित, अंग-भंग तथा कईबार मृत्युतुल्य कष्ट पानेवाला, प्रतीकार भावनाओं से ओतप्रोत, अल्पायु से कुछ अधिक जीवन प्राप्त होगा।

(३५०)- इस जन्मलग्न में जन्म ग्रहण करनेवाला पुरुष शारीरिक सौन्दर्य में कुछ त्रुटियुक्त दीर्घवपु, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, गौरवर्ण, विवेकी और चतुर, मातृ-सुख भोक्ता, पितृ-सुख में स्वल्प, पैतृक गृहादि लाभी, माता को और भाई बहिन को कष्टदायी, पारिवारिक क्लेश युक्त, स्त्री सुख से हीन अथवा कई स्त्रियों का भोक्ता, विद्या और सन्तान सुख से हीन, संग्रहीता स्त्री में सन्तान उत्पन्न करने वाला, परिश्रम और बुद्धि कौशल से उन्नति करने वाला, यदाकदा पर्याप्त धन पानेवाला, भाग्योन्नति से वंचित, गृहस्थासक्त तथापि अप्राकृतिक मैथुन और भोगविलास में पटु, ईश्वर और धर्म में आस्थावान होने पर भी धर्मपालन से हीन, सदाचरण और पवित्रता से वंचित, प्रमेह रोग से पीड़ित अथवा अश्मरी रोग-भोक्ता, विरोध चिन्ता से युक्त, वाकपटुता से धोखा देने में निपुण अथवा स्त्रियों का विक्रेता, यत्र-तत्र भ्रमणशील, चोरकर्म में राज्य अथवा दस्युओं से पीड़ित, अधिक व्ययी, मान प्रतिष्ठा से हीन, अल्पायु अथवा प्रौढ़ावस्था में मृत्यु पानेवाला, पैतृक गृह-भूमि लाभ को स्त्री-प्रसंग के कारण छोड़ देने वाला, कई स्त्रियों से सन्तानोत्पादक होगा।

(३५१)- इस जन्म कुण्डली में जन्म लेने वाला मानव दीर्घदेही, कृशकाय, उन्नत ललाट, गौरवर्ण, साहसी और स्वाभिमानी, पुरुषार्थी, ईश्वर और धर्म में आस्थावान्, तथा धर्म-पालक, मातृ-सुख में अल्प, पैतृक धन और पितृ गृहादि लाभी एवं पितृ-भक्त, विद्या और बुद्धि क्षेत्र में कुशल पूर्ण स्नातक, आत्म बल से हीन, साहस से गुप्त योजनाओं के निर्माण में प्रवीण, स्वलक्ष्य साधन में तत्पर, भाई-बहिन और कुटुम्ब से त्यागा हुआ अथवा स्वयं उन्हें विरोध के कारण त्यागने वाला, कई पुत्रों का पिता, रहन-सहन में ठाट तथा ऐश्वर्यादि में अधिक खर्चीला, प्रभावशाली व्यक्तित्व से विरोधी-पक्ष का विजेता, भोगी-विलासी और अधिक कामी, गृहस्थ में अनुरक्त, सुन्दरी शिक्षिता स्त्री का पति किन्तु अनेक स्त्रियों में रमणशील, राज्य क्षेत्र में समुन्नत तथा राज्यवेतनोपजीवी, स्वभाव से हठी और उग्र, दृढ़ तथा निश्चित आय युक्त, वाहनादि सुखों से पूर्ण, चिकित्साक्षेत्र में जानकार, मध्यमायु से अधिक जीवन प्राप्त, उत्तम काल और उत्तम स्थान में देहत्यागी, द्रव्य-संग्रहार्थ सतत प्रयत्नवान् तथापि द्रव्य कोष संग्रह से वंचित, होगा।

(३५२)- इस कुण्डली चक्र में उत्पन्न होने वाला मनुष्य सामान्य कद और पुष्ट देही, उन्नत ललाट, शारीरिक सौन्दर्य युक्त उत्तम गौरवर्ण, साहसी और स्वाभिमानी, विवेकी और चतुर, व्याख्यान स्थापना में प्रवीण, परम मेधावी, विद्याक्षेत्र में कुशल एवं निष्णात, कई पुत्रों का पिता, सुन्दरी- शिक्षिता और गौरांगी पतिव्रता स्त्री का स्वामी, गृहस्थासक्त, ऐश्वर्य युक्त रहन-सहन में प्रवीण, भोग-विलास में दक्ष, ईश्वर और धर्म में आस्थावान्, मानवतावादी, कर्मयोगी, साहस- पुरुषार्थ- बुद्धिकौशल तथा पितृ-सुख सहयोग से समुन्नत और पितृ भक्त, जारिणी माता का पुत्र अथवा मातृ सुख में अल्प, भाई-बहिन और पारिवारिक सुख सहयोग में सामान्य, पितृ-धन और गृहादि लाभी, द्रव्य संग्रहार्थ सतत चेष्टित, राज्य क्षेत्र में समुन्नत एवं राज्यवेतनोपजीवी, दृढ़ और निश्चित आय युक्त, परोपकारी और दयालु, गुह्य अर्शादि रोग पीड़ित तथा नेत्र ज्योति में विकार ग्रस्त, प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी, द्रव्य कोष संग्रह में सामान्य, भाग्योन्नत, मध्यमायु से अधिक जीवन प्राप्त तथा उत्तमकाल और उत्तम स्थान में देहत्याग कर मोक्ष प्राप्ति का अधिकारी होगा।

(३५३) इस जन्म चक्र में जन्म ग्रहण करने वाला जातक परम सुन्दरतायुक्त गौरवर्ण, साहसी और शक्तिशाली, स्वाभि-
मू० सं० मानी, सामान्यकद और पुष्टदेही, उन्नतललाट, अत्यधिक मेधावी और चतुर एवं विनय सम्पन्न, मृदु एवं मधुर कु०
भाषी, विद्याक्षेत्र में पूर्ण विख्यात तथा कई विद्याओं में पारंगत, धर्म विज्ञान साहित्य संगीत - काव्य - ज्योतिषादि प्रेमी, र०
३५३ मातृ-पितृ सुख भोक्ता और उनका भक्त, मानवतावादी एवं कर्मयोगी, विवाद्य वादनों में प्रवीण, विनोदी और चंचल
प्रकृति, तेजवान्, कुल का दीपक, शरीर के दक्षिण अंग में चोट से पीड़ित, यदाकदा मृत्यु तुल्य कष्ट भोगने वाला, गृह-
भूमि- धन- धान्य- भृत्य वाहनादि सुख से पूर्ण, विघ्नयुक्त भाग्योदय में सफल, सतत स्वोन्नति में संलग्न, सुन्दरी शि-
क्षिता - गौरांगी स्त्री का पति, कई पुत्रों का पिता, ईश्वर और धर्म में आस्थावान्, परोपकारी और दयालु, भोग विलास
और रहन सहन में प्रवीण, पर्याप्त धन संग्रही, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में समुन्नत और मान - प्रतिष्ठा सम्पन्न, दीर्घायुष्य
जीवन प्राप्त, गृहस्थासक्त, उत्तम कर्मों के प्रभाव से उत्तम काल और उत्तम स्थान में देहत्यागी तथा मोक्षाधिकारी होगा।
(३५४) इस जन्म कुण्डली में जन्म लेने वाला बालक पुष्टदेही, साहसी और दृढ़ निश्चयी, परमसुन्दर गौरवर्ण, उन्नत ल-
लाट, सामान्य कद, प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी, नेत्रज्योति में त्रुटि का अनुभवी, मातृ-पितृ सुख सहयोग का
भोक्ता, विद्याक्षेत्र में पारंगत, सफल वक्ता, मृदुल और चंचल प्रकृति, भोग-विलास युक्त रहन-सहन में ऐश्वर्यमय
जीवन व्यतीत करने वाला, पार्श्व-पीड़ा युक्त, विरोधी पक्ष पर सर्वथा विजयी, पैतृक गृह- भूम्यादि लाभी, राज्य और सा-
माजिक क्षेत्रों में मान प्रतिष्ठा प्राप्त, समुन्नत, गृह- भूमि - धन- धान्य- वाहनादि सुख से पूर्ण, धाम प्रवीण और विवेकी,
धन संग्रहार्थ सर्वथा तत्पर और पर्याप्त धनी, भाई-बहिन और पारिवारिक सुख-सहयोग का भागी, यदाकदा सुरापायी,
गृहस्थासक्त; सुन्दरी, गौरांगी शिक्षिता - सुशीला स्त्री का सुख भोक्ता, कई पुत्रों का पिता, अनेक विद्याविद् तथा
संस्कृति और ज्योतिष तथा काव्यांग प्रेमी, भाग्योन्नति में कुछ विघ्न युक्त सफलता प्राप्त, कभी कभी मृत्यु-तुल्य कष्टों को
प्राप्त कर्ता, ईश्वर और धर्म में आस्थावान्, कर्मयोगी और मानवतावादी, उत्तम स्थान में देहत्यागी व दीर्घायुष्य होगा।

(३५५)- इस जन्म चक्र में उत्पन्न होने वाला व्यक्ति सुन्दर गौरवर्ण, उन्नत ललाट, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, साहसी और स्वाभिमानी, सामान्य कद और पुष्ट देही, सत्यवादी एवं न्याय तथा अनुशासन प्रिय, परोपकारी और दयालु, तेजस्वी, कुल का दीपक, भाई बहिन और पारिवारिक सुख-सहयोग सम्पन्न, परम बुद्धिमान और मेधावी तथा चतुर, विद्या-क्षेत्र में पूर्ण पारंगत, कई पुत्रों का पिता, विवाद-स्थापना में प्रवीण, क्रुद्ध उग्र तथा चंचल प्रकृति, सकल वाक् पटु, धन-धान्य-गृह-भूमि-भृत्य-वाहनादि सुख से पूर्ण, ईश्वर और धर्म में आस्थावान, रक्त-विकार युक्त, प्रायः स्वस्थ और नीरोग, मातृ-सुख में अल्प और पितृ-सुख-सहयोग से समुन्नत, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में मान प्रतिष्ठा प्राप्त, द्रव्य संग्रहार्थ सर्वदा चेष्टित और यथेष्ट धनी तथा भाग्यशाली, सुन्दरी-शिक्षिता-गौरांगी-कृशाङ्गी सुशीला स्त्री का भोक्ता, विदेश यात्रा के योग से युक्त, कर्मयोगी और पुरुषार्थी, दृढ़ तथा निश्चित द्रव्य-लाभ से प्रभावित, उत्तम कर्मों का सम्पादक, भोगी-विलासी, रहन-सहन और ऐश्वर्यमय जीवन में सफल, दीर्घायुष्य प्राप्त होगा।

(३५६)- इस जन्म-चक्र में उत्पत्ति ग्रहण करने वाला पुरुष परम सुन्दरता युक्त, गौरवर्ण, सामान्य कद और सामान्य देही, उन्नत ललाट, साहसी और स्वाभिमानी, परम चतुर और विवेकी, क्रुद्ध उग्र तथा चंचल प्रकृति युक्त विनोदी स्वभाव, परम पुरुषार्थी, सुरा-सुन्दरी का भोक्ता, साहस और बुद्धि कौशल से कार्य क्षेत्र में सफल, द्रव्य विषय में अनेक उतार चढ़ाव पाने वाला, विघ्नयुक्त भाग्योन्नति, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, राज्य द्वारा धन लाभी, माता-पिता का सुख भोक्ता तथा पिता की अपेक्षा मातृ-सेवी, पैतृक धन और गृह-भूम्यादि लाभी, सुन्दरी-कृशांगी-गौरवर्णा-स्वैरिणी स्त्री का पति, कई पुत्रों का पिता, विद्या क्षेत्र में पारंगत, योगी और मंत्रवेत्ता, ज्योतिष और साहित्य प्रेमी, भाई बहिन और पारिवारिक सुख-सम्बन्धों में सामान्य, विरोधी पक्ष पर बुद्धि कौशल और वाक्पटुता से सफल, द्रव्य-संग्रह और लक्ष्य साधन पूर्ति में कुशल और तत्पर, धन-धान्यादि और ऐश्वर्य युक्त रहन-सहन में सफल और सुखी, यदा कदा द्रव्य की तंगी का अनुभवी, द्रव्य संग्रह में सामान्य, मध्यमायु से अधिक जीवन प्राप्त, स्वार्थ साधन में तत्पर होगा।

(३५७)- इस जन्माङ्ग में जन्म लेने वाला जातक सुन्दर, सुदीर्घ देही, कृशकाय, गौरवर्ण, तेजस्वी और उन्नत ललाट, अत्यधिक साहसी और अनुशासनप्रिय, उद्यमी और उत्साही, स्वभाव से कुछ उग्र और चंचल, दूरदर्शी, भाई-बहिन से युक्त तथा उनसे और पारिवारिक-सम्बन्धों में सामान्य, विद्या-क्षेत्र में कुछ अवरोध युक्त समुन्नत, पितृ-मातृ-सुखभोक्ता और पैतृक-धन तथा गृहादि लाभी एवं पितृभक्त, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में समुन्नत और मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, वरिष्ठ अधिकार सम्पन्न; सुशिक्षिता, सुशीला, धर्मपरायणा स्त्री का पति, सन्तान युक्त और सन्तान की ओर से चिन्तित, भाग्योदयार्थ सतत प्रयत्नशील, किन्तु अनेक बाधाओं के साथ भाग्यशाली, प्रसिद्ध कर्मयोगी, मानवतावादी, वृद्धावस्था में ईश्वर और धर्म के प्रति आस्थावान्, दृढ़ और निश्चित आय सम्पन्न, प्रभावशाली व्यक्तित्व और गुप्त नीति से विरोध का दमनकारी, गृहस्थी में आसक्त, धन संग्रहार्थ चिन्तित तथा सामान्य द्रव्य संग्रही, रक्त-पित्त तथा मानसिक विकार से पीड़ित, मध्यायुष्य प्राप्त, उत्तम चिन्तनशील और विचारक, उत्तम स्थान व उत्तम काल में देह त्यागने वाला होगा।

(३५८)- इस जन्माङ्ग चक्र में जन्मा हुआ बालक सामान्य कद, उन्नत ललाट, गौरवर्ण, परम सुन्दर और तेजस्वी, अत्यधिक बुद्धिमान तथा दूरदर्शी एवं विवेक सम्पन्न, सुरा-सुन्दरी का प्रेमी, भोग-विलास और रति क्रीड़ा एवं ऐश्वर्य-पूर्ण रहन-सहन में दक्ष, विद्याक्षेत्र में सामान्य किन्तु अनेक विद्याविद् होने से विद्वानों की कोटि में माना जाने वाला, सुन्दरी पुष्टांगी-उदर विकार ग्रस्ता-श्यामा-सुशीला स्त्री का पति और अनेक कामिनियों का भोक्ता, द्रव्य कोष संग्रह में सामान्य, गृह-भूम्यादि लाभी, विनोदी और चंचल तथा उदारमना, भाई-बहिन और पारिवारिक-स्वजन सम्बन्धों में सामान्य, ईश्वर और धर्म में आस्थावान् किन्तु सामान्य धर्म पालक, राज्य वेतनोपजीवी और उच्च अधिकारयुक्त मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, धन-धान्य-वाहनादि सुख से पूर्ण, सन्तान की ओर से चिन्तित और विलम्ब से सन्तान प्राप्तकर्ता, लेखा-कार्य सम्पादना में प्रवीण, साहित्य-काव्य-ज्योतिषादि प्रेमी, कई ग्रन्थों का प्रणेता, अवरोध युक्त भाग्योन्नत, मध्यायु से कुछ अधिक जीवन पाने वाला, मूत्रेन्द्रिय अथवा शुक्र रोग से पीड़ित, गृहस्थासक्त, किसी स्त्री से द्रव्य का घोखा प्राप्तकर्ता होगा।

भृ० सं० २३३

कु० १०

(३५९) इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न होने वाला व्यक्ति उन्नत ललाट, प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी, गौरवर्ण और पुष्ट देही, सामान्यकद, साहसी स्वाभिमानी, गम्भीर- सत्यवादी और न्याय तथा अनुशासन प्रिय, परम मेधावी, बुद्धिमान एवं विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, विद्याक्षेत्र में सामान्य तथापि अनेक विद्या और कलाविद, हठी और दृढ़ निश्चयी, उद्यमी और उत्साही, कटुसत्यवक्ता होने के कारण कुछ अपयश ग्रहण करने वाला, स्वभाव से कुछ उग्र, धन- धान्य- गृह- भूमि- भृत्य- वाहनादि सुख से पूर्ण, ईश्वर और धर्म में आस्थावान, पितृ-भक्त और मातृ- पितृ-सुख से अनन्य, प्रसिद्ध कर्मयोगी, सतत उन्नति में संलग्न, राज्य क्षेत्र में वरिष्ठ पदासीन और प्रतिष्ठा प्राप्त, सुन्दरी सुघ्रांगी- सरला- सुशीला- पतिव्रता- स्त्री का पति, सन्तान की ओर से चिन्तित, दत्तक पुत्र युक्त अथवा विलम्ब से सन्तान प्राप्त, साहित्य- संस्कृति- ज्योतिषादि प्रेमी, स्ववाक्य स्थापना में प्रवीण, रत्न-परख में दक्ष, भाग्योन्नत, नेत्रज्योति में त्रुटि का अनुभवी, मध्यायुष्य प्राप्त, सामान्य द्रव्य संग्रही, परोपकारी और दयालु, मरणकाल में वीर्यविकार अथवा गुह्य रोग की पीड़ा पाने वाला होगा।

(३६०) इस जन्म कुण्डली में उत्पत्ति ग्रहण करनेवाला पुरुष सामान्य कद और पुष्ट देही, सामान्य गेहुंआ वर्ण, सुन्दर और तेजस्वी, पुष्ट देही, परम विवेकी और चतुर, दूरदर्शी, धीर-वीर - गम्भीर और शान्त तथा कुछ चंचल प्रकृति, विद्याक्षेत्र में अनेक विद्याओं में पूर्ण पारंगत और विख्यात, व्यवसाय और राज्य-पक्ष में समुन्नत तथा सभी क्षेत्रों में मान- प्रतिष्ठा प्राप्त, भाग्योन्नति में त्रुटि का अनुभवी, सुन्दरी- शिक्षिता- सामान्य सरला- पतिव्रता- पुष्टांगी- श्यामा स्त्री का पति अथवा द्विभार्या योग प्राप्त, मातृ- पितृ- सुख भोक्ता और सभी का आदरकर्ता, अनेक विद्याविद तथा मेधावी, उत्तम गुणी पुत्रों का पिता और उनसे सुख प्राप्त कर्ता, परम धार्मिक और संस्कृति तथा ईश्वर का आराधक, द्रव्यकोष संग्रहार्थ सतत प्रयत्नशील तथापि द्रव्य-संग्रह में त्रुटि का अनुभवी, गृह- भूमि- लाभ से युक्त, गृहस्थासक्त, प्रभावशाली व्यक्तित्व और वाक्कौशल से विरोधियों का सर्वथा विजेता, उत्तम कर्म तथा उत्तम गुणों का सम्पादक, पारिवारिक सुख में न्यून, भाई बहिन से विरोध प्राप्त, मध्यायु से कुछ अधिक जीवन प्राप्त, नेत्रज्योति में त्रुटि प्राप्तकर्ता होगा।

भृ० सं० ६३३ कु० १०

(३६१)- इस कुण्डली चक्र में जन्म लेने वाला जातक परम सुन्दर गौरवर्ण, उन्नत ललाट, साहसी, निर्भीक, धीर-वीर-गम्भीर और प्रशान्त चित्त, स्वाभिमानी, दूरदर्शी, सत्य एवं न्याययुक्त प्रिय मधुर भाषी, सर्वजनप्रिय, परोपकारी और दयालु, अनेक धार्मिक कृत्यों का सम्पादन, ईश्वर-धर्म और मातृ-पितृ भक्ति में निष्ठावान, उच्चकोटि का मेधावी, विद्या और सन्तान क्षेत्र में पूर्ण समुन्नत और सुखी, धर्मशास्त्रों एवं अन्यकलाओं में प्रवीण, सत्संग प्रेमी, भाई-बहिन और पारिवारिक सुख सहयोग सम्पन्न, कुल का दीपक, पैतृक धन-गृह-भूम्यादि लाभी, द्रव्यकोष-धन-धान्य-भृत्यवाहनादि सुखों से पूर्ण, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में पूर्ण मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, कभीकभी द्रव्य विषयक त्रुटि का अनुभवी, प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी, विरोधवर्जित, छोटे भाई से कुछ विरोध प्राप्त, सामान्य कद और पुष्ट देही, भाग्यवान् तथा भाग्यशालिनी-सर्वगुण सम्पन्ना सुन्दरी-धार्मिका स्त्री का पति और उससे सुख सहयोग प्राप्त, प्रायः स्वस्थ और नीरोग, उदर विकार अथवा गुह्य स्थान में पीड़ा पाने वाला, दीर्घायुष्य सम्पन्न, दैवी और मानवीय गुणों से सम्पन्न, कर्मयोगी, व्यवहार कुशल होगा।

(३६२)- इस जन्म कुण्डली में जन्मा हुआ बालक साहसी और स्वाभिमानी, माता-पिता का पूर्ण भक्त किन्तु मातृसुख में कमी का अनुभवी, सुन्दर गौरवर्ण, उन्नत ललाट, सामान्य कद और पुष्ट देही, प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी, अनेक धार्मिक कृत्यों का सम्पादक, सर्वगुणसम्पन्ना-सुन्दरी-धार्मिका स्त्री का पति और उससे सुख सहयोग प्राप्त, गृहस्थासक्त, सत्य एवं न्याययुक्त प्रियतापूर्ण, मधुर भाषी, विद्या और सन्तान-क्षेत्र में पूर्ण निष्णात तथा सुखी, पैतृक धन गृह-भूम्यादि लाभी तथा स्वधन से भी पर्याप्त धनी और समुन्नत, यदाकदा द्रव्य की कमी का अनुभवी, भाग्योदय में विघ्नयुक्त सफलता प्राप्त, पारिवारिक सुख सहयोग युक्त किन्तु छोटे भाई और बहिन से विरोध प्राप्त, धर्म तथा ईश्वर में पूर्ण निष्ठ, परम मेधावी, विचक्षण बुद्धि, दूरदर्शी, सर्वत्र प्रशंसित तथा राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, सत्संगी, परोपकारी और दयालु, कर्मयोगी, उत्साही और उद्यमी, धन-धान्य भृत्यवाहनादि सुखों से पूर्ण, भाग्योन्नत, बहुचर्चित और लोक विश्रुत, मध्यमायु से कुछ अधिक जीवन प्राप्त, रक्तविकार-उदररोग से उत्तम स्थान में देहत्यागी होगा।

भृ० सं० ९३३ कु० २०

(३६३)- इस जन्मांग में उत्पन्न हुआ व्यक्ति सुन्दर गौरवर्ण, कृशकाय और दीर्घवपु, उन्नत ललाट, साहसी और स्वाभिमानी, अनुशासनप्रिय, कुछ कठोर बातुल, प्रिय और मधुर भाषी, सभी की सेवा में तत्पर, मृदुल और उदार चेता, मेधावी तथा बुद्धिमान, स्वोन्नति में सतत संलग्न, स्त्री-विद्या-सन्तान-सुख में न्यून अथवा बिल्कुल, किंवा बाल्यकाल में गृहत्याग कर अन्यत्र निवास करने वाला, सुरा सुन्दरी का प्रेमी, अन्य संग्रहीत स्त्री का स्वामी अथवा एकाकी जीवन युक्त, मातृ-पितृ पारिवारिक बन्धु-बान्धवादि सुख से हीन, अधिक खर्चीला, कुछ घोर प्रकृति अथवा द्रव्यापहरण करने में पटु, यत्र तत्र भ्रमणशील, राजकीय बंधन या दण्ड ग्रस्त, दस्युओं द्वारा पीड़ित, माता को अधिक कष्ट देने वाला, भयभीत और त्रस्त जीवन युक्त, गृह-भूमि का लाभ प्रायः, धन धान्यादि युक्त होते हुए भी तत्सुख से नितान्त वर्जित, स्त्री की बहिन से व्यभिचार में रत, कई बार मृत्यु-तुल्य कष्टों को प्राप्त, मध्यायु अथवा उससे कुछ ही अधिक जीवन प्राप्त, सन्तान की ओर से चिन्तित अथवा वृद्धावस्था में ही दुर्गुणी सन्तान से पीड़ित होकर देह-त्याग करने वाला होगा।

(३६४)- इस जन्मांग चक्र में उत्पत्ति ग्रहण करने वाला पुरुष परम सुन्दर गौरवर्ण, उन्नत ललाट, सामान्य कद और पुष्ट देही, मातृ-सुख में अल्प और पर्याप्त द्रव्य संग्रही, पितृ-सुख का पूर्ण भोक्ता और मातृ-पितृ भक्त, पितृ-प्रशंसक, साहसी और स्वाभिमानी, अनुशासन-सत्य-न्याय युक्त, प्रिय तथा मधुर भाषी, परोपकारी और दयालु, राज्य वेतनोपजीवी, साधारण गृह-भूम्यादि लाभी, भाग्योदयार्थ सतत प्रयत्नशील तथापि भाग्योदय से हीन, कुछ गुप्त नीति-रीति से कार्य करने वाला, सन्तान-सुख से वर्जित, हीन जाति के पुत्र को दत्तक रूप में ग्रहण करने वाला, धर्मपत्नी-सुख से नितान्त वर्जित, अन्य स्त्रियों में रमणशील, पितृ-क्षेत्र से अन्यत्र निवासी, बहिन का प्रति पालक, पिता के भाई-चाचा-ताऊ से उत्पीड़ित, उद्यमी और उत्साही, ईश्वर और धर्म में आस्थावान, तीर्थाटनी किन्तु धर्म का सामान्य-पालक, विद्या प्रायः बहुत ही साधारण, अधिक खर्चीला, कुछ परास्त जीवन व्यतीत करने वाला, मध्यायु प्राप्त, गुदार्श और उदर-विकार पीड़ित, नेत्रज्योति में त्रुटि का अनुभवी, यदा-कदा धन लाभ और भाग्योदय युक्त, सामाजिक और राजकीय मान प्रतिष्ठा में न्यून होगा।

(३६५) इस जन्म लग्न में जन्मा हुआ मानव उन्नत ललाट, गौरवर्ण, दीर्घ और कृशदेही, अत्यधिक साहसी और स्वाभिमानी, प्रकृति से क्रुद्ध उग्र, सत्य एवं अनुशासन प्रिय, सत्यान्वेषण में तत्पर, मातृ-सुख में न्यून, पिता का पूर्ण सुख प्राप्त, पैतृक धन से समुन्नत, भुजाओं से उपार्जित धन से सुखी और भाग्यशाली, पिता का प्रशंसक, गृह-भूमि-धन-धान्यादि से पूर्ण, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, प्रसिद्ध कर्मयोगी, स्त्री की ओर से कुछ उदासीन, भाई-बहिन और परिवारीजनों से आपत्तियाँ और दुःख पाने वाला; अनेक स्थानों या कार्यार्थ भ्रमणशील और तीर्थाटनी, सन्तान-सुख में न्यून और विलम्ब से उत्पादन सन्तान युक्त तथा सन्तान की ओर से चिन्तित, विद्याक्षेत्र में त्रुटि या न्यूनता के साथ समुन्नत, अनेक योजनाओं का निर्माता, प्रभावशाली व्यक्तित्व, धनी और उसी विरोधी पक्ष पर विजयी, यदाकदा द्रव्य विषयक उच्च लाभ और हानि प्राप्तकर्त्ता, दूरदर्शी, सफल नियन्त्रक, रहन-सहन में अधिक व्यय तथा अधिक खर्चीला, गुह्यस्थान पर रोग से पीड़ित, मध्यम पुत्र सम्पन्न, ईश्वर और धर्म के प्रति आस्थावान तथा धर्मपालन में त्रुटियुक्त, सदाचारी और पवित्र हृदय, कठोर-वाक्य कहने वाला; उद्दण्ड और चंचल प्रकृति युक्त होगा।

(३६६)- इस जनुर्लग्न में जन्म ग्रहण करने वाला मनुष्य परम सुन्दर और गौरवर्ण, शारीरिक सौन्दर्य में युक्त अथवा माथे पर व्रण या चोट का निशान पाने वाला, मध्यमकद, सामान्य और पुष्टदेही, माता-पिता का पूर्ण सुख भोक्ता और माता का सेवाभावी, चतुर-धीर-वीर-साहसी-नीति-निपुण, गुणग्राहक, परोपकारी और दयालु, हठी और दृढ़ निश्चयी, प्रतिकार की भावनाओं से युक्त, दूरदर्शी और मेधावी, विद्याक्षेत्र में सामान्य, गुप्त नीति-रीति से विरोधियों का प्रबल दमनकारी, भुजाओं से उपार्जित धन द्वारा सुखी और भाग्यशाली, उत्तम धार्मिक कृत्यों का सम्पादक, ईश्वर और धर्म में आस्थावान, पाँच पुत्रों का पिता, मानसिक रूप से अशान्त, पर्याप्त गृह-भूमि-धन-धान्य-भृत्य वाहनादि साधनों से पूर्ण, सरला-शिक्षिता-गौरांगी-पृथुलासुन्दरी पतिव्रता-धार्मिक स्त्री का पति, प्रभावशाली व्यक्तित्व तथा वाक्पटुता से प्रत्येक कार्यक्षेत्र में सफल, पिता की अपेक्षा पैतृक धन प्राप्तकर्त्ता, गुप्त रोग अथवा हृदरोग का अनुभवी, अनेक कार्य करने वाला, सामाजिक मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, उत्साही और परिश्रमी, चिन्तनशील और विचारक, नेत्रज्योति में त्रुटि का अनुभवी, भाई-बहिन और परिवारीजनों से सामान्य सम्बन्धयुक्त होगा।

(२६७)- इस जन्माङ्ग में जन्मा हुआ व्यक्ति मध्यम श्यामवर्ण, रक्तविकारी, सर्वथा अशान्तचित्त, साहसी और स्वाभिमानी, प्रतीकार भावनाओं से युक्त, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, स्वार्थसिद्धि में सर्वथा तत्पर, मलिन और कुचैल चित्त, दूरदर्शी, विवेकी, दीर्घबुद्धि और सामान्य पुष्ट, विद्याक्षेत्र में अवरोध के साथ सफल, ईश्वर और धर्म में आस्थावान् किन्तु पुरुषार्थ कर्म को अधिक महत्व देने वाला और धर्म-पालन की यथार्थता से हीन, मातृ-सुख प्राप्त और पितृ-सुख में सामान्य, निरन्तर धन संग्रहार्थ चेष्टित, सुन्दरी, शिक्षिता, गौरांगी स्त्री का पति और अन्य स्त्री का भी भोक्ता, सन्तान युक्त किन्तु सन्तान की ओर से शत्रुबाधा में चिन्तित और दुःखी तथा तिरस्कृत, सन्तान के कारण भाग्यशाली, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में मान प्रतिष्ठा में न्यून, वाक्पटुता और प्रभावशाली व्यक्तित्व से विरोधी पर विजययुक्त, भाई-बहिन और पारिवारिक सुख सम्बन्धों में सामान्य, मध्यमायुष्य से अधिक जीवन प्राप्त, उदर-विकार या संग्रहणी रोग से पीड़ित होकर उत्तम स्थान में देहत्याग कर पुनः मनुष्य जन्म ग्रहण करने वाला, गृह-भूमि लाभ में सामान्य, रहन-सहन में अधिक खर्चीला होगा।

(२६८)- इस जन्माङ्ग चक्र में जन्म लेने वाला पुरुष दीर्घदेही, कृशकाय, श्यामवर्ण, अत्यधिक साहसी और गुप्त योजनाओं के निर्माण में पटु तथा गुप्त-रीति-नीति से कार्य करने में प्रवीण, मलिन और कुचैल चित्त, स्वार्थ-साधन और लक्ष्य पूर्ति में तत्पर, पुरुषार्थी और उत्साही, किसी भी दुस्तर कार्य को तुच्छ मानने वाला, विद्याक्षेत्र में अवरोध के साथ सफल, धन संग्रहार्थ निरन्तर उद्यमी और पर्याप्त धनी, कृपणतायुक्त, सुन्दरी शिक्षिता और गौरांगी स्त्री का पति, ईश्वर और धर्म में साधारण आस्था रखने वाला, भाग्यशाली, कई पुत्रों का पिता, स्त्री और गृहस्थ की ओर से उदासीन, भ्रमणशील वृत्तियुक्त तथा सुरासुन्दरी का प्रेमी, रक्तविकार और संग्रहणी रोग से पीड़ित, नेत्र-ज्योति में त्रुटि का अनुभवी, अन्य स्त्री से धोखा खाने वाला, पितृ-सुख से वंचित, मातृ-सुख-सहयोग और स्त्री-सहयोग से समुन्नत तथा भाग्योदय प्राप्तकर्त्ता, सन्तान की ओर से चिन्तित तथा अपमानित जीवन युक्त, दीर्घायुष्य प्राप्त, मरण काल में उत्तम स्थान में देहत्यागी और पुनः मानवजीवन प्राप्त, भाई-बहिन एवं पारिवारिक सुख-सम्बन्धों में सामान्य, मान-प्रतिष्ठा में न्यून, विरोधी दल पर प्रभावशाली होगा।

(३६९) इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न हुआ जातक दीर्घचित्त, कृशकाय, सामान्य श्यामवर्ण, सर्वथा अशान्त चित्त, दूरदर्शी और अत्यधिक साहस सम्पन्न, किसी भी कार्य को करने में सक्षम, दृढ़ और अधिक आय के लिये सर्वथा उद्यमशील, उत्साही, विद्या क्षेत्र में पूर्ण समुन्नत, कई गुणी पुत्रों का पिता, पिता से द्वेष रखने वाला, मातृ-सुख सहयोग से तथा स्त्री के कारण समुन्नत और अवरोध योग से भाग्योन्नत, उत्साह और पुरुषार्थ एवं सन्तान के कारण भाग्यवान्, मध्यमायु से कुछ अधिक जीवन प्राप्त, मान-प्रतिष्ठा युक्त किन्तु सन्तान द्वारा तिरस्कृत, सुन्दरी शिक्षिता, गौरांगी स्त्री का पति, भ्रमणशील, अनुशासन-प्रिय, आरम्भ में स्त्री से कुछ विरोध रखने वाला, भाई-बहिन और पारिवारिक सुख सम्बन्धों में सामान्य, विरोधियों की चिन्ता न करने वाला और लक्ष्यपूर्ति की ओर अग्रसर, पर्याप्त धनी, ईश्वर-धर्म और पौरुष कर्म में आस्थावान्, यदाकदा धर्मपालक, गृह-भूमि-द्रव्य-धन-धान्यादि युक्त, कभी-कभी गम्भीर हानि से चिन्तित, नेत्रज्योति में त्रुटि का अनुभवी, उदरशूल और अन्त्र-शोथ से पीड़ित, उत्तम स्थान में देहत्यागी और स्वर्गादि लोकों में जाने वाला होगा।

(३७०) इस जन्म लग्न में उत्पन्न होने वाला बालक उन्नत ललाट, गौरवर्ण, पुष्ट देही और सामान्य कद, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, साहसी और स्वाभिमानी, सत्य और न्याय तथा अनुशासन प्रिय, पिता और माता का सुख भोक्ता तथा पितृसेवी और पितृभक्त, पितृक्षेत्र का स्थायी निवासी, विद्या क्षेत्र में विघ्नयुक्त सफलता प्राप्त, सुन्दरी शिक्षिता और गौरांगी-पतिव्रता स्त्री का पति, राज्य क्षेत्र में समुन्नत और प्रतिष्ठायुक्त पदासीन, वेतनोपजीवी, ईश्वर और धर्म तथा पुरुषार्थ कर्म में आस्थावान्, विघ्नयुक्त भाग्योन्नत, सन्तान की ओर से चिन्तित अथवा विलम्ब से सन्तान प्राप्त, विरोध से हीन, तेजस्वी और योगादि शास्त्रों का अध्येता, ध्यानयोग में तत्पर, उत्तम कर्म करने वाला, सदाचारी और पवित्र, अधिक व्ययी होने पर भी गृह-भूमि के लाभ से युक्त, भाई-बहिन और पारिवारिक सुख-सम्बन्धों में सामान्य, सत्संग प्रेमी तथा गुणियों का आदर कर्ता, मध्यमायु से कुछ कम प्रौढ़ावस्था का जीवन प्राप्त, हृद्रोग अथवा रक्त-विकार युक्त, उत्तम स्थान व काल में देहत्यागी, शरीर के वाम पार्श्व में पीड़ा युक्त, अथवा वाहनादि से आघात पाने वाला; गृहस्थ में आसक्त, मरणोपरान्त कीर्ति सम्पन्न लोकान्तर प्राप्त होगा।

(361) इस जन्माङ्ग में जन्म लेने वाला मानव उन्नत ललाट, गौरवर्ण, पुष्ट देही, सामान्य कद, साहसी और स्वाभिमानी, सत्य-न्याय एवं अनुशासनप्रिय, विद्याक्षेत्र में पूर्ण पारंगत, अनेक विद्या कलाविद्, चतुर मेधावी और ज्ञान सम्पन्न, मातृ-पितृ सुख भोक्ता, पिता का भक्त और प्रशंसक, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में उच्च पदासीन तथा मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, स्ववाक्य साधना में प्रवीण, धन-धान्य-गृह-भूमि-भृत्य-वाहनादि सुख से पूर्ण, ईश्वर और धर्म में पूर्ण आस्थावान्, कई पुत्रों का पिता, प्रसिद्ध कर्मयोगी, शत्रु और विरोधियों पर बुद्धि-कौशल निरन्तर विजयी, नेत्रज्योति में त्रुटि का अनुभवी, मुख-मस्तक पर आघात के चिन्ह युक्त, भ्रमणशील, भाग्योदय और द्रव्य संग्रहार्थ सर्वथा चेष्टित और प्रयत्नशील किन्तु द्रव्य-संग्रह में त्रुटि का अनुभवी, परोपकारी और दयालु, मध्यायु से कुछ अधिक जीवन युक्त, सुन्दरी, शिक्षिता, सरला, धार्मिका और गौरांगी पतिव्रता स्त्री का स्वामी, गृहस्थासक्त, उत्तम कार्यों का सम्पादक, बहुचर्चित और बहुविश्रुत, स्वार्थ के साथ परमार्थ में तत्पर, विचक्षण बुद्धि, क्रियाशील, वामपार्श्व में प्रायः पीड़ा ग्रस्त होगा।

(362) इस जन्माङ्ग चक्र में जन्म ग्रहण करने वाला मनुष्य साहसी और स्वाभिमानी, पूर्ण मेधा सम्पन्न, पराक्रमी और चतुर, भाग्योदय में अवरोध और विघ्नों के साथ सफल, सत्य-न्याय और अनुशासन-प्रिय, विद्या क्षेत्र में निष्णात तथा अनेक विद्या कलाविद, दूरदर्शी, उन्नत ललाट, गौरवर्ण, सामान्य कद और पुष्ट देही, माता-पिता का पूर्ण सुख भोक्ता तथा उनका सेवा भावी और प्रशंसक, मित्र सहयोग से राज्य और सामाजिक क्षेत्र में पूर्ण समुन्नत तथा मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, मध्यमायु से कुछ अधिक जीवन प्राप्त, कई पुत्रों और एक कन्या का पिता, सुन्दरी सुशिक्षिता-सरला-धार्मिका-पतिव्रता-कुल स्वरूप स्त्री का पति, पूर्ण मेधा सम्पन्न, गृहस्थानुरक्त, गुणीजनों का आदरकर्ता, परोपकारी और दयालु, नेत्र ज्योति तथा शारीरिक पीड़ा में मृत्यु तुल्य कष्ट का अनुभवी, कुल का दीपक, बुद्धि कौशल से विरोधियों का विजेता, धन-धान्य-गृह-भूमि-भृत्य-वाहनादि सुख से पूर्ण, लोक-विश्रुत, प्रसिद्ध कर्मयोगी, भाई-बहिन और परिवारीजनों का प्रिय, दृढ़ आय सम्पन्न, स्ववाक्य-साधना में पटु, द्रव्य-संग्रहार्थ चेष्टित और पर्याप्त धनी, भ्रमणशील, ईश्वर और धर्म में निष्ठावान् होगा।

(३६३)- इस जन्म लग्न में उत्पन्न हुआ व्यक्ति सुन्दर गौरवर्ण, उन्नत-ललाट, दीर्घ और उच्च देही, प्रभावशाली व्यक्ति-त्व का धनी, हठी और दृढ़ निश्चयी तथा अनुशासन-प्रिय, परम सुन्दर, नेत्र ज्योति एवं रक्तविकार का अनुभवी, अत्यधिक स्वाभिमानी और साहसी, दूरदर्शी, गुप्त नीति रीति से कार्य करने में सक्षम और योजनाओं के निर्माण में पटु, धन-धान्य, गृह-भूमि-भृत्य-वाहनादि सुख से पूर्ण, भाई-बहिन और परिवार की चिन्ता और से ग्रस्त, सुन्दरी शिक्षिता स्त्री का पति, सन्तान की ओर से चिन्तित तथा विलम्ब से सन्तान प्राप्त, परम धार्मिक और ईश्वर में पूर्ण निष्ठा सम्पन्न, विद्या-क्षेत्र में कुछ अवरोध युक्त पूर्ण सफल, वाक् प्रवीण, प्रभावशाली व्यक्तित्व से विरोधी पर सफल, उत्तम कार्यों का सम्पादक, मातृ-सुख में स्वल्प और पितृ-सुख-सहयोग प्राप्त समुन्नत, पिता से कुछ मतभेद युक्त पितृ-भक्त, भाग्यशाली, नूतन गृह का निर्माता, कुल-दीपक, यदा कदा भाग्योदय में पद सम्बन्धी विघ्न ग्रस्त, उदर शूल या संग्रहणी से पीड़ित, पूर्ण भोजनी, मध्यमायुष्य प्राप्त, वृद्धावस्था में सुखी, उत्तम स्थान और उत्तम काल में धर्मपूर्वक देहत्यागी होगा।

(३६४)- इस जन्म लग्न में उत्पत्ति ग्रहण करनेवाला पुरुष परम सुन्दर, गौरवर्ण, उन्नत ललाट, प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी, सामान्य कद, कुशकाय, परम विवेकी और चातुर्य से कार्य करने में सक्षम, सत्य-न्याय और अनुशासन प्रिय, पिता का पूर्ण सुख भोक्ता तथा पितृ भक्त और पितृ-सहयोग से समुन्नत, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में पूर्ण उन्नत और मान प्रतिष्ठा प्राप्त, प्रभावशाली व्यक्तित्व और वाक् चातुर्य से विरोध का विजयी, भाई बहिन और परिवार की चिन्ता और से ग्रस्त, धन-धान्य-गृह-भूमि लाभ से पूर्ण, ईश्वर और धर्म में पूर्ण आस्थावान्, षट्शास्त्र अध्येता, अनेक उत्तम कर्मों का सम्पादक, परोपकारी और दयालु, तीर्थाटनी, सुन्दरी शिक्षिता, पतिपरायणा स्त्री का पति, गृहस्थासक्त, भाग्योदयार्थ निरन्तर चेष्टित, सज्जनों का सत्कारक, पूर्ण मेधा और ज्ञान सम्पन्न, उत्तम गुणी पुत्र का पिता, कन्या की ओर से चिन्तित, विद्या-क्षेत्र में पूर्ण विख्यात, वाक् चातुर्य युक्त किन्तु कुछ गम्भीर और शान्त रहने वाला, सभी से समादृत, विरोध हीन, पूर्ण भाग्यशाली और क्रियाशील, भाग्य की अपेक्षा कर्म को महत्व देने वाला, मध्यमायुष्य तक जीवन प्राप्त, उत्तम देहत्यागी होगा।

(३६५)- इस जन्म-चक्र में उत्पन्न हुआ मानव (सुन्दर गौरवर्ण, उन्नत ललाट, दीर्घ और पुष्टदेही, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, साहसी और स्वाभिमानी, धीर - उग्र - और शान्त प्रकृति, विवेकी और दूरदर्शी, प्रमादी एवं आलसी, मित्र-सहयोग से समुन्नत, तथापि पिता से कुछ मतभेद रखनेवाला, मातृ-सुख का अल्प भोक्ता, चतुर और वाणी प्रगल्भ, विद्याक्षेत्र में कुछ अवरोध के साथ निष्णात, अनेक विद्याविद्, ईश्वर और धर्म में निष्ठावान् तथा भाग्यवादी और एवं धर्म कार्यों का सम्पादक, विमाता योग की प्राप्ति से सम्मानित, सन्तान की ओर से चिन्तित किन्तु सन्तान युक्त, परोपकारी और दयालु होने के साथ निज स्वार्थ-सिद्धि में तत्पर, हठी और दृढ़ निश्चयी, गृह-भूमि लाभ में सामान्य, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, भाई-बहिन और पारिवारिक सम्बन्धों में सामान्य, द्रव्य-संग्रह को अधिक महत्व प्रदान करनेवाला और पर्याप्त धनी, मध्यमायुष्य से अधिक जीवन प्राप्त, उत्तम कार्यों के कारण उत्तम काल एवं उत्तम स्थान में देहत्याग कर पुनः मानव योनि में उच्च वर्ण-कुल में सुख- ऐश्वर्य सम्पन्न होगा।

(३६६)- इस जन्मलग्न में उत्पत्ति ग्रहण करनेवाला मनुष्य दीर्घ और पुष्टदेही, सुन्दर गौरवर्ण, उन्नत ललाट, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, मातृ-पितृ-सुख भोक्ता, साहसी और स्वाभिमानी, प्रमाद एवं आलस्य हीन, सर्वथा अपनी लक्ष्यपूर्ति एवं उन्नति में तत्पर, धीर- शान्त तथा कुछ उग्र प्रकृति, कन्या एवं पुत्रादि से युक्त, विद्याक्षेत्र में पूर्ण पारंगत, चतुर- विवेकी एवं उद्यमी, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, पिता से कुछ मतभेद रखने वाला, प्रायः स्वस्थ और नीरोग, गृह- भूमिलाभ से युक्त, ईश्वर और धर्म में आस्थावान् तथा उत्तम धर्मकार्यों का सम्पादक, वाक् पटुता एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व से विरोध का विजेता, भाग्योन्नति में सतत संलग्न, कुछ परोपकारी और दयालु, नेत्रज्योति में त्रुटि का अनुभवी, भ्रमणशील, स्त्री की ओर से प्रायः उदासीन, गृहस्थ-सुख, भाई-बहिन और पारिवारिक सुख सम्बन्धों में सामान्य, मध्यमायु से कुछ अधिक जीवन प्राप्त, अनेक मित्र, द्रव्य-लाभ से सम्पन्न, द्रव्य कोष युक्त भाग्यवान्, कभी-कभी भाग्योदय में कुछ अवरोध पाने वाला, कीर्ति और यश प्राप्तकर्ता, उत्तम स्थान व काल में देहत्यागी होगा।

भु० सं० ३०६३

कु० १०

(३६७) – इस जन्माङ्ग में उत्पन्न हुआ मनुष्य दृढ़ शरीर का होते हुए भी पतला तथा लम्बा, धीर, गम्भीर, उच्छृंखलता-रहित, क्रोधी, परिश्रमी, गौरवर्ण, तेजस्वी ललाट वाला एवं दृढ़ स्वभाव का होता है। यह माता-पिता का भक्त तथा उनसे धन पाने वाला, विद्या के क्षेत्र में रुकावटें पाने वाला, भाग्य का धनी, परन्तु सम्पत्ति का उपभोग करने में भीरु, बन्धु-बान्धवों की सहायता करने को तत्पर तथा उनको आश्रय देने वाला होता है। इसका विवाह २३ से २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला मिलती है, परन्तु अधिक कामुक होने के कारण यह पर-स्त्री से धोखा भी खाता है तथा उनसे लाभ भी उठाता है। यह मध्यमायु प्राप्त करता है। शत्रुओं के लिए भारी तथा प्रतापी होता है। आयु के २५, २७, ३१, ३३, ३६, ४३, ४५, ४६, ५१, ५३ तथा ५७ वें वर्ष लाभप्रद रहते हैं।

(३६८) – इस जन्माङ्ग में जन्म लेने वाला जातक सुन्दर, परन्तु साँवले रंग का तथा तेजस्वी व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। यही धीर तथा गंभीर होते हुए भी अपने मन के भेद को शीघ्र प्रकट करके हानि उठाता है। यह मित्रता एवं सहायता प्राप्त करने में कुशल, विद्वान, मृदुभाषी, तथा अपने किये हुए कार्यों के प्रति अकारण ही असन्तुष्ट बना रहने वाला सन्देहशील भी होता है। यह यात्रा में रुचि रखने वाला तथा बाहरी कामों से लाभ उठाने वाला होता है, विद्या-लाभ उत्तम तथा विवाह २० से २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बुद्धिमती तथा विदुषी मिलती है, उसकी सलाह मान कर चलता है। विवाह के बाद ही भाग्योदय भी होता है। यह एक से अधिक सच्चे मित्रों वाला तथा देस-परदेस में अनेक हितैषियों से युक्त होता है। आयु के २१, २३, २५, २७, २६, ३३, ३७, ३६, ४१, ४५, ४७, ४६, ५०, ५२, ५४, ५८, ६० तथा ६२ वें वर्ष आर्थिक-उन्नति कारक रहते हैं। आयु मध्यम से कुछ अधिक रहती है।

(३७९) – इस जन्माङ्ग में उत्पन्न हुआ बालक मध्यम कद, मध्यम शरीर, प्रिय-दर्शन, स्फूर्तिवान, साहसिक कार्यों को करने वाला तथा कुछ क्रोधी स्वभाव का होता है। यह अपनी पैतृक-सम्पत्ति को भी दाँव पर लगा कर, उसकी वृद्धि करने वाला तथा बौद्धिक एवं शारीरिक-क्षमताओं का पूर्ण लाभ उठाने वाला होता है। इसका विवाह २० से २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला, साँवली, बुद्धिमान, विद्यावान तथा चतुर होती है। यह स्वाभिमानी गुणी तथा विद्वान होता है तथापि पत्नी की सलाह लेकर ही सब कार्य करता है। इसे अपनी बड़ी बहिन से भी सहयोग मिलता है। यह गुप्त-विद्याओं का ज्ञाता तथा बचपन से ही सौभाग्यशाली होता है। इसे पत्नी के द्वारा भी धन-लाभ होता है। आयु के २२, २६, २८, ३०, ३४, ३६, ४६, ५०, ५२, ५४, ५८ तथा ६२वें वर्ष आर्थिक-उन्नतिकारक सिद्ध होते हैं। आयु मध्यम से कुछ अधिक होती है।

(३८०) – इस जन्मकुण्डली वाला जातक गौरवर्ण, लम्बे कद तथा स्थूल शरीर वाला, शान्ति-प्रिय, स्वाभिमानी, धार्मिक रूढ़ियों का पालक तथा भाइयों से अधिक बहिनों वाला होता है। यह जन्म विपन्न-परिवार में लेता है, परन्तु कुछ ही समय बाद घर की आर्थिक-स्थिति सुधरने लगती है, परन्तु गुप्त-शत्रु अधिक कष्ट पहुँचाते रहते हैं। धन की कमी के कारण इसका कोई कार्य रुकता नहीं है। विद्या मध्यम प्राप्त होती है। विवाह १९ से २४ वर्ष के बीच होता है तथा पत्नी सुन्दर, वाचाल तथा वायु-पीड़ा से ग्रस्त मिलती है। सामान्यतः निजी स्वास्थ्य ठीक रहता है। बाहरी लोगों से सहयोग मिलता है। बौद्धिक-कार्यों द्वारा आजीविका चलती है। पूर्ण भाग्योदय ४० वर्ष की आयु के बाद होता है। वृद्धावस्था सुख से बीतती है। जीवन के २३, २७, २९, ३१, ३५, ३९, ४१, ४३, ४७, ५१, ५३, ५५, ५९, ६३ तथा ६५वें वर्ष आर्थिक-उन्नतिकारक रहते हैं।

भृ० सं० ३८३ कु० १०

(३८१)— इस जन्माङ्ग में उत्पन्न होने वाला मनुष्य सुन्दर, गौरवर्ण, मध्यम क़द का, पतले शरीर वाला, एकान्तप्रिय तथा ईश्वर पर विश्वास करने वाला होता है। विद्या मध्यम श्रेणी की प्राप्त होती है तथा विवाह २३ से २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा वाचाल मिलती है। यह व्यवसाय द्वारा धनोपार्जन करता तथा पारिवारिक- प्रतिष्ठा को बढ़ाता है। सन्तान का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है। यह रसिक-स्वभाव का, अनेक स्त्रियों में रुचि रखने वाला, तथापि संयमी होता है। यह अपयश से डरता है। माता-पिता का भक्त होता है। पत्नी भाग्यशालिनी होती है। यह शरीर से प्राय: स्वस्थ बना रहता है। आयु के ३० तथा ५० वें वर्ष अत्युत्तम सिद्ध होते हैं। सामान्यत: २५, २८, ३१, ३७, ४०, ४३, ४५, ४८, ५२, ५४, ५७, ५८, ६०, ६३, ६५ तथा ६८ वें वर्ष उन्नतिकारक रहते हैं। आयु मध्यम से कुछ अधिक होती है।

(३८२)— इस जन्मकुण्डली वाला जातक उन्नत ललाट, कुंचित केश, गौर वर्ण, प्रियदर्शी, धार्मिक आस्थावान, स्वतन्त्र निर्णय लेने वाला, बुद्धिमान होते हुए भी सनकी मिजाज का, संगीत-कला में रुचि रखने वाला, कठिन परिस्थितियों का मुकाबिला करने वाला, विज्ञान अथवा मशीनरी से संबंधित कार्य करने वाला, उच्च शिक्षित तथा व्यवसाय कुशल होता है। इसका विवाह २२ से २५ वर्ष की आयु में होता है। यह एक से अधिक कार्यों द्वारा धनोपार्जन करता है तथा अपनी सनक के कारण अपने प्रियजनों को अनजाने में ही हानि पहुँचाता रहता है। शत्रु एवं रोग-मुक्त रहते हुए भी कभी वात-रोग का शिकार बनता है। आयु के २५, ३० तथा ३५ वें वर्ष उत्कर्ष दायक तथा २४, २६, २८, ३१, ३२, ३६, ४०, ४२, ४४, ४८, ५२, एवं ६० वें वर्ष भी लाभप्रद सिद्ध होते हैं। वृद्धावस्था में पत्नी की बीमारी के कारण दुःखी बना रहता है।

मू० सं० ३७४

कु० २०

(३८३)- इस जन्मकुण्डली वाला जातक दीर्घायु, गेहुँआ रंग, बलिष्ठ शरीर तथा क्रोधी-स्वभाव का होता है, परन्तु शान्त भी जल्दी ही हो जाता है। यह अपनी बुद्धिमत्ताहीन-उदारता के कारण शत्रुओं द्वारा हानि भी उठाता है। विद्याध्ययन मध्यम श्रेणी का होता है। विवाह २२ से २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, कला-कौशल में रुचि रखने वाली, परन्तु जिद्दी स्वभाव की होती है। यह परदेस से तथा अपरिचित लोगों द्वारा धनोपार्जन करता है। यह एक से अधिक आमदनी के स्रोतों वाला, ऐश्वर्यपूर्ण जीवन बिताने वाला तथा श्वेत-वस्तु, धातु-पदार्थ तथा स्त्री-सम्पर्क से लाभान्वित होने वाला होता है। शरीर से प्रायः स्वस्थ बना रहता है। माता, पिता तथा परिवारी जनों से सामान्य स्नेह-सम्बन्ध रहते हैं। आयु ६० वर्ष से अधिक होती है तथा आयु के २६, ३२, ३८, ४२, ४६, ५३, ५८, ६२ एवं ६५वें वर्ष लाभप्रद रहते हैं।

(३८४)- इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य सुन्दर, तेजस्वी, हठी स्वभाव का, गौर वर्ण, मध्यम क़द वाला, माता का विशेष ममता तथा श्रेष्ठ एवं शुभ कार्यों में रुचि रखने वाला होता है। विद्या लाभ श्रेष्ठ होता है। विवाह २२ से २६ वर्ष की आयु में होता है तथा सन्तान-सुख भी उत्तम मिलता है। यह अपने ही पौरुष से नवीन गृह का निर्माण कराता है। शरीर से प्रायः स्वस्थ रहता है, परन्तु जीवन में अनेक बार मृत्युतुल्य कष्ट होना भी सम्भव रहता है। पत्नी सुन्दर, समझदार तथा प्रभावशालिनी होती है। जीवन के १२, २०, २१, २४ तथा ४२वें वर्ष महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। एक से अधिक कार्यों द्वारा धनोपार्जन करते हुए यह ऐश्वर्यपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। सेवा-कार्यों द्वारा इसे विशेष लाभ होता है। आयु ६० वर्ष के लगभग होती है। माता, पिता तथा कुटुम्बी जनों से अच्छे सम्बन्ध बने रहते हैं।

(३८५)- इस जन्माङ्ग वाला जातक सुन्दर गौर वर्ण, दीर्घ शरीर, साहसी तथा राजसी स्वभाव का होता है। परन्तु वह अपने दुस्साहसी स्वभाव के कारण ही धन को नष्ट करके कष्ट उठाता है। फिर भी उसे धन की कमी अनुभव नहीं होती, क्योंकि धन का आगमन निरन्तर बना रहता है। यदा-कदा नियमित आमदनी में रोड़े भी अटकते हैं तथा विरोधियों द्वारा भी हानि पहुँचाने की चेष्टा की जाती है, तथापि अन्त में सभी बाधाओं पर विजय प्राप्त होती है। इसे विद्यालाभ उत्तम होता है तथा २१ से २६ वर्ष की आयु में विवाह होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा लम्बे शरीर की होती है। दाम्पत्य-जीवन सुखमय बना रहता है। यह अनेक कार्यों द्वारा धनोपार्जन करता है तथा पारिवारिक-प्रतिष्ठा में वृद्धि करते हुए सर्वत्र यशस्वी बना रहता है। जीवन के १२, १७, २०, २५ तथा ३० वें वर्ष महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। आयु मध्यम से कुछ अधिक होगी।

(३८६)- इस जन्मपत्री वाला मनुष्य लम्बे शरीर वाला, गेहुँआ वर्ण का, उदारचित्त एवं सर्वप्रिय होता है। विद्या का लाभ पर्याप्त होता है। विवाह २० से २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, परन्तु चिड़चिड़े स्वभाव की होती है। यह व्यवसाय द्वारा जीविकोपार्जन करता है तथा धन का संचय करने में कुशल होता है। यह विषय-लोलुप भी होता है, फलतः इसके जीवन में किसी बाहरी स्त्री का प्रभाव भी रहता है। इसके जीवन के ३७, ४५ तथा ६० वें वर्ष विशेष लाभप्रद एवं सुख कर सिद्ध होते हैं। इसके द्वारा संचित धन का मुख्य उपयोग इसका पहला पुत्र करता है। यह स्वयं लम्बी आयु प्राप्त करता है तथा वृद्धावस्था तक किसी प्रकार का भौतिक-कष्ट प्राप्त नहीं करता। माता, पिता तथा परिवारीजनों से इसके संबंध उत्तम बने रहते हैं। कुल मिलाकर यह ऐश्वर्यशाली बना रहता है।

(३८७) - इस लग्नाङ्क में जन्मा हुआ व्यक्ति पुष्ट शरीर, गोधूम वर्ण, मध्यम कद वाला, स्वभाव से हठी तथा अपनी बात को भी सर्वोपरि रखने वाला, तार्किक एवं वाचाल होता है। अध्ययन के क्षेत्र में उसे सफलता मिलती है। विवाह २० से २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी एवं बुद्धिमती होती है, जो अपने सामाजिक-सम्बन्धों द्वारा पति की प्रतिष्ठा में वृद्धि करती है। यह जातक श्वेत-वस्तुओं के व्यवसाय द्वारा विशेष धनोपार्जन करता है तथा स्त्रियों के सहयोग से भी पर्याप्त लाभान्वित होता है। यह अनेक प्रकार के कार्य करता है तथा किसी भी एक काम में मन लगाये नहीं रह पाता। इसके जीवन के ३५, ४० तथा ५७ वें वर्ष शुभ फल कारक एवं उन्नतिदायक सिद्ध होते हैं। इसका दाम्पत्य-जीवन सुखमय बना रहता है। कौटुम्बिक-जीवन भी आनन्दप्रद रहता है। आयु ६० से ६८ के मध्य।

(३८८) - इस जन्मकुण्डली वाला जातक मध्यम शरीर, लम्बे कद का, सुन्दर, प्रभावशाली तथा भोग-विलास में विशेष रुचि रखने वाला होता है। स्त्रियाँ इसकी ओर स्वयं आकर्षित होती हैं, परन्तु यह उनसे स्थायी-लगाव नहीं रखता। विद्या के क्षेत्र में उत्तम सफलता मिलती है। विवाह १९ से २४ वर्ष के बीच होता है तथा पत्नी कुछ साँवली, सुन्दर तथा बुद्धिमती मिलती है। दाम्पत्य-जीवन सुखमय बना रहता है तथा पत्नी के सहयोग से जीवन के अनेक क्षेत्रों में सफलतायें मिलती हैं। सन्तान के कारण मन सदैव चिन्तित बना रहता है। माता, पिता तथा कुटुम्बीजनों से भी सामान्य सम्बन्ध ही रहते हैं। बाहरी सम्बन्धों से विशेष लाभ होता है। जीवन के ३६, ४५, ५० तथा ५१ वें वर्ष श्रेष्ठ फलकारक एवं सुख-लाभप्रद सिद्ध होते हैं। शरीर स्वस्थ रहता है। आयु मध्यम होती है।

(३८९) - इस जन्माङ्ग में उत्पन्न हुआ बालक सुन्दर, गौरवर्ण तथा ऊपर से रूखे एवं हठी लगते हुए भी भीतर से अत्यन्त कोमल स्वभाव का होता है। यह व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी करता है तथा उच्च-पद पर प्रतिष्ठित होकर सम्पत्ति एवं सम्मान की वृद्धि करता चला जाता है। विद्या का उत्तम लाभ होता है। विवाह २० से २५ वर्ष की आयु में संभव है। पत्नी सुन्दरी, साँवली, शान्त-स्वभाव की तथा पतिव्रता होती है। वह धर्म में रुचि रखने वाली तथा दान-पुण्य में धन खर्च करने वाली होती है। श्वेत-वस्तुओं के व्यवसाय से धन का लाभ होता है। विलास प्रसाधन तथा आमोद-प्रमोद के कार्यों में संलग्न व्यक्ति भी लाभ पहुँचाते रहते हैं। ऐसे जातक प्राय: आजीवन सौभाग्यशाली बने रहते हैं। शरीर स्वस्थ रहता है। आयु ७० वर्ष से अधिक होती है। जीवन के २०, २६, २८, ४२, ४८, ५२, ५६, ५८ तथा ६५वें वर्ष लाभकर रहते हैं।

(३९०) - इस जन्मकुण्डली वाला जातक लम्बे शरीर, उन्नत ललाट, गौरवर्ण, सुन्दर शरीर तथा बड़े नेत्रों वाला होता है। यह हठी एवं उतावले स्वभाव का होने के कारण अपने कार्य की हानि भी कर लेता है। यह जीवन में उच्च-पद प्राप्त करता है तथा ऐश्वर्योपभोगी होता है। परन्तु किसी समय ऐसे ऐसी हानियाँ उठानी पड़ती हैं, जिनकी कभी कल्पना भी नहीं होती। उस स्थिति में चल तथा अचल - दोनों प्रकार की सम्पत्ति की हानि होती है। विद्या का लाभ उत्तम होता है। पत्नी संशयालु स्वभाव की होती है। विवाह २६ वर्ष की आयु तक हो जाता है, परन्तु दाम्पत्य-जीवन आनन्दमय नहीं रहता। परिवारीजन इसके प्रति ईर्ष्यालु बने रहते हैं तथा इसके भाग्योत्कर्ष में बाधाएँ पहुँचाने का प्रयत्न करते हैं। जीवन के २०, २६, २८ तथा ४०वें वर्ष महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। आयु मध्यम होती है। शारीरिक-प्रभाव उत्तम बना रहता है।

(३६१)- इस जन्माङ्ग वाला जातक पुष्ट शरीर, विशाल नेत्र, उन्नत ललाट तथा आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होता है, तथापि उसे कदम-कदम पर विघ्न-बाधाओं का सामना करना पड़ता है और वह उन पर विजय प्राप्त करता हुआ उन्नति करता चला जाता है। ऐसे लोग सेना अथवा पुलिस विभाग में उच्चाधिकारी होते हैं। यह सामान्यतः कृपणता की सीमा तक मितव्ययी, परन्तु अपने व्यक्तिगत शौक के लिए अपव्यय में भी आनन्द का अनुभव करने वाला, भाग्य केन्द्रित होता है। विद्या का लाभ उत्तम होता है तथा विवाह २२ से २८ वर्ष की आयु के बीच हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशिक्षिता मिलती है। सन्तान सुख सामान्य रहता है। माता, पिता तथा परिवारीजनों से औपचारिक स्नेह-सम्बन्ध रहते हैं। जीवन के ३०, ३२ तथा ४२वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। जीवन सामान्यतः सुखपूर्वक व्यतीत होता है। कु० र०

(३६२)- इस कुण्डली का स्वामी गौरवर्ण, सुन्दर, आकर्षक, मृदुभाषी, विशाल-हृदय, उदार, विद्वान् तथा ज्ञान-विज्ञान का पण्डित होते हुए भी सामान्य आर्थिक-स्थिति वाला होता है। फिर भी यह धन की कमी से दुःखी नहीं होता। जो भी धन यह कमाता है, उसे सार्वजनिक कार्यों में खर्च कर देता है। विद्या उत्तम प्राप्त होती है। विवाह २५ वर्ष की आयु के बाद होता है। पत्नी से इसे सुख प्राप्त नहीं होता, क्योंकि वह अकारण ही असन्तुष्ट एवं रुष्ट-सी बनी रहती है। आयु मध्यम होती है तथा जीवन के १५, १८, २५, ३०, ३५, ४५, ५० एवं ५२वें वर्ष आर्थिक, सामाजिक तथा पारिवारिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। माता, पिता तथा परिवारीजनों से सामान्य स्नेह-सम्बन्ध रहते हैं, परन्तु इनसे किसी प्रकार का सहयोग-लाभ नहीं होता।

भु० सं० ३७९३

कु० १०

(३९३) – इस जन्मकुण्डली वाला जातक गौरवर्ण, मध्यम कद वाला, उन्नत ललाट तथा वाक्पटु होता है। विद्या का लाभ मध्यम रहता है, तथापि यह विलक्षण तीव्र-बुद्धि सम्पन्न होता है। विवाह २३ से २५ वर्ष की आयु के बीच संभव है। पत्नी सुन्दरी मिलती है, तथापि रसिक-स्वभाव का होने के कारण यह पर-स्त्रियों में भी आसक्त रहता है। अपने स्थान (जन्म-भूमि) के प्रति इसका विशेष मोह रहता है तथा अपने बन्धु-बान्धवों के बीच सम्मान पाने के लिए लालायित भी रहता है, तथापि इसका भाग्योदय परदेश में जाने पर ही होता है। यह धैर्यपूर्वक एक ही कार्य में लगा रहता है, परन्तु बाहरी प्रभाव में आकर दूसरा व्यवसाय भी कर सकता है। जीवन के २६, २८, ३१, ३५, ३८, ४०, ४६, ५२ तथा ५५ वें वर्ष उन्नतिकारक सिद्ध होते हैं। आयु ७० वर्ष से अधिक होती है। शरीर स्वस्थ रहता है।

(३९४) – इस जन्मकुण्डली का स्वामी बालक लम्बे कद का, गौर-वर्ण, हृदय का अत्यन्त उदार, परन्तु अहंवादी होता है। विद्या का लाभ मध्यम होता है। विवाह २१ से २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला मिलती है। सन्तान का उत्तम सुख प्राप्त होता है। यह आधिकारिक मान से अपने बन्धु-बान्धवों में प्रतिष्ठा प्राप्त करता है तथा अपनी वाक्पटुता के लिए प्रसिद्ध होता है। शत्रु-पक्ष का भेद ज्ञात करने में कुशल तथा उन्हें दबाने में सफल होता है। यह सार्वजनिक हित के कामों में अपना समय अधिक देता है। श्वेत रंग की वस्तुओं तथा आमोद-प्रमोद के कार्यों से आर्थिक-लाभ उठाता है। आयु लम्बी होती है। जीवन के १५, २०, २३, २४ तथा २८ वें वर्ष विशेष महत्त्वपूर्ण होते हैं। ३५, ४२, ४६, ४८, ५१, ५६ तथा ६३ वें वर्ष आर्थिक लाभप्रद होते हैं।

मू० सं० ०२३

कु० २०

(३९५) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी गौरवर्ण, पुष्ट शरीर तथा गौरवशाली वंश में उत्पन्न होता है। यह विद्या का श्रेष्ठ लाभ प्राप्त करता है तथा ज्योतिष शास्त्र में प्रवीण होता है। धर्म-कर्म का पालक, अत्यन्त गुणी, पण्डित, प्रधान-पद पर प्रतिष्ठित एवं इच्छित धन एवं सुख से सम्पन्न होता है। इसका विवाह २२ से २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती मिलती है, तथापि यह पर-स्त्रियों में आसक्त रहता है एवं अधिक भोगी तथा मद्यपी होने के कारण विभिन्न रोगों से पीड़ित भी होता है। इसकी पत्नी अपने पति की प्रतिष्ठा के कारण अभिमानिनी, स्थूल काय तथा पति से कुछ असन्तुष्ट रहने वाली भी होती है। आयु लम्बी होती है, परन्तु वृद्धावस्था में वात-रोग से दुःखी भी रहता है। जीवन के मध्यकाल में विशेष रूप से दुःखी रहता है। आयु के २५, ३७ तथा ४२ वर्ष अशुभ

(३९६) - इस जन्माङ्ग वाला जातक मध्यम कद वाला, सुन्दर तथा नपुंसक की भाँति आचरण करने वाला होता है। यह अङ्गहीन भी हो सकता है। विद्या के क्षेत्र में सामान्य सफलता मिलती है। इसका विवाह १९ से २५ वर्ष की आयु के बीच होता है। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती मिलती है। यह स्त्री के सहयोग से जीवन में उन्नति करता है। लिखने-पढ़ने के कामों में विशेष रुचि रहती है। यह आमोद-प्रमोद प्रिय तथा पर-स्त्रियों में आसक्ति रखने वाला भी होता है। यह अपने विरुद्ध होने वाले प्रपंचों का सरलता से भेदन करके शत्रुओं को पराजित करने में कुशल होता है। यह अपनी सम्पत्ति की रक्षा करता है तथा स्वजनों से हानि देखता भी पाता है। इसके जीवन के १९, २२, २६, २८, ३४, ३७, ४२, ५०, ५३, ५८ तथा ६३वें वर्ष उन्नति कारक होते हैं। यह दीर्घायु प्राप्त करता है तथा शरीर से भी स्वस्थ रहता है।

(३९७) - इस जन्मांग में उत्पन्न हुआ व्यक्ति सुन्दर, मध्यम कद तथा स्थूल-शरीर वाला होता है। आँखें बड़ी तथा ललाट उन्नत होता है। यह अनेक विद्याओं में निपुण होता है। विवाह २२ से २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, साँवले रंग की तथा चतुर होती है। वह पति के मनोनुकूल कार्य करने वाली, बुद्धिमती, पुष्ट अंगों वाली, तथापि वात-रोग से पीड़ित होती है तथा दीर्घकाल तक पति को सुख प्रदान करती हुई उसकी सहयोगिनी बनी रहती है। जातक स्वयं त्वचारोग से पीड़ित रहता है। यह अपने परिवार की मान-प्रतिष्ठा को बढ़ाता तथा कुटुम्बियों एवं मित्रों को सहयोग का संरक्षण देता है। माता-पिता से आत्मीयता पूर्ण सम्बन्ध रहते हैं। शरीर कभी-कभी अस्वस्थ हो जाता है, तथापि दीर्घायु प्राप्त होती है। इसकी आयु के १०, १५, १६, २०, ३० तथा ३६ वें वर्ष महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं तथा ४५ वर्ष की आयु के बाद भाग्य की विशेष उन्नति होती है।

(३९८) - इस जन्मकुण्डली वाला जातक दबे हुए रंग का, चपल एवं लम्बे शरीर वाला होता है। आँखें सुन्दर, नाक ऊँची तथा माथा चौड़ा हो सकता है। आँखें पिंगल वर्ण-चमकीली तथा गहरी भी हो सकती हैं। यह वाचाल तथा अपनी मीठी वाणी से दूसरों को प्रभावित करने में कुशल होता है। स्वभाव से तीव्र तथा अविश्वसनीयता के लक्षण भी पाये जाते हैं। अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए यह दूसरे की जरूरत को महत्व नहीं देता। अपने धन का खर्च भी बहुत सोच-समझ कर ही करता है। जिनसे लाभ होने की आशा न हो, उनसे किसी प्रकार का सम्पर्क नहीं रखना चाहता। विद्याध्ययन साधारण रहता है। विवाह २० से २६ वर्ष की आयु में होता है तथा पत्नी तीव्र-स्वभाव की तथा धन-संचय में संलग्न बनी रहने वाली होती है। प्रौढ़ावस्था में विशेष सुखी रहता है। जीवन के २८, ३३, ३५, ३८, ४२, ४६, ५०, ५४ तथा ६२वें वर्ष उन्नतिप्रद होते हैं।

भु० सं० ८२३

कु० र०

(३९९) – इस जन्म लग्न कुण्डली वाला व्यक्ति मध्यम कद वाला, सुन्दर तथा स्वस्थ शरीर का होता है। यह मानसिक रूप से वैराग्यवान तथा सब प्रकार के सम्पन्न रहते हुए भी अकारण असन्तोष का अनुभव करने वाला होता है। विवाह २२ से २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, तेजस्वभाव की तथा पति के मनोनुकूल कार्य करने वाली मिलती है, तथापि कभी-कभी पति-पत्नी एक दूसरे से असन्तुष्ट भी दिखाई देते हैं। सन्तान-सुख उत्तम रहता है। सामान्यतः जातक स्वतन्त्र-व्यवसाय करता है, तथापि लाभप्रद नौकरी का अवसर भी नहीं छोड़ता। विश्वसनीय व्यक्तियों को सौंपे जाने वाले कार्यों द्वारा विशेष लाभ प्राप्त करता है। माता, पिता तथा परिवारी जनों से सम्बन्ध मधुर बने रहते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में उच्च उपाधि प्राप्त न करके भी निरन्तर अध्ययनशील बना रहकर योग्यता बढ़ाता रहता है। जीवन के १२, १५, २० तथा २४ वें वर्ष उत्तम रहते हैं। ३२ वर्ष की आयु के बाद विशेष भाग्योदय होता है।

(४००) – इस जन्माङ्ग वाला जातक सामान्य रूप-रंग का, उन्नत ललाट, तीक्ष्ण आँखों वाला एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। यह प्रत्येक व्यक्ति का विश्वास अर्जित कर लेने में कुशल होता है तथा शत्रु-पक्ष को भी सहज में परास्त कर देता है। इसके पेट का भेद कोई नहीं पा सकता। यह कूटनीतिपूर्ण कार्यों द्वारा भी धनार्जन करता है। शिक्षा मध्यम श्रेणी की होती है। विवाह २४ वर्ष की आयु के लगभग होता है। पत्नी सेवा-परायण, सुन्दरी, गुणवती तथा सहयोगिनी के रूप में कार्य करने वाली होती है। सन्तान-सुख उत्तम रहता है। भाग्योदय २५ वर्ष की आयु के बाद होता है तथा जीवन भर धन का यथेष्ट आगमन बना रहता है। इसके पास गुप्त-धन भी हो सकता है। यह यश तथा प्रतिष्ठा देने वाले कार्यों में भी अपने धन का व्यय करता है। इसके जीवन के ३०, ३५, ४०, ४६, ४८, ५०, ५६, ६०, ६२ तथा ६५ वें वर्ष लाभप्रद रहते हैं। आयु दीर्घ होती है।

भू० सं० ३८२३

(४०१) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, गौरवर्ण, मध्यम कद का, तेजस्वी तथा प्रियदर्शी होता है। विद्याध्ययन के क्षेत्र में इसे यथेष्ट सफलता मिलती है। विवाह २२ से २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, गुणवती एवं सुशिक्षिता मिलती है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। सन्तानें मनोनुकूल तथा आज्ञाकारिणी होती हैं। यह वाक्पटु, श्रेष्ठ भाषण कर्ता, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, विनोद-प्रिय, रसिक-प्रकृति का एवं सर्वत्र आदर तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला होता है। यह किसी बड़े संस्थान में महत्वपूर्ण पद पर कार्य करता है तथा अपने शत्रुओं एवं विरोधियों को पराजित करने में सक्षम होता है। यह अनेक प्रकार से धन का संग्रह करता है तथा परोपकारी भी होता है। अपने कुटुम्बियों तथा मित्रों को संरक्षण एवं सहायता देता है तथा स्वयं भी आजीवन सुखी बना रहता है। इसके जीवन के २०, २८, ३५, ४२, ४८, ५२ तथा ६०वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं।

(४०२) - इस जन्म लग्न में उत्पन्न जातक सुन्दर, स्वस्थ तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। इसे विद्या का उत्तम लाभ होता है। विवाह २३ से २७ वर्ष की आयु के बीच होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है। सन्तान-सुख भी उत्तम रहता है। यह वाक्पटु होने के कारण अपने पक्ष को चतुरता से प्रस्तुत कर, प्रतिपक्षी को पराजित करने में कुशल होता है तथा सम्मानित-पद पर प्रतिष्ठित होकर यश तथा धन का पर्याप्त उपार्जन करता है। यह पिता की ओर से सुखी, परन्तु माता की ओर से चिन्तित तथा असन्तुष्ट रहता है। यह कई प्रकार के उत्तरदायित्वों का निर्वहन करने में सक्षम तथा घर-बाहर एक जैसा सम्मान प्राप्त करने वाला होता है। इसे राज्य से भी लाभ होता है। युवावस्था में इसे कुछ कष्ट उठाना पड़ता है, तदुपरान्त सम्पूर्ण जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होता है।

कु० र०

(४०३)- इस जलवायु में उत्पन्न बालक प्रियदर्शी स्वस्थ तथा मृदुभाषी होता है। वह अपनी वाणी द्वारा दूसरों को प्रभावित करता है तथा अन्यों द्वारा स्वयं भी शीघ्र प्रभावित हो जाता है। विद्या के क्षेत्र में इसे सफलता मिलती है। विवाह २२ से २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा बुद्धिमती मिलती है, जो इसे अपने स्नेह-पाश में सदैव बाँधे रखती है तथा अपनी इच्छानुसार चलाती रहती है। यह जातक किसी सम्मानित-पद पर प्रतिष्ठित होकर यश तथा धन का उपार्जन करता है। सन्तान का उत्तम सुख प्राप्त होता है। राज्य द्वारा सम्मानित तथा बन्धु-बांधवों द्वारा प्रशंसित यह व्यक्ति अपने श्रेष्ठ व्यवहार से सभी का प्रिय पात्र बना रहता है। इसकी आयु के १५, २०, २३, २५, २८, ४०, ४२ तथा ५८ वें वर्ष आर्थिक-दृष्टि से लाभप्रद एवं उन्नति कारक सिद्ध होते हैं। शरीर प्रायः स्वस्थ बना रहता है। आयु ७२ वर्ष से अधिक होती है। जीवन सुख से बीतता है।

(४०४)- इस जलवायु वाला जातक नाक-नक्श से सुन्दर, आकर्षक-व्यक्तित्व सम्पन्न, शरीर से स्वस्थ तथा प्रभावशाली होता है। विद्या के क्षेत्र में पर्याप्त सफलता मिलती है। विवाह २० से २५ वर्ष की आयु में होता है तथा पत्नी सुन्दरी, सुरूप, सुसंस्कृत, स्वस्थ तथा उत्तम स्वभाव की मिलती है. फलतः दाम्पत्य-सुख प्रचुर मात्रा में प्राप्त होता है। सन्तानें मनोनुकूल मिलती हैं। इसके जीवन में स्त्रियाँ अधिक आती हैं, जो इसके जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित करती हैं। इसका भाग्य सदैव लाभप्रद बना रहता है, फलतः जीवन के आरंभ से अन्त तक यह धनी, ऐश्वर्य सम्पन्न तथा सुखी होता है। यह पैतृक-सम्पत्ति का उपभोग करता है तथापि माता के प्रति चिन्तित बना रहता है। परम साहसिक कार्यों में इसे आनन्द आता है।

भृ० सं० १२३ (४०५)- इस जन्मांग में उत्पन्न जातक सुन्दर, स्वस्थ, मध्यम कद का तथा गौर वर्ण होता है। यह अनेक कलाओं का ज्ञाता, श्रेष्ठ लेखक तथा साहित्य-प्रेमी होता है। विद्याध्ययन के क्षेत्र में इसे सफलता प्राप्त होती है। विवाह कुछ विलम्ब से होता है। पत्नी सुन्दरी, विदुषी तथा स्वतन्त्र-व्यक्तित्व सम्पन्न होती है, जो पति का नाम उज्ज्वल करती है। सन्तानें सुन्दर, स्वस्थ, दीर्घजीवी तथा मनोनुकूल होती हैं। यह किसी उच्च पद पर प्रतिष्ठित सरकारी अधिकारी अथवा किसी महत्वपूर्ण संस्थान का उच्च पदाधिकारी होता है। इसे शासन तथा समाज द्वारा सम्मान प्राप्त होता रहता है। ये लोग अपने परिवार के पोषक तथा परिवार में सम्माननीय स्थान पाने वाले होते हैं। इनका व्यक्तित्व प्रभावशाली होता है। इनके जीवन के १५, २०, २५, ३०, ३६, ४२, ४५, ४८, ५०, ५४, ५८ तथा ६२वें वर्ष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। कु० २०

(४०६)- इस कुण्डली वाला मनुष्य सुन्दर, गौरवर्ण, मितभाषी, प्रियवादी, बुद्धिमान तथा निर्विरोध होता है। इसे विद्या के क्षेत्र में अच्छी सफलता प्राप्त होती है। विवाह २२ से २८ वर्ष की आयु के बीच होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला, बुद्धिमती, सामाजिक-व्यवहार में दक्ष तथा परिवारी जनों को भी सुख देने वाली होती है। फलतः पारिवारिक-जीवन आनन्दमय बना रहता है। इसकी सन्तानें बुद्धिमान, तेजस्वी तथा सौभाग्यशाली होती हैं। संतानों की संख्या अधिक नहीं होती परन्तु जितनी होती हैं, वे विद्वान् तथा यशस्वी बनती हैं। यह व्यक्ति जनता तथा वाम-संगठनों से लाभ प्राप्त करके धनी बनता है। राज्य द्वारा सम्मान पाता है। जीवन ऐश्वर्यपूर्ण व्यतीत करता है। आयु के ३०, ३५, ३७, ४६, ५२, ५८ तथा ६२वें वर्ष अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा धन-सुख दायक सिद्ध होते हैं। यह धार्मिक ज्ञानी तथा यशस्वी बना रहता है।

(४०७) - इस जन्मकुण्डली वाला जातक सुन्दर, स्वस्थ, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, काव्य-साहित्य प्रेमी, शास्त्राध्ययन में रुचि लेने वाला तथा धर्म में विशेष आस्था रखने वाला होता है। यह किसी विशेष देवता की आराधना करने वाला तथा पूजा-उपासना से सुख-शान्ति का अनुभव करने वाला होता है। शिक्षा के क्षेत्र में इसे विशेष सफलता प्राप्त होती है। विवाह २२ से २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी अत्यन्त सुन्दरी, बुद्धिमती तथा गुणवती होती है, परन्तु वह वात-रोग से पीड़ित बनी रहती है। वह मितभाषिणी तथा तटस्थ स्वभाव होती है। यह जातक पैतृक-सम्पत्ति को प्राप्त करता है तथा माता के द्वारा संचित धन का लाभ भी इसे होता है। यह अपने गंभीर पारिवारिक दायित्वों का कुशलता पूर्वक पालन करता है। इसके पास धन की कभी कमी नहीं रहती। यह किसी उच्च-पद पर आसीन होता है तथा निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। इसके लिए ३७ तथा ४२वें वर्ष महत्वपूर्ण

(४०८) - इस जन्मांग वाला जातक सुन्दर, स्वस्थ, उन्नतललाट तथा आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। यह धर्म-कर्म करते हुए धर्म के प्रति प्रायः आस्था-रहित होता है। इसके सम्पूर्ण कार्य भाग्य से ही सिद्ध होते हैं तथापि यह भाग्य को न मान कर पुरुषार्थ को ही महत्व देता है। विद्या के क्षेत्र में मध्यम सफलता पाकर भी यह बहुत होशियार होता है। इसका विवाह २१ से २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सामान्य सुन्दरी सरल तथा सीधे स्वभाव की होती है। दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहता है। पत्नी कफ-रोग से पीड़ित भी रह सकती है। जातक स्वयं शरीर से स्वस्थ, परिश्रमी तथा कुशल-व्यवस्थापक होता है। यह महत्वाकांक्षी, जमीन अथवा जमीन से उत्पन्न होने वाली वस्तुओं के व्यवसाय से लाभ उठाने वाला, लौह-निर्मित वस्तुओं का व्यवसायी तथा ऐश्वर्य सम्पन्न होता है। २४, २६, ३०, ३२, ४२ तथा ५०वें वर्ष विशेष उत्तम रहते हैं।

भृ० सं० ७२३

कु० १०

(४०९) - इस कुण्डली का स्वामी पुष्ट शरीर का, अत्यन्त कोमल, सुन्दर तथा श्रम-शक्ति के कार्यों से घबराने वाला होता है, फिर भी यह पुलिस अथवा सेना में कार्य करने का इच्छुक रहता है। किसी व्यवस्था-सम्बन्धी पद पर आसीन होकर यह अपनी प्रतिभा का श्रेष्ठ प्रदर्शन करता है। यह जीवन में अनेक बार कठिनाइयों का सामना करता है। विद्या का मध्यम लाभ होता है। विवाह बड़ी आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा शान्त स्वभाव वाली होती है। यह अपने कार्यों तथा व्यवहार से समाज में प्रतिष्ठा तो प्राप्त करता है, परन्तु धन का अभाव प्रायः बना रहता है। अनेक कड़वे-मीठे अनुभव इसे प्राप्त होते रहते हैं। इसकी सन्तानें बुद्धिमान होती हैं तथा एक पुत्र धन-यश-सम्पन्न कुल के नाम को ऊँचा करने वाला होता है। यह जातक मध्यमायु प्राप्त करता है। इसके जीवन के १५, १८, २२, २६, २९, ३२, ३७, ४२, ४८ तथा ५२ वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं।

(४१०) - इस जन्मांग वाला जातक कुछ साँवले रंग का, मध्यम कद वाला, देखने में सुन्दर, परन्तु कुछ उग्र स्वभाव का होता है। यह अत्यन्त बुद्धिमान होते हुए भी अपने उदार स्वभाव के कारण उन कार्यों को भी कर बैठता है, जिनका परिणाम हानिकर सिद्ध होता है। इसे प्रायः विश्वासघात का शिकार होना पड़ता है। विद्या का लाभ मध्यम होता है। विवाह २२ से २५ वर्ष की आयु में होता है तथा पत्नी सुन्दरी तथा पतिव्रता प्राप्त होती है। सन्तान-सुख भी अच्छा रहता है। इसका भाग्योदय अपने से छोटे तथा किसी बाहरी व्यक्ति के माध्यम से होता है। किसी कार्यवश कुछ समय के लिए परदेश जाकर, यह किसी-न-किसी कारणवश बहुत समय तक वहाँ रुका रहता है। इसे जमीन तथा ज्वलनशील वस्तुओं के व्यवसाय से आर्थिक लाभ होता है। यह प्रायः औरों के हित-साधन हेतु कार्य करता है, अतः इसे व्यक्तिगत रूप में सुख की प्राप्ति नहीं हो पाती।

भृ० सं० २२३८ कु० २०

(४११)- इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य सामान्य गेहुँए रंग का, मध्यम वपु, सामान्यत: स्वस्थ एवं आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। स्त्रियों के प्रति इसका विशेष आकर्षण रहता है। मन की चंचलता इसे इधर-उधर भटकाती रहती है। विद्या का लाभ उत्तम होता है। विवाह २४ से २७ वर्ष के बीच होता है। पत्नी साँवली, परन्तु सुन्दर, पुष्ट एवं आकर्षक अंगों वाली, हँसमुख, परिश्रमी तथा अत्यन्त प्रभावशालिनी होती है। वह पति की उन्नति में पूर्ण सहयोग करती है। सन्तानों की संख्या कम होती है, परन्तु वे बुद्धिमान तथा सुख देने वाली होती हैं। यह जातक ज़मीन, ज़मीन से उत्पन्न वस्तुओं, चतुष्पदों तथा अग्नि से सम्बन्धित पदार्थों के माध्यम से अथवा सेना, पुलिस विभाग में रह कर अथवा अन्य हिंसात्मक कार्यों द्वारा आजीविकोपार्जन करता है। इसके जीवन के ५, ७, १५, २०, ३५ तथा ४५ वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। आयु मध्यम से कुछ अधिक होती है।

(४१२)- इस जन्माङ्ग का स्वामी गेहुँए रंग का, मध्यम कदकाठी, स्वस्थ, सुन्दर तथा हठी स्वभाव का होता है। यह स्त्रियों के प्रति अनुराग-रहित सा होता है। विवाह २२ से २८ वर्ष की आयु में होता है, पत्नी मनोनुकूला तथा सामान्य सुन्दरी मिलती है, परन्तु सन्तान-लाभ में विलम्ब होता है। सन्तानें प्राय: जीवित नहीं रहतीं अथवा गर्भपात हो जाया करता है। यदि कोई सन्तान जीवित बचे तो वह अत्यन्त बुद्धिमान तथा माता-पिता को सुख देनेवाली सिद्ध होती है। इसकी पत्नी बड़ी व्यावहारिक तथा सांसारिक कार्यों में पूर्ण सहयोगिनी होती है। यह अल्प श्रम से ही प्रचुर धन का उपार्जन करता तथा अपनी सम्पत्ति में निरन्तर वृद्धि करता रहता है। यह साहित्य एवं कला प्रेमी, देश-विदेश में भ्रमण करने वाला, ऊपर से गरीब दिखाई देने वाला, परन्तु यथार्थ में धन-सम्पन्न होता है। इसके जीवन के २२, २८, २५, ३८, ४२, ४८, ५२, ५५ तथा ५८ वें वर्ष विशेष हैं।

(४१३)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी दीर्घायु, कुछ दबे हुए रंग का, स्वस्थ शरीर तथा प्रसन्नचित्त वाला होता है। वह बुद्धिमान होते हुए भी प्रपंचपूर्ण कार्यों में रुचि रखने वाला तथा शत्रुओं से नित्य भयभीत बना रहने वाला भी होता है। इसकी शिक्षा मध्यम श्रेणी की होती है। विवाह २४ से २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी पुण्यात्मा, विदुषी, प्रभावशालिनी, परन्तु हठी-स्वभाव की होती है। यह धार्मिक अनुष्ठानों में अपने समय तथा धन का अधिक व्यय करता है तथा इस की पत्नी उसमें पूर्ण सहयोग देती है। यह अपने से हीन व्यक्तियों की सहायता करता, उन्नति करता तथा सुखी रहता है। मुख्यतः अपने स्थान से बाहर के लोगों से सम्बन्ध रखकर लाभ उठाता है। इसकी सन्तानें कम, परन्तु सुख देने वाली होती हैं। यह अपने धन का अपव्यय भी खूब करता है, परन्तु इसकी पत्नी धन का संचय करने वाली होती है। ४२ तथा ४८वें वर्ष विशेष शुभ होते हैं।

(४१४)- इस जन्माङ्ग चक्र में उत्पन्न बालक सुन्दर, दृढ़ शरीर तथा आकर्षक-व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। इसकी वाणी कुछ कटु लगते हुए भी अर्थयुक्त होती है, अतः लोग उसके अनुसार ही कार्य करते हैं। इसकी शिक्षा उत्तम होती है। विवाह बड़ी आयु में होता है। पत्नी सुन्दर तथा मनोनुकूल मिलती है तथा उसकी प्रेरणा से यह धार्मिक क्रिया-कलापों में भी रुचि लेता है। यह तीव्र बुद्धि सम्पन्न, अपने समाज में प्रतिष्ठित, श्रेष्ठ व्यक्तियों द्वारा सम्मानित, परन्तु धन-सम्पत्ति एवं परिवार के प्रति लापरवाह होता है। यह विभिन्न कार्यों द्वारा धनोपार्जन करता है। किसी उच्च संस्थान अथवा संगठन में कार्य करके सफलतापूर्वक धन कमाने वाला, भाग्य का धनी तथा ईश्वर पर अविश्वास रखते हुए भी मीठे-स्वभाव का तथा परोपकारी होता है। इसके जीवन के १५, १८, २१, ३५, ३८, ४१ तथा ४६ वें वर्ष श्रेष्ठ लाभकर एवं सुखकर सिद्ध होते हैं।

(४२५)- इस जन्मकुण्डली वाला जातक मध्यम शरीर वाला, मध्यम सौन्दर्य युक्त तथा स्वस्थ होता है। यह अपनी पत्नी एवं मित्रों से नियन्त्रित रहते हुए भी स्वतन्त्र-विचारों का होता है तथा धर्म के मार्ग से बचता हुआ, ऐसे अनेक कार्य करता है, जो इसके धन तथा परिवार के लिए हितकर सिद्ध होते हैं। इसे विद्या का उत्तम लाभ होता है। विवाह १९ से २४ वर्ष अथवा फिर २८ से ३२ वर्ष की आयु के मध्य होता है। पत्नी मनोनुकूला, सुन्दरी तथा श्रेष्ठ स्वभाव की मिलती है, फलतः दाम्पत्य-जीवन सुखमय बना रहता है। इसे अपने परिवारी जनों का विश्वास नहीं मिल पाता। यह यथेष्ट धनोपार्जन करते हुए आर्थिक-दृष्टि से सुखी रहता है तथापि धन का संचय विशेष नहीं कर पाता। पत्नी ही बचत कर पाती है। इसे लम्बी आयु प्राप्त होती है, परन्तु यह अनेक प्रकार के रोगों से पीड़ित भी बना रहता है। जीवन के ५, १२, १८, २४, ३० तथा ४८ वें वर्ष महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं।

(४२६)- इस जन्मांग में उत्पन्न हुआ मनुष्य सुन्दर, दृढ़ तथा लम्बे शरीर वाला एवं आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। यह विद्या के क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है। विवाह २५ से २९ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी इससे भी अधिक साहसी स्वभाव की तथा नवीन२ कार्यों को करने में विशेष निपुण होती है। दाम्पत्य-जीवन सुखमय व्यतीत होता है। पत्नी के सहयोग से यह अनेक क्षेत्रों में उन्नति करता है। वह अपने भाइयों तथा परिवारीजनों की सहायता से पति का भला करने में लगी रहती है। इसकी संतानों में पुत्रियों की संख्या अधिक तथा पुत्रों की कम होती है। यह स्वतन्त्र कार्य द्वारा ही धनोपार्जन करता रहता है, बाहरी लोगों के सहयोग से भी यथेष्ट लाभ उठाता है। इसकी आमदनी सुनिश्चित होती है। इसके जीवन के १०, १२, २०, २६, २७, ३०, ३५, ४२, ४८ तथा ५२ वें वर्ष महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं।

भृ० सं० ३३३

कु० र०

(४२७)- इस जन्म-कुण्डली का स्वामी अपनी विद्या, बुद्धि एवं युक्तियों के प्रभाव से उच्च पद पाने वाला, स्वरूप, सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, स्वतन्त्र-विचारों का तथा दूसरों को प्रभावित करने वाला होता है। विद्या का लाभ मध्यम होता है। विवाह २५ से २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा कर्तव्यपरायण होती है, जो अपने पति को प्रभावी बनाए रखने में सचेष्ट बनी रहती है। वह बुद्धिमती तथा सामाजिक-प्रतिष्ठा में वृद्धि करने वाली भी होती है। सन्तान-सुख उत्तम रहता है। यह जातक मुख्यतः सेवा-कार्य द्वारा ही धनोपार्जन करता है तथा मानसिक-चिन्ताओं से ग्रस्त बना रहता है। यात्राओं में इसे विशेष रुचि रहती है तथा यात्राओं से सुख एवं धन का लाभ भी होता है। इसका अधिकांश धन बीमारी तथा व्यर्थ के झगड़े-रगड़ों में व्यय होता रहता है। इसके जीवन के २०, २१, २२, ३५, ४२ तथा ५६ वें वर्ष विशेष लाभप्रद हैं।

(४२८)- इस जन्मकुण्डली वाला जातक शरीर से दृढ़, सामान्य सुन्दर, अत्यन्त बुद्धिमान, कला एवं साहित्य का प्रेमी तथा अपने अध्यवसाय द्वारा ही उन्नति प्राप्त करने वाला होता है। विद्या का लाभ यथेष्ट रहता है। विवाह २२ से २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी होती है, परन्तु उससे विचारों का मेल नहीं खाता, अतः सदैव असन्तुष्ट बना रहता है। इसे आकस्मिक रूप से अपने जीवन में ऐसे अनेक अवसर प्राप्त होते हैं, जिनमें इसे यथेष्ट लाभ होते हैं। यह सेवा-कार्य द्वारा आजीविकोपार्जन करता है। इसे धन की कमी नहीं रहती। यह पैतृक-सम्पत्ति को प्राप्त करने वाला तथा उसकी वृद्धि करने वाला होता है। यह धन को व्यर्थ खर्च नहीं करता। इसकी पत्नी दीर्घायु होती है, जो जातक की मृत्यु के बाद भी बहुत समय तक जीवित बनी रहती है। यह स्वयं मध्यमायु प्राप्त करता है। इसके पुत्र सुन्दर तथा बुद्धिमान होते हैं।

(४२९) - इस जन्मचक्र का स्वामी मध्यम कद वाला, बलिष्ठ शरीर का एवं सामान्यतः सुन्दर तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह उत्तरदायित्वपूर्ण कार्यों का निर्वहन करने में कुशल होता है। यह अपने साथियों के साथ मिल कर कार्य करता है तथा धन-संग्रह करता हुआ सम्पत्ति की वृद्धि करता रहता है। यह परोपकार के कार्य करके यश तथा सम्मान भी प्राप्त करता है। विद्या का उत्तम लाभ होता है। विवाह कुछ विलम्ब से होता है, परन्तु पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है। वह पारिवारिक उन्नति एवं धन-संचय में सहायिका बनती है। दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहता है। सन्तानें सुन्दर, सुखदायक तथा आज्ञाकारिणी होती हैं। यह सेवा-कार्य (नौकरी) द्वारा आजीविकोपार्जन करता है तथा स्वभाव से कृपण होते हुए भी पारिवारिक दायित्वों का कुशलतापूर्वक निर्वाह करता है। जीवन के २८, ३५ तथा ४५ वें वर्ष विशेष लाभप्रद होते हैं।

(४३०) - इस जन्मकुण्डली वाला जातक गौरवर्ण, सुन्दर, लम्बे इकहरे शरीर का, तेजस्वी तथा स्वयं में ही संतुष्ट रहते हुए अपने परिवारीजनों के लिए अत्यन्त सरल, सहज तथा सुखदायक होता है। इसे विद्या के क्षेत्र में इच्छित सफलता मिलती है। विवाह २५-२७ वर्ष की आयु में होता है तथा पत्नी सुन्दरी, बुद्धिमती एवं परिवार का पालन करने में कुशल होती है। यह पैतृक-सम्पत्ति पाने वाला तथा आकस्मिक-लाभ द्वारा उसकी वृद्धि करने वाला एवं एक निश्चित क्षेत्र में प्रभाव रखने वाला होता है। यह बाहरी कामों से कोई सम्बन्ध न रख कर अपने नित्य नियम के कार्यों में ही दत्तचित्त बना रहता है। यह दीर्घायु प्राप्त करता है तथा इसकी पत्नी का निधन इसके जीवनकाल में ही हो जाता है। इसकी आयु के १५, १८, २२, २८, ३१, ३५, ३८, ४०, ४४, ४६, ५०, ५२ तथा ६४ वें वर्ष लाभप्रद सिद्ध होते हैं।

भु० सं० ६३३

(४२१) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, गौर वर्ण तथा पुष्ट शरीर वाला होता है। यह आराम-पसन्द होता है, परन्तु इसे आधि-व्याधियाँ अधिक नहीं सताती। यह उच्च आकांक्षा युक्त, ऊँचे ख्वाब देखने वाला, वाचाल, तर्क करने में कुशल तथा प्रभावशाली होता है। यह औषध व्यवसाय अथवा चिकित्सा कार्य द्वारा धनोपार्जन करता है। विद्या का यथेष्ट लाभ होता है। विवाह २१ से २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा खर्चा पर नियन्त्रण रखनेवाली होती है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। इसकी पत्नी पति को मार्ग-दर्शन देने वाली तथा व्यय पर नियन्त्रण रखने वाली होती है, तथापि पति की अवहेला नहीं करती। सन्तानें यथेष्ट होती हैं। परन्तु पुत्र विशेष योग्य नहीं होते। आर्थिक-स्थिति श्रेष्ठ बनी रहती है। धन का निरन्तर आगमन होता रहता है। राज्य एवं मित्र से हानि की सम्भावना रहती है। आयु के ४५ तथा ५२ वें वर्ष उत्तम

कु० १०

(४२२) - इस जन्म कुण्डली वाला जातक सामान्य सुन्दर, स्वस्थ शरीर का तथा अपने अध्यवसाय द्वारा विद्या एवं धन का उपार्जन करने वाला होता है। यह अपनी बात को कहने में दक्ष तथा धन का संचय करने में पटु होता है। यह समयानुसार स्वयं को भी मोड़ लेता है। विद्या का वांछित लाभ होता है। विवाह २४ से २८ वर्ष की आयु में होना सम्भव है। पत्नी सुन्दरी, हास-विलास युक्त तथा घर के वातावरण को प्रफुल्ल बनाये रखने वाली होती है। वह अत्यन्त चतुर, मनकी बात को दबा कर रखने वाली तथा अवसरानुकूल उचित कदम उठाने में कुशल होती है। इसे पुत्र तथा पुत्री दोनों का लाभ होता है। सन्तानें बुद्धिमान होती हैं, परन्तु क्षुद्र बातों से प्रभावित हो जाया करती हैं। जातक के निर्धारित काम काज में रोड़े तो आते रहते हैं, परन्तु हानि नहीं होती। जीवन के १५, २०, २५, ४२ तथा ५६ वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं।

(४२३)- इस जन्माङ्ग का स्वामी जातक सुन्दर, स्वस्थ, गौर वर्ण, कलाओं का ज्ञाता, बुद्धिमान्, साहित्य एवं संगीत में रुचि रखने वाला तथा सर्वत्र सम्मान पाने वाला होता है। यह अपनी माता की ओर से सुख प्राप्त करता है, परन्तु पिता की ओर से असन्तुष्ट-सा बना रहता है। यह भाग्य का धनी होता है, परन्तु अपने पुरुषार्थ को ही मुख्य मानते हुए कर्तव्यों का पालन करता है। इसकी आय के स्रोत अच्छे तथा एक से अधिक होते हैं तथापि यह एक ही स्रोत से विशेष लाभ प्राप्त करता है। विद्या का लाभ मध्यम होता है। विवाह २२ से २८ वर्ष की आयु के बीच होता है। पत्नी सुन्दरी होती है तथा अहंकारिणी होने के कारण स्वयं को बुद्धिमती मानती हुई कभी-कभी पति की अवहेलना भी कर देती है। छोटी-छोटी बातों पर भी हठ करने में उसे कोई संकोच नहीं होता। इसका भाग्योदय विवाहोपरान्त ही होता है तथा ३२, ४५, ५३, ५८ एवं ६२वें वर्ष विशेष लाभप्रद होते हैं।

(४२४)- यह जातक सुन्दर, स्वस्थ तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह मन-ही-मन सदैव चिन्तित बना रहता है। यह अपने धन का अपव्यय परिवार के हित में करता है, परन्तु उसके बदले इसे लांछना ही मिलती है। विद्या-लाभ मध्यम रहता है। विवाह २५ से २८ वर्ष की आयु के होता है। पत्नी सुन्दरी तथा तेजस्वी, ऊँच-नीच को समझने वाली एवं लोक-व्यवहार में कुशल होती है। सन्तान का सुख उत्तम रहता है। विवाहोपरान्त विशेष सुख मिलता है तथापि धन की कमी जीवन भर बनी रहती है। पत्नी जीवनभर गंभीरता पूर्वक साथ देती है, अतः दाम्पत्य-सुख की भरपूर प्राप्ति होती है। इसे राज्य से सम्मान प्राप्त होता है तथा प्रपंचों का शिकार बनने की संभावना भी रहती है। यह परदेश में रहते हुए सुखी रहता है और वहाँ अपने लिए सम्मानजनक स्थान बना लेता है। जीवन के २३, २७, ३५, ४२, ४८ एवं ५६वें वर्ष लाभप्रद सिद्ध होते हैं।

(४२५)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ तथा आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। यह वाक्पटु होने के साथ ही साहित्य का मर्मज्ञ तथा काव्य-सृजन का शौकीन होता है, तथापि कवि के रूप में अधिक विख्यात नहीं हो पाता। विद्या का समुचित लाभ होता है। विवाह २४ से २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सरल, पति-परायणा एवं व्यवहार-कुशल होती है, फलतः दाम्पत्य-जीवन सुखमय बना रहता है। प्रथम संतान से लाभ की सम्भावना रहती है। अन्य सन्तानों से भी सुख की प्राप्ति होती है। यह हृदय का अत्यन्त उदार तथा क्षमाशील होता है। आमदनी का स्रोत अच्छा रहने के कारण इसे न तो धन की कमी का अनुभव होता है और न कोई काम ही रुक पाता है। यह राज्य द्वारा भी सम्मान प्राप्त करता है तथा नवीन कार्यों में धन का खर्च करते हुए, पैतृक-सम्पत्ति का लाभ उठाता है। ४५ तथा ५६ वें वर्ष विशेष लाभप्रद।

(४२६)- इस जन्मलग्न में जन्मा हुआ बालक सुन्दर, स्वस्थ, उदार-हृदय तथा कलात्मक अभिरुचि-सम्पन्न होता है। विद्या का यथेष्ट-लाभ होता है। विवाह १९ से २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी चतुर, सुन्दरी तथा धैर्यशालिनी होती है। सन्तान-सुख उत्तम रहता है। इसके धन का व्यय कलात्मक-अभिरुचियों की सम्पन्नता में अधिक होता है। बाधाएं आते हुए भी इसके धनागम में किसी प्रकार की कमी नहीं आती। किसी भी नवीन कार्य को आरम्भ करने पर उसमें असफलता की सम्भावना अधिक रहती है, परन्तु इसे आकस्मिक धन-लाभ के भी अनेक अवसर उपलब्ध होते हैं। अधिक दिनों तक एक ही कार्य को करते रहना न तो इसे रुचिकर होता है और न सम्भव ही। कभी-कभी अप्रत्याशित रूप से भी यह नियमित कार्य से मुँह मोड़ लेता है। आयु मध्यम से कुछ अधिक रहती है। जीवन के २६, ३०, ५२ तथा ५८ वें वर्ष विशेष लाभप्रद रहते हैं।

भृ० सं० ३३३

कु० २०

(४२७)- इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य सुन्दर, प्रियदर्शी, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न तथा मधुरवाणी की मधुरता से दूसरों का हृदय जीतने वाला होता है। यह मध्यम शिक्षा प्राप्त करता है तथा इसका विवाह २१ से २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, पतले-दुबले शरीर वाली, अनेक कलाओं में निपुण तथा अपने चारों ओर के वातावरण को उल्लसित बनाये रखने वाली होती है। सन्तानें स्वस्थ, दीर्घजीवी तथा मनोऽनुकूल होती हैं। यह जातक बुद्धि से श्रेष्ठ तथा भाग्य का अच्छा होता है, तथापि इसे प्रायः दुःख के अवसर प्राप्त होते रहते हैं। मान-सम्मान की कमी न रहते हुए भी धन की कमी बनी रहती है। कभी-कभी आकस्मिक रूप से धन-लाभ के अवसर भी प्राप्त हैं; और कभी-कभी ऋण भी लेना पड़ता है। थोड़ी बहुत अचल सम्पत्ति पैतृक-धन के रूप में प्राप्त रहती है। आर्थिक-परेशानी के कारण हर समय चिन्तायें घेरे रहती हैं। वर्ष ३८ तथा ४३ श्रेष्ठ रहते हैं।

(४२८)- इस जन्मांग चक्र का स्वामी शरीर से स्वस्थ, मध्यम कद का, सामान्य बुद्धि तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। इसके छोटे भाई प्रायः होते ही नहीं, यदि हों तो बड़ी कठिनाई से ही जीवित बच पाते हैं। विद्या का यथेष्ट लाभ होता है। विवाह २४ से २८ वर्ष की आयु में होता है तथा पत्नी सुन्दरी एवं सभी का भला चाहने वाली होती है। तथापि वह पति-प्रेम से वंचित रहने के कारण हीन-भावना से ग्रस्त बनी रहती है। जातक स्वयं सुशील, गुरुजनों का कृपा पात्र तथा कौशल द्वारा धनोपार्जन में संलग्न रहने वाला होता है। इसे चाह कर भी पुत्र से सुख नहीं मिल पाता, जब कि इसके पुत्र सफल तथा पिता के प्रति प्रेम रखने वाले होते हैं। यह स्वयं भी स्त्री-पुत्रादि से प्रेम नहीं रखता। यह प्रकृति से कृपण तथा धनसंचय का लोभी होता है। जीवन के १५, २५, २८, ३०, ३२, ४२ तथा ५६ वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं।

(४२९)- इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य अल्प केशों वाला, ऊँचे क़द का, बलिष्ठ, आलसी, क्रोधी तथा नेत्र-रोगी होता है। यह कलाओं का ज्ञाता, सदाचारी तथा अपने यश का विस्तार देखकर आनन्दित होने वाला होता है। इसके पूर्व-उपार्जित धन की हानि होती है तथा परदेश में रहने का संयोग भी बनता है। धन के नष्ट होने की सम्भावना रहते हुए भी सम्मान की हानि नहीं होती। इसे निजभवन का सुख भी मिलता है, परन्तु परिवारीजन उसमें भी बाधा उपस्थित करते हैं। इसका कार्यक्षेत्र बड़ा तथा धन के स्रोतवाला होता है। कला-कौशल द्वारा भी इसे यथेष्ट धन-लाभ होता है। काँसा, पीतल आदि धातुओं के व्यवसाय से भी लाभ होता है। शिक्षा मध्यम होती है। विवाह २४ से २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी इससे कुछ असंतुष्ट अथवा विमुख बनी रहती है। जीवन के २१, २४, २८, ३२, ३७, ३८, ४२, ४८, ५१, ५६ तथा ५८वें वर्ष विशेष लाभप्रद रहते हैं।

(४३०)- यह जातक उन्नत मस्तक वाला, गौरवर्ण, लम्बे क़द का, आलसी, परन्तु वीर, क्रोधी एवं बलिष्ठ, उदार तथा अध्यवसाय एवं उद्यम द्वारा यश-कीर्ति अर्जित करने वाला होता है। यह कला, चित्रकारी, लेख आदि से धन कमाने वाला एवं सुखी जीवन बिताने वाला होता है। इसके केश युवावस्था से ही खिल होने लगते हैं। शिक्षा श्रेष्ठ-स्तर की होती है। विद्वत्ता अधिक पायी जाती है। विवाह २३ से २७ वर्ष की आयु में होता है। सन्तान-सुख उत्तम रहता है। इसे अपने किसी विशेष कार्य में स्त्री की सहायता से सफलता प्राप्त होती है। मित्र भी इसे सहायता देते हैं। यह स्वयं भी अपने मित्रों की सहायता करता है। इसे सवारी तथा भवन का सुख भी प्राप्त होता है। पत्नी क्रोधी-स्वभाव की तथा विद्याहीन होती है, फलतः दाम्पत्य-सुख अच्छा नहीं रहता। इसे परदेस में सुख तथा धन का लाभ होता है। यह कष्टों को भी धैर्य पूर्वक सहन करता है। ५० वर्ष के बाद विशेष सुख मिलता है।

भु० सं० २३३

कु० २०

(४३१)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी गौरवर्ण, लम्बी देह, उन्नत-ललाट तथा सुदृढ़ शरीर का होता है, वह उदार तथा दूसरों की सहायता करके आनन्दित होने वाला एवं समाज में मान-सम्मान प्राप्त करने वाला होता है। परन्तु कभी-कभी आलस्य के कारण अपने कामों को बिगाड़ भी लेता है, यह उद्यमी होते हुए भी अपने परिवार के प्रति चिन्तित सा रहता है तथा परिवारीजनों के ही कारण विपरीत-परिस्थितियों का सामना भी करता है। शिक्षा उत्तम प्राप्त होती है। विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी से मन नहीं मिलता, अतः वह दुःखी बनी रहती है। सन्तान से सुख मिलता है। परिवारी जनों के ऊपर तथा उनके कारण ही इसका धन नष्ट होता है, जिसकी पूर्ति यह परदेश में जाकर करता है। इसे परदेश में तथा राज्य द्वारा सम्मान प्राप्त होता है। इसके जीवन के २०, २५, २६, ३५, ४२, ४८ तथा ५२ वें वर्ष उत्कर्षदायक सिद्ध होते हैं।

(४३२)- इस कुण्डली का स्वामी जातक गौरवर्ण, मध्यम कद वाला, सुन्दर, विनयी, शान्त, सदाचारी, उदार, धैर्यवान् तथा विवेकशील होता है। इसकी अभिरुचि ललित-कलाओं में होती है, जिनके कारण इसे आर्थिक-लाभ भी मिलता है। शिक्षा काम चलाऊ यथेष्ट होती है। विवाह २६ से २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा विवेकशील होती है, जो प्रत्येक क्षेत्र में पति की सहयोगिनी बनी रहती है। सन्तान-सुख भी अच्छा रहता है। निजी सवारी (वाहन) इसके लिए कष्टप्रद सिद्ध होती है। इसे घरवालों से तथा मित्रों से कष्ट मिलता है एवं मित्रों के कारण अनेक बार निराशा का सामना करना पड़ता है। वात-व्याधि से भी इसे पीड़ा पहुँचती है। इस जातक की कला सर्वत्र सम्मान प्राप्त करती है तथा अपनी कला-निपुणता से ही इसे यश तथा धन का लाभ होता है। जीवन के २२, २८, ३०, ३५, ४२, ४८ तथा ५५ वें वर्ष शुभ हैं।

भू० सं० ३२३

कु० २०

(४३३)- इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य मध्यम कद का, गौरवर्ण, सुन्दर तथा अत्यन्त प्रियदर्शी होता है। वह अनेक कलाओं तथा भाषाओं का जानकार एवं उच्च श्रेणी का इंजीनियर होता है। यह राज्य द्वारा सम्मानित एवं राजकीय-पद प्राप्त करने वाला होता है। इसे धन का अभाव नहीं रहता। धार्मिक-कार्यों में धन खर्च करना भी इसे अच्छा लगता है। यह स्त्रियों की ओर आकर्षित होकर भी उनका विश्वास नहीं करता, परन्तु उनके साथ हास-परिहास तथा मौज-मस्ती करने में भी नहीं चूकता। शिक्षा उच्च श्रेणी की होती है। विवाह लगभग २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, परन्तु रुग्ण होती है तथा दीर्घकालीन रोग भोगने के बाद ही स्वस्थ हो पाती है। यह धनी, सुखी तथा ऐश्वर्यपूर्ण जीवन बिताने वाला, यशस्वी तथा परिवारीजनों का पालन करने वाला भी होता है। मध्यमायु के बाद इसे आजीवन सुख मिलता रहता है।

(४३४)- इस धनु लग्न में उत्पन्न जातक लम्बे कद, स्थूल देह, उन्नत ललाट एवं सुन्दर नेत्रों वाला आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। शिक्षा का यथेष्ट लाभ होता है। विवाह २४ से २८ वर्ष की आयु के मध्य होता है। पत्नी सुन्दर, सुरुचि-सम्पन्न तथा पारिवारिक दायित्वों का पालन करने वाली होती है। यह अपनी स्त्री के सहयोग से कोई नया कार्य आरम्भ कर, अपनी आजीविका में वृद्धि करता है। उत्तम आभूषण, वाहन, मकान तथा सेवकों के सुख के अतिरिक्त श्रेष्ठ सन्तान का सुख भी प्राप्त होता है। कोई शत्रु इसके सामने ठहर नहीं पाता। अपितु यह शत्रुओं द्वारा भी लाभ प्राप्त करता है। यह दूसरों को उपकृत करने में आनन्द का अनुभव करता है, फलस्वरूप इसे सर्वत्र यश एवं सम्मान की उपलब्धि होती है। इसकी आयु के १०, १२, १५, २०, २७, ३२, ४६, ४८, ५५ तथा ६० वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं।

मु० सं० ७००

कु० र०

(४३५)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी गौरवर्ण, लम्बे शरीर वाला तथा सुन्दर व्यक्तित्व का धनी होता है। वह कला-कौशल का ज्ञाता, उदार-मन वाला, धन-धान्य एवं स्त्री-पुत्रादि से सुखी बना रहता है तथा जिस परिवार में जन्म लेता है, उसके लिए गर्व का कारण बनता है। शिक्षा उच्च श्रेणी की प्राप्त होती है। विवाह २२ से २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा मानिनी-स्वभाव की होती है, जो अपने आकर्षक व्यक्तित्व से घर-बाहर के सभी लोगों को प्रभावित करती रहती है। सन्तान का उत्तम सुख प्राप्त होता है। इस जातक की आजीविका के स्रोत विपुल तथा रहस्यपूर्ण भी होते हैं। यह जमीन-जायदाद, पशु एवं काष्ठादि वस्तुओं के क्रय-विक्रय से, राज्य से तथा अन्य अनेक स्रोतों से धन का लाभ प्राप्त करता है। इसकी सौभाग्य वृद्धि विवाहोपरान्त आरंभ होकर जीवनान्त तक बनी रहती है।

(४३६)- इस जन्माङ्ग चक्र का स्वामी स्वस्थ, सुन्दर, पुष्ट शरीर एवं मध्यम कद वाला गौरवर्ण होता है। यह साहसी तथा उद्यम पूर्वक धनोपार्जन करने वाला, विद्वान, संगीत-नृत्य आदि में निपुण तथा अन्य ललित कलाओं में रुचि रखने वाला तथा सुख-साधनों की उपलब्धि के लिए कठोर परिश्रम करने वाला होता है, तथापि कभी-कभी आलस्य अथवा प्रमाद वश अपने काम को बिगाड़ भी लेता है। यह मिष्टभाषी तथा परोपकारी प्रकृति का होता है। शिक्षा यथेष्ट प्राप्त करता है। विवाह २६ से ३० वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सेवाभावी होती है तथापि अन्य स्त्रियों से भी इसके संबंध बने रहते हैं। यह शत्रु अथवा रोग पीड़ित नहीं होता, परन्तु सुन्दर स्त्रियों की अधीनता स्वीकार करता है। कभी-कभी विवेक तथा अहंभाव के कारण यह अपने काम को बिगाड़ भी लेता है। इसका जीवन सुख पूर्वक बीतता है।

(४३७) - इस जन्मलग्न वाला जातक मध्यम कद का गौरवर्ण, सुन्दर तथा वाचाल होता है। यह विद्वान्, बुद्धिमान्, उदार तथा अनेक लोगों को आश्रय देने वाला भी होता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करता है तथा कलाओं का प्रेमी एवं जानकार होता है। इसका विवाह लगभग २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी अतीव सुन्दरी तथा सम्मोहक-व्यक्तित्व-सम्पन्न होती है। वह पति को अपनी ओर आकर्षित किये रहती है, फलतः दाम्पत्य-जीवन सुखमय बना रहता है। सन्तान का सुख भी अच्छा रहता है। यह व्यक्ति विद्या, ऐश्वर्य का स्वामी, अनेक स्रोतों से धनोपार्जन करने वाला तथा यदि जरूरत पड़ जाय तो स्वयं ऋण लेकर भी परोपकार करने वाला होता है। यह धर्म का प्रचार करता है तथा दान-पुण्य आदि धार्मिक-कृत्यों में अपना धन दिल खोल कर खर्च करता है। अपने परोपकारी स्वभाव के कारण यह सर्वत्र यश, कीर्ति एवं सम्मान प्राप्त करता तथा सदैव सुखी बना रहता है।

(४३८) - इस जन्मलग्न चक्र वाला मनुष्य लम्बे शरीर तथा विरल केशों वाला, धीर, गंभीर तथा पुष्ट देह वाला होता है। यह वेद-शास्त्रों का ज्ञाता, पण्डित, धार्मिक-ज्ञान की प्राप्ति के विशेष रुचि रखने वाला, धर्म का प्रचारक एवं विद्या-बुद्धि तथा विद्या ऐश्वर्य से सम्पन्न होता है। इसका विवाह २६ से २८ वर्ष की आयु में होता है। इसकी पत्नी विदुषी, सुन्दरी, पति-परायणा एवं स्वतन्त्र व्यक्तित्व वाली होती है। दाम्पत्य-जीवन सुखमय बना रहता है। यह अन्य स्त्रियों के प्रति भी आसक्त होता है, परन्तु यश की हानि नहीं करता। यह आवश्यकता पड़ने पर भी अपने परिवार के लिए धन खर्च करता है। इसे उत्तम सन्तान-सुख प्राप्त होता है। यह सब का सम्मान करने वाला तथा देश और परदेश — दोनों स्थानों पर विपुल धन का अर्जन करने वाला विद्या-ऐश्वर्य का स्वामी होता है। इसका सम्पूर्ण जीवन आनन्द से बीतता है।

भृ० सं० २०७

(४३९)- इस जन्मकुण्डली वाला प्राणी सुन्दर, स्वस्थ, मध्यम कद, गौरवर्ण तथा मीठी वाणी बोलने वाला होता है। यह नाट्य-कला एवं साहित्य का मर्मज्ञ होता है। उच्च कोटि का विद्वान् होने के साथ ही यह जिम्मेदारियों का कुशलता पूर्वक निर्वाह करता है। इसका विवाह 22 से 26 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी अत्यन्त सुन्दर, मधुरभाषिणी तथा मनमोहक व्यक्तित्व से सम्पन्न होती है। वह घर तथा बाहर के सभी लोगों के लिए उदार तथा पति की पूर्ण सहयोगिनी होती है. फलतः दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहता है। सन्तान का सुख भी उत्तम रहता है। व्यक्तिगत रूप में जिम्मेदारियों की अधिकता के कारण यह सुख का अनुभव नहीं कर पाता। नये कार्य में प्रायः बाधाएं उठ खड़ी होती हैं। अनेक प्रकार की चिन्ताओं से ग्रस्त रहने के कारण इसे कभी शान्ति नहीं मिल पाती। राज्य द्वारा सम्मानित एवं लोक में यशस्वी होकर मध्यम जीवन बिताता है।

(४४०)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी लम्बे शरीर का, सुन्दर, दृढ़ चित्त वाला, धैर्यवान, उदार तथा आश्रितों का रक्षक होता है। विद्याध्ययन सामान्य होने पर भी गुणवान् तथा [illegible] होता है। विवाह २४ वर्ष की आयु के आस-पास होता है। स्त्री की ओर से वाँछित सुख प्राप्त नहीं होता, तथापि उसके कारण धन की उपलब्धि होती है। अपने पारिवारिक उत्तरदायित्वों का यह कुशलता पूर्वक निर्वाह करता है। सन्तान मनोनुकूल प्राप्त होती है। इसका भाग्योदय परदेश में होता है तथा भोग भी वहीं उपलब्ध होते हैं। यह अपने से बड़ी आयु वालों को भी उचित मार्ग सुझाता है. फलतः सर्वत्र यश एवं सम्मान की उपलब्धि होती है। यह समय रहते सावधान हो जाने में चतुर होता है, अतः इसका सम्पूर्ण जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होता है। यह अपने जीवन के अन्त तक उन्नति करता चला जाता है।

कु० २०

(४४१)- इस जन्माङ्ग चक्र वाला प्राणी मध्यम कद का, सुन्दर, मृदुभाषी तथा स्वस्थ होता है। इसकी शिक्षा मध्यम स्तर की होती है तथा विवाह २२ से २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सौहार्द्रपूर्ण नहीं होती, अतः उसके कारण इसका मन कभी-कभी अधिक दुःखी भी हो जाता है। सन्तान-सुख उत्तम रहता है। यह व्यक्ति अपनी मधुर वाणी द्वारा नीरस वातावरण को भी सरस बना देता है तथा साहित्य एवं कलाओं का श्रेष्ठ ज्ञाता होता है। इसे संगीत से भी विशेष प्रेम होता है। यह बाल्यावस्था में रोगी रहता है, परन्तु युवावस्था के आरम्भ से जीवनान्त तक नीरोग एवं स्वस्थ जीवन व्यतीत करता है। यह अपने समाज में प्रतिष्ठित-स्थान प्राप्त करता है, तथा धार्मिक कार्यों में विशेष रुचि लेता है। इसकी आय का स्रोत उत्तम रहता है, अतः सुखी एवं सम्पन्न जीवन बिताता है। वर्ष १५, २०, २३, २७, २९, ४५ तथा ५६ विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं।

(४४२)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी मध्यम कद का, कुछ दबे हुए वर्ण का, घने केशों वाला, शरीर से स्थूल तथा आमोद-प्रमोदपूर्ण विनोदी स्वभाव का होता है। शिक्षा मध्यम स्तर की प्राप्त करता है। विवाह २५ वर्ष की आयु के लगभग होता है। इसकी पत्नी सुन्दरी तथा मृदु स्वभाव की होती है तथापि निरहंकारपन पाई जाती है फलतः दाम्पत्य-सुख उल्लासप्रद नहीं रहता। यह सन्तान का उत्तम सुख प्राप्त करता है। इसे चल-अचल सम्पत्ति का लाभ होता है। धन का यथेष्ट आगमन होता रहता है, फलतः यह ऐश्वर्यपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। यह मध्यम पद पर आसीन बने रह कर जीवनान्त तक उत्तरोत्तर प्रतिष्ठा में वृद्धि करता चला जाता है। आयु वृद्धि के साथ इसके यश तथा धन में भी वृद्धि होती है। इसके जीवन के २५, २८, ३९, ४५ तथा ५६ वें वर्ष विशेष लाभप्रद रहते हैं।

भु० सं० २०७

कु० २०

(४४३) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, मध्यमकद एवं बलिष्ठ शरीर वाला होता है। यह भोग-विलास से प्रायः विरक्त रहते हुए धार्मिक-कार्यों में विशेष रुचि लेता है। यह केवल भाग्य के भरोसे न रह कर, देवी-देवताओं की भक्ति में अन्ध-विश्वास रखने वाला होता है तथा प्रत्येक कार्य को उन्हीं की कृपा से सम्पन्न हुआ मानता है। यह यथेष्ट शिक्षा प्राप्त करता है। इसका विवाह २२ से २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी उदार-हृदय, मधुर-भाषिणी, सुन्दरी, खुशामद-पसन्द तथा स्वयं को बड़ा समझने वाली, अहंकारिणी होती है, तथापि दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहता है। यह जातक व्यवसाय करने से डरता है तथा करे तो हानि भी उठाता है, परन्तु नौकरी द्वारा यथेष्ट धनोपार्जन करता है। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है। यह विशेष उद्यमी होता है तथा एक प्रकार से विपरीत-भाग्य के कारण क्षय होने वाली सम्पत्ति की अपने उद्यम द्वारा रक्षा करता है।

(४४४) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य न प्रियदर्शी होता है और न स्वभाव से ही उदार होता है। यह दृढ़ शरीर वाला, अनुदार स्वभाव का, बुद्धिहीन तथा बहुत समझाने-बुझाने पर ही किसी बात को मानने वाला होता है। शिक्षा सामान्य-स्तर की प्राप्त करता है। विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा समझदार होती है, परन्तु वह इसके दुर्व्यवहार के कारण दुःखी बनी रहती है। यह व्यक्ति पैतृक-सम्पत्ति को प्राप्त कर, उसकी सुरक्षा करता है, स्वयं जो कुछ धनोपार्जन करता है, उसे भी खर्च नहीं करता। यह कृपण स्वभाव का होता है तथापि इसकी आमदनी के साधन उत्तम होते हैं। यह निरन्तर धन कमाने में ही लगा रहता है, किसी समय इसे चोट लगने का भय भी रहता है तथा इसकी मृत्यु भी किसी आघात के कारण ही होती है। १५, २०, २२ तथा २५ वर्ष की आयु में इसे विशेष घटनाओं का सामना करना पड़ता है।

भृ० सं० ७०७

(४४५) - इस जन्मलग्न में उत्पन्न प्राणी दृढ़ शरीर वाला, सुन्दर, कटुभाषी, अपराधी-प्रवृत्ति का तथा शीघ्र क्रुद्ध हो जाने वाला होता है। इसकी शिक्षा सामान्य होती है। विवाह २१ से २६ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी होती है, परन्तु उसके साथ इसका मन नहीं मिल पाता। यह चंचल मन, विद्वेषी प्रकृति तथा क्रुद्ध क्रूर स्वभाव का भी होता है। यह आग्नेय-वस्तुओं, ज़मीन, तथा साहस पूर्ण कार्यों से अर्थ-लाभ करता है। यह लगन का पक्का तथा दृढ़निश्चयी होता है तथा घोर परिश्रम, उद्यम तथा हर प्रकार के प्रयत्नों द्वारा सफलता भी प्राप्त करता है। यह पर-धन का लोभी होने के कारण जुआ-सट्टा आदि खेलने में भी संकोच नहीं करता। इसे अपने पुत्रों द्वारा कष्ट एवं तिरस्कार प्राप्त होता है, परन्तु यह उनकी चिन्ता नहीं करता। शत्रु सभी कार्यों में रोड़े अटकाते हैं, परन्तु यह उन्हें दूर करने में सफलता प्राप्त कर लेता है।

(४४६) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न प्राणी सामान्य कद-काठी का, सामान्य सुन्दर तथा शरीर का दृढ़ होता है। यह स्वभाव से उद्दण्ड तथा उच्छृंखल होता है तथा बौद्धिक दृष्टि से कमजोर होता है। इसे अपने माता-पिता तथा सन्तान से भी कोई विशेष सुख नहीं मिलता, परन्तु यह उसकी चिन्ता नहीं करता तथा वे लोग भी इसके विरोधी न होकर, तटस्थभाव रखने वाले होते हैं। शिक्षा सामान्य रहती है। विवाह बड़ी आयु में होता है। पत्नी तीव्र तथा रूक्ष स्वभाव की होती है। जातक पैतृक-जायदाद एवं बाहरी लोगों के सम्पर्क से लाभ उठाता रहता है। भाग्य उत्तम होने के कारण इसके मार्ग में पड़ने वाली सभी बाधाएं स्वयमेव दूर होजाती हैं। यह अभिमानी, कृपण तथा जुआरी भी होता है। जीवन में उत्थान-पतन के अनेक अवसर आते हैं तथा अपने मित्रों एवं साथियों के कारण इसे अत्यधिक दुःख भी उठाना पड़ता है।

कु० १०

(४४७)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य मध्यम कद एवं सुगठित शरीर वाला, सुन्दर तथा बाहर से उग्र प्रतीत होने पर भी अत्यन्त कोमल तथा उदार स्वभाव का होता है। इसका विवाह २० से २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर तथा समझदार होती है तथा पति को एवं परिवारीजनों को सन्तुष्ट बनाये रखने की चेष्टा करती है। सन्तानों में कन्यायें अधिक होती हैं। विद्या का लाभ सामान्य ही होता है। यह भाग्य तथा धन से पुष्ट तथा आवेश में आकर मूर्खतापूर्ण कार्य करके बाद में पछताने वाला होता है। अपने से बड़ी आयु वालों द्वारा प्रेम तथा सम्मान प्राप्त करके भी यह उनसे सन्तुष्ट नहीं रह पाता। इसका भाग्योदय २५ वर्ष की आयु के बाद होता है तथा ३७, ३९, ४५ एवं ४८ वर्ष की आयु में कुछ आर्थिक-कठिनाइयाँ तथा अन्य प्रकार की परेशानियाँ भी आती हैं। आयु मध्यम से कुछ अधिक रहती है तथा जीवन सामान्यतः सुख से बीतता है।

(४४८)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति हृष्ट-पुष्ट तथा उच्च शरीर वाला, सामान्य सुन्दर तथा वात-रोग से संत्रस्त रहने वाला होता है। शिक्षा सामान्य रहती है तथा विवाह भी बड़ी आयु में ही हो पाता है। पत्नी कम समझदार तथा अधिक वाचाल होती है। सन्तानें यथेष्ट संख्या में उत्पन्न होती हैं। यह धनी होते हुए भी अपने धन को छिपा कर रखता है तथा उसे किसी भी सद्कार्य में व्यय नहीं कर पाता। इसे पैतृक-धन की उपलब्धि भी होती है और यह उसमें वृद्धि भी करता है, तथापि स्वभाव से अत्यन्त कृपण होने के कारण यह स्वयं भी उसका उपभोग नहीं कर पाता। इसे स्त्री-पीहर के सुख की उपलब्धि होती है। आयु के ४५ तथा ५१ वें वर्ष शुभ नहीं रहते। आयु लम्बी होती है तथापि वात-व्याधि का कष्ट दीर्घकाल तक भोगना पड़ता है। यह बाहर से जितना सम्पन्न दिखाई देता है, भीतर से उतना सुदृढ़ नहीं होता।

भू० सं० ७०७

कु० २०

(४४९) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी मध्यमकद, बलिष्ठ शरीर तथा आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। इसके मन में कला तथा साहित्य के प्रति जिज्ञासा रहती है तथा उच्च का तकनीकी ज्ञान प्राप्त करने का इच्छुक भी होता है, किन्तु उसकी यथोचित पूर्ति नहीं हो पाती। शिक्षा मध्यम स्तर की प्राप्त करता है। विवाह २० से ३० वर्ष की आयु में होता है। इससे अधिक विलम्ब होना भी संभव है। इसे ससुराल से तथा अन्य स्थानों से भी धन का लाभ होता है। पत्नी सुन्दर तथा मनोनुकूल प्राप्त होती है। सन्तान-सुख भी उत्तम रहता है। इसे जीवन के २४, २६ तथा ३१ वें वर्ष में कठिनाइयों का अनुभव होता है। भाग्योदय ४५ वर्ष की आयु से होता है। इसे धन की कमी का कभी अनुभव नहीं होता। धनागम होता ही रहता है। यह जुए-सट्टे आदि में भी दिलचस्पी लेता तथा उसमें कभी हारता और कभी जीतता रहता है। यह नीच-कर्मों द्वारा भी धनोपार्जन करता है।

(४५०) - इस जन्मकुण्डली वाला जातक मध्यम कद वाला, सुन्दर, स्वस्थ तथा प्रियदर्शी होता है। शिक्षा मध्यम-स्तर की प्राप्त होती है। विवाह २४ से २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर तथा चतुर होते हुए भी इसे सन्तुष्ट नहीं रख पाती। यह पत्नी की ओर से प्रायः दुःखी ही बना रहता है। इसकी सन्तानों में कन्याओं की संख्या अधिक होती है। इसके गृह-रहित होने का योग भी नहीं होता। यह शत्रुओं को पराजित करने वाला तथा अनेक बार धोखा उठाने वाला होता है। यह भाग्य का उत्तम होता है तथा इसे अकल्पित मार्गों द्वारा धन का लाभ होता रहता है। यह वायु-रोग से ग्रस्त हो सकता है तथा मिथ्या-शान-शौकत एवं दिखावे में भी अपने धन को खर्च करता है। यह कभी-कभी अपने ही मूर्खतापूर्ण कार्यों द्वारा अपयश का भागी बनता है। इसके जीवन के ५० तथा ५२ वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं।

भू० सं० २०७

कु० र०

(४५१) - इस जन्म कुण्डली वाला जातक साँवले रंग, मध्यम कद तथा इकहरे शरीर वाला होगा। भाइयों की अपेक्षा बहिनों की संख्या अधिक होगी। यह स्वभाव से क्रोधी प्रकृति का तथा कमजोर बुद्धि वाला होगा। स्त्री सुन्दरी तथा सुशीला होगी एवं दाम्पत्य-सुख का श्रेष्ठ लाभ भी होगा, परन्तु इसके विवाह एक से अधिक होना सम्भव है। इसे माता-पिता का पूर्ण सुख प्राप्त नहीं हो सकेगा। यदि जन्म कुण्डली में चन्द्रमा चतुर्थ भाव में हो तो जातक को फेफड़ों से सम्बन्धित कोई बीमारी, राजयक्ष्मा आदि होना सम्भव है। सामान्यतः जातक पराक्रमी तथा परिश्रमी होगा एवं धनोपार्जन हेतु विशेष प्रयत्नशील रहते हुए अधिक धन का संचय करने में असमर्थ रहेगा। इसकी आयु के २, ६, ८, १०, १४, १८, २०, २२ तथा २४वें वर्ष विद्या के क्षेत्र में विशेष उन्नतिकारक सिद्ध होंगे तथा २५, २६, ३७, ३८, ४१, ४६ तथा ५०वें वर्ष व्यवसाय की उन्नति के लिए श्रेष्ठ रहेंगे। १४ जून से १४ जुलाई का समय प्रतिवर्ष अच्छा व्यतीत होगा।

(४५२) - इस जन्मलग्न वाला जातक गौर वर्ण, लम्बे कद तथा उन्नत ललाट वाला होगा। इसका व्यक्तित्व अत्यन्त आकर्षक होगा। यह शत्रुओं का दमन करने वाला, उत्साही तथा प्रबल पराक्रमी होगा। इसे जीवन में भूमि-भवन का श्रेष्ठ सुयोग प्राप्त होगा तथा भौतिक सुख-साधनों पर धन का अधिक व्यय भी करेगा। विद्या लाभ का अच्छा योग है। दाम्पत्य-सुख भी श्रेष्ठ बना रहेगा। पेट से सम्बन्धित किसी रोग का होना सम्भव है। इसकी स्त्री सुन्दरी, सुशीला, पतिपरायणा तथा विनम्र-स्वभाव की होगी। इसके जीवन के ७, ९, ११, १४, २०, २१ तथा २४वें वर्ष विद्या-क्षेत्र में उन्नति-कारक तथा २२, २६, २८, ३०, ३२, ३६, ३८, ४०, ४२, ४५ एवं ५०वें वर्ष व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ-कारक सिद्ध होंगे। प्रतिवर्ष १४ दिसम्बर से १४ जनवरी तक का समय श्रेष्ठ तथा लाभ-कारक रहेगा। यह जातक अपने पराक्रम से स्व-भाग्य की वृद्धि करता रहेगा। जीवन सुख से बीतेगा।

३०१ सं. भु०

कु० र०

(४५३)– इस जन्मकुण्डली वाला जातक गौर वर्ण, मध्यम कद का तथा क्रोधी-स्वभाव वाला होगा। यद्यपि इसके जीवन में धन-लाभ के अनेक अवसर आयेंगे तथा आमदनी भी अच्छी रहेगी, तथापि व्यय की अधिकता के कारण यह सदैव चिन्तित बना रहेगा। इसे विद्या का श्रेष्ठ लाभ होगा, परन्तु सन्तान-पक्ष की ओर से चिन्ता बनी रहेगी। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होगी एवं दाम्पत्य-सुख यथेष्ट लाभ भी रहेगा, परन्तु जातक अत्यधिक विलासी प्रवृत्ति का होगा, इस कारण यह एक से अधिक स्त्रियों से सम्बन्ध बनाये रहेगा तथा उनके लिए ही धन का खर्च भी अधिक होगा। इसकी कामुक प्रवृत्ति ही इसके अपयश का कारण भी बनेगी। इसके जीवन के ७, ९, ११, १४, २०, २१ तथा २४ वें वर्ष विद्या के क्षेत्र में उन्नतिकारक सिद्ध होंगे तथा २२, २६, २८, ३०, ३२, ३६, ३८, ४०, ४२, ४५, ५० तथा ५२ वें वर्ष व्यवसाय की दृष्टि से लाभप्रद सिद्ध होंगे। आयु दीर्घ होगी।

(४५४)- इस जन्म कुण्डली वाला जातक साँवले रंग का, नाटे कद का तथा मोटे शरीर वाला होगा। इसके सिर पर बाल थोड़े तथा घुंघराले होंगे। यह शंकालु-स्वभाव का तथा ऐसा स्पष्ट वादी होगा कि खरी बात मुँह पर कहने से कभी नहीं चूकेगा। पैतृक-सम्पत्ति के सम्बन्ध में झगड़े-टण्टे एवं मुकद्दमे आदि का होना सम्भावित है, परन्तु यह शत्रु-पक्ष पर सदैव प्रभावशाली बना रहेगा तथा विरोधी भी इसकी हिम्मत और बहादुरी का लोहा मानते रहेंगे। इसे भाई-बहिनों का मध्यम-सुख प्राप्त होगा। इसकी पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा विनम्र स्वभाव की होगी। सन्तान का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होगा। इसके जीवन में २२, २६, २८, ३०, ३२, ३६, ३८, ४०, ४२, ४५ तथा ५० वें वर्ष व्यवसाय के लिए उन्नतिकारक सिद्ध होंगे। प्रतिवर्ष १५ दिसम्बर से १४ जनवरी तक का समय लाभकर व्यतीत होगा। यह जातक साहसी तथा परिश्रमी होगा। जीवन सामान्य रहेगा।

भु० सं० ०.३१७

कु० २०

(४५५) - इस कुण्डली वाला जातक गौरवर्ण, मध्यम क़द वाला तथा झगड़ालू प्रकृति का होगा। यह विद्या के क्षेत्र में उन्नति प्राप्त करेगा तथा आर्थिक-क्षेत्र में इसके जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहेंगे। आमदनी से व्यय अधिक होने के कारण इसके जीवन में धन सम्बन्धी समस्यायें तथा चिन्तायें निरन्तर बनी रहेंगी। सामान्यतः माता का सुख अल्प प्राप्त होगा। यदि जन्मकुण्डली में चन्द्रमा चतुर्थ भाव में हो तो जातक माता के लिए कष्टकर भी रहेगा। इसकी स्त्री कुछ क्रोधी स्वभाव की होगी, तथापि दाम्पत्य-सुख यथेष्ट मात्रा में प्राप्त होगा। विद्या की दृष्टि से इसके जीवन के ५.७, ११, १५, १७, १९ तथा २३ वें वर्ष उन्नति कारक रहेंगे तथा आर्थिक-दृष्टि से २९, ३५, ४१, ४७ तथा ५३ वें वर्ष समृद्धि दायक सिद्ध होंगे। यह जातक धन-लाभ हेतु कठिन परिश्रम करेगा, परन्तु इच्छित धन का संचय हो पाना सम्भव नहीं होगा। जीवन सामान्यतः संघर्षपूर्ण बना रहेगा।

(४५६) - इस कुण्डली वाला जातक गौरवर्ण, मध्यम क़द तथा हठी स्वभाव का होगा। आमदनी की तुलना में खर्च बढ़ा-चढ़ा रहने के कारण यह आर्थिक-दृष्टि से दुर्बल बना रहेगा। यह सदैव नवीन योजनाओं के क्रियान्वयन में लिप्त बना रहेगा। दाम्पत्य-सुख अच्छा रहेगा तथा समय-समय पर ससुराल-पक्ष से भी धन का लाभ होता रहेगा। पुत्र की अपेक्षा कन्यायें अधिक होंगी। विद्या-क्षेत्र में रुकावटें आते रहने के कारण इसे विद्या का मध्यम लाभ होगा। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी का योग अधिक प्रबल बनता है। इसे अपने माता-पिता से भी अधिक सुख प्राप्त नहीं होगा। इसके जीवन के ५, ७, ११, १५, १७, १९ तथा २३ वें वर्ष विद्या की दृष्टि से उन्नति कारक तथा २९, ३५, ४१, ४७ तथा ५३ वें वर्ष आर्थिक दृष्टि से लाभकारक सिद्ध होंगे। संक्षेप में इसका जीवन सामान्य ढंग से व्यतीत होगा। आयु मध्यम रहेगी।

(४५७)— इस जन्म-चक्र में जन्म लेने वाला जातक अत्यन्त सुन्दर, सम्मोहक, ऊँचे कद वाला, शरीर से पुष्ट तथा उत्तम स्वास्थ्य सम्पन्न होगा। वह बड़ा कर्मठ तथा साहसी प्रकृति का होगा एवं परिश्रम, साहस तथा उत्साह के बल पर प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति प्राप्त करेगा। इसका स्वभाव सात्विक होगा, तथापि कामुकता की अधिकता रहेगी। यह आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न रहेगा तथा गृह-भूमि-वाहनादि का उत्तम सुख प्राप्त करेगा। सन्तान सुन्दर, शिष्ट तथा आज्ञा-पालक होगी। कन्याओं की अपेक्षा पुत्र अधिक होंगे। पत्नी सुन्दरी, रूपवती, सुलक्षणा तथा पति-परायणा होगी। विवाह २१ अथवा २६ वर्ष की आयु में होना सम्भव है। वर्ष ५, ७, ९, १३, १७, १९ तथा २१ विद्या-क्षेत्र में उन्नति कारक हैं तथा २५ वें वर्ष प्रतियोगी-परीक्षा में सफलता देने वाला सिद्ध होगा। २४ तथा ५५ वें वर्ष में स्वास्थ्य की ओर से सतर्क रहना चाहिए। २५, २८, २९, ३२, ३६, ३८ तथा ४० वें वर्ष व्यवसाय में उन्नति कारक सिद्ध होंगे। यह जातक ईश्वर तथा धर्म पर निष्ठा रखते हुए भी कर्म को अधिक महत्व देगा।

(४५८)— इस सूर्य-कुण्डली में जन्म लेने वाला जातक सुन्दर, सौम्य तथा हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला, परन्तु कर्कश वाणी वाला होगा। इसकी प्रकृति आलस्य पूर्ण रहेगी। पत्नी अत्यन्त सुन्दरी, सुशीला तथा सुशिक्षिता होगी और यह उससे प्रेम रखते हुए भी अन्य स्त्रियों के प्रति आकर्षित होगा। पारिवारिक-सुख अल्प मात्रा में उपलब्ध होगा। पैतृक-सम्पत्ति के लिए झगड़ा-मुकद्दमे आदि के योग भी संभव हैं। यह अध्ययन का शौकीन, अनेक विषयों का जानकार तथा विद्वान होगा। इसकी आयु के ५, ७, ९, १३, १७, १९, २१ तथा २५ वें वर्ष विद्या के क्षेत्र में उन्नति कारक सिद्ध होंगे। सितम्बर का महीना स्वास्थ्य के प्रति सतर्कता बरतने योग्य रहेगा। यह कूट-नीति तथा वाक्-चातुर्य द्वारा विरोधियों को परास्त करने में सक्षम, पर शत्रु-पक्ष से आर्थिक-हानि पाने वाला तथा समयानुकूल धैर्य तथा साहस से काम लेकर निजी समस्याओं को सुलझाने में अग्रणी होगा। अन्तिम समय सुख-शान्ति से व्यतीत होगा।

मू० सं० ७८२

कु० १०

(४५९)- इस सूर्य-कुण्डली में जन्म लेने वाला जातक स्थूल-शरीर तथा नाटे कद का एवं क्रोधी स्वभाव का होगा। यह अत्यन्त-साहसी भी होगा तथा विपरीत-परिस्थितियों पर अपने शौर्य एवं साहस के बल पर विजय प्राप्त करने में समर्थ रहेगा। सन्तान के विषय में किसी-न-किसी प्रकार की चिन्ता अवश्य बनी रहेगी। आर्थिक-दृष्टि से जातक मध्यम स्थिति का होगा। विद्या-क्षेत्र में रुकावटें आती रहेंगी। सवारी, भूमि तथा भवन का सुख मध्यम श्रेणी का प्राप्त होगा। दाम्पत्य-सुख का लाभ होते हुए भी स्त्री की ओर से किसी-न-किसी प्रकार की चिन्ता बनी ही रहेगी। आयु के ६, ८, १०, १५, २०, २२ तथा २४ वें वर्ष विद्या के क्षेत्र में उन्नतिकारक सिद्ध होंगे तथा २६, २८, ३२, ३४, ३६, ४०, ४२, ४७, ४९, ५३ तथा ५८ वें वर्ष व्यवसाय के लिए लाभप्रद रहेंगे। भाई-बहनों का सुख मध्यम रहेगा। पिता की अपेक्षा माता से अधिक स्नेह प्राप्त होगा। धर्म पर आस्था रखते हुए भी उसके पालन में ढिलाई बनी रहेगी। अन्तिम समय भी मध्यम रहेगा।

(४६०)- इस कुण्डली वाला जातक साँवले रंग का परन्तु सुन्दर नाक-नक्शा वाला होगा। शरीर हृष्ट-पुष्ट रहेगा। आर्थिक-दृष्टि से भी यह भाग्यशाली बना रहेगा। पैतृक-सम्पत्ति की उपलब्धि होगी। भूमि, मकान, वाहनादि का सुख भी प्राप्त होगा। भाई-बहिनों की संख्या कम होगी अथवा उनसे अल्प सुख-सहयोग प्राप्त होगा। इसका स्वभाव क्रोधी होगा, परन्तु साहसी तथा परिश्रमी बना रहेगा तथा शौर्य एवं पराक्रम के बल पर कठिन समस्याओं पर भी काबू पाता रहेगा। पत्नी सुन्दर तथा सच्चरित्रा होगी, दाम्पत्य-सुख भी उत्तम रहेगा, तथापि पति-पत्नी के बीच वैचारिक मतभेद बने रहेंगे। आयु के ६, ८, १०, १५, २०, २२ तथा २४ वें वर्ष विद्या-क्षेत्र में हितकर सिद्ध होंगे। २३ अथवा २७ वर्ष की आयु में विवाह होना सम्भव है। २५, ३०, ३२, ३४, ३६, ३८, ४३, ४७, ४९, ५१, ५५ तथा ५७ वें वर्ष में व्यवसाय की उन्नति होगी। जातक दीर्घायु प्राप्त करेगा तथा सामान्यतः सुख-दुःख मिश्रित जीवन व्यतीत करेगा।

(४६१) — इस जन्म चक्र में उत्पन्न होने वाला बालक मध्यम कद तथा साँवले रंग का, स्थूलकाय एवं क्रोधी स्वभाव का होगा। आर्थिक-दृष्टि से यह सफल रहेगा, परन्तु मध्यकाल में भूमि-मकान आदि के सम्बन्ध में झगड़े-झंझट भी उठते रहेंगे। पारिवारिक जीवन सफल होते हुए भी दाम्पत्य-सुख में नीरसता बनी रहेगी। सन्तान-सुख अच्छा रहेगा। प्रत्येक परिस्थिति को अपने अनुकूल बना लेने में इसे सफलता मिलती रहेगी। पन्द्रह वर्ष की आयु में विद्या के क्षेत्र में रुकावट आना संभव है। जीवन के २६, ३०, ३२, ३४, ३६, ४४, ४६, ४८, ५० तथा ५२ वें वर्ष व्यवसाय में उन्नति कारक सिद्ध होंगे। प्रत्येक आंग्ल-वर्ष में १४ अप्रैल से १४ मई तक का समय सबसे अच्छा सिद्ध होगा। माता-पिता से सुख-सहयोग सामान्य रूप से प्राप्त होगा तथा भाई-बहिनों से भी सम्बन्ध सामान्य रहेगा। पत्नी सुन्दरी तथा सुशिक्षिता होगी, तथापि उससे वैचारिक मत-भिन्नता बनी रहेगी। जीवन का अंतिम समय सुख पूर्वक व्यतीत होगा। धर्म-कर्म में सामान्य रुचि बनी रहेगी। सम्पूर्ण जीवन मध्यम-स्थिति का बना रहेगा।

(४६२) - इस जन्म कुण्डली में पैदा होने वाला जातक सुन्दर, लम्बे कद वाला तथा हठी स्वभाव का होगा। यह अत्यन्त साहसी तथा स्वार्थ-सिद्धि में तत्पर बना रहेगा। पत्नी सुन्दर तथा गुणवती मिलेगी, तथापि पत्नी के साथ विचार-भिन्नता बनी रहेगी। विद्या का उत्तम लाभ होगा तथा सन्तान-सुख भी अच्छा प्राप्त होगा। आयु के १५ तथा १७ वें वर्ष में विद्याध्ययन में रुकावट आना संभव है। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय के क्षेत्र में अधिक सफलता प्राप्त होगी। आर्थिक-दृष्टि से इसका जीवन सफल रहेगा। चल सम्पत्ति की अपेक्षा अचल-सम्पत्ति का योग अच्छा बनता है। वाक्-चातुर्य तथा बुद्धि-बल से विरोधियों तथा शत्रुओं पर विजय मिलती रहेगी। आर्थिक-लाभ हेतु देश-परदेश में भ्रमण करते रहने का भी योग है। धर्म कर्म के प्रति सद्भाव रखते हुए भी धर्म के यथार्थ-पालन में शिथिलता बनी रहेगी। प्रत्येक आंग्ल वर्ष में जून-जुलाई के महीने उन्नति एवं सफलताप्रद सिद्ध होंगे। जीवन का अन्तिम समय सुख-शान्ति से बीतेगा।

(४६३) - इस सूर्य कुण्डली में जन्म लेने वाला जातक गौर वर्ण, मध्यम कद वाला तथा क्रोधी-स्वभाव का होगा। विद्या अच्छी प्राप्त होगी, विद्या की दृष्टि से प्रारंभ तथा अन्त का समय श्रेष्ठ व्यतीत होगा। मध्यकाल में विद्याध्ययन में रुकावटें आ सकती हैं। दाम्पत्य-सुख मध्यम श्रेणी का रहेगा तथा एक से अधिक विवाह होना भी संभव है। आयु का २३, २५ तथा २८ वाँ वर्ष विवाहकारक सिद्ध होगा। पैतृक-सम्पत्ति के लाभ का सुयोग है। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहेगी। पारिवारिक-सुख अच्छा बना रहेगा। आयु का ३८ वाँ वर्ष पूर्णभाग्योदय कारक रहेगा। सामान्यतः २१, ३३, ३५ तथा ३८ वें वर्ष भी व्यवसाय में उन्नतिकारक सिद्ध होंगे। प्रत्येक वर्ष में १४ जुलाई से १४ अगस्त तक का समय उन्नति कारक सिद्ध होगा। माता तथा पिता से सम्बन्ध सामान्य बने रहेंगे तथा पितृ-पक्ष से सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा। धर्म के प्रति जातक की सामान्य रुचि रहेगी। ईश्वर तथा धर्म में आस्था रखते हुए भी जातक कर्म को प्रधानता देगा। व्यवसाय के संबंध में यात्राऐं भी करनी पड़ेंगी।

(४६४) - इस कुण्डली में उत्पन्न जातक सुन्दर नाक-नक्शा का, लम्बे कद का, श्याम वर्ण तथा स्थूल काय होगा। विद्या के क्षेत्र में काफी उन्नति रहेगी। आयु के पन्द्रहवें वर्ष में विद्याध्ययन में कुछ रुकावटें आ सकती हैं। २१ तथा २५ वाँ वर्ष प्रतियोगी-परीक्षा में सफलता दिलाने वाला सिद्ध होगा। पिता की अपेक्षा माता के प्रति जातक विशेष श्रद्धालु बना रहेगा तथापि पिता की आज्ञा का पालन भी करता रहेगा। पारिवारिक-सुख बहुत अच्छा बना रहेगा। स्त्री सुन्दरी, सुशीला, सुलक्षणा तथा पतिव्रता होगी, फलतः दाम्पत्य-सुख का श्रेष्ठ लाभ होगा। आयु के २१, ३३, ३५ तथा ३८ वें वर्ष व्यवसाय में वृद्धिकारक सिद्ध होंगे। ६२ वाँ वर्ष आयु के लिए घातक सिद्ध हो सकता है। भूमि, भवन, वाहन आदि का अच्छा योग रहेगा तथा भूमि द्वारा धन-लाभ का सुयोग भी संभव है। धर्म-कर्म तथा परोपकार में जातक की दिलचस्पी बनी रहेगी तथा यथा शक्ति धर्म का पालन भी करेगा। जीवन सुख तथा शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा।

भू० सं० ७२७

कु० २०

(४६५)— इस जन्मांग में जन्म ग्रहण करने वाला जातक मध्यम कद, श्याम वर्ण तथा कुछ लम्बे शरीर वाला, हृष्ट-पुष्ट एवं सभी के प्रति मधुरवचन बोलने वाला होगा। यह अत्यन्त साहसी तथा परिश्रमी होगा। विद्या के क्षेत्र में इसे पूर्ण सफलता प्राप्त होगी। यह कुछ कृपण स्वभाव का, परन्तु आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होगा। विवाह २२ अथवा २४ वर्ष की आयु में सम्भव है। पत्नी सुन्दरी, सुलक्षणा, पतिव्रता, बुद्धिमती तथा मनोनुकूल प्राप्त होगी, फलतः दाम्पत्य-जीवन मधुरता पूर्ण बना रहेगा। व्यवसाय के क्षेत्र में जातक को विशेष सफलता मिलेगी। आयु के २४, ३०, ३२, ३६, ४२, ४४, ४८ तथा ५२ वें वर्ष विशेष उन्नति कारक सिद्ध होंगे। भूमि-भवन आदि के सुख-लाभ के अतिरिक्त जातक को पारिवारिक सुख का लाभ भी होगा। माता-पिता—दोनों के प्रति जातक पूर्ण कृपालु बना रहेगा तथा उनसे सुख-सहयोग भी प्राप्त होगा। ईश्वर तथा धर्म के प्रति पूर्ण निष्ठावान् रहते हुए सामान्य धर्म-पालक होगा। कार्य विशेष बना रहेगा।

(४६६)— इस कुण्डली चक्र में उत्पन्न जातक गौरवर्ण, मध्यम कद तथा इकहरे शरीर वाला होगा। विद्या के क्षेत्र में धीरे-धीरे उन्नति होगा तथा मध्यम श्रेणी की विद्या का लाभ कर पायेगा। आर्थिक-दृष्टि से यह कमजोर बना रहेगा, क्योंकि इसका खर्च बढ़ा-चढ़ा रहेगा। इसे भूमि-भवन का लाभ प्राप्त होगा, परन्तु वह इसीके हाथ से निकल भी जाएगा। यदि जन्म कुण्डली में चन्द्रमा एकादश भाव में हो, तो माता का सुख प्राप्त नहीं होगा। पिता का सामान्य सुख तथा सहयोग मिलेगा। विवाह का योग एक से अधिक बनता है। दाम्पत्य-सुख सामान्य प्राप्त होगा। पत्नी से विचार-भिन्नता भी सम्भव है। प्रत्येक आंग्ल वर्ष में १५ सितम्बर से १५ अक्टूबर तक का समय आर्थिक-दृष्टि से कमजोर तथा १५ जुलाई से १५ अगस्त तक का समय आर्थिक-दृष्टि से लाभ का सिद्ध होगा। आयु के २५, २८, ३२, ३४, ३६, ३८, ४०, ४५, ४८ तथा ५० वें वर्ष व्यवसाय के लिए उन्नति कारक सिद्ध होंगे। जीवन सामान्य सुखी बीतेगा।

(४६७)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न होने वाला जातक गौरवर्ण, मध्यम कद का तथा क्रोधी स्वभाव का होगा। आर्थिक-दृष्टि से इसका जीवन श्रेष्ठ बना रहेगा। न्याय, दया तथा क्षमा के प्रति इसका विशेष झुकाव रहेगा। शुक्र-गुरु की युति के कारण यह जातक मृदुभाषी होगा तथा शनि-मंगल योग के कारण पैतृक-सम्पत्ति का लाभ भी होगा, तथापि उसके व्यय होने का योग भी प्रबल रहेगा। विद्या के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। २३ अथवा २५ वें वर्ष में विवाह का योग बनेगा। स्त्री सुन्दर तथा सुलक्षणा होगी तथापि दाम्पत्य-सुख मध्यम ही रहेगा। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी का योग प्रबल है। जीवन के २५, २७, ३४, ३७, ३९, ४४, ४६, ४६ तथा ५० वें वर्ष व्यवसाय में उन्नति कारक सिद्ध होंगे। आयु के १७, ४७ तथा ६४ वें वर्ष स्वास्थ्य के लिए हानिकर सिद्ध होंगे। माता-पिता से सामान्य स्नेह के सम्बन्ध रहेंगे तथा परिवारीजनों से भी सम्बन्धों में विशेष प्रगाढ़ता नहीं होगी। जीवन सामान्य बीतेगा।

(४६८)- इस जन्माङ्ग में जन्मा हुआ जातक गौरवर्ण, नाटे कद का तथा क्रोधी स्वभाव का होगा। विद्या-क्षेत्र बहुत मजबूत होने के कारण जातक पूर्ण विद्या प्राप्त करेगा। पत्नी सुन्दरी तथा सुलक्षणा होते हुए भी उससे पूर्ण दाम्पत्य-सुख का लाभ नहीं हो सकेगा। आर्थिक-दृष्टि से जातक की स्थिति श्रेष्ठ होगी तथा भूमि-भवन का लाभ भी होगा। यह जातक अपने ही बाहुबल द्वारा अर्जित धन से मकान का निर्माण करायेगा तथा अत्यन्त साहसी और परिश्रमी होगा। यह व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी में अधिक सफल होगा। २३, २५ तथा २९ वें वर्ष में विवाह होना सम्भव है। प्रत्येक सौर-वर्ष का १४ अक्टूबर से १४ नवम्बर तक का समय लाभप्रद सिद्ध होगा। जीवन के २३, २५, २७, ३१, ३२, ३५, ३७, ३९, ४३, ४८ तथा ५० वें वर्ष व्यवसाय अथवा आर्थिक-दृष्टि से लाभकारी रहेंगे। ६२ वें वर्ष में आयु के लिए हानि सम्भव है अथवा स्वास्थ्य के लिए बहुत खतरा हो सकता है।

(४५९) - इस सूर्य-कुण्डली में जन्म लेने वाला जातक श्यामवर्ण, नाटे कद तथा क्रूर एवं क्रोधी स्वभाव का होगा। यह अत्यन्त साहसी होगा तथा खतरों से खेलने में आनन्द का अनुभव करेगा। विद्या-क्षेत्र में इसे सफलता प्राप्त होगी। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा पतिव्रता होगी। फलतः दाम्पत्य-सुख उत्तम रहेगा। विवाह कुछ विलम्ब से अर्थात् २५ अथवा २८ वें वर्ष में होना सम्भव है। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी का क्षेत्र अधिक लाभप्रद सिद्ध होगा। आयु का २४ वां वर्ष व्यवसाय में लाभप्रद सिद्ध होगा। जीवन में आकस्मिक-लाभ के भी अनेक अवसर प्राप्त होंगे। यदि चन्द्रमा नवम भाव में हो तो व्यवसाय के द्वारा धन-लाभ का श्रेष्ठ योग बनता है। आमदनी की अपेक्षा व्यय अधिक होने के कारण जातक ऋणी भी बना रह सकता है। ३८ वर्ष की आयु में भवन-निर्माण का योग बनेगा। माता-पिता के साथ जातक का स्नेह-सम्बन्ध सामान्य रहेगा तथा परिवारीजनों से भी कोई विशेष सहयोग प्राप्त होने की आशा नहीं की जा सकती।

(४६०) - इस जन्मकुण्डली में जन्म लेने वाला मनुष्य गौरवर्ण तथा लम्बे शरीर वाला होगा। यह स्थूलकाय तथा परिश्रमी एवं साहसी भी होगा। आर्थिक-मामलों में इसे सौभाग्यशाली कहा जा सकता है। इसकी आमदनी के स्रोत एक से अधिक होंगे। विद्या का श्रेष्ठ लाभ मिलेगा तथा व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होगी। २२ अथवा २४ वर्ष की आयु में विवाह होना सम्भव है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होगी एवं दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहेगा। २८ वर्ष की आयु में पूर्ण भाग्योदय होना सम्भव है। २८, ३१, ३३ तथा ३५ वर्ष की आयु में व्यावसायिक उन्नति के अवसर उपलब्ध होंगे। प्रत्येक आंग्ल-वर्ष में १४ जुलाई से १४ अगस्त का समय श्रेष्ठ तथा लाभप्रद सिद्ध होगा। आयु के ५८ तथा ६५ वें वर्ष स्वास्थ्य के लिए हानिकर अथवा घातक सिद्ध होंगे। २२ वर्ष की आयु से भाग्योन्नति प्रारम्भ हो जाएगी। माता-पिता से सहयोग प्राप्त होगा तथा स्नेह-सम्बन्ध सामान्य बने रहेंगे।

(४७१)—इस जन्माङ्ग-चक्र में जन्म लेने वाला जातक गौर वर्ण, मध्यम कद, नाक-नक्श से सुन्दर तथा हठी स्वभाव का होगा। विद्या का सामान्यत: अच्छा लाभ प्राप्त होगा तथा २२, २४ तथा ३१ वर्ष की आयु में विवाह का योग बनेगा। विवाह एक से अधिक होने सम्भव हैं। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा पतिव्रता प्राप्त होगी एवं दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहेगा। भूमि तथा भवन के लाभ-लाभ वाहन का सुख भी प्राप्त होगा। सन्तानें ४ से ६ के बीच होंगी, जिनमें पुत्र-सन्तानों की संख्या अधिक होगी। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में अधिक लाभ होगा। जीवन के २१, २४, २८, ३२, ३४, ३६, ४०, ४४, ४६, ४८, ५०, ५२ तथा ५६ वें वर्ष व्यवसाय में उन्नति कारक सिद्ध होंगे। ३२, ४७ तथा ६१ वें वर्ष स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद सिद्ध होने सम्भव हैं। आमदनी की अपेक्षा खर्च अधिक बना रहने के कारण जातक को सदैव मानसिक-चिन्ता बनी रहेगी। आर्थिक-स्थिति सामान्य ही रहेगी, तथापि समाज में मान-प्रतिष्ठा बनी रहेगी। जीवन सामान्य व्यतीत होगा।

(४७२)—इस कुण्डली-चक्र में जन्म लेने वाला जातक लम्बे कद तथा सुन्दर शरीर वाला होगा। यह स्वभाव से अत्यन्त शान्ति-प्रिय होते भी स्वाभिमानी होगा। मधुरभाषी होना इसका विशिष्ट गुण रहेगा। इसके खर्च बढ़े-चढ़े रहेंगे तथापि आमदनी के स्रोत एक से अधिक होने के कारण आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहेगी। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा गुणवती मिलेगी तथा उसके साथ दाम्पत्य सुख में वृद्धि होती रहेगी। आयु के २२ अथवा २४ वें वर्ष में विवाह होना संभव है। २४ वें वर्ष में व्यावसायिक-उन्नति का अच्छा योग बनेगा। विद्या का क्षेत्र मजबूत रहेगा तथा २० एवं २२ वें वर्ष में विद्या-क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होगी। आयु के २४, २८, ३३, ३५, ३७, ४१, ४५, ४७, ५०, ५२ तथा ५४ वें वर्ष व्यवसाय में उन्नति कारक सिद्ध होंगे। लाभ के अवसर प्राय: उपलब्ध होते रहेंगे। माता-पिता से स्नेह-सम्बन्ध बना रहेगा तथा सहयोग मिलता रहेगा।

(४७३)—इस जन्मलग्न वाला जातक लम्बे कद तथा स्थूल शरीर वाला, अत्यन्त सुन्दर तथा मृदु-स्वभाव का होगा। न्याय तथा ईमानदारी के प्रति इसका विशेष झुकाव रहेगा। वर्ष १६ तथा २२ में शिक्षा के क्षेत्र में रुकावटें आयेंगी। सामान्यतः यह मध्यम श्रेणी का शिक्षार्थ होगा। इसकी भाग्य-शक्ति प्रबल रहेगी। आर्थिक दृष्टि से यह जीवन में सम्पन्न बना रहेगा। पैतृक-सम्पत्ति का लाभ भी प्राप्त होगा। इसके जीवन में एक से अधिक आमदनी के स्रोत बने रहेंगे। लोहे से सम्बन्धित व वस्तुओं के व्यवसाय द्वारा इसे भरपूर लाभ होगा। भूमि, भवन, वाहन तथा सेवक का सुख भी प्राप्त रहेगा। इसका विवाह १८, २२ अथवा २४ वर्ष की आयु में होना सम्भव है। पत्नी सुन्दरी, सुलक्षणा तथा पतिव्रता प्राप्त होगी। दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहेगा। वर्ष २३, २५, २७, २९, ३३, ३५, ३७, ४१, ४६, ४९, ५१ तथा ५३ व्यवसाय में उन्नति कारक सिद्ध होंगे। जीवन में लाभ के अनेक अवसर आते रहेंगे और यह उनका समुचित फायदा भी उठायेगा।

(४७४)— इस सूर्य कुण्डली वाला जातक श्यामवर्ण, इकहरे शरीर का तथा क्रोधी मिजाज वाला होगा। विद्या के क्षेत्र में १५ वर्ष की आयु में रुकावट आना सम्भव है। विवाह २३, २५ अथवा २८ वर्ष की आयु में होगा। पत्नी सुन्दरी, सुशीला, सुलक्षणा तथा पतिव्रता होगी तथा उसके कारण दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहेगा। सन्तान का योग कुछ विलम्ब से बनेगा। इसके १ या २ सन्तानें होंगी। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी का योग अधिक प्रबल है। आयु के २३, २५, २९, ३३, ३७, ४१, ४६, ४९ तथा ५१वें वर्ष में व्यवसाय अथवा नौकरी द्वारा विशेष आर्थिक-लाभ होगा। जीवन के ३८, ४९ तथा ६७वें वर्ष आयु के लिए घातक अथवा स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद सिद्ध होंगे। सामान्यतः आर्थिक दृष्टि से इस जातक का जीवन उत्तम बना रहेगा तथा भूमि-भवन एवं वाहन का सुख भी प्राप्त होगा। माता-पिता से स्नेह-सम्बन्ध बना रहेगा तथा पितृ-पक्ष से लाभ भी प्राप्त होगा। पारिवारिक सुख भी उत्तम है।

(४७५)— इस जन्मकुण्डली वाला जातक गौरवर्ण, कुछ लम्बे शरीर का तथा क्रोधी स्वभाव का होगा। विद्या-क्षेत्र में इसे पूर्ण सफलता प्राप्त होगी। २४, २६ अथवा २८ वर्ष की आयु में विवाह होना संभव है। इसकी पत्नी सुन्दरी, सुशीला, सुलक्षणा तथा पतिव्रता और पति से स्नेह करने वाली होगी, फलतः दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहेगा। यदि चन्द्रमा द्वितीय भाव में हो तो ससुराल धनी परिवार में होगी। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी करना इसे पसन्द आयेगा, परन्तु व्यवसाय में उन्नति के अनेक अवसर प्राप्त होंगे। २३ तथा २६ वें वर्ष में व्यावसायिक-लाभ होगा तथा २८, ३२, ३४, ३६, ४०, ४६, ४८, ५१ तथा ५४ वें वर्ष भी उन्नति कारक सिद्ध होंगे। माता-पिता से सुख-सहयोग की प्राप्ति होगी तथा भूमि, भवन, वाहन तथा पैतृक-सम्पत्ति का लाभ भी होगा। आयु के २५, ४०, ४५ तथा ५५ वें वर्ष स्वास्थ्य के लिए हानिकर सिद्ध हो सकते हैं। धर्म-कर्म में साधारण रुचि रहेगी तथा परिश्रमी और साहसी बना रहेगा।

(४७६)— इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य साँवले रंग, इकहरे शरीर, मुँह पर चेचक के अथवा व्रण के दाग वाला तथा क्रोधी स्वभाव का होगा। विद्याध्ययन में १५ वें वर्ष में कुछ रुकावटें आना संभव है। विवाह का योग कुछ विलम्ब से अर्थात् २७ अथवा २९ वर्ष की आयु में संभव है। पत्नी सुन्दरी तथा सुलक्षणा होगी तथा दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहेगा। ३०, ३६ तथा ४२ वर्ष की आयु में मकान तथा सवारी का सुख प्राप्त होगा। मकान यह स्वयं उपार्जित धन से बनवायेगा, परन्तु पैतृक-सम्पत्ति का भी श्रेष्ठ लाभ होगा, फलतः इसकी आर्थिक-स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ बनी रहेगी। २४ तथा २७ वें वर्ष में व्यवसाय द्वारा विशेष धन-लाभ का योग है। २३, २५, ३१, ३५, ३७, ३९, ४३, ४८ तथा ५१ वें वर्ष भी व्यवसाय में लाभप्रद सिद्ध होंगे। माता-पिता, भाई-बन्धु तथा परिवारीजनों का यथेष्ट सुख-सहयोग प्राप्त होगा। यह जातक किसी समय नौकरी भी कर सकता है, परन्तु नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में अधिक लाभ होगा।

(४७७)- इस जन्मकुण्डली में जन्म ग्रहण करने वाला जातक गेहुँआ रंग, मध्यम कद तथा पुष्ट शरीर वाला एवं स्वभाव से विनम्र होगा, परन्तु जब इसे क्रोध आयेगा तब वह शीघ्र ही समाप्त न होकर स्थायी शत्रुता का रूप धारण कर लेगा। विद्या के क्षेत्र में इसे सामान्यतः सफलता प्राप्त होगी तथा विवाह अपने निवास-स्थान से पूर्व दिशा की ओर से होगा। पत्नी सुन्दरी, सुलक्षणा, पतिव्रता तथा आज्ञाकारिणी होगी, अतः दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहेगा। यह शिक्षा-विभाग में नौकरी करना अधिक पसन्द करेगा, परन्तु व्यवसाय की दिशा में भी अग्रसर हो सकता है। जीवन के २३, २५ तथा २७ वें वर्ष आर्थिक-लाभ की दृष्टि से उत्तम सिद्ध होंगे तथा १४, २९ तथा ५८ वे वर्ष स्वास्थ्य की दृष्टि से प्रतिकूल सिद्ध होंगे। आर्थिक-दृष्टि से जीवन ऐश्वर्यमय बना रहेगा। ४२ वर्ष की आयु में निजी भवन-निर्माण कराने का भी योग है। भूमि, भवन के अतिरिक्त वाहन तथा सेवक का सुख भी उपलब्ध होगा। माता-पिता से सहयोग मिलेगा।

(४७८)- इस कुण्डली में उत्पन्न हुआ मनुष्य गौरवर्ण, उन्नत ललाट, घुंघराले बालों वाला, कद में कुछ लम्बा तथा विशाल से कान्ति-युक्त होगा। यह अपने परिश्रम से अपने भाग्य का निर्माण करेगा तथापि आर्थिक-स्थिति मध्यम ही रहेगी। यह भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त करेगा। विद्या का लाभ भी उत्तम होगा। आयु का १८ वां वर्ष विद्या में कुछ रुकावट डाल सकता है। पत्नी सुन्दरी, सुलक्षणा तथा सेवा भाविनी होगी, अतः दाम्पत्य-सुख उत्तम प्राप्त होगा। विवाह का योग २२ अथवा २८ वें वर्ष में बनता है। आयु के २५, २८, ३१, ३९, ४०, ४४, ५० तथा ५२ वें वर्ष व्यवसाय में उन्नति कारक सिद्ध होंगे। १५, ३०, ४४, ४९ तथा ५४ वें वर्ष स्वास्थ्य के लिए हानिकारक रहेंगे। २५ वें वर्ष से भाग्योदय होगा तथा नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में विशेष लाभ प्राप्त होगा। माता-पिता से स्नेह-सहयोग की प्राप्ति होगी। जीवन सामान्यतः सुखपूर्वक बीतेगा।

(४७९) — इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न होने वाला मनुष्य हल्के गौर वर्ण का, मध्यम कद, इकहरे शरीर का तथा हठीले स्वभाव का होगा। विद्याध्ययन में अनेक रुकावटें आयेंगी तथापि उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकेगा। इसका विवाह अपने निवास-स्थान से दक्षिण दिशा की ओर से होगा और वह २२ अथवा २६ वर्ष की आयु में होना सम्भव है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुलक्षणा होगी अतः दाम्पत्य-जीवन मधुर बना रहेगा। सन्तानें ३ से ५ तक होना सम्भव है, जिनमें कन्याओं की संख्या अधिक रहेगी। २४ वर्ष की आयु में भाग्योन्नति का प्रारम्भ होगा। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी करना अधिक पसन्द करेगा। २८, ३२, ३६, ४१, ४३, ४५, ४९ तथा ५२ वें वर्ष में आर्थिक-लाभ अधिक होगा। आयु दीर्घ होगी, तथापि १५, २९ एवं ५९ वाँ वर्ष शारीरिक-स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद सिद्ध होगा। माता-पिता, भाई-बहिन तथा परिवारीजनों से सामान्य स्नेह-सम्बन्ध रहेंगे। जीवन प्रायः सुख-शान्ति से व्यतीत होगा।

(४८०) — इस सूर्य कुण्डली में जन्म ग्रहण करने वाला बालक हल्के गौर वर्ण, इकहरे शरीर, कुछ लम्बाई लिये मध्यम कद तथा स्वभाव से नम्र एवं मृदुभाषी होगा। भाई की अपेक्षा बहनें अधिक होंगी। विद्या का उत्तम लाभ प्राप्त होगा, तथापि १६ वें वर्ष में विद्याध्ययन में कुछ रुकावटें आ सकती हैं। विवाह २२, २६ अथवा २८ वर्ष की आयु में होगा। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा प्रियवादिनी होगी, फलतः दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहेगा। आयु के २५ वें वर्ष में भाग्योदय होगा तथा २५, २८, ३०, ३२, ३६, ४०, ४४, ४८ तथा ५२ वें वर्ष आर्थिक-लाभ की दृष्टि से उन्नतिकारक सिद्ध होंगे। सामान्यतः इस जातक की आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहेगी। सन्तानों में कन्याओं की संख्या अधिक होना सम्भव है। आयु के १५, २९ तथा ३० वें वर्ष स्वास्थ्य के लिए हानिकर सिद्ध होंगे। माता-पिता, भाई-बहिन तथा परिवारीजनों से मधुर सम्बन्ध बने रहेंगे तथा उनसे निरन्तर सुख-सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा।

(४८१)- इस सूर्य कुण्डली में जन्म लेने वाला जातक हल्के श्याम वर्ण का, कुछ लम्बे तथा स्थूल शरीर का एवं कुछ अधिक क्रोधी-स्वभाव वाला होगा। भाई की अपेक्षा बहिनें अधिक होंगी। विद्या का सामान्यतः श्रेष्ठ लाभ होगा। २३ अथवा २७ वर्ष की आयु में विवाह होना संभव है। पत्नी सुन्दरी, सुलक्षणा, पति-सेविका तथा प्रियभाषिणी होगी, अतः दाम्पत्य-सम्बन्ध मधुर बना रहेगा। इसे माता-पिता तथा अन्य परिवारी जनों का पूर्ण सुख-सहयोग प्राप्त होगा। व्यवसाय में इसे विशेष लाभ मिलेगा तथा आकस्मिक-लाभ के अवसर प्राप्त होते रहेंगे। २५, २८, ३२, ३६, ४१, ४४, ४८ तथा ५२ वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होंगे। १४, २९, ४३ तथा ६० वें वर्ष में स्वास्थ्य को हानि पहुँचना संभव है। आर्थिक दृष्टि से जातक की स्थिति सुदृढ़ बनी रहेगी तथा समाज में मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति भी होगी। माता-पिता का तथा परिवारी जनों का सामान्य सुख-सहयोग मिलेगा। यह जातक स्वपराक्रम से उन्नति-पथ पर बढ़ेगा।

(४८२)- इस कुण्डली में उत्पन्न हुआ मनुष्य गौरवर्ण, लम्बे तथा इकहरे शरीर वाला होगा। स्वभाव से क्रोधी होगा, तथापि परिस्थिति के अनुसार समझदारी से भी काम लेता रहेगा। विद्याध्ययन में रुकावटें आयेंगी, तथापि यह उच्च-शिक्षा प्राप्त करेगा। वर्ष २३, २७ तथा २९ में विवाह का योग बनता है। विवाह एक से अधिक होने संभव हैं; तथापि दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहेगा। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी में इसे विशेष सफलता प्राप्त होगी। सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक रहेगी। वर्ष २५, २९, ३३, ३७, ४१, ४५, ४९ तथा ५१ व्यवसाय में लाभप्रद सिद्ध होंगे। यह पेट सम्बन्धी विकारों का रोगी रहेगा तथा वर्ष १५, ३० तथा ४२ स्वास्थ्य की दृष्टि से चिन्ताजनक सिद्ध होंगे। आर्थिक-दृष्टि से इसका जीवन सफल रहेगा तथा समाज में मान-प्रतिष्ठा भी प्राप्त होगी। माता-पिता तथा परिवारी जनों से इसे सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

भृ० सं० ४८७

(४८३)— इस कुण्डली वाला जातक गौरवर्ण, लम्बे शरीर का तथा क्रोधी स्वभाव का होगा। यह वाक्पटु तथा झगड़ालू प्रकृति का भी हो सकता है। विद्या का लाभ अच्छा होगा। तथा स्त्री सुन्दरी परन्तु वाचाल झगड़ालू स्वभाव की होगी, अतः दाम्पत्य-सुख में न्यूनता बनी रहेगी। विवाह २४ अथवा २८ वर्ष की आयु में होना सम्भव है। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी का क्षेत्र अधिक लाभप्रद सिद्ध होगा। बिजली से सम्बन्धित काम-काज में विशेष सफलता प्राप्त होगी। आयु के २५, २७, २९, ३३, ३७, ३९, ४१, ४५, ५०, ५२ तथा ५४ वें वर्ष व्यवसाय अथवा आर्थिक क्षेत्र में विशेष सफलतादायक सिद्ध होंगे। सामान्यतः आर्थिक-स्थिति मजबूत बनी रहेगी। आयु के ३०, ४५ तथा ६२ वें वर्ष स्वास्थ्य के लिये चिन्ताजनक रहेंगे। प्रवास-काल काफी कष्टकर रहेगा। माता, पिता तथा परिवारीजनों से सम्बन्ध सामान्य रहेंगे तथा उनसे कोई सहयोग मिलना सम्भव नहीं होगा। जातक मनमानी करने वाला होगा।

(४८४)— इस जन्माङ्ग में जन्म लेने वाला बालक साँवले रंग का, मध्यम कद वाला, इकहरे शरीर का तथा क्रोधी स्वभाव का होगा। ११ वर्ष की आयु में विद्याध्ययन में रुकावटें आयेंगी तथापि विद्वान् होगा। स्त्री साँवले रंग की होगी तथा स्त्री-पक्ष से सदैव चिन्ता बनी रहेगी। विवाह २५ अथवा २७ वर्ष की आयु में होना सम्भव है। भाई की अपेक्षा बहनों की संख्या अधिक रहेगी। सन्तानों में भी कन्या-सन्तति का अधिक होना सम्भव है। आय की अपेक्षा व्यय की अधिकता बनी रहेगी अतः जातक कभी-कभी ऋण-भार ग्रस्त भी बना रहेगा। सामान्यतः आर्थिक-स्थिति मध्यम दर्जे की रहेगी। जीवन के २५, ३०, ३२, ३८, ४२, ४६, ४९ तथा ५३ वें वर्ष व्यवसाय में उन्नतिकारक अथवा आर्थिक-लाभप्रद सिद्ध होंगे। २९, ४३ तथा ६१ वें वर्ष स्वास्थ्य के लिए खराब सिद्ध होंगे। पुखराज धारण करना तथा गुरुवार का व्रत हितकर रहेगा। यदि चन्द्रमा गुरु के साथ हो तो फेफड़ों का रोगी हो सकता है।

कु० २०

(४८५)— इस कुण्डली में उत्पन्न हुआ बालक गौरवर्ण, लम्बे कद का तथा बलिष्ठ शरीर वाला होगा। स्वभाव से नाजुक तथा नम्र होते हुए भी यह दूसरों से अपना काम निकालने में तेज होगा। विद्याध्ययन का क्षेत्र अच्छा होने के कारण यह विद्वान् होगा तथा अपनी योग्यता एवं बुद्धिमत्ता से कठिन कार्यों को भी हल कर लिया करेगा। इसका विवाह २३ या २८ वर्ष की आयु में होगा। पत्नी सुन्दरी, पतिव्रता तथा मनोनुकूला होगी, अतः दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहेगा। आर्थिक-दृष्टि से जीवन मध्यम रहेगा। व्यय की अधिकता के कारण आर्थिक-स्थिति असंतुलित बनी रहेगी। भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होगा तथा यह अपने ही उद्योग से भवन का निर्माण करायेगा। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी में इसे विशेष लाभ होगा। वर्ष २३, २८, ३०, ३५, ४०, ४२, ४४, ४६ तथा ५२ वें आर्थिक लाभ की दृष्टि से उत्तम रहेंगे तथा २३ अथवा २८ वें वर्ष में भाग्योदय होगा। पूर्णायु ६२ से ६६ वर्ष के मध्य होनी संभव है।

(४८६)— इस सूर्य-कुण्डली वाला जातक मध्यम कद का परन्तु कुछ नाटा एवं गौरवर्ण होगा। यह स्वभाव से क्रोधी होता हुआ भी मृदुभाषी होगा। विद्या-क्षेत्र मजबूत रहेगा। इसका विवाह २०, २४ अथवा २८ वें वर्ष में अपने स्थान से उत्तर दिशा की ओर होगा। २२, २४ अथवा २८ वें वर्ष में यह नौकरी के क्षेत्र में प्रवेश करेगा। संतान का योग अच्छा है, परन्तु विवाह एक से अधिक होंगे अथवा पत्नी के अतिरिक्त यह स्त्रियों से भी सम्बन्ध रखेगा। यह अपने परिश्रम द्वारा धनोपार्जन करे। आर्थिक-दृष्टि से सबल बना रहेगा तथा इसकी आय के स्रोत एक से अधिक होंगे। ससुराल पक्ष से भी भूमि-भवन-प्राप्ति संभव है। यह माता-पिता का अत्यन्त प्रिय होगा तथा भ्रातृ-पक्ष पर सदैव पूर्ण प्रभाव डालता बना रहेगा। दाम्पत्य-सुख अच्छा रहेगा। यह बड़ा परिश्रमी तथा साहसी होगा। आयु के ३, ३६, ४८ तथा ६४ वें वर्ष स्वास्थ्य के लिए हानिकर सिद्ध होंगे।

भू० सं० ७२३

कु० र०

(४८७)- इस कुण्डली में उत्पन्न हुआ बालक मध्यम कद, गौर वर्ण तथा शान्त स्वभाव वाला होगा। शिक्षा अच्छी प्राप्त होगी। विवाह २१, २५ अथवा २८वें वर्ष में होना सम्भव है। पत्नी सुशील तथा कुल-क्षणा होगी, फलतः दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहेगा। यह नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में अधिक सफलता प्राप्त करेगा। आयु के २३, २७, ३१, ३५, ४०, ४३, ४८ तथा ५३वें वर्ष व्यवसाय में उन्नतिकारक सिद्ध होंगे। यह बड़ा साहसी तथा पराक्रमी होने के साथ ही हठधर्मी भी होगा। इसे ३४ वर्ष की आयु में वाहन का तथा ४६ वर्ष की आयु में भवन का सुख प्राप्त होगा। आमदनी से व्यय अधिक होने के कारण यह प्रायः ऋण-ग्रस्त बना रहेगा, तथापि गृहस्थी सम्बन्धी सभी कार्य सुचारु रूप से चलते रहेंगे। वर्ष १८, ३७ तथा ५२ स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद सिद्ध होंगे, तथापि यह पूर्ण अर्थात् दीर्घ आयु प्राप्त करेगा। माता-पिता तथा परिवारी जनों से सम्बन्ध सामान्य बने रहेंगे।

(४८८)- इस सूर्य-कुण्डली में जन्म लेने वाला मनुष्य इकहरे शरीर का तथा उग्र एवं क्रोधी स्वभाव का होगा। तथापि यह स्वभाव से मृदु, साहसी तथा अत्यधिक पराक्रमी होगा। बुद्धि-कौशल तथा वाक्चातुर्य से अपना काम निकाल लेने में कुशल होगा। शिक्षा का क्षेत्र अच्छा होने के कारण यह शिक्षा खूब प्राप्त करेगा। इसका विवाह २५ अथवा २८ वर्ष की आयु में होगा तथा स्त्री हठीली होगी, जिसके कारण यथार्थ दाम्पत्य-सुख में कुछ कमी बनी रहेगी। २३, २७, ३१, ३५, ४०, ४३, ४८ तथा ५३वें वर्ष आर्थिक-दृष्टि से लाभ प्रदसिद्ध होंगे। ४२ वर्ष की आयु में यह अपना मकान बनवायेगा, भूमि-भवन के साथ वाहनादि का सुख भी प्राप्त होगा। इसका रहन-सहन ऐश्वर्यपूर्ण होगा, तथापि इसकी आर्थिक-स्थिति सन्तोष-जनक बनी रहेगी। यह नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय के क्षेत्र में अधिक सफलता प्राप्त करेगा। भाई-बहिनों की संख्या कम होगी तथा माता-पिता का उत्तम सुख मिलेगा।

भू० सं० ७२८

कु० र०

(४८९)- इस कुण्डली में जन्म लेने वाला मनुष्य सुन्दर नाक-नक्श वाला, गौर वर्ण तथा क्रोधी स्वभाव का होगा। यह अत्यन्त कर्मठ तथा साहसी होगा तथा स्वोपार्जित धन द्वारा भूमि, भवन एवं वाहन का सुख प्राप्त करेगा। यह श्रेष्ठ विद्वान् होगा। २३ तथा २८ वर्ष की आयु विद्या के क्षेत्र में उन्नतिकारक सिद्ध होगी। इसका विवाह २५ या २९ वर्ष की आयु में होगा। पत्नी सुन्दरी, सुशिक्षिता तथा मनोरमा प्राप्त होगी, अतः दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहेगा। आयु के २३, २७, ३१, ३५, ४०, ४३, ४८ तथा ५३ वें वर्ष आर्थिक-दृष्टि से विशेष लाभप्रद सिद्ध होंगे। व्यवसाय की अपेक्षा यह नौकरी के क्षेत्र में अधिक सफल होगा। जीवन के १८, ३६ तथा ५२ वें वर्ष में स्वास्थ्य के लिए खराबी उत्पन्न हो सकती है। भाई-बहनों का उत्तम सुख प्राप्त होगा तथा सन्तान भी आज्ञानुवर्तिनी रहेगी। यह आर्थिक दृष्टि से मर्यादा सम्पन्न बना रहेगा तथा माता-पिता के स्नेह तथा सहयोग का भागी एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

(४९०)- इस कुण्डली में उत्पन्न हुआ बालक मध्यम कद, सुन्दर नाक-नक्शा वाला तथा गौर वर्ण होगा। स्वभावतः यह अत्यन्त शान्त प्रकृति का होगा, परन्तु जब क्रोध आयेगा, तो वह शीघ्र ही शान्त न होगा। विद्या-क्षेत्र मध्यम रहे तथा विद्याध्ययन काल में रुकावटें भी आती रहेंगी। इसका विवाह २३, २५ अथवा २९ वर्ष की आयु में होगा। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होगी, फलतः दाम्पत्य-जीवन सुखी एवं उल्लासपूर्ण बना रहेगा। यह व्यवसाय के क्षेत्र में अच्छा लाभ प्राप्त करेगा। वर्ष २७, २९, ३१, ३५, ३९, ४१, ४३, ४७, ५१ तथा ५३ उन्नति कारक एवं धनदायक सिद्ध होंगे। वर्ष २७ तथा २९ विशेष उन्नति देने वाले रहेंगे। यह स्वोपार्जित धन द्वारा अनेक मकानों का स्वामी बनेगा तथा वाहन-सेवकादि के सुख से सम्पन्न होगा। जीवन के २, २६, ३८ तथा ६२ वें वर्ष स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद सिद्ध होंगे। यह समाज में प्रतिष्ठित तथा परोपकारियों का प्रियपात्र होगा।

(४६१)- इस वृष कुण्डली में जन्म लेने वाला मनुष्य खिलते हुए गौर वर्ण वाला, लम्बे कद का तथा क्रोधी स्वभाव का होगा। यह बातचीत करने में अत्यन्त पटु होता है। विद्या का योग अच्छा बनेगा तथा २२, २६ अथवा ३० वर्ष की आयु में विवाह होगा। इसकी पत्नी सुन्दरी, सुलक्षणा तथा प्रियवादिनी होगी, फलतः दाम्पत्य-सुख में अभिवृद्धि होती रहेगी। इसकी आर्थिक-स्थिति मजबूत रहेगी तथा आमदनी के स्रोत भी अनेक होंगे, तथापि रहन-सहन का खर्च अत्यधिक बढ़ा रहने के कारण धन का संचय अधिक नहीं हो पायेगा। भूमि तथा भवन का सुख उपलब्ध रहते हुए भी उस पर झगड़े-झंझट चलते रहेंगे। वाहन का सुख बना रहेगा। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी में इसे विशेष लाभ होगा। चोर आदि लोगों का भय भी उपस्थित हो सकता है। आयु के २८, ३२, ३६, ४०, ४८, ५२ तथा ५६ वें वर्ष उत्पत्ति काल तथा २५, ३६, ४५ एवं ६३ वें वर्ष स्वास्थ्य के लिए प्रतिकूल सिद्ध होंगे।

(४६२)- इस जन्माङ्ग चक्र में उत्पन्न हुआ बालक गौर वर्ण, मध्यम कद तथा क्रोधी-स्वभाव का होगा। विद्या का लाभ उत्तम रहेगा, परन्तु अध्ययन काल में कई बार रुकावटें भी आयेंगी। विवाह २६ वें वर्ष में होना सम्भव है। वैवाहिक-सुख कुछ चिन्ताजनक बने रहना भी सम्भव है। सन्तान की ओर से भी चिन्ता बनी रहेगी। वर्ष ३३, ४५ तथा ५७ स्त्री के लिए कष्टकारक रहेंगे तथा वर्ष २४ एवं ५३ स्वयं के स्वास्थ्य के लिए भी चिन्ताजनक हो सकते हैं। जातक की आयु दीर्घ होगी, परन्तु वायु-विकार सम्बन्धी रोग परेशान करते रहेंगे। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी लाभप्रद सिद्ध होगी। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहेगी। नौकरी का योग २४ वर्ष की आयु में सम्भव है। माता-पिता तथा भाई-बहिनों के साथ सामान्य स्नेह-सम्बन्ध रहेंगे, तथापि किसी से सुख-सहयोग अथवा लाभ की आशा नहीं की जा सकती। जातक धार्मिक तथा ईश्वर के प्रति आस्थावान् बना रहेगा।

मु० सं० कु० १०

(४६३)- इस जन्मलग्न में जन्म लेने वाला प्राणी नाटे कद, गोल मुँह, घुँघराले बाल तथा साँवले रंग का होगा। यह स्वभाव से क्रोधी होगा। यह शरीर से हृष्ट-पुष्ट होगा, प्रत्येक बात पर बहस करना इसका स्वभाव होगा। विद्याध्ययन में रुकावटें आती रहेंगी, फलतः यह मध्यम-विद्या प्राप्त होगा। विवाह २७ वर्ष की आयु में होना सम्भव है। पत्नी भी साँवले रंग की मिलेगी और वह स्वभाव से भी क्रोधित्री होगी; फलतः दाम्पत्य सुख भी मध्यम ही रहेगा। यह नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में अधिक लाभ प्राप्त करेगा। निजी भूमि, भवन तथा सवारी का सुख-भोग भी प्राप्त रहेगा। इसकी आर्थिक-स्थिति मजबूत रहेगी तथा इसकी आमदनी के स्रोत भी एक से अधिक होंगे। जीवन के २४, २९, ३१, ३३, ३७, ४२, ४३, ४९, ५१, ५३ तथा ५५ वें वर्ष व्यवसाय के लिए उन्नति कारक सिद्ध होंगे। आर्थिक स्थिति अच्छी रहने के साथ ही जातक को भूमि, भवन आदि का सुख भी प्राप्त होगा तथा वाहन पर भी व्यय करेगा। पारिवारिक सम्बन्ध मधुर बने रहेंगे।

(४६४)- इस जन्माङ्ग कुण्डली चक्र में जन्म ग्रहण करने वाला बालक मध्यम कद, साँवले रंग, घुँघराले बाल तथा क्रोधी स्वभाव वाला होगा। भाई की अपेक्षा बहिनों की संख्या अधिक होगी। विवाह २३ अथवा २७ वर्ष की आयु में होना संभव है। स्त्री से कुछ-न-कुछ परेशानी का अनुभव होता रहेगा, अतः दाम्पत्य-सुख उत्तम नहीं कहा जा सकता। भूमि, भवन तथा सवारी का सुख प्राप्त होगा। सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक होगी तथा प्रथम सन्तान भी पुत्र ही होगी। विद्या का लाभ भी श्रेष्ठ प्राप्त होगा। यह नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में अधिक उन्नति करेगा। आयु के २४, २९, ३१, ३३, ३७, ४१, ४९, ५३ तथा ५५ वें वर्ष व्यवसाय अथवा आर्थिक-क्षेत्र में लाभप्रद सिद्ध होंगे। प्रत्येक आंग्ल-वर्ष में १४ अप्रैल से १४ मई का समय विशेष उन्नतिकारक रहेगा। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहेगी तथा जीवन के मध्यकाल में आर्थिक-कठिनाइयाँ भी आयेंगी। यह जातक झगड़ालू स्वभाव का भी होगा।

(४६५)- इस कुण्डली में जन्म लेने वाला मनुष्य गौर वर्ण, लम्बे कद तथा गोल चेहरे वाला होगा। यह स्वभाव से हठी भी होगा। विद्या-क्षेत्र में इसे पर्याप्त सफलता प्राप्त होगी तथा बुद्धि भी बहुत तीव्र होगी। विवाह का योग २३ अथवा २७ वर्ष की आयु में बनता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होगी, फलतः दाम्पत्य-सुख उत्तम प्राप्त होगा। संतान का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। इसका रहन-सहन ऐश्वर्यपूर्ण बना रहेगा, फलतः खर्च की चिन्ता बनी रहेगी एवं आर्थिक-स्थिति मध्यम होगी। भूमि-मकान आदि के सम्बन्ध में झगड़े-झंझट के अवसर भी उपस्थित हो सकते हैं। यह व्यापार द्वारा लाभ प्राप्त करेगा। जीवन के २४, २६, ३३, ३७, ४१; ४५, ५० तथा ५५वें वर्ष व्यवसाय में उन्नति कारक सिद्ध होंगे। प्रत्येक आंग्ल-वर्ष में १४ अप्रैल से १४ मई तक का समय लाभकर सिद्ध होगा। आयु का २८ वाँ वर्ष स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद रहेगा, तथापि यह पूर्णायु प्राप्त करेगा। मूँगा पहनना श्रेयस्कर रहेगा। माता-पिता से सम्बन्ध मधुर बने रहेंगे।

(४६६) - इस जन्मलग्न में जन्मा हुआ बालक साँवले रंग का, मध्यम कद वाला तथा क्रोधी स्वभाव का होगा। विद्या के क्षेत्र में इसे सफलता प्राप्त होगी तथा बुद्धि भी तीव्र रहेगी। अध्ययन-काल में आयु का चौदहवाँ वर्ष कुछ रुकावटें डालने वाला सिद्ध होगा। विवाह २१, २४ अथवा २८ वर्ष की आयु में होगा। पत्नी सुन्दरी, सुलक्षणा तथा स्नेहमयी होगी, जिसके कारण दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहेगा। विवाह उत्तर दिशा की ओर से होगा। आयु के २४, ३०, ३४, ३८; ४२, ४४, ४६, ५० तथा ५४वें वर्ष व्यवसाय में उन्नति कारक सिद्ध होंगे। पैतृक-सम्पत्ति के लाभ का योग है, परन्तु उस पर झगड़े-झंझट होना भी सम्भव है। सामान्यतः भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त रहेगा। शारीरिक स्वास्थ्य के लिए ४७वाँ वर्ष विशेष कष्ट कारक रहेगा। यों जातक को उदर-विकार की शिकायतें बनी रहेंगी तथा पेट का शल्योपचार होना भी सम्भव है। पारिवारिक जनों से सम्बन्ध सामान्य रहेंगे तथा धर्म के प्रति श्रद्धा रहेगी।

(४९७)- इस जन्म-कुण्डली में जन्म ग्रहण करने वाला बालक गौरवर्ण, मध्यम कद, नाक-नक्शा से सुन्दर तथा हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला होगा। विद्या का लाभ मध्यम रहेगा तथा विवाह २२, २४ अथवा २८वें वर्ष में होना सम्भव है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा शान्ति-प्रिय होगी, अतः दाम्पत्य-जीवन सुख तथा आनन्दमय बना रहेगा। सन्तान-सुख भी अच्छा बना रहेगा। यह नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय से अधिक लाभ उठायेगा। जीवन के २४, ३०, ३४, ३८, ४२, ४४, ४६, ५० तथा ५४वें वर्ष व्यवसाय में उन्नति कारक सिद्ध होंगे। प्रत्येक अंग्रेज-वर्ष में १४ मई से १४ जून तक का समय लाभप्रद सिद्ध होगा। आयु के १५, ४५, तथा ५९वें वर्ष स्वास्थ्य के लिए हानिकर सिद्ध होगा। भाई-बहिनों के प्रति जातक अधिक स्नेहशील रहेगा तथा माता-पिता का भी सुख-सहयोग प्राप्त करेगा। आर्थिक-स्थिति मजबूत बनी रहेगी। ३७ वर्ष की आयु में भूमि तथा भवन का लाभ होगा। सामान्यतः जातक सुखी-जीवन व्यतीत करेगा।

(४९८)- इस स्वरूप-कुण्डली में जन्म लेने वाला मनुष्य लम्बे कद, इकहरे शरीर, साँवले रंग तथा क्रोधी-स्वभाव का होगा। विद्या-क्षेत्र में उन्नति करेगा। २४ अथवा २८ वर्ष की आयु में विवाह होना सम्भव है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा पतिव्रता प्राप्त होगी, फलतः दाम्पत्य-सुख उत्तम प्राप्त होगा। भाइयों से उत्तम सहयोग प्राप्त होगा तथा व्यवसाय के द्वारा आर्थिक उन्नति होगी। भूमि-भवन आदि के विषय में झगड़े-झंझटों के खड़े होने की सम्भावना है। सामान्यतः आर्थिक-स्थिति उत्तम बनी रहेगी। सन्तानों में पुत्र की अपेक्षा कन्याएँ अधिक होंगी तथा सन्तान से उत्तम सुख प्राप्त होता रहेगा। आयु के २४, ३०, ३४, ३८, ४२, ४४, ४६, ५० तथा ५४वें वर्ष व्यवसाय में उन्नति कारक सिद्ध होंगे। जीवन के ४४वें वर्ष में कोई आकस्मिक-दुर्घटना घटित होने की सम्भावना है। जीवन के उत्तरार्द्ध में आँतों से सम्बन्धित रोग होने की सम्भावना रहेगी। गोमेद पहिनना हितकर सिद्ध होगा। जीवन सुखी व्यतीत होगा।

(४९९)- इस जन्मलग्न में उत्पन्न हुआ बालक साँवले रंग का, मोटे कद वाला, स्थूल-शरीर तथा क्रोधी स्वभाव का होगा। विद्या का योग उत्तम बनता है तथा बुद्धिमान भी अच्छा होगा। २५ अथवा २९ वर्ष की आयु में विवाह होना सम्भव है। पत्नी सुन्दरी तथा पतिव्रता होगी, अतः दाम्पत्य-जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। सन्तान-पक्ष की ओर से कुछ चिन्ता बनी रहेगी। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी का योग अधिक प्रबल है। जीवन के २३, २७, ३२, ३५, ३७, ३९, ४३, ४७, ५१, ५३ तथा ५८ वें वर्ष आर्थिक एवं व्यावसायिक दृष्टि से लाभप्रद सिद्ध होंगे। वर्ष ३१, ४७ तथा ६२ स्वास्थ्य के लिए चिन्ताकारक हो सकते हैं। सवारी का सुख प्राप्त होगा। नौकरी में स्थानान्तरण के अवसर अधिक आते रहेंगे। आर्थिक-स्थिति सामान्य रहेगी तथा खर्च अधिक बढ़ा-चढ़ा होने के कारण अनेक बार आर्थिक-असन्तुलन के अवसर भी उपस्थित होते रहेंगे। माता-पिता, भाई-बहिन तथा परिवारीजनों से स्नेह सहयोग मिलता रहेगा।

(५००)- इस सूर्यकुण्डली में जन्म ग्रहण करने वाला मनुष्य मध्यम कद, इकहरे शरीर तथा गौरवर्ण का होगा। यह स्वभाव से कुछ क्रोधी भी होगा, परन्तु अवसरानुकूल हँसमुख भी होगा। न्याय, दया तथा क्षमा के प्रति भी इसका विशेष झुकाव बना रहेगा। इसका विवाह २३, २५ अथवा २९ वें वर्ष में होना सम्भव है। पत्नी कुछ क्रोधी स्वभाव की, परन्तु सुन्दर होगी, अतः दाम्पत्य-सुख सामान्यतः अच्छा बना रहेगा। पैतृक-सम्पत्ति का योग भी बहुत अच्छा बनता है तथा जातक अपने निजी उद्योग से भी मकान का निर्माण करायेगा। नवीन-भवन का निर्माण ५४ वर्ष की आयु में होना सम्भव है। ३२ वर्ष की आयु में इसे वाहन-सुख प्राप्त होगा। आयु के २३, २५, २७, ३१, ३५, ३७, ३९, ४३, ४७, ५१ तथा ५५ वें वर्ष व्यवसाय में उन्नति कारक सिद्ध होंगे। प्रत्येक अंग्रेजी-वर्ष का १४ अक्टूबर से १४ नवम्बर का समय लाभप्रद बना रहेगा। परिवारी जनों से सामान्य सुख-सहयोग प्राप्त होगा।

मू० सं० ६३३/७

कु० २०

(५०१)– इस सूर्य-कुण्डली में जन्म लेने वाला जातक कुछ लम्बाई लिये मध्यम कद वाला, पतले शरीर का तथा गौरवर्ण होगा। विद्या-क्षेत्र में कुछ कमी बनी रहेगी। विवाह २५, २७ अथवा २९ वें वर्ष में होना सम्भव है। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती होते हुए भी कुछ हठी स्वभाव वाली होगी, जिसके कारण दाम्पत्य-सुख में कुछ चिन्ताजनक स्थिति बनी रहेगी। इसकी आर्थिक-स्थिति मध्यम रहेगी तथा ठेकेदारी का काम लाभप्रद सिद्ध होगा। आकस्मिक-लाभ के भी अनेक अवसर प्राप्त होते रहेंगे। ३२ वर्ष की आयु के बाद पूर्ण भाग्योदय होगा। आयु के २६, २७, ३१, ३३, ३५, ३९, ४३, ४७, ५१, ५५, ५७ तथा ५९ वें वर्ष व्यवसाय में उन्नति कारक सिद्ध होंगे। प्रत्येक अंग्रेजी-वर्ष में १४ अगस्त से १४ सितम्बर तक का समय सर्वश्रेष्ठ सिद्ध होगा। आयु के २९ तथा ३६ वें वर्ष स्त्री के प्रति चिन्ताकारक रहेंगे। ३५ वें वर्ष में वाहन आदि पर धन खर्च होगा। जातक प्रसिद्धि प्राप्त करेगा तथा माता-पिता आदि से सहयोग प्राप्त करता रहेगा।

(५०२)– इस सूर्यकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य साँवले रंग का, नाटे कद तथा दुर्बल शरीर वाला होगा। यह स्वभाव से क्रोधी होगा। बहिनों की अपेक्षा भाइयों का सुख अधिक प्राप्त होगा। विवाह २५ या २९ वें वर्ष में होना सम्भव है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा गुणवती होगी, फलतः दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहेगा। जीवन में सन्तान के नष्ट होने का योग भी है, परन्तु सन्ततिवान् होगा। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी में अधिक लाभ होगा। आयु के २३, २५, २७, ३१, ३३, ३७, ४१, ४५, ४७, ५१ तथा ५५ वें वर्ष व्यवसाय के लिए अथवा आर्थिक स्थिति के लिए उन्नति कारक सिद्ध होंगे। यह जातक अपने घर से बाहर जाकर विद्या तथा व्यवसाय द्वारा भी द्रव्योपार्जन करने में सक्षम होगा। आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा भूमि, भवन एवं सवारी का सुख भी प्राप्त होगा। विद्या का अच्छा लाभ होगा तथा अपनी योग्यता एवं बुद्धिमत्ता के बल पर समाज में मान-प्रतिष्ठा भी प्राप्त होगी।

(५०३)- इस सूर्य-कुण्डली में जन्म ग्रहण करनेवाला बालक लम्बे शरीर का होगा तथा इसका रंग कुछ लालिमा युक्त गौर होगा। स्वभाव से मृदुभाषी, परन्तु स्पष्टवक्ता होगा। विद्या का श्रेष्ठ लाभ प्राप्त होगा। विवाह २५ अथवा २६ वर्ष की आयु में होगा। पत्नी सुन्दरी मिलेगी, तथापि दाम्पत्य-सुख में कुछ कमी का अनुभव होता रहेगा। प्रथम सन्तान पुत्र होगी। कुल सन्तानों में पुत्रियों की अपेक्षा पुत्रों की संख्या अधिक रहेगी। आर्थिक-दृष्टि से जातक का जीवन मध्यम रहेगा। वर्ष ५, ३० तथा ६४ वें स्वास्थ्य के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकते हैं। आयु के २३, २५, २७, ३१, ३५, ३६, ४५, ४७, ५१ तथा ५७ वें वर्ष व्यवसाय में उन्नतिकारक तथा आर्थिक-क्षेत्र में लाभकारक सिद्ध होंगे। वर्ष १३ तथा १६ में विद्या-अध्ययन में रुकावटें आने की सम्भावना है। इस जातक के एक से अधिक विवाह सम्भव हैं। आयु पूर्ण होगी। माता-पिता तथा परिवारीजनों से सामान्य सम्बन्ध रहेंगे तथा धर्म के प्रति निष्ठा बनी रहेगी।

(५०४)- इस जन्मलग्न में उत्पन्न होने वाला बालक मध्यम कद, कुछ लम्बाई युक्त शरीर वाला तथा गौर वर्ण होगा। स्वभाव से क्रोधी होगा। विवाह २१, २३ अथवा २५ वर्ष की आयु में होना सम्भव है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुशिक्षिता होगी एवं दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहेगा। इस जातक के जीवन में व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी का योग अच्छा सिद्ध होगा। आयु के २१, २३, २७, ३१, ३३, ३५, ३६, ४३, ४७, ५१ तथा ५४ वें वर्ष आर्थिक-लाभ की दृष्टि से उत्तम सिद्ध होंगे। सन्तान-सुख अच्छा रहेगा तथा कन्याओं की अपेक्षा पुत्रों की संख्या अधिक रहेगी। जातक को विद्या का पूर्ण लाभ प्राप्त होगा तथा निजी मकान का सुख भी प्राप्त होगा। भूमि, वाहन आदि भी उपलब्ध होंगे। आयु के १६, ३७, ५४ तथा ५६ वें वर्ष स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद सिद्ध होंगे। माता-पिता से सुख-सहयोग प्राप्त होता रहेगा तथा जीवन सुख-शान्ति से व्यतीत होगा।

(५०५)- इस सूर्य-कुण्डली में जन्म लेने वाला मनुष्य मध्यम कद वाला तथा कुछ लालिमा लिये साँवले रंग का होगा। यह स्वभाव से क्रोधी होते हुए भी व्यवहार में अत्यधिक नम्र तथा मृदुभाषी होगा। विद्याध्ययन में रुचि होगी, परन्तु पन्द्रहवाँ वर्ष अध्ययन में विघ्न कारक सिद्ध होगा। २३, २५ अथवा २९ वर्ष की आयु में विवाह होना संभव है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा आज्ञाकारिणी होगी, अतः दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहेगा। ३६वां वर्ष स्त्री के स्वास्थ्य के लिए खराब सिद्ध होगा। सन्तान का सुख भी अच्छा रहेगा। २६ वर्ष की आयु में सवारी का सुख प्राप्त होगा। भूमि तथा भवन का लाभ भी संभव है। ३८वें वर्ष में जातक अपना निजी मकान बनवायेगा। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी की ओर अधिक झुकाव रहेगा। वर्ष २१, २३, २५, २७, ३१, ३३, ३५, ३९, ४३, ४५, ४७, ५१ तथा ५७ वें व्यवसाय एवं आर्थिक-दृष्टि से लाभ प्रद सिद्ध होंगे। परिवारियों से संबंध मधुर रहेंगे।

(५०६)- इस जन्मांग; चक्र में उत्पन्न हुआ जातक लम्बे शरीर तथा साँवले रंग का होगा। यह राजाओं के समान ऐश्वर्य शाली, प्रतापी तथा प्रभावशाली होगा। ऐसा जातक हुकूमत करने वाला तथा राजसी स्वभाव का होगा। इसे पुरातात्विक-सम्पत्ति का भी लाभ होगा। यह पैतृक सम्पत्ति से भी अधिक स्वोपार्जित-सम्पत्ति का स्वामी होगा तथा व्यवसाय में भी अपने परिश्रम द्वारा विशेष उन्नति करेगा। विवाह २१, २३ अथवा २५ वर्ष की आयु में होगा। स्त्री सुन्दरी, सुशीला तथा गुणवती होगी, फलतः दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहेगा। अन्य स्त्रियों से सम्बन्ध होना भी संभव है। आयु के २१, २३, २७, ३३, ३५, ३९, ४४, ४५, ४७, ५१ तथा ५५ वें वर्ष आर्थिक-उन्नति कारक रहेंगे तथा ३७, ५४ तथा ६० वें वर्ष स्वास्थ्य के लिए हानिकर सिद्ध होंगे। विद्या के क्षेत्र में रुकावटों के साथ उन्नति प्राप्त होगी। भूमि, भवन, वाहन, सेवक आदि के सभी सुख तथा ऐश्वर्य उपलब्ध रहेंगे।

पृ० सं० ३६७ कु० २०

(५०७)— इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न होने वाला प्राणी मध्यम कद, कुछ लम्बाई लिए शरीर तथा गौर वर्ण होगा। यह स्वभाव से क्रोधी होते हुए भी न्याय-प्रिय तथा दयालु होगा। शरीर हृष्ट-पुष्ट तथा बुद्धि परिपक्व होगी। विद्या-लाभ उत्तम रहेगा। विवाह २३ अथवा २५ वें वर्ष में होना सम्भव है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा गुणवती होने के कारण दाम्पत्य-सुख का पूर्ण लाभ प्राप्त होगा। यह जातक व्यवसाय में रुचि रखने वाला होगा, नौकरी से दूर रहना चाहेगा। जीवन में आमदनी के एक से अधिक स्रोत होने के कारण आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहेगी। पैतृक-सम्पत्ति का लाभ भी होगा तथा स्वोपार्जित-धन से गृह आदि का निर्माण भी करेगा। यदि नौकरी करे तो अध्यापन जैसे कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। आयु के २४, २६, ३२, ३४, ३६, ४०, ४४, ४८, ५२ तथा ५६ वें वर्ष व्यवसाय अथवा आर्थिक-स्थिति में उन्नति कारक सिद्ध होंगे तथा २५, ३०, ४९ तथा ६१ वें वर्ष स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद रहेंगे। २० वर्ष की आयु में वाहन सुख प्राप्त होगा। जातक धनी होगा।

(५०८)— इस जन्मकुण्डली में जन्म लेने वाला मनुष्य लम्बे शरीर, उन्नत ललाट, गौर वर्ण तथा शान्त प्रकृति का होगा। यह विद्वान तथा बुद्धिमान भी होगा और समाज में सम्मानित स्थान प्राप्त करेगा। विवाह २२, २४ अथवा २६ वें वर्ष में होना सम्भव है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुशिक्षिता होगी, फलतः दाम्पत्य-सुख श्रेष्ठ बना रहेगा। गणित विषय में जातक को प्रवीणता प्राप्त होगी। भूमि आदि से आर्थिक-लाभ प्राप्त होंगे। आयु के २२, २४, २८, ३२, ३४, ३६, ३९, ४३, ४५, ४७ तथा ५१ वें वर्ष व्यवसाय अथवा आर्थिक उन्नति में लाभप्रद सिद्ध होंगे। आयु दीर्घ प्राप्त होगी, तथापि शारीरिक-स्वास्थ्य निर्बल बना रहेगा। यह अपने परिश्रम द्वारा अपने भाग्य का निर्माण करेगा तथा भूमि, भवन, वाहन आदि के सुखों को प्राप्त करेगा। सन्तान-पक्ष से सन्तोष प्राप्त होगा तथा माता-पिता, भाई-बहिन एवं परिवारी जनों से स्नेह तथा सहयोग मिलता रहेगा। धर्म तथा ईश्वर के प्रति श्रद्धा बनी रहेगी।

(५०९) – इस जन्म कुण्डली में जन्म लेने वाला जातक नाटे कद तथा हल्के साँवले रंग का एवं क्रोधी-स्वभाव का होगा। बहिनों की अपेक्षा भाइयों की संख्या अधिक रहेगी। शिक्षा मध्यम प्राप्त होगी तथापि श्रेष्ठ विद्वान बनेगा। सन्तान-सुख भी अच्छा रहेगा, परन्तु उनमें कन्याओं की संख्या अधिक होगी। विवाह २७ वर्ष की आयु में होना सम्भव है। स्त्री कुछ क्रोधी स्वभाव की होगी, अतः दाम्पत्य सुख में न्यूनता बनी रहेगी। उसे पारिवारिक-सम्पत्ति का लाभ भी होगा, तथापि उसमें झगड़े झंझट भी पड़ेंगे। दान का तेज मध्यम रहेगा तथा आकस्मिक खर्च आर्थिक-सन्तुलन को डगमगाते रहेंगे। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी में रुचि रहेगी। जीवन के २१, २३, २७, २९, ३३, ३७, ४१, ४३, ४५, ४९, ५३ तथा ५५ वें वर्ष व्यवसाय अथवा आर्थिक-लाभ के क्षेत्र में उन्नतिकारक सिद्ध होंगे। वर्ष २५, ३८, ५५ तथा ६३ स्वास्थ्य की दृष्टि से हानिप्रद बनेंगे। आयु दीर्घ होगी तथा परिवारी जनों से सामान्य सम्बन्ध बने रहेंगे।

(५१०) – इस ग्रह-कुण्डली में जन्म ग्रहण करने वाला मनुष्य नाटे कद का, साँवले रंग का तथा हठीले स्वभाव का होगा। विद्या-लाभ उत्तम श्रेणी से होगा। विवाह २७ वर्ष की आयु में होना सम्भव है। पत्नी मनोनुकूल न मिलने से दाम्पत्य जीवन में कटुता बनी रहेगा। सन्तानें २ से ४ तक होंगी, जिनमें प्रथम सन्तान कन्या होगी। जन्म कुण्डली में चन्द्रमा यदि मंगल के साथ हो तो फेफड़ों से सम्बन्धित बीमारी होगी, तथापि जातक पूर्ण आयु प्राप्त करेगा। आयु के २१, २३, २५, २७, ३१, ३३, ३७, ३९, ४३, ४५, ४७, ४९ तथा ५३ वें वर्ष व्यवसाय में उन्नति कारक तथा आर्थिक-लाभ देने वाले सिद्ध होंगे। आर्थिक-दृष्टि से जीवन उन्नतिमय रहेगा तथापि खर्च की अधिकता आर्थिक-सन्तुलन को डगमगाती रहेगी। भूमि-मकान आदि जातक अपने पराक्रम से उपार्जित करेगा। बुद्धि तीव्र होगी तथा आय के स्रोत भी एक से अधिक होंगे। परिवारी जनों से सम्बन्धों का सामान्य निर्वाह होता रहेगा।

पृ० सं० २८७

कु० १०

(५११)- इस सूर्य कुण्डली में जन्मा हुआ बालक गौरवर्ण, मध्यम कद, सुन्दर नाक-नक्श तथा क्रोधी स्वभाव का होगा। विद्या का योग भी अच्छा रहेगा। विवाह २५, २७ अथवा ३१ वर्ष की आयु में कुछ विलम्ब से होगा तथा स्त्री के प्रति चिन्ता बनी रहेगी। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी का योग प्रबल रहेगा। ४०वर्ष की आयु के बाद आमदनी के स्रोत एक से अधिक बनेंगे तथा यहीं से भाग्योदय आरंभ होगा। जातक धनी तथा भूमि, भवन एवं वाहन सम्पन्न होगा। सन्तानों में कन्याओं की संख्या अधिक होगी। सन्तान से श्रेष्ठ सुख की प्राप्ति होगी। भाइयों से लाभ मिलता रहेगा तथा अन्य परिवारी जनों से भी अच्छे संबंध बने रहेंगे। आयु के २३, २५, २७, २९, ३३, ३७, ४१, ४५, ४९, ५३ तथा ५७वें वर्ष व्यवसाय के लिए उन्नतिकारक तथा धन की वृद्धि करने वाले सिद्ध होंगे। वर्ष ९, ३५, ५४ तथा ६३ स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद रहेंगे। आयु दीर्घ होगी। निजी मकान के साथ पैतृक अचल-सम्पत्ति-लाभ का भी योग बनेगा।

(५१२)- इस सूर्य कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य लम्बा, इकहरे शरीर का, गेहुंआं वर्ण तथा आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होगा। यह स्वभाव से क्रोधी होते हुए भी प्रत्यक्ष में मधुरभाषी होगा। बहिनों की अपेक्षा भाइयों की संख्या अधिक रहेगी। शिक्षा अच्छी प्राप्त होगी। विवाह २१, २३, २५ अथवा २९ वर्ष की आयु में पूर्व दिशा से होगा। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुशिक्षिता होगी तथा दाम्पत्य-जीवन सुखद बना रहेगा। वर्ष २२, २४, २६, २८, ३२, ३६, ३८, ४२, ४६, ५० तथा ५४ व्यवसाय में विशेष उन्नतिकारक सिद्ध होंगे। २९वें वर्ष में सवारी का सुख प्राप्त होगा। आमदनी के एक से अधिक स्रोत रहेंगे, फलतः आर्थिक-स्थिति मजबूत बनी रहेगी। मंगल योग के कारण जातक अत्यन्त परिश्रमी तथा साहसी होगा। पिता की अपेक्षा माता के प्रति विशेष झुकाव रहेगा। बुद्धि-प्रयोग द्वारा धन उपार्जित करने में जातक को निरन्तर सफलताएँ प्राप्त होती रहेंगी। सम्पूर्ण जीवन सुखपूर्ण रहेगा।

(५१३)- इस द्विर्कुण्डली वाला जातक मध्यम कद, कुछ लम्बाई लिए शरीर तथा गौर वर्ण वाला होगा। यदि चन्द्रमा चतुर्थभाव में हो तो वक्षःस्थल कमजोर रहेगा और उसे फेफड़ों की बीमारी लगी रहेगी। अन्यथा जातक परम साहसी होगा तथा कठिन-से- कठिन कार्यों को भी सरलता पूर्वक सम्पन्न कर दिखाने में कुशल होगा। विद्या उच्च कोटि की प्राप्त होगी। विवाह २०, २४, २६ अथवा २८ वें वर्ष में होगा। पत्नी सुन्दरी सुशीला तथा गुणवती मिलेगी, फलतः दाम्पत्य-सुख में अभिवृद्धि होती रहेगी। सन्तानें ५ होंगी तथा सन्तानों से उत्तम सुख प्राप्त होगा। पत्नी का स्वभाव कुछ क्रोधी होगा। श्वसुरालय से धन-प्राप्ति का योग अधिक उत्तम है। आयु के २२, २४, २६, ३०, ३४, ३६, ३८, ४२, ४६, ५० तथा ५४ वें वर्ष व्यवसाय की उन्नति कारक होंगे तथा ७, २७, ३९, ५१ तथा ६३ वें वर्ष स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद सिद्ध होंगे। ४१ वर्ष की आयु में यह स्वोपार्जित धन से मकान आदि का निर्माण करेगा तथा भाई-बहनों से भी लाभ प्राप्त करेगा।

(५१४)- इस जन्मकुण्डली चक्र में जन्म ग्रहण करने वाला प्राणी सुन्दर नाक-नक्शे वाला, गौर वर्ण तथा लम्बे शरीर वाला होगा। सौजन्यता एवं मधुरता इसके विशिष्ट गुण होंगे। स्वभाव से शान्त बना रहेगा तथा परिश्रम द्वारा आर्थिक-स्थिति को सुदृढ़ बनायेगा। विवाह २४, २६ अथवा २८ वर्ष की आयु में होगा। पत्नी सुन्दरी तथा आज्ञापालक होगी, जिसके कारण दाम्पत्य-प्रेम में अभिवृद्धि होगी, तथापि पत्नी के कारण चिन्ता भी बनी रहेगी। वर्ष २४, २६, २८, ३४, ३६, ३८, ४०, ४४, ४८, ५२ तथा ५६ व्यवसाय के लिए उन्नति कारक सिद्ध होंगे। ३७ वां वर्ष आर्थिक-दृष्टि से खराब होगा। वर्ष ८, १२, ३९, ५१ तथा ६३ स्वास्थ्य के प्रति हानिकर सिद्ध होंगे। पैतृक-सम्पत्ति में अचल संपत्ति का लाभ होगा। विद्या-बुद्धि तीव्र रहेगी। आकस्मिक-लाभ के अनेक अवसर प्राप्त होते रहेंगे। आयु पूर्ण होगी। समाज में मान-प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी तथा माता-पिता एवं परिवारी जनों से स्नेह युक्त सम्बन्ध बने रहेंगे।

मू० सं० ७४०

कु० र०

(५२५) - इस जन्म कुण्डली में जन्म लेने वाला मनुष्य मध्यमकद, क्रोधी-स्वभाव तथा गेहुँए रंग का होगा। यह स्वभाव से कुछ क्रोधी भी होगा, परन्तु धैर्य, साहस एवं उत्साह से सम्पन्न बना रहेगा। विद्या का लाभ मध्यम प्राप्त होगा। विवाह २४ अथवा २६ वर्ष की आयु में होगा। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होगी, फलतः दाम्पत्य-सुख में अभिवृद्धि होती रहेगी। संतान-सुख मध्यम रहेगा तथा सन्तान-पक्ष की ओर से कुछ चिन्ताएँ भी बनी रहेंगी। यह जातक अपने परिश्रम तथा साहस के बल पर विषम-परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल बना लेने में सफलता प्राप्त करेगा। इसके भाई अधिक होंगे। आर्थिक-दृष्टि से यह सशक्त बना रहेगा तथा स्वोपार्जित धन से भूमि, भवन, वाहनादि का सुख प्राप्त करेगा। वर्ष २२, २४, २६, ३०, ३४, ३६, ३८, ४२, ४६ तथा ५२ व्यवसाय के लिए उन्नति कारक तथा वर्ष २५, ४३ और ६१ स्वास्थ्य के लिए चिन्ता जनक रहेंगे। ३० वाँ वर्ष व्यवसाय के हेतु विशेष उन्नति दायक सिद्ध होगा।

(५२६) - यह जन्म कुण्डली में उत्पन्न होने वाला प्राणी नाटे कद, शान्त स्वभाव तथा हल्के साँवले रंग का होगा। विद्या का योग मध्यम रहेगा तथा विवाह २५, २७ अथवा २८ वर्ष की आयु में पश्चिम दिशा में होगा। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला होगी। संतान-सुख की दृष्टि से परिस्थितियाँ कुछ चिन्ताजनक रहेंगी तथा एक से अधिक सन्तानें नष्ट भी हो सकती हैं। यह व्यवसाय तथा नौकरी दोनों कार्य कर सकेगा तथा २३, २५, २७, ३१, ३५, ३७, ३८, ४३, ४७, ४८, ५१ तथा ५८ वें वर्ष व्यवसाय की दृष्टि से उन्नति कारक सिद्ध होंगे। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहेगी तथा आमदनी की अपेक्षा खर्च की अधिकता बनी रहेगी। भूमि, मकान आदि का सामान्य लाभ होगा। आयु का योग उत्तम है, तथापि रोगादि होने तथा चोट आदि लगने की सम्भावना बनी रहेगी। धर्म तथा ईश्वर के प्रति यह जातक आस्थावान बना रहेगा तथा माता-पिता एवं परिवारीजनों से स्नेह-सहयोग प्राप्त करता रहेगा।

(५९७) - इस जन्मांग चक्र में जन्म ग्रहण करने वाला बालक लम्बे शरीर का, गौर वर्ण तथा शान्त प्रकृति वाला होगा। इसका मस्तिष्क कमजोर होगा, अतः विद्याध्ययन में विशेष सफलता नहीं मिल सकेगी। २८ या २९ वर्ष की आयु में विवाह होगा। दाम्पत्य-सुख मध्यम रहेगा तथा स्त्री-पक्ष से चिन्ता भी बनी रहेगी, परन्तु सन्तान-सुख अच्छा रहेगा। पत्नी को एकाधिक बार गर्भस्राव भी हो सकता है। यह जातक स्वभाव से आलसी तथापि साहसी होगा। आर्थिक-लाभ के हेतु नौकरी करेगा। वर्ष २३, २७, ३५, ३९, ४३, ४७, ५१ तथा ५५ व्यवसाय अथवा आर्थिक-स्थिति के लिए लाभकर सिद्ध होंगे। आयु मध्यम रहेगी तथा १४, २८, ४६ तथा ५८ वें वर्ष स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद रहेंगे। पेट से सम्बन्धित वायु-विकार की परेशानी प्रायः बनी रहेगी। बौद्धिक कठिनाइयाँ मन को अशान्त बनाये रहेंगी। भूमि तथा मकान से सम्बन्धित कठिनाइयाँ भी परेशान करती रहेंगी तथा परिवारीजनों से भी स्नेह-सम्बन्ध में कमी बनी रहेगी।

(५९८) - इस जन्म-कुण्डली में जन्म लेने वाला मनुष्य कुछ लम्बाई लिये मध्यम कद का तथा हल्के साँवले रंग का होगा। स्वभाव से कुछ क्रोधी भी होगा। विद्या सामान्य उपलब्ध होगी। विवाह २७ अथवा २९ वर्ष की आयु में होना सम्भव है तथा श्वसुरालय से धन मिलने की भी सम्भावना है। भाइयों की अपेक्षा बहनों की संख्या अधिक रहेगी। इसी प्रकार सन्तान-पक्ष में भी कन्याओं की अधिकता रहेगी। साहस तथा उत्साह के बल पर कठिन कामों को भी सरल बना लेना इसका स्वाभाविक गुण होगा। बाल्यावस्था आर्थिक-दृष्टि से कष्टप्रद रहेगी तथा मध्यमावस्था आर्थिक-दृष्टि से उन्नतिकारक सिद्ध होगी। भूमि तथा मकान का योग भी बनता है। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय की ओर अधिक झुकाव होगा तथा उसमें सफलता भी प्राप्त होगी। वर्ष २३, २७, २९, ३१, ३५, ३९, ४३, ४७, ५१ तथा ५३ व्यवसाय के लिये उन्नतिकारक होंगे तथा १६, ४६ तथा ५९ वें वर्ष स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद सिद्ध होंगे। संतान की ओर से चिन्ता होगी।

(५१९) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न बालक दुबले-पतले शरीर तथा साँवले रंग का एवं क्रोधी स्वभाव का होगा। विद्या का श्रेष्ठ लाभ प्राप्त होगा। विवाह २५, २७ अथवा २९ वें वर्ष में होगा तथा मनोनुकूल पत्नी मिलने से दाम्पत्य-सुख अच्छा रहेगा। स्वभाव से जातक झगड़ालू होगा, अतः भाई-बहिनों से अच्छे सम्बन्ध नहीं रह सकेंगे। जीवन में नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय के अवसर अधिक अच्छे रहेंगे तथा २३, २५, २७, २९, ३१, ३५, ३९, ४३, ४७, ५१ तथा ५५ वें वर्ष व्यवसाय में लाभप्रद सिद्ध होंगे। ३५ वर्ष की आयु से पूर्ण भाग्योदय होगा। स्वपराक्रम द्वारा जातक आर्थिक-लाभ के अनेक उत्तम अवसरों को प्राप्त करेगा, तथापि आर्थिक-हानि के भी अनेक अवसर आते रहेंगे। सन्तानों की संख्या कम होगी। सन्तानों का सुख ३० वर्ष की आयु में प्राप्त होगा। फेफड़ों से सम्बन्धित रोग के कारण कठिनाइयों का शिकार भी होना पड़ेगा। धर्म-कर्म में अच्छी रुचि बनी रहेगी तथा माता-पिता का सामान्य सुख उपलब्ध होगा।

(५२०) - इस जन्म कुण्डली में जन्म ग्रहण करने वाला मनुष्य कुछ लम्बे शरीर का, इकहरा, गौर वर्ण तथा हठी स्वभाव का होगा। परन्तु न्याय प्रिय तथा मृदुभाषी भी होगा। दाम्पत्य-सुख अच्छा रहेगा, तथापि पत्नी की ओर से किसी-न-किसी प्रकार की चिन्ता भी बनी रहेगी। पुत्रों की संख्या अधिक होगी तथा सन्तान-सुख अच्छा बना रहेगा। वर्ष १६, ४६ तथा ६२ स्वास्थ्य के लिए हानिकारक सिद्ध होंगे। २२ वां वर्ष आर्थिक-दृष्टि से कष्ट कारक रहेगा तथा ३५ वां वर्ष विशेष उन्नति कारक सिद्ध होगा। आयु मध्यम रहेगी। व्यवसाय की अपेक्षा जातक का नौकरी की ओर झुकाव रहेगा। यह अत्यन्त साहसी तथा परिश्रमी होगा एवं परिश्रम के द्वारा ही अपने जीवन में उन्नति करेगा। भूमि, भवन तथा वाहन का भी सामान्य-सुख प्राप्त होगा। भाई-बहिन तथा माता-पिता से स्नेह-सम्बन्ध तो बने रहेंगे, तथापि कोई विशेष सहयोग प्राप्त नहीं होगा। धर्म के प्रति आस्थावान होते हुए भी उससे विमुख रहेगा।

(५२१)- इस जन्मकुण्डली में जन्म लेने वाला प्राणी मध्यम क़द, गेहुंए रंग का तथा शान्त स्वभाव वाला होगा, विद्या का योग अच्छा है, तथापि कुछ विलम्ब से अर्थात् २२, २६ या २८वें वर्ष में विवाह होने के बाद दाम्पत्य-जीवन कष्टप्रद बना रहेगा। एक से अधिक विवाह होने भी सम्भव हैं, अन्यथा पर स्त्री-सम्पर्क हो सकता है। सन्तान की ओर से भी कुछ चिन्ताएँ बनी रहेंगी। यह जातक अत्यन्त साहसी तथा पराक्रमी होगा एवं व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी करना पसन्द करेगा। जीवन में शत्रुओं तथा विरोधियों की अधिकता रहेगी परन्तु यह उन पर प्रबल बना रहेगा। भाई-बहिनों से भी सम्बन्ध मधुर नहीं रहेंगे। ४३ वर्ष की आयु में जातक अपना निजी मकान बना सकेगा। सामान्यतः आर्थिक-स्थिति कमजोर बनी रहेगी, तथापि अपने धैर्य और साहस के बल पर यह खर्च चलाता रहेगा। आयु के २५, २८, ३२, ३८, ४०, ४४ तथा ५०वें वर्ष आर्थिक-दृष्टि से लाभप्रद तथा २३वां वर्ष कष्टदायक सिद्ध होगा। जातक धर्म पर श्रद्धा रखने वाला होगा।

(५२२)- इस जन्माङ्ग-चक्र में उत्पन्न होने वाला मनुष्य कुछ लम्बाई लिए मध्यम कद का, गौर वर्ण तथा शान्त स्वभाव वाला होगा। विद्या का लाभ उत्तम रहेगा, तथापि १५ वर्ष की आयु में अध्ययन में कुछ व्यवधान पड़ना सम्भव है। दाम्पत्य तथा सन्तान-सुख अच्छा रहेगा। भाइयों से सम्बन्ध कुछ कमजोर रहेंगे। ३१वें वर्ष में सवारी का सुख मिलेगा तथा भूमि-भवन का सुख भी प्राप्त रहेगा। आयु के २४, २६, २८, ३२, ३८, ४०, ४४, ५० तथा ५२वें वर्ष व्यवसाय एवं आर्थिक-स्थिति के लिए उन्नतिकारक सिद्ध होंगे। वर्ष २९, ४१ तथा ६५ स्वास्थ्य तथा आयु के लिए कष्टप्रद सिद्ध होंगे। यह व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी करना अधिक पसन्द करेगा। आकस्मिक-व्ययों के कारण जातक की आर्थिक स्थिति कमजोर बनी रहेगी, तथापि सभी आवश्यकताएँ येन-केन प्रकारेण पूरी होती रहेंगी। इसे संगीत आदि कलाओं से प्रेम होगा तथा धर्म के प्रति भी आस्था बनी रहेगी।

(५२३) – इस सूर्य-कुण्डली में जन्म-ग्रहण करने वाला बालक गौरवर्ण, नाटे कद का, सुन्दर तथा शान्तिप्रिय होगा। विद्या का लाभ अच्छा रहेगा, परन्तु विद्याध्ययन में रुकावटें भी अनेक आयेंगी। विवाह २२ अथवा २६ वर्ष की आयु में होगा। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुलक्षणा प्राप्त होगी, अतः दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहेगा। आमदनी के स्रोत एक से अधिक रहने के कारण जातक की आर्थिक-स्थिति उत्तम बनी रहेगी। २५ वर्ष की आयु के बाद जीवन आर्थिक-दृष्टि से अत्यधिक सम्पन्नता की ओर अग्रसर होगा। सन्तान-सुख भी अच्छा प्राप्त होगा। ३१ से ४२ वें वर्ष की आयु में जातक अपना निजी मकान बनवायेगा। शरीर प्रायः स्वस्थ रहेगा। तथापि वर्ष २९, ४१ तथा ५३वाँ स्वास्थ्य के लिए कुछ चिन्ताजनक हो सकता है। आयु मध्यम रहेगी। जीवन के २५, २६, २८, ३२, ३८, ४०, ४४, ४९, ५० तथा ५२वें वर्ष व्यवसाय की दृष्टि से उन्नतिकारक सिद्ध होंगे। ४५वां वर्ष आर्थिक-दृष्टि से कष्टकारक सिद्ध हो सकता है। शत्रुओं के ऊपर जातक प्रभावी बना रहेगा।

(५२४) – इस जन्मकुण्डली में जन्म लेने वाला मनुष्य साँवले रंग का, नाटे क़द वाला, साहसी, पराक्रमी तथा कुछ क्रोधी एवं कमज़ोर शरीर वाला होगा। भाइयों की अपेक्षा बहिनों की संख्या अधिक होगी। विद्या का श्रेष्ठ लाभ होगा। विवाह २३ अथवा २७ वर्ष की आयु में होना सम्भव है। पत्नी साँवले रंग की परन्तु सुन्दरी होगी, तथा दाम्पत्य-सुख भी उत्तम बना रहेगा। प्रथम सन्तान कन्या होगी तथा सन्तान-सुख उत्तम प्राप्त होगा। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी करना अधिक रुचिकर रहेगा। आयु के २१, २३, २७, २९, ३३, ३९, ४१, ४५ तथा ५१वें वर्ष उन्नति एवं धनप्रद सिद्ध होंगे। वर्ष ३०, ४२, ५४ तथा ६६ स्वास्थ्य के प्रति चिन्ताजनक हो सकते हैं। ३१वें वर्ष में वाहन-सुख प्राप्त होगा। ४४वां वर्ष आर्थिक-दृष्टि से बहुत परेशानी वाला हो सकता है। सामान्यतः आर्थिक-स्थिति कमज़ोर ही रहेगी, परन्तु निजी भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होगा। परिवारीजनों से आर्थिक-लाभ मिलने की संभावना है। धार्मिक भावना बनी रहेगी।

भू० सं० ७५८

कु० २०

(५२५)- इस जन्मलग्न कुण्डली में उत्पन्न बालक गौर वर्ण, मध्यम कद, शान्त-स्वभाव, परन्तु कटुभाषी होगा। विद्या का योग कुछ रुकावटों के साथ बनता है। विवाह २४ अथवा २८ वें वर्ष में होगा। पत्नी सुन्दरी सुशीला तथा सुशिक्षिता प्राप्त होगी, फलतः दाम्पत्य-जीवन सुखमय बना रहेगा। सन्तानों में कन्या द्वारा सुख-प्राप्ति का योग है। विवाह पूर्व दिशा की ओर से होगा। आर्थिक-दृष्टि से जातक की स्थिति मध्यम रहेगी तथा विरोधियों द्वारा समय-समय पर आर्थिक-हानि पहुँचाने के प्रयत्न भी किये जायेंगे। पैतृक-सम्पत्ति पर भी झगड़े की सम्भावना रहेगी। इसके बावजूद भी मकान तथा सवारी आदि का सुख उपलब्ध रहेगा। भाइयों से पूर्ण सुख-सहयोग प्राप्त होगा तथा पिता की अपेक्षा माता के प्रति विशेष झुकाव रहेगा। जीवन के २२, २६, २८, ३०, ३४, ३८, ४२, ४६, ५० तथा ५२ वें वर्ष आर्थिक-उन्नति कारक होंगे तथा १८, ३७, ५३ तथा ६१ वें वर्ष स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद सिद्ध होंगे।

(५२६)- इस जन्मकुण्डली में जन्म लेने वाला मनुष्य लम्बे शरीर का तथा गौर वर्ण होगा। यह स्वभाव से हठी तथा कटुभाषी भी होगा। स्वाभिमान की मात्रा अधिक रहेगी। विवाह २४ अथवा २८ वें वर्ष में होगा। पत्नी मनोनुकूला, सुन्दरी तथा पतिपरायणा प्राप्त होगी, फलतः दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहेगा। २८ वर्ष की आयु में पुत्र-प्राप्ति का योग भी है। सन्तान-सुख अच्छा रहेगा। जीवन के २२, २६, २८, ३०, ३४, ३८, ४०, ४२, ४६, ५० तथा ५२ वें वर्ष व्यावसायिक-लाभ तथा आर्थिक-दृष्टि से उन्नतिकारक सिद्ध होंगे। सामान्यतः आर्थिक-स्थिति मध्यम रहेगी। शत्रुओं द्वारा आर्थिक-हानि के अवसर भी उपस्थित किये जायेंगे॥ व्यय की अधिकता के कारण आर्थिक-असन्तुलन बना रहेगा। निजी भूमि तथा भवन की उपलब्धि होगी। वाहन-सुख भी प्राप्त होगा। २८ वर्ष की आयु में आर्थिक-कठिनाइयाँ अधिक रहेंगी। चन्द्रमा यदि छठे स्थान में हो तो नेत्र-रोग की सम्भावना भी रहेगी।

(५२७)- इस सूर्य-कुण्डली में जन्म ग्रहण करने वाला मनुष्य मध्यम कद तथा साँवले रंग का, साहसी एवं स्वाभिमानी होता है। विद्या का लाभ रुकावटों के साथ होता है तथा विवाह २४ अथवा २८ वर्ष की आयु में पूर्व दिशा की ओर से होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुशिक्षिता मिलती है। अतः दाम्पत्य-जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होता है। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय के क्षेत्र में अधिक सफलता मिलती है। आयु के २२, २४, २६, २७, ३०, ३४, ३८, ४२, ४६, ५०, ५२ तथा ५४ वर्ष में व्यावसायिक-लाभ मिलता है अथवा आर्थिक-उन्नति होती है। वर्ष २५ तथा ५४ स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद सिद्ध होते हैं। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है तथा पैतृक-सम्पत्ति पर भी झगड़े आदि की संभावना रहती है। सन्तान-सुख अच्छा रहता है। पेट-विकार आदि की शिकायतें बनी रहती हैं तथा आयु मध्यम होती है। भाइयों से आर्थिक-लाभ होता रहता है तथा माता-पिता से भी सुख-सहयोग प्राप्त होता है।

(५२८)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न हुआ बालक दुर्बल शरीर, मध्यम कद तथा साँवले रंग का होता है। मुँह पर चेचक के दाग भी रहते हैं। यह स्वभाव से झगड़ालू तथा क्रोधी प्रकृति का होता है। साथ ही परिश्रमी तथा साहसी भी होता है। यह अपने परिश्रम द्वारा ही आर्थिक-उन्नति करता है तथा इसकी आर्थिक-स्थिति मज़बूत बनी रहती है। आर्थिक-स्थिति आरम्भ में कमजोर तथा जीवन के मध्यकाल एवं उत्तरार्द्ध में सुदृढ़ रहती है। विद्या-क्षेत्र कुछ कमजोर रहता है। २५ अथवा २८ वर्ष की आयु में विवाह सम्भव है। स्त्री साँवले रंग की तथा आज्ञानुवर्तिनी होती है, अतः दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। सन्तान की ओर से कुछ चिन्ता बनी रहती है। सवारी, मकान आदि का सुख पूर्ण रहता है। आयु के २३, २६, २८, ३०, ३४, ३८, ४०, ४२, ४६, ५०, ५२ तथा ५४ वें वर्ष व्यवसाय के लिए उन्नतिकारक सिद्ध होते हैं। ४० वर्ष की आयु में मकान बनता है। जातक पूर्णायु प्राप्त करता तथा सुखी रहता है।

मृ० सं० ७३०

कु० १०

(५२९)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न प्राणी मध्यम कद, कुछ लम्बाई लिए शरीर, साँवले रंग तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। भाइयों की अपेक्षा बहिनों की संख्या अधिक होती है। विद्या का क्षेत्र कमजोर रहता है तथा विवाह २५ अथवा २९ वे वर्ष मे होता है। पत्नी साँवले रंग की, परन्तु सुशीला होती है। ३७वां वर्ष पत्नी के विषय में चिन्ताकारक होता है। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी में अधिक रुचि रहती है। आयु के २३, २७, २९, ३१, ३३, ३५, ३९, ४३, ४७, ५१ तथा ५३ वें वर्ष व्यवसाय एवं आर्थिक-लाभ की दृष्टि से उत्तम सिद्ध होते हैं। सन्तान-पक्ष से भी कुछ चिन्ता हो सकती है। आयु के १४, २६, ३७ तथा ५५ वें वर्ष स्वास्थ्य की दृष्टि से कष्टप्रद रहते हैं। जीवन का प्रथमार्द्ध आर्थिक-कष्ट में बीतता है, परन्तु मध्यकाल तथा उत्तरार्द्ध अच्छे रहते हैं। आमदनी के साधन एक से अधिक होने के कारण जातक का जीवन ठाठ-बाट एवं सुख-ऐश्वर्यपूर्ण बना रहता है। परिवारीजनों से सुख मिलता है।

(५३०)- इस जन्माङ्ग-चक्र वाला मनुष्य मध्यम कद, गौरवर्ण तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। यह अत्यधिक स्वाभिमानी अथवा अहंकारी प्रकृति का भी होता है। भाई-बहिनों की संख्या कम होती है। विद्या के क्षेत्र में उन्नति बनी रहती है। विवाह २३, २५ अथवा २९ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी होते हुए भी क्रोधी-स्वभाव की होती है, अतः दाम्पत्य-सुख में पूर्णता नहीं रह पाती। सन्तान-सुख उत्तम रहता है तथा पुत्रों की संख्या अधिक होती है। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी में विशेष रुचि रहती है। वर्ष २३, २७, २९, ३१, ३३, ३५, ३९, ४३, ४७, ४९, ५१ तथा ५३ व्यवसाय में तथा आर्थिक-उन्नति में सहयोगी बनते हैं। वर्ष १४, २६, ३७ तथा ५५ स्वास्थ्य के लिए चिन्ताजनक होते हैं। माता-पिता का सामान्य-सुख प्राप्त होता है तथा भाई-बहिन एवं परिवारीजनों से भी स्नेह-सम्बन्ध बना रहता है। धर्म तथा ईश्वर के प्रति जातक आस्थावान होता है।

(५३१) – इस जन्मलग्न में जन्म धारण करने वाला मनुष्य मध्यम कद, गठीले शरीर का, हृष्ट-पुष्ट तथा सांवले रंग का होता है। यह स्वभाव से क्रोधी होता है तथा मन में बदले की भावना को पाले रखता है। इसे झगड़ालू प्रकृति का भी माना जा सकता है। विद्या के क्षेत्र में कुछ रुकावटें आती हैं तथा विवाह २६ अथवा ३० वर्ष की आयु में होता है। स्त्री (पत्नी) सांवले रंग की तथा क्रोधी स्वभाव की होती है, फलतः दाम्पत्य-जीवन सुखद नहीं रहता, तथापि निर्वाह होता रहता है। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में अधिक रुचि रहती है तथा वर्ष २४, २६, २८, ३०, ३२, ३६, ४०, ४४, ४८, ५२ एवं ५४ व्यवसाय में उन्नति कारक सिद्ध होते हैं। आयु के १५, २७, ४० तथा ५७वें वर्ष स्वास्थ्य के लिए खराब सिद्ध होते हैं। जीवन में आर्थिक-हानि के अनेक अवसर आते रहते हैं तथा सवारी, मकान आदि का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है एवं ठाठ-बाट पूर्ण खर्च के कारण आर्थिक-स्थिति कमजोर बनी रहती है। माता-पिता का लाभ प्राप्त होता है।

(५३२) – इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न हुआ जातक कुछ लम्बे शरीर वाला, गेहुँए रंग का तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। यह स्वभाव से साहसी तथा पराक्रमी होता है एवं शत्रुओं के ऊपर अपना पूर्ण प्रभाव बनाये रखता है। इसका विवाह २६, २८ अथवा ३०वें वर्ष में होता है। पत्नी कुछ क्रोधी-स्वभाव की होती है, तथापि दाम्पत्य-जीवन सुखमय व्यतीत होता है। सन्तान-सुख भी उत्तम रहता है तथा पुत्रों की संख्या अधिक होती है। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में अधिक रुचि होती है। विद्या कुछ रुकावटों के साथ प्राप्त होती है। जीवन के २४, २५, २८, ३०, ३२, ३६, ४०, ४४, ४६, ४८, ५२ तथा ५४वें वर्ष व्यवसाय में उन्नति कारक सिद्ध होते हैं तथा १५, २६, २८, ४१ तथा ५६वें वर्ष स्वास्थ्य के लिए हानिकारक सिद्ध होते हैं। यह जातक स्वपरिश्रम द्वारा भाग्य का निर्माण करता है तथा ३५ वर्ष की आयु में भूमि, भवन तथा सवारी का सुख प्राप्त करता है। इसकी आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है।

(५३३)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य गौरवर्ण, घुंघराले बालों वाला, उन्नत ललाट तथा अत्यन्त स्वाभिमानी प्रकृति का होगा। यह स्वभाव से क्रोधी, साहसी तथा धीमानी होगा। इसका विवाह २२, २६ अथवा ३० वें वर्ष में होना सम्भव है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुशिक्षिता होगी, फलतः दाम्पत्य सुख उत्तम बना रहेगा। विद्या का योग भी अच्छा है। सन्तान का भी पूर्ण सुख प्राप्त होगा। यह व्यक्ति स्वोपार्जित धन से मकान का निर्माण करायेगा तथा अपनी बुद्धि के प्रयोग से पर्याप्त धन अर्जित करेगा। इसकी आमदनी के एक से अधिक स्रोत होंगे, अतः आर्थिक-स्थिति मजबूत बनी रहेगी। ३३ अथवा ३५ वें वर्ष में वाहन-सुख प्राप्त होगा। बहिनों की संख्या अधिक होगी तथा व्यापारी जनों से सामान्यतः अच्छे सम्बन्ध बने रहेंगे। आयु के २२, २४, २८, ३०, ३२, ३६, ४०, ४४, ४८ तथा ५२ वें वर्ष व्यवसाय के लिए लाभप्रद तथा १९, २१, ३३, ४५ एवं ५७ वें वर्ष शरीर के लिए कष्टप्रद सिद्ध होंगे। धर्म में रुचि होगी।

(५३४)- इस लग्न कुण्डली वाला जातक गौरवर्ण, लम्बे कद का, साहसी तथा विनम्र-स्वभाव का होगा। विद्या का लाभ मध्यम रहेगा। विवाह उत्तर दिशा की ओर से २३ अथवा २७ वर्ष की आयु में होगा। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होगी, अतः दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहेगा। वर्ष २५ अथवा ३१ में स्त्री को गर्भपात होने की सम्भावना है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होंगे, अतः जातक को भूमि, भवन तथा वाहन के अतिरिक्त अन्य सभी प्रकार के सुख उपलब्ध होंगे। जीवन के २३, २५, २९, ३१, ३३, ३७, ४१, ४५, ४९, ५३ तथा ५५ वें वर्ष व्यवसाय में उन्नति कारक तथा १६, ४४ एवं ५८ वें वर्ष शारीरिक-स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद सिद्ध होंगे। उदर-विकार सम्बन्धी रोग प्रायः बने रहेंगे। यह जातक झगड़ालू प्रकृति का होते हुए भी अपना स्वार्थ-सिद्ध करने में चतुर होगा। माता-पिता तथा भाई-बहिनों का सामान्य सुख-सहयोग उपलब्ध होगा तथा धर्म में निष्ठा रखते हुए भी यथावत् पालन नहीं करेगा।

(५३५) – इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य मध्यम कद, कुछ लम्बाई लिए हुए, गौरवर्ण तथा स्वभाव से विनम्र होगा। दया, धर्म एवं न्याय के प्रति इसका विशेष झुकाव बना रहेगा। विद्या का श्रेष्ठ लाभ होगा। विवाह २२, २४ अथवा २८वें वर्ष में होना सम्भव है। स्त्री सुन्दरी तथा सुशीला होगी, तथापि दाम्पत्य-जीवन में नीरसता बनी रहेगी। सन्तान का सुख अच्छा रहेगा। भाइयों से भी पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा, परन्तु मित्रों से कभी कोई सहायता नहीं मिलेगी। आर्थिक स्थिति मध्यम रहेगी तथा आकस्मिक खर्चों के कारण आर्थिक-असन्तुलन भी बना रहेगा। वर्ष २२, २४, २६, ३०, ३२, ३४, ३८, ४२, ४४, ४६, ५० तथा ५२ व्यवसाय में विशेष उन्नति कारक सिद्ध होंगे। जीवन के १९, २३, २८ तथा ४० वें वर्ष स्वास्थ्य के लिए कष्ट कारक सिद्ध होंगे। माता-पिता से स्नेह सम्बन्ध सामान्य बना रहेगा, परन्तु कोई लाभ नहीं मिल सकेगा। धर्म के प्रति पूर्ण आस्था बनी रहेगी।

(५३६) – इस जन्मकुण्डली में जन्मग्रहण करने वाला बालक गेहुँए रंग का, नाटे कद वाला तथा स्वभाव से क्रोधी और झगड़ालू होगा। नशीली वस्तुओं का सेवन करने में इसकी विशेष रुचि रहेगी, घरेलू खर्च काफी बढ़े-चढ़े रहने के कारण अर्थ-सञ्चय में कमी रहेगी तथापि आर्थिक-आय के स्रोत अच्छे बने रहेंगे। भाइयों से जातक को पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। विद्या का लाभ मध्यम होगा। पत्नी मनोनुकूल मिलेगी तथा दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहेगा। सन्तान से भी पर्याप्त सुख मिलेगा। अपने पराक्रम द्वारा नवीन मकान आदि का निर्माण करेगा। एक से अधिक स्त्रियों से सम्बन्ध होना भी सम्भव है। आयु के २२, २६, २८, ३०, ३२, ३४, ३६, ३८, ४२, ४४, ४६, ४८, ५०, ५२ तथा ५४ वें वर्ष व्यवसाय में उन्नति कारक सिद्ध होंगे। प्रथम सन्तान कन्या होगी तथा न्यायप्रियता की ओर विशेष झुकाव बना रहेगा। पैतृक-कार्य में जातक विशेष उन्नति तथा सम्मान प्राप्त करेगा।

मू० सं०

कु० १०

(५३७)- इस सूर्य-कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य लम्बे क़द, साँवले रंग, घुँघराले बाल तथा क्रोधी स्वभाव का एवं चापलूसी करने में अत्यधिक चतुर होता है। वह पराक्रमी, साहसी, परिश्रमी तथा कठिन-से-कठिन कार्य को सफल कर दिखाने में भी सक्षम होता है। इसकी बुद्धि प्रखर होती है तथा विद्या का श्रेष्ठ लाभ प्राप्त करता है। इसके जीवन में विवाह के एक से अधिक अवसर आते हैं। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय करना पसन्द करता है। विवाह २३, २५ अथवा २९ वर्ष की आयु में होता है। सन्तान का भी श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। इस के जीवन के २३, २५, २७, २९, ३१, ३३, ३७, ४१, ४३, ४५, ४७, ५१ तथा ५३ वें वर्ष व्यवसाय के लिए लाभप्रद सिद्ध होते हैं। वर्ष २१ आर्थिक-दृष्टि से विशेष चिन्ता कारक रहता है। आय के स्रोत एक से अधिक होते हैं तथा आर्थिक-स्थिति मजबूत बनी रहती है। निजी भूमि तथा मकान होता है। एवं २६ अथवा ३८ वें वर्ष में सवारी का सुख भी प्राप्त होता है। माता-पिता तथा परिवारी जनों से सम्बन्ध सौहार्दपूर्ण रहते हैं।

(५३८)- इस सूर्य-कुण्डली में जन्मा हुआ व्यक्ति कुछ लम्बाई लिए मध्यम क़द का, गौर वर्ण तथा शान्त प्रकृति का होता है। परन्तु बदले की भावना भी विद्यमान रहती है। भाइयों का सुख कम मिलता है। विद्या का योग मध्यम रहता है। विवाह २२, २४ अथवा २८ वें वर्ष में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुशिक्षिता होती है, अतः दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहता है। सन्तानें होती हैं, परन्तु उनसे कोई विशेष सहयोग नहीं मिल पाता। आलसी-स्वभाव का होने के कारण यह उन्नति के अवसरों का उचित उपयोग नहीं कर पाता तथा खर्च अधिक बढ़ा-चढ़ा रहने से जीवन में अनेक बार ऋण-ग्रस्तता के अवसर भी उपस्थित होते हैं, अस्तु आर्थिक स्थिति प्रायः कमजोर ही बनी रहती है। जीवन में २२, २६, ३०, ३२, ३४, ३८, ४२, ४४, ४६, ५०, ५२ तथा ५६ वें वर्ष व्यवसाय में लाभप्रद सिद्ध होते हैं तथा ११, २३, ३५, ४०, ४६, ५९ तथा ६४ वें वर्ष स्वास्थ्य के लिए हानिकर रहते हैं। आयु पूर्ण होती है।

मु० सं० ७८५

(५३९) – इस लग्न कुण्डली में उत्पन्न हुआ मनुष्य मध्यम कद, साँवले रंग का, मृदुभाषी तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। विद्या के क्षेत्र में कमजोर रहता है। वर्ष २१, २३, २५ तथा ३९ में विवाह होना सम्भव है। विवाह के एक से अधिक योग बनते हैं। स्त्री के प्रति चिन्ता बनी रहती है। एक से अधिक सन्तानें नष्ट हो जाती हैं तथा आयु का ३० वां वर्ष सन्तान के लिए विशेष अनिष्ट कर रहता है। जीवन के २१, २३, २८, ३१, ३३, ३५, ३९, ४३, ४५, ४८, ५१, ५५ तथा ५८ वें वर्ष व्यवसाय अथवा आर्थिक-स्थिति के लिए उन्नति-काल सिद्ध होते हैं। वर्ष ६० स्वास्थ्य के प्रति चिन्ता कारक रहता है। वायु-विकार सम्बन्धी रोग परेशान करते रहते हैं। व्यवसाय में आकस्मिक धन-लाभ के योग भी आते हैं तथा आर्थिक-स्थिति मजबूत बनी रहती है। परन्तु वर्ष २२ तथा ३२ आर्थिक-हानिप्रद भी होते हैं। पैतृक-सम्पत्ति या झगड़े आदि की सम्भावना रहती है। परिवारीक जनों से सामान्य सम्बन्ध रहते हैं। कुल मिलाकर जीवन सुखपूर्वक बीतता है।

(५४०) – इस जन्मांग चक्र में उत्पन्न होने वाला बालक गौर वर्ण, इकहरे शरीर का तथा कान्ति-प्रिय होता है। न्याय के प्रति इसका विशेष झुकाव रहता है। विद्या का लाभ रुकावटों के साथ होता है। विवाह २१, २३ अथवा २५ वर्ष की आयु में होता है तथा पत्नी सुन्दरी एवं सुशीला प्राप्त होती है, फलतः दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहता है। वृद्धावस्था में सन्तान के प्रति चिन्ताजनक-स्थिति बनती है। वर्ष २१, २३, २५, २८, ३१, ३३, ३५, ३९, ४३, ४५, ४८, ५१, ५५, ५८ तथा ६१ व्यवसाय के लिए लाभप्रद सिद्ध होते हैं। भूमि, भवन तथा सवारी का अच्छा सुख मिलता है। आर्थिक-स्थिति मजबूत बनी रहती है। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय की ओर अधिक झुकाव रहता है और उसमें सफलता भी प्राप्त होती है। आयु पूर्ण होती है तथापि आयु का ६० वां वर्ष घातक सिद्ध होता है एवं पेट सम्बन्धी रोग होते रहने की सम्भावना रहती है। परिवारीजनों से सामान्य सम्बन्ध रहते हैं। माता-पिता का सहयोग मिलता है।

कु० १०

(५४१)– इस जन्मकुण्डली वाला जातक सुन्दर नाक-नक्शा, लम्बे कद तथा साँवले रंग का एवं स्वभाव से क्रोधी होता है। विद्या का योग अच्छा बनता है। बुद्धि तीव्र होती है। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में विशेष रुचि रहती है और उसी में सफलता भी प्राप्त होती है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं। विवाह का योग २२, २४ अथवा २६ वर्ष की आयु में बनता है। स्त्री साँवले रंग की तथा हठी स्वभाव की होती है। सन्तान का सुख उत्तम रहता है। पुत्रों की अपेक्षा कन्याएँ अधिक होती हैं। वर्ष २२, २४, २६, २८, ३१, ३२, ३४, ४०, ४४, ४६, ४८, ५२ तथा ५६ व्यवसाय में उन्नति कारक होते हैं। आर्थिक-स्थिति मजबूत बनी रहती है। भूमि, भवन तथा वाहन का सुख प्राप्त होता है। वर्ष २४ तथा ६१ स्वास्थ्य के प्रति कष्टकारक रहते हैं। दाम्पत्य-सुख में कुछ कमी बनी रहती है तथापि परिवारी जनों से स्नेह-सम्बन्ध प्रगाढ़ बने रहते हैं। धर्म-कर्म के प्रति रुचि रहती है तथा जीवन सुखपूर्वक बीतता है।

(५४२)– इस सूर्य-कुण्डली में उत्पन्न हुआ मनुष्य कुछ लम्बाई लिए मध्यम कद का, गौरवर्ण तथा शान्तिप्रिय होता है। यह स्वभाव से उपोक होता है तथा कृपणता भी प्रदर्शित करता रहता है। विद्या का योग अच्छा रहता है। विवाह २२, २४ अथवा २६ वें वर्ष में होता है तथा दाम्पत्य-सुख मध्यम श्रेणी का रहता है। सन्तान का उत्तम सुख प्राप्त होता है। आर्थिक-क्षेत्र में निरन्तर उन्नति होती जाती है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं। पैतृक-सम्पत्ति का भी श्रेष्ठ लाभ होता है। ४० वाँ वर्ष माता के लिए कष्टप्रद सिद्ध होता है। आयु के २२, २४, २६, ३०, ३२, ३४, ३८, ४०, ४४, ४६, ५०, ५२, ५४, ५६ तथा ५८ वें वर्ष व्यवसाय के लिए उन्नति कारक सिद्ध होते हैं तथा २४ एवं ६० वें वर्ष स्वास्थ्य के लिए चिन्ताजनक रहते हैं। मित्र-वर्ग से धन-लाभ के अवसर उपलब्ध होते हैं तथा माता-पिता, भाई-बहिन आदि से भी सहयोग मिलता है। लोहे तथा बिजली से संबंधित व्यवसाय लाभकर रहते हैं।

भृ० सं० ४५७

कु० २०

(५४३)- इस सूर्य कुण्डली में उत्पन्न हुआ मनुष्य लम्बे कद, हठीले स्वभाव, गौर वर्ण तथा आलसी प्रकृति का होता है। आलसी होने के कारण ही वह उन्नति के अनेक अवसरों को खो देता है। यह शरीर से दुबला-पतला तथा कमजोर स्वास्थ्य का होता है। विवाह २२, २४ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी साँवली होती है। २५वाँ वर्ष स्त्री के लिए विशेष चिन्ता जनक रहता है। एक से अधिक विवाह के योग भी बनते हैं। दाम्पत्य-सुख मध्यम रहता है तथा स्त्री के प्रति जातक की बेरुखी बनी ही रहती है। सन्तानों में कन्याओं की संख्या अधिक होती है। सन्तान के प्रति चिन्ता भी बनी रहती है। आर्थिक क्षेत्र में शनैः-शनैः उन्नति होती है। भूमि तथा भवन आदि की हानियाँ सम्भव हैं। २५वाँ वर्ष आर्थिक-कष्ट का होता है। वर्ष २२, २४, २६, २८, ३२, ३४, ३६, ३८, ४०, ४४, ४६, ४८, ५२, ५६ तथा ५८ व्यवसाय के लिए उन्नति कारक रहते हैं। वर्ष ५९ तथा ६१ स्वास्थ्य के प्रति चिन्ता जनक होते हैं। आयु ८५ वर्ष।

(५४४)- इस सूर्य-कुण्डली में जन्मा हुआ बालक मध्यम कद, गेहुँआ रंग, शान्तिप्रिय, पराक्रमी तथा पराक्रम के बल पर ही आर्थिक-उन्नति करने वाला होता है। प्रारम्भिक जीवन आर्थिक-दृष्टि से कमजोर तथा २५ वर्ष की आयु के बाद सन्तोषजनक रहता है। विवाह २२, २४, अथवा २६वें वर्ष में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुलक्षणा होती है। दाम्पत्य-सुख तथा सन्तान-सुख - दोनों ही उत्तम बने रहते हैं। विद्या-लाभ भी यथेष्ट होता है। ५५वाँ वर्ष स्त्री के लिए कष्ट कारक सिद्ध होता है तथा १२, २४, ३७, ४८ एवं ६८वें वर्ष स्वयं के स्वास्थ्य के लिए चिन्ताजनक सिद्ध होते हैं। वर्ष २३, ३५ तथा ४७ आर्थिक-दृष्टि से चिन्ताकारक सिद्ध होते हैं। वर्ष २२, २४, २६, २८, ३२, ३४, ३६, ३८, ४०, ४४, ४६, ४८, ५२, ५६ तथा ५८ व्यवसाय के लिए उन्नतिकारक होते हैं। भाइयों से कोई विशेष सहयोग नहीं मिलता, परन्तु शत्रुपक्ष पर जातक प्रभावशाली बना रहता है। आर्थिक स्थिति मध्यम बनी रहती है।

(५४५)– इस सूर्य-कुण्डली में उत्पन्न होने वाला मनुष्य लम्बा, पतला, साँवले रंग का तथा सुन्दर नाक नक्श वाला होता है। इसमें स्नेह, सौजन्य, आत्मीयता एवं प्रियवादिता आदि अनेक सद्गुण पाये जाते हैं। विद्या-बुद्धि का यथेष्ट लाभ होता है। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी में अधिक प्रभावशाली बनता है। विवाह पूर्व दिशा में वर्ष २३, २५, २७ अथवा ३१ में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुशिक्षिता होती है, अतः दाम्पत्य-जीवन भी सुखपूर्ण बना रहता है। सन्तान का भी उत्तम सुख प्राप्त होता है। आकस्मिक स्थितियों के कारण जीवन में अनेक बार ऋण-ग्रस्तता के अवसर भी आयेंगे, तथापि आर्थिक स्थिति सन्तोषजनक, परन्तु दुर्बल बनी रहेगी। पैतृक-सम्पत्ति-लाभ का भी योग है तथा भूमि, भवन आदि का सुख भी प्राप्त होगा। वर्ष २३, २५, २७, २९, ३३, ३५, ३७, ४१, ४५, ४७, ४९, ५१ तथा ५३ आर्थिक लाभ देने वाले होंगे तथा वर्ष २, १४, २६, ३८, ५० तथा ६२ स्वास्थ्य के लिए चिन्ताजनक रहेंगे। आयु पूर्ण होगी।

(५४६)- इस सूर्य-कुण्डली में जन्म ग्रहण करने वाला बालक गौरवर्ण, लम्बे कद का तथा कान्ति-प्रिय होगा। मित्रता-स्थापित करने में अग्रणी बना रहेगा। विद्या-लाभ उत्तम होगा, परन्तु बीच-बीच में रुकावटें भी आयेंगी। विवाह २३, २५ अथवा २७ वर्ष की आयु में होना निश्चित है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुशिक्षिता होगी। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहेगा तथा सन्तान-सुख भी श्रेष्ठ प्राप्त होगा। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहेगी। वर्ष २१, २३, २५, २७, ३३, ३५, ३७, ४१, ४५, ४७, ४९, ५१, ५३ तथा ५५ व्यवसाय अथवा आर्थिक-स्थिति के लिए लाभप्रद तथा २४, ३६ एवं ४८ वें वर्ष हानिप्रद रहेंगे। वर्ष १४, २८ तथा ५६ स्वास्थ्य के लिए चिन्ताजनक सिद्ध होंगे, तथापि जातक पूर्णायु प्राप्त करेगा। जीवन में स्वोपार्जित धन से भवन निर्माण करायेगा तथा २८ एवं ४० वें वर्ष में भूमि, वाहन आदि का सुख भी प्राप्त करेगा। मित्रों से इसे पूर्ण सहयोग मिलता रहेगा, परन्तु परिवारीजनों से कुछ लाभ नहीं होगा।

भ० सं० ३८७

कु० १०

(५४७) – इस जन्मलग्न में शरीर धारण करने वाला मनुष्य मध्यम कद, क्रोधी-स्वभाव तथा साँवले रंग का होगा। इसकी वाणी कठोर तथा कर्कश होगी। विद्या लाभ सामान्य रहेगा तथा बुद्धि भी कमजोर होगी। जीवन में कभी पागल हो जाने की सम्भावना भी है। वर्ष १९, २३, २५ अथवा २७ में विवाह होना सम्भव है। स्त्री से पूर्ण दाम्पत्य-सुख प्राप्त होगा तथा वह सहयोग करने वाली सिद्ध होगी, जबकि सन्तानों से जातक को त्रास (भय) मिलेगा। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी करना लाभप्रद होगा। वर्ष २१, २३, २५, २७, २९, ३३, ३५, ३७, ४१, ४५, ४९, ५१, ५३ तथा ५७ आर्थिक दृष्टि से हितकर एवं लाभदायक होंगे। उनमें लाभप्रद होंगे। वर्ष २४ आर्थिक-दृष्टि से चिन्ताकारक रहेगा। वर्ष १२, २६, ३८ तथा ६२ स्वास्थ्य की दृष्टि से चिन्ताजनक होंगे। स्वजन-सम्बन्धियों की अपेक्षा जातक को मित्रों से स्नेह-सहयोग प्राप्त होगा। माता-पिता से संबंध सामान्य होंगे। धर्म-कर्म के प्रति आस्था बनी रहेगी।

(५४८) – इस सूर्य-कुण्डली में जन्म ग्रहण करने वाला मनुष्य नाटे कद तथा साँवले रंग का एवं हठीले स्वभाव वाला होगा। यह डरपोक, आलसी तथा सनकी भी होगा, फलतः जीवन में उन्नति के अवसर खो सकता है। विद्या-लाभ मध्यम श्रेणी का होगा। विवाह २४, २६ अथवा २८ वें वर्ष में सम्भव है, परन्तु दाम्पत्य-सुख मध्यम कोटि का होगा, क्योंकि स्त्री से विचारों का ताल-मेल नहीं बैठेगा। सन्तान का सुख उत्तम रहेगा, परन्तु पुत्रों की अपेक्षा कन्याओं की संख्या अधिक होगी। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी अधिक लाभप्रद सिद्ध होगी। वर्ष २६, २८, ३०, ३४, ३८, ४०, ४२, ४६, ५०, ५४ तथा ५८ व्यवसाय में उन्नतिकारक अथवा आर्थिक-लाभ देने वाले होंगे। वर्ष १३, ४३ तथा ५८ स्वास्थ्य के लिए चिन्ताजनक रहेंगे। आर्थिक-स्थिति अच्छी होगी तथा आमदनी के स्रोत एक से अधिक रहेंगे। माता का अल्प सुख प्राप्त होगा। भूमि तथा भवन का सुख उपलब्ध होगा। जीवन सुख से बीतेगा।

(५४९) – इस जन्म कुण्डली में शरीर धारण करने वाला मनुष्य नाटे कद, दुर्बल शरीर, सांवले रंग, शान्त स्वभाव तथा कमजोर बुद्धि का होगा। इसे मस्तिष्क सम्बन्धी रोग (पागलपन आदि) होना भी सम्भव है। भाइयों की अपेक्षा बहिनों की संख्या अधिक होगी। विद्या का लाभ अच्छा होगा। विवाह २०, २४ अथवा २६ के वर्ष में होना सम्भव है। पत्नी सुशीला, सुन्दरी तथा सुशिक्षिता होगी। दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहेगा तथा सन्तान का सुख भी अच्छा रहेगा। पुत्र सेवाभावी होंगे। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी अधिक लाभप्रद रहेगी तथा आमदनी के स्रोत एक से अधिक होंगे, फलतः आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहेगी। वर्ष २२, २६, २८, ३०, ३४, ३८, ४०, ४२, ४६, ५०, ५२, ५४ तथा ५८ व्यवसाय में उन्नति कारक सिद्ध होंगे। वर्ष २५ आर्थिक-चिन्ता कारक होगा तथा वर्ष ३, ११, २७, ५९ और ६२ स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद रहेंगे। आयु पूर्ण (दीर्घ) होगी। निजी मकान, वाहन आदि का योग बनता है। कुल मिलाकर यह जातक सुखी-जीवन व्यतीत करेगा।

(५५०) – इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न हुआ शिशु हल्के साँवले रंग का, लम्बे कद तथा हृष्ट-पुष्ट शरीर का, अत्यन्त स्वाभिमानी होगा। यह स्वभाव से साहसी तथा पराक्रमी भी होगा। बुद्धि अत्यन्त तीव्र होगी तथा विद्या का श्रेष्ठ लाभ होगा। यह एक से अधिक भाषाओं का विद्वान् तथा तुरन्त निर्णय लेने वाला होगा। विवाह २१, २५, २७ अथवा २९ वें वर्ष में होना सम्भव है। स्त्री मनोनुकूला, सुन्दरी तथा पतिपरायणा होगी। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहेगा तथा स्त्री से आर्थिक-लाभ भी मिलेगा। सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक होगी तथा उनसे सुख भी मिलेगा। आर्थिक-स्थिति बहुत अच्छी रहेगी तथा कृषि, भवन, वाहनादि के सुख प्राप्त होंगे। वर्ष २३, २५, २७, २९, ३१, ३५, ३७, ३९, ४३, ४७, ४९, ५१, ५५ तथा ५९ व्यवसाय के लिए उन्नति कारक सिद्ध होंगे। वर्ष १६, २८, ४० तथा ६२ स्वास्थ्य के लिए चिन्ताजनक रहेंगे। यह जातक अनुशासन-प्रिय तथा हुकूमत करने वाला होगा। जीवन सुख पूर्वक बीतेगा। आयु दीर्घ होगी।

भू० सं० २८९ कु० १०

(५५१) - इस जन्मकुण्डली में जन्म ग्रहण करने वाला मनुष्य लम्बे शरीर, सुन्दर नाक-नक्शा, उन्नत ललाट तथा गेहुँआ रंग वाला होगा। साहसी तथा पराक्रमी होने के साथ ही यह स्वभाव से झगड़ालू भी होगा। शत्रुपक्ष द्वारा भी झगड़े-टंटे पर आमादा रहना उसे रुचिकर रहेगा। परन्तु इसके साथ ही यह स्पष्टवक्ता एवं न्याय-प्रिय भी होगा। विद्या का श्रेष्ठ लाभ होगा। विवाह २१, २४, २६ अथवा २८ वर्ष की आयु में पश्चिम दिशा की ओर से होगा तथा पत्नी सुन्दरी, सुशीला एवं गुणवती होगी, फलतः दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहेगा। पुत्रों का भी श्रेष्ठ सुख प्राप्त होगा। २२ वर्ष की आयु से भाग्योदय प्रारंभ होगा तथा २२, २४, २६, २८, ३०, ३४, ३६, ३८, ४२, ४६, ५०, ५४, ५८ तथा ६० वें वर्ष आर्थिक-दृष्टि से उन्नति कारक एवं २५ वाँ वर्ष चिन्ताकारक सिद्ध होंगे। वर्ष १५, २१, ३३, ४१ तथा ५८ स्वास्थ्य के लिए हानिकर रहेंगे। भूमि-भवन तथा वाहन का यथेष्ट सुख मिलेगा तथा आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहेगी।

(५५२) - इस सूर्यकुण्डली वाला जातक लम्बे शरीर वाला, हृष्ट-पुष्ट, साँवले रंग का तथा अत्यन्त साहसी होगा। यह विपरीत-परिस्थितियों को भी अनुकूल बना लेने में सक्षम सिद्ध होगा। इसके शत्रु निरन्तर पराजित होते रहेंगे। विद्या का श्रेष्ठ लाभ होगा। विवाह २०, २४, २६ अथवा २८ वर्ष की आयु में होना संभव है। पत्नी मनोनुकूला, सुन्दरी तथा सुगृहिणी होगी, फलतः दाम्पत्य-सुख उत्तम होगा तथा सन्तान-सुख भी अच्छा रहेगा। यह तीव्र बुद्धि वाला, धार्मिक कार्यों में अभिरुचि रखने वाला, राज्य से सम्मानित तथा ठाठ-बाट से रहने वाला होगा। जीवन में आर्थिक-असन्तुलन बना रहेगा, तथापि कोई भी कार्य धन की कमी के कारण नहीं रुकेगा। वर्ष २२, २४, २६, २८, ३०, ३४, ३६, ३८, ४२, ४४, ४६ तथा ५० आर्थिक-दृष्टि से उन्नति कारक रहेंगे तथा वर्ष ३३ एवं ६२ स्वास्थ्य के लिए चिन्ताजनक सिद्ध होंगे। परिवारी जनों तथा माता-पिता से अच्छे संबंध रहेंगे तथा धर्म का पालन भी करता रहेगा।

(५५३)- इस सूर्य-कुण्डली में जन्म लेने वाला मनुष्य मध्यम-कद, सुन्दर नाक-नक्शा तथा गौर वर्ण वाला साहसी प्रकृति का होगा। यह शरीर से कुछ दुर्बल भी दिखाई देगा। बाल्यावस्था में रोगादि की सम्भावना अधिक रहेगी। यह योजनाबद्ध कार्यों में रुचि लेने वाला, स्पष्टवादी तथा खुले व्यक्तित्व का होगा। विलासिता तथा मनोरंजन के साधनों में इसकी विशेष रुचि बनी रहेगी। यह किसी के नियन्त्रण को स्वीकार नहीं कर सकेगा, अतः या तो नौकरियों को छोड़ता रहेगा अथवा व्यवसाय करेगा। इसके रहन-सहन का खर्च बढ़ा-चढ़ा होगा, अतः धन का संचय अधिक नहीं कर सकेगा। विद्या का योग उत्तम होगा। सन्तान-सुख भी अच्छा रहेगा। विवाह २४, २६ अथवा २८ वर्ष की आयु में होगा। पत्नी सुन्दरी सुशीला तथा मनोनुकूला होगी। वर्ष २२, २४, २६, २८, ३०, ३४, ३६, ३८, ४२, ४६, ४८, ५० तथा ५२ व्यवसाय में उन्नति कारक रहेंगे। भाइयों से किसी प्रकार का सुख-सहयोग नहीं मिल सकेगा।

(५५४)- इस सूर्य-कुण्डली में उत्पन्न हुआ बालक हृष्ट-पुष्ट शरीर का, गौर वर्ण, शक्तिशाली, परिश्रमी तथा साहसी होगा। स्वभाव से कुछ घमण्डी भी होगा। व्यावहारिक होते हुए भी कभी-कभी आपे से बाहर होकर अशिष्टता का परिचय दे बैठेगा। इसमें आत्म-विश्वास की मात्रा अत्यधिक होगी। विद्या मध्यम श्रेणी की प्राप्त होगी। विवाह २१, २५, २७ अथवा २९ वें वर्ष में होगा। पत्नी सुन्दरी तथा पति से कुछ अधिक लम्बी होगी। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहेगा। सन्तानों में कन्याएं अधिक होंगी। व्यवसाय में सफलता नहीं मिलेगी। नौकरी लाभप्रद रहेगी। वर्ष २३, २५, २७, ३१, ३२, ३७, ३९, ४३, ४७, ४९, ५१ तथा ५५ आर्थिक दृष्टि से उन्नति कारक रहेंगे। वर्ष ३५, ४० तथा ६४ स्वास्थ्य के लिए अहितकर सिद्ध होंगे। बवासीर जैसा कोई रोग होना सम्भव है। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहेगी, तथापि आकस्मिक-लाभ के अवसर प्राप्त होते रहेंगे। जीवन सामान्यतः सुखी व्यतीत होगा।

(५५५) – इस जन्मांग-चक्र में देह धारण करने वाला मनुष्य गौरवर्ण, सुन्दर स्वरूपवान तथा क्रोधी-स्वभाव का होता है। इसकी बुद्धि अत्यन्त तीव्र होती है, फलतः विद्या का भी यथेष्ट लाभ होता है। विवाह २१, २५, २७ अथवा २९ वर्ष की आयु में होता है एवं पत्नी साँवले रंग की, लम्बे कद की तथा झगड़ालू स्वभाव की होती है, तथापि दाम्पत्य-सुख अच्छा बना रहता है। सन्तान-सुख भी अच्छा रहता है। पुत्र की अपेक्षा कन्या सन्तानें अधिक होती हैं। ५८ वां वर्ष स्त्री के लिए कष्टप्रद सिद्ध होता है। वर्ष २३, २५, २७, २९, ३१, ३७, ३९, ४३, ४९, ५१, ५३ तथा ५५ व्यवसाय के लिए उन्नति कारक होते हैं। ६४ वां वर्ष स्वयं के स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद सिद्ध होता है। सवारी का सुख ३० वर्ष की आयु में प्राप्त होता है तथा भूमि एवं भवन की उपलब्धि भी होती है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं, अतः आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। ससुराल-पक्ष तथा स्त्री जैसी धन का लाभ होता है। आकस्मिक-लाभ के अवसर भी मिलते रहते हैं।

(५५६) – इस जन्मांग-चक्र में शरीर धारण करनेवाला बालक गौरवर्ण, लम्बे कद तथा बलिष्ठ शरीर का एवं क्रोधी स्वभाव का होता है। विद्या का अच्छा लाभ होता है। विवाह २१, २५, २७ अथवा २९ वें वर्ष में होता है तथा स्त्री सुन्दरी एवं सुशीला होती है। दाम्पत्य-जीवन सुख से बीतता है। वर्ष २३, २५, २७, २९, ३१, ३७, ३९, ४३, ४५, ४९, ५१, ५३, ५५ तथा ६१ व्यवसाय के उन्नतिदायक होते हैं। वर्ष ४६ आर्थिक दृष्टि से अधिक खराब रहता है। खर्च बढ़ा-चढ़ा रहने के कारण अर्थ-कोष में कमी रहती है, तथापि जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होता है तथा कोई काम रुकता नहीं है। सन्तानों में कन्याओं की संख्या अधिक रहती है। भूमि, मकान एवं वाहनादि की उपलब्धि भी होती है। व्यवसाय-क्षेत्र में जातक की बुद्धि तीव्र होती है, अतः वह उसमें निरन्तर सफलताएँ प्राप्त करता रहता है। वर्ष ५८ तथा ६४ स्वास्थ्य के लिए प्रतिकूल सिद्ध होते हैं, तथापि जातक सामान्यतः नीरोग रह कर पूर्णायु प्राप्त करता है।

330. मू० सं० कु० १०

(५५७) - इस जन्माङ्ग-चक्र में उत्पन्न हुआ मनुष्य हल्के साँवले रंग का, स्वस्थ एवं सुन्दर, मध्यम कद एवं कुछ पतले शरीर वाला होता है। विद्या का लाभ श्रेष्ठ रहता है। विवाह २१, २५ अथवा २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा लम्बे कद वाली होती है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। सन्तान-सुख उत्तम रहता है तथा पुत्रों की अपेक्षा कन्याएँ अधिक होती हैं। आर्थिक-व्यय बढ़ा-चढ़ा रहता है, क्योंकि इसके रहन-सहन का खर्च अधिक होता है। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी में विशेष रुचि रहती है। २५ वें वर्ष से भाग्योदय प्रारंभ होता है। वर्ष २५, २७, २९, ३१, ३५, ३७, ३९, ४१, ४३, ४५, ४९, ५१, ५३ तथा ५५ व्यवसाय अथवा आर्थिक-दृष्टि से उन्नति कारक सिद्ध होते हैं। ४२ वाँ वर्ष आर्थिक-दृष्टि से कष्टप्रद रहता है। ३५ वें वर्ष में स्त्री को कष्ट होता है तथा ५८ एवं ६४ वाँ वर्ष स्वयं के स्वास्थ्य के लिए चिन्ताजनक रहता है। यह जातक स्वभाव से क्रोधी होता है। भूमि-भवन आदि के सुख उपलब्ध होते हैं।

(५५८) - इस जन्माङ्ग चक्र में उत्पन्न होने वाला बालक नाटे कद का, गौरवर्ण, शान्त स्वभाव का, कर्मठ, साहसी तथा कामुक प्रकृति का होता है। रात-दिन परिश्रम करते रहना इसके स्वभाव में होता है। विद्या क्षेत्र में कमजोरी रहती है तथा अध्ययन-काल में रुकावटें आती रहती हैं। विवाह २२, २६ अथवा २८ वें वर्ष में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोऽनुकूला होती है, फलतः दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहता है। भावुक स्वभाव वाला यह जातक नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय करना अच्छा समझता है। वर्ष २२, २४, २६, २८, ३०, ३२, ३६, ३८, ४०, ४४, ४८, ५०, ५२ तथा ५६ व्यवसाय-पक्ष में उन्नति कारक सिद्ध होते हैं। वर्ष २९, ३५ तथा ५९ स्वयं के स्वास्थ्य के लिए चिन्ताजनक रहते हैं। स्त्री प्रायः रुग्ण बनी रहती है। मकान तथा सवारी का सुख मध्यम रहता है तथा आर्थिक-स्थिति भी मध्यम ही रहती है। जीवन में सन्तान-हानि के अवसर भी आते हैं। सन्तान से अपेक्षित-सुख नहीं मिलता। आयु पूर्ण होती है।

(५५९)– इस जन्माङ्ग-चक्र में राशि ग्रहण करने वाला मनुष्य लम्बे कद, दुर्बल शरीर व साँवले रंग का होता है तथा उसका चेहरा कुछ लम्बाई लिए रहता है। यह स्वभाव से हठीला तथा घोर स्वाभिमानी होता है एवं कठिन-से-कठिन परिस्थितियों में भी विचलित नहीं होता। यह संकटों का दृढ़ता पूर्वक सामना करता है। विपरीत-लिङ्ग के प्रति इसका आकर्षण गहरा होता है। दूसरों से कार्य निकालने की इसमें अद्भुत क्षमता होती है। मृदुभाषी होने के साथ ही यह क्रोधी स्वभाव का भी होता है। विद्या क्षेत्र में कुछ रुकावटें आती हैं। विवाह २२, २६ अथवा २८ वें वर्ष में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुशिक्षिता मिलती है। सन्तानों में पुत्र तथा कन्याएं प्राप्त होती हैं एवं उनसे सुख भी मिलता है। पैतृक भवन सम्पत्ति का लाभ होता है तथा अन्य सुखों की उपलब्धि के साथ ही आर्थिक-स्थिति मजबूत बनी रहती है। वर्ष २४, २६, २८, ३०, ३२, ३६, ३८, ४०, ४२, ४४, ४८, ५०, ५२ तथा ५४ आर्थिक उन्नति कारक होते हैं। उदर-विकार सम्भव है।

(५६०)– इस सूर्य-कुण्डली में उत्पन्न होने वाला मनुष्य लम्बे शरीर का, हृष्ट-पुष्ट, घने लम्बे बालों वाला, खिलते हुए गौर वर्ण का होता है। इसके चेहरे पर मुस्कान सदैव खिली रहती है। शिक्षा-क्षेत्र में पर्याप्त सफलता प्राप्त होती है। विवाह २७ वर्ष की आयु में सम्भव है। पत्नी पतली, सांवली तथा कुछ हठी स्वभाव की होती है तथा दाम्पत्य-सुख में कुछ कमी रहती है। प्रथम सन्तान पुत्र होती है तथा ३४ वां वर्ष सन्तान के लिए कष्ट कारक होता है। सन्तान-सुख अच्छा बना रहता है। ३५ वां वर्ष स्त्री के लिए कष्ट कारक होता है। आर्थिक-दृष्टि से मध्यम स्थिति बनी रहती है, परन्तु किसी भी काम के लिए धन की कमी अनुभव नहीं होती। भूमि-मकान आदि का योग भी बनता है, परन्तु उनके नष्ट हो जाने के अवसर भी आते हैं। वर्ष २५, २७, २९, ३१, ३३, ३६, ३९, ४१, ४५, ४९, ५१ तथा ५७ व्यवसाय एवं आर्थिक स्थिति के लिए उन्नति कारक होते हैं। ६० वां वर्ष त्वचा के स्वास्थ्य के लिए कष्टकारक रहता है। आयु मध्यम होती है।

(५६१) — इस सूर्य-कुण्डली में उत्पन्न बालक साँवले रंग का, मध्य कद, छोटे सिर तथा क्रोधी स्वभाव वाला होता है। यह स्वभाव से जिद्दी तथा सन्तोषी प्रकृति का भी पाया जाता है। विद्या का उत्तम लाभ प्राप्त होता है तथा विवाह २३ अथवा २७ वें वर्ष में सम्भव है। पत्नी से अधिक समय तक साथ नहीं मिलता। सन्तानों में पुत्रों का सुख अच्छा मिलता है। यह जातक सामाजिक रूढ़ियों को न मानने वाला तथा वाक्पटु होता है। माता का सुख उत्तम नहीं रहता। भूमि-भवन आदि का निजी योग रहता है तथा आर्थिक-स्थिति सन्तोष जनक बनी रहती है। यद्यपि अर्थ-संचय अधिक नहीं हो पाता। वर्ष २५, २७, २९, ३१, ३३, ३७, ३९, ४१, ४३, ४५, ४९, ५१, ५३ तथा ५५ व्यवसाय में उन्नति कारक रहते हैं तथा ३०वां वर्ष चिन्ताजनक रहता है। वर्ष २२, ३६, ५० तथा ६० स्वास्थ्य के लिए हानिकर सिद्ध होते हैं। आयु पूर्ण है। पिता से सामान्य सुख-सहयोग प्राप्त होता है तथा परिवारी जनों से भी सामान्य सम्बन्ध ही रहते हैं।

(५६२) — इस सूर्य कुण्डली में जन्म ग्रहण करने वाला मनुष्य गौर वर्ण लम्बे कद का, स्वास्थ्य-शाली एवं दूरदर्शी होता है। वाक्पटु होने के कारण यह दूसरों को प्रभावित करने की क्षमता भी रखता है। मीठी बातें करके अपना काम निकालने में यह होशियार होता है, वैसे यह स्वभाव का हठी भी होता है। विद्या का लाभ सन्तोष जनक होता है। विवाह २३ अथवा २७ वें वर्ष में होना सम्भव है। पत्नी सुन्दरी तथा क्रोधी स्वभाव की होती है। पुत्रों द्वारा आर्थिक-लाभ के अवसर प्राप्त होते हैं तथा सन्तान-सुख उत्तम रहता है। भूमि तथा मकान का सुख उपलब्ध रहता है तथा ३० वर्ष की आयु में वाहन का सुख भी मिलता है। वर्ष २५, २७, २९, ३१, ३३, ३५, ३७, ३९, ४१, ४३, ४५, ४९, ५१, ५३ तथा ५५ में व्यवसाय की उन्नति होती है अर्थात् आर्थिक-लाभ होता है। माता-पिता से सामान्य सुख-सहयोग मिलता है। भाई-बहिन तथा परिवारी जनों से कोई विशेष सहयोग प्राप्त नहीं होता। आमदनी के स्रोत एक से अधिक बने रहते हैं।

भु० सं० ४३७

(५६३)— इस जन्मलग्न में उत्पन्न हुआ व्यक्ति सुदृढ़ शरीर, उन्नत वक्षःस्थल, मध्यम कद तथा साँवले रंग का होता है तथा स्वभाव से क्रोधी एवं साहसी प्रकृति का होता है। प्रत्येक विषम परिस्थिति को अपने अनुकूल बनालेने में सक्षम होता है तथापि आलसी-स्वभाव का होने के कारण उन्नति के अनेक अवसर भी हाथ से निकल जाते हैं। विद्या का क्षेत्र कमजोर रहता है। विवाह २१, २५ अथवा २९वें वर्ष में होता है तथा पत्नी साँवली और क्रोधी स्वभाव की मिलती है। दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहता है। सन्तान-सुख सामान्य रहता है। वर्ष २३, २७, २९, ३१, ३३, ३५, ३९, ४१, ४३, ४७, ५१, ५३ तथा ५५ व्यवसाय में उन्नति कारक तथा वर्ष ५६ एवं ६२ स्वास्थ्य के लिए चिन्ताजनक सिद्ध होते हैं। ३४ वें वर्ष में सवारी तथा भूमि का योग बनता है। आकस्मिक-लाभ के अवसर प्रायः प्राप्त होते रहेंगे। आर्थिक-स्थिति मध्यम बनी रहेगी। उदर-विकार की परेशानी रहेगी तथापि आयु पूर्ण प्राप्त होगी।

(५६४)— इस जन्मलग्न चक्र में उत्पन्न हुआ प्राणी गेहुंआ रंग का, बलिष्ठ शरीर वाला, संघर्षशील प्रकृति तथा आलसी स्वभाव का होता है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं। स्वजनों के प्रति पूर्ण रूप से ईमानदार तथा मित्रों के प्रति समर्पण की भावना से युक्त होगा। भाग्यशक्ति प्रबल होगी तथा भूमि द्वारा आर्थिक-लाभ के अनेक अवसर प्राप्त होंगे। सवारी आदि का पूर्ण सुख भी रहेगा। विद्या क्षेत्र कुछ रुकावटों के साथ मध्यम रहेगा। विवाह २५ अथवा २९ वर्ष की आयु में होना सम्भव है। पत्नी का सुख मध्यम रहेगा तथा पुत्रों द्वारा भी कोई विशेष लाभ होना सम्भव नहीं रहता। आयु का २७वां वर्ष आर्थिक-उन्नति की दृष्टि से लाभप्रद रहेगा। वर्ष २३, २७, २९, ३१, ३५, ३९, ४३, ४५, ४७, ५१ तथा ५५ व्यवसाय में उन्नति कारक सिद्ध होंगे। व्यवसाय द्वारा आर्थिक-लाभ के अनेक अवसर प्राप्त होते रहेंगे। आमदनी के अनेक स्रोत बने रहेंगे। शरीर सामान्यतः स्वस्थ बना रहेगा तथा आयु पूर्ण होगी।

कु० २०

मु० सं० ८३७

कु० २०

(५६५)- इस जन्माङ्ग चक्र में उत्पन्न मनुष्य गौरवर्ण, गोल चेहरे तथा घुँघराले बालों वाला एवं उभरे हुए वक्षःस्थल का होगा। यह साहसी, ईमानदार तथा न्याय-प्रिय भी होगा। विद्या का लाभ कुछ रुकावटों के साथ होगा। दाम्पत्य एवं सन्तान-सुख मध्यम रहेगा। वर्ष २३, २५ अथवा २७ में विवाह होना सम्भव है। आर्थिक-दृष्टि मजबूत रहेगी तथा धन का संग्रह भी पर्याप्त मात्रा में होगा। वर्ष २३, २७, २९, ३१, ३३, ३५, ३९, ४३, ४५, ४७, ५१, ५३ तथा ५५ व्यवसाय में उन्नति कारक सिद्ध होंगे। वर्ष ३४ में मकान का योग बनता है। जातक की बुद्धि अत्यन्त तीव्र होगी तथा व्यवसाय के क्षेत्र में पर्याप्त प्रगति होती रहेगी। वर्ष ३० आर्थिक दृष्टि से कुछ चिन्ता कारक रहेगा। भूमि, भवन तथा सवारी का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होगा। वर्ष १४, २६, ५० तथा ६६ स्वास्थ्य की दृष्टि से हानिकर सिद्ध होंगे। माता-पिता तथा भाई-बहिनों से सुख-सहयोग प्राप्त होता रहेगा। समाज में मान-प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी तथा पूर्णायु प्राप्त होगी।

(५६६)- इस सूर्य-कुण्डली में उत्पन्न हुआ बालक गौरवर्ण, लम्बे शरीर का, उभरे वक्षःस्थल वाला तथा घुँघराले बालों वाला होगा। साहस तथा आत्मविश्वास के बल पर कठिन-से-कठिन परिस्थितियों का सामना करने में सक्षम होगा। विवाह २१, २५ अथवा २९ वर्ष की आयु में होगा। दाम्पत्य-सुख उत्तम तथा सन्तान-सुख मध्यम रहेगा। वर्ष २३, २७, २९, ३१, ३३, ३५, ३९, ४३, ४५, ४७, ५१, ५३ तथा ५५ व्यवसाय के लिए उन्नति कारक सिद्ध होंगे। वर्ष ३० आर्थिक-दृष्टि से चिन्ताजनक रहेगा। वर्ष १४, २६, ५० तथा ६० स्वास्थ्य के लिए चिन्ताजनक रहेंगे। भूमि तथा मकान आदि के द्वारा भी आर्थिक-लाभ प्राप्त होगा। आर्थिक-दृष्टि से जीवन सशक्त बना रहेगा। भूमि तथा मकान का सुख ३४ अथवा ४६ वर्ष की आयु में मिलने की सम्भावना है। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में विशेष रुचि रहेगी तथा उसी में लाभ भी होगा। माता-पिता, भाई-बहिन आदि से सामान्य स्नेह-सम्बन्ध रहेंगे।

(५६७) – इस सूर्य-कुण्डली में उत्पन्न जातक का शरीर कुछ सुन्दर, रंग का गौरवर्ण, मध्यम कद, सुन्दर, उन्नत ललाट तथा तीखे नाक-नक्शा वाला होगा। यह स्वभाव से शान्ति-प्रिय होगा तथा अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए शनैः-शनैः अग्रसर होता रहेगा। विद्या का लाभ कुछ रुकावटों के साथ होगा। विवाह २२, २६ अथवा ३० वर्ष की आयु में होना सम्भव है। स्त्री सुन्दरी, सुशीला तथा गुणवती होगी। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहेगा। सन्तान-सुख भी अच्छा प्राप्त होगा। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय को पसन्द करेगा। वर्ष २२, २६, २८, ३०, ३२, ३५, ४०, ४२, ४४, ४६, ५२ तथा ५४ आर्थिक-उन्नति कारक सिद्ध होंगे। ३१वाँ वर्ष आर्थिक-कष्ट कारक रहेगा। भाइयों से पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा तथा माता-पिता का सामान्य सुख-सहयोग मिलेगा। हवाई किले बनाना इसकी प्रकृति में होगा, परन्तु योजनाओं में सफलता भी प्राप्त होगी। भावुक होने के कारण कठोरता पूर्ण कार्यों से विरक्ति रहेगी। आर्थिक-स्थिति मजबूत रहेगी। अन्तिम समय में हृदय-रोग की सम्भावना है।

(५६८) – इस सूर्य-कुण्डली में जन्म लेने वाला मनुष्य दुबले शरीर का, नाटा कद, गौरवर्ण तथा मृदुभाषी होगा। राजनीतिक-क्षेत्र में इसे विशेष सफलता प्राप्त होगी। न्याय तथा ईमानदारी का पालन करेगा तथा अपने परिश्रम द्वारा आर्थिक-स्थिति को मजबूत बनायेगा। विद्याध्ययन में कुछ रुकावटों के साथ सफलता प्राप्त होगी। पैतृक-सम्पत्ति का श्रेष्ठ लाभ होगा। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी के क्षेत्र में अधिक सफल रहेगा तथा पदोन्नतियाँ प्राप्त करता चला जायेगा। विवाह २२, २६ अथवा ३० वर्ष की आयु में होना सम्भव है। दाम्पत्य-सुख सामान्यतः उत्तम रहेगा परन्तु पत्नी के साथ एकात्मता नहीं रहेगी। दोनों के विचारों में भिन्नता बनी रहेगी। सन्तान का सुख मध्यम रहेगा। बाल्यावस्था में आर्थिक-कठिनाइयाँ रहेंगी। युवावस्था से भाग्योन्नति होगी। वर्ष २६, २८, ३०, ३२, ३५, ४०, ४२, ४४, ४६, ५० तथा ५२ व्यवसाय में उन्नति कारक सिद्ध होंगे। २७वें वर्ष में चोट लगने की सम्भावना रहेगी। बुद्धि तीव्र होगी तथा धर्म का श्रद्धा बनी रहेगी।

(५६९)- इस जन्मलग्न में उत्पन्न हुआ बालक स्थूल शरीर, नाटे कद का, साँवले रंग का, क्रोधी, ईर्ष्यालु तथा बदले की भावना रखने वाला होगा। कायरता, आलस्य तथा दूसरों को धोखा देने की प्रवृत्ति इसमें अधिक पाई जायेगी। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहेगी। रोज़गार के प्रति यह चिन्तित बना रहेगा, परन्तु आकस्मिक-लाभ के अवसर प्राप्त होते रहेंगे। विद्याध्ययन रुकावटों के साथ पूरा होगा। विवाह २७ अथवा ३१ वर्ष की आयु में होना सम्भव है। स्त्री साँवले रंग की तथा क्रोधी स्वभाव की होगी। दाम्पत्य सुख मध्यम रहेगा। सन्तान-सुख अच्छा होगा तथा पुत्रों द्वारा आर्थिक-लाभ भी होगा। ३१ वां वर्ष स्त्री के लिए कष्टकारक तथा ३२ एवं ६३ वें वर्ष स्वयं के स्वास्थ्य के लिए चिन्ताजनक होंगे। वर्ष २३, २५, ३१, ३३, ३७, ४३, ४५, ४९, ५५ तथा ५७ व्यवसाय के लिए उन्नति कारक सिद्ध होंगे। वर्ष २८ आर्थिक-दृष्टि से चिन्ताजनक रहेगा। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी में अधिक लाभ होगा। आकस्मिक-लाभ के अवसर भी मिलेंगे।

(५७०)- इस जन्मांग चक्र में उत्पन्न हुआ मनुष्य गौर वर्ण, लम्बे कद का तथा शान्ति-प्रिय होगा। न्याय, दया तथा ईमानदारी के प्रति इसका विशेष झुकाव रहेगा। व्यवसाय के क्षेत्र में इसकी बुद्धि अत्यन्त तीव्र होगी। परिश्रम तथा दूरदर्शिता इसका विशिष्ट गुण होगा। विद्या-क्षेत्र मजबूत रहेगा तथा सन्तान-सुख भी अच्छा मिलेगा। विवाह २३ अथवा २७ वर्ष की आयु में होना सम्भव है। पत्नी सुन्दरी, सुशील, परन्तु कुछ हठी स्वभाव की होगी तथापि दाम्पत्य-जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा। भाग्य प्रायः साथ देता रहेगा, अतः आर्थिक-स्थिति मजबूत बनी रहेगी। भूमि तथा मकान आदि का सुख विशेष रूप से उपलब्ध होगा। एक से अधिक मकान होने भी सम्भव हैं। वर्ष २३, २५, २९, ३१, ३३, ३५, ३७, ३९, ४३, ४५, ४७, ४९, ५१ तथा ५५ व्यवसाय अथवा आर्थिक-क्षेत्र में उन्नति कारक सिद्ध होंगे। वर्ष ५४ तथा ६२ स्वास्थ्य के लिए चिन्ता कारक रहेंगे। बुद्धि द्वारा धन-लाभ के अनेक अवसर प्राप्त होते रहेंगे।

(५७१) - इस जन्म कुण्डली में जन्म लेने वाला मनुष्य हल्के साँवले रंग का, स्थूल-शरीर, गंभीर तथा क्रोधी स्वभाव वाला, साहसी तथा अत्यन्त परिश्रमी होगा। विद्रोह की भावना इसके भीतर अधिक मात्रा में छिपी रहेगी। ऐसे व्यक्ति अवसरवादी भी होते हैं, जो समय पड़ने पर पाँव भी छू लें तथा काम निकल जाने पर आँखें दिखाना आरम्भ कर दें। ये लोग मित्रता-स्थापित करने में सिद्धहस्त होते हैं तथा चाहे जब तोते की भाँति आँखें बदल लेते हैं। विद्या का लाभ कुछ रुकावटों के साथ होता है। विवाह २२, २४ अथवा २८ वें वर्ष में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुशिक्षिता मिलती है। दाम्पत्य-सुख अच्छा रहता है। सन्तान-सुख यथेष्ट मात्रा में उपलब्ध होता है। कन्या की अपेक्षा पुत्रों की संख्या अधिक होती है। वर्ष २२, २६, २८, ३०, ३२, ३४, ३८, ४२, ४४, ४६, ५०, ५४ तथा ५६ आर्थिक-दृष्टि से उन्नति कारक होते हैं तथा बाल्यावस्था स्वास्थ्य के संबंध में चिन्ताजनक रहती है। आर्थिक-स्थिति मजबूत रहती है। मकान का भाइयों का सुख सहयोग मिलता है।

(५७२) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न बालक साँवले रंग का, स्थूल-शरीर, साहसी, परिश्रमी तथा विनोदी स्वभाव का होता है। धैर्य तथा साहस के बल पर कठिनतम परिस्थितियों का सामना करने में सक्षम रहता है। यह स्वभावतः विद्रोही भी होता है तथा कटुभाषी भी रहता है। विवाह २३, २७ अथवा ३० वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है एवं दाम्पत्य-सुख उत्तम प्राप्त होता है। सन्तान-सुख भी अच्छा रहता है तथा पुत्रों द्वारा लाभ प्राप्त होता है। विद्याध्ययन में भी सफलता प्राप्त होती है। जीवन के २५, २९, ३१, ३३, ३७, ३९, ४१, ४३, ४५, ४९, ५१, ५३, ५५ तथा ५६ वें वर्ष आर्थिक-लाभप्रद सिद्ध होते हैं। आर्थिक-स्थिति मजबूत बनी रहती है तथा आकस्मिक-लाभ के अनेक अवसर उपलब्ध होते रहते हैं। बाल्यावस्था स्वास्थ्य के प्रति अनुकूल नहीं रहती। भूमि-मकान आदि का सुख प्राप्त होता है। पराक्रम कार्यों का कष्ट भी होता है तथा दूसरों की बातों पर विश्वास कर हानि भी उठाता है।

(५०३)- इस जन्माङ्ग चक्र में उत्पत्ति ग्रहण करने वाला मनुष्य गौरवर्ण, इकहरे शरीर का, शीघ्र स्वभाव वाला, आलसी तथा शान्ति-प्रिय होता है। परन्तु अवसर से लाभ उठाना इसकी विशेषता रहती है। विद्या का योग अच्छा बनता है। विवाह २४ अथवा २८ वें वर्ष में होता है। स्त्री साँवली तथा क्रोधी स्वभाव की होती है, अतः दाम्पत्य-सुख कुछ पूर्ण बना रहता है। पुत्र-सुख तथा सन्तान से सहयोग की प्राप्ति होती है। वर्ष २२, २४, २६, ३०, ३२, ३४, ३६, ३८, ४२, ४४, ४६, ५०, ५४ तथा ५६ व्यवसाय के लिए उन्नति कारक सिद्ध होते हैं। ३० वाँ वर्ष आर्थिक-दृष्टि से चिन्ताकारक रहता है। सामान्यतः आर्थिक-स्थिति उत्तम रहती है, परन्तु खर्चे बढ़े-चढ़े रहने के कारण धन का संचय अधिक नहीं हो पाता। भूमि-मकान आदि के लाभ के साथ ही उसके बिक जाने का योग भी बनता है। पैतृक-सम्पत्ति को भी जातक द्वारा हानि पहुँचती है। ५९ वाँ वर्ष निजी स्वास्थ्य के लिए विशेष चिन्ताजनक रहता है। सामान्यतः जीवन सुख से बीतता है।

(५०४)- इस जन्मकुण्डली वाला जातक गौरवर्ण, लम्बे शरीर का, शान्ति-प्रिय तथा आलसी स्वभाव का होता है। दुःखी आदमी की सहायता करना तथा छोटे एवं बराबरी के लोगों के साथ सज्जनता एवं सहृदयता का व्यवहार करना इसके स्वभाव में होता है। विद्या का श्रेष्ठ लाभ होता है। विवाह २२, २४ अथवा २८ वें वर्ष में होता है। पत्नी सुशील तथा मनोनुकूला मिलती है, फलतः दाम्पत्य-सुख अच्छा रहता है। सन्तान-सुख भी यथेष्ट प्राप्त होता है। भूमि, भवन तथा सवारी के सुख के अतिरिक्त पैतृक-सम्पत्ति का भी श्रेष्ठ लाभ मिलता है। पुत्रों द्वारा पूर्ण सहयोग एवं सुख प्राप्त होता है। वर्ष २२, २४, २६, ३०, ३२, ३४, ३६, ३८, ४२, ४४, ४६, ५०, ५४ तथा ५८ व्यवसाय में उन्नति कारक सिद्ध होते हैं। वर्ष २९ तथा ५९ व्यवसाय एवं स्वास्थ्य-दोनों के लिए हानिकर सिद्ध होते हैं। आय के एक से अधिक स्रोत होने के कारण आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है तथा जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होता है।

(५७५) – इस सूर्य-कुण्डली में जन्मा हुआ मनुष्य गौर वर्ण, लम्बे शरीर का, हृष्ट-पुष्ट, शान्ति-प्रिय तथा रहस्यमय स्वभाव वाला होता है। सहानुभूति की मात्रा इसमें अधिक पाई जाती है। आत्मविश्वास की भी न्यूनता रहती है। भाइयों की अपेक्षा बहिनों की संख्या अधिक होती है। विद्या-क्षेत्र सम्पुन्नत रहता है। विवाह २१ से २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुशिक्षिता होती है। दाम्पत्य-सुख तथा सन्तान-सुख उत्तम रहते हैं। सन्तान से सहयोग तथा अन्य लाभ भी मिलते हैं। वातावरण तथा व्यक्ति को पहिचानने तथा उसके अनुरूप आचरण करने की इसमें विशेष क्षमता होती है। पुत्रों की अपेक्षा कन्याएं अधिक होती हैं। वर्ष २३, २५, २८, २९, ३१, ३३, ३८, ३९, ४३, ४५, ४९, ५१ तथा ५५ आर्थिक उन्नति कारक सिद्ध होते हैं। भूमि, भवन तथा सवारी का सुख प्राप्त होता है। पैतृक-सम्पत्ति का लाभ भी होता है। एक से अधिक स्रोत आमदनी के होते हैं, अतः आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। आयु पूर्ण।

(५७६) – इस सूर्य-कुण्डली में उत्पन्न बालक गौर वर्ण, लम्बे तथा बलिष्ठ शरीर वाला एवं क्रोधी स्वभाव का होता है। थोड़े से लेकर में घबरा जाना इसका स्वाभाविक लक्षण है। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में अधिक सफलता मिलती है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होने के कारण आर्थिक-स्थिति उत्तम बनी रहती है। विवाह २३, २५ अथवा २९ वें वर्ष में होता है। पत्नी मनोऽनुकूला मिलती है। सन्तानों में कन्याओं की संख्या अधिक होती है। वर्ष २३, २५, २८, २९, ३१, ३३, ३५, ३८, ३९, ४३, ४५, ४९, ५१, ५३, ५५, ५८ तथा ६१ व्यवसाय में उन्नति कारक सिद्ध होते हैं। वर्ष १२, १९ तथा ६० स्वास्थ्य के लिए हानिकर रहते हैं। भाइयों से कोई लाभ अथवा सहयोग नहीं मिलता। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय से अधिक लाभ होता है। आर्थिक-स्थिति मजबूत बनी रहने के साथ ही भूमि, भवन, वाहन आदि का भी पूर्ण सुख प्राप्त होता है। भाई-बहिनों से सामान्य स्नेह-सम्बन्ध रहते हैं तथा जीवन सुखपूर्वक बीतता है।

(५७७) — इस सूर्य-कुण्डली वाला जातक हल्के साँवले रंग, मध्यम कद का तथा दुबल शरीर वाला होता है। विद्या तथा बुद्धि में प्रवीण होता है। यह व्यक्ति तथा वातावरण को पहिचानने वाला तथा समयानुकूल स्वयं को ढाल लेने में कुशल होता है। विवाह २३,२५,२७ अथवा २९ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशिक्षिता तथा मनोनुकूला मिलने से दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। पुत्र की अपेक्षा कन्याओं की संख्या अधिक होती है। वर्ष २३,२५,२७, ३१, ३३, ३५, ३७, ३९, ४१, ४३, ४५, ४७, ५१, ५३, ५५, ५७, ५९ तथा ६१ व्यवसाय के लिए उन्नति कारक होते हैं। व्यावसायिक-कार्यों में विशेष रुचि रहती है तथा उससे आर्थिक-उन्नति होता है। भूमि, भवन, वाहनादि का पूर्ण सुख प्राप्त होता है तथा माता-पिता से भी आर्थिक-लाभ होता रहता है। आकस्मिक-लाभ के अवसर भी प्राप्त होते रहते हैं। माता-पिता तथा भाई-बहिनों से स्नेहपूर्ण सम्बन्ध बने रहते हैं तथा शारीरिक-स्वास्थ्य भी उत्तम बना रहता है। आयु पूर्ण तथा दीर्घ प्राप्त होती है।

(५७८) — इस सूर्य-कुण्डली में जन्म ग्रहण करने वाला मनुष्य गौरवर्ण, लम्बे कद का तथा कान्तियुक्त होता है। स्नेह, सौजन्य एवं मधुरभाषण आदि सद्गुण अधिक मात्रा में पाये जाते हैं। विद्याध्ययन में रुकावटों के साथ सफलता प्राप्त होती है। विवाह २२,२४ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है तथा पत्नी सुन्दरी, सुशिक्षिता एवं गुणवती मिलती है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है, परन्तु पुत्र की ओर से चिन्ता बनी रहती है। यह दूसरों की सहायता करने वाला तथा अत्यधिक स्वाभिमानी होता है, अतः अधिकारी वर्ग से पटरी नहीं बैठ पाती। व्यवसाय द्वारा आर्थिक-उन्नति करता है। भाइयों से पूर्ण सहयोग प्राप्त होता है। वर्ष २२,२४, २८, ३०, ३२, ३४, ३६, ३८, ४४, ४६, ४८, ५०, ५४ तथा ५६ व्यवसाय में उन्नति कारक सिद्ध होते हैं। वायु सम्बन्धी विकार होना सम्भव है तथापि आयु दीर्घ होती है। आर्थिक-क्षेत्र में परिश्रम द्वारा निरन्तर सफलताएँ मिलती रहती हैं। समाज सेवा में भी यह अग्रणी बना रहता है।

(५७९) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न जातक गेहुँए रंग, मध्यम कद वाला, मृदुभाषी तथा मिलना स्थापित करने में कुशल होता है। इसका वार्तालाप अत्यन्त मधुर तथा आनन्ददायक होता है। मित्रों के सहयोग से उन्नति भी प्राप्त करता है। शक्की तथा वहमी स्वभाव का होने के कारण यह किसी पर सहसा विश्वास नहीं करता। परन्तु अड़चनें डालने वाले तथा शत्रुता रखने वालों को यह अच्छा सबक सिखाता है। विद्याध्ययन में कुछ रुकावटें आती हैं। विवाह २२, २४ अथवा २६ वें वर्ष में होता है। पत्नी साँवले रंग की तथा क्रोधी स्वभाव की होती है। सन्तान-सुख अच्छा रहता है। स्त्री सुन्दरी तथा पतिपरायण होती है, अतः दाम्पत्य-सुख में कमी नहीं रहती। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं अतः आर्थिक-स्थिति मजबूत बनी रहती है। वर्ष २२, २४, २८, ३०, ३२, ३४, ३६, ३८, ४४, ४६, ४८, ५०, ५४ तथा ५६ व्यवसाय में उन्नतिप्रद रहते हैं। ६१ वाँ वर्ष स्वास्थ्य के लिए खराब सिद्ध होता है। भूमि, भवन तथा वाहनादि का लाभ मिलता है।

(५८०) - इस जन्मकुण्डली में जन्म ग्रहण करने वाला मनुष्य गौर वर्ण, सुन्दर, मध्यम कद तथा पतले शरीर का होता है। यह दूसरों के प्रति सहानुभूति पूर्ण एवं परोपकार की भावना रखने वाला होता है। विद्या का लाभ यथेष्ट होता है। विवाह २३, २५ अथवा २७ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री सुन्दरी, सुशीला तथा शान्त-स्वभाव की होती है, फलतः दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। सन्तान-सुख भी अच्छा प्राप्त होता है। यह सामाजिक नियमों तथा परम्पराओं का कठोरता पूर्वक पालन करता है तथा ईश्वर के प्रति अगाध विश्वास रखता है। रहन-सहन ऐश्वर्य पूर्ण होता है, अतः व्यय की अधिकता के कारण अधिक धन का संचय नहीं कर पाता, तथापि आर्थिक-स्थिति सन्तोषजनक बनी रहती है। वर्ष २२, २५, २७, २९, ३३, ३७, ३९, ४१, ४५, ४९, ५१, ५३ तथा ५७ व्यवसाय तथा आर्थिक उन्नति करने वाले होते हैं। वर्ष २४ आर्थिक-दृष्टि से कष्टकर रहता है। जीवन में मकान आदि बनाने के अवसर भी आते हैं। वर्ष ५६ तथा ६६ स्वास्थ्य लाभ कराते हैं।

भु० सं० ११३ कु० २०

(५८१) – इस सूर्य कुण्डली में उत्पन्न प्राणी गौरवर्ण, मध्यम कद, सुन्दर, तीखे नाक-नक्श वाला, मछली जैसी आँखों वाला तथा आत्मविश्वास का धनी होता है। विद्या का उत्तम लाभ प्राप्त करता है। विवाह २३, २५ अथवा २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है, अत: दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहता है। सन्तान का भी पूर्ण सुख प्राप्त होता है। यह धैर्य, साहस तथा परिश्रम के बल पर निरन्तर उन्नति करता जाता है। माता का सुख कम रहता है। भूमि तथा मकान के विषय में भी चिन्ता बनी रहती है। वर्ष २३, २५, २७, २९, ३३, ३७, ३९, ४१, ४५, ४९, ५१, ५३ तथा ५५ वें वर्ष व्यवसाय में उन्नति कारक रहते हैं। २४ वाँ वर्ष आर्थिक-हानि से चिन्ताकारक होता है तथा २८ वें वर्ष से भाग्योन्नति होती है। वर्ष १२, ५६ तथा ६२ स्वास्थ्य के लिए चिन्ताजनक सिद्ध होते हैं। फेफड़े तथा दिल से संबंधित रोग होना सम्भव है। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी अधिक लाभदायक रहती है। परिवारी जनों से मिश्र तथा सामान्य रहते हैं।

(५८२) – इस जन्मकुण्डली चक्र वाला जातक हल्के साँवले रंग का, लम्बे कदवाला, स्थूल-शरीर तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। यह स्वतन्त्र निर्णय लेने में समर्थ तथा कठिनतम परिस्थितियों में भी स्वयं पर नियंत्रण रखते हुए उन्हें अपने अनुकूल बना लेने में सक्षम होता है। साहित्यिक कार्यों में इसकी विशेष रुचि रहती है। विद्या मध्यम प्राप्त होती है। विवाह २०, २४ अथवा २६ वें वर्ष में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुशिक्षित होती है, अत: दाम्पत्य-जीवन सुखमय बना रहता है। संतान का सुख भी यथेष्ट रहता है। कन्या सन्तानें कम तथा पुत्र सन्तानें अधिक होती हैं। आमदनी के स्रोत एक से अधिक रहते हैं, अत: आर्थिक-स्थिति मजबूत बनी रहती है। झगड़े-झंझट तथा मुकदमे बाजी में जातक को आनन्द आता है। जीवन में एक से अधिक स्त्रियों से सम्बन्ध रखता है। वर्ष २२, २४, २६, ३०, ३४, ३८, ४२, ४६ तथा ५० व्यवसाय में उन्नति कारक तथा आर्थिक-समृद्धि दाता सिद्ध होते हैं।

(५८३)- इस सूर्य कुण्डली वाला मनुष्य साँवले रंग का, साहसी, परिश्रमी तथा कुछ झगड़ालू स्वभाव का होता है। विद्या का श्रेष्ठ लाभ होता है। विवाह २३, २५ अथवा २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, सुशीला, सुशिक्षिता तथा पति-परायणा होती है, फलतः दाम्पत्य-सुख की अभिवृद्धि होती रहती है। पत्नी के अतिरिक्त अन्य अनेक स्त्रियों से भी जातक का सम्बन्ध रहता है। सन्तान-सुख उत्तम रहता है तथा पुत्रों से लाभ प्राप्त होता है। निजी भूमि-मकान आदि का योग बनता है। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है। वर्ष २४ तथा ३६ व्यवसाय में चिन्ताजनक सिद्ध होते हैं तथा वर्ष २१, २२, २५, २७, २९, ३१, ३३, ३५, ३७, ४१, ४५, ४७, ४९, ५३, ५५, ५९ तथा ६१ व्यवसाय के लिए उन्नति कारक होते हैं। वर्ष ३०, ५८ तथा ६२ स्वास्थ्य की दृष्टि से चिन्ताजनक रहते हैं। २५ वें वर्ष में सन्तान-सुख उपलब्ध होता है। जीवन में आकस्मिक-लाभ के अनेक अवसर प्राप्त होते हैं। माता-पिता का सामान्य सुख रहता है।

(५८४)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न बालक गौरवर्ण, उन्नत ललाट, लम्बे शरीर का तथा साहसी प्रकृति वाला होता है। झगड़ा-टण्टा करने में इसे आनन्द आता है। दूरदर्शी तथा परिश्रमी होना इसका विशेष गुण रहता है। विद्या के क्षेत्र में अच्छी उन्नति होती है। विवाह २३, २५ अथवा २७ वर्ष की आयु में होता होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मृदुभाषिणी होती है। वर्ष २५ तथा २९ में पुत्र सन्तान का लाभ होता है। यह अपने पराक्रम द्वारा आर्थिक-उन्नति करता है। वर्ष २१, २३, २५, २७, २९, ३१, ३३, ३५, ३७, ४१, ४३, ४५, ४७, ४९, ५३, ५७ तथा ५९ व्यवसाय के लिए उन्नति कारक सिद्ध होते हैं। वर्ष २४ तथा ३६ आर्थिक-चिन्ता उत्पन्न करते हैं। संतान-पक्ष से लाभ होता है। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी से भी लाभ होता है। आकस्मिक-लाभ के भी अवसर प्राप्त होते रहते हैं। माता-पिता तथा भाई-बहिनों से सम्बन्ध सामान्य रहते हैं। धार्मिक क्षेत्र में रुचि रहती है, परन्तु कर्म को प्रधानता देता है।

(५८५) - इस जन्म कुण्डली में जन्म लेने वाला मनुष्य कुछ लम्बे शरीर का, गौर वर्ण तथा अत्यन्त साहसी होता है। आत्मविश्वास तथा परिश्रम इसका विशेष गुण होता है। विवाह २३, २५ अथवा २७ वें वर्ष में होता है। स्त्री सुन्दरी, सुशीला, सुशिक्षिता तथा गुणवती होती है, फलतः दाम्पत्य-सुख श्रेष्ठ बना रहता है। सन्तान-सुख भी अच्छा रहता है तथा पुत्रों की संख्या अधिक होती है। रहन-सहन का खर्च बढ़ा-चढ़ा रहने के कारण आर्थिक-स्थिति कमजोर बनी रहती है, तथापि ४० वर्ष की आयु में भूमि-भवन आदि का सुख प्राप्त होता है। पशु-पालन का शौकीन होता है। वर्ष २३ में भाग्योदय होता है। वर्ष २३, २५, २७, २९, ३१, ३३, ३५, ३७, ४२, ४५, ४७, ४९, ५३, ५७ तथा ५९ व्यवसाय-वृद्धि में सहायक होते हैं। वर्ष १४, ३०, ५६ तथा ६६ स्वास्थ्य के लिए चिन्ताजनक रहते हैं। फेफड़ों से सम्बंधित रोग संभव है। आयु मध्यम रहती है। झगड़ालू-स्वभाव होने के कारण अधिकारियों से पटरी नहीं बैठती।

(५८६) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य कुछ लम्बाई लिए मध्यम कद का, हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला, कर्मठ तथा घमण्डी स्वभाव का होता है। विद्या का क्षेत्र मजबूत रहता है। विवाह २४, २६ अथवा २८ वें वर्ष में होता है। दाम्पत्य-सुख सामान्य रहता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला प्राप्त होती है। बुद्धि अत्यन्त तीव्र होती है। वर्ष २४, २६, २८, ३०, ३२, ३६, ३८, ४०, ४२, ४४, ४८, ५०, ५२, ५४ तथा ५६ व्यवसाय के लिए उन्नतिकारक तथा धनदायक सिद्ध होते हैं। आर्थिक-स्थिति जीवन उन्नतिशील बना रहता है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं। २४ वाँ वर्ष व्यवसाय के लिए वृद्धिकारक होता है। निजी भूमि तथा मकान का सुख भी प्राप्त होता है। ४० वां वर्ष भूमि-सुख के लिए उन्नतिकारक होता है। सामान्यतः जातक व्यावहारिक होता है, तथापि कभी-कभी आपे से बाहर होकर अशिष्टता का परिचय भी दे उठता है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक बने रहते हैं।

भु० सं० ३७७

(५८७) – इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य गेहुँए रंग का, हृष्ट-पुष्ट डील-डौल वाला, स्वस्थ, परन्तु और- स्वभाव का होता है। इसमें आत्मविश्वास की अधिकता पाई जाती है, अतः विपरीत-परिस्थितियों में भी यह अपने आप पर नियन्त्रण रखने में सक्षम होता है एवं लक्ष्य की ओर दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ता जाता है। परन्तु आलसी होने के कारण उन्नति के अनेक अवसरों से वंचित भी रह जाता है। विद्या की दृष्टि से श्रेष्ठ उन्नति होती है। विवाह २४, २६ तथा वर्ष की आयु में होता है। एक से अधिक विवाह होने भी सम्भव हैं। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होने के कारण आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। वर्ष २४, २६, २८, ३०, ३२, ३४, ३६, ३८, ४०, ४२, ४४, ४८, ५०, ५४ तथा ५६ व्यवसाय के लिए उन्नतिकारक सिद्ध होते हैं। वर्ष ३३, ५७ तथा ६३ स्वास्थ्य के लिए चिन्ताजनक रहते हैं। भाइयों से चिन्ता बनी रहती है तथा सन्तानों से सुख प्राप्त होता है। पुत्रियां अधिक होती हैं। माता-पिता से साधारण सम्बन्ध रहते हैं। कु० २०

(५८८) – इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न बालक गौर-वर्ण, इकहरे तथा लम्बे शरीर का एवं क्रोधी स्वभाव का होता है। यह अत्यधिक परिश्रमी तथा साहसी भी होता है तथा उन्नति की योजनायें बनाकर उन पर लगन पूर्वक कार्य करने में सक्षम होता है। आर्थिक-स्थिति अच्छी रहती है, तथापि व्यय की अधिकता से अर्थ-संचय में कमी रहती है। विवाह २१, २७, २६ अथवा २९ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य-जीवन सफल रहता है तथा सन्तान-सुख भी अच्छा प्राप्त होता है। पुत्रों की अपेक्षा कन्याओं की संख्या अधिक होती है। वर्ष २३, २५, २७, २९, ३१, ३५, ३७, ३९, ४१, ४३, ४७, ४९, ५१, ५३, ५५ तथा ५९ व्यवसाय में उन्नतिकारक सिद्ध होते हैं। वर्ष २२, ३४ तथा ५८ स्वास्थ्य के विषय में कष्टकारक सिद्ध होते हैं। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में अधिक सफलता मिलती है। कटु-शब्दावली का प्रयोग करने के कारण जातक के मित्रों की संख्या कम होती है तो भी जीवन सुख से बीतता है।

(५८९) - इस जन्माङ्ग चक्र में उत्पन्न हुआ मनुष्य साँवले रंग तथा नाटे कद का एवं क्रोधी-स्वभाव का होता है। इसका व्यक्तित्व सम्मोहक होता है। परन्तु किंचित् नेत्र-विकारी या नेत्ररोगी भी होता है। यह अपनी मधुरवाणी द्वारा अपरिचित व्यक्ति को भी प्रभावित कर लेता है। राजनीति में पटु होता है तथा समय आने पर शत्रु को भी मात सिद्ध कर सकता है। विद्या का योग अच्छा रहता है। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय करना पसन्द करता है। इसका विवाह २१, २५ अथवा २७वें वर्ष में होता है। पत्नी साँवली तथा क्रोधी-स्वभाव की होती है। दाम्पत्य-सुख मध्यम रहता है। पुत्र की अपेक्षा कन्या से लाभान्वित होता है। वर्ष २३, २५, २७, २९, ३१, ३५, ३७, ३९, ४१, ४३, ४७, ४९, ५१, ५३ तथा ५५ व्यवसाय के लिए उन्नति कारक सिद्ध होते हैं। वर्ष ५८ तथा ६४ स्वास्थ्य के लिए खराब सिद्ध होते हैं। वर्ष ३० तथा ५६ में धन तथा व्यवसाय सम्बन्धी चिन्ता रहती है। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है। भूमि, भवन तथा वाहन का सुख प्राप्त होता है। सामान्यतः सुखी जीवन व्यतीत करता है।

(५९०) - इस सूर्य-कुण्डली वाला जातक साँवले रंग का, नेत्र-रोगी, साहसी तथा पराक्रमी होता है। यह साहस के बल पर कठिन-से-कठिन काम को भी पूरा कर दिखाता है। शिक्षा-प्राप्ति के लिए इसे बड़ी परेशानी उठानी पड़ती है, परन्तु व्यावसायिक-क्षेत्र में इसकी बुद्धि काफी तीव्र होती है। विपरीत-लिङ्ग के प्रति इसका विशेष आकर्षण होता है। विवाह २१, २५ तथा २७ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य-सुख सामान्य रहता है। सन्तान-पक्ष से भी सामान्य-सुख प्राप्त होता है। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी में यह धीरे-धीरे उन्नति करता है। वर्ष २३, २५, २७, २९, ३१, ३५, ३७, ३९, ४१, ४३, ४७, ४९, ५१ तथा ५३ आर्थिक-दृष्टि से लाभप्रद तथा वर्ष ३२ एवं ५६ हानिप्रद सिद्ध होते हैं। ३०वें वर्ष में इसे सवारी का सुख प्राप्त होता है। जिस कार्य को यह जोश में अत्यन्त उत्साह से शुरू करता है, उसी में बाद को शिथिल पड़ जाने के कारण हानि उठानी पड़ती है। शत्रु को पराजित करने में पटु होता है। जीवन सामान्य रहता है।

<u>(५८१)</u> – इस जन्म कुण्डली का स्वामी बालक गौर वर्ण, लम्बे कद का, उन्नत ललाट तथा क्रोधी प्रकृति का होता है, तथापि इसके चेहरे पर मुस्कान खेलती रहती है। सहिष्णुता इसका विशेष गुण होती है। विद्या के क्षेत्र में कुछ रुकावटें आती रहती हैं। विवाह का योग २२, २६ अथवा २८ वें वर्ष में बनता है। दाम्पत्य-सुख सामान्यतः अच्छा होता है, तथापि पत्नी की ओर से चिन्ता बनी रहती है। पुत्र कई होते हैं, परन्तु उनकी ओर से भी जातक चिन्तित बना रहता है। यह भाग्य के बल पर उन्नति करता है। जीवन के २४, २६, २८, ३०, ३२, ३६, ३८, ४०, ४२, ४४, ४८, ५०, ५४ तथा ५६ वें वर्ष उन्नतिकारक होते हैं। धर्म के प्रति विशेष रुचि रखते हुए भी, सामाजिक रूढ़ियों पर कोई आस्था नहीं होती। कभी-कभी भावना के आवेश में यह अपना अहित भी कर बैठता है। किसी भूमि-मकान आदि का योग बनता है तथा सवारी का सुख भी मिलता है। पेट से सम्बन्धित बीमारी बनी रहती है। आर्थिक-स्थिति मध्यम होती है।

<u>(५८२)</u> – इस लग्न कुण्डली में उत्पन्न जातक गौर वर्ण, लम्बे कद का, कोमल, मधुर, सुन्दर, सहिष्णु, विनम्र, भावुक तथा शान्त स्वभाव का होता है। यह न्याय तथा सत्य-प्रिय एवं ईमानदार भी होता है। भावनाओं के आवेग में यह अपना सर्वस्व खो भी सकता है। शारीरिक-श्रम की अपेक्षा मानसिक श्रम पर अधिक आस्था रखता है तथा उसी से लाभ उठाता है। आर्थिक-दृष्टि से इसका जीवन उन्नतिशील बना रहता है तथा आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं। विद्याध्ययन में कुछ रुकावटें आती रहती हैं। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में अधिक सफलता मिलती है। विवाह २८ वर्ष की आयु में होना संभव है। पत्नी के प्रति चिन्ता बनी रहेगी। जीवन के २४, २६, २८, ३०, ३२, ३६, ३८, ४०, ४२, ४४, ४८, ५०, ५२, ५४ तथा ५६ वें वर्ष व्यवसाय में उन्नतिकारक रहेंगे। आमदनी के स्रोत एक से अधिक रहेंगे, अतः आर्थिक-स्थिति उत्तम बनी रहेगी। सन्तान से सामान्य-सुख प्राप्त होगा।

(५९३) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न हुआ प्राणी कुछ लम्बाई लिये मध्यम कद का, सांवले रंग का तथा साहसी प्रकृति का होता है। यह क्रोध के आवेश में गहरी से गहरी मित्रता को भी तुरन्त खो देता है, तथापि विपरीत परिस्थिति को भी अपने अनुकूल बना लेता है। विवाह २३, २७ अथवा २९ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य-सुख मध्यम रहता है तथा स्त्री के विषय में असमानता भाव रखता है। सन्तान से जातक को कोई विशेष लाभ नहीं होता। विद्या अपूर्ण रहती है तथा विद्याध्ययन में रुकावटें भी आती हैं। वर्ष २१ तथा २५ भाग्योदय कारक होते हैं। वर्ष २७ पुत्र के लिए सहयोग कारक होता है। वर्ष २५, २९, ३१, ३३, ३७, ४१, ४३, ४५, ४९, ५३, ५५, ५९ तथा ६१ व्यावसायिक उन्नति के लिए श्रेष्ठ सिद्ध होते हैं। वर्ष २८ आर्थिक-दृष्टि से चिन्ता-कारक रहता है। वर्ष ६० तथा ६६ स्वास्थ्य के प्रति चिन्ता जनक सिद्ध होते हैं। आर्थिक-स्थिति कमजोर रहती है तथा ऋण-ग्रस्तता के अवसर भी आते रहते हैं। व्यापार में कम सफलता मिलती है। वायु-विकार रहता है।

(५९४)- इस जन्मकुण्डली में पैदा होने वाला बालक गौर वर्ण, स्थूल-शरीर, हृष्ट-पुष्ट, साहसी, परिश्रमी तथा सुन्दर व्यक्तित्व वाला होता है। विवाह २३, २७ अथवा २९ वर्ष की आयु में होता है, परन्तु दाम्पत्य-जीवन कष्टप्रद बना रहता है। विद्या का श्रेष्ठ लाभ होता है, परन्तु सन्तान से अधिक लाभ या सहायता मिलने की सम्भावना नहीं रहती। प्रत्येक आर्थिक-योजना में आरम्भ से अन्त तक कठिनाइयाँ आती रहती हैं। स्त्री से विचारों की एकरूपता नहीं रहती। आकस्मिक-लाभ के अवसर प्राप्त होते रहते हैं। २५ वां वर्ष भाग्योदय कारक होता है। वर्ष २५, २७, २९, ३१, ३३, ३७, ३९, ४१, ४३, ४३, ४९, ५१, ५३ तथा ५७ व्यवसाय एवं आर्थिक-स्थिति में उन्नति कारक होते हैं। वर्ष २४, ३६ तथा ६० स्वास्थ्य के लिए हानिकर सिद्ध होते हैं। आमदनी के स्रोत एक से अधिक रहने के कारण आर्थिक-स्थिति सन्तोषजनक बनी रहती है। भूमि तथा भवन का लाभ भी प्राप्त होता है। उदर-विकार होना भी सम्भव है।

(५९५) – इस सूर्य-कुण्डली में जन्म लेने वाला मनुष्य मध्यम कद, गौर वर्ण, शरीर से हृष्ट-पुष्ट तथा शान्त स्वभाव का होता है। विद्या का लाभ सामान्य होता है। विवाह २३ अथवा २७ वर्ष की आयु में होना संभव है। ससुराल-पक्ष से आर्थिक-लाभ का योग बनता है। दाम्पत्य-सुख प्रायः अच्छा रहता है। संतान से सामान्य सुख प्राप्त होता है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक रहते हैं तथा आकस्मिक-लाभ के अवसर भी आते रहते हैं। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय के क्षेत्र में अधिक सफलता मिलती है। वर्ष २१, २३, २५, २७, २९, ३१, ३३, ३७, ४१, ४३, ४५, ४९, ५१ तथा ५३ व्यवसाय में उन्नतिकारक होते हैं। वर्ष २८ तथा ६४ आर्थिक-दृष्टि से चिन्ता-जनक रहते हैं। ६० वाँ वर्ष स्वास्थ्य के लिए अहितकर सिद्ध होता है। भाग्योन्नति २१ वर्ष की आयु से होती है। अपने मित्रों के प्रति इनकी भावना अत्यधिक सहानुभूति पूर्ण रहती है। भूमि तथा मकान आदि पर झगड़े के योग बनते हैं। आयु पूर्ण होती है, परन्तु पेट सम्बन्धी रोगों का कष्ट बना रहता है। जीवन सुखमय बीतता है।

(५९६) – इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न बालक गौर वर्ण, मध्यम कद का, साहसी प्रकृति तथा शान्त स्वभाव वाला होता है। आलसी प्रकृति होने के कारण काम को टालते रहना इसका स्वभाव होता है, तथापि विपरीत परिस्थिति को भी अनुकूल बना लेने में सक्षम होता है। विवाह २३ अथवा २७ वें वर्ष में होता है। स्त्री साँवले रंग की तथा ईर्ष्यालु स्वभाव की होती है, अतः उससे ठीक पटरी नहीं बैठ पाती। सन्तान का सुख सामान्य रहता है। वर्ष २८ तथा ४० व्यवसाय के लिए हानिप्रद रहते हैं। वर्ष २१, २५, २७, २९, ३०, ३१, ३३, ३७, ३९, ४१, ४३, ४५, ४९, ५४, ५६, ५८ तथा ६१ लाभकर सिद्ध होते हैं। वर्ष ४८ तथा ६० स्वास्थ्य के लिए चिन्ता जनक रहते हैं। प्रत्येक योजना में आदि से अन्त तक कठिनाइयाँ आती रहती हैं। आर्थिक-स्थिति उत्तम बनी रहती है तथा भूमि, भवन एवं वाहन आदि का सुख भी प्राप्त होता है। बहुत संघर्षों के बाद ही अन्त में सफलता प्राप्त होती है। माता-पिता से सम्बन्ध सामान्य रहते हैं।

(५९७) - इस सूर्य-कुण्डली में उत्पन्न बालक गौर वर्ण, कुछ लम्बाई लिए मध्यम कद वाला, सुन्दर नाक-नक्शा का, सत्य-प्रिय, प्रियवादी तथा स्वाभिमानी होता है। भावना प्रधान होने के कारण पहलकदमी एवं कर्कशता पूर्ण कार्यों से दूर रहता है। बुराई कार्यों से सर्वथा दूर रहता है। जीवन की कठोर परिस्थितियों में शीघ्र ही घबरा जाता है। न्याय में गहरी आस्था रखता है तथा आर्थिक-परिस्थिति मध्यम रहती है। विवाह का योग २४ वर्ष की आयु में बनता है। पत्नी सुन्दरी, सुशील तथा सुशिक्षिता होती है, अतः दाम्पत्य-जीवन सुखमय बना रहता है। विद्या-क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा पुत्रों से लाभ का अवसर प्राप्त होता है। सन्तान-सुख उत्तम रहता है। वर्ष २६, २८, ३०, ३२, ३६, ३८, ४०, ४२, ४४, ४८, ५० तथा ५२ व्यव--साय में उन्नति कारक सिद्ध होते हैं। भूमि तथा भवन के लाभ की सम्भावना नहीं रहती। खर्च बढ़ा-चढ़ा रहने के कारण आर्थिक स्थिति सामान्य रहती है। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है।

(५९८) - इस जन्मकुण्डली में जन्म लेने वाला मनुष्य हल्के साँवले रंग का, साहसी तथा पराक्रमी होने के साथ ही क्रोधी स्वभाव का होता है। राजनीतिक-कार्यों में विशेष रुचि रहती है तथा राज्य-पक्ष से लाभ के अवसर भी उपलब्ध होते हैं। विद्या के क्षेत्र में पूर्ण सफलता मिलती है। विवाह २१, २४ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशील तथा सुशिक्षिता होती है तथा दाम्पत्य-सुख सन्तोषप्रद रहता है। भाइयों से सहयोग कम ही मिलता है। वर्ष १३, ५६, ५८ तथा ६१ स्वास्थ्य के प्रति चिन्ता-जनक रहते हैं। वर्ष २४, २६, २८, ३०, ३२, ३६, ३८, ४०, ४२, ४४, ४८, ५२, ५४, ५६, ६० तथा ६४ व्यव- के लिए उन्नति कारक सिद्ध होते हैं। २८ वाँ वर्ष विशेष समृद्धिदायक रहता है। एक से अधिक व्यवसाय होने के कारण आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। पुत्रों से भी आर्थिक-लाभ होता है। आकस्मिक लाभ के अनेक अवसर प्राप्त होते रहते हैं। जीवन सामान्यतः सुख पूर्वक व्यतीत होता है।

भु० सं० ८२८

कु० २०

(५९९) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न हुआ बालक साँवले रंग का, नाटे कद का, सुन्दर नाक-नक्शा वाला, तथा न्याय एवं आदर्श के प्रति विशेष झुकाव रखने वाला होता है। धार्मिक सभा, संगठन, चन्दा-संग्रह, जातीय-कार्य तथा निःस्वार्थ-सेवा में अग्रणी रहता है। प्रारंभिक-जीवन में इसे विशेष सफलता नहीं मिलती; परन्तु अपने परिश्रम, लगन तथा कार्य-तत्परता से इसे जीवन के अनेक सफलताएँ प्राप्त होती हैं। विद्या का लाभ उत्तम होता है। विवाह २१ अथवा २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी साँवली तथा कुछ हठी स्वभाव की होती है। स्त्री के प्रति इसका विशेष आकर्षण रहता है। पुत्र की अपेक्षा कन्याओं का लाभ अधिक होता है तथा पुत्रों से आर्थिक-लाभ मिलता है। जीवन के २३, २७, २९, ३१, ३३, ३९, ४१, ४३, ४७, ५१, ५३, ५५ तथा ५९ वें वर्ष व्यवसाय में उन्नति कारक रहते हैं। ६० वर्ष की आयु में स्वास्थ्य के प्रति चिन्ता रहती है। भाइयों से पूर्ण सहयोग मिलता है तथा भूमि, भवन, वाहन तथा सम्पत्ति का श्रेष्ठ लाभ होता है।

(६००) - इस जन्म कुण्डली में जन्म लेने वाला बालक गौर वर्ण, मध्यम कद का, साहसी तथा हठीले स्वभाव का होता है। इसे क्रोध शीघ्र आ जाता है, उस समय वाणी पर भी नियन्त्रण नहीं रख पाता। दीन-हीनों के प्रति इसे विशेष आत्मीयता रहती है। अन्याय के प्रति विद्रोह करने में यह अग्रणी रहता है। आर्थिक-व्यय बढ़ा-चढ़ा रहने से जीवन में ऋण-ग्रस्तता के अवसर प्रायः आते रहते हैं। विवाह २१ अथवा २५ वर्ष की आयु में होता है, परन्तु स्त्री के साथ विचारों की एकरूपता स्थापित नहीं हो पाती। दाम्पत्य सुख मध्यम रहता है। विद्या तथा सन्तान-सुख सामान्य प्राप्त होता है। वर्ष २३, २७, २९, ३१, ३३, ३५, ३९, ४१, ४३, ४५, ४७, ५१, ५३, ५५, ५७, ५९, ६३ तथा ६५ व्यवसाय में उन्नति कारक अथवा आर्थिक दृष्टि से लाभप्रद रहते हैं। वर्ष ६० तथा ६८ स्वास्थ्य के प्रति चिन्ताजनक सिद्ध होते हैं। आर्थिक-लाभ के अवसर प्रायः प्राप्त होते रहते हैं, परन्तु आर्थिक-स्थिति कमजोर ही बनी रहती है। पैतृक-सम्पत्ति का लाभ मिलता है।

(६०१)- इस जल कुण्डली में जन्म ग्रहण करने वाला बालक साँवले रंग तथा नाटे कद वाला, क्रोधी स्वभाव का, बदला लेने की भावना रखने वाला, शत्रु को क्षमा न करने वाला, साहसी, क्रूर, पर-स्त्रीगामी तथा मित्रता-स्थापित करने में सिद्धहस्त होता है। विद्या क्षेत्र उन्नत रहता है। विवाह २६ वें वर्ष में होना सम्भव है। पत्नी के साथ विचारों में एकरूपता नहीं रहती, अतः दाम्पत्य-सुख अच्छा नहीं मिलता; परन्तु सन्तान सुख उत्तम रहता है। कन्या की अपेक्षा पुत्र अधिक होते हैं तथा पुत्रों से आर्थिक-लाभ भी होता है। ४८ वर्ष की आयु में भूमि का लाभ होता है तथा निजी मकान आदि के सुख भी प्राप्त होते हैं। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है तथा जीवन में अनेक बार ऋण-ग्रस्तता के अवसर भी आते हैं। वर्ष २४, २८, ३०, ३२, ३६, ४०, ४२, ४४, ४८, ५२, ५४, ५६, ६० तथा ६४ व्यवसाय में उन्नति कारक होते हैं तथा ३१ वाँ वर्ष आर्थिक-दृष्टि से चिन्ताप्रद रहता है। आयु पूर्ण होती है तथा स्वास्थ्य प्रायः अच्छा ही बना रहता है।

(६०२) - इस सूर्य कुण्डली में उत्पन्न हुआ मनुष्य हल्के साँवले रंग का, लम्बे कद वाला, साहसी, परिश्रमी, तथा झगड़ालू-स्वभाव का होता है। अधिकारियों से इसकी पटरी नहीं बैठ पाती तथा शत्रु-पक्ष पर भी सबल बना रहता है। स्वार्थ-सिद्धि हेतु यह चाहे जिसके पाँवों पर भी गिर सकता है। यह शत्रुता को सहज ही नहीं भूलता तथा अवसर की ताक में रहता है। व्यय अधिक बढ़ा-चढ़ा रहता है तथा आर्थिक-स्थिति सामान्य रहते हुए भी उन्नति की ओर अग्रसर बनी रहती है। विद्या के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। विवाह २२ अथवा २६ वें वर्ष में होता है। दाम्पत्य-सुख मध्यम होता है तथा स्त्री की ओर से चिन्ता बनी रहती है। पुत्रों से आर्थिक-लाभ प्राप्त होता है। वर्ष २४, २८, ३०, ३२, ३४, ३६, ४०, ४२, ४४, ४८, ५२, ५६ तथा ५८ आर्थिक-उन्नति तथा व्यवसाय-वृद्धि में सहायक होते हैं। वर्ष ६० स्वास्थ्य की दृष्टि से चिन्ताजनक रहता है। यह जातक मित्रता-स्थापित करने में सिद्ध हस्त होता है तथा अवसर का लाभ उठाना खूब जानता है।

(६०३) – इस सूर्य-कुण्डली में जन्म लेने वाला प्राणी गेहुँए रंग का, लम्बे कद वाला, स्थूल शरीर तथा तेजस्वी होता है। यह अत्यन्त साहसी तथा झगड़ालू प्रकृति का होते हुए भी मृदुभाषी होता है। यह कभी शत्रु को क्षमा नहीं करता तथा बदला लेने के लिए अवसर की ताक में रहता है। राजनीतिक क्षेत्र में इसकी विशेष रुचि रहती है तथा झूठ को सत्य सिद्ध कर देने की कला में कुशल होता है। यह बहुत सोच-समझ कर ही किसी से आत्मीयता स्थापित करता है तथा आत्मीयजन के लिए सर्वस्व न्यौछावर कर देने को भी तत्पर रहता है। यह कानों का कच्चा होता है, अतः दूसरों की कही हुई झूठी बातों पर भी विश्वास कर लेता है। मनोरंजन तथा विलासिता पर इसका अधिक खर्च होता है। विद्या लाभ उत्तम होता है। विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर तथा हठीले स्वभाव की होती है। पुत्रों से भी इसके सहयोग मिलता है। वर्ष २४, २८, ३०, ३२, ३४, ३६, ४०, ४२, ४४, ४६, ४८, ५२, ५४, ५६, ६० तथा ६४ भाग्योदय में उन्नति कारक होते हैं। आर्थिक स्थिति सन्तोषजनक रहती है।

(६०४) – इस सूर्य-कुण्डली में जन्मा हुआ बालक गौरवर्ण, मध्यम कद का फुर्तीला, चुस्त, शान्त स्वभाव का, कार्य-तत्पर तथा अपने लक्ष्य की ओर निरन्तर बढ़ने वाला होता है। यह समय का बहुत पाबन्द होता है, ईश्वर पर गहरी आस्था रखता है तथा आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ रहती है, तथापि खर्च की अधिकता के कारण कभी-कभी आर्थिक-कठिनाई भी अनुभव में आती है। विवाह २१, २३ अथवा २७ वर्ष की आयु में होता है। विद्या-क्षेत्र में रुकावटें आती रहती हैं। पुत्र की अपेक्षा कन्याएँ अधिक होती हैं। शत्रु से आर्थिक-लाभ के अवसर प्राप्त होते हैं तथा शत्रु-पक्ष पर अपना दबदबा बनाये रखता है। जीवन के वर्ष २३, २५, २६, ३१, ३३, ३५, ३७, ४१, ४३, ४५, ४७, ४९, ५३, ५५, ५७ तथा ६१ भाग्योदय में उन्नतिप्रद सिद्ध होते हैं। वर्ष ५८ तथा ६४ स्वास्थ्य के लिए तथा वर्ष ३२ आर्थिक-स्थिति के लिए चिन्ताजनक रहते हैं। दाम्पत्य-जीवन चिन्ता मुक्त बना रहता है। भूमि-भवन आदि का सुख भी प्राप्त होता है।

(६०५) – इस सूर्य कुण्डली में जन्म लेने वाला शिशु गौर वर्ण, मध्यम कद वाला, कुछ लम्बाई लिये तथा शान्त स्वभाव का होता है। शरीर कुछ स्थूल होता है तथा चेहरे पर हमेशा मुस्कुराहट झलकती रहती है। यह समय का बड़ा पाबन्द होता है तथा प्रत्येक कार्य समय पर ही करता है। अपने से छोटे तथा बाकी के लोगों के साथ सौम्यता एवं सहृदयता का व्यवहार रखता है। दूसरों की सहायता करना अपना कर्तव्य भी समझता है तथा धर्म के ढोंग एवं प्रदर्शन तथा तड़क-भड़क आदि से घृणा करता है। विद्या का श्रेष्ठ लाभ होता है। विवाह २१, २३ अथवा २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुशील तथा सुन्दरी होती है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है तथा सन्तान-सुख भी अच्छा उपलब्ध होता है। वर्ष २३, २५, २७, २९, ३१, ३३, ३७, ४१, ४३, ४५, ४७, ४९, ५३, ५५, ५७, ६१ तथा ६५ व्यवसाय के लिए उन्नति कारक होते हैं। आर्थिक-स्थिति सामान्य रहती है। आर्थिक-आय अच्छी होते हुए भी व्यय की अधिकता रहती है। आयु पूर्ण होती है।

(६०६) – इस जन्मलग्न में जन्मा हुआ व्यक्ति हल्के साँवले रंग का, लम्बे कद का, स्थूल काय तथा साहसी एवं झगड़ालू प्रकृति का होता है। विद्या का लाभ मध्यम रहता है। विवाह २३ अथवा २७ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री सुन्दरी, परन्तु क्रोधी स्वभाव की होती है, तथापि दाम्पत्य-जीवन के सुख बना रहता है। वर्ष २१, २३, २५, २९, ३१, ३३, ३७, ४१, ४५, ४७, ४९, ५३, ५५, ५७, ६१ तथा ६५ व्यवसाय तथा आर्थिक-स्थिति के लिए हितकर सिद्ध होते हैं। पुत्रों की संख्या अधिक होती है तथा उनसे सुख भी प्राप्त होता है। ३६ वर्ष की आयु में भूमि अथवा वाहन आदि का सुख उपलब्ध होता है। निजी मकान की प्राप्ति भी होती है। आयु का ३० वाँ वर्ष आर्थिक-दृष्टि से चिन्ताकारक रहता है। वर्ष ५८ तथा ६४ शारीरिक-स्वास्थ्य की दृष्टि से चिन्ताजनक रहते हैं। यह जातक अपने लक्ष्य की ओर निरन्तर बढ़ते रहकर सफलता प्राप्त करता है। आर्थिक-स्थिति सामान्य बनी रहती है।

३२७ सं० भु०

कु० १०

(६०७) - इस कुण्डली में जन्म ग्रहण करने वाला मनुष्य गौर वर्ण, लम्बे कद का, क्रोधी स्वभाव का तथा रहस्यात्मक प्रकृति का होता है। आत्मविश्वास की इसमें अधिकता पाई जाती है। शरीर से यह दुबला-पतला होता है तथा देश-काल एवं वातावरण को पहिचान कर, स्वयं को ढाल देने की कला में माहिर होता है। विद्या के क्षेत्र में कुछ रुकावटों के साथ उन्नति होती है। विवाह २४ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला मिलती है, अतः दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहता है। ३० वर्ष की आयु में पुत्र-लाभ होता है। कन्याओं की संख्या अधिक रहती है। बहिनों की अपेक्षा भाइयों से स्नेह-सहयोग अधिक मिलता है। वर्ष २४, २६, ३०, ३२, ३४, ३६, ४२, ४४, ४८, ५४, ५६, ६० तथा ६२ व्यवसाय में लाभप्रद सिद्ध होते हैं। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में रुचि रहती है तथा लाभ होता है। आर्थिक-स्थिति अच्छी रहती है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं। भूमि-भवन के लाभ के साथ उनकी बिक्री का भी योग है।

(६०८) - इस जन्मलग्न में उत्पन्न हुआ बालक कुछ लम्बाई लिए मध्यम कद का, गौर वर्ण, साहसी तथा परिश्रमी होता है। समयानुसार कार्य करने में इसे कुशलता प्राप्त होती है। विद्याध्ययन में कुछ रुकावटें आती हैं। विवाह २२, २४ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है। पुत्र की अपेक्षा कन्याएं अधिक होती हैं। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुशिक्षिता होती है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। सन्तान-हानि के अवसर भी आते हैं। ३३ वाँ वर्ष व्यवसाय तथा आर्थिक-दृष्टि से चिन्ताकारक होता है तथा वर्ष २४, २६, ३०, ३२, ३४, ३६, ४०, ४२, ४४, ४६, ४८, ५२, ५४, ५६, ५८, ६० तथा ६४ वें वर्ष उन्नति कारक सिद्ध होते हैं। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है। जीवन में एकाध बार व्यवसाय में हानि के अवसर भी आते हैं। भूमि तथा मकान के लाभ का योग बनने के साथ ही उसके विक्रय के योग भी बनते हैं। ऐसा जातक अपने लक्ष्य की ओर तेजी के साथ आगे बढ़ता है। शरीर प्रायः स्वस्थ बना रहता है तथा दीर्घायु प्राप्त होती है।

(६०९) - इस सूर्य-कुण्डली में जन्मा हुआ बालक हल्के सांवले रंग का, मोटे कद वाला, सुन्दर नाक-नक्श वाला, साहसी तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। यह आत्म-विश्वास के बल पर विपरीत परिस्थितियों पर भी विजय प्राप्त करता है तथा पराक्रमी होने के नाते निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। विद्या का लाभ कुछ रुकावटों के साथ होता है। विवाह २२ अथवा २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर तथा सुशीला होती है। दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहता है। सन्तानों में पुत्र की अपेक्षा कन्याओं की संख्या अधिक होती है। आयु के २४, २६, २८, ३०, ३२, ३६, ३८, ४२, ४४, ४६, ४८, ५०, ५२ तथा ५४वें वर्ष उन्नति कारक रहते हैं। ५६वां वर्ष भी लाभप्रद रहता है। वर्ष २९ व्यवसाय में विशेष लाभप्रद सिद्ध होता है। वर्ष ५८ स्वास्थ्य के लिए चिन्ताजनक होता है। बहिनों की अपेक्षा भाइयों की संख्या अधिक रहती है तथा भाइयों से लाभ तथा सहयोग भी मिलता है। आय के स्रोत एक से अधिक होने के कारण आर्थिक-स्थिति मजबूत बनी रहती है। भूमि-भवन का भी लाभ होता है।

(६१०) - इस सूर्य कुण्डली में उत्पन्न हुआ मनुष्य गौर वर्ण, हृष्ट-पुष्ट शरीर, सुन्दर तथा आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। स्नेह, सौजन्यता, विनम्रता तथा मधुर भाषण आदि सद्गुणों की खान होता है। विद्या के क्षेत्र में पर्याप्त उन्नति होती है। विवाह २१, २३ अथवा २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, गौरवर्णा तथा मनोनुकूला होती है। सन्तानों में कन्याओं की संख्या अधिक रहती है। दाम्पत्य-जीवन भी सुखमय बना रहता है। वर्ष २३, २५, २७, ३१, ३३, ३५, ३९, ४३, ४५, ४७, ५१ तथा ५५ व्यवसाय में उन्नति कारक सिद्ध होते हैं तथा वर्ष ३४ आर्थिक-दृष्टि से चिन्ताजनक बीतता है। परोपकार तथा दीन-दुखियों की सेवा में जातक का मन खूब लगता है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं, अतः आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी से अधिक लाभ होता है। भूमि तथा मकान का सुख प्राप्त होता है तथा वाहन-सुख भी उपलब्ध रहता है। जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होता है।

भु० सं० २२७

कु० २०

(६११)- इस सूर्य-कुण्डली में जन्मा हुआ जातक गौर वर्ण, दुर्बल शरीर, मध्यम कद तथा शान्त स्वभाव वाला होता है। मृदुभाषिता इसका विशेष गुण होता है। यह शंकालु-स्वभाव का होता है तथा किसी पर सहसा विश्वास नहीं करता, तथापि इसे शत्रु-पक्ष द्वारा समय-समय पर धोखा प्राप्त होता रहता है। विद्या का यथेष्ट लाभ होता है। विवाह २१, २३ अथवा २५ वें वर्ष में होता है। पत्नी सुन्दरी, परन्तु क्रोधी स्वभाव की होती है, तथापि दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। सन्तान-पक्ष से लाभ होता है। वर्ष २१, २३, २५, २७, ३१, ३३, ३५, ३७, ३९, ४३, ४५, ४७, ५१, ५५ तथा ५७ उन्नति कारक सिद्ध होते हैं। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी में अधिक उन्नति होती है। यह जातक अपने लक्ष्य की ओर धीरे-धीरे आगे बढ़ता है। जीवन में भूमि-भवन प्राप्ति का योग भी बनता है तथा इनसे सम्बन्धित झगड़े-टंटे आदि भी होते हैं। भूमि-मकान की हानि का अवसर भी आ सकता है। माता, पिता तथा परिवारी जनों से सामान्य सम्बन्ध रहते हैं।

(६१२)- इस जन्मलग्न में जन्म ग्रहण करने वाला मनुष्य गौर वर्ण, मध्यम कद, सुन्दर तीखे-नाक नक्शा वाला एवं मछली जैसे मोहक नेत्रों वाला होता है। यह स्वभाव से शान्त तथा दूसरों के प्रति सहानुभूति रखनेवाला एवं सामाजिक रूढ़ियों तथा परम्पराओं का पालन करने वाला होता है। यह लम्बे शरीर का तथा अत्यन्त परिश्रमी होता है तथा अपनी मेहनत एवं भाग्य के बल पर ही आर्थिक-स्थिति को मजबूत बनाता है। इसे भाइयों से विशेष सहयोग नहीं मिलता। विद्या क्षेत्र में रुकावटें आती रहती हैं। विवाह २४, २६ अथवा ३० वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य-सुख उत्तम प्राप्त होता है। जीवन के २४, २८, ३०, ३२, ३४, ३६, ४०, ४४, ४६, ४८, ५२, ५४, ५६, ५८ तथा ६० वें वर्ष उन्नति कारक होते हैं। इनमें व्यवसाय अथवा कार्य-क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। जीवन का ३० वाँ वर्ष शारीरिक-स्वास्थ्य के लिए हानिकारक सिद्ध होता है। जीवन में निजी मकान आदि का सुयोग भी प्राप्त होता है। आयु का ३३ वां वर्ष आर्थिक-हानि से विशेष उन्नति कारक सिद्ध होता है। जीवन में सन्तान-हानि के अवसर भी आते हैं।

भु० सं० ३२०७

कु० र०

(६१३) – इस जन्म कुण्डली वाला बालक उन्नत तथा हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला, गौर वर्ण एवं शान्त स्वभाव का होता है। आँखें बहुत सुन्दर तथा आकर्षक होती हैं। यह सामाजिक-मान्यताओं का पालन करने वाला, दूसरों के प्रति सहानुभूति पूर्ण, परिश्रमी तथा अपनी भाग्य शक्ति के बल पर शीघ्र सफलता पाने वाला होता है। जीव-जन्तुओं के प्रति विशेष दयालु होता है। भाइयों से इसे कोई सहयोग प्राप्त नहीं होता तथापि यह आर्थिक दृष्टि से उन्नत तथा प्रत्येक व्यक्ति की सहायता करने का इच्छुक होता है। विद्या का लाभ कुछ रुकावटों के साथ होता है। विवाह २४, २६ अथवा ३० वें वर्ष में होता है तथा पत्नी सुन्दरी, सुशीला एवं मनोनुकूला मिलती है. फलतः दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहता है। जीवन के २४, २८, ३०, ३२, ३४, ३६, ४०, ४४, ४६, ४८, ५२, ५४, ५६, ५८ तथा ६० वें वर्ष व्यवसाय एवं आर्थिक-स्थिति में उन्नति कारक रहते हैं। वर्ष ३० तथा ६७ स्वास्थ्य के प्रति हानिकारक बनते हैं। ३३ वाँ वर्ष आर्थिक-दृष्टि से चिन्ताजनक रहता है। निजी मकान का योग बनता है।

(६१४) – इस जन्मांग चक्र में उत्पन्न हुआ प्राणी मध्यम कद तथा गेहुँए रंग का, शान्ति-प्रिय एवं स्वभाव से आलसी होता है। तथापि यह साहसी भी होता है। अपने आलस्य के कारण यह उन्नति के अनेक अवसर खो देता है। व्यय की अधिकता के कारण आर्थिक-स्थिति कमजोर बनी रहती है। अनेक बार ऋण भी लेना पड़ता है। पैतृक-सम्पत्ति, भूमि, भवन आदि को बेचने के अवसर भी आते हैं। सवारी का सुख बना रहता है। विद्या-क्षेत्र में सामान्य उन्नति होती है। भाइयों से कोई सहयोग नहीं मिलता। विवाह २२, २४ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री सुन्दरी एवं सुशीला होती है, अतः दाम्पत्य-सुख श्रेष्ठ बना रहता है। जीवन के २४, २६, २८, ३०, ३२, ३४, ३६, ४०, ४४, ४८, ५२ तथा ५६ वें वर्ष व्यवसाय एवं आर्थिक क्षेत्र में उन्नतिकारक सिद्ध होते हैं। वर्ष ६१ स्वास्थ्य के लिए चिन्ताकारक बनता है। सन्तान-सुख अच्छा रहता है तथा उनसे सहयोग भी प्राप्त होता है। आर्थिक-स्थिति मध्यम बनी रहती है। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय के क्षेत्र में अधिक सफलता मिलती है।

(६९५)– इस सूर्य-कुण्डली वाला जातक नाटे कद तथा गेहुँए रंग का, आलसी तथा क्रोधी-स्वभाव का होता है। आलस्य के कारण वह उन्नति के अवसर भी खो बैठता है, परन्तु आत्म-विश्वास की अधिकता के कारण वह विपरीत-परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल बना लेने में सक्षम होता है। इसके शत्रुओं की संख्या अधिक होती है, जो पीठ पीछे बुरा आँकने का प्रयत्न करते रहते हैं। आमदनी की अपेक्षा खर्च अधिक होने से यह मकान आदि के विषय में चिन्तित बना रहता है, परन्तु ५१ वर्ष की आयु में निजी मकान का योग बनता है। विद्या के क्षेत्र में कमजोरी बनी रहती है। विवाह २४, २६ अथवा ३० वर्ष की आयु में होना सम्भव है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है, परन्तु सन्तान की ओर से चिन्ता बनी रहती है। जीवन के २४, २६, २८, ३२, ३६, ४०, ४२, ४४, ४८, ५२, ५४, ५६, ५८ तथा ६० वें वर्ष कामकाज एवं आर्थिक-लाभ के लिए उन्नति कारक सिद्ध होते हैं। वर्ष ५५ एवं ६१ स्वास्थ्य के लिए चिन्ता जनक रहते हैं। माता-पिता व परिजनों से सम्बन्ध सामान्य रहते हैं।

(६९६)– इस सूर्य-कुण्डली में उत्पन्न हुआ मनुष्य हल्के साँवले रंग का, बलिष्ठ शरीर वाला, तीखे नाक-नक्शे का, सुन्दर एवं क्रोधी स्वभाव का होता है। साहसिक कार्यों में इसे विशेष रुचि रहती है, अतः लड़ने-झगड़ने को सदैव तत्पर रहता है। जिस पर ये विश्वास करते हैं, उस पर अपना सब कुछ न्यौछावर कर सकते हैं। आर्थिक-दृष्टि से ये कमजोर रहते हैं, क्योंकि इनका खर्च बढ़ा-चढ़ा रहता है। भाइयों की अपेक्षा बहनों की संख्या अधिक होती है। विद्या के क्षेत्र में यथेष्ट सफलता मिलती है। विवाह २३, २५ अथवा २७ वर्ष की आयु में होता है, परन्तु पत्नी से विचारों में एकरूपता स्थापित नहीं हो पाती, तथापि स्त्री से सहयोग मिलता रहता है। आयु के वर्ष २३, २५, २९, ३३, ३५, ३७, ३९, ४१, ४५, ४७, ४९, ५३, ५७ तथा ६१ कामकाज एवं आर्थिक क्षेत्र में उन्नति कारक सिद्ध होते हैं। वर्ष २४ तथा ३६ आर्थिक-दृष्टि से कष्टप्रद रहते हैं। सन्तानों में कन्या की अपेक्षा पुत्रों की संख्या अधिक रहती है। सन्तानों की ओर से सहयोग भी प्राप्त होता है। परिवारीजनों से स्नेह-सम्बन्ध सामान्य बने रहते हैं।

(६१७) – इस सूर्य कुण्डली में जन्म ग्रहण करने वाला मनुष्य मध्यम कद वाला, गौरवर्ण तथा अत्यन्त साहसी होता है एवं साहस के बल पर विपरीत परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल बना लेता है। विज्ञान सम्बन्धी कार्यों में इसे विशेष रुचि रहती है। यह स्वतन्त्रचेता होता है अतः किसी की नौकरी अथवा नियन्त्रण में रह कर कार्य नहीं कर पाता। आर्थिक-दृष्टि से ये कमजोर रहते हैं, तथापि इनका खर्च बढ़-चढ़ रहता है। सौभाग्यशाली होने के कारण खर्च को पूरा करने के लिए इनकी आमदनी के स्रोत भी खुले रहते हैं। भूमि, भवन आदि का तथा सवारी का सुख भी प्राप्त होता है। विद्या का लाभ सामान्य रहता है। विवाह २३, २५ अथवा २७ वें वर्ष में होता है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। २८ वर्ष की आयु में पुत्र की प्राप्ति होती है। सन्तानें जीवन में तरक्की करती हैं। आयु के २४, २६, २८, ३०, ३२, ३४, ३७, ४१, ४५, ४७, ४९, ५१, ५३ तथा ५७ वें वर्ष आर्थिक दृष्टि से लाभप्रद रहते हैं। सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक होती है। जीवन सामान्य व्यतीत होता है।

(६१८) – इस सूर्य-कुण्डली वाला जातक लम्बे कद का, गौरवर्ण, तीखे नाक-नक्श तथा सुन्दर नेत्रों वाला होता है। यह स्वभाव से विनम्र तथा स्पष्टवादी होता है एवं खरी-खरी बातें मुँह पर ही कह देता है। यह योजना बद्ध ढंग से काम करना पसन्द करता है तथा अधिक कामुक भी होता है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होने के कारण इस की आर्थिक-स्थिति अच्छी बनी रहती है। जीवन में आकस्मिक-लाभ के भी अनेक अवसर प्राप्त होते हैं। विद्या का लाभ यथेष्ट होता है तथा विवाह २४ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। सन्तान-सुख अच्छा रहता है। कन्याओं की अपेक्षा पुत्र अधिक होते हैं। दाम्पत्य-सुख में अभिवृद्धि होती रहती है। जीवन में २२, २४, २६, २८, ३२, ३४, ३६, ३८, ४०, ४२, ४४, ४८, ५२, ५४, ५६ तथा ५८ वें वर्ष आर्थिक तथा व्यावसायिक-दृष्टि से लाभप्रद एवं उन्नति कारक रहते हैं तथा ३५ वाँ वर्ष चिन्ताकारक होता है। निजी भूमि-भवन आदि का सुख प्राप्त होता है तथा ३९ वें वर्ष में सवारी का योग भी बनता है। मान-प्रतिष्ठा की अभिवृद्धि होती रहती है। परिवारी जनों से सामान्य सम्बन्ध रहते हैं।

<u>(६१९)</u>- इस जन्माङ्ग चक्र में उत्पन्न जातक गौरवर्ण, लम्बे कद का, हृष्ट-पुष्ट तथा सुन्दर नाक-नक्श वाला होता है। यह स्वभाव से शान्तिप्रिय तथा अत्यन्त स्वाभिमानी होता है। स्त्रियों के प्रति इसकी विशेष आसक्ति रहती है। लम्बी-चौड़ी डींगें मारने में यह पटु होता है तथा अपने साहसी स्वभाव के कारण शत्रु-पक्ष पर सदैव हावी बना रहता है। पैतृक-सम्पत्ति पर झगड़े-मुकद्दमे का योग भी बनता है। विद्या का उत्तम लाभ होता है। विवाह २४ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य-सुख अच्छा रहता है तथा सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक रहती है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुशिक्षिता होती है। आयु पूर्ण प्राप्त होती है। जीवन के २४, २६, २८, ३२, ३४, ३६, ३८, ४०, ४४, ४६, ४८, ५२, ५४, ५८ तथा ६० वें वर्ष आर्थिक एवं व्यावसायिक उन्नति की दृष्टि से लाभप्रद रहते हैं। वर्ष ४७ आर्थिक-दृष्टि से चिन्ता-कारक रहता है। वर्ष २८, ५७ तथा ६१ स्वास्थ्य के प्रति कष्टकारक सिद्ध होते हैं। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है।

<u>(६२०)</u>- इस जन्माङ्ग चक्र का स्वामी मनुष्य हल्के साँवले रंग तथा नाटे कद का, हृष्ट-पुष्ट, किन्तु कठोर तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। यह कुछ क्रोधी स्वभाव का तथा घमंडी होता है, परन्तु अपने से बड़े अफसरों को प्रभावित करने की क्षमता भी रखता है। यद्यपि ये लोग पूर्ण व्यावहारिक होते हैं, तथापि कभी-कभी आपे से बाहर होकर असामाजिकता का परिचय भी दे बैठते हैं, फलतः इनके सम्मान को ठेस भी पहुँचती है। विद्या का लाभ कुछ रुकावटों के साथ होता है। विवाह का योग २३, २५ अथवा २७ वें वर्ष में बनता है। पुत्र की अपेक्षा कन्याओं की संख्या अधिक रहती है। दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहता है। आयु के २३, २५, २७, २८, ३३, ३५, ३७, ३८, ४१, ४७, ४८, ५१, ५३, ५८, ६१ तथा ६३ वें वर्ष व्यवसाय एवं आर्थिक-लाभ की दृष्टि से उन्नति कारक सिद्ध होते हैं। वर्ष ४० में मकान का योग बनता है। खर्चे अधिक बढ़े-चढ़े रहने के कारण जीवन में ऋण लेने के अवसर भी आते हैं। आलस्य के कारण आर्थिक-लाभ के अनेक अवसर हाथ से निकल जाते हैं।

भू० सं० ६३७

कु० २०

(६२१) – इस जन्माङ्ग चक्र में जन्म लेने वाला मनुष्य कुछ लम्बाई लिए मध्यम कद वाला, गौरवर्ण, सुन्दर नाक-नक्शा वाला तथा शान्ति प्रकृति का होता है। यह संगीत तथा ललित-कलाओं का प्रेमी एवं मनोरंजन तथा विलासिता की वस्तुओं पर धन खर्च करने वाला भी होता है। विद्या का यथेष्ट लाभ होता है। विवाह २३, २५ अथवा २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी क्रोधी स्वभाव की होती है। दाम्पत्य-सुख में कुछ न्यूनता रहती है तथापि सन्तान-सुख उत्तम रहता है। पत्नी के अतिरिक्त अन्य अनेक स्त्रियों से भी जातक सम्बन्ध बनाये रखता है। यह अत्यन्त मृदुभाषी होने के कारण सबका प्रिय पात्र बना रहता है। जीवन के आकस्मिक लाभों के अनेक अवसर प्राप्त होते हैं। मन तथा मस्तिष्क पर नियन्त्रण रखने के कारण जीवन में बहुत उन्नति करता है। इसकी आर्थिक-स्थिति मजबूत बनी रहती है। निजी भूमि-भवन का योग बनता है। ५२ वर्ष की आयु में निजी पक्का मकान बनता है तथा जीवन के २३, २५, २७, २९, ३३, ३५, ३७, ३९, ४१, ४७, ४९, ५३ एवं ५९वें वर्ष उन्नतिप्रद होते हैं।

(६२२) – इस सूर्य कुण्डली वाला जातक गौरवर्ण, लम्बे कद तथा सम्मोहक व्यक्तित्व वाला होता है। यह शान्ति-प्रिय तथा कार्य-पटु होता है। यह अपनी मधुर वाणी द्वारा अपरिचित व्यक्ति को भी प्रभावित कर लेता है तथा कठिन-से-कठिन परिस्थितियों में भी अपनी सफलता का मार्ग निकाल लेता है। यह अत्यन्त कर्मठ तथा साहसी होता है तथा दिन-रात परिश्रम करना इसके स्वभाव में होता है। संकटों का दृढ़ता पूर्वक सामना करता है। यह अध्ययन में विशेष रुचि रखता है, फलतः विद्वान बनता है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं, अतः आर्थिक-स्थिति उत्तम बनी रहती है। निजी मकान आदि का योग भी बनता है। विवाह २४ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है। पुत्र की अपेक्षा कन्याएं अधिक होती हैं तथा सन्तान-हानि के अवसर भी आते हैं। जीवन के २४, २६, २८, ३०, ३४, ३८, ४२, ४६, ४८, ५०, ५४, ५८, ६० तथा ६२वें वर्ष भाग्योदय एवं आर्थिक-उन्नति में वृद्धि करते हैं। माता के प्रति विशेष श्रद्धा रहती है तथा भाइयों एवं पिता से सामान्यतः अच्छे सम्बन्ध बने रहते हैं।

(६२३)- इस सूर्य कुण्डली में उत्पन्न जातक गौरवर्ण तथा सम्मोहक व्यक्तित्व का होता है। संगीत आदि ललित कलाओं तथा स्त्री जाति के प्रति इसका विशेष आकर्षण होता है। चित्रकला, काव्य, प्रकाशन-कार्य, सम्पादन योजना आदि कार्यों में इसे प्रवीणता प्राप्त होती है। यह स्वभाव से सात्विक, शान्तिप्रिय तथा कामुक प्रवृत्ति का भी होता है। येन-केन प्रकारेण अर्थ-संचय करने में पटु होता है। समय को अनुकूल बनाये रखने के लिए यह कठिन परिश्रम करता है। राजकीय सेवा में यह धीरे-धीरे प्रगति करता है। अधिक परिश्रम करने पर भी लाभ थोड़ा ही मिल पाता है। विद्या क्षेत्र में उन्नति प्राप्त होती है। विवाह २०, २४ अथवा २६ वें वर्ष में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुशिक्षिता मिलती है। सन्तान का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। जीवन के २२, २४, २६, २८, ३०, ३४, ३६, ३८, ४०, ४४, ४६, ४८, ५०, ५२, ५६ तथा ५८ वें वर्ष व्यवसाय तथा आर्थिक क्षेत्र में लाभकर सिद्ध होते हैं। वर्ष ५७ तथा ६३ स्वास्थ्य के लिए चिन्ताकारक रहते हैं। निजी मकान आदि का सुख भी मिलता है।

(६२४)- इस सूर्य कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य कुछ लम्बाई लिए मध्यम कद का, होठों पर मुस्कुराहट रखने वाला, गौरवर्ण तथा अत्यन्त आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। ऐसे लोग शैक्षणिक तथा राजनीतिक क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करते हैं। आर्थिक-दृष्टि से वे उन्नतिशील होते हैं तथा इनकी आमदनी के स्रोत भी एक से अधिक रहते हैं। शारीरिक-श्रम की अपेक्षा मानसिक-श्रम इन्हें रुचिकर होता है। राज्यपक्ष से भी इन्हें सम्मान प्राप्त होता है। भूमि आदि से आर्थिक-लाभ के अवसर प्रायः प्राप्त होते रहते हैं। विद्या का लाभ उत्तम रहता है, परन्तु बीच-बीच में रुकावटें भी आती रहती हैं। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। सामान्यतः दाम्पत्य-जीवन ठीक रहता है, परन्तु स्त्री की ओर से कुछ चिन्तायें भी लगी रहती हैं। जीवन के २२, २४, २६, २८, ३०, ३४, ३६, ३८, ४०, ४२, ४६, ४८, ५०, ५४, ५८, ६० तथा ६२ वें वर्ष व्यवसाय तथा आर्थिक उन्नति में लाभकर सिद्ध होते हैं। पेट से सम्बन्धित रोगों की सम्भावना रहती है। निजी मकान, स्थिर सम्पत्ति, वाहन आदि का सुख उपलब्ध होता है। परिवारीजनों से सामान्यतः अच्छे सम्बन्ध बने रहते हैं।

(६२५) – इस सर्प कुण्डली का स्वामी मनुष्य सुन्दर, स्वच्छ, गौर वर्ण, कोमल, मधुर तथा नम्र स्वभाव का होता है। यह सहनशील तथा शान्ति प्रिय होने के साथ ही तीव्रबुद्धि सम्पन्न एवं परिश्रमी भी होता है। प्रतिदिन का कार्य प्रतिदिन निपटा देने में इन्हें अच्छा लगता है। संगीत, नृत्य तथा ललित कलाओं में विशेष रुचि रहती है। ये स्वभाव से कल्पनाशील होते हैं तथा नित्य नवीन योजनाएँ बनाते रहते हैं। आर्थिक-दृष्टि से इनका जीवन उन्नतिशील बना रहता है। इनकी आमदनी के एक से अधिक स्रोत होते हैं। पैतृक-सम्पत्ति का योगायोग अच्छा रहता है। भूमि-मकान आदि का लाभ होता है तथा भाइयों से सहयोग मिलता है। माता के प्रति विशेष श्रद्धा रहती है। विवाह २५ अथवा २७ वर्ष की आयु में होता है, परन्तु स्त्री हठी स्वभाव की होती है। वर्ष २३, २५, २७, २९, ३१, ३३, ३५, ३७, ३९, ४३, ४७, ५१, ५३, ५५ तथा ५९ व्यवसाय के लिए उन्नति कारक सिद्ध होते हैं। विद्या-लाभ कुछ रुकावटों के साथ होता है। संतान की ओर से कुछ चिन्ता रहती है।

(६२६)– इस सर्पकुण्डली में उत्पन्न हुआ प्राणी गौर वर्ण, लम्बे कद का, स्वस्थ शरीर, भावुक प्रकृति का तथा स्वभाव से सहिष्णु होता है। यह बातचीत से सामने वाले को तुरन्त प्रभावित करता है तथा अपनी न्याय एवं सत्य प्रियता के लिए प्रसिद्ध होता है। यह सामाजिक रूढ़ियों में विश्वास नहीं करता। शारीरिक श्रम की अपेक्षा मानसिक-श्रम इन्हें अधिक रुचिकर होता है। विद्या का सामान्य लाभ होता है। विवाह २५ अथवा २७ वर्ष की आयु में होता है तथा स्त्री से अच्छा सुख मिलता है। सन्तान की कमी रहती है तथा उसकी ओर से चिन्ता भी बनी रहती है। जीवन के २३, २४, २६, २८, ३१, ३५, ३७, ३९, ४३, ४७, ४९, ५१, ५३, ५५, ५९ तथा ६१वें वर्ष व्यवसाय में उन्नति कारक सिद्ध होते हैं। ६४वां वर्ष स्वास्थ्य के लिए चिन्ता कारक रहता है। आर्थिक-दृष्टि से इनका जीवन उन्नतिशील बना रहता है तथा व्यवसाय द्वारा धनोपलब्धि के श्रेष्ठ अवसर प्राप्त होते हैं। भूमि, मकान तथा वाहन का सुख प्राप्त होता है तथा भूमि द्वारा आर्थिक-लाभ के अवसर भी मिलते हैं। परिवारीजनों से सामान्य सम्बन्ध बने रहते हैं।

भू० सं० ३३८

कु० २०

(६२७)- इस सूर्य कुण्डली का अधिपति जातक साँवले रंग तथा मध्यम कद का, परिश्रमी, क्रोधी स्वभाव वाला तथा प्रबल आत्मविश्वासी होता है। यह सामाजिक रूढ़ियों को नहीं मानता। राज्य पक्ष से इसे सम्मान प्राप्त होता है तथा आर्थिक-स्थिति मध्यम बनी रहती है। भाइयों की अपेक्षा बहिनें अधिक होती हैं। विद्या के क्षेत्र में आवश्यक सफलता मिलती है। विवाह २५ अथवा २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी कुछ हठी स्वभाव की होती है, अतएव दाम्पत्य-सुख चिन्ताजनक रहता है। सन्तान के लिए ३२ वां वर्ष कष्टकारक होता है। जातक को पेट से सम्बन्धित रोग भी हो सकते हैं। वर्ष २३, २७, २९, ३१, ३५, ३९, ४३, ४७, ४९, ५१, ५३, ५५ तथा ५९ व्यवसाय में उन्नति कारक सिद्ध होते हैं तथा वर्ष २६, ५० और ६२ आर्थिक-दृष्टि से चिन्ताजनक रहते हैं। ४२ वर्ष की आयु में भूमि तथा भवन का योग बनता है। लड़कों की अपेक्षा लड़कियों की संख्या अधिक होती है। माता-पिता तथा भाई-बहिनों से सामान्य सम्बन्ध रहते हैं। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है।

(६२८)- इस जन्माङ्ग चक्र का स्वामी जातक गौर वर्ण, कुछ लम्बाई लिये मध्यम कद तथा उन्नत वक्षःस्थल वाला, घने घुँघराले बालों वाला एवं "क्षणे हृष्टाः क्षणे तुष्टाः" स्वभाव वाला होता है। यह अत्यन्त तेज तथा फुर्तीला होता है। धार्मिक रूढ़ियों पर विश्वास करता है तथा जिससे मित्रता करे, उस पर अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देने वाला होता है। परन्तु रुष्ट हो जाने पर यह क्रोध के आवेश में गहरी-से-गहरी मित्रता को भी एक ही क्षण में तोड़ देता है। विद्या का केवल लाभ होता है। विवाह २२ अथवा २६ वें वर्ष में होता है। दाम्पत्य-जीवन सुख पूर्ण रहता है। सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक होती है। वर्ष २४, २६, २८, ३०, ३२, ३६, ३८, ४०, ४२, ४४, ४८, ५०, ५२, ५६ तथा ६० व्यवसाय में उन्नति कारक रहते हैं। आर्थिक क्षेत्र में इसे अपने परिश्रम द्वारा ही सफलता प्राप्त होती है तथा आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। भूमि-भवन आदि के सम्बन्ध में झगड़ा-मुकदमा आदि की सम्भावना बनती है। ये लोग अपनी योजनाओं की सफलता के लिए कठोर परिश्रम करते हैं। परिवारीजनों से ~~सम्बन्ध~~ सामान्यतः अच्छे बने रहते हैं।

(६२९) – इस जन्मलग्न में उत्पन्न मनुष्य साँवले रंग का, हृष्ट-पुष्ट, घुँघराले बाल, गोल चेहरा तथा साहसी स्वभाव का होता है। यह कठिन-से-कठिन परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनालेने में समर्थ होता है, परन्तु ऐसी आलसी प्रकृति का भी होता है कि जबतक सिर पर ही काम न आ जाय, तब तक उसके विषय में सोचता भी नहीं है। यह संशयालु स्वभाव का तथा सभी के प्रति चौकन्ना रहने वाला होता है। यह जिसको अपना लेता है, उसके प्रति सदैव विश्वासपात्र बना रहता है। यह शत्रुओं को पराजित करने वाला तथा अधिकारियों से मतभेद रखने वाला होता है। विद्या-लाभ उत्तम होता है। विवाह २२, २६ अथवा २८ वें वर्ष में होता है। पत्नी मनोनुकूल मिलने से दाम्पत्य-सुख अच्छा रहता है। पुत्रों की संख्या अधिक होती है। जीवन के २४, २६, २८, ३०, ३२, ३६, ३८, ४२, ४४, ४८, ५०, ५२, ५४ तथा ५६ वें वर्ष व्यवसाय में उन्नतिकारक रहते हैं। जीवन में मकान आदि के लाभ का सुयोग मिलता है, परन्तु भूमि के संबंध में झगड़े होने की संभावना रहती है। आर्थिक-स्थिति अच्छी बनी रहती है।

(६३०)- इस जन्मलग्न में जन्म लेने वाला बालक गौर वर्ण, मध्यम कद, पतली देह, तीखे नाक-नक्श तथा पतले होंठों वाला होता है। यह हँसमुख, चतुर तथा विश्वसनीय मित्र होता है। यह कुदृष्टि से घृणा करता है तथा कर्कश एवं कठोर कार्यों में असफल रहता है। रुचि के प्रतिकूल कार्य करना इन्हें पसन्द नहीं होता। आर्थिक स्थिति मध्यम रहती है तथा प्रकृति से ये कृपण (कंजूस) भी होते हैं। विद्या-लाभ मध्यम होता है। भाइयों से सहयोग नहीं मिलता। विवाह २३, २७ अथवा २९ वें वर्ष में होता है। स्त्री सुन्दरी तथा सुशीला होती है, फलतः दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहता है। सन्तान का सुख भी अच्छा रहता है। जीवन के २५, २७, २९, ३१, ३५, ३७, ३९, ४१, ४३, ४९, ५१, ५३, ५५, ५९ तथा ६१ वें वर्ष व्यवसाय में उन्नतिकारक तथा आर्थिक-लाभ देने वाले सिद्ध होते हैं। धार्मिक कार्यों में विशेष रुचि तथा ईश्वर में श्रद्धा रहती है। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय से अधिक लाभ होता है। माता-पिता अन्य परिवारी जनों से सम्बन्ध सामान्य रहते हैं। इस का जीवन सामान्यतः सुखपूर्वक बीतता है तथा आयु पूर्ण होती है।

(६३१) – इस जन्मलग्न में उत्पन्न बालक सुनहरे गेहुँआ रंग का, मध्यम कद, तीखे नाक-नक्श, पतले होंठ तथा हँसमुख चेहरे वाला होता है। यह मित्रों का प्रिय होता है तथा रचनात्मक कार्यों में गहरी रुचि रखता है। अपने वस्त्रों तथा शारीरिक-ढंग पर विशेष ध्यान देता है। न्यायप्रियता में इसकी गहरी आस्था रहती है। कला तथा संगीत का प्रेमी, भावना-प्रधान तथा युद्धादि कार्यों से घृणा करता है। यह शान्ति कार्यों में सफल रहता है तथा कठोर परिस्थितियों में शीघ्र घबड़ा जाता है। स्त्रियोचित सुकुमारता, कोमल मातृत्व, प्रेम तथा स्नेह आदि गुणों की प्रमुखता पाई जाती है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होने के कारण आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। विद्या का यथेष्ट लाभ होता है। विवाह २३ अथवा २७ वें वर्ष में होता है। पत्नी सुशीला तथा गुणवती मिलती है। सन्तान से सहयोग मिलता है, परन्तु सन्तान-हानि भी सम्भव है। वर्ष २५, २७, २९, ३१, ३३, ३५, ३७, ३९, ४१, ४३, ४७, ४९, ५१, ५३, ५५, ५९ तथा ६१ व्यवसाय में उन्नति कारक रहते हैं। सवारी तथा मकान का सुख मिलता है।

(६३२) – इस सूर्य कुण्डली में जन्म ग्रहण करने वाला मनुष्य हल्के साँवले रंग का, मध्यम कद कुछ लम्बाई लिए, आकर्षक तथा सुन्दर व्यक्तित्व, दूसरों के मन की बात पहिचान लेने वाला तथा नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में अधिक रुचि लेने वाला होता है। विद्यालाभ यथेष्ट रहता है। विवाह २४ अथवा २८ वें वर्ष में होता है तथा दाम्पत्य एवं सन्तान-सुख अच्छा प्राप्त होता है। पुत्रों से जातक को आर्थिक-लाभ होता है तथा माता से भी धन-लाभ होना सम्भव है। स्त्री सुन्दरी, सुशीला तथा गुणवती होती है। जीवन के २२, २४, २६, २८, ३०, ३२, ३४, ३८, ४०, ४२, ४४, ४६, ५०, ५२, ५४, ५६ तथा ६२ वें वर्ष व्यवसाय तथा आर्थिक दृष्टि से उन्नति कारक होते हैं। आमदनी के अनेक अवसर मिलते हैं, तथापि खर्च इतना बढ़ा-चढ़ा रहता है कि उसके कारण जीवन में आर्थिक-असन्तुलन निरन्तर बना रहता है। भूमि तथा मकान आदि का योग बनता है। पिता तथा भाई-बहिनों से सम्बन्ध सामान्य रहते हैं। धर्म-कर्म में रुचि बनी रहती है। शरीर प्रायः स्वस्थ रहता है तथा दीर्घायु प्राप्त होती है।

भृ० सं० ३२८ — कु० र०

(६३३) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य गौर वर्ण, लम्बे चेहरे का, स्वस्थ शरीर तथा शान्त स्वभाव का होता है। न्याय के प्रति इसका विशेष झुकाव रहता है एवं अन्याय का खुलकर विरोध करता है। सत्यवादिता तथा गरीबों के प्रति दयालुता इसके विशिष्ट गुण होते हैं। निःस्वार्थ सेवा एवं परोपकार के काम में यह अग्रणी रहता है। वणिक् वृत्ति प्रधान ऐसे जातक नित्य धन-संचय में प्रवृत्त रहते हैं। आर्थिक-दृष्टि से इनका जीवन उन्नतिशील बना रहता है। इसकी आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं। भूमि से भी इसे धन का लाभ मिलता है। माँ से भी आर्थिक-लाभ होता है। पुत्रों से भी सहयोग प्राप्त होता रहता है। विद्याध्ययन में रुकावटें आती हैं तथापि बुद्धि बहुत तीव्र होती है। विवाह २४ वर्ष की आयु में होना सम्भव है। स्त्री सुन्दरी, सुशीला तथा गुणवती होती है, अतः दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। वर्ष २२, २४, २६, २८, ३२, ३६, ३८, ४०, ४४, ४८, ५०, ५२, ५४, ५८, ६२ तथा ६४ में व्यवसाय की उन्नति होती है। शरीर स्वस्थ रहता है तथा दीर्घायु प्राप्त होती है।

(६३४) - इस जन्मकुण्डली में पैदा हुआ बालक मध्यम कद, गौर वर्ण, सुन्दर नाक-नक्शा वाला तथा पतले शरीर का होता है। यह वाक्पटु, न्याय तथा आदर्श को सर्वोपरि महत्व देने वाला, अनीतिपूर्ण एवं अधार्मिक कार्यों से दूर रहने वाला तथा सत्य एवं ईमानदारी का पक्षधर होता है। विद्या, बुद्धि का श्रेष्ठ लाभ होता है तथा व्यावसायिक-क्षेत्र में आशातीत सफलता प्राप्त होती है। भूमि तथा मकान आदि से भी इसे लाभ प्राप्त होता है। विवाह २४ अथवा २८वें वर्ष में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुलक्षणा होती है, फलतः दाम्पत्य-सुख अच्छा बना रहता है। प्रथम सन्तान कन्या होती है तथा पुत्रों से भी आर्थिक-लाभ प्राप्त होता रहता है। वर्ष २२, २४, २६, २८, ३०, ३२, ३४, ३८, ४०, ४२, ४४, ५० तथा ५४ व्यवसाय में उन्नतिकारक तथा आर्थिक लाभप्रद सिद्ध होते हैं। वर्ष २९ तथा ६१ स्वास्थ्य के प्रति चिन्ताकारक रहते हैं। माता, पिता तथा भाई-बहिनों से अच्छे सम्बन्ध बने रहते हैं। समाज में मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है तथा धर्म एवं ईश्वर भक्ति में मन लगा रहता है। आयु दीर्घ प्राप्त होती है तथा जीवन सुखी बीतता है।

(६३५)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य स्थूल-शरीर वाला, साँवले रंग का, साहसी, क्रूर-स्वभाव का, शत्रुओं का मर्दन करने वाला, संगीत-प्रिय, तथापि धर्म-प्रिय तथा मातृ-भक्त होता है। पर शत्रुता को सहज ही नहीं भूलता तथा अवसर मिलते ही बदला लेता है। यह अत्यन्त पराक्रमी होता है तथा पराक्रम द्वारा ही भाग्य की उन्नति करता है। यह मित्रता स्थापित करने में सिद्ध हस्त होता है, परन्तु गहरी-से-गहरी मित्रता को भी क्षणिक क्रोधावेश में तोड़ डालता है। आर्थिक-दृष्टि से जीवन कष्टप्रद रहता है तथा अनेक बार ऋण-ग्रस्तता के अवसर भी आते हैं। वर्ष २६ तथा ३० आर्थिक-स्थिति के लिए विशेष चिन्ताजनक रहते हैं। विद्याध्ययन में रुकावटें आती हैं। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। सन्तान तथा दाम्पत्य-सुख उचित प्राप्त होता है। वर्ष २३, २७, २९, ३१, ३५, ३९, ४१, ४३, ४७, ५१, ५३, ५५ तथा ५८ व्यवसाय में आर्थिक लाभकारक होते हैं। भाइयों से सहयोग मिलता है तथा स्वपराक्रम से मकान का योग भी बनता है। वायु-विकार होना निश्चित है।

(६३६)- इस स्थिति कुण्डली में उत्पन्न हुआ बालक गेहुँए रंग का, पराक्रमी, साहसी, हास्य-प्रिय, स्थूल-शरीर वाला तथा दूसरों को सहज ही आकर्षित कर लेने की शक्ति से सम्पन्न चुम्बकीय व्यक्तित्व वाला होता है। यह क्रूर स्वभाव का तथा शत्रुओं का मर्दन करने में सदैव अग्रसर रहता है। यह ऐसा अवसरवादी भी होता है कि अपनी गरज पड़ने पर सामने वाले के पाँव छू लेने में भी संकोच नहीं करता। यह विद्या-बुद्धि में तीव्र रहता है। विवाह २५ अथवा २९ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी हठीले स्वभाव की मिलती है, अतः दाम्पत्य-सुख मध्यम रहता है। सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक होती है। आयु के २३, २५, २७, २९, ३१, ३५, ३९, ४१, ४३, ४७, ५१, ५३, ५५ तथा ५९ वें वर्ष व्यवसाय एवं आर्थिक-स्थिति में उन्नति कारक होते हैं। वर्ष ३० आर्थिक-दृष्टि से चिन्ताजनक रहता है। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी में इन्हें अधिक सफलता मिलती है। माता-पिता तथा भाई-बहिनों से सम्बन्ध सामान्यतः अच्छे बने रहते हैं, परन्तु किसी से सहयोग प्राप्त नहीं होता। शारीरिक स्वास्थ्य प्रायः उत्तम बना रहता है तथा पूर्णायु प्राप्त होती है।

(६३७)– इस द्विर्ध कुण्डली का स्वामी मनुष्य साँवले रंग का, हृष्ट-पुष्ट, विश्वासी, मातृ-भक्त, गुरु-प्रिय तथा शत्रुओं का मर्दन करने वाला, परन्तु कान का कच्चा होता है। यह दूसरों पर शीघ्र विश्वास कर लेता है, फल स्वरूप हानियाँ उठानी पड़ती हैं। यह स्वभाव से क्रोधी, झुंझलाहट के रूप में बातें करने वाला तथा गोपनीयता का प्रदर्शन करने वाला होता है। अवसरवादी होने के कारण मतलब के समय शत्रु के पाँव भी छू सकता है। परन्तु बदला लेने की भावना इसके मन में निरन्तर पलती रहती है। मित्रता स्थापित करने में यह सिद्धहस्त होता है तथा सत्य को झूठ सिद्ध करने में पारंगत होता है। विद्याध्ययन में कमी रहती है। विवाह बड़ी आयु में होता है। स्त्री क्रोधी स्वभाव की मिलती है तथा उसकी ओर से चिन्ता बनी रहती है। पुत्रों की संख्या अधिक होती है। वर्ष २३, २५, २७, २९, ३१, ३३, ३५, ३९, ४१, ४३, ४७, ५१, ५३, ५५, ५९ तथा ६४ व्यवसाय में उन्नति कारक रहते हैं। २९वां वर्ष स्वास्थ्य के लिए कष्टप्रद रहता है। आर्थिक स्थिति सामान्य होती है।

(६३८)– इस द्विर्ध कुण्डली में जन्म ग्रहणकर्ता बालक गौर वर्ण, स्थूल शरीर, उन्नत एवं विस्तृत ललाट वाला, मोटे होंठ तथा घुंघराले बालों वाला, शान्ति-प्रिय, अपने लक्ष्य की ओर निरन्तर बढ़ने वाला, चुस्त, फुर्तीला तथा कार्य कुशल होता है। आर्थिक-दृष्टि से इसका जीवन उन्नतिशील बना रहता है। आमदनी के एक से अधिक साधन होते हैं। परिश्रम द्वारा धन-संचय करके यह भूमि, भवन तथा सवारी आदि का सुख प्राप्त करता है। विद्या का योग उत्तम रहता है। विवाह २२ अथवा २६ वें वर्ष में होता है। स्त्री सुन्दरी, सुशीला, सुशिक्षिता तथा गुणवती होती है। अतः दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहता है। सन्तान का सुख भी अच्छा होता है। पुत्रों की संख्या अधिक रहती है। वर्ष २२, २४, २६, २८, ३०, ३२, ३६, ४०, ४२, ४४, ४८, ५२, ५४, ५६ तथा ६० व्यवसाय में तथा आर्थिक-दृष्टि से उन्नति कारक सिद्ध होते हैं। वर्ष ५७ तथा ६३ स्वास्थ्य के लिए कष्टप्रद रहते हैं। माता-पिता, तथा भाई बहिनों से सामान्यतः अच्छे सम्बन्ध रहते हैं। आयु दीर्घ होती है। जीवन सुख पूर्वक बीतता है।

भू० सं० २०८

कु० र०

(६३९)- इस जन्माङ्ग चक्र में उत्पन्न हुआ प्राणी साँवले रंग, नाटे कद, मोटे होंठ, सुनहरी बालों वाला एवं क्रोधी स्वभाव का होता है। सामान्य हास-परिहास से ही यह चिढ़ जाता है। समय पर कार्य करना इसके स्वभाव में होता है। यह अपने से छोटे तथा बराबरी वालों के साथ आत्मीयता एवं सहृदयता का व्यवहार करता है तथा दुःखी मनुष्य की सहायता करना अपना कर्तव्य समझता है। धर्म के प्रदर्शन से इसे घृणा होती है। दूसरों के मन की बात शीघ्र जान लेने की इसमें क्षमता होती है। भाइयों की अपेक्षा बहिनों की संख्या अधिक होती है तथा उनसे सहयोग भी प्राप्त होता है। विद्याध्ययन ठीक रहता है। विवाह २२ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। आयु के २२, २४, २६, २८, ३०, ३२, ३६, ३८, ४०, ४२, ४४, ४८, ५२, ५४, ५६, ५८ तथा ६० वें वर्ष व्यवसाय में उन्नतिकारक रहते हैं। वर्ष ५७ तथा ६३ स्वास्थ्य की दृष्टि से चिन्ताजनक सिद्ध होते हैं। सन्तान से सहयोग प्राप्त होता है तथा परिश्रम द्वारा आर्थिक-स्थिति उत्तम बनी रहती है।

(६४०)- इस जन्माङ्ग चक्र में शरीर ग्रहण करने वाला मनुष्य गौर वर्ण, कृश शरीर, ऊँचे, लम्बे तथा बलिष्ठ कद वाला, हिरण के समान मुख, लम्बी नाक वाला तथा भीरु स्वभाव का होता है। यह युवतियों को अत्यन्त प्रिय होता है तथा इसके हृदय का रहस्य किसी को पता नहीं चल पाता। इसमें आत्मविश्वास की मात्रा अत्यधिक पाई जाती है तथा अपने कर्तव्यों के प्रति यह जागरूक बना रहता है। यह वातावरण एवं परिस्थिति को पहिचान कर, तदनुरूप स्वयं को ढाल लेने में दक्ष होता है। विद्या का यथेष्ट लाभ होता है। विवाह २३ अथवा २७ वें वर्ष में होता है। स्त्री सुन्दरी तथा सुलक्षणा होती है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। सन्तानों में कन्याओं की संख्या अधिक होती है। वर्ष २३, २५, २७, २९, ३१, ३३, ३५, ३९, ४१, ४३, ४७, ४९, ५३, ५५, ५७ तथा ५९ व्यवसाय के लिए उन्नतिकारक होते हैं। वर्ष ३४ तथा ६४ स्वास्थ्य के लिए चिन्ताजनक रहते हैं। पेट सम्बन्धी रोग होते रहते हैं। आर्थिक-दृष्टि से जीवन उन्नतिशील बना रहता है तथा आकस्मिक लाभ के अवसर भी प्राप्त होते रहते हैं। जीवन सामान्यतः सुखी बीतता है।

भू० सं० — कु० २०

(६४१)– इस सूर्य कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य गौर वर्ण, इकहरे शरीर, लम्बी नाक तथा क्रोधी स्वभाव का एवं युवतियों को प्रिय होता है। यह साहस के बल पर विपरीत परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल बना लेता है तथा लक्ष्य की ओर अग्रसर बना रहता है। यह जीभ का हल्का होता है, अतः इसके मित्रों की संख्या कम रहती है। स्मरण शक्ति दुर्बल रहती है, जिसके कारण जीवन में अनेक बार हानियाँ उठानी पड़ती हैं। भाइयों की अपेक्षा बहिनों की संख्या अधिक होती है। पेट सम्बन्धी बीमारियाँ बनी रहती हैं तथा आर्थिक-स्थिति मजबूत रहती है। विद्या का लाभ ठीक रहता है। सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक होती है। विवाह २१ अथवा २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला मिलती है, अतः दाम्पत्य सुख उत्तम बना रहता है। वर्ष २३, २५, २७, २९, ३१, ३३, ३५, ३९, ४१, ४३, ४५, ४७, ५३, ५५ तथा ५७ आर्थिक दृष्टि से उन्नति कारक रहते हैं। वर्ष २९ विशेष उन्नति कारक रहता है। वर्ष ३४, ५७ तथा ६४ स्वास्थ्य के लिए कष्टकारी होंगे।

(६४२)– इस सूर्य कुण्डली में जन्मा हुआ बालक हल्के साँवले रंग का, दुर्बल शरीर, भीरु-प्रकृति, रहस्यमय स्वभाव का, भूत-प्रेतों पर विश्वास रखने वाला, परिस्थिति के अनुरूप स्वयं में परिवर्तन कर लेनेवाला, समय को पहिचानने वाला तथा युवतियों को प्रिय होता है। इसके मनोभावों का सहज ही पता नहीं लगाया जा सकता। इन्हें अपने जीवन में काफी उतार-चढ़ाव देखने पड़ते हैं। आर्थिक-स्थिति कुछ कमजोर बनी रहती है, क्योंकि इसके खर्च बढ़े-चढ़े रहते हैं। आकस्मिक खर्चों के कारण अनेक बार ऋण-ग्रस्तता के अवसर भी आते हैं। विद्या यथेष्ट प्राप्त होती है। विवाह २३ या २७ वें वर्ष में होता है। पत्नी के विषय में सौभाग्यशाली रहते हैं, दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। सन्तानों से कोई सहयोग नहीं मिलता तथा उनके विषय में चिन्ता बनी रहती है। वर्ष २३, २५, २७, २९, ३१, ३३, ३५, ३९, ४१, ४३, ४५, ४७, ५२, ५५ तथा ५७ व्यवसाय में उन्नति कारक होते हैं। वर्ष ६४ स्वास्थ्य के लिए चिन्ता कारक रहता है। सब काम किसी प्रकार से हो जाते हैं।

(६४३) - इस सूर्य कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य साँवले रंग का, सुन्दर तथा आकर्षक चेहरे वाला, विनम्र स्वभाव का, मधुरभाषी, लम्बे और पतले शरीर का तथा मित्रता स्थापित करने में अत्यन्त कुशल होता है। यह स्वभाव से साहसी तथा पराक्रमी होता है। इसकी स्मरणशक्ति तीव्र होती है तथा समय एवं नियम के अनुसार काम करना इसे पसन्द होता है। आर्थिक-दृष्टि से जीवन उन्नतिशील है तथा पैतृक-सम्पत्ति का लाभ भी मिलता है। माता से विशेष स्नेह-सहयोग नहीं रहता। सवारी आदि का सुख प्राप्त होता है। विद्या-लाभ मध्यम रहता है। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी में अधिक सफलता मिलती है। विवाह २२, २४ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री सुन्दर, परन्तु क्रोधी-स्वभाव की होती है, तथापि दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहता है। वर्ष २२, २४, २६, २८, ३०, ३२, ३४, ३८, ४२, ४४, ४६, ५०, ५२, ५४, ५६ एवं ५८वें वर्ष व्यवसाय में उन्नतिप्रद रहते हैं। वर्ष २१, ३३ तथा ५७ आर्थिक दृष्टि से तथा वर्ष ६४ स्वास्थ्य के लिए चिन्ताकारक रहते हैं।

(६४४) - इस सूर्य कुण्डली वाला जातक हल्के गेहुंए रंग का, आकर्षक चेहरे वाला, स्वस्थ शरीर एवं मित्रता स्थापित करने में कुशल होता है। यह स्वभाव से साहसी तथा पराक्रमी होता है। यह शंकालु प्रकृति का तथा किसी पर सहसा विश्वास न करने वाला भी होता है। यह सर्वदा चौकन्ना बना रहता है। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी में इसे विशेष सफलता मिलती है। परन्तु अधिकारी वर्ग से इसकी पटरी नहीं बैठती। विद्या का यथेष्ट लाभ होता है। विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी विनम्र-स्वभाव की होती है, अतः दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहता है। सन्तानों की ओर से कुछ चिन्ता रहती है। वर्ष २२, २४, २६, २८, ३०, ३२, ३४, ३८, ४२, ४४, ४६, ४८, ५०, ५४, ५६ तथा ५७ व्यवसाय में उन्नतिकारक सिद्ध होते हैं तथा वर्ष ५९ एवं ६५ स्वास्थ्य के लिए चिन्ताजनक रहते हैं। निजी मकान प्राप्ति का योग ४९वें वर्ष में बनता है। आकस्मिक खर्चों के कारण आर्थिक-स्थिति कमजोर बनी रहती है।

(६४५) – इस सूर्य कुण्डली में उत्पन्न हुआ जातक गौरवर्ण, कुछ लम्बाई लिये मध्यम कद वाला, सुन्दर तथा आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न एवं शान्तिप्रिय होता है। आर्थिक दृष्टि से उन्नतिशील होते हुए भी धन का संचय अधिक नहीं हो पाता। यह स्नेह, सौजन्य तथा मधुभाषिता जैसे गुणों से युक्त तथा दूसरों की सहायता करने में अग्रणी होता है, समाज-सेवा के लिए सदैव तत्पर एवं नियमानुसार कार्य करने में रुचि रखता है। मित्रता-स्थापित करने में सिद्धहस्त होता है। इनका वक्षःस्थल कुछ कमजोर होता है तथा फेफड़ों से सम्बन्धित रोग होने की सम्भावना रहती है। वायु-विकार होना भी सम्भव है। विद्या-लाभ यथेष्ट होता है। विवाह २२ अथवा २४ वर्ष की आयु में होना सम्भव है। स्त्री सुन्दरी तथा सुशीला मिलती है। दाम्पत्य-सुख उत्कृष्ट रहता है। पुत्रों से सुख-सहयोग मिलता है। वर्ष २२, २४, २६, ३०, ३२, ३४, ३८, ४२, ४४, ४६, ५०, ५४, ५६ तथा ५८ व्यवसाय के लिए उन्नतिकारक रहते हैं। वर्ष ४५ आर्थिक-दृष्टि से कष्टप्रद रहता है। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है।

(६४६) – इस सूर्य कुण्डली वाला मनुष्य गौरवर्ण, सुन्दर, मध्यम कद, तीखे नाक-नक्श, इकहरे बदन वाला तथा मृदुभाषी होता है। धर्म के प्रति श्रद्धालु, ईश्वर के अगाध विश्वास रखने वाला तथा अन्यों के प्रति सहानुभूति पूर्ण होता है। यह एकान्तप्रिय, दूसरों पर विश्वास न करने वाला, अपने किए हुए उपकार को भूल जाने वाला तथा सामाजिक रूढ़ियों एवं परम्पराओं का कड़ाई के साथ पालन करने वाला होता है। आर्थिक-दृष्टि से इसकी स्थिति मध्यम रहती है। विलासिता एवं मनोरंजन की वस्तुओं पर इसका खर्च अधिक होता है। भाइयों से इसे सहयोग नहीं मिलता तथा बहिनों की संख्या अधिक होती है। सवारी तथा मकान का सुख प्राप्त होता है, विद्यालाभ मध्यम रहता है। विवाह २३ अथवा २५ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। जीवन के २३, २५, २९, ३२, ३३, ३५, ३९, ४३, ४७, ५२, ५३, ५५ तथा ५९ वें वर्ष व्यवसाय में उन्नति कारक सिद्ध होते हैं। सन्तान से सुख-सहयोग मिलता है। जीवन सामान्यतः सुख-शान्ति पूर्वक व्यतीत होता है।

भु० सं० ३०७

(६४७)- इस सूर्य कुण्डली में उत्पन्न जातक मध्यम कद, दुबले-पतले शरीर एवं तीखे नाक-नक्शा वाला, सुन्दर, मधुरभाषी तथा दूसरों के प्रति सहानुभूति पूर्ण होता है। यह अपने किये हुए उपकार को भूल जाता है तथा ईश्वर पर अगाध श्रद्धा रखता है। इसमें आत्मविश्वास की अधिकता पाई जाती है। यह अपने आत्मविश्वास, परिश्रम एवं धैर्य के बल पर ही जीवन में तरक्की करता है। दूसरों की मदद करना इसके स्वभाव में होता है। इसके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि यह अपने शत्रु को भी मित्र बना लेता है। आर्थिक दृष्टि से इसका जीवन उन्नतिशील बना रहता है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं। विद्यालाभ यथेष्ट होता है। विवाह २३, २५ अथवा २९ वें वर्ष में होना सम्भव है। दाम्पत्य-जीवन सुखमय रहता है। सन्तानों से भी सहयोग मिलता है। वर्ष २३, २७, २९, ३१, ३५, ३९, ४१, ४३, ४५, ४७, ५१, ५३, ५५, ५७ तथा ५८ आर्थिक-उन्नति कारक तथा ३४ एवं ४६ हानिकर होते हैं। वर्ष ६० स्वास्थ्य के प्रति कष्टकारक होता है। आयु मध्यम होती है। कु० २०

(६४८)- इस सूर्य कुण्डली में जन्म लेने वाला मनुष्य हल्के साँवले रंग का, सुन्दर, मध्यम कदवाला, मछली जैसी सुन्दर तथा चंचल आँखों वाला, पतले शरीर का, कार्य-दक्ष, स्वभाव से विनम्र तथा कुछ क्रोधी प्रकृति का होता है। यह सामाजिक रूढ़ियों तथा परम्पराओं का कठोरता से पालन करने वाला एवं सबके प्रति सहानुभूति रखने वाला भी होता है। इसका शत्रु-पक्ष प्रबल होता है, जो परोक्ष में इसके विरुद्ध व्यूह-रचना करता रहता है। आर्थिक-दृष्टि से इसका जीवन मध्यम रहता है तथा धन की कमी से प्रायः चिन्ता बनी रहती है। विद्यालाभ सामान्यतः ठीक रहता है। विवाह २३ अथवा २५ वें वर्ष में होता है। दाम्पत्य सुख अच्छा रहता है। पुत्र का योग २७ वर्ष की आयु में बनता है। वर्ष २३, २५, २७, २९, ३१, ३३, ३५, ३७, ३९, ४३, ४७, ४९, ५१, ५३, ५५ तथा ५९ व्यवसाय के लिए उन्नतिकारक रहते हैं। वर्ष ६५ स्वास्थ्य के लिए चिन्ताजनक रहता है। जीवन में भूमि तथा भवन का सुख भी प्राप्त होता है। आयु मध्यम रहती है।

(६४९)— इस सूर्य कुण्डली में उत्पन्न हुआ मनुष्य साँवले रंग का, क्रोधी स्वभाव का, सुन्दर आँखों वाला, साहसी तथा कठोर-से-कठोर परिस्थिति को भी अपने अनुकूल बना लेने वाला होता है। यह संकटों का डटकर मुकाबिला करता है तथा लड़ाई-झगड़े आदि साहसिक कार्यों में रुचि लेता है। यह स्वतन्त्र निर्णय लेने में समर्थ होता है। शरीर से पतला-दुबला होते हुए भी घोर परिश्रमी होता है तथा विज्ञान एवं मशीनरी के कार्यों में रुचि लेता है। यह प्रेम के क्षेत्र में पूर्ण असफल रहता है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं। आर्थिक-स्थिति उन्नतिशील बनी रहती है। भूमि-मकान आदि का सुख भी मिलता है। विद्या का उत्तम लाभ होता है। विवाह २४ अथवा २६वें वर्ष में होता है। दाम्पत्य-सुख मध्यम रहता है। कन्या की अपेक्षा पुत्र सन्तानें अधिक होती हैं। वर्ष २२, २४, २६, २८, ३२, ३४, ३६, ४०, ४४, ४६, ४८, ५२, ५४, ५६ तथा ५८ व्यवसाय में उन्नति कारक होते हैं। वर्ष ५९ तथा ६७ स्वास्थ्य के लिए कष्टप्रद रहते हैं। धर्म-कर्म में रुचि रहती है। आयु दीर्घ प्राप्त होती है।

(६५०)— इस सूर्य कुण्डली वाला जातक गेहुंए रंग का, कुछ लम्बाई लिए मध्यम क़द का, घुँघराले बालों वाला, पतले शरीर का तथा साहसी प्रकृति का होता है। यह विपरीत परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल बना लेने में सक्षम होता है। यह स्पष्टवादी होने के कारण मुँह पर ही खरी-खरी बातें कहता है। इसे किसी प्रकार का भय नहीं लगता। स्वभाव से क्रोधी होने के कारण इसे लड़ाई-झगड़ा करने में आनन्द आता है। यह स्वयं अपनी योजनानुसार कार्य करता है तथा दूसरों के नियन्त्रण में रहना स्वीकार नहीं कर पाता। आर्थिक दृष्टि से इसका जीवन उन्नतिशील रहता है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक रहते हैं। विद्या के क्षेत्र में लाभ मिलता है। विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य-जीवन सुखमय रहता है तथा पुत्र से भी सहयोग मिलता है। वर्ष २२, २४, २६, २८, ३२, ३४, ३६, ४०, ४४, ४६, ४८, ५२, ५४, ५६ तथा ५८ व्यवसाय में उन्नतिकारक सिद्ध होते हैं। स्त्री की ओर से चिन्ता बनी रहती है। वर्ष ३६ अथवा ४१ में भूमि-लाभ होता है। मशीनी कार्यों में सफलता।

भृ० सं० २०८

कु० २०

(६५१)– इस सूर्य कुण्डली वाला जातक गौरवर्ण, लम्बे कद वाला, सुन्दर नेत्रों वाला, साहसी तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। यह स्वतन्त्र निर्णय लेने में समर्थ होता है तथा कठिन-से-कठिन परिस्थितियों में भी अपने ऊपर नियन्त्रण रखते हुए विपत्तियों का डट कर मुकाबिला करता है। यद्यपि यह शरीर से पतला-दुबला एवं कमजोर दिखाई देता है, तथापि इसमें लड़ने-भिड़ने की सहज प्रवृत्ति पाई जाती है। यह स्पष्टवादी तथा निर्भीक भाव से खरी-खरी बातें कहने वाला होता है। यह किसी की गुलामी अथवा नियंत्रण में रह कर अपना विकास नहीं कर पाता। आर्थिक-स्थिति कमजोर रहती है, यद्यपि आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं, तथापि खर्च बहुत अधिक रहता है। विद्या का लाभ अच्छा होता है। विवाह २२, २४ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। वर्ष २०, २२, २४, २६, २८, ३२, ३४, ३६, ४०, ४४, ४६, ४८, ५०, ५२, ५६, ५८ तथा ६० आर्थिक-उन्नतिकारक होते हैं। वर्ष २३, ३५ तथा ४७ आर्थिक-चिन्ता के तथा वर्ष १२, २५ तथा ६७ स्वास्थ्य-चिन्ता के हैं।

(६५२)– इस सूर्य कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य गौरवर्ण, मध्यम कद, सुन्दर नाक-नक्शा वाला तथा शान्त स्वभाव का होता है। आत्म-विश्वास तथा साहस की भावना अधिक पाई जाती है। यह अपनी हिम्मत के बल पर प्रतिकूल परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल बना लेता है। आर्थिक-दृष्टि से जीवन उन्नतिशील होता है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी यथेष्ट सफलता मिलती है। इसे अपने भाइयों से कोई सहयोग नहीं मिलता। स्व-परिश्रम द्वारा ही यह आर्थिक तथा अन्य क्षेत्रों में उन्नति करता है। विद्या के क्षेत्र में भी इसे पर्याप्त सफलता मिलती है। निजी भूमि, भवन आदि का योग भी रहता है। विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। पुत्रों की अपेक्षा कन्याएँ अधिक होती हैं। बुद्धि तीव्र होती है। वर्ष २२, २४, २६, २८, ३४, ३६, ४०, ४६, ४८, ५२, ५८, ६० तथा ६२ व्यवसाय में उन्नति कारक रहते हैं। समाज में मान-प्रतिष्ठा बनी रहती है। सन्तान से सुख प्राप्त होता है। स्वास्थ्य प्रायः अच्छा बना रहता है।

(६५३) - इस सूर्य कुण्डली में शरीर ग्रहण करने वाला मनुष्य गौर वर्ण, मध्यम कद का, उन्नत ललाट, पुष्ट शरीर साहसी, कर्मठ तथा पराक्रमी होता है। यह बड़े लोगों तथा अधिकारियों को प्रभावित करने की विशेष क्षमता रखता है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं, परन्तु खर्च बढ़ा-चढ़ा होने के कारण आर्थिक-स्थिति कमजोर बनी रहती है। यद्यपि यह पूर्ण व्यावहारिक होता है, तथापि कभी-कभी आपे से बाहर होकर असामाजिकता का परिचय भी दे बैठता है। भाइयों से इसे कोई सहयोग नहीं मिलता। भूमि, भवन आदि का निजी योग रहता है। बुद्धि तीव्र होने के कारण विद्या के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होती है। सन्तानों में कन्याओं की संख्या अधिक रहती है। विवाह २४ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है तथा दाम्पत्य-जीवन चिन्ताजनक बना रहता है। वर्ष २२, २४, २६, २८, ३०, ३४, ३६, ३८, ४०, ४६, ४८, ५०, ५२, ५४, ५८ तथा ६० व्यवसाय अथवा आर्थिक-क्षेत्र में उन्नति दायक होते हैं। आयु पूर्ण होती है, परन्तु ६१वां वर्ष स्वास्थ्य के लिए चिन्ता देता है।

(६५४) - इस सूर्य कुण्डली में उत्पन्न जातक हल्के साँवले रंग का, सुन्दर नाक-नक्शा वाला, दुबले शरीर का, परन्तु साहसी और अत्यन्त पराक्रमी एवं क्रोधी स्वभाव का होता है। यह दिन-रात मेहनत में लगा रहता है तथा संकटों का दृढ़ता पूर्वक सामना करता है। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है। आमदनी का क्षेत्र बढ़ा रहने पर भी खर्च की अधिकता रहती है, फलतः धन-संचय अधिक नहीं हो पाता। भाइयों द्वारा सहयोग प्राप्त होता है। विद्या का लाभ यथेष्ट रहता है, परन्तु उसमें रुकावटें भी आती हैं। विवाह के एक से अधिक अवसर बनते हैं। दाम्पत्य-सुख मध्यम रहता है। स्त्री सुन्दर, परन्तु क्रोधी स्वभाव की होती है। पुत्रों की अपेक्षा कन्याओं की संख्या अधिक होती है। वर्ष २१, २३, २५, २७, २९, ३३, ३५, ३७, ४१, ४५, ४७, ४९, ५१, ५३, ५५, ५७ तथा ६१ व्यवसाय एवं आर्थिक-स्थिति में उन्नति कारक होते हैं। व्यवसाय में हानि के अवसर भी आते हैं। पेट सम्बन्धी रोग एवं वायु-विकार होना सम्भव रहता है। मध्यमायु।

(६५५)- इस सूर्य कुण्डली में उत्पन्न बालक गेहुँए रंग, लम्बे कद, हृष्ट-पुष्ट शरीर तथा सम्मोहक व्यक्तित्व वाला होता है। यह कार्य करने में चतुर तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। यह साहसी तथा पराक्रमी भी होता है तथा साहस के बल पर विपरीत-परिस्थिति को भी अपने अनुकूल बना लेता है। इसे जीवन में कभी उतार-चढ़ाव देखने पड़ते हैं। भाइयों से इसे जीवन में कोई सहयोग नहीं मिलता। आर्थिक-स्थिति कमजोर रहती है तथा ऋण-ग्रस्तता के अवसर भी आते रहते हैं। शत्रु-पक्ष प्रबल रहता है, जिसके कारण आर्थिक-हानि भी उठानी पड़ती है। विद्या का लाभ ठीक होता है। विवाह २३,२५ अथवा २७वें वर्ष में होता है। दाम्पत्य-सुख मध्यम रहता है। वर्ष २३,२५,२७,२९,३१,३३,३५,३७,४१,४६,४७,४९,५४ तथा ५८ व्यवसाय एवं आर्थिक-उन्नति में वृद्धि कारक होते हैं। वर्ष ४८ व्यवसाय की दृष्टि से तथा वर्ष ६२ स्वास्थ्य की दृष्टि से प्रतिकूल सिद्ध होता है। पुत्रों की अपेक्षा कन्याएं अधिक होती हैं। उच्च-शिक्षा होना भी सम्भव है। आयु दीर्घ होती है। जीवन मध्यम सुखी रहता है।

(६५६)- इस सूर्य कुण्डली वाला जातक गौर वर्ण, लम्बे तथा स्वस्थ शरीर वाला, सम्मोहक व्यक्तित्व का धनी, स्वाभिमानी तथा क्रान्ति-प्रिय होता है। यह किसी के समक्ष हार नहीं मानता। पराक्रमी तथा साहसी होने के कारण विपत्तियों का डट कर सामना करता है। यह कामुक-प्रकृति का होता है तथा विपरीत-लिङ्गी के प्रति शीघ्र आकर्षित हो जाता है। इसे पढ़ने का विशेष शौक होता है तथा विद्या के क्षेत्र में प्रमुखता प्राप्त कर, अनेक भाषाओं का ज्ञान अर्जित करता है। विवाह २३ अथवा २५ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री सुन्दरी तथा सुशीला होती है, अतः दाम्पत्य-सुख उत्कृष्ट रहता है। पुत्रों की अपेक्षा कन्याएं अधिक होती हैं। भाइयों से सहयोग प्राप्त होता है। वर्ष २१,२५,२७,२९,३३,३४,३५,३७,३९,४१,४५,४७,४९,५३,५७,५९ तथा ६१ में व्यवसाय की तरक्की होती है। वर्ष ४८ आर्थिक-दृष्टि से कष्टप्रद रहता है। वर्ष ३२ तथा ६२ स्वास्थ्य के लिए खराब सिद्ध होते हैं। आर्थिक-दृष्टि से जीवन उन्नतिशील बना रहता है। समय सुख से बीतता है।

(६५७)- इस सूर्य कुण्डली में जन्मा हुआ मनुष्य गौरवर्ण, लम्बे कद का, उन्नत ललाट, कार्य करने में चतुर, चपल स्वभाव का तथा अपनी बातों से अनजान व्यक्ति को भी अपना बना लेने की कला में सिद्ध-हस्त होता है। इसके मुँह पर काले रंग का तिल होता है, चेहरा लम्बा होता है तथा विपरीत-लिङ्ग के प्रति इसका विशेष आकर्षण होता है। अर्थ (धन) कमाने में पटु होने के कारण यह येन-केन प्रकारेण अर्थ-संचय कर, अपनी आर्थिक-स्थिति को मजबूत बना लेता है, परन्तु बाद में खर्चों की वृद्धि हो जाने से खजाने में कमी आ जाती है। राजनीतिक-क्षेत्र में इसे विशेष सफलता मिलती है। झूठ को सत्य सिद्ध कर दिखाना इसके बाँये हाथ का खेल होता है। इसके जीवन में शत्रु अधिक होते हैं; परन्तु यह अपनी चतुराई द्वारा उनसे भी अपना काम निकाल लेता है। बुद्धि तीव्र होती है। विवाह २५ वर्ष की आयु में सम्भव है। दाम्पत्य एवं सन्तान-सुख उत्तम रहता है। वर्ष २१, २३, २५, २७, २९, ३३, ३७, ३९, ४१, ४५, ४९, ५१, ५३, ५७, ५९ तथा ६१ उन्नति कारक होते हैं।

(६५८)- इस सूर्य कुण्डली में उत्पन्न बालक साँवले रंग का, लम्बाई लिए मध्यम कद का, हृष्ट-पुष्ट, साहसी तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। परिश्रमी और साहसी होने के कारण यह प्रतिकूल परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल बना लेता है। इसकी बुद्धि पर भावनाएँ हावी हो सकती हैं। आर्थिक-दृष्टि से जीवन उन्नतिशील रहता है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं तथा आकस्मिक एवं राज्य-पक्ष से धन-लाभ के अवसर भी मिलते रहते हैं। वाणी कुछ कर्कश होती है। निजी मकान का योग भी बनता है। भाइयों पर धन का खर्च होता है। पुत्रों से सहयोग मिलता है। विवाह का योग २४ अथवा २६ वर्ष की आयु में बनता है, परन्तु एक से अधिक पत्नी होना भी सम्भव है। वर्ष २२, २४, २६, २८, ३०, ३४, ३६, ३८, ४०, ४२, ४६, ४८, ५०, ५२, ५४, ५६, ५८, ६० तथा ६२ व्यावसायिक एवं आर्थिक-उन्नति के लिए अच्छे रहते हैं। वर्ष ४५ तथा ६३ स्वास्थ्य के प्रति चिन्ताजनक रहते हैं। जीवन सामान्यतः सुखपूर्वक बीतता है।

(६५९)– इस सूर्य कुण्डली में उत्पन्न बालक गौरवर्ण, सुन्दर, आकर्षक रूप एवं मध्यम क़द वाला, नुकीली नाक एवं पतले होठों वाला, शान्ति-प्रिय, अत्यन्त कोमल, मधुर, सहिष्णु, विनम्र तथा भावुक प्रकृति का होता है। यह शारीरिक-श्रम की अपेक्षा मानसिक-श्रम को अधिक महत्व देता है। इसमें आत्म-विश्वास तथा साहस की भावना अधिक पाई जाती है। शैक्षणिक अथवा राजनीतिक क्षेत्र में इसे विशेष सफलता मिलती है। कल्पनाशील होने के कारण यह अनेक योजनायें बनाता है तथा उन्हें क्रियान्वित कर लाभ भी उठाता है। यह बातचीत करने में अत्यधिक पटु होता है तथा विपक्ष को प्रभावित करने में समर्थ होता है। इसकी आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं, अतः आर्थिक-स्थिति उत्तम बनी रहती है। कृपण प्रकृति का होने से यह धन का संचय भी खूब कर लेता है। विवाह २४ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य-सुख अच्छा रहता है। पुत्रों की संख्या अधिक होती है। वर्ष २४, २६, २८, ३० ३४, ३८, ४०, ४४, ४८, ५०, ५८ तथा ६२ श्रेष्ठ रहते हैं।

(६६०)– इस सूर्य कुण्डली में जन्म ग्रहण करने वाला मनुष्य गौरवर्ण, लम्बे क़द का, शान्ति-प्रिय, सहिष्णु, सामाजिक-रूढ़ियों को न मानने वाला, ईमानदार, न्याय-प्रिय, साहसी तथा वाक्पटु होता है। इसे विपक्षी को अपने अनुकूल बना लेने की कला में दक्षता प्राप्त होती है। आमदनी अच्छी होती है, परन्तु व्यय की अधिकता के कारण आर्थिक-कोष दुर्बल रहता है। निजी मकान तथा वाहनादि का सुख प्राप्त होता है। विवाह २४ या २६ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री-पक्ष की ओर से कुछ चिन्ता बनी रहती है। सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक होती है तथा पुत्रों से सहयोग भी मिलता है। जीवन के २२, २४, २६, २८, ३०, ३४, ३६, ३८, ४०, ४२, ४६, ४८, ५०, ५४, ५८ तथा ६० वें वर्ष व्यवसाय तथा आर्थिक-स्थिति में उन्नतिकारक होते हैं। ६३ वाँ वर्ष स्वास्थ्य के लिए चिन्ताजनक रहता है। पैतृक-सम्पत्ति के नष्ट होने का योग भी बनता है। समाज में मान-प्रतिष्ठा बनी रहती है। भाई-बन्धुओं से सामान्य सम्बन्ध रहते हैं। जीवन प्रायः सुख से बीतता है।

(६६१) - इस सूर्यकुण्डली का स्वामी जातक हल्के साँवले रंग का, मध्यम कदवाला, नुकीली नाक, सुन्दर चेहरा तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। यह अत्यन्त कोमल, मधुर, विनम्र, सहिष्णु तथा भावुक-प्रकृति का होता है। साहसी तथा सहिष्णु होने के कारण इसे राजनीतिक क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है। न्यायप्रियता तथा सत्यवादिता के लिए यह प्रसिद्ध होता है। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी में इसे विशेष सफलता मिलती है। पैतृक-सम्पत्ति को खर्च कर देने के अवसर भी आते हैं। विद्या-क्षेत्र में पर्याप्त सफलता प्राप्त होती है। विवाह २४, २६ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सांवले रंग की तथा क्रोधी स्वभाव की होती है। स्त्री-पक्ष से चिन्ता बनी रहती है। दाम्पत्य-सुख मध्यम रहता है। ३० वर्ष की आयु में पुत्र-लाभ होता है। भाइयों से लाभ मिलता है। वर्ष २२, २४, २६, २८, ३०, ३४, ३६, ३८, ४०, ४२, ४६, ४८, ५०, ५२, ५४, ५६ तथा ५८ व्यवसाय में उन्नति कारक रहते हैं। ३२ वर्ष बाद भाग्योदय होता है।

(६६२) - इस सूर्य कुण्डली का अधिपति मनुष्य गौरवर्ण, स्वास्थ्यशाली, मध्यम कद, उन्नत वक्ष: स्थल, गोल चेहरा, स्वाभिमानी तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। शत्रुओं का मान-मर्दन करना इसके स्वभाव में होता है। यह स्वयं को प्रत्येक परिस्थिति के अनुकूल ढाल लेने में सक्षम होता है। आर्थिक-स्थिति उन्नति शील बनी रहती है। निजी भूमि, भवन तथा वाहन का सुख मिलता है। भूमि द्वारा आर्थिक-लाभ के अवसर मिलते हैं। विवाह २५ या २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। सन्तान-सुख यथेष्ट मिलता है तथा उनसे आर्थिक-सहयोग भी मिलता है। भाइयों की अपेक्षा बहिनों की संख्या अधिक होती है। वर्ष २५, २७, २९, ३१, ३३, ३५, ३७, ३९, ४१, ४३, ४५, ४७, ४९, ५१, ५३, ५५, ६१ तथा ६३ व्यवसाय एवं आर्थिक-स्थिति में उन्नतिकारक रहते हैं। वर्ष २२, ३४, ४७, ५८ तथा ६४ स्वास्थ्य के लिए कष्टप्रद रहते हैं। पेट संबंधी रोग हो सकते हैं। जीवन सामान्यत: सुखी बीतता है।

(६६३) – इस सूर्य कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य साँवले रंग का, गोल चेहरा तथा हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला, घुँघराले बाल तथा उन्नत वक्षःस्थल वाला एवं क्रोधी स्वभाव का होता है। यह सर्वदा प्रसन्न सा दिखाई देता है, पर इसके हृदय के रहस्य को कोई नहीं जान पाता। यह अपने आपको प्रत्येक परिस्थिति के अनुकूल ढाल लेता है, परन्तु इतना आलसी भी होता है कि जब तक सिर पर काम का बोझ पूरी तरह से ही न आ पड़े, तब तक कुछ करना भी नहीं चाहता। यह जिसको अपना मान ले, उसके लिए सर्वस्व न्यौछावर करने को तत्पर रहता है। यह तुरन्त विश्वास कर लेने की आदत के साथ ही संशयालु प्रकृति के भी होते हैं। आर्थिक-स्थिति बहुत दृढ़ रहती है तथा निजी भूमि, भवन एवं वाहनादि का सुख भी प्राप्त होता है। विद्याध्ययन में कुछ रुकावटें आती हैं। विवाह २१, २५ अथवा २७वें वर्ष में होता है। स्त्री साँवली तथा क्रोधी स्वभाव की होती है। सन्तान से सुख मिलता है। जीवन के २५, २७, २९, ३१, ३३, ३७, ३९, ४१, ४३, ४७, ४९, ५१, ५३, ५५, ५९ तथा ६१वें वर्ष उन्नति कारक रहते हैं।

(६६४) – इस सूर्य कुण्डली में जन्मग्रहण करने वाला बालक हल्के साँवले रंग, मध्यम कद, कुछ लम्बाई लिए चेहरा, सुन्दर नाक-नक्श, पतले होंठ तथा इकहरे शरीर का होता है। यह स्वभाव से झगड़ालू, साहसी तथा परिश्रमी होता है। बहिनों की अपेक्षा भाई अधिक होते हैं। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है। आमदनी की अपेक्षा खर्च बढ़-चढ़ रहता है। निजी भूमि, मकान आदि का सुयोग मिलता है। विवाह २२ अथवा २६वें वर्ष में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुशिक्षिता होती है, अतः दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। विद्याध्ययन रुकावटों के साथ होता है। सन्तानों से तथा भाइयों से सहयोग प्राप्त होता है। पुत्र आज्ञाकारी होते हैं। वर्ष २२, २४, २६, २८, ३०, ३२, ३४, ३६, ३८, ४०, ४४, ४६, ४८, ५०, ५२, ५४, ६०, ६२ तथा ६४ व्यवसाय तथा आर्थिक-स्थिति के लिए उन्नति कारक होते हैं। ठाठ-बाट तथा मनोरंजन पर खर्च अधिक होता है। समाज में मान-प्रतिष्ठा बनी रहती है एवं कीर्ति प्राप्त होती है।

(६६५) - इस सूर्य कुण्डली में उत्पन्न शिशु गौर वर्ण, मध्यम कद, कुछ लम्बाई लिये पतले होंठ वाला, हँसमुख, चतुर तथा शान्ति प्रिय होता है। यह कठोर कार्यों को करने में अक्षम रहता है तथा झगड़ों से घृणा करता है। यह अत्यधिक न्यायप्रिय होता है। स्त्रियोचित सुकुमारता, कोमलता, लज्जा, भावुकता, स्नेह आदि गुण इसमें पर्याप्त मात्रा में पाये जाते हैं। आर्थिक स्रोत अच्छे होते हैं, तथापि खर्च बढ़ा-चढ़ा रहने के कारण धन का अधिक संचय नहीं हो पाता। सवारी, निजी मकान तथा भूमि का सुख भी मिलता है। नौकरी की अपेक्षा व्यापार में अधिक सफलता मिलती है। विद्या का श्रेष्ठ लाभ होता है। विवाह २२ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है। पुत्रों से जीवन में सहयोग मिलता है। वर्ष २४, २६, २८, ३०, ३२, ३६, ३८, ४०, ४२, ४८, ५०, ५२, ५४, ५८ तथा ६० व्यवसाय में उन्नति कारक सिद्ध होते हैं। वर्ष ४९ तथा ६५ स्वास्थ्य के लिए कष्टप्रद रहते हैं। सामान्यतः जीवन सुख-शान्ति पूर्वक व्यतीत होता है।

(६६६) - इस सूर्य कुण्डली में जन्मा हुआ व्यक्ति साँवले रंग का, लम्बा कद, लम्बा चेहरा, क्रोधी, साहसी तथा अत्यधिक आत्मविश्वासी होता है। यह विपरीत परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल बना लेता है। इनके विषय में कोई कुछ भी क्यों न सोचे, परन्तु ये अपनी धुन में मस्त रहने वाले होते हैं। परिश्रमी होने के कारण ये अच्छा धन कमाते हैं, परन्तु खर्च इतने बढ़े-चढ़े रहते हैं कि पैसा इनके पास नहीं टिक पाता। आकस्मिक-लाभ के भी अनेक अवसर आते हैं, परन्तु धन के अभाव के कारण कोई काम नहीं रुक पाता। भाइयों से जीवन में सहयोग प्राप्त होता है। निजी भूमि तथा मकान का सुख भी मिलता है। विवाह २३ अथवा २७ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री साँवली तथा क्रोधी स्वभाव की होती है। विद्याध्ययन में कुछ रुकावटें आती हैं, परन्तु दाम्पत्य एवं सन्तान-सुख उत्तम रहता है। वर्ष २५, २७, २९, ३१, ३३, ३७, ३९, ४१, ४३, ४५, ४९, ५१, ५३, ५५ तथा ५७ व्यवसाय में उन्नति कारक रहते हैं। जीवन सुख से बीतता है।

(६६७) – इस सूर्य कुण्डली वाला जातक गेहुँए रंग का, मुँह पर चेचक के दाग वाला, क्रोधी स्वभाव का, शरीर से कुछ लम्बा तथा पतला होता है। यह दूसरों के हृदय की बात को भाँप लेने में दक्ष होता है तथा ठोकर खाकर भी मुस्कुराता रहता है। यह साहस तथा आत्म-विश्वास के बल पर प्रत्येक परिस्थिति का सामना करता है। दूरदर्शिता इसका विशिष्ट गुण होता है। सुरा, साज-सज्जा तथा विलासिता में इसका धन अधिक खर्च होता है, फलतः आर्थिक-स्थिति कमजोर बनी रहती है तथा कभी-कभी ऋण-ग्रस्तता के अवसर भी आते रहते हैं। यह जिससे एक बार दुश्मनी मान जाय, उससे अन्ततक अपने सम्बन्ध नहीं सुधारता। बदले की भावना प्रबल बनी रहती है। विद्याध्ययन में रुकावटें आती हैं। विवाह 23 अथवा 27 वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य एवं सन्तान-सुख अच्छा रहता है। वर्ष 25, 27, 30, 38, 40, 42, 44, 46, 50, 52, 54, 58 तथा 62 आर्थिक उन्नति कारक होते हैं। दलाली जैसे कार्यों में इन्हें अधिक सफलता मिलेगी।

(६६८) – इस सूर्य कुण्डली में उत्पन्न हुआ मनुष्य गौर वर्ण, लम्बे कद का, स्वस्थ तथा बलिष्ठ शरीर वाला, सुन्दर नाक-नक्शा वाला, शान्ति-प्रिय तथा न्याय एवं आदर्श को विशेष महत्व देने वाला होता है। सत्य, दया, क्षमा आदि सद्गुण इसमें विशेष रूप से पाये जाते हैं। ईश्वर पर अगाध विश्वास तथा धर्म पर पूर्ण निष्ठा रखने वाला होता है। यह स्वपरिश्रम द्वारा भाग्य की उन्नति करता है। आर्थिक-स्थिति उत्तम रहती है तथा आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं। ससुराल-पक्ष से भी धन-लाभ सम्भव है। स्त्री साँवली तथा क्रोधी स्वभाव की होती है। विवाह 23 अथवा 27 वर्ष की आयु में होता है। वर्ष 23, 25, 27, 29, 31, 33, 35, 37, 39, 41, 45, 49, 51, 53 तथा 57 व्यवसाय एवं आर्थिक उन्नति के लिए लाभकर सिद्ध होते हैं। वर्ष 54 स्त्री की ओर से चिन्ताकारक रहता है। यह दूसरों के मन की बात पहिचान लेने में पटु होता है। जीवन सुख-शान्ति पूर्वक व्यतीत होता है।

(६६९) - इस ग्रह कुण्डली वाला मनुष्य साँवले रंग का, लम्बे क़द वाला, किंचित स्थूल शरीर का, क्रोधी स्वभाव का तथा स्वाभिमानी होता है। इसमें बदले की भावना पाई जाती है और अपने शत्रु या विरोधी को कभी क्षमा नहीं कर पाता। यह साहसी तथा क्रूर भी होता है तथा लड़ने-भिड़ने के लिए सदैव तत्पर भी रहता है। सामान्यतः यह शत्रुपक्ष पर हावी बना रहता है, परन्तु अवसर पड़ने पर पाँव छू लेने में भी इसे कोई संकोच नहीं होता। आर्थिक-स्थिति उन्नतिशील रहती है। मकान तथा सवारी का पूर्ण सुख भी मिलता है। माता के प्रति विशेष श्रद्धा रहती है। विद्याध्ययन में रुकावटें आती हैं। विवाह २५ या २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक होती है। वर्ष २२, २६, २८, ३०, ३२, ३४, ३८, ४०, ४२, ४६, ५०, ५२, ५४ तथा ५८ भाग्योदय एवं आर्थिक उन्नति के लिए शुभ सिद्ध होते हैं। वर्ष ५३ आर्थिक कष्टप्रद तथा ५९, ६१ स्वास्थ्य के लिए खराब।

(६७०) - इस ग्रह कुण्डली का स्वामी जातक साँवले रंग का, स्वस्थ शरीर वाला, स्थूल, संगीत-प्रिय, हास्य-प्रिय, मितव्ययी, मातृ-भक्त, क्रोधी, गोल चेहरे वाला, मध्यम क़द वाला तथा शत्रुओं का मान मर्दन करने वाला होता है। यह शत्रुता को सहज ही नहीं भूलता तथा अवसर मिलते ही बदला लेता है। मित्रता स्थापित करने में तथा दूसरों के मन की बात जान लेने में यह सिद्धहस्त होता है तथा सत्य को झूठ सिद्ध कर देने में माहिर होता है। यह अवसरवादी भी होता है तथा अपने मतलब के लिये चाहे जिसके पाँव भी छू सकता है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं, अतः आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। निजी भवन तथा वाहन का सुयोग भी मिलता है। स्त्री सुन्दरी तथा सुशीला होती है। दाम्पत्य-सुख एवं सन्तान-सुख उत्तम रहता है। पुत्र अधिक होते हैं। वर्ष २४, २६, २८, ३०, ३२, ३४, ३६, ३८, ४०, ४२, ४४, ४६, ५०, ५२, ५४, ५६, ५८ तथा ६२ आर्थिक-उन्नतिकारक होते हैं। जीवन सुख से बीतता है।

(६०१)— इस जन्मकुण्डली वाला जातक गौरवर्ण, लम्बे क़द का, सुन्दर नाक-नक्श वाला, साहसी, संग्राम-प्रिय तथा मातृ-भक्त होता है। इसका व्यक्तित्व चुम्बकीय होता है, जिसके कारण स्वरूप यह अनेक लोगों से मित्रता स्थापित करने में सफल हो जाता है। यह कानों का कच्चा होता है तथा दूसरों की बात पर शीघ्र विश्वास कर लेता है, जिसके फलस्वरूप इसे हानि भी उठानी पड़ती है। यह स्वभाव से कुछ उग्र होता है तथा बातचीत में फुसफुसाहट के माध्यम से गोपनीयता का प्रदर्शन भी करता है। आर्थिक-दृष्टि से इसका जीवन उन्नत बना रहता है। ५५ वर्ष की आयु में भूमि तथा भवन का योग बनता है। विद्या का श्रेष्ठ लाभ होता है। विवाह २४ अथवा २६ वें वर्ष में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है। दाम्पत्य एवं सन्तान-सुख उत्तम रहता है। वर्ष ५५, ६१ तथा ६७ स्वास्थ्य के लिए कष्टप्रद तथा वर्ष २६, २८, ३२, ३८, ४२, ४६, ५२, ५४ तथा ५८ व्यवसाय में उन्नति कारक रहते हैं।

(६०२)— इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य मध्यम कद, स्थूल-शरीर, मोटे होंठ वाला, गौरवर्ण तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। यह साहसी तथा समय का पाबन्द होता है। अपने से छोटों तथा बराबरी वालों के साथ इसका व्यवहार आत्मीयता पूर्ण रहता है। इसकी आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में लाभ होता है तथा अपने परिश्रम द्वारा व्यवसाय की उन्नति करते हैं। पैतृक-सम्पत्ति का लाभ भी होता है। विद्या का क्षेत्र कमज़ोर रहता है। विवाह २१ अथवा २५ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री सुन्दरी मिलती है। संतान-पक्ष की ओर से मन चिंतित बना रहता है। पुत्रियों की अपेक्षा पुत्र अधिक होते हैं। पेट संबंधी बीमारियाँ लगी रहती हैं। विद्या-लाभ के क्षेत्र में अनेक बार असफलताओं का सामना करना पड़ता है। वर्ष २३, २५, २७, २९, ३१, ३३, ३५, ३९, ४१, ४५, ४९, ५१, ५३, ५५ तथा ५७ व्यवसाय में लाभप्रद सिद्ध होते हैं।

भु०
सं०
३३२

कु०
२०

(६७३)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी गेहुँए रंग, मध्यम कद, स्थूल शरीर, विस्तृत ललाट तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। यह कार्य-कुशल, स्फूर्तिवान्, निरन्तर अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर तथा हास-परिहास को सहन न करने वाला भी होता है। सादा जीवन, उच्चविचार तथा निरन्तर परिश्रम करते रहना - यही इसके जीवन के आदर्श होते हैं। ईश्वर-भक्ति में इसकी अगाध श्रद्धा होती है। यह विपरीत-लिङ्गी के प्रति विशेष आकर्षित होता है तथा जीवन में एक से अधिक स्त्रियों से संबंध रखता है। इसका विवाह २१ या २५ वर्ष की आयु में पश्चिम दिशा से होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशी-ला, परन्तु कुछ तेज स्वभाव की होती है। सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक होती है तथा सन्तान-पक्ष की ओर से मन चिन्तित भी बना रहता है। वर्ष २६ तथा ६२ स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद रहते हैं। पिता-पक्ष कमजोर रहता है। आर्थिक-पक्ष सुदृढ़ बना रहता है। कृषि, भवन, वाहनादि का सुख मिलेगा।

(६७४)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति गौर वर्ण, लम्बे कद का, सुनहरे केश, इकहरे शरीर का, सुन्दर तथा शान्तिप्रिय होता है। यह दीन-दुःखियों की मदद करता है तथा परिश्रम पर भरोसा रखता है। विपरीत-लिङ्गी के प्रति आकर्षित होता है। विवाह २१, २५ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है। सन्तान का सुख भी उत्तम रहता है। आर्थिक-दृष्टि से इसका जीवन उन्नतिपूर्ण बना रहता है। व्यवसाय द्वारा आर्थिक-लाभ के अनेक अवसर उपलब्ध होते रहते हैं। पुत्रों द्वारा सहयोग मिलता है। निजी भवन, कृषि तथा वाहन की उपलब्धि भी होती है। वर्ष ३० तथा ५४ आर्थिक दृष्टि से चिन्ताजनक रहते हैं। वर्ष २६, ६२ तथा ६८ स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद सिद्ध होते हैं। वर्ष २५, २७, २८, ३१, ३३, ३५, ३७, ३८, ४१, ४५, ४७, ५१, ५५, ५७ तथा ६२ व्यवसाय में लाभप्रद सिद्ध होते हैं। जीवन सुख से बीतता है।

(६७५)- इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य गौर वर्ण, लम्बे कद, इकहरे बदन तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। यह स्वभाव से भीरु होता है तथा वातावरण के अनुरूप स्वयं को ढाल लेने में सक्षम होता है। किस व्यक्ति के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए- इसकी इन्हें जानकारी रहती है। ये आवश्यकता से अधिक प्रदर्शन करते हैं तथा धनाभाव की स्थिति में भी मित्रों के बीच धनी होने का स्वाँग रचते हैं। जीभ पर नियन्त्रण न रख पाने के कारण इनके मित्रों की संख्या कम ही होती है। शिक्षा का लाभ मध्यम रहता है। विवाह २२ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी, सुन्दरी, सुशीला एवं सुशिक्षिता होती है। सन्तान-पक्ष से सन्तोष रहता है। निजी सवारी अथवा मकानादि की उपलब्धि नहीं हो पाती। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। आर्थिक-स्थिति मध्यम होती है। वर्ष ३१ तथा ५५ आर्थिक दृष्टि से हानिप्रद रहते हैं। वर्ष २८, ३६, ४८, ५२ तथा ६० लाभप्रद सिद्ध होते हैं।

(६७६)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी साँवले रंग का, लम्बे कद वाला, स्वस्थ एवं बलिष्ठ शरीर का, क्रोधी स्वभाव का, परिश्रमी, साहसी तथा कठिनतम परिस्थितियों में भी विचलित न होने वाला होता है। ये लोग अपनी जीभ पर नियन्त्रण नहीं रख पाते, अतः इनके संबंध बिगड़ जाया करते हैं। इनमें तुरन्त निर्णय लेने की क्षमता पाई जाती है तथा इनके मन की बात को जान पाना औरों के लिए कठिन रहता है। आर्थिक-दृष्टि से जीवन उन्नतिशील बना रहता है। ये अपना निजी मकान भी बनाते हैं तथा वाहन का सुख भी प्राप्त होता है। भाइयों से इन्हें लाभ रहता है। विवाह का योग २२ अथवा २६ वें वर्ष में बनता है। स्त्री सुन्दर तथा सेवाभावी होती है। सन्तान-सुख भी उत्तम रहता है। ६७ वाँ वर्ष शारीरिक-स्वास्थ्य के लिए अत्यधिक कष्टकारक रहता है तथा वर्ष २४, २६, २८, ३०, ३४, ३६, ४०, ४२, ४६, ५२, ५४ एवं ५८ जीवनमें लाभप्रद सिद्ध होते हैं।

(६७७)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति मध्यम कद, उन्नत-ललाट वाला, गौरवर्ण, साहसी, परिश्रमी तथा रहस्यमय-प्रकृति का होता है। यह शरीर से पतला-दुबला होते हुए भी परिश्रमी होता है तथा परिश्रम के द्वारा ही अपने भाग्य की उन्नति करता है। इसमें शीघ्र निर्णय लेने की क्षमता पाई जाती है। इसे मित्रों से भी सहयोग मिलता रहता है। इसकी बुद्धि तीव्र होती है। इसे एक से अधिक भाषाओं का ज्ञान होता है। विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी तथा सन्तान से सुख-सहयोग की प्राप्ति होती है। शत्रु-पक्ष प्रबल रहता है, तथापि वह हानि पहुँचाने में सफल नहीं हो पाता। इसकी आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ रहती है तथा आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। वर्ष ५५ तथा ६३ स्वास्थ्य के लिए कष्टप्रद रहते हैं। वर्ष २४, २६, ३०, ३४, ३८, ४२, ४६, ४८, ५१, ५३, ५९ तथा ६५ व्यवसाय में उन्नतिकारक सिद्ध होते हैं।

(६७८)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी गेहुँए रंग, मध्यम कद, पतले शरीर वाला तथा कान्ति-प्रिय होता है। यह स्नेह, सौजन्यता एवं अपनेपन से परिपूर्ण मृदुभाषी तथा मित्रता स्थापित करने में कुशल होने के साथ ही कुछ शंकालु-स्वभाव का भी होता है, अतः यह किसी पर एकदम विश्वास न करके सदैव चौकन्ना बना रहता है। इसके गुप्त-शत्रु भी बहुत होते हैं, जो समय-समय पर धोखा देते रहते हैं। विद्या का लाभ मध्यम रहता है। विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है तथा दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहता है। भाइयों से कभी कोई विशेष सहयोग नहीं मिल पाता। ४८ वर्ष की आयु में भूमि तथा भवन का योग बनता है। वर्ष ५६, ५८ तथा ६४ स्वास्थ्य के लिए हानिकर सिद्ध होती हैं। वर्ष २५, २७, २९, ३३, ३८, ४२, ४४, ५०, ५४, ५६ तथा ६१ व्यवसाय में उन्नति कारक रहते हैं। आर्थिक-स्थिति सदैव मजबूत बनी रहती है।

भृ० सं० ८८८

कु० र०

(६७९) - इस जन्मकुण्डली चक्र वाला जातक साँवले रंग का, लम्बे तथा पतले शरीर वाला, आकर्षक-व्यक्तित्व सम्पन्न, परिश्रमी तथा साहसी होता है। मित्रता स्थापित करने में इसे सिद्ध-हस्तता प्राप्त होती है। इसकी उन्नति भी मित्रों की सहायता से ही होती है। यह मधुरभाषी तथा स्वाभिमानी भी होता है, अधिकारी वर्ग से इसकी पटरी कम बैठती है। यह दूसरों की सहायता को तत्पर तथा स्वर्ण ऐश्वर्य पूर्ण जीवन बिताने वाला होता है। इसकी स्मरणशक्ति तीव्र होती है तथा समय की पाबन्दी का इसे विशेष ध्यान रहता है। भूमि, भवन तथा वाहन लाभ के अवसर इसे प्राप्त होते ही रहते हैं। आर्थिक स्थिति बहुत सुदृढ़ रहती है। शिक्षा यथेष्ट होती है। विवाह २६ से २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूला मिलती है। जीवन के २५, २९, ३१, ३३, ३५, ३७, ४१, ४३, ४५, ४९, ५३, ५५ तथा ५७वें वर्ष व्यवसाय में उन्नतिकारक सिद्ध होते हैं। यह समय की कीमत को समझ कर उसका सदुपयोग करता है।

(६८०) - इस कुण्डली चक्र में उत्पन्न मनुष्य गौर वर्ण, सुन्दर नाक-नक्शा वाला, मध्यम कद वाला, मछली जैसी आँखों वाला, पतले शरीर का, पराक्रमी तथा सहानुभूति पूर्ण प्रकृति का होता है। यह सामाजिक परम्पराओं तथा धार्मिक रूढ़ियों का पालन करने वाला, ईश्वर भक्त एवं परोपकारी स्वभाव का होता है। यह सहसा किसी पर विश्वास नहीं करता, अतः इसे विश्वास में ले पाना भी कठिन रहता है। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है। पैतृक-सम्पत्ति पर भाइयों के साथ विवाद होता है तथा उसका नाश भी सम्भव है। विद्या के क्षेत्र में प्रवीणता प्राप्त होती है। विवाह २२, २४ अथवा २८वें वर्ष में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। वर्ष ५३ तथा ६० स्वास्थ्य के लिए चिन्ताजनक रहते हैं। वर्ष २२, २४, २८, ३० ३४, ३८, ४०, ४६, ५०, ५४, ५८ तथा ६० व्यवसाय में उन्नति कारक सिद्ध होते हैं।

(६८१)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति साँवले रंग का, तीखे नाक-नक्श वाला, मछली जैसी सुन्दर आँखों वाला तथा मध्यम कद का होता है। यह शान्ति-प्रिय तथा सहानुभूति पूर्ण होता है। दूसरों की सहायता करने को सदैव तत्पर रहता है। इसका शत्रु-पक्ष भी प्रबल होता है, जो इसके प्रत्येक कार्य में रोड़े अटकाता है। पैतृक-सम्पत्ति का लाभ तो होता है, परन्तु वह नष्ट हो जाती है। यह अपने आत्म-विश्वास के बल पर ही जीवन में उन्नति करता है। भूमि-भवन आदि के द्वारा आर्थिक-लाभ के अवसर भी प्राप्त होते रहते हैं। शिक्षा का लाभ यथेष्ट रहता है। विवाह २२ अथवा २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूला मिलती है, अतः दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी लाभप्रद सिद्ध होती है। भाग्योदय रुक-रुक कर होता है। आयु दीर्घ होती है, परन्तु कभी-चोट आदि लगने की सम्भावना भी रहती है। वर्ष ४५ तथा ५७ आर्थिक-दृष्टि से कष्टप्रद रहते हैं।

(६८२)- इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य गेहुँए रंग का, मध्यम कद तथा इकहरे शरीर का, पैनी दृष्टि एवं क्रोधी स्वभाव का तथा झगड़ालू प्रकृति का होता है। यह बड़ा पराक्रमी तथा साहसी होता है एवं विपरीत-परिस्थितियों का भी डट कर मुकाबिला करता है। स्पष्टवादी होने के कारण यह खरी बातें कहता है। आर्थिक-दृष्टि से जीवन उन्नतिशील बना रहता है। भाइयों से सहयोग प्राप्त होता है। इसे मानसिक-परेशानियाँ अधिक रहती हैं, यद्यपि कुछ अत्यन्त प्रबल होती हैं। विद्या का केवल लाभ होता है। विवाह २३, २५ अथवा २८ वें वर्ष में होता है। पत्नी मनोनुकूला मिलती है तथापि यह अधिक कामुक-प्रकृति का होने के कारण पर-स्त्रियों की ओर भी आसक्त होता है। आर्थिक दृष्टि से ३४ तथा ३६ वें वर्ष कष्टप्रद तथा २३, २५, २८, ३१, ३२, ३८, ४३, ४७, ४८, ५१, ५२, ५७ तथा ५८ वें वर्ष लाभप्रद रहते हैं। शरीर नीरोग रहता है। आयु दीर्घ होती है।

(६८३) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी साँवले रंग, घुँघराले काले केश तथा नाटे कद वाला होता है। यह स्वभाव से क्रोधी तथा कठिनतम परिस्थितियों में भी स्वयं पर नियन्त्रण रखने वाला, साहसी तथा धीर-वीर होता है। यह जिनसे प्रेम मानते हैं, उनके लिए अपना सर्वस्व भी न्यौछावर कर देते हैं। दुश्मन अथवा विरोधियों से लड़ने-भिड़ने में इन्हें आनन्द आता है। ये स्पष्टवादी तथा खरी बातें कहने वाले होते हैं। परन्तु अपना काम निकालने के लिए चापलूसी करने में भी कुशल होते हैं। इनकी आय के स्रोत एक से अधिक होते हैं, अतः आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। विद्या-लाभ सामान्य रहता है। विवाह २३ अथवा २५ वर्ष में होता है। एक से अधिक पत्नियाँ अथवा उप-पत्नियाँ संभव हैं। इन्हें सन्तान-सुख उत्तम रहता है। पुत्र अधिक होते हैं। विपरीत-लिंगी की ओर आकर्षित होना तथा उन पर विश्वास करना इनके स्वभाव में होता है। आयु के २७, ३१, ४३, ४८, ५५ तथा ५८वें वर्ष उन्नति कारक होते हैं।

(६८४) - इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य गौरवर्ण, मध्यम कद, उन्नत ललाट, कटीली आँखें, घुँघराले केश, हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला, मृदुभाषी तथा शान्ति प्रिय होता है। इसका मन तथा मस्तिष्क - दोनों पर नियन्त्रण रहता है, अतः यह जीवन में शीघ्र उन्नति करता है। आत्मविश्वास की अधिकता तथा विपरीत-परिस्थितियों का दृढ़तापूर्वक सामना करने की सामर्थ्य इसमें पाई जाती है। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी से इसे विशेष लाभ मिलता है। शिक्षा यथेष्ट प्राप्त होती है। विवाह २२, २४ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूला मिलती है, परन्तु सन्तान-पक्ष की ओर से चिन्ता बनी रहती है। सन्तान-हानि के योग भी बनते हैं। भूमि, भवन तथा वाहन का योग भी बनता है। आर्थिक-स्थिति उत्तम रहती है। वर्ष २२, २६, ३०, ३६, ४२, ४८, ५४, ५८ तथा ६० व्यवसाय में लाभप्रद सिद्ध होते हैं। शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहता है तथा दीर्घायु प्राप्त होती है।

भृ० सं० ८८५

(६८५)- इस जन्माङ्ग-चक्र का स्वामी गेहुँए रंग का, मध्यम कद तथा हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला, साहसी, कर्मठ तथा चुम्बकीय व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। यह स्वभाव से अहंकारी तथा आत्मविश्वासी होता है। बड़े अफसरों तथा बड़े आदमियों को प्रभावित करने में यह निपुण होता है। आय के साधन अच्छे होते हैं, परन्तु खर्च भी बढ़ा-चढ़ा रहता है, अतः आर्थिक-स्थिति मध्यम ही बनी रहती है। यह अपने स्वार्थ हेतु चापलूसी करने में भी कुशल होता है। इसे भाइयों से सहयोग नहीं मिलता, परन्तु निजी भवन का योग बनता है। विद्या-क्षेत्र मध्यम रहता है। विवाह २३ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, परन्तु हठी स्वभाव की होती है। सन्तान-पक्ष की ओर से भी चिन्ता बनी रहती है। जीवन के वर्ष २३, २८, ३३, ३५, ३९, ४१, ४८, ५१, ५२ तथा ५८ आर्थिक-दृष्टि से लाभप्रद रहते हैं। शरीर प्रायः स्वस्थ बना रहता है तथा आयु ७५ वर्ष के लगभग होती है।

(६८६)- इस जन्माङ्ग-चक्र का अधिपति गौर वर्ण, सुन्दर नाक-नक्शा वाला, स्वस्थ, हृष्ट-पुष्ट शरीर का, परिश्रमी, बुद्धिमान, प्रियदर्शी, पूर्ण व्यावहारिक तथा शान्ति-प्रिय होता है, तथापि कभी-कभी आपे से बाहर निकल कर असामाजिकता का परिचय भी दे उठता है। जिसके कारण इसे हानि उठानी पड़ती है। यह स्वयं को अत्यधिक योग्य समझता है तथा अधिकारी वर्ग को प्रभावित करने में भी सक्षम हो जाता है। इसका विवाह २३ अथवा २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूला मिलती है। सन्तानों में कन्याओं की संख्या अधिक होती है। आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ तथा उन्नतिपूर्ण बनी रहती है। विद्या का लाभ यथेष्ट होता है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं। निजी भूमि, भवन तथा वाहनादि का सुख भी उपलब्ध होता है। वर्ष २२, २६, ३२, ३४, ३८, ४४, ४६, ४८, ५२, ५६ तथा ५८ व्यवसाय में उन्नतिकारक रहते हैं। आयु दीर्घ प्राप्त होती है।

कु० १०

भृ० सं० ३८८

कु० १०

<u>(६८७)</u> - इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य गौरवर्ण, स्वस्थ, हृष्ट-पुष्ट, मध्यम कद वाला, परिश्रमी तथा शान्ति-प्रिय होता है। यह मृदुभाषी, कर्मठ, साहसी एवं दिन-रात परिश्रम करने वाला तथा कठिन-से-कठिन परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल बना लेने वाला होता है। इसको धन कमाने में निपुणता प्राप्त है, परन्तु इसके खर्च बढ़े-चढ़े रहते हैं; अतः आर्थिक-स्थिति मध्यम ही रहती है। इसे अपनी माता से विशेष लगाव रहता है और उसके लिए खर्च भी अधिक करता है। विद्या का लाभ कुछ रुका-वटों के साथ होता है। भाइयों से सहयोग प्राप्त होता रहता है। विवाह २४ या २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर तथा क्रोधी स्वभाव की होती है, तथापि दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहता है। पुत्रों से आर्थिक सहयोग मिलता है। पेट संबंधी रोग होना सम्भव है। जीवन के २०, २४, २८, ३०, ३४, ३८, ४०, ४८, ५० तथा ५६वें वर्ष आर्थिक-दृष्टि से लाभप्रद होंगे।

<u>(६८८)</u> - इस कुण्डली का स्वामी जातक गौरवर्ण, मध्यम कद वाला, कर्मठ, साहसी तथा शान्त-स्वभाव का होता है। यह विपरीत-लिङ्गी के प्रति विशेष आकर्षित रहता है। का-मुक प्रवृत्ति का होने के कारण इसके एक से अधिक स्त्रियों के साथ प्रेम-सम्बन्ध बने रहते हैं। आर्थिक-स्थिति उत्तम रहती है। पैतृक-सम्पत्ति का लाभ भी होता है। भाइयों से सहयो-ग मिलता है। बहिनों की संख्या कम रहती है। निजी भवन तथा वाहन का सुख भी प्राप्त होता है। विद्या-लाभ उत्तम होता है। विवाह २४ या २६ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य-सुख अच्छा रहता है। सन्तानों में कन्याओं की संख्या अधिक होती है। पत्नी सुन्दर, सुशील परन्तु कुछ जिद्दी स्वभाव की होती है। ६१वां वर्ष स्वास्थ्य के लिए विशेष कष्टप्रद रहता है। वर्ष २२, २६, ३०, ३४, ३६, ४२, ४८, ५२, ५४, ५८ तथा ६० व्यवसाय में उन्नति कारक रहते हैं।

भृ० सं० ८८२०

(६८८९)- इस जन्माङ्ग चक्र का स्वामी गौर वर्ण, मनोहर नेत्र, लम्बे कद, स्वस्थ एवं बलिष्ठ शरीर तथा कार्य-कुशल होता है। इसका व्यक्तित्व इतना आकर्षक होता है कि अनजान व्यक्ति भी इसके पक्ष में सहज ही हो जाता है। इसका चेहरा लम्बा होता है तथा उस पर तिल का चिह्न होता है। यह स्त्रियों को सहज ही अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। कामुक प्रवृत्ति का होने के कारण इसके एक से अधिक स्त्रियों से सम्पर्क होते हैं। भाइयों की अपेक्षा बहिनों की संख्या अधिक होती है। अध्यापन एवं गणित संबंधी कार्यों में इसकी विशेष रुचि रहती है। इसे निजी भवन तथा वाहन का सुख प्राप्त होता है। शिक्षा के क्षेत्र में कुछ रुकावटें आती हैं। विवाह २४ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, परन्तु क्रोधी स्वभाव की होती है। पेट से सम्बन्धित शिकायतें बनी रहती हैं। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है। वर्ष २४, ३०, ३६, ४२, ४८, ५२, ५६ तथा ६० उत्कर्षदायक सिद्ध होते हैं।

(६८९०)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति गौरवर्ण, सहनशील, कोमल, विनम्र, मधुरभाषी तथा तीव्रबुद्धि सम्पन्न होता है। ये शैक्षणिक तथा राजनीतिक क्षेत्र में सफल रहते हैं। ये शनैः शनैः उन्नति करते हैं। आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ रहती है, क्योंकि आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं, तथापि खर्च की अधिकता रहती है। पैतृक-सम्पत्ति का लाभ भी होता है। भाइयों पर खर्च अधिक करना पड़ता है। विद्या का उत्तम लाभ होता है। विवाह २३, २५ अथवा २८ वें वर्ष में बनता है। पत्नी साँवले रंग की तथा क्रोधी स्वभाव की होती है। सन्तान-पक्ष से पूर्ण सुख तथा आर्थिक-लाभ मिलता है। इस जातक के आलोचकों की संख्या अधिक होती है, परन्तु यह किसी की चिन्ता न करके अपने मार्ग पर आगे बढ़ता चला जाता है। वर्ष २१, २३, २८, ३३, ३८, ४१, ४५, ५१, ५८, ५९ एवं ६१ व्यवसाय में उन्नति कारक होते हैं। आयु मध्यम होती है।

कु० र०

(६६१)- इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य गेहुँए रंग का, लम्बे कद तथा उन्नत ललाट वाला, स्वभाव से सहनशील तथा मृदुभाषी होता है। सामाजिक रूढ़ियों में इसका विश्वास नहीं होता। यह वाक्पटु होता है तथा विपक्षी को भी अपने पक्ष में कर लेने में कुशल होता है। स्वाभिमान की मात्रा इसमें अधिक पाई जाती है। समय पड़ने पर यह विरोधियों पर हावी भी हो जाता है। इसका झुकाव न्याय तथा ईमानदारी के प्रति रहता है। राजनैतिक तथा शैक्षणिक क्षेत्र में इसे विशेष सफलता मिलती है। जीवन में आर्थिक-लाभ के अनेक अवसर उपलब्ध होते हैं, अतः आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। भूमि, भवन तथा वाहन का योग भी बनता है। माता से आर्थिक लाभ होना संभव है। विद्या का श्रेष्ठ लाभ होता है। विवाह २३ अथवा २५वें वर्ष में होता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है। संतान-सुख भी उत्तम रहता है। वर्ष २१, २७, ३५, ४०, ५१ तथा ५९ उन्नतिदायक होते हैं।

(६६२)- इस जन्म कुण्डली वाला जातक साँवले रंग का, पतले होंठ, सुन्दर बाल, उन्नत ललाट तथा लम्बे कद का होता है। यह स्वभाव से विनम्र तथा आत्मविश्वासी होता है। शारीरिक-श्रम की अपेक्षा मानसिक-श्रम में अधिक विश्वास रखता है। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी से विशेष लाभ होता है। पैतृक-सम्पत्ति पर झगड़े की संभावना रहती है। विद्या का क्षेत्र उन्नतिकारक रहता है। विवाह २५ अथवा २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी से विचारों का मेल नहीं हो पाता, अतः दाम्पत्य-जीवन तनावपूर्ण बना रहता है। सन्तानों से सुख प्राप्त होता है। पुत्रों की संख्या अधिक होती है। भाइयों से कोई सहयोग नहीं मिलता। वर्ष २१, २५, २९, ३१, ३५, ३७, ४१, ४५, ४७, ५१, ५३ तथा ५७ व्यवसाय में उन्नतिप्रद एवं वर्ष ५८ हानिप्रद सिद्ध होते हैं। परिवारी जनों से सम्बन्ध सामान्य रहते हैं। यह जातक मध्यमायु से कुछ अधिक समय तक जीवित रहता है।

(६९६३) - इस जन्म कुण्डली वाला जातक गौर वर्ण, स्थूल शरीर, सुदृढ़ व्यक्तित्व, मध्यम कद का, क्रोधी, साहसी तथा स्वाभिमानी होता है। यह क्षण-क्षण पर रुष्ट एवं प्रसन्न होता रहता है। यह दूसरों को अपनी ओर आकर्षित करने में कुशल होता है, अतः इसके मित्रों की संख्या में वृद्धि होती चली जाती है। यह प्रत्येक परिस्थिति का सामना हँसते हुए करता है। यह जिनसे भी आत्मीयता के संबंध स्थापित करते हैं, उनके साथ आजीवन निर्वाह भी करते हैं। आर्थिक-दृष्टि से इनका जीवन उन्नतिशील बना रहता है। जीवन में निजी मकान का योग बनता है तथा ४१ वर्ष की आयु में वाहन-सुख भी प्राप्त होता है। विवाह २४, २६ अथवा २८ वर्ष की आयु में पश्चिम दिशा की ओर से होता है। पत्नी सुन्दरी, परन्तु स्वभाव से क्रोधिनी होती है। पुत्रों से सुख-सहयोग प्राप्त होता है। शिक्षा सामान्य रहती है। आयु के २२, २६, ३०, ३६, ४०, ४६, ४८, ५०, ५४ तथा ५८ वें वर्ष आर्थिक लाभप्रद रहते हैं।

(६९६४) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी मनुष्य साँवले रंग, घुँघराले बाल, उन्नत ललाट, विशाल वक्षःस्थल, गोल चेहरा तथा सुन्दर नाक-नक्शा वाला होता है। यह क्रोधी स्वभाव का होता है तथा क्षणिक आवेश में वर्षों पुरानी मित्रता को भी समाप्त कर देता है। इसके मन की बात को कोई नहीं जान पाता। यह ऐसा आलसी भी होता है कि जब तक सिर पर ही न आ पड़े, तब तक किसी काम के विषय में सोचता तक नहीं है। विद्या का लाभ रुकावटों के साथ होता है। विवाह २४ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री के प्रति सदैव चिन्तित बना रहता है, क्योंकि पत्नी से विचार नहीं मिल पाते हैं। आर्थिक-स्थिति उत्तम रहती है। भूमि-भवन आदि का लाभ भी होता है। वर्ष २५, ३६, ४९ तथा ६१ आर्थिक-दृष्टि से कष्टप्रद तथा वर्ष २२, २६, ३०, ३६, ४०, ४६, ५०, ५८ एवं ६० लाभप्रद सिद्ध होते हैं। संशयालु प्रकृति का होने के कारण शत्रु इसके सामने आते हुए घबराते हैं।

भृ० सं० ८३०

कु० १०

(६८५) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति साँवले रंग का, सुदृढ़ कंधों वाला, घुँघराले केश एवं गोल चेहरे वाला, साहसी, परन्तु दयालु प्रकृति का होता है, तथापि एकबार जिससे आत्मीयता के संबंध स्थापित कर लेता है, उसका अन्ततक निर्वाह भी करता है। यह मृदुभाषी तथा शान्ति-प्रिय होने के साथ ही आलसी स्वभाव का एवं स्वाभिमानी भी होता है। विद्या के क्षेत्र में इसे इच्छित सफलता प्राप्त होती है। यह जो भी योजनाएं बनाता है, उसमें आरंभ से अन्ततक कठिनाइयाँ आती हैं, तथापि यह विपरीत परिस्थिति को भी अपने अनुकूल बना लेने में समर्थ होता है। इसका विवाह 22 से 26 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी साँवले रंग की, सुन्दरी तथा क्रोधी स्वभाव की होती है। पुत्र अधिक होते हैं; परन्तु सन्तान-पक्ष की ओर से चिन्ता लगी रहती है। आर्थिक-स्थिति उत्तम रहती है। शत्रु-पक्ष दबा रहता है। वर्ष 24, 35, 43, 50 तथा 58 विशेष लाभप्रद रहते हैं।

(६८६) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी गौरवर्ण, उन्नत ललाट, घुँघराले केशों वाला, मृदुभाषी, शान्ति प्रिय, परन्तु स्वाभिमानी, वाक्पटु तथा किसी को भी अपना मित्र बना लेने की कला में पटु होता है। इसके भाइयों की अपेक्षा बहनें अधिक होती हैं। भाइयों से सहयोग भी मिलता है। पैतृक-सम्पत्ति, मकान आदि का लाभ भी होता है। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय अधिक लाभप्रद सिद्ध होता है। विज्ञान अथवा गणित विषय में इसकी विशेष अभिरुचि रहती है। इसे शिक्षा का मध्यम लाभ प्राप्त होता है। विवाह 24 या 26 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी से सुख प्राप्त होता है तथा सन्तान-पक्ष से भी सन्तोष मिलता है। वर्ष 61 तथा 62 स्वास्थ्य के लिए विशेष कष्टप्रद रहते हैं। वर्ष 24, 30, 36, 38, 42, 48, 50, 54, 56 तथा 58 व्यवसाय में लाभप्रद सिद्ध होते हैं। आर्थिक-स्थिति उत्तम बनी रहती है। आयु मध्यम होती है।

भु० सं० ३८७

(८८९७)– इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य गेहुँए रंग, इकहरे बदन, लम्बा चेहरा तथा मध्यम कद वाला, हँसमुख तथा कान्ति-युक्त होता है। यह अपने लक्ष्य की ओर धीरे-धीरे आगे बढ़ता और सफलता प्राप्त करता है। यह अपने आलसी स्वभाव के कारण उन्नति के अनेक अवसरों को अपने हाथ से निकाल देता है, यों, आर्थिक-दृष्टि से इसका जीवन उन्नतिशील बना रहता है। माता के प्रति विशेष अनुराग रहता है। खर्च बढ़ा-चढ़ा रहने के कारण कभी कभी कर्ज लेने की आवश्यकता भी आ पड़ती है। विद्या का श्रेष्ठ लाभ होता है। विवाह २१ अथवा २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है। सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक रहती है। जीवन के २३, २७, ३३, ३५, ३९, ४७, ५१, ५५ तथा ५७ वें वर्ष कामकाज में उन्नति कारक सिद्ध होते हैं। हवाई किले बनाना भी इसके स्वभाव में पाया जाता है।

(८८९८)– इस जन्मकुण्डली वाला जातक गौर वर्ण, पतले होंठ, मध्यम कद, हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला, चतुर तथा विश्वसनीय मित्र होता है। यह भावना-प्रधान होता है तथा कठोर एवं परिश्रम के कार्यों को करने में अक्षम रहता है। ईमानदारी इसके जीवन का मुख्य ध्येय होती है। इसमें कलाकारों जैसी प्रवृत्तियाँ पाई जाती हैं। साझेदारी के काम में घाटा उठाता है तथा विपरीत-पक्ष से धोखा मिलने की सम्भावना रहती है। आर्थिक-स्थिति निरन्तर उन्नत होती चली जाती है। भूमि, भवन का सुख भी प्राप्त होता है। विवाह २५ या २७ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री सुन्दरी तथा सुशीला होती है। वर्ष ५२, ६४ तथा ७२ स्वास्थ्य के लिए कष्टप्रद रहते हैं। चोट लगने की सम्भावना भी रहती है। वर्ष २३, २८, ३२, ३७, ४३, ४७, ५१, ५३ तथा ५९ कामकाज में उन्नति कारक सिद्ध होते हैं। आयु ७० वर्ष से अधिक रहती है।

कु० १०

भृ० सं० ८३२

कु० १०

(६९९) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी साँवले रंग का, उन्नत-ललाट, पतले होंठ, सुन्दर नाक तथा मध्यम कद वाला, भावना प्रधान तथा शान्ति-प्रिय होता है। यह जोखिम के कामों से घब-राता है। अपने लक्ष्य की ओर धीरे-धीरे आगे बढ़ता रहता है। निजोचित मुस्कराहट, लज्जाशीलता एवं स्नेह आदि के गुण भी इसमें पाये जाते हैं। आर्थिक-दृष्टि से बाल्यावस्था कष्टप्रद रहती है, परन्तु २४ वर्ष के बाद उसमें सुधार होता है तथा स्थिति मध्यम हो जाती है। विवाह २५ या २७ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री सुन्दरी तथा सुशीला होती है। संतानों से सुख प्राप्त होता है। वर्ष २१, २६, ३८ तथा ५० आर्थिक-दृष्टि से उत्तम रहते हैं। इन वर्षों में भूमि तथा भवन-लाभ का योग भी बनता है। वर्ष २३, २५, २९, ३३, ३७, ४१, ४६, ४९, ५३ तथा ५९ व्यवसाय में उन्नति कारक सिद्ध होते हैं।

(७००) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति मध्यम कद का, कुछ लम्बाई लिए पतले शरीर का, साँवले रंग का तथा शान्ति-प्रिय होता है। यह मनुष्य को पहिचानने में अत्यन्त निपुण होता है। इस का जीवन संघर्षों में व्यतीत होता है तथा साहसी एवं पराक्रमी होने के कारण यह विपरीत परिस्थितियों का भी सफलता पूर्वक सामना करता है। हवाई किले बनाना तथा योजनाबद्ध ढंग से कार्य करना इसके स्वभाव में होता है। भाइयों से सहयोग प्राप्त होता है। बहनों की संख्या अधिक होती है। विवाह २२ से २६ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री की ओर से चिन्ता बनी रहती है तथा पुत्रों से सहयोग प्राप्त होता है। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी से विशेष लाभ होता है। जीवन के २८, ३६, ४०, ४४, ४८, ५०, ५६ तथा ५८ वें वर्ष आर्थिक-उन्नति देने वाले होते हैं तथा ४२ एवं ६३ वें वर्ष शरीर के लिए कष्ट कारक सिद्ध होते हैं।

भू० सं० ८३३

कु० २०

(७०१) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी गौरवर्ण, मध्यम कद, कुछ लम्बाई लिए स्वस्थ शरीर, उन्नत ललाट वाला, शान्ति-प्रिय, न्याय-प्रिय तथा सत्य-प्रिय होता है। यह छल-कपट, अनीति तथा प्रपंचपूर्ण कार्यों से बच कर चलता है। रूढ़ियों के प्रति विद्रोह की भावना रखते हुए भी यह सर्वथा नवीन-पथ को स्वीकार नहीं कर पाता। दूसरों के मन की बात जान लेने में यह सक्षम होता है। यह जप-तप में विशेष रुचि लेता है तथा आर्थिक-दृष्टि से इसकी स्थिति उत्तम बनी रहती है। निजी दुकान तथा भवन का योग भी उपलब्ध होता है। शिक्षा सामान्य रहती है, परन्तु बुद्धिमत्ता पर्याप्त पाई जाती है। विवाह २२ या २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी स्वभाव से कुछ हठी होती है, अतः उससे मन नहीं मिल पाता। सन्तानों से सुख मिलता है। वर्ष २४, २८, ३६, ४२, ४४, ४८, ५२ तथा ६० उन्नति कारक सिद्ध होते हैं।

(७०२) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य साँवले रंग तथा लम्बे कद का, शान्ति-प्रिय, सत्यवादी, कल्पनाशील तथा संगीत आदि ललित कलाओं में रुचि रखने वाला होता है। यह अत्याचार का खुलकर विरोध करता है तथा ठोकरें खाकर भी मुस्कुराता रहता है। अर्थ-संचय इसके जीवन का मुख्य ध्येय होता है। विद्या के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। विवाह २२ से २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी साँवली तथा क्रोधी स्वभाव की होती है, अतः दाम्पत्य-सुख मध्यम श्रेणी का रहता है। सन्तान-पक्ष सन्तोष दायक रहता है। वर्ष ६० तथा ६६ स्वास्थ्य के लिए कष्टप्रद रहते हैं। वर्ष २४, २८, ३२, ३८, ४४, ४८, ५२, ५६ तथा ६० आर्थिक-दृष्टि से उन्नति कारक सिद्ध रहते हैं। यह किसी से धोखा नहीं खा सकता। शारीरिक स्वास्थ्य प्रायः उत्तम रहता है तथा आयु ७२ वर्ष से अधिक होती है।

(६०३) - इस जन्मकुण्डली वाला जातक गौरवर्ण, मध्यम कद, कुछ लम्बाई लिये उन्नत ललाट, सुन्दर नाक-नक्शावाला तथा आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। यह अन्य लोगों को अपनी ओर शीघ्र आकर्षित कर लेता है। इसके मित्रों की अधिक होती है, जो इसे लाभ पहुँचाते रहते हैं। यह स्वयं भी मित्रों की सहायता करता है, परन्तु कान का कच्चा होने के कारण प्राय: हानि भी उठाता रहता है। इसको विद्या का लाभ रुक-रुक कर होता है, विवाह २३ अथवा २८ वर्ष की आयु में दक्षिण दिशा की ओर से होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है। सन्तान-सुख उत्तम रहता है। आर्थिक-दृष्टि से जीवन सम्पन्न बना रहता है। सुन्दरी-स्त्री इसकी दुर्बलता होती है जिसके चक्कर में पड़ कर यह अपना रहस्य उगल देता है तथा हानि उठाता है। वर्ष २५, २८, ३३, ३५, ३८, ३९, ४३, ४९, ५३, ५८ तथा ६२ उत्तम होते।

(६०४) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य गौर वर्ण, मध्यम कद, हृष्ट-पुष्ट शरीर, हास्य-प्रिय, मिलन-सार प्रतीत करने में निपुण तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। अपना काम निकालने में यह पटु होता है। गोपनीयता का प्रदर्शन करते हुए फुसफुसाहट के रूप में बातचीत करना इसकी आदत होती है। यह किसी भी कार्य को बड़े उत्साह से आरंभ करता है, परन्तु फिर उसे बीच में ही अधूरा छोड़ देता है। आमदनी से खर्च अधिक रहने के कारण आर्थिक-स्थिति कमजोर बनी रहती है। विद्या-लाभ रुकावटों के साथ होता है। विवाह २३ या २८ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री सुन्दरी तथा सुशीला होती है। सन्तान-पक्ष की ओर से चिन्ता बनी रहती है तथा स्वयं भी पेट संबंधी बीमारियाँ परेशान करती रहती हैं। वर्ष २८, ३३, ३८, ३९, ४२, ४८, ४८, ५०, ५६ तथा ५८ व्यवसाय में लाभप्रद रहते हैं।

भृ० सं० ८३५

(६०५) – इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न प्राणी साँवले रंग का, साहसी, लम्बा कद, स्थूल-शरीर, परिश्रमी, विश्वास्त, क्रोधी, संग्राम-प्रिय तथा बदला लेने का इच्छुक होता है। यह अपने शत्रु को कभी भी क्षमा नहीं करता तथा अवसर मिलते ही उससे बदला लेता है। यह अवसरवादी भी ऐसा होता है कि अपने मतलब के लिए किसी के पैर भी छू सकता है। यह बहुत सोच-समझ कर ही किसी को अपने हृदय में स्थान देता है तथा उसके प्रति सदैव सहानुभूति पूर्ण भी बना रहता है। सामान्यतः यह स्वाभिमानी भी होता है तथा परिश्रमी और साहसी भी। यह धीरे-धीरे अपने भाग्य की उन्नति करता है। विद्या-क्षेत्र कमजोर रहता है। विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है, परन्तु संतान-पक्ष की ओर से चिन्ता रहती है। वर्ष २५, २८, ३३, ३५, ३८, ४१, ४५, ४८, ५० तथा ५७ आर्थिक-उन्नति कारक रहते हैं। निजी मकान का योग भी बनता है।

(६०६) – इस जन्मकुण्डली वाला जातक गौरवर्ण, नाटे क़द का, स्थूल तथा स्वस्थ शरीर वाला एवं सदैव कार्य-तत्पर रहने वाला होता है। यह स्वभाव से क्रोधी भी होता है तथा सामान्य हँसी-मज़ाक को भी सहन नहीं कर पाता। इसे जितनी शीघ्रता से क्रोध आता है, उतनी ही शीघ्र यह शान्त भी हो जाता है। विद्या का क्षेत्र कुछ कमजोर रहता है। विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर होती है तथा ससुराल-पक्ष से आर्थिक लाभ भी होता है। आर्थिक-दृष्टि से जीवन उन्नतिशील बना रहता है। संतान-पक्ष की ओर से चिन्ता रहती है। स्वाभिमानी होने के कारण यह किसी के सामने झुकता नहीं है, अतः कभी-कभी हानि भी उठानी पड़ती है। यों, आमदनी के स्रोत एक से अधिक होने के कारण आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। वर्ष २४, ३०, ३४, ३८, ४०, ५०, ५४, ५६ तथा ५८ आर्थिक दृष्टि से उन्नतिकारक रहते हैं।

कु० र०

(७०७) — इस जन्म कुण्डली का स्वामी मनुष्य गौर वर्ण, मध्यम कद, सुनहरे केश, सुन्दर आँखों तथा सनकी स्वभाव का होता है। यह व्यवसायी प्रवृत्ति का होने के कारण धन को सर्वाधिक महत्व देता है। धन को संचित करना भी इसे आता है। यह समय का बहुत पाबन्द होता है। अपने से छोटे तथा बराबरी वालों के साथ आत्मीयता पूर्ण व्यवहार रखता है। दुःखी आदमी की मदद करना इसे अच्छा लगता है। सादा जीवन, उच्च विचार का यह हामी होता है। यह परिश्रम में विश्वास करता है तथा ईश्वर एवं धर्म पर श्रद्धा रखता है। इसे हृदय अथवा फेफड़ों संबंधी परेशानी भी होती है एवं बाल्यावस्था में चोट लगने की संभावना भी रहती है। विद्या का लाभ सामान्य होता है। विवाह २४ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुशिक्षिता होती है। वर्ष २४, २६, ३०, ३४, ३६, ४०, ४२, ४८, ५०, ५४ तथा ५८ उन्नति कारक तथा वर्ष ५५, ६१ तथा ६३ स्वास्थ्य के लिए हानिकारक रहते हैं।

(७०८) — इस जन्म कुण्डली वाला जातक साँवले रंग तथा इकहरे बदन का, लम्बे कद तथा क्रोधी स्वभाव का, रहस्यमय, साहसी तथा परिश्रमी होता है। यह न्याय-प्रिय भी होता है। इसके मित्रों की संख्या कम ही होती है। आर्थिक-स्थिति भी उत्तम नहीं रहती तथा ऋण लेने के अवसर भी आते रहते हैं। भूमि तथा भवन आदि के विषय में झगड़े तथा विवाद होते हैं। भाइयों से सहयोग नहीं मिलता। शिक्षा सामान्य रहती है। विवाह २५ अथवा २९ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी साँवले रंग की, शिक्षिता, परन्तु क्रोधी स्वभाव की होती है। पुत्र की अपेक्षा कन्याएँ अधिक होती हैं। वर्ष ३०, ४२ तथा ५४ आर्थिक दृष्टि से कष्टप्रद रहते हैं तथा वर्ष २३, २७, ३३, ३९, ४३, ४७, ५१, ५३ तथा ५५ आर्थिक एवं व्यावसायिक दृष्टि से लाभप्रद सिद्ध होते हैं। यह अपने मन की बात किसी पर प्रकट नहीं होने देता तथा अनेक प्रकार की चिन्ताओं से ग्रस्त भी बना रहता है।

मु० सं० ७८३   कु० २०

(७०९)– इस जन्मचक्र में उत्पन्न प्राणी साँवले रंग, लम्बे क़द तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। यह आलसी प्रकृति का होता है, अतः जीवन में उन्नति के अनेक अवसरों को खोदेता है। व्यवसाय में धन की हानि होती है तथा ऋण लेने के अवसर भी आते हैं। विद्या का क्षेत्र उन्नत रहता है। विवाह २५ या ३१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी साँवले रंग की, अभिमानिनी एवं क्रोधी स्वभाव की होती है। अक्टूबर का महीना स्त्री की ओर से चिन्ताजनक रहता है। सन्तानों में कन्याओं की संख्या अधिक होती है। भाइयों की ओर से सदैव चिन्ताएँ लगी रहती हैं। प्रथम सन्तान कन्या होती है। आकस्मिक-लाभ के अवसर प्रायः आते रहते हैं। वर्ष २४, २८, ३२, ३४, ३६, ३९, ४२, ४६, ५१, ५३ तथा ५६ व्यवसाय में उन्नतिप्रद रहते हैं। वर्ष ८, ३१, ५५, ६२ तथा ६८ स्वास्थ्य के लिए कष्टप्रद रहते हैं। आयु ६५ से ७० वर्ष के बीच होती है।

(७१०)– इस जन्म-चक्र का स्वामी गौरवर्ण, उन्नत ललाट, चतुर, बुद्धिमान तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। यह समय तथा वातावरण को पहिचान कर, तदनुरूप आचरण करने में कुशल होता है। विद्या का लाभ मध्यम रहता है। विवाह २५ अथवा २९ वर्ष की आयु में होता है। संतानों में कन्याओं की संख्या अधिक होती है। पुत्रों पर आर्थिक-व्यय अधिक होता है। स्त्री की ओर से सदैव चिन्ता बनी रहती है। वर्ष ३० तथा ५४ आर्थिक दृष्टि से कष्टप्रद रहते हैं। वर्ष ३१, ५५ तथा ६२ स्वास्थ्य के लिए कष्टप्रद रहते हैं तथा वर्ष २३, २९, ३३, ३५, ३९, ४१, ४५, ४६, ५१, ५३, ५६ एवं ५९ व्यवसाय में उन्नतिकारक सिद्ध होते हैं। जीवन में आकस्मिक-लाभ के भी अनेक अवसर प्राप्त होते हैं। इनमें आत्मविश्वास की अधिकता पाई जाती है। यह साहस के बल पर विपरीत परिस्थितियों पर भी विजय प्राप्त कर लेता है।

(७११) – इस जन्मलग्न में उत्पन्न मनुष्य साँवले रंग, इकहरे बदन, नाटे कद तथा सुन्दर आँखोंवाला होता है। यह स्वभाव से क्रोधी होता है, तथापि मित्रता स्थापित करने में सिद्ध होता है। मित्रों के द्वारा इसे सहयोग भी प्राप्त होता है। यह शक्की तथा वहमी स्वभाव का होता है और किसी पर सहसा विश्वास नहीं करता। सदैव चौकन्ना बना रहता है। राजकीय-पक्ष में उन्नति धीरे-धीरे होती है। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी से विशेष लाभ होता है। उच्चपद पर पहुँचने के लिए इसे कठोर संघर्ष करना पड़ता है। विद्या-लाभ मध्यम होता है। विवाह २२ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। सन्तानों से सुख एवं लाभ प्राप्त होता है। भाइयों से सुख नहीं मिलता। वर्ष २४, २८, ३२, ३८, ४२, ४८, ५२, ५६ तथा ५८ व्यवसाय में उन्नतिप्रद रहते हैं।

(७१२) – इस जन्मलग्न में जन्मा मनुष्य स्थूल शरीर, गौर वर्ण, स्वस्थ, साहसी, पराक्रमी तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। यह दूसरों की सहायता के लिए सदैव तत्पर रहता है। समाज-सेवा के कार्यों में सदैव आगे रहता है। इसकी स्मरणशक्ति तीव्र होती है। समय का यह विशेष पाबन्द होता है। मित्रों से सहयोग मिलता है, जिसके फलस्वरूप भाग्योन्नति होती है। विवाह २२, २४ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है। पुत्रों की संख्या अधिक होती है तथा उनसे सहयोग भी मिलता है। आर्थिक-दृष्टि से जीवन उन्नतिशील बना रहता है। वर्ष २४, २८, ३२, ३८, ४६, ५०, ५४, ५६ तथा ५८ व्यवसाय में उन्नतिकारक सिद्ध होते हैं। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं। इसी कारण आर्थिक-लाभ के अवसर भी बनते हैं। वर्ष ३० विशेषरूप से भाग्योन्नति कारक सिद्ध होता है।

(७१३) - इस जन्मचक्र का स्वामी गौरवर्ण, मध्यमकद वाला, शान्तिप्रिय, साहसी, पराक्रमी तथा मृदुभाषी होता है। स्नेह, सौजन्य एवं आत्मीयता से पूर्ण होने पर भी इसके शत्रुओं की संख्या अधिक होती है, जिनके कारण इसे समय-समय पर धोखा मिलता है। पराक्रम द्वारा यह अपनी भाग्योन्नति करता है, तथापि शान-शौकत का जीवन बिताने के कारण इसकी आर्थिक-स्थिति सदैव एक जैसी नहीं रहती। यह ऐशो-आराम को महत्व देता है तथा राज्य-पक्ष से धीरे-धीरे प्रगति करता है। शिक्षा का क्षेत्र उत्तम रहता है। विवाह २२ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है। पुत्रों के द्वारा भी आर्थिक-लाभ के अवसर प्राप्त होते हैं। अधिकारीवर्ग से मन नहीं मिलता। भूमि-मकान आदि के नष्ट होने की अथवा आँत एवं गुर्दे से संबंधित रोग होने की संभावना रहती है। वर्ष ४५, ५७ तथा ६३ स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद तथा २८, ४६, ५६ लाभप्रद रहते हैं।

(७१४) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य साँवले रंग का, छोटे कद वाला, तीखे नाक-नक्शा का सुन्दर, शान्त-प्रकृति का तथा सहानुभूतिपूर्ण होता है। यह परम्पराओं का पालक, एकान्त-प्रिय, ईश्वर में विश्वास रखने वाला तथा नेत्र-रोग से पीड़ित भी होता है। इसकी दिमागी-शक्ति कमज़ोर होती है, फलतः ये मानसिक-दृष्टि से परेशान रहते हैं। भूमि-मकान सम्बन्धी झगड़े भी लगाते हैं। विद्या का क्षेत्र कमज़ोर रहता है। विवाह २५ या २७ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री की ओर से परेशानी रहती है। सन्तान-पक्ष की ओर से भी चिन्ता बनी रहती है। भाइयों के ऊपर भी धन खर्च करना पड़ता है। वर्ष ५२ तथा ५८ स्वास्थ्य के लिए कष्टप्रद रहते हैं तथा वर्ष २४, २८, २७, ४१, ४५, ५३ तथा ५७ आर्थिक-दृष्टि से लाभप्रद सिद्ध होते हैं। आयु मध्यम होती है तथा रोगादि की पीड़ा भी अधिक भोगनी पड़ती है। आर्थिक-स्थिति सामान्य रहती है।

(७९५)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति मनुष्य कुछ लम्बाई लिए मध्यम कद तथा पतले शरीर वाला, क्रोधी स्वभाव का होते हुए भी अन्यों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण तथा भलाई की भावना रखने वाला। आत्मविश्वासी तथा अपने किये हुए उपकारों को भूल जाने वाला होता है। शत्रु-पक्ष इसे पग-पग पर हानि पहुँचाने की चेष्टा करता है, परन्तु अपने साहसी एवं दृढ़ स्वभाव से यह उन सभी को न केवल परास्त ही करता है, अपितु वाक्चातुर्य से उन्हें अपना मित्र भी बना लेता है। आर्थिक-दृ-ष्टि से जीवन उन्नतिशील बना रहता है। भूमि आदि से भी आर्थिक-लाभ के अवसर प्राप्त होते हैं। विद्या का क्षेत्र कमजोर रहता है। विवाह २२ से २७ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य-सुख सामान्य रहता है तथा पुत्रों की ओर से भी चिन्ता बनी रहती है। उदर-रोग एवं वायु-विकार सम्भव हैं। वर्ष २५, २९, ३३, ३७, ४१, ४५, ४९, ५३, ५७ तथा ५९ आर्थिक-दृष्टि से उन्नति कारक रहते हैं।

(७९६)- इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य कुछ लम्बाई लिए मध्यम कद का, साहसी, पराक्रमी तथा क्रोधी प्रकृति का होता है। यह विपरीत परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल बना लेता है। इसमें लड़ने-भिड़ने की प्रवृत्ति भी पाई जाती है। विज्ञान से सम्बन्धित कार्यों में इसकी गहरी दिलचस्पी होती है। आर्थिक-दृष्टि से इसका जीवन उन्नतिशील बना रहता है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं। निजी भूमि-भवन आदि का योग भी बनता है। मातृ-सुख कम मिल पाता है, परन्तु भाइयों से सहयोग प्राप्त होता है। विद्या का क्षेत्र उन्नतिशील रहता है। विवाह २४ या २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है। पुत्रों से भी सहयोग मिलता है। वर्ष २२, २६, २८, ३२, ३८, ४२, ४४, ५०, ५४ तथा ५६ का समय उन्नति कारक सिद्ध होते हैं। शरीर स्वस्थ रहता है। आयु प्रायः मध्यम रहती है।

भू० सं० ८४२

कु० २०

(७१७) – इस जन्मकुण्डली का स्वामी गौर वर्ण, मध्यम कद का, घुँघराले केशोंवाला तथा क्रोधी एवं आलसी प्रकृति का होता है। इसका जीवन संघर्षशील होता है तथा अपने आलसी स्वभाव के कारण यह उन्नति के अनेक अवसरों को खो बैठता है। यह स्पष्टवादी तथा निर्भीक भी होता है। स्वतन्त्रचेता होने के कारण यह किसी के नियन्त्रण में नहीं रह पाता। यह नौकरी में असफल तथा कारोबार में सफल रहता है। अपनी भावनाओं को नियन्त्रित रखपाने में इसे कुशलता प्राप्त होती है। आर्थिक-दृष्टि से इसका जीवन कमजोर रहता है, तथापि आर्थिक-लाभ के अनेक आकस्मिक-अवसर प्राप्त होते रहते हैं। शिक्षा सामान्य रहती है। विवाह २२, २४ अथवा २८ वें वर्ष में होता है। सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक होती है। वर्ष ४०, ५७ तथा ६८ स्वास्थ्य के लिए तथा ३३, ४५ तथा ६५ आर्थिक-दृष्टि से कष्टप्रद रहते हैं। वर्ष २२, ३०, ४२, ५६ उन्नति कारक हैं।

(७१८) – इस जन्मकुण्डली का अधिपति गेहुँए रंग का, मध्यम कद, इकहरा शरीर, हठी-स्वभाव का तथा पूर्णतः व्यावहारिक होता है। कभी-कभी यह आपे से बाहर भी हो जाता है, जिसके फलस्वरूप इसे हानि उठानी पड़ती है। इसमें आत्म-विश्वास की अधिकता पाई जाती है, अतः यह विपरीत-परिस्थिति का भी दृढ़ता पूर्वक सामना करता है तथा अपने लक्ष्य की ओर निरन्तर आगे बढ़ता चला जाता है। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है। परिवारीजनों से झगड़े का योग आता है। भाइयों से भी कोई सहयोग नहीं मिलता। विद्या का लाभ रुकावटों के साथ होता है। विवाह २५ अथवा २९ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी से मनोऽनुकूल सुख नहीं मिलता। पुत्रों की ओर से भी चिन्ता बनी रहती है। वर्ष २५, ३३, ३५, ३९, ४५, ४७, ५१, ५३ तथा ५७ व्यवसाय में उन्नति कारक सिद्ध होते हैं। स्वास्थ्य सामान्यतः ठीक रहता है। आयु मध्यम प्राप्त होती है।

(७१९) – इस जन्मकुण्डली का स्वामी गौर वर्ण सुन्दर नाक-नक्श वाला, कुछ लम्बाई लिए मध्यम कद तथा शान्त प्रकृति का होता है। यह अपने मन तथा मस्तिष्क पर नियन्त्रण रखने में दक्ष होता है तथा संगीत आदि ललित कलाओं में रुचि रखता है। यह अपने से बड़े लोगों तथा अधिकारियों को प्रभावित करने में कुशल होता है, अतः निरन्तर उन्नति-पथ पर अग्रसर होता चला जाता है। आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं। मनोरंजन तथा सजावट की वस्तुओं पर अधिक खर्च करता है। स्थिर भूमि तथा भवन का योग भी बनता है। विवाह २४ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है तथा पत्नी सुन्दर एवं सुशीला होती है। ससुराल-पक्ष से भूमि तथा भवन का लाभ होना भी सम्भव है। संतानों से सुख-सन्तोष प्राप्त होता है। वर्ष २४, २९, ३४, ३६, ३९, ४३, ४९, ५३ तथा ५७ उन्नतिकारक होते हैं।

(७२०) – इस जन्मकुण्डली का अधिपति सांवले रंग तथा मध्यम कद वाला, सुन्दर, साहसी तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। यह धीर परिश्रमी होता है तथा अर्थोपार्जन करने में भी प्रवीण होता है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं। येन-केन प्रकारेण धन का संचय करना इसकी प्रवृत्ति में होता है। विपरीत परिस्थितियों में भी अपनी बचत का मार्ग निकाल लेने में यह कुशल होता है। भाइयों की संख्या बहिनों से अधिक होती है तथा उनसे सहयोग भी मिलता है। विवाह २४ से २८ वर्ष के बीच होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा भाग्यशालिनी होती है। ससुराल सेवीधन का लाभ होता है। पुत्र की अपेक्षा कन्याओं की संख्या अधिक होती है। वर्ष २३, २७, ३१, ३३, ३९, ४३, ४७, ५१, ५३ तथा ५९ आर्थिक-दृष्टि से उन्नतिकारक सिद्ध होते हैं। शारीरिक-स्वास्थ्य उत्तम रहता है। आयु मध्यम से कुछ अधिक रहती है।

भृ० सं० ३४७ कु० २०

(७२१)- इस जन्माङ्ग चक्र वाला प्राणी गौर वर्ण, मध्यम कद, स्वस्थ शरीर, साहसी तथा शान्ति-प्रिय होता है। यह कर्मठ तथा साहसी होने के कारण रात-दिन परिश्रम करता है तथा धीरे-धीरे प्रगति करता चला जाता है। यह विपरीत-परिस्थितियों का साहस के साथ सामना करता है तथा अपने बुद्धि-बल से उन पर विजय प्राप्त करता है। यह विपरीत-लिङ्गी के प्रति विशेष रूप से आकर्षित होता है। बहिनों की अपेक्षा भाई अधिक होते हैं। गणित इसका प्रिय विषय होता है। विवाह २३ या २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है। संतानों में कन्याओं की संख्या अधिक होती है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं, अतः आर्थिक-स्थिति उत्तम बनी रहती है। वर्ष २३, २७, ३३, ३८, ४३, ४७, ५१, ५७ तथा ५८ व्यवसाय में लाभ प्रद सिद्ध होते हैं। अध्ययन में विशेष रुचि रहती है। आयु मध्यम से कुछ अधिक प्राप्त होती है।

(७२२)- इस जन्माङ्ग चक्र वाला मनुष्य इकहरे बदन, गौर वर्ण तथा सुन्दर नाक-नक्शा वाला, कुछ लम्बे शरीर का एवं सम्मोहक-व्यक्तित्व वाला होता है। यह समय आने पर बहुत अच्छा झूठ बोल सकता है तथा काम पड़ने पर सत्य को भी झूठ सिद्ध कर सकता है। यह बातचीत करने में अत्यन्त पटु होता है। दूसरों से काम निकालना इसे खूब आता है। सांस्कृतिक अथवा राजनीति के क्षेत्र में इसे सफलता प्राप्त होती है। धन कमाने में भी यह बहुत होशियार होता है तथा येन-केन प्रकारेण अर्थ-संचय करता ही रहता है। विवाह २३, २५ अथवा २९ वें वर्ष में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला मिलती है। ससुराल से धन का लाभ भी होता है। संतानों में कन्याओं की संख्या अधिक होती है। दाम्पत्य-सुख तथा सन्तति-सुख — दोनों ही उत्तम रहते हैं। भूमि तथा वाहन का सुख भी मिलता है। वर्ष २३, २८, ३५, ४१, ४७, ५५ तथा ५७ आर्थिक उन्नतिदायक रहते हैं।

भृ० सं० ८८२

कु० २०

(७२३)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी गौरवर्ण, सुन्दर नेत्र, उन्नत ललाट, पतले होंठ, नुकीली नासिका, मध्यम कद तथा शान्त स्वभाव वाला होता है। कोमलता, नम्रता, मधुरता एवं भावुकता - ये सब इसके स्वभाव की विशेषताएँ होती हैं। शारीरिक-श्रम की अपेक्षा मानसिक-श्रम पर इस का विशेष विश्वास रहता है। निज का काम निज निपटा देना इसके स्वभाव में होता है। शैक्षणिक एवं राजनीतिक-क्षेत्र में यह विशेष प्रगति करता है। आत्मविश्वास की अधिकता होती है तथा कल्पनाशील होने के कारण नई-नई योजनायें भी खूब बनाई जाती हैं। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होने के कारण आर्थिक-स्थिति मजबूत बनी रहती है। निजी मकान आदि का योग भी बनता है। पिता का उत्तम लाभ होता है। विवाह कुछ विलम्ब से होता है तथा स्त्री की ओर से चिन्तायें भी बनी रहती हैं। सन्तानों में पुत्र अधिक होते हैं। भाइयों से सहयोग मिलता है। आयु मध्यम।

(७२४)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति गौरवर्ण, उन्नत ललाट, सुन्दर नेत्र, आकर्षक व्यक्तित्व, शान्त-प्रकृति एवं कल्पनाशील स्वभाव वाला होता है। यह अपनी वाक्पटुता से सामने वाले को प्रभावित करता है और उसे अपने सम्मोहन में बाँध कर मनचाहा कार्य करा लेता है। यह व्यक्तिगत रूप में ईमानदार भी होता है तथा न्याय में गहरी आस्था रखता है। सामाजिक रूढ़ियों में इसका विश्वास नहीं होता। आर्थिक-दृष्टि से जीवन उन्नतिशील बना रहता है। राजनीतिक क्षेत्र में इसे रुचि रहती है तथा राज्य-पक्ष से आर्थिक-लाभ भी होता है। भाइयों से कोई सहयोग नहीं मिलता। निजी भूमि तथा वाहन आदि का योग भी बनता है। विवाह २४ या २६ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य तथा सन्तान-सुख उत्तम रहता है। वर्ष ३०, ४६, ५५ तथा ६१ वें स्वास्थ्य के लिए चिन्ताजनक रहते हैं तथा वर्ष २४, ३३, ३६, ४२, ४८, ५० एवं ५८ उन्नतिकारक रहते हैं।

भृ० सं० ८४२ | कु० २०

(८२५) – इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य गौर वर्ण, सुन्दर नाक-नक्शा वाला, घुँघराले केशों वाला, साहसी तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। यह विपरीत-परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल बना लेता है तथा परिश्रम के द्वारा जीवन को उन्नत बनाता रहता है। अपने स्फोटक व्यक्तित्व के कारण यह मित्रता स्थापित करने में कुशल होता है। यह जिससे आत्मीयता के सम्बन्ध स्थापित करता है, उसके साथ जीवनभर निर्वाह भी करता है, परन्तु यह अपने अधिकारियों को प्रसन्न नहीं रख पाता। इसकी आर्थिक-स्थिति उत्तम रहती है। भूमि, भवन आदि स्थिर-धन का लाभ होता है। विद्या-लाभ रुकावटों के साथ होता है। विवाह २२ से २६ वर्ष के बीच होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है। सन्तानों में कन्याएँ अधिक होती हैं। वर्ष २३, २७, ३१, ३७, ४५, ४६, ५३ तथा ५७ व्यवसाय में लाभप्रद सिद्ध होते हैं। आयु मध्यम रहती है।

(८२६) – इस जन्म कुण्डली का स्वामी गौर वर्ण, लम्बे कद का, स्वस्थ, आकर्षक व्यक्तित्व तथा साहसी स्वभाव का होता है। परन्तु यह आलसी प्रकृति का भी होता है, फलतः जब तक सिर पर ही न आ पड़े, तब तक किसी काम में इसकी प्रवृत्ति नहीं होती। मित्रों की सहायता करना इसके स्वभाव में होता है। विपरीत परिस्थिति को भी अनुकूल बना लेने में यह समर्थ होता है। आर्थिक-दृष्टि से जीवन उन्नतिशील बना रहता है, परन्तु खर्च बढ़ा-चढ़ा रहने के कारण आर्थिक-स्थिति कमजोर भी बनी रहती है। विद्या का लाभ सामान्य होता है। विवाह २३, २५ अथवा २७ वें वर्ष में होता है। पत्नी से सुख मिलता है, परन्तु संतान के प्रति चिन्ता रहती है। सन्तान-हानि के अवसर भी उपस्थित होते हैं। वर्ष २५, २७, ३१, ३५, ३७, ३९, ४३, ४५, ५१, ५५, तथा ५९ व्यवसाय में उन्नतिकारक सिद्ध होते हैं।

भु० सं० ३९२ कु० र०

(७२७)- इस जल कुण्डली वाला मनुष्य साँवले रंग का, नाटे कद वाला, क्रोधी तथा आलसी चि-न्तन का एवं मुँह पर चेचक के दागों वाला होता है। यह बाल्यावस्था में चोरी भी करता है, पर-न्तु बड़ा होने पर अत्यन्त ईमानदार बन जाता है। यह हवाई किले बनाता है तथा कठोर परिस्थि-तियों में शीघ्र घबड़ा भी जाता है। यह बातचीत करने में पटु तथा स्वभाव से कुछ स्वाभि-मानी भी होता है। यह किसी के नियन्त्रण में रह कर कार्य नहीं कर पाता। आर्थिक-दृष्टि से जीवन कुछ कष्टप्रद रहता है तथा कर्जदारी के अवसर भी आते हैं। यह कटुभाषी होता है तथा इसकी पत्नी सुन्दर होते हुए भी क्रोधी स्वभाव की होती है। विवाह २४ या २६ वर्ष की आयु में होता है। शिक्षा का लाभ मध्यम होता है। जीवन के २२, २६, ३२, ३६, ३८, ४२, ५०, ५२ तथा ५८ वें वर्ष व्यवसाय में उन्नति दायक रहते हैं।

(७२८)- इस जल कुण्डली का स्वामी मनुष्य जातक गौरवर्ण, मध्यम कद, सुन्दर नाक-नक्शा वाला, पत-ले होठों वाला, शान्ति-प्रिय तथा आलसी स्वभाव का होता है, जिसके कारण उन्नति के अनेक अवसर हाथ से निकल जाते हैं। इस की बुद्धि तीव्र होती है तथा बातचीत में भी कुशल होता है, अतः शत्रु-पक्ष पर हावी बना रहता है। यह अपना काम निकालने में माहिर होता है। आर्थिक-स्थिति चिन्ताजनक रहती है। भाइयों से सहयोग मिलता है। शिक्षा का उत्तम लाभ होता है। विवाह २४, २६ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी की ओर से चिन्तायें बनी रहती हैं। सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक रहती है। वर्ष २५, ३१, ३७, ४४ तथा ६१ स्वास्थ्य के लिए कष्टप्रद तथा २३, ३५, ४६ एवं ५८ आर्थिक-दृष्टि से विशेष लाभप्रद रहते हैं। मित्रों से कोई सहयोग नहीं मिलता। जीवन सामान्य व्यतीत होता है।

(६२९)- इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य गौर वर्णी, स्वस्थ तथा हृष्ट-पुष्ट शरीर का, मध्यम कद वाला एवं शान्तिप्रिय होता है। यह भावना-प्रधान होता है, अतः कर्कश एवं कठोर कार्यों से घृणा करता है तथा अपनी रुचि के विपरीत कार्यों को भी सहन नहीं कर पाता। यह न्याय तथा ईमानदारी को विशेष महत्व देता है। संगीत आदि ललित कलाओं में इसकी गहरी रुचि होती है। कविता से भी प्रेम रखता है। मीठी वाणी के कारण यह अपने मित्रों में प्रिय बना रहता है। निष्कपटता, सुकुमारता, लज्जा, स्नेह आदि गुण इसमें विशेष रूप से पाये जाते हैं। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में अधिक लाभ होता है। निजी भूमि, भवन आदि की उपलब्धि होती है। आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ रहती है। भाइयों से सहयोग मिलता है। विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य एवं सन्तान-सुख उत्तम रहता है। वर्ष २८, ३६, ४०, ४८, ५०, ५२ तथा ५८ आर्थिक उन्नति कारक होते हैं।

(६३०)- इस जन्म कुण्डली वाला प्राणी साँवले रंग का, लम्बे कद वाला, सुन्दर नाक-नक्शे वाला तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। यह दूसरों के मन को पढ़ लेने में कुशल होता है। यह विपत्तियों का डट कर मुकाबिला करता है तथा ठोकरें खाकर भी मुस्कुराता रहता है। आर्थिक-स्थिति इसके लिए उत्तम नहीं रहती क्योंकि यथेष्ट आर्थिक-लाभ होते हुए भी खर्च बढ़ा-चढ़ा रहता है। भाइयों से सहयोग मिलता है। निजी मकान का योग भी बनता है। शिक्षा का क्षेत्र उत्तम रहता है। विवाह २१, २५ या २७वें वर्ष में होता है। पत्नी साँवली, परन्तु सुन्दर तथा क्रोधी स्वभाव की होती है। विवाह पूर्व दिशा की ओर से होता है। भाइयों से अपेक्षाकृत सहयोग कम रहता है। सन्तान-पक्ष सामान्य रहता है। जीवन के २३, २७, ३३, ३९, ४१, ४५, ५९, ५१ तथा ५८वें वर्ष विशेष रूप से आर्थिक लाभप्रद सिद्ध होते हैं। आयु मध्यम प्राप्त होती है।

(०३१) इस जन्मकुण्डली का स्वामी गौर वर्ण, मध्यम कद तथा सुन्दर नाक-नक्श वाला होता है। यह न्याय, सत्य तथा ईमानदारी को सर्वोपरि महत्व देने वाला एवं अधार्मिक तथा अनीतियुक्त कार्यों से परहेज करने वाला होता है। यह धार्मिक रूढ़ियों में विश्वास रखता है तथा धर्म-पालन की दिशा में सचेष्ट बना रहता है। संगीत तथा काव्य में इसकी अभिरुचि होती है। यह प्राचीनता के प्रति विद्रोह कर, नवीनपथ पर चलने के लिए तत्पर नहीं होता। वणिक्-वृत्ति प्रधान होने के कारण यह नित्य अर्थ-संचय में लगा रहता है। क्रय-विक्रय सम्बन्धी कार्यों से इसे आर्थिक-लाभ मिलता है। इसकी आर्थिक-स्थिति सदैव सुदृढ़ बनी रहती है। शिक्षा-क्षेत्र भी उन्नतिकारक रहता है। विवाह २४ से २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूला मिलती है। सन्तान-सुख का यथेष्ट लाभ होता है। जीवन के २३. २७. ३१. ३२. ३९. ४१. ४३. ४७. ५५ तथा ५९ वें वर्ष आर्थिक-समृद्धि दायक सिद्ध होते हैं।

(०३२) इस जन्मकुण्डली का अधिपति साँवले रंग का, मध्यम कद वाला, सुन्दर नाक-नक्श एवं क्रोधी-स्वभाव का होता है। यह दूसरों के मन की बात को भाँप लेने में कुशल होता है। यह नेता बनने को भी उत्सुक रहता है तथा विरोधी-पक्ष को पराजित करने की योजनाएँ बनाता रहता है। इसमें आत्म-विश्वास की भावना अत्यधिक पाई जाती है। यह अपनी बुद्धि द्वारा प्रचुर धनोपार्जन करता है, अतः इसकी आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। विवाह २१ से २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी साँवले रंग की तथा हठी स्वभाव की होती है, तथापि दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है तथा ससुराल-पक्ष से धन भी प्राप्त होता है। ४१ वर्ष की आयु में निजी भवन का योग भी बनता है। सन्तान से सुख प्राप्त होता है। जीवन के २३. २७. ३१. ३५. ३९. ४३. ४७. ५१. ५३ तथा ५५ वें वर्ष उन्नतिकारक रहते हैं। शारीरिक स्वास्थ्य प्रायः ठीक बना रहता है। आयु मध्यम होती है। जीवन सामान्यतः सुख पूर्वक व्यतीत होता है।

(७३३)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी लम्बे कद तथा साँवले रंग का, स्थूल-शरीर एवं क्रोधी स्वभाव का होता है। बदला लेने की भावना इसके प्रत्युत्तर से पाई जाती है तथा अवसर मिलते ही उसका लाभ उठाता है। यह चुम्बकीय-व्यक्तित्व वाला होता है, अतः दूसरों को सहज ही आकर्षित करने तथा मित्रता स्थापित करने में सिद्धहस्त होता है। विपक्षी को किस प्रकार पराजित किया जाय अथवा अपना मतलब किस प्रकार सिद्ध किया जाय, इसका अनुभवी होता है। स्त्रियों के प्रति इसका विशेष आकर्षण रहता है तथा उनके चक्कर में पड़कर यह गंभीर रहस्यों को भी उजागर कर बैठता है। यह अपने परिश्रम द्वारा आर्थिक-क्षेत्र में उन्नति करता है। कुल मिलाकर इसकी आर्थिक-स्थिति मध्यम श्रेणी की रहती है। विवाह २२ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर होती है तथा दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहता है। २४ वें वर्ष में भाग्योदय होता है तथा जीवन के २४, २८, ३४, ३८, ४२, ४४, ४८, ५२, ५६ तथा ५८वें वर्ष आर्थिक-उन्नति दायक होते हैं।

(७३४)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति गेहुँए रंग तथा मध्यम कद का, गोल चेहरा, चपटी नाक तथा कुछ स्थूल शरीर का, साहसी तथा क्रोधी स्वभाव का, अपना मतलब सिद्ध करने के लिए बड़े कौशल के साथ झूठ बोलने वाला, झूठ को सत्य सिद्ध करने में कुशल, हवाई किले बनाने वाला, कल्पना-प्रधान, किसी भी कार्य को बड़े उत्साह पूर्वक आरम्भ करके बाद में शिथिल पड़ जाने वाला तथा परस्त्री गामी होता है। इसकी आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं, अतः आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। यह मनोरंजन तथा सजावटी-वस्तुओं पर खूब खर्च करने वाला एवं ऐश्वर्यपूर्ण जीवन बिताने का शौकीन होता है। विद्या का यथेष्ट लाभ होता है। विवाह २४ या २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है, परन्तु सन्तान पक्ष की ओर से चिन्ता बनी रहती है। जीवन के २२, २७, २९, ३५, ३९, ४३, ४७, ५१, ५५ तथा ५९ वें वर्ष आर्थिक-दृष्टि से लाभप्रद सिद्ध होते हैं।

(७३५)- इस जन्मलग्न में उत्पन्न व्यक्ति हल्के साँवले रंग का, लम्बे क़द वाला, स्थूल-शरीर, संग्राम-प्रिय, साहसी तथा क्रोधी-स्वभाव का होता है। इसका क्रोध शत्रुता का रूप धारण कर लेता है। इसमें बदले की भावना का बाहुल्य पाया जाता है। स्वाभिमानी तथा रक्तचाप-पीड़ित होने के साथ ही यह शत्रु-पक्ष से पीड़ित बना रहता है, तथापि अपने साहस के बल पर यह विरोधियों को हमेशा दबाये रखता है। शत्रु-पक्ष इसको कोई हानि नहीं पहुँचा पाता। भाइयों से सहयोग मिलता है। विद्या-पक्ष उत्तम रहता है। विवाह २५ अथवा २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी और सुशीला होती है। सन्तान-पक्ष की ओर से चिन्ता लगी रहती है। भूमि, भवन का लाभ भी होता है। आर्थिक-स्थिति सामान्यतः उत्तम रहती है। वर्ष २३, ३१, ३५, ३९, ४३, ४९, ५५ तथा ५९ व्यवसाय में लाभप्रद सिद्ध होते हैं। परिवारी जनों से सामान्य संबंध रहते हैं। आयु ६० वर्ष से कुछ अधिक होती है।

(७३६)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी साँवले रंग, मध्यम क़द तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। यह आत्म-विश्वासी तथा साहसी होने के साथ ही कानों का कच्चा भी होता है तथा अपने प्रत्येक कार्य-व्यवहार तथा बातचीत में गोपनीयता का प्रदर्शन भी करता है। राजनीतिक अथवा शैक्षणिक क्षेत्र में इसे सफलता प्राप्त होती है। यह जिस व्यक्ति से मित्रता स्थापित कर लेता है, उसके साथ आजीवन निर्वाह करता है। आर्थिक-स्थिति मजबूत बनी रहती है तथा राज्य-पक्ष से भी आर्थिक-लाभ के अवसर प्राप्त होते हैं। विद्या का यथेष्ट लाभ होता है। विवाह २५वें वर्ष में होता है। पत्नी सुन्दर तथा सुलक्षणा होती है। ससुराल-पक्ष से धन का लाभ भी होता है, परन्तु सन्तान-पक्ष की ओर से कष्ट प्राप्त होता है। जीवन के २३, २७, ३५, ३९, ४५, ४९, ५१, ५५ तथा ५७ वें वर्ष व्यवसाय में उन्नतिकारक सिद्ध होते हैं। आयु मध्यम होती है तथा शरीर प्रायः स्वस्थ बना रहता है।

(७३७) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य गेंहुए रंग तथा कुछ लम्बाई लिए मध्यम कद का, सुन्दर नाक-नक्शा वाला तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। यह सामान्य हास-परिहास से भी रुष्ट हो जाता है। स्वाभिमानी होने के कारण इसकी शत्रुता स्थायी रूप ग्रहण कर लेती है तथा अवसर मिलते ही यह शत्रु-पक्ष से भरपूर बदला भी चुकाता है। यह समय का पाबन्द होता है तथा प्रत्येक कार्य नियत-समय पर ही करता है। यह अपने से छोटों तथा बराबर वालों के साथ आत्मीयता एवं स्नेहपूर्ण व्यवहार करता है। किसी भी दुःखी व्यक्ति की सहायता करने में इसे प्रसन्नता का अनुभव होता है। विद्या-लाभ उत्तम होता है। विवाह २२ अथवा २६ वें वर्ष में होता है। स्त्री सुन्दरी तथा सुशीला होती है। सन्तान-पक्ष से सन्तोष बना रहता है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होने के कारण आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। वर्ष २४, २८, ३२, ३६, ४०, ४४, ४८, ५४, ५६ तथा ६० उन्नतिप्रद रहते हैं।

(७३८) - इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य साँवले रंग का, विस्तृत ललाट, मोटे होंठ, सुनहरी बाल तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। सामान्यतः यह सत्यवादी होता है, परन्तु स्वार्थ-सिद्धि के लिए झूठ बोलने में भी नहीं हिचकिचाता। यह परिश्रम द्वारा अपने भाग्य की उन्नति करता है तथा जीवन में कभी भी आलस्य एवं निष्क्रियता को स्थान नहीं देता। यह ईश्वर से डरने वाला तथा धर्म में श्रद्धा रखने वाला होता है। आर्थिक-दृष्टि से इसका जीवन उन्नतिशील बना रहता है। २४ वें वर्ष से पूर्ण भाग्योदय होता है तथा निजी भूमि, भवन, वाहन आदि का योग भी बनता है। विवाह २२ से २७ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है। पुत्रों की संख्या अधिक होती है तथा शिक्षा का क्षेत्र भी उत्तम रहता है। सन्तान-पक्ष से जीवन में सहयोग भी मिलता है। वर्ष २४, २८, ३२, ४०, ४८, ५२, ५६ तथा ६० आर्थिक-दृष्टि से लाभप्रद रहते हैं।

(७३५)- इस जन्मलग्न में उत्पन्न व्यक्ति हल्के साँवले रंग का, लम्बे क़द वाला, स्थूल-शरीर, संग्राम-प्रिय, साहसी तथा क्रोधी-स्वभाव का होता है। इसका क्रोध शत्रुता का रूप धारण कर लेता है। इसमें बदले की भावना का बाहुल्य पाया जाता है। स्वाभिमानी तथा रक्तचाप-पीड़ित होने के साथ ही यह शत्रु-पक्ष से पीड़ित बना रहता है, तथापि अपने साहस के बल पर यह विरोधियों को हमेशा दबाये रखता है। शत्रु-पक्ष इसको कोई हानि नहीं पहुँचा पाता। भाइयों से सहयोग मिलता है। विद्या-पक्ष उत्तम रहता है। विवाह २५ अथवा २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी और सुशीला होती है। सन्तान-पक्ष की ओर से चिन्ता लगी रहती है। भूमि, भवन का लाभ भी होता है। आर्थिक-स्थिति सामान्यतः उत्तम रहती है। वर्ष २३, ३१, ३५, ३९, ४३, ४९, ५५ तथा ५९ व्यवसाय में लाभप्रद सिद्ध होते हैं। परिवारी जनों से सामान्य संबंध रहते हैं। आयु ७० वर्ष से कुछ अधिक होती है।

(७३६)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी साँवले रंग, मध्यम कद तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। यह आत्मविश्वासी तथा साहसी होने के साथ ही कानों का कच्चा भी होता है तथा अपने प्रत्येक कार्य-व्यवहार तथा बातचीत में गोपनीयता का प्रदर्शन भी करता है। राजनीतिक अथवा शैक्षणिक क्षेत्र में इसे सफलता प्राप्त होती है। यह जिस व्यक्ति से मित्रता स्थापित कर लेता है, उसके साथ आजीवन निर्वाह करता है। आर्थिक-स्थिति मजबूत बनी रहती है तथा राज्य-पक्ष से भी आर्थिक-लाभ के अवसर प्राप्त होते हैं। विद्या का यथेष्ट लाभ होता है। विवाह २५वें वर्ष में होता है। पत्नी सुन्दर तथा समझदार होती है। ससुराल-पक्ष से धन का लाभ भी होता है, परन्तु सन्तान-पक्ष की ओर से कष्ट प्राप्त होता है। जीवन के २३, २७, ३५, ३९, ४५, ४९, ५१, ५५ तथा ५७ वें वर्ष व्यवसाय में उन्नतिकारक सिद्ध होते हैं। आयु मध्यम होती है तथा शरीर प्रायः स्वस्थ बना रहता है।

(७३७) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य गेंहुऐ रंग तथा कुछ लम्बाई लिए मध्यम कद का, सुन्दर नाक-नक्शा वाला तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। यह सामान्य हास-परिहास से भी रुष्ट हो जाता है। स्वाभिमानी होने के कारण इसकी शत्रुता स्थायी रूप ग्रहण कर लेती है तथा अवसर मिलते ही यह शत्रु-पक्ष से पूरा बदला भी चुकाता है। यह समय का पाबन्द होता है तथा प्रत्येक कार्य नियत-समय पर ही करता है। यह अपने से छोटों तथा बराबर वालों के साथ आत्मीयता एवं स्नेहपूर्ण व्यवहार करता है। किसी भी दुःखी व्यक्ति की सहायता करने में इसे प्रसन्नता का अनुभव होता है। विद्या-लाभ उत्तम होता है। विवाह २२ अथवा २६ वें वर्ष में होता है। स्त्री सुन्दरी तथा सुशीला होती है। सन्तान-पक्ष से सन्तोष बना रहता है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होने के कारण आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। वर्ष २४, २८, ३२, ३६, ४०, ४४, ४८, ५४, ५६ तथा ६० उन्नतिप्रद रहते हैं।

(७३८) - इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य साँवले रंग का, विस्तृत ललाट, मोटे होंठ, सुनहरी बाल तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। सामान्यतः यह सत्यवादी होता है, परन्तु स्वार्थ-सिद्धि के लिए झूठ बोलने में भी नहीं हिचकिचाता। यह परिश्रम द्वारा अपने भाग्य की उन्नति करता है तथा जीवन में कभी भी आलस्य एवं निष्क्रियता को स्थान नहीं देता। यह ईश्वर से डरने वाला तथा धर्म में श्रद्धा रखने वाला होता है। आर्थिक-दृष्टि से इसका जीवन उन्नतिशील बना रहता है। २४ वें वर्ष से पूर्ण भाग्योदय होता है तथा निजी भूमि, भवन, वाहन आदि का योग भी बनता है। विवाह २२ से २८ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है। पुत्रों की संख्या अधिक होती है तथा शिक्षा का क्षेत्र भी उत्तम रहता है। सन्तान-पक्ष से जीवन में सहयोग भी मिलता है। वर्ष २४, २८, ३२, ४०, ४८, ५२, ५६ तथा ६० आर्थिक-दृष्टि से लाभप्रद रहते हैं।

(७३९) – इस जन्माङ्ग चक्र वाला मनुष्य साँवले रंग तथा नाटे क़द का, लम्बा चेहरा तथा मोटे होंठ वाला, क्रोधी स्वभाव का तथा दूसरों के मन की बात पहिचान लेने वाला तथा मानापमान का विशेष ध्यान रखने वाला होता है। यदि स्वयं से कोई अपराध हो जाय तो क्षमा माँगने में इन्हें हिचकिचाहट का अनुभव होता है। स्वभाव से आलसी होने के कारण ये जीवन में अनेक बार अपनी उन्नति के अवसरों को खो देते हैं। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है तथा खर्च बढ़ा-चढ़ा रहने के कारण कई बार ऋण लेने के अवसर भी उपस्थित होते हैं। विद्या का लाभ मध्यम होता है। विवाह २४ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री की ओर से चिन्ता बनी रहती है, परन्तु सन्तान की ओर से सुख तथा सहयोग प्राप्त होता है। वर्ष २४, २८, ३६, ४४, ५२, ५६, ५८ तथा ६० आर्थिक-दृष्टि से लाभप्रद सिद्ध होते हैं।

(७४०) – इस जन्माङ्ग चक्र वाला प्राणी साँवले रंग, लम्बे क़द का, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, साहसी तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। यह समय तथा परिस्थिति को पहिचान कर उनके अनुरूप स्वयं को ढाल लेने में कुशल होता है। किस व्यक्ति के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए तथा अपना काम किस तरह निकालना चाहिए, इसका इसे पूर्ण ज्ञान होता है। आवश्यकता से अधिक प्रदर्शन करने का दुर्गुण भी इसमें पाया जाता है। आर्थिक-स्थिति कमजोर रहते हुए भी यह अपने को धनवान प्रदर्शित करता है, फलत: अनेक बार कर्जदारी के अवसर भी आ जाते हैं। भाइयों से इसे सहयोग नहीं मिलता। विद्या का लाभ मध्यम होता है। विवाह २३ या २६ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री सुन्दरी तथा सुशीला होती है। सन्तानों में कन्याओं की संख्या अधिक होती है। जीवन के २४, २८, ३४, ३८, ४६, ५०, ५४ तथा ५८ वें वर्ष आर्थिक-दृष्टि से उन्नतिप्रद सिद्ध होते हैं। जीवन सामान्यत: सुख से बीतता है।

(६४१) – इस जन्मांग चक्र में उत्पन्न मनुष्य गेहुँए रंग का, कुछ लम्बाई लिए मध्यम कद का, स्वाभिमानी, साहसी तथा आत्मविश्वासी प्रकृति का होता है। यह बिगड़े हुए काम को भी अन्तिम समय पर अपने पक्ष में कर लेने में कुशल होता है तथा अपने लक्ष्य की ओर निरन्तर आगे बढ़ता रहता है। यह बड़े हाथ-पाँवों वाला, आचार-गुणों से हीन तथा युवतियों का प्रिय होता है। यह अपने रहस्यों को छिपाने में कुशल तथा दूसरों के प्रति सहानुभूति रखने वाला भी होता है। यह नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में विशेष प्रगति करता है। आर्थिक-दृष्टि से इसका जीवन उन्नतिशील बना रहता है। भूमि तथा निजी भवन का योग भी बनता है। भाइयों से विवाद रहता है। शिक्षा का लाभ मध्यम रहता है। विवाह २४ अथवा २८ वें वर्ष में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है। वर्ष २४, २८, ३२, ३६, ४०, ४६, ४८, ५०, ५६, ५८ तथा ६० आर्थिक-दृष्टि से उन्नतिकारक सिद्ध होते हैं।

(६४२) – इस जन्मकुण्डली में जन्म ग्रहण करनेवाला नाटे कद का, स्थूल शरीर वाला, स्वस्थ, गौर वर्ण तथा आकर्षक-व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। यह एक साथ कई विषयों पर विचार करने की क्षमता रखता है तथा अपने परिश्रम के बलपर लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होता है। यह स्वभाव से साहसी होने के कारण विपरीत-परिस्थितियों में भी घबराता नहीं है, अपितु उन्हें अनुकूल बनाने में सफल हो जाता है। जीभ पर नियन्त्रण न रख पाने के कारण इसके मित्रों की संख्या कम रहती है। इस की स्मरण-शक्ति कमजोर होती है, तथापि ये दृढ़ तथा उचित निर्णय लेने में कुशल होते हैं। आमदनी के स्रोत एक से अधिक रहने के कारण इसकी आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। निजी भूमि, भवन तथा वाहन का सुख भी प्राप्त होता है। शिक्षा का लाभ मध्यम रहता है। विवाह २२ से २६ वर्ष की आयु में होता है। संतानों में कन्याओं की संख्या अधिक होती है। दाम्पत्य-जीवन सुखमय रहता है। ४० वाँ वर्ष उन्नति प्रद।

भृ० सं० ८६८

(८४३)- इस जन्म-चक्र में उत्पन्न मनुष्य साँवले रंग तथा मध्यम कद का, हृष्ट-पुष्ट स्वस्थ शरीर का एवं आकर्षक-व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। यह दूसरों की सहायता करने के लिए सदैव प्रस्तुत रहता है, समाज-सेवा के कार्यों में बढ़-चढ़ कर हाथ बटाता है। मित्रता स्थापित करने में सिद्ध हस्त होता है तथा मित्र के लिए सर्वस्व-न्यौछावर करने को भी प्रस्तुत बना रहता है। साथ ही यह वहमी तथा शक्की स्वभाव का भी होता है तथा किसी पर सहसा विश्वास न करके हर समय चौकन्ना बना रहता है। इसे पग-पग पर विरोध का सामना भी करना पड़ता है तथा विपक्षी इसे आर्थिक-हानि भी पहुँचाते हैं। आर्थिक-दृष्टि से जीवन मध्यम बना रहता है तथा आकस्मिक-लाभ के अवसर भी प्राप्त होते रहते हैं। भाइयों से सहयोग नहीं मिलता, परन्तु भूमि, भवन, वाहन आदि की उपलब्धि होती है। शिक्षा साधारण रहती है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है। सन्तानों में कन्याएँ अधिक होती हैं। २५, ३६, ४८ तथा ५१वें वर्ष उन्नतिप्रद।

(८४४)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति गेहुँए रंग तथा लम्बे कद का, इकहरे शरीर तथा उन्नत ललाट वाला, शान्तिप्रिय तथा तीव्र स्मरण शक्ति वाला होता है। यह नियमानुसार कार्य करता है तथा समय का बड़ा पाबन्द होता है। यह मित्रता-स्थापित करने में कुशल होता है तथा मित्रों से सहयोग भी प्राप्त करता है। इसके मित्रों की संख्या विपुल होती है। आर्थिक-खर्च काफी बढ़ा-चढ़ा रहता है, अतः कर्जदारी के अवसर प्राप्त आते रहते हैं। आर्थिक-स्थिति सामान्यतः मध्यम रहती है। नेत्र-शक्ति कमजोर रहती है। परिवारी-जनों से झगड़े आदि के योग भी बनते हैं। पिता का क्षेत्र उन्नतिशील रहता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री सुन्दर तथा श्रेष्ठ स्वभाव की होती है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। संतानों में पुत्रों की अपेक्षा कन्याओं की संख्या अधिक होती है। जीवन के २५, २९, ३५, ३६, ४१, ४८, ५१, ५५, ५८ तथा ५९वें वर्ष आर्थिक-दृष्टि से उन्नतिप्रद सिद्ध होते हैं।

कु० र०

भू० सं० ८४२

कु० १०

(७४५)- इस जन्म कुण्डली में जन्म लेने वाला मनुष्य साँवले रंग, मध्यम कद, कुछ लम्बाई लिए आकर्षक
व्यक्तित्व, क्रोधी स्वभाव, कर्कश वाणी वाला तथा आलसी स्वभाव का होता है। इसके जीवन में
उन्नति के अनेक अवसर आते हैं, परन्तु वे इसके हाथ से निकल भी जाते हैं। आलसी, वहमी तथा आल-
सी स्वभाव का होने के कारण यह उनका लाभ नहीं उठा पाता। यह किसी पर सहसा विश्वास
न करके चौकन्ना बना रहता है। विरोधी-पक्ष पग-पग पर अड़चनें उपस्थित करता है, परन्तु मित्रों
के सहयोग से यह उन सबको दूर करने में सफल हो जाता है। शिक्षा यथेष्ट मिलती है। विवाह २५
वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है। सन्तान-पक्ष से सन्तोष बना रहता है।
वर्ष ३२, ४४, ५६ तथा ६८ स्वास्थ्य के लिए चिन्ताकारक रहते हैं तथा वर्ष ३०, ४२, ५४ एवं ६७ आर्थिक
दृष्टि से हानिप्रद रहते हैं। वर्ष २७, ३३, ३७, ४१, ४५, ५१, ५५ तथा ५८ व्यवसाय में लाभप्रद रहते हैं।

(७४६)- इस जन्माङ्ग चक्र में उत्पन्न हुआ प्राणी नाटे कद का, दुबला-पतला, नेत्र-रोगी, क्रोधी-
स्वभाव तथा साँवले रंग का होता है। यह दूसरों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण होता है, परन्तु उपकार के
बदले इसे अपकार ही मिलता है। यह एकान्त-प्रिय तथा दूसरों के व्यवहार से परेशान
रहने वाला होता है। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है, तथापि जीवन में आकस्मिक-लाभ के
अनेक अवसर मिलते रहते हैं। विद्या का लाभ रुक-रुक कर होता है। विवाह २६ अथवा
३० वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। सन्तानों में कन्याओं
की संख्या अधिक होती है। भाइयों से सहयोग प्राप्त होता है। बहिनों की संख्या अधिक
होती है। जीवन के २४, २८, ३४, ३६, ४४, ४८, ५२, ५६ तथा ६० वें वर्ष व्यवसाय तथा
आर्थिक-क्षेत्र में लाभदायक रहते हैं। जीवन सामान्यतः सुख-पूर्वक बीतता है।

(७४७)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी गेहुँआ रंग, मध्यम कद, मुँह पर दाग वाला, आलसी-प्रकृति एवं क्रोधी स्वभाव का होता है। जीवन में अनेक बार आने वाले उन्नति के अवसरों को यह खो देता है। यह पतले शरीर का, तेज चलने वाला तथा एकान्त-प्रिय होता है। शत्रु-पक्ष प्रबल रहता है। विपक्ष पग-पग पर कठिनाइयाँ उपस्थित करता रहता है, जिसके कारण यह प्रायः चिन्तित बना रहता है, दूसरों के प्रति उपकार की भावना रखते हुए भी इसे अपयश ही प्राप्त होता है। आकस्मिक-लाभ के अनेक अवसर प्राप्त होते हैं, तथापि आर्थिक-स्थिति मध्यम ही बनी रहती है। मानसिक-परेशानी के योग भी बनते रहते हैं। बुद्धि की कमी होने के कारण जातक कभी-कभी पागलों जैसा आचरण भी करता है। स्वास्थ्य कमज़ोर रहता है। विद्या अत्यन्त सामान्य। विवाह २६ वर्ष की आयु में हो सकता है। वर्ष १०, ३६, ५२ तथा ६३ स्वास्थ्य के लिए विशेष कष्टकर सिद्ध होते हैं। वर्ष ३२, ४०, ४८ तथा ५६ उन्नति कारक।

(७४८)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति साँवले रंग तथा लम्बे कद का, साहसी, पराक्रमी तथा स्वतन्त्र निर्णय लेने वाला होता है। इसमें लड़ने-भिड़ने की प्रवृत्ति पाई जाती है। विज्ञान संबंधी कार्यों में इसे गहरी दिलचस्पी रहती है तथा मशीनरी के जटिल पुर्जों में भी यह गहरी दिलचस्पी रखता है। आर्थिक-लाभ बढ़ा-चढ़ा रहता है, जिसके कारण समय-समय पर आर्थिक-चिन्ताएँ उत्पन्न होती रहती हैं, तथापि आर्थिक-स्थिति उन्नतिशील बनी रहती है एवं उसमें उतार-चढ़ाव भी आते रहते हैं। निजी भूमि-भवन आदि का योग भी बनता है। विवाह २२, २६ या २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है। पुत्रों की ओर से पूर्ण सुख प्राप्त होता है। कन्याओं की संख्या कम ही होती है। वर्ष २५, २९, ३३, ३७, ४१, ४५, ४९, ५३, ५७ तथा ५९ व्यवसाय के लिए लाभप्रद सिद्ध होते हैं।

(७४९) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी साँवले रंग का, सुन्दर नाक-नक्शा वाला, हृष्ट-पुष्ट स्वस्थ शरीर वाला, साहसी, परिश्रमी तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। वह विपरीत परिस्थितियों में भी दृढ़-संकल्प के साथ आगे बढ़ता रहता है। इसके विचार स्पष्ट तथा सुलझे हुए होते हैं। यह स्वतन्त्र निर्णय लेता है तथा लड़ने-भिड़ने को सदैव तत्पर बना रहता है। यह संघर्षशील जीवन बिताता है तथा जीवन में एक बार जिसे अपना लेता है, उसका सदैव साथ देता है। भाइयों की अपेक्षा बहनों की संख्या अधिक होती है। आर्थिक-स्थिति उन्नतिशील बनी रहती है। विवाह २१, २३ अथवा २७ वें वर्ष में होता है। स्त्री सुन्दरी, सुशीला तथा सुशिक्षिता होती है। सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक होती है। भाइयों की अपेक्षा बहनें अधिक होती हैं। जीवन के २३, २७, ३१, ३२, ३७, ४२, ४९, ५३, ५९, ६१ तथा ६३ वें वर्ष उन्नतिकारक होते हैं।

(७५०) - इस जन्मांग चक्र का स्वामी साँवले रंग एवं लम्बे शरीर का, साहसी, परिश्रमी, क्रोधी, संघर्षशील तथा योजनाबद्ध कार्य करने वाला होता है। स्वतन्त्र चेता होने के कारण यह किसी का नियन्त्रण स्वीकार नहीं कर पाता। यह स्पष्टवादी तथा निर्भीक प्रकृति का होता है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होने के कारण आर्थिक-स्थिति उत्तम बनी रहती है। भूमि आदि के सम्बन्ध में झगड़े-टंटे की सम्भावना रहती है। स्मरणशक्ति कमजोर होने के कारण इन्हें कई बार हानि भी उठानी पड़ती है। कई बार चोट लगने के अवसर भी आते हैं। विवाह २४, २६ या २८ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य एवं सन्तान-सुख उत्तम रहता है। पुत्रों से सहयोग मिलता है। जीवन के २५, २९, ३३, ४१, ४९, ५३, ५७ तथा ६३ वें वर्ष आर्थिक उन्नति दायक रहते हैं। वर्ष ६८ स्वास्थ्य के लिए विशेष चिन्ताजनक रहता है। आयु मध्यम होती है। —

(७५१)- इस जन्माङ्ग चक्र में उत्पन्न मनुष्य मध्यम कद, पुष्ट शरीर, बड़े डील-डौल तथा हठीले स्वभाव का होता है। सामान्यतः यह व्यावहारिक होता है, परन्तु कभी-कभी आपे से बाहर होकर अशिष्टता का परिचय भी दे जाता है। यह अपने स्व-निर्मित सिद्धान्तों का ही पालन करता है तथा आत्मविश्वास की भावना से परिपूर्ण होता है। यह विपरीत परिस्थितियों में भी अग्रसर होता रहता है तथा स्वयं को नियन्त्रित बनाये रखता है। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है। यह स्वपरिश्रम द्वारा ही उन्नति करता है, अन्य किसी की सहायता से नहीं। इसे अपने जीवन में भूमि, भवन, वाहन आदि का सुख मिलता है। शिक्षा मध्यम श्रेणी की प्राप्त होती है। विवाह २२ अथवा २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी हठीले स्वभाव की मिलती है, अतः दाम्पत्य-सुख सामान्य ही रहता है। पुत्रों से भी कोई सुख-सहयोग नहीं मिलता। वर्ष २२, २६, ३२, ३८, ४४, ४८, ५२, ५८, ६० तथा ६२ कार्यक्षेत्र में उन्नतिकारक रहते हैं।

(७५२)- इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य गौरवर्ण, सुन्दर नाक-नक्श वाला, हृष्ट-पुष्ट शरीर का, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न तथा कुछ अहंकारी स्वभाव का होता है। यह स्वयं को अन्यों की अपेक्षा अधिक बुद्धिमान, सुन्दर तथा शक्ति-सम्पन्न समझता है। अपने से बड़ों को प्रभावित करने में सक्षम होता है। आत्मविश्वास से परिपूर्ण तथा आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न रहता है। जीवन में आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं। भूमि, भवन तथा वाहन उपलब्धि का योग भी बनता है। विद्या का क्षेत्र उन्नत रहता है। बुद्धि तीव्र होती है। विवाह २४ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। पुत्र की अपेक्षा कन्यायें अधिक होती हैं। ६५वाँ वर्ष स्वास्थ्य के लिए तथा ३८वाँ वर्ष आर्थिक-दृष्टि से चिन्ताजनक रहता है। वर्ष २४, २८, ३२, ३४, ४०, ४६, ५०, ५६, ५८ तथा ६० कार्यक्षेत्र में लाभप्रद सिद्ध होते हैं।

(७५३)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न प्राणी साँवले रँग तथा बलिष्ठ शरीर का, शान्ति-प्रिय, मृदुभाषी, साहसी तथा स्वाभिमानी होता है। यह बहुत सोच-विचार कर ही कोई योजना बनाता है तथा उसपर दृढ़तापूर्वक अमल भी करता है। इसका मन तथा मस्तिष्क पर नियन्त्रण रहता है। परिश्रमी होने के कारण यह सदैव उन्नति-पथ पर अग्रसर होता रहता है। यह संगीत-नृत्य एवं काव्य में विशेष रुचि रखता है। आर्थिक-दृष्टि से उन्नतिशील बना रहता है तथा पैतृक-सम्पत्ति का लाभ भी प्राप्त करता है। भूमि, भवन तथा वाहन का सुख उपलब्ध होता है। भाइयों का सहयोग मिलता है। विद्या का यथेष्ट लाभ होता है। विवाह २२ अथवा २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है। सन्तानों में कन्याओं की संख्या अधिक रहती है। अपनी बुद्धि के उपयोग से आर्थिक-लाभ प्राप्त करता रहता है। जीवन के वर्ष २२, २८, ३४, ३८, ४०, ५०, ५८, ६० तथा ६२ आर्थिक उन्नतिकारक होते हैं।

(७५४)- इस जन्माङ्ग चक्र में उत्पन्न मनुष्य गौरवर्ण, सुन्दर नाक-नक्श वाला, बलिष्ठ शरीर का, शान्ति-प्रिय तथा मृदुभाषी होता है। यह दिन-रात परिश्रम करता रहता है। संगीत आदि ललित कलाओं से इसकी विशेष रुचि रहती है। यह शिक्षा-ग्रहण का विशेष शौकीन होता है तथा कई भाषाओं का ज्ञान प्राप्त कर लेता है। विवाह २१ से २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है। ससुराल से आर्थिक-लाभ भी होता है। विपरीत-लिङ्गी के प्रति इसका विशेष आकर्षण रहता है तथा यह उनसे आर्थिक-लाभ भी उठाता है। निजी भूमि तथा भवन की उपलब्धि भी होती है। वाहन का सुख भी मिलता है। गणित में इसकी विशेष रुचि रहती है। वर्ष ६६ स्वास्थ्य के लिए विशेष चिन्ताजनक रहता है। वर्ष २३, २६, ३३, ३६, ४५, ४६, ५१, ५६, ६१ तथा ६३ आर्थिक-दृष्टि से उन्नतिकारक सिद्ध होते हैं। आयु मध्यम होती है तथा आर्थिक-स्थिति उत्तम बनी रहती है।

(७५५) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी साँवले रंग, मध्यम कद, उन्नत ललाट तथा सुन्दर नाक नक्शा का, परिश्रमी, शान्ति-प्रिय तथा राजनीति में पटु होता है। समय आने पर यह अच्छा से अच्छा झूठ बोल लेता है तथा झूठ को सत्य भी सिद्ध करने में चतुर होता है। धन कमाने में यह विशेष पटु होता है। धन को संचित करने में भी कुशल होता है। विपरीत-लिङ्गी के प्रति इसका विशेष आकर्षण होता है। विपरीत-लिङ्गी के प्रति इसका विशेष आकर्षण होता है तथा इसमें कामुकता अधिक पाई जाती है। विद्या का श्रेष्ठ लाभ होता है। विवाह २२ अथवा २४ वें वर्ष में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुशिक्षिता मिलती है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। सन्तानों में कन्याओं की संख्या अधिक होती है। वर्ष ५८ तथा ६४ स्वास्थ्य के लिए तथा २१, ३३, ४५ एवं ५७ आर्थिक दृष्टि से कष्टप्रद रहते हैं। वर्ष २२, २८, ३२, ३८, ४४, ५२, ५८ तथा ६२ व्यवसाय में उन्नतिकारक होते हैं।

(७५६) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति गौरवर्ण, लम्बे कद का, उन्नत ललाट, इकहरे शरीर का तथा सुन्दर नाक-नक्शा वाला होता है। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी में इसे लाभ होता है। राजनीति के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। यह कोमल, नम्र तथा भावुक स्वभाव का एवं सहिष्णु तथा मधुरभाषी होता है। ईमानदार तथा भावुक होने के कारण यह कभी-कभी अपनी हानि भी कर बैठते हैं। आमदनी के साधन एक से अधिक होने के कारण इसकी आर्थिक-स्थिति उत्तम रहती है। भूमि तथा भवन के क्रय-विक्रय से भी लाभ होता है। विद्या का अच्छा लाभ मिलता है। विवाह २३ अथवा २५ वर्ष की आयु में होता है, परन्तु पत्नी कर्कशा स्वभाव की मिलती है, अतः दाम्पत्य-सुख में कमी रहती है। पुत्रों की संख्या अधिक होती है और उनसे सहयोग भी मिलता है। वर्ष २३, २७, ३३, ३८, ४२, ४८, ५५ तथा ५८ व्यवसाय में उन्नतिप्रद रहते हैं।

भु० सं० ३३२ — कु० र०

(७५७) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य साँवले रंग तथा मध्यम कद का, कुछ लम्बाई लिए पतले शरीर, नुकीली नाक तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। इसकी युवावस्था संघर्षों में बीतती है, किन्तु यह धीरे-धीरे उन्नति करता हुआ अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। यह सामाजिक-दृष्टि से विद्रोह करने वाला, बातचीत करने में निपुण तथा अपने सामने वाले को सम्मोहित कर लेने वाला होता है। आर्थिक-दृष्टि से इसका जीवन मध्यम रहता है तथा अनेक बार ऋण-ग्रस्तता के अवसर भी प्राप्त होते हैं। आकस्मिक-लाभ के अवसर भी इसके जीवन में कई बार आते हैं। विद्या का लाभ मध्यम रहता है। विवाह २३ अथवा २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी क्रोधी स्वभाव की तथा साँवले रंग की होती है। सन्तान-सुख उत्तम रहता है। पुत्रों की संख्या अधिक रहती है। वर्ष २२, ३४, ४६, ५२, ५४ तथा ५८ आर्थिक-दृष्टि से कष्टप्रद होते हैं। वर्ष २३, ३९, ४९, ५५ तथा ५७ उत्तम रहते हैं।

(७५८) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य गौरवर्ण, उन्नत ललाट, कोमल स्वभाव का तथा आशावादी होता है। यह भावुक प्रकृति का होता है तथा इसकी भावुकता कभी-कभी बुद्धि पर भी हावी हो जाती है। यह समय का पाबन्द, मधुरभाषी, विनयी तथा सहनशील भी होता है। काम को समय पर निपटाने का संकल्प उन्नत रहता है। आमदनी के एक से अधिक स्रोत हैं, तथापि इसकी आर्थिक-उन्नति धीरे-धीरे ही होती है। विद्या का सामान्य लाभ होता है। विवाह २३ अथवा २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी साँवली तथा क्रोधी स्वभाव की मिलती है। आयु का २९ वाँ वर्ष स्त्री के लिए कष्टप्रद सिद्ध होता है। सन्तान-पक्ष की ओर से चिन्ता बनी रहती है। वर्ष २१, २५, ३१, ३३, ३९, ४३, ४७, ५१, ५५ तथा ५७ जनलाभ में उन्नति कारक सिद्ध होते हैं। परिवार के लोगों से सम्बन्ध सामान्यतः अच्छे रहते हैं तथा विरोधी-पक्ष दबा रहता है। आयु मध्यम से कुछ अधिक होती है।

(७५९) इस जन्मकुण्डली का स्वामी गेहुँये रंग तथा कुछ लम्बाई लिए मध्यम कद का, साहसी तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। वह क्षण में रुष्ट तथा क्षण में तुष्ट होता है। क्षणिक क्रोध में गहरी-से-गहरी मित्रता को भी समाप्त कर देता है। यह इतना आलसी तथा सुस्त होता है कि जब तक सिर पर ही न आ पड़े, तबतक किसी भी कार्य को नहीं करता। यह संशयालु भी होता है तथा सदैव चौकन्ना बना रहता है, यहाँ तक कि अपनी पत्नी और पुत्रों पर भी सहसा विश्वास नहीं करता। इसके खर्चे बहुत बढ़े-चढ़े रहते हैं, अतः आर्थिक-स्थिति कमजोर ही बनी रहती है। भाइयों की अपेक्षा बहनें अधिक होती हैं। भाइयों से सहयोग मिलता है। विवाह २४ या २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी हठीले स्वभाव की मिलती है। सन्तान-पक्ष की ओर से भी चिन्ता रहती है। जीवन के वर्ष २४, २६, ३२, ३६, ४०, ४४, ४८, ५६ तथा ५८ आर्थिक-उन्नतिकारक सिद्ध होते हैं। आयु मध्यम रहती है।

(७६०)– इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य गौरवर्ण, नाटे कद का, मृदुभाषी, साहसी तथा शान्तिप्रिय होता है। यह प्रत्येक प्रकार की परिस्थिति में अपने आपको ढाल लेता है। जिसे अपनाता है, उसके प्रति आजीवन ईमानदार बना रहता है तथा मित्र के लिए सर्वस्व-त्याग हेतु भी प्रस्तुत रहता है। शत्रु इसे कोई हानि नहीं पहुँचा पाते। वे इसके समक्ष पराजित होते हैं। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होने के कारण आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। भूमि, भवन तथा वाहन का भी पूर्ण सुख प्राप्त होता है। भूमि आदि से आर्थिक-लाभ के अवसर भी उपलब्ध होते हैं। विद्या का यथेष्ट लाभ होता है। विवाह २२ से २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूला मिलती है। सन्तानों में पुत्र अधिक होते हैं और उनसे यथेष्ट सुख-सहयोग भी मिलता है। जीवन के वर्ष २२, २८, ३४, ४०, ४६, ५०, ५६, ६० तथा ६४ उन्नतिकारक सिद्ध होते हैं।

(७६१)- इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य गौरवर्ण, सुन्दर नाक-नक्शा वाला, उन्नत-ललाट, विशालनेत्र, घुँघराले बालों वाला, मृदुभाषी तथा शान्ति-प्रिय होता है। इसका व्यक्तित्व अत्यन्त आकर्षक होता है, अतः इसके मित्रों की संख्या भी बहुत होती है तथा इसे मित्रों द्वारा सहयोग भी प्राप्त होता है। यह प्रत्येक परिस्थिति में स्वयं को उसके अनुरूप ढाल लेने में कुशल होता है। यह अत्यन्त पराक्रमी, शत्रुओं का मर्दन करने वाला, अत्यन्त परिश्रमी तथा अत्यधिक भोगी (कामुक) भी होता है। इसके जीवन में आकस्मिक-लाभ के अनेक अवसर आते हैं तथा आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। इसे निजी भूमि, भवन की उपलब्धि होती है तथा भूमि-भवन आदि के क्रय-विक्रय द्वारा भी अत्यधिक आर्थिक-लाभ होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी साँवली तथा क्रोधी स्वभाव की होती है। सन्तान से सुख मिलता है। वर्ष २४, ३२, ३८, ४४, ५२, ५८ तथा ६० लाभप्रद।

(७६२)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य गेहुँए रंग तथा लम्बे कद का, साहसी एवं क्रोधी स्वभाव का, अपनी योजनाओं को मूर्त रूप देने में कठिनाइयाँ पाने वाला, संशयालु प्रकृति का तथा किसी की भी बात पर सहज ही विश्वास कर लेने वाला होता है, जिसके कारण इसे हानि भी उठानी पड़ती है। इसके जीवन में आर्थिक-हानि के अनेकों अवसर आते हैं तथा आर्थिक-दृष्टि से जीवन मध्यम रहता है। भूमि, भवन आदि पैतृक-सम्पत्ति पर झगड़े की संभावना रहती है। विद्या मध्यम श्रेणी की प्राप्त होती है। भाइयों से असहयोग मिलता है। विवाह २२, २४ या २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी से सामान्य सुख मिलता है। सन्तान से लाभ प्राप्त होता है। वर्ष २३, ३५, ४७ तथा ५९ आर्थिक-दृष्टि से चिन्ताजनक रहते हैं। वर्ष ३१, ४१ तथा ६५ स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद रहते हैं तथा वर्ष २४, ३२, ३६, ४४, ४८, ५२, ५८ तथा ६० आर्थिक लाभप्रद होते हैं।

(७६३) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी गौरवर्ण, उन्नत ललाट, पतले होंठ, सीधे-नाक-नक्शा वाला, सुन्दर तथा भावना-प्रधान होता है। यह लड़ाई-झगड़े से घृणा करता है तथा अपनी रुचि के विपरीत कार्यों को करने में असमर्थ रहता है। हवाई किले बनाना तथा तनिक सी कठोर परिस्थिति में भी घबरा जाना इसके स्वभाव में होता है। कोमलता, लज्जा, सुकुमारता एवं भावुकता आदि स्त्रियोचित गुण इसमें प्रचुरता से पाये जाते हैं। अचल-सम्पत्ति, मकान आदि पर झगड़े तथा उन्हें बेचने आदि के अवसर इसके जीवन में आते हैं। विवाह २३ या २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी की ओर से कुछ चिन्ता बनती है। विद्या तथा आर्थिक-स्थिति दोनों सामान्य रहती हैं। सन्तान से भी विशेष सुख-सहयोग नहीं मिलता। वर्ष २६, ३२, ३८ तथा ६७ स्वास्थ्य के लिए कष्टप्रद तथा वर्ष २३, ३१, ४३, ४९ एवं ५७ आर्थिक-उन्नति कारक रहते हैं।

(७६४) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति साँवले रंग, मध्यम कद, हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला तथा क्रोधी एवं साहसी स्वभाव का होता है। यह अपनी मान्यताओं तथा सिद्धान्तों पर दृढ़ बना रहता है तथा अपनी रुचि के विपरीत कार्यों को किसी भी परिस्थिति में करने को तत्पर नहीं होता। यह अपने आकर्षक व्यक्तित्व के बल पर अधिकारियों को आकर्षित कर उनसे इच्छित-लाभ उठाने में कुशल होता है। भाइयों से कोई सहयोग नहीं मिलता। विद्या मध्यम स्थिति की प्राप्त होती है। विवाह २३ अथवा २५ वें वर्ष में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है। सन्तानों की ओर से जीवन के उत्तरार्द्ध में चिन्ता बनी रहती है। वर्ष २४, ३६, ४२, ५४ तथा ६० आर्थिक-कष्टप्रद तथा वर्ष २६, ३२, ३८ तथा ६८ शारीरिक-कष्टप्रद रहते हैं। वर्ष २३, २७, ३३, ३९, ४५ तथा ५७ आर्थिक लाभदायक रहते हैं।

(७६५)- इस जन्म कुण्डली वाला जातक गौर वर्ण, कुछ लम्बाई लिए मध्यम कद वाला, आकर्षक तथा स्वाभिमानी होता है। यह न्याय तथा आदर्श को विशेष महत्व देता है। अधार्मिक तथा अनीतियुक्त कार्यों को नहीं करता तथा धार्मिक रीतियों से ग्रस्त रहता है। यह ईश्वर पर अत्यधिक भरोसा रखने वाला होता है। भाइयों की ओर से सहयोग मिलता है। अपने परिश्रम के बल पर यह आर्थिक क्षेत्र में भी निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। जीवन का प्रारंभिक समय कष्टप्रद तथा युवावस्था से उन्नति का समय आरंभ होता है। विद्या मध्यम रहती है। विवाह २४ या २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी तथा सन्तान से सुख प्राप्त होता है। वर्ष २२, २६, ३२, ३८, ४६, ५०, ५४, ५८ तथा ६० व्यवसाय अथवा आर्थिक उन्नति के लिए श्रेष्ठ सिद्ध होते हैं। यों जीवन में आर्थिक लाभ के अनेक अवसर प्राप्त होते रहते हैं।

(७६६)- इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य लम्बे कद तथा सांवले रंग का, वाकपटु, इकहरे शरीर का, कुछ दुबला, परन्तु अत्यधिक साहसी एवं आत्मविश्वास की भावना से परिपूर्ण होता है। यह सदैव सावधान बना रहता है तथा अपने स्वार्थ को किसी पर प्रकट नहीं होने देता। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होने के कारण इसकी आर्थिक स्थिति उत्तम बनी रहती है। आर्थिक-लाभ के लिए यह किसी भी कार्य को करने से नहीं चूकता। इसके जीवन का मूल उद्देश्य ही धन का संचय करना होता है। विद्या का मध्यम लाभ होता है। विवाह २६ वर्ष की आयु में होना संभव है। दाम्पत्य-सुख कष्टप्रद रहता है, क्योंकि पत्नी विरुद्ध-स्वभाव की होती है। सन्तान-पक्ष की ओर से भी चिन्ता बनी रहती है। जीवन के २२, २४, २८, ३४, ४०, ४६, ५० तथा ५८वें वर्ष व्यावसायिक एवं आर्थिक-लाभ की दृष्टि से उत्तम रहते हैं।

(७६७)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति साँवले रंग तथा मध्यम कद वाला, हठीले स्वभाव, परन्तु भीरु प्रकृति का एवं क्रोधी होता है। यह दूसरों के मन की भावना को तुरन्त पहिचान लेता है। अन्याय का खुल कर विरोध करना तथा न्याय का पक्ष लेना इनके स्वभाव में होता है। जीवन में निजी वाहन तथा सवारी का सुख प्राप्त होता है। विद्या-क्षेत्र भी उन्नत रहता है। विवाह २७ वर्ष की आयु में होना सम्भव है। पत्नी हठी स्वभाव की होती है, अतः दाम्पत्य-सुख उत्तम नहीं रहता। सन्तान-पक्ष की ओर से भी चिन्ता रहती है। पुत्रों की संख्या अधिक होती है, परन्तु वे सुख तथा सहयोग नहीं देते। निजी मकान तथा वाहन का सुख उपलब्ध होता है। आर्थिक-स्थिति मध्यम, परन्तु सन्तोषजनक बनी रहती है। वर्ष २८, २६, ३०, ३४, ३६, ४०, ४८, ५२, ५६, ५८ तथा ६२ अवस्थाएं उन्नतिप्रद सिद्ध होते हैं। आयु मध्यम प्राप्त होती है।

(७६८)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी हल्के साँवले रंग का, हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला, साहसी तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। यह अपने शत्रु को कभी क्षमा नहीं करता तथा जीवन में जब भी अवसर मिलता है, बदला लिये बिना नहीं छोड़ता। साहसी होने के साथ ही यह क्रूर भी होता है तथा कठिन-से-कठिन परिस्थिति में भी घबराता नहीं है। शत्रुओं का मान-मर्दन करने में इसे सफलता प्राप्त होती है। इसे भाइयों से सहयोग प्राप्त होता है। भूमि, भवन सम्बन्धी झगड़े भी उठ खड़े होते हैं। विद्या-लाभ रुकावटों के साथ होता है। विवाह २४ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है, परन्तु उसके साथ विचारों का सामंजस्य नहीं बैठ पाता। पुत्रों से सहयोग प्राप्त होता है तथा वे कन्याओं की अपेक्षा संख्या में अधिक भी होते हैं। वर्ष २५, ३१, ३८, ४५ तथा ५१ उन्नतिकारक रहते हैं।

(७६९)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी साँवले रंग तथा सुन्दर नाक-नक्शा वाला, कुटिल, साहसी, क्रोधी, संग्राम-प्रिय तथा पर-स्त्रीगामी होता है। यह शत्रुता को कभी नहीं भूलता तथा अवसर की तलाश में रह कर कभी-न-कभी बदला चुका लेता है। इस का व्यक्तित्व अत्यन्त आकर्षक होता है, फलतः स्त्री-पुरुष-दोनों ही इसकी ओर आकर्षित होते हैं। दूसरों के मनोभावों को पढ़ लेने में भी यह अत्यन्त कुशल होता है। अपना काम निकालने की कला में यह पटु होता है तथा मित्रों से भी इसे पर्याप्त सहयोग प्राप्त होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य-सुख सामान्य रहता है। विद्या-लाभ मध्यम रहता है। सन्तान से भी कोई विशेष सुख-सहयोग नहीं मिलता। जीवन के उत्तरार्द्ध में दिल अथवा फेफड़ों से संबंधित रोग हो सकते हैं। वर्ष 22, २८, ४६, ५८ तथा ६० स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद सिद्ध होते हैं।

(७७०)- इस जन्म कुण्डली का मालिक मध्यम कद वाला, गौरवर्ण, उन्नत ललाट, स्थूल शरीर, साहसी, राजनीतिज्ञ तथा अवसरवादी होता है। अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए यह पाँव भी छू लेता है तथा काम निकल जाने के बाद ठोकर भी मार सकता है। यह बहुत सोच-समझ कर ही किसी से मित्रता स्थापित करता है, परन्तु आत्मीयता हो जाने पर यह उसकी उन्नति एवं भलाई के लिए सब कुछ करने को तत्पर रहता है। यह कान का कच्चा होता है तथा दूसरों की झूठी बातों पर भी शीघ्र विश्वास कर लेता है। स्त्री इसकी कमजोरी होती है। यह जीवन में अनेक स्त्रियों से सम्पर्क स्थापित करता है। विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य जीवन सामान्य रहता है। सन्तानों से भी कोई सुख नहीं मिलता। वर्ष ६० तथा ६४ स्वास्थ्य के लिए चिन्ता जनक रहते हैं। वर्ष २२, २६, ३२, ३८, ४६, ५० तथा ५८ आर्थिक लाभप्रद सिद्ध होते हैं।

(७७१)- इस जन्मकुण्डली का मालिक साँवले रंग, इकहरे शरीर, मध्यम क़द वाला, परिश्रमी तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। यह सामान्य हास-परिहास से भी रुष्ट हो जाता है। परन्तु जितनी जल्दी इसे क्रोध आता है, उतनी ही शीघ्र शान्त भी हो जाता है। यह मानापमान का विशेष ध्यान रखने वाला तथा आत्मरक्षा में अपनी ग़लतियों के लिए शत्रु से भी क्षमा याचना करने में हिचकिचाहट का अनुभव न करने वाला होता है। आर्थिक-व्यय बढ़ा-चढ़ा रहने के कारण जीवन में आर्थिक-असंतुलन बना रहता है। पैतृक-सम्पत्ति का लाभ भी होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला मिलती है। सन्तान की ओर से चिन्ता रहती है तथा सन्तान-हानि के अवसर भी आते हैं। जीवन के २३, २७, ३१, ३७, ३९, ४५, ४९, ५१, ५५ तथा ५९ वें वर्ष उन्नति-दायक रहते हैं। आयु मध्यम प्राप्त होती है।

(७७२)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी गौरवर्ण, सुन्दर नाक-नक्श वाला, मध्यम कद, हृष्ट-पुष्ट शरीर का, मोटे होंठ तथा घुंघराले केशों वाला होता है। दीन-दुःखियों की मदद करने को सदैव तत्पर रहता है। सादा-जीवन; उच्च-विचार-सिद्धान्त का हामी होता है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं, अतः आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। निजी भूमि तथा भवन का योग भी बनता है। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय से लाभ होता है। विद्या का मध्यम लाभ होता है। विवाह २१ अथवा २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। वर्ष ५, १६, २२, २८, ४०, ५२ तथा ५८ स्वास्थ्य के लिए कष्टकारक तथा वर्ष २६, ३८, ५० एवं ६२ आर्थिक-दृष्टि से चिन्ता-जनक रहते हैं। वर्ष २३, २५, ३१, ३७, ४३, ४७, ५३, ५५ तथा ५९ उन्नति दायक रहते हैं।

भृ० सं० ३३८

कु० १०

(६६३) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी गौर वर्ण, सुन्दर नाक-नक्शा, मोटे होंठ, सुनहरे केशों वाला कार्य-तत्पर, स्फूर्तिवान्, दक्ष एवं शान्ति-प्रिय होता है। यह अपने लक्ष्य की ओर निरन्तर बढ़ता रहता है तथा समय का अत्यधिक पाबन्द होता है। यह जीवन में विश्वास रखने वाला होता है। विपरीत-लिङ्गी के प्रति प्रबल आकर्षण भी रखता है। विद्या का उत्तम लाभ होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है। दाम्पत्य-जीवन सुखमय रहता है। सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक होती है तथा उनसे सुख-सहयोग भी मिलता है। निजी भूमि-भवन, वाहन आदि का योग भी बनता है। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय से लाभ होता है। आर्थिक-स्थिति उत्तम बनी रहती है। जीवन के २३, २६, ३१, ३२, ४३, ४६, ५५, ५८ तथा ६३वें वर्ष आर्थिक-लाभ की दृष्टि से उत्तम रहते हैं।

(६६४) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति मध्यम कद, स्थूल शरीर, गौर वर्ण, साहसी तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। इसका जीवन आर्थिक-दृष्टि से संघर्षमय बना रहता है, क्योंकि आकस्मिक-व्यय प्रायः आते ही रहते हैं। यह विपरीत परिस्थितियों में भी अपना धैर्य एवं साहस बनाये रखता है तथा कठिनाइयों पर विजय पाने में सफल भी होता है। भाइयों से सहयोग मिलता है, परन्तु मित्रों से कोई सहयोग नहीं मिलता। आकस्मिक रूप से भूमि-लाभ की सम्भावना रहती है। इसकी वाणी कर्कश तथा कठोर होती है, जिसके फलस्वरूप बहुत कम लोगों से ही आत्मीयता स्थापित हो पाती है। विवाह २४ या २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी से प्रेम मिलता है। संतानों में कन्याएँ अधिक होती हैं तथा संतान-हानि के अवसर भी आते हैं। भाग्य धीरे-धीरे उन्नति करता है।

(७७५)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी गौर वर्ण सुन्दर नाक-नक्शा वाला, इकहरे शरीर का तथा साहसी प्रकृति का होता है। इसमें आत्मविश्वास की भावना अधिक पाई जाती है। यह एक ही समय में कई योजनायें बनाकर, उन्हें कार्यरूप में परिणित भी कर सकता है। यह प्रत्येक कार्य को खूब सोच-समझ कर करता है तथा परिश्रम के बल पर उसमें सफलता भी प्राप्त करता है। यह अपने लक्ष्य को आँखों से ओझल नहीं होने देता। आर्थिक-दृष्टि से इसका जीवन उन्नतिशील बना रहता है। आकस्मिक-लाभ के भी अनेक अवसर प्राप्त होते हैं। बुद्धि बहुत तीव्र होती है। विद्या का यथेष्ट लाभ होता है। विवाह २२ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है। सन्तान-पक्ष से सुख-सहयोग मिलता है। वर्ष २४, २८, ३२, ३४, ४६, ५२, ५६ तथा ५८ आर्थिक-लाभप्रद रहते हैं।

(७७६)- इस जन्म कुण्डली वाला व्यक्ति मध्यम कद, इकहरा शरीर, सुन्दर नाक-नक्शा वाला, गौर वर्ण तथा शान्ति-प्रिय होता है। यह वातावरण को पहिचान कर तदनुरूप आचरण करता है। किस व्यक्ति के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए, इसकी जानकारी रखता है, परन्तु यह आवश्यकता से अधिक प्रदर्शन-प्रिय होता है। समाज तथा मित्रों के बीच ठाठ-बाट का प्रदर्शन करने के कारण इसकी आर्थिक-स्थिति कमजोर बनी रहती है, तथापि आमदनी के एक से अधिक स्रोत होने के कारण धन की कमी से कोई काम रुकता नहीं है। विद्या-लाभ उत्तम होता है। विवाह २२ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य-सुख श्रेष्ठ बना रहता है। ३२ वर्ष की आयु में पुत्र-लाभ होता है। वर्ष २४, २८, ३२, ३८, ४८, ५४, ५६ तथा ६० क्रमशः लाभप्रद सिद्ध होते हैं।

(७७७)- इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य गेहुँए रंग का, स्थूल शरीर, लम्बी नाक वाला, शान्ति-प्रिय, आत्मविश्वासी, सुन्दर तथा स्त्रियों को प्रिय होता है। यह अपने कार्य के प्रति लगनशील तथा लक्ष्य के प्रति निष्ठावान् रहता है। परन्तु स्वयं दृढ़ता पूर्वक कोई निर्णय नहीं ले पाता, साथ ही वाणी का कठोर भी होता है, अतः मित्रों की संख्या बहुत कम रहती है। स्मरणशक्ति कमजोर होने के कारण इसे हानि तथा परेशानी भी उठानी पड़ती है। आर्थिक दृष्टि से जीवन उन्नतिशील बना रहता है, तथापि धन का अधिक संचय नहीं हो पाता। २५ वर्ष की आयु में भाग्योदय आरम्भ होता है। विवाह २३ वें वर्ष में होता है। दाम्पत्य-जीवन सुखमय रहता है। पुत्र की अपेक्षा कन्याओं की संख्या अधिक होती है। निजी भूमि तथा भवन का योग भी बनता है। वर्ष २५, २९, ३३, ३९, ४५, ४९, ५३ तथा ५५ आर्थिक-लाभदायक रहते हैं।

(७७८)- इस जन्मकुण्डली वाला प्राणी साँवले रंग, नाटे कद, क्रोधी स्वभाव तथा झगड़ालू प्रकृति का होता है। यह दूसरों की सहायता करने में भी अग्रणी रहता है। समाज-सेवा तथा राजनीति के क्षेत्र में विशेष रुचि लेता है। भाग्योन्नति धीरे-धीरे होती है। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है। घरेलू-खर्च अधिक बढ़े-चढ़े रहते हैं। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी से अधिक लाभ होता है। भूमि-भवन विषयक चिन्ता लगी रहती है। शिक्षा मध्यम होती है। विवाह २४ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है। ससुराल-पक्ष से धन का लाभ होता है। सन्तान-सुख उत्तम रहता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल होती है। वर्ष ६, ८, ३१, ३९, ५५, ६५ तथा ६२ स्वास्थ्य के लिए चिन्ताजनक रहते हैं। वर्ष २६, २८, ३४, ३८, ४२, ५०, ५४, ५८ तथा ६५ व्यवसाय अथवा आर्थिक-क्षेत्र में लाभप्रद होते हैं।

(७७९)- इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य साँवले रंग का, मुँह पर चेचक अथवा आग से जलने के दाग वाला, मध्यमकद का, समय का पाबन्द तथा मित्रता स्थापित करने में सिद्धहस्त होता है। परिश्रम की तुलना में लाभ कम मिलता है तथा अनेक बार उन्नति के अवसर हाथ से निकल जाते हैं। भाग्य रुक-रुक कर साथ देता है। ज़बान का तीक्ष्ण होने के कारण अधिकारी वर्ग से पटरी मेल नहीं खाती। सत्यवादी होने के कारण जीवन में कई बार धोखा खाता तथा हानि उठाता है। शंकालु-स्वभाव का होने के कारण यह किसी पर सहसा विश्वास भी नहीं करता। विद्या-लाभ मध्यम रहता है। विवाह २४ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सांवले रंग की तथा क्रोधी स्वभाव की होती है। संतान पक्ष की ओर से चिन्ता बनी रहती है। वर्ष २६,३२,४०,४८,५४ तथा ५८ उन्नतिकारक रहते हैं।

(७८०)- इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य साँवले रंग, लम्बे मुँह, नाटे कद वाला तथा क्रोधी एवं साहसी प्रकृति का होता है। यह दूसरों के प्रति सहानुभूति की भावना रखता है तथा स्वयं किये हुए उपकार को भूल जाता है। भाइयों से सहयोग नहीं मिलता। बहनों की संख्या अधिक होती है। विद्या-लाभ में रुकावटें आती हैं। आकस्मिक-व्यय के कारण आर्थिक स्थिति असंतुलित बनी रहती है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री सुन्दर, सुशील तथा सुशिक्षिता मिलती है। दक्षिण-दिशा से विवाह होना संभव रहता है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। पुत्रों से लाभ तथा सहयोग मिलता है। वर्ष ५,३२,३८,५६ तथा ६२ स्वास्थ्य के लिए हानि अथवा कष्ट-प्रद, वर्ष ३५,४२,५४ तथा ५८ आर्थिक कष्ट-प्रद तथा वर्ष २३,२७,३५,३९,४७,५५ एवं ६९ आर्थिक-लाभ-प्रद सिद्ध होते हैं।

भृ० सं० ८७३

कु० १०

(७८१) – इस जन्म कुण्डली वाला प्राणी गौर वर्ण, उन्नत ललाट, विशाल नेत्रों वाला, सुन्दर; परन्तु क्रोधी स्वभाव का होता है। यह दूसरों के प्रति सहानुभूति पूर्ण होता है तथा मित्रता स्थापित करने में कुशल भी। यह धार्मिक-रुचि का, ईश्वर में अगाध विश्वास रखने वाला एवं शत्रु-पक्ष तथा भूमि-भवन आदि के विषय में आर्थिक-हानि पाने वाला होता है। भाइयों की अपेक्षा बहिनों की संख्या अधिक रहती है। शत्रुओं द्वारा आर्थिक-हानि पहुँचाने का प्रयत्न होता रहता है, अतः आर्थिक-स्थिति कष्टप्रद रहती है। भूमि, भवन आदि के विषय में भी आर्थिक-हानि के अवसर उपस्थित होते हैं। विद्या का लाभ साधारण होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री सुन्दर तथा सुशीला होती है। संतान-पक्ष की ओर से भी चिन्ता रहती है। वर्ष २३, ३५, ४७ तथा ५६ लाभप्रद रहते हैं।

(७८२) – इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य गौरवर्ण, सुन्दर, भीरु-स्वभाव, शान्ति-प्रिय, स्वाभिमानी तथा संशयालु-प्रकृति का होता है। इसे विश्वास में लेना कठिन होता है। यह अपने आपमें खोया रहता है, किसी से मिलना-जुलना पसन्द नहीं करता तथा एकान्त चाहता है। जीवन में मित्रों का अभाव रहता है। आकस्मिक-व्यय की अधिकता के कारण आर्थिक-स्थिति प्रायः कमजोर बनी रहती है। भूमि, मकान आदि का झगड़े का योग बनता है। भाइयों से सहयोग नहीं मिलता। विद्या का लाभ सामान्य रहता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुशिक्षिता होती है। सन्तान की ओर से चिन्ता बनी रहती है। वर्ष ६, ८, ३२, ४४ तथा ६२ स्वास्थ्य के लिए कष्टप्रद रहते हैं। वर्ष २३, २७, ३५, ३९, ४५, ४७, ५७ तथा ५९ उन्नति कारक रहते हैं।

(७८३) - इस जन्म कुण्डली वाला जातक गेहुऍं रंग, इकहरे शरीर का, लम्बे कद वाला, स्पष्टवादी, क्रोधी, साहसी तथा निर्भीक-प्रकृति का होता है। इसका क्रोध समाप्त भी जल्दी ही हो जाता है। विज्ञान सम्बन्धी कार्यों में इसे विशेष रुचि रहती है। मशीनरी के कामों में भी यह गहरी रुचि रखता है। भाइयों से कोई सहयोग नहीं मिलता। निजी भवन, वाहन आदि का योग बनता है। विद्या का उत्तम लाभ होता है। विवाह २२ या २६ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री सुन्दरी, सुशिक्षिता एवं सुशीला होती है। सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक होती है। पेट से सम्बन्धित रोग तथा वात-विकार की पीड़ा संभव है। ३५ वर्ष की आयु में किसी अपराध के कारण कारावास भी सम्भव है। आर्थिक-स्थिति सन्तोषप्रद बनी रहती है। वर्ष २४, २६, ३०, ३६, ४०, ४८, ५२, ५६, ६० तथा ६२ व्यवसाय में उन्नतिप्रद सिद्ध होते हैं

(७८४) - इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य गौर वर्ण, लम्बे कद का, सुन्दर नाक-नक्शे वाला, उन्नत ललाट, घुँघराले केश तथा आकर्षक व्यक्तित्व का होता है। यह स्वतन्त्र-निर्णय लेता है तथा कठिन-से-कठिन परिस्थितियों में भी घबराता नहीं है। यह विपत्तियों का साहस के साथ मुकाबिला करता है और उन पर विजय भी पाता है। भाइयों की अपेक्षा बहिनों की संख्या अधिक होती है। विद्या का क्षेत्र उन्नतिकारक बना रहता है। विवाह का योग वर्ष २२ अथवा २६ में बनता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है, तथापि एक से अधिक स्त्रियों के साथ जातक का सम्बन्ध रहता है। दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहता है। पुत्रों से सहयोग प्राप्त होता है तथा सन्तान-पक्ष से सन्तोष प्राप्त होता है। वर्ष २४, २८, ३२, ३६, ४०, ४८, ५२, ५४, ५६ तथा ५८ व्यवसाय में लाभप्रद रहते हैं।

(७८५)- इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य गौरवर्ण, मध्यम कद, उन्नत ललाट, हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला, सुन्दर नेत्रों वाला, साहसी; परन्तु शान्ति-प्रिय स्वभाव का होता है। यह प्रत्येक परिस्थिति को अपने अनुकूल बना लेता है तथा योजनाबद्ध ढंग से कार्य करता है। यह किसी की नौकरी अथवा नियन्त्रण में रहकर कार्य नहीं कर पाता। २४ वर्ष की आयु से इसका भाग्योदय आरंभ होता है तथा २८ वर्ष की आयु में पूर्ण भाग्योदय हो जाता है। पैतृक-सम्पत्ति का लाभ होता है तथा आकस्मिक-लाभ के भी अनेक अवसर प्राप्त होते हैं, अतः आर्थिक-स्थिति उत्तम रहती है। विवाह २२ से २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर तथा सुशीला होती है। एक से अधिक पत्नियों का योग भी संभव है। पुत्रों से सहयोग प्राप्त होता है। वर्ष २७, २८, ३२, ३८, ४०, ४४, ५२, ५६ तथा ५८ व्यवसाय में उन्नति कारक सिद्ध होते हैं।

(७८६)- इस जन्म कुण्डली वाला जातक गौरवर्ण, मध्यम कद का, सुन्दर नाक-नक्शा वाला, स्वस्थ, हृष्ट-पुष्ट शरीर, चंचल-प्रकृति का तथा स्वाभिमानी होता है। यह चुम्बकीय-व्यक्तित्व का धनी होता है, अतः अन्य लोगों को अपनी ओर शीघ्र आकर्षित कर लेता है। अपने से बड़े लोगों तथा अधिकारियों को प्रभावित करने में यह विशेष रूप से सक्षम होता है। यह स्व-निर्मित सिद्धान्तों का दृढ़ता पूर्वक पालन करता है। आमदनी के साधन अच्छे रहते हैं, परन्तु खर्च बढ़ा-चढ़ा रहता है, अतः आर्थिक-स्थिति मध्यम ही रहती है। विद्या का उत्तम लाभ होता है। विवाह २४ से २८ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। पुत्र की अपेक्षा कन्याएँ अधिक होती हैं। वृद्धावस्था में हृदय-रोग होना संभव है। वर्ष २२, ३४, ४२ तथा ६६ स्वास्थ्य के लिए कष्टप्रद तथा वर्ष २५, २९, ३७, ४५, ४९, ५५ एवं ६१ रोजगार में उन्नतिप्रद रहते हैं।

(७८७) – इस जन्म कुण्डली का जातक गौरवर्ण, इकहरे बदन का, सुन्दर, परिश्रमी, स्वस्थ तथा शान्ति-प्रिय होता है। यह अहंकारी प्रकृति का भी होता है और इसे यह भ्रम भी रहता है कि मैं अन्य लोगों की अपेक्षा अधिक सुन्दर, बुद्धिमान तथा धनी हूँ। अपने से बड़े लोगों तथा अधिकारियों को प्रभावित करने में यह सक्षम होता है। आत्म-विश्वास की अधिकता के साथ ही यह अपने ऊपर नियन्त्रण रखने में भी कुशल होता है। मित्रता स्थापित करने में यह बड़ा पटु होता है। यह विपरीत-परिस्थितियों का भी धैर्य पूर्वक सामना करता है तथा अपने साहस को नहीं गिरने देता। यह सदैव उन्नति के मार्ग पर बढ़ता रहता है तथा आर्थिक-स्थिति अच्छी रहती है। ससुराल-पक्ष से भूमि-भवन आदि का लाभ होना संभव है। विवाह 23 या 26 वर्ष की आयु में होता है। स्त्री साँवले रंग की मिलती है। दाम्पत्य एवं संतान-सुख उत्तम रहता है।

(७८८) – इस जन्म कुण्डली का अधिपति हल्के साँवले रंग का, नाटे कद का, स्वस्थ, पुष्ट शरीर वाला, साहसी तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। सामान्यतः यह व्यावहारिक होता है, परन्तु कभी कभी आपा खोकर अशिष्टता का परिचय भी दे बैठता है, जिसके फल स्वरूप सम्मान को ठेस भी लगती है। यों, मन तथा मस्तिष्क पर नियन्त्रण रखने के कारण यह शीघ्र उन्नति करता है तथा साहसी होने के कारण विपरीत-परिस्थितियों को भी अनुकूल बना लेता है। भूमि-भवन का योग भी बनता है। संगीत-काव्य आदि ललित कलाओं में विशेष रुचि लेता है। विद्या का यथेष्ट लाभ होता है। विवाह 25 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, परन्तु जिद्दी स्वभाव की होती है। पुत्र की अपेक्षा कन्याएं अधिक होती हैं। वर्ष 26, 32 तथा 44 आर्थिक-दृष्टि से एवं 10, 22, 38, 42 तथा 52 स्वास्थ्य की दृष्टि से चिन्ताजनक रहते हैं। वर्ष 33 से भाग्योदय होता है।

भृ० सं० ७७८

कु० १०

---

(७८९) - इस जन्म कुण्डली का मालिक गौर वर्ण, मध्यम कद का, उन्नत ललाट एवं पुष्ट शरीरवाला, सम्मोहक-व्यक्तित्व, शान्ति-प्रिय तथा कामुक-प्रकृति का होता है। विपरीत-लिङ्गी के प्रति इसका गहरा आकर्षण रहता है। स्वभाव से परिश्रमी होने के कारण यह आर्थिक-क्षेत्र में विशेष उन्नति करता है। भाइयों से सहयोग मिलता है। शान-शौकत में अधिक खर्च करते रहने के कारण आर्थिक-स्थिति मध्यम बनी रहती है। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में विशेष सफलता मिलती है। यह अपने बुद्धि-बल से विपत्तियों पर विजय प्राप्त करता है। सवारी, भूमि-भवन आदि का पूर्ण सुख प्राप्त होता है। विवाह २२ या २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूला मिलती है। विद्या का उत्तम लाभ होता है। वर्ष २४, २८, ३०, ३४, ३८, ४६, ५०, ५६ तथा ५८ व्यवसाय में उन्नति कारक सिद्ध होते हैं।

(७९०) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी साँवले रंग का, मध्यम कद, उन्नत ललाट वाला, सुन्दर, शान्ति-प्रिय तथा कामुक स्वभाव का होता है। यह एक साथ कई योजनायें बनाता है तथा जो भी कार्य करता है, उसमें सफलता प्राप्त करता है। पढ़ने-लिखने में इसकी विशेष रुचि रहती है तथा प्रत्येक विषय का अध्ययन गंभीरता से करता है। कठिन-से-कठिन परिस्थिति में भी यह अपने धैर्य तथा साहस को नहीं छोड़ता। संकटों का दृढ़ता पूर्वक सामना कर, उन पर सफलता प्राप्त करता है। जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव आते हैं। आर्थिक-दृष्टि से जीवन उन्नतशील बना रहता है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं। विवाह २२ अथवा २४ वें वर्ष में होता है। स्त्री सुन्दर तथा सुशीला होती है। कन्यायें अधिक होती हैं। भाग्योदय २६ वर्ष की आयु में होता है। वर्ष २६, ३४, ४०, ४६, ५८ तथा ६० उन्नति कारक रहते हैं।

(८६१)- इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य हल्के साँवले रंग का, कुछ लम्बाई लिए मध्यम कद का परिश्रमी तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। लक्ष्य को प्राप्त किए बिना यह चैन से नहीं बैठता। यह एक साथ कई विषय पर सोच सकता है तथा कई कामों को कर सकता है। येन-केन-प्रकारेण धन का संचय करना ही इनका उद्देश्य होता है, अतः इनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। लोगों से काम निकालने की कला में यह पटु होता है, साथ ही अपने वचन का भी दृढ़ता पूर्वक पालन करता है। बुद्धि द्वारा धनोपार्जन के अनेक अवसर इसे प्राप्त होते हैं। शिक्षा उत्तम रहती है। विवाह २४ से २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा प्रियवादिनी होती है। सन्तानों में कन्याएं अधिक होती हैं। वर्ष २१, ३३, ४१ तथा ५१ आर्थिक दृष्टि से कमजोर तथा वर्ष २६, २८, ३४, ४२, ४६, ५०, ५६ तथा ६२ लाभप्रद रहते हैं।

(८६२)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी गौरवर्ण, उन्नत ललाट, हृष्ट-पुष्ट शरीर, लम्बे कद का, स्वाभिमानी तथा परिश्रमी होता है। यह शारीरिक-श्रम की अपेक्षा मानसिक श्रम अधिक करता है तथा प्रतिदिन का काम प्रतिदिन ही निपटाया करता है। शैक्षणिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में इसकी विशेष रुचि होती है। यह अनेक योजनाओं को बनाता तथा मिटाता है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होने के कारण इसकी आर्थिक-स्थिति उत्तम बनी रहती है। विवाह २५ या २८ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य-सुख श्रेष्ठ रहता है तथा सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक होती है। वर्ष २१ व्यवसाय की दृष्टि से कष्टकारक रहता है, तथा वर्ष २३, २७, ३५, ३९, ४७ तथा ५५ आर्थिक-उन्नति दायक सिद्ध होते हैं। शिक्षा का स्तर अच्छा रहता है। आयु मध्यम से कुछ अधिक प्राप्त होती है।

(७६३)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी गौर वर्ण, पतले तथा सुन्दर होंठों वाला, उन्नत-ललाट, मध्यम कद, पुष्ट-शरीर, शान्ति-प्रिय तथा सहनशील स्वभाव का होता है। यह शारीरिक की अपेक्षा मानसिक-श्रम अधिक करता है। वार्तालाप में पटु होने के कारण यह अपने सामने वाले को सम्मोहित कर लेता है। यह ईमानदार तथा न्याय-प्रिय होता है तथा सामाजिक रूढ़ियों पर विश्वास नहीं करता। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होने के कारण आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। निजी भूमि तथा भवन का योग भी बनता है। विद्या का लाभ मध्यम होता है। स्त्री साँवले रंग की तथा क्रोधी स्वभाव की होती है। सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक होती है। वर्ष ६, २३, ३६, ४८ तथा ६३ स्वास्थ्य के लिए तथा वर्ष २१, ३३, ४५ एवं ५७ आर्थिक-दृष्टि से कष्टप्रद रहते हैं। वर्ष २४, ३८, ४२, ५४ तथा ५८ शुभ हैं।

(७६४)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति साँवले रंग का, नाटे कद का, साहसी, आलसी तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। क्षणे रुष्टा-क्षणे तुष्टा स्वभाव का होने के कारण यह कई बार अपनी हानि कर बैठता है। आलसी होने के कारण लाभ के अनेक अवसरों को अपने हाथ से निकाल देता है। आकस्मिक-लाभ के अनेक अवसर मिलते रहने के बावजूद आर्थिक-स्थिति कमजोर रहती है तथा अनेक बार ऋण-ग्रस्तता का शिकार होना पड़ता है। भाइयों से किसी प्रकार का सहयोग नहीं मिलता। जुए-सट्टे आदि में भी कई बार हानि उठानी पड़ती है। भूमि-भवन आदि के विषय में चिन्ता बनी रहती है। विवाह २३ या २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी क्रोधी-स्वभाव की मिलती है, अतः उसकी ओर से मन चिन्तित बना रहता है। पुत्र जन्म के बाद भाग्योदय होता है तथा पुत्रों से सहयोग भी मिलता है।

पृ० सं० 022 कु० १०

(७९५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी गौरवर्ण, सुन्दर, गोल-चेहरा, घुँघराले केश तथा सम्मोहक-
व्यक्तित्व वाला होता है। यह प्रत्येक परिस्थिति के अनुरूप स्वयं को ढाल लेता है, साथ ही
सेवाभावी प्रकृति का भी होता है। यह जिससे आत्मीयता के सम्बन्ध स्थापित कर लेता है, उसे
अन्त तक निभाता है तथा अपने मित्र के प्रति सदैव ईमानदार एवं वफादार बना रहता है।
यह शत्रुओं को दबाने में सफल होता है, अतः शत्रु-पक्ष इससे सदैव आतंकित बना
रहता है। इसे अपने प्रत्येक कार्य में संघर्ष करना पड़ता है, परन्तु अन्ततः सफलता भी प्राप्त
होती है। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है। नौकरी की अपेक्षा कारोबार से लाभ होता है। भाइ-
-यों से कष्ट मिलता है। विद्या का लाभ मध्यम रहता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है।
पत्नी मनोनुकूला मिलती है। सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक रहती है। वर्ष २६, ३०, ३४,
४२, ४६, ५०, ५४, ५६ तथा ५८ आर्थिक-दृष्टि से उन्नतिकारक सिद्ध होते हैं।
(७९६) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति गौरवर्ण, मध्यम कद तथा इकहरे बदन का, स्वाभि-
मानी, साहसी, सदैव प्रसन्न रहने वाला, परन्तु क्रोधी स्वभाव का होता है। यह क्षणिक-
आवेश में गहरी-से-गहरी मित्रता को भी समाप्त कर देता है। इसके हृदय की बात को कोई
पहिचान नहीं पाता। यह शत्रुओं का मान-मर्दन करने में कुशल होता है। यह अज्ञात-
रहस्यों की खोज में रुचि रखने वाला, प्रत्येक क्षेत्र में संघर्ष करने वाला तथा अत्यन्त भोगी
(कामुक) प्रवृत्ति का भी होता है। विद्या का क्षेत्र उन्नतिकारक रहता है। विवाह २५ वर्ष की
आयु में होता सम्भव है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। सन्तान-सुख भी उत्कृष्ट रहता है। पैतृक-
सम्पत्ति पर झगड़े आदि के अवसर उपस्थित होते हैं। वर्ष २५, ४७ तथा ५९ विशेष लाभप्रद रहते हैं।

(८९७)– इस जन्मकुण्डली वाला जातक गौरवर्ण, हृष्ट-पुष्ट शरीर, उन्नत ललाट वाला, सुन्दर तथा शान्ति-प्रिय होता है। इसमें स्त्रियोचित सुकुमारता, लज्जा तथा भावुकता आदि गुण भी पाये जाते हैं। भावना प्रधान होने के कारण यह कठोर कार्यों को नहीं कर पाता तथा लड़ाई-झगड़े आदि से बचता है और उन्हें घृणा करता है। अपनी इच्छा के विपरीत कार्यों को करना इनके लिए सम्भव नहीं होता। परिश्रमी होने के कारण इनकी आर्थिक-स्थिति उत्तम रहती है तथा पैतृक सम्पत्ति का भी पूर्ण लाभ प्राप्त होता है। भाइयों से सहयोग मिलता है। निजी भवन, वाहन आदि का पूर्ण सुख मिलता है। विवाह २४ या २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है, परन्तु सन्तानें होते हुए भी उनकी ओर से अत्यधिक चिन्ता बनी रहती है। जीवन के २४, ३०, ३६, ४२, ४६, ५०, ५६, ५८ तथा ६०वें वर्ष आर्थिक-दृष्टि से उत्तम रहते हैं।

(८९८)– इस जन्मकुण्डली का अधिपति गौरवर्ण, लम्बे कद वाला, उन्नत ललाट, सुन्दर नेत्र तथा स्वस्थ शरीर वाला, शान्ति-प्रिय एवं न्यायप्रिय होता है। यह मृदुभाषी होता है तथा अपने लक्ष्य की ओर धीरे-धीरे आगे बढ़ता है। यह स्वतन्त्र-विचारक होता है तथा किसी दूसरे की राय को स्वीकार नहीं करता। ईश्वर में इसकी अगाध श्रद्धा होती है तथा धार्मिक-कार्यों में विशेष रुचि लेता है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं, अतः आर्थिक स्थिति उत्तम बनी रहती है। पैतृक-सम्पत्ति का लाभ होता है। भूमि, भवन, वाहन तथा सेवक आदि का सुख प्राप्त होता है। शिक्षा यथेष्ट प्राप्त होती है। विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री सुन्दरी तथा सुशीला होती है। वर्ष २३, ३५ तथा ४० आर्थिक कष्टकारक, वर्ष ८, १३, २२, ३७ तथा ५१ स्वास्थ्य के लिए कष्टप्रद एवं वर्ष २४, ३६, ४८ तथा ५८ उन्नतिकारक रहते हैं।

(७९९) - **इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य** गौर वर्ण, हृष्ट-पुष्ट शरीर, उन्नत ललाट, पतले होठोंवाला, सुन्दर, शान्ति-प्रिय तथा साहसी होता है। लोगों को परखने की इसमें विलक्षण शक्ति होती है। यह बातचीत में पटु होता है तथा अजनबी व्यक्ति को भी कुछ ही क्षणों में सम्मोहित कर लेता है। इसके मित्रों की संख्या अधिक होती है तथा यह उनके सहयोग से उन्नति भी करता है। यह हँस-मुख, चतुर तथा श्रेष्ठ-मित्र होता है। लड़ाई-झगड़े से दूर रहता है। विवाह २४ या २६ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री सुन्दर, सुशील तथा सुशिक्षिता होती है। विवाहोपरान्त भाग्योदय होता है। विद्या श्रेष्ठ प्राप्त होती है। पुत्रों की संख्या अधिक होती है तथा उनके सुख सहयोग भी प्राप्त होता है। भूमि, भवन आदि की उपलब्धि भी होती है। जीवन के २४, २६, ३०, ३६, ४२, ४८, ५४, ५६ तथा ६० के वर्ष उन्नति कारक सिद्ध होते हैं। आर्थिक-स्थिति ठीक रहती है।

(८००) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य कुछ लम्बाई लिये मध्यम कद का, गेहुँए रंग वाला, साहसी, शान्ति-प्रिय, न्याय-प्रिय तथा आदर्शवादी होता है। यह अधार्मिक तथा अनैतिक कार्यों से दूर रहता है। धोखा, छल-कपट, बेईमानी आदि से बचकर चलता है। धार्मिक मान्यताओं से तनिक भी विद्रोह नहीं करता। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय से अधिक लाभान्वित होता है। आर्थिक-दृष्टि से जीवन उन्नत बना रहता है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं। निजी भूमि, भवन आदि का योग बनता है। भाइयों के लिए इसे खर्च करना पड़ता है, इनसे कोई सहयोग नहीं मिलता। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी साँवली तथा हठीले स्वभाव की होती है। सन्तान-पक्ष की ओर से चिन्ता बनी रहती है। ससुराल-पक्ष से धन का लाभ होता है। वर्ष २३, २७, ३३, ३५, ४१, ४८, ५३ तथा ५८ आर्थिक उन्नति दायक होते हैं।

(८०१) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य हल्के साँवले रंग का, मध्यम कद, कुछ लम्बाई लिए स्थूल-शरीर का तथा क्रोधी-स्वभाव का होता है। पर अत्यधिक आत्मविश्वासी तथा हवाई किले बनाने वाला भी होता है। मनुष्य को पहिचान लेने की इसमें अद्भुत शक्ति होती है। दूसरों के मन की बात को भाँप लेने में ये कुशल होते हैं। ये वणिक-वृत्ति प्रधान होते हैं तथा अर्थ-संचय में इन्हें विशेष सफलता प्राप्त होती है। अपने साहस एवं पराक्रम के बल पर ये अपनी आर्थिक-स्थिति को सुदृढ़ बनाते हैं। इन्हें निजी भूमि, भवन तथा सवारी का सुख भी प्राप्त होता है। इनके मन की बात को अन्य लोग नहीं जान पाते। विवाह २५ या २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। दाम्पत्य एवं सन्तान-सुख उत्तम रहता है। वर्ष २५, २९, ३३, ३७, ४५, ५१, ५९ तथा ६१ आर्थिक-दृष्टि से उन्नति कारक सिद्ध होते हैं।

(८०२) - इस जन्मकुण्डली चक्र वाला प्राणी साँवले रंग का, मध्यम कद का, सामान्य सुन्दर, चतुर तथा वाक्पटु होता है। इसके हृदय की भावना को समझ पाना सरल नहीं होता। यह रोका रुकाया भी झुंझलाता रहता है। ऐसे प्रत्येक कार्य को करने हेतु यह तत्पर बना रहता है, जिसके द्वारा आर्थिक-लाभ होना सम्भव हो। भाइयों की अपेक्षा बहिनों की संख्या अधिक होती है तथा भाइयों से सहयोग भी मिलता है। आर्थिक-स्थिति उन्नतिशील बनी रहती है। विद्या का लाभ कुछ रुकावटों के साथ होता है। विवाह २३, २५ या २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी हठी स्वभाव की होती है। ससुराल-पक्ष से धन का लाभ होता है। सन्तान-पक्ष की ओर से चिन्ता बनी रहती है। वर्ष २७, ३६, ४८, ५६ तथा ६० आर्थिक-दृष्टि से एवं वर्ष ३८, ४० तथा ६२ शारीरिक-स्वास्थ्य की दृष्टि से चिन्ताजनक रहते हैं।

(८०३)- इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य गौरवर्ण, मध्यम कद, इकहरे शरीर का, सुन्दर नाक-नक्शा वाला, साहसी तथा शान्ति प्रिय होता है। यह सत्य, न्याय तथा ईमानदारी को विशेष महत्व देता है। दूसरों की मदद करना इसके स्वभाव में होता है। निःस्वार्थ-सेवा, भलाई के कार्य तथा धार्मिक कार्यों के लिए यह सदैव प्रस्तुत बना रहता है। यह दूसरों के मन जानने में कुशल, अपने विषय में सदैव सावधान तथा इच्छित-वस्तु को प्राप्त करने में सफल रहता है। स्त्री, भूमि, मकान तथा वाहन का पूर्ण सुख इसे प्राप्त होता है। आर्थिक-सम्पन्नता बनी रहती है। विद्या-लाभ मध्यम होता है। विवाह २५ से २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है, परन्तु सन्तान-पक्ष की ओर से चिन्ता बनी रहती है। पेट संबंधी रोग जीवन भर लगे रहते हैं। वर्ष ३३, ४७, ५५ तथा ६१ उन्नति कारक सिद्ध होते हैं।

(८०४)- इस जन्मांग चक्र में उत्पन्न प्राणी साँवले रंग, लम्बे कद तथा हृष्ट-पुष्ट शरीर का, क्रोधी, युद्ध-प्रिय तथा बदला चुकाने की प्रवृत्ति वाला होता है। शत्रु-पक्ष इससे दबा रहता है। यह अपना काम निकालने में अत्यन्त चतुर होते हुए भी कानों का कच्चा होता है। इस स्वभाव के कारण इसे कभी-कभी हानि भी उठानी पड़ती है। यह जो भी काम आरम्भ करता है, उसे उलझा देता है। जीवन में खर्च बहुत बढ़ा-चढ़ा रहता है, अतः आमदनी उत्तम होते हुए भी आर्थिक-स्थिति मध्यम बनी रहती है। भाइयों से सहयोग मिलता है। विद्या-लाभ श्रेष्ठ रहता है। विवाह २४ या २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर होती है, तथापि अन्य स्त्रियों से भी संबंध रखता है। सन्तान-पक्ष सामान्य रहता है। वर्ष २३, २८, ३५, ३८, ४६, ५४, ६० तथा ६२ व्यवसाय में लाभप्रद सिद्ध होते हैं।

(८०५) - इस जन्मांग चक्र में उत्पन्न जातक गौर वर्ण, गोल चेहरे का, साहसी, क्रोधी स्वभाव का, मातृ-भक्त तथा गुरुजनों का द्रोही होता है। यह बदले की भावना रखने वाला, परिश्रमी तथा साहसी होने के कारण प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करता है। इसके शत्रु सदैव दबे रहते हैं। कुछ मित्रों तथा सम्बन्धियों से इसके विचार नहीं मिल पाते। यह झूठ भी बहुत अच्छा और ऐसा बोलता है, जो सत्य जैसा प्रतीत हो। भाइयों से जीवन में सहयोग मिलता है। भूमि तथा मकान से सम्बन्धित झगड़े भी होते हैं। विद्या का लाभ मध्यम रहता है। विवाह २२, २४ या २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुशिक्षिता होती है। पुत्रों से सहयोग मिलता है। वर्ष २५, ३७, ४३, ४९ तथा ६१ आर्थिक-दृष्टि से एवं वर्ष ४, २७, ५१, ५८ तथा ६३ शारीरिक-दृष्टि से कष्टकारक रहते हैं। वर्ष २९, ३२, ४६, ५४ तथा ६० उन्नतिकारक हैं।

(८०६) - इस जन्मांग चक्र में उत्पन्न मनुष्य गौरवर्ण, गोल चेहरे तथा हृष्ट-पुष्ट शरीर का, सुन्दर, परिश्रमी, संयमी तथा मातृ-भक्त होता है। अपने चुम्बकीय-व्यक्तित्व से यह अन्य लोगों को अपनी ओर शीघ्र आकर्षित कर लेता है तथा मित्रता स्थापित करने में सिद्ध-हस्त होता है। मित्रगण इसकी सहायता करते हैं तथा यह स्वयं भी मित्रों की भरपूर सहायता करता है। यह अवसरवादी भी होता है। अपना स्वार्थ-सिद्ध करने के लिए यह औरों के पाँव भी छू सकता है तथा मतलब निकल जाने पर किसी को पूछता तक नहीं। झूठ को सत्य तथा सत्य को झूठ सिद्ध कर देने की कला में भी यह कुशल होता है। यह कानों का कच्चा भी होता है। विद्या-लाभ मध्यम होता है। विवाह २४ या २६ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य एवं सन्तान-सुख उत्तम रहता है। वर्ष २४, ३०, ३६, ४२, ४८, ५४, ६० तथा ६२ आर्थिक-दृष्टि से उन्नतिकारक रहते हैं।

(८०७)- इस जन्माङ्ग चक्र वाला जातक साँवले रंग का, लम्बे कद तथा हृष्ट-पुष्ट शरीर का, मोटे होठों वाला, क्रोधी स्वभाव का, सामान्य हास-परिहास से ही रुष्ट हो जाने वाला तथा शीघ्र ही प्रसन्न भी हो जाने वाला एवं मानापमान का विशेष ध्यान रखने वाला होता है। यह अपने आलसी स्वभाव के कारण जीवन में अनेक बार उन्नति के अवसर खो देता है। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है तथा आमदनी की तुलना में व्यय अधिक बढ़ा-चढ़ा रहता है। पैतृक-सम्पत्ति पर झगड़े का योग भी बनता है तथा व्यवसाय में आर्थिक-हानि के अवसर भी आते हैं। भूमि, भवन, वाहन आदि की उपलब्धि होती है। विद्या का लाभ मध्यम रहता है। विवाह २२ से २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुशिक्षिता मिलती है। दाम्पत्य तथा सन्तान-सुख उत्तम रहता है। वर्ष २३, २७, ३५, ३९, ४३, ४९, ५१, ५५ तथा ६१ आर्थिक उन्नतिदायक होते हैं।

(८०८)- इस जन्माङ्ग चक्र वाला मनुष्य गेहुँए रंग तथा घुँघराले बालों वाला, विस्तृत ललाट, मोटे होंठ तथा क्रोधी स्वभाव का एवं सत्य का पालक होता है। यह दिखावा अथवा ढोंग का प्रदर्शन नहीं करता। सादा जीवन, उच्च विचार वाली कहावत इस पर लागू होती है। आर्थिक-स्थिति उत्तम रहती है। भूमि, भवन तथा सवारी का लाभ होता है। पैतृक-सम्पत्ति की भी यथेष्ट उपलब्धि होती है। विवाह २१, २३ या २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर तथा मनोनुकूला होती है। विद्या का मनचाहा लाभ होता है। संतानों में पुत्रों की संख्या अधिक होती है तथा उनसे यथेष्ट सहयोग भी मिलता है। वर्ष २६, ३८, ५०, ५६ तथा ६२ आर्थिक दृष्टि से एवं वर्ष २८, ४०, ५२, ५८, ६१ तथा ६५ स्वास्थ्य की दृष्टि से चिन्ताकारक रहते हैं। वर्ष २३, २७, ३१, ३९, ४३, ५१, ५५, ५९ तथा ६१ आर्थिक दृष्टि से लाभप्रद सिद्ध होते हैं।

(८०९) - इस जन्मांग चक्र वाला मनुष्य गौर वर्ण, चौड़ा एवं विस्तृत ललाट वाला, मोटे होंठ तथा घुंघराले बालों वाला, सामान्य रूप तथा शान्ति-प्रिय होता है। यह अपने से छोटे तथा नौकर वालों के साथ सहृदयता का व्यवहार करता है तथा दीन-दुखियों की मदद के लिए सदैव तत्पर बना रहता है। यह कार्यतत्पर, स्फूर्तिवान, निरन्तर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने वाला, धार्मिक कार्यों में रुचि रखने वाला तथा ईश्वर पर अगाध विश्वास करने वाला होता है। यह परिश्रम तथा आत्म-विश्वास के बल पर आर्थिक तथा जीवन के अन्य क्षेत्रों में उन्नति करता है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं। विवाह २२ या २४ वर्ष की आयु में पश्चिम दिशा की ओर से होता है। पत्नी गुणवती तथा सुशीला होती है। दाम्पत्य एवं सन्तान-सुख उत्तम रहता है। मित्र-लाभ मध्यम होता है। वर्ष २८, ३०, ४२, ४९ तथा ६३ उन्नति कारक होते हैं।

(८१०) - इस जन्मलग्न में उत्पन्न प्राणी साँवले रंग का, लम्बे कद तथा हृष्ट-पुष्ट शरीर का, हिरण के समान मुख तथा ऊँची नाक वाला, युवतियों को प्रिय तथा एक साथ अनेक विषयों पर सोचने और उन्हें कार्य रूप में परिणत करने की सामर्थ्य रखने वाला होता है। इसके द्वारा निर्मित योजनाओं के क्रियान्वयन के समय जो कठिनाइयाँ आती हैं, उन्हें यह अपने परिश्रम के बल पर दूर कर देता है। वातावरण के अनुकूल आचरण करने तथा प्रतिकूल परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल बना लेने में यह सिद्धहस्त होता है। यह आवश्यकता से अधिक उदारता करता है। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है, परन्तु यह बड़े धनिकों के समान ठाठ बाट से रहता है। निजी भूमि, भवन का उपयोग मिलता है। विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है। दाम्पत्य एवं सन्तान-सुख उत्तम रहता है। वर्ष २५, ३०, ४३, ४९ तथा ६१ आर्थिक लाभप्रद रहते हैं।

मू० सं० २२२

कु० १०

(८९१)- इस जन्मलग्न में उत्पन्न मनुष्य मध्यम कद, कुछ लम्बाई लिए स्वस्थ शरीर, साँवले रंग तथा ऊंची नाक वाला, साहसी, स्वाभिमानी तथा क्रोधी स्वभाव का, जीवन का निर्णय न ठान पाने के कारण मित्रों की संख्या में कमी पाने वाला, स्मरणशक्ति कमजोर होने के कारण अनेक बार परेशानियाँ उठाने वाला तथा आमदनी के एक से अधिक साधन होने के कारण उत्तम आर्थिक-स्थिति वाला होता है। बहिनों की अपेक्षा भाइयों की संख्या अधिक होती है तथा उनसे सहयोग भी मिलता है। निजी भूमि, भवन वाहन आदि की उपल-ब्धियाँ होती हैं। विद्या का लाभ मध्यम रहता है। विवाह २४ या २६ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य एवं सन्तान-सुख उत्तम रहता है, परन्तु पहले कन्याएँ होती हैं तब ३१ वर्ष की आयु में पुत्र-प्राप्ति का योग बनता है। वर्ष २३, २८, ३७, ४३ तथा ५८ आर्थिक उन्नति देते हैं।

(८९२)- इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य गौरवर्ण, स्थूल तथा पुष्ट शरीर वाला, झगड़ालू, क्रोधी तथा साहसी स्वभाव का होता है। बहिनों की अपेक्षा भाइयों की संख्या अधिक होती है। भाइयों से सहयोग भी मिलता है। निजी भूमि, भवन तथा वाहन की उपलब्धि भी होती है। यह तुरन्त एवं दृढ़ निश्चय न ले पाने के कारण उन्नति के अनेक अवसरों को खो देता है। फिर भी अपना काम निकालने में यह चतुर होता है। यह रहस्यमय प्रकृति का भी होता है, अतः इसके मन की बात को कोई नहीं जान पाता। विद्यालाभ मध्यम होता है। विवाह २५ अथवा २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी हठीले स्वभाव की होती है। दाम्पत्य-सुख अच्छा नहीं रहता। सन्तान-सुख भी साधारण ही रहता है। आयु दीर्घ होती है। वर्ष ३, २८, ३४, ४०, ४१ तथा ६७ स्वास्थ्य के लिए कष्टप्रद होते हैं। वर्ष २५, ३७, ४३, ५५ तथा ६१ आर्थिक उन्नति कारक रहते हैं।

भू० सं० ३२२२ — कु० १०

(८९३) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न प्राणी गेहुंए रंग का, इकहरे लम्बे कद वाला। सुन्दर तथा शान्ति प्रिय होता है। स्नेह, सौजन्य एवं आत्मीयता की भावना इसमें प्रचुरता से पाई जाती है। दूसरों की सहायता करने में यह अगुणी रहता है। यह नियमानुसार एवं अनुशासन काम करने में विश्वास रखता है। अपने आकर्षक - व्यक्तित्व तथा मधुर वाणी के कारण यह सहज में ही सब का प्रियपात्र बन जाता है। यह किसी का - स्वामित्व करने में पटु होता है मैत्री - निर्वाह हेतु बड़े - से - बड़ा त्याग करने में भी नहीं रुकता। आमदनी की तुलना में खर्च अधिक होने पर भी इसकी आर्थिक - स्थिति सन्तोषजनक बनी रहती है। विद्या का भी यथेष्ट लाभ होता है। विवाह २२ या २६ वें वर्ष में होता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है। दाम्पत्य - सुख श्रेष्ठ रहता है। सन्तान का सुख भी उत्तम रहता है। वर्ष २४, ३२, ४०, ४८, ५२ तथा ५८ उन्नतिप्रद होंगे।

(८९४) - इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य लम्बे कद का, गौरवर्ण, मछली जैसी आँख तथा उन्नत नासिका वाला, मुस्कुराहट युक्त होठों वाला सुन्दर, परन्तु क्रोधी स्वभाव का होता है। यह दूसरों के प्रति भलाई तथा सहानुभूति की भावना भी रखता है। धर्म-कर्म में इसकी गहरी आस्था होती है। ईश्वर पर इसका पूर्ण विश्वास होता है, तथापि मनुष्यों पर सहसा ही विश्वास नहीं कर पाता। आर्थिक - स्थिति उत्तम बनी रहती है। आकस्मिक - लाभ के अवसर भी प्राप्त होते रहते हैं। निजी भूमि, भवन तथा वाहनादि का लाभ भी होता है। भाइयों की अपेक्षा बहिनों की संख्या अधिक होती है। विद्या का उत्तम लाभ होता है। विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य एवं सन्तान - सुख उत्तम रहता है। वर्ष २, २२, ३८, ४८ तथा ६७ स्वास्थ्य के लिए कष्टप्रद रहते हैं। वर्ष २९, २३ तथा ६५ आर्थिक कष्टप्रद तथा वर्ष २४, ४६, ५८ विशेष कष्टप्रद होंगे।

भृ० सं० 0322

कु० २०

(८९५)- इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य गेहुँए रंग का, दुबले शरीर, मछली जैसी आँखों वाला, सुन्दर, परन्तु क्रोधी स्वभाव का होता है। विरोधी-लोग इसे जीवन भर परेशान करने को प्रयत्नशील रहते हैं, परन्तु सामना करने से घबराते हैं। यह दूसरों की सहायता हेतु भी सदैव प्रस्तुत रहता है। आमदनी के स्रोत अच्छे होते हैं, परन्तु खर्च बढ़ा-चढ़ा होने के कारण कभी-कभी आर्थिक-कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है। विद्या का क्षेत्र कमजोर रहता है। पेट से सम्बन्धित रोग भी लगे रहते हैं। विवाह २४ वर्ष की आयु में दक्षिण दिशा से होना सम्भव है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुशिक्षिता होती है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है, परन्तु सन्तान-पक्ष की ओर से चिन्ता रहती है। वर्ष २२, २६, ३४, ४२, ४८, ५४, ५८ तथा ६० अवस्थाय में उन्नति कारक सिद्ध होते हैं।

(८९६)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न प्राणी गौरवर्ण, सुन्दर नाक-नक्श, उन्नत ललाट तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। इसकी बुद्धि कमजोर होती है, अतः यह अपना भला-बुरा नहीं सोच पाता। दूसरों के प्रति यह सहानुभूति एवं भलाई की भावना रखता है, तथापि स्वयं में खोया रहता है, अन्य लोगों से घुलना-मिलना पसन्द नहीं करता। यह सामाजिक रूढ़ियों का कठोरता से पालन करता है। दूसरों के द्वारा किये गये अनुचित कार्यों से यह स्वयं दुःखी होता है। भाइयों से जीवन में कोई सहयोग नहीं मिलता। विद्या-क्षेत्र कमजोर रहता है। विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। सन्तान की ओर से चिन्ता रहती है। भाग्योदय २८ वर्ष की आयु में होता है। वर्ष ३१, ४१, ५३ तथा ६५ आर्थिक-दृष्टि से तथा वर्ष २५, ३८, ४९ तथा ६० स्वास्थ्य के लिए कष्टप्रद रहते हैं। वर्ष २४, २८, ३८, ४६, ५४, ६० तथा ६२ आर्थिक-लाभप्रद रहते हैं।

भू० सं० ८३२

कु० १०

(८९७) – इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य साँवले रंग, लम्बे कद का, सुन्दर नाक-नक्शा वाला, साहसी तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। यह स्पष्टवादी, शीघ्र क्रुद्ध हो जाने वाला, भावुक मिजाज तथा शीघ्र ही शान्त हो जाने वाला भी होता है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होने के कारण आर्थिक-स्थिति उत्तम बनी रहती है। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी से अधिक लाभ होता है। शिक्षा का श्रेष्ठ लाभ होता। विवाह २१ अथवा २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है। सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक होती है और उनसे सुख भी मिलता है। वर्ष ३०, ४२, ५७ तथा ६२ आर्थिक-दृष्टि से एवं वर्ष २६, ३८, ५०, ५७ तथा ६७ शारीरिक-स्वास्थ्य की दृष्टि से चिन्ता-जनक रहते हैं। वर्ष २३, २७, ३१, ३९, ४७, ५५, ५९ तथा ६३ आर्थिक-दृष्टि से उन्नति कारक सिद्ध होते हैं।

(८९८) – इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न प्राणी गेहुँए रंग, इकहरे बदन, घुँघराले केश तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह परिश्रमी तथा साहसी होता है। अपने परिश्रम द्वारा ही भाग्य की उन्नति करता है। यह सामान्य से उच्च पद पर जा पहुँचता है तथा स्वतन्त्र-निर्णय लेने में सक्षम होता है। कठिन-से-कठिन परिस्थिति में भी यह अपना सन्तुलन बनाये रखता है तथा संकटों का डटकर मुकाबिला करता है। साहसिक-कार्य करने में इसे आनन्द का अनुभव होता है। लड़ने-भिड़ने में इसकी स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। यह योजना बनाने में कुशल होता है तथा प्रत्येक कार्य को योजनाबद्ध रूप में करके सफलता प्राप्त करता है। आमदनी के एक से अधिक स्रोत होने के कारण आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। (ससुराल से धन-लाभ होता है) (पत्नी तथा सन्तान से सुख मिलता है)

(८१९) — इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न प्राणी गौरवर्ण, लम्बे कद तथा इकहरे शरीर वाला, साहसी, परिश्रमी, क्रोधी स्वभाव का तथा आकर्षक-व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। इसके विचार स्पष्ट तथा सुलझे हुए होते हैं। यह विज्ञान सम्बन्धी कार्यों में विशेष रुचि लेता है। जटिल-से-जटिल मशीनरी का संचालन करने में भी इसे कुशलता प्राप्त होती है। यह दुर्द्धर्ष स्वभाव का एवं विचारशील भी हो सकता है। यह एकबार जिस पर विश्वास कर लेता है, उसपर सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए उद्यतशील बना रहता है। विरोधी-पक्ष इसके लिए पग-पग पर कठिनाइयाँ उपस्थित करने का प्रयत्न करता है, परन्तु सामने पड़ने में घबराता है। आमदनी के स्रोत उत्तम रहते हैं, परन्तु खर्च बढ़ा-चढ़ा रहने के कारण आर्थिक-स्थिति कमजोर ही बनी रहती है। मकान आदि का योग बनता है। दाम्पत्य एवं सन्तान-सुख उत्तम रहता है। वर्ष २३, ३९, ४६ तथा ५२ आर्थिक उन्नति देते हैं।

(८२०) — इस जन्मलग्न में उत्पन्न मनुष्य साँवले रंग का, लम्बे कद वाला, बलिष्ठ, स्वतन्त्रचेता, क्रोधी स्वभाव का तथा स्पष्टवादी होता है। यह किसी के नियन्त्रण में रहकर कार्य नहीं कर पाता। परिश्रमी होने के कारण यह यश को प्राप्त करता है तथा नौकरी के उच्च पद पर आसीन होता है, परन्तु अपने से भी उच्च अधिकारियों के साथ इसका तालमेल ठीक नहीं बैठ पाता। इसकी आर्थिक-स्थिति उत्तम रहती है। भूमि, भवन तथा सवारी का सुख भी प्राप्त होता है। विद्या का यथेष्ट लाभ होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर तथा सुशीला मिलती है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक होती है। जीवन के २३, ३५, ४३, ४६, ५१, ५६ तथा ५९ वें वर्ष क्रमशः में उन्नतिकारक अथवा आर्थिक दृष्टि से लाभप्रद रहते हैं।

(८२१) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य गौरवर्ण, लम्बे कद का, हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला, सुन्दर नाक नक्श का, कर्मठ, साहसी तथा शान्ति-प्रिय होने के साथ ही कुछ अहंकारी प्रकृति का भी होता है। यह अन्यों की अपेक्षा स्वयं को अधिक सुन्दर, बलिष्ठ, योग्य तथा बुद्धिमान समझता है एवं बात-बात में इसका आभास भी कराता रहता है। सामान्यतः यह व्यावहारिक होता है, तथापि कभी-कभी आपे से बाहर निकल कर अशिष्टता का परिचय भी देता है, जिसके फलस्वरूप इसे बड़ी हानि भी उठानी पड़ती है। यह अपने परिश्रम द्वारा आर्थिक-स्थिति को सुदृढ़ बनाता है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं। वाहन तथा भवन का सुख भी उपलब्ध होता है। विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य एवं सन्तान सुख उत्तम रहता है। जीवन के २४, ३०, ३६, ४२, ४८, ५०, ५६, ५८ तथा ६०वें वर्ष आर्थिक-उन्नति दायक होते हैं।

(८२२) - इस जन्मकुण्डली में जन्म लेने वाला व्यक्ति गेहुँए रंग, मध्यम कद, छोटे तथा मोटे होंठों वाला, हँसमुख, स्वच्छ एवं स्वनिर्मित सिद्धान्तों का दृढ़ता पूर्वक पालन करने वाला होता है। यह विपरीत-परिस्थितियों में भी अपने आप पर नियन्त्रण रखता है। इसमें आत्म-विश्वास की अधिकता पाई जाती है। मन तथा मस्तिष्क पर नियन्त्रण रखने के कारण, यह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति करता है। आर्थिक-दृष्टि से भी यह उन्नत बना रहता है तथा पैतृक-सम्पत्ति का लाभ भी प्राप्त होता है। विवाह २२ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य-सुख तथा सन्तान-सुख उत्तम रहता है। वर्ष ३१, ४३, ५५ तथा ६० आर्थिक-दृष्टि से एवं वर्ष २६, ३२, ३८, ४४, ५०, ६३ तथा ६७ शारीरिक-दृष्टि से कष्टप्रद रहते हैं। वर्ष २४, ३०, ३६, ४२, ४८, ५२ तथा ६० आर्थिक लाभप्रद रहते हैं।

(८२३)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न प्राणी गौरवर्ण, मध्यम कद, स्थूल शरीर, शान्ति-प्रिय एवं आमोदक-व्यक्तित्व का धनी होता है। यह अपनी वाक्पटुता से अनजान व्यक्ति को भी प्रभावित कर लेता है। शैक्षणिक एवं व्यावसायिक क्षेत्र में यह सफल होता है। समय पर आश्चर्यजनक झूठ बोलना तथा झूठ को सत्य सिद्ध करने की कला में भी यह दक्ष होता है। भूमि, भवन आदि का लाभ होता है तथा ससुराल-पक्ष से भी मकान का योग बनता है। विद्या के क्षेत्र में पूर्ण सफलता मिलती है। विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, सुशील तथा विनम्र स्वभाव की होती है। सन्तानों में कन्याओं की संख्या अधिक होती है। परिश्रम की तुलना में लाभ कम होता है तथा आर्थिक-स्थिति मध्यम बनी रहती है। वर्ष २५, २९, ३३, ३७, ४१, ४५, ४९, ५३, ५७ तथा ६१ व्यवसाय तथा आर्थिक-क्षेत्र में उन्नतिदायक सिद्ध होते हैं।

(८२४) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य गौरवर्ण, स्थूल एवं स्वस्थ शरीर वाला, पराक्रमी तथा शान्ति-प्रिय होता है। यह प्रत्येक कार्य को बड़े उत्साह से आरंभ करता है तथा परिश्रम से सफलता प्राप्त करता है। पढ़ने-लिखने में इसकी विशेष रुचि रहती है। यह एक साथ कई विषयों पर सोचता है तथा गंभीरता पूर्वक लाभदायक योजनाएं भी बनाता है। विपरीत लिङ्गी के प्रति इसका विशेष आकर्षण रहता है। यह कामुक तथा भावुक प्रवृत्ति का होता है। दिन-रात परिश्रम करते रहना इसके स्वभाव में होता है। वर्ष २३ में इसका विवाह पूर्व दिशा की ओर से होता है। स्त्री सुन्दर, सुशील तथा सुशिक्षित होती है। सन्तान का सुख उत्तम रहता है। जीवन के २२, २८, ३४, ४६ तथा ५२ वें वर्ष स्वास्थ्य के लिए चिन्ताजनक तथा वर्ष ३२, ४४, ५६ तथा ६८ आर्थिक हानिदायक होते हैं। वर्ष २५, ३७, ४९ तथा ५७ आर्थिक लाभ देते हैं।

(८२५) - इस जन्मकुण्डली में जन्म लेने वाला मनुष्य कुछ लम्बाई लिए मध्यम कद तथा साँवले रंग का, इकहरे शरीर तथा क्रोधी-स्वभाव का होता है। यह क्षण-क्षण पर रुष्ट तथा सन्तुष्ट होता रहता है। परन्तु कठिन-से-कठिन परिस्थिति में भी घबराता नहीं है। यह संकटों का दृढ़तापूर्वक सामना करता है तथा जीवन में अनेक उतार-चढ़ावों को देखता है। समय पर यह निस्संकोच झूठ बोलता तथा अपना काम निकालता है। राजकीय सेवा में इसकी तरक्की भी धीरे होती है। परिश्रम की तुलना में इसे लाभ कम ही मिलता है। फिर भी अपने परिश्रम के बल पर यह सफलतायें प्राप्त करता है। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है। विवाह २३ या २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है। सन्तान-सुख उत्तम रहता है। वर्ष २५, २९, ३३, ४१, ४५, ४९, ५३, ५७ तथा ६१ आर्थिक-लाभ देते हैं।

(८२६) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न हुआ मनुष्य साँवले रंग का, मध्यम कद, उन्नत ललाट, पतले शरीर का, साहसी तथा क्रोधी स्वभाव वाला होता है। यह कठिन-से-कठिन परिस्थिति में भी अपनी कमजोरी का आभास नहीं होने देता। यह स्वभाव से कल्पनाशील होता है तथा नित नई योजनाएं बनाता रहता है। इसे सामाजिक रूढ़ियों पर आस्था नहीं होती। नये विचार तथा नये आदर्शों को यह बड़ी तेजी से अपनाता है। शिक्षा का उत्तम लाभ होता है। विवाह २६ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री साँवले रंग की तथा क्रोधी-स्वभाव की होती है। उसके साथ विचारों में एकरूपता स्थापित नहीं होती। संतान-पक्ष से भी चिन्ता रहती है। पैतृक-सम्पत्ति पर झगड़े आदि के अवसर उपस्थित हैं। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है। वर्ष २४, ३०, ३८, ४४, ५०, ५८ तथा ६२ आर्थिक-उन्नति के होते हैं।

(८२७)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य गौरवर्ण, नाटे कद का, गोलमुखी, साहसी, पतले होठों वाला, सुन्दर तथा कान्ति-प्रिय होता है। यह कोमल, भावुक, सहनशील तथा मधुरभाषी होता है। शारीरिक-श्रम की अपेक्षा मानसिक-श्रम पर इसका अधिक विश्वास रहता है। यह प्रतिदिन का काम प्रतिदिन पूरा कर देने में विश्वास रखता है। यह अपने निश्चित ढंग से काम करता है तथा धीरे-धीरे उन्नति करता चला जाता है। यह बातचीत में अत्यन्त पटु होता है तथा सामने वाले को शीघ्र ही आकर्षित कर लेता है। आर्थिक दृष्टि से इसकी स्थिति मध्यम रहती है। भूमि, भवन तथा आर्थिक-हानि के सम्बन्ध भी प्राप्त होते हैं। शिक्षा का योग रुकावटों के साथ होता है। विवाह २४ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री कठोर स्वभाव की होती है। सन्तान पक्ष से चिन्ता रहती है।

(८२८)- इस जन्मकुण्डली में जन्मा हुआ व्यक्ति साँवले रंग का, स्वस्थ शरीर, घुँघराले केशों वाला तथा क्रोधी-स्वभाव का होता है। यह क्रोध के अधिक आवेश में गलती मित्रों को भी त्याग देता है। आर्थिक-पक्ष बढ़ा-चढ़ा रहने के कारण आर्थिक-स्थिति कमजोर बनी रहती है तथा कई बार ऋण लेने के अवसर भी उपस्थित होते हैं। किन्तु भूमि तथा भवन आदि का योग बनता है। शिक्षा का उत्तम योग होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी क्रोधी स्वभाव की होती है, जिससे मन नहीं मिलता। सन्तान पक्ष तथा दाम्पत्य-सुख- दोनों ही चिन्ताजनक रहते हैं। वर्ष २४, ३०, ३६, ४८, ६६ तथा ७२ स्वास्थ्य के लिए तथा वर्ष २२, ३४, ४६, ५८ तथा ६० आर्थिक-दृष्टि से कष्टप्रद रहते हैं। वर्ष २३, ३१, ३९, ४०, ५१, ५७, ५९ तथा ६२ आर्थिक-क्षेत्र में उन्नतिकारक रहते हैं।

(८२९) – इस जन्मांग चक्र में जन्म लेने वाला मनुष्य गौर वर्ण, आकर्षक व्यक्तित्व वाला तथा शान्ति-प्रिय होता है। यह परिस्थिति के अनुसार स्वयं में परिवर्तन लाने में कुशल होता है। सामान्यतः आलसी भी होता है, जिसके फलस्वरूप उन्नति के अनेक अवसर हाथ से निकल जाते हैं। ये जिनसे आत्मीयता मानें, उनके प्रति पूर्ण ईमानदार रहते हैं तथा मित्रता के नाम पर सर्वस्व न्यौछावर कर देने में भी पीछे नहीं रहते। विरोधी-पक्ष पग-पग पर रोड़े अटकाता है, परन्तु सामना करने में असमर्थ रहता है। यह शत्रुओं का मर्दन करने वाला, सहसा किसी पर विश्वास न करने वाला, शंकालु-प्रकृति का तथा अत्यधिक कामुक भी होता है। विवाह २३ या २५ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य-सुख एवं सन्तान-सुख उत्तम रहता है। भूमि, भवन या झगड़े हो सकते हैं। आर्थिक स्थिति मध्यम होगी।

(८३०) – इस जन्मांग चक्र में उत्पन्न जातक गौर वर्ण, सुन्दर नाक-नक्श वाला, हृष्ट-पुष्ट शरीर का, पराक्रमी, साहसी तथा स्वाभिमानी होता है। यह नयी योजनाएँ बनाता है, उनके प्रारम्भ में अत्यधिक कठिनाइयाँ आती हैं, तथापि अपने परिश्रम एवं साहस के बल पर यह प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त कर लेता है। अपने मित्र के प्रति यह जीवन भर ईमानदार बना रहता है। इनके मन की बात को जान पाना सरल नहीं होता। लड़ने-झगड़ने में इसे आनन्द आता है। अज्ञात-रहस्यों को खोजने में विशेष रुचि रहती है। आर्थिक दृष्टि से जीवन उन्नतिशील बना रहता है तथा होठों पर सदैव मुस्कान खिली रहती है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री तथा सन्तान-पक्ष से सुख प्राप्त होता है। वर्ष ६, २३, ३२, ४० तथा ६६ स्वास्थ्य के लिए चिन्ताजनक रहते हैं। वर्ष ३४, ४६, ५८ तथा ६२ आर्थिक उन्नति देते हैं।

(८३१) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न जातक दुर्बल शरीर, गोल चेहरा, सुन्दर नाक-नक्श तथा गौर वर्ण का शान्तिप्रिय, आलसी एवं सुस्त स्वभाव का होता है। जब तक सिर पर ही न आ पड़े, तब तक किसी काम में हाथ नहीं लगाता। यह स्वभाव से दयालु, स्त्री के प्रति चौकन्ना तथा किसी के नियन्त्रण में रह कर कार्य करने में असमर्थ होता है। यह बुद्धि द्वारा धनोपार्जन करता है तथा आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाता चला जाता है। भूमि, भवन आदि का सुख भी उपलब्ध होता है तथा भूमि आदि से सम्बन्धित विवाद भी उठते हैं। विद्या का उत्तम लाभ होता है। शत्रु-पक्ष पग-पग पर विघ्न उपस्थित करने का प्रयत्न करता है, परन्तु यह उन्हें पराजित करने में समर्थ होता है। विवाह २४ वें वर्ष में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है। सन्तान-पक्ष से सुख मिलता है। वर्ष २६, ३८, ४२, ५०, ५८ तथा ६० आर्थिक-उन्नतिकारक सिद्ध होते हैं।

(८३२) - इस जन्म कुण्डली वाला जातक सुनहरे बालों वाला गौर वर्ण, कुछ लम्बाई लिए मध्यम कद वाला, पतले होंठ, तीखे नाक-नक्श का हँसमुख, चतुर, शान्त-प्रकृति का एवं स्त्रियोचित लज्जा, सुकुमारता एवं कोमलता से विभूषित होता है। यह हिंसक तथा कठोर कार्यों से दूर रहने वाला, ईमानदार एवं राजनीतिक तथा शैक्षणिक-क्षेत्र में सफलता प्राप्त करनेवाला होता है। बहिनों की अपेक्षा भाइयों की संख्या अधिक होती है। विद्या का यथेष्ट लाभ होता है। निजी भूमि, मकान आदि का योग भी बनता है। विवाह २३ अथवा २५ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य-सुख एवं सन्तान-सुख उत्तम रहता है। सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक होती है तथा उनसे सहयोग भी मिलता है। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है। जीवन के वर्ष २३, २९, ३३, ३५, ४३, ४९, ५५ तथा ५९ लाभप्रद रहते हैं। वर्ष ३४, ४५ तथा ५८ हानिप्रद रहते हैं।

भू० सं० ३३२

(८३३) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य साँवले रंग का, उन्नत ललाट, दुबले शरीर का, सुन्दर तथा शान्तिप्रिय होता है। भावुक होने के कारण यह कठोर कार्यों से दूर रहता है। यह हँसमुख, चतुर तथा विश्वसनीय मित्र होता है। आर्थिक-दृष्टि से जीवन उन्नतिशील बना रहता है, नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में अधिक लाभ होता है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होने के कारण आर्थिक-स्थिति मजबूत बनी रहती है। भूमि, भवन तथा सवारी का सुख भी प्राप्त होता है। विवाह २३ या २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर तथा सुशील मिलती है। ससुराल से धन का लाभ होता है। विद्या की भी यथेष्ट उपलब्धि होती है। दाम्पत्य एवं संतति-सुख उत्तम बने रहते हैं। आयु के २३, २९, ३३, ३७, ४३, ४९, ५५, ५९ तथा ६१ वें वर्ष आर्थिक-दृष्टि से उन्नतिदायक सिद्ध होते हैं। आयु मध्यम होती है।

(८३४) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य गौर वर्ण, सुन्दर नाक-नक्शेवाला, कुछ लम्बाई लिए मध्यम कद का, हँसमुख तथा सम्मोहक व्यक्तित्व वाला होता है। यह अत्यधिक कल्पनाशील होता है तथा हवाई किले बनाना इसके स्वभाव में रहता है। जीवन की कठोर परिस्थितियों में यह शीघ्र घबड़ा जाता है। स्त्रियोचित सुकुमारता एवं लज्जा की भावना भी इसमें पाई जाती है। आर्थिक-स्थिति उन्नतिशील बनी रहती है। व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा स्त्रीधन द्वारा कारोबार की उन्नति होती है। विवाह का योग २३ वें वर्ष में बनता है। पत्नी सुन्दर होती है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। २३ वें वर्ष में ही भाग्योदय होता है। वर्ष २२, ३४, ५८ तथा ६५ आर्थिक-दृष्टि से एवं वर्ष ८, ३६, ४२, ४८, ५३ तथा ६७ स्वास्थ्य की दृष्टि से चिन्ताजनक रहते हैं। वर्ष २७, २९, ३३, ३९, ४५, ५५ तथा ५७ लाभप्रद रहते हैं।

कु० १०

भु० सं० ००३ कु० १०

(८३५) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य गौरवर्ण, कुछ लम्बाई लिए मध्यम कद का, सुन्दर नाक-नक्शेवाला, वाक्पटु तथा शान्ति-प्रिय होता है। इसके मन की थाह पाना कठिन होता है। इसके चेहरे पर हमेशा मुस्कुराहट बनी रहती है, भलेही हृदय में आग ही क्यों न धधक रही हो। व्यवसाय के क्षेत्र में इसे सफलता प्राप्त होती है। परिश्रम द्वारा आर्थिक-क्षेत्र में यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। निःस्वार्थ-सेवा एवं भलाई के कामों में इसकी विशेष रुचि रहती है। जीवन में निजी मकान तथा वाहन का योग बनता है। विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री सुन्दर तथा सुशील होती है। उसके द्वारा आर्थिक-लाभ के अवसर भी मिलते हैं। दाम्पत्य-सुख तथा सन्तान-सुख उत्तम रहता है। संतानों से सहयोग भी मिलता है। विद्या का लाभ मध्यम होता है तथा आर्थिक-स्थिति भी मध्यम रहती है।

(८३६) - इस जन्मकुण्डलीवाला मनुष्य गौरवर्ण, सुन्दर नाक-नक्शा वाला, सुन्दर आँखों वाला, उन्नत ललाट एवं वक्षःस्थल, साहसी, परिश्रमी तथा शान्ति-प्रिय होता है। यह सत्य, न्याय, दया तथा क्षमा को जीवन में विशेष महत्व देता है। कपट एवं अनीति युक्त कार्य इसे अच्छे नहीं लगते। यह दूसरों के मन की बात को सहज ही पहिचान लेता है। अन्याय का खुलकर विरोध करना इसे आता है। आत्मविश्वास की अधिकता पाई जाती है तथा विपरीत-परिस्थितियों को भी अनुकूल बनालेने की इनमें क्षमता पाई जाती है। निजी भूमि, भवन तथा वाहन का लाभ भी होता है। वर्ष २४ में विवाह होता है तथा पत्नी सुन्दर एवं सुलक्षणा मिलती है। सन्तान-पक्ष से सुख प्राप्त होता है। विद्या-लाभ मध्यम रहता है। वर्ष २२, २८, ३२, ३८, ४४, ४८, ५६ तथा ६० आर्थिक-उन्नति दायक होते हैं।

(८३७)- इस जन्मांग चक्र वाला मनुष्य लम्बे कद, गेहुँआ रंग का, स्थूल-शरीर वाला, युद्ध-प्रिय, क्रोधी, साहसी तथा क्रूर-स्वभाव का होता है। यह निरन्तर क्रोधित करने के लिए उत्सुक होता है तथा सामने वाले व्यक्ति को पहली दृष्टि में ही भाँप लेता है। विरोधी-पक्ष सामना करने से घबराता है। स्वभाव से कल्पनाशील होने के कारण हवाई किले बनाता रहता है। व्यय की अधिकता के कारण आर्थिक-स्थिति कमजोर रहती है। अनेक बार ऋण लेने के अवसर भी आते हैं। निजी भूमि तथा भवन का योग बनता है। विवाह २३ या २५ वर्ष की आयु में होता है। २९वें वर्ष में पूर्ण भाग्योदय होता है। पत्नी सुन्दर, सुशील तथा सौम्य-स्वभाव की होती है। सन्तान-पक्ष से सुख-सन्तोष प्राप्त होता है। वर्ष २३, २९, ३३, ३५, ४१, ४७, ४९, ५७, ५८ तथा ६१ व्यावसायिक एवं आर्थिक-दृष्टि से लाभप्रद सिद्ध होते हैं।

(८३८)- इस जन्मांग चक्र वाला प्राणी गौरवर्ण हृष्ट-पुष्ट शरीर का, नाटे कद वाला, तेजस्वी, कुटिल, पर-स्त्री-गामी तथा शान्त प्रकृति का होता है। यह अपने विरोधी से बदला लिये बिना नहीं मानता। गुप्त-स्त्री इसकी कमजोरी होती है तथा स्त्री के चक्कर में पड़कर यह गुप्त-रहस्य को भी खोल देता है तथा हानि उठाता है। शिक्षा मध्यम रहती है। आर्थिक-स्थिति भी कमजोर रहती है, क्योंकि आर्थिक-व्यय बढ़ा-चढ़ा रहता है। मनोरंजन तथा विलासिता पर भी यह अधिक खर्च करता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है और उससे पटती भी रहती है तथापि पर-स्त्रियों से भी सम्बन्ध बना ही रहता है। सन्तान-पक्ष से सन्तोष रहता है। वर्ष २७, ४२, ४८ तथा ६० आर्थिक-दृष्टि से हानिप्रद तथा वर्ष २९, ३७, ४७, ५१, ५५ तथा ५८ लाभप्रद सिद्ध होते हैं।

भृ० सं० २०३८ कु० २०

(८३९)- इस जन्मकुण्डली चक्र में उत्पन्न मनुष्य गौरवर्ण, हृष्ट-पुष्ट शरीर, मध्यम कद, उन्नत ललाट, क्रोधी स्वभाव का, गुरुजनों का द्रोही तथा पर-स्त्री गामी होता है। यह मित्रता स्थापित करने में कुशल तथा पूर्णरूपेण अवसरवादी होता है। अपने स्वार्थ के लिए यह किसी के भी पाँव छू सकता है तथा काम निकल जाने के बाद उसे ठोकर भी मार सकता है। यह अपने जीवन में बहुत सोच-समझ कर ही किसी को आत्मीयता का स्थान देता है तथा जिसे अपना ले, उस के लिए प्राण न्यौछावर करने को भी तत्पर रहता है। आमदनी की अपेक्षा खर्च अधिक बढ़ा-चढ़ा रहने के कारण इनकी आर्थिक-स्थिति डाँवाडोल रहती है तथा पैतृक-सम्पत्ति को खर्च कर देने का योग भी बनता है। विद्या का लाभ रुकावटों के साथ होता है। विवाह २३ अथवा २५ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य एवं सन्तान-सुख उत्तम रहता है।

(८४०)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न बालक गौरवर्ण, हृष्ट-पुष्ट स्वस्थ शरीर वाला, जोशीला, फुर्तीला, साहसी, विश्वासी, नुकीली नाक वाला तथा शान्ति-प्रिय होता है। यह राजनीतिक-क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है। झूठ को सत्य एवं सत्य को झूठ सिद्ध कर देने की कला में कुशल होता है। यह कानों का कच्चा होता है तथा दूसरों की बात पर शीघ्र विश्वास कर लेता है। गोपनीयता का प्रदर्शन करना इसके स्वभाव में होता है। यह किसी से मित्रता बहुत सोच-समझ कर करता है तथा जिसे मित्र बना लेता है, उसके लिए सर्वस्व न्यौछावर करने को भी तत्पर रहता है। शिक्षा मध्यम होती है। विवाह २४ या २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूला मिलती है। सन्तान-सुख उत्तम रहता है। वर्ष २६, ३८, ४६, ५० तथा ६२ स्वास्थ्य के लिए चिन्ताजनक रहते हैं। वर्ष २३, २९, ३२, ४५, ४९, ५५ तथा ५९ आर्थिक उन्नति प्रद सिद्ध होते हैं।

(८४१)– इस जन्मकुण्डली वाला बालक गौरवर्ण, लम्बे कद का, दुर्बलशरीर, घुंघराले बाल, सुन्दर नाक-नक्शवाला तथा शान्तिप्रिय होता है। यह चुस्त तथा कार्य-कुशल होता है। अपने लक्ष्य की ओर निरन्तर बढ़ता रहता है। वार्तालाप में सौम्य तथा व्यवहार में सहृदय होता है। दीन-दुःखी की सहायता करने को सदैव तत्पर रहता है। परिश्रम में विश्वास रखता है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय से अधिक लाभ होता है। पैतृक-सम्पत्ति का लाभ भी होता है। अपने परिश्रम एवं लगन के बल पर यह आर्थिक-क्षेत्र में निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। विद्या का मध्यम लाभ होता है। विवाह वर्ष २२ अथवा २४ में होता है। स्त्री सुन्दरी तथा सुशीला होती है। सन्तान-सुख एवं दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। वर्ष २२, ३०, ३६, ४२, ४८, ५४ तथा ६० आर्थिक-उन्नति दायक होते हैं।

(८४२)– इस जन्मलग्न में उत्पन्न प्राणी मध्यम कद, गौरवर्ण, उन्नत-ललाट, पिचकी नाक, स्थूल शरीर, गोल चेहरे वाला, चतुर, बुद्धिमान, परिश्रमी तथा समय का अत्यधिक पाबन्द होता है। यह समय पर कार्य करता है तथा व्यर्थ झूठ नहीं बोलता। ईश्वर तथा धर्म में इसे विशेष आस्था रहती है। इसके चेहरे पर मुस्कान खेलती रहती है। विपरीत-लिङ्गी के प्रति आकर्षण भी अधिक रहता है। विवाह वर्ष २२ से २७ के मध्य होता है। पत्नी सुन्दर तथा सुशीला मिलती है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। सन्तान-पक्ष की ओर से आरम्भ में कुछ चिन्ता रहती है। बाद में उनके सुख-सहयोग का लाभ होता है। विद्या का लाभ कुछ रुकावटों के साथ होता है। आर्थिक स्थिति मध्यम रहती है। वर्ष २७, ३२, ४१, ५१ तथा ६१ स्वास्थ्य के प्रति चिन्ताजनक रहते हैं। वर्ष ४६, ४८, ५४ तथा ६२ उन्नति कारक रहते हैं।

(८४३) – इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न बालक गेहुँए रंग का, लम्बे कद वाला, स्वस्थ शरीर, फुर्तीला, जोशीला तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। सामान्य हास-परिहास से ही रुष्ट हो जाता है. परन्तु जितनी जल्दी गर्म होता है, उतनी ही जल्दी ठण्डा भी हो जाता है। इसे अपने मानापमान का विशेष ध्यान रहता है। यह अपने से छोटों तथा बराबरी वालों के साथ सहृदयता का व्यवहार करता है तथा परिश्रम द्वारा व्यवसाय की उन्नति करता है। आर्थिक-लाभ के अनेक आकस्मिक-अवसर प्राप्त होते रहते हैं। इनके जीवन में निष्क्रियता अथवा अकर्मण्यता को कोई स्थान नहीं होता। आर्थिक-स्थिति उत्तम बनी रहती है तथा निजी कृषि, भवन आदि के लाभ का योग भी बनता है। विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोऽनुकूल मिलती है। सन्तानों से भी सहयोग मिलता है। वर्ष २४, ३६, ४८, ५४ तथा ६० विशेष लाभप्रद रहते हैं।

(८४४) – इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य साँवले रंग, लम्बे कद, पतले शरीर वाला, आलसी तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। अपने आलस्य के कारण ही यह उन्नति के अनेक अवसरों को खो बैठता है। परन्तु आदमी को पहिचानने का इसमें विशेष गुण होता है तथा किस समय क्या करना चाहिए—इस विषय में निर्णय लेना भी खूब आता है। परिवारीजनों से इसे कोई सहायता नहीं मिलती। स्वभाव से क्रोधी तथा कटुभाषी होने के कारण यह अपने बनते हुए काम को भी बिगाड़ लेता है। स्मरण-शक्ति कमजोर होने के कारण भी कई बार हानि उठानी पड़ती है। विवाह २४, २६ या २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है। सन्तान-पक्ष से सन्तोष रहता है। आर्थिक-दृष्टि से वर्ष ३२, ४२, ५०, ५८ तथा ६२ कष्टप्रद एवं वर्ष २३, २९, ३५, ४३, ४९, ५५ तथा ६१ लाभप्रद सिद्ध होते हैं।

भु० सं० ८०३

(८४५) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी मध्यम कद, दुबले शरीर, साँवले रंग तथा हीन जैसे हुए एवं ऊँची नाक वाला होता है। यह क्रोधी, रहस्यमय स्वभाव का, कमजोर शरीर-शक्तिवाला तथा अत्यधिक आत्मविश्वासी भी होता है। यह विपरीत-परिस्थिति को अपने अनुकूल बनाने में सक्षम होता है तथा आदमी को पहिचानने में पटु होता है। शैक्षणिक-क्षेत्र में यह विशेष उन्नति करता है। भूमि, भवन तथा वाहन का सुख उपलब्ध होता है तथा पैतृक-सम्पत्ति का लाभ भी होता है। भाइयों से कोई सहायता नहीं मिलती। विद्या का श्रेष्ठ लाभ होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल तथा बुद्धिमती होती है। सन्तान-पक्ष की ओर से सुख-सहयोग बना रहता है। आर्थिक-स्थिति उत्तम बनी रहती है। जीवन के वर्ष २५, २८, ३३, ३७, ४१, ४६, ५१, ५५, ५८ तथा ६१ उन्नतिदायक रहते हैं।

(८४६) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति साँवले रंग का, साहसी, कृश-शरीर वाला, मुँह पर चेचक के दाग युक्त, अल्पबली, क्रोधी स्वभाव का तथा अत्यधिक आत्मविश्वासी होता है। यह वातावरण के अनुरूप स्वयं को ढाल लेता है तथा लक्ष्य की ओर निरन्तर आगे बढ़ता रहता है। यह धनाभाव होते हुए भी स्वयं को बड़ा धनी होने का ढोंग प्रदर्शित करता है। किसी धन की कमी के कारण इनका कोई काम रुकता नहीं है। आर्थिक-स्थिति सामान्य बनी रहती है। विद्या का मध्यम लाभ होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में उत्तर दिशा की ओर से होता है। पत्नी के साथ विचारों का मेल नहीं खाता, परन्तु संतान पक्ष से सन्तोष बना रहता है। वर्ष १६, २८, ४, ५२ तथा ६४ स्वास्थ्य के लिए चिन्ताजनक रहते हैं। वर्ष २२, २८, ३३, ३७, ४३, ४८, ५५, ५८ तथा ६१ आर्थिक उन्नति देते हैं।

कु० र०

भृ० सं० ३०७ | कु० २०

(८४७) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य साँवले रंग, नाटे कद तथा दुबले शरीर वाला, आलसी एवं क्रोधी स्वभाव का होता है। कटुभाषी होने के कारण इसके मित्रों की संख्या बहुत कम होती है। आलस्य के कारण यह जीवन में उन्नति के अनेक अवसरों को खो देता है। स्मरण-शक्ति कमजोर होने के कारण भी इसे बहुत हानि उठानी पड़ती है। साहसी होने के कारण यह विपरीत परिस्थितियों को अनुकूल बनाने का भरसक प्रयत्न करता है तथा कुछ सफलता भी मिल जाती है। आर्थिक-स्थिति कमजोर रहती है तथा अनेक बार ऋण लेने के अवसर भी उपस्थित होते हैं, किन्तु धन की कमी के कारण कोई काम रुकता नहीं है। भाइयों से सहयोग मिलता है। विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य एवं सन्तान-सुख उत्तम रहता है। पूर्ण भाग्योदय २६ वर्ष की आयु में होता है। वर्ष ३६, ४८ तथा ६० विशेष लाभप्रद रहते हैं।

(८४८) - इस जन्मांग चक्र में उत्पन्न बालक गौरवर्ण, लम्बे कद का, सुन्दर नाक-नक्श वाला, साहसी तथा क्रोधी स्वभाव का, स्वाभिमानी, जिद्दी, सौजन्य से परिपूर्ण एवं दूसरों की सहायता करने में आगे रहने वाला होता है। यह सब कामों को समयानुसार तथा नियमानुसार करता है। समय का अत्यधिक पाबन्द होता है तथा किसी भी वातावरण के अनुकूल स्वयं को ढाल लेने में सक्षम होता है। अन्य लोगों के साथ इसका व्यवहार मधुर तथा सौजन्यता पूर्ण रहता है, फलतः इसके प्रशंसकों की संख्या भी अधिक होती है। विवाह २५ अथवा २७ वर्ष की आयु में पूर्व दिशा की ओर से होता है। पत्नी से पूर्ण सुख मिलता है तथा सन्तान-पक्ष से भी सन्तोष बना रहता है। विद्याध्ययन मध्यम रहता है। जीवन के वर्ष २३, ३१, ३७, ४३, ४६, ५१, ५९ तथा ६१ आर्थिक-लाभ देने वाले रहते हैं।

भु० सं० १०७ कु० २०

(८४९) - इस जन्मांग चक्र में उत्पन्न प्राणी साँवले रंग तथा नाटे कद का, लालची, स्थूल-शरीर, क्रोधी तथा दूसरों की सहायता करने में अग्रणी रहता है। यह मित्रता स्थापित करने में कुशल होता है तथा इसकी उन्नति में मित्रों का सहयोग भी रहता है। यह स्वभाव से शक्की होता है तथा सहसा किसी पर विश्वास नहीं करता। इनको उच्च पद तक पहुँचने के लिए अत्यधिक परिश्रम करना पड़ता है। विरोधी बहुत होते हैं, परन्तु वे सब इनका सामना करने में हिचकिचाते हैं। आर्थिक-स्थिति उत्तम रहती है तथा आमदनी के स्रोत भी एक से अधिक होते हैं। विवाह २३ अथवा २५ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य-सुख उत्कृष्ट रहता है। सन्तान-पक्ष की ओर से सन्तोष बना रहता है। वर्ष २३, २७, २९, ३३, ३५, ३९, ४३, ४९, ५१, ५३, ५७ तथा ६१ आर्थिक-उन्नति दायक सिद्ध होते हैं।

(८५०) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न बालक गेहुँए रंग, मध्यम कद, मतवाले नेत्र, पतला लम्बाई लिए शरीर, सुन्दर मुस्कुराहट वाला तथा तीखे नाक-नक्श वाला आकर्षक व्यक्तित्व से सम्पन्न होता है। शत्रु-पक्ष इसके परोक्ष में षड्यन्त्र रचता है, परन्तु यह उन्हें भी अपना मित्र बना लेता है। शत्रु को भी अपना प्रशंसक एवं मित्र बना लेना, इनके व्यक्तित्व की विशेषता होती है। यह ईश्वर में विशेष श्रद्धा रखता है तथा दूसरों के प्रति सहानुभूति रखते हुए अपने किये हुए उपकारों को भूल जाता है। विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। ससुराल से धन मिलता है। सन्तान का योग भी अच्छा रहता है। आर्थिक-सामान्य, प्रायः कष्ट-प्रद ही रहती है। वर्ष २७, ३३, ४०, ४६, ५२, ५८ तथा ६० आर्थिक दृष्टि से विशेष कष्टप्रद रहते हैं। वर्ष २४, २९, ३२, ३६, ४४, ५१ तथा ६४ लाभप्रद रहते हैं।

भु० सं० 203

(६५१) – इस जन्म कुण्डली में जन्म ग्रहण करने वाला बालक गेहुँआ रंग, नाटे कद, दुबले, तेजस्वी लम्बे चेहरे वाला, आलसी एवं शान्त प्रकृति का होता है। यह सामाजिक रूढ़ियों तथा परम्पराओं का कठोरता से पालन करता है। औरों के प्रति सहानुभूति एवं भलाई की भावना इसमें प्रचुर मात्रा में विद्यमान रहती है। शत्रु-पक्ष प्रबल रहता है तथा इसके कार्यों में रोड़ा भी अटकाता है। आर्थिक स्थिति मध्यम रहती है। आकस्मिक-लाभ के अवसर आते रहते हैं। भाइयों की अपेक्षा बहनों की संख्या अधिक रहती है। भाइयों से सहयोग भी रहता है। शिक्षा का क्षेत्र कमजोर रहता है। विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री (साँवली), कुछ लम्बी तथा हठीले स्वभाव की होती है। शिक्षा का क्षेत्र कमजोर रहता है। संतान-पक्ष से सन्तोष रहता है। २४ वर्ष की आयु से भाग्योदय आरम्भ होता है।

(६५२) – इस जन्मांग-चक्र का अधिपति मनुष्य साँवले रंग तथा नाटे कद का, साहसी, क्रोधी, आलसी तथा अल्प बुद्धि वाला होता है। यह स्वभाव से क्रोधी होने के कारण अपने कई कामों को बिगाड़ लेता है। यह स्वसाहस के बल पर विपरीत-परिस्थितियों को भी अनुकूल बनाने में समर्थ हो जाता है। आर्थिक-व्यय बढ़ा-चढ़ा रहने के कारण कई बार आर्थिक कठिनाइयाँ भी सामने आती हैं। कुल मिलाकर आर्थिक स्थिति सामान्य रहती है। विवाह २२ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री साँवली तथा क्रोधी स्वभाव की होती है। सन्तान-पक्ष से सुख-सन्तोष प्राप्त होता है। वर्ष २८, ३३, ३९, ४८, ५१, ५६ तथा ६० आर्थिक-दृष्टि से कष्टप्रद रहते हैं। वर्ष २९, ३१, ४६, ५२, ६५ तथा ७१ स्वास्थ्य के लिए चिन्ता-जनक रहते हैं तथा वर्ष २४, ३५, ४३, ५३, ५९ तथा ६४ आर्थिक लाभप्रद रहते हैं।

कु० १०

(८५३) - इस जन्मकुण्डली का अधिकारी गेहुंआ रंग, लम्बे कद, इकहरे तथा स्वस्थ शरीर का, साहसी, परिश्रमी, स्वतन्त्र-निर्णय लेने वाला तथा कठिन-से-कठिन परिस्थितियों में भी स्वयं पर पूर्ण नियन्त्रण रखने वाला एवं विपत्तियों का साहस के साथ मुकाबिला करने वाला होता है। साहसिक कार्य करने में इसे प्रसन्नता प्राप्त होती है। यह स्पष्टवादी होता है तथा खरी-खरी बातें मुँह पर ही कह देता है। यह परिश्रम द्वारा आर्थिक-क्षेत्र में उन्नति करता चला जाता है, अतः आर्थिक-स्थिति उत्तम बनी रहती है। विद्या का लाभ रुक-रुक कर होता है। राजनीतिक कार्यों में रुचि रहती है तथा राज्यपक्ष से आर्थिक-लाभ भी होता है। विवाह २३ या २४ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री सुन्दरी तथा सुशीला होती है। सन्तानों से पूर्ण सुख प्राप्त होता है। वर्ष २४, २९, ३३, ४१, ४९, ५३, ५७ तथा ६१ आर्थिक उन्नति प्रद रहते हैं।

(८५४) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी गौर वर्ण, लम्बे कद का, इकहरे बदन का, साहसी तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। इसके विचार स्पष्ट तथा सुलझे हुए होते हैं। स्मरणशक्ति कुछ कमजोर होती है। क्रोधी स्वभाव एवं स्वतन्त्र-चेता होने के कारण यह किसी के अधीन या नियन्त्रण में रहकर काम नहीं कर पाता। विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। ससुराल से आर्थिक-लाभ भी होता है। स्त्री सुन्दर तथा समझदार होती है। दाम्पत्य-सुख सामान्य रहता है, परन्तु सन्तान-पक्ष से सुख-सहयोग प्राप्त होता है। वर्ष ६, २२, २४, ४८, ५५ तथा ६७ स्वास्थ्य की दृष्टि से चिन्ताजनक रहते हैं। विद्या का लाभ सामान्य होता है। आर्थिक-स्थिति सामान्य रहती है। वर्ष २७, २८, ४१, ४९, ५३ तथा ६१ आर्थिक-दृष्टि से चिन्ताजनक रहते हैं तथा वर्ष २५, २९, ३३, ३९, ४३, ५०, ५४ एवं ६० उन्नति कारक सिद्ध होते हैं।

भृ० सं० ०८३

(८५५)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी साँवले रंग, तीखे नाक-नक्श वाला, मछली जैसी आँखों वाला, घुँघराले बाल तथा आकर्षक-व्यक्तित्व-सम्पन्न होता है। इसमें लड़ाकू प्रवृत्ति अधिक पाई जाती है। अपने उचित-पद तक पहुँचने के लिए इन्हें पर्याप्त संघर्ष करना पड़ता है। विज्ञान सम्बन्धी कार्यों में इनकी विशेष दिलचस्पी रहती है। मशीनरी के कार्यों में भी ये रुचि लेते हैं। स्मरण-शक्ति कुछ कमजोर होती है, जिसके कारण कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं। नशीली-वस्तुओं का सेवन करना लाजिमी रहता है। भूमि तथा मकान आदि का योग बनता है, परन्तु झगड़े की सम्भावना भी रहती है। शत्रु-पक्ष प्रबल रहता है। विवाह २७ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री सुन्दरी तथा सुशीला होती है। विद्या का लाभ सामान्य होता है। सन्तान-पक्ष से संतोष रहता है। वर्ष २८, ३२, ३८, ४६, ५४ तथा ५८ आर्थिक उन्नति के।

कु० २०

(८५६)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति मध्यम कद का, सुडौल शरीर, गौरवर्ण, बुद्धिमान, कीर्तिमान, यशस्वी, धनी, सुखी, सुन्दर, चालाक, चतुर, स्वाभिमानी तथा मित्रों को प्रिय होता है। यह स्वयं को अन्यों की अपेक्षा अधिक योग्य समझता है। मन तथा मस्तिष्क पर इसका सफल नियन्त्रण रहता है। यह बहुत सोच-समझ कर ही कोई योजना बनाता है तथा उसमें सफलता पाने का भरसक प्रयत्न भी करता है। इसकी आर्थिक-स्थिति उन्नत होती चली जाती है। यह अपने परिश्रम से ही ऐश्वर्यशाली बनता है। विवाह वर्ष २१ अथवा २५ में होता है। पत्नी मनोनुकूला मिलती है। सन्तान-सुख उत्तम रहता है। वर्ष ३०, ३६, ४२, ४८, ५४ तथा आर्थिक-दृष्टि से कष्टप्रद तथा वर्ष ९, २२, ३४, ४०, ५६ तथा ६२ शारीरिक दृष्टि से कष्टप्रद रहते हैं। वर्ष २५, ३१, ४३, ४७, ५५ तथा ५९ लाभप्रद रहते हैं।

(८५७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी गौर वर्ण, मध्यम कद वाला, मधुर भाषी, धर्मशील, परिश्रमी, त्यागी तथा उदार होता है। व्यावहारिक होते हुए भी यह कभी-कभी आपे से बाहर निकल कर असामाजिकता का परिचय दे उठता है, ऐसी स्थिति में इसके सम्मान को हानि भी पहुँचती है। सुदृढ़ व्यक्तित्व का होने के कारण इसके मित्रों की संख्या भी अधिक रहती है। यह स्वनिर्मित नियमों तथा सिद्धान्तों का पालक होता है तथा अपनी इच्छा के विरुद्ध कुछ भी सुनने को तैयार नहीं होता। संगीत, कविता एवं अन्य ललित-कलाओं के प्रति इसका विशेष लगाव रहता है। आर्थिक-स्थिति उत्तम रहती है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं। शत्रुपक्ष पग-पग पर बाधा उत्पन्न करने का प्रयत्न करता है तथा कभी-कभी आर्थिक-हानि भी पहुँचाता है। गृहस्थ जीवन का सुख मिलता है। विवाह २४ से २८ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य एवं संतति-सुख।

(८५८) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति साँवले रंग का, हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला, कण्ठ, चुम्बकीय-व्यक्तित्व सम्पन्न, उन्नत नासिका, आत्मविश्वासी एवं क्रोधी स्वभाव का होता है। इसमें परिस्थिति के अनुरूप स्वयं को ढालने की तथा विपरीत-परिस्थितियों पर भी विजय पाने की आश्चर्यजनक क्षमता पाई जाती है। संगीत आदि में इसकी रुचि होती है। स्वभाव से कुछ अभावग्रस्त जैसा भी प्रतीत होता है। आहुजी से विचार मेल नहीं खाते। शिक्षा का लाभ रुकावटों के साथ होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी साँवली तथा क्रोधी स्वभाव की होती है। पुत्रों की अपेक्षा कन्याएँ अधिक होती हैं, परन्तु सन्तान-पक्ष से संतोष प्राप्त होता है। वर्ष २८, ३१, ४०, ५२, ६५ तथा ७१ स्वास्थ्य के लिए चिन्ताजनक तथा वर्ष २७, ३३, ३८, ४४, ५८ तथा ६० आर्थिक चिन्ताकारक होते हैं। वर्ष ३१, ४३, ५३, ५५ तथा ५७ लाभप्रद हैं।

(८५९)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी साँवले रंग तथा मध्यम कद का, उन्नत मस्तिष्क वाला, क्रोधी स्वाभिमानी तथा साहसी होता है। यह राजनीति-कुशल तथा झूठ बोलने में माहिर होता है। झूठ को सच सिद्ध करने में भी इसे पटुता प्राप्त होती है। दूसरों से काम निकालना इसे खूब आता है। अपने वचन का पक्का होता है तथा संकल्प को पूरा कर दिखाता है। कठिन-से-कठिन परिस्थितियों में भी यह विचलित नहीं होता। संकटों का दृढ़ता पूर्वक सामना करता है। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है तथा कई बार ऋण-ग्रस्तता के अवसर भी आते हैं। शिक्षा-क्षेत्र उत्तम रहता है। भूमि, भवन आदि पर झगड़े-टंटे का योग बनता है। विवाह 22 या २६ वर्ष की आयु में होता है तथा स्त्री की ओर से चिन्तायें बनी रहती हैं। संतानों से पूर्ण सुख-सहयोग मिलता है। वर्ष २८, ३४, ४२, ५२ तथा ६० आर्थिक लाभ देते हैं।

(८६०)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति गौर वर्ण, लम्बे कद वाला, स्थूल शरीर, घुँघराले केश, मछली जैसी आँखों वाला, बुद्धिमान, यशस्वी तथा कामुक प्रकृति का होता है। यह एक निश्चित लक्ष्य बनाकर उसकी प्राप्ति हेतु प्रयत्न करता तथा धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए सफल होता है। शिक्षा का यथेष्ट लाभ होता है। यह एक साथ कई विषयों पर सोचने तथा निर्णय लेने की क्षमता रखने वाला विशिष्ट विद्वान एवं गुणवान व्यक्ति होता है। विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। सन्तानों से भी सुख-सन्तोष प्राप्त होता है। वर्ष १०, १४, २९, ४५, ५७ तथा ६८ स्वास्थ्य की दृष्टि से विशेष चिन्ताजनक रहते हैं। वर्ष ३२, ३७, ३९, ४३, ५१, ५५ तथा ५९ आर्थिक दृष्टि से कष्टकारक रहते हैं। वर्ष २४, ३०, ३६, ४२, ४४, ४८, ५२, ५६ तथा ६० आर्थिक उन्नति दायक सिद्ध होते हैं।

(८६१)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी साँवले रंग, इकहरे शरीर, लम्बे-कद वाला, सहन शील तथा विपरीत-परिस्थिति को भी अपने अनुकूल बना लेने की क्षमता रखने वाला होता है। यह शारीरिक-श्रम की अपेक्षा मानसिक-श्रम पर अधिक विश्वास करता है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होने के कारण आर्थिक-स्थिति उत्तम बनी रहती है। भूमि, भवन तथा वाहन का योग भी बनता है तथा मकान आदि से भी आर्थिक-लाभ होता है। शिक्षा का क्षेत्र उन्नति कारक रहता है। विवाह २३ अथवा २७ वर्ष की आयु में होता है। विवाह दक्षिण दिशा से होना सम्भव है। पत्नी सुन्दरी, सुलक्षणा तथा सहयोगिनी सिद्ध होती है। संतान-सुख भी उत्कृष्ट रहता है। कन्या की अपेक्षा पुत्रों की संख्या अधिक रहती है। भाग्योदय वर्ष २९ से होता है। वर्ष २३, २९, ३३, ४१, ४२, ५३, ५७ तथा ५९ आर्थिक लाभ देते हैं।

(८६२)- इस जन्माङ्ग चक्र में उत्पन्न बालक गौर वर्ण, सुन्दर नाक-नक्श वाला, नुकीली नासिका, उन्नत ललाट वाला, गुणवान, बुद्धिमान, कीर्तिवान, हृष्ट-पुष्ट तथा शान्ति-प्रिय होता है। यह वाक्पटु होने के कारण अन्य लोगों को शीघ्र प्रभावित कर लेता है। ईमानदार तथा न्यायप्रिय होने के अतिरिक्त यह सामाजिक हानिकर रूढ़ियों का प्रबल विरोधी भी होता है। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी में इसकी विशेष रुचि होती है। यह विपत्तियों का डटकर मुकाबिला करता है तथा अत्यन्त सहनशील भी होता है। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है। पैतृक-सम्पत्ति पर झगड़े के अवसर बनते हैं। विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री की ओर से चिन्ता रहती है तथा सन्तानों की ओर से सुख-सहयोग मिलता है। जीवन के वर्ष २५, २७, ३३, ४१, ४५, ५१, ५२ तथा ५७ उन्नति कारक सिद्ध होते हैं।

मू० सं० ८८३ कृ० १०

(८६३)- इस जन्मांग चक्र में उत्पन्न प्राणी साँवले रंग, मध्यम कद तथा हृष्ट-पुष्ट शरीर का, सुन्दर, साहसी, आकर्षक-व्यक्तित्व सम्पन्न, सहनशील, कोमल, विनम्र, मधुरभाषी एवं पर-स्त्रीगामी होता है। यह स्वाभिमानी होने के कारण अनेक बार अपनी उन्नति के अवसर खो बैठता है। परिश्रमी एवं साहसी होने के कारण यह विघ्नों के बीच से भी अपना मार्ग निकाल लेता है। इस की भाग्योन्नति धीरे-धीरे होती है। शारीरिक-श्रम की अपेक्षा मानसिक श्रम अधिक करता है। २६ वर्ष की आयु से भाग्योदय आरंभ होता है। पैतृक-सम्पत्ति पर झगड़े के अवसर उपस्थित होते हैं। भाइयों से सहयोग प्राप्त होता है। विवाह २३ या २५ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री-पक्ष की ओर से चिन्ता रहती है। दाम्पत्य-सुख में कमी रहती है। सन्तान के सुख मिलता है। वर्ष २८, ३७, ४५, ५३ तथा ५७ व्यवसाय में उन्नति देंगे।

(८६४)- इस जन्मांग चक्र का अधिपति बालक श्याम वर्ण, कुछ लम्बाई लिए मध्यम कद वाला, हृष्ट-पुष्ट स्वस्थ शरीर का, गोल चेहरा, घुंघराले केशों वाला एवं शान्ति-प्रिय होता है। यह आलसी भी इतना होता है कि जब तक सिर पर ही न आ पड़े, तब तक किसी काम में हाथ नहीं लगाता। दूसरों पर शीघ्र विश्वास नहीं करता, परन्तु जिससे आत्मीयता मानता है, उसके प्रति वफादार बना रहता है। यह वाचाल, द्वेषी, मुकदमेबाज़ तथा घृणित कार्य करने वाला भी हो सकता है। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय से लाभ उठाता है। विद्या का क्षेत्र उत्तम रहता है। विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है, परन्तु सन्तान-पक्ष से चिन्तित एवं दुःखी बना रहता है। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है। वर्ष २२, ३०, ३८, ४२, ५०, ५४, ५८ तथा ६२ आर्थिक-स्थिति में लाभप्रद रहते हैं।

(८६५) - इस जन्म कुण्डली वाला बालक ताम्रवर्ण, मध्यम कद का, रजोगुणी, पराक्रमी, अस्त्र-शस्त्र-संचालन में कुशल, उदार, तेजस्वी, क्रोधी तथा साहसी होता है। इसके विरोधी अधिक होते हैं, परन्तु यह उनका मान-मर्दन करता है। अज्ञात-रहस्यों को खोजना अथवा उनके विषय में चिन्तन करना इसके स्वभाव में होता है। यह न तो स्वयं ही सन्तुष्ट रह पाता है और न अपने अधिकारियों को ही प्रसन्न रख पाता है। क्रोधावेश में यह कई बार अपना ही अहित कर लेता है। मित्रों से इसे पूर्ण सहयोग प्राप्त होता है। आर्थिक-स्थिति उत्तम रहती है तथा आकस्मिक-लाभ के अवसर भी प्राप्त होते रहते हैं। बहिनों की संख्या अधिक होती है। भाइयों से सुख-सहयोग मिलता है। विवाह २४ वर्ष की आयु में पश्चिम दिशा से होता है। विद्या का लाभ रुकावटों के साथ होता है। वर्ष ३२, ५४ तथा ६० उन्नतिकारक होते हैं।

(८६६) - इस जन्म कुण्डली का ~~स्वामी~~ मध्यम कद तथा साँवले रंग का, साहसी, घुँघराले केशों वाला, गोल चेहरा तथा पुष्ट कंधों वाला, परिश्रमी, शान्ति-प्रिय तथा आकर्षक-व्यक्तित्व-सम्पन्न होता है। यह परिश्रम द्वारा ही आर्थिक-क्षेत्र में उन्नति करता है। यह योजनाएँ बनाता है, उनमें कठिनाइयाँ आती हैं, परन्तु अपने साहस के बल पर यह उन्हें सफल बना लेता है। अधिकारियों को सन्तुष्ट नहीं रख पाता और न स्वयं ही उनसे सन्तुष्ट रहता है। क्रोधावेश में कई बार अपना अहित भी कर लेता है। यह संशयालु प्रकृति का होने के कारण एकाएक किसी पर विश्वास नहीं करता। विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी से सामान्य-सुख मिलता है। सन्तानों से भी कोई विशेष सुख नहीं मिलता। वर्ष २१, ३२, ४१, ५३ तथा ५७ आर्थिक-कष्टप्रद तथा २४, ३०, ३४, ४६ एवं ६० लाभप्रद सिद्ध होते हैं।

मृ० सं० ३६३

(८६७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी गौर वर्ण, मंगल-प्रिय, बड़े नेत्रों वाला, प्रियभाषी, शान्त-स्वभाव का, चतुर, वाक्पटु तथा सम्मोहक-व्यक्तित्व वाला होता है। यह कठोर कार्यों को नहीं कर पाता, क्योंकि प्रकृति से यह अत्यन्त कोमल होता है। अपनी रुचि के विपरीत कार्य करना भी इसके लिए उचित नहीं होता। यह गणित के क्षेत्र में पटुता प्राप्त करता है। मनुष्य को पहचानने की तीव्र-शक्ति इसमें पाई जाती है। आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ रहती है तथा आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला मिलती है। ससुराल-पक्ष से धन का लाभ भी होता है। सन्तान-पक्ष से सुख मिलता है तथा दाम्पत्य-जीवन भी आनन्दमय बना रहता है। जीवन के वर्ष २३, ३१, ३५, ४३, ४९, ५३, ५९ तथा ६७ आर्थिक-उन्नति कारक सिद्ध होते हैं।

(८६८) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति दुबले शरीर का, गेहुँए रंग का, पतले होंठ, उभरी ठोड़ी, तीखे नाक-नक्श वाला, हँसमुख, चतुर तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। यह स्वयं में ही मस्त रहता है तथा दूसरे लोग उसके विषय में क्या सोचते हैं, इसकी चिन्ता नहीं करता। यह कल्पनाशील होने के कारण हवाई किले भी बनाता रहता है। आर्थिक व्यय काफी बढ़-चढ़ा रहता है, अतः आर्थिक-कठिनाइयों के अवसर भी उपस्थित होते रहते हैं। यों, आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है। भूमि, भवन या विवाद के अवसर भी उपस्थित होते हैं। विवाह २४ से २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है। सन्तानों में कन्याओं की संख्या अधिक रहती है। सन्तान-पक्ष से सुख मिलता है। पिता का लाभ मध्यम होता है। वर्ष २२, ३०, ३६, ४४, ५४, ५८ तथा ६० आर्थिक लाभप्रद रहते हैं।

कु० १०

भृ० सं० ७६३

कु० २०

(८६९) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी मध्यम कद, गौर वर्ण, उन्नत ललाट वाला, शान्ति-प्रिय, बुद्धिमान, गुणवान, चतुर तथा स्त्रियोचित गुणों — लज्जा, सुकुमारता, विनम्रता, भावुकता आदि से युक्त आकर्षक तथा सुन्दर व्यक्तित्व वाला होता है। स्वाभिमानी होने के कारण यह अपनी रुचि के विपरीत कार्यों को नहीं करने वाला। जीवन की कठोर परिस्थितियों में यह अत्यधिक घबरा जाता है। यह नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय को पसंद करता तथा उससे लाभ उठाता है। किन्तु परिश्रम की तुलना में इसे लाभ कम ही होता है। शैक्षणिक अथवा राजनीतिक-क्षेत्र में भी इसे सफलता मिल सकती है। आर्थिक-लाभ बढ़ा-चढ़ा रहने के कारण आर्थिक-स्थिति सामान्य ही रहती है। वर्ष २२ या २४ में विवाह होता है, दाम्पत्य तथा सन्तान-सुख उत्तम रहता है। विद्या-लाभ सामान्य रहता है। वर्ष २६ में भाग्योदय।

(८७०) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति कुछ लम्बाई लिये मध्यम कद का, मोटी नाक, साँवले रंग तथा क्रोधी स्वभाव वाला, दुर्बल शरीर एवं भीरु-प्रकृति का होता है। यह अत्यन्त वाक्पटु होने के कारण विपक्षी से भी अपनी बात मनवा लेने में कुशल होता है। पैतृक सम्पत्ति के श्रेष्ठ लाभ के अतिरिक्त ससुराल-पक्ष से भी सम्पत्ति का लाभ होता है। आर्थिक स्थिति सदैव उन्नत एवं सुदृढ़ बनी रहती है। विवाह २३ या २५ वर्ष की आयु में होता है, पत्नी साँवली तथा क्रोधी स्वभाव की होती है, फलतः दाम्पत्य-जीवन कष्टपूर्ण बना रहता है। सन्तानें अधिक होती हैं, उनमें भी कन्याओं की संख्या अधिक होती है। सन्तान-पक्ष से भी कोई विशेष सुख-सन्तोष नहीं मिलता। वर्ष २७, ४०, ५१ तथा ५६ आर्थिक कष्टप्रद तथा वर्ष २२, ३२, ३८, ४४, ५२, ५८ तथा ६२ लाभप्रद सिद्ध होते हैं।

(८७१)- इस जन्मकुंडली का स्वामी ऊँचे कद वाला, गौर वर्ण, थोड़े केशों वाला, क्रोधी, प्रचंड स्वभाव का, नास्तिक, नेत्र-रोगी, हठीले स्वभाव का, साहसी तथा उदार भी होता है। इसका विवाह बड़े नाटकीय ढंग से होता है तथा पत्नी अच्छे स्वभाव की नहीं मिलती। एक से अधिक विवाह भी संभव है। यह एक से अधिक स्त्रियों का भोक्ता होता है। पुत्र की अपेक्षा कन्याएँ अधिक होती हैं। छोटे भाई का योग प्रायः नहीं होता, बड़ी बहिन हो सकती है तथा उससे कठिनाई के समय सहायता भी प्राप्त होती है। सन्तानें होती तो हैं, परन्तु उनसे सुख-सहयोग नहीं मिलता। निजी मकान का योग बनता है। जीवन में अनेक कठिनाइयाँ आती हैं तथा उन पर विजय भी प्राप्त होती है। यह जातक भीरु प्रकृति का तथा अल्पजीवी होता है। अधिकतम आयु ५० वर्ष होना संभव है। वर्ष २२, ३०, ३४, ४३ तथा ४८ आर्थिक-उन्नति कारक रहते हैं।

(८७२)- इस जन्म कुण्डली वाला जातक लम्बे शरीर वाला, सामान्य रूप, परन्तु प्रभावहीन व्यक्तित्व वाला, न्याय-प्रिय, विनम्र, उदार, धीर-गम्भीर तथा आत्म-विश्वास से सम्पन्न होता है। यह आन्तरिक रूप से ज्ञानी तथा बाह्य रूप से अनजाना सा भी एवं अपने आप में खोया सा रहता है। लोकोपकार करते हुए भी इसे कोई महत्व प्राप्त नहीं होता, अपितु राज्य-भय से भयभीत बना रहता है। यह शिल्प-विद्या द्वारा आजीविकोपार्जन करता है तथा युवावस्था आरम्भ होते ही वैवाहिक-बंधन में भी बँध जाता है। परन्तु सन्तान का लाभ बहुत विलम्ब से होता है। इसकी आजीविका जल सम्बन्धी कार्य अथवा वस्तुओं से होती है। एक से अधिक स्त्रियों से इसके सम्बन्ध होते हैं। शत्रुओं से अल्प सहयोग मिलता है। वर्ष २३, ३१, ३८, ४५, ५१, ५८ तथा ६३ आर्थिक-दृष्टि से लाभप्रद सिद्ध होते हैं। सन्तानों में कन्याएँ अधिक होती हैं। आयु [illegible]

भृ० सं० ३३३

कु० २०

(८०३) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी प्रियवादी, परन्तु प्रभाव-रहित वाणी के कारण दुःखी एवं अपनी कार्य सिद्धि में असफल रहता है। इसका शरीर कुछ स्थूलता लिए हुए मध्यम कद का तथा गौर वर्ण होता है। इसके सभी काम या तो स्वतः ही देर में पूरे होते हैं अथवा यह अपने आलस्य वश उन्हें बीच में ही छोड़ देता है। इसे पैतृक-सम्पत्ति का लाभ होता है तथा अहंकारवश यह स्वयं को अन्य लोगों से श्रेष्ठ समझता है। यह अनुदार तथा क्रोधी स्वभाव का होता है तथा अपनी कठोर वाणी से अन्य लोगों की उपेक्षा करता रहता है। इसे अपने छोटे भाई से सुख मिलता है तथा मशीनरी आदि के व्यवसाय से आर्थिक-लाभ होता है। बाहरी-स्थानों के सम्पर्क इसके लिए लाभप्रद सिद्ध होते हैं। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है। सन्तान-पक्ष से सन्तोष रहता है। माता-पिता की ओर से सहयोग मिलता है। लगभग ६० वर्ष की आयु होती है।

(८०४) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति आत्मदृढ़, लम्बे शरीर का, गेहुँए रंग वाला, सुन्दर केशों वाला तथा प्रभावशाली वाणी का धनी होता है। यह अपने मन का मालिक होता है तथा किसी अन्य के सुझावों पर ध्यान नहीं देता। यह स्व-बुद्धि से धनोपार्जन करता है तथा पैतृक-सम्पत्ति की अभिवृद्धि भी करता है। इसकी आमदनी के कुछ स्रोत गुप्त भी रहते हैं। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला मिलती है। सन्तान-सुख उत्तम रहता है तथा कुछ सन्तानों की हानि भी सम्भव है। एक बड़ा पुत्र अत्यन्त विद्वान् होता है। भाग्योदय ४५ वर्ष की आयु के बाद होता है। जीवन के ७, २३, ३६ तथा ४२ वें वर्ष स्वास्थ्य के लिए चिन्ताजनक तथा २१, २८, ३५, ४२ तथा ५६ वें वर्ष आर्थिक-कष्टप्रद रहते हैं। वर्ष २२, २५, ३३, ३७, ४८ तथा ५३ आर्थिक उन्नति देते हैं। आयु लगभग ६५ वर्ष की होती है।

भु० सं० ९२०

कु० १०

(८०५) - इस जन्मकुण्डली वाला जातक मध्यम कद, घुंघराले केश एवं प्रभावशाली आकृति का वाला होता है। यह अत्यन्त पराक्रमी होता है तथा दुस्साहसिक कार्यों को करने के लिए भी सदैव उत्सुक बना रहता है। भय इसके कभी पास भी नहीं फटकता। यह अपने जीवन के लिए कष्टप्रद तथा अन्य लोगों का कार्य करने के लिए भी जान एक कर देने वाला होता है। इसका विवाह कुछ विलम्ब से होता है तथा विवाह के लिए प्रयत्न भी करना पड़ता है। पत्नी सुन्दर होती है, तथापि अन्य स्त्रियों के साथ भी इसके प्रेम-सम्बन्ध बने रहते हैं। सन्तान-पक्ष की ओर से यह सुखी तथा सन्तुष्ट रहता है। इसे अपने पुत्र के निधन का दुःख भी भोगना पड़ता है। २५ वर्ष की आयु से इसका भाग्योदय होता है तथा धन की दिन-प्रतिदिन वृद्धि होती चली जाती है। धन सात्विक कार्यों में अधिक लगाता है तथा आयु ६० वर्ष के लगभग होती है।

(८०६) - इस कुण्डली का स्वामी मधुरभाषी सुन्दर, परन्तु रोगग्रस्त बना रहने वाला होता है। यह शत्रुओं से भारी रहते हुए भी उनपर विजय प्राप्त करता है। नैतिक तथा अनैतिक - दोनों प्रकार के कार्यों से यह अपने धन की वृद्धि करता है। साहस पूर्ण कार्य करने में इसे आनन्द आता है। इसके धन का व्यय निजी स्वार्थ में ही होता है। विवाह २० से २५ वर्ष की आयु में होता है तथा इसकी पत्नी बहुत वाचाल होती है और इसके ऊपर अपना पूर्ण प्रभाव बनाये रखती है। यह अपनी पत्नी के वशीभूत रहते हुए भी प्रत्येक कार्य करता है। इसे बालकों से खेलना अच्छा लगता है तथा उनसे लाभ भी उठाता है। पिता का लाभ सामान्य तथा संतान-सुख उत्तम प्राप्त होता है। कन्याएं अधिक होती हैं। पत्नी की मृत्यु इसकी मृत्यु से कुछ समय पूर्व ही हो जाती है। जीवन के वर्ष ७, २१, ४६ शारीरिक कष्ट-प्रद तथा वर्ष २५, ३६, ४८, ५२ तथा ६० आर्थिक लाभप्रद रहते हैं।

(८०७) - इस जन्मलग्न में उत्पन्न मनुष्य लम्बे कद, विरल केश तथा कठोर स्वभाव का होता है। यह कटुभाषी तथा अदूरदर्शिता पूर्ण कार्य करने वाला, परन्तु धन का संचय करने में अत्यधिक पटु होता है। यह अनेक बार सबकुछ दाँव पर लगाने के बाद यथेष्ट लाभ प्राप्त करता है। यह धार्मिक तथा साहसिक कार्यों में रुचि लेने वाला होता है तथा बड़े एवं महत्वपूर्ण कार्यों की ओर इसकी विशेष रुचि रहती है। यह तात्कालिक लाभ पर ध्यान न देकर ठोस उपलब्धि वाले कार्यों में भी हाथ लगाता है। विद्या का लाभ मध्यम होता है। विवाह २५ या २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी होते हुए भी मनोनुकूला नहीं होती। सन्तानों का लाभ होता है, परन्तु गर्भनाश होने की सम्भावना भी रहती है। पत्नी से सुख प्राप्त नहीं होता। भाग्योदय विवाह के बाद होता है। आयु ६५ से ७० वर्ष के बीच रहती है। वर्ष ४२, ४८ तथा ५६ उत्कर्ष देते हैं।

(८०८) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी साँवले रंग का, मध्यम कद वाला तथा सामान्य सुन्दर होता है। पारिवारिक - जिम्मेदारियों को वहन करने वाला यह काबिल गंभीर स्वभाव का होता है तथा इसीकारण अपने परिवार में प्रमुख स्थान भी प्राप्त करता है। इसे वात रोग होने की सम्भावना भी रहती है। यह २० से २५ वर्ष की आयु के बीच कोई नवीन कार्य अथवा कारोबार आरंभ करता है, जिसे जमाने में इसे सफलता भी मिलती है। इसे पारिवारिक सुख जीवन भर मिलता है, तथापि आकस्मिक कष्टों का सामना भी करना पड़ता है। इसे किसी दुर्घटना में चोट लगने की सम्भावना भी रहती है। शिक्षा मध्यम श्रेणी की होती है। विवाह विलम्ब से होता है तथा सन्तानों में कन्याओं की संख्या अधिक रहती है। भाग्योदय ३० वर्ष की आयु के बाद होता है। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती मिलती है। सन्तान-पक्ष से सन्तोष रहता है। आयु मध्यम से कुछ होती है।

(९८९)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी मध्यम कद तथा गेहुँए रंग का, मध्यम कद वाला तथा बुद्धि-विचक्षण होता है। इसकी पैतृक-सम्पत्ति पिता के द्वारा ही आमोद-प्रमोद तथा विलासादि में बहुत कुछ नष्ट कर दी जाती है, तथापि इसे पैतृक-सम्पत्ति एवं धन का श्रेष्ठ लाभ होता है। धार्मिक-सुख भी मिलता है। यह पैतृक-सम्पत्ति के बल पर ही अपने कारोबार को जमाता तथा उसकी अभिवृद्धि करता है। इसे अपने छोटे तथा बड़े भाइयों से सहयोग प्राप्त होता है। छोटे भाई से विशेष सहायता मिलती है और वह इससे अधिक विद्वान् तथा समझदार भी होता है। इसे विद्या का लाभ मध्यम होता है। विवाह २१ से २८ वर्ष के बीच होता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है। सन्तान का सुख युवावस्था में मिलता है, परन्तु पुत्री की ओर से दुःखी रहता है। यह कला-कौशल तथा यान्त्रिक-विद्या का ज्ञाता होता है। शत्रु-पक्ष से विरोध भी मिलता है।

(९९०)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति विरल केशों वाला, मध्यम कद वाला, आत्म-केन्द्रित, स्वार्थी तथा क्रूर-स्वभाव का होता है। यह ऊपर से उदार दिखाई देता है, परन्तु यथार्थ में धूर्त होता है। यह बुद्धि का मन्द होते हुए भी दूसरों की बात के यथार्थ-मर्म को समझ लेता है। यह परिवार के मुखिया बने रह कर उसे अपनी इच्छानुसार चलाता है तथा किसी का विरोध सहन नहीं कर पाता। अपने शत्रु से बदला लिये बिना यह नहीं चूकता। इसको आमदनी के साधन शुद्ध तथा उचित दिखाई देते हैं, तथापि इसके पास गुप्त रूप से धन का आगमन होता रहता है। विवाह २१ या २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, तेजस्वी तथा सहयोगिनी होती है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। सन्तान-पक्ष से भी सन्तोष प्राप्त होता है। भाग्योदय २८ वर्ष की आयु से होता है। जीवन में कठिनाइयों का कम सामना करना पड़ता है, अतः प्रायः सुखी बना रहता है।

(८८१) – इस जन्म कुण्डली वाला प्राणी मध्यम कद, दुबले-पतले शरीर वाला तथा काले घने केशों वाला, गेंहुआ रंग का होता है। यह बुद्धिमान, मनस्वी, पराक्रमी तथा चंचल स्वभाव का होता है, परन्तु धैर्यवान होने के कारण किसी भी काम में जल्दबाजी नहीं करता। इसकी गणना प्रभावशाली व्यक्तियों में की जाती है। इसे राज्य, समाज तथा परिवार में सर्वत्र सम्मान प्राप्त होता है। यह किसी उच्च पद का अधिकारी भी बनता है। विद्या-बुद्धि तथा कार्य-कुशल होने के कारण इसे सर्वत्र प्रशंसा भी मिलती है। विवाह २४ से २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी भी अत्यन्त सुन्दरी, बुद्धिमान तथा समझदार होती है। धर्म में आस्था रखते हुए भी यह पुरुषार्थ पर ही भरोसा करता है। सन्तान प्रथम तो होती ही नहीं और यदि होगी तो उसका सुख नहीं मिलता। आर्थिक-स्थिति आजीवन सुदृढ़ बनी रहती है।

(८८२) – इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य शरीर से दृढ़, मध्यम कद, साँवला-गौर वर्ण, सुन्दर तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व से सम्पन्न होता है। यह सद् कार्यों में धन खर्च करने वाला, पुरुषार्थ का धनी तथा भाग्य का बलवान होता है। इसे धन के लेन-देन से विशेष आर्थिक-लाभ होता है। बड़े भाई का सुख मिलता है, परन्तु छोटा भाई नहीं होता। कई प्रकार के व्यवसायों द्वारा धनोपार्जन करता है। विवाह कुछ विलम्ब से और कभी-कभी विपरीत-परिस्थितियों में भी होता है। पत्नी से सुख मिलता है तथा सन्तानों से भी सुख-सहयोग प्राप्त होता है। चुगलखोरों के कारण इसे कभी-कभी कष्ट भी उठाना पड़ता है, तथापि बाहरी स्थानों से लाभ होता रहता है। दूर के स्थानों की यात्रा तथा परदेश से सम्बंधित व्यवसाय द्वारा इसे विशेष लाभ होता है। जीवन सुख पूर्वक बीतता है।

(९८८३) — इस जन्म-कुण्डली का अधिपति श्याम वर्ण, परन्तु सुन्दर, बुद्धिमान तथा वाकपटु होता है। इसके व्यावसायिक-बुद्धि की प्रधानता पाई जाती है तथा व्यवसाय द्वारा ही यह आर्थिक-लाभ कमाता है। किसी बड़े व्यावसायिक-प्रतिष्ठान के सम्मिलित होने पर यह अपनी योग्यता का भारी प्रदर्शन करता है। यह अपने ही बलबूते पर भारी धनोपार्जन कर ऐश्वर्यशाली बनता है। बचपन में दुःखी रहता है, परन्तु माता-पिता के बिछोह का दुःख भी शीघ्र ही सहन करना पड़ता है। विवाह २५ से ३० वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, मधुरभाषिणी तथा आकर्षक-व्यक्तित्व वाली होती है। यह परिवार से अलग ही रहता है, क्योंकि परिवारीजनों से इसके स्वभाव का मेल नहीं खाता। सन्तान-सुख उत्तम रहता है। ५० से ५६ वर्ष की आयु विशेष उत्कर्षदायक सिद्ध होती है। आयु दीर्घ होती है तथा जीवन सुखपूर्वक बीतता है।

(९८८४) — इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य दृढ़ शरीर का, साँवले रंग का, क्रूर तथा क्रोधी स्वभाव का तथा स्वार्थी होता है। यह दुस्साहसिक कार्यों के कारण अपयश का भागी बनता है तथा कारावास का दण्ड भी पा सकता है। परिवार के प्रति इसका कोई लगाव नहीं होता। यह अपनी ही धुन में मस्त रहता है। इसकी आमदनी के स्रोत अच्छे होते हैं तथा खर्च भी खूब करता है। अर्थ-व्यय करके जिन मित्रों से वाहवाही लूट कर प्रसन्नता का अनुभव करता है, तथापि वे ही मित्र इसकी पीठ पीछे बुराई करते तथा मजाक भी बनाते हैं। यह ऐसा भाग्यशाली होता है कि इसे धन का कभी अभाव नहीं रहता। ३५ वर्ष की आयु के बाद इसका अत्यधिक भाग्योदय होता है। इसके सभी कार्य जीवनभर सुचारु रूप से चलते रहते हैं। विवाह बड़ी आयु में होता है, पत्नी अधिक खर्चीली होती है तथा स्वयं को बहुत योग्य एवं बुद्धिमान समझती है। आयु अधिक नहीं होती।

भु० सं० ४५८३

कु० २०

(८८५) – इस जन्मकुण्डली का स्वामी भारी भरकम शरीर का, श्याम वर्ण तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होता है। इसे बचपन से ही कोई कष्ट नहीं होता। यह अपनी विद्या-बुद्धि द्वारा दूसरों को प्रभावित करके जीविकोपार्जन करता है। पैतृक-सम्पत्ति एवं धन का भी यथेष्ट लाभ होता है। इसके शब्दों तथा कार्यों की सर्वत्र प्रशंसा की जाती है। इसे उच्च राजकीय-पद भी प्राप्त होता है। यह २१ से २५ वर्ष की आयु तक विवाह-बंधन में बँध जाता है। पत्नी बुद्धिमती तथा कुशलता प्रदान करने वाली मिलती है। दाम्पत्य-सुख बहुत उत्तम रहता है। सन्तानों से भी सुख-सहयोग प्राप्त होता है। इसका भाग्योदय बचपन से ही आरंभ हो जाता है। बड़ी तथा लम्बी दीर्घकालिक यात्राओं से सुख एवं लाभ की प्राप्ति होती है। जन-सेवा के अवसर भी प्राप्त होते रहते हैं। माता-पिता को सुख देता है तथा स्वयं भी सुखी बना रहता है।

(८८६) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य श्याम वर्ण, दुहरे शरीर का, मध्यम कद वाला, आकर्षक नेत्र तथा मधुर वाणी वाला एवं अपने पराक्रम, उदारता, प्रिय-भाषण आदि सद्गुणों से सब का मन मोहित कर लेने वाला होता है। इसका विवाह २० वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है। पत्नी का पूर्ण विश्वास पात्र रहते हुए भी यह नारियों का उपभोग करता है। पैतृक-सम्पत्ति को प्राप्त कर उसकी अभिवृद्धि करता है। इसे सन्तान का अभाव खटकता है। इसका भाग्योत्कर्ष बाल्यावस्था से ही आरम्भ हो जाता है तथा ४० वर्ष की आयु तक यह सफलता के सर्वोच्च-शिखर पर जा पहुँचता है। इसे शत्रुओं का कोई भय नहीं होता। कफ तथा वात-विकार की पीड़ा बनी रहती है, परन्तु अधिक कष्टकारक नहीं होती। आयु लगभग ७५ वर्ष होती है। सम्पूर्ण जीवन सुख से बीतता है।

भृ० सं० ३८३

(८८७) — इस जन्मलग्न में उत्पन्न मनुष्य गौर वर्ण, विशाल नेत्रों वाला, बुद्धिमान् तथा गंभीर-स्वभाव का होता है। यह ईश्वर में पूर्ण आस्था रखने वाला तथा धार्मिक-वृत्ति का होता है। यह थोड़ा सा भी कष्ट सहन नहीं कर पाता। यह अत्यन्त कोमल स्वभाव का तथा मधुरभाषी होता है। धार्मिक कार्यों से इसे नियमित आर्थिक-लाभ होता है। इसका विवाह १९ से २३ वर्ष के बीच हो जाता है। पत्नी सुन्दर, मनस्विनी तथा चंचल-स्वभाव की, साज-सज्जा एवं श्रृंगार प्रिय, बड़े आकर्षक-व्यक्तित्व वाली होती है। पत्नी के कारण जातक को समाज में विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। पत्नी अपने ऊपर यथेष्ट व्यय करने वाली तथा मर्यादा का उल्लंघन करके भी दूसरों को प्रभावित करने में रुचि रखने वाली होती है। संतान-पक्ष सन्तोषजनक रहता है। २५ या २७ वर्ष से भाग्योदय होता है तथा लगभग ८० वर्ष की आयु प्राप्त होती है।

(८८८) — इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, शरीर से पुष्ट, पराक्रमी तथा उदार प्रकृति का होता है। इसे पारिवारिक-सम्पत्ति बड़ी कठिनाई से प्राप्त होती है, तथापि अपने बलबूते पर ही यह यथेष्ट-सम्पत्ति का अर्जन करता है। इसका भाग्योदय १७ वर्ष की आयु से ही आरंभ हो जाता है। विवाह भी २१ से २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा विदुषी होती है। वह सब जगह सम्मान प्राप्त करने वाली तथा सहृदय होती है। दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहता है। सन्तान का जन्म विलम्ब से होता है। छोटे भाई अथवा बहिन की ओर से इसे काफी गलत-फहमियां रहती हैं। दुस्साहसी होने के कारण किसी समय इसे चोट लगना भी सम्भव है। इसे २५ वर्ष की आयु से ही विपुल धन प्राप्त हो जाता है। ५० वर्ष की आयु में चोट लग सकती है। पूर्णायु, ७२ से ८५ वर्ष के बीच होती है। सम्पूर्ण जीवन सुख से बीतता है।

कु० १०

(८८९) – इस जन्माङ्ग चक्र में उत्पन्न प्राणी सुन्दर शरीर वाला, बलिष्ठ तथा मित्रों को अत्यन्त प्रिय होता है। इसे पारिवारिक सुख-सम्पत्ति का बाल्यावस्था से ही लाभ होता है। इसे धन की कमी कभी नहीं रहती तथा अन्य सब पदार्थ भी उपलब्ध रहते हैं। यह अपने से विमुख अथवा विरोधी को तनिक भी सहन नहीं कर पाता तथा कभी-कभी क्रोधावेश में अपना ही अहित कर बैठता है। इसका विवाह २० वर्ष की आयु में ही हो जाता है। इसके विवाह के कारण जीवन में कुछ कठिनाइयाँ भी उत्पन्न होती हैं। इसे अपने से बड़े लोगों का स्नेह मिलता है तथा छोटे से आदर नहीं मिलता। सन्तान के लिए चिन्ता रहती है। जीवन के ३५ से ४० वर्ष के बीच का समय बहुत सुख पूर्वक व्यतीत होता है। पूर्णायु ६५ से ७० के बीच होती है। यदि इसे पार करले तो ८० वर्ष की आयु तक जीवित रहता है।

(८९०) – इस जन्माङ्ग चक्र में उत्पन्न मनुष्य मध्यम कद का, सुन्दर शरीर, साँवले रंग का तथा आकर्षक-व्यक्तित्व-सम्पन्न होता है। इसे प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त होती है तथा यह जो भी खर्च करता है, उससे इसकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होती चली जाती है। यह अनेक विद्याओं तथा कलाओं का जानकार, कार्य-कुशल तथा धार्मिक-कार्यों द्वारा धनोपार्जन करने वाला होता है। यह अनेक प्रतिष्ठानों से सम्बद्ध होकर पर्याप्त धन तथा सम्मान प्राप्त करता है। ३५ वर्ष की आयु में इसका भाग्य चर्मोत्कर्ष पर जा पहुँचता है और जीवनान्त तक उन्नति करता चला जाता है। यह पैतृक-सम्पत्ति की चिन्ता नहीं करता, क्योंकि स्वोपार्जित सम्पत्ति ही इसके पास बहुत होती है। यह देश-विदेश में सर्वत्र मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। आयु के लगभग २८ वर्ष बिताने के बाद कुछ शारीरिक कष्ट होता है। दाम्पत्य एवं सन्तान-सुख उत्तम रहता है। आयु ८० वर्ष होती है।

(८९१) – वृष लग्न कुंडली चक्र का स्वामी स्वस्थ शरीर, गौरवर्ण, शक्तिशाली, सुन्दर तथा आकर्षक-व्यक्तित्व का धनी होता है। काव्य-संगीत तथा ललित-कलाओं से इसे विशेष प्रेम होता है। इसे अपनी पैतृक-सम्पत्ति को पाने की इच्छा नहीं होती, क्योंकि अपनी 30 वर्ष की आयु में ही यह इतनी सम्पत्ति पैदा कर लेता है, जो पैतृक-सम्पत्ति से पचासों गुना अधिक होती है। सामाजिक-प्रतिष्ठा, सौभाग्य तथा धन की इसे श्रेष्ठ उपलब्धि होती है। यह स्वदेश के अतिरिक्त परदेश तथा विदेश में भी यथेष्ट धन तथा सम्मान अर्जित करता है। परिवारीजनों के सहयोग से रहित होकर भी यह उनका पालन-पोषण करता है तथा उनसे किसी प्रतिदान की अपेक्षा नहीं रखता। विवाह २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी मनोऽनुकूल मिलती है। परन्तु सन्तान कष्ट होती है। दत्तक-पुत्र का भोगी बनता है। 30 वर्ष की आयु से आजीवन सम्पन्न बना रहता है। आयु ७५ वर्ष

(८९२) – इस लग्न कुंडली चक्र का अधिपति सुन्दर, स्वस्थ, आकर्षक-व्यक्तित्व वाला, ललित कलाओं का ज्ञाता, विद्या का धनी, कवि तथा कलाकार होता है। इसे मशीनरी संबंधी ज्ञान भी होता है तथा धन कमाने में भी यह निपुण होता है। यह प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है। इसके भाग्य में उच्च राजयोग तथा प्रसिद्धि-योग पाये जाते हैं। यह किसी के लिए स्वयं खर्च नहीं करता अन्य लोग ही इसके लिए खर्च करते हैं। इसका विवाह 20 वर्ष की आयु में ही हो जाता है, पत्नी सुन्दरी तथा सुलक्षणा प्राप्त होती है, तथापि इसके अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध रहते हैं। इसका पूर्ण भाग्योदय ४५ वर्ष की आयु में होता है तथा जीवन भी भाग्यशाली बना रहता है। संतान-सुख उत्तम रहता है। यह दूर-दूर की यात्राएं करता है तथा अपने मित्रों को भी यात्राएं कराता है। इसका बड़ा भाई प्रतापी होता है, परन्तु छोटा भाई नहीं होता। आयु ७५ वर्ष से ऊपर होती है।

(८९३) — इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य बलिष्ठ शरीर का, सुन्दर, सुशील तथा प्रियदर्शी होता है। यह अनेक कलाओं का ज्ञाता तथा सर्वत्र सम्मान पाने वाला होता है। यह सहज ही में सामाजिक सम्मान प्राप्त कर एक बड़े आदमी के रूप में प्रतिष्ठित हो जाता है तथा बाल्यावस्था से ही इसका उत्कर्ष आरंभ हो जाता है। इसे अपने पिता तथा राज्य से बहुत सहयोग प्राप्त होता है। इसका विवाह २२ से २६ वर्ष की आयु में अत्यन्त सुन्दरी तथा गम्भीर-प्रकृति की महिला से होता है, वह जातक के लिए विशेष उन्नतिदायक सिद्ध होती है। यह आयु में कुछ बड़ी भी हो सकती है। पत्नी जातक की अनुगामिनी बनी रहती है। माता की ओर से भी जातक को सहयोग प्राप्त होता है। युवावस्था में शरीर कुछ समय तक शिथिलता का अनुभव करता है। सन्तान की ओर से चिन्ता रहती है तथा लम्बी आयु प्राप्त होती है।

(८९४) — इस जन्म कुण्डली का स्वामी कुछ लम्बे कद का, सुन्दर तथा आकर्षक व्यक्तित्व से सम्पन्न होता है। इसके खर्च बढ़े-चढ़े रहते हैं, अतः आमदनी अच्छी होते हुए भी अर्थ-संकोच बना रहता है। परन्तु जीवन में परेशानी नहीं रहती। विवाह कुछ विलम्ब से होता है, वह या तो टूट जाता है अथवा फिर पति-पत्नी के बीच मन-मुटाव बना रहता है। यह स्थिति ३० वर्ष की आयु के बाद उत्पन्न होती है। यह कला के क्षेत्र में अत्यन्त यशस्वी होता है, तथापि इसका व्यक्तिगत जीवन संघर्षपूर्ण ही बना रहता है तथा इसे सुख कम ही मिल पाता है। इसकी संतानों में पुत्रियों की संख्या अधिक होती है। १९ वर्ष की आयु के बाद इसका उत्कर्ष आरंभ होता है तथा २५, २८, २९ एवं ३५वें वर्ष भी अच्छे बीतते हैं। जीवन के अन्तिम समय में यह वात-रोग से पीड़ित होता है तथा दुःख भोगता है। आयु ७५ अथवा ७६ वर्ष की होती है।

भू० सं० ३६

कु० २०

(८८६५) — इस जन्मकुण्डली का स्वामी आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, धीर-गम्भीर, बलिष्ठ, मध्यम कद वाला, कला एवं संगीत का मर्मज्ञ तथा कवि होता है। यह उदार, कोमल तथा सहिष्णु स्वभाव का होता है। धीरता तथा गम्भीरता भी इसमें अत्यधिक पाई जाती है। यह रोग-शोक से तो कम दुःखी होता है, परन्तु अपने लोगों के विश्वासघात से इसके हृदय पर बड़ी चोट लगती है। १८ तथा २२ वर्ष की आयु में इसे किसी मानसिक-उद्वेग तथा कष्ट का सामना करना पड़ता है। तदुपरान्त यह किसी अच्छे प्रतिष्ठान की सेवा में पहुँच कर अपने जीवन को सुखी बनाता है। विवाह २४ से २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी से पूर्ण आत्मीयता स्थापित नहीं हो पाती। सन्तान पक्ष से भी प्रायः कष्ट ही मिलता है। इसके पास सम्पत्ति अधिक नहीं होती, तथापि मृत्यु के समय बैंक में पर्याप्त जमा धन पाया जाता है। आयु ८६ वर्ष तक हो सकती है।

(८८६६) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य उन्नत भाल, हल्का साँवला वर्ण, स्वस्थ शरीर तथा उदात्त व्यक्तित्व वाला होता है। यह स्वभाव से कोमल तथा धीर-गम्भीर होता है तथा अपने जीवन में अनेक संकटों का सामना करता है। १४ से २० वर्ष की आयु के बीच इसे अपने कार्यों में कई बार असफलता मिलती है तथा पिता की ओर से कष्ट प्राप्त होता है। विवाह २३ या २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी आयु में बड़ी तो नहीं होती, परन्तु बड़ी लगती है। वह सुन्दर तथा गुणवती भी होती है। सन्तान-पक्ष से दुःखी रहता है। सामान्यतः यह कला के माध्यम से ही जीविकोपार्जन करता है, तथापि कभी-कभी आत्मा के विरुद्ध कार्य करके भी धन कमाता है। यह करीब ७५ वर्ष की आयु प्राप्त करता है। इसके जीवन के ३०, ३५, ३७, ४५ तथा ५० वें वर्ष उत्कर्षदायक सिद्ध होते हैं।

(८९७) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सामान्य जीवन बिताने वाला, तथापि भाग्यशाली होता है। यह आर्थिक-स्थिति में सम्पन्न, सदैव संग्रही तथा कृपण स्वभाव का होता है। इसे न कोई चिन्ता रहती है, न कष्ट होता है. किन्तु यह अपना अथवा अपने परिवार का कुछ भला नहीं कर पाता। पुत्रवान होने का योग होते हुए भी इसे पुत्र का सुख नहीं मिलता। विवाह 20 वर्ष की आयु में हो जाता है, परन्तु स्त्री से अधिक सुख नहीं मिलता, वह अपने माता-पिता की ओर विशेष आकर्षित रहती है। यह जातक सेवा-कार्य (नौकरी) में सफलता प्राप्त करता है। भाग्योदय ४० वर्ष की आयु के बाद होता है तथा विपुल संपत्ति का संचय करता है। किसी नवीन कार्य में हाथ डालना इसे अच्छा नहीं लगता। यह लकीर का फकीर बना रहता है। आयु लम्बी प्राप्त होती है तथा वृद्धावस्था में वातरोग से पीड़ित बना रहता है। ३७, ४५ तथा ५६वें वर्ष उत्तम।

(८९८) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य स्वस्थ, सुन्दर, लम्बे कद तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। शरीर से कुछ स्थूल तथा प्रकृति से स्त्रैण होता है। विद्या-लाभ उत्तम होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु के लगभग होता है। पत्नी गौरवर्णी, छोटी आँखों वाली, छोटे ललाट की; परन्तु आकर्षक एवं सम्पन्न होती है। वह अपने मातृकुल से विशेष लगाव रखती है तथा गर्वीली प्रकृति की होती है। सन्तान-पक्ष से सुख-दुःख कुछ नहीं मिलता। संतानों की संख्या भी कम ही होती है। विवाहोपरान्त कुछ समय तक दुःख भोगना पड़ता है. तदुपरान्त भाग्योदय होता है तथा कई मार्गों से धन का आगमन होता रहता है। १५ से १९ वर्ष तक की आयु में कष्ट अधिक रहते हैं। जीवन के 20, 22, 25, 30 तथा ४५ वें वर्ष [illegible] लाभदायक रहते हैं। यह [illegible] प्रकृति का होता है तथा दीर्घायु प्राप्त करता है।

(८९९) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी पुष्ट शरीर, सुन्दर स्वरूप वाला, बुद्धिमान् तथा काव्य-संगीत आदि ललित कलाओं में रुचि रखने वाला एवं स्वयं भी काव्य-निबन्धादि की रचना करने में कुशल होता है। यह सहानुभूति पूर्ण तथा उदार स्वभाव का होता है। इसे वातरोग के कारण शारीरिक कष्ट उठाना पड़ता है तथा धन का खर्च भी अधिक बना रहता है। आयु के २५वें वर्ष में यह अपना घर छोड़कर परदेश में जाता है और वहीं रहकर इसका भाग्योदय होता है। इसका विवाह काफी विलम्ब से होता है। पत्नी सामान्यतः सुन्दर, परन्तु कभी-कभी विपरीत आचरण करने वाली होती है। सन्तान के अभाव में वह दुःखी तथा चिड़चिड़े स्वभाव की बन जाती है। इस जातक की आमदनी के साधन उत्तम बने रहते हैं। आयु के २८, २९, ३५ तथा ४७वें वर्ष विशेष उन्नति कारक सिद्ध होते हैं। स्वास्थ्य उत्तम रहता है तथा आयु दीर्घ होती है।

(९००) - इस जन्मकुण्डली वाला जातक लम्बे कद का, सुन्दर तथा आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। यह अत्यन्त मनस्वी तथा पारिवारिक सम्पत्ति का लाभ पाने वाला होता है। यह ऐश्वर्य पूर्ण जीवन व्यतीत करता हुआ सर्वत्र मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। इसे श्वेत रंग की वस्तुओं तथा मादक द्रव्यों से लाभ होता है। लेखन, सम्पादन एवं कलात्मक कार्यों से भी इसे आर्थिक-लाभ होता है। विद्या यथेष्ट प्राप्त होती है। विवाह १९-२० वर्ष की आयु में हो जाता है तथा पत्नी सुन्दरी एवं मनोनुकूला मिलती है। अपनी पत्नी से पूर्ण सुख प्राप्त करते हुए भी यह पर-स्त्रियों में आसक्त रहता है। इसका भाग्योदय ४० वर्ष की आयु में होता है। माता-पिता का सुख कम मिल पाता है, परन्तु सन्तान-सुख एवं लोक-प्रसिद्धि का यथेष्ट लाभ होता है। वृद्धावस्था में आमदनी के स्रोतों में कुछ कमी आ जाती है, तथापि सम्पूर्ण जीवन सुखपूर्वक बीतता है। आयु ६० वर्ष से अधिक

भृ० सं० ७३३

कु० ए०

(६०१) - इस जन्मकुण्डली चक्र का स्वामी लम्बे क़द, गेहुँआ रंग, घने केश तथा सुन्दर स्वरूप वाला होता है। इसका रंग साँवला अथवा लोहित होना भी सम्भव है। यह धी, वी, पराक्रमी, दूसरों की सहायता करने वाला, परन्तु क्रोधी एवं प्रचण्ड स्वभाव का होता है। विद्यालाभ उत्तम रहता है। विवाह २२ से २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी तीक्ष्ण स्वभाव की मिलती है। यह पहली तथा दूसरी सन्तान से दुःखी तथा तीसरी सन्तान से सुख पाने वाला होता है। इसे धन की कमी नहीं रहती। यह स्वयं भवन का निर्माण करता है, परन्तु उसका भोग अधिक समय तक नहीं कर पाता। कला-सम्बन्धी तथा दूसरों द्वारा स्थापित कार्यों से इसे लाभ होता है। ऐसे लोग मुख्यतः नौकरी द्वारा लाभ अर्जित करते हैं तथा अपने उत्तरदायित्वों का सफलता पूर्वक निर्वाह करते हैं। इसके लिए जीवन के १७, २०, २५ तथा ३६वें वर्ष विशेष लाभदायक सिद्ध होते हैं। आयु मध्यम प्राप्त होती है।

(६०२) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य मध्यम क़द का, सुन्दर, कोमल स्वभाव वाला तथा कला-प्रेमी होता है। यह साहित्य में अभिरुचि रखता है। इसकी आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं। यह पैतृक-सम्पत्ति को पाने वाला, धन की रक्षा करने वाला तथा २० वर्ष की आयु से ही स्वयं धनोपार्जित करने वाला होता है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती मिलती है। विद्या तथा सन्तान का श्रेष्ठ सुख मिलता है। यह शत्रुओं का दमन करने वाला, बलिष्ठ, स्वस्थ, कार्य-कुशल तथा अत्यन्त कर्मठ होता है। इसका भाग्योदय स्वदेश में ही होता है तथा २५ वर्ष की आयु में ही यह सम्पत्तिशाली बन जाता है। इसे जीवनभर धन की कमी का अनुभव नहीं होता। पति-पत्नी दोनों ही विविध प्रकार के सुखों का उपभोग करते हुए लम्बी आयु तक जीवित बने रहते हैं। माता-पिता का विशेष सुख नहीं मिलता।

भू० सं० ४८३

कु० र०

(६०३) - इस जन्मलग्न में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, आकर्षक व्यक्तित्व-सम्पन्न, मध्यम कद वाला तथा दूसरों को शीघ्र प्रभावित करने में पटु होता है। यह उदार तथा क्षमाशील होने के साथ ही क्रोधी स्वभाव का भी होता है। यह पारिवारिक सम्पत्ति का लाभ पाने वाला, परिवार-हितैषी तथा सबका प्रिय होता है। विद्या-लाभ यथेष्ट होता है। इसका विवाह कुछ विघ्न-बाधाओं के साथ २४ वर्ष की आयु तक हो जाता है। इसकी पत्नी सुन्दरी, सद्गुणवती तथा कुछ भारी शरीर की होती है। यह बाल्यावस्था से ही कर्मनिष्ठ होता है तथा इसे सुख के सभी साधन उपलब्ध रहते हैं क्योंकि, भवन, वाहन आदि के साथ ही सम्पत्ति का पूर्ण सुख भी इसे मिलता है। यह शरीर से स्वस्थ रहने वाला, शत्रुओं का दमन करने वाला तथा परोपकार में लगा रहने वाला होता है, परन्तु इसे आकस्मिक रूप से चोटें लगती रहती हैं। यह पुत्रवान तथा ६२ से ६० वर्ष की आयु पाने वाला होता है।

(६०४)- इस जन्मांग चक्र का अधिपति बलिष्ठ शरीर का तथा सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। यह साहित्य एवं कला-प्रेमी, धनवान, सुयोग्य, विद्या-बुद्धि-सम्पन्न तथा अपने से ऊँचे व्यक्ति की सेवा में संलग्न रह कर उसे सुख देने वाला तथा स्वयं लाभ अर्जित करने वाला होता है। दूसरों के लिए धन खर्च करने तथा परोपकारी कार्यों में इसे सुख मिलता है। इसका विवाह २० वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा तीक्ष्ण स्वभाव की होती है तथापि वह पति की अनुगता बनी रहती है। इसे छोटे भाइयों का सुख तो मिलता है परन्तु बड़े भाई का सुख नहीं मिल पाता। सन्तान-पक्ष से यह दुःखी बना रहता है, परन्तु सबसे छोटी सन्तान इसे सुख देती है। यह शत्रु-पक्ष का दमन करने वाला तथा अपनी प्रतिष्ठा की अभि-वृद्धि करने वाला होता है। आयु लम्बी होती है। जीवन के २०, २२, २४, २८ तथा ३४वें वर्ष उन्नतिकारक रहते हैं।

(६०५) - इस जन्मकुण्डली वाला जातक सुखभागी, बाला, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, मधुरभाषी, बुद्धिमान तथा लम्बे कद का होता है। विद्यालाभ सामान्य होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है, परन्तु पत्नी हठी स्वभाव की एवं अवज्ञा करने वाली होती है। यह माता-पिता का सुख अधिक समय तक प्राप्त नहीं कर पाता। इसे छोटे भाई की ओर से प्रत्यक्षतः दुःख मिलता है, परन्तु अप्रत्यक्ष रूप में सहायता भी मिलती है। इसे पारिवारिक कारणों से काफी दुःख उठाने पड़ते हैं, परन्तु भाग्य का धनी होने के कारण यह सभी संकटों को पार करता चला जाता है। यह जीवनभर एक ही आर्थिक-स्थिति में बना रहता है। अतः इसके भाग्योदय का कोई वर्ष निश्चित नहीं किया जा सकता। जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव आते रहते हैं, परन्तु यह किसी के समक्ष झुकता नहीं है। यह ७० वर्ष से अधिक आयु प्राप्त करता है।

(६०६) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न प्राणी सुन्दर, स्वस्थ, गौरवर्ण, लम्बे कद का तथा आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। विद्या का लाभ उत्तम होता है। विवाह २२ से २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी अनुकूला तथा सुखी होती है। यह किशोरावस्था से ही किसी मनोनुकूल प्रतिष्ठान में सेवा कार्य आरम्भ कर देता है। यह अपने स्वामी अथवा छोटे भाई के लिए कष्ट भी उठाता है, परन्तु उस उपकार का कोई फल प्राप्त नहीं होता। पत्नी घर पर अधिकार रखती हुई सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन का समुचित संचालन करती है। संतान का लाभ ३५ अथवा ४० वर्ष की आयु में विलम्ब से होता है। इसे पैतृक-धन की प्राप्ति नहीं होती और यदि कोई पारिवारिक सम्पत्ति मिले भी तो वह छिन्न-भिन्न हो जाती है। यह ६५ से ७० वर्ष तक की आयु प्राप्त करता है तथा इसकी मृत्यु भी आकस्मिक रूप से ही होती है।

(९०७) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी ऊँचे कद तथा दृढ़ शरीर का एवं गेहुँए रंग का होता है। इसका जन्म धनी तथा प्रतिष्ठित परिवार में होता है, अतः इसे घर का पूर्ण सुख प्राप्त रहता है। माता-पिता का सुख पर्याप्त मिलता है। यह अपने पिता के कार्य-व्यवसाय को सँभालने वाला तथा उसकी उन्नति करने वाला होता है। यह विचार, कला-प्रेमी तथा यान्त्रिक (इंजीनियरी) के कार्यों में कुशल होता है। इसकी आमदनी का मुख्य स्रोत भी यान्त्रिक-कार्य ही होते हैं। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु के लगभग होता है। पत्नी मनोनुकूला मिलती है, जो इसकी सहयोगिनी के रूप में कार्य करती है। इसका पूर्ण भाग्योदय ३० से ४० वर्ष की आयु में होता है। तत्पश्चात् इसे अपने पुत्रों से सहायता मिलती रहती है। यह धार्मिक, परोपकारी, दानी तथा तीर्थ-यात्री भी होता है। इसको दीर्घायु प्राप्त होती है तथा सम्पूर्ण जीवन आनन्दमय बना रहता है।

(९०८) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, गौर वर्ण, अल्प केशवान्, तेजस्वी तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। यह आन्तरिक रूप से सरल तथा उदार प्रकृति का होते हुए भी बाहर से अत्यन्त कठोर प्रतीत होता है। पैतृक-कार्य से इसे लाभ नहीं होता, अतः यह अपना नवीन कार्य आरंभ करता है परन्तु निजी कार्य इसके लिए हानिकर सिद्ध होता है, फलतः यह नौकरी कर लेता है और उसी में अत्यधिक उन्नति करता हुआ उच्च पद पर पहुँचता तथा पर्याप्त धन अर्जित करता है। इसे अपना मकान स्वयं बनवाने में हानि होती है तथा बना बनाया खरीदने में लाभ होता है। विद्या का लाभ उत्तम रहता है। विवाह २० वर्ष की आयु के बाद होता है। स्त्री मनोनुकूला मिलती है तथा उसके नाम पर कोई व्यवसाय करना लाभप्रद सिद्ध होता है। भाग्योदय ३४ से ४५ वर्ष की आयु में होता है। २०, २४ तथा २८ वें वर्ष उत्कर्ष के रहते हैं। आयु ८० वर्ष होती है।

भू० सं० ७८३ कु० र०

(६०९) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न जातक भारी एवं स्वस्थ शरीर का, सुन्दर तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। यह प्रत्येक क्षेत्र में सफलताएं प्राप्त करता रहता है। यह काव्य एवं साहित्य का रचयिता, अध्यापक अथवा उपदेशकर्ता होता है। यह अपनी योग्यता एवं विद्वता द्वारा बड़े-से-बड़े लोगों को प्रभावित करने में सक्षम होता है। इसे विद्या का उत्तम लाभ होता है। विवाह २५ से २८ वर्ष की आयु में होता है तथा पत्नी मनोनुकूला एवं सुन्दरी मिलती है। ३० वर्ष की आयु से इसका भाग्योदय होता है तथा यश फैलने लगता है। उस समय इसके पास धन की कोई कमी नहीं रहती। इसके अधीन अनेक कर्मचारी कार्य करते हैं, जिनसे इसे आर्थिक लाभ होता रहता है। पारिवारिक स्थिति शान्त तथा सुदृढ़ बनी रहती है। सन्तानों का उत्तम सुख प्राप्त होता है। आयु मध्यम रहती है। वर्ष २८, ३५, ३८, ४१ तथा ५३ उत्तम सिद्ध होते हैं।

(६१०) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर स्वरूप, दृढ़ शरीर, बुद्धिमान, गुणवान तथा कला-साहित्य-संगीत आदि का प्रेमी और ज्ञाता होता है। इसे अपने प्रशंसकों एवं मित्रों द्वारा आर्थिक-लाभ प्राप्त होता रहता है। यह राज्य सेवी अथवा किसी अन्य प्रतिष्ठित संस्थान के सम्बन्ध से लाभ प्राप्त करता है। भाग्योदय २५ वर्ष की आयु से आरंभ हो जाता है। विवाह भी इसी आयु में होता है। विद्या तथा सन्तान का उत्तम लाभ मिलता है। सम्पूर्ण जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होता है। यह स्वाभिमानी, साहसी, माता-पिता का दीर्घकालीन सुख प्राप्त करने वाला तथा अपने ऐश्वर्य की निरन्तर वृद्धि करने वाला होता है। सन्तानों की संख्या कम ही रहती है। इसके जीवन के २२, २५, २७, ३२, ४१, ४५, ४८, ५२ तथा ५८ वें वर्ष उन्नतिकारक सिद्ध होते हैं। वर्ष ८, १५, ३३ तथा ४६ शारीरिक पीड़ाकारक होते हैं। (आयु मध्यम होती है)

(९११) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी क्रुद्ध, साँवले रंग तथा दृढ़ शरीर का एक विवेकहीन स्वभाव का होता है। यह क्रोध में आकर अनर्थकारी कार्य भी कर डालता है। इसका भाग्योदय मध्य-आयु में घर से किसी दूरवर्ती स्थान में होता है। यह सेवा-कार्य (नौकरी) द्वारा जीविकोपार्जन में सफल होता है। यह कृपण तथा आलसी प्रवृत्ति का होता है तथा भवन-निर्माण, भूमि एवं लकड़ी के व्यापार द्वारा लाभ प्राप्त करने वाला होता है। विद्या का यथेष्ट लाभ होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में अथवा कुछ और विलम्ब से होता है। पत्नी कफ-रोगिणी तथा कर्कश स्वभाव की होती है। सन्तानों की संख्या अधिक होते हुए भी उनसे मनोनुकूल सुख-सहयोग नहीं मिलता। २५, २८, ३० तथा ३५ वें वर्ष भाग्योन्नति कारक सिद्ध होते हैं, परन्तु यह जितनी उन्नति करना चाहता है, उतनी नहीं कर पाता। इसकी आयु ५५ से ६५ वर्ष के मध्य होती है।

(९१२) - इस जन्मकुण्डली वाला प्राणी सामान्य कद-काठी का, शुद्ध-बुद्धि, कृपण, सन्देहास्पद-चरित्र वाला तथा भीरु-स्वभाव का होता है। यह भ्रमण में रुचि रखने वाला, व्यापार-काम करने अथवा नौकरी करने वाला, वाक्पटु, विद्वान, विद्या-बुद्धि से पूर्ण, धार्मिक कार्यों में रुचि रखने वाला, धनी तथा येन-केन प्रकारेण सम्पत्ति की अभिवृद्धि करने वाला होता है। यह धन-लाभ हेतु झूठ बोलने में भी नहीं हिचकिचाता। यह मद्यपान तथा पर-स्त्रियों में आसक्ति रखने वाला, कटुवाक्यों को भी मधुरता के आवरण में लपेट कर औरों को अपमानित करने वाला, राजकीय सेवा अथवा किसी व्यवसाय द्वारा यथेष्ट धनोपार्जन करने वाला होता है। विवाह २४ से २६ वर्ष की आयु में होता है। दो विवाह के योग होते हैं। दूसरी पत्नी से सुख मिलता है। ३५ वर्ष की आयु में भाग्योदय होता है। ४०, ४२, ४५, ५०, ५५ तथा ५७ वें वर्ष उत्कर्ष दायक होते हैं।

(६२३) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, तेजस्वी, विद्या-बुद्धि सम्पन्न एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी होता है। यह अत्यन्त साहसी, अनेक कार्यों को एक साथ सफलतापूर्वक करने वाला। स्व-कार्य-साधन हेतु धर्म तथा नीति की परवाह न करने वाला तथा अपने लाभ के लिए निकट-वर्तियों से भी सम्बन्ध खराब कर लेने वाला होता है। परन्तु यह जिसे अपना मान ले, उसके लिए सर्वस्व न्यौछावर करने को भी प्रस्तुत रहता है। यह अपने भाग्य का निर्माण स्वयं करता है तथा एक क्षेत्र में प्रसिद्धि प्राप्त कर लेने के बाद दूसरे क्षेत्र में स्वतः ही आगे बढ़ जाता है। यह उच्च दायित्व पूर्ण पदों पर कार्य करने में सफल होता है। इसे नौका विहार की इच्छा रखने वाला संगीत प्रेमी होता है। विद्या तथा सन्तान का पर्याप्त सुख मिलता है। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती मिलती है। विवाह २२ वर्ष की आयु में तथा भाग्योदय २५ वर्ष में होता है। अधिकतम आयु ६५ वर्ष की होती है।

(६२४) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य लम्बे शरीर का, अत्यन्त बलवान, उदार-चित्त, दानी परोपकारी तथा बाल्यावस्था से ही धन-सम्पत्ति से सम्पन्न होता है। इसे माता-पिता का उत्तम सुख मिलता है। पैतृक-व्यवसाय द्वारा इसे लाभ होता है, तथापि यह नवीन कार्य भी आरम्भ करता है अथवा किसी सरकारी पद पर नियुक्त होकर दूर देश में निवास करता हुआ धनोपार्जन करता है। विद्या का विशेष लाभ होता है। विवाह 23 वर्ष की आयु में होता है। सन्तानें कई होती हैं तथा अनेक बार गर्भपात भी होते हैं। अन्त में उपाय करने पर पुत्र का लाभ होता है। इसे शत्रु तथा रोग का भय कम होता है, तथापि वृद्धावस्था में वात रोग होना निश्चित है। यह ईश्वर के प्रति आस्थावान होता है तथा धार्मिक कार्यों में धन खर्च करता है। भाग्योदय २५ वर्ष की आयु में होता है तथा लगभग ६० वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

भृ० सं० ०८३

कु० १०

(९९५)- इस जन्माङ्ग चक्र में उत्पन्न मनुष्य साँवले रंग का, उन्नत क़द वाला, सुन्दर तथा सम्मोहक व्यक्तित्व वाला होता है। यह अपने पुरुषार्थ के बल पर उन्नति करता है। इसे पैतृक-व्यवसाय की उपलब्धि होती है तथा यह अनेक प्रकार के दुस्साहसिक कार्यों को करता हुआ बहुत धन कमाता है। राजकीय-सेवा में संलग्न रहकर भी उच्च पद प्राप्त कर सकता है। इसको विद्या का यथेष्ट लाभ होता है तथा विवाह लगभग २० वर्ष की आयु में ही हो जाता है। इसके एकाधिक पुत्र होते हैं और उनसे सुख भी मिलता है। पत्नी सुन्दरी, सुडौल, अत्यन्त आकर्षक व्यक्तित्व वाली व अधिकार प्रदर्शित करने वाली होती है, वह पति के ऊपर पूर्ण प्रभाव रखती है तथापि यह जातक गुप्त रूप से अन्य स्त्री से भी सम्बन्ध रखता है। भाग्योदय २५ से २८ वर्ष की आयु में होता है। जीवन के 30, 35 तथा ३८वें वर्ष महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। यह लगभग ७० वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(९९६)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति लम्बे बालों वाला, संकुचित ललाट वाला, छोटी आँखों वाला तथा मध्यम क़द का होता है। यह स्त्रैणभावापन्न, बन्धु-बान्धवों द्वारा पीड़ित तथा विद्रोही स्वभाव का होता है। विद्या का लाभ साधारण लेता है। विवाह २२ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी तीव्र-स्वभाव की तथा पति के ऊपर नियन्त्रण रखने वाली होती है। यह अति मतलबी तथा सबसे अलग प्रकृति का होता है। यह पैतृक-धन की रक्षा करने में तत्पर रहता और उसकी अभिवृद्धि के लिए प्रयत्नशील बना रहता है। यह चाँदी, श्वेत रंग की वस्तुओं, भोग-विलास की सामग्री तथा आमोद-प्रमोद की चीज़ों के व्यवसाय से लाभ उठाता है। यह स्त्री-सेवक, धन-संग्रही, पुत्र-पुत्रीवान, सुखी, स्वस्थ तथा दीर्घायु होता है। इसका भाग्योदय बाल्यावस्था से ही हो जाता है तथा कभी आर्थिक रूप से चिन्तित नहीं होता।

(९१७)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, गौरवर्ण तथा मध्यम कद वाला होता है। यह विद्वान्, गुणवान्, धनी, ऐश्वर्य सम्पन्न, प्रतिभा एवं प्रभावशाली तथा समाज में सम्मानित भी होता है। यह राजकीय सेवा में उच्च पद प्राप्त करता है तथा इसके अधीन भी अनेक सेवक होते हैं। यह बाहरी लोगों को सुखदायक तथा अपनों के प्रति उदासीन रहता है। यह अवसरानुकूल कार्य करने में पटु होता है तथा भविष्य के सम्बन्ध में इसके अनुमान सही बैठते हैं। विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में हो जाता है, परन्तु पत्नी की आयु अधिक नहीं होती। वह चतुर, मधुरभाषिणी तथा आकर्षक रहने वाली होती है, तथापि पति को प्रसन्नता दायक कार्यों में संलग्न बनी रहती है। इसका भाग्योदय २४ वर्ष की आयु में होता है तथा जीवन पर्यन्त - धन पूर्ण बना रहता है। आयु ६० वर्ष से अधिक होती है तथा कभी आकस्मिक चोट लगना सम्भव है।

(९१८) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, कीर्तिवान, सुख-ऐश्वर्य सम्पन्न, विद्वान्, गुणवान्, शत्रुनाशक, मृदुभाषी, तथापि झूठ बोलने में भी न हिचकने वाला, तथा युद्ध में विजय पाने वाला होता है। यह बन्धु-बान्धवों से सम्पन्न, किसी पर-स्त्री के प्रेम सम्बन्ध से धन-लाभ करने वाला तथा सुन्दरी पत्नी वाला होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु तक हो जाता है। ३० वर्ष की आयु से भाग्योदय होता है। ३५, ४०, ४२ तथा ४६ वर्ष की आयु में विशेष उन्नति करता है। बाहरी लोगों की सहायता से इसके कार्य-व्यवसाय की विशेष वृद्धि होती है। यह विद्या-बुद्धि के प्रयोग से निरन्तर लाभ उठाता रहता है। पुत्रों तथा पत्नी से सुखी रहता है। कभी आकस्मिक चोट भी लग सकती है। यह ६० से ७० वर्ष तक की आयु प्राप्त करता है तथा इसकी मृत्यु भी आकस्मिक रूप से ही होती है।

(९१९)- इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य सुन्दर, श्याम वर्ण, पुष्ट शरीर, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, गुणवान तथा कला-कौशल एवं यान्त्रिक कार्यों का जानकार होता है। यह अपनी योग्यता एवं परिश्रम के बल पर प्रचुर धन का उपार्जन करने वाला तथा कौटुम्बिक-धन से भी धनी होकर सुखी जीवन बिताने वाला तथा कुटुम्ब का पालन-पोषण करने वाला होता है। यह श्रेष्ठ विद्वान होता है। विवाह २५-२६ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुशिक्षिता एवं सुन्दर होती है तथापि इसे पत्नी-सुख यथेष्ट मात्रा में नहीं मिलता। पुत्रों से इसे सामान्य सुख मिलता है। इसकी आमदनी के अनेक साधन होते हैं, जिनके कारण इसे कभी भी धन की कमी का अनुभव नहीं होता। किसी राजकीय प्रतिष्ठान की सेवा अथवा ठेकेदारी से भी इसे बहुत लाभ होता है। इसकी आयु ७० वर्ष से अधिक नहीं होती। इसका सम्पूर्ण जीवन सुखपूर्वक बीतता है।

(९२०)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, गौरवर्ण, मध्यम कद तथा शरीर वाला एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह काव्य-संगीत में अभिरुचि रखने वाला, शिल्पज्ञ अथवा लेखक होता है। यान्त्रिकी कार्यों में भी इसकी विशेष रुचि रहती है। इसे विद्या का उत्तम लाभ होता है। विवाह २३ वर्ष की आयु में हो जाता है तदुपरान्त भाग्योदय होता है। यह राजनीतिक पार्टियों में सिपाही का कार्य करता है तथा किसी सार्वजनिक संगठन के प्रधान पद पर प्रतिष्ठित होता है। लगभग ४० वर्ष की आयु में इसे गुप्त अथवा आकस्मिक-धन की प्राप्ति होती है। इसका जीवन मान-प्रद होता है तथा उच्चाधिकारी इसे सम्मान भी देते हैं, तथापि गुप्त-शत्रु इसे नीचा दिखाने का प्रयत्न करते रहते हैं, जिसमें उन्हें सफलता नहीं मिल पाती। इसे सन्तान का प्रायः अभाव रहता है। यह दीर्घायु को प्राप्त करता तथा सम्पूर्ण जीवन सुखपूर्वक बिताता है।

भृ० सं० ३४६

(६२१)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति उन्नत मस्तक, लम्बे शरीर वाला, गौर वर्ण तथा आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। यह कला और साहित्य का प्रेमी, गुणवान, विद्वान तथा यशस्वी होता है। यह किसी संगठन का प्रमुख पद प्राप्त करता है तथा इसे देश के अतिरिक्त विदेशों से भी लाभ प्राप्त होता है। यह व्यक्ति कभी सन्तुष्ट नहीं होता और सदैव कुछ-न-कुछ करता ही रहता है। अपनी उदार शील प्रकृति के कारण इसे कभी धन की कमी नहीं होती। यह अधिक बोलने वाला, अपने तर्कों के समक्ष दूसरों से हार न मानने वाला, परिवार का पोषण-कर्ता, उदार, तथापि कृपण स्वभाव का होता है। इसका विवाह 20-22 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी से पूर्ण सुख मिलता है। भाग्योदय विवाह के बाद होता है। पुत्रों से सुख मिलता है। जीवन के 32, 40, 46 तथा 52 वें वर्ष उन्नति कारक रहते हैं। आयु दीर्घ होती है।

(६२२)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर स्वरूपवान, सामान्यतः आकर्षक, उच्चविचारक एवं मनस्वी होता है। यह महत्वाकांक्षी तथा अन्य लोगों का हितैषी होता है, तथापि अपने हितों को कभी हानि नहीं पहुँचने देता। यह ऐसे तत्वों का भी पोषण करता है, जो इससे निम्न स्तर के होते हैं। विद्या का यथेष्ट लाभ होता है। विवाह 22 से 24 वर्ष की आयु में हो जाता है। भाग्योदय 25 वर्ष की आयु के बाद होता है। आयु के 27, 32 तथा 40 वर्ष विशेष उन्नति कारक रहते हैं। पत्नी मनोऽनुकूला तथा सुन्दरी होती है तथापि यह अन्य-स्त्रियों की ओर आकर्षित रहता है तथा भोग-विलास में विशेष रुचि रखता है। इसे एक पुत्र से सुख मिलता है। यह राज्य कृपा प्राप्त तथा भाग्य का धनी होता है। इसे अपने बन्धु-बान्धवों से कष्ट प्राप्त होता है, वे इससे ईर्ष्या करते हैं। आयु 60 वर्ष के लगभग होती है।

कु० २०

(९२३)- यह जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, गुणवान, बुद्धिमान तथा सबका प्रिय होता है। यह अनेक प्रकार से अपने प्रभाव की वृद्धि करने में चतुर, तथा उच्च महत्वाकांक्षाओं वाला होता है। इसे पैतृक-सम्पत्ति कम मिलती है, तथापि यह स्वयं अत्यधिक सम्पत्ति का उपार्जन करता है। यह राजकीय कार्यों से जीविकोपार्जन करता है। विद्या का लाभ यथेष्ट होता है। विवाह २२-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा शील स्वभाव की होती है। वह जीविका या धन का लाभ करनेवाली तथा परिवारीजनों का आदर-सम्मान करने वाली होती है। पत्नी के नाम से व्यवसाय करने पर इसे विशेष लाभ होता है। इसका भाग्योदय २५ वर्ष की आयु के बाद होता है। आकस्मिक धन-लाभ के अवसर भी जीवन में आते रहते हैं, यह प्रथम पुत्र के सुख से वंचित रहता है तथा मध्यमायु प्राप्त करता है।

(९२४)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, सुशील, विनयी, धर्मात्मा, स्वाभिमानी, साहसी, गुणी तथा धनी होता है। विद्या का यथेष्ट लाभ होता है। विवाह २० वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी मनस्विनी, सुन्दरी तथा प्रभावशालिनी होती है। इसके ज्येष्ठ पुत्र को दुःख प्राप्त होता है, जिसके कारण यह जातक दुःखी बना रहता है। पुत्री विदुषी, सुयोग्य तथा कलावन्ता होती है। उससे सुख की उपलब्धि होती है। इसे जल सम्बन्धी वस्तुओं अथवा कार्यों से विशेष लाभ होता है। भाग्योदय ३५ वर्ष की आयु में होता है तथा सम्पूर्ण जीवन धनी बना रहता है। कभी-कभी कफ एवं वायु-विकार कष्ट पहुँचाते हैं तथापि कुल मिलाकर शरीर निरोग बना रहता है। पति-पत्नी-दोनों ही स्वस्थ रहते हुए दीर्घजीवन प्राप्त करते हैं। जीवन के २८, ३१, ३६, ४२, ४६, ५२, ५६ तथा ६० वें वर्ष उन्नति कारक सिद्ध होते हैं।

मु० सं० ३४५ | कु० र०

(९२५) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी गौरवर्ण, सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्व वाला तथा सुखी जीवन बिताने वाला होता है। विद्या का यथेष्ट लाभ होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु हो जाता है, परन्तु विवाह से पूर्व बार-बार रुकावटें भी आती हैं। पत्नी सुन्दर तथा उदार होते हुए भी मूर्खों जैसी बातें करती है तथा समय-असमय का ध्यान न रख कर वातावरण को बिगाड़ती रहती है। इसका भाग्योदय ३५ से ४० वर्ष की आयु में होता है। यह ऊपर से जितना सम्पन्न दिखाई देता है, यथार्थ में उतना धनी होता नहीं है, फिर भी इसकी आर्थिक-स्थिति मध्यम तथा सन्तोषजनक बनी रहती है। खर्च भली भाँति चलता रहता है, यद्यपि कुछ बचत नहीं हो पाती। २५ से ३० वर्ष की आयु में आर्थिक-हानि भी उठानी पड़ती है। इसे अपनी प्रथम सन्तान का दुःख भी उठाना पड़ता है। अन्य सन्तानों से सुख मिलता है। आयु ७० वर्ष से अधिक की प्राप्त होती है।

(९२६) - इस जन्मकुण्डली का अधिकारी ऊँचे कद तथा सुन्दर शरीर वाला, विद्वान्, गुणवान् तथा अत्यन्त अध्ययनप्रेमी होता है। यह सरकारी नौकरी से जीविकोपार्जन करता है। यह उदार होने के साथ ही क्रोधी तथा जुआ खेलने का शौकीन होता है। इसे पर-स्त्रियों में अधिक रुचि रहती है, जिसके कारण अपयश का भागी बनता तथा धन-हानि उठाता है। इसका विवाह छोटी आयु में ही हो जाता है तथा सन्तानें भी शीघ्र होती हैं। इसका पुत्र सामान्य स्थिति का है तथा पुत्री माता के पक्ष में बोलने वाली एवं पिता के कष्ट को बढ़ाने वाली होती है। इसकी पत्नी महत्वाकांक्षिणी, परन्तु अप्रियवादिनी एवं मूर्ख होती है। इसका भाग्योदय भी सामान्य ही होता है और आर्थिक-कठिनाइयाँ प्रायः आती रहती हैं। जीवन के २७, २८, ३५, ३८, ४२ तथा ४५ वें वर्ष उत्कर्षकारक सिद्ध होते हैं। आयु ६५ से ८० वर्ष के बीच होती है।

(ई२७) — इस जन्म कुण्डली वाला जातक सुन्दर, स्वस्थ, गौरवर्ण, ऊँचे कद का, सात्विक तथा धनवान् होता है। यह यान्त्रिकी का कुशल ज्ञाता होने के बावजूद भी उससे अधिक लाभ नहीं उठा पाता। यह किसी सरकारी पद पर प्रतिष्ठित होकर जीविकोपार्जन करता है। इसका भाग्य उत्तम होते हुए भी प्रबल नहीं हो पाता, क्योंकि यह आकस्मिक रूप से ऐसे कार्य कर बैठता है, जो अच्छे नहीं माने जाते। धन का अधिक लाभ होते हुए भी यह सामान्य स्तर का जीवन व्यतीत करता है, विद्या का उत्तम लाभ होता है। विवाह २७-२८ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री से इसे सुख नहीं मिलता। पहली पुत्र-संतान मृत्यु को प्राप्त हो जाती है। इसका भाग्योदय ३५ से ४५ वर्ष की अवधि में होता है। यह कभी ईश्वर पर अगाध श्रद्धा एवं विश्वास रखता और कभी उसकी निन्दा करने लगता है। इसकी पूर्णायु ६० वर्ष के लगभग होती है।

(ई२८) — इस जन्मकुण्डली वाला जातक सुन्दर स्वरूपवान, लम्बे शरीर वाला, बुद्धिमान, पंडित तथा क्रोधी होता है। यह नीच लोगों से सम्पर्क रखने वाला, जुआ खेलने में रुचिवान, नैतिक तथा अनैतिक — हर प्रकार के कार्यों से धन-प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील तथा अनेक स्त्रियों से संबंध रखने वाला होता है। इसका विवाह बड़ी आयु में, बड़ी कठिनाई से होता है अथवा फिर होता ही नहीं है। विवाह हो जाने पर यह स्त्री की ओर से दुःखी रहता है। विवाह हो जाने पर भी पर-स्त्रियों से संबंध रखता है। इसे परिवारीजनों से उपेक्षा तथा बाहरी लोगों से आत्मीयता प्राप्त होती है, अतः यह प्रायः परदेश में ही निवास करता है। इसकी आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है। सन्तान-सुख भी अच्छा नहीं रहता। ३५ वर्ष की आयु से इसे जीवन में किसी-न-किसी संकट का सामना करना पड़ता है। इसकी मृत्यु लगभग ६० वर्ष की आयु में पर निवास होती है।

(६२९) - इस जन्मकुण्डली वाला जातक सुन्दर, स्वस्थ, गौरवर्ण, चंचल स्वभाव का, मनस्वी तथा महत्वाकांक्षी होता है। यह वाक्पटु, लेखन में रुचि रखने वाला तथा स्व-विवेक द्वारा धनोपार्जन करने वाला होता है। यह राजकीय कार्यों के द्वारा धनोपार्जन करता है एवं सुखी तथा ऐश्वर्यशाली जीवन बिताता है। यह क्रोध-रहित, अपने आचरण से सबको सन्तुष्ट रखने वाला, राज्य में उच्चपद पाने वाला तथा अन्य सूत्रों तथा उपायों से भी सम्पत्ति की अभिवृद्धि करने वाला होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में हो जाता है तथा दो विवाह का योग भी बनता है। पत्नी मनोनुकूला मिलती है। सन्तानों से अल्प सुख मिलता है। यह देश तथा परदेश में महत्वपूर्ण कार्यों का सम्पादन करता है। स्त्री-पक्ष तथा सन्तान पक्ष की ओर से प्रायः कष्ट प्राप्त होता रहता है। सन्तानें कठिनाई से ही जीवित रह पाती हैं। यह लगभग ६५ वर्ष के लगभग जीवित रहता है।

(६३०) - इस जन्मकुण्डली वाला जातक लम्बे शरीर, चमकीली आँखों वाला, स्वस्थ तथा आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। यह सुशील, धार्मिक, ज्ञानी, दुःख में भी सुख का अनुभव करने वाला, राजकीय पद पाने वाला एवं परदेशवासी होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है, परन्तु पत्नी रुग्णा एवं अल्पायु मिलती है अतः इसे दाम्पत्य-सुख प्राप्त नहीं हो पाता। यह पर-स्त्रियों से भी सम्बन्ध रखता है। सन्तान-सुख भी अल्प ही रहता है। इसकी आर्थिक-स्थिति उत्तम रहती है। इसे सुन्दर तथा रमणीय स्थानों में रहने के अवसर प्राप्त होते रहते हैं। ३०, ३५, ३७, ४२ तथा ७५ वर्ष की आयु में प्रचुर धन की उपलब्धि होती है। इसका भाग्योदय ३२ वर्ष की आयु के बाद होता है। शरीर सामान्यतः नीरोग बना रहता है तथा आयु ७० से ८० वर्ष के मध्य होती है।

(६३१) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर स्वरूपवान, उदार-हृदय, श्रेष्ठ स्वभाव का, परिश्रमी अपने माता-पिता का भक्त तथा उनसे प्रचुर स्नेह पाने वाला, परिवार का पालन-पोषण करने वाला तथा अत्यन्त प्रतापी होता है। विद्या का उत्तम लाभ होता है। इसका विवाह किसी प्रतिष्ठित-कुल में बड़ी धूम धाम के साथ होता है। पत्नी कुछ स्थूल शरीर वाली, परन्तु परम सुन्दरी, चतुर, बुद्धिमती एवं गुणवती होती है। इसे पुत्र तथा पुत्रियों का भी पूरा सुख प्राप्त होता है। सन्तानों को छोटी-मोटी बीमारियां होती रहती हैं, परन्तु कोई विशेष हानि नहीं होती। यह किसी राजकीय पद पर प्रतिष्ठित होकर विपुल धन तथा यश अर्जित करता है। इसे बिना परिश्रम के ही यथेष्ट धन-लाभ होता रहता है तथा जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होता है। ३५ वर्ष की आयु के बाद इसका विशेष भाग्योदय होता है। पूर्णायु ७० वर्ष के लगभग होती है।

(६३२) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, प्रियदर्शी, कुछ स्थूल काय तथा लम्बे कद का होता है। यह अपनी सम्पत्ति का अधिकांश अपने परिवारीजनों पर खर्च करता है, तो भी अपने चित्त में सुखी नहीं रह पाता। यह अकारण ही अपयश प्राप्त करता है, तथापि परम धार्मिक एवं ईश्वर भक्त होता है। यह गुणवान तथा विद्वान होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में बड़ी धूम धाम के साथ होता है तथा भाग्योदय भी विवाह के बाद होने लगता है। इसकी पत्नी मृदु-भाषिणी, सुन्दर, स्वस्थ तथा आज्ञापालिनी होती है। इसके जीवन के २५, २७, ३१ तथा ४० वें वर्ष महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। सन्तानों से समुचित सुख प्राप्त होता है। यह जातक कभी-कभी अकारणीय कार्यों को भी कर बैठता है। इसका चित्त प्रायः अशान्त बना रहता है। इसकी पूर्णायु ६५ वर्ष से कुछ अधिक ही होती है।

(९३३) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सबल एवं सुदृढ़ शरीर का, कोमल अन्तःकरण वाला तथा मधुर-व्यवहार करनेवाला होता है। इसे विद्या का यथेष्ट लाभ प्राप्त होता है। विवाह २०-२२ वर्ष की आयु तक हो जाता है तथा सन्तान का लाभ भी शीघ्र हो जाता है। पुत्र जन्म के बाद इसका भाग्योदय होता है तथा सुख की प्राप्ति होती है। इसके पूर्व की स्थितियाँ विषम रहती हैं। यह बालकों को प्यार करने वाला तथा उन्हें भय दायक रहता है, तथापि यह स्त्री सम्बन्धी कार्यों में संलग्न, स्थूल शरीर वाला तथा सुख-हीन होता है। इसके स्वयं के प्रयत्न असफल रहते हैं, अतः यह दूसरों के सहयोग से उन्नति तथा अपने भाग्य का निर्माण करता है। पुत्र के बड़े हो जाने पर उसके कारण यश तथा धन का लाभ प्राप्त करता है। पत्नी से भी सुख प्राप्त होता है। यह लगभग ६२ वर्ष की आयु तक सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करता है।

(९३४) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य सुन्दर, स्वाभिमानी, विद्वान, कलाओं का ज्ञाता तथा अन्य अनेक गुणों से युक्त होता है। यह धीर, गम्भीर, जननायक, चिन्तनशील तथा हर प्रकार से सुखी रहने वाला होता है। विद्या का लाभ उत्तम होता है। किसी समय अनजाने में हिंसा हो जाने का पश्चात्ताप इसे जीवन भर बना रहता है। विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है, परन्तु पत्नी का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता, अतः उसके कारण इसे भी दुःखी रहना पड़ता है। पुत्र-प्राप्ति का योग भी विलम्ब से बनता है। माता-पिता के जीवन काल में ही इसका भाग्योदय हो जाता है तथा पैतृक-सम्पत्ति द्वारा इसे अपने कार्यों में बहुत सहायता मिलती है। यह विवि-ध प्रकार के कार्य करता है, जिनमें कुछ गैर कानूनी भी हो सकते हैं, तथापि इसे समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। जीवन के १५, १८, २०, २५ तथा ३५ वें वर्ष लाभप्रद रहते हैं। इसकी मृत्यु किसी स्त्री के कारण होती है।

सं० भू० ०६२३

कु० २०

(ई३५) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी धी, वी, पराक्रमी, सुन्दर, बलवान्, क्रोधी तथा दूसरों को दुःख देने वाला भी होता है। पैतृक-स्थान में सब प्रकार के सुख उपलब्ध रहते हुए भी इसे किसी दूसरी जगह में जाकर निवास करना पड़ता है। २५-२६ वर्ष की आयु में यह अपना घर छोड़ कर परदेश में चला जाता है। वहीं इसका भाग्योदय भी होता है। इसके कारण माता को कष्ट प्राप्त होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। स्त्री रुग्ण बनी रहती है. उसकी बीमारी तथा पारिवारिक-विद्वेष के कारण इसका चित्त अशान्त बना रहता है। काफी समय तक परदेश में रहने के बाद यह अपने घर लौट आता है और वहीं उन्नति भी करता है। स्त्री का सुख अधिक दिनों तक नहीं रहता। यह विद्या-बुद्धि का धनी तथा प्रौढ़ावस्था के बाद उन्नति प्राप्त करने वाला होता है। जीवन के २८ तथा ३७वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। आयु ६५ वर्ष की होती है।

(ई३६) - इस जन्मकुण्डली वाला जातक सुन्दर, स्वस्थ तथा दृढ़ शरीर वाला होता है। इसे क्रोध शीघ्र आ जाता है। जुआ खेलने में भी इसकी रुचि होती है। इसे जुए में हमेशा लाभ ही होता है. हानि नहीं उठानी पड़ती। यह भोग-विलास में लिप्त होकर अपने धन को कुकर्मों में खर्च करता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुशीला, नीतिज्ञ, संचयी तथा पति को सुख देने वाली होती है। वह घर को सुखी रखती है तथा अनेक कार्यों की सफलता में सहायक होती है। यह विवाहोपरान्त कोई नवीन कार्य करता है और उसे पाँच-सात वर्ष बन्द करके किसी अन्य स्थान पर ले जाना पड़ता है। ३० से ३५ वर्ष की आयु तक जीवन संघर्षपूर्ण बना रहता है. तदुपरान्त सुख प्राप्त होने लगता है तथा भाग्य की अभिवृद्धि होती है। जीवन के ३७, ४२, ४५ तथा ५०वें वर्ष महत्त्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। आयु ६५ वर्ष से अधिक होती है।

(९३७) - इस जन्म कुण्डली वाला जातक मध्यम कद तथा इकहरे शरीर का, कुछ साँवले रंग तथा घुँघराले केशों वाला, धर्म-कर्म को न मानने वाला, आचारहीन तथा अपनी कामनाओं के अनुसार ही प्रत्येक कार्य के औचित्य को निर्धारित करने वाला होता है। यह राज्य द्वारा आजीविका प्राप्त करता है तथा उचित-अनुचित का विचार न करके धन-संचय हेतु प्रयत्नशील बना रहता है। इसके कारण माता-पिता को कष्ट प्राप्त होता है, तथापि माता-पिता इसके प्रति मोहग्रस्त ही बने रहते हैं। इसका विवाह २६-२७ वर्ष की आयु तक होता है तथा प्रथम पुत्र के सुख से वंचित रहता है। इसकी पत्नी रुग्णा बनी रहती है, जिसके कारण इसे भी कष्ट उठाना पड़ता है। इसका भाग्योदय २० वर्ष की आयु से प्रारंभ हो जाता है। स्त्री सुन्दरी, श्यामवर्णा, आकर्षक परन्तु क्षुद्रबुद्धि होती है। आर्थिक-स्थिति सामान्य रहती है। आयु दीर्घ प्राप्त होती है।

(९३८) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी कुछ दबे हुए रंग, मध्यम कद वाला, सुन्दर, सुरुचिपूर्ण तथा श्रेष्ठ वस्त्र धारण करने वाला होता है। यह अपने माता-पिता को सुख नहीं देता, परन्तु इसे स्वयं माता-पिता से सुख-सहयोग प्राप्त होता रहता है। वे इसकी धन आदि से सहायता करते रहते हैं। विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है। उससे सुख-सहयोग मिलता है। भाग्योदय २६ वर्ष की आयु से होता है तथा ४० वर्ष की आयु तक निरन्तर उत्कर्ष करता रहता है। इस अवधि में यह अत्यधिक सुख प्राप्त करता है तथा वृद्धावस्था तक के लिए सम्पत्ति संचित करके रख लेता है। कभी-कभी यह निन्दनीय जैसे काम भी करता है, तथापि समाज में मान-प्रतिष्ठा बनी रहती है। यह आजीवन सुखी बना रहता है तथा लगभग ७० वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(९३९) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी लम्बे कद वाला, स्वस्थ, सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। यह प्रत्येक कार्य अपने ही सुख के लिए करता है। इसके धनोपार्जन के अनेक साधन होते हैं। साहस पूर्ण कार्यों द्वारा यह अधिक सम्पत्ति अर्जित करता है। इसका विवाह लगभग 20-22 वर्ष की आयु में इसके निजी प्रयत्न तथा स्वेच्छा से होता है। पत्नी सुन्दरी, मनस्विनी, मृदुभाषिणी, आकर्षक व्यक्तित्व वाली तथा ऊँच-नीच का विचार रखने वाली होती है। इस जातक का भाग्योदय भी अपनी पत्नी के सहयोग से अथवा उसके नाम पर कार्य करने से होता है। पराई-स्त्री से भी इसे विशेष लाभ होना संभव है। सन्तान से सुख मिलता है। भाग्योदय २६ वर्ष की आयु से होता है। ३२, ४० तथा ४३ वें वर्ष में नाटकीय मोड़ आते हैं। यों, इसका सम्पूर्ण जीवन प्रायः सुख से बीतता है। आयु ७० वर्ष से अधिक प्राप्त करता है।

(९४०) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, उद्यमी, शीघ्र कार्य करने वाला तथा अपने पराक्रम से धनोपार्जन करने वाला होता है। यह जुआ खेलने का शौकीन होता है तथा उसमें हारने पर भी संपन्न बना रहता है। यह सट्टे आदि से भी धन कमाता है। झूठ बोलने में इसे कोई हिचक नहीं होती। यह पराये धन का लोभी होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। सामान्यतः इसकी सन्तानें मृत्यु को प्राप्त होती हैं। प्रयत्न करने पर एक-दो सन्तानें जीवित बच पाती हैं। इसका भाग्योदय २५ वर्ष की आयु के बाद होता है। तदुपरान्त कोई कठिनाई नहीं रहती। यह यथेष्ट धन कमाता है तथा सुवक्ता होने के कारण अपनी वाणी से लोगों को प्रभावित कर आंशिक यश-कीर्ति भी अर्जित करता है। इसकी अधिकतम आयु ७० वर्ष होती है।

सं० भृ० ६४३

कु० २०

(६४१)— इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य सुन्दर, ऊँचे कद का, मधुर-मुस्कान युक्त चेहरे वाला तथा आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होता है। यह आस्तिक, मितव्ययी, गुणवान, विद्वान तथा पराक्रमी होता है। इसे क्रोध जल्दी आ जाता है और जल्दी ही वह शान्त भी हो जाता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु तक हो जाता है, तदुपरान्त ही इसका भाग्योदय होता है। इसकी पत्नी पतिव्रता तथा आज्ञाकारिणी होती है। 30 वर्ष की आयु से इसकी विशेष उन्नति होती है। विवाहोपरान्त यह परदेश-गमन करता है और वहीं प्रचुर यश तथा धन अर्जित करता है। इसकी समस्त मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं। सन्तान-सुख उत्तम रहता है। शासन-सम्पन्नता, अधिकार-सम्पन्नता, प्रभुता, मान-सम्मान तथा ऐश्वर्य आदि की खूब उपलब्धि होती है। यह लम्बी-लम्बी यात्राएँ भी करता है। इसकी आयु ६४ वर्ष से अधिक होती है।

(६४२)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी उन्नत ललाट तथा लम्बे कद वाला, पराक्रमी, गुणवान, विद्वान तथा अपने सुन्दर नेत्रों द्वारा दूसरों का मन जीत लेने वाला होता है। यह स्वभाव से कृपण तथा धन-संचयी प्रवृत्ति का होता है, परन्तु अपने सुखोपभोग सम्बन्धी कार्यों में धन खर्च करने में कंजूसी नहीं करता। इसका विवाह 20-22 वर्ष की आयु में हो जाता है, प्रारम्भ में पत्नी से खूब पटती है तथा सुख प्राप्त होता है, परन्तु कुछ समय बाद उससे मन-मुटाव हो जाने के कारण दुःखी रहता है। यह अभिनय-कला में रुचि रखने वाला तथा अपने लाभ के हेतु अनेक कार्य करने वाला होता है। यह पढ़ने-लिखने का शौकीन, मनस्वी, क्रोधी तथा कभी-कभी उदारता प्रदर्शित करने वाला भी होता है। इसके जीवन के २०, २२, २५, २६ तथा ३५ वें वर्ष विशेष उन्नतिकारक होते हैं। आयु ६५ वर्ष होती है।

<u>(९४३)</u> - इस जन्मकुण्डली का अधिपति लम्बे कद तथा दृढ़ शरीर वाला, आकर्षक कान्ति-मान, स्त्रियों को सहज ही आकर्षित कर लेने वाला, विद्वान, बुद्धिमान तथा अनेक गुणों से युक्त होता है। यह अपने पौरुष से अपनी कौटुम्बिक सम्पत्ति में वृद्धि करता है। इसका विवाह लगभग २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा पति को सुख देने वाली होती है। इसके भाग्योदय में स्त्री का पूर्ण सहयोग रहता है। यह विवाहोपरान्त किसी नवीन कार्य को आरंभ करके प्रचुर सम्पत्ति उपार्जित करता है। सन्तान का सुख उत्तम रहता है। राजकीय सेवा में उच्च पद पर प्रतिष्ठित होकर अथवा अन्य उपायों द्वारा खूब धन कमाता है। जीवन के ३०, ३२, ३८, ४२ तथा ५१ वें वर्ष सुख एवं उन्नति दायक होते हैं। इसकी आयु लगभग ८० वर्ष की होती है।

<u>(९४४)</u> - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुदृढ़ शरीर वाला, सुन्दर, मधुरभाषी, परिश्रमी, सुशील, धीर-चित्त, कुटुम्ब का पोषक तथा मित्र-हितैषी होता है। यह ईश्वर-भक्ति अथवा देवपूजनादि में विश्वास न रखकर केवल अपने पुरुषार्थ पर भरोसा करता है तथा पैतृक-सम्पत्ति में अपने पौरुष से अधिक वृद्धि करता है। इसका विवाह २० से २४ वर्ष की आयु में हो जाता है। इसके पुत्र पुत्री, आज्ञाकारी तथा यश-वृद्धि करने वाले होते हैं। इसकी आयु के २०, २४, २८, ३१ तथा ३८ वें वर्ष विशेष उन्नति कारक सिद्ध होते हैं। इन वर्षों में यह प्रचुर धन तथा सम्मान उपार्जित करता है। यह यन्त्र सम्बन्धी जानकारी रखने वाला, व्यवसाय-कुशल तथा व्यवहार में पटु होता है। इसका शरीर प्रायः स्वस्थ ही बना रहता है तथा लगभग ८० वर्ष की आयु तक यह जीवित रहता है।

(९४५) – इस जन्मकुण्डली का अधिपति सूर्य के समान तेजस्वी, बुध के समान सुन्दर तथा शुक्र के समान विलास एवं नीतिज्ञ होता है। यह साहित्य तथा ललित-कलाओं का ज्ञाता, अपने शत्रुओं को भी मोहित करलेने वाले कवित्व से सम्पन्न, बुद्धिमान, काव्य-प्रेमी तथा मधुर-भाषी होता है। यह जिस कार्य को भी करता है, उसी में इसे धन का लाभ होता है। यह अपने कुटुम्बियों तथा मित्रों को सुखदायक तथा धनीजनों के बीच गौरवशाली एवं सम्मानित होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला होती है। सन्तान सुख भी प्राप्त रहता है। इसकी आदतें विचित्र होती हैं। यह कभी कृपणता का प्रदर्शन करता और कभी अत्यन्त उदार बन जाता है। यह अनेक प्रतिष्ठानों से सम्बद्ध अथवा उच्च राजकीय पद पर प्रतिष्ठित होकर पर्याप्त लाभ अर्जित करता है तथा ६० वर्ष की आयु पाता है।

(९४६) – इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, मनोहर वाणी वाला, विद्या-बुद्धि में प्रवीण, काव्य तथा साहित्य का रसिक एवं मर्मज्ञ, दुःसाहसिक कार्यों में रुचि लेने वाला, तथा अपने पराक्रम की वृद्धि करने वाला होता है। अन्य लोग इसके गुणों से प्रभावित होकर प्रशंसा करते रहते हैं। इसकी अनेक कामनायें अपूर्ण भी रह जाती हैं, क्योंकि उनमें अनेक विघ्न आजाते हैं। बाल्यावस्था में इसे किसी गहन बीमारी का सामना करना पड़ता है, परन्तु उसके बाद आजीवन स्वस्थ एवं नीरोग बना रहता है। विवाह २० वर्ष की आयु के आस-पास हो जाता है। पत्नी तथा सन्तान का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है। २५-३० वर्ष की आयु में इसका भाग्योदय होता है। स्त्री रुग्ण बनी रहती है। धन की निरन्तर वृद्धि होती रहती है। आयु ६५ से ७० वर्ष तक की होती है।

भु० सं० ३९३

कु० २०

(६४७) – इस जन्मकुण्डली का स्वामी लम्बे (ऊँचे) कद का, रक्त-गौर वर्ण, रूखे केशों वाला, बड़े सिर तथा पैनी आँखों वाला एवं स्वभाव से रहस्यमय होता है। इसकी कार्यशैली अव्यवस्थित होती है, तथापि यह अपने उद्देश्य-लाभ के लिए सचेष्ट बना रहता है और उसे प्राप्त करके ही दम लेता है। सामान्यतः उग्र स्वभाव का होते हुए भी, यह परिस्थिति के अनुकूल विनम्रता का प्रदर्शन करने में भी पटु होता है। परन्तु यह अपने अपमान को कभी भूलता नहीं तथा उसका बदला भी अवश्य लेता है। विद्या का समुचित लाभ होता है। विवाह २० से २४ वर्ष की आयु के बीच होता है। पत्नी मनोनुकूल सुन्दरी मिलती है, तथापि यह अन्य स्त्रियों के प्रति भी आकर्षित बना रहता है। सन्तानों से सुख मिलता है। भाग्योदय ३० तथा ३५ वर्ष की आयु में होता है तथा प्रति तीसरे-चौथे वर्ष अधिक उन्नति करता चला जाता है। पूर्णायु ७० से ८० वर्ष के मध्य होती है।

(६४८) – इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, ज्ञानी, मधुरभाषी, लम्बे कद वाला, गौरवर्ण तथा अपने कार्यों का कुशलता पूर्वक सम्पादन करने वाला होता है। यह स्वभाव से कृपण, वाणी पर नियन्त्रण न रख पाने वाला तथा अत्यन्त धनवान् होते हुए भी स्वयं को निर्धन समझने वाला होता है। स्वभाव से उदार होते हुए भी यह कभी उदारता का प्रदर्शन नहीं कर पाता। शिक्षा मध्यम श्रेणी की उपलब्ध होती है। विवाह २० से २२ वर्ष की आयु में ही हो जाता है। संतानों से सुख प्राप्त होता है। यह दुस्साहसिक कार्यों में सब कुछ होम करके सफलता पाने का प्रयत्न करता है। भाग्योदय ३५ वर्ष की आयु में होता है तथा ४८ वर्ष की आयु तक काफी उन्नति कर लेता है। आयु मध्यम होती है। वात और कफ सम्बन्धी पीड़ायें होती रहती हैं। पूर्णायु ७४ वर्ष हो सकती है। जीवन के ११, १६, २२, ३२, ३५, ४४, ४८, ५४, ५६, ६० तथा ६२वें वर्ष कष्टप्रद रहते हैं।

मु० सं० ९७३

कु० २०

(६४९) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर स्वरूपवान्, बलवान्, मधुरभाषी, प्रभावशाली, गौर वर्ण, उन्नत ललाट, पराक्रमी तथा कठिन परिश्रम करने वाला तेजस्वी व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। इसे विभिन्न प्रकार के सुख प्राप्त होते रहते हैं। शिक्षा का लाभ उत्तम होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, स्वच्छन्दा, सुशीला तथा मनोनुकूला मिलती है। पत्नी का पूर्ण सहयोग प्राप्त कर यह जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उन्नति करता चला जाता है। सन्तानें सुन्दर तथा आज्ञाकारिणी होती हैं। इसे किसी उच्च राज्य पद का लाभ होता है तथा आकस्मिक धन-लाभ की संभावना भी रहती है। पैतृक-धन भी प्राप्त होता है। अपने व्यवसाय द्वारा भी यह पर्याप्त धनोपार्जन करता है। भाग्योदय 30 वर्ष की आयु से होता है तथा जीवनभर उन्नति होती रहती है। आयु ७५ वर्ष से अधिक होती है तथा वृद्धावस्था में रोग भी घेरे रहते हैं। ३५, ४८, ५२, ६० तथा ६३ वें वर्ष कष्टप्रद रहते हैं।

(६५०) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर शरीर वाला, शान्त चित्त तथा सुशील स्वभाव का होता है। यह विलासी, सुन्दरी स्त्रियों का प्रिय तथा भोगी होता है। यह सामान्य लोगों को भी सम्मान देता है तथा अपने उपकारी-स्वभाव के कारण सब का हित-साधन करता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी तेजस्विनी और गृहस्थ-संचालन में कुशला होती है। वह सात्विक बुद्धि वाली, कला के प्रति अनुरागिनी, धार्मिक प्रवृत्ति की तथा अपनी चतुराई से सबका मन मोह लेने वाली होती है। वह घर के वातावरण को आनन्दमय बनाये रखती है। सन्तानें भी उत्तम तथा आज्ञाकारिणी होती हैं। विद्या का यथेष्ट लाभ होता है। परिवारीजनों से स्नेहपूर्ण सम्बन्ध बने रहते हैं। राज्य से सम्मान तथा सुख प्राप्त होता है। भाग्योदय २५ वर्ष की आयु से होता है तथा ४५ वर्ष तक आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हो जाती है। पूर्ण आयु ६० वर्ष के लगभग ही रहती है। सम्मान यथेष्ट मिलता है।

भृ० सं० २९३

कु० २०

(६५१) – इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य लम्बे शरीर का, रक्त-गौर वर्ण, काले रूखे केशों वाला, अत्यन्त प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न तथा उदार स्वभाव का होते हुए भी हठी प्रकृति का होता है। यह जातक अत्यन्त महत्वाकांक्षी होता है तथा बड़े-बड़े काम करने के लिए लालायित बना रहता है। विद्या का श्रेष्ठ लाभ होता है तथा सन्तान-सुख भी उत्तम रहता है। विवाह २० से २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी मनोनुकूला, सुन्दरी तथा गुणवती होती है। वह पति को प्रत्येक कार्य में सहयोग प्रदान करती रहती है। स्वयं कला-कुशल न होते हुए भी प्रबन्ध-व्यवस्था में पटु होती है। इस जातक को बड़े भाई का सुख नहीं मिलता, छोटे भाइयों का मिलता है। परिवार से प्रेम-संबंध दृढ़ बना रहता है। भाग्योदय ३५ वर्ष की आयु में होता है तथा जीवनभर भाग्य की अभिवृद्धि होती रहती है। यह देश-विदेश की यात्राएं करता है। पैतृक-धन प्राप्त करता है तथा सुखपूर्ण दीर्घायु भोगी होता है।

(६५२) – इस जन्म कुण्डली वाला जातक सुन्दर रूप वाला, गौरवर्ण, बुद्धिमान, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, साहित्य एवं ललित-कलाओं का प्रेमी तथा स्वयं भी कलाकार होता है। इसे सर्वत्र सम्मान प्राप्त होता है। यह भाग्य का धनी तथा अभिलषित वस्तुओं की प्राप्ति में सफल होता है। विद्या का श्रेष्ठ लाभ होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु से पूर्व ही हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, बुद्धिमती, विद्वान् एवं मधुरभाषिणी होती है। वह पति की सहयोगिनी तथा आज्ञाकारिणी बनी रहती है। सन्तानें भी सुपात्र एवं सुख देने वाली होती हैं। इसका भाग्योत्कर्ष २५ वर्ष की आयु से आरंभ हो जाता है तथा उत्तरोत्तर सफलताएँ मिलती रहती हैं। संतानों की संख्या कम होती है तथा कुछ गर्भ गिर भी सकते हैं। सामान्यतः इसका सम्पूर्ण जीवन सुख तथा ऐश्वर्य से परिपूर्ण बना रहता है, बड़े तथा छोटे भाई-बहिनों एवं कुटुम्बियों से इसके स्नेहपूर्ण सम्बन्ध रहते हैं।

(६५३) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति बाल्यावस्था में विभिन्न रोगों का शिकार बना रहता है। विशेष कर नेत्रपीड़ा से कष्ट पाता है। यह कृश-शरीर का, सामान्य रूपवान तथा भाग्यवादी होता है। यह अधिकतर परदेश में रहता है, नीचों की संगति करता है तथा उन्हीं से लाभ भी उठाता है। इसका विवाह प्रायः नहीं होता और यदि हो भी जाय तो वैवाहिक-सुख की उपलब्धि नहीं होती। यह धनी होता है तथा अपने धन को पारिवारिक एवं धार्मिक कार्यों में खर्च भी करता है, तथापि इसे परिवार अथवा धर्म के प्रति कोई आसक्ति नहीं होती। यह औपचारिक रूप से शिव एवं शक्ति की उपासना कर लेता है। यह कष्ट के समय में भी अत्यन्त कौतुकी तथा कड़वी एवं तनावपूर्ण बातें कहने का अभ्यस्त होता है। स्त्रियों के प्रति आकर्षण रखते हुए भी उनसे अलग सा ही रहता है। इसका भाग्योदय विदेश में होता है। ३५ से ४० वर्ष की आयु से उन्नति करता हुआ यथेष्ट धनोपार्जन करता है।

(६५४) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी गौरवर्ण, मध्यम कद वाला, चंचल नेत्र एवं तीक्ष्ण दृष्टि सम्पन्न तथा दूसरों के मन की थाह पा लेने में कुशल होता है। यह अत्यन्त उत्साही तथा शीघ्रतापूर्वक कार्य करने वाला होता है। यह माता-पिता की आकांक्षाओं के विपरीत आचरण कर, उन्हें कष्ट पहुँचाता है। यह बिना आगा-पीछा सोचे अपने धन को किसी भी काम में लगा देता है, तथापि इसे कभी हानि नहीं उठानी पड़ती, सर्वदा लाभ ही होता है। शिक्षा सामान्य, परन्तु यथेष्ट होती है। विवाह २२ वर्ष की आयु के लगभग होता है। पत्नी कलाप्रिय, गुणवती, विद्वान तथा विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों में रुचि लेने वाली होती है। वह स्वयं भी कलाकार हो सकती है। वैवाहिक-जीवन सुखमय बीतता है। भाग्योदय २५ वर्ष की आयु से होता है, तत्पश्चात उत्तरोत्तर उन्नति का लाभ होता चला जाता है। इसके जीवन का अधिकांश भाग स्त्रियों से सम्पर्क करने में बीतता है। आयु ७० वर्ष होती है।

(६५५) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी लम्बे शरीर वाला, सुन्दर स्वरूपवान तथा भाग्य का धनी होता है। इसे बचपन में नेत्र-पीड़ा आदि के कष्ट होते हैं। यह गुप्तस्थानों अथवा गुप्त कार्यों से धन प्राप्त करने वाला, अत्यन्त पराक्रमी, धीर-गंभीर तथा हर प्रकार के संकटों पर विजय पाने वाला होता है, विरोधी इसके समक्ष परास्त हो जाता है। यह अपने परिवार को सुखी रखनेवाला, बन्धुप्रेमी तथा कुलदीपक होता है। अन्य गृह-कठिन प्रायः नहीं होते। विद्या का श्रेष्ठ लाभ होता है। विवाह उच्च कुल में होता है तथा पत्नी सुन्दरी, गृह कार्यों में दक्ष तथा पति को अपने नियन्त्रण में रखने वाली होती है। वह चित्ताकर्षक होते हुए भी अधिक बोलने वाली होती है। भाग्योदय ३० वर्ष की आयु में होता है। पूर्णायु ७० वर्ष के लगभग होती है। सन्तान-सुख उत्तम रहता है। जीवन के ३५, ४०, ४५ तथा ५१ वें वर्ष विशेष उन्नति कारक सिद्ध होते हैं।

(६५६) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य रक्त-गौर वर्ण, सुनहरे केशों वाला, उन्नत कद का, उदार, क्रोधी तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह परिवार में उच्चस्थिति प्राप्त करने वाला तथा परिवार के यश को बढ़ाने वाला होता है। विद्या का उत्तम लाभ होता है। विवाह २३ वर्ष की आयु तक हो जाता है। स्त्री सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। इसका भाग्योदय नीच लोगों के संसर्ग से होता है और उन्हीं से यह लाभ भी उठाता है। यह दुरभिसंधियों में आनन्द लेने वाला, कूट-नीति में सफल तथा यथेष्ट धनोपार्जन करने वाला होता है। भाग्योदय ३० वर्ष की आयु के बाद होता है। जीवन के ३२, ३४, ४६ तथा ५१ वें वर्ष महत्वपूर्ण तथा उन्नति कारक सिद्ध होते हैं। ५३ वां वर्ष भी उत्तम रहता है। इसकी आयु लम्बी होती है तथा वृद्धावस्था में भी यह अनेक मित्रों के संसर्ग में आने के लिए प्रयत्नशील बना रहता है।

(९५७) - इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य सुन्दर मुखवाला, गौरवर्ण, तेजस्वी, पढ़ने लिखने में रुचि रखने वाला तथा अनेक गुणों से युक्त होता है। यह अत्यन्त महत्वाकांक्षी होता है तथा अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए निरन्तर प्रयत्नशील बना रहता है। यह अपने चारों ओर के वातावरण को प्रभावित करता है तथा अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए निम्न स्तर के लोगों के सम्पर्क में आने से भी नहीं हिचकिचाता। निम्न स्तर की स्त्रियाँ भी इसे बहुत प्रभावित करती हैं। विद्या का लाभ सामान्य होता है। विवाह किसी अच्छे परिवार में होता है। पत्नी विदुषी, गुणवती तथा श्रेष्ठ विचारों की होती। २२ वर्ष की आयु में विवाह होना सम्भव है। इसे छोटे भाई-बहिनों का सुख प्राप्त होता है। बड़े भाई से मार्ग-दर्शन मिलता है। सन्तानें आज्ञाकारिणी होती हैं। आयु लगभग ७५ वर्ष होती है। भाग्योदय २८ वर्ष की आयु से होता है। जीवन के ३२, ३७, ४१, ४२, ४८, ५२ तथा ५७ के वर्ष उन्नति कारक होते हैं।

(९५८) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी बलिष्ठ तथा लम्बे शरीर का, गौरवर्ण एवं पुष्ट काया का होता है। यह लम्बे हाथ तथा उन्नत ललाट वाला आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। यह अनेक योजनायें बनाता है, परन्तु एक में असफलता पाने के बाद ही दूसरी को हाथ डालता है। विद्या का श्रेष्ठ लाभ होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी अच्छे कुल की, सुन्दरी तथा किसी धनवान व्यापारी की होती है। भाग्योदय विवाहोपरान्त होता है और निरन्तर उन्नति होती रहती है। सब प्रकार के सुख उपलब्ध रहते हुए भी इसे सन्तान सम्बन्धी कष्ट बना रहता है। यह बड़े-बड़े कार्यों का सम्पादन करता तथा राजकीय सेवा में उच्च पदों पर प्रतिष्ठित रहता है। इसे पूर्णायु ६०, ६५ वर्ष की प्राप्त होती है। वृद्धावस्था में कफ तथा पित्त के विकारों से पीड़ित रहता है। जीवन के २७, ३०, ३५, ३८, ४२, ४६, ५० तथा ५२वें वर्ष विशेष उन्नतिकारक सिद्ध होते हैं।

मू० सं० ८३३

कु० र०

(९५९) — इस जन्मकुण्डली वाला जातक दृढ़, परन्तु पतले शरीर वाला, बाल्यावस्था में रोगी तथा नेत्र-कष्ट-पीड़ित, विद्वान्, बुद्धिमान् तथा महत्वाकांक्षाओं से युक्त होता है। यह बहुत कष्ट उठाकर ही अपनी अभिलाषाओं की पूर्ति कर पाता है। यह धर्म का पोषक होते हुए भी धर्मवादी जनों से द्वेष भाव रखता है। इसे दूसरों का काम करने से बहुत सुख मिलता है तथा अपने काम में भी यह पूर्ण मनोयोग से लगा रहता है। यह उदार प्रकृति का, अनेक योजनाओं में अधिकांश को पूरा कर पाने में असमर्थ, छोटे भाई-बहिनों से युक्त तथा उच्चाधिकार का विशेष-लाभ प्राप्त करने वाला होता है। विवाह २०-२२ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है। सन्तान का सुख कम रहता है। भाग्योदय घर से बाहर ३० वर्ष की आयु में होता है। आयु लगभग ७५ वर्ष की होती है। जीवन के ३०, ३२, ४२, ४६, ४८ तथा ५६ वें वर्ष कष्टप्रद रहते हैं।

(९६०) — इस जन्माङ्ग चक्र का अधिपति सुन्दर, गौरवर्ण, लम्बे कद का, कला तथा साहित्य में अभिरुचि रखने वाला, पराक्रमी, धनी, धर्मात्मा एवं गुणवान होता है, तथापि वासना एवं मोह से पीड़ित होकर परस्त्रियों में आसक्ति रखता है। शिक्षा मध्यम रहती है। विवाह २५ वर्ष की आयु के बाद होता है। पत्नी सुन्दरी तथा पतिभक्ता होती है, तथापि यह स्वयं दीर्घसूत्री एवं पर-स्त्रीगामी होता है। ३५ से ४० वर्ष की आयु के बीच यह जन-समाज में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त कर लेता है, तदुपरान्त इसकी भाग्योन्नति होती चली जाती है। छोटी तथा बड़ी बहिन से सुख मिलता है, परन्तु भाई का सुख प्रायः नहीं मिल पाता। इसे रहस्यमय कार्यों से धन का लाभ होता है तथा स्त्रियों के कारण कष्ट तथा अपमान भी भोगना पड़ता है। आयु लगभग ७० वर्ष की होती है। जीवन के २२, २८, ३२, ३७, ४१, ४६, ४८, ५१, ५५ तथा ५८ वें वर्ष उन्नति कारक सिद्ध होते हैं।

(६६१) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी दृढ़शरीर का, लम्बे कद वाला, कृश, जोशीला, शान्त स्वभाव का तथा तीक्ष्ण बुद्धि होता है। यह लिखने में बड़ा पटु होता है। यह ऊँच-नीच का ज्ञाता, विभिन्न गुणों से युक्त होते हुए भी कुछ निराशापूर्ण स्वभाव का होता है। इसके कुछ कार्य पूरे होते हैं तो कुछ अधूरे भी रह जाते हैं। एक साथ अनेक कार्यों में शक्ति लगा देने के कारण इसे वांछित सफलता उपलब्ध नहीं होती। यह लेखन-कार्य द्वारा धन तथा यश का उपार्जन करता है। इसकी योग्यता अप्रमाणित होती है। धन की भी कोई कमी नहीं रहती। यह बिना किसी संकोच के किसी भी नवीन कार्य को आरंभ कर बैठता है। विवाह २० से २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। भाग्योदय विवाहोपरान्त ही होता है। फिर जीवन भर उन्नति होती रहती है। संतानों का उत्तम सुख प्राप्त होता है। आयु ७० वर्ष के लगभग होती है। ४० वर्ष के बाद विशेष लाभ होता है।

(६६२) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी बड़ी आँखों वाला, कृश, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, व्यवहार कुशल, स्पष्टवक्ता तथा उद्यमी होता है। यह एक साथ कई कार्यों को करता है। पढ़ने-लिखने में विशेष रुचि रहती है। ललित कलाओं का प्रेमी होता है। किसी धार्मिक अथवा लोक सम्बन्धी कार्यालय से संबद्ध रह कर यह विशेष लाभ उठाता है। इसका विवाह २० वर्ष की आयु में ही हो जाता है, परन्तु विवाहोपरान्त कई वर्षों तक सन्तान का सुख नहीं मिलता। ३० वर्ष की आयु तक इसका जीवन व्यवस्थित हो जाता है, तभी से इसका भाग्योदय आरंभ होता है। जीवन के ४०, ४३, ४५ तथा ५० वें वर्ष में रोग तथा हानि की सम्भावना रहती है। ३२, ३६, ३८, ४१, ४६, ४८, ५२ तथा ५४ वें वर्ष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। मृत्यु ६५ वर्ष के लगभग होती है। जबतक जीवित रहता है, तबतक विभिन्न प्रकार के सुख प्राप्त करता रहता है।

(ई ६३) – इस जन्म कुण्डली का अधिपति दृढ़ काठी वाला, गौर वर्ण, लम्बे कद का, शिर-चिन्हवाला एवं सम्पत्तिवान् होता है। यह पढ़ने-लिखने का शौकीन होता है तथा इसकी विवेक दृष्टि बहुत तीव्र एवं सटीक होती है। यह अनेक कार्यों को एक साथ आरंभ करता है तथा हानि उठाकर भी उन्हें पूरा करने के लिए प्रयत्नशील रहता है। इसे छोटे तथा बड़े भाइयों का पूर्ण सुख प्राप्त होता है। माता-पिता का सुख भी दीर्घकाल तक बना रहता है। विद्या का उत्तम लाभ मिलता है। विवाह १८ से २२ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी बुद्धिमती तथा प्रत्येक कार्य में सक्रिय सहयोग देने वाली होती है, परन्तु यह जातक अपनी पत्नी के लिए भारी होता है। यदि 30 वर्ष की आयु तक पत्नी की मृत्यु न हो तो वह जीवन भर साथ देती है। प्रथम पत्नी के न रहने पर दूसरे विवाह का योग बनता है। भाग्योदय २५ वर्ष की आयु में होता है। जीवन सुख से बीतता है। पूर्णायु ६५ वर्ष के लगभग होती है।

(ई ६४) – इस जन्म कुण्डली वाला जातक सुन्दर रूपवान, भावुक हृदय वाला तथा भावातिरेक में अपना भला-बुरा न सोच पाने के कारण हानि उठाने वाला भी होता है, तथापि कृतघ्न के प्रति कृपा करके भी उसे कोई पश्चाताप नहीं होता। उदार चित्त वाला यह जातक परदेश में भाग्योदय प्राप्त करता है। विद्या का यथेष्ट लाभ होता है। विवाह 22 वर्ष तक हो जाता है। यह अपनी पत्नी में अनुरक्त रह कर, उसकी इच्छानुसार कार्य करता है, तथापि कभी-कभी परस्त्रियों की ओर भी इसका झुकाव हो जाता है। छोटे भाई-बहिन से मन नहीं मिलता, परन्तु बड़ी बहिन से प्रेम बना रहता है। पत्नी मनोनुकूला मिलती है। भाग्योदय विवाहोपरान्त ही होता है। पैतृक-सम्पत्ति का लाभ भी होता है। पत्नी को शारीरिक व्याधियां प्रायः बनी रहती हैं, परन्तु जीवन अच्छा रहता है। जातक की आयु ६० वर्ष के लगभग होती है। जीवन के ३२, ३८, ४१, ४६, ५० तथा ५४ वें वर्ष विशेष उन्नति कारक होते हैं।

(९६५) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी कोमल शरीर तथा मृदुल स्वभाव वाला, सुन्दर तथा आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होता है। वह अपने मानसिक-बल पर कठिन कार्यों में भी सफलता प्राप्त करलेता है। इसकी आर्थिक-स्थिति में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं, तथापि इसका कोई भी कार्य अधूरा नहीं रहता। इसकी सफलतायें अपेक्षाकृत कम मात्रा में होती हैं। राजकीय सेवा द्वारा जीविकोपार्जन का अवसर इसे उपलब्ध होता है तथापि आमदनी अधिक नहीं होती। शिक्षा मध्यम प्राप्त होती है, विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी भाग्यवान होती है, अतः विवाहोपरान्त इसे सुख, धन तथा यश की उपलब्धि होती है। सन्तान-सुख भी अच्छा रहता है। ३५ वर्ष की आयु में भाग्योदय होता है। जीवन के २५, २७, २९, ३५, ४०, ४२ तथा ४५वें वर्ष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। पूर्णायु ७० वर्ष होती है। जीवन भर शरीर प्रायः नीरोग बना रहता है।

(९६६) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, पुष्ट शरीर, परिश्रमी, उदार, चंचल तथा वासना युक्त होता है। यह सहनशील तथा भावुक स्वभाव वाला होता है और किसी को दुःखी देखकर तत्काल द्रवित हो जाता है तथा उसका कष्ट दूर करने की सोचता है। इसे अपने स्थान तथा परदेश - दोनों जगह ~~सफलतायें~~ प्राप्त होती हैं। गड़ा धन अथवा अयाचित-धन का लाभ भी हो सकता है, यद्यपि इस प्रकार से प्राप्त धन लाभकर सिद्ध नहीं होता, हानि ही पहुँचाता है, तथापि यह उसे त्याग नहीं पाता। इसका विवाह २० वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है और उसके सहयोग से भाग्य की अभिवृद्धि होती है। जीवन के २४, २७, २९, ३५, ३७ तथा ४५वें वर्ष लाभप्रद रहते हैं। इस अवधि में उत्तरदायित्वपूर्ण पदों पर रहकर अपनी उन्नति करते हैं। सन्तान का सुख अच्छा रहता है। पूर्णायु ७५ वर्ष तक हो सकती है।

भु० सं० ३३५

(९६७) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति हृष्ट-पुष्ट शरीरवाला, सुन्दर, परिश्रमी, उदार तथा दृढ़-निश्चयी होता है। यह गुणवान्, आडम्बर-रहित होते हुए भी क्रोधी तथा विद्रोही स्वभाव का होता है। संगीत आदि ललित कलाओं में इसकी रुचि होती है। भावना-प्रधान होते हुए भी, यह प्रबुद्ध तथा आत्म-नियंत्रण में समर्थ होता है। अपने समवयस्कों में यह भारी-भरकम प्रतीत होता है तथा बड़प्पन युक्त गंभीर वार्तालाप करता है। सबके ऊपर सहज ही विश्वास कर लेने के कारण यह कभी-कभी धोखा उठाता है। सामान्यतः कट्टर स्वभाव का दिखाई देने पर भी यथार्थ में यह कट्टरता से दूर रहता है। यह भ्रमण का शौकीन होता है तथा यात्राओं द्वारा लाभ भी उठाता है। विद्या यथेष्ट प्राप्त होती है। विवाह लगभग २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है। भाग्योदय ३० वर्ष की आयु में होता है। वर्ष २३, २८ में कष्ट तथा २६ एवं ३५ में विशेष लाभ होता है। आयु दीर्घ प्राप्त होती है।

(९६८) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य मध्यम-कद का, धीर-गंभीर स्वभाव वाला, सौम्य प्रकृति का, कला-कौशल का प्रेमी, काव्य-रसिक, सहृदय, उदार तथा प्रसिद्ध व्यक्ति होता है। इसकी उन्नति बाल्यावस्था से ही आरम्भ हो जाती है तथा यह इच्छित कामनाओं में सफलता प्राप्त करता रहता है। इसे पुस्तक लेखन एवं साहित्य सम्बन्धी व्यवसाय द्वारा सफलता एवं धन का लाभ होता है। यह ऐश्वर्यपूर्ण जीवन बिताता है। विवाह २० वर्ष की आयु तक हो जाता है, परन्तु पत्नी रुग्णा बनी रहती है, जिसके कारण यह दुःखी रहता है। सन्तान की ओर से भी यह दुःखी रहता है। इसकी भाग्योन्नति ४० वर्ष की आयु के बाद होती है। तत्पश्चात् यह आजीवन उन्नति करता चला जाता है तथा अधिकाधिक यश भी प्राप्त करता है। यह प्रभुत्वशाली तथा सर्वत्र स्वागत-सम्मान एवं अभिनन्दन प्राप्त करने वाला होता है। लगभग ७५ वर्ष की आयु प्राप्त करता है तथा अपने पीछे भी प्रचुर सम्पत्ति छोड़ जाता है।

कु० २०

(९८९) - इस जन्माङ्ग चक्र का स्वामी गौरवर्ण, उन्नत ललाट, मध्यम कद, बलिष्ठ शरीर तथा कठोर स्वभाव वाला होता है। यह किसी हानि के होने में स्वयं को ही उसका दोषी मानता है। इसके हृदय में परिवार के प्रति प्रेम तथा भाग्य के प्रति गहरी आस्था होती है। इसका पिता संदिग्ध कार्यों को करने वाला तथा यश-हीन होता है, परन्तु यह स्वयं अपने कार्यों से सुयश प्राप्त करता है। शिक्षा मध्यम होती है। विवाह होना संदिग्ध रहता है, तथापि इसका भाग्योदय किसी स्त्री के माध्यम से ही होता है। स्त्री ही इसे सहायता देती है। फिर भी इसके भाग्य में स्त्री-सुख नहीं होता तथा इच्छित मात्रा में धन का लाभ भी नहीं हो पाता। यह प्रायः परदेश में तथा निम्न वर्ग के लोगों के साथ रहता है, परन्तु प्रौढ़ावस्था में अपने घर लौट आता है तथा स्वजनों के बीच रहकर सुयश प्राप्त करता है। जीवन के 20, 24, 36 तथा 45 वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। आयु मध्यम।

(९९०) - इस जन्माङ्ग चक्र का अधिपति विद्वान, श्रेष्ठ, सुन्दर, चतुर, प्रियवादी, यशस्वी, राजा द्वारा सम्मानित तथा दीर्घ-धनी होता है। यह परिवार का पोषक, धर्मात्मा तथा परोपकारी होता है। शिक्षा उत्तम श्रेणी की प्राप्त होती है। इसके दो अथवा तीन विवाह हो सकते हैं, परन्तु पुत्र न होने के कारण यह दुःखी बना रहता है। इसकी पत्नी प्रायः रुग्णा बनी रहती है, तथापि शारीरिक रूप से अशक्त होते हुए भी पति की हर आज्ञा का पालन करने को प्रस्तुत रहती है। इसे घर-परिवार का सुख प्रायः नहीं मिलता। परोपकारी होने के कारण इसे अपनों की ही आलोचना का शिकार बनना पड़ता है, तथापि यह किसी की परवाह न कर, अपने काम में लगा रहता है। इसे अधिकांश परदेश में रहना पड़ता है और वहीं पर यह धन तथा यश को अर्जित करता है। भाग्योदय लगभग 32 वर्ष की आयु में होता है। आयु लम्बी होती है। जीवन भर संघर्ष करते रहते हैं।

(९७१) – इस जन्माङ्ग चक्र का अधिपति सुन्दर, यशस्वी, धीर-गंभीर, बुद्धिमान, विद्वान्, ज्ञानी, राज्य द्वारा सम्मान पाने वाला, अपने अधिकारियों तथा गुरुजनों की सेवा में संलग्न रहने वाला तथा यशस्वी होता है। विद्या का उत्तम लाभ होता है। विवाह २५ वर्ष तक की आयु में हो जाता है। एक से अधिक विवाह भी हो सकते हैं तथा अनेक परस्त्रियों से भी इसका संबंध बना रहता है। स्त्रियों के सहयोग से इसके भाग्य की अभिवृद्धि होती है। सन्तान-सुख सामान्य रहता है। भाग्योदय ३० वर्ष की आयु के बाद होता है। यह लम्बी यात्राएँ करता है तथा आन्तरिक-विरोधों के कारण अकारण ही दुःखी भी बना रहता है। इसे अपनी स्त्री तथा पुत्रों से सुख भी मिलता है। यह शत्रुओं का मान-मर्दन करता है। स्वयं भी चोट लगने की सम्भावना रहती है। इसके परदेश में रहते समय माता की मृत्यु हो जाती है। लगभग ६० वर्ष की आयु तक यह जीवित रहता है। जीवन सामान्यतः सुख से बीतता है।

(९७२) – इस जन्मकुण्डली वाला जातक सुन्दर, स्वाभिमानी, हठ धर्मी वाला, पराक्रमी, अत्यन्त तेजस्वी तथा स्वयं को विशेष बुद्धिमान समझने वाला होता है। इसी कारण यह धर्माधर्म एवं सत्यासत्य के बीच कोई सीमा-रेखा न खींचकर हर विषय की व्याख्या अपने मतानुसार ही करता तथा अपनी इच्छानुसार ही आचरण करता है। अपनी हठवादिता के कारण ही इसे हानियाँ भी उठानी पड़ती हैं। यह बहुत बलवान होता है तथा अपने भाइयों से प्रेम रखता है। शिक्षा मध्यम होती है। विवाह २२ वर्ष की आयु तक हो जाता है। एक से अधिक विवाह भी हो सकते हैं। यह स्वयं अपनी पत्नी सहित अनेक बार आकस्मिक रूप से घायल होता है। भाग्योदय २५-३० वर्ष की आयु में, परदेश में होता है। कुछ समय तक इसे अत्यधिक संघर्ष करने पड़ते हैं तथा कभी कभी घोर दरिद्रता का सामना भी करना पड़ सकता है। पूर्णायु ६०-६५ वर्ष के मध्य होती है।

(६७३) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य सुन्दर, सुशील एवं राज्य द्वारा सम्मानित होता है। इसे परिवार से सुख मिलता है, तथापि अन्य अनेक दुश्चिन्ताओं के कारण दुःखी भी रहना पड़ता है। यह पैतृक-सम्पत्ति से कहीं अधिक स्वोपार्जित सम्पत्ति द्वारा सुख प्राप्त करता है। यह परोपकारी प्रवृत्ति का, ज्ञानी, लाभ प्राप्त करने वाला तथा अपयश पाकर भी सुखी रहने वाला होता है। इसकी कवित्व-कुशलता एवं वाणी की मधुरता स्त्रियों को विशेष रूप से आकर्षित करती है। विद्या का मध्यम लाभ होता है। विवाह २४ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, दृढ़निश्चयी तथा उदार स्वभाव वाली होती है। वह धार्मिक कार्यों में रुचि लेती हुई गृहस्थी को सुचारु रूप से संचालित करती है। जातक स्वयं पत्नी के आश्रित बना रहता है। इसे व्यवसाय अथवा राज्य के द्वारा लाभ होता है। इसका भाग्योदय परदेश में होता है। पूर्णायु ७५ वर्ष होती है। जीवन के ३५, ४०, ४२ तथा ४८ वे वर्ष विशेष लाभप्रद होते हैं।

(६७४) - इस जन्मकुण्डली चक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, प्रभावशाली, विद्वान् तथा राज्य द्वारा सम्मान प्राप्त करने वाला होता है। यह अच्छा खाने-पीने का शौकीन तथा ऐश्वर्यपूर्ण जीवन बिताने का अभिलाषी रहता है। अपनी वेश-भूषा द्वारा भी यह अन्य लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है। यह भाग्य का प्रबल, सदैव सुखी रहने वाला तथा विविध प्रकार के भोगों को भोगने वाला होता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। ससुराल किसी दूरवर्ती स्थान में होती है। इसका भाग्योदय बाल्यावस्था से ही हो जाता है तथा आजीवन उन्नति करता हुआ सुखी तथा धनी बना रहता है। परन्तु इसका जीवन दुर्घटनाओं से घिरा रहता है तथा किसी दुर्घटना में ही इसकी मृत्यु भी हो सकती है। सन्तान-पक्ष से यह दुःखी रहता है और प्रायः उसका अभाव भी रहता है। पूर्णायु ६५ वर्ष के लगभग होना सम्भव है।

(९७५) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर स्वास्थ्यवान्, दृढ़ शरीर वाला, उदार-हृदय, धनी-मानी तथा सेवाभावी होता है। इसे विदेश प्रदेश से लाभ प्राप्त होता है। इसे पैतृक-सम्पत्ति का लाभ होता है तथा परिश्रम से भी विपुल सम्पत्ति अर्जित करता है। इसे सर्वविध सुख, सम्मान तथा यश की प्राप्ति होती है। इसका यश चारों ओर फैलता है। इसे विद्या का श्रेष्ठ लाभ होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, मानी, वैभव का प्रदर्शन करने में आगे रहने वाली तथा गुणवती होती है। इसे कन्याओं से सुख मिलता है। इसका भाग्योदय पिता के जीवन-काल में ही हो जाता है तथा निरंतर उन्नति करता चला जाता है। यह अपने श्रेष्ठ गुणों से सबको प्रभावित करने वाला तथा सर्वविध सुख पाने वाला होता है। पत्नी व्यावसायिक कार्यों में भी सहयोग देती है। जीवन के २२, २५, २८, ३५, ३८, ४२, ४७, ५१, ५६ तथा ६२वें वर्ष विशेष अभ्युदय के होते हैं। पूर्णायु ७० वर्ष होती है।

(९७६) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य सुन्दर, लम्बे कद वाला, दृढ़ शरीर वाला, गुणवान्, विद्वान् तथा धर्मी-कर्मी होता है। इसकी गति विलक्षण होती है। यह कठिनतम कार्यों को भी सफलतापूर्वक सम्पन्न कर लेता है, परन्तु इसे सहज रूप से प्राप्त होने वाले धन को मिलने में भी कुछ विलम्ब अवश्य होता रहता है। शत्रुओं द्वारा पीड़ा मिलती है तथा रुग्णा-पत्नी की ओर से चिन्ता बनी रहती है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी अधिक बोलने वाली तथा पति को सुख की तुलना में कष्ट अधिक देने वाली होती है। इसका भाग्योदय ३५ वर्ष की आयु के बाद होता है। जीवन के ४०, ४५, ४८ तथा ५८वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। विद्या का लाभ मध्यम रहता है तथा सन्तान-सुख भी सामान्य ही प्राप्त होता है। इसे आर्थिक कठिनाइयाँ प्रायः बनी ही रहती हैं। पूर्णायु लगभग ७० वर्ष होती है।

मु० सं० ८०७३

कु० र०

(९७७) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति शुक्र, सुदृढ़ शरीर वाला, ईमानदार, दार्शनिक, धीर-गंभीर तथा ईश्वर में दृढ़ आस्था रखने वाला होता है। यह दूसरों पर तुरन्त विश्वास कर लेता है। यह अत्यन्त साहसी, कठिन कार्यों को भी सफलता पूर्वक सम्पन्न करने वाला तथा किन्हीं विशेष परिस्थितियों में धर्म एवं नैतिकता के मार्ग से तनिक भी हटने में अत्यधिक पीड़ा का अनुभव करने वाला होता है। इसे विद्या का उत्तम लाभ मिलता है। विवाह 30 वर्ष की आयु तक हो जाता है अथवा नहीं भी हो सकता है। इसका भाग्योदय लगभग 35 वर्ष की आयु में होता है। भाग्योदय में परदेश, कोई स्त्री, गुरुजन अथवा कुलीन व्यक्ति का सहयोग रहता है। इसे अनेक प्रकार के कार्य करने के अवसर प्राप्त होते हैं। 35 वर्ष की आयु के बाद इसे नाना सुख प्राप्त होता है. परन्तु 40 से 43 वर्ष की आयु में शारीरिक-कष्ट भी मिलते हैं। पूर्णायु लगभग 70 वर्ष की होती है।

(९७८) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति शुक्र, मध्यम कद, दृढ़ शरीर वाला, मधुर भाषी, चतुर, ज्ञानी, धीर-गंभीर तथा मृदु-स्वभाव का होता है। इसे भाग्य तथा स्व-पराक्रम - दोनों के सहयोग से धन की विशेष उपलब्धियां होती रहती हैं। नीच लोगों के सम्पर्क से भी इसे पर्याप्त धन-लाभ होता है। शिक्षा मध्यम रहती है। विवाह 25 वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, व्यवहार-कुशल तथा प्रत्येक कार्य में सहयोग करने वाली मिलती है। इसे पत्नी तथा सन्तान का यथेष्ट-सुख प्राप्त होता है। इसका भाग्योदय 30 वर्ष की आयु में, परदेश में किसी बड़े तथा कुलीन व्यक्ति की सहायता से होता है। यह स्वयं किसी अच्छे प्रतिष्ठान से सम्बन्ध स्थापित कर पर्याप्त लाभ उठाता है। यह शत्रुओं से कभी पराजित नहीं होता। 55 वर्ष की आयु तक इसका जीवन निरन्तर उत्कर्षपूर्ण बना रहता है। यह यशस्वी होकर 65 से 70 वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

भु० सं० ८७३

कु० २०

(९७९) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी पुष्ट शरीर वाला, सामान्य सुन्दर, हठी, क्रोधी, जिद्दी, तेजस्वी तथा अपने कार्यों का सुन्दर रूप से सम्पादन करने वाला होता है। इसके कार्य सुदृढ़ संगठन के रूप में प्रत्यक्ष दिखाई देते हैं। यह अत्यन्त चतुर, कूटनीतिज्ञ तथा राजनीति का पण्डित होता है। धन, वाहन तथा ऐश्वर्य सम्पन्न यह जातक राजमान्य होने के साथ ही लोकमान्य भी होता है। इसको विद्या का श्रेष्ठ लाभ होता है। विवाह २४ वर्ष की आयु तक हो जाता है। लगभग २० वर्ष की आयु से धनोपार्जन आरम्भ कर देता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। यह अत्यन्त मायावी, कुकर्मी तथा मिथ्यावादी भी हो सकता है। धनोपार्जन हेतु यह किसी विधि-निषेध की चिन्ता नहीं करता एवं कमाये हुए धन को पानी की भाँति बहाता है। यह शत्रुओं से लोहा लेता है तथा किसी भी संकट के समय विचलित नहीं होता। आयु लगभग ७५ वर्ष की होती है। इसके जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव आते हैं।

(९८०) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, कलात्मक रुचि वाला, तीव्र एवं व्यावहारिक-बुद्धि सम्पन्न, अनेक प्रकार के कार्यों से लाभ उठाने वाला, शुद्ध भौतिकवादी तथा निजी अथवा भागीदारी के व्यवसाय से लाभ उठाने वाला होता है। शिक्षा यथेष्ट होती है। विवाह २२ से २५ वर्ष की आयु के मध्य हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा उन्नति-पथ पर अग्रसर करने में सहायक होती है। यह भूमि, वन-सम्पदा अथवा पशु-धन के अतिरिक्त विलास-सामग्री के व्यवसाय द्वारा विशेष लाभ प्राप्त करता है। इसका भाग्योदय ३७ वर्ष की आयु से होता है तथा जीवनान्त तक उत्तरोत्तर अधिक उन्नति करता चला जाता है। इसके जीवन के २२, २७, ३१, ३५, ३७, ४०, ४४, ४९, ५२, ५६ और ६१ वें वर्ष विशेष उन्नति कारक सिद्ध होते हैं। वर्ष २, १०, १८, २१, २५, ४६, ५४, ६० तथा ६५ शारीरिक कष्टकारक सिद्ध हो सकते हैं। पूर्णायु ७० वर्ष से अधिक होती है। यह अपने पीछे प्रचुर सम्पत्ति छोड़ जाता है।

(९८१) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य ऊँचे मध्यम कद वाला, सुदृढ़ शरीर एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। इसे अपने पिता के जीवनकाल में ही उन्नति-पथ पर अग्रसर होने के सुयोग प्राप्त होते हैं तथा इसे शीघ्र ही शासन द्वारा भी मान्यता प्राप्त हो जाती है। इसकी चतुराई के कारण शत्रुवर्ग सदैव पीड़ित बना रहता है। यह अपनी वीरता एवं पराक्रम के बल पर अधिकाधिक उन्नति करता चला जाता है। यह उदार-मन का होते हुए भी कृपण स्वभाव का होता है, अतः धन को बहुत कम खर्च करता है तथा अधिक संचय करता है। यह धर्म विरुद्ध आचरण करते हुए भी धर्म के प्रति विशेष आस्थावान नहीं होता। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, परन्तु तामस भावापन्न होती है अतः वैवाहिक-जीवन शान्त रहते हुए भी अधिक सुखपूर्ण नहीं रहता। विवाह के बाद ही भाग्योदय है। ५० वर्ष की आयु तक पर्याप्त उन्नति कर लेता है। पूर्णायु ७५ वर्ष के लगभग होती है।

(९८२) - इस जन्मांग चक्र में उत्पन्न हुआ मनुष्य मध्यम कद वाला, सुन्दर, बलिष्ठ, शस्त्र कला में निपुण, अत्यन्त धनी तथा नेत्र-रोगी होता है। यह बड़ा साहसी, तेजस्वी एवं दूरदर्शी होता है। इसकी आर्थिक स्थिति प्रारम्भ से ही अच्छी रहती है। इसे जीवन में कभी भी धन का अभाव नहीं रहता। विद्या का श्रेष्ठ लाभ होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, चतुरा, ज्ञानवान् समाज में प्रतिष्ठा को बढ़ाने वाली तथा सम्मान पाने की होती है। यह जातक संगीत-वाद्य में रुचि रखने वाला होता है तथा स्त्रियों के मनोभावों को समझने में कुशल होता है। इसके जीवन के ३५, ४०, ४२ तथा ४६ वें वर्ष अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। भाग्योदय छोटी आयु से ही हो जाता है। यह साहित्यिक कार्यों द्वारा धनोपार्जन में विशेष सफल रहता है। इसकी आयु अधिक नहीं होती। वात तथा कफ रोगों से पीड़ित होकर लगभग ५५ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(६८३) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर रूपवान, चित्ताकर्षक व्यक्तित्व वाला एवं मधुरभाषी होताहै। यह मितभाषी, शान्त स्वभाव का, कम क्रोध करने वाला तथा अपने परिवार के प्रति अत्यधिक प्रेम रखने वाला होताहै। यह घर के सभी उत्तरदायित्वों का सफलता पूर्वक निर्वाह करता है। अपने पाण्डित्य, योग्यता एवं सद्गुणों के कारण कुल का सुविख्यात बन कर सर्वत्र प्रशंसा प्राप्त करताहै। इसे पैतृक-धन बहुत कम मिलता है, तथापि अपने उद्यम द्वारा यह अत्यधिक धनोपार्जन करता है। यह राजकीय क्षेत्र में विभिन्न उच्चपदों पर रहता है तथा ३५ वर्ष की आयु तक बहुत ऊंचे पद पर प्रतिष्ठित होजाताहै। इसका विवाह जल्दी होजाता है तथा सन्तान का लाभ भी शीघ्र होता है। इसके मित्रों तथा प्रशंसकों की संख्या बहुत बड़ी होती है। यह लोकविख्यात तथा अध्यापक भी होसकताहै। यह अपने जीवन में निरन्तर उन्नति करता हुआ लगभग ७५ वर्ष की आयु प्राप्त करताहै।

(६८४) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, कुछ स्थूल शरीर का एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह विद्वान, पण्डित, उपदेशक, अध्यापक तथा सद्गुणों को धारण करनेवाला, काव्य-साहित्य में अभिरुचि रखनेवाला तथा किसी भी वातावरण को अपने अनुकूल बना लेने में सक्षम होताहै। यह अपने परिजनों से दूर, कहीं परदेश में रह कर अपनी भाग्योन्नति करताहै। यह अपनी विद्वत्ता के बल पर बड़े-बड़ों को नत-मस्तक कर देताहै। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में होजाताहै। पत्नी सुन्दरी तथा आज्ञानुवर्तिनी मिलती है, तथापि यह परस्त्रियों के प्रति भी आकर्षित होताहै और उन पर धन खर्च भी करताहै। ३६ वर्ष की आयु में यह कोई नवीन कार्य आरम्भ करता है, जिसमें इसे पर्याप्त सफलता मिलती है। लगभग ७१ वर्ष की आयु में वातरोग का कष्ट झेलते हुए इसकी मृत्यु होतीहै। अपने पीछे काफी सम्पत्ति छोड़ जाताहै।

भु० सं० ४०७३

कु० २०

(६८५) - इस जन्म कुण्डली वाला जातक प्रियदर्शी, स्थूलकाय, सात्विक, बुद्धिमान् तथा उदार स्वभाव का होता है। यह अपने शत्रु के अपराध को भी क्षमा कर देता है। यह भावुक हृदय का, काव्य-कला में अनुराग रखने वाला, गुणवान् तथा गुणग्राही होता है। इसे सर्वत्र यश-सम्मान की उपलब्धि होती है। यह अपने विरोधियों के लिए काल के समान होता है। यह वाक्-चातुर्य तथा युक्तियों द्वारा अपने प्रतिद्वन्द्वियों को शीघ्र पराजित कर देता है। विद्या का उत्तम लाभ मिलता है। विवाह 20 वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, अनुकूला तथा आज्ञाकारिणी मिलती है। इसका भाग्योदय १७ वर्ष की आयु से ही आरम्भ हो जाता है तथा 30 वर्ष की आयु तक दो कन्याओं का पिता भी बन जाता है। २५ वर्ष की आयु से विशेष रूप से आर्थिक उन्नति आरम्भ होती है। इसे कृषि-वस्तुओं, विलास-सामग्री तथा साहित्यिक संस्थानों से लाभ ज्यादा होता है। लगभग ८० वर्ष की आयु प्राप्त होती है।

(६८६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी गौरवर्ण, सुन्दर, स्थूल एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह अत्यन्त साहसी, धनी, ऐश्वर्यवान् तथा व्यापार कुशल होता है। इसे समाज में यश-प्रतिष्ठा तथा सम्मान की उपलब्धि होती रहती है। यह अपने पराक्रम द्वारा यथेष्ट सम्पत्ति का उपार्जन करता है। इसे राज्य, पिता तथा निम्न वर्ग के लोगों से लाभ मिलता है। कृषि के क्रय-विक्रय, रत्नों के व्यवसाय तथा अन्य अनेक कार्यों से यह अपनी सम्पत्ति को बढ़ाता है। विद्या का यथेष्ट लाभ होता है। विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा आज्ञापालन करने वाली होती है। यह अपनी पत्नी से अत्यधिक प्रेम करता है और उसकी सलाह के बिना कोई कार्य नहीं करता। इसका भाग्योदय आरम्भ से ही होता है। यह कभी किसी के आश्रित नहीं रहता तथा स्वतन्त्र रूप से सुखी जीवन बिताता है। इसकी पूर्णायु ६५ से ७० वर्ष के बीच होती है।

(९८७) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, स्वस्थ, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न तथा भाग्य का धनी होता है। यह अत्यन्त बुद्धिमान, गुणवान, नीतिज्ञ तथा उत्तरदायित्व पूर्ण कार्यों का सफलता पूर्वक सम्पादन करने वाला होता है। यह साहित्यिक-अभिरुचि सम्पन्न, साहित्य-मर्मज्ञ तथा धार्मिक प्रवृत्ति का होता है। विद्या यथेष्ट प्राप्त होती है। विवाह २३ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, मनोनुकूल तथा गुणवती मिलती है। भाग्योदय विवाह से पूर्व ही आरम्भ हो जाता है। यह जातक स्वभाव से अन्तर्मुखी होने के कारण अपने कार्यों में चुपचाप लगा रहता है। इसे भूमि, वन, पशु तथा इनसे सम्बन्धित वस्तुओं एवं कार्यों से धन का लाभ होता है। पर-स्त्री सम्पर्क से इसे हानि उठानी पड़ती है। ५० वर्ष की आयु तक यह सब प्रकार की सम्पन्नता प्राप्त कर लेता है। यह विद्वानों का सम्मान करता हुआ लगभग ८० वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(९८८) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य सुन्दर, सुगठित शरीर वाला, तेजस्वी, उदार, गुणवान, बुद्धिमान तथा अल्प क्रोधी होता है। इसे धन-धान्य की कमी कभी नहीं रहती। इसे पैतृक-सम्पत्ति का लाभ भी होता है और यह स्वयं भी प्रचुर सम्पत्ति अर्जित करता है। इसे पुस्तकों के लेखन, बाहरी लोगों से सम्पर्क आदि के द्वारा धन का लाभ होता है। यह २५ वर्ष की आयु तक अपनी आमदनी के साधनों को निश्चित कर लेता है। २४ वर्ष की आयु तक इसका विवाह हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, वाचाल परन्तु ऊँच-नीच को समझने वाली होती है। संतान तथा पत्नी का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है। ३० से ३५ वर्ष की आयु के बीच यह अपने संकल्प के अधिकांश कार्यों को पूरा कर लेता है। जीवन के २५, २८, ३८, ४५ तथा ५२ वें वर्ष विशेष उन्नति कारक सिद्ध होते हैं। इसका उत्कर्ष यात्राओं से होता है। लगभग ७५ वर्ष की आयु प्राप्त होती है।

(९८९) - इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, गुणवान्, कलाकार तथा नीतिज्ञ होता है। इसे कई साधनों द्वारा धन का लाभ होता है। यह अपनी कुशलता एवं योग्यता से धन के व्यय को भी आमदनी में बदल देता है। जन-समाज पर इसका व्यापक प्रभाव रहता है फलतः यह सर्वत्र यश एवं सम्मान प्राप्त करता है। इसका विवाह 20 वर्ष की आयु में होजाता है, पत्नी सुन्दरी तथा सन्तति वाली करने की होती है। विवाहोपरान्त ही इसका भाग्योदय होता है। इसे परदेश में निवास भी करना पड़ता है तथा यात्रायें भी अधिक करनी पड़ती हैं। सन्तान तथा पत्नी सुख के अतिरिक्त यह परिजनों का सुख भी प्राप्त करता है। जीवन के 30, 42, 48, 51 तथा 56 वें वर्ष विशेष प्रभावकारी सिद्ध होते हैं। इन अवसरों पर इसे मकान्भूमि लोगों से अप्रत्याशित लाभ होते हैं। पत्नी-पक्ष की ओर से भी इसे लाभ मिलता है। पूर्णायु लगभग 75 से 80 वर्ष के बीच होती है।

(९९०) — इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, धनिक, श्यामवर्ण, चतुर व्यवहार कुशल तथा बुद्धिमान होता है, तथापि यह निम्नवर्ग के लोगों के सम्पर्क में रहता और उन्हीं से धन-लाभ भी करता है। यह अपने धन का व्यय रखैल के आयु में बड़ी तथा निम्न कोटि की स्त्रियों पर करता है। इसका विवाह 22 वर्ष की आयु में होजाता है। पत्नी सुन्दरी मिलती है। यह पत्नी से डरता तथा उसके कहे अनुसार ही चलता है। विवाहोपरान्त ही इसका भाग्योदय होता है। ससुराल वालों के सहयोग से इसे विशेष लाभ होता है, अतः यह ससुरालीजनों का अनुगत बना रहता है। 55 वर्ष की आयु में इसके भाग्य का चरमोत्कर्ष होता है। 43, 45, 55, 57 तथा 63 वर्ष की आयु में जीवन में विशिष्ट प्रकार के परिवर्तन आते हैं, जिन्हें यह शान्तिपूर्वक झेलता है तथा ऐसे बड़े२ काम करता है कि लोग देखकर दंग रह जाते हैं। पूर्णायु लगभग 75 वर्ष की होती है।

<u>(९९१)</u> – इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, स्वस्थ, मध्यम कदवाला, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, गुणवान, चतुर, धीर-गंभीर तथा मीठी वाणी बोलने वाला होता है। यह मित्रों के प्रभाव में रहता है तथा उनके सहायताओं भी प्राप्त करता है। इसे ऊँच-नीच का ज्ञान होता है तथा अपने पक्ष को विभिन्न प्रकार से प्रस्तुत एवं स्थापित करने में इसे सफलता मिलती है। यह लेखन-कला में निपुण तथा अपने परिवार का पोषण करने वाला यशस्वी व्यक्ति होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में सुन्दरी, दूरदर्शिनी एवं ऊँच-नीच को समझने वाली विदुषी नारी के साथ होता है। सन्तान-सुख भी उत्तम रहता है। विद्या का श्रेष्ठ लाभ मिलता है। यह राजमान्य, लोक-प्रतिष्ठित तथा सुखी जीवन व्यतीत करता है। भाग्योदय ३० वर्ष की आयु में होता है तथा ४५ वर्ष की आयु में प्रत्येक मनोभिलाषाओं की पूर्ति कर लेता है। पूर्णायु ७५ से ८० वर्ष की होती है। इसका सम्पूर्ण जीवन सुखमय बना रहता है।

<u>(९९२)</u> – इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, ऊँचे मध्यम कदवाला गौर वर्ण तथा प्रभावशाली-व्यक्तित्व-सम्पन्न होता है। यह उच्च कुल में जन्म लेने वाला तथा स्वयं के सद्गुणों के कारण अपने कुल में प्रतिष्ठित स्थान पाने वाला, विद्वान, गुणवान, पैतृक-सम्पत्ति-सम्पन्न, महाधनी होता है। यह सर्वत्र सम्मानित होता है तथा अपने धन का सदुपयोग भी करता है। साहित्य-सृजन एवं प्रकाशन आदि कार्यों से इसे विशेष लाभ होता है। विद्या उत्तम श्रेणी की प्राप्त करता है। किसी शिक्षण-संस्था अथवा धार्मिक कार्य से सम्बद्ध भी हो सकता है। विवाह लगभग २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, गुणवती तथा मनोनुकूला मिलती है। सन्तान-सुख भी उत्तम रहता है। यह अनेक उपायों से धनोपार्जन करता है तथा निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। जीवन के २१, २४, २८, ३२, ३४, ३८, ४१, ४२, ४८ तथा ५२वें वर्ष विशेष महत्वपूर्ण रहते हैं। पूर्णायु ८० वर्ष होती है।

भु० सं० ३९३

कु० २०

५

(९९३) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर स्वरूप, मध्यम कद, बलिष्ठ शरीर, पराक्रमी तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह बाल्यावस्था से ही सुखी रहता है तथा विद्याध्ययन काल से ही इसके सद्गुणों का प्रकाश फैलने लगता है। यह श्रेष्ठ माता-पिता से सम्पन्न प्रतिष्ठित एवं धन-धान्यपूर्ण कुल में जन्म लेता है। इसका लालन-पालन भी अमीरी वातावरण में तथा सुन्दर ढंग से होता है। यह वाक्पटु साहित्य, नाट्य एवं काव्य-संगीत-प्रिय, तथा सद्गुणी होता है। इसका विवाह १९ वर्ष की आयु में ही हो जाता है तथा पत्नी सुन्दरी, मनोरमा, कुछ स्थूल शरीर वाली, आकर्षक एवं मनोरम व्यक्तित्व सम्पन्ना होती है। यह परिवार के प्रति उदासीन रहता है तथा पारिवारिक झमेलों में नहीं पड़ता। भाग्योदय बचपन से ही आरंभ हो जाता है तथा जीवन भर उन्नति करता रहता है। इस के पास अथाह सम्पत्ति होती है। पूर्णायु ८५ वर्ष अथवा इससे अधिक भी हो सकती है।

(९९४) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर शरीर, मध्यम कद, पुष्ट, तेजस्वी, मधुरभाषी तथा आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। इसके मित्रों की संख्या अत्यधिक होती है। इसके निकट कोई विघ्न-बाधा ठहर नहीं पाते। यह राजमान्य, उच्चाधिकार प्राप्त, उच्चशिक्षित तथा उच्च स्थिति से लाभ उठाने वाला होता है। इसका विवाह लगभग २० वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, गुणवती तथा मनोनुकूला मिलती है। भाग्योदय विवाहोपरान्त ही आरंभ हो जाता है तथा ४५ वर्ष की आयु में ही यह सफलताओं के शिखर पर जा पहुँचता है। अपनी पत्नी के अतिरिक्त यह अन्य स्त्रियों से भी संबंध रखता है। इसका व्यवसाय शिक्षा, शिक्षालय अथवा औद्योगिक वस्तुओं से सम्बन्धित होता है। यह आजीवन प्रायः नीरोग ही बना रहता है। कभी किसी गम्भीर बीमारी का शिकार नहीं बनता। सन्तानसुख उत्तम रहता है। पुत्र-पौत्रों से युक्त हो ८० वर्ष तक जीवित रहता है।

पृ० सं० 02.3

(ईईम) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, मोहक व्यक्तित्व वाला, मधुरभाषी तथा सरल हृदय का होता है। यह अनेक गुणों से सम्पन्न तथा राज्य एवं लोक में सम्मान पाने वाला तथा ललित-कलाओं का प्रेमी होता है। इसका भाग्योदय बचपन से ही आरम्भ हो जाता है। यह शिक्षा ग्रहण करने हेतु सुदूर स्थानों पर भी जाता है तथा इसका कार्य-क्षेत्र देश से बाहर विदेशों में भी रहता है। इसका विवाह 25 से 28 वर्ष की आयु में मनवांछित पत्नी के साथ होता है, पत्नी सुन्दरी, मनोनुकूल तथा महत्वाकांक्षिणी होती है। वह प्रत्येक क्षेत्र में पति को सहयोग प्रदान करती है। 50 वर्ष की आयु तक यह जातक भलीभाँति प्रतिष्ठित हो जाता है तथा सर्वत्र सम्मान प्राप्त करता हुआ, निश्चिन्त एवं सुखी जीवन व्यतीत करता है। घर-बाहर सर्वत्र ही इसे यश तथा आदर की उपलब्धि होती है। यह लगभग 80 वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(ईईध) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति शरीर से दृढ़, सुन्दर, गुणवान, अनेक विद्याओं का ज्ञाता तथा सफलताएं प्राप्त करने वाला होता है। यह पेशे से वकील अथवा उपदेशक भी हो सकता है। यह अपने उद्देश्य की प्राप्ति हेतु अथक प्रयत्न करता है तथा उसे पाकर सफल भी हो जाता है। यह नीचे से ऊपर की ओर उठता तथा 45 वर्ष की आयु तक उन्नति के चरम शिखर पर आसीन हो जाता है। इसका भाग्योदय विदेश में ही होता है तथापि यह बाहर की यात्राएं भी करता रहता है। इसके विवाह एक से अधिक होने सम्भव हैं। यदि पत्नी के ग्रह बलवान हों तो दूसरा विवाह नहीं होता। इसे सन्तानों से पर्याप्त सुख मिलता है, परन्तु दत्तक पुत्र लेने का योग भी बन सकता है। इसके जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। 30 से 45 वर्ष की आयु के बीच अनेक बार कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है। आयु मध्यम होती है।

कु० २०

भू० सं० ३२३ कु० र०

(९९७) – इस जन्माङ्ग चक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर स्वरूपवान्, भावुक-प्रकृति का, सहृदय, गुणी, विद्वान्, कवि, वक्ता अथवा उपदेशक होता है। इसे जलीय-वस्तुओं से विशेष प्रेम होता है तथा श्वेत रंग की वस्तुएँ – वस्त्र, रत्नादि - विशेष रूप से धारण करता है। यह किसी के विरोध की चिन्ता नहीं करता तथा न्याय के लिए निरंतर संघर्ष-रत बना रहता है। कोमल भावनाओं से पूर्ण होते हुए भी यह अनुचित बात पर अत्यन्त प्रचण्ड रूप धारण कर लेता है तथा उसका पूरी शक्ति से प्रतिरोध करता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में सुन्दरी तथा उच्चकुलीन कन्या के साथ होता है। इस की पत्नी सौम्य प्रकृति की तथा सफल गृहिणी होती है, वह पति का प्रत्येक क्षेत्र में भरपूर साथ देती है। विवाह के कुछ समय बाद यह आर्थिक कष्टों से उबरने लगता है तथा ४० वर्ष की आयु तक स्थिति सुधर जाती है। ५० से ५५ वर्ष की आयु कुछ कष्टप्रद रहती है। पूर्णायु ७५ वर्ष के लगभग होती है।

(९९८) – इस जन्माङ्ग चक्र का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ-हृष्ट-पुष्ट, प्रकृति का तथा साहसी होता है। यह यह अपने विचारों से अन्य लोगों को प्रभावित करने का प्रयत्न करता है, परन्तु उसमें सफलता नहीं मिलती। यह परदेश में रहकर सुख तथा सम्मान प्राप्त करता है तथा बाद में घर लौट आता है। इस की बुद्धि बहुत तीव्र तथा तर्कशक्ति प्रभावशाली होती है। यह अपने से निम्न श्रेणी के लोगों के सम्पर्क में रहता तथा उन्हीं से लाभ भी उठाता है। इसका विवाह 20-22 वर्ष की आयु में होता है, परन्तु पत्नी से मतैक्य नहीं हो पाता, अतः विवाहित-जीवन कष्टप्रद रहता है। संतानों से भी सुख नहीं मिलता। यह पातिनियों में अग्रणी होता तथा उनसे प्रभावित बना रहता है। इसका भाग्योदय २८ से ३५ वर्ष के बीच होता है। परदेश में रहकर यह व्यापार-व्यवसाय करता है। आर्थिक दृष्टि से इसका जीवन सामान्यतः अच्छा बना रहता है। पूर्णायु ८० वर्ष तक हो सकती है।

भृ० सं० ९९९

कु० १०

<u>(९९९)</u> — इस जन्मांक चक्र का अधिपति सुन्दर, प्रियदर्शी, दृढ़ विचारों का, साहसी, उदार प्रकृति का तथा प्रत्येक परिस्थिति में प्रसन्न बना रहने वाला बड़ा धीर-गम्भीर होता है। यह विदेश में जाकर धन तथा यश प्राप्त करता है। आकस्मिक रूप से भी धन का लाभ होता है। यह ललित-कलाओं का प्रेमी तथा स्वयं भी कलाकार होता है। यह दुहरी ज़िन्दगी जीने वाला तथा सदैव सुख पाने वाला, अपने माता-पिता का भी अत्यन्त लाड़ला होता है। विद्या का उत्तम लाभ होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है, परन्तु पत्नी से विशेष सन्तोष नहीं मिलता, अतः यह परस्त्रियों से भी सम्बन्ध रखता है। यह गंभीर साहित्य का अध्येता होता है। इसका भाग्योदय ३० वर्ष की आयु तक हो जाता है। जीवन के ३५, ३८, ४५, ४८, ५१ तथा ५३ वें वर्ष महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। संतान सुख सामान्य रहता है। यह लगभग ८० वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

<u>(१०००)</u> — इस जन्मांक चक्र में उत्पन्न हुआ व्यक्ति सुन्दर, प्रभावशाली, कथा-वार्ता में मन लगाने वाला, कला-प्रेमी तथा स्वयं भी कवि अथवा साहित्यकार होता है। इसका विवाह २८ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, विदुषी, ज्ञानवान, कुछ स्थूल शरीर वाली, गौरवर्णा तथा यशस्विनी होती है। इस जातक को पत्नी-सुख के अतिरिक्त सन्तान-सुख भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होता है तथा पुत्र-पौत्रों से युक्त होकर लम्बी आयु प्राप्त करता है। परिस्थितियों से सामंजस्य बैठा पाना इसके लिए कठिन रहता है, इसके बावजूद भी यह समाज में यश, मान तथा धन का लाभ पाता है। भाग्योदय २५ वर्ष की आयु से आरंभ हो जाता है तथा जीवन निरंतर उन्नतिशील बना रहता है। अन्तिमावस्था में यह रोगों के कारण पीड़ित तथा दुःखी होता है तथा परिवार के प्रति उदासीन हो जाता है। ७५ वर्ष की पूर्णायु होती है। दुर्घटनाजन्य मृत्यु भी सम्भव है।

भु० सं० ९९३

कु० २०

(१००१) – इस जन्माङ्ग चक्र वाला जातक सुन्दर शरीर वाला, मधुर स्वभाव का, अपनी वाणी से सब लोगों को प्रभावित करने वाला, क्षमाशील, उदारचित्त, कोमल भावनाओं से युक्त तथा लोक में सर्वत्र सम्मान पाने वाला होता है। यह न्यायशील तथा सन्तुलित विचारों का तथा शत्रुओं से भी मित्रता स्थापित करने का इच्छुक होता है। इसके मित्रों की संख्या अधिक होती है। इसका धन आकस्मिक रूप से नष्ट होता रहता है, फिर भी इसे धन की कमी नहीं आ पाती। यह बड़े निर्मल तथा शुद्ध हृदय का होता है, फिर भी कुछ लोग इसे गलत समझते हैं। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला, स्वस्थ, समझदार तथा सुयोग्य होती है। वह इसके प्रत्येक कार्य में सहयोगिनी सिद्ध होती है। इसे पत्नी तथा सन्तानों का पूर्ण सुख प्राप्त होता है, परन्तु अल्पभाषी जनों से इसकी पटती नहीं बैठती। भाग्योदय 30 वर्ष की आयु में होता है। पूर्णायु ७० वर्ष होगी।

(१००२) – इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य गौरवर्ण, दृढ़ शरीर का, पराक्रमी तथा स्वभाव से उदार होता है। इसकी वाणी मधुर तथा आदेशात्मक होती है। यह तार्किक, बुद्धिमान्, गुणवान् तथा किसी भी बात की तह तक जा पहुँचने वाला होता है। शिक्षा यथेष्ट प्राप्त होती है। विवाह २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, गुणवती तथा मनोनुकूला मिलती है। ३० से ३५ वर्ष की आयु के बीच इसकी आर्थिक-स्थिति बहुत अच्छी हो जाती है, तब यह अपना भवन बनवाता तथा वाहन भी खरीदता है। इसके भाग्योत्कर्ष की कोई सीमा नहीं होती। यह अपनी समस्त आकांक्षाओं की पूर्ति करने में सफल होता है। इसका जीवन अनेक खतरों से भरा है, परन्तु यह उन सब खतरों तथा कठिनाइयों पर विजय पाते हुए आगे बढ़ता रहता है। जीवन के २८, ३०, ३५, ४०, ४३, ५१ तथा ५८ वें वर्ष विशेष शुभ व कारीगर हैं। पूर्णायु लगभग ७० वर्ष की होती है।

(१००३)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सामान्यतः सुन्दर, गोल, मध्यम कदवाला तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह विद्याध्ययन में रुचि नहीं रखता, अतः शिक्षा अपूर्ण विशेष कमजोर होती है, तथापि व्यावहारिक-बुद्धि का प्रयोग करके यह जीवन में निरंतर उन्नति करता चला जाता है। यह ग्राम-प्रदेश में निवास करता है और वहीं इसका भाग्योदय भी होता है। विलास एवं सौन्दर्य सामग्री तथा स्टेशनरी के व्यापार द्वारा इसे आर्थिक-लाभ होता है। बाहरी लोगों से इसे विशेष लाभ होता है। यह शत्रुओं को पराजित करने वाला तथा प्रत्येक परिस्थिति को अपने अनुकूल बना लेने में सिद्धहस्त होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी मनोनुकूला मिलती है। वह अपने पति के प्रत्येक कार्य में सहायक सिद्ध होती है। सन्तान-सुख भी प्राप्त होता है। भाग्योदय ३० वर्ष की आयु में होता है तथा सम्पूर्ण जीवन प्रायः सुख पूर्वक बीतता है। आयु मध्यम प्राप्त होती है।

(१००४)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, पुष्ट शरीर, गौरवर्ण, परिश्रमी, धार्मिक विचारोंवाला तथा ईश्वर भक्त होता है। यह भवन-निर्माण तथा भूमि के क्रय-विक्रय में विशेष रुचि लेता है। विवाह २६ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी तथा सन्तान से पूर्ण सुख प्राप्त होता है। पत्नी अत्यन्त सुन्दरी, पतली परन्तु पुष्ट देह वाली, अत्यन्त समझदार तथा प्रत्येक कार्य में पति के साथ सहयोग करने वाली होती है। इस जातक का रहन-सहन ऐश्वर्य पूर्ण होता है तथा समाज में इसका मान-प्रतिष्ठा बनी रहती है। इसका भाग्योदय १८-२० वर्ष की आयु से ही आरम्भ हो जाता है, परन्तु बीच में कुछ रुकावट आ जाती है जो ३० वर्ष की आयु में पूर्ण रूप से दूर हो जाती है। तदुपरान्त यह निरंतर उन्नति करता चला जाता है। सन्तान तथा परिवार जनों से भी सुख मिलता है। जीवन के ३५, ४० तथा ४६ वें वर्ष विशेष उन्नति कारक सिद्ध होते हैं। पूर्णायु ६० से ६५ वर्ष तक होती है।

(२००५) – इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, सुशील, मधुरभाषी, दृढ़ संकल्पी तथा उदार हृदय का होता है। इसे पिता तथा परिवारीजनों का पूर्ण सुख प्राप्त होता है। यह बड़े भवन में रहता है तथा उच्च स्तरीय लोगों से सम्पर्क रखते हुए सुखी-जीवन व्यतीत करता है। इसे पैतृक-सम्पत्ति प्रचुर परिमाण में प्राप्त होती है। स्व-पराक्रम से भी यह विपुल धन संचित कर लेता है, अतः इसे जीवन में किसी प्रकार की आर्थिक-कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता। यह कलाकारों को आश्रय, संरक्षण तथा सहायता देता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करने वाली मिलती है। किसी अपरिचित व्यक्ति द्वारा इसे नवीन व्यवसाय करने की प्रेरणा प्राप्त होती है, जिसके द्वारा यह पर्याप्त लाभ उठाता है। सन्तान-पक्ष उत्तम रहता है। वृद्धावस्था में शरीर व्याधिग्रस्त हो जाता है, तथापि यह ८० वर्ष की दीर्घायु प्राप्त करने में सक्षम होता है।

(२००६) – इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य दृढ़ शरीर का, धर्म-कर्मी, वीर, उदार तथा बुद्धिमान होता है, परन्तु बाल्यावस्था में जिद्दी स्वभाव का बन कर क्रूरतापूर्ण कार्य भी कर उठता है। यह अकारण ही चिन्तित रहता है। धन की इसके पास कोई कमी नहीं रहती। इसका धन अनेक बार नष्ट हो जाता है, परन्तु फिर ज्यों-की-त्यों आर्थिक-स्थिति बन जाया करती है। शत्रुओं का मान-मर्दन करने में इसे सफलता मिलती है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, भली, परन्तु तीव्र स्वभाव की होती है। सन्तान के कारण इसे दुःख भी प्राप्त होता है। इसका भाग्योदय ३५ वर्ष की आयु में किसी यान्त्रिक-कार्य (मशीनरी सम्बन्धी व्यवसाय) से होता है। बारम्बार धन-हानि होने के कारण इसकी आर्थिक-स्थिति बहुत उन्नत नहीं हो पाती। जीवन के २२, २८, ३२, ३५, ३८, ४२, ४६ तथा ५२वें वर्ष लाभप्रद रहते हैं। पूर्णायु ७० वर्ष से अधिक होती है।

(१००७) — इस जन्म कुण्डली वाला जातक सुन्दर स्वरूपवान, गुणवान, स्वस्थ, धीर-गंभीर स्वभाव का तथा अपने कुल में श्रेष्ठ होता है। इसे विद्या का लाभ अधिक नहीं होता, तथापि यह अपनी व्यावहारिक बुद्धि के प्रयोग से व्यवसाय अथवा राजकीय-सेवा कार्य में संलग्न होकर पर्याप्त लाभ उठाता है। इसका विवाह २० से २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा श्रेष्ठ विचार की होती है तथा ३१ वर्ष की आयु तक पति की सेवा में संलग्न बनी रहती है, तत्पश्चात उसकी मृत्यु हो जाना सम्भव है। सन्तान से भी कष्ट प्राप्त होता है। भाग्योदय २८ वर्ष की आयु के बाद होता है। इसे राजकीय-सेवा में सम्मान प्राप्त होता है तथा आर्थिक स्थिति सामान्यतः उत्तम बनी रहती है। जीवन के २४, ३१, ३५, ३६, ४० तथा ४६वें वर्ष लाभप्रद तथा १२, १८, २०, २२ एवं ५२वें वर्ष कष्टप्रद सिद्ध होते हैं। पूर्णायु ६० से ७० वर्ष के बीच होती है।

(१००८) — इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य सुन्दर, बलिष्ठ, पराक्रमी, विद्यावान तथा धनी-मानी होता है। इसे राज्य तथा पिता की ओर से सुख प्राप्त होता है। दीर्घजीवी पिता इसकी बहुत सहायता करता है तथा इसके व्यवसाय को भलीभाँति स्थापित कर देता है। अपने परिवार में यह सर्वाधिक धनी होता है। इसका विवाह १८-२० वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी अत्यन्त सुन्दरी तथा सुख देने वाली होती है। वह चंचल, हास-विलास से युक्त तथा रागात्मक प्रवृत्ति की होती है। इसे कुछ अज्ञात शत्रु हानि पहुँचाने तथा कष्ट देने का प्रयत्न करते हैं, परन्तु यह उन सब पर विजय पा लेता है। सन्तान से सुख मिलता है, परन्तु पत्नी को चोट लगना अथवा शारीरिक-कष्ट भी भोगने पड़ते हैं तथा दीर्घकाल तक अलग भी रहना पड़ सकता है। ३०, ३२ तथा ५० वें वर्ष में इसे विशेष लाभ होता है। भाग्योदय २२ वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पूर्णायु लगभग ७० वर्ष होती है।

(१००९) – इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य स्थूलकाय, गौरवर्ण, पण्डित, विद्वान तथा उदार स्वभाव वाला होता है। यह बड़ा दानी होता है तथा धूर्त लोगों पर दया करके अपने धन को नष्ट कर बैठता है। धन के नष्ट हो जाने पर स्वयं भी दुःख पाता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी वाचाल तथा धर्म-कर्म का विचार न करने वाली होती है, फलतः उससे सुख प्राप्त नहीं होता। यह जातक पुस्तक तथा रंगीन वस्त्रों के व्यवसाय से जीविकोपार्जन करता है। परिवारीजनों से मतभेद रहने के कारण कभी-कभी अत्यन्त दुःखी एवं आतंकित भी हो जाता है। ४५ वर्ष की आयु तक पहुँचते-पहुँचते इसे सब प्रकार की सुख-सामग्रियाँ उपलब्ध हो जाती हैं। किसी प्रकार का अभाव नहीं रहता। सामान्यतः सम्पूर्ण जीवन सुखपूर्वक ही व्यतीत होता रहता है। स्वास्थ्य भी प्रायः ठीक-ठीक बना रहता है। सन्तान से विशेष सुख नहीं मिलता। पूर्णायु ६८ वर्ष होती है।

(१०१०) – इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, हृष्ट-पुष्ट, गुणवान, विद्वान तथा मेधावी होता है। इसका जीवन एकरसता पूर्ण होता है। यह परिवारीजनों की ओर से दुःखी तथा चिन्तित बना रहता है, तथापि उनके प्रति कोई दुर्भावना नहीं रखता, अपितु सदैव उनके सुख-सम्मान का ही ध्यान रखता है। इसका विवाह २२ से २४ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, स्वाभिमानी तथा समय को देखकर चलने वाली होती है। जातक का भाग्योदय माता-पिता के सामने ही हो जाता है। यह अपने माता-पिता की सेवा भी खूब करता है। इसकी विशेष उन्नति ३५ वर्ष की आयु के बाद होती है। ४५ वर्ष की आयु में यह कोई नवीन कार्य आरम्भ करता है तथा उससे पर्याप्त लाभ उठाता है। इसका सम्पूर्ण जीवन सामान्यतः सुखी बना रहता है। अपने व्यवहार से यह अन्य लोगों को भी सुख पहुँचाता है। इसकी पूर्णायु ७५ से ८० वर्ष के मध्य होती है।

(२०११) — इस जन्मकुण्डली का अधिपति शुद्ध, स्वस्थ, मध्यम कद वाला, गंभीर, दार्शनिक विचारों से युक्त, वैरागी प्रकृति का होता है। इसे माता तथा बड़े भाई की ओर से विशेष सुख नहीं मिलता, जबकि छोटे भाई से सहयोग प्राप्त होता है। शिक्षा मध्यम रहती है। विवाह २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, परन्तु तीखे स्वभाव की होती है, फिर भी वह पति को सन्तुष्ट एवं सुखी बनाये रखने की चेष्टा करती है। यह पैतृक-सम्पत्ति के साथ ही स्वोपार्जित धन भी पर्याप्त धनी होता है। कभी-कभी यह ऐसी परिस्थितियों से गुजरता है कि ईश्वर के साथ-साथ अपने पुरुषार्थ से भी विश्वास खो देता है। इसके पुत्र अधिक नहीं होते, पुत्रियां अधिक होती हैं और यह उनके लिए बहुत कुछ करता भी है। पुत्रों के बड़े हो जाने पर यह किसी नवीन व्यवसाय को आरम्भ करता है तथा उससे पर्याप्त धन भी कमाता है। इसे ६० से ६५ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त होती है।

(२०१२) — इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, मध्यम कद वाला, स्वस्थ, दार्शनिक विचारों का तथा उदार-स्वभाव का होता है। इसे जीवन में कभी अभाव नहीं मिलता और न कोई बीमारी ही परेशान करती है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है। यह साहित्य, संगीत तथा ललित कलाओं का प्रेमी होता है। इसकी आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं, अतः इसकी आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। यह परदेश में जाकर भी प्रचुर धनोपार्जन करता है। इसको अपने व्यवसाय में राजकीय सहायता भी प्राप्त होती है। जीवन के ३५, ४५, ४८, ५०, ५३ तथा ५८ वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। यों इसका भाग्योदय २५ वर्ष की आयु से ही आरम्भ हो जाता है। यह एक साथ कई कामों को करता तथा उन सबमें सफलता ही प्राप्त करता है। इसकी आयु मध्यम अर्थात् ६०-६५ वर्ष के लगभग होती है।

(२०२३) – इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, पुष्टशरीर वाला, गौर वर्ण तथा क्रोध के स्वभाव वाला होता है। यह सदैव चिन्तित बना रहता है। इसे छोटे तथा बड़े भाइयों की ओर से सुख-सहयोग की उपलब्धि होती है। इसके द्वारा किये हुए कार्यों को भाई सफलता पूर्वक पूरा करते हैं। इसकी आयु का अधिकांश भाग दूसरों के लिए कार्य करते हुए ही व्यतीत होता है। इसे अपने लिए न तो धन की चिन्ता होती है और न उसके प्रति कोई आग्रह होता है। यह अपने परिवार तथा पुत्रों के हित में धन खर्च करता है। पुत्र भी इसके आज्ञाकारी होते हैं तथा इसे सुख देते हैं। इसका विवाह २० वर्ष की आयु के लगभग हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुलक्षणा होती है, परन्तु रुग्ण बनी रहती है। वर्ष ३०, ३५, ३६, ३९ तथा ४५ में धन का विशेष लाभ होता है। सामान्यतः आर्थिक-दृष्टि से सम्पूर्ण जीवन सुखी बना रहता है। पूर्णायु लगभग ६८ वर्ष की होती है।

(२०२४) – इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य स्वस्थ शरीर, सुन्दर, मधुरभाषी तथा विद्वान होता है। इसे पैतृक-सम्पत्ति का लाभ मिलता है तथा स्वयं भी पर्याप्त धन कमाता है, अतः धन की कोई कमी नहीं रहती। विदेशों के सम्बन्ध से भी इसे प्रचुर धन-लाभ होता है। इस प्रकार इसकी आमदनी के अनेक मार्ग खुले रहते हैं। इसे राज्य द्वारा पूर्ण सम्मान मिलता है तथा कीर्ति और यश फैल जाता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा आज्ञाकारिणी मिलती है। सन्तानों से भी सुखी रहता है। यह उल्लेख व्यवसाय में सफलता, यश तथा सम्मान अर्जित करता है। आकस्मिक धन-लाभ के भी अनेक अवसर प्राप्त होते हैं। जीवन के २२, २८, ३२, ३४, ३८, ४१, ४५, ४८, ५२ तथा ५६ वें वर्ष विशेष लाभप्रद रहते हैं। वृद्धावस्था में वात रोग की पीड़ा होती है। पूर्णायु ८१ से ८३ वर्ष के मध्य होती है।

भू० सं० 033

कु० २०

(२०२५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी स्वस्थ शरीर का, सुन्दर, मध्यम कद वाला, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, धनी, सुखी तथा दीर्घजीवी होता है। विद्या का उत्तम लाभ मिलता है। विवाह लगभग २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पुत्र-पुत्रियों का पर्याप्त सुख भी मिलता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। राज्य की ओर से इसे आजीविका एवं धन-लाभ के अनेक अवसर प्राप्त होते हैं। ३० वर्ष की आयु में इसका पूर्ण भाग्योदय होता है तथा ५० वर्ष की आयु तक पर्याप्त सम्पत्ति अर्जित कर उसे पुत्रों तथा भाइयों में बाँट कर, स्वयं सभी जिम्मेदारियों से विमुक्त होकर अपना जीवन व्यतीत करता है। इसका उत्तरार्द्ध भाग सभी लोगों के लिए आनन्दप्रद सिद्ध होता है। जीवन के ३२, ३५, ३८, ४२, ४८ तथा ५१ वें वर्ष विशेष उन्नतिकारक सिद्ध होते हैं। यह आजीवन स्वस्थ बना रहता है तथा अन्त समय में भी कोई कष्ट नहीं पाता। पूर्णायु ८० वर्ष की होती है।

(२०२६)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति दुबले-पतले, परन्तु स्वस्थ शरीर वाला, गंभीर विचारक तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। इसका भाग्योदय अपने ही क्षेत्र में होता है। यह स्वजनों के बीच रहता हुआ भी धन-धान्य सम्पन्न होकर यश-मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। इसका विवाह लगभग २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, परन्तु रुग्णा मिलती है, फलतः दाम्पत्य-सुख अधिक नहीं मिल पाता। सन्तान-सुख भी साधारण ही रहता है। यह अनेक गुणों से युक्त तथा कुटुम्ब-वत्सल होता है। यह बाल्यावस्था से ही धनी होता है। इसकी आमदनी के स्रोत अच्छे रहते हैं। ३५ वर्ष की आयु में यह किसी नवीन कार्य को आरम्भ करता तथा उससे पर्याप्त लाभ उठाता है। इसे अनेक मित्रों का सान्निध्य प्राप्त होता है। जीवन सुख से बीतता है। पूर्णायु लगभग ८० वर्ष की होती है।

(१०२७) – इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य अत्यन्त सुन्दर, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, मधुरभाषी, तथापि कटु-सत्य कहने वाला होता है। यह अत्यन्त विद्वान्, तार्किक तथा सौभाग्यशाली होता है। इसके गुण, योग्यता एवं विद्वत्ता के कारण धन-सम्पत्ति इसके समीप खिंचा चला आता है। यह शत्रुओं को भी प्रभावित करके अपना अनुगत बना लेता है। यह अपने कार्यक्षेत्र में किसी का हस्तक्षेप सहन नहीं करता। इसका विवाह लगभग २० वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी प्रायः रुग्णा बनी रहती है, जिसके कारण आप चिन्तित बना रहता है। सन्तानों के होते हुए भी इसका चित्त अशान्त बना रहता है तथा ऊपर से प्रसन्न दिखाई देने पर भी भीतर-ही-भीतर घुटता रहता है। २२ से २४ वर्ष की आयु के बीच इसका भाग्योदय होता है, तदुपरान्त यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। इसके जीवन के २४, २८, ३२, ३६, ४१, ४४, ४८ तथा ५२वें वर्ष विशेष लाभयुक्त सिद्ध होते हैं। पूर्णायु ८० वर्ष हो सकती है।

(१०२८) – इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, पराक्रमी, स्वाभिमानी, ज्ञानी, विद्वान, गुणवान तथा शास्त्रज्ञ होता है। यह साहित्य का सृजन करता है तथा नवीन कार्यों द्वारा धन कमाता रहता है। इसे अपनी आर्थिक-स्थिति से सन्तोष बना रहता है। धन की अपेक्षा सम्मान पाने की इच्छा अधिक रहती है। यह स्वयं विशेष सम्मान प्राप्त करने के लिए कभी-कभी शालीनता की सीमाओं को भी पार कर जाता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा भले स्वभाव की होती है, तथापि उससे सुख एवं सन्तोष की प्राप्ति नहीं होती। पति-पत्नी के संबंध औपचारिक ही रहते हैं तथा सन्तति-लाभ तक ही सीमित बने रहते हैं। परस्त्रियों की ओर भी यह आकर्षित हो सकता है। २५ वर्ष की आयु से इसका भाग्योदय होता है तथा निरन्तर उन्नतिशील बना रहता है। धन तथा सम्मान का पर्याप्त लाभ होता है। जीवन लगभग ७८ वर्ष का होता है।

भु० सं० ६३३३

कु० र०

(१०२६) — इस जन्माङ्ग चक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, मनस्वी तथा अकारण ही चिन्तित बना रहने वाला होता है। इसकी आमदनी के अनेक स्रोत होते हैं, जिसके कारण इसे कभी आर्थिक-कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ता। तथापि धन के प्रति इसके मन में गहरी तृष्णा बनी रहती है। यह अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति हेतु अनेक भवनों तथा सार्वजनिक प्रतिष्ठानों की संरचना करता है। यह अपने सुयश को दूर-दूर तक फैलाने के लिए सचेष्ट बना रहता है। यह सम्पन्न वातावरण में ही जन्म लेता है और सम्पन्नता में ही मृत्यु को प्राप्त होता है। इसका विवाह 24 वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी कुलीन-शीला, श्री, सुन्दरी, गुणवती, विदुषी तथा मनोनुकूला प्राप्त होती है। यह उससे अनुरक्त रहता हुआ, प्रत्येक कार्य उसी की सलाह से करता है। इसे सन्तानों का भी यथेष्ट सुख प्राप्त होता है। जीवन भर सुखी रहते हुए यह लगभग 65 वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(1020) — इस जन्माङ्ग चक्र का स्वामी सुन्दर, बलवान, भाग्यवान, मनस्वी तथा उच्चाकांक्षाओं से सम्पन्न होता है। इसका हृदय जितना विशाल होता है, कार्यक्षेत्र भी उतना ही विस्तृत होता है। यह सभी को प्रभावित करने वाला तथा सर्वत्र यश-सम्मान, श्रद्धा तथा स्नेह प्राप्त करने वाला होता है। इसका विवाह 22 वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला, आज्ञाकारिणी तथा सहयोग करने वाली होती है। उसे भी अपने पति की भाँति ही अत्यधिक सम्मान प्राप्त होता है। वह लोकोपकारी कार्यों में संलग्न रहकर सुयश-भागिनी बनती है। जातक का भाग्योदय 32 वर्ष की आयु से पूर्व ही हो जाता है तथा निरन्तर उन्नति के पथ पर अग्रसर होता रहता है। यह महापुरुष के रूप में दीर्घकाल तक अपने कुल, समाज तथा देश को प्रभावित करता हुआ सुयश प्राप्त करता है तथा लगभग 80 वर्ष की आयु तक जीवित बना रहता है।

भृ० सं० ३३३

कु० २०

(१०२१) — इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर तथा कोमल शरीरवाला, उदार विचारों का, गुणवान् तथा विद्वान् होता है। यह आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होता है, तथापि धन का अभाव बना रहता है। यह परदेश में रह कर जीविकोपार्जन करता है तथा नीचों की संगति में सुख का अनुभव करता है, उनके निर्देशानुसार कार्य करते हुए जीवन बिताता है। इसे जल से भय रहता है, तथापि जल से ही लाभ भी उठाता है। परस्त्रियों के प्रति इसका विशेष लगाव रहता है तथा अपने आवश्यक कार्यों की उपेक्षा करके भी उनके प्रति पागल बना रहता है। २२ वर्ष की आयु में इसका विवाह हो जाता है, तथापि अपनी पत्नी से सन्तुष्ट नहीं हो पाता। ३५ वर्ष की आयु में यह नौकरी छोड़ कर कोई व्यवसाय आरम्भ करता है, परन्तु उसमें सफलता नहीं मिलती, तब इसे पुनः किसी की नौकरी करनी पड़ती है। इसका जीवन अपना साधारण ढंग से बीतता है। पूर्णायु लगभग ७० वर्ष की होती है।

(१०२२) — इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, स्वस्थ, सुखी तथा विद्वान् होता है। यह पेशे से चिकित्सक हो सकता है। इसकी आय के साधन निम्नश्रेणी के लोग होते हैं। यह वाक्पटु-चतुर होते हुए भी लोगों पर सहज ही विश्वास कर लेता है, फलतः विश्वासघात का शिकार भी बनता है। परन्तु विश्वासघात का इस पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता, क्योंकि इसे लाभ का मज़बूत योग बना रहता है। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में होता है, तथापि यह अन्य स्त्रियों से भी सम्बन्ध बनाये रखता है। भाग्योदय २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। तदुपरान्त यह निजी भवन भी बनवा लेता है। परस्त्रियों द्वारा इसके धन की हानि भी होती है। इसके जीवन के ३२, ३५, ३८ तथा ४२ वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। स्वास्थ्य प्रायः ठीक बना रहता है। इसकी मृत्यु लगभग ८० वर्ष की आयु में, परदेश में होती है।

(२०२३) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, गुणी, गुणग्राहक, दूसरों का भला चाहने वाला, माया-मोह से मुक्त तथा विपुल सम्पत्तिशाली होता है। इसका विवाह १९ से २१ वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है, तथापि यह पर-स्त्रियों में भी अनुरक्त बना रहता है। अनेक बार गर्भपात हो जाने के बाद इसे एक सुन्दर पुत्र का लाभ होता है और यदि वह जीवित रहे तो कुलदीपक सिद्ध होता है। राज्य तथा शत्रुओं से इसे कष्ट प्राप्त होता है तथा धन की हानि भी होती है। तथापि अपने अध्यवसाय के बल पर यह अत्यधिक धन संग्रहीत कर लेता है। इसका भाग्योदय ३५ से ३७ वर्ष की आयु के बीच परदेश में होता है। इसे पत्नी-वियोग का दुःख भी सहन करना पड़ता है। जीवन के ३५, ३७, ३८, ४३, ५०, ५४, ५८ तथा ६१वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। यह वृद्धावस्था में वातरोग से पीड़ित होता है तथा लगभग ८० वर्ष तक जीवित रहता है।

(२०२४) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति श्याम-गौरवर्ण, लम्बे तथा उलझे हुए केशों वाला, क्रोधी स्वभाव का तथा पराक्रमी होता है। इसे शत्रु-पक्ष से कुछ कठिनाई मिलती है, परन्तु वे इसे कुछ समय तक अशान्ति देने के अतिरिक्त और कुछ नहीं बिगाड़ पाते। इसका विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में हो जाता है। स्त्री सुन्दरी तथा श्रेष्ठ स्वभाव की मिलती है। यह उसके प्रति अनुरक्त बना रहता है। इसका भाग्योदय २६ से २८ वर्ष की आयु में होता है। परदेश में रहकर यह प्रचुर धन कमाता है। मान-प्रतिष्ठा भी खूब उपलब्ध होती है। यह नीच कार्यों की सेवा करके भी अपने व्यक्तित्व को उन्नत तथा उज्ज्वल बनाये रखता है। जीवन के ३०, ३५, ४० तथा ४६वें वर्ष विशेष घटनापूर्ण रहते हैं। पत्नी तथा सन्तान से यथेष्ट सुख मिलता है तथा सम्पूर्ण जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होता है। आयु लगभग ७० वर्ष होती है।

भृ० सं० 2333

कु० २०

(२०२५)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर स्वरूपवान, स्वच्छ शरीर, प्रियवक्ता, अवसरानुकूल बात करने वाला तथा लोक-व्यवहार में अत्यन्त कुशल होता है। यह अपने शत्रु तथा मित्र की पहिचान रखने वाला, साहित्यकार, कवि, कलाकार तथा विद्वान् होता है। यह सर्वत्र सम्मान तथा सुयशप्राप्त करता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी अत्यन्त सुन्दरी, समझदार, गुणवती, मनस्विनी तथा पण्डिता होती है। इसका भाग्योदय बचपन से ही आरंभ हो जाता है, जिसका पूर्ण विकास ३५ वर्ष की आयु में होता है। यह जीवन पर्यन्त उन्नति करता चला जाता है तथा विपुल ऐश्वर्य का स्वामी बनता है। इसे खान-पान से सुख-शान्ति, राजपक्ष से सम्मान तथा समाज से लोकप्रियता प्राप्त होती है। जीवन के २२, २८, ३२, ४१, ४६, ४८, ५२, ५६ तथा ६२वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। इसकी पूर्णायु ८० से ९० वर्ष तक होती है।

(२०२६)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर तथा स्वच्छ शरीर का, वाक्पटु, गुणवान्, विद्वान् तथा प्रतिभाशाली होता है। यह छोटे-बड़े भाइयों से सुख, परिवार से सुख पाने वाला, बड़ी बहिन से विभिन्न प्रकार की सहायता तथा स्नेह पाने वाला एवं श्रेष्ठ विद्या का लाभ पाने वाला होता है। इसका विवाह २२ से २४ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है। वह स्वभाव से रसिक, कलाकार तथा अनेक विद्याओं की जानकार होती है। यह जातक अपनी आजीविका एक से अधिक कार्यों द्वारा चलाता है, फलतः इसके पास धन की कोई कमी नहीं रहती। इसका भाग्योदय २८ वर्ष की आयु से होता है, जो इसे सामान्य-स्थिति से बहुत ऊपर उठा ले जाता है। जीवन के ३५, ४०, ४२, ४५, ४८ तथा ५० वें वर्ष अत्यधिक महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। यह आजीवन सुखी रहता है तथा लगभग ८० वर्ष से अधिक की आयु प्राप्त करता है।

भु० सं० 3323

कु० र०

(२०२७) - इस जन्माङ्ग चक्र वाला मनुष्य सुन्दर, श्यामवर्ण, मोहक आकृति वाला, घोर संकटों तथा कठिनाइयों में भी विचलित न होने वाला धीर-गंभीर तथा भाग्य का धनी होता है। यह उदार, लोकप्रिय तथा राज्य द्वारा सम्मानित होता है। यह अपने ननिहाल पैतृक-आवास में जन्म लेता है; परन्तु स्वपराक्रम से निर्मित विशाल भवन में जीवन व्यतीत करता है। इसका विवाह लगभग २४ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, विदुषी तथा लोक-व्यवहार में कुशल होती है। वह सम्पत्तिवान तथा भूमि-भवन की स्वामिनी भी बनती है। जातक का भाग्योदय भी विवाह के उपरान्त ही होता है और यह उत्तरोत्तर अधिकाधिक धन-सम्पत्ति अर्जित करता चला जाता है। यह कलाओं का ज्ञाता, उपदेशक, अपनी बात को मनवा लेने वाला तथा यशस्वी होता है। पति-पत्नी दोनों ही सुखी-जीवन बिताते हुए लगभग ६० वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करते हैं।

(२०२८) - इस जन्माङ्ग चक्र वाला मनुष्य तेजस्वी, सुन्दर, हृष्ट-पुष्ट, विद्या-बुद्धि सम्पन्न, मनस्वी तथा लोक-पूजित होता है। यह सब की सहायता के लिए तत्पर, अत्यधिक उदार, वाक्पटु तथा सदैव सुखी रहने वाला होता है। विद्या का विशेष लाभ होता है। इसका विवाह लगभग २० वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी मनोहर तथा मनोनुकूला होती है। उससे सब प्रकार का सहयोग प्राप्त होता है। इस जातक की वाणी सुनने के लिए लोग लालायित बने रहते हैं। इसका भाग्योदय बाल्यकाल से ही आरंभ हो जाता है तथा माता-पिता भी इसका नाम लेकर लाभ उठाते रहते हैं। यह अपने आश्रित लोगों के लिए पितातुल्य आदरणीय होता है। यह अनेक उच्च पदों को सुशोभित करता तथा अनेक प्रकार के सम्मान प्राप्त करता है। देश-विदेश की यात्राएँ करता हुआ तथा सुखी जीवन बिताता हुआ यह लगभग ८४ वर्ष की आयु तक जीवित रहता है।

(१०२९) - इस जन्माङ्ग चक्र का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, प्रभावशाली तथा स्वार्थी वृत्ति का होता है। इसकी मित्रता चिरस्थायी नहीं होती। स्वार्थ-सिद्धि न होने पर इसका व्यवहार रूखा हो जाता है। इसका मधुर-व्यवहार प्रायः दिखावटी ही होता है। सामान्यतः यह धनी, मानी तथा उच्च पदासीन हो सकता है। यह सरकारी विभाग में अथवा किसी अन्य प्रतिष्ठान में उच्चपद पर कार्यरत रहते हुए सफलता प्राप्त करता है। शिक्षा का लाभ श्रेष्ठ होता है। इसका विवाह २२ से २४ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा इसे वशीभूत रखने में सक्षम होती है। यह अपनी पत्नी की सलाह का सम्मान करता एवं तदनुसार आचरण भी करता है। इसके शत्रु भी बहुत होते हैं, परन्तु वे छिपे रहते हैं और इसका कुछ बिगाड़ भी नहीं पाते। जीवन के ३५, ३७, ३८, ४२, ४५ तथा ५६ वें वर्ष उतार-चढ़ाव के होते हैं। पूर्णायु लगभग ८० वर्ष की होती है।

(१०३०) - इस जन्माङ्ग चक्र का अधिपति सुन्दर, स्वस्थ, गुणी, चतुर तथा सर्वत्र सम्मान पाने वाला होता है। यह उच्च कुल में जन्म न लेकर भी किसी उच्चकुल में 'दत्तक-पुत्र' के रूप में जाता है। शिक्षा का यथेष्ट लाभ मिलता है। विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, विदुषी तथा प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करने वाली होती है। यह निम्न स्तर के लोगों पर शासन करता तथा उन्हें अपने अनुकूल चलाने की क्षमता रखता है। इसके पास धन तथा सम्पत्ति की कोई कमी नहीं होती। इसे राज्याश्रय भी प्राप्त होता है। इसकी आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं, अतः आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। इसका भाग्य ३५ से ४० तथा ५० से ५५ वर्ष की आयु में विशेष प्रबल रहता है। यह आजीवन सुख भोगता है तथा शरीर से भी प्रायः नीरोग बना रहता है। यह ७० से ८० वर्ष तक की आयु प्राप्त करता है।

२३३ सं० भु०

(१०३१)- इस जन्मांग; चक्र का स्वामी स्वस्थ, सुन्दर, तेजस्वी तथा लोक-विख्यात होता है। इसका जन्म सम्पन्न परिवार में होता है। अतः बाल्यावस्था से ही इसे सब प्रकार के सुख उपलब्ध बने रहते हैं। यह अपने जीवन में बड़े-बड़े काम करता है। पर-स्त्री तथा पराया-धन प्राप्त करने के इसे अनेक अवसर मिलते हैं, जिनका यह भरपूर लाभ उठाता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी कुमारकाय, परन्तु कमनीय एवं आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्ना होती है। इसका भाग्योदय बाल्यावस्था से ही होता है। यह निम्न स्तर के लोगों के साथ भी कार्य करके लाभ उठाता है। इसके जीवन के ३५, ४०, ४६ तथा ४८ वें वर्ष विशेष ख्याति देने वाले सिद्ध होते हैं। इसे सन्तान तथा परिवारीजनों का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है तथा शरीर भी प्रायः नीरोग ही बना रहता है। यह देश-विदेश का भ्रमण करता है तथा ७५ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१०३२)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी अत्यन्त सुन्दर, चतुर, बुद्धिमान तथा सुवक्ता होता है। इसकी वाणी बड़ी प्रभावशालिनी होती है, जिसे सुनने वाले इसके अनुगत हो जाते हैं। यह मेधाशक्ति सम्पन्न तथा प्रतिभा एवं प्रभावशाली होता है। इसे बाल्यावस्था से ही सुख प्राप्त होता है, अतः इसका भाग्योदय भी बचपन से ही आरम्भ हुआ मानना चाहिए। यह मन का उदार होने के कारण अपने से छोटे कुल की कन्या के साथ विवाह करता है। यह विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है तथा सब लोग उसकी प्रशंसा करते हैं। इसकी सुन्दरी पत्नी गुणवती, वंश-वृद्धि करने वाली, सेवा परायण तथा अत्यधिक सुख देने वाली सिद्ध होती है। इसे स्वयं भी सर्वत्र सम्मान प्राप्त होता है। जातक के जीवन के २२, २८, ३२, ३६, ४२, ५४ तथा ६२ वें वर्ष महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। सारा जीवन सुख से बीतता है तथा लगभग ८० वर्ष की आयु प्राप्त होती है।

कु० र०

(१०३३)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति स्वभाव: सुन्दर, भावुक, सुख से दुःख छिपाने वाला, अल्प क्रोधी, उदार, साहित्य-संगीत आदि ललित कलाओं में रुचि रखने वाला तथा विभिन्न क्षेत्रों में भ्रमण करने वाला होता है। इसका चेहरा गोल, ललाट उन्नत, किन्तु केश तथा देहयष्टि आकर्षक होती है। इसको विद्या का उत्तम लाभ मिलता है। विवाह लगभग २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, गुणशालिनी तथा मनोनुकूला होती है। वह अधिक शान्त-स्वभाव की, व्यवहार-कुशल तथा विचारवान भी होती है। वह जातक के आलसी स्वभाव को जानकर, उसे प्रत्येक क्षेत्र में अपना पूरा-पूरा सहयोग प्रदान करती है, फलतः ३५ वर्ष की आयु तक यह जातक हजारों के ऐश्वर्यों के समान हो जाता है। यह यात्राओं द्वारा धनोपार्जन करता है तथा व्यर्थ के कामों में खर्च भी खूब करता है। शारीरिक स्वास्थ्य प्रायः जीवनभर उत्तम बना रहता है तथा ७० से ८० वर्ष की आयु में आकस्मिक मृत्यु पाता है।

(१०३४)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, क्रोधी स्वभाव का, परन्तु धार्मिक प्रवृत्ति का होता है। क्रोध आने पर यह उचित-अनुचित का विचार नहीं करता। साधारणतः यह शक्ति का उपासक होता है तथा पुरुषार्थ के बल पर ही अपनी जीवन-यात्रा तय करता है। यह अनेक लोगों को अपने अनुशासन में रखता है। फलतः इसके अपने ही लोग इसके शत्रु बन जाते हैं तथा गुप्त रूप से नुकसान पहुँचाने का प्रयत्न करते हैं। यह अपने छोटे-बड़े भाइयों से सुख-सहयोग प्राप्त करता है। इसका विवाह २२ से २४ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य-सुख तथा सन्तान-सुख उत्तम रहता है। पत्नी मनोनुकूला मिलती है। भाग्योदय ३० वर्ष की आयु में होता है। जीवन के ३५, ४०, ४५, ५५ तथा ६० वें वर्ष विशेष सम्मान तथा धन-ऐश्वर्य देने वाले सिद्ध होते हैं। राजनीति में भी यह रुचि लेता है। देश-विदेश की यात्राएँ करता है तथा ७०-८० वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(१०३५)– इस जन्म कुण्डली वाला जातक सुन्दर, भावना-प्रधान तथा शीघ्र निर्णय लेने वाला होता है। यह दूसरों की बातों में शीघ्र आ जाता है, परन्तु हानि नहीं उठाता। इसका मन तथा मस्तिष्क अत्यधिक क्रियाशील रहते हैं, उनके भीतर-ही-भीतर तर्क-वितर्क चलते रहते हैं। यह संगीत में अभिरुचि रखने वाला तथा धन-सम्पन्न होता है। यह अपने धन का सदुपयोग तथा दुरुपयोग – दोनों ही करता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में हो जाता है, परन्तु सकुशल है दक्ष एवं मनोऽनुकूल पत्नी पाकर भी इसे दाम्पत्य-सुख नहीं मिलता, क्योंकि पत्नी प्रायः रुग्णा बनी रहती है। सन्तान-पक्ष की ओर से भी यह दुःखी रहता है। इसका भाग्योदय ३० वर्ष की आयु से होता है तथा ४० वर्ष की आयु तक यह पर्याप्त धन-संचय कर लेता है। इसे धन बचाना भी खूब आता है। ४० तथा ४५ वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। यह लगभग ६० वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(१०३६)– इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है, तथा किशोरावस्था में रोग-ग्रस्त होकर कष्ट भी उठाता है। यह अत्यन्त मनस्वी, रचनात्मक कार्यों में लगा रहने वाला तथा अन्तर्मुखी प्रकृति का होता है। यह अपने स्वार्थ के प्रति सदैव सावधान रहता है। विद्याध्ययन में इसका मन खूब लगता है, अतः यह विद्वान् भी होता है। यह माता, पिता तथा बड़े भाई के सुख से छोटी आयु में ही वंचित हो जाता है। विवाह २० से २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोऽनुकूल मिलती है। भाग्योदय २५ से ३० वर्ष की आयु के बीच होता है तथा ३२ वर्ष की आयु के बाद अवनति भी होती है। उन्नति तथा अवनति का क्रम तीन बार चलता है। अन्त में सामान्य-सुखी-जीवन बीतता है। यह राज्याश्रित सेवा करने वाला होता है तथा जीवन में अनेक बार आर्थिक-संकटों का सामना करता है। इसकी परमायु लगभग ६२ वर्ष की होती है।

(१०३७) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी गौरवर्ण, उन्नत ललाट, सुन्दर चिह्न एवं नेत्रों वाला, धीर-गंभीर-मधुर-स्वभाव का, हँसमुख, क्रियाशील तथा अपने आस-पास के वातावरण को प्रफुल्लित बनाये रखने वाला होता है। यह अपनी धुन का पक्का होता है तथा जो निश्चय कर लेता है, उसे पूरा करके ही दम लेता है। इसका विवाह कुछ विलम्ब तथा कठिनाइयों के साथ होता है। पत्नी रुग्णा तथा क्रोधी स्वभाव की मिलती है, परन्तु विवाहोपरान्त कुछ समय बाद स्वस्थ भी हो जाती है, फिर भी इसका दाम्पत्य-जीवन उल्लासपूर्ण नहीं रहता। सन्तान-पक्ष से भी विशेष सुख नहीं मिलता। यह धन प्राप्ति के लिए सदैव चिन्तित बना रहता है तथा धन की कमी न होने पर भी, उसे बढ़ाने हेतु निरन्तर प्रयत्नशील बना रहता है। यह स्वभाव से अत्यन्त कृपण होता है तथा निरन्तर धन कमाता रहता है। जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव आते हैं। जीवन के अन्तिम काल में कुछ सम्मान भी पाता है। विवाह २८ वर्ष की आयु में तथा पूर्णायु ६० वर्ष।

(१०३८) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति शान्त, धीर, उदार, विशाल हृदय का, स्वस्थ, सुन्दर-उन्नत नासिका तथा सुन्दर आँखों वाला, प्रशस्त ललाट वाला, विद्वान् तथा गुणवान् होता है। यह अनेक कलाओं का ज्ञाता, राज्य द्वारा सम्मानित तथा सेवा-कार्य में चतुर होता है। यह नेतृत्व गुण-सम्पन्न होता है। इसका विवाह कुछ विलम्ब से, लगभग ३० वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। भाग्योदय ३२ वर्ष की आयु से होता है तथा ४५ वर्ष की आयु में पूर्ण उन्नति कर लेता है। भविष्यत्-जीवन भी उन्नतिशील बना रहता है। इसका धन अनेक कार्यों में खर्च होता है। यह दूसरों के प्रभाव में आकर भी धन का अपव्यय करता है। सन्तान-सुख कम रहता है। व्यक्तियों द्वारा अपनी प्रशंसा सुनकर प्रसन्न होता तथा उनपर धन भी खर्च करता है। जीवन के ३८ एवं ४७वें वर्ष आर्थिक-अभाव के रहते हैं। रोग-पीड़ा भी होती है। पूर्णायु ६८ से ७० वर्ष की होती है।

(१०३९) — इस जन्मकुण्डली का स्वामी लम्बे कद, सबल शरीर तथा रूखे केशों वाला, सामान्यतः सुन्दर एवं चतुर होता है; परन्तु खर्च करने में यह स्त्रियों जैसा आचरण करता है। यह स्वयं को बुद्धिमान् समझ कर नवीन कार्यों में रुचि लेता है तथा उनसे धन कमाने की अपेक्षा हानि ही उठाता है। इसका विवाह विलम्ब से होता है तथा पत्नी का पूर्ण सुख भी प्राप्त नहीं होता। यह पत्नी के कारण दुःखी रहता है। सन्तान-सुख भी सामान्य ही रहता है। इसका भाग्योदय ३० वर्ष की आयु में होता है, तब से यह उचित मार्ग पर चलता हुआ धनोपार्जन तथा धन का संचय भी करता है। जीवन के ४०, ४५ तथा ५२ वें वर्ष धन-हानि के होते हैं, परन्तु कुछ समय पश्चात् ही आर्थिक-स्थिति पुनः सुदृढ़ हो जाती है। यह भोग-विलास में विशेष रुचि रखता है तथा उसमें भी धन का अपव्यय करता है। इसकी पूर्णायु ६५ से ६८ वर्ष के मध्य ही रहती है।

(१०४०) — इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर रूपवान्, अनेक कलाओं से युक्त, उन्नत स्वभाव का तथा धार्मिक-विषयों का ज्ञाता होता है। यह अपने बन्धु-बान्धवों तथा साथियों के प्रति विशेष उदार होता है। इसकी रुचि मैत्री तथा स्वभाव आनन्दी होता है। यह सादा जीवन बिताने वाला, अपने धन को दूसरों के हित हेतु व्यय करने वाला तथा परोपकारी होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल प्राप्त होती है। इसका भाग्योदय ३५ वर्ष की आयु से होता है। उसी अवधि से यह सर्वत्र मान-प्रतिष्ठा भी प्राप्त करने लगता है। यह अपने छोटे तथा बड़े भाइयों से स्नेह-सहयोग प्राप्त करता है। आयु के ५० तथा ५६ वें वर्ष कष्ट-कारक सिद्ध होते हैं। जीवन का शेष समय सुख-शान्ति से व्यतीत होता है। इसकी आर्थिक-स्थिति सदैव सुदृढ़ बनी रहती है। पूर्णायु लगभग ६८ वर्ष की होती है।

(१०४१)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर तथा हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला, स्वस्थ, नीरोग, बन्धु-बान्धवों से पुरस्कृत तथा उनसे सम्मान पाने वाला, स्वभाव से शुष्क तथा सीधा-सपाट, परन्तु कड़वी बात कहने वाला होता है। यह अपनी धुन का पक्का तथा गुप्त रूप से परोपकार करने वाला होता है। सामान्यत: यह क्षुद्र-स्वभाव का प्रतीत होता है, परन्तु यथार्थ में यह अत्यधिक उदार तथा सबका भला चाहने वाला होता है। यह निम्न श्रेणी के लोगों के सम्पर्क में आता और उनसे लाभ भी उठाता है। यह जुए का शौकीन भी होता है तथा जुए में प्रत्येक लाभ उठाता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु तक हो जाता है। दाम्पत्य तथा सन्तान-सुख उत्तम रहता है। भाग्योदय २५ वर्ष की आयु से होता है। यह शत्रुओं से तथा मुकदमेबाजी आदि से भी लाभ उठाता है। इसका आचरण विवादास्पद बना रहता है, तथापि यह किसी की चिन्ता नहीं करता। आर्थिक-स्थिति उत्तम रहती है। पूर्णायु ६७ वर्ष होती है।

(१०४२)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर आकृति वाला, स्वस्थ, प्रभावशाली, धनवान् पुरुषार्थी तथा उद्यमी होता है। यह सट्टा आदि कार्यों से धन कमाता है। ४५ से ५० वर्ष की आयु में इसे आर्थिक-हानि भी होती है, परन्तु तभी दूसरे स्रोतों से आर्थिक-स्थिति पुनः स्थिर हो जाती है। इसकी बुद्धिमत्ता प्रशंसनीय होती है। इसका विवाह २० से २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुशील तथा सहयोगिनी मिलती है। वह प्रत्येक कार्य में इसकी सहायक तथा बुद्धिमती होती है। इसे पैतृक-सम्पत्ति का लाभ भी होता है। यह कलात्मक वस्तुओं को संगृहीत करने में रुचि रखता है। इसके जीवन के ४०, ४५, ४८ तथा ५२ वें वर्ष कष्टकारक सिद्ध होते हैं। विद्या तथा सन्तान का सुख उत्तम रहता है। समाज में मान-प्रतिष्ठा भी प्राप्त करता है। आर्थिक-स्थिति सामान्यतः ठीक बनी रहती है। पूर्णायु ६८ से ७० वर्ष के बीच होती है।

(१०४३) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, गुणी, प्रतिभाशाली, राज्य द्वारा सम्मानित एवं श्रेष्ठ लोगों से सम्बन्ध रखने वाला होता है। इसे राज्य से आजीविका भी प्राप्त होती है। यह साहित्य में रुचि रखने वाला, कलाओं का ज्ञाता तथा सर्वत्र मान-प्रतिष्ठा पाने वाला यशस्वी होता है। इसे २५ वर्ष की आयु में बड़े नाटकीय ढंग से सुन्दर तथा मनस्वी पत्नी का लाभ होता है। यह मित्रों के सहयोग से लाभ उठाता है तथा इसके कार्य में स्त्रियाँ विशेष सहायक सिद्ध होती हैं। २५ वर्ष की आयु से इसका भाग्योदय होता है, तत्पश्चात यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। इसे आकस्मिक रूप से चोट लगने का भय भी उपस्थित होता है तथा दुर्घटनावश मृत्यु हो जाने की सम्भावना भी रहती है। यदि दुर्घटना से जीवित बच जाय तो यह ५५ से ५८ वर्ष तक की अथवा इससे कुछ अधिक आयु भी प्राप्त कर सकता है। सन्तान का सुख सामान्य व विद्या का लाभ यथेष्ट होता है। आर्थिक स्थिति मध्यम श्रेणी की रहती है।

(१०४४) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी अत्यन्त सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, गुणवान्, विद्वान् तथा लोक-सम्मानित होता है तथापि यह एक प्रकार की हीन-ग्रन्थि से पीड़ित रहने के कारण स्वयं को कभी सुखी अनुभव नहीं कर पाता। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला होने पर भी इसका दाम्पत्य-जीवन सुखमय नहीं होता, इसका कारण आमदनी से खर्च का अधिक होना रहता है। इसकी सन्तानें कठिनाई से होती हैं और प्रायः जीवित नहीं बचतीं। यदि कोई बालक जीवित बच जाय तो वह अत्यन्त भाग्यशाली होता है। इसका भाग्य सदैव एक सा बना रहता है। इसके बड़े सामान्य से उतार-चढ़ाव ही आते हैं। इसे किसी दुर्घटना से चोट लगने तथा आकस्मिक-अपघात की सम्भावना भी रहती है। इसका सम्पूर्ण जीवन अत्यन्त सामान्य व्यतीत होता है। यदि अपघात से बचे तो पूर्णायु ५५ से ५८ वर्ष हो सकती है।

(२०४५) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति पुष्ट शरीर, ऊँचे कद वाला, सुन्दर, सुखी, उदार तथा दूसरों के दुःख से दुःखी होने वाला होता है। यह अनेक विद्याओं का ज्ञाता, पण्डित, ज्ञानी तथा विद्या के बल पर ही प्रचुर धनोपार्जन करने वाला होता है। यह अपनी विद्या-बुद्धि के प्रयोग से नवीन कार्यों में सफलता प्राप्त करता तथा महान् ख्याति अर्जित करता है। यह ऊँच-नीच का भेद नहीं मानता, अपितु निम्न वर्गों के लोगों से विशेष लगाव रखता है और उनकी भलाई के लिए प्रयत्नशील बना रहता है। इसे अपने जीवन में अनेक मित्रों का संसर्ग तथा सहयोग भी प्राप्त होता है, तथापि यह अपने चरित्र को गिरने नहीं देता। इसका विवाह 20-22 वर्ष की आयु में होता है तथा दाम्पत्य-जीवन सुखमय बना रहता है। भाग्योदय 20 वर्ष की आयु से ही आरम्भ हो जाता है तथा वृद्धावस्था के अन्त तक सुखी-जीवन व्यतीत करता है। यह किसी बड़े प्रतिष्ठान का प्रधान पद पाता है। पूर्णायु ८० वर्ष होती है।

(२०४६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर शरीर, लम्बे कद का, मनोहर केश, कोमल स्वभाव, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, गौरवर्ण तथा मधुरभाषी होता है। यह अनेक गुणों से युक्त, महापंडित, शत्रु-पक्ष से भी आदर पाने वाला, उपदेशक, वक्ता अथवा आचार्य पद पर प्रतिष्ठित होता है। यह अपनी विद्या के बल पर प्रचुर धनोपार्जन करता है तथा व्यवसाय आदि से भी आर्थिक लाभ उठाता है। इसका विवाह 20-22 वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, विदुषी, सुलक्षणा, मधुरभाषिणी तथा मनोऽनुकूला मिलती है। सन्तान का सुख भी उत्तम रहता है। यह अपनी उदार प्रकृति के कारण शत्रु तथा मित्र- दोनों का भला करता है। यह बन्धन-रहित स्वतन्त्र-जीवन जीता है तथा आजीवन सौभाग्यशाली, महाधनी, सुखी तथा यशस्वी बना रहता है। सैकड़ों लोग इसके अनुगत होते हैं। यह ६० वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१०४७) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति सामान्यत: सुन्दर, स्वस्थ, अत्यन्त चतुर, बड़ी सूझबूझ वाला, कृपण स्वभाव का, ईश्वर के प्रति अविश्वासी तथा पुरुषार्थ पर भरोसा करने वाला एवं अपने उद्यम के बल पर ही अनेकानेक कार्यों को करने वाला होता है। इसकी कार्यपद्धति रहस्यमय होती है। अपने विचारों एवं संकल्पों को किसी पर प्रकट नहीं होने देता। धन की आमदनी अनेक स्रोतों से होती है, अत: कभी आर्थिक-कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ता। विद्या का यथेष्ट लाभ होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा कोमल स्वभाव की होती है। वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इसे सहयोग प्रदान करती है। इसका भाग्योदय ३० वर्ष की आयु से आरम्भ होता है। ५० वर्ष की आयु तक यह अपनी आर्थिक-स्थिति को सुदृढ़ बना लेता है। जीवन के २५, ५८ तथा ६२वें वर्ष कष्टकारक सिद्ध होते हैं। पूर्णायु ७० वर्ष से अधिक होती है।

(१०४८) - इस जन्मकुण्डली वाला जातक सुन्दर, स्वस्थ, धीर-गम्भीर, ज्ञानी, उदार-हृदय तथा दार्शनिक-प्रकृति का होता है। यह आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होता है तथा वृद्धावस्था में भी युवक जैसा दिखाई देता है। विवाह २० वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी सुन्दर, कमनीय तथा समझदार होती है। यह भूमि, पशु, रत्न आदि विषयों से सम्बन्धित व्यवसायों द्वारा आर्थिक-लाभ प्राप्त करता है। कार्य क्षेत्र मुख्यत: व्यवसाय न होकर, व्यवसाय जैसा ही होता है। सन्तान-सुख उत्तम रहता है। विदेश यात्राओं से यह लाभ उठाता है। इसकी भाग्योन्नति निरन्तर अग्रसर बनी रहती है। इसका रहन-सहन भी ऐश्वर्यपूर्ण होता है। समाज में मान-प्रतिष्ठा भी प्राप्त होती है। इसे सर्प, हिंसक-पशु अथवा चोरों से सदैव का भय रहता है और इन्हीं के द्वारा इसकी मृत्यु भी हो सकती है। सामान्यत: यह ७० वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१०४९) – इस जन्मांग चक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर तथा कोमल आकृतिवाला, चंचल, आकर्षक एवं धीर-गंभीर स्वभाव का होता है। यह सामान्य जनों के साथ रहने से प्रसन्नता का अनुभव करता है। यह राज्याश्रय प्राप्त करता है अथवा किसी प्रतिष्ठित संस्थान के उच्च पद पर आसीन होता है। यह अपने आस-पास रहने वाले व्यक्ति तथा बन्धु-बान्धवों के माध्यम से जीविकोपार्जन करता है। विद्या का यथेष्ट लाभ होता है। इसका विवाह 23-24 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती मिलती है। भाग्योदय 22 वर्ष की आयु से ही आरम्भ हो जाता है। जीवन के 28, 30, 35, 40 तथा 41 वें वर्ष हानिकारक सिद्ध होते हैं, परन्तु यह कठिनाइयों को पार कर, अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाये रखता है। इसे वन, पर्वत तथा अन्धकारपूर्ण स्थानों से बच कर रहना चाहिए अन्यथा कष्ट मिल सकता है और इसके कारण मृत्यु भी हो सकती है। पूर्णायु 70 वर्ष के लगभग होती है।

(१०५०) – इस जन्मांग चक्र का अधिपति सुन्दर, मनोहर रूपवान्, आकर्षक नेत्रों वाला, गंभीर विचारक तथा दूसरों के मनोभावों को पढ़ लेने वाला होता है। यह सिंह के समान पराक्रमी, अनेक प्रकार के भोग-विलासों से युक्त, पुरुषार्थ को ही ईश्वर समझने वाला तथा प्रायः नास्तिक विचारों का होता है। इसका विवाह 24 वर्ष की आयु तक हो जाता है। विद्या, दाम्पत्य-सुख तथा सन्तान सुख की पर्याप्त उपलब्धि होती है। यह अपनी विदुषी पत्नी को स्वयं से हीन समझ कर उपेक्षा/तिरस्कृत भी करता रहता है, परन्तु वह दृढ़ विचारों की होने के कारण बुरा नहीं मानती तथा अपने प्यारों और के वातावरण को सुमधुर बनाये रखती है। यह जातक विद्वान् तथा ज्ञानी होते हुए भी कभी-कभी अहंकारियों जैसा व्यवहार भी करता है। इसके मित्र प्रायः पर के लोग ही होते हैं। यह पर्याप्त सम्पत्ति अर्जित करता है तथा 68 से 70 वर्ष की आयु तक जीवित रहता है।

भृ० सं० 2008

कु० २०

(१०५१)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, शक्तिशाली, साहसी, दृढ़ चित्त वाला, पराक्रमी तथा उदार हृदय का होता है। यह सदैव नवीन कार्य करने का इच्छुक रहता है तथा कभी किसी जोखिम को उठाने से नहीं डरता। इसका सम्पूर्ण जीवन ही जोखिम भरा रहता है। यह हानि-लाभ की चिन्ता किये बिना ही दूसरों का काम करने में जुट जाता है। इसे अकस्मात ही सफलताएँ भी उपलब्ध होती हैं। इसे विद्या का यथेष्ट लाभ होता है। विवाह लगभग २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती होती है, तथापि यह उसकी उपेक्षा ही करता रहता है। विवाहोपरान्त इसका भाग्योदय होता है तथा कई प्रकार के कार्यों एवं व्यवसायों द्वारा आर्थिक-लाभ उठाता है। यह निरन्तर उन्नति के पथ पर अग्रसर होता रहता है तथा धन का आगमन निरन्तर बना रहता है। जीवन के ३०, ३५, ३६, ३८, ४० तथा ४८वें वर्ष विशेष महत्त्वपूर्ण होते हैं। सामान्यतः यह ६० वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(१०५२)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति मध्यम कद का, सुन्दर, गुणवान तथा विद्वान होता है। यह धनी-मानी, उदार तथा दृढ़निश्चयी होता है। यह पैतृक-सम्पत्ति प्राप्त करता है तथा स्व-पराक्रम से भी विपुल सम्पत्ति अर्जित करता है। धन-संचय की लालसा कभी पूरी नहीं हो पाती। इसकी भाग्योन्नति बाल्यावस्था से ही आरम्भ हो जाती है तथा यह आजीवन उन्नति करता चला जाता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सहयोगिनी होती है। सन्तान-पक्ष से भी सुख प्राप्त होता है। जीवन के ३५, ३६, ४२ तथा ४६वें वर्ष कष्टप्रद रहते हैं। इसे अनेक बाधाएँ झेलनी पड़ती हैं तथा ४०, ४३ तथा ४४ वर्ष की आयु में कुछ समय के लिए स्थायी रूप से भी परदेशवास करना पड़ता है। विद्या का उत्तम लाभ प्राप्त होता है। मित्रों की संख्या अधिक रहती है। मान-प्रतिष्ठा भी खूब मिलती है। यह लगभग ८५ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

भु० सं० ३००८

कु० २०

(१०५३)— इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर रूप वाला, निर्लोभी-व्यवहार कुशल, मधुरभाषी तथा धीर-गंभीर स्वभाव का होता है। यह पैतृक-सम्पत्ति को प्राप्त करता है तथा स्वोपार्जित धन द्वारा भूमि क्रय करके उसपर आलीशान भवन भी बनवाता है, परन्तु इस निर्माण-कार्य में इसे हानि भी बहुत उठानी पड़ती है। इसे पिता का सुख अधिक नहीं मिलता, परन्तु यह पैतृक-व्यवसाय को आगे बढ़ाता है तथा उससे पर्याप्त धनोपार्जन भी करता है। व्यवसाय की देख-रेख में यह घर का ध्यान भी प्रायः भुला देता है। इसे कई व्यवसायों द्वारा लाभ होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है तथापि यह उसे भी अधिक समय नहीं दे पाता। पूर्ण धनी होते हुए भी यह पुत्रहीन रहता है। पुत्र-प्राप्ति हेतु यह अनेक उपाय करता है, तो भी मनोभिलाषा पूर्ण नहीं होती। यह अनेक सार्वजनिक प्रतिष्ठानों से सम्बद्ध रहता है तथा ८० वर्षीय यशस्वी जीवन प्राप्त करता है।

(१०५४)— इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर शरीर वाला, प्रियवादी, मधुरभाषी, उपदेशक तथा लोकप्रिय होता है। यह यशस्वी, परन्तु चंचल स्वभाव का होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा कर्तव्यपरायण होती है, तथापि यह पर-स्त्रियों में आसक्त होता है तथा उन्हीं कार्यों एवं व्यवसायों में रुचि लेता है, जिनमें स्त्रियाँ भी कार्य करती हों। सन्तान तथा विद्या का उत्तम सुख प्राप्त होता है। इसे धन का कभी अभाव नहीं रहता, क्योंकि अनेक स्रोतों से धनागम होते रहने के कारण आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। यह नवीन साहसिक कार्यों को करता है तथा राज्य द्वारा भी सम्मान एवं सहायता प्राप्त करता है। इसका भाग्योदय १६ वर्ष की आयु से ही हो जाता है तथा आकस्मिक रूप से धन-लाभ होता रहता है। इसके यश-सम्मान में भी निरन्तर वृद्धि होती चली जाती है। इसकी आयु ७५ वर्ष के लगभग होती है।

पृ० सं०

पृ० २०

(१०५५)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी दृढ़ शरीर का, सुन्दर, धीर, वीर, पराक्रमी, उदार प्रकृति का, मधुर भाषी तथा विशिष्ट-कलाप्रिय वाला होता है। यह अत्यन्त मोहक व्यक्तित्व वाला होते हुए भी वाणी में कभी-कभी कर्कशता एवं उग्रता ले आता है। यह जीवन में कुछ ऐसे कार्य भी करता है, जिन्हें अच्छा नहीं कहा जाता, परन्तु यह न चाहते हुए भी उन्हें करने को विवश होता है। इसकी आमदनी के स्रोत अनेक होते हैं तथा यह प्रचुर सम्पत्ति का स्वामी होता है। इसे राज्य द्वारा भी आजीविका प्राप्त होती है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुलक्षणा, सुशीला तथा सुन्दरी होती है। वह सब प्रकार से पति का अनुगमन करती है। इसका भाग्योदय स्वदेश में ही होता है तथा जीवन भर उन्नति होती चली जाती है। आयु के ३४ तथा ४५ वें वर्ष में कुछ कष्ट भी होता है। जमीन के क्रय-विक्रय से इसे विशेष लाभ होता है। इसकी पूर्णायु ६० वर्ष तक हो सकती है।

(१०५६)- इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य सुन्दर, धीर-वीर, गम्भीर, पराक्रमी तथा असाधारण साहसी होता है। यह किसी भी जोखिम के कार्य हेतु तय्यार हो जाता है। अपनी इस बहादुरी के कारण ही यह लोक-विख्यात होता है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, विदुषी तथा पति को पूर्ण सहयोग देने वाली होती है। भाग्योदय विवाहोपरान्त स्वदेश में ही होता है। ३५ से ४५ वर्ष की आयु में सर्वाधिक उन्नति प्राप्त करता है। इसे राज्य से भी सम्मान एवं आजीविका की उपलब्धियाँ होती हैं। यह भाई-बहिनों से युक्त होता है तथा इसकी सन्तानें भी बड़ी होनहार होती हैं। यह अपने पुत्रों के सहयोग से सुख प्राप्त करता है। धार्मिक कार्यों में धन खर्च करना इसे अच्छा लगता है। यह परोपकारी तथा दानी भी होता है। अपनी उदारता के कारण यह सर्वत्र सम्मान प्राप्त करता हुआ लगभग ६५ वर्ष की आयु तक जीवित रहता है।

भु० सं० १००४

कु० २०

(१०५७) – इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य अत्यन्त सुन्दर, प्रभावशाली, तेजस्वी, धीर-गंभीर तथा पराक्रमी होता है। यह जन्म से ही अत्यन्त सुखी-जीवन बिताता है एवं अपने पुरुषार्थ तथा उद्यम द्वारा निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। श्रेष्ठ वक्तृत्व-शक्ति सम्पन्न यह जातक पार्टी में पहुँचकर विशेष सम्मान प्राप्त करता है तथा सबके अपना प्रभाव स्थापित कर लेता है। इसे राज्य द्वारा सम्मान तथा सुख की उपलब्धि होती है। यह राजयोग से युक्त सब प्रकार के वैभव, विलास तथा सुख-सामग्रियों को प्राप्त करता तथा अपने शत्रुओं से भी धन-लाभ प्राप्त करता है। यह शत्रुओं का मान-मर्दन करने वाला तथा असहायों का सहायक होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दर, बुद्धिमती तथा मनोनुकूला मिलती है। कई बार गर्भ नष्ट होने के उपरान्त बड़ी कठिनाई से बड़ी आयु में एक पुत्र का लाभ होता है। सब प्रकार से सुखी होता हुआ यह ८० वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१०५८) – इस जन्म कुण्डली का अधिपति स्वस्थ तथा आकर्षक शरीर वाला, मोहक वाणी बोलने वाला, मद-रहित तथा परिवारजनों का प्रिय तथा सब प्रकार के ऐश्वर्यों से सम्पन्न होते हुए भी मन-ही-मन असन्तुष्ट तथा दुःखी बना रहने वाला होता है। यह अपने परिश्रम तथा बुद्धि-मत्ता से पैतृक-धन में विशेष अभिवृद्धि करता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है तथापि यह अन्य स्त्रियों से भी संबंध रखता है तथा सुन्दर-सुन्दर स्त्रियों का पर्याप्त उपभोग करता है। जीवन के ३८ तथा ४७ वें वर्ष में थोड़ा कष्ट भी उठाना पड़ता है, परन्तु सामान्यतः सम्पूर्ण जीवन बड़े आनन्द में बीतता है। यह घर-परिवार तथा समाज में सम्मानित स्थान प्राप्त करता है तथा अत्यन्त लोकप्रिय होता है। धन की कमी कोई कमी नहीं रहती। यह पुत्र-पौत्रों का यथेष्ट सुख भोगता हुआ ८० वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

मु० सं० ४०२८

कु० १०

(१०५९) – इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर एवं स्वस्थ शरीर वाला, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, शील-वान, धैर्यशाली, पुष्ट-बलवान, धर्म-प्रेमी, अनेक गुणों से युक्त तथा अनेक कलाओं का जानकार होता है। इसकी वाणी अत्यन्त प्रभावशाली तथा मनोमोहक होती है। यह अपनी वक्तृता के बल पर ही विशेष उन्नति करता हुआ उपदेशक, आचार्य, प्राध्यापक अथवा नेता के पद पर प्रतिष्ठित होता है। इसे किसी बड़े संस्थान में उच्चपद प्राप्त होता है तथा यदा-कदा थोड़ा कष्ट भी उठाना पड़ता है, यद्यपि उसमें भी यह आनन्द का ही अनुभव करता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है, पत्नी सुन्दरी एवं मनोरमा मिलती है। दाम्पत्य-सुख तथा सन्तान-सुख भी यथेष्ट उपलब्ध होता है। यह सर्वत्र सम्मान प्राप्त करता है तथा आर्थिक-स्थिति से सम्पन्न बना रहता है। इसे त्वचा रोग प्रायः होते रहते हैं, तथापि ८० वर्ष से अधिक की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१०६०) – इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, सुशील, लम्बे कद तथा दृढ़ शरीर वाला, ज्ञानी, गुणी तथा साहित्य-मर्मज्ञ होता है। यह स्वयं भी कवि हो सकता है। इसके यहाँ साहित्य गोष्ठियों आदि के आयोजन होते रहते हैं। इसे भाई-बहिन तथा पुत्र-पुत्रियों का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है। इसकी आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं, अतः यह सदैव धन-सम्पन्न बना रहता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में सुन्दरी तथा गुणवती स्त्री के साथ होता है। यह दाम्पत्य-सुख यथेष्ट मात्रा में प्राप्त करता है। समाज में इसे सब जगह प्रतिष्ठा एवं सम्मान की उपलब्धि होती है। माता तथा बड़े भाई का निधन इसके जीवन काल में सबसे पहले होता है, परन्तु पिता की मृत्यु वृद्धावस्था में होती है। यह स्वयं भी लगभग ८० वर्ष से अधिक की लम्बी आयु प्राप्त करता है और सामान्यतः नीरोग एवं सुखी बना रहता है।

भृ० सं० १०१३

कु० २०

(१०६१) – इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, मधुर स्वभाव का, गौर वर्ण, प्रभावशाली एवं प्रियवादी होता है। यह सामान्य स्थिति से ऊँचा उठता है तथा अपने परिश्रम एवं अध्यवसाय के बल पर समाज में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त कर लेता है। इसे पैतृक-स्थान में रहने का सौभाग्य प्राप्त होता है। यह अत्यन्त परिश्रमी तथा साहसी होता है, तथापि अनेक बार इसके धन की व्यर्थ हानि होती है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा प्रियभाषिणी होती है, तथापि यह पत्नी की ओर से दुःखी बना रहता है। सन्तान सुख सामान्य रहता है। यह स्वभाव से कृपण तथा धन-संग्रही होता है। इसकी आमदनी के स्रोत अनेक होते हैं। यह अग्नि और लोहे से सम्बन्धित पदार्थों द्वारा धन-लाभ करता है तथा किसी कारखाने की स्थापना करता है। इसका भाग्योदय २५-२७ वर्ष की उम्र से होता है। ४०, ४५ तथा ५६ वर्ष की आयु में कष्ट होता है। पूर्णायु ८० वर्ष की होती है।

(१०६२) – इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, धनवान, गुणवान, कलाओं का ज्ञाता, विद्वान तथा प्रियवादी होता है। इसका विवाह २६-२७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है, परन्तु सन्तान के लिए दुःखी रहता है। पत्नी से भी कभी-कभी मनमुटाव हो जाता है। यह राज्य द्वारा सम्मान तथा धन प्राप्त करता है एवं परदेश में जाकर भी धन कमाता है। यह अपने गुणों द्वारा लोगों को प्रभावित करता है तथा किसी अनजान एवं बाहरी व्यक्ति से मदद पाकर विपुल ऐश्वर्यशाली बनता है। यह धार्मिक कार्यों में अधिक खर्च करता है तथा ईश्वर-भक्ति की ओर विशेष झुकाव रखता है। जीवन के २५, २७, २९, ३४, ३६ एवं ४१ वें वर्ष इसके लिए धन-हानिकारक सिद्ध होते हैं, तथापि अपने उद्योग द्वारा यह बिगड़ी हुई आर्थिक स्थिति को सुधार लिया करता है तथा सुख भोगता हुआ ७५ से ७८ वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(२०६३)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, गौरवर्ण, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, परिवार का पालन-पोषण करने वाला, मधुर वाणी बोलने वाला तथा पैतृक-सम्पत्ति का उपभोग करनेवाला होता है। यह साहित्य में रुचि रखने वाला, ग्रन्थ-लेखक तथा उत्तम ख्याति प्राप्त करने वाला होता है। इसकी आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं, अतः यह आर्थिक-दृष्टि से सम्पन्न बना रहता है। इसका विवाह किसी प्रतिष्ठित कुल की कन्या के साथ २० से २२ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, व्यावहारिक-बुद्धि सम्पन्ना तथा युक्तियुक्त बातें करनेवाली होती है। विद्या तथा सन्तान-सुख काफी अच्छा प्राप्त होता है। यह राजकीय-सेवा में किसी उच्चपद को प्राप्त करता है तथा सर्वत्र सम्मान पाता हुआ ऐश्वर्यपूर्ण जीवन बिताता है। छोटी मोटी बातों का इस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इसका भाग्योदय बचपन से ही होता है तथा ७५ वर्ष की आयु तक सुखपूर्वक जीवित रहता है।

(२०६४)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, स्वस्थ, गुणी, अनेक प्रकार के सुखों से युक्त, धनी तथा परिश्रमी होता है। इसे सर्वत्र आदर तथा सम्मान की उपलब्धि होती है। यह परिवार का पालन-पोषण करनेवाला तथा अपने धन को परिवारीजनों पर व्यय करने वाला होता है। इसे स्त्री तथा पुत्र-दोनों का सहयोग प्राप्त होता है। यह परोपकारी, धार्मिक वृत्तिका तथा अनेक शुभ कार्यों को करनेवाला होता है। इसका भाग्योदय बचपन से ही हो जाता है तथा यह जीवन पर्यन्त आर्थिक-दृष्टि से सम्पन्न तथा सुखी रहता है। इसकी माता की मृत्यु इसकी उपेक्षा अथवा गलती के कारण हो सकती है। कभी-कभी यह छुद्र-बुद्धि का शिकार भी बनता है, परन्तु फिर जल्दी ही सँभल भी जाता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, शान्त तथा धार्मिक स्वभाव की होती है, जो जीवनभर साथ देती है। सन्तान-सुख भी उत्तम रहता है। पूर्णायु ८० वर्ष तक हो सकती है।

(२०६५) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, विद्वान, गुणी, उदार तथा सर्वत्र सम्मान पानेवाला होता है। यह साहित्य अथवा कला के क्षेत्र में पदार्पण कर, सबको प्रभावित करता है। इसे पैतृक-सम्पत्ति का यथेष्ट लाभ होता है। यह स्वयं अपने स्वभाव का तथा अपने सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को अनुकूल बना लेने की क्षमता वाला होता है। यह धनी घर में जन्म लेने के कारण बाल्यावस्था से ही सुख प्राप्त करता है तथा बड़ा होकर स्वयं किसी नवीन उद्योग की स्थापना कर अपनी आर्थिक-स्थिति को विशेष सुदृढ़ बना लेता है। यह महत्वाकांक्षी होता है और अपनी अभिलाषाओं की पूर्ति में सफलता भी प्राप्त करता है। इसका विवाह लगभग २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मनस्विनी, पतिव्रता तथा धर्मपरायणा होती है। दाम्पत्य-सुख के साथ ही सन्तान-सुख भी उत्तम रहता है। शारीरिक स्वास्थ्य भी उत्तम बना रहता है तथा लगभग ८० वर्ष की दीर्घायु प्राप्त होती है।

(२०६६) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, गौरवर्ण, मधुरभाषी तथा अपने सद्गुणों के कारण सर्वत्र आदर प्राप्त करने वाला होता है। इसे पैतृक-सम्पत्ति प्राप्त करने में विवाद का सामना करना पड़ता है, परन्तु अन्त में सफल भी होता है। यह मधुर कथन करने वाला, सफल व्यवसायी तथा स्वयं के प्रयत्नों से ही ऊँची स्थिति पाने वाला होता है। यह किसी अच्छे व्यावसायिक-प्रतिष्ठान का स्वामी अथवा संगठन का उच्च पदाधिकारी बनता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला होती है। दाम्पत्य-सुख तथा सन्तान-सुख उत्तम रहता है। भाग्योदय २५ वर्ष की आयु में होता है तथा ३५ वर्ष की आयु तक यह अत्यधिक उन्नति कर लेता है। इसे सर्वत्र सम्मान प्राप्त होता है। माता को कष्ट रहता है तथा पिता लम्बी आयु तक जीवित रहते हैं। पुत्र-पौत्रों पर कथमपि करता हुआ जातक लगभग ८० वर्ष की आयु में यह सुखपूर्वक मृत्यु प्राप्त करता है।

३३०३ सं.भु.

कु० २०

(२०६७)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, पराक्रमी, स्वस्थ, प्रतापी, गुणवान् तथा विद्या-बुद्धि का धनी होता है। यह बन्धु-बान्धवों से युक्त, पैतृक-सम्पत्ति प्राप्त करने वाला, कुटुम्बियों से प्रेम करने वाला तथा स्वयं भी सबसे स्नेह-सम्मान पाने वाला होता है। यह स्वभाव से तेजस्वी तथा भावुक-प्रकृति का होता है। अपनी इस प्रवृत्ति के कारण इसे कभी-कभी संकटों का सामना भी करना पड़ता है। यह किसी राज्याश्रित कार्य अथवा पद द्वारा लाभ उठाता है। इसकी माता तथा बड़े भाई का निधन जल्दी ही हो जाता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, मनोनुकूल तथा महत्वाकांक्षिणी होती है। वह समाज में मान-सम्मान प्राप्त करने की आकांक्षा रखती है तथा उसे प्राप्त भी करती है। इस जातक के कार्य अत्यन्त रहस्यमय होते हैं। यह २४ वर्ष की आयु से उन्नति करना आरंभ करता है तथा ७५ वर्ष की पूर्णायु तक निरन्तर उन्नति करता चला जाता है।

(२०६८)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, स्वस्थ, तेजस्वी, भावुक-प्रकृति का होते हुए भी आन्तरिक चिन्ताओं से सर्वदा ही पीड़ित रहने वाला, प्रत्येक परिस्थिति में असन्तुष्ट बना रहने वाला, अपने पुरुषत्व तक पर अविश्वास करने वाला तथा स्वयं को हीन अनुभव करने की प्रवृत्ति वाला होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी बुद्धिमती, सुन्दरी तथा गुणवती मिलती है। यह उससे सलाह लेकर ही प्रत्येक कार्य को करता है तथा इसका भाग्योदय भी विवाह के बाद ही होता है। जीवन के ३०, ३३, ३७ तथा ४२वें वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। सन्तान का आनन्द सुख मिलता है तथा भाग्योदय विवाह के बाद ही होता है। यह पत्नियों में रुचि रखने वाला तथा स्वयं भी कुछ-कुछ स्त्रैण-स्वभाव का होता है। इसके कार्य क्षेत्र अनेक होते हैं तथा आय के स्रोत भी अनेक रहते हैं। यह भूमि-भवन आदि का सुख भोगता हुआ ७५ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१०६९) – इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। यह स्वयं को सबसे ऊपर रखना चाहता है तथा प्रत्येक उच्चतम पद को प्राप्त करने का आकांक्षी रहता है। यह अपने प्रशंसकों की तलाश करता है तथा स्वयं के कुल के कारण हृदय के भीतर अहंकार का शिकार भी बना रहता है। इसका विवाह २६-२७ वर्ष की आयु में होता है। विवाह हो जाने पर इसे सुख प्राप्त होता है। पत्नी इसे अपने नियन्त्रण में रखने वाली, सुन्दरी तथा विदुषी होती है। यह उसके समक्ष स्वयं को हीन अनुभव करता हुआ मन-ही-मन खिन्न भी बना रहता है। अपनी विद्वता एवं ज्ञान के कारण यह लोगों से सम्मान भी प्राप्त करता है। इसका भाग्योदय २० वर्ष की आयु में होता है तथा जीवन के २९, ३८ एवं ४७ वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। यह विद्या तथा सन्तान का पर्याप्त सुख प्राप्त करता है तथा सामान्यतः लगभग ८० वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१०७०) – इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य अत्यन्त मनस्वी, महत्वाकांक्षाओं से युक्त, सुन्दर, पराक्रमी, स्वस्थ तथा तेजस्वी व्यक्तित्व वाला होता है। यह परिवार तथा धन-सम्मान से युक्त होता है। परन्तु इसके जन्म के समय माता-पिता आर्थिक-कठिनाइयों के शिकार बने रहते हैं। बाल्यावस्था बीतने पर इसे सुख मिलना आरम्भ होता है. परन्तु पिता का अल्प सुख मिलता है एवं माता तथा भाइयों से भी दुःखी ही रहता है। यह स्वपराक्रम से धनोपार्जन करता तथा उन्नति करता चला जाता है। विद्या का पर्याप्त लाभ होता है। विवाह २४ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सौभाग्यशालिनी तथा मनोनुकूला होती है। जीवन के २८, ३२, ३४, ४६ तथा ५२ वें वर्ष विशेष सुखदायक सिद्ध होते हैं। इसे बीमारियाँ प्रायः लगी रहती हैं, फिर भी यह ७० वर्ष के ऊपर की आयु प्राप्त करता है। आमदनी के अनेक साधन होने के कारण आर्थिक-स्थिति सामान्यतः अच्छी बनी रहती है।

भृ० सं० २८०८

कु० २०

(१०७१) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य सुन्दर, सुदृढ़ शरीरवाला, परन्तु पतले और लम्बे कद का, नास्तिक प्रकृति का तथा कफरोगी होता है। इसके पास धन-धान्य की कोई कमी नहीं रहती। यह अच्छे कार्यों में रुचि लेता है तथा अपने सौभाग्यशाली होने का पूरा-पूरा लाभ उठाता है। यह ऐसे व्यवसायों को करता है, जिनमें हानि होने की सम्भावना रहती है, तथापि यह उनसे भी लाभ प्राप्त करता है। इसका पहला विवाह 20-22 वर्ष की आयु में तथा दूसरा विवाह २८ वर्ष की आयु में होना सम्भव रहता है। दूसरी पत्नी से इसे यथेष्ट सुख मिलता है। इसे माता-पिता, भाई-बहिन तथा पुत्र-पुत्री - सभी का सुख प्राप्त होता है। परन्तु अपने विचारों के कारण यह स्वयं मन-ही-मन असन्तुष्ट तथा दुःखी बना रहता है। यह अनेक कार्यों से धन प्राप्त करता है। अतः इसकी आर्थिक-स्थिति उत्तम बनी रहती है। इसकी मृत्यु ७५ से ८० वर्ष के बीच होती है।

(१०७२) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी बाल्यावस्था में रोगी तथा बाद में स्वस्थ रहने वाला, शरीर से दुर्बल दिखाई देने वाला, सामान्य सुन्दर तथा अपने उत्थान एवं पुरुषार्थ द्वारा भाग्यवृद्धि करने वाला होता है। यह न तो भगवान पर विश्वास करता है और न किसी धार्मिक-सम्प्रदाय से जुड़ा रहता है। कई बार यह अपना काम निकालने के लिए निष्ठुरता का आश्रय भी लेता है और उन्हें धोखा भी देता है। यह छल-प्रपंच पूर्ण होते हुए भी समाज में सम्मान प्राप्त करता है। इसका भाग्योदय बचपन से ही हो जाता है तथा यह किशोरावस्था से ही धनोपार्जन करने लगता है। इसे माता का अल्पसुख मिलता है। यह गुप्त कार्यों द्वारा धन कमाता है। पढ़ने-लिखने में इसे अधिक रुचि नहीं होती। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है तथा दूसरा विवाह पहली पत्नी की मृत्यु के बाद लगभग ३० वर्ष की आयु में होता है। दूसरी पत्नी से सुख मिलता है। धनी तथा सुखी जीवन बिताते हुए ८० वर्ष की आयु पाता है।

(१०७३) – इस जन्मकुण्डली का अधिपति दुर्बल शरीर, लम्बे कद वाला, सामान्य विद्वान तथा सामान्य सुखी होता है। यह स्वभाव से भी अधिक उदार नहीं होता। यह अपने अध्यवसाय तथा व्यावहारिक ज्ञान के बल पर ही उन्नति करता है। इसे बाल्यावस्था से ही खट्टे-मीठे अनुभव होते रहते हैं। इसे नौकरी द्वारा जीविकोपार्जन करना पड़ता है। इसके दो विवाह होते हैं। पहली पत्नी की या तो मृत्यु हो जाती है अथवा उससे सम्बन्ध-विच्छेद हो जाता है। दूसरा विवाह ४० वर्ष की आयु से पहले ही हो जाता है। दूसरी पत्नी से सुख भी मिलता है। इसका भाग्योदय ४० वर्ष की आयु से ही होता है। इस आयु के बाद इसे धन-धान्य, ऐश्वर्य आदि की कोई कमी नहीं रहती। परिवारी जनों से इसके सम्बन्ध सामान्य रहते हैं। सन्तानों से भी सामान्य सुख ही मिलता है। वृद्धावस्था में आय-सम्मान भी ज्यादा होता है। जीवन सामान्यतः सुखी बीतता है। पूर्णायु लगभग ७५ वर्ष की होती है।

(१०७४) – इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य सुन्दर, प्रभावशाली, पराक्रमी, सुदृढ़ देह वाला, मधुर-भाषी, उदार-हृदय तथा अनेक कार्यों को एक साथ करने की क्षमता रखने वाला होता है। यह विद्या, बुद्धि तथा गुण सम्पन्न, सुरुचिपूर्ण, कलाप्रेमी एवं वैभवशाली होता है। ४० वर्ष के बाद इसे धन का विशेष लाभ होता है। इसका विवाह २४ वर्ष के लगभग हो जाता है, परन्तु पत्नी रोगिणी बनी रहती है, जिसके कारण यह स्वयं भी दुःखी रहता है। यह अपने अधिकांश कार्यों को गुप्तरूप से करता है तथा उसमें जिन लोगों का सहयोग लेता है, उनसे धोखा भी खाता है। इसे पुत्र-पुत्री का लाभ तो होता है, परन्तु उनसे विशेष सुख नहीं मिलता। जीवन के ४८, ५० तथा ५२ वें वर्ष विशेष उन्नतिप्रद होते हैं। ६८ वर्ष की आयु तक जीवन सुखपूर्वक बीतता है, तदुपरान्त जीवन के अन्तिम वर्ष शारीरिक कष्ट भरे रहते हैं। पूर्णायु ७२ वर्ष के लगभग होती है।

भृ० सं० १०२०

कु० २०

(१०७५) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी विद्वान, बुद्धिमान, सुन्दर, साहसी, पराक्रमी तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। इसका बचपन सुख से नहीं बीतता, परन्तु यह अपने अध्यवसायता परिश्रम से उन्नति करता हुआ जीवन पथ पर आगे बढ़ता है। यह समाज द्वारा माननीय उच्च बड़े लोगों का विरोधी होता है तथा उनके साथ उद्दण्डता पूर्ण व्यवहार करता है। इसका विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में ही हो जाता है, परन्तु स्त्री से सुख प्राप्त नहीं होता। यह हृदय का उदार तथा पाले मित्रों का कृपण भी होता है। यह कभी सहृदय तथा कोमल स्वभाव का ज्ञात पड़ता है तो कभी स्वयं को महाक्रोधी तथा दुष्ट व्यक्ति के रूप में प्रकट करता है। सन्तान तथा विद्या का सुख सामान्य रहता है। यह कला-प्रेमी, गरीबों तथा दीन-दुःखियों का सहायक तथा कौतुकी होता है। ४० वर्ष की आयु तक अपनी आर्थिक-स्थिति को सुदृढ़ बना लेता है तथा लगभग ८० वर्ष की आयु पाता है।

(१०७६) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य ऊँचे कदवाला, सुन्दर, बलवान, पराक्रमी तथा उदार स्वभाव का होता है। यह जीवन के अनेक विचित्र परिस्थितियों से गुजरता है तथा साहस के बलपर सर्वत्र विजयी होता चला जाता है। यह धुन का पक्का, धन के प्रति विशेष मोह न रखने वाला, परन्तु खूब धन कमाने वाला, उदार, धार्मिक कार्यों तथा दीन-दुःखियों पर धन खर्च करने वाला तथा गरीबों का हितैषी होता है। इसका विवाह २२ से २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, चतुरा तथा कला-कुशल होती है तथा वृद्धावस्था पर्यन्त इसका साथ देती है। वह पति के मन को समझने वाली तथा प्रत्येक कार्य में सहयोग देने वाली होती है। यह जातक ४० वर्ष की आयु से अत्यधिक धन-सम्पन्न तथा सुखी-जीवन व्यतीत करता है। इसकी पत्नी के कुछ गर्भ नष्ट होते हैं, तथापि पुत्र-पुत्रियों का लाभ होता है। इसकी पूर्णायु ७० वर्ष के लगभग होती है।

(१०७७) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य सुन्दर शरीर तथा उदार मन वाला, परन्तु किंचित क्रोधी स्वभाव का होता है। यह अनुशासन-प्रिय होता है तथा दूसरों से भी कठोर अनुशासन में रहने की आकांक्षा रखता है। यह विद्वान, बुद्धिमान तथा अनेक गुणों से युक्त होता है। इसका भाग्योदय ४० वर्ष की आयु में होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला, गुणवती तथा विद्वान होती है। यह राजकीय सेवा में उच्चपदों पर रहकर पर्याप्त धन अर्जित करता है तथा लोक में सम्मानित होता है। सन्तान-सुख सामान्य रहता है। जीवन के ३७, ४५, ४८, ५२, ५६ तथा ५९ वें वर्ष कठिनाइयों में बीतते हैं। पुत्र का सुख बड़ी आयु में प्राप्त होता है। यह अनेक स्रोतों से धन का संचय करता है तथा सुखी-जीवन बिताता है। जीवन के अन्तिम समय में यह भक्ति एवं धर्म की ओर विशेष आकर्षित होता है। पूर्णायु ८० वर्ष से अधिक की होती है।

(१०७८) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी विविध विद्याओं में निष्णात, चतुर, सुन्दर, बलिष्ठ, उत्साही, परिश्रमी, गुणवान, सुवक्ता, सुलेखक, नेतृत्व-शक्ति सम्पन्न तथा लोक-समाज में आदर पाने वाला होता है। इसका विवाह २२ से २४ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है। सन्तान-सुख भी अच्छा रहता है। यह प्रतिशोध लेने में बड़ा कट्टर है तथा अपने शत्रु अथवा अपराधी को कभी क्षमा नहीं करता, अवसर मिलते ही उससे सारे बदले चुका लेता है। ४०-४५ वर्ष की आयु तक यह अपनी समस्त आकांक्षाओं की पूर्ति कर लेता है। जीवन के ४६, ४९, ५६ तथा ५९ वें वर्ष विशेष लाभ तथा सम्मानप्रद सिद्ध होते हैं। यह राज्य-सेवा में रह कर भी विपुल सम्मान प्राप्त करता है। इसके पुत्र भी धनी तथा सुख देने वाले होते हैं। वृद्धावस्था में यह धार्मिक कार्यों में लग जाता है तथा कृपण स्वभाव का भी हो जाता है। पूर्णायु ७८ वर्ष के लगभग होती है।

(२०७९) – इस जन्म कुण्डली का अधिपति पुरुष, स्वस्थ, पराक्रमी, व्यवहार-कुशल, अपने पुरुषार्थ तथा कला द्वारा समाज में प्रतिष्ठित, गुणवान, प्रियवक्ता, उपदेशक, पंडित तथा आचार्य होता है। इसका सम्बन्ध प्रायः शिक्षा-विभाग से रहता है, परन्तु यह किसी उच्च सरकारी-पद पर कार्यरत रहते हुए भी लोकप्रियता प्राप्त कर सकता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, चतुर, वाक्पटु तथा सम्पन्न होती है, परन्तु कभी-कभी अपनी कटुवाणी से हृदय को आहत भी करती रहती है। इसका पूर्ण भाग्योदय ४० वर्ष की आयु के बाद होता है, तथापि २५ वर्ष की आयु से ही इसे किसी प्रकार की कमी नहीं रहती। इसका भाग्योदय परदेश में होता है। जीवन के ५०, ५३, ५५ तथा ५८ वें वर्ष कष्टकारक सिद्ध होते हैं। यह युवावस्था से वृद्धावस्था तक सुखभोगता है। परन्तु जीवन के अन्तिम दिनों में कृपण स्वभाव का बन जाता है। पूर्णायु ८० वर्ष तक हो सकती है।

(२०८०) – इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य चतुर, गुणवान, सुन्दर, पराक्रमी, हृष्ट-पुष्ट तथा रूखे व्यक्तित्व वाला, हठी स्वभाव का होता है। यह जो बात ठान लेता है, उसे पूरी करके ही दम लेता है। यह अपने शत्रु तथा विरोधी से प्रतिशोध लिए बिना नहीं मानता। इसे शत्रुओं से भी धन का लाभ होता है। इसका भाग्योदय परदेश में ४५ वर्ष की आयु में होता है। राजकीय-सेवा से इसे विशेष लाभ होता है तथा उन्नति प्राप्त होती है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, कुशल, मनस्विनी तथा पतिपरायण होती है। परन्तु इस जातक का सम्बन्ध दो-तीन अन्य स्त्रियों से भी बना रहता है। जीवन के ४०, ४२, ४५ तथा ५२वें वर्ष उन्नति कारक होते हुए भी पारिवारिक-क्लेश देने वाले सिद्ध होते हैं। इसका धन नष्ट नहीं होता, उसकी वृद्धि होती रहती है। पुत्र की प्राप्ति कठिनाई से होती है तथा पूर्णायु ७५ वर्ष के लगभग होती है।

(१०८१)- इस जन्मकुण्डली वाला जातक सुन्दर, बलवान्, गुणवान्, पराक्रमी तथा यशस्वी होता है। कभी-कभी इसे क्रोध भी बहुत आता है, उस समय यह सबको हेय समझता है। जिद्दी स्वभाव का होने के कारण यह अपनी हानि भी कर बैठता है। इसका भाग्योदय परदेश में होता है। ४० वर्ष की आयु तक यह उत्तम आर्थिक-स्थिति प्राप्त कर लेता है। इसका विवाह लगभग ३० वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा आज्ञानुवर्तिनी होती है, उसके कारण भाग्योन्नति में सहायता मिलती है। यह एक से अधिक कार्यों द्वारा धनोपार्जन करता है। जीवन के ३२, ३५, ३८, ४६, ५२ तथा ५६वें वर्ष कष्ट-कारक सिद्ध होता है। इसका अपनी पत्नी के अतिरिक्त अन्य कई स्त्रियों से भी प्रेम-सम्बन्ध रहता है, परन्तु ऐसे संबंध स्थिर नहीं होते। इसे बड़ी आयु में पुत्र की प्राप्ति होती है। बड़े होने पर पुत्र भी इसकी धन से सहायता करता है। वृद्धावस्था में यह कृपण तथा रोगी हो जाता है। लगभग ६८ वर्ष की आयु पाता है।

(१०८२)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर देह यष्टि वाला, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, मनस्वी, युक्तियुक्त बात करने वाला, विद्वान्, गुणवान, कलाकार तथा उच्च स्थान पर प्रतिष्ठित होकर सम्मान पाने वाला होता है। इसे यश तो बहुत मिलता है, तथापि महत्वाकांक्षाएँ सफल नहीं हो पातीं। भाग्योदय २६-२७ वर्ष की आयु में तथा विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। इसे जीवन के ३५, ३८, ४० तथा ४३वें वर्षों में संकटों का सामना करना पड़ता है। सामान्यतः यह मकान, भूमि, वाहन, सेवक, धन-ऐश्वर्य आदि सभी सुविधाओं से सम्पन्न सुखी-जीवन बिताता है। इसके पेट का भेद पाना औरों के लिए कठिन होता है। यह अपने धन को भी गुप्त रूप से सुरक्षित रखता है तथा स्वयं भी उसका उपभोग नहीं करता। तीर्थाटन तथा धार्मिक-कृत्य करने की आकांक्षाएँ कृपणता के कारण पूरी नहीं हो पातीं। इसे बड़ी कठिनाई से पुत्र लाभ होता है। आयु ७० वर्ष के लगभग होती है।

भृ० सं० १०८४

कु० २०

(१०८३)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी धीर-गंभीर, सुन्दर, शान्त स्वभाव का, धनी, गुणी तथा प्रत्येक परिस्थिति का धैर्यपूर्वक सामना करने वाला होता है। यह शरीर से स्वस्थ, वाक्पटु, मीठी तथा प्रेममिश्रित वाणी बोलने वाला तथा आकर्षक व्यक्तित्व-सम्पन्न होता है। इसके सम्पर्क में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति इसका प्रशंसक बन जाता है। इसे कोई भी कार्य करने में कठिनाई का अनुभव नहीं होता। यह साहित्य-प्रेमी, साहित्य-सर्जक, बुद्धिमान तथा विद्वान होने के साथ ही सुवक्ता, उपदेशक अथवा श्रेष्ठ अध्यापक होता है। इसका विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी होते हुए भी कभी-कभी बहुत दुःखी करती है, क्योंकि उसका स्वास्थ्य प्रायः ठीक नहीं रहता, अतः चिड़चिड़े स्वभाव की एवं कटुवादिनी हो जाती है। भाग्योदय लगभग ३० वर्ष की आयु में होता है। सन्तान का भी विशेष सुख नहीं मिलता। ४० की आयु के बाद जीवन कठिनाइयों से घिर जाता है। पूर्णायु ६० वर्ष होती है।

(१०८४)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति सबल स्वभाव का, स्वार्थी, शरीर से दृढ़, सुन्दर तथा बलिष्ठ होते हुए भी रोगी तथा अपने छोटे भाई के सहयोग तथा परिश्रम से अपने कार्यों में सफलता पाने वाला होता है। इसका भाग्योदय अपने छोटे भाई के साथ होता है। यदि किसी कारणवश छोटा भाई जीवित न रहे तो किसी मित्र की सहायता से इसका भाग्योदय होता है। इसका उत्कर्ष ५० वर्ष की आयु में होता है। विवाह २४ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी तेजस्विनी होती है, जो इसे अपने प्रभाव में रखती है। इसे बड़ी आयु में पुत्र के कारण कष्ट मिलता है। जल तथा सर्प से भय हो सकता है। यह प्रायः नास्तिक विचारों का होता है तथा स्वयं में केन्द्रित बना रहता है। इसे जीवन के ३५, ३८, ४२ तथा ५६वें वर्ष में कष्ट मिलता है। शारीरिक स्वास्थ्य अक्सर खराब होता रहता है। ६५ से ६८ वर्ष की आयु में इसका शरीरान्त होना सम्भव है।

भू० सं० १०८५

कु० २०

(१०८५) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर तथा सुदृढ़ शरीर का होते हुए भी प्रायः रोगी बना रहता है। इसे शत्रुओं द्वारा कष्ट प्राप्त होता है और यह उनके कारण भयभीत भी बना रहता है। कुछ लोग इसे गुप्त रूप से भी हानि पहुँचाते हैं। वन्य जन्तुओं तथा सर्पादि सरीसृप एवं जल से भी भय रहता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, चतुरा तथा बुद्धिमती होती है। वह इसे अपने वशीभूत रखती हुई संकटों से बचाती रहती है। यह जातक बुद्धिमान होते हुए भी प्रायः मूर्खों जैसा व्यवहार करता है, फिर भी इसके पास धन का कभी अभाव नहीं होता। राजकीय सेवा के अतिरिक्त यह अन्य साधनों से भी धन का संग्रह करता है, परन्तु धनी तथा गुणी होते हुए भी सबकी उपेक्षा का पात्र बना रहता है। इसका भाग्योदय २५ वर्ष की आयु से होता है। सन्तान-सुख न्यून रहता है। यह ६५ से ६८ वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(१०८६) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, बुद्धिमान, दृढ़ शरीर वाला तथा धीर-गंभीर स्वभाव का होता है। यह किसी भी कार्य को आरम्भ करके उसे पूरा करने के बाद ही दम लेता है। परिश्रमी होने के कारण यह सदैव प्रशंसा और सम्मान प्राप्त करता है तथा सबका प्रिय भी बना रहता है। धन के प्रति यह तटस्थ भाव रखता है। न मितव्ययी होता है और न अपव्ययी ही। यह धन-संचय की चिन्ता नहीं करता, तथापि इसे धन की कमी कभी भी अनुभव नहीं होती। इसे पिता का अल्प सुख मिलता है। यह बाल्यावस्था से ही अपने पैरों पर खड़ा होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला मिलती है। भाग्योदय ४० वर्ष की आयु के बाद विशेष रूप से होता है। यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। इसे पुत्र-पुत्रियों का सुख मिलता है। परोपकार में भी इसकी रुचि रहती है। यह लगभग ७५ वर्ष की आयु तक जीवित रहता है।

भृ० सं० १०८७

(१०८७) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति स्थूल तथा लम्बे कद वाला, सुन्दर, ऊपर से कठोर तथापि हृदय से कोमल स्वभाव वाला, नवीन कार्य करने में उत्कण्ठित, परोपकारी, साहित्य एवं ललित-कलाओं में रुचि रखने वाला तथा गुणीजनों का आदर करने वाला होता है। यह अपने सिद्धान्तों का पक्का तथा दृढ़-निश्चयी होता है। यह जीवन की स्थितियों में भी कभी विचलित नहीं होता तथा संघर्षों का डट कर सामना करता है। यह दूसरों की विपत्ति को भी अपने सिर पर ओढ़ लिया करता है। यह भगवान का भक्त, परलोक से डरने वाला, भाग्यवादी तथा सेवा में किसी के भी सम्मुख न झुकने वाला होता है। २२ वर्ष की आयु में इसका विवाह सुन्दरी, विदुषी तथा आज्ञापालक स्त्री के साथ होता है, तथापि अन्य स्त्रियों के प्रति इसका आकर्षण बना रहता है। सन्तान-सुख उत्तम रहता है। भाग्योदय ३०, ३८, ४२ तथा ५० वर्ष की आयु में होता है। समाज में यश-सम्मान प्राप्त करता है। यह ८० वर्ष से अधिक आयु पाता है।

(१०८८) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान तथा गुणवान होता है। इसका विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में ऐसी स्त्री के साथ होता है, जो सुन्दरी, बुद्धिमती तथा गुणवती होने के साथ ही इसे अपने नियन्त्रण में रखने में भी समर्थ होती है। यह जातक कुछ कठोर स्वभाव का, परन्तु धार्मिक एवं उदार भी होता है। यह आत्मकेन्द्रित रहते हुए अपने काम में लगा रहता है। परिवार तथा अतिथि बन्धु-बान्धवों का पालन करने से इसे आनन्द की अनुभूति होती है। उन पर दिल खोल कर खर्च भी करता है। यह किसी नये व्यवसाय द्वारा बहुत लाभ उठाता है। इसका भाग्योदय ३० वर्ष की आयु से होता है, तभी से यह लोक में सम्मान, यश तथा धन प्राप्त करता है। इसकी धनवानों तथा गुणवानों में समान रूप से प्रतिष्ठा की जाती है। यह लगभग ८० वर्ष की आयु प्राप्त करता है तथा इसकी मृत्यु भी आकस्मिक रूप से होती है।

कु० २०

(१०८९) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, आकर्षक, उदार, गुणवान तथा ज्ञानी होता है। यह सात्विक-रुचि सम्पन्न तथा सर्वत्र यश-सम्मान पानेवाला, तेजस्वी तथा बड़े-बड़े कार्यों को करने वाला तथा अनेक स्रोतों से आर्थिक-लाभ प्राप्त करने वाला होता है। इसे अपने पारि-वारिक व्यवसाय, राज्य तथा अन्य कार्यों से भी लाभ होता है। यह बचपन से सुखी रहता है, तथापि मातृ-सुख से वंचित हो जाता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, गुणवती तथा महत्वाकांक्षिणी होती है। इस जातक के मन का भेद पाना कठिन होता है। सन्तानों में पुत्रियों की संख्या अधिक होती है। इसका भाग्योदय ३० वर्ष के उपरान्त होता है तथा ४५ वर्ष की आयु तक शिखर पर पहुँच जाता है। आर्थिक-स्थिति प्रायः संतोषजनक बनी रहती है। यह भर-पूरा जीवन छोड़कर लगभग ७० वर्ष की आयु में संसार से विदा लेता है।

(१०९०) - इस जन्मकुण्डली का अधिकारी मध्यम कदी, सुन्दर स्वरूपवान, साहसी, पराक्रमी, आकर्षक व्यक्तित्ववाला, विद्वान तथा गुणवान होता है। यह प्रकृति से उदार, धर्म-कर्म में आस्था रखनेवाला, गुणीजनों को आदर देने वाला तथा परोपकारी होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, मनस्विनी तथा उच्चाकांक्षी होती है। वह गुणवती तथा उदार स्वभाव की भी होती है तथा पति को प्रत्येक कार्य में सहयोग प्रदान करती है। वह कृपणता पूर्वक धन का संचय करती रहती है तथा आर्थिक-स्थिति को सुदृढ़ बनाती है। इस जातक का भाग्योदय ३२ वर्ष की आयु से होता है तथा ५०, ५६, ५८ तथा ६२ वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। पुत्रों के सहयो-ग से इसके धन तथा सुख की वृद्धि होती है। आयु के ५० वें वर्ष तक यह आर्थिक-क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त कर लेता है। कुछ समय के लिए आर्थिक-कठिनाइयाँ भी आती हैं। पूर्णायु ७० वर्ष होती है।

भु० सं० १०४२

कु० २०

(१०६१) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, बलवान, गुणवान, विद्वान तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह चतुर्थ-घर में जन्म लेने के कारण बाल्यावस्था से ही सुख प्राप्त करता है। अध्ययन, अध्यात्म तथा परिश्रम के बल पर यह विद्या, बुद्धि तथा धन — तीनों की अभिवृद्धि करता चला जाता है। इसे माता तथा छोटे भाई का विशेष सुख नहीं मिलता। बड़ी बहिन तथा बड़े भाई का सुख प्राप्त होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा आज्ञाकारिणी मिलती है। इसी आयु से यह घर से बाहर जाकर रहता तथा धनोपार्जन करता है। यह अपने कुल में विख्यात, कुशल वक्ता, चतुर तथा अपने कार्य-व्यवहारों में अत्यन्त कुशल होता है। इसे किसी बड़े प्रतिष्ठान अथवा सरकारी विभाग में कार्य करने का अवसर मिलता है। इसे इंजीनियरिंग का ज्ञान होता है। जीवन के ४२, ४५, ४६ तथा ५२वें वर्ष में विशेष लाभ होता है। चल-अचल सम्पत्ति का पूर्ण सुख मिलता है। आयु ६८ वर्ष होती है।

(१०६२) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी अपने जन्म काल से ही सुखी, सुन्दर, पैतृक-सम्पत्ति पाने वाला, मातृ-सुख से युक्त तथा लोकप्रिय होता है। २५ वर्ष की आयु में इसका विवाह हो जाता है। तदुपरान्त यह देश-विदेश की यात्राएँ करता है। इसकी सन्तानें सद्गुणी तथा आज्ञाकारी होती हैं। यह सन्तानों से सुख प्राप्त करता है। इसकी आमदनी के अनेक स्रोत होते हैं। जीवन के ५२, ५६, ६२ तथा ६४वें वर्ष विशेष लाभ एवं सम्मान-प्रद सिद्ध होते हैं। इसे गुप्त-शत्रुओं से भय भी रहता है, परन्तु वे इसका कुछ बिगाड़ नहीं पाते। यह विद्वानों में, राज्य में तथा समाज के अन्य वर्गों में सम्मान प्राप्त करता है तथा ४५ वर्ष की आयु तक यथेष्ट धन अर्जित करता है। इसे चल-अचल सम्पत्ति का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है तथा सब प्रकार से आनन्दमय जीवन व्यतीत करता है। वृद्धावस्था में धर्म-कर्म की ओर रुचि विशेष बढ़ जाती है। पूर्णायु लगभग ८० वर्ष की होती है।

मु० सं० ३५०४

कु० २०

(१०९३) – इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य स्वस्थ, सुन्दर, गुणवान तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होने के साथ ही जुआ खेलने का शौकीन होता है। यह रसिक स्वभाव का होने के कारण अनेक स्त्रियों के प्रति आकर्षित बना रहता है। वित्त का लाभ उत्तम होता है। विवाह २४ वर्ष की आयु तक हो जाता है, पत्नी सुन्दरी मिलती है, फिर भी परस्त्रियों से सम्बन्ध रखता है तथा उनके कारण हानि तथा दुःख भी उठाता है। इसके मन की थाह पाना कठिन होता है। यह ऐसे कार्यों को करता है, जिनमें विशेष परिश्रम न करना पड़े। सन्तान-सुख उत्तम रहता है। भाग्योदय ३२ वर्ष की आयु से होता है तथा आजीवन प्रचुर धन-लाभ होता रहता है। राजकीय-सेवा में रह कर भी यह अपनी प्रतिष्ठा को बढ़ाता है। विवाह के बाद तथा भाग्योदय से पूर्व कुछ समय कष्ट में भी बीतता है, परन्तु बाद में स्थिति सुधर जाती है। यह ८० से ९० वर्ष तक की दीर्घायु प्राप्त करता है।

(१०९४) – इस जन्मकुण्डली वाला जातक स्वस्थ, सुन्दर, गुणवान्, कलाओं का ज्ञाता तथा अपने स्वभाव से सबको मोहित कर लेने वाला होता है। यह बाल्यावस्था से ही सुखी तथा समृद्ध जीवन बिताता है। इसे धन का कभी अभाव नहीं होता। इसका विवाह 20-20 वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, सुलक्षणा, महत्वाकांक्षिणी तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व की स्वामिनी होती है। वह विदुषी, गुणवती तथा अपने निर्देशन में पूरे परिवार को चलाने वाली होती है। जातक भी उसकी इच्छा के विपरीत नहीं चलता। २४ वर्ष की आयु में इसका भाग्योदय होता है। राजकीय-सेवा अथवा किसी अन्य उच्च प्रतिष्ठान में नौकरी कर के यह प्रचुर धन तथा यश कमाता है। ४० वर्ष की आयु तक यह बहुत उन्नति कर लेता है। इसे सन्तान का दुःख होता है, फलतः वृद्धावस्था में वैराग्यवान् हो जाता है। भाग्योदय विदेश में भी होता है। आयु ९० वर्ष की होना सम्भव है।

भृ० सं० १०३०

कु० २०

(१०९५) – इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्व एवं मधुरवाणी वाला, गजवदन, कुशाल, उन्नत ललाट, लम्बे कद वाला तथा शरीर से कुछ मोटा होता है। यह अपना उतावली तथा परिश्रमी भी होता है एवं बिना किसी हिचक के कठिन-से-कठिन कामों में भी हाथ डाल देता है। कभी कभी इसे भारी आर्थिक-हानि भी उठानी पड़ती है, तथापि हानि एवं धन का अपव्यय होने पर भी धन की कोई कमी नहीं रहती, क्योंकि इस की आमदनी के अनेक स्रोत होते हैं। इसका विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी मिलती है, तथापि यह अनेक परस्त्रियों से भी सम्बन्ध बनाये रखता है। इसका भाग्योदय २५ वर्ष की आयु से आरम्भ होता है तथा ४० वर्ष की आयु तक यह अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना लेता है। इसे पुत्र-हानि का दुःख भी होता है तथा भविष्य में पुत्रगण इससे द्वेष भी रखते हैं। सामान्यतः इसका जीवन धनी, परन्तु अशान्त होता है। आयु ८० वर्ष के लगभग होती है।

(१०९६) – इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, रूपवान्, विद्वान्, काव्य-प्रेमी, साहित्यकार, तथा गुणवान् होता है। यह अपने कुल में प्रसिद्ध होता है तथा जीवन के लिए आवश्यक सभी वस्तुओं को प्राप्त करता है। यह कुशलवक्ता, कार्यदक्ष तथा परदेश में रहकर भाग्योन्नति के साथ-साथ अपने कुटुम्ब का विस्तार करने वाला भी होता है। इसे माता तथा बड़े भाई का सुख प्राप्त नहीं होता। सर्प तथा जल से भयभीत बना रहता है, तथापि लम्बी आयु प्राप्त करता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी मिलती है तथा वैवाहिक-जीवन भी सुखपूर्ण रहता है, तथापि इसके एकाधिक परस्त्रियों से भी सम्बन्ध बने रहते हैं। यह नेतृत्व के गुणों से युक्त, राजकीय-सेवा के उच्च पद पाने वाला, किन्तु अपना निजी व्यवसाय कर, स्वतन्त्र जीवन बिताने वाला होता है। जीवन के ४०, ४४, ४८ तथा ५४ वें वर्ष विशेष घटनापूर्ण होते हैं। पूर्णायु ८० वर्ष के लगभग होती है।

(१०९७) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, बलवान्, पराक्रमी, अत्यन्त चतुर, विद्या-बुद्धि में प्रवीण तथा चारों ओर के वातावरण को अपने अनुकूल बना लेने वाला होता है। यह विभिन्न कार्यों द्वारा अपने धन की अभिवृद्धि करता है। यह बाल्यावस्था में प्रायः रोगी बना रहता है तथा बड़े होने पर स्वस्थ रहता है। यह अत्यन्त साहसी होता है तथा जोखिम भरे कामों द्वारा धन कमाता है। इसका पिता भी बड़ा साहसी होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती होती है। उससे प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग प्राप्त होता है। इसका भाग्योदय भी विवाह के बाद होता है। परदेश में रहकर इसे धन का उत्तम लाभ होता है। यह धार्मिक कार्यों में धन का व्यय करना चाहता है, तथापि स्वभाव से कृपण होने के कारण वैसा कर नहीं पाता। इसके जीवन के २०, २५, २७, २९, ३५, ३८ तथा ५६ वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। यह लगभग ७० वर्ष तक जीवित रहता है।

(१०९८) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति अत्यन्त बुद्धिमान्, अनेक प्रकार की कलाओं का ज्ञाता, सुन्दर, बलवान् तथा प्रभावशाली होता है। यह निम्नवर्ग के लोगों से सम्पर्क रखता तथा उनसे लाभ उठाता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती मिलती है। पत्नी के अतिरिक्त अन्य अनेक स्त्रियों से भी इसके प्रेम-सम्बन्ध बने रहते हैं। इसका भाग्योदय २६ वर्ष की आयु के बाद होता है। यह परदेश में रहकर सुख प्राप्त करता है तथा चारों ओर के वातावरण को प्रभावित करता है। यह अपने कार्यों में येन-केन प्रकारेण सफलता प्राप्त करने में कुशल होता है। इसे प्रत्येक क्षेत्र में अपनी पत्नी का सहयोग प्राप्त होता है तथा उसकी बुद्धिमत्ता के कारण पर्याप्त धन का संचय कर लेता है। इसके जीवन के २९, ३५, ४०, ४६ तथा ५२ वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। यह लगभग ८० वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(४०-६६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी अत्यन्त चंचल स्वभाव का, एक ही समय में अनेक बातों को सोचने वाला तथा अनेक कार्यों में हाथ डालने वाला, परन्तु प्रत्यक्ष में अत्यन्त शान्त तथा धैर्यवान दिखाई देने वाला होता है। यह प्रत्येक कार्य में जल्दबाजी करता है और यदि इसके मनोनुकूल कार्य नहीं होता तो शीघ्र ही क्रुद्ध भी हो जाता है। अपने पिता से बहुत प्रेम रखता है, परन्तु पिता के बन्धु-बान्धवों से इसकी पटरी नहीं बैठती। इसका विवाह १८ से २० वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुख देने वाली मिलती है। सब कुछ प्राप्त होते हुए भी इसे जीवन में सुख कम तथा दुःख अधिक मिलता है। इसका भाग्योदय अनेक बार होता है तथा हानियाँ भी कई बार उठानी पड़ती हैं। कई बार नौकरियां करता और छोड़ देता है। इसका सम्पूर्ण जीवन सामान्यतः संघर्षशील बना रहता है। जीवन का अन्तिम भाग कुछ सुख से बीतता है। पूर्णायु ७५ से ७८ वर्ष की होती है।

(९९००) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य सुन्दर तथा स्वस्थ शरीर वाला, दृढ़ चित्त का, धीर-गंभीर तथा समझदार होता है, तथापि यह अपने कामों को स्वयं ही बिगाड़ भी लेता है। शत्रु-पक्ष इसकी कमजोरी का लाभ उठाता है। इसका विवाह २२ से २४ वर्ष की आयु में होता है। भाग्योदय भी विवाह के बाद ही होता है तथा उसमें स्त्री सहयोगिनी बनती है। यह जातक शत्रुओं से पीड़ित तथा दुःखी रहता है। यह अपनी स्त्री के नाम से जो व्यवसाय अथवा कार्य करता है, उसमें इसे सफलता मिलती है। इस प्रकार इसका भाग्य स्त्री से सम्बद्ध बना रहता है। ४५ से ५० वर्ष की आयु तक इसकी आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ हो जाती है। खर्च भी बहुत लगे रहते हैं। यह स्वयं अपने ऊपर भी बहुत खर्च करता है। इसे किन्हीं मायनों में अपव्ययी भी कहा जा सकता है। सन्तान-सुख भी उत्तम रहता है। यह सामान्य सुखी जीवन बिताता हुआ लगभग ६८ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

भृ० सं० १०३३

कु० २०

(११०१) – इस जन्माङ्ग चक्रवाला जातक दृढ़शरीर का, सुन्दर, मितव्ययी, गुणवान्, विद्वान् तथा धर्मात्मा होता है। यह अपनी धुन का पक्का होता है तथा अपनी जिद में आकर प्रायः अपनी ही हानि कर बैठता है। यह अपनी ही नासमझी से शत्रुओं को उत्पन्न करता तथा कभी-कभी क्रोध में आकर औरों को भी नुकसान पहुँचाने का प्रयत्न करता है। जो लोग ऊपर से मीठा बोलते हैं, वे भी इससे आन्तरिक प्रेमभाव नहीं रखते। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री इसके लिए भाग्यवान् सिद्ध होती है। विवाहोपरान्त ही इसका भाग्योदय होता है। इसके बिगड़े हुए काम स्त्री के सम्पर्क मात्र से बन जाया करते हैं। पिता की ओर से इसे कष्ट मिलता है। सामाजिक रूप से भी पिता की स्थिति गिरी हुई रहती है। ३० वर्ष की आयु में भाग्योदय होता है, तथापि आर्थिक स्थिति आजीवन सामान्य ही बनी रहती है। इसकी मृत्यु लगभग ६० वर्ष की आयु में होती है।

(११०२) – इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य कोमल स्वभाव का, मधुरभाषी, सुन्दर, आकर्षक, भावुक-हृदयवाला, कवि, साहित्यप्रेमी तथा स्वाध्यायशील होता है। यह अपना दुःख किसी के सम्मुख प्रकट नहीं करता। अन्तर्मुखी वृत्ति का होने के कारण यह अपनी चिन्ताओं से भीतर-ही-भीतर घुटता रहता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी इसे मनोऽनुकूल तथा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करने वाली मिलती है। घर की व्यवस्था सुचारु रूप से चलाने के अतिरिक्त वह बाहरी कामों में इसका साथ देती है तथा उसी के भाग्य से यह प्रचुर धन कमाता है। सामान्यतः यह निश्छल स्वभाव का होता है। अध्ययन के आधार पर यह अपने ज्ञान की अभिवृद्धि करता रहता है। इसे धन का अभाव नहीं रहता, तथापि यह उसे अपनी इच्छानुसार व्यय नहीं कर पाता। स्त्री-पुत्रों का उत्तम सुख प्राप्त करते हुए यह लगभग ८० वर्ष तक जीवित रहता है।

(११०३) – इस जन्मकुण्डली वाला जातक मध्यम कद वाला, सुन्दर, तेजस्वी एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न साहसी प्रकृति का तथा परिश्रमी होता है। यह राजकीय-सेवा से आजीविका उपार्जन करता है। इसका विवाह 20-22 वर्ष की आयु में हो जाता है तथा भाग्योदय भी स्त्री के आगमन से ही होता है। लेकिन इसे स्त्री द्वारा पूर्ण सुख प्राप्त नहीं होता। सामान्यतः यह धनी होता है, परन्तु जिस सीमा तक धनोपार्जन का इच्छुक होता है, वह नहीं कर पाता। २५ वर्ष की आयु के बाद इसके दुःखों का अन्त हो जाता है तथा सुखों की उपलब्धि होती रहती है। इसे माता तथा बड़े भाई का सुख नहीं मिलता। जीवन के ३३, ३६ तथा ४५वें वर्ष कष्टकारक रहते हैं तथा ३४, ३८, ४६ एवं ५५वें वर्ष विशेष सुख दायक सिद्ध होते हैं। इसे प्रायः ख्याति मिलती रहती है। सन्तानों का उत्तम सुख प्राप्त होता है तथा समाज में मान-प्रतिष्ठा की उपलब्धि भी होती है। पूर्णायु ७० से ७५ वर्ष होती है।

(११०४) – इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य सुन्दर, बलवान, गुणी, साहित्य प्रेमी, कवि, परिश्रमी तथा अपने पुरुषार्थ से विद्योपार्जन करने वाला होता है। यह अपनी विद्वत्ता से आर्थिक तथा यश लाभ प्राप्त करता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में हो जाता है तथा विवाहोपरान्त आर्थिक स्थिति अधिक सुदृढ़ होने लगती है। भाग्योदय बचपन से ही हो जाता है, अतः निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। यह प्रत्येक कार्य को पूरे मन लगाकर करता है तथा उसमें सफलता भी प्राप्त करता है। ५० वर्ष की आयु तक इसकी गणना विशिष्ट व्यक्तियों में होने लगती है। इसका जीवन सम्मानित होता है। इसे ईश्वर की सत्ता में अधिक विश्वास नहीं होता। सभी कार्यों की सफलता का श्रेय यह उद्यम को ही देता है। इसे त्वचा रोग होते रहते हैं। विवाह एक से अधिक होते हैं अथवा अनेक स्त्रियों से प्रेम-सम्बन्ध बने रहते हैं। पूर्णायु ५८ से ६५ वर्ष की होती है।

(११०५) - इस जन्म कुण्डली वाला जातक सुन्दर, स्वस्थ, आदर्श भावना प्रधान, शीघ्र निर्णय लेनेवाला, अपने प्रभाव से दूसरों को शीघ्र मित्र बना लेने वाला, रचनात्मक कार्यों पर विशेष ध्यान देने वाला, लम्बे कद का, गौर वर्ण, कफ प्रधान प्रकृति का तथा गुणवान् होता है। यह अपने पुरुषार्थ द्वारा धन कमाने में पटु होता है तथा सर्वत्र सम्मान प्राप्त करता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है। वह इसकी अनुगामिनी रहकर प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग प्रदान करती है। दाम्पत्य-सुख तथा सन्तान-सुख उत्तम रहता है। आर्थिक-स्थिति विवाहोपरान्त उन्नत होने लगती है तथा ४० वर्ष की आयु में पूर्ण भाग्योदय होता है। तब यह सफलता के चरम शिखर पर जा बैठता है। यह अपना मकान स्वयं बनवाता है तथा वाहन एवं सेवक आदि का सुख भी प्राप्त करता है। इसका भाग्योदय परदेश में होता है तथा अपना स्थायी निवास भी वहीं बना लेता है। वृद्धावस्था में सुखी रहता है। पूर्णायु ७० वर्ष।

(११०६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी मध्यम कद तथा उन्नत ललाट वाला, मनोहर रूप-रंग का, स्वस्थ, सुन्दर तथा मधुर-स्वभाव वाला होता है। परन्तु इसकी मधुरता दिखावे भर की होती है, वैसे हृदय का बड़ा रूखा होता है। इसमें क्रोध की मात्रा अधिक पाई जाती है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी मिलती है तथा यह उसकी ओर विशेष अनुरक्त भी बना रहता है। पत्नी विदुषी तथा बुद्धिमती होती है। वह प्रत्येक क्षेत्र में पति को सहयोग करती है। यह भोग-विलास में विशेष रुचि रखने वाला तथा ऐश्वर्यपूर्ण जीवन बिताने का आकांक्षी होता है। यह नौतिकता का उपासक होता है। ईश्वर तथा धर्म के प्रति आस्थावान नहीं होता। भाग्योदय परदेश में होता है और वहीं स्थायी निवास भी बनाता है। ५० वर्ष की आयु तक यह यथेष्ट धन कमा लेता है, परन्तु वह इसकी स्त्री के अधीन रहता है। पूर्णायु ८० वर्ष होती है।

मु० सं० ३३०४

कु० र०

(११०७) – इस जन्मकुण्डली के जातक मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, ऊँचे कद का, उन्नत ललाट, विशाल वक्षःस्थल वाला, धीर-गंभीर, दूसरों के मन की थाह पा लेने वाला, चतुर, नीतिज्ञ तथा वातावरण के अनुकूल स्वयं को ढाल लेने वाला होता है। यह अत्यन्त महत्वाकांक्षी होता है तथा साधन-विहीन होते हुए भी अपनी उन्नति का मार्ग ढूँढ लेता है। इसका विवाह २० वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा धर्म-परायण भी होती है। इसका भाग्योदय भी विवाह के बाद ही होता है। यह जीवन भर धनी बना रहता है, परन्तु धन पर अधिकार इसकी पत्नी का ही रहता है। उसी की इच्छानुसार यह सब कार्यों को करता है। इसे सन्तान विषयक कष्ट होता है। परिवार वालों से इसके सम्बन्ध सामान्यतः अच्छे बने रहते हैं तथा समाज में भी इसे मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। स्वास्थ्य प्रायः ठीक बना रहता है। मित्रों से भी सहयोग मिलता रहता है। पूर्णायु ७५ वर्ष से अधिक होती है।

(११०८) – इस जन्मकुण्डली का स्वामी आकर्षक आकृति, गठीले शरीर तथा मध्यम कद वाला, उन्नत एवं विशाल ललाट का, घने व काले केशों वाला, सुन्दर तथा आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। यह दूसरों को आकर्षित करने, मित्र बनाने तथा उनसे काम निकालने की कला में कुशल होता है। इसकी ओर अनेक स्त्रियाँ आकर्षित होती हैं तथा यह भी अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध बनाये रखता है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। विवाहोपरान्त यह अपने सब कार्यों को पत्नी के जिम्मे सौंप देता है। वह प्रत्येक क्षेत्र में सहयोगिनी तथा धन की अभिवृद्धि करने वाली सिद्ध होती है। ३५ वर्ष की आयु के पश्चात् इसे पूर्ण सुख प्राप्त होता है। यह जुआ खेलने का शौकीन भी होता है, परन्तु उसमें धन को नष्ट नहीं करता। इसे पुत्र-पुत्रियों का सुख प्राप्त होता है। यह परदेश में रहकर अपनी स्थिति को सुदृढ़ बनाता तथा लोकमान्य होता है। आयु लगभग ८० वर्ष होती है।

भु० सं० १०३७

कु० २०

(११०९) – इस जन्मकुण्डली का अधिपति मध्यम कद वाला, सुन्दर, सुमधुर वाणी बोलने वाला तथा आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होता है। यह प्रत्येक व्यक्ति को प्रभावित करता है। यह इतना आकर्षक होता है कि इसके सम्पर्क में आने वाले लोग अपनी हानि उठाकर भी इसका कार्य करने को प्रस्तुत बने रहते हैं। यह छोटी सी आयु में ही अपने पिता के धन तथा सम्पत्ति को प्राप्त कर अलग हो जाता है तथा अपने पुरुषार्थ के बल पर पर्याप्त सम्पन्न हो जाता है। यह विद्या आदि सद्गुणों से सम्पन्न विशाल सम्पत्ति का स्वामी बनता है तथा भोग-विलास एवं ऐश्वर्य पूर्ण जीवन बिताता है। लोक समाज में सम्मान भी प्राप्त करता है तथा विदेश में रह कर सुखी जीवन बिताता है। इन सब के बावजूद भी आन्तरिक कारणों से यह दुःखी बना रहता है तथा अन्तिम समय में धनहीन भी हो जाता है। २३ वर्ष की आयु में इसका विवाह होता है तथा लगभग ७०-७५ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१११०) – इस जन्मकुण्डली चक्र का अधिपति सुन्दर, सुगठित शरीर का, गौरवर्ण तथा दृढ़ चित्त वाला होता है। यह अपने व्यक्तित्व से अन्य लोगों को प्रभावित करता तथा उन्हें अपनी इच्छानुसार संचालित कर लाभ उठाता है। इसे प्रायः चोटें लगती रहती हैं, तथापि यह अपनी साहसी एवं सहिष्णु प्रकृति के कारण उनकी परवाह नहीं करता। यह ऐसे कार्य भी करता है जो अनुचित होते हैं तथा उनके कारण राजदण्ड का भागी भी बनता है। इसे अपने कामों को पूरा करने की धुन सवार रहती है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। अपनी सुन्दरी स्त्री के प्रति आकर्षित रहते हुए भी यह अन्य स्त्रियों से भी सम्बन्ध रखता है। यह भाग्य का धनी, विलासी तथा पुत्र-पौत्रवान होकर सुखी-जीवन व्यतीत करता है। पूर्णायु ८० वर्ष होती है, परन्तु किसी दुर्घटना में चोट लगने के कारण ५० वर्ष भी रह सकती है।

(११११) - इस जन्माङ्ग चक्र का अधिपति सुन्दर, सुगठित शरीर वाला, आकर्षक वेषभूषा युक्त, गोल चेहरे वाला, सुन्दर केशों वाला, कुछ स्थूल आकार का, चतुर, समझदार तथा गुणवान होता है। इसके होठों पर मुस्कुराहट खेलती रहती है। यह दार्शनिक विचारों का तथा अत्यन्त उदार प्रकृति का होता है, फिर भी इसे क्रोध बहुत आता है और यह जुआ खेलने का शौकीन तथा पापियों से सम्बन्ध रखने वाला भी होता है। इसे पिता का अल्प-सुख प्राप्त होता है। यात्राओं से इसे विशेष लाभ होता है। यह बड़ा उद्यमी होता है तथा अपने परिश्रम द्वारा ही आर्थिक-स्थिति को सुदृढ़ बनाता है। इसका भाग्योदय 20 वर्ष की आयु से ही आरम्भ हो जाता है तथा जीवन में किसी भी प्रकार के सुख-साधनों की कमी नहीं रहती। इसका विवाह 20-21 वर्ष की आयु में हो जाता है। दाम्पत्य-सुख तथा सन्तान-सुख उत्तम रहता है। समाज में प्रतिष्ठा मिलती है। आयु ६० वर्ष के लगभग हो सकती है।

(१११२) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, दार्शनिक विचारों का, मधुरभाषी, चतुर, वक्ता तथा प्रभावशाली होता है। यह जुए का शौकीन तथा पापियों से संबंध रखने वाला भी होता है। यह पापियों में आसक्ति के कारण अपने आवश्यक कामों को भी भूल जाता है तथा हानि उठाता है। इसे अपने पिता की धन-सम्पत्ति से कोई मोह नहीं होता। इसका भाग्योदय बचपन से ही होता है। यह स्वयं इतना अधिक धन कमाता है कि पिता की आर्थिक-स्थिति उसके सम्मुख फीकी पड़ जाती है। इसे अपने शत्रुओं से भी धन का लाभ होता है। मुकदमे में भी यह कभी हारता नहीं है, बल्कि हमेशा जीतता ही है। इसका विवाह 24-25 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा आज्ञाकारिणी मिलती है। पुत्रों द्वारा इसके धन की हानि भी होती है। जाँघ अथवा नितम्बों की बीमारी के कारण यह कभी कष्ट उठाता है। पूर्णायु ६० वर्ष होती है।

(६११३) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य सुन्दर, सुगठित शरीर वाला, तेजस्वी, मधुभाषी, दार्शनिक विचारों का तथा अत्यन्त आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होता है। यह हर प्रकार के वातावरण को अपने अनुकूल बना लेता है तथा अपनी योग्यता एवं विद्वत्ता से सुन्दरी स्त्रियों को अपनी ओर आकर्षित करने में भी सफल होता है। इसे कभी किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता। सुख के सभी साधन इसे मिलते तथा अनायास ही उपलब्ध होते रहते हैं। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में हो जाता है, पत्नी सुन्दरी, गुणवती तथा मनोनुकूला मिलती है, तथापि उससे इसकी तृप्ति नहीं हो पाती, अतः यह अन्य स्त्रियों से भी सम्बन्ध बनाये रखता है। स्त्रियाँ भी इसके लिए धन, मान तथा सुख प्रदायक सिद्ध होती हैं। अपने भाई से शत्रुता के कारण इसे दुःख भी उठाना पड़ता है। ऐश्वर्य प्रदर्शित करने वाले कार्यों से इसे विशेष रुचि होती है। भाग्योदय बचपन से ही होता है। पुत्र से फल नहीं मिलता। पूर्णायु ६० वर्ष होती है।

(६११४) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुदृढ़ परन्तु पतले शरीर वाला, अत्यन्त चतुर, धुन का पक्का, उद्यमी, उदार, साहसी तथा मधुभाषी होता है। यह अपने संकल्पों को पूरा करने के लिए प्राणपण से जुट जाता है और उनमें सफलता भी प्राप्त करता है। यह अपनी ननसाल की ओर विशेष आकर्षित रहता है। इसका विवाह २२ वर्ष की उम्र में हो जाता है। पत्नी अनुगता, सुन्दरी तथा सहयोगिनी होती है। यह पत्नी से सुख प्राप्त करते हुए भी अन्य स्त्रियों की ओर भी आकृष्ट बना रहता है तथा उनसे प्रेम-सम्बन्ध रखता है। इसे सन्तान-सुख प्राप्त होता है, परन्तु भाई का सुख नहीं मिलता। इसका भाग्योदय २५ वर्ष की आयु से हो जाता है तथा इसे निरन्तर धन तथा सुख की उपलब्धियाँ होती रहती हैं। यह स्वभाव से कृपण होते हुए भी मन का उदार होता है। इसे विलासिता के लोगों की संगति से सुख, सम्मान तथा धन का लाभ होता है। पूर्णायु लगभग ६८ वर्ष की होती है।

(१११५) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, सुदृढ़ शरीर, मध्यम कद, गौर वर्ण, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न तथा नीतिज्ञ होता है। यह दूसरों तक के विश्वास नहीं रखता तथा अपने विचारों को ही सर्वोपरि स्थान देता है। यों यह उदार प्रकृति का, दानी तथा प्रखर बुद्धि का होता है। कभी-कभी इसे क्रोध भी बहुत आता है। यह नीतिज्ञ होने के कारण सूझ-बूझ से काम लेकर बिगड़े हुए काम को भी बना लेता है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। यह राजकीय-सेवा में भी सफलता प्राप्त करता है। पत्नी मनोऽनुकूला मिलती है, सन्तान-सुख भी रहता है, परन्तु भाइयों से स्नेह नहीं रहता। इसे पुत्र धन-संचय में सहयोग करते हैं, अतः इसकी आर्थिक-स्थिति पर्याप्त सुदृढ़ बनी रहती है। यह समाज तथा परिवार में सम्मानित स्थान प्राप्त करता है। भाग्योदय विवाहोपरान्त होता है तथा पूर्णायु लगभग ७६ वर्ष की होती है।

(१११६) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य सुदृढ़ शरीर तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। इसके क्रिया-कलाप रहस्यमय होते हैं तथा इसके मन के भेद को कोई जान नहीं पाता है। यह प्रायः राजकीय-सेवा में रहकर अपनी उन्नति करता है तथा अपनी विद्वता एवं चतुराई के बल पर शीघ्र ही किसी उच्च पद को प्राप्त कर लेता है। यदि राजकीय-सेवा में न रहे तो अन्य क्षेत्रों में रहकर भी यह अपने लिए सम्मानजनक स्थान प्राप्त करता है तथा आर्थिक-स्थिति को सुदृढ़ करता है। इसका विवाह १९-२० वर्ष की आयु में ही हो जाता है तथा विवाह के कुछ समय बाद ही सन्तति-लाभ भी होता है। इसका भाग्योदय बाल्यावस्था से ही होता है, अतः यह निरन्तर धन कमाता रहता है तथा विभिन्न प्रकार के सुखों का उपभोग करता है। अपने उग्र स्वभाव के कारण यह अधिक लोकप्रिय तो नहीं होता, तथापि समाज को प्रभावित बनाये रखता है। पूर्णायु ७० वर्ष से अधिक होती है।

मु० सं० कु० र०

(११२७) — इस जन्मकुण्डली का स्वामी लम्बे कद का, रक्त-गौर वर्ण, काले केशों वाला, बड़े नेत्रों वाला, शरीर से पतला परन्तु चपल, सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह युवावस्था में प्रवेश करते ही धनोपार्जन करने लगता है तथा जीवन भर अधिकाधिक धन कमाता चला जाता है। यह व्यावसायिक बुद्धि का होते हुए भी व्यापार में सफल नहीं होता। राजकीय सेवा में रह कर ही इसे सफलताएं उपलब्ध होती हैं। राजकीय सेवा में न जाने पर यह किसी उच्च व्यावसायिक संगठन में कार्य करता है और वहाँ सफलता, सम्मान एवं आर्थिक-लाभ प्राप्त करता है। इसे रहस्यमय कार्यों से प्रेम होता है। यह अपने पेट की बात अपनी पत्नी को भी नहीं बताता। नीच व्यक्तियों के संसर्ग से इसे विशेष लाभ होता है। इसका विवाह २० वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी सुन्दरी मिलती है, तथापि अन्य स्त्रियों से भी इसके संबंध बने रहते हैं। सन्तान-सुख उत्तम रहता है। पूर्णायु ६८ वर्ष के लगभग होती है।

(११२८) — इस जन्मकुण्डली वाला जातक सुन्दर, आकर्षक, अत्यन्त प्रभावशाली, हृष्ट-पुष्ट, सुन्दर मुखमण्डल वाला, उन्नत ललाट वाला, स्वभाव से सौम्य, शान्त, धीर-गंभीर, दार्शनिक विचारों का गुणवान तथा विद्वान होता है। यह राजकीय सेवा अथवा किसी निजी व्यावसायिक संस्थान में नौकरी करके धन तथा यश का उपार्जन करता है। यह स्वतन्त्र विचारों का धनी तथा आकस्मिक रूप से लाभ पाने वाला होता। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा मधुर स्वभाव की होती है, तथापि उसके विचारों से इसका मेल नहीं खाता। सन्तान-सुख भी सामान्य ही रहता है। परन्तु पुत्रों की सहायता से धन की पर्याप्त वृद्धि होती है। यह नास्तिक विचारों का होते हुए भी परोपकारी तथा दानी होता है। वृद्धावस्था में इसकी प्रवृत्तियाँ धर्म की ओर भी उन्मुख होती हैं तथा यह तीर्थाटन भी करता है। पूर्णायु ७० वर्ष के लगभग होती है।

मू० सं० २८०८ क्र० २०

(११२६९) – इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर शरीर वाला, मध्यम कद का, पतली देह यष्टि का, हठी स्वभाव का तथा अपने ही तर्कों एवं विचारों को मान्यता देने वाला होता है। इसका झुकाव अतीन्द्रियवाद की ओर अधिक होता है। भौतिकतावादी प्रवृत्तियों का यह अनुयायी होता है। इसे राजपक्ष से लाभ होता है तथा बाहरी यात्राओं से भी पर्याप्त धन मिलता है। इसका विवाह २१-२२ वर्ष की आयु में हो जाता है, परन्तु पत्नी के साथ वैचारिक-मतभेद बना रहता है। पत्नी से अधिक सुख भी नहीं मिलता। दूसरा विवाह होना भी निश्चय है। इसका भाग्योदय २५ वर्ष की आयु से हो जाता है। इसकी आमदनी खूब होती है, परन्तु खर्च भी अधिक रहता है। पुत्रों द्वारा भी धन की वृद्धि की जाती है। साहसिक कार्यों से भी इसे पर्याप्त लाभ होता है। इसके जीवन के ४०, ४२, ४४, ४८ तथा ५२वें वर्ष अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। पूर्णायु ७० से ७२ वर्ष के बीच होती है।

(११२७०) – इस जन्मकुण्डली वाला जातक पतले एवं लम्बे शरीर का, गौरवर्णी, सुन्दर, गंभीरतापूर्वक चिन्तन करने वाला, परन्तु किसी निर्णय पर पहुँचने में अत्यधिक विलम्ब लगाने वाला तथा अस्थिर चित्त वाला होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी अच्छे स्वभाव की, मधुर-भाषिणी, सुन्दरी तथा व्यवहार-कुशल होती है, परन्तु उसका जातक से यत्किंचित् मतभेद भी बना रहता है। इसका भाग्योदय विवाहोपरान्त होता है तथा कई स्रोतों से धन का आगमन होता है। इसे सर्वत्र यश तथा सम्मान की उपलब्धि होती है। यह राजनीतिक या संघ वा किसी बड़े संगठन में कार्यरत रहकर पर्याप्त धन अर्जित करता है। पुत्रों द्वारा भी धन का लाभ होता है। पुत्र अनुगत तथा आज्ञाकारी होते हैं। इसके जीवन के ३९, ४३, ४८ तथा ५८वें वर्ष विशेष महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। पूर्णायु ७५ वर्ष की होना निश्चय है।

<u>(११२१)</u> — इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य सुन्दर शरीर वाला, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, कोमल स्वभाव का, दूसरों के प्रति सहानुभूति पूर्ण, उपदेशकों जैसी वक्तृता देने वाला तथा धर्म-कर्मी विचारक होता है। इसके पास धन का आगमन निरन्तर बना रहता है, अतः यह आर्थिक-दृष्टि से सुखी एवं सम्पन्न बना रहता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा सतीत्विनी होती है। विवाह के बाद कुछ समय तक इसे बहुत कष्टों का सामना करना पड़ता है, तत्पश्चात् सब कुछ ठीक हो जाता है। दूसरों के पास धन के रुक जाने के कारण इसे कष्ट होता है। आयु के २५, २८ तथा ३२ वें वर्ष में धन का लाभ होता है तथा ३६, ४० एवं ४८ वें वर्ष में पर्याप्त धनागम होता है। यह राजकीय सेवा में, शिक्षालय में अथवा किसी बड़े संगठन में कार्यरत रहकर पर्याप्त यश तथा धन अर्जित करता है। इसके संबंध एक से अधिक स्त्रियों से रहते हैं। पूर्णायु ८० वर्ष होती है।

<u>(११२२)</u> — इस जन्माङ्ग चक्र का स्वामी सुन्दर तथा स्वास्थ्य शरीर का, उच्च विचारवान् तथा महत्वाकांक्षी होता है। यह अपनी वाक्पटुता से लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है तथा तार्किक शक्ति से प्रभावित करके मानता है। इसे राजकीय-सेवा में जाने का अवसर मिलता है और उसमें उच्चपद प्राप्त करता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दर, वाक्पटु, सुशील तथा सम्पन्न-परिवार की होती है। इसका पूर्ण भाग्योदय ४५ वर्ष की आयु में होता है। ४८, ५५ तथा ६२ वर्ष की आयु में इसे धन का विशेष लाभ होता है। इसका कभी पराभव नहीं होता। अपने व्यक्तित्व के प्रभाव से यह सदैव सुख स्थिति में बना रहता है। इसकी आमदनी के स्रोत अनेक होते हैं। पुत्र-पक्ष की ओर से इसे दुःख मिलता है। सन्तान विलम्ब से होती है तथा योग्य नहीं होती। इसकी मृत्यु लगभग ८० वर्ष की आयु में होती है।

(११२३)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, परन्तु उग्र स्वभाव का, क्रोधी, अभिमानी, तथापि समय को समझ कर शान्त हो जाने वाला होता है। यह पुरुषार्थ तथा पराक्रम को विशेष महत्व देता है तथा अपनी बुद्धिमत्ता के बल पर प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है। इसके अध्ययन में बाधायें आती हैं, फिर भी यथेष्ट शिक्षा पाने में सफल होता है। विद्याध्ययन समाप्त करते ही इसे राजकीय सेवा में जाने का सुयोग मिलता है। यह 22-23 वर्ष की आयु से ही आजीविका उपार्जित करने लगता है। यह समझदार होते हुए भी कभी-कभी शीघ्रता पूर्ण कार्य कर बैठता है तथा अनुचित साधनों से भी धन कमाता है। यह अपने बहिन-भाइयों से स्नेह करता है तथा अपने जीवन को एकरस बनाये रखता है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। भाग्योदय 20 वर्ष की आयु से ही आरम्भ हो जाता है। अन्त समय तक इसके पास पर्याप्त धन रहता है। अधिकतम आयु ६८ वर्ष होती है।

(११२४)- इस कुण्डली वाला जातक पतले-दुबले तथा लम्बे शरीर का, स्वभाव से रूखा दिखाई देने वाला, परन्तु हृदय का अत्यन्त कोमल और उदार होता है। यह अनेक गुणों से युक्त, विद्वान् तथा स्थायी सम्पत्ति का स्वामी होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा अनुराग पूर्ण होती है। यह उसके कहे अनुसार ही चलता है। विवाहोपरान्त ही इसका भाग्योदय भी होता है तथा ४५ वर्ष की आयु तक इसकी समस्त आकांक्षाओं की पूर्ति हो जाती है। इसके पास धन भी प्रचुर मात्रा में संचित हो जाता है। यह किसी उच्च पद को प्राप्त कर यशस्वी बनता है। यह प्रायः आत्मकेन्द्रित स्वभाव का होता है तथा बहुत कम बोलता है। पुत्र-पुत्रियों का पूर्ण सुख प्राप्त होता है। धन को खर्च करने में यह कृपण होता है, तथापि वृद्धावस्था तक इसे सर्वत्र सम्मान मिलता है। पूर्णायु ८० से ८५ वर्ष की होती है।

(११२५)- इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, गौर वर्ण तथा श्याम केशों वाला होता है। यह अपने चारों ओर के वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित करने में कुशल होता है। यह राजकीय-सेवा से आजीविका प्राप्त करता है। इसे विद्या तथा बुद्धि का पर्याप्त लाभ होता है और उसी के बल पर यह प्रतिष्ठा भी प्राप्त करता है। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल प्राप्त होती है। यह अपनी पत्नी से सन्तुष्ट होते हुए भी अन्य स्त्रियों से सम्बन्ध रखता है। यह आत्म-केन्द्रित-स्वभाव का होने के कारण अधिक समय तक किसी के साथ निर्वाह नहीं कर पाता। प्रौढ़ावस्था में इसकी पत्नी इसे वशीभूत रख सकती है तथा वही इसकी आमदनी तथा खर्च पर नियन्त्रण रखती है। इसका भाग्योदय ३० वर्ष की आयु में होता है तथा आर्थिक-दृष्टि से सम्पूर्ण जीवन सुखमय रहता है। सन्तानों से भी सुख मिलता है। पूर्णायु ६०-६५ वर्ष की होती है।

(११२६)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी ऊँचे कद तथा दृढ़ शरीर का, तीखे स्वभाव का एवं क्रोधी होता है। यह अनेक प्रकार के काम करता है, परन्तु किसी को स्थायी रूप नहीं दे पाता। यह बड़ा साहसी होता है तथा अपने साहस एवं परिश्रम के बल पर पर्याप्त धन तथा यश अर्जित करता है। इसका भाग्योदय २२ से २५ वर्ष की आयु में, परदेश में होता है। अपनी वाणी के बल पर यह समाज में प्रतिष्ठित सम्मान प्राप्त करता है। इसका विवाह २० वर्ष की आयु में ही हो जाता है। अपनी सुन्दरी पत्नी को यह अत्यधिक स्नेह करता है तथा सदैव उसी का अनुगत बना रहता है। इसका धन तथा अन्य सम्पत्ति पत्नी के अधीन ही रहती है। इसे पिता तथा राज्य से लाभ होता है। कृपणतावश यह अपने ऊपर कुछ खर्च नहीं करता। स्वभाव से जिद्दी भी होता है। ५५ वर्ष की आयु तक इसकी आर्थिक-स्थिति अत्युत्तम हो जाती है। पूर्णायु ६०-६५ वर्ष की होती है।

(११२७)- इस जन्माङ्ग चक्र का अधिपति सुन्दर स्वस्थ शरीर का, मध्यम कद, कुछ लम्बा तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होता है। इसका भाग्योदय बाल्यावस्था से ही हो जाता है तथा समृद्धि निरन्तर बढ़ती चली जाती है। इसे यथेष्ट विद्या प्राप्त होती है। बुद्धिमान भी खूब होता है। विवाह २२ से २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा अनुगामिनी मिलती है। वह कुछ समय तक रोगाक्रान्त भी रहती है। सन्तान की ओर से भी मन दुःखी रहता है। इसे धन-धान्य की कोई कमी नहीं रहती। आमदनी के अनेक स्रोत रहते हैं। राजकीय-सेवा से भी इसे यथेष्ट आर्थिक-लाभ होता है। इसका काफी धन नष्ट भी हो जाता है, जो प्रयत्न करने पर भी वापिस नहीं लौटता। इसकी आयु के ३५, ४०, ४२, ४६, ५० तथा ५५ वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। परिवारीजनों से सामान्य संबंध रहते हैं तथा शारीरिक स्वास्थ्य भी प्रायः अच्छा बना रहता है। पूर्णायु ८० वर्ष के लगभग होती है।

(११२८)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी मध्यम कद तथा शरीर वाला, स्वस्थ, साँवले रंग का, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न तथा स्वयं को वातावरण के अनुकूल ढाल लेने वाला होता है। इसे कभी ही झूठ-सच बोलने, दूसरों को भ्रमित करने, आडम्बर-प्रदर्शन तथा अपनी महत्ता प्रतिपादित करने में आनन्द का अनुभव होता है। इसका विवाह २२ से २४ वर्ष की आयु में होता है, परन्तु पत्नी से मतैक्य नहीं हो पाता। फिर भी घर-गृहस्थी के संचालन में कोई अवरोध उत्पन्न नहीं होता। अपनी पत्नी से पूर्ण सन्तुष्ट न रहने के कारण यह अन्य स्त्रियों से भी सम्बन्ध बनाये रखता है। इसका भाग्योदय बाल्यावस्था से ही हो जाता है, अतः धन-धान्य, भूमि, भवन, वाहन आदि के सभी सुख-साधन इसे उपलब्ध रहते हैं। यह सन्तान के लिए कष्ट उठाता है तथा अपनी कलाकारिता से प्रचुर धन कमाता है। इसकी पूर्णायु ७५ से ८० वर्ष तक होती है।

भू० सं० २०४७

कु० र०

(११२९)- इस जन्मकुण्डली का जातक सुन्दर, बलिष्ठ शरीर का प्रियदर्शी, गुणवान्, विद्वान् तथा धनवान् होता है। यह बाल्यावस्था से ही सुख प्राप्त करता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा स्वभाव से कृपण होती है। वह धन का संचय करती रहती है। धनी-परिवार में जन्म लेने के कारण जातक की आर्थिक स्थिति आरम्भ से ही सुदृढ़ रहती है तथा बाद में वह और भी अधिक दृढ़ होती चली जाती है। विद्याध्ययन यथेष्ट होता है। शिक्षा समाप्त करके यह राजकीय सेवा में लग जाता है, वहाँ इसे पर्याप्त यश तथा सम्मान मिलता है और धनागमन भी खूब होता रहता है। पत्नी से किंचित् मतभेद होना भी सम्भव है। सन्तान के लिए भी दुःखी रहता है। माता-पिता का पूर्ण सुख प्राप्त होता है। धार्मिक अथवा परोपकारिता के कार्यों में इसकी रुचि नहीं होती। कृपणता पूर्वक धन का संचय ही मूल उद्देश्य रहता है। पूर्णायु ८० वर्ष हो सकती है।

(११३०)- इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, अनेक गुणों से सम्पन्न, बुद्धिमान् तथा धनवान होता है। यह अपने गुणों के प्रकट करने हेतु प्रयत्नशील भी रहता है। इसका विवाह २० से २५ वर्ष की आयु में होता है तथा पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। प्रारम्भ में संतानें जीवित नहीं रहतीं, परन्तु बाद में जीवित रहती हैं। इसकी आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं, अतः इसकी आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। शत्रु भी इसका आदर करते हैं तथा लोक में सर्वत्र यश तथा सम्मान की उपलब्धि होती है। परिवारीजनों से स्नेह पूर्ण सम्बन्ध रहते हैं। पुत्रों द्वारा भी इसे सुख प्राप्त होता है। जीवन के ३२, ४० तथा ५६ वें वर्ष महत्वपूर्ण एवं लाभप्रद सिद्ध होते हैं। तीर्थयात्रा एवं देशाटन का इसे बहुत शौक होता है। शरीर प्रायः नीरोग बना रहता है। पूर्णायु लगभग ७५ वर्ष होती है।

पृ० सं० २८०४

कु० र०

(११३१)- इस कुण्डली वाला जातक सुन्दर चित्रवान्, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न तथा अपने कुल एवं जाति में सम्माननीय स्थान पाने वाला होता है। यह उदार हृदय का, परन्तु अस्थिर-चित्त वाला होता है, इसी कारण यह दूसरे लोगों से भी प्रभावित हो जाता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक सुन्दरी तथा विदुषी स्त्री से होता है। दीर्घसूत्री होने के कारण यह अनेक योजनाएँ बनाता तथा बिगाड़ता रहता है। २५ वर्ष की आयु में यह किसी अच्छे पद पर आसीन हो जाता है। इसकी आजीविका का मुख्य साधन राजकीय-सेवा होती है। ४०-४५ वर्ष की आयु तक यह अत्यधिक ख्याति उपलब्ध कर लेता है। इसके जीवन के ५०, ५२, ५८ तथा ६२वें वर्ष विशेष महत्वपूर्ण रहते हैं। इन वर्षों में यह बहुत उन्नति करता है। वृद्धावस्था में इसे रोगादि का कष्ट होता है। ६८ वर्ष की आयु में मृत्यु-मुख में जाते-जाते बचता है तथा ७०-७२ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(११३२)- इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य सुन्दर, आकर्षक, स्वस्थ, कलाओं के प्रति रुचिवान्, गुणी, मनस्वी तथा सात्विक प्रकृति का होता है। इसकी आकांक्षाएँ प्रबल तथा महत्वपूर्ण होती हैं, उन्हें पूरा करने के लिए यह जी-जान से प्रयत्न करता है तथा आंशिक सफलताएँ भी प्राप्त कर लेता है। इसे माता का सुख नहीं मिलता, तथापि बड़े भाई का सुख प्राप्त होता है। यह स्वयं भी समय-समय पर रोग-ग्रस्त होकर दीर्घकालीन दुःख भोगता है। इसे पानी से भय रहता है। इसका विवाह २०, २२ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती होती है। उससे अनुराग भी बहुत रहता है। इसे पिता से स्नेह मिलता है तथा पैतृक-सम्पत्ति से लाभ प्राप्त होता है। इसका भाग्य ४०, ४५ वर्ष की आयु में चरमोत्कर्ष पर रहता है। यह परिश्रमी तथा पराक्रमी होने के कारण विपुल धन अर्जित करता है तथा पुत्र-पौत्रों से युक्त होकर, लगभग ८० वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

भृ० सं० ३-४०८ कु० २०

(२२३३)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी शरीर से स्वस्थ, सुन्दर, प्रभावशाली, मध्यम कद का, गुणवान, अनेक कलाओं का ज्ञाता, समाज में सम्मानित, सुखी तथा वात्सल्यमय हृदय का भाग्यशाली होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, पति तथा परिवार का भला चाहने वाली तथा गृह-कार्य कुशला मिलती है। यह श्रेष्ठ दाम्पत्य तथा सन्तान-सुख प्राप्त करता है। यह धार्मिक एवं ईश्वर भक्त होने के साथ ही सत्यवादी होता है तथा किसी भी स्थिति में ईमानदारी को नहीं छोड़ता। इसका उत्कर्ष विवाहोपरान्त ही आरम्भ हो जाता है तथा ४५ वर्ष की आयु तक चरम शिखर पर जा पहुँचता है। इसे अनेक प्रकारों से धन का लाभ होता है। अतः आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। माता-पिता का पूर्ण सुख मिलता है। जीवन के ३०, ३३, ३५, ३९, ४५ तथा ५५ वें वर्ष विशेष उन्नति कारक रहते हैं। ५६ वें वर्ष में भी बहुत लाभ होता है। पूर्णायु ८० वर्ष की होती है।

(२२३४)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, राजमान्य तथा सब प्रकार से सुखी, धनी, गुणी एवं विद्वान होता है। विद्या-लाभ श्रेष्ठ होता है। राजकीय-सेवा में उच्च पद प्राप्त करता है अथवा किसी बड़े प्रतिष्ठान में अधिकारी के पद पर आसीन होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, मनोनुकूला तथा भाग्यशालिनी होती है। पुत्र भी बड़े भाग्यशाली होते हैं। इसे जमीन-जायदाद के कारोबार से भी पर्याप्त लाभ होता है। ज़मीन में गड़े हुए धन की उपलब्धि भी हो सकती है। यह निरन्तर आगे बढ़ता चला जाता है। पीछे मुड़ कर नहीं देखता। इसके उत्कर्ष को देखकर कुटुम्बीजन ईर्ष्या भी कर सकते हैं। ५० वर्ष की आयु तक यह सफलता के सर्वोच्च शिखर पर जा बैठता है, तदुपरान्त यह आत्मकेन्द्रित होकर अनुदार बन जाता है। उस समय इसकी लोकप्रियता में भी कमी आ जाती है। तथापि सम्पन्नता के चलते हुए ७५ वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(११२३५)- इस जन्मकुण्डली वाला जातक गौरवर्ण, स्थूल शरीर का, मध्यम कद वाला, सरल प्रकृति गुणवान्, ज्ञानी, विद्वान् तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। यह अपने पुरुषार्थ के बल पर आगे बढ़ता तथा शत्रुओं को नीचा दिखाता है। इसके प्रतिद्वन्द्वी सामने ठहर नहीं पाते। यह अपनी मधुरवाणी द्वारा सब का प्रिय बना रहता है। अहंकार इसके नजदीक भी नहीं पाया जाता। इसका विवाह २२, २३ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी होने के साथ ही जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में इसका सहयोग करने वाली भी होती है। सन्तान-सुख भी उत्तम रहता है। भाग्योदय २५ वर्ष की आयु से आरम्भ हो जाता है तथा ३५ वर्ष की आयु तक यह सर्वोच्च शिखर पर जा पहुँचता है, राजनीति में भी विशेष प्रगति करता चला जाता है। इसके पास धन की कभी कमी नहीं रहती। लाल उद्योग कार्यों में अपेक्षित लाभ होता है। पूर्णायु ८० वर्ष की होती है।

(११२३६)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, विद्वान्, प्रभावशाली, अपने परिश्रम एवं शुभ गुणों द्वारा यथेष्ट सम्मान पाने वाला, यशस्वी, गुरु तथा देवताओं का पूजक, धनी, बुद्धिमान् तथा अनेक मित्रों वाला होता है। इसका विवाह १९-२० वर्ष अथवा फिर २६ वर्ष की आयु में होता है। इसकी पत्नी प्रायः रुग्णा रहती है, जिसके कारण यह दुःखी बना रहता है। माता, पिता तथा भाई-बहिनों का सुख तथा प्रेम पर्याप्त मिलता है। सन्तति-सुख भी उत्तम रहता है। स्वस्थ होने पर पत्नी भी प्रत्येक क्षेत्र में सहयोगिनी सिद्ध होती है। इसके जीवन के ३६, ३९, ४३, ५२ तथा ५६वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनमें विशेष लाभ होता है। ४० तथा ४२ वर्ष की आयु में शारीरिक-कष्ट होता है। यह स्वदेश में ही यश-सम्मान तथा धन का लाभ करता है। यह अनेक उच्चपदों पर रहकर सुख तथा कीर्ति अर्जित करता है। यह लगभग ७० वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

भृ० सं० ४०५४

कु० २०

(२२३७)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी दृढ़ शरीर, उन्नत कद, कोमल स्वभाव, उदार विचारों का तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी होता है। यह धैर्यशाली, गंभीर तथा अपने शत्रुओं को भी क्षमा की दृष्टि से देखने वाला होता है। इसकी आय के अनेक स्रोत होते हैं, अतः आर्थिक-स्थिति सदैव सुदृढ़ बनी रहती है। यह अत्यन्त यशस्वी होता है तथा सर्वत्र सम्मान प्राप्त करता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुख देने वाली मिलती है। वह धैर्यशालिनी, कलाओं की ज्ञाता तथा उच्च विचारों की होती है। जातक की भाग्योन्नति परदेस में होती है। ४२ वर्ष की आयु में इसे बीमारी का सामना करना पड़ता है। पुत्र के कारण भी यह दुःखी रहता है। जीवन के २६, २९, ३१, ३५, ३८, ४५, ४७, ५२ तथा ५८ वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। लगभग ६० वर्ष की आयु तक यह जीवित रहता है तथा अपने पीछे विपुल सम्पत्ति छोड़ जाता है।

(२२३८)- इस जन्म कुण्डली वाला जातक सुन्दर, गुणी, विद्वान, मधुरभाषी तथा कलाकार होता है। यह परिस्थितियों तथा संसर्ग के कारण नास्तिक विचारधारा का बन जाता है। इसका विवाह २२ से २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुख देने वाली तथा प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करने वाली मिलती है। इसे अच्छे तथा आज्ञाकारी पुत्रों का लाभ होता है और उनके कारण इसकी सम्मान-वृद्धि भी होती है, जबकि अपने पिता के कारण इसे किंचित् अपयश का पात्र बनना पड़ता है। इसका भाग्योदय ३० वर्ष की आयु में किसी स्त्री की सहायता से होता है। इसे राजकीय-सेवा में रहने का अवसर भी मिलता है और उसके कारण यह विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। ५० तथा ५५ वर्ष की आयु में इसे विशेष ख्याति मिलती है। परिवारीजनों से इसके संबंध अच्छे रहते हैं। आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ रहती है। पूर्णायु ६० वर्ष के लगभग होती है।

(११३९)- इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य अत्यन्त सुन्दर, सुशील, प्रियवादी, आकर्षक व्यक्ति-त्व वाला, धीर-गंभीर तथा अपने पुरुषार्थ के बलपर सम्पत्ति तथा यश अर्जित करने वाला होता है। इसे भूमिगत-द्रव्य की उपलब्धि भी हो सकती है। यह भाई के सुख से रहित तथा स्त्री की ओर से अत्यन्त सुखी होता है। इसका विवाह २४.२५ वर्ष की आयु में हो जाता है, परन्तु स्त्री-सन्तान मिलती है। इसका भाग्योदय २५ वर्ष की आयु में ही होता है। यह देश-विदेश की यात्राएं करता है तथा प्रचुर धन तथा यश कमाता है। इसके पुत्र भी बड़े होकर धनी तथा यशस्वी बनते हैं। पुत्रों द्वारा इसे सुख भी प्राप्त होता है। ३६ वर्ष की आयु में इसे किसी विपत्ति में पड़ना होता है, परन्तु उससे मुक्ति भी मिल जाती है। जीवन के २८, ३१, ३५, ३८, ४२, ४५ तथा ५६वें वर्ष विशेष लाभदायक रहते हैं। इसकी आयु ६८ से ७० वर्ष के मध्य होती है।

(११४०)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी लम्बे कद का, सुन्दर, प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी, सुखी तथा धन-सम्पन्न होता है। यह बाल्यावस्था से ही सुखी रहता है। इसे उच्च-शिक्षा प्राप्त होती है और यह अपनी विद्या के बलपर घर-बाहर सर्वत्र सम्मान प्राप्त करता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है तथा इसी अवधि से इसका भाग्योदय भी आरंभ हो जाता है। यह आकस्मिक धन-लाभ के अनेक अवसर प्राप्त करता है। काव्य, कला तथा ज्योतिष के अति-रिक्त चिकित्सा सम्बन्धी कार्य भी इसे ज्ञात होता है। यह देश-विदेश की यात्राएं करता और उनसे पर्याप्त धन कमाता है। इसका पूर्ण भाग्योदय लगभग ५५ वर्ष की आयु में होता है। इसके पुत्र भी सुन्दर, यशस्वी तथा धनी होते हैं। उनसे इसे सुख प्राप्त होता है। राज्य द्वारा सम्मानित तथा लोक द्वारा प्रशंसित यह व्यक्ति ७४ से ८० वर्ष तक की आयु प्राप्त करता है।

(११४१)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी मध्यम कद का, पतले शरीर का, गौरवर्ण, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, मधुरभाषी, उदारचित्त, हँसमुख स्वभाव का, सदैव प्रसन्न रहने वाला तथा साहित्य, संगीत कला आदि ललितकलाओं का जानकार होता है। इसका विवाह 23-24 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा रूपगर्विता होती है। यह पति को सुख देती हुई, प्रत्येक कार्य में सहयोग भी करती है। इसका भाग्योदय २४ वर्ष की आयु से होता है। पत्नी रुग्णा रहते हुए भी इसके ऊपर अपना नियन्त्रण रखती है। धन-सम्पत्ति सब उसी के अधिकार में रहते हैं। इसे पुत्रों से भी पर्याप्त सुख मिलता है। यह जीवन में उत्तरदायित्व पूर्ण पदों का निर्वाह करता है तथा प्रत्येक कार्य में सफलता पाता हुआ अनेक प्रकार के सुख प्राप्त करता है। आर्थिक स्थिति उत्तम बनी रहती है तथा जीवन में निरन्तर प्रगति बनी रहती है। पूर्णायु लगभग ६८ वर्ष होती है।

(११४२)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, सम्मोहक व्यक्तित्व वाला तथा विभिन्न कलाओं का जानकार होता है। यह अनेक स्त्रियों की ओर आकर्षित होता है तथा उन्हीं के सहयोग से अपने भाग्य की अभिवृद्धि करता है। इसका विवाह 20-22 वर्ष की आयु में होता है, परन्तु अपनी पत्नी की ओर से इसे अल्प-सुख ही मिल पाता है। पत्नी की ओर से असन्तुष्ट रहता हुआ यह अन्य स्त्रियों के द्वारा सुख प्राप्त करता है। इसे सट्टा, लाटरी आदि के द्वारा आकस्मिक रूप से भी धन प्राप्त होता है। इसे सुख, मान-सम्मान तथा वैभव की निरन्तर उपलब्धि होती रहती है। लगभग ४५ वर्ष की आयु में यह विशेष रुग्ण होता है। फिर स्वस्थ होकर अपने कार्यों को यथावत् करने लगता है। जीवन के २६, २८, ३१, ३५, ३८, ४२, ४८ तथा ५२वें वर्ष विशेष लाभदायक रहते हैं। यह ७० से ७२ वर्ष तक की आयु प्राप्त करता है।

(११४३)- इस जन्मकुण्डली चक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, पुष्ट शरीर वाला, मध्यम लम्बाई का, गौर वर्ण तथा उदार-बुद्धि का होता है। वह अपनी शक्ति अनुसार भी दूसरों का भला करता है। इसे कृषि से धन का लाभ होता है। गड़े हुए धन को पाने की सम्भावना भी रहती है। कृषि अथवा खनिज वस्तुओं के व्यवसाय से भी इसे विशेष लाभ होता है। यह १९-२० वर्ष की आयु से ही धन कमाने लगता है। अत्यधिक साहस तथा निर्भयता से सम्पन्न यह जातक पराई नौकरी में रह कर भी पर्याप्त मात्रा तक धन कमाता है। धन को संचित करने में भी यह बहुत कुशल होता है। यह राज्याश्रय अथवा राजकीय-सेवा से भी लाभ उठा सकता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, गुणवती तथा बुद्धिमती होती है। पुत्रों से भी पर्याप्त सुख मिलता है। भाग्योदय ३४ वर्ष की आयु में होता है। परदेस में रह कर धन तथा यश की पर्याप्त उपलब्धि होती है। पूर्णायु ६८ वर्ष होती है।

(११४४)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी दृढ़व्रती, धीर, वीर, गम्भीर, सुन्दर, पतले शरीर वाला, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न तथा धुन का पक्का होता है। इसकी बातें बड़ी मधुर तथा मोहक होती हैं। यह अनेक प्रकार से धन का संचय करता है। इसकी आय के स्रोत भी अनेक रहते हैं। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा इसके ऊपर नियन्त्रण करने वाली मिलती उसका कार्यक्षेत्र पति से भिन्न होता है। वह सन्तान के लिए दुःखी भी रहती है, क्योंकि अनेक बार सन्तति-क्षय की घटनाएँ घटती हैं। बड़ी कठिनाई से केवल एक कन्या ही जीवित रह पाती है। इस जातक का भाग्योदय राज्याश्रय से होता है अर्थात् यह राजकीय-सेवा कार्य करता है। यह पाप-पुण्य का विचार किये बिना यथेष्ट सम्पत्ति अर्जित करता है। परस्त्री में आसक्त होकर उसे भी जीवनभर अपने साथ रखता है। इसका भाग्योदय सदैव होता रहता है। पूर्णायु ८० वर्ष की होती है।

(११४५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी दृढ़ शरीर का, सुन्दर, आकर्षक तथा दूसरों को प्रभावित करने के विशेष रूप से सक्षम होता है। परन्तु यह अपने सम्बन्धों से असावधान रहता है, जिसके कारण इसे स्वयं ही हानि उठानी पड़ती है। यह श्रेष्ठ विद्या का लाभ करता है तथा २३-२४ वर्ष की आयु में ही राजकीय सेवा में पहुँचकर आर्थिक-लाभ पाने लगता है। इसका भाग्योदय भी इसी समय में होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती होती है, फिर भी यह अनेक स्त्रियों के साथ सम्बन्ध बनाये रखता है। ३२, ३५, ४४ तथा ४६ वें वर्ष में इसे बहुत कष्ट होता है। ५० वर्ष की आयु में इसे धन का बहुत लाभ होता है। पत्नी मानिनी तथा दुःखी रहने वाली होती है। सन्तान-सुख सामान्य रहता है। इसका भाग्योदय परदेश में होता है तथा यह अनेक यात्रायें भी करता है। इसे सर्वत्र यश तथा सम्मान की उपलब्धि होती है। पूर्णायु ६० वर्ष के लगभग होती है।

(११४६) - इस जन्म कुण्डली वाला जातक सुन्दर तथा पुष्ट शरीर का, उत्तम धार्मिक विचारों का, धर्म-कर्म में आस्था रखने वाला, सुशील तथा धनी एवं स्वाभिमानी होता है। इसे आकस्मिक रूप से धन का लाभ होता रहता है तथा इच्छा करते ही धन इसके सामने आ जाता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सात्विक विचारों की होती है। इसका भाग्योदय २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। यह समय के अनुकूल चलता तथा लाभ उठाता है। परदेश में रहकर यह पर्याप्त धन कमाता है। सामान्यतः यह घर छोड़कर कहीं जाना नहीं चाहता, परन्तु पत्नी के आग्रह पर यह उसे साथ लेकर परदेश में रह लेता है। सन्तानों से अल्प सुख मिलता है। जीवन के २५, २८, ३२, ३८, ४१, ४६ तथा ५० वें वर्ष विशेष कष्टप्रद सिद्ध होते हैं। यह स्वस्थ तथा सुखी जीवन बिताता हुआ लगभग ७५ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

३४०७ सं. भु०

कु० र०

(११४७) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य पतले शरीर का, मध्यम कद वाला, सुन्दर, तीव्रबुद्धि, उदार स्वभाव का तथा भाग्यशाली होता है। इसे माता की ओर से द्रव्य प्राप्त होता है, क्योंकि वह रोगग्रस्त रहती है। विद्या लाभ का श्रेष्ठ योग बनता है। परन्तु विद्याध्ययन में बाधाएं भी आती हैं। कुछ समय के लिए अध्ययन रुक भी जाता है। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में होता है, पत्नी सुन्दरी तथा सुलक्षणा मिलती है, तथापि यह अनेक स्त्रियों की ओर भी आकर्षित बना रहता है। २५ वर्ष की आयु से इसका भाग्योदय होता है। उस समय पर समस्त विघ्न-बाधाओं को पार करता हुआ निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। ४० वर्ष की आयु के पर महाधनी होता है तथा सुख के सभी साधनों को प्राप्त कर लेता है। ४२, ४४ तथा ४८वें वर्ष में इसे बीमारी के कारण कष्ट भोगना पड़ता है। पुत्रों द्वारा धन नष्ट किया जाता है। पूर्णायु ६० वर्ष से अधिक की होती है।

(११४८) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी शरीर से स्वस्थ, सुन्दर, प्रखर बुद्धिवाला तथा अनेक उत्तरदायित्वों को वहन करने की क्षमता रखने वाला होता है। शिक्षा-दीक्षा पूर्ण होती है, परन्तु अध्ययनकाल में बाधाएं भी आती हैं। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, वाचाल, बुद्धिमती तथा अत्यन्त आकर्षक व्यक्तित्व वाली होती है। यह उससे इतना आसक्त हो जाता है कि उसके सहयोग बिना कुछ कर ही नहीं पाता। पत्नी इसे प्रत्येक क्षेत्र में समुचित मार्ग-दर्शन तथा सहयोग भी देती है। सन्तान का सुख भी उत्तम रहता है। भाग्योदय विवाहोपरान्त ही होता है। धन का लाभ निरन्तर होता रहता है। परदेश की यात्राएँ भी करता है तथा विलासिता के लोगों के सम्पर्क से भी लाभान्वित होता है। इसे शत्रुओं से भी धन का लाभ होता है तथा शत्रु-पक्ष की किसी स्त्री के साथ अनुराग भी हो जाता है। इसका जीवन वैभव विलास पूर्ण रहता है। ६८ वर्ष की पूर्णायु।

(११४९)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी धीर-गंभीर प्रकृति का, सुन्दर, स्वच्छ, अपनी सूझ-बूझ से सबको चमत्कृत कर देने वाला, धीर-गंभीर, गुण का पारखी, अन्याय को सहन न करने वाला, भाग्यशाली तथा सुखी-जीवन बिताने वाला होता है। इसे माता तथा बड़े भाई का सुख प्राप्त नहीं होता। लगभग २० वर्ष की आयु में ही इसका विवाह हो जाता है। पत्नी सुन्दर तथा गुणवती होती है, यह उसे पाकर सुख का अनुभव करता है। इसका भाग्योदय प्रारम्भ से ही हो जाता है। यह अपने पैतृक-व्यवसाय द्वारा पर्याप्त धनोपार्जन करता है तथा ४५ वर्ष की आयु तक सुख के सभी साधन प्राप्त कर लेता है। सामाजिक मान-प्रतिष्ठा भी पर्याप्त मिलती है। यह अपने कुल का नाम ऊँचा करता है। इसे धनका लाभ एक से अधिक कार्यों द्वारा होता है। अपनी पत्नी के अतिरिक्त यह अन्य स्त्रियों से भी संपर्क रखता है तथा उन सम्बन्धों को निभाता भी है। पुत्र से कष्ट मिलता है। पूर्णायु ७० वर्ष के लगभग होती है।

(११५०)- यह जातक सुन्दर तथा चिन्तक होने के साथ ही धैर्यवान भी होता है। तथापि इसे बाल्यावस्था से ही अनेक चिन्ताओं तथा कष्टों का सामना करना पड़ता है, अतः बाल्यकाल सुख से नहीं बीतता। बड़ा होकर यह अपने धैर्य, सूझ-बूझ, गांभीर्य तथा परिश्रम से सभी संकटों पर विजय पा लेता है तथा एक महान् व्यक्ति के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त करता है। यह भूमि, भवन, रत्न एवं धातुओं के व्यवसाय से लाभ उठाता है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, आकर्षक, श्रेष्ठ कुल की तथा मधुर भाषिणी होती है। वह अपने मधुर व्यवहार से इसे प्रसन्न रखती है, तथापि इसका आकर्षण अन्य स्त्रियों की ओर भी होता है। यह पुस्तक लिखने का शौकीन भी होता है तथा उससे लाभ उठाता है। इसके जीवन के २९, ३५, ३७, ३९, ४४ तथा ६०, ६३ एवं ६८वें वर्ष बड़े उतार-चढ़ाव के होते हैं। पूर्णायु लगभग ८० वर्ष की होती है।

मृ० सं० २४०८

कु० २०

(११५१)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी लम्बे पतले शरीर का, सुन्दर, स्वस्थ, आकर्षक, चतुर तथा व्यवहार-कुशल होता है। यह अपने गुणों तथा योग्यता से सब लोगों को आकर्षित करता तथा प्रशंसा का पात्र बनता है। इसे बाल्यावस्था में संकटों से गुजरना पड़ता है। विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है, परन्तु आर्थिक-तंगी बनी रहती है। स्वयं विपन्न होते हुए भी यह दूसरों की यथाशक्ति सहायता करने में नहीं चूकता। इसकी प्रथम सन्तान उत्पन्न करके पत्नी जीवित रह पाती है। २५-२६ वर्ष की आयु में इसे [illegible]-सेवा का कार्य मिलता है, जिससे इसकी आजीविका चल उठती है। इसके जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव आते हैं तथा यह दरिद्रता की सीमा तक स्थित हो जाता है, असमय मित्रों की सहायता से जीवन चलता है। इसे रोग तथा शत्रु भी परेशान करते हैं। पुत्र-सुख भी नहीं मिलता। मृत्यु ६८-६९ वर्ष की आयु में आकस्मिक रूप से होती है।

(११५२)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, भाग्यवान, गुणवान तथा उदारहृदय का होता है, परन्तु इसके पास धन की कमी बनी रहती है. फिर भी इसके सभी कार्य समय पर सम्पन्न होते रहते हैं। यह अपनी विद्या-बुद्धि से कठिनाइयों पर विजय पाता है, तथापि कुछ लोग इससे अकारण ही शत्रुता मानने लगते हैं। इसका विवाह २० से २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है। विवाहोपरान्त इसका भाग्योदय होता है। इसे कृषि, अग्नि तथा लौह पदार्थों और पशुओं से सम्बन्धित व्यवसाय द्वारा लाभ होता है। पुत्र का जन्म होने के बाद इसका भाग्य तेजी के साथ समृद्ध होने लगता है। ४०-४२ वर्ष की आयु में इसे प्रचुर धन उपलब्ध होता है, परन्तु बाद में वही नष्ट भी हो जाता है। इसके जीवन में विविध प्रकार के उतार-चढ़ाव निरन्तर बने रहते हैं। इसे पूर्णायु ६८ से ७५ वर्ष की प्राप्त होती है।

(११५३)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, रूपवान, धैर्यवान्, अत्यन्त उद्यमी, उत्साही तथा अपने पुरुषार्थ द्वारा प्रचुर धन कमाने वाला होता है। इसका विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में सुन्दरी तथा सुलक्षणा स्त्री के साथ होता है। परन्तु वह अधिक समय तक जीवित नहीं रहती, अतः उसके निधनोपरान्त दूसरा विवाह करता है। बाल्यावस्था में यह रोगी रहता है, परन्तु युवावस्था में स्वास्थ्य बना रहता है। ३० वर्ष की आयु में इसके पास बहुत धन होता है। इसके शत्रु अकारण ही उत्पन्न होते हैं और वे इसे पीड़ा भी पहुँचाते हैं। गंभीर परिस्थितियों में इसकी पत्नी ही इसके लिए वरदान सिद्ध होती है। वह इसे संकटों से बचाती तथा आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। इसे भूमि, पशु तथा रत्न-मणि आदि के व्यवसाय से लाभ होता है। प्रौढ़ावस्था के बाद इसे कफ संबंधी रोग होते हैं। यह दानी तथा परोपकारी भी होता है। इसकी पूर्णायु ७८ से ८० वर्ष की होती है।

(११५४)- इस जन्मकुण्डली वाला जातक सुन्दर, गुणवान्, लोकप्रिय तथा शत्रुओं का दमन करने वाला होता है। यह शत्रुओं से लाभ भी उठाता है तथा धन प्राप्त करता है। यह सभी विवादों पर विजय पाने वाला, माता-पिता के सुख से युक्त, अनेक भाई-बहनों वाला तथा परिवार के सभी का प्रिय होता है। यह गुरु, देवता तथा अतिथियों का सेवक तथा धनी होता है। इसका विवाह लगभग २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है, परन्तु पुत्रों की ओर से दुःखी रहता है, क्योंकि उससे मन नहीं मिलता। वे इसके साथ दुर्व्यवहार भी करते हैं। पुत्री से सुख मिलता है। जीवन के २५, २८, ३१, ३६, ३८, ४२, ४५, ४८, ५०, ५४ तथा ५८वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। शारीरिक स्वास्थ्य प्रायः ठीक बना रहता है। मान प्रतिष्ठा भी प्राप्त होती है। पूर्णायु लगभग ६५ वर्ष की होती है।

पृ० सं० ४०३०

कु० २०

(११५५)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य ऊँचे कद का, सुन्दर, स्वस्थ, गौर-वर्ण, पतले शरीर वाला तथा कठिन-से-कठिन परिस्थितियों का हँसते हुए सामना करने वाला होता है। यह किसी उच्च राजकीय-पद को प्राप्त करता तथा प्रचुर धन, यश तथा लोकप्रियता उपार्जित करता है। इसे माता-पिता तथा भाई-बहिनों का पूरा सुख मिलता है। इसका विवाह २०-२२ वर्ष तक की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुखदायक मिलती है। भाग्योदय २५ वर्ष की आयु से होता है। यह सरकारी नौकरी अथवा किसी उच्च प्रतिष्ठान में कार्यरत होकर उन्नति करता है। इसको विवाह तथा शत्रुओं द्वारा भी धन का लाभ होता है, परन्तु कुछ धन की हानि करता है। प्रकट कुछ शत्रु कठिनाई से होते हैं तथा हानि पहुँचाता रहता है। पत्नी ५५ वर्ष की आयु में साथ छोड़ जाती है। वृद्धावस्था में जातक का झुकाव वैराग्य की ओर हो जाता है। यह तीर्थाटन भी करता है। पूर्णायु ८० वर्ष होती है।

(११५६)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वरूपवान्, ऊँचे क़द का, गौर वर्ण तथा शुद्ध अहंकारी प्रकृति का होता है। विद्याध्ययन के उपरान्त यह कठिन परिश्रम करता है तथा राजकीय-सेवा में रहते हुए जीविकोपार्जन करता है। भाग्योदय के लिए इसे बड़ा संघर्ष करना पड़ता है। २८ वर्ष की आयु के बाद आर्थिक-स्थिति में सुधार आता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, आज्ञाकारी तथा प्रत्येक क्षेत्र में इसकी सहयोगिनी होती है। २५ वर्ष के बाद भाग्योदय प्रारंभ होता है। बीस वर्षों तक धन का आगमन निरन्तर बना रहता है। यह शत्रुओं से भी आर्थिक-लाभ पाता तथा उन्हें पराजित करता है। सन्तान-पक्ष की ओर से इसे कष्ट होता है। यह ऐश्वर्य की आकांक्षा में जब अपने प्रयत्नों को असफल होते हुए देखता है तो बहुत दुःखी होता है, तथापि पुत्र-पुत्रियों के सुख सामान्य-सुखी जीवन बिताते हुए ६० वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

भु० सं० ८३०४

कु० २०

(११५७)-इस जन्माङ्ग चक्र में उत्पन्न मनुष्य लम्बे कद तथा हृष्ट पुष्ट शरीर का, श्यामवर्ण, गोल चेहरा, मनोमोहक व्यक्तित्व, शिक्षित, सभ्य, शान्त, सुशील तथा विचारों का धनी होता है। इसकी स्मरण शक्ति तथा बुद्धि अत्यन्त तीव्र होती है। यह सेवा, सहानुभूति पूर्ण तथा दूसरों की सहायता हेतु सदैव तत्पर रहने वाला होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, प्रभावशालिनी तथा पति को आवश्यक सलाह देने वाली होती है। इसे राजकीय सेवा से बहुत आमदनी होती है। यह निरन्तर उच्चपदों पर प्रतिष्ठित होता चला जाता है। आजीवन विकास के बाद ही अंत हो जाता है। जीवन के ३०, ३२, ३८, ४२ एवं ७८ वें वर्ष विशेष लाभ एवं सम्मानदायक सिद्ध होते हैं। मकान, भूमि, फर्नीचर तथा धातु से बनी वस्तुओं के व्यवसाय से भी इसे बहुत लाभ होता है। सन्तानें सुख तथा आनन्द देने वाली होती हैं। यह ८० वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(११५८)- इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य मध्यम कद, ऊँची नाक, सुन्दर दाँत तथा झुकाव वाला, घुँघराले केशों वाला, ईश्वर विश्वासी, धर्म में श्रद्धा रखने वाला, अतिथि-सत्कार-प्रिय, सामाजिक रीतियों का पालन करने वाला तथा बातचीत में कुशल होता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, उत्तरदायित्वों का निर्वाह करने वाली, सहनशीला तथा उत्तम स्वभाव की होती है। आलस्य की मात्रा अधिक होने पर भी वह गृहस्थी का कुशलता पूर्वक संचालन करती है। इस जातक की आमदनी विद्वत्तापूर्ण कार्यों — लेखन, अध्यापन एवं व्यवस्थापन सम्बन्धी कार्यों से होती है। यह किसी महान सेवा कार्य में संलग्न होकर भी आजीविकोपार्जन करता है। इसके जीवन के २८, ३२, ३९, ४३, ४६, ४९ तथा ५२ वें वर्ष धन-सम्पन्नता तथा विशेष महत्व के होते हैं। यह महत्वपूर्ण पदों पर प्रतिष्ठित होते हुए भी संतान के लिए दुःखी रहता है। पूर्णायु ८४ वर्ष हो सकती है।

मु० सं० ४३०८

कु० २०

(११५९)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर घुंघराले केश, उन्नत ललाट, सुन्दर नासिका, गहरी आँखों वाला, मध्यम कद का एवं अत्यन्त आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह सामाजिक रूढ़ियों तथा प्राचीन परम्पराओं से प्रेम करने वाला, आत्मकेन्द्रित स्वभाव का तथा अपने सिद्धान्तों पर अटल बना रहने वाला होता है। इसकी उदारता प्रशंसनीय होती है, इसी के कारण यह लोक तथा समाज में सर्वत्र सम्मान पाता है। इसका विवाह २१-२२ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, कलाओं में दक्ष, महत्वाकांक्षिणी तथा पति को अपने प्रभाव में रखने वाली होती है। जातक का भाग्य इसी के संरक्षण में रहता है। वह स्वयं भी भाग्यशालिनी तथा धनी परिवार की होती है। यह जातक किसी सरकारी विभाग अथवा बड़े प्रतिष्ठान में सेवा-कार्य करता है। इसकी आमदनी के मार्ग अनेक होते हैं, अतः आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। सन्तान से सुख मिलता है। पूर्णायु ८० वर्ष की होती है।

(११६०)- इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, धनी-मानी, उदार प्रकृति का तथा अपने चारों ओर के वातावरण को प्रभावित करने वाला होता है। यह सौन्दर्य प्रिय, सुस्वादु भोजन तथा ऐश्वर्य पूर्ण रहन-सहन का अभिलाषी तथा उच्च स्थिति के लोगों में उठने-बैठने वाला होता है। यह मित्रों को अत्यन्त प्रिय तथा स्वयं भी उनका आकांक्षी होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी मिलती है, तथापि यह स्त्रियों से संपर्क नहीं छोड़ता। सन्तान-सुख भी उत्तम रहता है तथा पुत्रों द्वारा धन-लाभ भी होता है। इसका भाग्योदय विवाहोपरान्त होता है। इसे राजकीय सेवा, कृषि, भवन तथा धातु सम्बन्धी कार्यों अथवा व्यवसाय से लाभ होता है। धन का आगमन निरन्तर होता रहता है। ५८ वर्ष की आयु तक पर्याप्त आर्थिक सफलता तथा सम्मान प्राप्त कर लेता है। ७८ से ८२ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

भु० सं० ३३०८

कु० २०

(११६९१)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न जातक स्थूल शरीर, लम्बे कद का, श्याम वर्ण, मधुर गम्भीर वाणी बोलने वाला, दीर्घबाहु, नीतिज्ञ, भाग्यशाली तथा प्रशंसनीय कार्यों द्वारा धन तथा सम्मान पाने वाला होता है। इसे राज्य में सम्मान प्राप्त होता है। राजकीय-सेवा द्वारा इसे आजीविका प्राप्त होती है तथा यह उत्तरदायित्व पूर्ण पदों का कुशलता पूर्वक निर्वहन करता है। यह अपने ही उद्योग से भूमि, भवन, वाहन तथा सेवकों का सुख प्राप्त करता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशिक्षिता तथा गुणवती मिलती है। पुत्र भी सुन्दर, विद्वान तथा सुयोग्य निकलते हैं। इसका भाग्योदय ३५ वर्ष की आयु से होता है। यह अनेक स्रोतों से धन प्राप्त करता है तथा शत्रुओं से भी लाभ उठाता है। यह अत्यन्त तेजस्वी तथा वाक्‌पटु होता है, फलतः इसके समक्ष विरोधी जन ठहर भी नहीं पाते। ४८ वर्ष की आयु में शारीरिक कष्ट पाता है। पूर्णायु ७५ वर्ष होती है।

(११६९२)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, बुद्धिमान, उदार तथा दूसरों की सहायता करने में सुख का अनुभव करने वाला होता है। कभी-कभी यह धन की कमी के कारण बहुत दुःखी भी हो जाता है, क्योंकि उस स्थिति में इसे परोपकार के कार्य बन्द कर देने पड़ते हैं। यह किसी का कष्ट दूर करने के हेतु स्वयं ऋण लेने से भी नहीं चूकता। यह अत्यन्त सरल प्रकृति का, उदार तथा धार्मिक वृत्ति का होते हुए भी जुए का शौकीन होता है तथा उसमें अपने धन की बहुत हानि करता है। इसका भाग्योदय २७-२८ वर्ष की आयु में होता है। उस समय यह किसी राजकीय-सेवा में संलग्न हो जाता है। इसके भाई शत्रु भाव रखते हैं, परन्तु मामा से इसके स्नेह सम्बन्ध बने रहते हैं। इसको शत्रुओं से भी लाभ होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है। सन्तान-सुख भी उत्तम रहता है। इसकी पूर्णायु ७८ वर्ष होती है।

भृ० सं० ४३०८

कु० २०

(११६३) - इस जन्म कुण्डली वाला जातक सुन्दर तथा आकर्षक व्यक्तित्व का, दृढ़ शरीर का, कठोर वाणी बोलने वाला, परन्तु स्वभाव का उदार होता है। यह अत्यन्त बुद्धिमान, उच्च शिक्षा प्राप्त तथा अपनी विद्वत्ता से सब लोगों को प्रभावित करने वाला होता है। इसे राज्य से सम्मान तथा उच्च पद प्राप्त होता है। इसे माता-पिता, बड़े भाई तथा बहिन का सुख प्राप्त होता है। छोटे भाई तथा बन्धु-बान्धवों से भी स्नेह पूर्ण सम्बन्ध रहते हैं। इसका विवाह २१-२२ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुरुचिपूर्ण, स्नेहशीला होती है, परन्तु वह काफी समय तक रोगिणी रहती है। सन्तान-सुख भी कठिनाई से ही मिल पाता है। अपने जीवन के ३२वें वर्ष से यह विशेष उन्नति करता है। ४५वें वर्ष में इसे विशेष आदर-सम्मान प्राप्त होता है तथा धन का उपार्जन भी खूब होता है। इस प्रकार से सुखी तथा सम्पन्न जीवन बिताता हुआ यह ६८ वर्ष की आयु से पूर्व ही परलोक गमन करता है।

(११६४) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, स्वस्थ, अत्यन्त उदार चित्त का तथा परोपकारी होता है। यह अपने साहस तथा अध्यवसाय द्वारा बहुत धन कमाता तथा समाज में मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। यह रूप से अत्यन्त सरल और सात्त्विक दिखाई देता है, परन्तु यथार्थ में वैसा नहीं होता। यह लौकिक-व्यवहार तथा दुनियादारी के मर्म को समझने वाला तथा समय एवं परिस्थिति के अनुकूल कार्य करने वाला होता है। इसका विवाह १८-१९ अथवा फिर २६-२७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा भाग्यवान् मिलती है। सन्तान-सुख भी श्रेष्ठ बना रहता है। इसका भाग्योदय २५ वर्ष की आयु से होता है। इसकी आमदनी अनेक स्रोतों से होती है तथा शत्रुओं से भी धन का लाभ होता है। पुत्र भी धन की अभिवृद्धि करते हैं। समाज में सम्मानित, सुखी तथा आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न यह जातक ७५ वर्ष की पूर्णायु भोगता है।

पृ० सं० ४३०८

कु० २०

(११६५)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी कृश शरीर, परन्तु दृढ़ एवं स्वस्थ, लम्बे कद वाला, सुन्दर, उदार स्वभाव का, विनम्र प्रकृति का, अत्यन्त मनस्वी, गुणवान तथा सत्यवादी होता है। इसकी वाणी अत्यन्त मनोमोहक होती है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी भी सुन्दरी, मधुर-भाषिणी, गम्भीर-स्वभाव की तथापि कुछ अहंभावयुक्ता होती है यों, वह व्यवहार-कुशल तथा सबकी प्रशंसा पाने वाली भी होती है। जातक का भाग्योदय २५ वर्ष की आयु में होता है। इसे आजीविका-प्राप्ति हेतु कठिन परिश्रम करना पड़ता है। इसकी आर्थिक स्थिति साधारण ही रहती है। विद्वान तथा विद्वान होते हुए भी इसे नीच लोगों की सेवा करने को विवश होना पड़ता है। जीवन के ४८ तथा ५६ वें वर्ष में इसे सुख की प्राप्ति होती है। सन्तान हेतु दुःख उठाना पड़ता है। इसे सेवा-कार्य करते हुए ही जीवन बिताना पड़ता है। परमायु ६८ वर्ष तक हो सकती है।

(११६६)- इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, धीर, गम्भीर तथा आलसी स्वभाव का होता है। अत्यन्त आवश्यकता के समय ही यह तीव्र गति से कार्य करता है। यह गुरु तथा देवताओं का उपासक, बुद्धिमान तथा कलाविद् होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी धीर-गम्भीर, सुन्दरी तथा सेवाभाविनी होती है। जातक का भाग्योदय ३० वर्ष की आयु में होता है। उस समय इसे राज्य से सम्मान, समाज में प्रतिष्ठा तथा धन की उपलब्धि होती है। जीवन के ३५, ४०, ४८, ५६ तथा ५८ वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। सन्तान के लिए यह दुःखी तथा चिन्तित रहता है। इसका जीवन सामान्य ढंग से व्यतीत होता है। आर्थिक-स्थिति भी साधारण ही रहती है। इसे परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिल पाता। पारिवारिक क्लेश इसे परेशान बनाये रखते हैं। शनि के साथ रहते हुए यह लगभग ८० वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(११६७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, विद्वान, सच्चरित्र तथा न्यायानुसार होते हुए भी
अधिक चिन्ता का तथा एक ही बात पर अनेक प्रकार से विचार करने वाला दीर्घसूत्री होता है। यह
सुखी तथा सम्पत्तिवान भी होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सच्चरित्र,
मनस्विनी तथा पति परायणा होती है। इसका भाग्य स्त्री के सहयोग से उदित होता है। अपने पराक्रम,
साहस तथा उद्योगशीलता से यह ४५-४६ वर्ष की आयु में आर्थिक-सम्पन्नता तथा सामाजिक-
प्रतिष्ठा को प्राप्त कर लेता है। यह स्वपराक्रम से भूमि, भवन, वाहन तथा सेवकों का सुख प्राप्त
करता है। परन्तु इसे पुत्रों की ओर से सुख नहीं मिलता। वे अल्पजीवी होते हैं, अतः उनके कारण यह
दुःखी बना रहता है तथा बड़ी आयु में संसार से विरक्त-सा हो जाता है। सामान्यतः इसका जीवन
आर्थिक-सम्पन्नता का रहता है तथा स्वास्थ्य भी अच्छा बना रहता है। पूर्णायु ७८ वर्ष होती है।

(११६८)- इस जन्म कुण्डली वाला जातक विनम्र, सुन्दर, गौरवर्ण, ऊँचे कद का, शिल्पादि कलाओं
में प्रवीण, साहित्य-प्रेमी, कला-पारखी तथा भावुक हृदय वाला होता है। इसका विवाह लगभग
२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सच्चरित्र तथा पति की अनुगामिनी होती है। इसका भाग्य
इस विवाह के बाद परदेश में होता है। यह अपने जीवन के ४३, ४८, ५२, ५७, ५९, ६१ तथा
६४वें वर्ष में पर्याप्त धन कमाता है। इसके पुत्र-पुत्री सुन्दर तथा बुद्धिमान होते हैं। यह उनसे
पूर्ण सन्तुष्ट रहता है। यह उन व्यक्तियों से विशेष लाभान्वित होता है, जो परदेश अथवा विदेश
से सम्बन्ध रखते हैं। इसकी अचल सम्पत्ति परदेश में भी रहती है तथा स्वदेश में भी। यह
भूमि, भवन, वाहन तथा सेवक आदि के सुख से सम्पन्न बना रहता है। सर्वत्र प्रभाव तथा सम्मान
प्राप्त करता हुआ यह जातक लगभग ८८ वर्ष तक जीवित रह सकता है।

पृ० सं० १३०८

कु० २०

(११६८) - इस जलराशि चक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, प्रबल भाग्यशाली, शत्रुओं को पराजित करने वाला, अत्यन्त साहसी, उद्यमी तथा अपने जीवन के बल पर अत्यधिक उन्नति करने वाला कुल-दीपक होता है। यह विख्यात, यशस्वी तथा महाप्रतापी होता है। अपनी विलक्षण बुद्धि तथा विद्या के द्वारा यह लोगों को चमत्कृत करता रहता है। साहित्य-सृजन तथा पठन-पाठन में विशेष रुचि लेने वाला यह अनेक कलाओं का ज्ञाता, दार्शनिक प्रकृति का, ईश्वरभक्त, प्रियभाषी तथा सद्गुणी होता है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। इसकी पत्नी सुन्दरी तथा स्नेहशीला होती है। यह उसमें अत्यधिक आसक्त रहता है तथा कभी-कभी अपने आवश्यक कर्तव्यों को भी भूल जाता है। इसका भाग्योदय युवावस्था के आरम्भ से ही हो जाता है। आर्थिक-स्थिति संतोषजनक बनी रहती है। यह परदेश में रहकर यशस्वी जीवन व्यतीत करता है। पूर्णायु ६८ से ७२ वर्ष होती है।

(११६०) - इस जलकुण्डली का स्वामी सिंह के समान पराक्रमी, मानी-अभिमानी, सुन्दर, स्वस्थ, गुणवान्, विद्वान्, सम्पत्तिशाली तथा दो भाइयों का स्वामी होता है। इसे मातृ-सुख उपलब्ध नहीं होता तथा बन्धु-बान्धवों से भी द्वेष बना रहता है। शरीर से दुर्बल दिखाई देने पर भी यह अत्यन्त शक्तिशाली होता है। विवाह लगभग २२-२३ वर्ष की आयु में होता है। दूसरा विवाह भी शीघ्र होना सम्भव रहता है। दोनों पत्नियाँ साथ रहती हैं तथा यह उनमें आसक्त भी बना रहता है। किन्तु पुत्र का योग बहुत अल्प होता है। इसका भाग्योदय परदेश में होता है। ४५ वर्ष की आयु तक यह पर्याप्त धन-सम्पत्ति अर्जित कर लेता है, फिर आजीवन उन्नति करता चला जाता है। इसकी आमदनी में निरन्तर वृद्धि होती रहती है। मान-सम्मान भी बढ़ता चला जाता है। वृद्धावस्था में यह अनेक तीर्थों की यात्राएं करता है। पूर्णायु लगभग ७८ वर्ष होती है।

भु० सं० २३०८

कु० २०

(११८०१)- इस जन्म कुण्डली वाला जातक सुन्दर, लम्बे कद का, पतले शरीर वाला, कला-कौशल एवं साहित्य का प्रेमी, विद्वान्, बुद्धिमान, गुणवान तथा उत्साही होता है। यह अपने जीवन में अनेक कार्य करता है तथा अपनी विद्या-बुद्धि के बल पर उनमें सफल होता तथा यथेष्ट अर्थोपार्जन भी करता है। इसे सर्वत्र सम्मान का विशेष लाभ होता है। इसका विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, विदुषी तथा सुलक्षणा भी होती है। प्रथम सन्तान का कष्ट होता है, परन्तु अन्य सन्तानें ठीक रहती हैं। विवाहोपरान्त ही इसका भाग्योदय होता है। इसकी भाग्योन्नति में किसी-न-किसी स्त्री का योगदान भी अवश्य रहता है। यह अपने पिता की भाँति ही सारे सम्पूर्ण कार्यों को न करके उनके विपरीत दिशा में चलता है। लगभग ३८ वर्ष की आयु में इसकी सभी महत्वाकांक्षाएं पूरी हो जाती हैं। सुखी एवं सम्पन्न जीवन बिताता हुआ यह ८० वर्ष के लगभग जीवित रहता है।

(११८०२)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी लम्बे कद का, गौरवर्ण, कामी तथा क्रोधी स्वभाव का, परन्तु हृदय का उदार भी होता है। यह बाल्यावस्था से ही राजदरबार के सुख प्राप्त करता है। इसे विद्या का यथेष्ट लाभ होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है तथा अपनी सुन्दरी स्त्री के साथ सुखोपभोग करते हुए यह अन्य स्त्रियों से भी संबंध बनाये रखता है। २५ वर्ष की आयु से ही इसका भाग्योदय भी होता है। यह किसी उच्च राजकीय पद पर प्रतिष्ठित होता है तथा अपने पिता के व्यवसाय से भिन्न प्रकृति के कार्यों द्वारा अर्थोपार्जन करता है। ५५ वर्ष की आयु तक इसकी सभी महत्वाकांक्षाएँ पूरी हो जाती हैं और यह प्रचुर सम्पत्ति, भूमि, भवन, वाहन, सेवक आदि की उपलब्धि कर लेता है। यह बड़े कुटुम्ब तथा सन्तान-सुख से युक्त होकर ८०-८५ वर्ष की आयु तक सुखी-जीवन बिताता है। इसे सर्पदंश तथा जल से भय हो सकता है।

भु० सं० ४०३६

(११०३) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी पुष्ट तथा लम्बे शरीर का, प्रभावशाली, विद्या-बुद्धि सम्पन्न, सब प्रकार के वातावरण को अपने अनुकूल बना लेने में सफल, अल्पक्रोधी तथा शत्रु को भी क्षमा कर देने की उदारता रखने वाला महान् व्यक्ति होता है। यह धार्मिक चित्तवृत्ति वाला, अनेक कलाओं का ज्ञाता, परोपकार के लिए अपना धन खर्च करने वाला तथा भावुक हृदय वाला होता है। इसका विवाह लगभग २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती होती है। यह अपनी पत्नी के साथ सुखी रहता है, परन्तु पुत्र का सुख नहीं मिलता। इसकी आजीविका का सम्बन्ध शासकीय कार्यों से रहता है। वहीं से यह यथेष्ट धन प्राप्त करता है। परन्तु खर्चीला अधिक होने के कारण इसके पास धन की निरन्तर कमी बनी रहती है। यह अपने अध्यवसाय के बल पर गृहस्थी का संचालन करता है तथा समाज में प्रतिष्ठा बनाये रखकर लगभग ६८ वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(११०४) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, सुशिक्षित, कला एवं साहित्य-प्रेमी, गुणवान्, धर्म-भीरु तथा धार्मिक प्रवृत्ति का होता है। यह दूसरों के दुःख को देखकर दुःखी होने वाला, सहृदय, परोपकारी तथा दार्शनिक विचारों का होता है। अपने अध्यवसाय द्वारा इसे बहुत कुछ सीखने का अवसर प्राप्त होता है। इसकी विद्या, बुद्धि तथा कौशल की विशेष उन्नति होती है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा आजीवन साथ देने वाली मिलती है। इसे प्रथम सन्तान से सुख नहीं मिलता, परन्तु अगली सन्तानें सुख देती हैं। इसका भाग्योदय विवाह के बाद होता है। ५०-५५ वर्ष की आयु तक यह पर्याप्त सम्पत्ति उपार्जित कर लेता है। यह समाज में मान-प्रतिष्ठा भी खूब पाता है तथा निजी भवन, वाहन, सेवकादि के सुख से सम्पन्न होकर नाती-पोतों सहित लगभग ७८ वर्ष की आयु तक जीवित रहता है।

कु० २०

भृ० सं० ०७०४

कु० २०

(११७५)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, रूपवान, मध्यम कमर, उन्नत कद वाला, उदार-हृदय, सब प्रकार से व्यवहार-कुशल तथा अनेक कलाओं का जानकार होता है। यह धार्मिक प्रकृति का, ज्ञानवान तथा परोपकारी होता है। इसका विवाह लगभग २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है, अतः दाम्पत्य-जीवन सुखपूर्ण बना रहता है। अनेक पुत्र-पुत्रियों का सुख भी मिलता है। इसकी भाग्योन्नति २८ वर्ष की आयु से होती है। राजकीय-सेवा का योग बनता है। व्यवसाय के क्षेत्र में भी अच्छी सफलता मिलती है। ४४ से ५५ वर्ष की आयु के बीच इसकी सभी महत्वाकांक्षाएं पूर्ण हो जाती हैं। भूमि, भवन, वाहनादि के सुख उपलब्ध रहते हैं। वृद्धावस्था में इसकी प्रवृत्तियाँ आध्यात्मिक हो जाती हैं। तब यह तीर्थयात्राएं करता तथा कुछ धार्मिक स्थलों का निर्माण भी करता है। यह ७० वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(११७६)- इस कुण्डली का स्वामी स्वस्थ, सुन्दर, उत्तम शरीर, मध्यम कद का सुडौल तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। इसकी वाक्-शैली सुमधुर, आकर्षक तथा अत्यन्त प्रभावोत्पादक होती है। इसका बचपन कष्ट में बीतता है। परन्तु विवाहोपरान्त इसकी आर्थिक-स्थिति में सुधार होने लगता है। विवाह २० वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा आज्ञाकारिणी मिलती है। शिक्षा का भी उत्तम लाभ होता है तथा सन्तान-सुख भी अच्छा रहता है। २६ वर्ष की आयु से यह पर्याप्त धन कमाने लगता है तथा ५० वर्ष की आयु तक सब प्रकार से सम्पन्न हो जाता है। यह अनेक मित्रों से संबंध रखने वाला तथा उनका प्रिय करने वाला होता है। फिर भी समाज में इसकी मान-प्रतिष्ठा पर आँच नहीं आने पाती। यह भवन-वाहन सेवक आदि सब प्रकार के सुखों को प्राप्त करता हुआ लम्बा यशस्वी जीवन बिताता है। पूर्णायु ८० वर्ष तक की हो सकती है।

भृ० सं० ८००६

कु० १०

(११७७)- इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य सुन्दर, सौम्य, मृदुल स्वभाव का, कल्पना लोक में भ्रमण करने वाला तथा शौकीन मिजाज़ का होता है। इसे विद्याध्ययन में रुकावटें आती हैं, परन्तु उन सब पर विजय प्राप्त करता हुआ यह उच्च शिक्षा ग्रहण करता है। अध्ययनोपरान्त राजकीय-सेवा में नियुक्त होकर आजीविकोपार्जन करता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा विदुषी प्राप्त होती है। माता-पिता का अल्प-सुख मिलता है। स्वयं भी 30 वर्ष की आयु में कठिन रोग से ग्रस्त होकर दुःख उठाता है। पत्नी इसके अनुकूल नहीं चलती, अपितु भिन्न आचरण रखती है, इससे दाम्पत्य-सुख में कमी आती है। सन्तान-सुख सामान्य रहता है। इसके पास धन की कोई कमी नहीं रहती। अनेक स्रोतों से धन का आगमन होता है। इसके कारण यह समाज में प्रतिष्ठा भी प्राप्त करता है। पुत्र-पौत्रों से युक्त होकर यह लगभग ७० वर्ष की आयु में परलोक-गमन करता है।

(११७८)- इस जन्मकुण्डली वाला जातक सुन्दर, स्वस्थ, निरोग, उदार तथा मधुरभाषी होता है। यह माता-पिता का अल्प सुख ही प्राप्त कर पाता है। इसका विवाह 23-24 वर्ष की आयु में होता है, परन्तु पत्नी से भी सुख प्राप्त नहीं होता। पत्नी इससे स्वयं भी विमुख रहती है और इसे अपने से तुच्छ समझती है। यह भी परस्त्रियों से सम्बन्ध रखता है। प्रथम सन्तान से पीड़ित होता है तथा छोटे-बड़े भाई का सुख भी नहीं मिल पाता। पुत्र के साथ शत्रुता जैसा व्यवहार रहता है। इसका भाग्योदय २४ वर्ष की आयु से होता है और यह राजकीय-सेवा में रहकर उन्नति करता है। इसकी बुद्धि प्रखर होती है तथा विद्या-लाभ भी उत्तम रहता है, अतः अपनी योग्यता के बल पर यह समाज में प्रतिष्ठा भी प्राप्त करता है। ४० वर्ष की आयु तक यह पर्याप्त सम्पत्ति अर्जित कर लेता है तथा उसके बाद का जीवन सुखपूर्ण बना लेता है। इसे ६८ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त होती है।

(११७९)- इस जन्मकुण्डली वाला जातक सुन्दर, चौकन्ना, परिश्रमी, परोपकारी, दूसरे दुःख से दुःखी होने वाला। दूसरों की सहायता करने को तत्पर, कवि-साहित्य का प्रेमी तथा ख्याति लब्ध होता है। यह बाल्यावस्था में दुःखी रहता है तथा युवावस्था में सुख प्राप्त करता है। इसका विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी होते हुए भी अविवेकी तथा अहंकारी होती है, जिसके कारण वह स्वयं दुःखी भी बनी रहती है। जातक से उसका मतैक्य नहीं हो पाता, अतः वह परस्त्रियों की ओर आकर्षित बना रहता है। इसका भाग्योदय २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। इसकी आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं, अतः इसे कभी आर्थिक-तंगी का सामना नहीं करना पड़ता। परदेस में रहकर यह बहुत उन्नति करता है। इसके जीवन के २५, २८, ३३, ३७, ४०, ५२ तथा ५६ वें वर्ष कष्ट कारक होते हैं। इसे ६५ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त होती है।

(११८०)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, कुछ दबे हुए रंग का, अत्यन्त उदार दिखाई देने वाला परन्तु यथार्थ में क्षुद्र स्वभाव का होता है। इसे जीवन में बहुत कम सुख मिलता है तथा अपमान का शिकार अधिक बनना पड़ता है। इसे पिता का सुख भी कम मिलता है। विवाह के प्रति उदासीन रहता है तो भी २४-२५ वर्ष की आयु में विवाह हो जाता है। पत्नी से अधिक मतैक्य नहीं हो पाता, अतः यह परस्त्रियों की ओर आकर्षित होता है, परन्तु उनमें से किसी से भी स्थायी सम्बन्ध नहीं बनाता। सन्तान-सुख भी साधारण रहता है। इसका भाग्योदय २५ वर्ष की आयु में राजकीय सेवा द्वारा होता है। यह अपनी विद्या तथा बुद्धि के प्रयोग से आर्थिक-स्थिति को उत्तम बनाता चला जाता है। जीवन के ३८, ४२, ४६ तथा ५४ वें वर्ष में पर्याप्त धन-लाभ होता है। आयु लगभग ७० वर्ष की होती है।

(११८१)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी पतले-दुबले परन्तु स्वस्थ शरीर का, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, सुन्दर, उत्साही तथा साहसी होता है। यह अनिश्चयात्मक-बुद्धि का होता है तथा किसी भी निर्णय को लेने में बहुत देर लगाता है, परन्तु अन्ततः जो भी निर्णय लेता है, उस पर अन्त तक दृढ़ बना रहता है। इसका विवाह २६-२७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल तथा प्रत्येक क्षेत्र में इसको पूर्ण सहयोग देने वाली मिलती है। वह मनस्विनी, महत्वाकांक्षिणी तथा पति के लिए हितकारिणी सिद्ध होती है। सन्तान-सुख पर्याप्त रहता है, परन्तु बाद में पुत्रों द्वारा इसका धन नष्ट भी किया जाता है। इसका भाग्योदय ३०-३२ वर्ष की आयु में होता है। राजकीय-सेवा में रहकर यह विशेष उन्नति करता है। इसे पिता, राज्य तथा शत्रुओं से धन का लाभ होता है। ४६ तथा ५४ वें वर्ष में शारीरिक-कष्ट होता है। मित्रगण एक से अधिक होते हैं। पूर्णायु ७५ वर्ष हो सकती है।

(११८२)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति सामान्य सुन्दर, स्वस्थ, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, उद्यमी, साहसी तथा सुखी-जीवन बिताने वाला होता है। इसे अपने पिता से विशेष प्रेम होता है। इसका विवाह २७-२८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूला तथा सुन्दरी मिलती है। वह प्रत्येक क्षेत्र में पति के साथ सहयोग करती है। सन्तान-सुख अच्छा रहता है। इसकी आमदनी के स्रोत अनेक होते हैं, अतः धन की कोई कमी नहीं रहती। यह कभी-कभी रिस्क के काम भी कर डालता है, जिसमें आर्थिक-हानि की प्रत्यक्ष सम्भावना रहती है, तथापि इसे उनमें भी लाभ होता है। जीवन के ४६ तथा ५२ वें वर्ष शारीरिक-कष्टप्रद तथा हानिकर सिद्ध होते हैं, परन्तु बाद में सब कुछ ठीक हो जाता है। राजकीय-सेवा से भी इसे बहुत लाभ होता है तथा यश कीर्ति भी खूब कमाता है। इसकी पूर्णायु ६८ से ७० वर्ष के मध्य रहती है।

भू० सं० ४०७८

कु० २०

(११८३)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, सहज ही आकर्षित करने वाला, उद्यमी तथा उत्साही होता है। यह बाल्यावस्था से ही सुखी जीवन बिताता है, परन्तु युवावस्था में इसका झुकाव धन कमाने के निम्न कोटि के साधनों की ओर हो जाता है, अतः कभी आर्थिक दृष्टि से सुखी और कभी परेशान भी रहता है। बाल्यावस्था में माता-पिता के अनुकूल चलता है। लगभग २५ वर्ष की आयु में विवाह हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुरुचि-सम्पन्ना होती है। विवाहोपरान्त ही इसका भाग्योदय होता है। इसे कई प्रकार से धन प्राप्त होता है। ५० वर्ष की आयु के बाद इसकी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी हो जाती है। यह एकाधिक स्त्रियों से सम्पर्क रखता है, फिर भी समाज में अपने सम्मान को नहीं गिरने देता। जीवन के ४०, ४३, ४४, ४८ तथा ५६ वें वर्ष कष्टकारक सिद्ध होते हैं। पूर्णायु ७० से ७५ वर्ष के बीच होती है।

(११८४)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, मधुरभाषी, सरल प्रकृति का, स्वस्थ, मध्यम कदवाला, पतले शरीर का, परन्तु बलिष्ठ एवं आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। यह काव्य-साहित्य का प्रेमी, लेखक, कवि तथा विद्वान् भी होता है। इसका विवाह 22-23 वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा तेज स्वभाव की होती है। वह पति पर नियन्त्रण रखती है तथा स्वयं धर्माचरण करती हुई घर-गृहस्थी का कुशलता पूर्वक संचालन भी करती है। इसे अपने पिता से स्नेह रहता है, परन्तु अन्य बन्धु-बान्धवों से शत्रुता रहती है। इसे २७ तथा ३६ वें वर्ष में शारीरिक-कष्ट होता है तथा ३५, ३८, ४०, ४३ एवं ४८ वें वर्ष में धन का विशेष लाभ होता है। यह भवन-निर्माण आदि कार्यों तथा क्रय-विक्रय द्वारा पर्याप्त लाभ अर्जित करता है। ६० वर्ष की आयु तक यह महाधनी हो जाता है तथा ६८ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

भृ० सं० ४००८

(११८५)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, मधुर व्यवहार करने वाला तथा दूसरों को सम्मान देने वाला होता है। यह पुत्रवान, कुटुम्बवान तथा उदात्त विचारों का होता है, तथापि कुटु-म्बियों के प्रति इसका व्यवहार निष्ठुरता पूर्ण ही बना रहता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी होने के अतिरिक्त विलक्षण मेधायुक्त, आध्यात्मिक योग्य, परन्तु कृपण एवं स्वार्थी-स्वभाव की होती है। वह अपने पति से मतभेद रखती है, अतः दाम्पत्य-जीवन उल्लासपूर्ण नहीं रहता। सन्तान-सुख भी सामान्य रहता है। यह जातक ३० वर्ष की आयु से विशेष लाभ प्राप्त करता है। यह राजकीय कार्यों से तथा खेल-तमाशे, हास-परिहास, संगीत, प्रसाधन एवं विलास सामग्री के व्यवसाय से बहुत धन कमाता है। इसके जीवन के २५, ३८, ४२, ४६, ४८ तथा ५७वें वर्ष आर्थिक-हानि का रहते हैं। सामान्यतः यह सुखी जीवन बिताता हुआ ६८ वर्ष तक जीवित रहता है।

(११८६)- इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य सुन्दर, ~~स्वस्थ~~, बुद्धिमान, गुणवान, विशाल हृदय का तथा उच्च आकांक्षाओं से सम्पन्न होता है। यह तीव्र-बुद्धि होता है तथा अत्यन्त शीघ्रता से निर्णय लेता है। इसका विवाह २६-२७ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा धनी परिवार की होती है, परन्तु वह जातक से मतभेद रखती है, अतः गृहस्थी में अशान्ति बनी रहती है तथा दाम्पत्य-सुख की हानि होती है। सन्तान-सुख उत्तम रहता है तथा पुत्र बड़े होकर पिता के व्यवसाय की भली-भाँति देख-रेख करते तथा उसकी उन्नति करते हैं। वे अपने कुल तथा पिता के यश को बढ़ाते हैं। जातक स्वयं विभिन्न कार्यों में संलग्न रह कर प्रचुर धन कमाता है। जीवन के ३५ से ४७वें वर्ष तक जातक की आर्थिक-स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ बनी रहती है तथा यह सब प्रकार के सुख-साधन एकत्र कर लेता है। ७० से ७५ वर्ष की आयु में इसका परलोक-गमन होता है।

कु० र०

भृ० सं० ३००४

कु० २०

(११८७)- इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य स्वस्थ, सुन्दर, मध्यम कद वाला, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, माता-पिता का प्रिय, उचित शिक्षा-दीक्षा पाने वाला तथा अध्ययन समाप्त करके राजकीय सेवा द्वारा आर्थिक-लाभ पाने वाला होता है। यह कला तथा साहित्य का ज्ञाता, प्रशासक, अध्यापक अथवा इंजीनियर, डाक्टर आदि भी हो सकता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है। २६ वर्ष की आयु से इसका भाग्योदय होता है, परन्तु इससे पूर्व भी इसके पास धन की कोई कमी नहीं रहती है। भाग्योदय के बाद यह अधिकाधिक धनी होता चला जाता है। दान-पुण्य करने में भी पीछे नहीं रहता। यह उदार हृदय से दूसरे लोगों की सहायता करता है तथा परोपकार में अपना धन खर्च करके प्रसन्नता का अनुभव करता है। पुत्र की ओर से इसे चिन्ता रहती है। इसको ७० वर्ष की पूर्णायु प्राप्त होती है।

(११८८)- इस कुण्डली का अधिपति लम्बे तथा स्थूल-शरीर का, स्वस्थ, सुन्दर तथा बाल्यावस्था से ही माता-पिता का पूर्ण सुख पाने वाला होता है। बाल्यावस्था में प्रायः बीमार भी होता रहता है, परन्तु युवावस्था में नीरोग-जीवन बिताता है। शिक्षा प्राप्त करने के बाद लगभग २७ वर्ष की आयु से धनोपार्जन आरम्भ कर देता है। इसे राज्य द्वारा भी धन लाभ होता है तथा पर-स्त्री द्वारा भी सम्पत्ति प्राप्त होती है। इसका विवाह २२ से २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, पतले शरीर की, बुद्धिमती तथा जातक के कार्यों में सहयोग देने वाली होती है। २८ वर्ष की आयु में इसका भाग्योदय होता है, तब से जीवनान्त तक धन का निरन्तर आगमन होता रहता है। इसके पुत्र योग्य तो होते हैं, परन्तु उनके द्वारा धन-हानि भी होती है। जीवन में ५६ से ६२ वर्ष की अवधि बड़ी उथल-पुथल कारक रहती है। इसकी पूर्णायु ७५ वर्ष होती है।

(११८९)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, चरित्रवान, आकर्षक, विद्वान, परोपकारी, सहिष्णु, उदार, कवि, सुरुचि सम्पन्न तथा साहित्यकार होता है। यह दूसरों की सहायता करके सुख को प्राप्त अनुभव करता है। यह बाल्यावस्था से ही भाग्यशाली होता है तथा अपने माता-पिता को सुख-शान्ति प्रदान करता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, विदुषी तथा सदैव सुख देने वाली प्राप्त होती है। वह पति की अनुगामिनी बनी रहकर उसे प्रेरणा देती रहती है। इसका विशेष भाग्योदय २८ वर्ष की आयु से होता है। तब यह उच्च पद पर आसीन होकर अत्यधिक धन तथा सम्मान अर्जित करता है। ४५ वर्ष की आयु तक इसे सब प्रकार की सम्पत्ति, भवन, वाहन, सेवक, धन आदि प्राप्त हो जाते हैं। पुत्र-पौत्रों से सुख प्राप्त होता है तथा स्वयं भी भोग-विलास का आनन्द उठाता है। इसकी पूर्णायु ८० वर्ष की होती है।

(११९०)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, चरित्रवान, मधुरभाषी, श्रेष्ठ बुद्धि वाला तथा कवकला-कुशल होता है। इसका कद मध्यम, स्वास्थ्य उत्तम तथा व्यक्तित्व प्रभावशाली होता है। इसकी शिक्षा-दीक्षा उच्च स्तर की होती है तथा अध्ययन समाप्त करने के उपरान्त इसे राजकीय-सेवा में जाने का अवसर मिलता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, कुछ स्थूल शरीर की, विद्वान, कवयित्री तथा मधुरभाषिणी होती है, परन्तु वह अपने व्यक्तित्व को पति से अलग बनाये रखने की चेष्टा करती है। यद्यपि वह पति के प्रति अनुरागिनी होती है तथा उसका सहयोग भी देती है। इसका भाग्योदय २७ से २९ वर्ष की आयु के बीच होता है। इसकी आमदनी के स्रोत अनेक होते हैं। राजद्वार तथा शत्रुपक्ष से भी धन-लाभ होता है। जीवन के ३६, ३९, ४५, ४७, ५१ तथा ५८वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा पूर्णायु ७८ वर्ष तक हो सकती है।

भू० सं० ८०७२

(११६१)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य कठोर स्वभाव, उग्र कार्यों को करने वाला। दुष्ट प्रकृति का, क्रोधी, महत्वाकांक्षी, नास्तिक, धर्म तथा धर्माचार्यों का तिरस्कार करने वाला, अपने पुरुषार्थ पर भरोसा करने वाला तथा स्वयं को श्रेष्ठ समझने वाला अभिमानी होता है। ईश्वर के प्रति इसे कोई आस्था नहीं होती। यह जो जी चाहे, वह करता है, भले ही वह औरों के लिए अप्रिय अथवा कष्टप्रद ही क्यों न हो। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी से मतैक्य नहीं होता, तथापि पति-पत्नी एक दूसरे से विमुख नहीं रहते। यह नैतिक अथवा अनैतिक -- दो प्रकार के कार्यों से धन कमाता है। इसका भाग्योदय २५ वर्ष की आयु से आरम्भ हो जाता है तथा ५०-५५ वर्ष की आयु तक पर्याप्त सम्पत्तिशाली बन जाता है। इसे सन्तान का लाभ होता है, परन्तु पुत्रों की ओर से चिन्तित रहता है। वैसे इसके पुत्री बड़े होनहार होते हैं। पूर्णायु ८५ वर्ष तक की हो सकती है।

(११६२)- इस कुण्डली वाला जातक सुन्दर, स्वस्थ, गुणवान, कला-मर्मज्ञ, साहित्यकार अथवा साहित्यप्रेमी, मधुरभाषी, व्यवहार-कुशल तथा बाल्यावस्था से ही माता-पिता को प्रिय होता है। इसकी शिक्षा-दीक्षा उचित ढंग से होती है। यह अर्थोपार्जन में कुशल तथा निरन्तर उन्नति करने वाला भी होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, कुछ स्थूल शरीर की, स्वभाव से गंभीर तथा गुणवती होती है, तथापि पति के प्रति उसका विशेष अनुराग नहीं रहता, अतः दाम्पत्य-जीवन में तनाव-सा बना रहता है तथा जातक स्वयं परस्त्रियों की ओर आकर्षित बना रहता है। इसके पुत्र धनी-मानी होते हैं। दूसरों की सेवा से इसे पर्याप्त लाभ होता है। जीवन के २५, ३८, ४२ तथा ४८वें वर्ष श्रेष्ठ सिद्ध होते हैं। यह ५० वर्ष की आयु तक सभी प्रकार के भौतिक सुख-साधनों को प्राप्त कर लेता है तथा लगभग ७०-८ वर्ष तक सुखपूर्वक जीता है।

कु० र०

मू० सं० १००३

कु० र०

(११९६३)- इस जन्म कुण्डली वाला जातक सुन्दर, स्वस्थ, विद्या-बुद्धि से तीव्र तथा उच्चशिक्षा पाने वाला होता है। यह बाल्यावस्था से ही सुख में पलता है तथा युवावस्था में यथेष्ट धनोपार्जन करता है। यह विभिन्न प्रकार की कलाओं तथा विज्ञान का ज्ञाता तथा विद्वानों में सम्मान पाने वाला विलक्षण बुद्धि का स्वामी होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। इसकी पत्नी सुन्दरी, तेजस्वी तथा विद्वान् होती है, परन्तु उसका अपने पति से मतभेद बना रहता है, अतः दाम्पत्य-जीवन पूर्ण सुखी नहीं रह पाता। दोनों के व्यक्तित्व भिन्न प्रकार के तथा विशिष्ट होते हैं तथा दोनों ही अपने-अपने लिए विशिष्ट क्षेत्रों का निर्माण करते हैं। सन्तान-सुख अच्छा रहता है। भाग्योदय २५ वर्ष की आयु से आरम्भ होता है तथा ५० वर्ष की आयु तक भूमि, भवन, वाहन, सेवक आदि सभी सुख-साधन उपलब्ध हो जाते हैं तथा यश की वृद्धि भी होती है। पूर्णायु ८५ वर्ष तक हो सकती है।

(११९६४)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ तथा ज्ञानी एवं उदारता का विचित्र संगम होता है। यह भूमि, भवन, वाहन, सेवक तथा धन आदि से सम्पन्न होकर दूर-दूर तक अपने यश का विस्तार करता है। यह राजकार्यों से लाभ उठाता है तथा पैतृक-सम्पत्ति भी प्राप्त करता है। यह अप्रिय अथवा अन्यायपूर्ण स्थिति को देखकर, स्वयं भी कभी-कभी अत्यधिक क्रूर बन जाता है तथा पूरी शक्ति के साथ बदला लेता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूला मिलती है। सन्तान-सुख भी अच्छा रहता है। यह अपने जीवन में निरन्तर उच्च-पद प्राप्त करता चला जाता है। हृदय से यह पूर्ण आस्तिक होता है तथा ऊपर से जितना कड़ा होता है, भीतर से उतना ही कोमल भी होता है। जो लोग एक बार इसके निकट-सम्पर्क में आ जाते हैं, वे फिर कभी अलग नहीं होते। यह ६० वर्ष की आयु तक सुखी जीवन बिताता है।

(११६५)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य मध्यम कद का, सुन्दर, विद्या-बुद्धि में विचक्षण, विशाल-हृदय, उच्च शील वाला; नैतिकता, न्याय तथा सत्य के उच्च आदर्शों को स्थापित करने वाला तथा प्रबुद्ध वर्ग का महापुरुष होता है। यह साधारणतः नास्तिक जैसा प्रतीत होता है, परन्तु यथार्थ में अत्यधिक धर्म-भीरु, ईश्वर-भक्त तथा उदार हृदय का होता है। यह अत्यन्त प्रभावी तथा सफल जीवन बिताता है तथा देश-विदेश में सर्वत्र प्रशंसित एवं ख्यातिलब्ध होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में अत्यन्त सुन्दरी, अपने रूप लावण्य से लुभाने वाली तथा विदुषी कन्या के साथ होता है। वह श्रेष्ठ आचार-विचारों वाली घर-गृहस्थी का कुशलता पूर्वक संचालन करती है। इसका भाग्योदय २५ वर्ष की आयु के बाद होता है तथा जीवन के ४८, ५६, ६० तथा ६४ वें वर्ष विशेष उपलब्धि दायक सिद्ध होते हैं। यह ८० वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(११६६)- इस जन्मकुण्डली वाला जातक सुन्दर, प्रखर बुद्धि, मोहक वाणी बोलने वाला तथा विवेक पूर्ण होता है, किन्तु इसका चित्त उद्वेलित बना रहता है तथा इसके मन-मस्तिष्क में अनेक प्रकार के काम करने की धुन लगी रहती है। इसके दिमाग में विचारों तथा योजनाओं की भीड़ लगी रहती है, फलतः इसे कोई भी निर्णय लेने में अत्यधिक विलम्ब लगता है। इसका विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में सुन्दरी तथा गुणवती कन्या के साथ होता है। वह कुछ कृपण भी होती है। जातक का भाग्योदय २८ वर्ष की आयु से होता है। यह राजकीय-सेवा द्वारा पर्याप्त धनोपार्जन करता है तथा अपने जीवन में अनेक प्रकार के सम्मान पाता है। ६० वर्ष की आयु तक यह अत्यधिक समृद्ध हो जाता है। सन्तान का सुख भी उत्तम मिलता है। वे इसकी यश-कीर्ति को और अधिक बढ़ाते हैं। सम्पूर्ण सुखों का उपभोग करता हुआ यह ८० वर्ष की पूर्णायु पाता है।

भु० सं० 3203

कु० २०

(११९७) - इस कुण्डली वाला जातक सुन्दर, प्रभावशाली, गुणवान् तथा विद्वान् होता है। इसका बाल्यकाल बड़े ऐश्वर्य में व्यतीत होता है। यह अपनी शिक्षा-दीक्षा सुचारु रूप से सम्पन्न करता है। विवाह २५ वर्ष की आयु से पूर्व ही हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, कर्तव्यपरायण तथा अपने मधुर-व्यवहार से सबको मोहित करने वाली मिलती है। शिक्षा समाप्ति के उपरान्त ही इसका भाग्योदय आरंभ हो जाता है तथा जीवन भर उच्च पदों पर प्रतिष्ठित रहता है। यह विपुल धन तथा ख्याति अर्जित करता है। राजकीय सेवा में रह कर यह सभी सुख-सुविधाओं का उपभोग करता है। पुत्र-पौत्रों से परिवार भरा-पूरा रहता है। जीवन के ४२, ४८, ४९, ५३, ५५ तथा ५९ वें वर्ष विशेष महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। शरीर स्वस्थ तथा नीरोग रहता है तथा भूमि, भवन, वाहन, सेवक आदि के सभी सुखों को भोगता हुआ ८५ वर्ष की आयु प्राप्त करता है। राज्य से इसका सम्बन्ध जीवनान्त तक बना रहता है।

(११९८) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, उदार स्वभाव का, किंचित् क्रोधी तथा न्याय-प्रिय होता है। इसे बाल्यावस्था से ही सब प्रकार के सुख उपलब्ध रहते हैं। इसकी शिक्षा-दीक्षा सुचारु रूप से सम्पन्न होती है। यह बहुत सा ज्ञान स्वयं के अनुभव से भी प्राप्त कर लेता है। इसका विवाह २३ या २४ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दर, मनस्विनी तथा महत्वाकांक्षिणी होती है। इस जातक को राजकीय-सेवा का अवसर प्राप्त होता है। ३५ वर्ष की आयु तक यह बहुत उच्चस्थिति प्राप्त कर लेता है। जीवन के ४२, ४८ तथा ५८ वें वर्ष विशेष महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। इसकी सन्तानें सुयोग्य होती हैं। वे बड़ी होकर इसके यश, धन तथा सम्मान को और अधिक बढ़ाती हैं। ७५ वर्ष की आयु में यह किसी नये कार्य को आरंभ करता है, जिसे इसके पुत्रगण योग्यता पूर्वक सँभालते हैं। यह ८५ वर्ष से अधिक की आयु प्राप्त करता है।

(११९९)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, मेधावी, पंडित, विज्ञान वेत्ता, कला-मर्मज्ञ तथा अत्यन्त आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह धनी-मानी कुल में जन्म लेकर बाल्यावस्था से ही सुख प्राप्त करता है। पूर्वजन्मार्जित पुण्यों के फलस्वरूप इस लोक में सब प्रकार के ऐश्वर्यों से सम्पन्न बना रहता है। यह भूमि, भवन, वाहन तथा सेवकों के सुख से सम्पन्न जीवन व्यतीत करता है। इसको उच्च शिक्षा प्राप्त होती है तथा विदेश-यात्रा के अवसर भी मिलते ही रहते हैं। यह अपनी पत्नी का चुनाव स्वयं करता है तथा २५-२६ वर्ष की आयु में विवाह कर लेता है। पत्नी सुन्दरी, विदुषी तथा मनोनुकूला होती है। इसका भाग्य बाल्यावस्था से ही दीप्तिमान रहता है। ३५ से ४० वर्ष की आयु में यह अत्यधिक उन्नति करता है। राज्य से पर्याप्त लाभ मिलता है। धन की आमदनी नियमित एवं अत्यधिक बनी रहती है। पुत्र द्वारा असन्तोष मिलता है। पूर्णायु ८५ वर्ष होती है।

(१२००)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, शान्त स्वभाव का, क्रोधी परन्तु शीघ्र ही शान्त हो जानेवाला, छोटे-बड़े सभी कार्यों के करने में कुशल तथा विभिन्न स्रोतों से आर्थिक-लाभ करनेवाला होता है। यह राजाश्रय से लाभान्वित होता है तथा राज्य द्वारा आजीविका प्राप्त करता है। इसमें धन संचय की तृष्णा अधिक होती है। २५-२६ वर्ष की आयु में यह राजकीय-सेवा में कार्यरत होता है तथा उसमें उत्तरोत्तर उन्नति करता चला जाता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर मनोनुकूला तथा आजीवन साथ निभानेवाली प्राप्त होती है। पुत्रों की ओर से इसे सुख नहीं मिलता। इसके जीवन के ३०, ३२, ३८, ४५, ४९ तथा ५६वें वर्ष अत्यधिक सौभाग्यप्रद, धन एवं मान-सम्मान दायक सिद्ध होते हैं। यह निरन्तर कार्यरत बना रहता है तथा सर्वत्र मान-सम्मान प्राप्त करता हुआ ५७ अथवा ५८ वर्ष की आयु में ही मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।

भृ० सं० २०७३ — कु० र०

(१२०१)- इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य रूखे तथा क्रोधी स्वभाव का होते हुए भी गम्भीर, अपने उत्तरदायित्वों के प्रति सजग रहने वाला, सुन्दर, स्वस्थ, परिश्रमी, उद्योगी तथा प्रत्येक कार्य में सफलता पाने [illegible] का होता है। इसे नित-नये कार्य करने की आकांक्षा बनी रहती है। इसका विवाह २० से २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा वाक्पटु मिलती है। वह मनोनुकूल आचरण करने वाली तथा प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करने वाली होती है। विवाहोपरान्त जातक को कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। धन का नाश भी होता है। जीवन भी एक किनारा कष्ट उठाने के बाद ही सुख-शान्ति की उपलब्धि होती है, फिर सारा जीवन आराम से बीतता है। राज्य द्वारा तथा अन्य साधनों से लाभ होता है, परन्तु सन्तान अयोग्य एवं दुःख देने वाली होती है। भाग्योदय ४८ वर्ष की आयु में होता है तथा मृत्यु ६६-६७ वर्ष की आयु में होती है।

(१२०२)- इस जन्माङ्गचक्र का स्वामी सामान्य सुन्दर, क्रोध एवं द्वेषभाव के कारण उनका लाल नेत्रों वाला, अभिमानी, परन्तु हृदय का उदार तथा क्षमाशील भी होता है। यह सुन्दर कार्यों द्वारा अपने महत्त्व को प्रदर्शित करता है। विद्यालाभ उत्तम रहता है। विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, वाक्पटु तथा मनस्विनी मिलती है। वह प्रत्येक कार्य में इसकी सहयोगिनी बनी रहती है। इसे अपनी पत्नी पर गर्व भी बहुत होता है, क्योंकि वह प्रत्येक क्षेत्र में सफलता दिलाती रहती है। सन्तानें भी सुयोग्य होती हैं। २८ वर्ष की आयु से भाग्योदय होता है, तदुपरान्त निरन्तर धनागम होता रहता है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं। यह राज्य तथा समाज में प्रतिष्ठा एवं यश प्राप्त करता है तथा शरीर से भी प्रायः स्वस्थ रहता हुआ लगभग ७० वर्ष की पूर्णायु का उपभोग करता है।

(१२०३)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सामान्य सुन्दर, अत्यन्त अनुदार तथा रूखे स्वभाव का होता है। किसी से दुश्मनी हो जाने पर यह उसे कभी भूलता नहीं, अपितु किसी-न-किसी समय बदला लेने का प्रयत्न करता रहता है और बदला चुका कर ही मानता है। यह अत्यन्त अहंकारी होता है तथा ईश्वर पर भी विश्वास नहीं करता। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी भी इस जैसे ही क्षुद्र विचारों वाली होती है अतः उसके साथ खूब तालमेल बैठता है। सन्तानें भी काफी होती हैं। यह जो भी कार्य करता है, उसी में इसे लाभ होता है। अतः आर्थिक-स्थिति उन्नत बनी रहती है। देश-विदेश की यात्राएँ भी खूब करता है। ३५ वर्ष की आयु में इसे अनायास ही विपुल धन का लाभ होता है। पुत्रों से उसको मिलता है, वे धन-सञ्चय में इसके सहायक होते हैं। पूर्णायु ६४ से ६८ वर्ष की होती है।

(१२०४)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, सद्गुणी, कलाप्रेमी तथा अत्यधिक धनी होता है। यह जो भी कार्य करता है, उसी में इसे धन का विपुल लाभ होता है। इसकी कृपणता भी धनवृद्धि का कारण बनती है। इसे पिता का विशेष सुख मिलता है। माता पीका के सब पर शासन करने वाली होती है। इसे विवाह से श्रेष्ठ लाभ होता है। विवाह २० वर्ष की आयु में ही हो जाता है। यह विवाह से पूर्व ही धनोपार्जन करना आरंभ कर देता है। पूर्ण भाग्योदय ३५ वर्ष की आयु के बाद होता है। ५५ वर्ष की आयु तक यह सब प्रकार के सुख-ऐश्वर्यों से सम्पन्न हो जाता है। इसके पुत्र भी सुन्दर, साहसी तथा धन कमाने में कुशल होते हैं। वृद्धावस्था में इसका झुकाव धर्म की ओर अधिक हो जाता है, तब यह तीर्थयात्रा, दान-पुण्य आदि भी करता है। इसे लगभग ७२ वर्ष की आयु प्राप्त होती है।

भु० सं० ४२०८ कु० २०

(१२०५) - इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, मनस्वी तथा गुणवान होता है। यह अपने पराक्रम से विपुल धनोपार्जन करता है। राज्य में अथवा किसी बड़े प्रतिष्ठान में कार्य करता हुआ विशेष उन्नति, धन तथा सम्मान अर्जित करता है। यह अपनी बुद्धिमत्ता, दूरदर्शिता, ज्ञान एवं वाकपटुता के आधार पर सर्वप्रिय बनता है तथा अपनी सूझबूझ से अनेक काम करता हुआ ऐसी स्थिति में आ पहुँचता है कि धन का आगमन कभी रुकता ही नहीं है। मान-प्रतिष्ठा की भी कोई कमी नहीं रहती। इसका विवाह 20 वर्ष की आयु तक ही हो जाता है। पत्नी बुद्धिमती, चतुर, सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है। पुत्र-पुत्रियाँ सुन्दर, चतुर तथा प्रतिष्ठा को बढ़ाने वाले होते हैं। ४५ से ५८ वर्ष की आयु में यह सर्वोपभोग के सभी साधनों को प्राप्त कर लेता है तथा ७२ वर्ष तक जीवित रहता है।

(१२०६) - इस जन्म कुण्डली वाला जातक हृष्ट-पुष्ट तथा नीरोग शरीर का, सामान्य सुन्दर, अत्यधिक परिश्रमी, मायावी तथा कृपण स्वभाव का होता है। शारीरिक-श्रम करने में इसे प्रसन्नता का अनुभव होता है। इसका विवाह कुछ विलम्ब से 30 वर्ष की आयु तक होता है। पत्नी सुन्दरी, चतुर तथा मनोनुकूला प्राप्त होती है। यह बाल्यावस्था से ही धनार्जन करना आरम्भ कर देता है, परन्तु कठिन परिश्रम करके भी अधिक धन नहीं कमा पाता। लगभग ४३ वर्ष की आयु में अथवा उसके आसपास आकस्मिक रूप से विशेष धन का लाभ होता है। फिर यह किसी नये कार्य को आरम्भ करके हानि उठाता है। पुत्रों से भी इसे सुख नहीं मिलता। इसकी पत्नी पर को चाहती है और उसे व्यथित बनाये रखती है। प्रौढ़ावस्था के बाद यह जातक बहुत ही सामान्य-जीवन व्यतीत करता है। इसकी पूर्णायु लगभग ६८ वर्ष होती है।

(१२०७). इस जन्मचक्र का स्वामी श्यामवर्ण, मधुरभाषी, अनेक गुणों से युक्त, धीर-गम्भीर स्वभाव का तथा सर्वप्रिय होता है। इसका विवाह २०-२२ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है। यह कुछ समय तक अत्यन्त दुःखी रहता है। किन्तु पुरुषार्थ द्वारा धनोपार्जन करके २६-२७ वर्ष की आयु तक सुखी हो जाता है। इसके बाद पत्नी को कष्ट प्राप्त होता है और वह आकस्मिक बीमार हो जाती है अथवा मृत्यु को प्राप्त हो जाती है। इसी अवधि में जातक शत्रुओं द्वारा भी पीड़ित होता है तथा सुख-हीन होकर आर्थिक कष्ट उठाता है। फिर ३० से ३८ वर्ष की आयु में इसे भूमि-मकान-वाहनों की उपलब्धि होती है, तत्पश्चात् यह सुखी होता है एवं अपने पुरुषार्थ द्वारा आजीविकोपार्जन करता है। इसी अवधि में भाग्योदय भी होता है। शेष जीवन सुखपूर्वक बीतता है। पुत्र-पुत्रियों का सुख मिलता है। पूर्णायु ६० वर्ष के लगभग होती है।

(१२०८)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, मधुरभाषी, मित्र को सुख देने वाला, अपना गुणी तथा पुरुषार्थी होता है। इसका बचपन सुख में नहीं बीतता। विवाह २० से २२ वर्ष की आयु में होता है। विवाहोपरान्त भाग्योदय होता है। २८ वर्ष की आयु में पर्याप्त धन कमाता है, तदुपरान्त अपने अध्यवसाय से निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। राजकीय सेवा में रहने से इसका राजकाज से सम्बद्ध होने का अवसर भी इसे मिलता है। यह अपने अधिकारी को प्रसन्न रखता है तथा लाभ उठाता है। इसे पुत्र सन्तान के लिए दुःखी होना पड़ता है। ४५ वर्ष की आयु में किसी कठिन रोग का शिकार बनकर दुःख भोगता है। बाद में स्वस्थ होकर, आकस्मिक रूप से बहुत धन कमाता है। ५० से ५५ वर्ष की आयु में इसे स्त्री का वियोग-दुःख सहना पड़ता है। यह स्वयं लगभग ६८ वर्ष तक जीवित रहता है।

भु० सं० ७२०८

(१२०९)- इस जन्म कुण्डली के जातक मनुष्य पतले तथा लम्बे, परन्तु दृढ़ शरीर का एवं जोशीले स्वभाव का होता है। यह राजकीय-सेवा अथवा अपने व्यवसाय द्वारा ही धनोपार्जन करता तथा सबको प्रसन्न बनाये रखता है। इसका विवाह २२-२४ वर्ष की आयु में हो जाता है। विवाह के बाद ही उसका भाग्योदय होता है। पत्नी सुन्दरी, चतुर तथा महत्वाकांक्षाओं वाली होती है। वह जातक को सम्मान देती तथा प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करती है। जातक का पिता भी बड़ा साहसी तथा अद्भुत कार्य करने वाला होता है। जातक को पिता से बहुत लाभ होता है। विद्या तथा सन्तानों का सुख सामान्यतः उत्तम रहता है, परन्तु पुत्र के लिए दुःखी भी रहता है। यह अपने जीवन के ५० वें वर्ष तक अत्यधिक उन्नति कर लेता है। इसे वृद्धावस्था में श्वास-रोग का कष्ट होता है। इसे लगभग ७० वर्ष की आयु प्राप्त होती है।

(१२१०)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी अत्यन्त पराक्रमी, सुन्दर, बुद्धिमान, गुणवान, मानी, ज्ञानी, तथा यश-कीर्ति सम्पन्न होता है। यह अपनी योग्यताओं के आधार पर अति शीघ्र लोकप्रियता प्राप्त कर लेता है। अपने पिता से इसे बहुत प्रेम होता है, परन्तु अन्य कुटुम्बियों से सम्बन्ध अच्छे नहीं रहते। इसके शत्रुओं की संख्या भी अधिक होती है और यह उनसे पीड़ित भी होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, वाकपटु तथा प्रत्येक कार्य में सहयोगिनी सिद्ध होती है। ३० वर्ष से ७० वर्ष की आयु तक इसके पास निरन्तर धनागम होता रहता है। इसकी आमदनी के स्रोत भी अनेक होते हैं। इसे भूमिगत-द्रव्य का लाभ भी होता है। इसकी कुछ सन्तानें दुःख देने वाली तथा शत्रु जैसा व्यवहार करने वाली होती हैं। बाकी सन्तान सुख देती है। इसकी मृत्यु ६८ से ७५ वर्ष के बीच होती है।

कु० २०

भू० सं० ११०२

(१२११)- इस जन्मकुण्डली वाला प्राणी अनेक गुणों से युक्त, सुन्दर, स्वस्थ तथा भाग्यशाली होता है। यह अपने ही पुरुषार्थ एवं अध्यवसाय से धन कमाता है। किसी के आश्रित रहना पसन्द नहीं करता। यह अपने गुणों को प्रकाशित कर यशस्वी एवं धनी बनता है। इसका विवाह २२-२४ वर्ष की आयु में मनोनुकूल स्त्री के साथ होता है। यह परदेश में रहकर कार्य करता है। भाग्योदय २८ वर्ष की आयु में होता है। इसे विपुल यात्राएं करनी पड़ती हैं। स्वदेश के अतिरिक्त विदेशों में भी आना-जाना लगा रहता है। आयु के २७, ३५, ३८ तथा ४० वें वर्ष में इसे अपनी शक्ति एवं अज्ञान के कारण धन-हानि भी उठानी पड़ती है। यह जातक अपने पिता से तो प्रेम करता है परन्तु बन्धु-बान्धवों से कोई संबंध नहीं रखता। यह बड़े पुत्र के लिए दुःखी रहता है। माता का सुख भी थोड़ा ही मिल पाता है। पूर्णायु ७५ वर्ष से ऊपर प्राप्त होती है।

(१२१२)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी क्रूर स्वभाव का, परिश्रमी, मनस्वी तथा पुरुषार्थी होता है। यह उच्चशिक्षा प्राप्त करता है तथा अपनी विद्या-बुद्धि के बल से राजकीय सेवा में श्रेष्ठ पद पाने में सफल होता है। यह अदम्य साहसी होता है तथा किसी भी काम के शुरू करने के बाद जब तक उसमें सफलता प्राप्त नहीं कर लेता, चैन से नहीं बैठता। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में हो जाता है। स्त्री सुन्दरी तथा सुशीला मिलती है। परन्तु जातक अन्य स्त्रियों से भी सम्बन्ध रखता है। वासनाओं के प्रति इसका विशेष लगाव रहता है। यह दीर्घसूत्री तथा विभिन्न प्रकार की योजनाएं बनाने वाला भी होता है। धन आने की कल्पनाओं में भी यह सुखी रहता है, चाहे इच्छित-धन की उपलब्धि न हो। सन्तान के लिए दुःख भोगता है। जीवन सामान्यतः सुखी बना रहता है। लगभग ६० वर्ष से अधिक की पूर्णायु प्राप्त कर परलोक गमन करता है।

कु० र०

भू० सं० ३२०८

कु० २०

(१२२३)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, उपदेशक, सुवक्ता, लेखक तथा कवि होता है। यह स्वभाव से गंभीर, उदार तथा अपनी व्यवहार-कुशलता से सबको प्रभावित करने वाला होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दर, मनस्विनी, चंचल स्वभाव की तथा बात-बात पर हँसने वाली होती है। यह ससुराल से धन भी प्राप्त करता है। यह अपने कुटुम्बियों से सच्चा प्रेम करता है तथा उनके प्रति अपने उत्तरदायित्वों का भी भलीभाँति पालन करता है। फिर भी इसे अपने लोगों के ही द्वेष का शिकार बनना पड़ता है। ३२ वर्ष की आयु में इसे विशेष कष्ट होता है तथा ३६ वर्ष की आयु में अनपेक्षित धन का विशेष लाभ होता है। इसका भाग्योदय २८ वर्ष की आयु से होता है तथा ५० वर्ष की आयु तक यह सब प्रकार के ऐश्वर्यों से सम्पन्न हो जाता है। भूमि संबंधी कार्यों से भी धन कमाता है। पूर्णायु ८८ वर्ष तक हो सकती है।

(१२२४)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, गुणवान तथा कलाओं का ज्ञाता होता है। इस जातक को अत्यन्त तेजस्वी और धैर्यवान होना चाहिए। यह कार्य-कुशल तथा अत्यन्त व्यावहारिक होता है। इसे विभिन्न प्रकार के कार्यों तथा असाधारण बातों का ज्ञान होता है, जिसके कारण यह प्रत्येक व्यक्ति को प्रभावित कर लेता है। इसका विवाह २२-२४ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दर तथा गुणवती मिलती है। वह इसे सुख भी देती है। इसे राजकीय-सेवा से लाभ होता है अथवा राज्य के सम्बन्ध के कारण आजीविकोपार्जन करता है। सेवा में रहते हुए भी यह स्वतन्त्र रूप से अलग काम भी करता है। स्त्रियाँ इसकी ओर विशेष रूप से आकर्षित होती हैं तथा यह स्वयं भी अनेक स्त्रियों से संबंध रखता है। सामान्यतः जीवन सुख से व्यतीत करता है। वृद्धावस्था में तीर्थाटन भी करता है। ८० वर्ष से ऊपर की पूर्णायु प्राप्त होती है।

भु० सं० ८०३०

कु० र०

(१२१५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी रक्त वर्ण, स्वरूपवान, सुदृढ़ शरीर का, मनस्वी, उदार तथा महत्वाकांक्षी होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला होती है। इसकी आजीविका राजकीय-सेवा से संयुक्त रहती है। यह बहुत ज्ञानी तथा साहसी होता है। विद्या का भी उत्तम लाभ प्राप्त करता है। इसे ज्येष्ठ-पुत्र का सुख नहीं मिलता। इसका भाग्योदय स्त्री के द्वारा होता है। यह स्त्रैण-स्वभाव कामी होता है तथा कविता भी करता है। आयु के २८, ३०, ३५ तथा ३८ वर्ष की आयु में विशेष रूप से लाभ होता है। कुछ अच्छे लोगों से इसकी अकारण ही शत्रुता हो जाती है, उनके कारण हानि भी उठानी पड़ती है। ४०, ४२ वर्ष की आयु में इसे बीमारी भी होती है। वृद्धावस्था में यह तीर्थयात्राएँ करता है तथा धर्म-कर्म में विशेष रुचि लेता है। इसकी पूर्णायु ८० वर्ष के लगभग होती है।

(१२१६) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य गुणी, ज्ञानी, कलाकार, विद्वान, सुन्दर, स्वस्थ, उद्योगी तथा राजकीय-सेवा में रह कर आजीविकोपार्जन करने वाला होता है। इसका विवाह २३-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है। वह पति को सुखी रखने वाली तथा आज्ञानुवर्तिनी होती है। जातक का भाग्योदय २८ वर्ष की आयु में होता है। जीवन के २८, ३५, ४६ तथा ५६वें वर्ष अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। धन के प्रति इसे कोई लगाव नहीं होता, फिर भी आर्थिक-स्थिति सामान्यतः उत्तम बनी रहती है। पुत्र से मधुर-संबंध नहीं रहते। यह भगवद्भक्त, तीर्थप्रेमी तथा दीन-दुखियों का मित्र होता है। यह सन्तोषी व्यक्ति के रूप में जीवन बिताता है। यह बड़ा धैर्य-गम्भीर तथा मानी होता है। घोर विपत्ति में भी यह शत्रु के समक्ष झुकता नहीं है। पूर्णायु ७५ वर्ष होती है।

भु० सं० ८३२०३ — कु० र०

(१२१७)- इस जन्मकुण्डलीचक्र का स्वामी सुखी, रूपवान, मधुरभाषी, व्यवहार-कुशल, धीर-गंभीर, बलिष्ठ, गौरवर्ण, लम्बे कद का, कुछ मोटे होंठ तथा लम्बी आँखों वाला एवं पुरुषार्थी होता है। यह हरसमय नवीन ज्ञान तथा कलाओं की खोज में प्रवृत्त रहने वाला, गंभीर स्वभाव का तथा कम मित्रों वाला होता है। यह अनेक गुणों से सम्पन्न, ईमानदार, तुनक-मिजाज तथा किंचित् क्रोधी स्वभाव का भी होता है। परन्तु हृदय से उदार, भावुक तथा परोपकारी भी होता है। इसे माता-पिता का कष्ट होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होजाता है। पत्नी सुन्दरी, परन्तु कठोर-स्वभाव की होती है। वह सम्पन्न होते हुए भी अहंभाव से पीड़ित होती है। यह जातक ३२, ३८, ४५ तथा ४९ वर्ष की आयु में विशेष सुख तथा लाभ प्राप्त करता है। सन्तान का प्रायः अभाव रहता है। जुआ खेलने का शौकीन हो सकता है। यह लगभग ८० वर्ष की पूर्णायु पाता है।

(१२१८)- इस जन्मकुण्डली वाला जातक लम्बे कद का, गौर वर्ण, दृढ़ शरीर का, परिश्रमी, कठिन कार्यों को करने में आनन्द का अनुभव करने वाला तथा किसी भी कार्य को आरंभ करने के बाद सफलता-प्राप्ति पर्यन्त उसमें निरन्तर मनोयोग से लगा रहने वाला होता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होजाता है। पत्नी धार्मिक प्रवृत्ति की, सुख तथा प्रसन्नता देने वाली तथा कुछ स्थूल शरीर वाली होती है। इसे माता-पिता का अल्प-सुख ही प्राप्त होता है। सन्तान का सुख सामान्य रहता है। यह जातक अत्यन्त मनस्वी तथा गुणवान होता है एवं राजकीय-सेवा में नियुक्त होकर बड़ी-बड़ी जिम्मेदारी के कार्यों को कुशलतापूर्वक सम्पन्न करता है। इसकी महत्त्वाकांक्षाएँ ५५ से ६० वर्ष की आयु में पूरी होती हैं। (यह चारों ओर के वातावरण को अपने अनुकूल बना लेता है) तीर्थयात्राएँ करता हुआ यह लगभग ८० वर्ष तक सुखी-जीवन व्यतीत करता है।

(१२१९)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, गौरवर्ण, अत्यन्त महत्वाकांक्षी, गुणवान्, कला-कुशल, साहित्य, काव्य तथा अनेक प्रकार के लेखन में रुचि रखने वाला, नैतिक मूल्यों को सर्वोपरि मानने वाला तथा प्रत्येक व्यक्ति पर अपने व्यक्तित्व एवं अधिकारों की छाप डालने का इच्छुक कतिपय अहंकारी स्वभाव का होता है। पर अपने गुणों तथा योग्यताओं के आधार पर राज्य सेवा में संलग्न होकर अपने उत्तरदायित्वों का कुशलता पूर्वक परिपालन करता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी बड़ी भाग्यशाली तथा विदुषी होने के साथ ही पति के समान ही महत्वाकांक्षिणी होती है। उसकी सभी अभिलाषाएँ पूर्ण भी होती हैं। जातक को अपने पुरुषार्थ से भूमि, भवन, वाहन, मणि-रत्न, सेवक आदि सभी सुखों की प्राप्ति होती है, परन्तु सन्तान के लिए दुःखी रहता है। इसकी पूर्णायु ८० से ८५ वर्ष की होती है।

(१२२०)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, कठिन परिश्रमी, अपने जीवन के प्रत्येक क्षण को सार्थक बनाने वाला, विद्वान्, बुद्धिमान् तथा गुणवान् होता है। यदा-कदा जब इसे मनोनुकूल वातावरण अथवा सफलता नहीं मिलती, तब यह अपने निकटवर्ती लोगों के प्रति उदासीन अथवा असन्तुष्ट भी हो जाता है। सामान्यतः इसे निरन्तर आर्थिक-लाभ मिलता रहता है। इसका विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में हो जाता है, तथापि, यह अन्य स्त्रियों से भी प्रेम-सम्बन्ध रखता है। इसकी पत्नी विदुषी, सुन्दरी, मनोनुकूला तथा भाग्यशाली होती है। उसका व्यक्तित्व भी विशेष प्रभावशाली होता है और वह समाज में अपने लिए आदर से प्रतिष्ठित स्थान भी प्राप्त करती है। आयु के २८, ३५, ४८ तथा ५२ वें वर्षों में जातक को धन का विशेष लाभ होता है। पुत्र कठिनाई से प्राप्त होता है। आयु लगभग ८० वर्ष की प्राप्त होती है।

भु० सं० ६३०३

(१२२१)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर स्वरूपवान, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, हृष्ट-पुष्ट शरीर का, स्वस्थ, सहृदय, भावना प्रधान, दूसरों के काम को अपना समझ कर करने वाला, परोपकारी तथा अत्यन्त परिश्रमी होता है। इसे धन का लाभ अनेक स्रोतों से होता है। पूर्ण शिक्षा से युक्त होकर यह राजकीय-सेवा में नियुक्त हो जाता है तथा राज्याश्रय से पर्याप्त धन तथा यश का उपार्जन करता है। इसका विवाह कुछ विलम्ब से, लगभग ३० वर्ष की आयु में होता है। पत्नी पतले शरीर की, सुन्दरी, गंभीर स्वभाव की तथा पति को विशेष सुख देने वाली होती है। सन्तान का सुख भी उत्तम रहता है। भोग-विलास में विशेष रुचि रखते हुए भी जातक ईश्वर के प्रति भक्ति तथा धर्म के प्रति निष्ठावान होता है। सन्तान सुख उत्तम रहता है। भाग्योदय २७ वर्ष की आयु में होता है। ४५ वर्ष तक सब सुख प्राप्त हो जाते हैं। पूर्णायु ८० वर्ष होती है।

(१२२२)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी उन्नत ललाट, विशाल नेत्र, गौर वर्ण, लम्बे शरीर वाला तथा अत्यन्त प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी होता है। यह पैतृक-सम्पत्ति पाने वाला, कुटुम्ब में प्रमुख, परन्तु कुटुम्बियों की आँखों में काँटे की भाँति गड़ने वाला होता है। इसके पास धन-धान्य की कमी नहीं रहती। इसका विवाह कुछ विलम्ब से, अपने से ऊँचे कुल वाली अथवा परदेश वासिनी स्त्री से होता है। पत्नी सुन्दरी, आत्मकेन्द्रित रहने वाली, धार्मिक-भावनाओं को बढ़ावा देने वाली तथा ईश्वर-भक्त होती है। इसे पुत्रों का भी पर्याप्त सुख मिलता है। भाग्योदय लगभग ४५ वर्ष की आयु में होता है। आयु के ४३, ४८ तथा ५६ वें वर्ष विशेष सुखदायक सिद्ध होते हैं। यह अपने पराक्रम से उच्च भवन, वाहनादि का सुख प्राप्त करता है तथा लगभग ७५ वर्ष की आयु तक जीवित रहता है।

कु० र०

भु० सं० ९३.०७

(१२२३)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी ऊंचे कद वाला, स्वस्थ तथा बलिष्ठ शरीर का, परिश्रम से भी न चूकते हुए भी आलसी स्वभाव का तथा इसी कारण अपने कार्यों को बिगाड़ लेने वाला, गुणी तथा सफल होता है। यथेष्ट शिक्षा पाकर यह राजकीय सेवा में किसी उच्चपद पर प्रतिष्ठित होता है अथवा स्वयं का कोई व्यवसाय खोल कर पर्याप्त धनोपार्जन करता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, धर्मी तथा प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करने वाली मिलती है। भाग्योदय विवाह के बाद ही होता है तथा ४५ वर्ष की आयु तक पर्याप्त उन्नति करता है। यह उत्तरदायित्वपूर्ण कार्यों का बड़ी कुशलता से सम्पादन करता है। जीवन के ३२, ३८, ४० तथा ४५ वें वर्ष बड़े महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। उस समय तक यह विपुल धन का स्वामी हो जाता है। सन्तान-सुख अल्प रहता है। पूर्णायु ८० वर्ष से ऊपर भी हो सकती है।

कु० २०

(१२२४)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, बलिष्ठ शरीर, गौरवर्ण, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, अत्यन्त चतुर तथा अनेक शत्रुओं से युक्त होता है। यह माता-पिता का भक्त, गुरुजनों का सम्मान करने वाला, पुत्रवान्, उच्चाभिलाषी तथा पराक्रमी होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। भाग्योदय भी विवाहोपरान्त होता है। आयु के २७, २९, ३४, ३८, ४५ तथा ५० वें वर्ष विशेष उन्नति कारक तथा उच्चपद दिलाने वाले सिद्ध होते हैं। इसे ज्येष्ठ पुत्र की ओर से सुख नहीं मिलता। वृद्धावस्था में इसे यथेष्ट सम्मान तथा समाज में लोकप्रियता प्राप्त होती है। यह तीर्थयात्राएं भी करता है। परोपकारी तथा दानी भी होता है। जीवन के ६२ एवं ६३ वें वर्ष में किसी कठिन बीमारी का शिकार बनना पड़ता है। पूर्णायु ८० वर्ष से भी कुछ अधिक हो सकती है।

(१२२५)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वास्थ्यवान्, स्वाभिमानी, गुणवान्, विद्वान्, ~~श्रेष्ठ~~ स्वभाव का, पुरुषार्थी, परिश्रमी, परन्तु कभी-कभी आलस्य में आकर अपने काम को बिगाड़ लेने वाला होता है। इसे अपने ज्ञान, गुण तथा योग्यताओं के कारण विशेष कीर्ति प्राप्त होती है। पिता का श्रेष्ठ लाभ होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। विवाहोपरान्त ही भाग्योदय भी होता है। विवाह के बाद यह धन-धान्य से पूर्ण होकर निरन्तर उन्नति प्राप्त करता चला जाता है। ३२ वर्ष की आयु तक यह सभी प्रकार के सुख-साधनों को प्राप्त कर ऐश्वर्य पूर्ण जीवन बिताने लगता है। इस जातक के शत्रुओं की संख्या अधिक होती है, जो इसे आर्थिक-हानि पहुँचाती है। इसके भाग्योदय में पत्नी अत्यधिक सहायक होती है, परन्तु सन्तान के कष्ट भी मिलता है, यद्यपि सभी सन्तानें सुयोग्य भी होती हैं। पूर्णायु ६० वर्ष हो सकती है।

(१२२६)- इस जन्माङ्गचक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, गौर वर्ण, स्वस्थ, आकर्षक व्यक्तित्व वाला तथा सज्जन होता है। यह काव्य-साहित्य का रसिक, विद्वान् तथा गुणवान् होता है। यह धन-धान्य से सम्पन्न तथा सब प्रकार के सुखों का उपभोग करने वाला, जन्म से ही ऐश्वर्य में पलने वाला तथा विभिन्न कार्यों में दक्ष होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। यह राजकीय-सेवा में रहकर अपने अधिकारियों को प्रसन्न रखता है तथा धन कमाने के किसी भी अवसर को हाथ से नहीं जाने देता है। माता का सुख बाल्यावस्था में ही छिन जाता है तथा पिता का सुख भी प्राप्त नहीं होता। पत्नी मनोनुकूल मिलती है तथा पुत्र-पुत्री भी यशस्वी, सुन्दर तथा सुख देने वाले होते हैं। ३२ वर्ष की आयु से यह विशेष उन्नति करता है तथा सब प्रकार के ऐश्वर्यों से सम्पन्न होकर लगभग ८० वर्ष तक जीवित रहता है।

मु० सं० ३३०७ कु० २०

(१२२७)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य ऊँचे कद तथा कुछ स्थूल शरीर का, सुन्दर एवं ऊँचे आदर्शों वाला होता है। साहित्य तथा धर्म में इसकी रुचि होती है, परन्तु वह क्रियाशाली नहीं रहती। कभी-कभी यह अपनी धार्मिकता का विशेष रूप से प्रदर्शन भी करता है। धन के अतिरिक्त बहुत मोह होता है। माता-पिता का श्रेष्ठ सुख प्राप्त रहता है। इस का विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुशिक्षिता एवं ज्ञानवान होती है। वह इसके प्रत्येक कार्य में सहयोग करती तथा अनेक संकटों से बचाती है। इसके जीवन में स्त्री का योगदान महत्वपूर्ण बना रहता है। यह राजकीय सेवा अथवा किसी अन्य उच्च संगठन में सेवा-रत रहते हुए तरक्की करता है तथा ४०-४२ वर्ष की अवस्था में किसी विपत्ति का शिकार बनजाता अपने पुरुषार्थ से छुटकारा पाता एवं पुनः उन्नति करता है। प्रथम पुत्र से दुःखी। पूर्णायु ७० वर्ष।

(१२२८)- इस जन्मांग चक्र में जन्म ग्रहण करने वाला सुन्दर, सुशील, स्थूलकाय, धार्मिक, धनी, बड़े परिवार वाला एवं सर्वत्र लाभ उठाने वाला होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु तक होजाता है। पत्नी सुन्दरी, विदुषी तथा स्थूल शरीर की होती है। वह पति को सुख देने वाली होती है, फिर भी जातक का अन्य स्त्रियों से भी सम्बन्ध बना रहता है। इसकी शिक्षा एफ-ए तक ही पूरी होती है। विवाहोपरान्त इसका भाग्योदय होता है। यह राजकीय सेवा में संलग्न रहकर विपुल धन का उपार्जन करता है। यह कुछ ऐसे कार्यों द्वारा भी धनोपार्जन करता है, जो इसकी सामाजिक स्थिति के प्रतिकूल रहते हैं। कुमित्रों की संगति के कारण ही इसे ऐसे कार्य करने पड़ते हैं। ५५ वर्ष की आयु तक यह बहुत धनी होजाता है तथा समाज में प्रतिष्ठा भी प्राप्त कर लेता है। पुत्र-पुत्रियों का पूर्ण सुख मिलता है। पूर्णायु लगभग ८२ वर्ष होती है।

भू० सं० १३०८ | कु० १०

(१२२९)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वास्थ्यवान्, विद्वान् तथा वाक्पटु होता है। यह अपने जीवन में अनेक उत्थान-पतन देखता है। यह यशस्वी होते हुए भी कभी-कभी अपयशी, योग्य होते हुए भी अयोग्य एवं उदार होते हुए भी अनुदार सिद्ध होता है। इसका विवाह 20-22 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है। पुत्र-पुत्रियों का सुख भी यथेष्ट मिलता है। यह राजनीतिक क्रियाओं का ज्ञाता, अत्यन्त मनस्वी तथा महत्वाकांक्षी होता है। राज्यद्वारा इसे यथेष्ट सम्मान मिलता है। २४ वर्ष की आयु में राजकीय-सेवा में उच्च पद की प्राप्ति भी संभव है। यह बहुत धन कमाता है, परन्तु उसे व्यय में गँवाते रहने के कारण स्थिति जैसी की तैसी बनी रहती है। यह ऊँच-नीच का विचार किये बिना भोग-विलास में लिप्त रहता है। पुत्र-पौत्रों से युक्त होकर यह लगभग ७८ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१२३०)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, सुशील, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, गुणी, जन्म से ही भाग्यवान्, धनी तथा सम्पत्तिशाली होता है। श्रेष्ठ कुल में जन्म लेने वाला यह व्यक्ति सबको सुख देता है। माता-पिता को परम प्रिय होता है तथा वयस्क होने पर एक शक्तिशाली व्यक्ति के रूप में इसकी प्रसिद्धि होती है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दर, सुलक्षणा एवं विदुषी होती है। वह इसके प्रत्येक कार्य में सहयोग करती है। विवाहोपरान्त ही इसका भाग्योदय होता है तथा सात-आठ वर्ष के भीतर ही यह अपनी आर्थिक-स्थिति को अत्यधिक उन्नत बना लेता है। इसकी आमदनी के स्रोत अनेक होते हैं। यह राजमान्य, उदार तथा परोपकारी स्वभाव का होता है। सन्तान-सुख से पीड़ित रहता है तथा शत्रुओं की संख्या भी अधिक होती है। पूर्णायु ७५ से ८० वर्ष होती है।

भु० सं० 2308

कु० र०

(2231)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, सरल प्रकृति का, कल्पना-कुशल तथा मधुरभाषी होता है। यह सौन्दर्य, सुगन्ध वस्तुओं तथा संगीत का प्रेमी, हस्त-प्रिय, सुन्दर स्त्रियों का अभिलाषी तथा श्रेष्ठ भोजन एवं ऐश्वर्यपूर्ण रहन-सहन को पसन्द करने वाला होता है। यह राजसी स्वभाव का होता है तथा बड़े आदमी की भाँति ही जीवन व्यतीत करता है। यह दिल-फेंक, दानी तथा अनेक मित्रों से युक्त होता है। तथापि राजसी रहन-सहन तथा स्वभाव के ईर्ष्या रखने वाले अनेक लोग इसके प्रकट अथवा गुप्त शत्रु भी बन जाते हैं। इसका विवाह 23 वर्ष की आयु में सुन्दरी, मानिनी, पतिव्रता एवं सर्वगुण सम्पन्ना स्त्री से सम्भव होता है। वह प्रत्येक कार्य में पति को सहयोग करती तथा उन्नति पथ पर बढ़ाने में सहायिका होती है। जीवन के 44, 52 तथा 56 वें वर्ष विशेष कष्टप्रद रहते हैं। पूर्णायु लगभग 80 वर्ष की होती है।

(2232)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, अत्यन्त यशस्वी, उदार, सहिष्णु, महागुणी, नेतृत्व-शक्ति-सम्पन्न एवं सर्वत्र सम्मान पाने वाला होता है। यह परोपकार के कार्यों में अपने धन का बहुत व्यय करता है। अपने सुखोपभोग, विलास तथा ऐश्वर्यपूर्ण रहन-सहन पर भी खूब खर्च करता है। अनेक स्त्रियों से इसके सम्बन्ध रहते हैं। स्त्री के द्वारा भी इसको भाग्योन्नति होती है। इसका विवाह 26-28 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूला मिलती है तथा पुत्र-पौत्रों का भी पूर्ण सुख प्राप्त होता है। 32 वर्ष से 56 वर्ष की आयु के बीच यह विशेष उन्नति करता है। 60 वर्ष की आयु में कठिन बीमारी का शिकार बनता है। 62 से 66 वर्ष की आयु में राज्य द्वारा समाज द्वारा विशेष सम्मान प्राप्त करता है। यह आजीवन सुखी तथा यशस्वी रहते हुए लगभग 78 वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

भु० सं० 33208

(2233)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ तथा अनेक प्रकार के सुखों को उपलब्ध रहते हुए भी प्रायः अशान्त, निराश तथा हतोत्साही बना रहता है। इसका विवाह 23 वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, गर्वीली, चंचल स्वभाव की, अपने रूप पर अधिक खर्च करने वाली तथा अपने व्यक्तित्व को आकर्षक बनाये रखने वाली होती है। उसके कारण भी यह जातक दुःखी बना रहता है। 22 वर्ष की आयु तक इसे धन की बहुत कमी रहती है। विद्याध्ययन में भी अनेक बाधायें आती हैं। विवाहोपरान्त इसका भाग्योदय होता है, फिर धन की कोई कमी नहीं रहती तथा धनागम के अनेक स्रोत खुल जाते हैं। राजाश्रय द्वारा आ-जीविकोपार्जन करने वाला यह जातक भूमि, भवन, वस्तुओं के क्रय-विक्रय आदि कार्यों द्वारा बहुत धन कमाता है। 45 वर्ष बाद सर्वश्रेष्ठ समय आता है। पूर्णायु 80 वर्ष तक हो सकती है।

(2234)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, सुखी तथा सब प्रकार के ऐश्वर्यों का उपभोग करने वाला होता है। बाल्यावस्था में यह रोग-पीड़ित रहता है परन्तु 12-14 वर्ष की अवस्था हो जाने पर यह सब व्याधियों से मुक्त हो जाता है। यह जीवन सम्बन्धी सेवा-कार्य करते हुए आजीविकोपार्जन करता है। इसका विवाह लगभग 25 वर्ष की आयु में स्वयं से बड़ी लगने वाली स्त्री के साथ होता है। 26-28 वर्ष की आयु में इसे भूमिगत वस्तुओं का लाभ होता है। राजकीय-सेवा अथवा आकस्मिक-अवसरों द्वारा भी इसे आर्थिक-लाभ होता रहता है। यह अपने से नीच लोगों की संगत करता, उनपर धन खर्च करता तथा उन्हीं से लाभ भी उठाता है। शिक्षा-कार्य में इसे विशेष रुचि रहती है। इसका अनेक सुन्दरी स्त्रियों के साथ सम्पर्क भी बना रहता है। पूर्णायु लगभग 80 वर्ष होती है।

कु० २०

(१२३५)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला, गौर वर्ण, ज्ञानवानों तथा गुणी एवं प्रियदर्शी व्यक्तियों से प्रेम करने वाला होता है। यह पुस्तकों का भी प्रेमी होता है तथा विविध विषयों के अध्ययन में विशेष रुचि रखता है। शिक्षा यथेष्ट प्राप्त होती है। विवाह २६ वर्ष की आयु तक होता है। पत्नी सुन्दरी, वाक्पटु, चतुरा, परन्तु क्रोधी भी होती है। इसको अनेक सन्तानों के गर्भ नष्ट होते हैं तथापि पुत्र-पुत्रियों का सुख भी मिलता है। राजकीय-सेवा से संपन्न यह व्यक्ति अत्यन्त दूरदर्शी, सौम्य स्वभाव का तथा कर्तव्य परायण होता है। इसे अनेक प्रकार से धन-लाभ होता है। पराई-वस्तुओं पर भी इसकी लालची-दृष्टि रहती है। इसका भाग्योदय २७ वर्ष की आयु से होता है। ३४ वें वर्ष में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं तथा ४२ वें वर्ष में पुनः विशेष लाभ होता है। यह ८० वर्ष तक की दीर्घायु प्राप्त करता है।

(१२३६)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्व का धनी, दूरदर्शी, गुणी, विद्वान् तथा अपने पैतृक-व्यवसाय की उन्नति करने वाला होता है। यह कार्य-कुशल, व्यवहार-कुशल तथा भाषा-कुशल भी होता है। इसका विवाह लगभग २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी वाचाल, सुन्दरी तथा बुद्धिमती होती है। पत्नी की ओर से इसे पूर्ण सुख मिलता है। इसका विद्या का क्षेत्र उन्नत होता है तथा सन्तान-सुख भी अच्छा होता है। पत्नी की ओर से इसे प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग मिलता है अतः यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। इसके जीवन के ३२, ३५, ३६, ४५ तथा ४६ वें वर्ष यश, सम्मान तथा धन की विशेष वृद्धि करने वाले सिद्ध होते हैं। राज्य के द्वारा अथवा राजकीय-सेवा से भी इसे पर्याप्त आर्थिक-लाभ होता है। इसकी पूर्णायु लगभग ७०-७२ वर्ष होती है।

(१२३७) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, गुणी, मानी तथा अपने पुरुषार्थ द्वारा धनोपार्जन करने वाला होता है। यह लम्बे कद का, गौरवर्ण तथा आकर्षक व्यक्तित्व का धनी एवं धर्मकर्म का पालन करनेवाला, सद्विचारी तथा ईमानदार प्रकृति का होता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है। विवाह के पूर्व ही यह परदेश की यात्रा करता है और वहाँ से पर्याप्त धनोपार्जन करता है। इसे धन के प्रति विशेष लगाव होता है तथा यह दिन-रात धन कमाने की धुन में ही लगा रहता है। इसकी आमदनी के स्रोत भी अनेक होते हैं। जीवन के ३०, ३५, ३८, ४२, ४६, ५२ तथा ५८ वें वर्ष विशेष आर्थिक लाभप्रद सिद्ध होते हैं। यह अपने काम का अनुभवी होता है। शत्रु इसके सामने पराजित होते हैं। अपने धर्म के कई नियमों का पालन करता है। संतान के लिए दुःखी रहता है। चोट लगना भी सम्भव है। पूर्णायु लगभग ७० वर्ष की होती है।

(१२३८) - इस जन्मचक्र का अधिपति सुन्दर, स्वस्थ, बुद्धिमान, मनस्वी तथा कार्य-कुशल होता है। यह प्रत्येक परिस्थिति में अपना काम बना लेने वाला, विरोधियों को परास्त करने वाला तथा अपनी विद्या, बुद्धि एवं पौरुष से प्रतिपक्षी पर विजय पाने वाला होता है। इसके पास धन, धान्य, मणि-रत्न आदि की कोई कमी नहीं रहती। यह बड़ी सरलता से धन कमाता रहता है। सामान्यतः यह उदार वृत्ति का होता है, परन्तु इसका कार्यक्षेत्र कूटनीति पूर्ण भी हो सकता है। राज्य तथा राज्याधिकारियों से इसके घनिष्ठ सम्बन्ध होते हैं। इसका पहला विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में होता है, परन्तु यह दूसरा विवाह भी करता है तथा अन्य अनेक स्त्रियों से भी सम्बन्ध रखता है। ३० वर्ष की आयु में इसे कठिनाई आती है तथा ३७-३८ वर्ष की आयु में भी कष्ट मिलता है। उन्हें पार करके यह सुख पूर्वक लम्बा जीवन व्यतीत करता है। आकस्मिक आपत्तियाँ लग सकती हैं।

(१२३९)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी अत्यन्त सरल, सुन्दर, स्वस्थ, आदर्शपूर्ण, उच्च आदर्शों वाला मनस्वी तथा उच्च आकांक्षाओं वाला होता है। यह प्रत्येक व्यक्ति का उपकार करना चाहता है। धार्मिक के प्रति विशेष आस्थावान् होता है। यह तीर्थयात्रा तथा सार्वजनिक कल्याण संबंधी कार्यक्रमों में विशेष रुचि लेता है। इसका विवाह लगभग २० वर्ष की आयु में सुयोग्य, सुन्दरी तथा सुशील स्त्री के साथ होता है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है तथा सन्तान-सुख भी अच्छा मिलता है। इसका भाग्योदय २५ वर्ष की आयु से होता है। यह धन-धान्य पूर्ण, सुखी तथा समृद्ध जीवन बिताता है। इसका व्यवसाय अच्छा चलता है। इसे अपने जीवन में किसी भी कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता। ६० वर्ष की आयु तक यह पर्याप्त धनी एवं यशस्वी बन जाता है। सब लोग इसे अपने सच्चे हितैषी के रूप में मानते हैं। यह ८५ से ९० वर्ष की आयु पाता है।

(१२४०)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य बाल्यावस्था से ही समृद्ध-परिवार में पलता है। यह सुन्दर, स्वस्थ, प्रियदर्शी तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व का स्वामी होता है। इसका विवाह २० से २३ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, अनेक कलाओं की जानकार तथा पति की अनुगा- -मिनी होती है। यह जातक विद्या-बुद्धि से पूर्ण, पराई-सेवा से आजीविकोपार्जन करने वाला, हृदय का उदार तथा दीन-दुःखियों की सेवा में तत्पर रहने वाला होता है। इसे किसी बड़े प्रति- ष्ठान में सेवा करने का अवसर भी मिल सकता है। ३५ से ५६ वर्ष की आयु में यह अत्यधिक धन, मान-प्रतिष्ठा, भूमि, भवन, वाहनादि का सुख प्राप्त कर लेता है। इसे कभी आकस्मिक-चोट लगने की सम्भावना भी रहती है, परन्तु उसके कारण जीवन पर संकट नहीं आता। यह सन्तान-पक्ष से सदा सुखी रहता है तथा अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूर्ण कर, ८० वर्ष की आयु में परलोक-गमन करता है।

(१२४१)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, आकर्षक व्यक्तित्व का धनी, तीव्र बुद्धि सम्पन्न तथा गुणवान होता है। इसके सद्गुण तथा प्रभावशालिता बाल्यावस्था से ही प्रकट होने लगते हैं। विद्याध्ययन में इसकी विशेष रुचि रहती है और यह उच्च-शिक्षा सफलता पूर्वक प्राप्त करता है। यह विनम्र तथा उदार स्वभाव का, मधुरभाषी एवं परोपकारी होता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मनस्वी तथा परिश्रमी होती है। वह मधुरभाषिणी, पतिपरायणा तथा प्रत्येक क्षेत्र में पति का सहयोग करने वाली होती है। पुत्र तथा पुत्रियों का पर्याप्त सुख प्राप्त होता है। ३५ वर्ष की आयु तक इसे सभी प्रकार की भौतिक उपलब्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं। गृहस्थी का सुख पूर्वक पालन करता है। जीवन के ४०, ४६, ४९, ५३ तथा ५८ वें वर्ष अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। यह भूमि, भवन, वाहनादि का सुख भोगता हुआ लगभग ८० वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(१२४२)- इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, गौरवर्ण, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, ललित कलाओं का प्रेमी तथा जानकार। काव्य-साहित्य आदि के सृजन में निपुण तथा अपने कार्य-क्षेत्र का स्वयं-निर्माता होता है। यह चित्रकारी अथवा किसी तकनीकी-विभाग में कार्य करने वाला, अपने पुरुषार्थ के बल पर ही उन्नति करने वाला, माता की ओर से सुखी तथा पिता की ओर से कष्ट पाने वाला तथा दीर्घकाल तक पिता से अलग रहने वाला होता है। इसका विवाह १७ से १९ वर्ष की आयु में ही हो जाता है। इसका दाम्पत्य-जीवन उत्तम, सन्तान-सुख कष्टप्रद रहता है। भाग्योदय परदेश में तथा नौकरी आदि सेवा-कार्य से होता है। ३५ वर्ष की आयु तक इसे कष्ट उठाना तथा अधिक परिश्रम करना पड़ता है। ३८ वर्ष की आयु से भाग्योदय होता है। आकस्मिक लाभ के अवसर भी मिलते हैं। तीर्थयात्राएँ भी करता है। पूर्णायु ८० वर्ष के लगभग होती है।

सं० भु० ४०३४

कु० र०

(१२४३)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी अत्यन्त सुन्दर, स्वस्थ, गुणी, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, बुद्धिमान, गुणवान तथा सर्वप्रिय होता है। यह अपनी धुन का पक्का होता है। इसका काम देखने में कुछ और तथा करने में कुछ और होता है। यह माता को दुःख देता है। यह धूप का शौकीन भी होता है तथा उत्साह एवं विद्या द्वारा धनोपार्जन भी करता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी की ओर से सुखी तथा निश्चिन्त रहता है, क्योंकि वह घरेलू दायित्वों का सम्यक् निर्वाह करने वाली होती है। पुत्र भी योग्य होते हैं। आयु के ३८, ४६ तथा ४८ वें वर्ष कष्टप्रद रहते हैं। परन्तु वृद्धावस्था में सुख प्राप्त होता है। युवावस्था संघर्ष पूर्ण बीतती है। इसे कुछ न करने पर भी यश प्राप्त होता है तथा सामान्य सुख के साधन सदैव उपलब्ध रहते हैं। पूर्णायु लगभग ८० वर्ष की होती है।

(१२४४)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, लम्बे तथा छरहरे शरीर वाला, मधुरभाषी, स्वाभिमानी तथा आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होता है। इसका जन्म सम्पन्न परिवार में होता है, अतः इसका पालन-पोषण सुख में होता है तथा अपनी विद्या-बुद्धि के बल पर यह उच्च पद पर प्रतिष्ठित हो, आजीवन सुखोपभोग करता है। राजकीय सेवा से इसे पर्याप्त लाभ होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, मनोनुकूला तथा प्रभावशालिनी होती है। विवाहोपरान्त ही भाग्योदय आरम्भ हो जाता है। यह माता-पिता को सुख देने वाला, शत्रु-पक्ष को परास्त करने वाला, दान-पुण्य में रुचि रखने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति का होता है। आयु के २५, ३०, ३३, ३५, ३८ तथा ४३ वें वर्ष धन एवं सम्मान की वृद्धि करने वाले सिद्ध होते हैं। यह सम्पूर्ण सुखों का उपभोग करता हुआ लगभग ८० वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

भृ० सं० १०४४ कु० १०

(१२४५)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी भाव एवं रौब मिजाज का प्रतीत होने पर भी मन से अत्यन्त उदार तथा शत्रुओं के लिए भी क्षमाशील होता है। यह सुन्दर, स्वस्थ, गुणी तथा पराक्रमी होता है। इसका विवाह लगभग २२ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, मनोनुकूला तथा अनेक कलाओं की पंडिता होती है। जातक का भाग्योदय भी पत्नी के द्वारा ही होता है। लगभग २६ वर्ष की आयु तक यह पर्याप्त धन कमा लेता है तथा अपने सद्गुण, सहृदयता एवं धार्मिक प्रवृत्ति के कारण पर्याप्त मान-प्रतिष्ठा भी प्राप्त कर लेता है। इसकी भाग्य वृद्धि ३५ वर्ष से ६० वर्ष की आयु तक निरन्तर होती रहती है। राजकीय-सेवा में रहकर तथा राज्य से सम्मान प्राप्त करते हुए यह अपने परिचित जनों को यशस्वी बनाता हुआ, उनकी ईर्ष्या का पात्र भी बनता है। इसे पुत्र-पुत्रियों का पूर्ण सुख प्राप्त होता है तथा सुखी एवं यशस्वी बने रहकर ७८ वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(१२४६)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी रूखे मिजाज का, माधुर्यहीन, परन्तु व्यवहार-कुशल, अपना स्वार्थ-सिद्ध करने में चतुर होता है। यह शत्रु के समक्ष मीत बनकर तथा उनसे मित्रता सम्पादित करने का ढोंग रचकर अपना काम निकाल लेता है। समयानुसार रंग पलटने की कला में यह कुशल होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा मधुर मिजाज की एवं धनी परिवार से सम्बन्धित होती है। जातक अपना धन भी उसी के पास रखता है। यह जातक स्वयं अत्यन्त कृपण होता है तथा पत्नी की अनुमति के बिना कोई कार्य नहीं करता। यह राजकीय-सेवा में रहकर भी पर्याप्त धन कमाता है तथा उसकी निरन्तर वृद्धि करता रहता है। ४५ वर्ष की आयु के बाद इसकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ हो जाती है। यह ७४ से ७८ वर्ष की आयु प्राप्त करता है तथा अपने पीछे बहुत सम्पत्ति छोड़ जाता है।

(१२४७)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, चालाक, अत्यन्त चातुर्यी तथा अपनी शिष्ट बुद्धि से सबको चमत्कृत कर देने वाला होता है। इसे अपनी माता तथा बड़े भाई के सुख से अल्पायु में ही वंचित होना पड़ता है। प्रकारान्तर से यह अपनी माता की मृत्यु का कारण भी बनता है। पिता का सुख भी कम ही मिलता है। यह अपने पुरुषार्थ के बल पर तथा पराई-सेवा में रह कर विपुल धनोपार्जन करता है तथा अपने गुण एवं चातुर्य से अधिकारी अथवा स्वामी के मन को जीत कर पर्याप्त लाभ उठाता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी अत्यन्त सुन्दरी तथा मधुरभाषिणी होती है। उसके द्वारा कार्यक्षेत्र तथा समाज में जातक को विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। विवाहोपरान्त सात वर्षों तक पर्याप्त धनागम होता है। फिर ५ वर्ष तक कुछ कमी रहती है। तदुपरान्त शेष जीवन में पर्याप्त धनागम होता रहता है। यह धर्म-कर्म में आस्थावान रहते हुए लगभग ६० वर्ष की आयु पाता है।

(१२४८)- इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य क्रोधी स्वभाव का, तीक्ष्ण दृष्टि वाला तथा सहसा किसी से भी प्रभावित न होने वाला होता है। इसकी उच्छृंखलता बाल्यावस्था से ही प्रकट होने लगती है। स्त्रियों के प्रति यह अत्यन्त कोमल भावनाएँ रखता है, तथापि वे भी इसे धोखा नहीं दे सकतीं तथा कोई अनुचित कार्य नहीं करा सकती हैं। इसका व्यक्तित्व बहुत उलझा हुआ होता है। यह किसी पर विश्वास नहीं करता और न किसी से स्वयं पर विश्वास करने के लिए ही कहता है। इसका विवाह २७ वर्ष की आयु के लगभग होता है। पत्नी मनस्विनी एवं साहसी होती है। पुत्र होते हैं, परन्तु उनसे सन्तुष्ट नहीं रहता। विद्या उत्तम श्रेणी की प्राप्त होती है, परन्तु उसमें रुकावटें भी आती हैं। यह स्वयं ही किसी बड़े काम को करता है तथा उसमें पर्याप्त उन्नति करते हुए धनी बनता है। ३० वर्ष की आयु तक इसका प्रताप एवं ऐश्वर्य खूब बढ़ जाता है। पूर्णायु ७८ वर्ष के लगभग होती है।

भु० सं० १००८ कु० २०

(१२४९)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वरूपवान्, अपने चारों ओर के वातावरण को प्रभावित एवं प्रफुल्लित करने वाला तथा तीव्रबुद्धि सम्पन्न होता है, तथापि यह कभी महापण्डितों जैसा और कभी मूर्खों जैसा व्यवहार करता रहता है। यथार्थ में यह सनकी प्रकृति का होता है। यह अपना धन भी अपने पास नहीं रखता तथा दूसरों के समक्ष निर्धनों जैसा व्यवहार करता है। इसके बावजूद भी यह अत्यन्त गुणी तथा निकट सम्पर्क में आने वालों को प्रभावित करने वाला होता है। यह हृदय का उदार, धार्मिक, परोपकारी तथा सब का भला चाहने वाला होता है। इसका विवाह लगभग 24 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बड़े तेज मिजाज की होती है तथा अपने धन, मान एवं उच्च स्थिति का अहंकार भी रखती है। इसका दाम्पत्य-सुख उत्तम, सन्तान-सुख कष्टप्रद रहता है। विवाहोपरान्त विशेष सुख मिलता है। धनी एवं प्रभावी रहते हुए यह 60 वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(१२५०)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, मध्यम कद का, अत्यन्त प्रबल बुद्धि का, गुणी, प्रतापी तथा विद्वान् होते हुए भी क्रोधी स्वभाव का होता है। यह अपने ज्ञान के प्रभाव से सम्पर्क में आने वाले सभी लोगों को अपने प्रभाव में रखने की चेष्टा करता है तथा अपने अहंकारी स्वभाव के कारण स्वयं भी पीड़ित बना रहता है। इसका विवाह 23 वर्ष की आयु में अत्यन्त अहंकारिणी तथा स्वयं को सबसे ऊँचा समझने वाली स्त्री के साथ होता है। इस जातक का भाग्योदय जन्म से ही होता है तथा 30 वर्ष की आयु तक यह अत्यधिक उत्कर्ष प्राप्त कर लेता है। इसे राजकीय सेवा अथवा राज्य से सम्बन्ध रखने का अवसर भी मिलता है। इसके अनेक स्त्रियाँ बनी रहती हैं, तथापि यह उनमें आसक्त नहीं होता। इसे राज्य से सम्मान मिलता है तथा धन का कोई अभाव नहीं रहता। यह लगभग 70 वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

मु० सं० २०३३ पृ० २०

(१२५१)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, चित्रवान, स्वस्थ, आकर्षक, बुद्धिमान, वाक्पटु तथा अपने गुणों का प्रकाश फैलाने वाला होता है। यह काव्य-शास्त्र तथा साहित्य का प्रेमी, उपदेशक एवं अत्यधिक लोकप्रिय होता है। प्रत्येक वर्ग का व्यक्ति इसका आदर-सम्मान करता है। इसका विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी मनोनुकूल, सुन्दर तथा मृदुभाषिणी मिलती है। वह विदुषी तथा अत्यन्त तेजस्विनी भी होती है। विवाहोपरान्त ही जातक का भाग्योदय होता है। यह किसी उच्च पद पर प्रतिष्ठित होकर अथवा अच्छे व्यवसाय आदि के द्वारा यथेष्ट धनोपार्जन करता है तथा आजीवन सुखी रहता है। इसे राज्य तथा धनी व्यक्तियों द्वारा धन-लाभ होता है। जीवन के ३५, ३८, ४१, ४८, ५२ तथा ५६ वें वर्ष धन, यश तथा मान-सम्मान की वृद्धि करने वाले सिद्ध होते हैं। धनागम अनेक स्रोतों से होता है। यह सुखी जीवन बिताते हुए ८५ वर्ष की पूर्णायु करता है।

(१२५२)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी मध्यम कद का, उन्नत ललाट, रक्त-गौरवर्ण, गोल मुँह, मुस्कराते नेत्रों वाला तथा शरीर से हृष्ट-पुष्ट होता है। यह संकटों को भी हँसते-हँसते सहन करनेवाला, उदार, वीर, परन्तु कभी-कभी क्रूर एवं दुर्वासा जैसा अकस्मात् भी कर उठता है। इसका विवाह लगभग २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी लम्बे कद की, साँवली, गुणवती मृदुभाषिणी व धैर्यवान, लज्जाशील तथा सुन्दर स्वभाव की होती है। वह गृहस्थी का कुशलता-पूर्वक संचालन करती है तथा गुणी पुत्रों को जन्म देती है। इस जातक का जीवन राजकीय अथवा किसी बड़े प्रतिष्ठान की सेवा में व्यतीत होता है। यह २५ वर्ष की आयु से ही धनोपार्जन करने लगता है। इसके जीवन के ३५, ३८, ४०, ४२, ४५, ४७, ५३ तथा ५५ के वर्ष विशेष उन्नति-दायक सिद्ध होते हैं। यह प्रायः सुखी जीवन बिताता हुआ लगभग ८० वर्ष तक जीवित रहता है।

भृ० सं० ३०८८

(१२५३)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, सुदृढ़ शरीर का साहसी तथा उदार स्वभाव वाला होता है। जिन कार्यों को करने में अन्य लोगों की हिम्मत नहीं होती, उन्हें करने के लिए यह हमेशा तत्पर रहता है। यह प्रत्येक कार्य में अद्भुत कौशल का परिचय देता है तथा हर जगह सबसे आगे दिखाई देता है। इसका विवाह लगभग २० वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, गंभीर प्रकृति की तथा प्रत्येक क्षेत्र में यथा-शक्ति सहयोग करने वाली होती है। वह घर-गृहस्थी के अतिरिक्त आर्थिक-लाभ के क्षेत्रों, कामकाज आदि में भी कंधे-से-कंधा मिला कर चलती है। यह कई पुत्र-पुत्रियों को जन्म देती है, जो बड़े होकर आज्ञाकारी एवं सुखदायक सिद्ध होते हैं। इसे कभी धन की कमी नहीं रहती, क्योंकि यह अपने पराक्रम तथा पैतृक-कारोबार से निरन्तर धनोपार्जन करता रहता है। ५० से ५० वर्ष की आयु में इसको विशेष लाभ होता है। पद वृद्धि एवं राज्याधिकार भी मिलता है। पूर्णायु ८५ वर्ष हो सकती है।

(१२५४)- इस जन्मकुण्डली में जन्म लेने वाला व्यक्ति सुन्दर, परन्तु अत्यधिक रूखे स्वभाव का, क्रोधी, विद्वान एवं विद्या-बुद्धि तथा तर्क में सहज ही किसी से हार न मानने वाला होता है। यह अपने ही विचारों को सर्वोपरि मानता है, तथापि अपनी योग्यता के कारण सर्वत्र सम्मान भी प्राप्त करता है, परन्तु वह सम्मान ऊपरी दिखावे का ही होता है, लोग हृदय से तो घृणा ही करते हैं। इसका विवाह २३-२८ वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी समझदार, बुद्धिमान, परिश्रमी तथा कार्यशील होती है। वह उदारचित्त वाली प्रत्येक कार्य को गंभीरता से करती है। दाम्पत्य-सुख एवं सन्तान-सुख उत्तम रहता है। विवाहोपरान्त इसका भाग्योदय होता है। यह राजनीति-सेवा में रह कर उच्चपद प्राप्त करता है। ४५ से ५८ वर्ष की आयु तक इसे निरन्तर उच्च-पद प्राप्त होते रहते हैं। यह पूर्ण प्रभावी एवं सफल जीवन बिताता हुआ लगभग ८० वर्ष से अधिक की आयु प्राप्त करता है।

कु० र०

(१२५५)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, तीव्रबुद्धि सम्पन्न, परन्तु रूखे स्वभाव का असहिष्णु होता है। यह अपनी धुन का पक्का, बुद्धिमान, पराक्रमी, गुणवान तथा यशस्वी होता है। हाकिमों से इसका मन नहीं मिलता। परन्तु पर-स्त्री के द्वारा इसे विशेष लाभ होता है तथा उससे सम्बन्ध रखने का इसे अभिमान भी रहता है। धन के मामले में यह अत्यधिक कृपण होता है। इसका विवाह लगभग २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी गंभीर स्वभाव की होती है। वह लम्बे समय तक बीमार भी रहती है। यह विवाह से पूर्व ही धनोपार्जन आरम्भ कर देता है। भाग्योदय 30 वर्ष की आयु में होता है। यह व्यवसाय तथा परदेश में पराई-सेवा द्वारा धन कमाता है। जीवन के ४५, ४८, ५६ तथा ६० वें वर्ष विशेष लाभप्रद रहते हैं। सन्तान-सुख उत्तम रहता है। मान-प्रतिष्ठा भी प्राप्त होती है। सामान्यतः जीवन सुख से बीतता है। कभी-कभी रोगों का शिकार भी बनता है। पूर्णायु ८८ वर्ष के लगभग होती है।

(१२५६)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, स्वस्थ, मधुर स्वभाव एवं विशाल हृदय का, उदार तथा महत्वाकांक्षी होता है। यह अपने चारों ओर के वातावरण को अनुकूल बना लेने में सक्षम होता है, परन्तु अपने कार्यों में आलस्य का प्रदर्शन करते हुए, पराये काम करने के लिए सदैव प्रस्तुत बना रहता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी आयु में इससे बड़ी लगने वाली, अत्यन्त मिलनसार तथा कृपण स्वभाव की होती है। वह अपनी सूझ-बूझ से जातक को प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करती है तथा धनोपार्जन में भी सहायक सिद्ध होती है। इस जातक को कपड़े के व्यवसाय द्वारा विशेष लाभ होता है। राजकीय सेवा से भी लाभ हो सकता है। ४०-४५ वर्ष की आयु तक इसका भाग्य विशेष प्रबल रहता है। धनागम अनेक स्रोतों से होता है। पुत्र सुन्दर तथा बुद्धिमान होते हैं। सब प्रकार से सुखी रहकर यह लगभग ८० वर्ष जीता है।

(१२५७)- इस लग्न चक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, दृढ़ शरीर का, अल्पभाषी तथा गंभीर स्वभाव का होता है। लोग इसे घमंडी समझने की गलती कर बैठते हैं। यह अपने वचन का पक्का, किसी को धोखा न देने वाला तथा उपकार के बदले प्रत्युपकार करने वाला होता है। यह बड़ी सादगी का जीवन बिताता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु तक सुन्दर, गंभीर स्वभाव की, परन्तु पति से मतभेद रखने वाली कन्या के साथ होता है। विवाहोपरान्त इसे राजकीय सेवाओं में जाने का सुयोग मिलता है, जहाँ यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। दाम्पत्य-सुख एवं सन्तान-सुख श्रेष्ठ प्राप्त होता है। विद्या-लाभ भी उत्तम रहता है। लगभग ५० वर्ष की आयु में यह उच्चपद पर प्रतिष्ठित होकर पर्याप्त यश तथा धन अर्जित करता है। वृद्धावस्था में विशेष सुख मिलता है। सब प्रकार के ऐश्वर्यों से सम्पन्न होकर यह लगभग ७५ वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(१२५८)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, अत्यन्त गुणवान्, विद्वान् तथा अपनी कला द्वारा दूसरों के चित्त को मोहित करने वाला होता है। यह काव्य-साहित्य का सर्जक होता है तथा अपने लेखन एवं प्रकाशन द्वारा सर्वत्र सम्मान प्राप्त करता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी पतली-दुबली, परन्तु स्वस्थ शरीर की, सुन्दर, सुशीला एवं मधुरभाषिणी होती है। यह व्यक्ति कौटुम्बिक एवं लौकिक तथा सामाजिक-व्यवहार में अत्यन्त निपुण होता है। इसे माता का अल्प सुख प्राप्त होता है तथा बन्धु-विहीन भी होना पड़ता है। इसकी एक छोटी बहिन बड़ी विदुषी, सुन्दरी, विद्वान् तथा गुणवती होती है। यह जातक अपने व्यवसाय, राजकीय अथवा किसी बड़े प्रतिष्ठान की सेवा से विशेष लाभ प्राप्त करता है। इसका भाग्योदय ग्राम से ही होता है। धन की कमी नहीं रहती। ४६ वर्ष की आयु के बाद उच्चपद एवं विशेष सम्मान मिलता है। पूर्णायु ८२ वर्ष होती है।

(१२५९)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर स्वरूपवान्, गोलमुँह, मध्यम कद तथा दरहरे शरीर का होता है। इसकी आँखें बड़ी सुन्दर होती हैं तथा उसके स्वभाव में सरलता एवं निश्छलता झलकती रहती है। प्रत्येक व्यक्ति इसे सम्मान देता है। कुलीन माता-पिता का पुत्र होने के कारण यह बचपन से ही सुखी जीवन बिताता है। यह या तो राज्य-सेवा में कोई उच्च पद पाता है अथवा व्यवसाय आदि के द्वारा पर्याप्त धनोपार्जन करता है। इसकी आर्थिक स्थिति आजीवन उत्तम बनी रहती है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में सुन्दरी तथा विद्वान् स्त्री के साथ होता है, जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इसका साथ देती है। सन्तानों का भी उत्तम सुख प्राप्त होता है। सभी सन्तानें गुणवान्, आज्ञाकारी एवं सुख देने वाली होती हैं। ३५ वर्ष की आयु के बाद इसका विशेष भाग्योदय होता है। यह जीवन में अनेक प्रकार के ऐश्वर्यों को प्राप्त करता हुआ लगभग ८० वर्ष की आयु तक सम्मानित जीवन व्यतीत करता है।

(१२६०)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वरूपवान्, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, मधुरभाषी, सद्बुद्धि, तथापि भाव-भंगिमाओं से सामान्यतः कठोर प्रतीत होने वाला होता है। यह अपने कार्यों को निपटाने में प्रायः विचित्र एवं मनःस्थिति में रहता है, जिसके फलस्वरूप कठिनाइयों का शिकार भी बनता रहता है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल होती है। यह बड़े-बड़े कार्यों को पूरा करने में भी सफल हो जाता है तथा सरलता पूर्वक यथेष्ट धनोपार्जन करता है। मित्रों के सहयोग से अनेक भिन्न कार्यों में निमग्न भी कार्यरत रहती है, उनसे इसे विशेष लाभ होता है। उच्च राजकीय-सेवा का अवसर भी इसे मिल सकता है। ५२-५३ वर्ष की आयु तक यह अत्यधिक तरक्की करता है तथा सर्वत्र यश-सम्मान भी प्राप्त करता है। पूर्णायु लगभग ८० वर्ष होती है।

(१२६१)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी स्वाभिमानी, सुन्दर, सहृदय, विद्वान् तथा कलाओं का ज्ञाता होता है। इसका सम्पूर्ण जीवन पराक्रम पूर्ण, वैचित्र्य तथा अद्भुत संयोगों से परिपूर्ण रहता है। इसके सभी कार्य असाधारण सफल होते रहते हैं। यह जिस काम को भी करने का संकल्प लेता है, उसे पूरा करके ही मानता है। इसे आकस्मिक रूप से धन, संयोग वश उच्च राजकीय-सेवा तथा श्रेष्ठ अवलोप के अवसर प्राप्त होते रहते हैं। यह अवसरों का लाभ उठाता है। दीर्घसूत्री स्वभाव का होते हुए भी यह किसी काम में कठिनाई नहीं उठाता। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी लम्बे कद की, आत्म-ना तेजस्विनी तथा जातक को अपने नियन्त्रण में रखने वाली होती है। वह घर परिवार पर अपना प्रभुत्व स्थापित किये रखती है। पुत्र-पुत्रियों का सुख भी अच्छा मिलता है। यह वसीयतों, मैं भी मुकदमा रहता है तथा उनसे लाभ उठाता है। पूर्णायु ८५ से ८७ वर्ष तक भी हो सकती है।

(१२६२)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, उदार हृदय का, सहानुभूति पूर्ण, परोपकारी यशस्वी, परिस्थितियों को अपने अनुकूल बना लेने में चतुर, सब की सहायता करने को उद्यत तथा किसी के सम्मुख न झुकने वाला होता है। इसमें दीनता नहीं पाई जाती। इसका विवाह २२-२४ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, मनोनुकूला तथा अपने सद्व्यवहार से सम्पूर्ण परिवार को प्रसन्न रखने वाली मिलती है। वह गठे हुए शरीर की, लम्बे कद वाली तथा आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, दयालु स्वभाव की होती है। यह जातक ४५ वर्ष की आयु के बाद विशेष उन्नति करता है। यह विज्ञानवेत्ता भी हो सकता है तथा राज्याधिकारी भी। आयु के ५३, ५८ तथा ६१ वें वर्ष विशेष लाभप्रद होते हैं। यह अत्यन्त सुखी धनी तथा यशस्वी जीवन व्यतीत करता है। पूर्णायु ७२ से ७४ वर्ष तक होनी सम्भव है।

(१२६३)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ शरीर का, काव्य, चित्रकारी, साहित्य तथा अन्य ललितकलाओं में रुचि रखने वाला, अपनी विद्वता एवं कवित्व द्वारा अन्य लोगों को प्रभावित करनेवाला तथा सब प्रकार से सुखी और सम्पन्न होता है। इसके कुल तथा परिवार के लोग भी धनी होते हैं तथा वे इस जातक का भविष्य बनाने में अपना पूर्ण सहयोग देते हैं। इसका विवाह लगभग २५ वर्ष की आयु में सुन्दरी सर्वगुणसम्पन्ना स्त्री के साथ होता है। यह उसके आकर्षण में इतना उलझा रहता है कि कभी-कभी अपने आवश्यक कार्यों को भी बिगाड़ लेता है। यह धार्मिक विचारों का, गुरुजन तथा देवताओं का भक्त, तीर्थयात्रा-प्रेमी एवं भूमि, भवन, वाहन, सेवकादि के सुख से सम्पन्न होता है। आयु के ४५, ४८, ४९, ५६, ५७, ६० तथा ६२ वें वर्ष विशेष लाभप्रद रहते हैं। पुत्र-पौत्रों का यथेष्ट सुख प्राप्त कर यह लगभग ८५ वर्ष तक जीवित रहता है।

(१२६४)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वरूपवान्, मधुरभाषी, हँसमुख तथा आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। इसका बाल्यकाल राजसी वातावरण में बड़े सुखपूर्वक व्यतीत होता है। इसे माता-पिता का पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त होता है। युवावस्था प्राप्त होने पर भी यह उनकी छत्रछाया में रहना ही पसन्द करता है। राजनीति-क्षेत्र में इसका प्रवेश स्वाभाविक हो जाता है। इसका विवाह सुन्दरी तथा गुणवती स्त्री के साथ २२ से २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी भी भाग्यशालिनी होती है। पुत्र-पुत्रियों का भी यथेष्ट सुख मिलता है, परन्तु एक पुत्र से मतभेद बना रहता है तथा पत्नी का सुख भी दीर्घकाल तक उपलब्ध नहीं होता। भाग्योदय ५० वर्ष की आयु में होता है तथा तीन वर्ष विशेष सुखदायक रहते हैं। भूमि, भवन, वाहन, सेवकादि सब प्रकार के ऐश्वर्यों का तथा यश-सम्मान का उपभोग करता हुआ यह ८० वर्ष की आयु पाता है।

भु० सं० ८३११

कु० १०

(११६५)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, लावण्यवान्, ज्ञानी, साहसी, गुणवान् तथा बुद्धिमान् होते हुए भी भोगों में विशेष प्रवृत्ति रखने वाला होता है। यह अनेक कार्यों को कुशलता पूर्वक सम्पन्न करने वाला, धार्मिक तथा साहसी होता है। इसे श्रेष्ठ मित्रों तथा भाइयों से सुख प्राप्त होता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में सुन्दरी तथा सुलक्षणा स्त्री के साथ होता है। वह इसे सब प्रकार से सुखी रखती है। इसका भाग्योदय भी स्त्री के द्वारा ही होता है। स्त्री के नाम से कारोबार आदि करके यह विशेष लाभ उठाता है। इस जातक को राजकीय-सेवा में रह कर अपनी बुद्धिमत्ता प्रदर्शित करने का अवसर भी प्राप्त होता है। ५५ वर्ष की आयु तक यह उन्नति के चरम शिखर पर पहुँच जाता है। इसे प्रथम पुत्र से कष्ट मिलता है। साधारणतः यह जातक सुखी-जीवन व्यतीत करता है तथा धार्मिक प्रकृति का एवं ईश्वर-भक्त होता है। पूर्णायु लगभग ८० वर्ष प्राप्त होती है।

(११६६)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, दृढ़शरीर का, उदार स्वभाववाला, राजकार्य में संलग्न होकर उच्च पद पानेवाला, सर्वत्र यश-सम्मान अर्जित करने वाला तथा हर प्रकार से सौभाग्यशाली होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में सुन्दर, स्वस्थ, बुद्धिपूर्ण, साहसी तथा प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करने वाली स्त्री के साथ होता है। यह जातक उत्तरदायित्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करने वाला तथा अपने से निम्न श्रेणी के लोगों के साथ रह कर उनसे लाभ उठाने वाला होता है। इसके गुणों तथा कला से प्रभावित होकर अनेक स्त्रियाँ इसकी ओर आकर्षित होती हैं। जीवन के ३५, ३८, ४०, ४५, ४८, ५२ तथा ५८ वें वर्ष विशेष महत्व-पूर्ण एवं उन्नति दायक सिद्ध होते हैं। यह धार्मिक प्रवृत्ति का, ईश्वर भक्त तथा सुखी जीवन बिताता हुआ लगभग ८० वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

३४४४ सं० भु० कु० २०

(१२६७) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य ऊँचे कद का, पुष्ट शरीर का, सुन्दर तथा गुणवान होता है। यह ज्ञान-विज्ञान में रुचिवान, अनेक कलाओं का ज्ञाता तथा नेतृत्व के गुणों से सम्पन्न होता है। यह अपने चारों ओर के वातावरण को अपने अनुकूल बना लेने में सक्षम तथा अपने पुरुषार्थ, प्रयत्न और साहस से उच्चपद पर जा पहुँचता है। ५५ वर्ष की आयु तक यह उच्चतम सम्मान एवं पद पाने में सफल हो जाता है। इसका विवाह लगभग २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूला मिलती है, अतः दाम्पत्य सुख उत्तम रहता है। सन्तान-सुख अच्छा नहीं रहता है। इसके जीवन के ३५, ३८, ४२, ४७ एवं ५५वें वर्ष बहुत पूर्ण सिद्ध होते हैं। इसके पास धन का अभाव कभी नहीं रहता। यह आजीवन वैभव एवं ऐश्वर्य सम्पन्न बना रहता है। घर में तथा बाहर मान-प्रतिष्ठा भी खूब प्राप्त होती है। यह लगभग ८५ वर्ष की आयु में भरपूर जीवन छोड़कर परलोक को प्रस्थान करता है।

(१२६८) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर स्वरूपवान, आकर्षक, सब को प्रभावित करने वाला, धार्मिक विचारों का, सुशील, ज्ञानी, लोक-कल्याण में कुशल तथा सर्वप्रिय होता है। लक्ष्मी इसके आगे-पीछे घूमती रहती है। यह विभिन्न प्रकार के भोगों से सम्पन्न, सुखी तथा ऐश्वर्यशाली बना रहता है। यह कलाओं का जानकार होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला, प्रभावशालिनी, कुल के सम्मान को बढ़ाने वाली तथा मान-मर्यादा में राजरानियों जैसी होती है। यह जातक किसी उच्चपद को सुशोभित करता है। धार्मिक तथा दार्शनिक विषयों में इसे विशेष रुचि रहती है। कभी-कभी यह विरक्तों जैसा व्यवहार भी करता है। माता का अल्प सुख प्राप्त होता है। सन्तान-पक्ष की ओर से बहुत चिन्ताएँ रहती हैं। स्वयं का शारीरिक स्वास्थ्य प्रायः उत्तम बना रहता है। पूर्णायु ८० से ८५ वर्ष की होती है।

(११६९)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी ऊँचे कद वाला, उन्नत ललाट, दमकता हुआ मुखमण्डल, आकर्षक व्यक्तित्व का धनी, आनन्दमुद्रा होता है। यह अपनी सरलता, सहजता, पाण्डित्य, ज्ञान तथा ऐश्वर्यपूर्ण रहन-सहन से लोगों में प्रतिष्ठित स्थान बना लेता है। यह सद्गुणी, विद्वान् तथा बुद्धिमान् होता है एवं अपने उदार-स्वभाव के कारण अत्यधिक खर्चीला भी होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दर, वाक्पटु, अपने पति के प्रभाव के दर्प से पूर्ण, परन्तु संकुचित स्वभाव की होती है। अधिक खर्चीला होने के कारण कभी-कभी इसे आर्थिक-कष्ट भी उठाना पड़ता है। इसका सौभाग्य सूर्य सदैव प्रकाशित रहता है, अतः आर्थिक-संकट अधिक देर तक नहीं टिक पाता। इसे ललित-वस्तुओं द्वारा बहुत लाभ होता है। रत्न एवं धातु सम्बन्धी कार्य विशेष लाभप्रद रहते हैं। सन्तान-सुख सामान्य रहता है। पूर्णायु लगभग ८०-८२ वर्ष की होती है।

(११७०)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, लम्बे कद का, स्वस्थ शरीर वाला एवं सर्वप्रिय होता है। इसका व्यक्तित्व प्रभावशाली होता है। यह अनेक कलाओं का ज्ञाता तथा हर प्रकार के वातावरण से स्वयं का तादात्म्य स्थापित करने वाला होता है। धन खर्च करने में यह कृपण होता है। इसका सम्पर्क उच्च श्रेणी तथा निम्न श्रेणी - दोनों वर्गों के लोगों से होता है। इसे धन का प्रचुर लाभ होता है। विवाह २४ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा वाचाल होती है। वह अपने पति को सुखी रखने का प्रयत्न करते हुए भी सुखी नहीं रख पाती। राजनीतिक-सेवा में लोकप्रिय होकर यह जातक ४०-४५ वर्ष की आयु तक उच्च स्थिति प्राप्त कर लेता है। जीवन के ४८, ५२, ५६, ६० तथा ६१वें वर्ष बहुत लाभ एवं सुखदायक रहते हैं। कभी-कभी वायु से पीड़ित रह सकते हैं। पूर्णायु ७८ वर्ष की होती है।

मु० सं० कु० २०

(१२८१)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वरूपवान, स्वस्थ तथा बुद्धिमान होता है। इसे जीवनारंभ में ही अनेक ऊँची-नीची परिस्थितियों से मुकाबिला करना पड़ता है। माता-पिता का पूर्ण सुख रहते हुए भी उनसे सम्बन्धों में कड़वाहट बनी रहती है। बड़े अथवा छोटे भाई-बहिनों की ओर से भी सुख नहीं मिलता। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, सफल गृहिणी, मधुरभाषिणी, व्यवहार-कुशल तथा कुछ तेज मिजाज की होती है। जातक राजकीय-सेवा में रहकर धन तथा यश कमाता है। ३२ से ३५ वर्ष की आयु में इसे धन का विशेष लाभ होता है। तत्पश्चात ४४ वें वर्ष भी लाभप्रद सिद्ध होती है। यह निम्न श्रेणी के लोगों के साथ रहता है तथा पर स्त्रियों के प्रति भी विशेष रूप से आकर्षित होता है। यह आमोद-प्रमोद प्रिय तथा सुखी जीवन बिताने वाला होता है। पुत्र पुत्री तथा आज्ञाकारी होते हैं। पूर्णायु ८० वर्ष से अधिक होती है।

(१२८२)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति लम्बे, पतले-दुबले परन्तु शक्तिशाली शरीर का, जंगी प्रकृतिवाला, अपने पौरुष पर विश्वास रखने वाला तथा भाग्य एवं ईश्वर की उपेक्षा करने वाला होता है। यह अपने पराक्रम से ही उन्नति करता है। २५ वर्ष की आयु में इसका विवाह सुन्दरी तथा गुणवती स्त्री के साथ होता है। पत्नी मितव्ययी तथा व्यवहार-कुशल होते हुए भी क्षुद्र विचारों की होती है। यह जातक आमोद-प्रमोद की वस्तुओं एवं जमीन, मकान आदि के क्रय-विक्रय से पर्याप्त लाभ उठाता है। 30 वर्ष की आयु के बाद इसके भाग्य की निरन्तर उन्नति होती चली जाती है। इसे आजीवन आर्थिक कष्ट नहीं होता। यह किसी उच्च पदीय सेवा-कार्य द्वारा भी धनोपार्जन कर सकता है। पुत्र-पुत्रियों से सुख मिलता है। ४६, ५२ तथा ५८ वें वर्ष कष्टप्रद रहते हैं। यह ८८ वर्ष की आयु तक सुखी-जीवन व्यतीत करता हुआ परलोकवासी होता है।

(१२६३)- इस जन्म-कुण्डली वाला मनुष्य दुबले-पतले लम्बे शरीर का, कुछ श्यामवर्ण, कठोर स्वभाव का, कटु वाणी बोलने वाला, तथापि अपने व्यक्तित्व से सब लोगों को प्रभावित करने वाला होता है। इसकी आमदनी के साधन परदेश में बनते हैं। शिक्षा यथेष्ट प्राप्त होती है। लगभग २०-२१ वर्ष की आयु में इसका विवाह हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा सौभाग्यशाली होती है। इसके पुत्र नाजायज करते हैं, अतः कठिनाई से कोई सम्बन्धी आय तो वह इससे शत्रुभाव रखता है। इसका भाग्योदय २६ वर्ष की आयु में परदेश में होता है और वहीं इसे सुख भी प्राप्त होता है। परदेश में रह कर सेवा-कार्य करते हुए यह पर्याप्त धन अर्जित करता है। लगभग ४१ वर्ष की आयु में यह किसी दीर्घकालीन कठिन रोग का शिकार बनता है तथा बाद में स्वस्थ हो जाता है। इसे चिकित्सा शास्त्र में रुचि होती है। पूर्णायु लगभग ७५-७६ वर्ष की होती है।

(१२६४)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी हृष्ट-पुष्ट शरीर का, लम्बा, गौर वर्ण, स्वभाव से सामान्यतः रूखा दिखाई देने वाला परन्तु शील से कुछ उदार एवं अपने स्वास्थ्य के प्रति सदैव सजग बना रहने वाला होता है। यह जिद्दी होने के कारण किसी की बात नहीं मानता। अपने छोटे से स्वार्थ की सिद्धि के लिए यह दूसरों को बड़ी हानि पहुंचाने में भी संकोच नहीं करता। इसके पास भावुकता के लिए कोई स्थान नहीं होता। इसका विवाह २७-२८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर होती है तथा उसके प्रति इसका व्यवहार भी मधुर रहता है। विमाता योग भी सम्भव है। इसका भाग्योदय लगभग ४६ वर्ष की आयु में होता है। यह परदेश में रह कर किसी की सेवा करता तथा उसका पूर्ण विश्वास पात्र बनकर पर्याप्त लाभ उठाता है। यह अत्यन्त साहसी होता है तथा ६० वर्ष की आयु तक पर्याप्त धनार्जन करता रहता है। पुत्र से असन्तुष्ट रहता है। पूर्णायु लगभग ८० वर्ष होती है।

(११२७५) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, चतुर, सत्यवादी, राजमान्य तथा अनेक कलाओं एवं लक्ष्मी कार्यों में कुशल होता है। इसके अनेक मित्रों से सम्बन्ध रहते हैं। यह धनी, मानी, पंडित, उच्चपदासीन, यशी, अल्पव्ययी एवं साहसी होता है। इसकी कलाकारिता सर्वत्र प्रशंसनीय होती है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुलक्षणा, सुयोग्य तथा मनस्विनी होती है। इसका भाग्योदय भी स्त्री के द्वारा ही होता है। २७ वर्ष की आयु से जीवनान्त तक यह अर्थाभाव का शिकार नहीं बनता। अलबत्ता ४६ तथा ५५ वर्ष की आयु में इसे थोड़ा सा आर्थिक कष्ट अवश्य होता है। इसे शत्रुओं द्वारा भी संकटों का शिकार बनना पड़ता है, तथापि यह सभी कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर लेता है। इसके जीवन के २७, ३०, ३२, ३६, ४२, ४७, ५१, ५६ तथा ६० वें वर्ष विशेष लाभप्रद रहते हैं। यह ८०-८२ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(११२७६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, बुद्धिमान, कार्यकुशल, कलाओं का ज्ञाता, चतुर, उदार हृदय का तथा क्षमाशील होता है। यह प्रत्येक कार्य को युक्ति पूर्वक करता और अपनी चतुराई से उसमें सफलता पाता है। यह पंडित, ज्ञानी, उपदेशक, राज्य से सम्मान पानेवाला, राजकीय-सेवा में किसी उच्च पद पाने वाला तथा अपनी स्त्री अथवा पार्टनर के सहारे उन्नति करने वाला होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है। भाग्योदय २७ वर्ष की आयु से होने लगता है। चरम उत्कर्ष ४७ वर्ष की आयु में होता है तथा ६८ वर्ष की आयु तक निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। उच्च अधिकारी एवं राज्य की इस पर कृपा बनी रहती है। जीवन के ३०, ३५, ३८, ४०, ४५, ५२ तथा ५८ वें वर्ष विशेष लाभप्रद होते हैं। सम्पूर्ण जीवन सुख से बीतता है तथा पूर्णायु ७२ से ७४ अथवा ८२ से ८४ वर्ष की होती है।

(१२७७)- इस जन्माङ्ग चक्र में उत्पन्न जातक सुन्दर, स्वस्थ, मधुर भाषी, चंचल स्वभाव का, एकपक्षीय विचार धारा से प्रभावित होनेवाला, दृढ़निश्चयी, कर्त्तव्यपरायण, सहृदय, धर्मात्मा तथा परोपकारी होता है। यह स्व-पराक्रम से धनोपार्जन करनेवाला तथा अपने गुणों के कारण ही मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करनेवाला होता है। इसका विवाह 23-24 वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है, तथापि विवाह के समय से ही विभिन्न प्रकार के संकटों का प्रारम्भ भी हो जाता है- जिनके कारण कई वर्षों तक दुःख भोगता है। पिता का वियोग भी इसी समय होता है। ज्येष्ठ पुत्र का सुख प्राप्त नहीं होता। कन्याएँ होती हैं, परन्तु वे भी अल्पजीवी होती हैं। इसकी आजीविका राजकीय से चलती है। जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव आते हैं। सद्गुणी होते हुए भी इसका अधिकांश जीवन दुःख भोगते हुए ही व्यतीत होता है। लगभग ७२ वर्ष की आयु में लम्बी बीमारी भोगने के बाद इसकी मृत्यु होती है।

(१२७८)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, कुछ स्थूल शरीर का, गोल मुँह तथा बड़ी-बड़ी आँखों वाला, मधुरभाषी, सहृदय तथा आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होता है। इसका सम्पर्क प्रायः देश-परदेश वासियों से रहता है। इसकी पत्नी भी पूर्व-दक्षिण दिशा के किसी दूरवर्ती स्थान की निवासिनी होती है। इसका विवाह २६-२७ वर्ष की आयु में होता है। इसकी पत्नी वाक्पटु, सुन्दरी एवं व्यवहार-कुशला होती है। जातक की आमदनी का मुख्य स्रोत राजकीय सेवा होता है, तथापि अन्य साधनों से भी इसे धन का लाभ होता रहता है। ४० वर्ष की आयु के बाद इसे धन का विशेष लाभ होता है। पत्नी के प्रति यह विशेष चिन्तित रहता है तथा उसके कारण दुःख भी भोगता है। जीवन के २८, ३२, ३७, ४२, ४६, ४८, ५२, ५६ तथा ६० वे वर्ष विशेष लाभप्रद रहते हैं। परमायु लगभग ७२ वर्ष की होती है।

भु० सं० १९२२

कु० र०

(१२७९)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, गुणवान, विद्वान तथा लोकप्रिय होता है। इसके चारों ओर गुणीजनों तथा पण्डितों का जमघट लगा रहता है। धनी-मानी तथा बुद्धिमान लोग इसके सम्पर्क में आने के लिए लालायित बने रहते हैं। यह जातक कवि, उपदेशक तथा निर्देशनकार्य द्वारा आजीविकोपार्जन करने वाला होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दर, सौन्दर्याभिमानिनी, श्रृंगारप्रिया एवं आकर्षक व्यक्तित्व की स्वामिनी होती है। विवाहोपरान्त इसे अनेक प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ता है। गर्भपात एवं सन्तान नष्ट होने के योग बनते हैं। इसका भाग्योदय लगभग ३० वर्ष की आयु में होता है। परदेश-गमन से इसे धन का लाभ होता है। भोग-विलास की ओर इसकी विशेष प्रवृत्ति रहती है। आर्थिक-स्थिति सामान्यतः अच्छी रहती है। सामान्य सुखी-जीवन बिताता हुआ यह लगभग ६० वर्ष तक जीवित रहता है।

(१२८०)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, तेजस्वी, आदेशात्मक तेज वाणी वाला तथा अपने व्यक्तित्व से ~~सब~~ लोगों को प्रभावित करने वाला होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में सुन्दरी कन्या के साथ होता है। भाग्योदय विवाह के बाद आरम्भ हो जाता है। ३५ वर्ष की आयु तक यह अपने भवन का निर्माण भी कर लेता है। यह अनेक प्रकार से अपने भावों को प्रकट करने में निपुण होता है तथा अपने द्वारा कही गई झूठी बात पर भी दूसरों को विश्वास कराने में समर्थ होता है। इसे राजकीय सेवा, सम्पत्ति आदि के किराये से तथा धन की ब्याज से आर्थिक लाभ होता है। ४४ वर्ष की आयु में इसे थोड़ा सा कष्ट होता है। पुत्रियों की अपेक्षा पुत्रों की संख्या कम होती है। केवल एक पुत्र होना भी सम्भव है। लगभग ६० वर्ष की आयु में इसे अत्यधिक निराशा का सामना करना पड़ता है। इसकी मृत्यु ७२ वर्ष के लगभग होती है।

भू० सं० ११२३

कु० २०

(१२८१) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वरूपवान, प्रभावशाली, तीव्र मानसिक शक्तिसम्पन्न तथा स्त्रियों के लिए अत्यन्त आकर्षण की वस्तु होता है। इसकी प्रकृति भोग-विलास तथा आमोद-प्रमोद की रहती है। माता का अल्प सुख प्राप्त होता है तथा भाई का सुख भी कम ही रहता है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनस्विनी होती है। वह पति की रुचिका तथा मनोनुकूला होती है। तथापि जातक अन्य स्त्रियों से भी सम्बन्ध रखता है। यह राजकीय-सेवा में रहकर धनोपार्जन करता है तथा निम्नकोटि की सेवा में रहते हुए भी अपने साथियों की तुलना में श्रेष्ठ स्थिति प्राप्त करता है। इसे पत्नी से सुख मिलता है। सन्तान-सुख भी श्रेष्ठ रहता है। इसका भाग्योदय पत्नी के माध्यम से होता है। सेवा-कार्य के अतिरिक्त अन्य कार्यों से भी यह धन तथा यश का उपार्जन करता है। ५८ वर्ष की आयु में अरिष्ट होता है। पूर्णायु ७५ वर्ष होती है।

(१२८२) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सामान्य सुन्दर, स्वस्थ, भगवद्भक्त तथा विभिन्न कलाओं का ज्ञाता होता है। इसे माता तथा भाई का अल्प-सुख मिलता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में सुन्दरी कन्या के साथ होता है। विवाहोपरान्त इसे कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। फिर स्वतन्त्र होकर किसी प्रतिष्ठित कार्य के माध्यम से अपने परिश्रम द्वारा धनोपार्जन करता हुआ उच्चस्तरीय जीवन-निर्वाह करता है। पत्नी तथा सन्तानों से सुख मिलता है। परोपकारी जनों का हित करता है तथा परदेश-यात्रा एवं परदेशवास द्वारा विपुल धन कमाने वाला होता है। भगवद्भक्ति में इसका मन अधिक लगता है। लगभग ५८ वर्ष की आयु में भाग्य की विशेष अभिवृद्धि होती है। वृद्धावस्था में तीर्थयात्रा करता है तथा दान-पुण्य भी करता है। सामान्यतः सुखी जीवन बिताते हुए ७६ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१२८३)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, विद्वान, यशस्वी, प्रभावशाली तथा श्रेष्ठ आचरणों वाला होता है। यह अनेक प्रकार के भोगों से युक्त ऐश्वर्यशाली जीवन बिताने वाला, काव्य-साहित्य का पंडित, लोक-विख्यात तथा लोकप्रिय होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में सुन्दरी, गुणवती तथा विद्वान स्त्री के साथ होता है, जो कार्य-कुशला, शिल्प कला में प्रवीण तथा परिजनों को प्रसन्नता देने वाली होती है। यह जातक अपने साहस तथा परिश्रम से उन्नति करता है तथा ४० वर्ष की आयु तक विपुल धन तथा प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेता है। जीवन के ४४, ४९ तथा ५६ वें वर्ष अपना महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। यह सुन्दर सन्तानों का पिता तथा पुत्रों द्वारा सुख पाने वाला होता है। पति-पत्नी दोनों ही धर्मी तथा परोपकारी होते हैं। गुरुजनों का आदर करता है। प्रिय लगता है। ६८ वर्ष की आयु में रोग होता है तथा ३ वर्ष तक बीमार रह कर परलोक-गमन करता है।

(१२८४)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, चालाक, कलाप्रिय, मित्रों में रुचि लेने वाला व्यवहार-कुशल, परन्तु अर्थ की चिन्ताओं से ग्रस्त रहने वाला होता है। यह पराक्रमी तथा उत्साही भी होता है। इसका विवाह २३ से २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, तेजस्विनी, परन्तु हठी स्वभाव की होती है। विवाहोपरान्त इसे परदेश-गमन करना पड़ता है, तथा कुछ समय तक घर से बाहर भी रहता है। इसका आजीविका अपने ही स्थान में होता है। यह व्यवसाय अथवा राजकीय-सेवा-दोनों से धन-लाभ करता है। इसके जीवन के ४०, ४३, ४६, ४९, ५८ तथा ६१ वें वर्ष बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। इन वर्षों में महत्वपूर्ण व्यक्तियों से भेंट तथा धन-सम्मान की विशेष उपलब्धि होती है। इसका प्रताप इतना बढ़ जाता है कि कुटुम्बी जन इससे दबते तथा ईर्ष्या करते हैं। यह विविध प्रकार के सुखों को भोगता हुआ ८० वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

भु० सं० १२२५

कु० २०

(१२८५)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, आकर्षक मुखमण्डल वाला, बलिष्ठ तथा पुरुषार्थी होता है। इसका ललाट उन्नत तथा नाक लम्बे होते हैं। यह स्वभाव से क्रोधी तथा कम लोगों से मिलता रखने वाला होता है। यह अपने काम में चुपचाप लगा रहता है। इसे जुआ खेलने का शौक भी होता है। भोग-विलास के प्रति भी इसकी विशेष आसक्ति रहती है। इतना सब होते हुए भी यह धर्म तथा गुरुजनों के प्रति विशेष आज्ञाकार होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी अत्यन्त सुन्दर, प्रभावशालिनी तथा पति को वश में रखने वाली होती है। यह जातक अपने पिता से अत्यधिक स्नेह रखता है, परन्तु चाचा से शत्रुता रखता है। यह अपने पिता के नाम से प्रसिद्ध भी होता है। अनेक पुत्र-पुत्रियों का सुख प्राप्त होता है तथा अनेक मार्गों से धन कमाता है। इसे वायु तथा रोग का कभी भय नहीं होता। ४२, ४८ तथा ५० वें वर्ष विशेष लाभप्रद रहते हैं। पूर्णायु ७८ वर्ष की होती है।

(१२८६)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, कला-कौशल एवं साहित्य का प्रेमी तथा प्रत्येक सुन्दर वस्तु से स्नेह करने वाला होता है। इसे पराई-सेवा करके जीविकोपार्जन करना पड़ता है तथा परदेश में ही इसका भाग्योदय होता है। यह अपने गुण, मनोविनोद एवं योग्यता के कारण सर्वत्र सम्मान प्राप्त करता है एवं सबको अपना मित्र बना लेता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला, चंचल एवं सुख देने वाली होती है। पति-पत्नी दोनों ही भाग्यशाली होते हैं, अतः आर्थिक-स्थिति उत्तम बनी रहती है। इसे अनेक व्यक्तियों तथा अनेक स्थानों से लाभ होता है। ४० वर्ष की आयु तक यह अनेक पुत्रों का पिता बन जाता है। जीवन के २७, २९, ३२, ३६, ४१, ४६, ४९, ५२, ५६ तथा ६० वें वर्ष विशेष लाभप्रद रहते हैं। वृद्धावस्था में इसे श्वास रोग हो जाता है। पूर्णायु ८० वर्ष की होती है।

भृ० सं० ३८८४

कु० २०

(१२८७)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, गुणवान्, बुद्धिमान, अनेक कलाओं का ज्ञाता, चतुर, मधुर तथा प्रभावशाली वाणी बोलने वाला, अत्यन्त आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न तथा लोकमान्य होता है। इसका सम्पूर्ण जीवन अत्यधिक सुख में बीतता है। यह धन-धान्य रत्न, भोग-विलास, भूमि, भवन, वाहन, सेवकादि के सुख से सम्पन्न बना रहता है। इसका विवाह लगभग २४ वर्ष की आयु में सुन्दरी, सुलक्षणा तथा पूर्ण अनुरागवती कन्या के साथ होता है। २५ वर्ष की आयु से इसका भाग्योदय प्रारम्भ होता है। पुत्र-पुत्री, वैभव आदि की निरन्तर वृद्धि होती रहती है। दाम्पत्य-सुख तथा संतान-सुख उत्तम रहता है। यह उच्च पदों पर प्रतिष्ठित होकर राजमान्य तथा लोकमान्य होता है। इसके जीवन के २५, २८, ३२, ३८, ४२, ४७, ५१, ५६, ५८ तथा ६२ वें वर्ष विशेष लाभप्रद-सिद्ध होते हैं। यह लगभग ८० वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१२८८)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, सुशील, चमत्कारी, ज्ञानी तथा अनेक विद्याओं में ज्ञान विहार करने वाला होता है। यह अपने परिश्रम, पराक्रम तथा व्यवसाय से धन प्राप्त करते हुए अपनी सम्पत्ति की अनेक प्रकार से अभिवृद्धि करता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा विदुषी होती है। दाम्पत्य एवं सन्तान-सुख यथेष्ट मात्रा में उपलब्ध होते हैं, तथापि सन्तान की ओर से चिन्ता एवं व्यग्रता बनी रहती है। इसका भाग्योदय २५ वर्ष की आयु से पहले ही हो जाता है तथा ३० वर्ष की आयु तक यह अत्यधिक प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेता है। इसे राज्य से सम्मान प्राप्त होता है। देश-विदेश की यात्राओं के अनेक अवसर मिलते हैं तथा अनेक बड़े प्रतिष्ठानों से इसका सम्पर्क बना रहता है। यह अनेक मार्गों से धन तथा यश प्राप्त करता है एवं आजीवन सुखी रहते हुए लगभग ८६ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१२८९)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वरूपवान्, स्वस्थ तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह राजसी-स्वभाव का, ज्ञानी, विज्ञानी, विद्वान्, मनोहर कान्तिवान, कला एवं साहित्य का प्रेमी तथा सृजन कर्त्ता होता है। यह अत्युच्च श्रेणी तथा निम्न श्रेणी - दोनों वर्गों के लोगों से सम्बन्ध रखता है तथा सभी से आदर-सम्मान पाता है। इसका विवाह उच्च कुल की कन्या के साथ २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है। दाम्पत्य तथा सन्तान सुख उत्तम प्राप्त होता है। यह राजकीय-सेवा में रहकर उच्च पद को प्राप्त है तथा ४० वर्ष की आयु में सफलता के सर्वोच्च शिखर पर जा पहुँचता है। पुत्र-पुत्रियों की ओर से यह सुखी रहता है। इसके जीवन के २५, २८, ३१, ३६, ४०, ४३, ४७, ५०, ५४, ५८, ६१ तथा ६५वें वर्ष विशेष लाभप्रद रहते हैं। २९, ३२, ३८, ५२, ५६ तथा ६६वें वर्ष में शारीरिक-कष्ट सम्भव है। पूर्णायु ९० वर्ष होती है।

(१२९०)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ शरीर का, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, विद्या-बुद्धि में श्रेष्ठ तथा उच्च शिक्षा सम्पन्न होता है। यह साहित्य, काव्य, तकनीकी-ज्ञान तथा चिकित्सा-विज्ञान में भी रुचि रखने वाला होता है। यह किसी उच्च राजकीय-पद पर प्रतिष्ठित होकर धन तथा यश का उपार्जन करता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी विदुषी, सुन्दरी तथा मनोनुकूला होती है। तथापि इसका आकर्षण अन्य स्त्रियों के प्रति भी रहता है। यह सुन्दर पुत्र-पुत्रियों से सम्पन्न होता है तथा २४ वर्ष की आयु से उन्नति करना आरम्भ करके, ६० वर्ष की आयु तक निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। जीवन के २४, २६, २८, ३२, ३७, ४१, ४८, ५२, ५५, ६० तथा ६२वें वर्ष विशेष उन्नतिकारक रहते हैं। यह सब प्रकार से सुखी एवं सम्पन्न जीवन बिताता हुआ लगभग ९० वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

भू० सं० ४४५८

कु० २०

(१२६१) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, दृढ़ शरीर वाला, चंचल चित्त का एवं मनमौजी होता है। यह स्वर्ण आदि धातुओं का पारखी, धर्म-कर्म का पालन करने वाला, कुल-परम्परा का निर्वाह करने वाला, व्यवसायी तथा लोक प्रसिद्ध होता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दर, ऊँच-नीच समझने वाली, कार्य-कुशल तथा सुखदायक होती है। वह अपनी सूझ-बूझ से गृहस्थी का सफल संचालन करती हुई परिवार में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त कर लेती है। यह जातक मनस्वी होने के साथ ही अस्थिर-चित्त भी होता है, अतः इसके बहुत से काम बिगड़ भी जाया करते हैं। यह अपने जीवन के २५वें वर्ष में पैतृक-व्यवसाय से भिन्न कोई नया कार्य आरम्भ करता है तथा ३५ वर्ष की आयु तक उसके द्वारा पर्याप्त धनोपार्जन कर लेता है। देश-परदेश में सम्मान पाता है। सन्तान हेतु कष्ट पाता है, परन्तु सन्तान कार्यदक्ष होती है। पूर्णायु ८५ वर्ष होती है।

(१२६२) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, बुद्धिमान, प्रत्येक कार्य को कुशलता से सम्पन्न करने वाला, कुछ दिनों तक पैतृक-व्यवसाय में संलग्न रहने के बाद राजकीय-सेवा को अपनाने वाला, पिता के द्वारा धन प्राप्त करने वाला तथा पारिवारिक-सम्पत्ति का उपभोक्ता होता है। यह कुटुम्ब के भरण-पोषण सम्बन्धी दायित्वों का कुशलता पूर्वक निर्वाह करता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दर, गृहस्थी के दायित्वों का पालन करने वाली, पति-परायणा परन्तु अल्प-सुखी होती है। २८ से ३५ वर्ष तक की आयु में यह जातक विविध प्रकार के संकटों से ग्रस्त रहता है। इस बीच शत्रु-पीड़ा, सम्मान-हानि तथा दूषित-आचरण आदि की घटनाएं घटती हैं। बाद के दिवस सुखद जाते हैं तथा भूमि, भवन, वाहन आदि सब प्रकार के सुख तथा सम्मान की उपलब्धि होती है। ७८ वर्ष की आयु में बच जाने पर ९२ वर्ष की आयु प्राप्त होती है।

(१२९६३)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, परन्तु अधिक चिन्ता एवं हर समय व्यग्र तथा उद्विग्न बना रहने वाला होता है। यह शत्रुओं से भयभीत रहता है तथा इसके व्यवहार के कारण ही शत्रुओं की संख्या बढ़ जाती है। यह क्षुद्र आचरण का तथा निम्न कोटि की बातों पर विशेष ध्यान देने वाला होता है। इसे त्वचा-रोग भी होते रहते हैं। यह पैतृक-सम्पत्ति को प्राप्त करता है तथा पारिवारिक दायित्वों का पालन भी करता है। पैतृक-व्यवसाय द्वारा धनी भी होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है तथा भाग्योदय विवाहोपरान्त स्त्री के द्वारा ही होता है। फिर यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। विद्या-बुद्धि तथा वक्तृता के बल पर यह सर्वत्र सम्मान प्राप्त करता है। अधिक चतुराई के कारण कभी-कभी दुःख भी उठाता है। पत्नी सुन्दर तथा कार्य-कुशल होती है। २८, ३५, ३८ एवं ४५ वें वर्ष विशेष लाभप्रद रहते हैं। पूर्णायु ८४ वर्ष के लगभग होती है।

(१२९६४)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, कठोर स्वभाव का, सबको प्रिय न लगने वाला तथा अहंकारी होता है। तथापि यह सब लोगों से यही कहता रहता है कि मैं अत्यन्त निरभिमानी हूँ। इसे शीघ्र ही क्रोध आ जाता है और फिर शीघ्र ही शान्त भी हो जाता है। यह स्वयं ही दूसरों से द्वेष मानता है तथा अधिक-चिन्ता का होता है। यह अपने द्वेषभाव को प्रकट नहीं होने देता, इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। परन्तु पत्नी-सुख अधिक समय तक प्राप्त नहीं होता। इसके शत्रु अकारण ही उत्पन्न होते हैं और यह उनसे कष्ट भी पाता है। इसे कृषि-वाहन आदि के व्यवसाय द्वारा परदेश में रहकर विशेष लाभ होता है। कुछ समय तक सेवा कार्य करके भी आजीविकोपार्जन करता है। ४५ वर्ष की आयु के बाद इसका समय सामान्यतः अच्छा बीतता है तथा साधारणतः सुखी बना रहता है। पूर्णायु ८१ वर्ष के लगभग होती है।

भु० सं० १२३०

कु० २०

(१२६५)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ शरीर, कुछ लम्बे क़द का, इकहरे बदन का तथा अपनी ही धुन में मस्त रहने वाला होता है। यह प्रत्येक कार्य को खूब सोच-समझ कर तथा विलम्ब से करता है, परन्तु दूसरों का काम करने में शीघ्रता प्रदर्शित करता है। यह हृदय से उदार तथा स्वयं हानि उठाकर भी दूसरों को लाभ पहुँचाने वाला होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दर तथा मनोनुकूल मिलती है। विवाह के बाद ही भाग्योदय होता है। इसका उन्नति-पथ पर अग्रसर होना कुछ लोगों के लिए ईर्ष्या का विषय बनता है और वे अकारण ही इसके शत्रु बन जाते हैं; परन्तु यह अपनी विद्या-बुद्धि द्वारा सभी शत्रुओं को पराजित कर देता है। इसके पेट का भेद कोई नहीं जान पाता है। राजकीय सेवा से इसे विशेष लाभ होता है। बन्धु-द्वेष तथा माता से शीघ्र वियोग का कष्ट भी उठाना पड़ता है। ज्येष्ठ पुत्र से भी दुःख मिलता है। परमायु ७१ अथवा ७६ वर्ष की होती है।

(१२६६)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी स्वभावतः प्रशासनिक-क्षमता रखने वाला, अपने बन्धु-बान्धवों में प्रमुख, सुन्दर, गुणवान, साहसी तथा परिश्रमी होता है। यह काव्य, साहित्य, चित्रकला एवं विज्ञान के अध्ययन में रुचि रखने वाला तथा स्वयं की कमाई से धनी होने वाला होता है। यह राज्याश्रय अथवा किसी बड़े प्रतिष्ठान से सम्बद्ध रहकर आजीविकोपार्जन करता है। इसका विवाह २४ २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, अच्छे विचारों वाली तथा मनस्विनी होती है। यह अच्छे पुत्रों का सुख प्राप्त करता है। माता का सुख भाग्य में नहीं होता, परन्तु भाई-बन्धुओं से सम्मानित होता है। ४३वें वर्ष में विशेष रूप से भाग्य-वृद्धि होती है। ६८वें वर्ष में भी आकस्मिक रूप से बहुत लाभ होता है। यह महाधनी होकर ऐश्वर्यशाली जीवन बिताता है तथा सर्वत्र यश-सम्मान प्राप्त करता हुआ लगभग ७८ वर्ष की आयु तक जीवित रहता है।

भु० सं० ११३२

(१२६७) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न जातक सुन्दर शरीर, मोहक व्यक्तित्व वाला, स्वस्थ तथा सबको प्रिय होता है। यह परोपकारी, उदार-हृदय, बुद्धिमान, विद्वान तथा लेखन-कार्य एवं शिल्प आदि से विपुल धनोपार्जन करने वाला होता है। यह सम्पन्न परिवार में जन्म लेता है, अतः बाल्यावस्था से ही सुखी-जीवन बिताता है तथा आजीवन सुखी एवं धनी बना रहता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में सुन्दरी, गुणवती तथा सच्चरित्री कन्या के साथ होता है। वह सुन्दर नैनों वाली, मधुरभाषिणी तथा जातक को उचित सलाह देकर उसका कल्याण करने वाली होती है। सन्तान-सुख भी उत्तम रहता है, फिर भी यह जातक परस्त्रियों की ओर आकर्षित होता है तथा उनके धन का उपभोग भी करता है। इसे माता से प्यार मिलता है, बन्धु-बान्धवों की ओर से सुख नहीं मिलता। यह स्वभाव से कृपण भी होता है तथा इसे अपना धन खर्च करने में पीड़ा होती है। इसकी पूर्णायु ७१ अथवा ८१ वर्ष होती है।

(१२६८) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, आकर्षक, गुणवान, धनवान, साहित्य-निर्माता, शिल्पज्ञ तथा बाल्यावस्था से ही धन की वृद्धि करने वाला होता है। इसे ऐसे स्रोतों से धन प्राप्त होता है, जिनके विषय में कोई कल्पना तक नहीं कर सकता। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, मधुरभाषिणी, प्रसन्नतादायक, सेवाभावी तथा उचित सलाह देने वाली होती है। स्त्री के नाम से कोई काम करने पर इसे विशेष लाभ होता है। इसका भाग्योदय विवाहोप-रान्त आरम्भ होता है तथा जीवन के ३८, ४१, ४६ एवं ५६ वें वर्ष अधिक उत्तम सिद्ध होते हैं। ३२ वर्ष की आयु में अधिक समय के लिए बीमार पड़ता है, तदुपरान्त स्वस्थ होकर बहुत धन कमाता है। इसे राज्य द्वारा भी धन-सम्मान की उपलब्धि होती है। इसकी अधिकांश कामनाएं पूरी होती हैं। आयु ६८ अथवा ७८ वर्ष की होती है। कुछ उत्कट इच्छाएं लालायित होते हुए भी पूरी नहीं हो पातीं।

कु० २०

भु० सं० ११३२

कु० २०

(१२९९) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, कोमल भावनाओं तथा दुहरे व्यक्तित्व वाला होता है। धन-धान्य, स्त्री-पुत्रादि के सब सुखों के रहते हुए भी इसे सन्तोष नहीं होता। यह सदैव असन्तुष्ट बना रहता है, परन्तु प्रयत्न करने पर भी इच्छित वस्तु को कठिनाई से ही प्राप्त कर पाता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी अत्यन्त सुन्दर, श्रेष्ठ स्वभाव की, सद्गुणी, कार्य-कुशल, घर-गृहस्थी को सँभालने वाली तथा सहनशील मिलती है, परन्तु इसके भाग्य में स्त्री का पूर्ण सुख नहीं होता, उसके लिए यह सदैव चिन्तित बना रहता है। ३८वाँ वर्ष इसके लिए विशेष शुभ दायक होता है, किन्तु ४४ तथा ५३वें वर्ष भी अच्छे जाते हैं। कई गर्भ गिरने के बाद इसे एक या दो पुत्रों की प्राप्ति होती है, जो सद्गुणी होते हैं। इस जातक पर दूसरों का बहुत प्रभाव पड़ता है और यह मूर्खता की सीमा तक उनकी बात मान लेता है। इसे पूर्णायु ८० वर्ष की प्राप्त होती है।

(१३००) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, व्यवहार-कुशल तथा चतुर होता है। इसके पास पैतृक-धन के अतिरिक्त स्वोपार्जित धन भी प्रचुर परिमाण में होता है। परिश्रम द्वारा यह अपनी आमदनी में निरन्तर वृद्धि करता रहता है। इसे राजकीय-सेवा से भी लाभ होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु तक हो जाता है, परन्तु स्त्री के रुग्ण रहने के कारण इसे स्त्री-सुख नहीं मिलता। सन्तानें होनहार निकलती हैं और वे संख्या में कम होती हैं, साथ ही प्रयत्नपूर्वक ही जीवित रह पाती हैं। यह ४२ वर्ष की आयु में अपना मकान बनवा लेता है। राजकीय-सेवा में प्रवेश विवाहोपरान्त ही कर पाता है। ४२ वर्ष की आयु में इसका भाग्योदय होता है तथा ५० वर्ष की आयु तक वह चरमोत्कर्ष पर जा पहुँचता है। सामान्यतः सम्पूर्ण जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होता है। स्त्री तथा सन्तान कष्ट के अतिरिक्त अन्य कोई कष्ट नहीं होता। परमायु ८३-८४ वर्ष की होती है।

(२३०१)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति सामान्य सुन्दर, स्वस्थ, दुश्चिन्ताओं से घिरा रहने वाला तथा जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में कठिनाइयों का अनुभव करने वाला होता है। इसे कार्य-सिद्धि हेतु पग-पग पर संघर्ष करना पड़ता है। परन्तु अपने धैर्य तथा पराक्रम के बल पर यह निरन्तर आगे बढ़ता चला जाता है। यह अत्यन्त मनस्वी, बुद्धिमान तथा सत्यवादी होता है। इसका विवाह 22-23 वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, गुणवती तथा बुद्धिमती होती है। वह धर्मी, निष्कपट तथा जातक की प्रतिष्ठा को बढ़ाने वाली होती है, परन्तु जातक को ज्ञात-अज्ञात अनभिलषित कारणों से स्त्री-सुख का लाभ नहीं होता। वैसे यह अन्य अनेक स्त्रियों से भी प्रेम-सम्बन्ध रखता है। यह कभी-कभी मूर्खों जैसा व्यवहार भी करता है तथा कभी-कभी असामाजिक व्यक्तियों के फेरे में भी आ जाता है। लगभग 22 वर्ष की आयु से इसे सुख मिलता है। पूर्णायु 80 वर्ष तक हो सकती है।

(२३०२)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, सौभाग्यशाली तथा भूमि एवं भूमि से संबंधित वस्तुओं एवं कार्यों द्वारा धनोपार्जन करने वाला होता है। इसका भाग्योदय परदेश में होता है तथा 35 वर्ष की आयु तक यह विपुल सम्पत्ति अर्जित कर लेता है। इसका विवाह 27 वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी होती है। यह उसके सौन्दर्य से अभिभूत होकर विलासी बन जाता है तथा उसकी सलाह से ही प्रत्येक कार्य करता है। यह 40 वर्ष की आयु तक अपना सुन्दर मकान न बना लेता है। 42, 46 तथा 48 वें वर्ष में आकस्मिक रूप से चोट लगने की संभावना रहती है। यह कला, साहित्य तथा संगीत का प्रेमी होता है। बाल्यावस्था में इसे थोड़ा कष्ट अवश्य उठाना पड़ता है, परन्तु बाद में आजीवन सुख भोगता है। जीवन के 41, 45, 46, 53, 55, 58 तथा 61 वें वर्ष विशेष लाभप्रद रहते हैं। पूर्णायु लगभग 80 वर्ष की होती है।

भृ० सं० १२३४

कु० र०

(१३०३)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, चरित्रवान, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, मधुर मुस्कान तथा मीठी वाणी वाला, धनी, मानी तथा अपने गुणों के कारण सर्वत्र सम्माननीय होता है। यह अत्यन्त उदार, परोपकारी, चतुर तथा सर्वप्रिय होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशील तथा सन्तोषदायक होती है। यह प्रत्येक कार्य उसी की सम्मति से करता है। यह अत्यन्त पराक्रमी होता है तथा अपने पुरुषार्थ के बल पर नये-नये कामों को आरंभ करके उनमें सफलता पाता है। जीवन के ३३, ३६, ४२, ४८, ५४ तथा ५६ वें वर्ष बहुत सम्मान, धन तथा यश दिलाने वाले सिद्ध होते हैं। पत्नी से कभी-कभी किंचित मतभेद भी हो जाता है तथा पुत्र-पुत्रियों के लिए दुःखी भी रहता है। विद्या का योग अच्छा रहता है। माता, पिता, भाई, बहिन तथा पारिवारिक जनों से सम्बन्ध सामान्य रहते हैं। परमायु ७० वर्ष के लगभग होती है।

(१३०४)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, बलिष्ठ, नीतिवादी, धार्मिक, गुरुजनों का आदर करने वाला, कुछ-कुछ दार्शनिक-सा भी होता है। यह अपने पिता से पूर्ण स्नेह, सहयोग तथा उत्साह प्राप्त करता है। अपने पुत्रों से भी इसे आदर तथा प्रेम मिलता है और उनकी सहायता से इसे कार्य-व्यवसाय में लाभ भी होता है। इसका विवाह २० वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दर, विद्वान, सुशील तथा ऐश्वर्योपभोग करने वाली भाग्यशालिनी होती है। यह विवाहोपरान्त पुलिस अथवा सेना विभाग में काम करते हुए उच्चपद पर जा पहुँचता है। ३७ से ५६ वर्ष की आयु तक इसे किसी प्रकार का दुःख नहीं होता। यह चित्रपट क्षेत्र से अथवा किसी स्त्री की सहायता से भाग्योदय को प्राप्त होता है। यह घर तथा बाहर सर्वत्र मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करता है तथा सुखी जीवन बिताते हुए ७० वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

भृ० सं० ५३०२४

(१३०५) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, सुखी, सर्वप्रिय, ईश्वर-भक्त तथा स्व-पराक्रम से द्रव्योपार्जन करने वाला होता है। यह अपने कुल में विख्यात, कार्य-कुशल, सुवक्ता तथा सर्वत्र सम्मान पाने वाला होता है। इसे माता-पिता का पूर्ण सुख प्राप्त होता है। यह गुण, सौन्दर्य तथा विद्या-बुद्धि में अपने भाइयों में बढ़कर होता है। इसका विवाह २२ से २६ वर्ष की आयु में विदुषी तथा मनस्विनी कन्या के साथ होता है। विवाहोपरान्त ही इसका भाग्योदय होता है। यह नित्योपयोगी, सौन्दर्य-प्रसाधक तथा श्रृंगार से सम्बन्धित वस्तुओं के व्यवसाय से धनोपार्जन करता है। होटलों तथा क्लबों आदि से भी लाभ होता है। यह ४५ वर्ष की आयु में परदेश में रहते हुए अपनी अत्यधिक उन्नति कर लेता है। सब ओर इसका यश फैल जाता है। इसकी उन्नति में पत्नी का भी विशेष योगदान रहता है। इसके कार्यक्षेत्र में गरीब लोग भी आते हैं। इसे पुत्रों से सुख मिलता है तथा पूर्णायु ६० वर्ष हो सकती है।

(१३०६) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी दृढ़ तथा ठोस शरीर वाला, भौतिक-सुखों के प्रति विशेष रुचि रखने वाला एवं पुलिस अथवा सैनिक प्रतिष्ठान में कार्यरत रहते हुए सब की सुरक्षा करने में प्रयत्नशील होता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी मिलती है, तथापि अन्य स्त्रियों से भी यह बहुत लगाव रखता है तथा उनके मोह में पड़कर अपने आवश्यक कामों को भी बिगाड़ लेता है। इसका भाग्योदय ३२ वर्ष की आयु के बाद होता है। यह नीच लोगों की संगति में रहकर अपने मन में संतोष का अनुभव करता तथा उनसे लाभ भी उठाता है। इसे पुत्र-पुत्री, परिवार, धन-सम्पत्ति, भूमि, भवन, वाहन आदि का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है। यह जीवनभर सुखी, धन-सम्पन्न तथा राज्यमान्य बना रहता है। कुटुम्बियों से इसे मान-सम्मान प्राप्त होता है तथा बाहर भी आदर मिलता है। पूर्णायु ८२ वर्ष हो सकती है।

कु० र०

३३३२ सं. भु०

कु० २०

(१३०७)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर तथा हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला, स्वयं के पराक्रम से उन्नति, काव्य-कला-साहित्य का ज्ञाता, ज्ञानी; माता-पिता तथा भाइयों से सुख पाने वाला; बहिनों तथा अन्य परिजनों के स्नेह से परिपूर्ण, जन्म से ही सुखी, भाग्यशाली, धार्मिक तथा स्त्री के प्रति विशेष रूप से अनुरक्त होता है। इसका विवाह इसकी स्वयं की इच्छानुसार २४-२५ वर्ष की आयु में मनोनुकूल कन्या के साथ होता है। यह पत्नी से सुख प्राप्त करता है तथा उसके प्रेम से अभिभूत बना रहता है। इसका भाग्य अन्य स्थानों से सम्बन्ध रखने वाले व्यक्तियों अथवा प्रतिष्ठानों के माध्यम से परदेश में चमकता है। इसे राजकीय-सेवा का अवसर मिलना भी सम्भव है। ३२ से ५६ वर्ष की आयु तक यह पर्याप्त धनोपार्जन कर लेता है। इसे सर्वत्र श्रद्धा तथा सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। इसके संबंधी कई स्थानों में रहते हैं। संतान के लिए दुःखी रहता है। लगभग ८० वर्ष की पूर्णायु पाता है।

(१३०८)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी बुद्धिमान, धैर्यवान, अपनी विद्वत्ता द्वारा लोगों को चमत्कृत करने वाला तथा सर्वत्र यश-सम्मान पाने वाला होता है। यह परदेश में धन तथा मान कमाता है और वहीं रह कर उन्नति करता है। धन-धान्य से सम्पन्न रहते हुए यह जुए का शौकीन होता है। यह दूसरों को सुख देने के लिए निम्न कोटि के कार्यों तथा कुसंगति से भी धन कमाता है। इसे पिता का अल्प सुख मिलता है। यह दूसरों के लिए अपयश भी उठाता है, तथा यदि किसी व्यक्ति को स्वयं से अधिक महत्व पाते हुए देखता है, तो उससे मन-ही-मन द्वेष भी मानता है, परन्तु उसे न तो किसी पर प्रकट करता है और न किसी को हानि ही पहुँचाता है। इसका भाग्योदय परदेश में होता है। विवाह २४ वर्ष की आयु में मनोनुकूल, सुन्दरी कन्या के साथ होता है। संतान से सुख तथा शत्रुओं से धन मिलता है। ४०, ४३, ४८, ५७ तथा ६५ वें वर्ष लाभप्रद रहते हैं। पूर्णायु ८५ वर्ष होती है।

(२३०९)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, सुखी, सम्पन्न, अनेक कलाओं का ज्ञाता, शिल्पज्ञ, काव्य-साहित्य-सर्जक तथा यशस्वी होता है। यह आकस्मिक रूप से मिलने वाले लोगों से, बाहरी व्यक्तियों से संबंधित कार्यों अथवा व्यक्तियों से एवं उपदेश, वक्तृता, आदेश आदि के माध्यम से धनोपार्जन करता है। यह बाल्यावस्था में रोगी तथा युवावस्था में सुखी एवं निश्चिन्त रहता है। पिता का अल्प सुख मिलता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, मधुरभाषिणी एवं आज्ञाकारिणी होती है। इसका भाग्योदय भी विवाह के बाद ही होता है। २७ से ३५ वर्ष की आयु के बीच यह विशेष सुख प्राप्त करता है। इस अवधि में धन भी खूब कमाता है। यह परदेश में रहकर अपने उपदेशों अथवा वक्तृता द्वारा सबको मोहित करता हुआ यश प्राप्त करता है। संतान-सुख भी उत्तम रहता है। वृद्धावस्था में सपत्नीक तीर्थयात्रा करता है तथा ६० वर्ष से भी अधिक की आयु प्राप्त करता है।

(२३१०)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, मधुरभाषी, गुणवान, यशस्वी तथा महत्वाकांक्षी होता है। इसका भाग्य प्रबल होता है, अतः इसकी प्रत्येक आकांक्षाएँ पूरी होती हैं। इसे पैतृक-धन भी मिलता है तथा राजकीय-सेवा एवं मार्गों से भी विपुल धन का लाभ होता है। भूमिगत द्रव्य मिलने की संभावना भी रहती है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, सरल, प्रसन्नमुख तथा मधुरभाषिणी होती है। यह अपनी पत्नी से अत्यधिक प्रेम रखता है तथा उसकी प्रसन्नता हेतु अपने आवश्यक कार्यों को भी स्थगित कर देता है। इसे पिता का अल्प-सुख मिलता है तथा बड़े भाई का सुख भी नहीं मिलता। २६ से ४५ वर्ष की आयु तक यह बहुत धन कमाता है। अन्य मित्रों से भी प्रेम-संबंध रखता है, परन्तु लगभग ३०-३२ वर्ष की आयु में होने वाली शारीरिक-अस्वस्थता उन्हें शारीरिक सम्बन्ध नहीं होने देती। यह लगभग ८५ वर्ष की आयु में राजरोग या हृदयरोग से परलोकवासी होता है।

भु० सं० ११३८

कु० र०

(१३११) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी इकहरे शरीर का, सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्व एवं गंभीर स्वभाव का, गुणवान, बुद्धिमान, विद्वान तथा अनेक प्रकार के सुख-साधनों से सम्पन्न होता है। इसकी रुचियाँ विविध प्रकार की होती हैं। एक ओर तो यह साहित्य एवं कला का प्रेमी होता है, दूसरी ओर तकनीकी कार्यों तथा शुष्क विषयों में भी इसकी रुचि बनी रहती है। इसका विवाह २१ से २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, समझदार, चंचल स्वभाव की, कला-कौशल की जानकार एवं कई पुत्रों को जन्म देने वाली होती है। सभी पुत्र गुणवान, आज्ञाकारी एवं भाग्यशाली होते हैं। इसका भाग्य २८ वर्ष की आयु में उदय होता है। यह धनार्जन हेतु परदेश में जाता है, परन्तु बाद में स्वदेश में ही लौटकर उन्नति करता है। जीवन के ३०, ३५, ३६, ३८ तथा ४५ वें वर्ष बहुत लाभप्रद सिद्ध होते हैं। यह अपने परिश्रम से ही उन्नति करता तथा सुखी जीवन बिताता है। पूर्णायु ८० वर्ष के लगभग होती है।

(१३१२) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, दृढ़ निश्चयी, अपने पुरुषार्थ पर ही भरोसा करने वाला तथा प्रकृतत: ईश्वर की सत्ता में विश्वास न करने वाला होता है। इस जातक का दाम्पत्य-जीवन सुखमय नहीं रहता। यह अपनी स्त्री को कितने ही सुख से क्यों न रखे, फिर भी वह जीवित नहीं रह पाती। दो या तीन विवाह होने भी सम्भव है। इसके पुत्रों की संख्या एक से अधिक होती है, परन्तु उन्हें मातृ-सुख नहीं मिलता। वे अन्य स्त्रियों द्वारा पाले-पोसे जाते हैं। पहला विवाह २५ वर्ष की आयु से पहले ही हो जाता है। भाग्योदय २७ वर्ष की आयु में परदेश में होता है। ३५ वर्ष की आयु तक यह बहुत धन एकत्र कर लेता है तथा अपनी सम्पत्ति का उपभोग भी खूब करता है। राजकीय अथवा किसी अन्य प्रतिष्ठान की सेवा अथवा व्यक्ति विशेष की नौकरी में इसके जीवन का अधिकांश भाग व्यतीत होता है। लगभग ८० वर्ष की आयु तक यह जीवित रहता है।

भु० सं० २३२३

कु० २०

(२३२३)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य अत्यन्त सुन्दर, स्वस्थ, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, आत्म-विश्वासी तथा प्रभावशाली होता है। यह तीव्रबुद्धि सम्पन्न, व्यवहार-कुशल तथा दूरदर्शी होता है। इसे पिता का अल्प-सुख प्राप्त होता है। यह विविध कारणों से सुख-हीन जीवन बिताता है, अतः स्वभाव से रूखा बन जाता है। इसे अपना दुःख दूर करने के लिए अथक परिश्रम करना पड़ता है। इस का विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में हो जाता है, परन्तु स्त्री अल्पायु होती है, जिसके कारण इसे दाम्पत्य सुख प्राप्त नहीं होता। दूसरे विवाह से भी सुख नहीं मिलता। वह स्त्री भी शीघ्र मर जाती है। इस जातक का भाग्योदय परदेश में होता है। ४०, ४५, ५१ तथा ५८ वें वर्ष में इसे बहुत धन प्राप्त होता है। स्त्रियों के प्रति इसे कोई आसक्ति नहीं रहती। यह समयानुसार व्यवहार करने में कुशल होता है तथा धन का अपव्यय नहीं करता। पूर्णायु लगभग ७० वर्ष होती है।

(२३२४)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी गुणवान्, कलाओं का ज्ञाता, साहित्य-मर्मज्ञ, सुन्दर, स्वस्थ तथा चिकित्सा-विज्ञान अथवा शिल्पकला में प्रवीण होता है। यह अत्यन्त धनी तथा सम्पत्तिशाली होता है। इसे धन का निरन्तर लाभ होता रहता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दर, मनस्वी, तेजस्वी तथा सबको अपने अनुशासन में रखना पसन्द करने वाली होती है। वह जातक को प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करती तथा आगे बढ़ाती है। जातक की प्रतिष्ठा बढ़ाने में उसका विशेष हाथ होता है। विवाहोपरान्त जातक के धन, यश तथा प्रभाव की वृद्धि होती है। यह अपने पराक्रम द्वारा शत्रुओं को पराजित करता है, राज्य द्वारा सम्मान प्राप्त करता है तथा राजकीय-सेवा में उच्चपद भी प्राप्त करता है। इसे सुन्दर तथा विद्वान् पुत्र-पुत्री प्राप्त होते हैं, जो इसकी प्रतिष्ठा को बढ़ाते हैं। पूर्णायु लगभग ८० वर्ष होती है।

भु० सं० ११३८

कु० र०

(१३१५) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य बाल्यावस्था में रोगी रह कर कष्ट पाता है, बाद में शरीर से सुन्दर, स्वस्थ तथा बलिष्ठ हो जाता है। यह अत्यन्त साहसी तथा प्रचण्ड उद्यमी होता है। अपने कार्य-व्यवसाय में घोर परिश्रम करके यह उन्नति करता है। बाद में राजकीय-सेवा में भी प्रवेश करता है। यह अपनी वक्तृता, लेखन, शिल्प, गुण आदि के द्वारा सर्वत्र प्रशंसा प्राप्त करता है। इसका विवाह 23-24 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर तथा मनोनुकूल मिलती है। वह तेजस्विनी, मनस्विनी तथा कुशलकार्यिणी होती है। 35 वर्ष की आयु में इसे अत्यधिक प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। यह जातक अपनी योग्यता तथा विद्वत्ता के कारण राजमान्य होता है तथा इसका आना-जाना भी राजदरबार में होता है। इसकी आमदनी के अनेक स्रोत होते हैं, अतः यह वैभवपूर्ण सुखी जीवन व्यतीत करता है। इसे परमायु लगभग 82 से 84 वर्ष की प्राप्त होती है।

(१३१६) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, पराक्रमी, साहसी, अपने ही अध्यवसाय द्वारा धन उपार्जित करने वाला तथा अपनी पैनी दृष्टि से सामने वाले के मनोभावों को ताड़ लेने में कुशल होता है। यह बुद्धि का आगार होता है। इसे उच्च राजकीय-सेवा द्वारा धन का लाभ होता है। 22-23 वर्ष की आयु से ही यह विभिन्न स्रोतों द्वारा धन कमाने लगता है। इसका विवाह 24-25 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा अनुरागिनी होती है। दाम्पत्य सुख उत्तम रहता है। इसकी सन्तानें स्वयं कष्ट उठाकर भी इसे सुख पहुँचाती हैं। युवावस्था से दीर्घकाल तक इसे रोगों का शिकार बनना पड़ता है। आकस्मिक रूप से तीन-चार बार चोट लगकर घायल भी होना पड़ता है, परन्तु यह इनसे बचता हुआ लगभग 80 वर्ष की आयु प्राप्त करता है। अपने जीवन के अन्त से कुछ समय पूर्व ही यह विपुल सम्पत्ति एवं मान-प्रतिष्ठा का स्वामी बनता है।

भृ० सं० ४८९९

कु० २०

(१३२७)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर स्वरूपवान्, अनेक विद्याओं को जानने वाला, निर्णायक-बुद्धि युक्त, अपने व्यवहार से धनी तथा अपनी योग्यता एवं विद्वत्ता के कारण सर्वत्र आदर प्राप्त करने वाला होता है। यह जातक वाहनों से सम्बन्ध रखने वाला, उसके कार्यों को करने वाला तथा उसके द्वारा अपनी वृद्धि करने वाला होता है। इसके धन-प्राप्ति के स्रोत अचिन्त्य होते हैं। इसे पिता का अल्प-सुख मिलता है। विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है, परन्तु पत्नी से कष्ट मिलता है। यह राजकाज में संलग्न रहता तथा राजमान्य होता है। इसके जीवन के ३०, ३३, ३८ तथा ४६वें वर्ष बहुत उन्नति दायक होते हैं। यह आपना कृपण होता है तथा पुत्रों द्वारा भी इसके धन की वृद्धि की जाती है। इन सबके बावजूद भी यह स्वयं से असन्तुष्ट तथा दुःखी रहता है। भौतिक-सुख जीवनान्त तक उपलब्ध रहते हैं। लगभग ८० वर्ष की आयु में इसकी मृत्यु होती है।

(१३२८)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, चपल, मिलनसार का, उदार, परन्तु व्यवहार में कठोर एवं क्रोधी होता है। यह विद्या एवं ज्ञान का धनी, गम्भीर-विचारक तथा दूरदर्शी होता है। इसे माता की ओर से कष्ट होता है और उसके कारण कभी-कभी बहुत दुःखी हो जाता है। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में अत्यन्त सरल, समझदार, मनोरंजनी तथा सामान्यतः दुःखी-परिवार की कन्या के साथ होता है, परन्तु वह धीरे-धीरे इसे अपने प्रभाव में लेकर समस्त दुःखों को भूल जाती है। यह जातक राज्य-सेवा में रहकर राजमान्य होता है तथा अनेक प्रकार से धनोपार्जन करता है। इसे प्रत्येक कार्य में सफलता मिलती है, क्योंकि इसका भाग्य बलवान होता है। इसे पुत्र तथा कन्या - दोनों सन्तानों की प्राप्ति होती है, परन्तु वे बड़े कष्ट से ही जीवित रह पाते हैं तथा होनहार भी निकलते हैं। इसकी परमायु लगभग ८३ वर्ष होती है।

(१३१९)- इस कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य मजबूत हड्डियों वाला, पुष्ट शरीर, धनेच्छुक, उत्तम कार्यों को करने के लिए सदैव उद्यत, शास्त्रार्थी तथा पुस्तक-लेखक होता है। यह राज्य में उच्चपद प्राप्त करता है तथा सचिव अथवा न्यायाधीश हो सकता है। यह बहुत धनी, ज्ञानी तथा प्रतिष्ठित परिवार में जन्म लेने वाला, अनेक मित्रों से आसक्त तथा दीर्घसूत्री होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी बहुत सुन्दर, चतुर तथा सुशील होती है और वह पति के ऊपर पूर्ण आधिपत्य बनाये रखती है। इसका भाग्योदय भी विवाह के बाद ही होता है। इसे लोगों से अधिक सम्पर्क बढ़ाना अच्छा नहीं लगता, इस कारण लोग इसे ग़लत समझते हैं तथा उनमें से कुछ लोग शत्रु भी बन जाते हैं। इसे अपनी ही चिन्ता रहती है। भोग के साथ ही धर्म-कर्म में भी इसका मन लगता है। यह ७८ वर्ष की आयु में, अथवा फिर ९२ वर्ष की आयु में परलोक-गमन करता है।

(१३२०)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर स्वस्थ शरीर का, माता-पिता के सुख से युक्त, अनेक भाइयों वाला, सुखी, गुणी तथा प्रतिभावान् होता है। इसका मन धार्मिक कार्यों में अधिक लगता है। यह तीर्थयात्राएँ भी बहुत करता है। इसे आकस्मिक चोटें लगने का भय भी रहता है। इसका विवाह २०-२१ वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, विविध कलाओं की जानकार, मधुर भाषिणी, घर-परिवार के सभी लोगों को प्रिय तथा सुख देनेवाली एवं गुणवती होती है। इसका भाग्योदय भी विवाहोपरान्त ही होता है। यह थोड़े ही दिनों में अपनी योग्यता एवं परिश्रमशीलता से बहुत धन कमा लेता है तथा ३५ वर्ष की आयु तक राजकीय-सेवा के किसी उच्च पद पर प्रतिष्ठित हो जाता है। यह प्रचुर धन कमाता है तथा अनेक ग्रन्थों की रचना भी करता है। इसे पुत्र की ओर से कष्ट होता है। ५८ वर्ष की आयु तक खूब ऐश्वर्यशाली हो जाता है तथा ८५ वर्ष की आयु तक जीवित रहता है।

भृ० सं० ११४३ | कु० २०

(१३२१)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, उदार चित्त का, साहित्य-रसिक, आस्तिक, विद्वान नेता तथा गुणवान होता है। यह उग्र कार्यों को करने वाला, धर्मोपदेशक, साहसी, कार्य-कौशल से युक्त तथा स्वयं को लोक-प्रतिष्ठित करने की तीव्र इच्छा रखने वाला होता है। इसका विवाह 22-23 वर्ष की आयु में काव्य-कला-रसिका, कला-प्रेमी, सुन्दरी तथा गुणवती स्त्री के साथ होता है। यह अपनी पत्नी की ओर से सुखी रहता है तथा विवाहोपरान्त विशेष उन्नति भी करता है। 30 वर्ष की आयु तक यह प्रचुर धन कमा लेता है। यह राजाओं की भाँति रहनेवाला, उच्च पद एवं सम्मान पाने वाला तथा सुखी-जीवन बिताने वाला होता है। 48 वर्ष की आयु तक यह लोक में अपने लिए महत्वपूर्ण स्थान बना लेता है। इसकी प्रथम सन्तान को कष्ट होता है। आगे की सन्तानों की रक्षा के उपाय करने आवश्यक हैं। परमायु लगभग 60 वर्ष होती है।

(१३२२)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, धनी, मानी तथा उग्र-स्वभाव का होता है। इसे क्रोध जल्दी आजाता है और शान्त भी शीघ्र हो जाता है। इसके स्वभाव में रूखापन पाया जाता है, जिसके कारण इसे जीवन में कभी-कभी बहुत कष्ट उठाना पड़ता है। यह अन्तर्मुखी प्रवृत्ति का होता है तथा अपने मनोभावों को बहुत छिपा कर रखता है। इसे स्त्रियों का काम करके बड़ा सुख मिलता है। इसका आन्तरिक स्वभाव भी स्त्रियों जैसा ही होता है। वैसे यह बड़ा साहसी तथा जोखमी होता है। इसका विवाह 25 वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी से सुख मिलता है, परन्तु सन्तान का कष्ट रहता है, क्योंकि बालक जीवित नहीं रहते हैं। स्त्री को भी इसके कष्ट होता है। इसका भाग्योदय 28 वर्ष की आयु से होता है। यह राजकीय-सेवा में रहकर उन्नति करता है। यह मृत्यु से पूर्व कुछ समय तक बीमारी का कष्ट उठाता है तथा 68 से 72 वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(१३२३) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य मधुर स्वभाव का, सुन्दर, ललितकलाओं में रुचि रखने वाला, शास्त्रीय-आचारों का पालन करने वाला तथा सद्गुण सम्पन्न होता है। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मनोनुकूला तथा गुणवती मिलती है। वह तेजस्विनी तथा प्रत्येक क्षेत्र में पति का सहयोग करने वाली होती है। विवाहोपरान्त ही इसे धन-धान्य का लाभ होता है। दाम्पत्य-सुख में कमी न होते हुए भी यह जातक अन्य स्त्रियों की ओर आकर्षित होता है और उनसे हर प्रकार के संबंध बनाये रखता है। इसे सन्तान के लिए कष्ट सहना पड़ता है। स्त्री के संबंध में भी दुःख भोगता है। इसे ४५, ४८, ५२ तथा ५७ वर्ष की आयु में बहुत धन प्राप्त होता है। यात्राएँ भी बहुत करता है तथा उनसे खूब लाभ भी उठाता है। यह समाज में प्रतिष्ठित स्थान बनाये रखता, सामान्यतः सुखी जीवन बिताता है। इसकी परमायु ७७ से ८० वर्ष तक हो सकती है।

(१३२४) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, मधुरभाषी, कलाकार कुशल, उदार स्वभाव का, गुणवान, बुद्धिमान, मनस्वी तथा विद्या का धनी होता है। यह युक्तियुक्त मधुर वाणी बोलता है, जो सबको प्रभावित करती है। यह साहित्य तथा विज्ञान का ज्ञाता, मनस्वी तथा धर्म-कर्म में रुचि रखने वाला होता है। यह राजनीतिक तथा गुप्त कार्यों द्वारा लाभ प्राप्त करता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में हो जाता है। स्त्री पतिव्रता तथा प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करने वाली मिलती है। इसके जीवन में उन्नति के अनेक मार्ग प्रशस्त होते हैं तथा उसमें इसके भाई बन्धु तथा परिवारीजन भी सहायता पहुँचाते हैं। आयु के 23, 28 तथा 33 वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। इनमें यह किसी नये कार्य में प्रवृत्त होता है तथा उससे लाभ उठाता है। ५६ वर्ष की आयु तक खूब धन कमाता है। नौकरी अधिक समय तक नहीं करता। पूर्णायु ८५ वर्ष होती है।

(१३२५)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वरूपवान्, अनेक कलाओं का ज्ञाता, एक लेखक
साहित्य-सर्जक, विद्वान् तथा आत्मकेन्द्रित होता है। यह उपदेशक, वक्ता, अध्यापक आदि का कार्य
करता है तथा अपनी लेखनी द्वारा साहित्य के माध्यम को भरता है। इसमें नेतृत्व के गुण होते हैं तथा
अपने आदेशों का पालन कराने की क्षमता भी प्राप्त होती है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु के
लगभग होता है। पत्नी सुन्दरी, कुछ स्थूल काय तथा मनोनुकूला मिलती है। ३० वर्ष की आयु में
यह विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेता है तथा स्वयं के माध्यम से अनेक सामाजिक तथा राजनीतिक
कार्यों को सम्पन्न करता है। यह अनेक प्रकार से यश तथा धन अर्जित करता है एवं शत्रुओं को
पराजित करता हुआ ५८ वर्ष की आयु तक बहुत ऊँचे स्थान पर जा पहुँचता है। वृद्धावस्था में
यह रोग पीड़ित रहता है तथा लगभग ६० वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(१३२६)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, कला-कुशल, काव्य-साहित्य का रचयिता
स्वच्छ हृदय का, उदार तथा कुछ क्रोधी स्वभाव का होता है, परन्तु यह क्रोध को स्वयं ही पी
भी लेता है। यह समाज में ३० की बहुत ऊँची स्थिति पर जा पहुँचता है, परन्तु इसके अपने
ही लोग शत्रुता मान उठते हैं, जिसके कारण यह बहुत पीड़ित होता है। इसका विवाह २० वर्ष
की आयु तक हो जाता है। पत्नी रुग्णा रहती है, अतः उसके कारण दुःखी रहता है। यह राज्य
की सेवा अथवा किसी अन्य प्रतिष्ठान से सम्बद्ध रहकर उच्च पद प्राप्त करता है तथा ५५-५६
वर्ष की आयु तक सब प्रकार के ऐश्वर्यों से सम्पन्न हो जाता है। धन की इसे कोई कमी नहीं
रहती। इसे सन्तान-सुख न के बराबर रहता है। वृद्धावस्था में यह बहुत दुःखी भाव से रहता
है। इसे लगभग ८०-८२ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त होती है।

भु० सं० ३४३३

कु० २०

(१३२७)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी अनेक कलाओं का ज्ञाता, साहित्य-सर्जक, ज्योतिषी तथा अन्य अनेक विद्याओं का अध्येता तथा विद्वान् होता है। नाट्य-कला से भी इसका सम्बन्ध होता है। यह सुन्दर, स्वस्थ, गुणवान्, बुद्धिमान तथा आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु से पहले ही हो जाता है। पत्नी सुन्दर, चतुर तथा घर-गृहस्थी को स्वयं के निर्देशन में चलाने वाली, प्रभावशालिनी होती है, परन्तु उसका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता, जिसके कारण जातक भी चिन्तित बना रहता है। यह व्यक्ति विवाहोपरान्त धनोपार्जन करने लगता है तथा ४० वर्ष की अवस्था तक पर्याप्त यशस्वी हो जाता है। सन्तान-पक्ष से यह कष्ट का अनुभव करता है, तथा वृद्धावस्था में सन्तानहीनता का दुःख मन को विशेष दुःखी रखता है। आर्थिक स्थिति उत्तम रहती है। वृद्धावस्था में तीर्थयात्राएं करता है। परमायु लगभग ७८ वर्ष की होती है।

(१३२८)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ परन्तु अस्थिर-चित्त वाला होता है। यह कई कार्यों को एक साथ करने की सोचता है और वैसा करता भी है, फलस्वरूप अधिकांश कार्य अधूरे रह जाते हैं। यह अपनी मनस्विता के कारण बहुत कुछ सफल भी होता है, परन्तु पूर्णतः नहीं। अपने उदात्त स्वभाव के कारण यह लोकप्रियता भी प्राप्त करता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में हो जाता है। तत्पश्चात् २६ वर्ष की आयु से इसका भाग्योदय होता है। इसे अपने गृहस्थान में ही सफलता प्राप्त होती है। भावनात्मक होने के कारण यह कलाकारिता से सम्बद्ध रहता है तथा कुछ-न-कुछ करता ही रहता है। इसे राज्य से भी सम्मान प्राप्त होता है। इसकी आयु के ३५, ४१, ४६ तथा ५८वें वर्ष विशेष सम्मानदायक सिद्ध होते हैं। इन वर्षों में धन का लाभ भी अधिक होता है। इसकी परमायु लगभग ७६ वर्ष होती है।

(१३२९) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, चंचल स्वभाव, भोले चित्तवाला, उदार, कमनीय परन्तु कठोर भी एवं क्रोधी प्रवृत्ति का होता है। इसे पैतृक-सम्पत्ति का लाभ होता है। शिक्षा-दीक्षा में यह बहुत उन्नति करता है। २३ वर्ष की आयु में इसका विवाह होता है। स्त्री सुन्दरी तथा पतिपरायणा होती है, तथापि यह अन्य स्त्रियों से भी सम्पर्क रखता है तथा उनमें चित्त को उलझाये रखकर एक उच्चकलाकार के रूप में प्रतिष्ठित होता है। विवाहोपरान्त यह भूमिगत कोष को प्राप्त करने का प्रयत्न करता है, परन्तु उसमें सफल नहीं हो पाता। इसका आमोद-प्रमोद स्त्री के द्वारा ही होता है। ५८ वर्ष की आयु तक इसके पास धन-सम्पत्ति की कमी नहीं रहती। सन्तान-सुख भी उत्तम रहता है। सामान्यतः सुखी जीवन व्यतीत करते हुए यह लगभग ७८ वर्ष की आयु में परलोक-गमन करता है।

(१३३०) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, सुरूपवान, चंचल-चित्त का, शीघ्र ही निर्णय लेने वाला, तीव्र बुद्धि तथा सोच-विचार में समय को अधिक बर्बाद न करने वाला होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दर एवं सुशीला मिलती है। यह पत्नी में अत्यधिक अनुरक्त रहता है। यह बड़े साहस तथा धीरज के साथ प्रत्येक कार्य को करता और उसमें सफलता पाता है। यह सम्पत्ति को बढ़ाता है तथा उसे बन्धु-बान्धवों पर उदारता पूर्वक व्यय करता है। इसे नष्ट हुए धन के प्रति कोई चिन्ता नहीं होती। इसके भाग्य का चरम उत्कर्ष ५० वर्ष की आयु में होता है। यह अपने स्तर से नीचे के लोगों के साथ मित्रता रखता है तथा उनके मध्य विशेष प्रिय होता है। इसके जीवन के २७, २९, ३२, ३६, ३८, ४१, ४६, ५२, ५८, ६१, ६५, ६७ तथा ६९वें वर्ष विशेष लाभप्रद रहते हैं। इसकी पूर्णायु लगभग ८० वर्ष होती है।

(२३३१)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी अत्यन्त सुन्दर, प्रभावशाली, तेजस्वी, लोकप्रिय तथा बाल्यावस्था से ही अपनी प्रतिभा के प्रभाव को प्रकट करने वाला होता है। विद्यार्थी-जीवन में यह अत्यन्त तीव्रबुद्धि वाला, मेधावी प्रमाणित होता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त कर पूर्ण विद्वान् बनता है। यह बड़ा धैर्यवान् होता है तथा प्रत्येक कार्य को खूब सोच-समझ कर करता है। यह राजकीय सेवा, कला-सृजन तथा कला-प्रदर्शन द्वारा धन प्राप्त करता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होजाता है। पत्नी सुन्दरी, गम्भीर स्वभाव की तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व की स्वामिनी होती है। वह जातक से भी अधिक प्रभावोत्पादक होती है। ५५ वर्ष की आयु तक यह जातक स्वयं को अत्यधिक प्रतिष्ठा प्राप्त करलेता है तथा आर्थिक-स्थिति को भी सुदृढ़ बनालेता है और प्रायः ६० वर्ष की आयु से पूर्व ही सामान्य बीमारी के कारण परलोक-गमन कर जाता है।

(२३३२)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, धीर, गम्भीर, स्थिर-चित्त वाला तथा एक बार लिए गये निर्णय पर अन्त तक दृढ़ बना रहता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में इस जैसी ही मनोवृत्ति वाली, कृपण, सुन्दर तथा विद्या-बुद्धि द्वारा आगे बढ़ने वाली स्त्री के साथ होता है। यह 30 वर्ष की आयु से धन कमाना आरम्भ करता है तथा 40 वर्ष की आयु तक पर्याप्त सम्पत्ति अर्जित कर लेता है। यह राज्य-सेवा में रह कर अथवा राजकीय कार्यों से संबंधित रहकर भी पर्याप्त धन कमाता है। यह अपनी आर्थिक-स्थिति को निरन्तर उन्नत बनाता चला जाता है तथा अपने ऐश्वर्य के बल पर बन्धु-बान्धवों तथा समाज में विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। इसे व्याधि अथवा शत्रुओं का भय नहीं होता। यह अनेक कार्यों को करता हुआ सब प्रकार से सुखी जीवन बिताता हुआ लगभग ८२ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

भु० सं० ३८८८

कु० १०

(१३३३)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी मध्यम कद का, मतवाली चाल से चलने वाला, सुन्दर, प्रियदर्शी, आजन्म चौर्यवान्, अपने पुरुषार्थ पर विश्वास करने वाला तथा अपने उद्यम को ही सर्वाधिक सार्थक मानने वाला होता है। यह अपनी विद्या-बुद्धि के बल पर लेखक मान-सम्मान प्राप्त करता है। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है। विवाहोपरान्त अनेक स्रोतों से धन कमा उठता है। यह किसी उच्च प्रतिष्ठान अथवा राजकीय-सेवा में संलग्न रहकर यश-धन अर्जित करता है। इसके अतिरिक्त लेखन-कार्य, वक्तृता आदि कार्यों से भी धन कमाता है। इसकी आयु के ३५, ३६, ३८, ४०, ४५, ५८ तथा ६५वें वर्ष विशेष धनलाभ का सुख देने वाले होते हैं। इसे माता का पर्याप्त सुख मिलता है तथा सन्तान-सुख भी उत्तम रहता है। यह स्वच्छ हृदय का तथा सत्यवादी होता है। पूर्णायु ८२ वर्ष तक हो सकती है।

(१३३४)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, धनी, धर्मिष्ठ, राजकीय सेवा में उच्च पद को सुशोभित करने वाला, ऊपर से बहुत रूखा तथा क्रोधी प्रतीत होने वाला, परन्तु हृदय से अत्यन्त उदार तथा परोपकारी होता है। यह दूसरों का दुःख दूर करने के लिए हर समय तत्पर रहता है तथा यथासम्भव सहायता करने से कभी पीछे नहीं हटता। इसे लोग प्रायः गलत समझते हैं, इसी कारण कुछ लोग शत्रुता भी मानने लगते हैं; परन्तु यह अपने विपक्षियों का धैर्यपूर्वक सामना करता है तथा उन्हें अपने प्रताप से नीचे झुका देने वाला होता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में सुन्दर, शालीन तथा सम्पन्न कन्या के साथ होता है। वह आकर्षक व्यक्तित्व वाली तथा प्रत्येक क्षेत्र में इसका साथ देने वाली होती है। ४५ वर्ष की आयु तक इसे पद-वृद्धि के अनेक अवसर मिलते हैं। उसके बाद भी यह उच्च पद पर रहता हुआ विपुल यश-धन प्राप्त करके ७८ वर्ष की आयु पाता है।

भु० सं० ०८३३

कु० २०

(१३३५)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, मधुरभाषी, शास्त्रज्ञ, गुणवान्, विज्ञान-वेत्ता, उदार-चेता, कला-कुशल तथा विद्वान् होता है। इसका कद मध्यम, ललाट उन्नत तथा व्यक्तित्व आकर्षक होता है। इसे दो माताओं का सुख प्राप्त होता है। यह सौम्य-स्वभाव का, अन्तर्मुखी तथा गूढ़ विद्याओं का जानकार भी होता है। गुप्त-धन का लाभ होना भी सम्भव है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूला तथा प्रत्येक कार्य में सहयोग देने वाली मिलती है। वह सुलक्षणा, धर्म-भीरु तथा अपने सद्गुणों के कारण सर्वत्र प्रशंसा की पात्र बनती है। यह राजकीय-सेवा में रहकर अनेक प्रकार के सुख प्राप्त करता है। धन के साथ-साथ यश का भी लाभ होता है। ५५ वर्ष की आयु तक इसे किसी वस्तु का अभाव नहीं होता। सन्तान-सुख भी प्राप्त रहता है। यह ६८ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है. इससे बच जाय तो ८८ वर्ष तक जीवित रहता है।

(१३३६)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, मधुरभाषी, ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता, अत्यन्त उदार, शास्त्रीय-आचारों का पालन करने वाला, संकोचशील, अत्यधिक विनम्र तथा अपनी प्रशंसा सुनने का इच्छुक होता है। यह धर्म-भीरु, ज्ञानी, खुले हाथ से खर्च करने वाला तथा पर्याप्त धन कमाने वाला भी होता है। यह २२-२३ वर्ष की आयु से ही राजकीय-सेवा में संलग्न होकर धन कमाने लगता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मनोनुकूला तथा सुख की अभिवृद्धि करने वाली होती है। ३५ वर्ष की आयु में कन्या सन्तान प्राप्त होती है, बाद के पुत्र भी होते हैं, परन्तु सन्तानों को कष्ट होता है। इसकी आयु के ३५, ३८, ४२, ४८ तथा ५६वें वर्ष अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हैं। इन वर्षों में इसे धन का विशेष लाभ होता है तथा राज्य से भी सम्मान मिलता है। पूर्णायु लगभग ८८ वर्ष की होती है।

(१२३३७)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, सुशील, बुद्धिमान तथा साहसी होता है। इसके पिता के दो विवाह होते हैं तथा इसको स्वयं भी एक से अधिक स्त्रियों का सुख प्राप्त होता है। इसे विख्याति तथा धन का लाभ कुछ कठिनाई से होता है। सामान्य आर्थिक-स्थिति होते हुए भी यह अधिक धनी लोगों जैसा व्यय करता है। इसका विवाह २० से २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है। इसका भाग्योदय परदेश में होता है। यह किसी निजी प्रतिष्ठान अथवा सरकारी नौकरी के द्वारा अपनी उन्नति करता है। इसके जीवन के ३३, ३८, ४२, ४७, ४९, ५१, ५३, ५५ तथा ५८ वें वर्ष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। इसे माता-पिता का पर्याप्त सुख प्राप्त होता है और यह स्वयं को उनका आज्ञाकारी बनाये रख कर उनकी सुख-सुविधा का ध्यान रखता है। इसे कुकर्मों तथा गूढ़ कार्यों से धन का लाभ होता है। इसकी पूर्णायु ७९ वर्ष होती है।

(१२३३८)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, बुद्धिमान, विद्वान, पराक्रमी तथा सुखोपभोगी होता है। यह सुन्दर वस्तुओं, कलाओं, कलाकारों तथा स्त्रियों के सहयोग तथा इनसे संबन्धित कार्यों द्वारा धन प्राप्त करता है। इसे भू-सम्पत्ति का भी लाभ होता है। भूमि में गड़ा हुआ धन भी प्राप्त होता है तथा इसकी सम्पत्ति निरन्तर बढ़ती रहती है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला होती है। इसे स्त्री से बहुत प्यार होता है और उसके लिए कुछ भी करने को तत्पर रहता है। विवाहोपरान्त इसका भाग्योदय होता है तथा कोई अचल सम्पत्ति भी खरीदता है। बाद में इसका मन पार्टियों में रम जाता है तथा उनके साथ भोग-विलास को ही यह अपना प्रमुख कर्तव्य मान लेता है। इसकी उन्नति कुछ समय के लिए रुक भी जाती है। ५८ वर्ष की आयु में इसे विशेष लाभ होता है। पुत्र-पौत्रादि से सुखी होते हुए यह लगभग ७८ वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

भु० सं० ११३९

कु० २०

(१३३९)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुख तथा रोग-रोग से पीड़ित, वायु प्रकृति तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह पतले दुबले शरीर वाला, मध्यम कद का तथा आपत्ति अवस्था कुशल होता है। यह सात्विक प्रकृति का, धार्मिक विचारों की ओर झुकाव, मधुभाषी तथा परम कौतुकी एवं विनोदी होता है। भोजन, वस्त्र, माला, सुगन्ध, संगीत-नृत्य आदि का प्रेमी तथा दीर्घसूत्री भी होता है। इसका विवाह लगभग २०-२१ वर्ष की आयु में होता है। यह अपनी पत्नी के अत्यधिक अनुरक्त रहता है। यह अनेकों योजनाएं बनाता तथा उनकी पूर्ति में लग कर यथाशीघ्र अधिकाधिक धनोपार्जन में लग जाता है तथा सफल भी होता है। ३५ वर्ष की आयु से इसे मान-सम्मान तथा धन का विशेष लाभ होने लगता है। बाहरी लोगों से इसे आकस्मिक धन का लाभ भी होता है। यह अनेक पुत्रों का पिता तथा राज्य द्वारा सम्मानित हो कर लगभग ७४ वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(१३४०)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, सुवक्ता, पण्डित, वाणी के बल पर सबको प्रभावित करने वाला, कुशल-प्रशासक, कला-कुशल, श्रेष्ठ मित्रों वाला तथा राज कीय-सेवा में उच्चपद पाने वाला होता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी तेजस्विनी तथा कुशलता पूर्वक गृहस्थी का संचालन करनेवाली होती है। इस जातक को कला कारिता से विशेष धन प्राप्त होता है। यह सुन्दर पुत्रों का सुख प्राप्त करता है। ५८ वर्ष की आयु तक इसे हर प्रकार के सुखोपभोग उपलब्ध हो जाते हैं। यह पत्नियों से सम्बन्ध बनाये रखता है तथा उनके ऊपर धन भी खूब खर्च करता है। यह बड़ा विद्वान्, लोक-प्रिय तथा सर्वत्र सम्मान प्राप्त करने वाला होता है। जीवन के २५, २८, ३२, ३५, ३८, ४१, ४६, ४८, ५३ तथा ५६ के वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। यह ७५, ७८ अथवा ८८ वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

भृ० सं० ११४८३

कु० २०

(१३४१)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, प्रभावशाली, विभिन्न प्रकार के सुख-भोगों को प्राप्त करने वाला, अपने पराक्रम से ही उन्नति करने वाला, अपनी विद्या के प्रभाव से अधिकारियों को निभाने वाला, धर्मात्मा, सुन्दर पुत्रों का पिता, अनेक मित्रों का उपभोग करने वाला होता है। सन्तान के लिए इसे थोड़ा कष्ट भी सहन करना पड़ता है। इसे बाहरी-लोगों से धन का लाभ होता है। आकस्मिक धन लाभ के भी अनेक अवसर इसके जीवन में आते रहते हैं। इसे विविध कलाओं का ज्ञान होता है, जिनके बल पर यह आर्थिक उन्नति करता है। कभी-कभी इसके कार्यों में मित्र अथवा बन्धु-बान्धव ही रोड़े अटकाते हैं, उस समय इसे बहुत निराशा होती है। विवाह २१ वर्ष की आयु में हो जाता है तथा इसी समय भाग्योदय भी होता है। जीवन के २६, २८, ३५ तथा ३८ वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। ५५ वर्ष की आयु तक निरन्तर लाभ होता रहता है। पूर्णायु लगभग ७३ वर्ष होती है।

(१३४२)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी अत्यन्त सुन्दर, लम्बे कद का तथा कुछ कठोर स्वभाव का होता है। यह धन कमाने तथा उसका संचय करने में प्रयत्नशील बना रहता है। बाल्यावस्था से ही यह धन कमा उठता है। यह सुशील, मधुरभाषी तथा अनेक मित्रों का प्रिय होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, परिवार का कल्याण करने वाली तथा सुलक्षणा होती है। यह अपनी पत्नी को विशेष प्रेम करता है। इसकी आमदनी राजकीय-सेवा तथा स्वतन्त्र कार्यों से भी होती है। इसे सुन्दर पुत्र प्राप्त होते हैं तथा उनके सुखों से यह प्रसन्न तथा प्रभावी बना रहता है। इसके जीवन के ३२, ३५, ३८, ४०, ४३ एवं ४८ वें वर्ष बहुत लाभप्रद सिद्ध होते हैं। यह जातक अपने से छोटे लोगों का नेतृत्व करता, अत्यधिक लोकप्रियता प्राप्त करता है। इसे ७१ वर्ष की आयु में मृत्यु-भय होता है। यदि उससे बच जाय तो ८२ वर्ष तक जीवित रहता है।

भु० सं० १३४४

(१३४३)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, मधुरभाषी तथा सर्वप्रिय होता है, तथापि आकृति से कठोर स्वभाव का लगता है। यह अत्यन्त उदार, परोपकारी, बन्धु-बान्धवों के अनुकूल तथा परिजनों को सन्तुष्ट रखने वाला होता है। इसकी अभिरुचि कला तथा साहित्य में अधिक होती है। ज्योतिष शास्त्र में भी यह रुचि रखता है। इसका पराक्रम सर्वत्र सराहनीय रहता है। इसका विवाह 22-23 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी अत्यन्त सुन्दर कला-कौशल की जानकार तथा सुरुचिपूर्ण श्रेष्ठ स्वभाव की होती है। इसके कार्य-कलाप लोक-प्रसिद्ध होते हैं। यह अपने पद, प्रभाव तथा योग्यता के बल पर राजमान्य होता है। इसे धन का अभाव नहीं रहता। कला एवं स्त्रियों के संगम वाले कार्य तथा व्यवसाय इसकी आमदनी के साधन होते हैं। इसे सन्तान-सुख श्रेष्ठ प्राप्त होता है। परमायु लगभग ८२ वर्ष की होती है। कु० २०

(१३४४)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, सात्विक प्रकृति का, अत्यन्त त्यागी, सुवक्ता, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न एवं कल्पनाशक्ति से ही सुखी रहने वाला होता है। यह विद्वान पण्डितों के बीच भी सम्मान प्राप्त करता है। धन का इसे कभी अभाव नहीं रहता। यह आचार्य, अध्यापक, उपदेशक, वक्ता अथवा नेता होता है। राजमान्य पदों पर इसकी प्रतिष्ठा होती है। इसका विवाह 22-23 वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी इसके अनुरूप ही बुद्धिमती कार्यों की ज्ञाता, विदुषी तथा मधुरभाषिणी होती है, पर इसे दाम्पत्य-सुख अधिक समय तक नहीं मिल पाता, क्योंकि यह जल्दी ही विधुर हो जाता है। इस प्रकार स्त्री सम्बन्धी कष्ट प्राप्त होता है। पुत्र सुन्दर तथा सुख देने वाले होते हैं। जीवन के २५, २८, ३१, ३५, ३९, ४२, ४६, ५०, ५४ तथा ५८वें वर्ष विशेष कष्टप्रद रहते हैं। परमायु ८९ वर्ष होती है।

(१३४५)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, बुद्धिमान, गुणवान, अनेक विद्याओं का ज्ञाता, कला मर्मज्ञ तथा लोकप्रिय व्यक्ति होता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में हो जाता है, पत्नी सुन्दरी, कलाओं की जानकार, मधुर मुस्कान तथा मृदु वाणी वाली एवं सुख देने वाली होती है। इस जातक का भाग्योदय २३ वर्ष की आयु में होता है तथा किसी स्त्री के माध्यम अथवा सहयोग से विभिन्न प्रकार के लाभ प्राप्त होते हैं। यह जातक विभिन्न कार्यों तथा स्रोतों से धनोपार्जन करता है। पत्नी इसे यथा सम्भव सहयोग देती है। इसका लाभ बहुत बढ़ा-चढ़ा होता है, जिसके फल स्वरूप यह राजनेताओं तथा राज्याधिकारियों के बीच भी सम्मान प्राप्त करता है। सभी स्तर के लोग इसे सम्मान देते हैं। ३२, ३७ तथा ४५ से ५६ वर्ष तक का समय स्वर्ण-काल होता है। पुत्र पुत्री तथा धनी होते हैं। सब प्रकार के सुखों को भोगता हुआ यह ७८ वर्ष की आयु पाता है।

(१३४६)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर स्वास्थ्यवान, अत्यन्त उदार, परोपकारी, राज्य से सम्मान तथा सहयोग पाने वाला तथा सब प्रकार से सुखी होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, कुशल, व्यावहारिक, मधुर भाषिणी तथा सुख देने वाली होती है परन्तु यह जातक विवाह से पूर्व ही अनेक स्त्रियों का प्रिय होता है तथा विवाह के बाद भी उनसे संबंध बनाये रखता है। इसे दीर्घ स्त्री भी कहा जा सकता है। फिर भी इसे अपने कार्यों में आश्चर्य जनक सफलताएँ प्राप्त होती हैं। इसकी सभी योजनाएँ संयोग अथवा भाग्यवश पूरी हो जाती हैं। इसे राजकीय सेवा से (आय होती है। सन्तानों से भी यथा सुख मिलता है। परदेश में रह कर यह बहुत धन कमाता है। जीवन के २७, २८, ३२, ३६, ३८, ४२, ४७, ५१, ५६ तथा ६२वें वर्ष विशेष लाभप्रद रहते हैं। पूर्णायु ८० वर्ष की होती है।

भू० सं० ३४७४

कु० २०

(१३४७)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, प्रतिभाशाली व्यक्तित्व का, विद्वान, भाग्यवान, कला एवं विज्ञान वेत्ता, प्राचीन परम्पराओं को मानने वाला, गंभीर तथा लोकप्रिय व्यक्ति होता है। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, कला-कौशल की जानकार एवं परिवार का योग्यता के साथ संचालन करने वाली होती है। यह जातक गुणवान होने के साथ ही पराक्रमी भी होता है, तथापि इसकी महत्वाकांक्षाएँ अक्सर ही पूरी हो पाती हैं। कुछ आकस्मिक कार्यों में सफलता मिलती रहती है। इसका भाग्योदय २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। मित्रों द्वारा इसे सदैव सहायता मिलती है और उनसे लाभ भी उठाता है। जीवन के ३०, ३३, ३८ तथा ४२वें वर्ष में इसे विशेष लाभ होता है। यह अपने काम से अधिकारियों को सन्तुष्ट करता हुआ, निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। पुत्र सुयोग्य होते हैं। वृद्धावस्था तक सुखी रहते हुए यह लगभग ८५ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१३४८)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति शरीर से स्वस्थ, सुन्दर, उदारचित्त का, नीतिज्ञ, ऊँच-नीच को समझने वाला, महत्वाकांक्षाओं से युक्त, काव्य, कला एवं साहित्य का प्रेमी तथा सर्जक, एवं परोपकारी होता है। इसे ऐसे लोगों तथा स्थानों से आय तथा सम्मान का लाभ होता है, जो बाहरी हों। इसका विवाह लगभग २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुलक्षणा एवं सुखदायक होती है। यह अग्नि, भूमि, शस्त्र आदि के द्वारा धन प्राप्त करने वाला तथा मित्रों के सहयोग एवं कृपा से धनी होने वाला होता है। इसे सन्तान-पक्ष से कष्ट होता है। बड़ी कठिनाइयों से पुत्रियाँ प्राप्त होती हैं। पुत्र का योग बहुत क्षीण रहता है। लगभग ५० वर्ष की आयु में यह अपने उत्कर्ष के चरम शिखर पर जा पहुँचता है तथा उच्च मान-मर्यादा युक्त सुखी-जीवन बिताता है। इसका देहावसान ८२ वर्ष की आयु में होता है।

(२३४९)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी अत्यन्त सुन्दर, बुद्धिमान, गुणवान, विद्वान, उदार, दानी तथा व्यवहार में एकदम निष्कपट होता है। इसके विचार उच्च होते हैं, हृदय विशाल होता है तथा आकांक्षाएँ बहुत उन्नत होती हैं। यह साहित्य, संगीत एवं ललित कलाओं को प्रश्रय देने वाला, गूढ़ विद्याओं का जानकार तथा अप्रत्याशित व्यक्तियों तथा स्थानों से आकस्मिक धन-लाभ प्राप्त करने वाला होता है। यह अनेक लम्बी यात्राएँ करता है तथा उनसे लाभ उठाता है। यह राजकीय-सेवा में संलग्न रह कर ऊँचे-से-ऊँचे पद प्राप्त करता है तथा स्वतन्त्र रूप से भी भवनों के क्रय-विक्रय एवं किसी वस्तु के उत्पादन द्वारा लाभ उठाता है। इसे विभिन्न प्रकार के भोग तथा ऐश्वर्य सहज ही प्राप्त होते हैं। इसका विवाह 20-27 वर्ष की आयु में सुन्दरी, कला-प्रेमी तथा व्यवहार-कुशल स्त्री के साथ होता है। दाम्पत्य एवं सन्तान-सुख उत्तम रहता है। पूर्णायु ८९ वर्ष होती है।

(२३५०)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, कला-कौशल का जानकार, लोकमान्य, शत्रुओं द्वारा भी सम्मान पाने वाला तथा अनेक स्रोतों से धन प्राप्त करने वाला होता है। इसका विवाह २५ से २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी ६८ वर्ष की आयु तक साथ निभाती है तथा अनेक पुत्र-पुत्रियों को जन्म देती है। वह सुन्दरी, स्वरूपवान तथा कार्यकुशल होती है। अपनी योग्यता एवं विद्वता के बल पर इस जातक का सर्वत्र सम्मान किया जाता है। इसकी वक्तृता लोक-मोहक होती है तथा तर्क हृदयग्राही रहते हैं। यह आत्मज्ञ, धर्म के तत्त्व को जानने वाला तथा उसका [illegible] एवं लोगों को प्रभावित करने की क्षमता रखने वाला होता है। यह राजकार्य से सम्बन्धित रहता है तथा सब प्रकार से सम्मान पाता हुआ ६५ वर्ष की आयु तक अत्यन्त उन्नति शिखर पर पहुँचता है। पुत्र-पौत्रों से युक्त सुखी-जीवन बिताता हुआ लगभग ७९ वर्ष की आयु में यह परलोक जाता है।

भु० सं० २४७७

कु० २०

(१३५१)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी स्वस्थ तथा दृढ़ शरीर वाला, तीखी नाक तथा लम्बी आँखों वाला, तीव्र बुद्धि, किसी भी प्रश्न-विषय को तुरन्त समझ लेने की क्षमता रखने वाला तथा कठोर स्वभाव का होता है। यह अपनी नीति तथा भावना को संतुलित रखते हुए कार्य करता है। इसे राज्य की सेवा से सुख तथा धन का लाभ होता है। यह आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होता है तथा आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न बना रहता है। पाण्डित्य एवं विद्वता से परिपूर्ण यह जातक सात्विक गुणों का भण्डार तथा सर्वत्र यश अर्जित करने वाला होता है। यह देश-प्रदेश की यात्राएं करता है तथा उन यात्राओं द्वारा धन भी कमाता है। इसका विवाह २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बहुत सुन्दर, सच्चरित्र तथा अनुशासन-प्रिय होती है। दाम्पत्य एवं सन्तान-सुख उत्तम रहता है। पुत्र भी सुन्दर तथा विद्वान् होते हैं। यह धनी, सुखी तथा यशस्वी जीवन बिताता हुआ लगभग ८० वर्ष की आयु में परलोक गमन करता है।

(१३५२)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, साहसी, ज्ञानी, गुणी तथा अल्पभाषी होते हुए भी सिद्धान्त तौलने वाला एवं विभिन्न चिन्ताओं से ग्रस्त रहने की आदत वाला होता है। जिन मामलों से उनका दूर का संबंध भी न हो, उनके विषय में भी यह चिन्तित रहता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, विनम्र तथा आज्ञाकारिणी होती है। यह जातक चिकित्सा कार्य में रुचि रखता है तथा राजकीय सेवा में रह कर उन्नति करता है। ४० वर्ष की आयु के बाद इसे धन का बहुत लाभ होता है। उच्च तथा निम्न - दोनों वर्गों के लोगों से इसके सम्बन्ध सामान्य रहते हैं। यह जनता के बीच लोकप्रिय रहता है। कुछ यात्राओं से भी इसे लाभ होता है। जीवन के २५, २८, ३१, ३५, ४०, ४२, ४६, ४८, ५१ तथा ५५ वें वर्ष विशेष महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। यह सम्पन्न तथा सुखी जीवन बिताता हुआ लगभग ७८ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१२३२३) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, साहसी तथा परिश्रम से धनोपार्जन करने वाला होता है। अपने पराक्रम तथा क्रोधी स्वभाव के कारण यह अपने कुटुम्बियों के लिए कण्टक स्वरूप अनुभव होता है, परन्तु यथार्थ में सब का हितैषी एवं परोपकारी होता है। इसे राज्य की सेवा में रहते हुए धन लाभ होता है। यह अपने जीवन में अत्यधिक सम्मान प्राप्त करता है। लगभग ४० वर्ष की आयु तक यह पर्याप्त धन तथा यश से सम्पन्न हो जाता है। इसका विवाह २३-२६ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी बुद्धिमती होते हुए भी मूर्खता पूर्ण कार्यों को करने वाली तथा पति से मतभेद रखने वाली होती है। इसे सन्तानों से दुःख प्राप्त होता है, साथ ही यह अपनी माता की मृत्यु का कारण भी बनता है। अपनी स्त्री से मतभेद होने के कारण यह पर-स्त्री से सम्बन्ध रखता है। ६२ वर्ष की आयु तक पर्याप्त सम्पत्ति अर्जित कर, ८० वर्ष की आयु में परलोक प्राप्त करता है।

(१२३२४) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, साहित्य एवं कला का प्रेमी, चिकित्सा-कार्य में रुचि रखने वाला, धनी, निष्ठुर, कामी तथा पर-स्त्री गामी होता है। इसका विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दर, कला-कौशल की ज्ञाता एवं कलह-कुशल होती है, तथापि जातक उससे सन्तुष्ट नहीं होता तथा प्रेमिकाओं में मन लगाये रखता है। यह जातक कुछ धार्मिक प्रवृत्ति का भी होता है तथा दान-पुण्य भी करता है। अनेक स्रोतों से धनोपार्जन करता हुआ यह आन-शौकत तथा ऐश्वर्य पूर्ण जीवन बिताता है तथा वैभव-प्रदर्शन को सर्वाधिक महत्व देता है। इसे पुत्रों का उत्तम सुख प्राप्त होता है। आयु के २५, २८, ३२, ३५, ३८, ४१, ४५, ४८, ५२, ५६ तथा ६३ वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। इसकी जीवन-लीला ६८ वर्ष की आयु में पूरी होती है। यदि इससे बचे तो ७८ वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(१३५५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, अनेक कलाओं का ज्ञाता तथा भू-गर्भ की एवं जल के उत्पन्न वस्तुओं से लाभ पाने वाला होता है। यह अध्यापक, उपदेशकर्त्ता, कानूनविशेषज्ञ अथवा प्रशासक के रूप में किसी सेवा-कार्य से संलग्न होता है तथा उसी से पर्याप्त धनोपार्जन भी करता है। इसका विवाह 23 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, मधुरभाषिणी तथा व्यवहार-कुशला होती है। यह अपनी पत्नी से सुखी तथा सन्तुष्ट बना रहता है। इसे सुन्दर एवं सुयोग्य पुत्र-पुत्रियों का भी लाभ होता है। इसका भाग्योदय २५ वर्ष की आयु से हो जाता है। ३६ तथा ४० वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। ४८ वें वर्ष से वृद्धावस्था तक का समय बहुत सुख से बीतता है तथा प्रत्येक दृष्टि से लाभकारी बना रहता है। समाज के पर्याप्त यश तथा सम्मान प्राप्त करते हुए यह ७८ अथवा ८२ वर्ष की आयु तक जीवित रहता है।

(१३५६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, शास्त्रार्थी, ग्रन्थ-लेखन में निपुण, उग्र कार्यों को करने में आनन्द का अनुभव करने वाला, अपरोपचुक, साहसी कार्यों में तत्पर, जुआ खेलने का शौकीन तथा स्त्रियों के प्रति सहज भाव से अनुरक्त होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, मनोमोहक तथा प्रत्येक क्षेत्र में सहयोगिनी सिद्ध होती है। उस सौभाग्यशालिनी के कारण जातक के घर में धन-धान्य की वृद्धि होती है, परन्तु सन्तान की ओर से पति-पत्नी दोनों ही दुःखी रहते हैं। पुत्र-पुत्रियाँ तो होती हैं, परन्तु वे रुग्ण तथा अल्पायु स्वभाव के होते हैं। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद ही होता है। यह क्रमशः उन्नति करता हुआ उच्चपद पर आसीन होता है तथा पर्याप्त धन तथा यश का उपार्जन करता है। जीवन के अन्तिम समय में कुछ समय तक यह रोगी रहता है तथा ८४ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(२३५७)— इस जन्म कुण्डली का स्वामी स्वस्थ, सुन्दर, गम्भीर विचारक, भावुक, ज्ञान-विज्ञान, कला एवं साहित्य में रुचि रखने वाला, गुणकर्ता तथा विद्वान् होता है। यह चंचल स्वभाव वालों से सम्पर्क नहीं रखता। अपने अनुकूल धीर-गम्भीर स्वभाव वाले तथा मतभेद न रखने वाले लोगों से ही इसकी मैत्री होती है। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में सुन्दरी तथा मनस्विनी स्त्री के साथ होता है। वह विदुषी, कलाविद् तथा गृहस्थ-संचालन में कुशल होती है। अतः इसका दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। पुत्री सुयोग्य तथा विद्वान् होते हैं। उनके वयस्क हो जाने पर यह अपने सभी कार्यभार एवं उत्तरदायित्वों को उन पर सौंप कर निश्चिन्त हो जाता है। इसका भाग्योदय ३० वर्ष की आयु से होता है तथा ५६ वर्ष की आयु तक यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। पुत्र भी अपने पिता की भाँति ही यशस्वी होते हैं। ८८ वर्ष की आयु में यह परलोक-गमन करता है।

(२३५८)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, धीर-गम्भीर तथा लोक-विख्यात होता है। जनता में इसका बड़ा सम्मान होता है। अपनी विद्वत्ता, योग्यता, साहस एवं पराक्रम के कारण यह उच्च स्थिति को प्राप्त करता है तथा निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, कलाविद्, धीर, गम्भीर तथा मनस्विनी होती है। वह प्रत्येक क्षेत्र में जातक के साथ सहयोग करती है। जातक का भाग्योदय भी विवाह के बाद ही होता है। ३५ वर्ष की आयु में यह अपने पुरुषार्थ से अत्यन्त धनी तथा यशस्वी हो जाता है। इसे राज्य द्वारा मान्यता प्राप्त होती है तथा यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। शत्रु भी इसका आदर करते हैं। यह परोपकारी, दानी तथा धार्मिक होता है एवं अपने धन का अधिकांश भाग लोक-कल्याण में व्यय करता है। कुछ समय तक रुग्ण रहने के बाद ८२ वर्ष की आयु में यह परलोक-गमन करता है।

भृ० सं० २३३८

कु० २०

(२३५६)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, सौम्य स्वभाव का तथा व्यक्तियों से संबंध रखने एवं
उनका कार्य करने में आनन्द का अनुभव करने वाला होता है यह स्वयं कष्ट उठाकर भी व्यक्तियों की सेवा
करता है। इसकी बुद्धि तथा प्रवृत्ति के कारण कुटुम्ब तथा परिवार के लोग इसे अधिक नहीं चाहते
अपितु अप्रसन्न ही रहते हैं। परन्तु यह अपनी इच्छानुसार ही कार्य करता है, दूसरों की शिक्षा का इस पर
कोई असर नहीं होता। इसके पास धन की कोई कमी नहीं होती। इसका भाग्योदय बचपन से ही
होता है। यह पढ़ने-लिखने में चतुर तथा अत्यन्त बुद्धिमान भी होता है इसका विवाह २० वर्ष की
आयु में हो जाता है पत्नी सुन्दरी तथा सच्ची सहयोगिनी होती है यह उसके नाम से अनेक कार्यों में
सफलता प्राप्त करता है। इसे सन्तान-सुख भी उत्तम मिलता है तथा यशस्वी प्राप्त होता है यह
लगभग ८० वर्ष तक जीवित बना रहता है

(२३६०)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, प्रियदर्शी, परन्तु सामान्यतः कुछ कठोर सा दिखाई
देने वाला, वस्तुतः उदार हृदय का, परोपकारी तथा उच्च विचारों वाला धीर, गंभीर एवं साहसी
होता है यह अपनी आकांक्षाओं को सफल कर पाने में समर्थ होता है तथा दूसरों की आकांक्षा-
ओं का सम्मान करते हुए उनकी सफलता के लिए अपना सहयोग भी देता है इसका विवाह
२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती होती है, तथापि जातक उसके प्रति
अधिक अनुराग न रखते हुए अन्य स्त्रियों में विशेष रुचि लेता है यह कामी होते हुए भी
अपने कार्यों को पूर्ण कर लेता है। सौम्य-स्वभाव का यह व्यक्ति परिजनों के बीच बहुत प्रसन्न रहता
है तथा उनके कारण कभी-कभी अपने आवश्यक कार्यों को भी बिगाड़ लेता है। इसका भाग्योदय ३० वर्ष
की आयु में होता है। किन्तु जीवन भर धन की कमी नहीं रहती पुत्र योग्य होते हैं। प्रणायु ८५ वर्ष की प्राप्त होती है।

(१३६१)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति शुक्र, सुदृढ़ शरीर का, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, गौर वर्ण तथा अत्यधिक आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। सामान्यतः यह व्यक्ति बड़ा कठोर तथा रूखे स्वभाव का क्रूर प्रतीत होता है, तथापि यह उदार, विद्या का धनी, अनन्त गुणी, प्रमुख स्थान पाने वाला तथा अपने समीपवर्ती लोगों को अपनी इच्छानुसार चलाने वाला होता है। इसका विवाह २७ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी तेजस्विनी, गुणवती, सुन्दरी तथा मनोमोहक होती है। जातक उसके प्रभाव में रहता है तथा उसकी इच्छा के बिना कोई काम नहीं करता। २३ वर्ष की आयु में जातक का भाग्योदय होता है, तब यह निरन्तर उन्नति करता हुआ ४० वर्ष की आयु तक अत्यन्त उच्च स्थान पर जा पहुँचता है। यह सन्तान से सुखी, राज्य द्वारा सम्मानित, मित्र-बान्धव द्वारा शत्रुओं से भी प्रशंसा पाता तथा शंकित होता है। ६८ वर्ष की आयु में अरिष्ट से बचे तो ८० वर्ष तक जीवित रहता है।

(१३६२)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी शुक्र, सरल, कोमल हृदय का, साहित्य-सर्जक तथा अत्यन्त प्रभावशाली होता है। इसके यश को देखकर कुटुम्ब-परिवार के लोग ईर्ष्या करते हैं। यह स्वयं भी आत्मकेन्द्रित बना रहकर सुखी होता है। यह अपने विचारों तथा सिद्धान्तों पर इतना दृढ़ रहता है कि किसी अन्य की बातों पर ध्यान नहीं देता। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक होता है। पत्नी सुन्दरी तथा इस जैसे ही स्वभाव की होती है। साथ ही वह कहीं अधिक प्रभावशाली व्यक्तित्व की स्वामिनी होती है। यह जातक को प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग देती है। पुत्र सन्तानों को जन्म देने के कुछ वर्षों बाद वह परलोक-गमन कर जाती है, परन्तु जातक पुत्रों के वयस्क हो जाने पर उन्हें अपना कार्य व्यवसाय सौंप कर, स्वयं संसार से उदासीन हो तीर्थादि की यात्राएँ करता रहता है तथा भगवद् भजन करते हुए लगभग ७५ वर्ष की आयु में परलोक-गमन करता है।

भु० सं० १३७४

(१३६३)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, चतुर, सत्यवादी, विद्वान, गुणवान, ज्ञानी, सात्विक प्रकृति का, धार्मिक, राजमान, दानी तथा परोपकारी होता है। यह प्रभावशाली व्यक्तित्वसम्पन्न, मनमोहक मुस्कान वाला तथा लोकप्रिय होता है। इसका विवाह २० वर्ष की आयु के लगभग होता है। पत्नी सुन्दरी, विदुषी, आज्ञावान्, जातक को सदैव प्रसन्न रखने वाली, प्रभावशालिनी तथा उच्च आकांक्षाओं वाली होती है। वह ६८ वर्ष की आयु तक जातक का साथ देती है। जातक के भाग्य को ऊँचा उठाने में पत्नी का बहुत योगदान रहता है और वह स्वतन्त्र रूप से भी कार्य करके धनोपार्जन में सहायिका बनती है। यह जातक २५ वर्ष की आयु से धन कमाना आरम्भ करता है तथा मृत्यु पर्यन्त सब प्रकार से सम्पन्न रहता हुआ विविध प्रकार के सुखों का उपभोग करता है। इसे राज्य से भी आजीविका एवं धन का विशेष लाभ होता है। अन्य स्रोतों से भी धनागम होता है। संतानें योग्य होती हैं। पूर्णायु ९० वर्ष होती है।

(१३६४)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, नीतिज्ञ, दूरदर्शी, दूसरे की चाल को तुरन्त समझ लेने वाला, बुद्धिमान, राज्य से यश तथा सम्मान पाने वाला, राजकार्य में संलग्न रहकर उच्च पद पाने वाला तथा राज्य के कार्यों को जिम्मेदारी सहित सफलता पूर्वक सम्पन्न करने वाला होता है। इसका विवाह सुन्दर, सुशील एवं प्रभावशालिनी व्यक्तित्व वाली स्त्री के साथ होता है। वह जातक को सदैव प्रसन्न रखती तथा पारिवारिक दायित्वों का समुचित रूप से पालन करती है। विवाह २० या २२ वर्ष की आयु में होता है। विवाहोपरान्त ही भाग्योदय आरम्भ हो जाता है। संतान के लिए कष्ट होता है तथा वृद्धावस्था में पत्नी की ओर से भी कष्ट होता है। लगभग ४० से ४५ वर्ष की आयु में आकस्मिक हानि होती है, जिसके कारण जातक बहुत दुःखी हो जाता है। वृद्धावस्था भी दुःख में ही बीतती है। यह ८८ से ९० वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

कु० २०

भू० सं० ८३०४

कु० र०

(१३६५)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, मधुर वाणी बोलनेवाला, आत्मीय जनों का पालन करने वाला, विद्वान, निपुण, उदारचेता, ज्योतिषी तथा धनी होता है। इसकी दो माताएं हो सकती हैं। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती होती है, परन्तु उसमें क्रोध की मात्रा कुछ अधिक होती है, साथ ही वह बार-बार रुग्ण भी हो जाती है। यह जातक नीचों की संगति में दुःखी रहता है तथा उनसे लाभ उठाता है। यह शत्रुओं को पराजित कर उनके धन प्राप्त करता है। जुआ आदि के शौक में भी यह अपना धन तथा समय नष्ट करता है। इस जातक के अनेक स्त्रियों से संबंध रहते हैं तथा यह अपनी मां की मृत्यु का कारण भी बनता है। यह भाग्य का धनी होता है, अतः धन के मामले में कभी दुःखी नहीं रहता। यह पर-सेवा कार्य करके आजीविका कमाता है। सन्तान उत्पन्न होती है। परमायु ७२ वर्ष होती है।

(१३६६)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, चपल, मनस्वी, महत्वाकांक्षी, चंचल स्वभाव का तथा पराक्रमी होता है। यह साहित्य-सर्जक, कलाकार, अपने ही पराक्रम से धनी, यशस्वी तथा लोकप्रियता पाने वाला होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है, परन्तु पत्नी मनोनुकूल नहीं होती, अतः उससे दुःखी रहता है तथा परस्त्रियों में आकर्षित होकर उनसे शारीरिक सम्बन्ध भी रखता है। यह दूसरों की सेवा में रहकर आजीविका प्राप्त करता है। बीमारी के कारण इसे कई वर्षों तक कष्ट उठाना पड़ता है, फलतः शरीर कृश हो जाता है। २३ वर्ष से ६० वर्ष तक का समय बड़े उतार-चढ़ाव का तथा उद्विग्नता पूर्ण रहता है। इस अवधि में यह खूब मनमानी करता तथा आनन्दोपभोग करता है, बाद में मन वैरागी हो जाता है तब यह अपने योग्य पुत्रों को सब दायित्व सौंपकर घर से विमुख हो जाता है। परमायु ८० वर्ष हो सकती है।

मु० सं० ३३७४

कु० २०

(१३६७)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, प्रियवाणी बोलने वाला, ईश्वर से डरने वाला, दूसरों के काम आने वाला, स्वयं कष्ट उठाकर भी परोपकार करने वाला, धार्मिक वृत्ति वाला तथा सद्गुणी होता है। इसका विवाह 22-26 वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी की ओर जातक को कष्ट होता है, अतः उसके प्रति चिन्तित बना रहता है। इसे शत्रुओं से भी भय होता है, अतः जीवन शान्तिपूर्वक नहीं बीतता और सुख का अभाव ही बना रहता है। इसे मित्रों से बहुत स्नेह होता है, परन्तु भाइयों एवं परिवारी जनों से विशेष प्रेम नहीं होता। माता का सुख भी इसके भाग्य में नहीं होता। यह स्वयं सबको प्रेम देता है, परन्तु अन्य लोग वैसा ही बदला नहीं देते। इसे सन्तानें सुन्दर, योग्य तथा धनवान प्राप्त होती हैं। ६० वर्ष की आयु के बाद इसके पास धन की कमी कोई कमी नहीं रहती। इसकी परमायु ६८ वर्ष की होती है।

(१३६८)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, सुखी, कीर्तिवान, पराक्रमी तथा यशस्वी होता है। इसे परदेश में रहकर धन का लाभ होता है। यह गुणीजनों के आश्रय से धन कमाता है। परन्तु दुश्चिन्ताओं एवं शत्रुओं से घिरे रहने के कारण इसको सुख-शान्ति का अनुभव नहीं हो पाता। इसका विवाह 20 वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दर, कुछ स्थूल-काय, पति को सुख देने वाली तथा गृहस्थ-संचालन में कुशल होती है। जातक का भाग्योदय 30 वर्ष की आयु में होता है। जीवन के ४५, ४८ तथा ५६ वें वर्ष आर्थिक दृष्टि से विशेष लाभ-प्रद रहते हैं। नौकरी तथा व्यवसाय दोनों से ही इसे धन-लाभ होता है। वृद्धावस्था में पत्नी से वियोग होने की छुटी-पुटी सम्भावना रहती है। संतान की ओर से भी इसे कभी सुख प्राप्त नहीं होता साधारणतः संघर्षपूर्ण जीवन बिताते हुए यह ७८ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

भु० सं० ०३८८

कु० र०

(१३६९)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, गुणवान, कला-मर्मज्ञ, कृपण स्वभाव का तथा बहुत धनी होता है। यह कुटुम्बी जनों से प्रेम करता है, परन्तु वे इससे द्वेष मानते हैं। धन के मामले में यह अत्यन्त असहिष्णु होता है। बड़े परिश्रम से यह धन का संचय करता है। राजकीय-सेवा अथवा किसी अन्य सेवा-कार्य में रहते हुए यह धन कमाता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दर, समझदार तथा योग्य प्राप्त होती है। वह घर-गृहस्थी के अतिरिक्त अन्य कार्यों में भी इसे सहायता पहुँचाती है तथा ऊँच-नीच को सम्भालती-समझाती रहती है। जातक आरम्भ में अपनी पत्नी से बहुत प्रेम रखता है, परन्तु बाद में वह अन्य अनेक स्त्रियों से भी संबंध स्थापित कर लेता है तथा उनसे लाभ भी उठाता है। जीवन के ३४, ४२, ४६ तथा ५८वें वर्ष विशेष लाभप्रद रहते हैं। पुत्र से दुखी रहता है अथवा उससे शत्रुता रहती है। परमायु ७७ वर्ष के लगभग होती है।

(१३७०)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, हठी, अत्यन्त चतुर तथा अस्थिर प्रकृति का होता है। इसका चित्त चंचल रहता है तथा बातें अविश्वसनीय होती हैं। यह मन से भीरु, किसी की बात न मानने वाला तथा शत्रुओं की संख्या में स्वयं वृद्धि करने वाला होता है। इसको पानी से भय होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा घर में सुख-शान्ति बनाये रखने की चेष्टा करने वाली होती है। वह जातक को भी उचित सलाह देती है। अपनी पत्नी से प्रेम रखते हुए भी यह जातक अन्य स्त्रियों से भी संबंध रखता है। पुत्रों से इसकी नहीं बनती तथा उनसे विमुखता ही प्राप्त होती है। आन्तरिक रूप से यह धार्मिक प्रवृत्ति का भी होता है। इसका भाग्योदय २८ वर्ष की आयु से होता है, तदुपरान्त यह धीरे-धीरे भाग्योन्नति करता हुआ सफल जीवन का सामान्य सुख भोगता है। इसे ५८ वर्ष की परमायु प्राप्त होती है।

भु० सं० २३८३

(२३८१)- इस जन्माङ्ग चक्र में उत्पन्न मनुष्य कुछ लम्बे तथा पतले शरीर का, परन्तु कठोर एवं दृढ़ शरीर वाला होता है। यह प्रभावशाली तथा दूसरों को शीघ्र प्रभावित करने वाला तथा सुस्ती एवं आलस्य के कारण अपने कार्यों को भी बिगाड़ लेने वाला होता है। इसका काम करने का ढंग सब लोगों से अलग होता है। यह अपने नौकर-चाकरों को भी एक ही बार में निश्चित आदेश नहीं दे पाता, अतः उन्हें कार्य करने में विलम्ब होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में सुन्दरी, कलाओं की ज्ञाता तथा व्यवहार-कुशल स्त्री के साथ होता है। वह घर के सभी उत्तरदायित्वों का कुशलता पूर्वक संचालन करती है। स्त्री अत्यन्त भाग्यशालिनी होती है। विवाहोपरान्त जातक का भाग्योदय होता है तथा यह निरन्तर उन्नति करता हुआ विपुल धन तथा ऐश्वर्य का स्वामी बनता है। इसे सन्तान पक्ष से कष्ट होता है। यह स्वयं भी रोग का शिकार होता है। इसे ८० वर्ष की पूर्णायु प्राप्त होती है।

(२३८२)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, उन्नत कद का, सहनशील, बुद्धिमान् तथा आत्मिक शौर्यशाली होता है। यह काव्य-साहित्य तथा ललित-कलाओं का ज्ञाता, राजकीय-सेवा में रहकर उच्चपद प्राप्त करने वाला तथा विपुल धन एवं यश-कीर्ति अर्जित करने वाला होता है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला होती है। विवाहोपरान्त इसका भाग्योदय होता है। जीवन के २५, २८, ३२, ३६, ३९, ४२, ५१ तथा ५८ वें वर्ष विशेष घटनाप्रद तथा लाभदायक सिद्ध होते हैं। साहित्य-सृजन, ग्रंथ-लेखन तथा इसी प्रकार के उन कार्यों से, जिनमें कि विद्या-बुद्धि का प्रयोग किया जाता है, इसे धन का लाभ होता है। इसे पिता का अल्प-सुख प्राप्त होता है। माता तथा बड़े भाई का सुख भी कम ही मिलता है। सामान्यतः यह धन-सम्पन्न, ऐश्वर्यशाली तथा सुखी जीवन बिताते हुए ८० वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

कु० र०

(१३६३)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर तथा हृष्ट शरीर वाला, बुद्धिमान, गुणवान तथा विद्वान होता है। इसका जन्म अच्छे सम्पन्न कुल में होता है। अतः यह बाल्यकाल से ही सुखी तथा उच्च संस्कार सम्पन्न होता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करता है तथा २५ वर्ष की आयु से ही इसका स्वतन्त्र रूप से भाग्योदय आरम्भ हो जाता है। इसी आयु में इसका विवाह भी होता है। पत्नी सुन्दरी, उच्च शिक्षा प्राप्त, कलाओं की जानकार तथा इसके मन को मोहित करने वाली होती है। इस जातक को शीघ्र ही उच्च राजपद का लाभ होता है। ३५ वर्ष की आयु में यह बहुत ऊँची स्थिति में जा पहुँचता है। यह देश-विदेश की यात्राएं करता है तथा सर्वत्र यश-सम्मान प्राप्त करता है। इसे सन्तान का सुख कठिनाई से मिलता है, अतः मन बहुत दुःखी रहता है, परन्तु बाद में यह इच्छा पूरी हो जाती है। यह सुख-पूर्ण जीवन को छोड़कर लगभग ८० वर्ष की आयु में परलोकवासी होता है।

(१३६४)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वास्थ्यवान्, कला मर्मज्ञ, ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता, अत्यन्त चतुर तथा विद्वान होता है। इसका बाल्यकाल कष्टों में बीतता है। शिक्षा प्राप्ति में रुकावटें आती रहती हैं, तथापि उच्च शिक्षा प्राप्त कर लेता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, अनेक कलाओं को जानने वाली, विदुषी, पतिव्रता तथा प्रत्येक क्षेत्र में पति को सहयोग देने वाली मिलती है। विवाहोपरान्त इसे धन तथा सम्मान दोनों की पर्याप्त उपलब्धि होती है। ३५ वर्ष की आयु में इसे कुछ समय तक कष्ट उठाना पड़ता है। इसका भाग्योदय ४० वर्ष की आयु में होता है। राज्य से सम्मान की उपलब्धि होती है तथा धन का पर्याप्त लाभ होता है। सन्तान-हेतु दुःखी रहता है तथा वृद्धावस्था में पत्नी के लिए भी दुःख भोगता है। सामान्यतः सुखी एवं सम्पन्न जीवन बिताते हुए यह ८२ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

भु० सं० ००७३४४

कु० २०

(१२३६५)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी मध्यम कद का, मधुर भाषी, सुन्दर, आत्मीय आचारों से युक्त
विज्ञान शास्त्र में निपुण, उदारचेता, कार्य कुशल, ज्योतिष-शास्त्र का ज्ञान रखने वाला तथा सुन्दर
स्वरूप वाला होता है। इसे दो भाइयों का सुख मिलता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में
होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा पतिव्रता होती है। ३५ वर्ष की आयु में यह उच्च राज्य पद
को पाता है तथा अपने ज्ञान, विद्या, योग्यता आदि गुणों के आधार पर सर्वत्र सम्मानित होता
है। जीवन के ४०, ४२, ५० तथा ५६ वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। इसकी अपने पुत्रों तथा
अन्य अच्छे लोगों से भी शत्रुता हो जाती है, परन्तु शत्रु-पक्ष इसे किसी प्रकार की शारीरिक अथवा
आर्थिक हानि नहीं पहुँचा पाता। यह निरन्तर उन्नति करता हुआ विपुल धन एवं सम्पत्ति अर्जित
करता है। किसी पार्टी से इसे बहुत सहायता मिलती है। पूर्णायु ८०-८२ वर्ष की होती है।

(१२३६६)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, चालाक, संगीत एवं चित्र कला में रुचि रखने
वाला, काव्य एवं साहित्य का सर्जक, धर्मात्मा तथा धनी होता है। इसके दो अथवा तीन
विवाह होते हैं। प्रथम विवाह लगभग २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनु-
कूल प्राप्त होती है। वह अपने सद्गुणों से सम्पूर्ण परिवार को वश में कर लेती है। विवाहोप-
रान्त भाग्योदय होता है। राजकीय सेवा तथा अन्य कार्यों के माध्यम से धनागम होने लगता है।
पूर्ण भाग्योदय ४६ वर्ष की आयु में होता है। ६० वर्ष की आयु तक विभिन्न स्रोतों द्वारा धन का लाभ
होता रहता है। इसकी अपने पुत्रों से नहीं बनती तथा उनके कारण कष्ट भी भोगना पड़ता है। धन
सम्पत्ति तथा अन्य कारणों से घर में झगड़े-झंझट भी बने रहते हैं। वृद्धावस्था में चित्त में शान्ति
नहीं रह पाती। यह जातक ७८ वर्ष की आयु में परलोक-गमन करता है।

(२३७७)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, विनयवादी, उच्च विचारों वाला, सरल स्वभाव तथा प्रत्येक व्यक्ति को प्रभावित करने वाला होता है। इसे आमोद-प्रमोद की, कलात्मक, सुन्दर, ऐश्वर्य तथा वैभव प्रदर्शित करने वाली वस्तुओं से लाभ होता है। इसका रहन-सहन भी ऐश्वर्यपूर्ण तथा कलात्मक रुचि सम्पन्न होता है। इसका विवाह २६-२७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला मिलती है। सन्तान-पक्ष के प्रति चिन्ता रहती है। सन्तानों को सन्मार्ग पर चलाने के लिए इसे काफी परिश्रम करना पड़ता है। इसकी आयु के ३५, ३८, ४०, ४६ तथा ५२वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। यों, भाग्योदय विवाह के समय से ही आरम्भ हो जाता है तथा इसके पास धन-सम्मान की कोई कमी नहीं रहती। इसे परदेश में रहने का अवसर मिलता है तथा वहाँ पर सुन्दर-सुन्दर भोग भी प्राप्त होते हैं। यह यथायोग्य सम्पत्ति छोड़ कर लगभग ७८ वर्ष की आयु में परलोक-गमन करता है।

(२३७८)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, बुद्धिमान, गुणवान्, कला-साहित्य का प्रेमी, आस्तिक तथा अपनी योग्यता का प्रकाश फैलाने वाला होता है। यह अनेक कार्यों को शुरू करने का संकल्प लेता है, परन्तु उनमें से कुछ ही पूरे हो पाते हैं। इस पर रोगों का आक्रमण प्रायः होता रहता है। अपने स्वास्थ्य के प्रति यह प्रायः दुःखी ही बना रहता है। इसका विवाह 23 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर तथा कला-मर्मज्ञ होती है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है, परन्तु सन्तान के प्रति निरन्तर चिन्तित रहना पड़ता है। इसका भाग्योदय ४० वर्ष की आयु में होता है तथा ४२ से ६५ वर्ष की आयु तक यह निरन्तर धन तथा यश का उपार्जन करता हुआ उच्चपदों पर प्रतिष्ठित होता चला जाता है। कभी आकस्मिक रूप से चोट लगने की सम्भावना भी रहती है। यह प्रभावी, धनी तथा यशस्वी जीवन बिताता हुआ लगभग ८० वर्ष की आयु में परलोक-गमन करता है।

(१३७९)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, साहसी, सुमधुर एवं प्रभावशाली वाणी बोलने वाला, उग्र कार्यों को करने में तत्पर तथा यशोेच्छुक होता है। यह राजकीय-सेवा में किसी उच्च पद पर प्रतिष्ठित होकर अपनी योग्यता से निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। माता-पिता के सुख से प्रायः पूर्ण, अनेक भाइयों वाला तथा कुटुम्ब की ओर से सुखी होता है। इसका सम्पर्क निम्न कोटि के लोगों से अधिक रहता है। यह उनके निकट आत्म-सन्तोष तो प्राप्त करता ही है, उनका उपकार करने के लिए भी निरन्तर प्रयत्नशील बना रहता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, कला-कुशल, बुद्धिमती एवं विद्वान् होती है। अपनी स्त्री से प्रेम करने के अतिरिक्त यह अन्य स्त्रियों के मोह में भी डूबा रहता है तथा उनके कारण कभी-कभी अपनी कार्य-हानि भी कर बैठता है। ५६ वर्ष की आयु तक यह पर्याप्त धन-मान अर्जित कर लेता है तथा ८५ वर्ष की परमायु पाता है।

(१३८०)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, स्वस्थ, काव्य एवं साहित्य का रसिक, बाल्यावस्था में रोगी, फिर सुखी एवं प्रतिदिन धन की वृद्धि करने वाला होता है। इसकी पत्नी सुन्दरी, विदुषी तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व की स्वामिनी होती है। वह पति का अनुगमन करती है। विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। अन्य स्त्रियों से भी जातक का सम्बन्ध बना रहता है और उनके प्रेम में आकण्ठ निमग्न भी रहता है। २४-२५ वर्ष की आयु में इसे राजकीय-सेवा तथा सम्मान का लाभ होता है। यह निरन्तर प्रगति करता हुआ शीघ्र ही उच्च पद प्राप्त कर लेता है तथा धन भी खूब कमाता है। पत्नी के द्वारा इसकी उन्नति में बहुत सहयोग मिलता है। ५६ वर्ष की आयु में इसे विशेष लाभ होता है। सभी भौतिक सुख-साधन इसे उपलब्ध होते हैं। भूमि, भवन, वाहन, सेवकादि के अतिरिक्त प्रचुर धन-सम्पत्ति का भी स्वामी होता है। परमायु ८४ वर्ष के लगभग होती है।

(१३८१)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, विद्या-बुद्धि में प्रवीण, गुणवान, कलाकार, सर्वत्र सम्मान पाने वाला, प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी, वैभव-विलास का उपभोग करने वाला, अपने पुरुषार्थ को ही सर्वोपरि मानने वाला, देवताओं की निन्दा करने वाला, अपने पराक्रम से धन पैदा करने वाला, धन का लोभी, कृपण तथा कृपणता के कारण अपवाद सहन करनेवाला भी होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी होती है, परन्तु उससे इसे विशेष लगाव नहीं रहता। इसके भाग्योदय में सहायक कोई अन्य स्त्री ही होती है, अतः यह उसी का अभिमान करता है तथा उसी के गुण गाता है। ३५ वर्ष की आयु तक इसे सब प्रकार के सुख-साधन, धन-मान, चल-अचल सम्पत्ति, वाहन आदि उपलब्ध हो जाते हैं। राज्य में भी उच्च पद एवं सम्मान प्राप्त होता है। यह सुख पूर्वक रहता हुआ ८८ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१३८२)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, क्रोधी, कठोर स्वभाव का तथा क्रोधी होता है। यह अत्यन्त अनुशासन-प्रिय होता है तथा अपना भेद किसी को नहीं देता। परिवारीजन तथा नौकर-चाकर सभी इसके आदेशों का पालन करते हुए मान-सम्मान देते रहते हैं। यह बालकों, पशुओं तथा दलित वर्गों की गुप्तरूप से सहायता करने वाला होता है। इसका विवाह लगभग २५ वर्ष की आयु में सुन्दर तथा गुणवती स्त्री के साथ होता है। दाम्पत्य-जीवन प्रेममय रहता है, परन्तु सन्तान-पक्ष से दुःखी रहना पड़ता है। पुत्र के लिए कष्ट होता है। कन्या बड़े प्रयत्नों से जीवित रह पाती हैं। वृद्धावस्था में बड़ी कठिनाई एवं उपायों से एक पुत्र की प्राप्ति सम्भव है। इसका भाग्योदय १८-१९ वर्ष की आयु में ही हो जाता है। धन, यश, मान पर्याप्त उपलब्ध होते हैं। आयु लगभग ६८ वर्ष होती है, इससे बचने पर ८२ वर्ष तक जीवित रह सकता है।

(१३८३)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, विद्वान्, कला-मर्मज्ञ, गुणवान्, धर्म में आस्था रखने वाला तथा उदार दानी होता है। यह धन-धान्य सम्पन्न परिवार में जन्म लेता है। इसका विवाह २२ की आयु में सुन्दरी तथा गुणवती नारी के साथ होता है। वह अपने व्यक्तित्व से परिवार में सभी को प्रभावित करने वाली तथा पति पर अपना प्रभाव रखने वाली होती है, तथापि इस जातक का एक से अधिक स्त्रियों से सम्पर्क बना रहता है। यह २१ वर्ष की आयु से ही स्व-पराक्रम द्वारा धनोपार्जन करने लगता है तथा अपनी पत्नी के भाग्य से भी बहुत लाभ उठाता है। इसे सुन्दर तथा सुयोग्य सन्तानों का सुख प्राप्त होता है। आर्थिक-स्थिति उत्तम रहती है। भूमि, भवन, वाहन, सेवक आदि सुख के सभी साधन उपलब्ध होते हैं। परिवार तथा समाज में मान-प्रतिष्ठा भी प्राप्त होती है। परमायु ७०-७२ वर्ष होती है, इससे बचने पर ८३ वर्ष तक जीवित रह सकता है।

(१३८४)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, गुणवान्, विद्वान्, ग्रन्थ-लेखक तथा पूर्ण शास्त्रीय ढंग से जीवन-यापन करता है। इसे धन, सुख तथा विलास के साधन स्वतः ही उपलब्ध होते रहते हैं। भवन, वाहन तथा सेवकादि का सुख भी प्राप्त होता है। मणि-माणिक्य, स्वर्ण, आभूषणों से युक्त यह जातक ४५ वर्ष की आयु तक अत्यन्त धनी हो जाता है। इसका विवाह २१-२२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है और उसके द्वारा धन का भी विशेष लाभ होता है। इसका भाग्योदय २८ वर्ष की आयु में परदेश में जाकर होता है। इसके जीवन के ४८, ५३, ५६, ६० तथा ६५ वें वर्ष अत्यन्त महत्व पूर्ण सिद्ध होते हैं। इसके भाग्योदय में कोई स्त्री सहायिका होती है तथा उसके माध्यम से इसे बहुत लाभ होता है। पुत्र सुन्दर तथा आज्ञाकारी होते हैं। वृद्धावस्था भी सुख से बीतती है। परमायु ८४ वर्ष होती है।

भृ० सं० १०४४ — कु० २०

(१३८५)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, स्वस्थ शरीर, गुणवान् तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह सर्वत्र यश-सम्मान प्राप्त करता है तथा इसे धन का कभी अभाव नहीं होता। गुप्त कार्य एवं व्यवसायों द्वारा भी इसे धन का विशेष लाभ होता है। भूमिगत धन का भी सहज रूप से लाभ होता है। यह अपने धन का विनियोग गूढ़ कार्यों में करता है तथा विपुल धन का व्यय करके अत्यधिक लाभ भी उठाता है। इसका भाग्योदय २५ वर्ष की आयु में होता है। किसी भूमि अथवा भवन की खरीद से इसे बहुत लाभ होता है। राजकीय सेवा में इसे उच्च पद की प्राप्ति होती है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, गुणवती तथा गृह-कार्य में दक्ष होती है। अन्य स्त्रियों के साथ भी इसके सम्बन्ध रहते हैं। यह अपने कार्य में चतुर होता है। सन्तानों से सुख मिलता है। पूर्णायु ६८ या ७८ वर्ष हो सकती है।

(१३८६)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, गुणी, बुद्धिमान तथा विद्वान होते हुए भी जुआ खेलने का शौकीन होता है तथा जुए एवं व्यवसाय के माध्यम से विपुल धन अर्जित करता है। खर्चीला भी खूब होता है। साहसिक कार्यों से तथा भूमिगत द्रव्य के उत्खनन से भी इसे बहुत लाभ होता है। राजकीय सेवा में रहते हुए २१ वर्ष की आयु से यह नियमित रूप से धनोपार्जन करने लगता है। 30 वर्ष की आयु में इसे पाइप से अचानक ही विपुल धन का लाभ होता है। कई अन्य स्रोतों से भी धन का आगमन होता रहता है। ३५ वर्ष की आयु तक पहुँचते-पहुँचते इसकी कुछ अच्छे लोगों से शत्रुता हो जाती है, जो इसकी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति में बाधक बनते हैं, परन्तु वे इसका कुछ बिगाड़ नहीं पाते, क्योंकि यह बड़ा मायावी होता है। २३ वर्ष की आयु में विवाह होता है। पत्नी तथा पुत्रों का उत्तम सुख रहता है। लगभग ८० वर्ष का सुखी जीवन बिताता है।

(१३८७) – इस जन्मकुण्डली का स्वामी अत्यन्त सुन्दर, स्वस्थ, श्रेष्ठ चरित्र का, सर्वत्र प्रभाव फैलाने वाला तथा अपने गुण, व्यक्तित्व, गौरव, युक्ति, संगठन - क्षमता एवं पराक्रम द्वारा सर्वत्र सम्मान प्राप्त करने वाला होता है। यह वैभव - विलास, सौन्दर्य वृद्धि, आमोद - प्रमोद तथा खान-पान की वस्तुओं के माध्यम से विशेष आर्थिक लाभ प्राप्त करता है। इसका भाग्योदय २३ वर्ष की आयु से हो जाता है। तदुपरान्त धन तथा सम्मान की निरन्तर वृद्धि होती रहती है। यह व्यवसाय में बड़े बड़े दाँव लगाने से भी नहीं चूकता। अपने साहस के बल पर यह अत्यधिक धन भी कमाता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी गुणवती एवं पति पर प्रभाव रखने वाली होती है। वह धन को बहुत सँभाल कर रखती है। सन्तानें सुयोग्य तथा सुख देने वाली होती हैं। जीवन यश, मान तथा धन से परिपूर्ण बना रहता है। पूर्णायु लगभग ८२ वर्ष होती है।

(१३८८) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य बाल्यावस्था से ही सब तरह के सुखों का उपभोग करने वाला, सुन्दर, यशस्वी, गुणवान, विद्वान, चतुर तथा अपने पुरुषार्थ की तुलना में भाग्य के बल पर कहीं अधिक उन्नति करने वाला होता है। इसे सफल बनाने के लिए अन्य लोग परिश्रम करते हैं। यह घर बैठे ही ऐसे लोगों का सहयोग प्राप्त कर लेता है, जो इसके किसी भी कार्य में धन अथवा श्रम लगाने हेतु तत्पर रहते हैं तथा इसे लाभ पहुँचाते हैं। यह २० वर्ष की आयु से ही धन कमाने लगता है। इसके धनागम के स्रोत भी अनेक होते हैं। जहाँ इसे कल्पना भी न की जा सके, ऐसे स्थानों से भी इसे धन का लाभ होता है। इसे राज्य की ओर से भय रहता है तथा राज्य से हानि भी उठाता है। महाधनी होने पर भी यह कीर्ति - शून्य बना रहता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी तथा सन्तानों से सुख मिलता है। पूर्णायु ७८ वर्ष होती है।

(१३८९) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, धीर-गंभीर, बुद्धिमान, न्यायप्रिय, विचारक, उदार, अनेक कलाओं का ज्ञाता, तकनीकी ज्ञान का स्वामी तथा परोपकारी होता है। इसे विभिन्न श्रेणी के व्यक्तियों द्वारा सहयोग मिलता है, जिससे यह पर्याप्त लाभ उठाता है। यह प्रत्येक स्थिति में अपना कार्य सिद्ध करने में सफल होता है। इसका भाग्योदय १८-१९ वर्ष की आयु से ही हो जाता है। विवाह २०-२१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूला प्राप्त होती है। यह पत्नी से पूर्ण प्यार तथा उसके प्रति समर्पित रहता है, परन्तु कुछ समय बाद पत्नी रुग्णा हो जाती है और इसे स्त्री-सुख से विमुख भी होना पड़ता है। सन्तान-सुख उत्तम रहता है। इसे उन लोगों से लाभ होता है जिन्हें इसके मित्र और परिवारीजन पसन्द नहीं करते। यह धनी तथा सुखी जीवन बिताते हुए लगभग ८० वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१३९०) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, बुद्धिमान, धार्मिक प्रकृति का तथा विद्वान् होता है। परन्तु इसे चिन्ताएँ घेरे रहती हैं। यह पारिवारिक-दायित्वों का निर्वाह करने वाला तथा प्रत्येक जिम्मेदारियों को समझने वाला होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, मनस्विनी तथा प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करने वाली होती है। इसका भाग्योदय विवाह के बाद परदेश में होता है। इसे राजकीय-सेवा-कार्य करने का अवसर भी मिलता है, परन्तु उसमें यश प्राप्त नहीं होता। धन तो मिलता है, परन्तु सम्मान-प्राप्ति के लिए लालायित रहता है। यह भीतर-ही भीतर दुःखी रहता है। इसे मजबूरी में परदेश में रहना पड़ता है तथा दूसरों की सेवा करते हुए ही अपना जीवन व्यतीत करता है। सन्तानों में पुत्रों की संख्या कम तथा पुत्रियों की अधिक होती है। सभी सन्तानें योग्य होती हैं। परमायु लगभग ८९ वर्ष की प्राप्त होती है।

२७४६ सं० भु०

(१३६१)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी अनेक कलाओं का ज्ञाता, बुद्धिमान, सुन्दर तथा निष्कलंक ज्ञान का धनी होता है। इसका भाग्योदय १८-१९ वर्ष की आयु से होता है। परदेश में रह कर यह पर्याप्त धनोपार्जन करता है। लगभग २५ वर्ष की आयु में यह कहीं बाहर से सहायता प्राप्त करके कोई कार्य आरंभ करता है और उससे लाभ उठाता है। यह अपने गुणों से लोकप्रिय बन जाता है, परन्तु जिस कार्य को करने की विशेष आकांक्षा रखता है, वह पूरा नहीं हो पाता। इसे पराई-सेवा द्वारा आजीविका प्राप्त होती है। १८ वर्ष से ३० वर्ष तक ३५ से ४० वें वर्ष तक की अवधि में इसे अधिक संघर्ष करना पड़ता है। विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुशील तथा महत्वाकांक्षिणी होती है, यह उसकी आकांक्षाओं को पूरा करता रहता है। इसे पुत्र-पुत्रियों का सुख प्राप्त होता है। इसकी परमायु लगभग ६८ वर्ष की होती है।

(१३६२)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, सच्चरित्र, बुद्धिमान तथा अनुशासन-प्रिय होता है। यह सदैव अपने मन की करना चाहता है। अपनी इच्छा के विरुद्ध कोई भी काम इसे पसन्द नहीं होता। घर अथवा बाहर — सभी जगह इसे सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। राजद्वार से इसे लाभ के स्थान पर हानि ही प्राप्त होती है। यह परदेश में रह कर नौकरी द्वारा जीविकोपार्जन करता है। इसे उन कार्यों तथा स्रोतों से लाभ होता है, जो किसी दूसरे की कृपा पर निर्भर करते हैं। ३५ वर्ष तक यह धीरे-धीरे धन-संचय करता रहता है तथा पर्याप्त धनी हो जाता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर तथा सहयोगिनी मिलती है, तथापि यह अन्य स्त्रियों में भी अनुरक्त बना रहता है। पुत्र-पुत्री सुन्दर होते हैं। इसे अपने जीवन में अपयश अधिक प्राप्त होता है। परमायु लगभग ८५ वर्ष की होती है।

कु० र०

भृ० सं० ३०११४ कु० २०

(१२९६३) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, चतुर, बुद्धिमान, कला-मर्मज्ञ, विद्वान, सुरुचि-सम्पन्न तथा अपना कार्य करने में सिंह के समान पराक्रमी, साहसी, कुछ क्रोधी स्वभाव का और धनोपार्जन में निरन्तर संलग्न बना रहने वाला होता है। इसे शिक्षा-दीक्षा, अध्ययन में कोई कठिनाई नहीं होती, क्योंकि यह बुद्धि का बड़ा तीव्र होता है। यह परोपकारी भी होता है तथा अपने धन से दूसरों की सहायता करके प्रसन्न होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मनोनुकूला तथा सुख-दुःख में साथ देने वाली मिलती है, परन्तु इसे प्रथम पुत्र का दुःख होता है। इसका भाग्योदय २५ वर्ष की आयु से होता है, तत्पश्चात यह निरन्तर उन्नति करता-चला जाता है। राजकीय-सेवा में रहकर अथवा पत्नी के माध्यम से कोई स्वतन्त्र व्यवसाय करके पर्याप्त धन अर्जित करता है (जल से भय रहता है) परमायु ८० वर्ष होती है।

(१२९६४) - इस कुण्डली का स्वामी सुन्दर तथा पुष्ट शरीर वाला, तेजस्वी, शास्त्रों पर विश्वास करने वाला, पुरानी परम्पराओं का पालन करने वाला तथा उग्र कार्यों में संलग्न रहने वाला होता है। इसमें भ्रमण करने की उत्कट इच्छा पाई जाती है। यह पर्याप्त देशाटन करता है। इसके माता पिता धनी तथा समाज में प्रतिष्ठित होते हैं। इस जातक को राजकीय सेवा तथा समाज-सेवा - इन दोनों से ही धन, यश तथा सुख का लाभ होता है। राजकीय सेवा में इसे निरन्तर पदोन्नति प्राप्त होती रहती है। अनेक सामाजिक संगठनों का भी यह अधिष्ठाता होता है। ३५ वर्ष की आयु में यह विशेष प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त कर लेता है। इसका तेज, प्रभाव तथा ऐश्वर्य जीवनान्त तक बना रहता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में सुन्दरी तथा मनोनुकूला स्त्री के साथ होता है। सन्तान-सुख भी बड़ी आयु में प्राप्त होता है। पूर्णायु ७९ से ८५ वर्ष के मध्य होती है।

(१३९५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी बाल्यावस्था में नेत्र-रोगी रहता है। बाद में स्वस्थ, सुन्दर तथा साहसी जीवन बिताता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला, मधुर भाषिणी तथा सरल स्वभाव की होती है। यह जातक कुछ समय तक वस्त्र-व्यवसाय भी कर सकता है। इसका भाग्योदय २८ वर्ष की आयु से होता है। ३५ वर्ष की आयु तक यह बहुत धनी बन जाता है। इसको स्वदेश तथा परदेश- दोनों स्थानों से आर्थिक-लाभ होता है। यह व्यवहार में विनम्र, अपनी बात को भली भाँति स्पष्ट न कर पाने वाला, परन्तु भीतर-ही-भीतर विरोध करने वाले स्वभाव का होता है। यह अपने पुरुषार्थ एवं उद्यम के बल पर उन्नति करता चला जाता है तथा ४५ वर्ष की आयु में सभी भौतिक सुख-साधनों को उपलब्ध कर लेता है। यह कई प्रकार के कार्य करता है। पुत्र-पुत्रियों से सुखी रहता है। परमायु लगभग ८९ वर्ष की होती है।

(१३९६) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, सुशील, धर्म में आस्था रखनेवाला ज्ञानी तथा धर्म को ही जीवन का आधार मानने वाला होता है। यह अपने पिता से अत्यन्त स्नेह रखने वाला, परन्तु कुटुम्बी जनों से द्वेष रखने वाला होता है। यह विद्याध्ययन के तुरन्त बाद ही धनोपार्जन करने लगता है तथा पूर्ण रूप से मनस्वी होता है। इसका भाग्योदय २१-२२ वर्ष की आयु से आरम्भ हो जाता है। राजकीय-सेवा से इसे विशेष लाभ होता है, तथापि कभी-कभी धन की कमी का शिकार भी होना पड़ता है। ३३ वर्ष की आयु से इसकी उन्नति होने लगती है, तत्पश्चात् यह पर्याप्त धन-संचय करता है तथा ४५ से ४८ वर्ष की आयु तक पर्याप्त धनी हो जाता है। राजमान्यता बढ़ती-चली जाती है तथा सामाजिक-प्रतिष्ठा भी उपलब्ध होती है। सन्तानों से सुख मिलता है। पूर्णायु ८० वर्ष की होती है।

(१३९७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी दृढ़ शरीर एवं उदार हृदय का, अलत पीयमी, मध्यम कदवाला, सुन्दर तथा अकारण ही चिन्ताओं से घिरा रहने वाला होता है। यह अपनी सामर्थ्य से परे वाले दायित्वों से दबा रहता है। अपने खर्चों की पूर्ति हेतु यह प्रायः ऋण लेता रहता है तथा ऋणग्रस्त बना रहता है। यह जुआ खेलने का शौकीन भी होता है। इसकी शिक्षा यथेष्ट होती है। यह सरकारी-सेवा में रह कर जीविकोपार्जन करता है। प्रारम्भ में आर्थिक कठिनाइयाँ भोगने के बाद २४ से २८ वर्ष की आयु में इसका भाग्योदय तथा विवाह होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सेवा-भावी होती है। इसे अनेक बार अपना कार्य-व्यवसाय बदलना पड़ता है। ४२ वर्ष की आयु में यह किसी शिक्षा सम्बन्धी कार्य अथवा प्रतिष्ठान से संलग्न होकर उन्नति-पथ की ओर विशेष रूप से अग्रसर होता है। सामान्य-सुखी रहते हुए यह लगभग ७९ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१३९८) - इस जन्मांक चक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, सच्चरित्र, मृदुभाषी तथा आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। यह प्रारम्भ से ही संघर्षशील बना रहता है। माता का स्वर्गवास अल्पायु में ही हो जाता है। शिक्षा-दीक्षा में निरन्तर व्यवधान आते रहते हैं, अतः यह अधिक पढ़-लिख नहीं पाता। अर्थोपार्जन हेतु बाल्यावस्था से ही छोटी-मोटी नौकरियाँ करनी पड़ती हैं। १८ वर्ष की आयु में किसी बाहरी व्यक्ति की सहायता से भाग्योदय का अवसर मिलता है तथा जीवन की दिशा बदल जाती है। यह किसी शिक्षा-संस्थान, दातव्य-संस्थान अथवा जन-कल्याण संबंधी सरकारी विभाग में कार्यरत होकर अपनी आय को बढ़ाता है। २४-२५ वर्ष की आयु में इसका विवाह होता है। पत्नी सुन्दरी मिलती है। ३५ से ४० वर्ष की आयु में इसकी गणना उच्च श्रेणी के लोगों में होने लगती है। सन्तान दुःख देती है। परमायु ७८ वर्ष होती है।

भू० सं० ८८६३

कु० २०

(१३९९) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, सहृदय, लेखन-आलेखन कला में चतुर, नाटकों में रुचि रखने वाला, धर्मात्मा तथा गुरुजनों का आदर-सम्मान करने वाला होता है। शिक्षा यथेष्ट प्राप्त होती है। यह 22 वर्ष की आयु से धनोपार्जन करने लगता है। यह बाहरी व्यक्ति अथवा स्थान से आर्थिक-लाभ उठाता है। इसका विवाह 22 से 26 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, विदुषी तथा सुख देने वाली होती है। विवाहोपरान्त ही भाग्य में परिवर्तन आता है तथा उन्नति का नवीन मार्ग प्रशस्त होता है। कुछ ही समय में यह समाज में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त कर लेता है। राजकीय सेवा में संलग्न होकर जीवन को एक अलग दिशा में ले जाता है, फिर उसे भी छोड़ कर दूसरे नवीन कार्य में लगता है। यह आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न रहता है। 30 वर्ष की आयु तक भूमि-भवनादि का सुख भी प्राप्त कर लेता है। पुत्र दो होते हैं। परमायु 65 वर्ष होती है।

(१४००) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, कलाकार, लेखक, ग्रंथकर्ता, धर्मात्मा, उपदेश देने में कुशल, ज्ञानी तथा गंभीर स्वभाव का होता है। इसके पास अनेक मार्गों से धन का आगमन होता है, अतः आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। विद्या का लाभ उत्तम होता है। 21 वर्ष की आयु में राजकीय-सेवा से संलग्न होता है। फिर उसे छोड़ कर दूसरी राजकीय-सेवा अथवा किसी अन्य प्रतिष्ठान की सेवा में संलग्न होता है। यह अनेक स्त्रियों के साथ भोग-विलास करनेवाला तथा उनके द्वारा भी लाभ उठाने वाला होता है। इसका विवाह 25 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। यह अपनी पत्नी से भी प्रेम करता है। पूर्ण भाग्योदय 40 वर्ष की आयु में होता है। तदुपरान्त निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। सन्तान के कारण दुःखी रहता है। पूर्णायु लगभग 78 वर्ष होती है।

भृ० सं० ३३८८

कु० र०

(१४०१) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, सुवक्ता, श्रेष्ठ विचारवान्, धनी, आनन्दी, ज्ञानी, पण्डित तथा गुणवान् होता है। यह अत्यन्त उद्यमी, साहसी तथा परिश्रमी होता है। यह अपने मन का भेद किसी पर प्रकट नहीं करता तथा अनेक सूत्रों एवं विद्याओं के द्वारा धनोपार्जन करता है। यह दूसरों के प्रति दयालु तथा परोपकारी भी होता है। मातृ-भक्त होने के साथ ही यह अपने कुल का पालक तथा भाई-बन्धुओं से प्रेम करने वाला होता है। इसके मित्रों की संख्या भी अधिक होती है। विद्या का यथेष्ट लाभ होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, विद्वान् तथा गुणवती होती है। इसका भाग्योदय राजकीय सेवा में संलग्न होने पर होता है। यह भाग्य तथा पुरुषार्थ दोनों से लाभ उठाता है। ३५ वर्ष की आयु से जीवनान्त तक यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है तथा सुखसम्पन्न बना रहता है। पुत्रों की ओर से दुःखी रहता है। परमायु ७८ वर्ष होती है।

(१४०२) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, अत्यन्त परिश्रमी, अनेक कलाओं का ज्ञाता, सद्गुणी, मनस्वी तथा महत्वाकांक्षी होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। यह पत्नी के प्रति अनुरागशील तथा उसके कहे अनुसार चलने वाला होता है। अन्य स्त्रियों के प्रति भी इसकी आसक्ति रहती है। ३४ वर्ष की आयु में इसे आर्थिक-संकट का सामना करना पड़ता है। तत्पश्चात् इसे अनेक कार्यों से धन का लाभ होता है। भू-गर्भ स्थित सम्पत्ति भी प्राप्त होती है। निम्न वर्ग के लोगों से इसे लाभ होता रहता है तथा उनके साथ रहने में इसे अच्छा भी लगता है। ४८ वर्ष की आयु में इसे विशेष लाभ होता है। इसके पुत्र होनहार, सुख देने वाले, साहसी तथा पराक्रमी होते हैं। सामान्यतः इसका जीवन सुख से बीतता है तथा सामाजिक मान-प्रतिष्ठा भी बनी रहती है। परमायु लगभग ७४ वर्ष होती है।

(१४००३)- इस जन्मांग चक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, शूर-वीर, पराक्रमी तथा साहस के कार्यों में विशेष रुचि लेने वाला होता है। यह आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, चतुर तथा हर प्रकार की परिस्थितियों से मुकाबिला करने में सक्षम होता है। यह धार्मिक प्रवृत्ति का, ईश्वर-भक्त, दानी, परोपकारी तथा अपने परिवार का पालन-पोषण करता हुआ सुखी-जीवन व्यतीत करता है। यह ऊँच-नीच का भेद नहीं मानता। यह अपने संसर्ग में आने वाले सभी लोगों का हित-साधन करता है। छोटे लोगों के प्रति इसके हृदय में विशेष करुणा रहती है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है। तथापि अन्य स्त्रियों से भी इसके संबंध बने रहते हैं। इसका भाग्योदय २८ वर्ष की आयु में होता है तथा किसी गृह कार्य, राज्य अथवा बड़े प्रतिष्ठान द्वारा आर्थिक लाभ होता है। ३५, ३६ वर्ष की आयु में कुछ हानि भी होती है। पुत्र गुणवान होते हैं। परमायु ८१ वर्ष होती है।

(१४००४)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, धीर-गंभीर, उदात्त स्वभाव का तथा अपनी हानि करके भी दूसरों का उपकार करने वाला होता है। विद्या का मध्यम लाभ होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी गंभीर स्वभाव की तथा गृहस्थी का संचालन करने में कुशल होती है। ३० वर्ष की आयु में इसे विशेष आर्थिक-लाभ होता है। राज्य से संबंध होने के कारण इसे निरन्तर लाभ होता रहता है। शत्रुओं की संख्या अधिक होती है, तथापि यह अपनी सूझ-बूझ एवं साहस से सबको पराजित करता रहता है। ६८ वर्ष की आयु में अरिष्ट होने के कारण यह तीन वर्ष तक रोगी रहता है। पत्नी को भी कष्ट होता है। तत्पश्चात स्वस्थ होकर सुखी-जीवन बिताता है। पुत्रों से इसे सुख प्राप्त होता है तथा समाज में मान-प्रतिष्ठा भी बनी रहती है। परमायु ७८ वर्ष के लगभग होती है।

भु० सं० १२८८

कु० र०

(१४०५)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न तथा स्त्रियों का प्रिय होता है। यह उच्च शिक्षा पाने वाला तथा व्यावसायिक-क्षेत्र में विशेष उन्नति करने वाला होता है। यह अपने पराक्रम तथा साहस से छोटे काम को भी बहुत बड़ा देता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल तथा सुन्दरी मिलती है। विवाह होते ही भाग्योदय भी आरम्भ हो जाता है तथा ४५ वर्ष की आयु तक निरन्तर धन कमाता रहता है। इसकी सन्तानें भी खूब धन कमाती हैं। परन्तु पिता से विशेष प्रेम नहीं रखती। इसे राज्य, राजकीय-सेवा, अपरिचित व्यक्ति तथा बाहरी लोगों से विशेष लाभ होता है। ५० वर्ष की आयु में बीमारी होती है, जो दीर्घकाल तक कष्ट देती है। बाद में रोग-मुक्त होकर यह धार्मिक कार्यों में विशेष रुचि लेता है तथा दान, परोपकार आदि करता है। पूर्णायु ७९ वर्ष के लगभग होती है।

(१४०६)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, स्वस्थ, प्रतापी, शत्रुओं को पराजित करनेवाला, धीर-गंभीर तथा गुणवान होता है। यह प्रत्येक उलझन को शान्ति पूर्वक सुलझाने वाला, विशाल बुद्धि में श्रेष्ठ, शिक्षा-दीक्षा में उत्तम, तथा प्रत्युत्पन्नमति होता है। धार्मिक प्रवृत्ति का होते हुए भी धर्म में विशेष रुचि नहीं लेता, परन्तु इसकी स्त्री धार्मिक कार्यों में बहुत मन लगाती है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पहली सन्तान पुत्र होती है। दूसरा पुत्र विशेष भाग्यवान तथा कुल-पालक होता है। पत्नी भी गृह कार्य कुशल, सुन्दरी तथा मनोनुकूल होती है। इसका भाग्योदय २३-२४ वर्ष की आयु से आरम्भ हो जाता है तथा जीवनपर्यन्त धनागम होता रहता है। यह क्रय-विक्रय द्वारा लाभ उठाता है। इसे कभी भी घाटा नहीं होता। इसका पत्नी से भी संबंध बढ़ता है। पूर्णायु ६० वर्ष तक हो सकती है।

भृ० सं० ३२८९ कु० र०

(१४०७)- इस जन्म कुण्डली में जन्म लेने वाला मनुष्य सामान्य सुन्दर, स्वच्छ तथा अदूरदर्शी होता है। यह दूसरों की सेवा करने वाला, अल्प-धनी तथा अपव्ययी होता है। यह सुखोपभोग, विलास तथा अन्य अनुचित कार्यों में धन खर्च करने वाला तथा बाद में उसके कारण दुःख का अनुभव करने वाला होता है। अधिक धन लाभ की इच्छा से यह जुए सट्टे आदि में अपना धन लगाकर उसकी हानि उठाता है। इसके मित्र तथा परिवारीजन भी धन के मामले में इसे धोखा देते हैं। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी रुग्णा बनी रहती है तथा उससे मतभेद भी रहते हैं। सन्तानें होती हैं, परन्तु वे भी अपने पिता को विशेष सम्मान नहीं देतीं। इसे जीवन में अनेक कष्ट उठाने पड़ते हैं। राज्याधिकारियों से भी पीड़ा मिलती है। इसके कर्मों का फल अन्य लोगों को भी भोगना पड़ता है। पूर्णायु ७५ वर्ष की होती है।

(१४०८)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी गुणवान, कलामर्मज्ञ, दूसरों को लाभ पहुँचाने वाला, परोपकारी तथा पराई चिन्ताओं से चिन्तित रहनेवाला होता है। यह दूसरों के लिए व्यर्थ हानि अथवा कष्ट उठाता है। यह जिद्दी स्वभाव का होता है तथा अपने पौरुष द्वारा सम्पत्ति धन अर्जित करता है। इसका विवाह लगभग २०-२१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी गुणवती तथा सात्विक स्वभाव की होती है, तथापि यह उससे मतभेद रखता है। वह भी इसे अपने से हीन समझती है, तथापि इसी के धन से धार्मिक कृत्य एवं दान आदि सम्पन्न करती रहती है। वह रोग-ग्रस्त भी रहती है। इसका भाग्योदय १९ तथा ३० वर्ष की आयु में होता है। २३-२४ वर्ष की आयु में सुख मिलता है। फिर ३० वर्ष की आयु से जीवनभर धन का लाभ होता रहता है। सन्तान से भी इसे सुख प्राप्त होता है। सन्तानों में लड़कियाँ अधिक होती हैं। पूर्णायु ७९ से ८१ के मध्य होती है।

भृ० सं० ४४२७

कु० र०

(१४०९)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ एवं शिक्षित होता है। सामान्यतः सुखी-जीवन बिताता है। अपने पौरुष से धन कमाता है तथा अपनी वाणी द्वारा सबको प्रभावित करता है। यह उदार-चित्तवाला होते हुए भी कभी-कभी बड़ी क्रूरता का परिचय देता है। किसी व्यक्ति से असंतुष्ट हो जाने पर, अवसर मिलते ही उससे प्रतिशोध लेता है और उसे किसी भी स्थिति में क्षमा नहीं करता। धन-लाभ होता दिखाई दे तो यह जुआ भी खेलता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी से प्रेम करते हुए भी यह अन्य स्त्रियों में अनुरक्त रहता है तथा उनके कारण कार्य-हानि का कष्ट भी उठाता है। ३० वर्ष की आयु में इसका भाग्योदय होता है। यह कई स्थानों पर नौकरी करता है तथा कहीं भी टिक नहीं पाता। सन्तानों से इसे सुख नहीं मिलता। धन लाभ कभी कम और कभी अधिक होता रहता है। पूर्णायु ८१ वर्ष की होती है।

(१४१०)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति सामान्य सुन्दर, बुद्धिमान, मधुरभाषी, व्यवहार-कुशल, धीर-गंभीर तथा धनवान होता है। पैतृक-सम्पत्ति के रूप में भी इसे भूमि, भवन तथा धन का लाभ होता है, परन्तु उसका आजीवन उपभोग नहीं कर पाता। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, मनमोहक तथा मधुरभाषिणी होती है। प्रथम सन्तान पुत्र होती है, परन्तु यही पुत्र बड़ा होकर बहुत दुःख देता है तथा पारिवारिक सम्पत्ति एवं पैतृक-धन का अपहरण भी करता है। तथापि जातक अपने भाग्य एवं पौरुष के बल पर स्वयं को सदैव प्रतिष्ठित बनाये रखता है। ४२ से ४५ वर्ष की आयु में शारीरिक-कष्ट होना संभव है। आर्थिक-स्थिति उत्तम बनी रहती है। यह परस्त्रियों के साथ भी भोग-विलास में रत बना रहता है। वृद्धावस्था में रोगी रहता है। पूर्णायु ७९ वर्ष के लगभग प्राप्त करता है।

मु० सं० २२७८

(१४२२)— इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर स्वरूपवान, मध्यम कद का, बुद्धिमान, रसिक स्वभाव का, विलासी, आमोद-प्रमोद प्रिय तथा मनमानी करने वाला होता है। यह चापलूसी पसन्द होता है। इसके स्वार्थी-मित्र अच्छे दिनों में घेरे रहते हैं तथा बुरे दिनों में पलायन कर जाते हैं। इसे पिता का अल्प-सुख प्राप्त होता है तथा पुत्र से भी नहीं बनती है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। कुछ समय तक यह अपनी पत्नी को बहुत प्रेम करता है, किन्तु २५ से २८ वर्ष की आयु में इसका सम्बन्ध किसी अन्य स्त्री से हो जाता है, जिससे इसे प्रसिद्धि तथा धन की प्राप्ति होती है। यह उसी के प्रेम में मग्न रह कर स्वयं को बहुत धनी अनुभव करता है। यह आमदनी से अधिक खर्च करने वाला, भविष्य को न देखने वाला तथा नुकसान देने वाले कार्यों को करने वाला होता है। जीवन में उतार-चढ़ाव बने रहते हैं। पूर्णायु ७४ वर्ष।

कु० र०

(१४१२)— इस जन्माङ्ग चक्र में जन्म लेने वाला मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, अत्यन्त पराक्रमी, बहुत धन कमाने वाला, लोकप्रिय तथा पर-दुःख-कातर होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी विदुषी तथा सांसारिक-कार्य-व्यवहार में कुशल होती है। वह गृहस्थी का कुशल-संचालन करती तथा पारिवारिक-सम्मान की अभिवृद्धि करती है। इस जातक के पास धन का अभाव नहीं रहता तथा यह खर्च भी खुले हाथों से करता है। इसे विद्या, बुद्धि, शौर्य तथा साहस प्रदर्शित करने के अनेक अवसर प्राप्त होते हैं। यह लोक पूजित तथा राज्य द्वारा सम्मानित होता है। इसका भाग्योदय २५ वर्ष की आयु से होता है। ५५ वर्ष की आयु तक यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। जीवन के अन्तिम समय में कुछ दिनों तक बीमार भी रहता है। पुत्र-पौत्रों से युक्त सुखी जीवन बिताते हुए लगभग ७८ वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

भु० सं० ३२७७

(१४२३)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, अनेक कलाओं का ज्ञाता, कवि, साहित्यकार, ग्रन्थ-लेखक तथा सुवक्ता होता है। इसकी कीर्ति देश-विदेश में फैलती है। इसका विवाह २०वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, गुणवती, विद्वान् तथा कार्य-कुशला मिलती है। विवाहोपरान्त ही इसका भाग्योदय प्रारम्भ हो जाता है। इसे धन-धान्य की कभी कमी नहीं रहती। राजकीय सेवा में रहकर अथवा राज्य के द्वारा यह विपुल धन तथा यश अर्जित करता है। इसे अनेक स्रोतों से धन का लाभ होता है। २५ से ५० वर्ष की आयु तक यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है तथा धन के साथ ही मान-प्रतिष्ठा भी खूब अर्जित करता है। ६५ वर्ष की आयु में यह किसी अत्यन्त सम्मानित पद पर प्रतिष्ठित होता है। पुत्र-पौत्रों से युक्त सुखी जीवन बिताते हुए यह लगभग ७८ वर्ष की आयु में परलोक-गमन करता है।

(१४२४)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, पराक्रमी, उत्साही, साहसी, तथापि अस्थिर-चित्त वाला होता है। यह बाल्यावस्था से ही धनोपार्जन की दिशा में प्रवृत्त होता है। यह किसी का विश्वास नहीं करता। स्वभाव से अत्यन्त कृपण होता है। इसका धन रोग तथा विवादों में अधिक खर्च होता है। फिर भी यह पर्याप्त धनी बना रहता है। इसका विवाह २०वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी के अतिरिक्त एक अन्य स्त्री से भी यह संबंध स्थापित करता है। यह राजकीय-सेवा में अथवा किसी धनी व्यक्ति की सेवा में रहकर स्वयं बहुत धन कमाता है। भाग्योदय २५ वर्ष की आयु से आरंभ होकर वृद्धावस्था तक बना रहता है। इसके पुत्र सुन्दर तथा काम को बढ़ाने वाले होते हैं। वे वृद्धावस्था में सुख भी देते हैं। ७० वर्ष की आयु में यह बीमार होता है। प्रायः ७८ वर्ष जीता है।

कु० २०

मू० सं० 0333

कु० २०

(१४२५)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, मनस्वी, उत्साही तथा साहसी प्रकृति का होता है। इसे क्रोध शीघ्र आता है। यह अपनी गर्वीली तथा ऊँची बातों से सामने वाले को पराजित करता है। इसे क्रोध से ही सुख प्राप्त होता है। सम्पन्न माता-पिता की संतान होने के कारण इसकी शिक्षा-दीक्षा उत्तम होती है। २१ वर्ष की आयु में ही यह किसी अच्छे पद पर प्रतिष्ठित होकर जीविकोपार्जन करता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा कला-मर्मज्ञा होती है। वह प्रसन्नता प्रदायक एवं परिवार के सम्मान को बढ़ाने वाली होती है। यह जातक पत्नी से प्रेम करते हुए भी अन्य स्त्रियों से भी सम्बन्ध रखता है। ३४ वर्ष की आयु से इसकी विशेष भाग्योन्नति तथा पद-वृद्धि होती है। प्रशासनिक-कार्य में दक्ष यह जातक ६५ वर्ष की आयु में कुछ समय तक बीमार रहता है तथा ७४ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१४२६)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, बुद्धिमान, विद्वान, कला-मर्मज्ञ तथा उत्तरदायित्वों का समुचित निर्वाह करने वाला होता है। इसका भाग्योदय बचपन से ही होता है। २५ वर्ष की आयु से यह विशेष धनोपार्जन करने लगता है। २६ वर्ष की आयु में इसका विवाह हो जाता है। राजमान्य अथवा राजकीय-सेवक के रूप में यह आजीविकोपार्जन करता है। काव्य, साहित्य तथा ललित कलाओं से इसे विशेष प्रेम होता है। यह धर्मप्रेमी, दयालु तथा दानी भी होता है। भूमि, भवन, पशु-रत्न, वाहन आदि सब प्रकार की सम्पत्तियों से युक्त सुखी-जीवन बिताता है। पत्नी विदुषी तथा आचरण-कुशला होती है। ४५, ५३ तथा ५९ वर्ष की आयु में इसे विशेष सम्मान की उपलब्धि होती है। पुत्र तथा पौत्र सुयोग्य एवं आज्ञाकारी होते हैं। पूर्णायु ७८ वर्ष के लगभग होती है।

भृ० सं० ३३८८

(१४१७)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, सरल, बुद्धिमान, कवहा-कुशल तथा सुरुचि सम्पन्न होता है। यह साहित्य-प्रेमी, संगीतज्ञ, कवि अथवा किसी अन्य ललित-कला का जानकार होता है। इसकी प्रसिद्धि बाल्यावस्था से ही फैल जाती है तथा यह छोटी आयु से ही धन कमाने लगता है। यह धार्मिक विचारों का तथा परोपकारी स्वभाव का होता है। दूसरों के काम आना इसे अच्छा लगता है। इसे राज्याश्रय अथवा राजकीय-सेवा से मान्यता प्राप्त होती है। यह अनुशासन-प्रिय होता है तथा उच्चपदों पर कार्य करता है। अनुशासन-भंग होने की स्थिति में कड़े-से-कड़ा क़दम उठाने से भी नहीं चूकता। ४५ वर्ष की आयु तक यह अत्युच्च पद प्राप्त कर लेता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूला मिलती है तथा वाक्पटु होती है। ५८ वर्ष की आयु में विशेष धन मिलता है। पूर्णायु ७६ अथवा ८५ वर्ष होती है।

(१४१८)- इस जन्मकुण्ड-चक्र में उत्पन्न मनुष्य नीतिज्ञ, ज्ञानी, सुन्दर, पराक्रमी, प्रभावशाली, साहसी तथा सौभाग्यशाली होता है। यह अपने पुरुषार्थ तथा उद्यम से सबको प्रभावित करता रहता है। यह शिक्षा-दीक्षा प्राप्त कर पर्याप्त विद्वान बनता है तथा खूब धनोपार्जन करता है। २५ वर्ष की आयु तक यह राजकीय-सेवा में संलग्न हो जाता है तथा निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। इसी अवधि में इसका विवाह भी हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, उच्च विचारों वाली तथा इसे प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग देने वाली मिलती है। ५०, ५२ वर्ष की आयु में इसे विशेष लाभ होता है। इसके पुत्र सुन्दर तथा होनहार होते हैं। वे भी प्रभावशाली तथा पिता के सुयश को बढ़ाने वाले सिद्ध होते हैं। इस जातक को जीवन के २६, २८, ३२, ३८, ४५, ४८ तथा ५२वें वर्ष विशेष लाभप्रद रहते हैं। पूर्णायु ७६ वर्ष की होती है।

कु० २०

भृ० सं० २४३३

कु० २०

(१४१९६)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, आकर्षक तथा बाल्यावस्था से ही सौभाग्यशाली होता है। इसकी शिक्षा-दीक्षा उत्तम प्रकार से सम्पन्न होती है। यह दयालु, धर्मात्मा, दानी तथा परोपकारी होता है। यह मधुर-स्वभाव का तथा लोकप्रिय होता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, चंचल-बुद्धि की तथा पति को अपने वश में रखने वाली मिलती है। इसे किसी पर-स्त्री का सेवक आदि भी बनना पड़ सकता है। इसकी आयु का अधिकांश भाग इसी स्थिति में व्यतीत होता है और यह पर्याप्त धनोपार्जन भी करता है। ५५ वर्ष की आयु में इसे भूमि, भवन, धन आदि का विशेष लाभ होता है। यह अपनी बुद्धिमत्ता से अपने चारों ओर के वातावरण को अपने अनुकूल बना लेने में सफल होता है। इसकी आयु ६८ वर्ष होती है, इसे पार करले तो ८२ वर्ष तक जीवित रहता है।

(१४२०)- इस जन्माङ्ग चक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ परन्तु रूक्ष स्वभाव का तथा स्वयं को स्पष्टवादी मानने वाला होता है। यह बचपन से ही सौभाग्यशाली होता है। २० वर्ष की आयु तक यह उच्च शिक्षा प्राप्त कर अच्छा ज्ञानी, विद्वान् तथा भाग्यवान् बन जाता है। इसे माता का अल्प-सुख मिलता है। बड़े भाई का सुख भी नहीं मिलता। जब यह ३४ वर्ष का होता है, तब इसके परिवार में कुछ समय के लिए अशान्ति-उपद्रव उठ खड़े होते हैं। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशिक्षिता एवं मनोनुकूला मिलती है। वह उच्च आकांक्षाओं वाली, मनस्विनी तथा पति को अपने प्रभाव में रखने वाली होती है तथा पति के धन का अपव्यय करके किंचित मानसिक क्लेश भी देती है। संतानें अच्छे स्वभाव की होती हैं। पूर्णायु ६७ अथवा ७८ वर्ष होती है।

भु० सं०

(१४२१) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, मध्यमकद का, विभिन्न कलाओं का ज्ञाता, धीर-गंभीर, स्वाभिमानी तथा पुरुषार्थी होता है। यह अपने पराक्रम से धन-सम्पत्ति तथा मान-प्रतिष्ठा की वृद्धि करने वाला तथा परिवार, समाज एवं क्षेत्र में लोकप्रिय होता है। इसकी शिक्षा-दीक्षा उत्तम होती है। यह सरकारी नौकरी में किसी उच्चपद पर प्रतिष्ठित होकर पर्याप्त धनोपार्जन करता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मनस्विनी तथा चंचल स्वभाव की होती है। वह पति पर पूर्ण नियंत्रण रखती है। तथा चमक-दमक वाला उच्च स्तरीय जीवन व्यतीत करती है। ३४ वर्ष की आयु से इसे अनेक प्रकार के लाभ होते हैं तथा मान-सम्मान की वृद्धि भी होती है। ५८ वर्ष की आयु तक यह बहुत उन्नति कर लेता है तथा ८८ वर्ष की आयु तक जीवित रहता है।

(१४२२) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, गौरवर्ण, लोकमान्य, राजमान्य, नीतिज्ञ तथा राजकीय-सेवा द्वारा धनोपार्जन करने वाला होता है। यह विद्याध्ययन में विशेष रुचि लेता है तथा उच्च शिक्षा प्राप्त कर स्वयं को बहुत ऊँची स्थिति में ले जाता है। इस का विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल प्राप्त होती है। भाग्योदय २६ वर्ष की आयु से आरम्भ हो जाता है। यह भावनाओं से रहित, कठोर एवं रूखे स्वभाव का तथा कोई छोटा सा काम बिगड़ जाने पर भी कठोर-से-कठोर दण्ड देने में न हिचकने वाला होता है। यह अपने शारीरिक-बल के गर्व में दुरभिमानी भी हो सकता है तथा उद्देश्य सिद्धि के लिए विभिन्न उपायों को अपनाता है। स्वार्थ-साधन हेतु यह छोटे-से-छोटा काम करने में भी नहीं चूकता। सामान्यतः आर्थिक दृष्टि से सुखी रहकर ८२-८४ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

कु० र०

(१४२३) – इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, गुणी, विज्ञानवेत्ता, विद्वान्, अपने पुरुषार्थ द्वारा धनोपार्जन करनेवाला, सुखी तथा सम्पन्न होता है। इसे राज्य से लाभ होता है। यह राजकीय सेवा में उच्चपद प्राप्त करता है। इसे यात्राओं द्वारा भी लाभ होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी दृढ़ संकल्पवाली, मनोनुकूला, सुन्दरी तथा सुख देनेवाली होती है। २७ वर्ष की आयु तक इस जातक की आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ हो जाती है तत्पश्चात् यह उच्चपदों पर रहकर अधिक लाभ तथा सम्मान अर्जित करता चला जाता है। इसे आयु के ४५, ४८, ४९, ५१ तथा ५९वें वर्ष में विशेष लाभ होता है तथा यशवृद्धि होती है। यह परीक्षाओं से भी निश्चिन्त है तथा उनकी प्रसन्नता हेतु विविध कार्य करता है। इसे भूमि, भवन, वाहन, सिक्के, वस्त्राभूषण, धन आदि के सभी सुख प्राप्त रहते हैं। लगभग ८९ वर्ष की आयु में परलोक गमन करता है।

(१४२४) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान, बहुत गुणी, विद्वान्, उच्चशिक्षा प्राप्त, कर्मव्रती, संकल्प का धनी तथा अपने शौर्य एवं पराक्रम से सबको मोहित करनेवाला होता है। यह राज्य की कृपा अथवा राजकीय-सेवा द्वारा विपुल धन अर्जित करता है। यह उन लोगों से भी धन प्राप्त करता है, जो गूढ़ एवं रहस्यमय कार्यों द्वारा धनोपार्जन करते हैं। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, तेजस्विनी तथा पति को अपने प्रभाव में रखने वाली होती है। वह विदुषी तथा कला-कुशला होती है एवं घर-गृहस्थी से लेकर बाहर तक अपना प्रभाव रखती है। पुत्र-पुत्री भी सुन्दर तथा विवेकशील होते हैं। जीवन के २३, २५, २८, ३२, ३५, ३८, ४०, ४२, ४५, ४८, ५२ तथा ५५ वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। पूर्णायु ५९ अथवा ७९ वर्ष होती है।

भु० सं० ८३३७

(१४२५)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, चिन्त, बुद्धिमान तथा अनेक कलाओं का ज्ञाता होता है। यह विज्ञान, तकनीकी विषय, चिकित्सा शास्त्र, काव्य तथा आलोचन आदि विषयों में रुचि रखता है, परन्तु अनेक कलाओं का ज्ञान प्राप्त होते हुए भी किसी का पूर्ण पण्डित नहीं होता और न उनमें से किसी को अपनी आजीविका का साधन ही बनाता है। कलाकार बनने की इच्छा रखते हुए भी उसकी पूर्ति में सफल नहीं हो पाता। यह अनेक कार्यों को बिना सोचे-समझे आरम्भ करके अपने धन की हानि करता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बहुत समझदार तथा प्रत्येक कार्य को ठीक ढँग से करने वाली होती है। वह अपने गुणों से पति को अधीन रखती है। जातक स्वयं परिश्रम अथवा सेवा-कार्य द्वारा ४०-४२ वर्ष की आयु में अपनी आर्थिक-स्थिति को कुछ ठीक कर लेता है। पूर्णायु ७० वर्ष होती है।

(१४२६)- इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य स्वस्थ, सुन्दर, विद्वान् तथा तेजस्वी होता है। वह ऊँचे कद का, ओजस्वी, गंभीर, मनस्वी, पराक्रमी तथा सुखी होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, धीर-गंभीर, मनस्विनी, चतुर तथा बहुत सोच-समझकर बात करने वाली होती है। यह जातक राजकीय सेवा द्वारा यथेष्ट धनोपार्जन करता है। राज्य द्वारा सम्मान तथा उच्चपदवी पाता है। ४५-४६ वर्ष की आयु में इसकी सभी आकांक्षाएँ पूरी हो जाती हैं। यह अनुशासन-प्रिय तथा कुशल-व्यवस्थापक होता है। इसे धन का अभाव नहीं रहता। यह अनेक स्त्रियों में आसक्ति रखने वाला तथा विविध प्रकार के भोग भोगनेवाला होता है। इसके पुत्र-पुत्री भी योग्य होते हैं। ६१ वर्ष की आयु में यह किसी कठिन रोग का शिकार बनता है, परन्तु दो-तीन वर्ष में ठीक होकर ८३-८४ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

कु० १०

(१४२७) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, उच्च विचारों का, गुणवान्, किसी की भी हानि न सोचने वाला, किसी से द्वेष न रखने वाला, भूमि-भवन-वाहनादि से सम्पन्न तथा सब सुखों से युक्त होता है। यह सौम्य-व्यवहार का, आकर्षक-व्यक्तित्व सम्पन्न तथा राजकीय-सेवा द्वारा आजीविकोपार्जन करने वाला होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती होती है, तथापि अन्य स्त्रियों से भी इसके सम्बन्ध रहते हैं। यह उच्चपदों को प्राप्त कर यश तथा धन की वृद्धि करता है। भाग्योदय विवाह के बाद ही आरम्भ हो जाता है। स्त्री के माध्यम से तथा अन्य अनेक स्रोतों से इसे आर्थिक-लाभ होता रहता है। ६० से ६४ वर्ष की आयु में इसे बहुत लाभ होता है। पुत्र-पुत्रियों से युक्त होकर यह हर प्रकार से सुखी-जीवन व्यतीत करता है। पूर्णायु ८० वर्ष की होना सम्भव है।

(१४२८) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, पराक्रमी, महत्वाकांक्षी तथा लोकप्रिय होता है। यह अपने पराक्रम द्वारा प्रचुर सम्पत्ति अर्जित करता है। जिन कार्यों को करने में अन्य लोग घबराते हैं, उन्हें करने के लिए यह सदैव प्रस्तुत बना रहता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, गुणवती तथा उत्तम कुल की होती है। इसका सम्बन्ध अन्य स्त्रियों से भी रहता है। जिन कार्यों में स्त्रियों का सहयोग हो, वे इसे बहुत अच्छे लगते हैं। स्त्रियाँ भी इसे बहुत चाहती हैं तथा अपना सहयोग-साहचर्य देती रहती हैं। इसका भाग्य सदैव साथ देता रहता है। अन्य छोटे कार्यों से भी इसे सदैव लाभ मिलता है। बन्धु-बान्धव तथा मित्रों से भी यह लाभान्वित होता रहता है। सुखी-जीवन बिताता हुआ यह ७८ अथवा ८९ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(१४२९) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर, स्वस्थ, गौरवर्ण, मध्यम कद का, महत्वाकांक्षी, कलाओं का ज्ञाता, तार्किक, वात्सल्य, परम्परागत जीवनपद्धति का उपासक, विद्या-बुद्धि सम्पन्न, अनेक स्रोतों से धन कमाने वाला तथा अनेक महत्वपूर्ण कार्य करने वाला होता है। अपने वैभव के उच्च शिखर पर आसीन रहते समय इसे शत्रुओं द्वारा पीड़ित करने के प्रयत्न भी होते हैं। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनस्विनी, पति-गर्विता एवं रूपगर्विता होती है। २८ वर्ष की आयु में इस जातक को विशेष मान-सम्मान प्राप्त होता है। यह देश-विदेश की यात्राएँ करता तथा उनसे लाभ उठाता है। ४५ वर्ष की आयु में इसे किसी विकट परिस्थिति का सामना करना पड़ता है, जिससे ३ वर्ष बाद छुटकारा मिलता है। इसकी सन्तानें सुयोग्य होती हैं। सब प्रकार से सुखी जीवन बिताता हुआ यह लगभग ८० वर्ष की आयु में परलोक जाता है।

(१४३०) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, सुशील, धार्मिक, ज्ञानी तथा अनेक प्रकार के लाभ प्राप्त करने वाला होता है। यह अनेक मित्रों का प्रियपात्र होता है तथा उनका उपयोग करता है। बाल्यावस्था से ही इसे सुख प्राप्त होता है। यह धनी तथा सम्पन्न घर में जन्म लेता है तथा सम्पूर्ण जीवन वैभव तथा ऐश्वर्य पूर्णता में बिताता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, सुलक्षणा तथा सम्पन्न कुल की बुद्धिमती होती है। वह मनोनुकूला तथा सहयोगिनी सिद्ध होती है। ३५ वर्ष की आयु में इसे विशेष सम्मान मिलता है। धन-लाभ भी होता है। ४० वर्ष की आयु में कोई नया काम करता है तथा बाहरी स्थान पर सम्मानित पद प्राप्त करता है। ५९ वर्ष की आयु में भी इसे विशेष लाभ होता है। सुख-सुविधाओं से सम्पन्न सुखपूर्वक रहते हुए यह ६९ अथवा ९२ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१४३१)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, मध्यम कद का, विशाल हृदय, परोपकारी प्रकृति का तथा महत्वाकांक्षी होता है। यह अत्यधिक दयालु, राजकीय-सेवा द्वारा आजीविकोपार्जन करने वाला तथा सुखी-जीवन बिताने वाला होता है। २२-२३ वर्ष की आयु में ही यह राजकीय-सेवा में संलग्न होकर अर्थोपार्जन करने लगता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, बुद्धिमती, विवेकशीला तथा आज्ञानुवर्तिनी होती है। वह पति को सुख देती हुई, घर-गृहस्थी का कुशलता पूर्वक संचालन करती है। २८, ३४ तथा ३६ वर्ष की आयु में तीन बार इसकी सेवा-स्थिति में परिवर्तन आता है। ४५ वर्ष की आयु में यह परदेश में रहकर अत्युत्तम स्थिति प्राप्त कर लेता है। यह वक्तृता देने में कुशल तथा चारों ओर के वातावरण को अपने अनुकूल बना लेने में प्रवीण होता है। ५५ वर्ष की आयु में बड़ा संगठक बनता है। पुत्र विपुल होते हैं। पूर्णायु ८३ वर्ष होती है।

(१४३२)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, सुदृढ़ शरीर का, कला-कौशल से युक्त तथा रागात्मक वृत्ति का होता है। यह स्त्रियों के प्रति दुर्बल होता है और उनकी प्रत्येक बात मानने के लिए तत्पर रहता है। इसके पास धन की कोई कमी नहीं रहती। यह पिता का भक्त, परन्तु परिवारीजनों के प्रति विद्वेष रखने वाला होता है। यह पिता की सम्पत्ति का लाभ भी उठाता है। इसका हृदय बहुत गहरा होता है। यह अपना भेद किसी को नहीं देता तथा अपनी सभी योजनाओं को गुप्त रखता है। यह धन को अपने हृदय से लगाकर रखता है। विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूला मिलती है, परन्तु अधिक दिनों तक सुख नहीं दे पाती। पुत्र-पुत्री होते हैं। अन्य स्त्रियों के संपर्क से यह सुखोपभोग प्राप्त करता है। इसे गुप्त धन का विपुल लाभ होता रहता है। ४० वर्ष की आयु में बहुत उत्कर्ष होता है। पूर्णायु ७१ वर्ष हो सकती है।

भू० सं० ३३०७

कु० २०

(१४३३)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर शरीर का, बुद्धिमान्, उच्च शिक्षित, ग्रन्थ-लेखक तथा शास्त्रज्ञ होता है। इसकी मनःस्थिति परिवर्तनशील बनी रहती है। धार्मिक हृदय का तथा उदार होने के कारण यह कोई ऐसा कार्य नहीं करता, जो अन्य लोगों को अनुचित प्रतीत हो। परन्तु जिस कार्य को यह उचित समझता है, उसे सार्वजनिक विरोध का सामना करते हुए भी छाती ठोंक कर अवश्य करता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा विदुषी मिलती है। अपनी उदारता के कारण यह कुल में विख्यात होता है। इसे अपने से निम्न कोटि के व्यक्तियों का सहयोग प्राप्त होता है तथा उनके द्वारा धनार्जन भी करता है। ४५ वर्ष की आयु में यह परदेश-गमन करता है तथा वहीं पर इसका भाग्योदय होता है। धन तथा मान से सम्पन्न एवं पुत्र-पुत्रियों से युक्त सुखी-जीवन बिताता हुआ यह लगभग ८० वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(१४३४)- इस जन्माङ्ग चक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, मधुरभाषी, उदार स्वभाव का तथा व्यवहार-कुशल होता है। यह कामशास्त्र तथा अन्य कलाओं का ज्ञाता होता है। इसकी शिक्षा-दीक्षा उच्चस्तरीय होती है। इसका विवाह लगभग २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, विदुषी तथा कुछ स्थूल शरीर की होती है। वह पति की अनुगामिनी तथा गृहस्थी के दायित्वों का समुचित निर्वाह करने वाली होती है। यह जातक परोपकारी, गरीबों तथा दीन दुखितों को सहारा देने वाला एवं राज्य की सेवा से विपुल धन अर्जित करने वाला होता है। इसके पास धन की कमी नहीं रहती। यह अपने कार्यों द्वारा उच्चस्थिति प्राप्त कर लेता है। इसका भाग्योदय २८ वर्ष की आयु में होता है तथा ४० वर्ष की आयु तक निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। इसके पुत्र सुन्दर तथा आज्ञाकारी होते हैं। यह लगभग ८० वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१४३५) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी बुद्धिमान, विद्या-सम्पन्न, अनेक गुणों से युक्त, सुन्दर, स्वास्थ्य तथा चारों ओर के वातावरण को अपने अनुकूल बना लेने वाला होता है। यह अपने उच्चमनतथा साहस से नवीन कार्यों को करनेवाला तथा अत्यन्त प्रभावशाली होता है। इसे किसी भी काम को करने में हिचक नहीं होती। कार्य के संबंध में इसके मानदण्ड अन्य लोगों से भिन्न होते हैं। धन की इसके पास कोई कमी नहीं रहती। नैतिक दृष्टि से इसका व्यक्तित्व उच्चस्तरीय होता है। यह राजकीय-सेवा में उच्च पद प्राप्त करता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर तथा आकर्षक व्यक्तित्व की धनी, अत्यन्त प्रभावशालिनी होती है। इसके पुत्र-पुत्री भी सुन्दर तथा आज्ञाकारी होते हैं। ६५ तथा ६८ वें वर्ष इसके जीवन में विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। यह सुखी-जीवन बिताता हुआ लगभग ८६ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१४३६) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, मध्यम कद का, मृदुभाषी, सुशील, धर्मात्मा, ज्ञानी, लाभ प्राप्त करने वाला, धनी तथा अनेक मित्रों से युक्त होता है। यह श्रेष्ठ कुल में जन्म लेनेवाला, यशस्वी माता-पिता का पुत्र, बाल्यावस्था से ही सुख-समृद्धि का उपभोग करने वाला, बाहरी व्यक्तियों द्वारा सम्मानित, कुल का मुखिया तथा आत्मकेन्द्रित स्वभाव का होता है। यह अपने सामने किसी की परवाह नहीं करता। यह राज्य में उच्च पद प्राप्त करता है, तथा राजनीति में भाग लेता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल मिलती है। यह धन के मामले में कृपण होता है तथा अपने को ऐसा रहस्यमय बनाये रखता है कि इसकी यथार्थ-स्थिति के विषय में किसी को सही जानकारी नहीं होती। पुत्र-पौत्रों की संख्या अधिक होती है। सम्पन्नता में जीवन बिताता हुआ यह ८३ वर्ष की आयु पाता ;